मुस्तनद-मुदल्लल-मुकम्मल हिन्दी एडिशन

8 तफ़सीर इब्ने कसीर

अल्लामा हाफ़िज़ ज़ुबैर अली ज़ई (रह.)
अल्लामा नासिरूद्दीन अल्बानी (रह.)
शैख़ अब्दुर्रज़्ज़ाक़ महदी (रह.)
शैख़ अली अहमद अल बाक़ी (रह.)
शैख़ मुबश्शिर अहमद रब्बानी (रह.)

تفسیر ابن کثیر

तफ़सीर इब्ने कसीर

इमाम एमादुद्दीन हाफिज इब्ने कसीर (रह.)

जिल्द 8

तर्जुमा :
मौलाना मुहम्मद जुनागढ़ी

हिन्दी तर्जुमा :
ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट
जमीअत अहले हदीस

ज़ेरे एहतिमाम : अन्जूमन खुद्दामुल कुरआन

शो'बा नश्रो इशाअत
शहरी जमीअत अहले हदीस
जोधपुर
सूबाई जमीअत अहले हदीस
राजस्थान

شعبہ نشر و اشاعت
شہری جمعیت اہل حدیث
جودھپور
صوبائی جمعیت اہل حدیث
راجستھان

بِسْـــــــمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ

अस्सलामु अलयकुम व-रहेमतुल्लाही व-बरकातुहू

बाद सलाम के मालुम हो की अल्लाह रब्बुल इज्जत के फजल-व-करम से हदीसों की 6 मोअतबर किताबें सिआ सत्ता / सिआ कुतुब पढ़ने में, समझने में और दावत पहुंचाने में आसानी हो इस नेक मक़सद से उम्मत-ए-मुस्लिमा के ख़िदमात में PDF की शकल में पेश है।

तफसीर ईब्ने क़सीर (8 जिल्द)

1. सहीह बुख़ारी (8 जिल्द)
2. सहीह मुस्लिम (8 जिल्द)
3. सुनन अबु दाऊद (6 जिल्द)
4. ज़ामेअ सुनन तिर्मिज़ी (4 जिल्द)
5. सुनन नसाई शरीफ़ (6 जिल्द)
6. सुनन इब्ने माजह (1 जिल्द)

इन PDF बनाने में हदीस नंबर,पेज नंबर, स्केनींग वग़ैरा मे कोई भूल हुई हो तो बराए मेहरबानी नीचे लिखे हुए मोबाइल नंबर पर इत्तेला करे।

अल्लाह रब्बुल इज्जत इन तमाम किताबों की PDF बनाने में और इसमे ता'ऊन करने वाले हजरात की ख़िदमात को कुबुल फरमाए ओर लोगों के लिए हिदायत का सबब बनाए।

शेरख़ान (अहमदाबाद-गुजरात) M.: +91 9825 696 131

मुस्तनद-मुदलल्ल-मुकम्मल हिन्दी एडिशन

अल्लामा हाफ़िज़ ज़ुबैर अली ज़ई (रह.)
अल्लामा नासिरुद्दीन अलबानी (रह.)
शैख़ अब्दुर्रज़्ज़ाक़ महदी (रह.)
शैख़ अली अहमद अल बाक़ी (रह.)
शैख़ मुबश्शिर अहमद रब्बानी (रह.)

تفسیر ابن کثیر

तफ़सीर इब्ने कसीर

इमाम एमादुदीन हाफिज इब्ने कसीर (रह.)

4

إِنَّا أَنزَلْنَاهُ فِي لَيْلَةِ الْقَدْرِ

तर्जुमा :
मौलाना मुहम्मद जूनागढ़ी

हिन्दी तर्जुमा :
ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट
जमीअत अहले हदीस

ज़ेरे एहतिमाम : अन्जुमन खुद्दामुल कुरआन

शो'बा नश्रो इशाअत
शहरी जमीअत अहले हदीस
जोधपुर
सूबाई जमीअत अहले हदीस
राजस्थान

नाशिर-ناشر

شعبہ نشر واشاعت
شہری جمعیت اہل حدیث
جودھپور
صوبائی جمعیت اہل حدیث
راجستھان

सर्वाधिकार प्रकाशनाधीन सुरक्षित है

इस किताब के प्रकाशन सम्बन्धी सर्वाधिकार प्रकाशक के पास सुरक्षित हैं। कोई व्यक्ति/ संस्था/ प्रकाशन आदि इस किताब को मुद्रित/प्रकाशित नहीं कर सकता। इस चेतावनी का उल्लंघन करने वालों के ख़िलाफ़ कठोर क़ानूनी कारवाई की जाएगी, जिसके समस्त हर्ज व ख़र्च के वे स्वंय उत्तरदायी होंगे। सभी विवादों का न्यायक्षैत्र जोधपुर (राजस्थान) होगा।

नाम किताब : **तफ़्सीर इब्ने कसीर**

मुरत्तिब (अ़रबी) : **एमामुद्दीन इब्ने कसीर (रह.)**

उर्दू तर्जुमा : **मौलाना मुहम्मद जुनागढ़ी (रह.)**

हिन्दी तर्जुमा : **इदारा तर्जुमा, शोबा नश्रो-इशाअ़त**
जमीअ़त अहले हदीस, जोधपुर (राज.)

तस्हीह व नज़रे सानी : **मौलाना जमशेद आ़लम सलफ़ी (97857-69878)**

लेज़र टाइपसेटिंग : **गुफ़रान अन्सारी (83022-58062)**

मेनेजिंग डायरेक्टर : **अ़ली हमज़ा (82338-55857)**

प्रिण्टिंग : **अनमोल प्रिण्टर्स, बासनी इण्डस्टीयल एरिया,**
9414131426 जोधपुर (राज.)

बाइण्डिंग : **मो. शाहिद, कमाल बाइण्डिंग हाउस,**
9351668223 जोधपुर (राज.)

तादाद पेज : **660**

प्रकाशन (प्रथम संस्करण): रमज़ानुल मुबारक 1439 हिजरी (जून 2018 ईस्वी)

तादाद : 1100 कॉपी क़ीमत : 500/- रूपये

प्रकाशक

शहरी जमीअ़त अहले हदीस, जोधपुर

सूबाई जमीअ़त अहले हदीस, जोधपुर

सोल डिस्टीब्यूटर : पोपुलर बुक स्टोर, जोधपुर 094607-68990

अधिकृत विक्रेता

अल किताब इण्टरनेशनल	011-26986973
जामिया नगर, नई दिल्ली	
मक्तबा तर्जुमान	011-23273407
4116 उर्दू बाजार, नई दिल्ली	
अल हीरा पब्लिकेशन	09015382970
423 उर्दू मार्केट, मटिया महल, जामा मस्जिद, दिल्ली	
मदरसा दारुल उलूम सलफ़ियह	070004-11352
मोहल्ला सब्जी फ़रोश, रतलाम (एम.पी.)	098273-97772
मौलाना शकील मेरठी	09910889357
दारुल कुतुब इस्लामिया, मटिया महल, नई दिल्ली	
मक्तबा अस्सुन्नह मुम्बई	08097444448
दारुल इल्म	022-23088989
नागपाड़ा, मुम्बई	022-23082231
उमरी बुक डिपो, मुम्बई	09819961879
मक्तबा अल-फ़हीम	0547-2222013
मऊनाथ, भंजन, यू.पी.	
मौलाना ख़ुर्शीद मुहम्मदी	09919737053
मिर्ज़ापुर, यू.पी.	
शैख़ सुहैल सलफ़ी, मकतबा सलफ़िया	09451915874
वाराणसी	
तौहीद किताब सेण्टर, सीकर, राजस्थान	08003972503
अल कौसर टेडर्स	09414920119
आई.आई.सी, कच्छ	09429017111
नूरानी होटल के पास, डायडा बाजार,	
भुज, कच्छ (गुजरात)	
कलीम बुक डिपो	07014898515
सीकर, राजस्थान	

फ़ेहरिस्ते-मज़ामीन

तफ़सीर इब्ने कसीर जिल्द : 8

तफ़्सीर सूरह वाक़िअह	13
तआरुफ़े सूरत :	14
क़यामत बरहक़ है (आ. 1-12)	15
क़यामत का तज़्किरा	15
नेकों के दरजात	17
जन्नत में इन्आमात	18
बेहिसाब जन्नत में जाने वाले	20
जन्नत के मेवे	22
एक ख़्वाब	23
तूबा क्या है?	24
जन्नती परिन्दे :	24
नेकों का हाल (आयत 27-38)	26
जन्नत के दरख़्त :	26
जन्नत की हूरें	29
दोज़ख़ियों की सज़ा (आयत:39-56)	35
इंसान की पैदाइश अल्लाह की क़ुदरत है (आयत 57-62)	37
फलों की पैदाइश अल्लाह की क़ुदरत है (आयत 63-74)	38
पानी अल्लाह की नेमत है :	39
सितारों के तुलूअ की क़सम(आ.75-82)	40
क़ुरआन दुश्मन के मुल्क में न ले जाया जाये	41
क़ुरआन हक़ है	42
आलमे नज़अ का ज़िक्र (आ.83-96) :	44
सआदतमन्द की मौत की हालत	44
तफ़्सीर सूरह हदीद	48
तआरुफ़े सूरत	49
अल्लाह की तस्बीह (आ. 1-3)	49
अल्लाह अव्वल और आख़िर है	50
सोते वक़्त की एक दुआ	50
आसमान व ज़मीन की पैदाइश छः दिन में	52
अल्लाह और रसूल (ﷺ) पर ईमान लाओ (आयत 7-11)	56
फ़ज़ाइले सहाबा	57
सब सहाबा बड़े दर्जे वाले हैं	59
अल्लाह सदक़ात को बढ़ाता है	59
रोज़े क़यामत मोमिन मर्द और औरतों की हालत	61
रोज़े क़यामत मोमिनों के लिये नूर	61
अल्लाह तआला का डर(आयत 16-17)	64
क़ुरआन पर अमल करो	65
दरजाते मोमिनीन (आ. 18-19)	67
दुनिया आरिज़ी और फ़ानी है(आ.20-21)	69
अल्लाह ने तक़दीर लिखी (आ.:22-24)	72
पैग़म्बरों पर मुअजज़ात के नुज़ूल (आ.:25)	73
लोहा अल्लाह तआला की नेमत है	74
हज़रत नूह और इब्राहीम (अलै.) का ज़िक्र (आयत 26-27)	75
हज़रत ईसा (अलै.) का ज़िक्र	76
अहले किताब मोमिन के लिये दोहरा अज्र है (आयत 28-29)	79
तफ़्सीर सूरह मुजादला	81
हज़रत ख़ौला (रज़ि.) का वाक़िया (आयत: 1)	82
मसल-ए-ज़िहार (आयत 2-4)	84
ज़िहार की तारीफ़	86
ज़िहार के मुताल्लिक़ अइम्मा के अक़्वाल	88
अल्लाह और रसूल (ﷺ) की मुख़ालिफ़त से बचने का हुक्म	90
सरगोशी के अहकाम (आ.8-10)	92
आदाबे मज्लिस की तफ़्सील(आ.:11)	95
पैग़म्बर (ﷺ) से बातचीत के अहकाम	100
मुनाफ़िक़ों का ज़िक्र (आ.14-19)	102
अल्लाह और रसूलुल्लाह (ﷺ) के दुश्मन ज़लील होंगे (आ.:20-22)	104

मोमिन सबसे बढ़कर अल्लाह और रसूल से मुहब्बत रखते हैं	105
तफ़्सीर सूरह हश्र	107
बनू नज़ीर का तफ़्सीली वाक़िया(आ.:1-5)	109
ग़ज़्व-ए-बनू नज़ीर का मुख़्तसर क़िस्सा :	111
माले फ़ैय की तफ़्सील (आयत : 6-7)	115
मुहाजिरीन और अन्सार के फ़ज़ाइल (आ:8-10)	120
मुनाफ़िक़ों की चालबाज़ियाँ(आ.:11-17)	127
एक राहिब का वाक़िया	128
अल्लाह तआला से डरते रहो(आ.:18-20)	130
कुरआन की अज़मत (आयत : 21-24)	133
अल्लाह तआला के अस्माए हुसना का बयान	135
तफ़्सीर सूरह मुम्तहिना	137
कुफ़्फ़ार व मुश्रिकीन से दोस्ती न रखो	139
हज़रत हातिब (रज़ि.) का वाक़िया	139
हज़रत इब्राहीम (अलै.) बेहतरीन नमूना (आयत : 4-6)	144
हिदायत अल्लाह के हाथ में है (आ.7-9)	147
मुहाजिर औरतों का इम्तिहान(आ.:10-11)	150
(आयत : 12)	154
औरतों से बैअत का बयान	154
काफ़िर अहले क़ुबूर से नाउम्मीद हो चुके हैं (आयत : 13)	160
तफ़्सीर सूरह सफ़्फ़	161
सूरत का तआरुफ़ और शाने नुज़ूल	162
आयत 1-4	163
जो कहो वो करो	163
जिहाद की फ़र्ज़िय्यत	164
जिहाद के फ़ज़ाइल	165
पैग़म्बरों की तकालीफ़ का बयान (आ.:5-6)	167
आँहज़रत (ﷺ) के फ़ज़ाइल	167
आँहज़रत (ﷺ) हज़रत ईसा (अलै.) की बशारत हैं	168
अल्लाह का दीन रोशन है (आयत : 7-9)	170
बेहतरीन तिजारत (आ.:10-13)	171
पैग़म्बर (अलै.) की मदद करो (आ.:14)	172
हज़रत ईसा (अलै.) के साथियों का ज़िक्र	173
तफ़्सीर सूरह जुमुआ	175
इल्म अल्लाह तआला अता करता है (आ.1-4)	177
यहूद की मज़म्मत (निंदा) (आ.: 5-8)	180
जुम्आ का मआना व मफ़्हूम(आ.:9-10)	181
जुम्आ के फ़ज़ाइल	182
जुम्आ के मसाइल	182
जुम्आ की अज़ान	184
जुम्आ के लिये ख़रीदो-फ़रोख़्त छोड़ दो	184
जुम्आ और तिजारत (आयत 11)	185
तफ़्सीर सूरह मुनाफ़िक़ून	187
मुनाफ़िक़ों की मज़म्मत (आयत 1-4)	189
मुनाफ़िक़ों की बद ख़स्लतें (आयत 5-8)	190
अब्दुल्लाह बिन उबय का वाक़िया	191
माल और औलाद की मुहब्बत और अल्लाह के ज़िक्र से ग़फ़लत (आ.:9-11)	197
तफ़्सीर सूरह तग़ाबुन	199
अल्लाह की तस्बीह (आ.:1-4)	200
काफ़िरों की सज़ा (आ. 5-10)	202
मुश्रिकीन क़यामत के मुन्किर (इन्कारी) हैं	202
मुसीबत भी अल्लाह की मशिय्यत (मर्ज़ी) से आती है (आ.: 11-13)	204
अफ़ज़ल अमल का तज़्किरा	204
औरतों और बच्चों की तर्बियत (आ:14-18)	206
तफ़्सीर सूरह तलाक़	209
तलाक़ के मसाइल (आयत : 1)	209
इद्दत की हिफ़ाज़त	212
इद्दत नफ़क़ा और रुक्की	212
इद्दत के मसाइल (आयत : 2-3)	214
हामिला और नाउम्मीद औरत की इद्दत	218
औरतों पर ख़र्च करना (आ.:6-7)	221
अल्लाह तआला की इताअत करो (आयत 8-11)	223
सात ज़मीनों का ज़िक्र (आ.: 12)	225
तफ़्सीर सूरह तहरीम	227
शाने नुज़ूल के बारे में मुफ़स्सिरीन (रह.) के अक़्वाल (आ. : 1-5)	229

अज़्वाजे मुतह्हरात (रज़ि.) का ज़िक्र	235
जहन्नम से बचो और घर वालों को बचाओ (आयत : 6-8)	237
हज़रत नूह (अलै.) और लूत (अलै.) की बीवियों का ज़िक्र	241
हज़रत आसिया और हज़रत मरयम (अलै.) के फ़ज़ाइल (आयत : 11-12)	243
तफ़्सीर सूरह मुल्क	246
सूरह मुल्क की फ़ज़ीलत और फ़वाइद	247
मौत व हयात का ख़ालिक़ अल्लाह है (आ: 1-5)	249
आयाते इलाही को झुठलाने वालों का बुरा अन्जाम (आयत 6-11)	251
अल्लाह तआला से ग़ायबाना डरने की फ़ज़ीलत (आ.: 12-15)	253
अल्लाह तआला सब कुछ जानता है	253
अल्लाह के अज़ाब से बेख़ौफ़ नहीं होना चाहिये (आ. 16-19)	254
बातिल अक़ीदे की तर्दीद (आ.: 20-27)	256
पैग़म्बर का काम आगाह कर देना है	257
काफ़िरों को अज़ाबे अलीम से कौन बचायेगा? (आयत: 28-30)	258
पानी अल्लाह तआला की नेमत	258
तफ़्सीर सूरह क़लम	259
नून का मफ़्हूम (आयत : 1-7)	260
क़लम का ज़िक्र	262
अख़्लाक़े नबवी (ﷺ) के कुछ वाक़ियात	262
बुरे अख़्लाक़ की मज़म्मत (आ. : 8-16)	265
ज़नीम का मफ़्हूम	267
बाग़ वालों का तफ़्सीली वाक़िया (आ. 8-33)	269
नेक और गुनहगार बराबर न होंगे (आ. 34-41)	272
मुज्रिम रोज़े क़यामत सज्दा न कर पायेगा (आयत : 42-47)	273
सरकश नज़रें न उठा सकेंगे	274
हज़रत यूनुस (अलै.) का वाक़िया (आयत : 48-52)	275
नज़रे बद का इलाज और बदशगूनी की मज़म्मत	276
चंद मुफ़ीद अमलियात	277
तफ़्सीर सूरह हाक़्क़ह	280
हाक़्क़ह क़यामत का नाम (आ. : 1-12)	282
आद व समूद के अज़ाब का तज़्किरा	282
फ़िरऔनियों और गुज़िश्ता अक़्वाम की बर्बादी	283
सूर फूंके जाने का वक़्त (आ.: 13-18)	285
अर्श उठाने वाले फ़रिश्तों का ज़िक्र	286
जिनको नामाए आमाल दायें हाथ में मिलेगा (आयत : 19-24)	287
वो जिनको नामाए आमाल बायें हाथ में दिया जायेगा (आयत : 25-37)	290
अल्लाह पर ईमान और मिस्कीन को खाना खिलाना	291
कुरआन कलामे इलाही है (आ: 38-43)	292
रसूलुल्लाह (ﷺ) को कुरआन में कमी-बेशी का इख़्तियार नहीं (आ.: 44-52)	293
कुरआन नसीहत है	293
तफ़्सीर सूरह मआरिज	295
आयत : 1-7	296
मआरिज का मफ़्हूम	297
पचास हज़ार साल का रोज़े क़यामत	297
क़यामत की हौलनाकियाँ	300
बेसब्री इंसानी आदत (आयत 19-35)	303
मालों में ग़रीब का हिस्सा	304
आयत : 36-44	306
काफ़िरों की जन्नत में जाने की ख़्वाहिश	306
मश्रिक़ और मग़्रिब का रब	307
झुठलाने वालों की रोज़े क़यामत पेशी	308
तफ़्सीर सूरह नूह	309
हज़रत नूह (अलै.) की तब्लीग़ (आ.: 1-4)	310
हज़रत नूह (अलै.) की क़ौम की हटधर्मी (आयत 5-20)	312
फ़ायदा	313
क़ौमे नूह की रविश (आ.: 21-24)	315
क़ौमे नूह के बुतों का ज़िक्र	316
शिर्क का सबब अन्धी अक़ीदत है	316
हज़रत नूह (अलै.) की बद्दुआ और अज़ाब (आयत 25-28)	318

तफ़्सीर सूरह जिन्न	320
जिन्नों ने भी क़ुरआन सुना (आयत : 1-7)	322
जिन्नों पर पाबंदी (आ. : 8-10)	324
शैतानों में हलचल	325
जिन्नात का ऐतिक़ाद और अमली हालत (आयत : 11-17)	327
सिर्फ़ अल्लाह तआला को पुकारो	329
क्या आँहज़रत (ﷺ) ग़ैब जानते थे? (आयत : 25-28)	331
तफ़्सीर सूरह मुज़्ज़म्मिल	333
सूरत का शाने नुज़ूल	334
पैग़म्बर (अलै.) को नमाज़े तहज्जुद का हुक्म (आ. : 1-6)	335
तहज्जुद के फ़ायदे	338
मुन्किरों के लिये अ़ज़ाब (आ. : 10-18)	342
कुफ़्फ़ार की गिरफ़्त	342
(आयत : 19-20)	344
फ़ातिहा ख़ल्फ़ुल इमाम का मसला	345
फ़ी सबीलिल्लाह ख़र्च करो	347
तफ़्सीर सूरह मुद्दस्सिर	348
क़ुरआन की दूसरी वह्य (आ.:1-10)	349
सूरह मुद्दस्सिर का शाने नुज़ूल	350
सूर फूंका जाना	352
वलीद बिन मुग़ीरह की मज़म्मत (अ.11-30)	353
जहन्नम और जन्नत का तज़्किरा	356
जहन्नम के दारोग़ों का ज़िक्र(आ.:31-37)	358
फ़रिश्तों की कसरत का ज़िक्र	359
हर कोई अपने आमाल का जवाबदेह होगा	362
तफ़्सीर सूरह क़ियामह	364
अल्लाह तआला क़सम उठाता है(आ.1-15)	366
नफ़्से लव्वामा की क़सम	366
तौबा की उम्मीद पर गुनाह	367
आँहज़रत का क़ुरआन पढ़ना और याद करना (आयत : 16-25)	369
आलमे नज़अ का ज़िक्र (आ.: 26-40)	373
फ़ायदा	375
तफ़्सीर सूरह दहर	377
तआरुफ़ सूरते दहर	378
इंसान की पैदाइश से पहले की हालत (आ.1-3)	378
(आयत : 4-12)	381
नेकों की जज़ा	381
जन्नतियों पर इनामात की बारिश (आ.:13-22)	385
क़ुरआन का नुज़ूल बतदरीज हुआ (आ.23-31)	389
तफ़्सीर सूरह मुर्सलात	391
तआरुफ़े सूरत	392
(आयत : 1-15)	393
क़यामत क़रीब है	393
गुनहगारों का अन्जाम हलाकत है (आ.16-28)	395
आयत : 29-40	396
जहन्नम का ज़िक्र	396
जन्नत और जन्नतियों का ज़िक्र(आ.:41-50)	398
तफ़्सीर सूरह नबा	400
क़यामत यक़ीनन आयेगी (आ.1-16)	402
अल्लाह तआला ने ज़मीन बनाई	402
अल्लाह तआला ने इंसान को जोड़ा-जोड़ा बनाया	402
क़यामत का इल्म अल्लाह तआला ही के पास है (आयत :17-30)	405
जन्नत में ईनामाते रब्बानी का तज़्किरा (आयत : 31-36)	408
रोज़े क़यामत बग़ैर इजाज़त कोई बोल न सकेगा (आ. : 37-40)	409
तफ़्सीर सूरह नाज़िआत	411
फ़रिश्तों के कुछ कामों का तज़्किरा (आ.1-14)	412
हज़रत मूसा (अलै.) का वाक़िया (आ.15-26)	415
क़ुदरते बारी तआला के दलाइल (आ.27-33)	417
क़यामत की तल्ख़ियाँ (आयत 34-46)	418
तफ़्सीर सूरह अ़बस	420
सूरह अ़बस का शाने नुज़ूल और हज़रत इब्ने उम्मे मक्तूम (रज़ि.) की फ़ज़ीलत (आ 1-16)	421
मरने के बाद उठने के अक़्ली दलाइल (आयत : 17-32)	424
अल्लाह तआला के एहसानात का तज़्किरा	426

क़यामत की हौलनाकियाँ(आ.: 33-42)	427
शफ़ाअत का तज़्किरा	427
तफ़्सीर सूरह तकवीर	429
तआरुफे सूरत	430
क़यामत के मनाज़िर (आ.:1-14)	431
ज़माने-ए-जाहिलिय्यत की एक ज़ालिमाना रस्म	434
हज़रत मुहम्मद (ﷺ) की फ़ज़ीलत (आ.15-29)	436
तफ़्सीर सूरह इन्फ़ितार	439
तआरुफ़े सूरत	440
क़यामत के मनाज़िर (आ.:1-12)	441
रब्बे करीम से क्यों दूर हो	441
आयत 13-19	444
तफ़्सीर सूरह मुतफ़्फ़िफ़ीन	445
नाप-तौल में कमी करने वालों के लिये हलाकत (आयत : 1-6)	446
सिज्जीन गुनहगारों का नामाए आमाल है (आयत : 7-17)	449
नेकोकारों का नामा-ए-आमाल (आ.18-28)	452
रहीक़िम्मख़्तूम का तज़्किरा	453
अहले ईमान को मज़ाक़ करने वालों का अन्जाम (आ.:29-36)	454
तफ़्सीर सूरह इन्शिक़ाक	456
तआरुफ़े सूरत	458
आसमान फट जायेगा (आयत : 1-15)	458
(शफ़क़) सुर्ख़ी की क़सम और लोगों की हालत (आ.:16-25)	461
तफ़्सीर सूरह बुरूज	464
तआरुफ़े सूरत	465
बुरूजे आसमानी की क़सम (आ.:1-10)	466
यौमे मशहूद क्या है?	466
खाइयों वालों का वाक़िया	468
जन्नत की नहरों का तज़्किरा (आ.:11-22)	475
तफ़्सीर सूरह तारिक़	477
सूर-ए-तारिक़ का तआरुफ़	478
इंसान की हक़ीक़त (1-10)	479
कुरआन के फ़ैसले बरहक़ हैं (आ.:11-17)	480
तफ़्सीर सूरह अअ्ला	481
तआरुफ़े सूरत	482
ख़ालिक़ की कुदरतें (आ.:1 से 13)	483
आसमान व ज़मीन की पैदाइश	484
कामयाब कौन? (आ.:14 से 19)	485
तफ़्सीर सूरह ग़ाशिया	488
तआरुफ़े सूरत	489
क़ियामत का तज़्किरा (आ.: 1 से 7)	489
नेकों पर इन्आमात (आ.:8 से 16)	490
क्या मुंकिरीन अल्लाह तआला की निशानियों को नहीं देखते (आ.:17 से 26)	492
तफ़्सीर सूरह फ़ज्र	495
तआरुफ़े सूरत	496
फ़ज्र की क़सम और अल्लाह तआला की कुदरतों का तज़्किरा (आयत : 1 से 14)	497
जुफ़्त और ताक़ से क्या मुराद है	497
फ़ज्र का मफ़्हूम :	498
फ़ायदा	500
फ़सादियों की हलाकत का तज़्किरा	501
(आयत : 15 से 30)	503
क़ियामत की हौलनाकियाँ	503
तफ़्सीर सूरह बलद	506
मक्का मुकर्रमा की फ़ज़ीलत (आ.:1 से10)	507
गुलाम आज़ाद करने का सवाब, अक़बा से क्या मुराद है? (आयत : 11 से 20)	510
ग़रीब व मिस्कीन को खाना खिलाओ	511
तफ़्सीर सूरह शम्स	513
सूरज और चाँद की क़सम (आ.:1 से 10)	514
तज़्किया नफ़्स	516
समूदियों की सरकशी का अंजाम (आ.11 से 15)	518
तफ़्सीर सूरह लैल	520
दिन और रात की क़सम और नेक व बुरे का अंजाम (आ.:1 से 11)	521
ज़ालिमों का अंजाम (आ.12 से 21)	525
फ़ज़ाइले सिद्दीक़े अकबर (रज़ि.)	526

तफ़्सीर सूरह ज़ुहा	528
तआरुफ़े सूरत	529
शाने नुज़ूल (आयत : 1 से 11)	530
हुज़ूर (ﷺ) की शाने मुबारक	531
मिस्कीन को न झिड़को	533
तफ़्सीर सूरह अलम् नशरह	535
अल्लाह ने अपने पैग़म्बर (ﷺ) का सीना कुशादा कर दिया (आयत : 1 से 8)	536
अल्लाह तआला ने पैग़म्बर (ﷺ) का बोझ हल्का किया	537
सख़्ती के बाद आसानी....	539
तफ़्सीर सूरह तीन	542
अंजीर या तीन क्या है? (आयत : 1 से 8)	543
ज़ेतून और तूरे सीना	544
मक्का की अज़्मत का बयान	544
तफ़्सीर सूरह अलक़	546
अलक़ पहली वह़ी (आ.:1 से 5)	547
अल्लाह से डरते रहो (आयत : 6 से 19)	550
अबू जहल का वाक़िया	551
तफ़्सीर सूरह क़द्र	553
लैलतुल क़द्र की फ़ज़ीलत (आ.: 1 से 5)	554
शाने नुज़ूल	554
रूह से मुराद हज़रत जिब्राईल (عليه السلام) हैं	557
क्या लैलतुल क़द्र पहली उम्मतों में भी थी	558
लैलतुल क़द्र कौनसी रात है	560
लैलतुल क़द्र की तलाश	562
रमज़ान में इबादत ज़्यादा करो	564
तफ़्सीर सूरह बय्यिनह	568
तआरुफ़े सूरत	569
अहले किताब की हठधर्मी (आ.: 1 से 5)	572
फ़ायदा	573
कुफ़्फ़ार का अंजाम (आयत : 6 से 8)	573
फ़ायदा	573
तफ़्सीर सूरह ज़िल्ज़ाल	575
तआरुफ़े सूरत	576
जब ज़मीन पर ज़लज़ला आएगा(आ.:1 से 8)	577
ज़मीन तमाम राज़ खोल देगी	578
हर अमल का बदला मिलेगा	580
तफ़्सीर सूरह आदियात	582
मुजाहिदीन के घोड़ों की फ़ज़ीलत (आ. 1 से 11)	583
सुबह के वक़्त हमला करने वाले घोड़ों का ज़िक्र	584
तफ़्सीर सूरह क़ारिअह	586
क़ियामत खड़खड़ाने वाली है (आ.:1 से11)	587
आग झुलसा देने वाली	588
तफ़्सीर सूरह तकासुर	590
दुनिया की मुहब्बत में आख़िरत से ग़फ़्लत ख़तरनाक है (आयत : 1 से 8)	591
रोज़े क़ियामत नेअमतों के बारे में सवाल होगा	593
किन नेअमतों के बारे में सवाल होगा	595
तफ़्सीर सूरह अस्र	597
तआरुफ़े सूरत	598
फ़ायदा	598
कामयाब ज़िन्दगी के चार उसूल (आ. 1से3)	599
तफ़्सीर सूरह हुमज़ह	600
चुग़लख़ोरी की मज़म्मत (आ.: 1 से 9)	601
नाहक़ माल कमाने वाले के लिए हलाकत है	602
तफ़्सीर सूरह फ़ील	603
अब्रहा का वाक़िया (आयत : 1 से 5)	604
अबाबील का ज़िक्र	609
तफ़्सीर सूरह क़ुरैश	611
तआरुफ़े सूरत	612
क़ुरैश पर रब्बे करीम के ख़ास इन्आमात (आयत : 1 से 4)	612
रब ने अहले मक्का की भूख मिटा दी	613
तफ़्सीर सूरह माऊन	615
क़ियामत के दिन को झुठलाने वाले का अंजाम (आयत :1 से 7)	615
यतीमों को धक्के न दो	615
किन नमाज़ियों के लिए हलाकत है	616
तफ़्सीर सूरह कौसर	619
शाने नुज़ूल और नहरे कौसर(आ.:1 से 3)	620

कुछ फ़वाइद का ज़िक्र	620
कौसर क्या है?	622
नहर से क्या मुराद है	622
फ़ायदा	622
तफ़्सीर सूरह काफ़िरून	625
तआरुफ़े सूरत	626
मोमिन बुतों की इबादत नहीं कर सकता (आयत : 1 से 6)	627
फ़ायदा	628
तफ़्सीर सूरह नस्र	630
तआरुफ़े सूरत	631
अल्लाह की मदद और फ़तह से क्या मुराद है? (आयत : 1 से 3)	632
शाने नुज़ूल	632
तस्बीह करने से क्या मुराद है?	633
तफ़्सीर सूरह लहब	636
शाने नुज़ूल (आयत : 1 से 5)	637
अबू लहब की मज़म्मत	638

तफ़्सीर सूरह इख़्लास	641
इसका शाने नुज़ूल और इसकी फ़ज़ीलत का बयान	642
सूरह इख़्लास एक बेहतरीन वज़ीफ़ा है	644
फ़ायदा	645
तौहीदे इलाही का बयान (आ.: 1 से 4)	647
तफ़्सीर सूरह फ़लक़	650
तआरुफ़ और फ़ज़ाइल	651
फ़ायदा	651
फ़लक़ के मअ़नी (आ. : 1 से 5)	654
गिरहों (गाँठों) पर फूँकने वालियाँ	655
हुज़ूर (ﷺ) पर जादू करने की कोशिश	655
तफ़्सीर सूरह नास	657
अल्लाह की तीन सिफ़ात (आ.: 1 से 6)	658
शैतान वस्वसे डालते हैं	658
शैतान जिन्न और इंसान दोनों में होते हैं	659
मुअ़व्वज़तैन का पढ़ना जादू वग़ैरह से हिफ़ाज़त का ज़रिया है	660

FLOW CHART

तरतीबी नक्श-ए-रब्त

MACRO-STRUCTURE

नज़्मे-जली

सूरह वाक़िअ़ह - 56

आयात : 96, मक्की, पैराग्राफ : 7

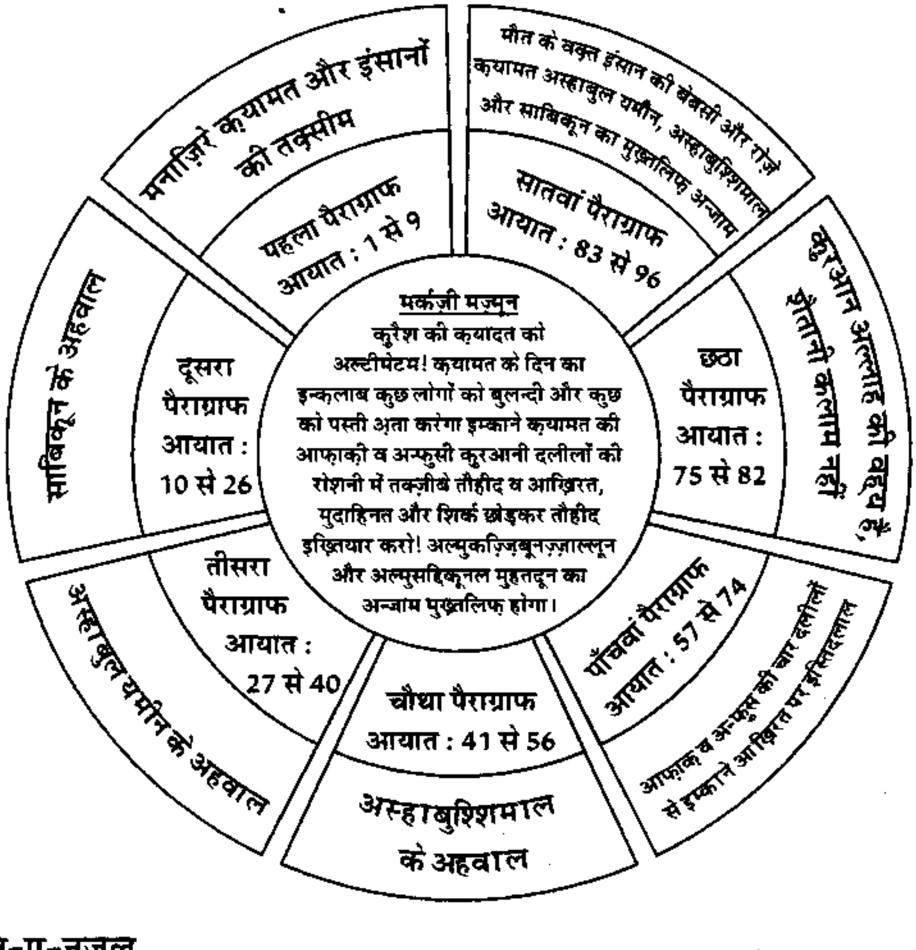

ज़मान-ए-नुज़ूल

सूरह वाक़िअ़ह हज़रत उ़मर (रज़ि.) के क़ुबूले इस्लाम से पहले नाज़िल हो चुकी थी। सूरह वाक़िअ़ह, सूरह ताहा के नुज़ूल और हिजरते हब्शा (रजब 5 नबवी) के बाद और हज़रत उ़मर (रज़ि.) के क़ुबूले इस्लाम (ज़िल्हिज्जा 6 नबवी) के दरम्यान में किसी वक़्त (ग़ालिबन 5 नबवी में) नाज़िल हुई।

तफ़्सीर सूरह वाक़िअह

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ ○

तर्जुमा : ''शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है।''

***

اِذَا وَقَعَتِ الۡوَاقِعَةُ ۙ﴿۱﴾ لَيۡسَ لِوَقۡعَتِهَا كَاذِبَةٌ ۘ﴿۲﴾ خَافِضَةٌ رَّافِعَةٌ ﴿۳﴾ اِذَا رُجَّتِ
الۡاَرۡضُ رَجًّا ﴿۴﴾ وَّبُسَّتِ الۡجِبَالُ بَسًّا ﴿۵﴾ فَكَانَتۡ هَبَآءً مُّنۡۢبَثًّا ﴿۶﴾ وَّكُنۡتُمۡ اَزۡوَاجًا
ثَلٰثَةً ﴿۷﴾ فَاَصۡحٰبُ الۡمَيۡمَنَةِ ۙ مَاۤ اَصۡحٰبُ الۡمَيۡمَنَةِ ﴿۸﴾ وَاَصۡحٰبُ الۡمَشۡـَٔمَةِ ۙ مَاۤ اَصۡحٰبُ
الۡمَشۡـَٔمَةِ ﴿۹﴾ وَالسّٰبِقُوۡنَ السّٰبِقُوۡنَ ﴿۱۰﴾ اُولٰٓئِكَ الۡمُقَرَّبُوۡنَ ﴿۱۱﴾ فِىۡ جَنّٰتِ النَّعِيۡمِ ﴿۱۲﴾

तर्जुमा : ''जब क़यामत क़ायम हो जायेगी। (1) जिसके वाक़ेअ होने में कोई झूठ नहीं। (2) वो पस्त करने वाली और बुलंद करने वाली होगी। (3) जब कि ज़मीन ज़लज़ले के साथ हिला दी जायेगी। (4) और पहाड़ बिल्कुल रेज़ा-रेज़ा कर दिये जायेंगे। (5) फिर वो मिस्ल परागन्दा गुबार के हो जायेंगे। (6) और तुम तीन जमाअतों में हो जाओगे। (7) पस दाहिने हाथ वाले, कैसे अच्छे हैं दाहिने हाथ वाले। (8) और बायें हाथ वाले, क्या हाल है बायें हाथ वालों का। (9) और जो आगे वाले हैं वो तो आगे वाले ही हैं। (10) वो बिल्कुल नज़दीकी हासिल किये हुए हैं। (11) आरामदेह जन्नतों में हैं।'' (12)

तआरुफ़े सूरत : एक मर्तबा हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ (रज़ि.) ने रसूलुल्लाह (ﷺ) से कहा, ऐ अल्लाह के रसूल! आप बूढ़े हो गये। आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'हाँ! मुझे सूरह हूद ने और सूरह वाक़िअह ने और सूरह वल्मुर्सलात ने और सूरह अम्म यतसाअलून ने और सूरह इज़श्शम्सु कुव्विरत ने बूढ़ा कर दिया।' इस हदीस को इमाम तिर्मिज़ी (रह.) लाये हैं और इसे हसन ग़रीब कहते हैं। (तिर्मिज़ी : किताब तफ़्सीरुल क़ुरआन, बाब व

मिन सूरतिल वाक़िअह : 3297, वहुव सहीह। मज़ीद तख़रीज के लिये देखिये सूरह हूद)

हाफ़िज़ इब्ने असाकिर (रह.), हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) के वाक़ियात में एक रिवायत लाये हैं कि जब हज़रत अब्दुल्लाह बीमार हुए जिस बीमारी से आप जाँ बर न हुए (फ़ौत हो गए), उस बीमारी में हज़रत उसमान बिन अफ़्फ़ान (रज़ि.) उनकी इयादत के लिये तशरीफ़ ले गये। पूछा, आपको क्या शिकवा है? फ़रमाया, अपने गुनाहों का। दरयाफ़्त किया, ख़्वाहिश क्या है? फ़रमाया, अपने रब की रहमत की। पूछा, किसी तबीब (डॉक्टर) को भेज दूँ? फ़रमाया, तबीब ने ही तो बीमारी में डाला है। पूछा, कुछ माल भेज दूँ? फ़रमाया, मुझे माल की कोई हाजत नहीं। कहा, आपके बाद आपके बच्चों के काम आयेगा। फ़रमाया, क्या मेरी बच्चियों की निस्बत आपको फ़क़ीरी का डर है? सुनिये मैंने अपनी सब लड़कियों को कह दिया है कि वो हर रात सूरह वाक़िअह पढ़ लिया करें, मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना है, "जो शख़्स सूरह वाक़िअह को हर रात पढ़ लिया करे उसे हर्गिज़-हर्गिज़ फ़ाक़ा न पहुँचेगा।" (सनद ज़ईफ़ : इसकी सनद में अबू शुजाअ या शुजाअ और सुरी बिन यहया अश्शैबानी दोनों मज्हूल रावी हैं।) इस वाक़िये के रावी हज़रत अबू ज़बीह भी इस सूरत को बिला नाग़ा पढ़ा करते थे।

मुस्नद अहमद में है हज़रत जाबिर (रज़ि.) फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) नमाज़ें इसी तरह पढ़ते थे जिस तरह तुम आज पढ़ते हो, लेकिन आप (ﷺ) की नमाज़ तख़फ़ीफ़ (हल्की) वाली होती थी। फ़ज्र की नमाज़ में आप (ﷺ) सूरह वाक़िअह और इसी जैसी सूरतें तिलावत फ़रमाया करते थे। (अहमद : 5/104 और सनद सहीह है।)

क़यामत बरहक़ है (आयत 1-12) : वाक़िअह क़यामत का नाम है क्योंकि इसका होना यक़ीनी अम्र है जैसे और आयत में है (فَيَوْمَئِذٍ وَّقَعَتِ الْوَاقِعَةُ) उस दिन हो पड़ने वाली हो पड़ेगी, उसका वाक़ेअ होना हतमी (यक़ीनी) अम्र है, न उसे कोई टाल सके, न हटा सके। वो अपने मुक़र्ररह वक़्त पर आकर ही रहेगी। जैसे और आयत में है (اِسْتَجِيْبُوْا لِرَبِّكُمْ) अपने परवरदिगार की बातें मान लो, इससे पहले कि वो दिन आये जिसे कोई दूर करने वाला नहीं। और जगह फ़रमाया, (سَاَلَ سَآئِلٌۢ بِعَذَابٍ وَّاقِعٍ) साइल का सवाल उस अज़ाब से है जो यक़ीनन आने वाला है जिसे कोई रोक नहीं सकता। और आयत में है, (يَوْمَ يَقُوْلُ كُنْ فَيَكُوْنُ) जिस दिन अल्लाह तआला फ़रमायेगा, हो जा! तो हो जायेगी। उसी का क़ौल हक़ है उसी का मालिक है जिस दिन सूर फूंका जायेगा वो आलिमे ग़ैब व ज़ाहिर है और वो हकीम व ख़बीर है। क़यामत काज़िबा नहीं यानी बरहक़ है ज़रूर होने वाली है, उस दिन न तो दोबारा आना है, न वहाँ से लौटना है, न वापस आना है।

क़यामत का तज़्किरा : (كَاذِبَةٌ) मस्दर है जैसे (عَاقِبَةٌ) और (عَافِيَةٌ) वो दिन पस्त करने वाला और तरक़्क़ी देने वाला है। बहुत से लोगों को नीचों का नीच करके जहन्नम में पहुँचा देगा जो दुनिया में बड़े इज़्ज़त व वक़अत वाले थे और बहुत से लोगों को वो ऊँचा कर देगा। आला इल्लिय्यीन और जन्नते नईम तक पहुँचा देगा। गो दुनिया में वो पस्त और बेक़द्र थे। अल्लाह तआला के दुश्मन ज़लील होकर जहन्नमी बन जायेंगे और

औलिया अल्लाह अ़ज़ीज़ होकर जन्नती हो जायेंगे। मुतकब्बिरीन को वो ज़लील कर देगी और मुतवाज़िईन को वो अ़ज़ीज़ कर देगी। वो नज़दीक व दूर वालों को सुना देगी और हर एक को चौकन्ना कर देगी। वो नीचा करेगी और क़रीब वालों को सुनायेगी, फिर ऊँची होगी और दूर वालों को सुनायेगी। ज़मीन सारी की सारी लरज़ने लगेगी। चप्पा-चप्पा कपकपाने लगेगा। तूल व अ़रज़ ज़मीन में ज़लज़ले पड़ जायेगा और बेतरह हिलने लगेगी। ये हालत हो जायेगी कि गोया छलनी में कोई चीज़ है जिसे कोई हिला रहा है और आयत में है (إِذَا زُلْزِلَتِ الْأَرْضُ زِلْزَالَهَا)

और जगह (يَا أَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوا رَبَّكُمْ إِنَّ زَلْزَلَةَ السَّاعَةِ شَيْءٌ عَظِيمٌ) लोगो! अल्लाह तआ़ला से डरो, जो तुम्हारा रब है यक़ीन मानो कि क़यामत का ज़लज़ला बहुत बड़ी चीज़ है। फिर फ़रमाया कि पहाड़ उस दिन रेज़ा-रेज़ा हो जायेंगे। दूसरी जगह अल्फ़ाज़ (كَثِيبًا مَّهِيلًا) आये हैं। पस वो मिस्ल गुबार परेशान के हो जायेंगे जिसे हवा इधर-उधर बिखेर दे और कुछ न रहे। (هَبَاءً) उन शरारों को भी कहते हैं जो आग जलाते वक़्त पतिंगों की तरह उड़ते हैं, नीचे गिरने पर वो कुछ नहीं रहते। (مُنْبَثًّا) उस चीज़ को कहते हैं जिसे हवा ऊपर कर दे और फैला कर नाबूद कर दे। जैसे पत्तों के चूरे को हवा इधर से उधर कर देती है। इस क़िस्म की और आयतें भी बहुत सी हैं जिनसे साबित है कि पहाड़ अपनी जगह से टल जायेंगे। टुकड़े हो जायेंगे, फिर रेज़ा-रेज़ा होकर बेनाम व निशान हो जायेंगे। लोग उस दिन तीन क़िस्मों में बंट जायेंगे।

एक जमाअ़त अ़र्श के दायें होगी और ये लोग वो होंगे जो हज़रत आदम (अ़लै.) की दायें करवट से निकले थे और नामा-ए-आ़माल दाहिने हाथ में दिये जायेंगे और दायें जानिब चलाये जायेंगे। ये जन्नतियों का आ़म गिरोह है।

दूसरी जमाअ़त अ़र्श के बायें जानिब होगी ये वो लोग होंगे जो हज़रत आदम (अ़लै.) की बायें करवट से निकाले गये थे। इन्हें नामा-ए-आ़माल बायें हाथ में दिये गये थे और बायें तरफ़ की राह पर लगाये गये थे ये सब जहन्नमी हैं। अल्लाह तआ़ला हम सबको महफ़ूज़ रखे, आमीन।

तीसरी जमाअ़त अल्लाह अ़ज़्ज़ व जल्ल के सामने होगी ये ख़ासुल ख़ास लोग हैं। ये अस्हाबे यमीन से भी ज़्यादा बावक़अ़त और ख़ास क़ुर्ब के मालिक है। ये अहले जन्नत के सरदार हैं। इनमें रसूल हैं, अम्बिया हैं, सिद्दीक़ व शुहदा हैं। ये तादाद में बनिस्बत दायें हाथ वालों के कम हैं। पस ये तीन क़िस्म तमाम अहले महशर की हो जायेगी। जैसेकि इस सूरत के आख़िर में भी मुख़्तसर तौर पर उन की यही तक़सीम की गई है। इसी तरह सूरह मलाइका में फ़रमाया, (ثُمَّ أَوْرَثْنَا الْكِتَابَ الَّذِينَ اصْطَفَيْنَا مِنْ عِبَادِنَا فَمِنْهُمْ ظَالِمٌ لِّنَفْسِهِ وَمِنْهُمْ مُّقْتَصِدٌ وَمِنْهُمْ سَابِقٌ بِالْخَيْرَاتِ بِإِذْنِ اللَّهِ) यानी फिर हमने अपनी किताब का वारिस़ अपने चीदा (चुने हुए) बन्दों को बनाया, पस उनमें से कुछ तो अपने ऊपर ज़ुल्म करने वाले हैं और कुछ मियाना रविश हैं और कुछ अल्लाह के हुक्म से नेकियों की तरफ़ आगे बढ़ने वाले हैं। पस यहाँ भी तीन क़िस्में हैं ये उस वक़्त जबकि (ظَالِمٌ لِّنَفْسِهِ) की वो तफ़्सीर लें जो उसके मुताबिक़ है। वरना एक दूसरा क़ौल भी है जो इस आयत की तफ़्सीर के मौक़े पर गुज़र चुका। हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) वग़ैरह भी यही फ़रमाते हैं , दो गिरोह तो जन्नती

और एक जहन्नमी।

नेकों के दरजात : इब्ने अबी हातिम की हदीस में है रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़रमाते हैं, (وَإِذَا النُّفُوسُ زُوِّجَتْ) जब लोगों के जोड़े मिलायें जायें फ़रमाया, क़िस्म-किस्म के यानी हर अमल के आमिल की एक जमाअत। जैसे अल्लाह तआला ने फ़रमाया, तुम तीन क़िस्म पर हो जाओगे। यानी अस्हाबे यमीन, अस्हाबे शिमाल और साबिक़ीन। (सनद ज़ईफ़ : इसकी सनद में वलीद बिन अबी सोर ज़ईफ़ रावी है। अल्मीज़ान : 4/340, 9377) है मुस्नद अहमद में है हुज़ूर (ﷺ) ने इस आयत की तिलावत फ़रमाई और अपने दोनों हाथों की मुट्ठियाँ बंद कर लीं और फ़रमाया, ये जन्नती हैं मुझे कोई परवाह नहीं। (अहमद : 5/239, सनद ज़ईफ़ है। इसकी सनद में हसन का मुआज़ (रज़ि.) से सिमाअ साबित नहीं। जबकि बराअ बिन अब्दुल्लाह ग़ज़वी ज़ईफ़ रावी है। अल्मीज़ान : 1/301, 1140) मुस्नद अहमद में है रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'जानते हो अल्लाह तआला के साये की तरफ़ क़यामत के दिन सबसे पहले कौन लोग जायेंगे? उन्होंने कहा, अल्लाह और रसूल ख़ूब जानते हैं। आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'वो लोग जो जब अपना हक़ दिये जायें, कुबूल कर लें और जो हक़ उन पर हो जब माँगा जाये अदा कर दें और लोगों के लिये भी वही हुक्म करें जो ख़ुद अपने लिये करते हैं। (अहमद : 6/69, सनद ज़ईफ़ है इसकी सनद में इब्ने लहीआ मुख़्तलत रावी है। अत्तक़रीब : 1/44, 574) साबिक़ून कौन लोग हैं? इसके बारे में बहुत से क़ौल हैं। जैसे अम्बिया, अहले इल्लिय्यीन, हज़रत यूशअ बिन नून (अलै.) जो हज़रत मूसा (अलै.) पर सबसे पहले ईमान लाये थे। वो मोमिन जिनका ज़िक्र सूरह यासीन में है जो हज़रत ईसा (अलै.) पर पहले ईमान लाये थे। हज़रत अली बिन अबी तालिब (रज़ि.) जो मुहम्मद (ﷺ) की तरफ़ सबक़त कर गये थे। वो लोग जिन्होंने दोनों क़िब्लों की तरफ़ नमाज़ पढ़ी थी। हर उम्मत के वो लोग जो अपने नबियों पर पहले-पहल ईमान लाये थे। वो लोग जो मस्जिद में सबसे पहले जाते हैं। जो जिहाद में सबसे आगे निकलते हैं। ये सब क़ौल दरअसल सहीह हैं। यानी ये सब लोग साबिक़ून हैं। अल्लाह तआला के फ़रमान को आगे बढ़कर दूसरों पर सबक़त करके कुबूल करने वाले सब इसमें दाख़िल हैं। क़ुरआन करीम में और जगह है (سَارِعُوٓا إِلَىٰ مَغۡفِرَةٖ مِّن رَّبِّكُمۡ)अपने रब की बख़्शिश और उस जन्नत की तरफ़ जल्दी करो जिसकी चौड़ाई आसमान व ज़मीन के बराबर है, पस जिस शख़्स ने इस दुनिया में नेकियों की तरफ़ सबक़त की वो आख़िरत में अल्लाह की नेमतों की तरफ़ भी साबिक़ ही रहेगा। हर अमल की जज़ा उसी जिन्स से होती है जैसा जो करता है वैसा ही पाता है। इसीलिये यहाँ उनकी निस्बत फ़रमाया गया ये मुक़र्रबीने अल्लाह हैं। ये नेमतों वाली जन्नत में हैं।

इब्ने अबी हातिम में हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र (रज़ि.) से मरवी है कि फ़रिश्तों ने दरगाहे बारी तआला में अर्ज़ किया कि परवरदिगार! तूने इब्ने आदम के लिये तो दुनिया बना दी है वो वहाँ खाते-पीते हैं और बीवी-बच्चों से लुत्फ़ उठाते हैं, पस हमारे लिये आख़िरत कर दे। जवाब मिला कि मैं ऐसा नहीं करूँगा। उन्होंने तीन मर्तबा यही दुआ की। पस अल्लाह तआला ने फ़रमाया, मैंने जिसे अपने हाथ से पैदा किया उसे उन जैसा हर्गिज़ न करूँगा जिन्हें मैंने सिर्फ़ लफ़्ज़े कुन से पैदा किया। हज़रत इमाम दारमी (रह.) ने भी इस असर को अपनी किताबुर्रद्द अलल

जहमिय्या में वारिद किया है। इसके अल्फ़ाज़ ये हैं कि अल्लाह अ़ज़्ज़ व जल्ल ने फ़रमाया, जिसे मैंने अपने हाथ से पैदा किया है उसकी नेक औलाद को मैं उस जैसा न करूँगा, जिसे मैंने कहा, हो जाओ! तो वो हो गया।

***

ثُلَّةٌ مِّنَ الْاَوَّلِيْنَ ﴿١٣﴾ وَقَلِيْلٌ مِّنَ الْاٰخِرِيْنَ ﴿١٤﴾ عَلٰى سُرُرٍ مَّوْضُوْنَةٍ ﴿١٥﴾ مُّتَّكِـِٕيْنَ عَلَيْهَا مُتَقٰبِلِيْنَ ﴿١٦﴾ يَطُوْفُ عَلَيْهِمْ وِلْدَانٌ مُّخَلَّدُوْنَ ﴿١٧﴾ بِاَكْوَابٍ وَّاَبَارِيْقَ وَكَاْسٍ مِّنْ مَّعِيْنٍ ﴿١٨﴾ لَّا يُصَدَّعُوْنَ عَنْهَا وَلَا يُنْزِفُوْنَ ﴿١٩﴾ وَفَاكِهَةٍ مِّمَّا يَتَخَيَّرُوْنَ ﴿٢٠﴾ وَلَحْمِ طَيْرٍ مِّمَّا يَشْتَهُوْنَ ﴿٢١﴾ وَحُوْرٌ عِيْنٌ ﴿٢٢﴾ كَاَمْثَالِ اللُّؤْلُؤِ الْمَكْنُوْنِ ﴿٢٣﴾ جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٢٤﴾ لَا يَسْمَعُوْنَ فِيْهَا لَغْوًا وَّلَا تَاْثِيْمًا ﴿٢٥﴾ اِلَّا قِيْلًا سَلٰمًا سَلٰمًا ﴿٢٦﴾

तर्जुमा : ''बहुत बड़ा गिरोह तो अगले लोगों में से होगा। (13) और थोड़े से पिछले लोगों में से। (14) ये लोग सोने के तारों से बने हुए तख़्तों पर (15) एक दूसरे के सामने तकिया लगाये बैठे होंगे। (16) उनके पास ऐसे लड़के जो हमेशा लड़के ही रहेंगे, आमदो-रफ़्त करेंगे। (17) आबख़ोरे और आफ़ताबे लेकर और ऐसा जाम लेकर जो बहती हुई शराब से पुर हो। (18) जिससे न सर में दर्द हो न अ़क़्ल में फ़ुतूर आये। (19) और ऐसे मेवे लिये हुए जो उनकी पसंद के हों। (20) और परिन्दों के गोश्त जो उन्हें मरग़ूब हों। (21) औ गोरी-गोरी बड़ी-बड़ी आँखों वाली हूरें। (22) जो अछूते मोतियों की तरह हैं। (23) ये सिला है उनके आमाल का। (24) न वहाँ बकवास सुनेंगे और न गुनाह की बात। (25) सिर्फ़ सलाम ही सलाम की आवाज़ होगी।'' (26)

जन्नत में इन्आमात (आयत 13-26) : इरशाद होता है कि मुक़र्रबीने ख़ास बहुत से पहले के हैं और कुछ पिछलों में से भी हैं। इन अव्वलीन व आख़िरीन की तफ़्सीर में कई क़ौल हैं। जैसे अगली उम्मतों में से और इस उम्मत में से। इमाम इब्ने जरीर (रह.) इसी क़ौल को पसंद करते हैं। (तबरी : 23/98) और इस हदीस़ को भी इस क़ौल की पुख़्तगी में पेश करते हैं कि हुज़ूर (ﷺ) ने फ़रमाया, 'हम पिछले हैं और क़यामत के दिन पहले हैं।' (सहीह बुख़ारी, किताबुल जुमुअ़ह, बाब फ़रज़ल जुमुअ़ह : 876, सहीह मुस्लिम : 855) और इस क़ौल की ताईद इब्ने अबी हातिम की इस रिवायत से भी हो सकती है कि जब ये आयत उतरी अस्हाबे रसूल पर भारी पड़ा। पस ये आयत उतरी (ثُلَّةٌ مِّنَ الْاَوَّلِيْنَ، وَثُلَّةٌ مِّنَ الْاٰخِرِيْنَ) तो आँहज़रत (ﷺ) ने फ़रमाया, 'मुझे उम्मीद

है कि कुल अहले जन्नत की चौथाई हो, बल्कि तिहाई तुम हो बल्कि आधों-आध तुम हो। तुम आधी जन्नत के मालिक होगे और बाक़ी तमाम उम्मतों में तक़सीम होगी। जिनमें तुम भी शरीक हो। ये हदीस़ मुस्नद अहमद में भी है। (ज़ईफ़ : अहमद : 2/391, शरीकुल क़ाज़ी मुदल्लस व अन्अन, मज्मउज़्ज़वाइद : 1/118)

इब्ने अ़साकिर में है कि हज़रत उ़मर (रज़ि.) ने इस आयत को सुनकर हुज़ूर (ﷺ) की ख़िदमत में अ़र्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल! क्या अगली उम्मतों में से बहुत लोग साबिक़ीन में दाख़िल होंगे और हम में से कम लोग? उसके एक साल के बाद ये आयत नाज़िल हुई कि अगलों में से भी बहुत और पिछलों में से भी बहुत। हुज़ूर (ﷺ) ने हज़रत उ़मर (रज़ि.) को बुलाकर कहा, सुनो! हज़रत आदम (अ़लै.) से लेकर मुझ तक सुल्लह है और सिर्फ़ मेरी उम्मत सुल्लह है। हम अपने इस सुल्लह को पूरा करने के लिये उन हब्शियों को भी ले लेंगे जो ऊँट के चरवाहे हैं, मगर अल्लाह तआ़ला के वह्दहू ला शरीक होने की शहादत देते हों। लेकिन इस रिवायत की सनद में नज़र है। हाँ बहुत सी सनदों के साथ हुज़ूर (ﷺ) का ये फ़रमान स़ाबित है कि मुझे उम्मीद है कि तुम अहले जन्नत की चौथाई हो, आख़िर तक। (सहीह बुख़ारी, किताबुर्रक़ाक़, बाब अल्अशर : 6528, सहीह मुस्लिम : 221) पस अल्हम्दुलिल्लाह ये एक बेहतरीन ख़ुशख़बरी है।

इमाम इब्ने जरीर (रह.) ने जिस क़ौल को पसंद फ़रमाया है उसमें ज़रा ग़ौर करने की ज़रूरत है। बल्कि दरअसल ये क़ौल बहुत कमज़ोर है। क्योंकि अल्फ़ाज़े कुरआन से इस उम्मत का और तमाम उम्मतों से अफ़ज़ल व आ़ला होना स़ाबित है। फिर कैसे हो सकता है कि मुक़र्रबीन बारगाहे समदियत में दूसरी उम्मतों में से तो बहुत से हुए और इस बेहतरीन उम्मत में से कम हों। हाँ ये तौजीह हो सकती है कि उन तमाम उम्मतों के मुक़र्रब मिल कर सिर्फ़ इस उम्मत के मुक़र्रबीन की तादाद से बढ़ जायें। लेकिन बज़ाहिर तो ये मालूम होता है कि कुल उम्मतों के मुक़र्रबीन से सिर्फ़ इस उम्मत के मुक़र्रबीन की तादाद ज़्यादा होगी। आगे अल्लाह को इ़ल्म है।

दूसरा क़ौल इस जुम्ले की तफ़्सीर में ये है कि इस उम्मत के शुरू ज़माने के लोगों में से मुक़र्रबीन की तादाद बहुत ज़्यादा है और बाद के लोगों में कम, और यही क़ौल राजेह है। चुनाँचे हज़रत हसन (रह.) से मरवी है कि आपने इस आयत की तिलावत की और फ़रमाया, साबिक़ीन तो गुज़र चुके ऐ अल्लाह! तू हमें अस्हाबे यमीन में कर दे। दूसरी रिवायत में है कि आपने फ़रमाया, 'इस उम्मत में से जो गुज़र चुके उनमें मुक़र्रबीन बहुत थे।' इमाम इब्ने सीरीन (रह.) भी यही फ़रमाते हैं। कोई शक नहीं कि हर उम्मत में यही होता चला आया है कि शुरू में बहुत से मुक़र्रबीन होते हैं और बाद वालों में ये तादाद कम हो जाती है। तो ये भी मुम्किन है कि मुराद यूँ ही हो यानी हर उम्मत के अगले लोग सबक़त करने वाले ज़्यादा होते हैं बनिस्बत हर उम्मत के पिछले लोगों के।

चुनाँचे सिहाह वग़ैरह की अहादीस़ से स़ाबित है कि हुज़ूर (ﷺ) ने फ़रमाया, 'सब ज़मानों में बेहतर ज़माना मेरा ज़माना है, फिर उसके बाद वाला, फिर उसके मुत्तसिल.... आख़िर तक।' (सहीह बुख़ारी : किताब फ़ज़ाइल अस्हाबुन्नबी, बाब फ़ज़ाइल अस्हाबुन्नबी व मन सहिबन्नबी : 3650, सहीह मुस्लिम : 2535)

हाँ एक हदीस़ में ये भी आया है कि मेरी उम्मत की मिस़ाल बारिश जैसी है न मालूम कि शुरू ज़माने

की बारिश बेहतर हो या आख़िर ज़माने की। (ज़ईफ़ : अहमद : 4/319, हसन बसरी ने अम्मार बिन यासिर (रज़ि.) से सुनी है।)

तो ये हदीस़ जबकि इसकी इस्नाद को सेहत का हुक्म दे दिया जाये महमूल है इस बात पर कि जिस तरह दीन को शुरू के लोगों की ज़रूरत थी जो उसकी तब्लीग़ अपने बाद वालों को करें उसी तरह आख़िर में भी इसे क़ायम रखने वालों की ज़रूरत है। जो लोगों को सुन्नते रसूल पर जमायें, उसकी रिवायतें करें, उसे लोगों पर ज़ाहिर करें। लेकिन फ़ज़ीलत अव्वल वालों की ही रहेगी। ठीक उसी तरह जिस तरह खेत को शुरू बारिश की और आख़िरी बारिश की ज़रूरत होती है लेकिन बड़ा फ़ायदा शुरूआती बारिश से ही होता है इसलिये कि अगर शुरू बारिश न हो तो दाने उगे ही नहीं, न उनकी जड़ें जमें।

बेहिसाब जन्नत में जाने वाले : इसीलिये हुज़ूर (ﷺ) फ़रमाते हैं, 'एक जमाअत मेरी उम्मत में से हमेशा हक़ पर रहकर ग़ालिब रहेगी, उनके दुश्मन उनको नुक़सान न पहुँचा सकेंगे, उनके मुख़ालिफ़ उन्हें रुस्वा और पस्त न कर सकेंगे। यहाँ तक कि क़यामत क़ायम हो जाये और वो इसी तरह हों।' (सहीह बुख़ारी, किताबुल मनाक़िब : 3640-3641, सहीह मुस्लिम : 1920-1924)

अल्ग़र्ज़ ये उम्मत बाक़ी तमाम उम्मतों से अफ़ज़ल व अशरफ़ है और इसमें मुक़र्रबीने रब बनिस्बत दूसरी उम्मतों के बहुत हैं और बहुत बड़े मर्तबे वाले। क्योंकि दीन के कामिल होने और नबी के आली मर्तबा के लिहाज़ से ये सब बेहतर हैं। तवातुर के साथ ये हदीस़ सुबूत को पहुँच चुकी है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'इस उम्मत में से सत्तर हज़ार लोग बग़ैर हिसाब के जन्नत में जायेंगे।' (सहीह बुख़ारी, किताबुर्रिक़ाक, बाब यदख़ुलुल जन्नत सबऊन अल्फ़ा बिग़ैरि हिसाब : 6541-6542, सहीह मुस्लिम : 261,220)

'और हर हज़ार के साथ सत्तर हज़ार और होंगे।' (तिर्मिज़ी, किताब सिफ़तुल क़ियामह, बाब मिन्हु दुख़ूल सबईन अल्फ़ बिग़ैरि हिसाब : 2437, इब्ने माजह : 4286, इसकी सनद हसन है। अन अबी उमामा बाहिली)

तबरानी में है, 'उसकी क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है! तुममें से एक बहुत बड़ी जमाअत क़यामत के दिन खड़ी की जायेगी जो इस क़द्र बड़ी और गिनती में ज़्यादा होगी कि गोया रात आ गई, ज़मीन के तमाम किनारों को घेर लेगी। फ़रिश्ते कहने लगेंगे, सब नबियों के साथ जितने लोग आये हैं उससे बहुत ही ज़्यादा मुहम्मद (ﷺ) के साथ हैं।' (ज़ईफ़ : तबरानी : 3455, मज्मउज़्ज़वाइद : 10/404)

मुनासिब मक़ाम ये है कि बहुत बड़ी जमाअत अगलों में से और बहुत ही बड़ी पिछलों में से वाली आयत की तफ़्सीर के मौक़े पर ये हदीस़ ज़िक्र कर दी जाये जो हाफ़िज़ अबू बकर बैहक़ी (रह.) ने दलाइले नुबूवत में वारिद की है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) जब सुबह की नमाज़ पढ़ते, पाँव मोड़े हुए ही सत्तर मर्तबा ये पढ़ते सुब्हानल्लाहि वबि-हम्दिही अस्तग़्फ़िरुल्लाहु इन्नल्ला-ह का-न तव्वाबा। फिर फ़रमाते सत्तर के बदले सात सौ हैं, जिसके एक दिन के गुनाह सात सौ से भी बढ़ जायें वो बेख़बर है। फिर दो मर्तबा इसी को फ़रमाते। फिर

लोगों की तरफ़ मुँह करके बैठते और चूंकि हुज़ूर (ﷺ) को ख़्वाब अच्छा मालूम था। इसलिये पूछते कि क्या तुममें से किसी ने कोई ख़्वाब देखा है?

इब्ने ज़मल (रज़ि.) कहते हैं, एक दिन उसी तरह हस्बे आदत आप (ﷺ) ने पूछा, तो मैंने कहा, हाँ ऐ अल्लाह के रसूल! मैंने एक ख़्वाब देखा है। फ़रमाया, 'अल्लाह ख़ैर से मिलाये, शर से बचाये, हमारे लिये बेहतरीन बनाये और हमारे दुश्मनों के लिये बदतर बनाये हर क़िस्म की तारीफ़ का मुस्तहिक़ वो अल्लाह है जो तमाम जहानों का पालने वाला है। अपना ख़्वाब बयान करो। मैंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल! मैंने देखा कि एक रास्ता है कुशादा, आसान, नर्म और साफ़ और बेशुमार लोग उस रास्ते में चले जा रहे हैं। ये रास्ता जाते-जाते एक सरसब्ज़ को निकलता है कि मेरी आँखों ने ऐसा लहलहाता हुआ, हरा-भरा बाग़ कभी नहीं देखा। पानी हर सू रवाँ (बह रहा) हैं सब्ज़े से पटा पड़ा है अन्वाअ व अक़्साम (कई तरह) के दरख़्त ख़ुश्नुमा फले-फूले खड़े हैं। अब मैंने देखा कि पहली जमाअत जो आई और उस बाग़ के पास पहुँची तो उन्होंने अपनी सवारियाँ तेज़ कर लीं और दायें-बायें नहीं गये और तेज़ रफ़्तारी के साथ यहाँ से गुज़र गये। फिर दूसरी जमाअत आई जो तादाद में बहुत ज़्यादा थी। जब यहाँ पहुँचे तो कुछ लोगों ने अपने जानवरों को चराना-चुगाना शुरू किया और किसी ने कुछ ले लिया और चल दिये। फिर तो बहुत सारे लोग आये जब उनका गुज़र इस गुल व गुल्ज़ार पर हुआ तो ये तो फूल गये और कहने लगे, ये सबसे अच्छी जगह है। गोया मैं उन्हें देख रहा हूँ कि वो दायें-बायें झुक पड़े। मैंने ये देखा लेकिन मैं आप तो चलता ही रहा। जब दूर निकल गया तो मैंने देखा कि एक मिम्बर सात सीढ़ियों का बिछा हुआ है और आप उसके आला दर्जे पर तशरीफ़ फ़रमा हैं और आपकी दायें जानिब एक साहब हैं गन्दुम गूँ रंग भरी, उंगलियों वाले, दराज़ क़द, जब वो कलाम करते हैं तो सब ख़ामोशी से सुनते हैं और लोग ऊँचे हो-होकर तवज्जह से उनकी बातें सुनते हैं और आपकी बायें तरफ़ एक शख़्स हैं, भरे जिस्म के दरम्याना क़दम के जिनके चेहरे पर बकसरत तिल हैं उनके बाल गोया पानी से तर हैं, जब वो बात करते हैं तो उनके इकराम की वजह से सब लोग झुक जाते हैं। फिर उससे आगे एक शख़्स हैं जो अख़्लाक़ व.आदात में और चेहरे नक़्शे में बिल्कुल आप मुशाबिहत रखते हैं। आप लोग सब उनकी तरफ़ पूरी तवज्जह करते हैं और उनका इरादा रखते हैं। उनसे आगे एक दुबली-पतली बुढ़िया ऊँटनी है। मैंने देखा कि गोया आप उसे उठा रहे हैं। ये सुनकर हुज़ूर (ﷺ) का रंग मुतग़य्यर (चेंज) हो गया। थोड़ी देर में आपकी ये हालत बदल गई और आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'सीधे-सच्चे और सहीह रास्ते से मुराद तो वो दीन है जिसे मैं लेकर अल्लाह की तरफ़ से आया हूँ और जिस हिदायत पर तुम हो। हरा-भरा सब्ज़ बाग़ जो तुमने देखा है वो दुनिया है और उसकी ऐश व इशरत का दिल लुभाने वाला सामान। मैं और मेरे अस्हाब तो उससे गुज़र जायेंगे, न हम उसमें मशग़ूल होंगे न वो हमें चिमटेगी, न हमारा ताल्लुक़ उससे होगा, न उसका ताल्लुक़ हम से। न हम उसकी चाहत करेंगे, न वो हमें लिपटेंगे। फिर हमारे बाद दूसरी जमाअत आयेगी जो हमसे तादाद में बहुत ज़्यादा होगी। उनमें से कुछ तो इस दुनिया में फँस जायेंगे और कुछ बक़द्रे हाजत ले लेंगे और चल देंगे और निजात पा लेंगे। फिर उनके बाद ज़बरदस्त जमाअत आयेगी जो इस दुनिया में बिल्कुल डूब जायेगी और दायें-बायें झुक जायेगी। फ़इन्ना

लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन! अब रहे तुम सो तुम अपनी सीधी ही राह चलते रहोगे यहाँ तक कि मुझसे तुम्हारी मुलाक़ात हो जायेगी। जिस मिम्बर के आख़िरी सातवें दर्जे पर तुमने मुझे देखा, उसकी ताबीर ये है कि दुनिया की उम्र सात हज़ार साल की है। मैं आख़िरी हज़ारवें साल में हूँ। मेरे दायें जिस गन्दुमी रंग मोटी हथेली वाले इंसान को तुमने देखा वो हज़रत मूसा (अलै.) हैं। जब वो कलाम करते हैं तो लोग ऊँचे हो जाते हैं इसलिये कि उन्हें अल्लाह तआला से शर्फ़े हमकलामी हासिल हो चुका है और जिन्हें तुमने मेरे बायें देखा जो दरम्याना क़द के भरे जिस्म के बहुत से तिलों वाले थे जिनके बाल पानी से तर नज़र आते थे वो हज़रत ईसा बिन मरयम (अलै.) हैं। चूंकि उनका इकराम अल्लाह तआला ने किया है हम सब भी उनकी बुज़ुर्गी करते हैं और जिन शैख़ को तुमने बिल्कुल मुझसे देखा है वो हमारे बाप हज़रत इब्राहीम (अलै.) हैं। हम सब उनका क़सद करते हैं और उनकी इक़्तिदा और ताबेदारी करते हैं और जिस ऊँटनी को तुमने देखा कि मैं उसे खड़ा कर रहा हूँ उससे मुराद क़यामत है जो मेरी उम्मत पर क़ायम होगी। न मेरे बाद कोई नबी है न मेरी उम्मत के बाद कोई उम्मत है।' फ़रमाते हैं, उसके बाद रसूलुल्लाह (ﷺ) ने ये पूछना छोड़ दिया कि किसी ने ख़्वाब देखा है? हाँ अगर कोई शख़्स अपने आप अपना ख़्वाब बयान करता तो हुज़ूर (ﷺ) ताबीर दे दिया करते थे। (मौज़ूअ : दलाइलुन्नुबुव्वह लिल्बैहक़ी : 7/36, इसकी सनद मौज़ूअ है। किताबुल मजरूहीन : 1/329-331, सुलैमान बिन अता बरवी अन मस्लमा बिन अब्दुल्लाह जुहनी अशिया मौज़ूआ)

उनके बैठने के तख़्त और आराम करने के पलंग सोने के तारों से बने हुए होंगे जिनमें जगह-जगह मोती टिके हुए होंगे। दुर्र व याक़ूत जड़े हुए होंगे। ये फ़ईल मआना में मफ़ऊल के है। इसीलिये ऊँटनी के पेट के नीचे वाले को वज़ीन कहते हैं। सब के मुँह आपस में एक-दूसरे के सामने होंगे, कोई किसी की तरफ़ पीठ दिये हुए न होगा। वो ग़िलमान उनकी ख़िदमत गुज़ारी में मशग़ूल होंगे जो उम्र में वैसे ही छोटे रहेंगे, न बड़े हों न बूढ़े हों, न उनमें तग़य्युर-तबद्दुल आये। अक्वाब कहते हैं उन कूज़ों (प्यालियों) को जिनकी टूंटी पकड़ने की चीज़ न हो। और अबारीक़ वो आफ़ताबे जो टूंटी और पकड़े जाने के क़ाबिल हों। ये सब शराब की जारी नहर से छलकते हुए होंगे जो शराब न ख़त्म हो न कम हो क्योंकि उसमें चश्मे बह रहे हैं। जाम छलकते हुए हर वक़्त अपने नाज़ुक हाथों में लिये हुए ये गुल अन्दाज साक़ी इधर-उधर गश्त कर रहेंगे। इस शराब से न उन्हें दर्दे सर हो न उनकी अक़्ल ज़ाइल हो बल्कि बावजूद पूरे सुरूर और कैफ़ के अक़्ल व हवास अपनी जगह क़ायम रहेंगे और कामिल लज़्ज़त हासिल होगी। शराब में चार सिफ़ते हैं नशा, सर दर्द, क़ेय और पेशाब। पस परवरदिगारे आलम ने जन्नत की शराब का ज़िक्र करके इन चारों नुक़सान की नफ़ी कर दी कि वो शराब इन नुक़सानात से पाक है। फिर क़िस्म-क़िसम के मेवे और तरह-तरह के परिन्दों के गोश्त उन्हें मिलेंगे। जिस मेवे को जी चाहे और जिस तरह के गोश्त की तरफ़ दिल की रग़बत हो मौजूद हो जायेगा। ये तमाम चीज़ें लिये हुए उनके सलीक़ा शिआर ख़ुद्दाम हर वक़्त उनके आस-पास घूमते रहेंगे। ताकि जिस चीज़ की जब कभी ख़्वाहिश हो ले लें।

जन्नत के मेवे : इस आयत में दलील है कि आदमी मेवे चुन-चुनकर अपनी ख़्वाहिश के मुताबिक़ खा सकता है। मुस्नद अबू यअला मूसिली में है हज़रत अकराश बिन ज़ुवेब (रज़ि.) फ़रमाते हैं कि मैं अपनी क़ौम के सदक़े

के माल लेकर रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। आप (ﷺ) मुहाजिरीन व अन्सार में तशरीफ़ फ़रमा थे। मेरे साथ ज़कात के बहुत से ऊँट थे गोया कि वो रेत के दरख़्तों के चराये हुए नौजवान ऊँट हैं। आप (ﷺ) ने फ़रमाया, तुम कौन हो? मैंने कहा, अकराश बिन ज़ुवेक। फ़रमाया, 'अपना नसब नामा दूर तक बयान करो।' मैंने मुर्रह बिन उबैद तक कह सुनाया और साथ ही कहा कि ज़कात मुर्रह बिन उबैद की है। पस हुज़ूर (ﷺ) मुस्कुराये और फ़रमाने लगे, ये मेरी क़ौम के ऊँट हैं ये मेरी क़ौम के सदक़े का माल है। फिर हुक्म दिया कि सदक़े के ऊँटों के निशान उन पर कर दो और उनके साथ इन्हें भी मिला दो। फिर मेरा हाथ पकड़कर उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा (रज़ि.) के घर तशरीफ़ लाये और फ़रमाया, कुछ खाने को है? जवाब मिला कि हाँ। चुनाँचे एक बड़े लगन में चूरी हुई रोटी आई। आप (ﷺ) ने और मैंने खाना शुरू किया। मैं इधर-उधर से निवाले लेने लगा। तो आप (ﷺ) ने अपने हाथ से मेरा दाहिना हाथ थाम लिया और फ़रमाया, ऐ अकराश! ये तो एक क़िस्म का खाना है एक ही जगह से खाओ। फिर एक सीनी तर खजूरों की या ख़ुश्क खजूरों की आई। मैंने सिर्फ़ मेरे सामने जो थीं उन्हें खाना शुरू किया। हाँ रसूलुल्लाह (ﷺ) सीनी के इधर-उधर से जहां से जो पसंद आती थी ले लेते थे और मुझसे भी फ़रमाया, ऐ अकराश! इसमें हर तरह की खजूरें हैं जहाँ से चाहो खाओ, जिस क़िस्म की खजूर चाहो ले लो। फिर पानी आया, पस हुज़ूर (ﷺ) ने अपने हाथ धोये और वही तर हाथ अपने चेहरे पर और दोनों बाज़ुओं पर और सर पर तीन बार फैर लिये और फ़रमाया, ऐ अक़राश! ये वुज़ू है उसे चीज़ से जिसे आग ने मुतग़य्यर किया हो। (ज़ईफ़ : तिर्मिज़ी, किताबुल इत्अमह, बाब मा जाआ फ़ित्तस्मिया अलत्तआम : 1848, इब्ने माजह : 3274। इसकी सनद में अला बिन फ़ज़ल ज़ईफ़ रावी है।) इमाम तिर्मिज़ी (रह.) इसे ग़रीब बतलाते हैं।

एक ख़्वाब : मुस्नद अहमद में है, रसूलुल्लाह (ﷺ) को ख़्वाब पसंद था। कई बार आप (ﷺ) पूछ लिया करते थे कि किसी ने ख़्वाब देखा है? अगर कोई ज़िक्र करता और फिर हुज़ूर (ﷺ) उस ख़्वाब से ख़ुश होते तो उसे बहुत अच्छा लगता। एक मर्तबा एक औरत आप (ﷺ) के पास आई और कहा, ऐ अल्लाह के रसूल! मैंने आज एक ख़्वाब देखा है कि गोया मेरे पास कोई आया और मुझे मदीना से ले चला और जन्नत में पहुँचा दिया। फिर मैंने एक धमाका सुना जिससे जन्नत में हलचल मच गई। मैंने जो नज़र उठाकर देखा तो फ़लाँ बिन फ़लाँ को देखा। बारह शख़्सों के नाम लिये उन्ही बारह शख़्सों का एक लश्कर बना कर आँहज़रत ने कई दिन हुए एक मुहिम पर रवाना किया हुआ था। फ़रमाती हैं, उन्हें लाया गया। ये अतलस के कपड़े पहने हुए थे, उनकी रगें जोश मार रही थीं हुक्म हुआ कि उन्हें नहरे बेदज में ले जाओ या नहरे बेज़ख़ कहा। जब उन लोगों ने उस नहर में ग़ोता लगाया तो उनके चेहरे चौदहवीं रात के चाँद की तरह चमकने लग गये। फिर एक सोने की सीनी में गदरी खजूरें आईं जो उन्होंने अपनी हस्बे मन्शा खाईं और साथ ही हर तरह के मेवे जो चारों तरफ़ चुने हुए थे। जिस मेवे को उनका जी चाहता था लेते थे और खाते थे, मैंने भी उनके साथ शिरकत की और वो मेवे खाये। मुद्दत के बाद एक क़ासिद आया और कहा, फ़लाँ-फ़लाँ लोग जिन्हें आपने लश्कर में भेजा था शहीद हो गये। ठीक बारह शख़्सों के नाम लिये और ये वही नाम थे जिन्हें उस बीबी साहिबा ने अपने ख़्वाब में देखा था। हुज़ूर (ﷺ) ने उन नेक बख़्त

सहाबिया को फिर बुलवाया और फ़रमाया, अब अपना ख़्वाब दोबारा बयान करो। उसने फिर बयान किया और उन्ही लोगों के नाम लिये जिनके नाम क़ासिद ने लिये थे। (सहीह : अहमद : 3/135)

तबरानी में है कि जन्नती जिस मेवे को दरख़्त से तोड़ेगा वहीं उस जैसा और फल लग जायेगा। (ज़ईफ़ : तबरानी : 1449, अबाद बिन मन्सूर ज़ईफ़ मुदल्लस, मज्मउज़्ज़वाइद : 10/414)

मुस्नद अहमद में है कि जन्नती परिन्द बुख़्ती ऊँट के बराबर हैं जो जन्नत में चरते-चुगते रहते हैं। हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ (रज़ि.) ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल! ये परिन्द तो निहायत ही मज़े के होंगे। आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'उनके खाने वाले उनसे भी ज़्यादा नाज़ व नेमत वाले होंगे। तीन मर्तबा यही जुम्ला इरशाद फ़रमाया।' फिर फ़रमाया, 'मुझे अल्लाह से उम्मीद है कि ऐ अबू बकर! तुम उनमें से हो जो उन परिन्दों का गोश्त खायेंगे।' (हसन : अहमद : 3/221, व सनदहू हसन लिज़ातिही, सियार बिन हातिम सदूक़ हसनुल हदीस़)

तूबा क्या है? हाफ़िज़ अबू अब्दुल्लाह मक़्दिसी की किताब सिफ़तुल जन्नह में है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) के सामने तूबा का ज़िक्र हुआ। पस हुज़ूर (ﷺ) ने हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ (रज़ि.) से पूछा कि जानते हो तूबा क्या है? आपने जवाब दिया, अल्लाह और उसके रसूल को पूरा इल्म है। आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'जन्नत का एक दरख़्त है जिसकी लम्बाई का इल्म बजुज़ अल्लाह तआला के और किसी को नहीं। उसकी एक-एक शाख़ तले तेज़ सवार सत्तर-सत्तर साल तक चला जाये फिर भी उसका साया ख़त्म न हो। उसके पत्ते बड़े चौड़े-चौड़े हैं। उन पर बख़्ती ऊँट के बराबर परिन्द आकर बैठते हैं। अबू बकर (रज़ि.) ने फ़रमाया, फिर तो ये परिन्द बड़ी ही नेमतों वाले होंगे। आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'उनसे ज़्यादा नेमतों वाले उनके खाने वाले होंगे और इन्शाअल्लाह तुम भी उन्ही में से हो।' हज़रत क़तादा (रह.) से भी ये पिछला हिस्सा मरवी है। इब्ने अबी अद्दुन्या में हदीस़ है कि हुज़ूर (ﷺ) से कौसर की बाबत सवाल हुआ तो आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'वो जन्नती नहर है जो मुझे अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल ने अता फ़रमाई है। दूध से ज़्यादा सफ़ेद और शहद से ज़्यादा मीठा उसका पानी है। उसके किनारे बख़्ती ऊँटों की गर्दनों जैसे परिन्द हैं।' हज़रत उमर (रज़ि.) ने फ़रमाया, वो परिन्द तो बड़े मज़े में हैं। आपने फ़रमाया, 'उनका खाने वाला उनसे ज़्यादा मज़े में है।' (हसन : तिर्मिज़ी, किताब सिफ़तुल जन्नह, बाब मा जाअ फ़ी सिफ़ति तैरिल जन्नत : 2542, इमाम तिर्मिज़ी इसे हसन कहते हैं। नसाई फ़िल्कुबरा : 11703, अहमद : 3/220, हाकिम : 2/537)

जन्नती परिन्दे : इब्ने अबी हातिम में है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़रमाते हैं, 'जन्नत में एक परिन्द है जिसके सत्तर हज़ार पर हैं जन्नती के दस्तरख़ान पर वो आयेगा, हर पर से उसके एक क़िस्म निकलेगी जो दूध से ज़्यादा सफ़ेद और मक्खन से ज़्यादा नर्म और शहद से ज़्यादा मीठी है। फिर दूसरे पर से दूसरी क़िस्म निकलेगी। इसी तरह हर पर से एक-दूसरे से जुदागाना, फिर वो परिन्द उड़ जायेगा।' ये हदीस़ बहुत ग़रीब है और इसके रावी वसाफ़ी और उनके उस्ताद दोनों ज़ईफ़ हैं। (ज़ईफ़ुन जिद्दा : सिफ़तुल जन्नत लिअबी नुऐम : 340, इसकी सनद में अतिय्या बिन सअद अल्औफ़ी ज़ईफ़ रावी है। अल्मीज़ान : 3/79, 5667)

इब्ने अबी हातिम में हज़रत कअब (रह.) से मरवी है कि जन्नती परिन्द मिस्ल बुख़्ती ऊँटों के हैं जो जन्नत के फल खाते हैं और जन्नत की नहरों का पानी पीते हैं। जन्नतियों का दिल जिस परिन्द के खाने को चाहेगा वो उसके सामने आ जायेगा, वो जितना चाहेगा जिसका पहलू का गोश्त पसंद करेगा, खायेगा। फिर वो परिन्द उड़ जायेगा और जैसा था वैसा ही हो जायेगा। हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) फ़रमाते हैं, जन्नत के जिस परिन्द को तू चाहेगा वो भुना-भुनाया तेरे सामने आ जायेगा।(ज़ईफ़ुन जिद्दा:सिफ़तुल जन्नत लिअबी नुऐम: 341, अज़्ज़ुअफ़ा लिल्उक़ैली: 1/268, इसकी सनद में हुमैद बिन अ़ता अल्अअ़रज मतरूक रावी है। अल्मीज़ान: 1/614, 2340)

हूर की दूसरी क़िरअत रा के ज़ेर से भी है। पेश से तो ये मतलब है कि जन्नतियों के लिये हूरें होंगी और ज़ेर से मतलब ये है कि गोया अगले ऐराब की मातहती में ये ऐराब भी हैं। जैसे वम्सहू बिरुऊसिकुम व अरजुलिकुम में ज़ेर की क़िरअत है और जैसे कि आ़लियहुम सियाबु सुन्दुसिन ख़ुज़्रिंव्-व इस्तबरक़ में और ये मआ़ना भी हो सकते हैं कि ग़िलमान अपने साथ हूरें भी लिये हुए होंगे, लेकिन ये उनके महलात में और ख़ैमों में न कि आ़म तौर पर। वल्लाहु आ़लम! ये हूरें ऐसी होंगी जैसे तरो-ताज़ा सफ़ेद साफ़ मोती हों। जैसे सूरह साफ़्फ़ात में है, कअन्नहुन्न बैज़ुम्-मक्नून। सूरह रहमान में भी ये वस्फ़ मअ़ तफ़्सीर गुज़र चुका है। ये उनके नेक आ़माल का सिला और बदला है यानी ये तोहफ़े उनकी हुस्न कारगुज़ारी का ईनाम है। ये जन्नत में लग़्व, बेहूदा, बेमआ़ना, ख़िलाफ़े तबअ़ कोई कलिमा भी न सुनेंगे। हिक़ारत और बुराई का एक लफ़्ज़ भी कान में न पड़ेगा। जैसे और आयत में है ला तस्मउ़ फ़ीहा लाग़ियह फ़िज़ूल कलामी से उनके कान महफ़ूज़ रहेंगे। न कोई क़बीह कलाम कान में पड़ेगा। हाँ सिर्फ़ सलामती भरे सलाम के कलिमात एक दूसरे को कहेंगे जैसे और जगह इरशाद फ़रमाया तहिय्यतुहुम फ़ीहा सलामुन 'उनका तोहफ़ा आपस में एक-दूसरे को सलाम करना होगा।' उनकी बातचीत लग़्वियत और गुनाह से पाक होगी।

***

وَاَصْحٰبُ الْيَمِيْنِ ۙ مَآ اَصْحٰبُ الْيَمِيْنِ ۟ؕ فِيْ سِدْرٍ مَّخْضُوْدٍ ۟ۙ وَّطَلْحٍ مَّنْضُوْدٍ ۟ۙ
وَّظِلٍّ مَّمْدُوْدٍ ۟ۙ وَّمَآءٍ مَّسْكُوْبٍ ۟ۙ وَّفَاكِهَةٍ كَثِيْرَةٍ ۟ۙ لَّا مَقْطُوْعَةٍ وَّلَا مَمْنُوْعَةٍ
۟ۙ وَّفُرُشٍ مَّرْفُوْعَةٍ ۟ؕ اِنَّآ اَنْشَاْنٰهُنَّ اِنْشَآءً ۟ۙ فَجَعَلْنٰهُنَّ اَبْكَارًا ۟ۙ عُرُبًا اَتْرَابًا ۟ۙ
لِّاَصْحٰبِ الْيَمِيْنِ ۟ؕ

तर्जुमा : "और दाहिने हाथ वाले, क्या ही अच्छे हैं दाहिने हाथ वाले। (27) वो बग़ैर कांटों की बेरियों (28) और लम्बे-लम्बे सायों (30) और बहते हुए पानियों (31) और बकसरत फलों (32) जो न ख़त्म हों न रोक लिये जायें (33) और ऊँचे-ऊँचे फ़र्शों में होंगे। (34) हमने उनकी

बीवियों को ख़ास तौर पर बनाया है। (35) और हमने उन्हें कुंवारियाँ कर दी हैं। (36) वो महबूबा और हमउम्र हैं। (37) दायें हाथ वालों के लिये हैं।" (38)

नेकों का हाल (आयत 27-38) : साबिक़ीन का हाल बयान करके अब अल्लाह तआला अबरार (नेकों) का हाल बयान फ़रमाता है जो साबिक़ीन से कम मर्तबा हैं। उनका क्या हाल है और क्या नतीजा है उसे सुनो। ये उन जन्नतों में हैं, जहाँ बेरी के दरख़्त हैं लेकिन काँटेदार नहीं और फल बकसरत और बेहतरीन हैं। दुनिया में बेरी के दरख़्त ज़्यादा कांटों वाले और कम फलों वाले होते हैं। जन्नत के ये दरख़्त ज़्यादा फलों वाले और बिल्कुल बेख़ार (बग़ैर काँटे के) होंगे। फलों के बोझ से दरख़्त के तने झुके जाते होंगे।

जन्नत के दरख़्त : हाफ़िज़ अबू बकर अहमद बिन सलमान नज्जाद (रह.) ने एक रिवायत वारिद की है कि सहाबा (रज़ि.) कहते हैं कि आराबियों (देहातियों) का हुज़ूर (ﷺ) के सामने आना और आप (ﷺ) से मसाइल पूछना हमें बहुत नफ़ा देता था। एक मर्तबा एक आराबी ने आकर कहा, ऐ अल्लाह के रसूल! कुरआन में एक ऐसे दरख़्त का भी ज़िक्र है जो ईज़ा देता है। आप (ﷺ) ने पूछा, वो कौनसा? उसने कहा, बेरी का दरख़्त। आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'फिर तूने उसके साथ ही लफ़्ज़ मख़्ज़ूद नहीं पढ़ा? उसके काँटे अल्लाह तआला ने दूर कर दिये हैं और उनके बदले फल पैदा कर दिये हैं। हर-हर बेरी में बेहतर क़िस्म के ज़ायक़े होंगे जिनका रंग व मज़ा अलग-अलग होगा।' (सहीह : अबू बकर नज्जाद ज़वाइदुज़्ज़ुहद लिइब्निल मुबारक : 263, हाकिम : 2/476, सनद सहीह व सहहहुल हाकिम व वाफ़क़हुज़्ज़हबी)

इसमें लफ़्ज़ तल्ह का है और सत्तर ज़ायक़ों का बयान है। तल्ह एक बड़ा दरख़्त है जो हिजाज़ की सरज़मीन में होता है ये काँटेदार दरख़्त है, इसमें काँटे बहुत ज़्यादा होते हैं। चुनाँचे इब्ने जरीर में इसकी शहादत अरबी के एक शेअर से भी दी है। मन्ज़ूद के मआना तह-ब-तह फल वाला, फल से लदा हुआ। इन दोनों का ज़िक्र इसलिये हुआ कि अरब इन दरख़्तों की गहरी और मीठी छाओं को पसंद करते थे, ये दरख़्त बज़ाहिर दुनियावी दरख़्त जैसा होगा, लेकिन बजाए कांटों के इस में शीरीं फल होंगे। जोहरी (रह.) फ़रमाते हैं, तल्ह भी कहते हैं और तलअ भी। हज़रत अली (रज़ि.) से भी ये मरवी है। तो मुम्किन है कि ये भी बेरी की ही सिफ़त हो यानी वो बेरियाँ बेख़ार और बकसरत फलदार हैं। वल्लाहु आलम! और हज़रात ने (तलह) से मुराद केले का दरख़्त कहा है। अहले यमन केले को तलह कहते हैं और अहले हिजाज़ मौज़ कहते हैं। लम्बे-लम्बे सायों में ये होंगे। सहीह बुख़ारी में है रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़रमाते हैं, 'जन्नत के दरख़्त के साए तले तेज़ सवार सौ साल तक चलता रहेगा लेकिन साया ख़त्म न होगा, अगर तुम चाहो इस आयत को पढ़ो।' (सहीह बुख़ारी : किताबुत्तफ़्सीर, सूरह वाक़िअह बाब क़ौलुहू व ज़िल्लिम्मम्दूद : 4881, सहीह मुस्लिम : 2826, अहमद : 4/418)

और मुस्नद अहमद में भी और मुस्नद अबू यअला में भी हदीस़ शक के साथ है यानी सत्तर या सौ और ये भी है कि ये शजरतुल ख़ुल्द है। (ज़ईफ़ : अहमद : 2/455, अबुज़्ज़हाक मज्हूलुल हाल है।)

इब्ने जरीर और तिर्मिज़ी में भी ये हदीस़ है, पस ये हदीस़ मुतवातिर और क़तअन सहीह है। इसकी

सनदें बहुत हैं और इसके रावी सिक़ह हैं। इब्ने अबी हातिम वग़ैरह में भी ये हदीस़ है।

हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने जब ये रिवायत बयान की और हज़रत कअब (रह.) के कानों तक पहुँची तो आपने फ़रमाया, उस अल्लाह की क़सम! जिसने तौरात हज़रत मूसा (अलै.) पर और क़ुरआन हज़रत मुहम्मद (ﷺ) पर उतारा कि अगर कोई शख़्स नौजवान ऊँटनी पर सवार होकर उस वक़्त तक चलता रहे जब तक वो बूढ़ा होकर गिर जाये तो भी इसकी इन्तिहा को नहीं पहुँच सकता। अल्लाह तआला ने इसे अपने हाथ से बोया है और ख़ुद आप इसमें अपने पास की रूह फूंकी है। इसकी शाख़ें जन्नत की दीवारों से बाहर निकली हुई हैं। जन्नत की तमाम नहरें इसी दरख़्त की जड़ से निकलती हैं। अबू हुसैन कहते हैं कि एक मौज़अ में एक दरवाज़े पर हम थे, हमारे साथ अबू सालेह और शक़ीक़ जुहनी भी थे। अबू सालेह ने हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) वाली ऊपर की हदीस़ बयान की और कहा, क्या तू अबू हुरैरह (रज़ि.) को झुठलाता है? उसने कहा, नहीं, उन्हें तो नहीं तुझे। पस ये क़ारियों पर बहुत गिराँ गुज़रा। मैं कहता हूँ इस स़ाबित सहीह और मरफ़ूअ हदीस़ को जो झुठलाये वो ग़लती पर है। तिर्मिज़ी में है जन्नत के हर दरख़्त का तना सोने का है। (हसन : तिर्मिज़ी : किताब सिफ़तुल जन्नत, बाब मा जाअ फ़ी सिफ़ति शजरतिल जन्नत : 2525, इब्ने हिब्बान : 7410)

इब्ने अब्बास (रज़ि.) फ़रमाते हैं, जन्नत में एक दरख़्त है जिसके हर तरफ़ सौ-सौ साल के रास्ते तक साया फैला हुआ है। जन्नती लोग उसके नीचे आकर बैठते हैं और आपस में बातें करते हैं। किसी की दुनियवी खेल-तमाशे और दिल बहलावे याद आते हैं, तो उसी वक़्त एक जन्नती हवा चलती है और उस दरख़्त में से तमाम राग-रागिनियाँ बाजे-गाजे और खेल-तमाशों की आवाज़ें आने लगती हैं। ये अस़र ग़रीब है इसकी सनद क़वी है। हज़रत अम्र बिन मैमून (रह.) फ़रमाते हैं, ये साया सत्तर हज़ार साल की लम्बाई में होगा। आपसे पाँच सौ साल भी मरवी है। हसन (रह.) फ़रमाते हैं, एक हज़ार साल। आपसे मरफ़ूअ हदीस़ में एक सौ साल मरवी है। ये साया कटता ही नहीं, न सूरज आये, न गर्मी सताये। फ़ज्र के तुलूअ होने से पेश्तर का समाँ हर वक़्त उसके नीचे रहता है। इब्ने मसऊद (रज़ि.) फ़रमाते हैं, जन्नत में हमेशा वो वक़्त रहेगा जो सुबह सादिक़ के बाद से लेकर आफ़ताब के तुलूअ होने के दरम्यान-दरम्यान रहता है। साये के मज़मून की रिवायतें भी इससे पहले गुज़र चुकी हैं। जैसे नुदख़िलुहुम् ज़िल्लन ज़लीला और उकुलुहा दाइमुंव्-व ज़िल्लुहा और फ़ी ज़िलालिंव्-व उ़यून वग़ैरह। पानी होगा बहता हुआ मगर नहरों के गढ़े और खुदी हुई ज़मीन न होगी। इसकी पूरी तफ़्सीर फ़ीहा अन्हारुम्-मिम्-माइन ग़ैरि आसिनिन में गुज़र चुकी है। उनके पास बकस़रत तरह-तरह के लज़ीज़ मेवे हैं जो न किसी आँख ने देखे, न किसी कान ने सुने, न किसी इंसानी दिल पर उनका वहम व ख़्याल गुज़रा। जैसे और आयत में है, जब वहाँ फलों से रोज़ी दिये जायेंगे तो कहेंगे कि ये तो हम पहले भी दिये गये थे क्योंकि बिल्कुल हमशक्ल होंगे। लेकिन जब खायेंगे तो ज़ायक़ा और ही पायेंगे। बुख़ारी व मुस्लिम में सिदरतुल मुन्तहा के ज़िक्र में है कि उसके पत्ते मिस्ल हाथी के कानों के होंगे और फल मिस्ल हिज्र के बड़े-बड़े मटकों के होंगे। (सहीह बुख़ारी, किताब मनाक़िबुल अन्सार, बाब अल्मिअराज : 3887, सहीह मुस्लिम : 162, इब्ने हिब्बान : 7415)

हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) की उस हदीस में जिसमें आपने सूरज के गहन होने का और हुज़ूर (ﷺ) का सूरज गहन की नमाज़ अदा करने का वाक़िया तफ़्सील से बयान किया है ये भी है कि बादे फ़राग़त आपके साथ के नमाज़ियों ने आप (ﷺ) से पूछा, हुज़ूर हमने आपको इस जगह आगे बढ़ते और पीछे हटते देखा, क्या बात थी? आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'मैंने जन्नत देखी जन्नत के मेवे का ख़ोशा लेना चाहा अगर मैं ले लेता तो रहती दुनिया तक वो रहता और तुम खाते रहते। (सहीह बुख़ारी, किताबुल कुसूफ़, बाब सलातुल कुसूफ़ जमाअत : 1052, सहीह मुस्लिम : 907, अबू दाऊद : 1189, इब्ने हिब्बान : 2832)

अबू यअ़ला में है कि ज़ुहर की फ़र्ज़ नमाज़ पढ़ाते हुए हुज़ूर (ﷺ) आगे बढ़ गये और हम भी। फिर आप (ﷺ) ने गोया कोई चीज़ लेनी चाही, फिर पीछे हट आये। नमाज़ से फ़ारिग़ होकर हज़रत उबय बिन कअ़ब (रज़ि.) ने पूछा, हुज़ूर! आज तो आपने ऐसी बात की जो इससे पहले कभी नहीं की थी। आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'मेरे सामने जन्नत लाई गई और जो उसमें तरो-ताज़गी और सब्ज़ी है मैंने उसमें से एक अंगूर का ख़ोशा तोड़ना चाहा ताकि लाकर तुम्हें दूँ, पस मेरे और उसके दरम्यान पर्दा हाइल कर दिया गया और अगर मैं उसे तुम्हारे पास ले आता तो ज़मीन व आसमान के दरम्यान की कुल मख़्लूक़ उसे खाती रहती, ताहम उसमें ज़रा सी भी कमी न आती। इसी के मिस्ल हज़रत जाबिर (रज़ि.) से सहीह मुस्लिम में भी मरवी है। (सहीह मुस्लिम, किताबुल कुसूफ़, बाब मा अ़रिज़ा अलन्नबिय्यि (ﷺ) फ़ी सलातिल कुसूफ़ : 904)

मुस्नद इमाम अहमद में है कि एक आ़राबी ने आकर आँहज़रत (ﷺ) से हौज़े कौसर की बाबत सवाल किया और जन्नत का भी ज़िक्र किया। पूछा कि क्या उसमें मेवे भी हैं? आप (ﷺ) ने फ़रमाया, हाँ वहाँ तूबा नामी दरख़्त भी है। फिर कुछ कहा, जो मुझे याद नहीं। फिर पूछा, वो दरख़्त हमारी ज़मीन के किस दरख़्त से मुशाबिहत रखता है? आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'तेरे मुल्क की ज़मीन में कोई दरख़्त उसका हमशक्ल नहीं। क्या तू शाम में गया है?' उसने कहा, नहीं। फ़रमाया, 'शाम में एक दरख़्त होता है जिसे जूज़ा कहते हैं, एक ही तना होता है और ऊपर का हिस्सा फैला हुआ होता है वो अल्बत्ता उसके मुशाबेह है।' उसने पूछा, जन्नती ख़ोशे कितने बड़े होते हैं? फ़रमाया, 'काला कव्वा महीने भर तक उड़ता रहे यहाँ तक कि बूढ़ा होकर गिर पड़े तब भी उसके तने का चक्कर पूरा नहीं कर सकता।' उसने कहा, उसमें अंगूर भी लगते हैं? आपने फ़रमाया, 'हाँ।' पूछा, कितने बड़े? आप (ﷺ) ने जवाब दिया, 'क्या कभी तेरे बाप ने अपने रेवड़ में से कोई मोटा ताज़ा बकरा ज़िब्ह करके उसकी खाल खींचकर तेरी माँ को दे कर कहा है कि उसका डोल बना लो? उसने कहा, हाँ। फ़रमाया, 'बस इतने ही बड़े-बड़े अंगूर के दाने होते हैं। उसने कहा, फिर तो एक दाना मुझको और मेरे घर वालों को काफ़ी है। आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'बल्कि सारी बिरादरी को।' (ज़ईफ़ : अहमद : 4/183, 1840, आ़मिर बिन ज़ैद अल्बकाली सिक़हु इब्ने हिब्बाने वहदहू व यहया बिन अबी कसीर मुदल्लस व अ़न्अ़न)

फिर ये मेवे भी हमेशगी वाले हैं, न कभी ख़त्म हों न कभी उनसे रोका जाये। ये नहीं कि जाड़े में हैं और गर्मियों में नहीं। या गर्मियों में हैं और जाड़ों में नदारद। बल्कि ये मेवे दवाम वाले और हमेशा-हमेशा रहने वाले

हैं। जब तलब करें पा लें अल्लाह की क़ुदरत से हर वक़्त वो मौजूद रहेंगे बल्कि किसी कांटे और किसी शाख़ की भी आड़ न होगी न दूरी होगी। न हासिल करने में तकल्लुफ़ और तकलीफ़ होगी, बल्कि इधर फल तोड़ा, उधर उसके क़ायम मक़ाम दूसरा फल लग गया। जैसे कि इससे पहले हदीस़ में गुज़र चुका। उनके फ़र्श बुलंद व बाला नर्म और गुदगुदे राहत व आराम देने वाले होंगे। हुज़ूर (ﷺ) फ़रमाते हैं, 'उनकी ऊँचाई इतनी होगी जितनी ज़मीन व आसमान की यानी पाँच सौ साल की।' (तिर्मिज़ी) ये हदीस़ ग़रीब है।

कुछ अहले मआनी ने कहा है कि मतलब इस हदीस़ का ये है कि फ़र्श की बुलंदी दर्जे की आसमान व ज़मीन के बराबर है। यानी एक दर्जा दूसरे दर्जे से इस क़द्र बुलंद है। हर दो दर्जों में पाँच सौ साल की राह का फ़ासला है। (ज़ईफ़ : तिर्मिज़ी, किताब तफ़्सीरुल क़ुरआन, बाब व मिन सूरतिल वाक़िअह : 3294, अत्तबरी : 23/118, इसकी सनद में रुशदैन बिन सअ़द ज़ईफ़ रावी है। अल्मीज़ान : 2/49, 2780, वफ़ीहि इल्लतुन उख़रा)

फिर ये भी ख़्याल रहे कि ये रिवायत सिर्फ़ रुशदैन बिन सअ़द से मरवी है और वो ज़ईफ़ हैं। ये रिवायत इब्ने जरीर, इब्ने अबी हातिम वग़ैरह में भी है। हज़रत हसन (रह.) से मरवी है कि उनकी ऊँचाई (80) साल की है। उसके बाद ज़मीर लाये जिसका मरजअ़ पहले मज़्कूर नहीं इसलिये कि क़रीना मौजूद है। बिस्तर का ज़िक्र आया जिस पर जन्नतियों की बीवियाँ होंगी। पस उसकी तरफ़ ज़मीर फेर दी। जैसे हज़रत सुलैमान (अ़लै.) के ज़िक्र में तवारत का लफ़्ज़ आया है शम्स का लफ़्ज़ इससे पहले नहीं, पस क़रीना काफ़ी है। लेकिन अबू उ़बैदा कहते हैं कि पहले मज़्कूर हो चुका है। (अत्तबरी : 23/118)

जन्नत की हूरें : पस फ़रमाता है कि हमने उनकी बीवियों को नई पैदाइश में पैदा किया है। उसके बाद कि वो बिल्कुल फूंस बुढ़िया थीं। हमने उन्हें नौउम्र कुंवारियाँ करके एक ख़ास पैदाइश में पैदा किया। वो बवजहे अपनी तराफ़त व मलाहत के हुस्न सूरत और जसामत के ख़ुश ख़ल्क़ी और हलावत के अपने ख़ाविन्द की बड़ी प्यारियाँ हैं। कुछ कहते हैं उ़रुबन कहते हैं नाज़ो-करिश्मा वालियों को। हदीस़ में है कि ये वो औ़रतें हैं जो दुनिया में बुढ़िया थीं और अब जन्नत में गई हैं तो उन्हें नौउ़म्र वग़ैरह कर दिया है। (ज़ईफ़ : तिर्मिज़ी, किताब तफ़्सीरुल क़ुरआन, बाब व मिन सूरतिल वाक़िअह : 3296, अत्तबरी : 23/119, इसकी सनद में यज़ीद बिन रबान ज़ईफ़ रावी है। अल्मीज़ान : 4/418, 9669)

और रिवायत में है कि ख़्वाह ये औ़रतें कुंवारी थीं या शैबा थीं अल्लाह उन सबको ऐसी कर देगा। एक बुढ़िया औ़रत रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर होकर कहती हैं कि ऐ अल्लाह के रसूल! मेरे लिये दुआ़ कीजिये कि अल्लाह तआ़ला मुझे जन्नत में दाख़िल कर दे। आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'ऐ उम्मे फ़लाँ! जन्नत में कोई बुढ़िया नहीं जायेगी।' वो रोती हुई वापस लौटीं तो आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'जाओ उन्हें समझा दो। मतलब ये है कि जब वो जन्नत में जायेंगी बुढ़िया न होंगी अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है हम उन्हें नई पैदाइश में पैदा करेंगे फिर बाकिरह कर देंगे।' (ज़ईफ़ मुरसल : शमाइल : 239, मुबारक बिन फ़ुज़ाला मुदल्लस व अ़न्अन)

तबरानी में है हज़रत उम्मे सलमा (रज़ि.) फ़रमाती हैं मैंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल! हूरे ईन की ख़बर

मुझे दीजिये। आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'वो गोरे रंग की हैं बड़ी-बड़ी आँखों वाली हैं, सख़्त स्याह और बड़े-बड़े बालों वाली हैं जैसे कि गिध का पर।' मैंने कहा, लुअ्लुअ् मकनून की बात की ख़बर दीजिये। आप (ﷺ) ने इरशाद फ़रमाया, उनकी सफ़ाई और जोत मिस्ल उस मोती के है जो सीप से अभी-अभी निकला हो जिसे किसी का हाथ भी न लगा हो। मैंने कहा, ख़ैरातुन हिसान की क्या तफ़्सीर है? फ़रमाया, 'ख़ुशख़ल्क़ी ख़ूबसूरत।' मैंने कहा, बैयज़ुम्-मक्नून से क्या मुराद है? फ़रमाया, 'उनकी नज़ाकत और नर्मी अण्डे की उस झिल्ली के मानिन्द होगी जो अंदर होती है।' मैंने उरुबन अतराबा के मआना पूछे तो फ़रमाया, इससे मुराद दुनिया की मुसलमान जन्नती औरतें हैं जो बिल्कुल बुढ़िया फूंस थीं। अल्लाह तआला ने उन्हें नये सिरे से पैदा किया और कुंवारियाँ और ख़ाविन्दों की चहेतियाँ और ख़ाविन्दों से इश्क रखने वालियाँ और हमउम्र बना दिया। मैंने पूछा, ऐ अल्लाह के रसूल! दुनिया की औरतें अफ़ज़ल हैं या हूरे ईन? फ़रमाया, 'दुनिया की औरतें हूरे ईन से बहुत अफ़ज़ल हैं। जैसे अस्तर से अबरा बेहतर होता है।' मैंने कहा, इस अफ़ज़लियत की क्या वजह है? फ़रमाया, 'नमाज़ें-रोज़े और अल्लाह तआला की इबादतें। अल्लाह ने उनके चेहरे नूर से उनके जिस्म रेशम से संवार दिये हैं। सफ़ेद रेशम और सब्ज़ रेशम और ज़र्द रेशम और ज़र्द सुनहरे ज़ेवर बख़ूर दान मोती के कंघियाँ सोने की, ये कहती रहेंगी।

نحن الخالدات فلا نموت ابدا ونحن الناعمات فلا نباس ابدا

ونحن المقيمات فلا نطعن ابدا ونحن الراضيات فلا نسخط ابدا

طوبى لمن كنا له وكان لنا

यानी हम हमेशा रहने वाली हैं कभी मरेंगी नहीं। हम नाज़ और नेमत वालियाँ हैं कि कभी मुफ़्लिस और बेनेमत न होंगी। हम इक़ामत करने वालियाँ हैं कि कभी सफ़र में नहीं जायेंगी। हम अपने ख़ाविन्द से ख़ुश रहने वालियाँ हैं कि कभी रूठेंगी नहीं। ख़ुशनसीब हैं वो लोग जिनके लिये हम हैं और ख़ुशनसीब हैं हम कि उनके लिये हैं। मैंने पूछा, ऐ अल्लाह के रसूल! कुछ औरतों के दो-दो, तीन-तीन, चार-चार ख़ाविन्द हो जाते हैं। उसके बाद उसे मौत आती है। मरने के बाद अगर ये जन्नत में गई और उसके सब ख़ाविन्द भी गये तो ये किसे मिलेगी? आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'उसे इख़्तियार दिया जायेगा कि जिस के साथ चाहे रहे। चुनाँचे ये उनमें से उसे पसंद करेगी जो उसके साथ बेहतरीन बर्ताव करता रहा हो। अल्लाह तआला से कहेगी कि परवरदिगार! ये मुझसे बहुत अच्छी बूदो-बाश रखता था इसी के निकाह में मुझे दे। ऐ उम्मे सलमा! हुस्ने ख़ुल्क़ दुनिया और आख़िरत की भलाइयों को लिये हुए है।' (ज़ईफ़ : तबरानी : 9313, मज्मउज़्ज़वाइद : 7/119, हैसमी कहते हैं इसकी सनद में सुलैमान बिन अबी करीमा ज़ईफ़ रावी है और दूसरी इल्लतें भी हैं।)

सूर की मशहूर मुतव्वल (लम्बी) हदीस में है रसूलुल्लाह (ﷺ) तमाम मुसलमानों को जन्नत में ले जाने की सिफ़ारिश करेंगे जिस पर अल्लाह तआला फ़रमायेगा, मैंने आपकी शफ़ाअत क़ुबूल की और आपको

उन्हें जन्नत में पहुँचाने की इजाज़त दी। आप (ﷺ) फ़रमाते हैं, 'फिर मैं उन्हें जन्नत में ले जाऊँगा, अल्लाह की क़सम! तुम जिस क़द्र अपने घर-बार और अपनी बीवियों से वाक़िफ़ हो उससे ज़्यादा अहले जन्नत अपने घरों और बीवियों से वाक़िफ़ होंगे। पस एक-एक जन्नती की बहत्तर-बहत्तर (72) बीवियाँ होंगी। जो अल्लाह की बनाई हुई हैं और दो-दो बीवियाँ औरतों में से होंगी कि उन्हें बवजहे अपनी इबादत के उन सब औरतों पर फ़ज़ीलत हासिल होगी। जन्नती उनमें से एक के पास जायेगा, ये उस बालाख़ाने में होगी जो याक़ूत का बना हुआ होगा। उस पलंग पर होगी जो सोने के तारों से बना हुआ होगा और जड़ाव जुड़ा हुआ होगा। सत्तर जोड़े पहने हुए होगी जो सब बारीक और सब्ज़ चमकीले ख़ालिस रेशम के होंगे। ये बीवी इस क़द्र नाज़ुक नूरानी होगी कि उसकी कमर पर हाथ रखकर सीने की तरफ़ से देखेगा तो साफ़ नज़र आ जायेगा। कपड़े गोश्त हड्डी कोई चीज़ रोक न होगी। इस कद्र उसका पिण्डा साफ़ और आइनानुमा होगा जिस तरह मरवारीद में सूराख़ करके डोर डाल दीं तो वो डोरा बाहर से नज़र आता है, उसी तरह उसकी पिण्डली का गूदा नज़र आयेगा। ऐसा ही नूरानी बदन उस जन्नती का भी होगा। अल्ग़र्ज़ ये उसका आइना होगी और वो उसका। ये उसके साथ ऐश व इशरत में मशग़ूल होगा, न ये थके न वो, न इसका दिल भरे न उसका। जब कभी नज़दीकी करेगा तो कुंवारी पायेगा। न उसका अ़ज़्व सुस्त हो न उसे गिराँ गुज़रे। मगर ख़ास पानी वहाँ न होगा, जिससे घिन आये। ये यूँ ही मशग़ूल होगा जो कान में निदा आयेगी कि ये तो हमें ख़ूब मालूम है कि न आपका दिल उनसे भरेगा न उनका आप से, मगर आपकी दूसरी बीवी भी हैं। अब ये यहाँ से बाहर आयेगा और एक-एक के पास जायेगा जिसके पास जायेगा उसे देखकर बेसाख़्ता उसके मुँह से निकल जायेगा कि रब की क़सम! तुझसे बेहतर जन्नत में कोई चीज़ नहीं, न मेरी मुहब्बत किसी से तुझसे ज़्यादा है।' (ज़ईफ़ : अल्बअ़सु लिल्बैहक़ी : 669, इस्माईल बिन राफ़ेअ़ ज़ईफ़ वफ़िस्सनद इल्लतुन उख़रा)

हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) रसूलुल्लाह (ﷺ) से पूछते हैं कि ऐ अल्लाह के रसूल! क्या जन्नत में जन्नती लोग जिमाअ़ भी करेंगे? आप (ﷺ) ने फ़रमाया, हाँ क़सम है उस अल्लाह की जिसके हाथ में मेरी जान है! ख़ूब अच्छी तरह बेहतरीन तरीक़ पर। जब अलग होगा वो उसी वक़्त फिर पाक-साफ़ अछूती बाकिरा बन जायेगी।' (अ़ब्दुल्लाह बिन वहब व सनदहू हसन)

हुज़ूर (ﷺ) फ़रमाते हैं, 'मोमिन को जन्नत में इतनी-इतनी औरतों के पास जाने की कुव्वत अ़ता की जायेगी।' हज़रत अनस (रज़ि.) ने पूछा, हुज़ूर! क्या इतनी ताक़त रखेगा? आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'एक सौ आदमियों के बराबर कुव्वत मिलेगी।' (तिर्मिज़ी, किताब सिफ़तुल जन्नत, बाब मा जाअ फ़ी सिफ़ति जिमाइ अहललिल जन्नह : 2536, वहुव हदीस़ हसन, मुस्नद तयालिसी : 2012)

तबरानी की हदीस़ में है कि एक-एक सौ कुंवारियों के पास एक-एक दिन में हो आयेगा। (ज़ईफ़ : मुअजम अल्औसत लित्तबरानी : 5263, हिशाम बिन हस्सान मुदल्लस व अ़न्अ़न व मुहम्मद बिन अहमद बिन हिशाम अल्बग़दादी मज्हूलुल हाल लम अजिद मन वसक़ह) हाफ़िज़ अ़ब्दुल्लाह मुक़द्दसी (रह.) फ़रमाते

हैं, मेरे नज़दीक ये हदीस़ शर्ते सहीह पर है। वल्लाहु आलम!

इब्ने अब्बास (रज़ि.) उ़रुबन की तफ़्सीर में फ़रमाते हैं, ये अपने ख़ाविन्दों की महबूबा होंगी, ये अपने ख़ाविन्दों की आ़शिक़ और ख़ाविन्द उनके आ़शिक़। इक्रिमा (रह.) से मरवी है कि इसका मआ़ना नाज़ो-करिश्मा वाली है और सनद से मरवी है कि मआ़ना नज़ाकत वाली है। तमीम बिन हज़लम कहते हैं, उ़रुबन उस औ़रत को कहते हैं, जो अपने ख़ाविन्द का दिल मुट्ठी में रखे। ज़ैद बिन अस्लम वग़ैरह से मरवी है कि मुराद ख़ुशकलाम है अपनी बातों से अपने ख़ाविन्द का दिल मोह लेती हैं। जब कुछ बोलें ये मालूम होता है कि फूल झड़ते हैं और नूर बरसता है। इब्ने अबी हातिम में है कि उन्हें उ़रब इसलिये कहा गया है कि उनकी बोल-चाल अ़रबी ज़बान में होगी। ये रिवायत मुन्क़तअ़ यानी ज़ईफ़ है।) अतराब के मआ़ना में हैं, हमउम्र यानी तैंतीस बरस की। दूसरा मआ़ना हैं कि ख़ाविन्द की और उनकी तबीअ़त, ख़ल्क़ बिल्कुल एक जैसी है। जिससे वो ख़ुश ये ख़ुश, जो उसे नापसंद इसे भी नापसंद। ये मआ़ना भी बयान किये गये हैं कि आपस में उनमें बेर-बुग़्ज़, सोतियाडाह, हसद और रश्क न होगा। ये सब आपस में भी हमउम्र होंगी ताकि बेतकल्लुफ़ी से एक दूसरी से मिलें-जुलें खेलें-कूदें। तिर्मिज़ी की हदीस़ में है कि ये जन्नती हूरें एक रूह अफ़ज़ा बाग़ में जमा होकर निहायत प्यारे गले से गाना गायेंगी कि ऐसी सुरीली और रसीली आवाज़ मख़्लूक़ ने कभी न सुनी होगी। उनका गाना वही होगा जो ऊपर बयान हुआ। अबू यअ़ला में है, उनके गाने में ये भी होगा,

(نحن خيرات حسان)۔ (خبئنا لازواج كرام)

हम पाक-साफ़ ख़ुश वज़अ़ ख़ूबसूरत औ़रतें हैं जो बुज़ुर्ग और ज़ीइ़ज़्ज़त शौहरों के लिये छिपाकर रखी गई थीं। (ज़ईफ़ : तिर्मिज़ी, किताब सिफ़तुल जन्नत, बाब मा जाअ फ़ी कलामिल हूरिल ईन : 2564, इसकी सनद में अ़ब्दुर्रहमान बिन इस्हाक़ ज़ईफ़ अल्मीज़ान : 2/548, 4812 और उसका शैख़ नोमान बिन सअ़द मज्हूल रावी है।)

और रिवायत में ख़ैरात के बदले जवारुन का लफ़्ज़ आया है। फिर फ़रमाया, ये अस्हाबे यमीन के लिये पैदा की गई हैं और इन ही के लिये महफ़ूज़ व मसऊन रखी गई थीं। लेकिन ज़्यादा ज़ाहिर ये है कि ये मुताल्लिक़ इन्ना अन्शअ्नाहुन्न के। यानी हमने उन्हें उनके लिये बनाया है।

हज़रत अबू सुलैमान दारानी (रह.) से मन्क़ूल है कि मैंने एक रात तहज्जुद की नमाज़ के बाद दुआ़ माँगनी शुरू की चूंकि सख़्त सर्दी थी, बड़े ज़ोर का पाला पड़ रहा था। हाथ उठाये नहीं जाते थे इसलिये मैंने एक ही हाथ से दुआ़ माँगी और उसी हालत में दुआ़ माँगते-माँगते मुझे नींद आ गई। ख़्वाब में मैंने एक हूर को देखा कि उस जैसी ख़ूबसूरत नूरानी शक्ल कभी मेरी निगाह से नहीं गुज़री। उसने मुझसे कहा, ऐ अबू सुलैमान! एक ही हाथ से दुआ़ माँगने लगे और ये ख़्याल नहीं कि पाँच सौ साल से अल्लाह तआ़ला मुझे तुम्हारे लिये अपनी ख़ास नेमतों में परवरिश कर रहा है। ये भी हो सकता है कि ये लाम मुताल्लिक़ अतराबन के हो यानी उनकी हमउम्र होंगी। जैसे कि बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस़ में है रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़रमाते हैं, 'पहली जमाअ़त जो जन्नत में जायेगी उनके चेहरे चौदहवीं रात जैसे रोशन होंगे। उनके बाद वाली जमाअ़त के चेहरे बहुत चमकदार

सितारे जैसे रोशन होंगे, ये पाख़ाने-पेशाब, थूक-रींट से पाक होंगे। उनकी कंघियाँ सोने की होंगी, उनके पसीने मुश्क की ख़ुश्बू वाले होंगे। उनकी अंगूठियाँ लुअ्लुअ् की होंगी। उनकी बीवियाँ हूरे ईन होंगी। उन सबके अख़्लाक़ मिस्ल एक ही शख़्स के होंगे। ये सब अपने बाप हज़रत आदम (अलै.) की शक्ल पर साठ हाथ के लम्बे क़द के होंगे। (सहीह बुख़ारी, किताब अहादीसुल अम्बिया, बाब ख़ल्कु आदम व ज़ुर्रिय्यतिही : 3327, सहीह मुस्लिम : 2834)

तबरानी में है कि अहले जन्नत बोल और बेरीश गोरे रंग वाले ख़ुश ख़ल्क़ और ख़ूबसूरत सुर्मगीं आँखों वाले तैंतीस बरस के उम्र के साठ हाथ लम्बे और सात हाथ चौड़े-चकले मज़बूत बदन वाले होंगे। इसका कुछ हिस्सा तिर्मिज़ी में भी मरवी है। (तिर्मिज़ी, किताब सिफ़तुल जन्नत, बाब मा जाअ फ़ी सिन्ने अहलिल जन्नत : 2545, ये हदीस़ सहीह है। अहमद : 2/295)

और हदीस़ में है कि गो किसी उम्र में इन्तिक़ाल हुआ हो दुख़ूले जन्नत के वक़्त तैंतीस साला उम्र के होंगे और इसी उम्र में हमेशा रहेंगे, इसी तरह जहन्नमी भी। (ज़ईफ़ : तिर्मिज़ी, किताब सिफ़तुल जन्नत, बाब मा जाअ मा लिअदना अहलुल जन्नत मिनल करामत : 2562, अज़्ज़ुहद लिइब्निल मुबारक : 422, इसकी सनद में दराज रावी है जिसकी अबू हैसम से रिवायत ज़ईफ़ होती है। अत्तक़रीब : 1/235, 54)

और रिवायत में है कि उनके क़द साठ हाथ फ़रिश्ते के हाथ के ऐतिबार से होंगे। क़द आदम, हुस्न यूसुफ़, उम्र ईसा (अलै.) यानी तैंतीस साल और ज़बान मुहम्मद (ﷺ) यानी अरबी बोलने वाले होंगे। बेबाल के और सुर्मगीं आँखों वाले। (ज़ईफ़ : इसकी सनद में रवाद बिन जर्राह ज़ईफ़ रावी है। अल्मीज़ान : 2/55, 2795, वफ़ीहि इल्लतुन उख़रा)

और रिवायत में है कि दुख़ूले जन्नत के साथ ही उन्हें एक जन्नती दरख़्त के पास लाया जायेगा और वहाँ उन्हें कपड़े पहनाये जायेंगे। उनके कपड़े न गलें, न सड़ें, न पुराने हों, न मेले हों, उनकी जवानी न ढले न जाये न फ़ना हो। (ज़ईफ़ : हिल्यतुल औलिया : 3/56, हारून बिन रआब का हज़रत अनस (रज़ि.) से सिमाअ साबित नहीं है। मुअजम अस्सग़ीर लित्तबरानी : 2/14)

अस्हाबे यमीन अगलों में से भी बहुत हैं और पिछलों में से भी बहुत हैं। इब्ने अबी हातिम में है हुज़ूर (ﷺ) ने अपने अस्हाब से फ़रमाया, 'मेरे सामने अम्बिया अपने ताबेदार उम्मतियों के साथ पेश हुए। कुछ नबी के साथ एक जमाअत होती थी और कुछ नबी के साथ सिर्फ़ तीन आदमी होते थे और कुछ के साथ एक भी न था।' रावी हदीस़ हज़रत क़तादा (रह.) ने इतना बयान फ़रमाकर ये आयत पढ़ी अलै-स मिन्कुम रजुलुर्रशीद क्या तुममें से एक भी रुश्द-समझ वाला नहीं? यहाँ तक कि हज़रत मूसा बिन इमरान (अलै.) गुज़रे जो बनी इस्राईल की एक बड़ी जमाअत साथ लिये हुए थे। मैंने पूछा, परवरदिगार ये कौन हैं? जवाब मिला, ये तुम्हारे भाई मूसा बिन इमरान हैं और उनके साथ उनकी ताबेदारी करने वाली उम्मत है। मैंने पूछा, ऐ अल्लाह! फिर मेरी उम्मत कहाँ है? फ़रमाया, 'अपनी दाहिनी जानिब नीचे की तरफ़ देखो। मैंने देखा तो बहुत बड़ी जमाअत नज़र

आई। लोगों के बकसरत चेहरे दमक रहे थे। फिर मुझसे पूछा कहो, अब तो ख़ुश हो? मैंने कहा, हाँ ऐ अल्लाह! मैं ख़ुश हूँ। मुझसे फिर फ़रमाया, अब दायें जानिब किनारों की तरफ़ देखो। मैंने देखा तो वहाँ बेशुमार लोग थे। फिर मुझसे पूछा, अब तो राज़ी हो गये। मैंने कहा, हाँ मेरे रब मैं राज़ी हूँ। अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया, और सुनो इनके साथ सत्तर हज़ार लोग हैं जो बग़ैर हिसाब के जन्नत में दाख़िल होंगे। ये सुनकर हज़रत उ़क्काशा (रज़ि.) खड़े हो गये। ये क़बीला बनी असद से मिहसन के लड़के थे, बद्र की लड़ाई में मौजूद थे। अ़र्ज़ की कि ऐ अल्लाह के रसूल! अल्लाह तआ़ला से दुआ़ कीजिये कि मुझे भी उन्हीं में से करे। आप (ﷺ) ने दुआ़ की। फिर एक और शख़्स खड़े हुए और कहा, ऐ नबी अल्लाह! मेरे लिये भी दुआ़ कीजिये आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'उ़क्काशा तुझ पर सबक़त कर गये।' फिर आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'लोगो! तुम पर मेरे माँ-बाप फ़िदा हों अगर तुम से हो सके तो तुम उन सत्तर हज़ार में से बनो जो बेहिसाब जन्नत में जायेंगे। वरना कम से कम दायें जानिब वालों में से हो जाओ। अगर ये भी न हो सके तो किनारों वालों में से हो जाओ। मैंने अक्सर लोगों को देखा है कि अपने हाल में ही लटक जाते हैं। फिर फ़रमाया, मुझे उम्मीद है कि तमाम अहले जन्नत की चौथाई तादाद सिर्फ़ तुम्हारी ही होगी। पस हमने तकबीर कही फिर फ़रमाया, 'बल्कि मुझे उम्मीद है कि तुम तमाम जन्नत की तिहाई वाले होगे।' हमने फिर तकबीर कही। फ़रमाया, 'तुम आधो-आध अहले जन्नत के होंगे। हमने फिर तकबीर कही। उसके बाद हुज़ूर (ﷺ) ने इसी आयत सुल्लतुम्-मिनल् अव्वलीन, व सुल्लतुम्-मिनल् आख़िरीन की तिलावत की। अब हम में आपस में मुज़ाकिरा शुरू हो गया कि ये सत्तर हज़ार कौन लोग होंगे? फिर हमने कहा, वो लोग जो इस्लाम में ही पैदा हुए और शिर्क किया ही नहीं। पस हुज़ूर (ﷺ) ने फ़रमाया, 'बल्कि ये वो लोग हैं जो दाग़ नहीं लगवाते और झाड़-फूंक नहीं करवाते और फ़ाल नहीं लेते और अपने रब पर भरोसा रखते हैं।' (ज़ईफ़ : इब्ने अबी हातिम, अहमद : 1/420, क़तादा मुदल्लस व अ़न्अ़न अ़लल उख़रा, मुस्नद अबी यअ़ला : 5339 वग़ैरह में क़तादा से अल्फ़ाज़ की कमी-बेशी के साथ मौजूद है।)

ये हदीस़ बहुत सी सनदों से सहाबा (रज़ि.) की रिवायत से बहुत सी किताबों में सेहत के साथ मरवी है। (सहीह बुख़ारी : किताबुर्रक़ाक़, बाब यदख़ुलुल जन्नत सबऊन अल्फ़न बिग़ैरि हिसाब : 6541, सहीह मुस्लिम : 218)

इब्ने जरीर में है रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'इस आयत में पहलों-पिछलों से मुराद मेरी उम्मत के अगले-पिछले ही हैं।' (ज़ईफ़ुन जिद्दा : तबरी : 33445, अबान बिन अबी अ़याश मतरूक)

***

ثُلَّةٌ مِّنَ الْأَوَّلِيْنَ ﴿٣٩﴾ وَثُلَّةٌ مِّنَ الْاٰخِرِيْنَ ﴿٤٠﴾ وَاَصْحٰبُ الشِّمَالِ ۙ مَاۤ اَصْحٰبُ
الشِّمَالِ ﴿٤١﴾ فِيْ سَمُوْمٍ وَّحَمِيْمٍ ﴿٤٢﴾ وَّظِلٍّ مِّنْ يَّحْمُوْمٍ ﴿٤٣﴾ لَّا بَارِدٍ وَّلَا كَرِيْمٍ ﴿٤٤﴾ اِنَّهُمْ

كَانُوْا قَبْلَ ذٰلِكَ مُتْرَفِيْنَ ﴿٤٥﴾ وَكَانُوْا يُصِرُّوْنَ عَلَى الْحِنْثِ الْعَظِيْمِ ﴿٤٦﴾ وَكَانُوْا
يَقُوْلُوْنَ أَئِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَّعِظَامًا ءَاِنَّا لَمَبْعُوْثُوْنَ ﴿٤٧﴾ اَوَاٰبَآؤُنَا الْاَوَّلُوْنَ
﴿٤٨﴾ قُلْ اِنَّ الْاَوَّلِيْنَ وَالْاٰخِرِيْنَ ﴿٤٩﴾ لَمَجْمُوْعُوْنَ اِلٰى مِيْقَاتِ يَوْمٍ مَّعْلُوْمٍ ﴿٥٠﴾ ثُمَّ
اِنَّكُمْ اَيُّهَا الضَّآلُّوْنَ الْمُكَذِّبُوْنَ ﴿٥١﴾ لَاٰكِلُوْنَ مِنْ شَجَرٍ مِّنْ زَقُّوْمٍ ﴿٥٢﴾ فَمَالِـُٔوْنَ
مِنْهَا الْبُطُوْنَ ﴿٥٣﴾ فَشٰرِبُوْنَ عَلَيْهِ مِنَ الْحَمِيْمِ ﴿٥٤﴾ فَشٰرِبُوْنَ شُرْبَ الْهِيْمِ ﴿٥٥﴾ هٰذَا
نُزُلُهُمْ يَوْمَ الدِّيْنِ ﴿٥٦﴾

तर्जुमा : "बहुत सारे हैं अगलों में से। (39) और बहुत बड़ी जमाअत है पिछलों में से। (40) और बायें हाथ वाले, क्या हैं बायें हाथ वाले? (41) गर्म हवा और गर्म पानी में। (42) और स्याह धूएँ के साये में (43) जो न ठण्डा है न इज़्ज़त वाला। (44) बेशक ये लोग इससे पहले बहुत नाज़ों में पले हुए थे। (45) और बड़े-बड़े गुनाहों पर हमेशगी करते थे और कहते थे, (46) कि क्या जब हम मर जायेंगे और मिट्टी और हड्डी हो जायेंगे तो क्या हम फिर दोबारा खड़े किये जायेंगे? (47) और क्या हमारे अगले बाप-दादा भी? (48) तू कह दे कि यक़ीनन सब अगले और पिछले (49) अल्बत्ता ये जमा किये जायेंगे एक मुक़र्रर दिन के वक़्त। (50) फिर तुम ऐ गुमराहो! झुठलाने वालो! (51) अल्बत्ता खाने वाले हो दरख़्त थूहर का। (52) और उसी से पेट भरने वाले हो। (53) फिर उस गर्म खोलता पानी पीने वाले हो। (54) फिर पीने वाले भी प्यासे ऊँटों की तरह। (55) क़यामत के दिन उनकी मेहमानी ये है।" (56)

दोज़ख़ियों की सज़ा (आयत : 39-56) : अस्हाबे यमीन का ज़िक्र करने के बाद अस्हाबे शिमाल का ज़िक्र हो रहा है। फ़रमाता है उनका क्या हाल है? ये किस अ़ज़ाब में है? फिर उन अ़ज़ाबों का ज़िक्र फ़रमाता है कि ये गर्म हवा के थपेड़ों और खोलते हुए गर्म पानी में हैं और धूएँ के सख़्त स्याह साये में। जैसे और जगह है, इन्तलिक़ू इला मा कुन्तुम से लिल्मुकज़्ज़िबीन तक फ़रमाया है। यानी उस दोज़ख़ की तरफ़ चलो जिसे तुम झुठलाते हो। चलो तीन शाख़ों वाले साये की तरफ़ जो न घना है न आग के शौले से बचा सकता है। वो दोज़ख़ महल की ऊँचाई के बराबर चिंगारियाँ फेंकती है। ऐसा मालूम होता है कि गोया ज़र्द ऊँटनियाँ हैं। आज झुठलाने वालों की ख़राबी है। इसी तरह यहाँ भी फ़रमान है कि ये लोग जिनके बायें हाथ में आमाल नामा दिया गया है। ये सख़्त स्याह धूएँ में होंगे जो न जिस्म को अच्छा लगे, न आँखों को भला मालूम हो। ये अ़रब का मुहावरा है

कि जिस चीज़ की ज़्यादा बुराइयाँ बयान करनी हो वहाँ उसका हर एक बुरा वस्फ़ बयान करके उसके बाद वला करीम कह देते हैं। फिर अल्लाह तआला बयान फ़रमाता है कि ये लोग इन सज़ाओं के मुस्तहिक़ इसलिये हुए कि दुनिया में जो रब्बानी नेमतें उन्हें मिली थीं उनमें ये मस्त हो गये। रसूलों की बातों की तरफ़ नज़र भी न उठाई। बदकारियों में पड़ गये और फिर तौबा की तरफ़ दिली तवज्जह भी न रही। हिन्सिल् अ़ज़ीम से मुराद बक़ौल हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) कुफ़्र व शिर्क है। कुछ कहते हैं, झूठी क़सम है। फिर उनका एक और ऐब बयान हो रहा है कि ये क़यामत का होना भी महाल (असम्भव) जानते थे, उसको झुठलाते थे और अ़क़्ली इस्तिदलाल पेश करते थे कि मर कर मिट्टी में मिलकर फिर कहीं कोई जी सकता है? उन्हें जवाब मिल रहा है कि कुल औलादे आदम क़यामत के दिन नई ज़िन्दगी में पैदा होकर और एक मैदान में जमा होगी। एक वजूद ऐसा न होगा जो दुनिया में आया हो और यहाँ न हो। जैसे और जगह है उस दिन सब जमा कर दिये जायेंगे, ये हाज़िरबाशी का दिन है, तुम्हें दुनिया में कुछ दिन मुहलत है क़यामत के दिन कौन है जो अल्लाह तआला की इजाज़त के बग़ैर लब भी हिला सके। इंसान दो क़िस्म पर तक़सीम कर दिये जायेंगे। नेक अलग और बद अलग। वक़्ते क़यामत महदूद और मुक़र्रर है कमी-ज़्यादती, तक़दीम-ताख़ीर उसमें बिल्कुल न होगी। फिर तुम ऐ गुमराहो और झुठलाने वालो! ज़क़्क़ूम के दरख़्त खिलवाये जाओगे, उन्हीं से पेट बोझल करोगे क्योंकि जबरन वो तुम्हारे हलक़ में ठूंसा जायेगा। फिर उस पर खोलता हुआ गर्म पानी तुम्हें पीना पड़ेगा और वो भी इस तरह जैसे प्यासा ऊँट पी रहा हो। हीम जमा है इसका वाहिद हैम है और मुअन्नस हीमा है हाइम और हाइमा भी कहा जाता है। सख़्त प्यास वाले ऊँट को कहते हैं जिसे प्यास की बीमारी होती है। पानी चूसता रहता है लेकिन सैराब नहीं होती और न उस बीमारी से ऊँट जांबर होता है। इसी तरह ये जहन्नमी जबरन् सख़्त गर्म पानी पिलाये जायेंगे जो ख़ुद एक बदतरीन अ़ज़ाब होगा। भला उससे प्यास क्या रुकती? हज़रत ख़ालिद बिन मअ़दान (रह.) फ़रमाते हैं कि एक ही साँस में पानी पीना ये भी प्यास वाले ऊँट का सा पीना है इसलिये मक्रूह है। फिर फ़रमाया, उन मुज्रिमों की ज़ियाफ़त (मेहमान नवाज़ी) आज जज़ा के दिन यही है जैसे मुत्तक़ीन के बारे में और जगह इरशाद है कि उनकी मेहमानदारी जन्नतुल फ़िरदौस है।

***

نَحْنُ خَلَقْنٰكُمْ فَلَوْلَا تُصَدِّقُوْنَ ﴿٥٧﴾ اَفَرَءَيْتُمْ مَّا تُمْنُوْنَ ﴿٥٨﴾ ءَاَنْتُمْ تَخْلُقُوْنَهٗٓ اَمْ
نَحْنُ الْخٰلِقُوْنَ ﴿٥٩﴾ نَحْنُ قَدَّرْنَا بَيْنَكُمُ الْمَوْتَ وَمَا نَحْنُ بِمَسْبُوْقِيْنَ ﴿٦٠﴾ عَلٰٓى اَنْ
نُّبَدِّلَ اَمْثَالَكُمْ وَنُنْشِئَكُمْ فِيْ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٦١﴾ وَلَقَدْ عَلِمْتُمُ النَّشْاَةَ الْاُوْلٰى

فَلَوْلَا تَذَكَّرُوْنَ ﴿٦٢﴾

तर्जुमा : "हमीं ने तुम सबको पैदा किया है फिर तुम क्यों बावर नहीं करते? (57) अच्छा फिर ये तो बतलाओ कि जो पानी तुम टपकाते हो। (58) क्या उसका इंसान तुम बनाते हो या पैदा करने वाले हमीं हैं। (59) हमीं ने तुममें मौत को मुतअ़य्यन कर दिया है और हम इससे हारे हुए नहीं हैं। (60) कि तुम्हारी जगह तो तुम जैसे और पैदा कर दें और तुम्हें नये सिरे से उस आ़लम में पैदा करें जिससे तुम बिल्कुल बेख़बर हो। (61) तुम्हें यक़ीनी तौर पर पहली बार की पैदाइश तो मालूम ही है फिर क्यों इबरत हासिल नहीं करते?" (62)

इंसान की पैदाइश अल्लाह की क़ुदरत है (आयत 57-62) : अल्लाह तआ़ला क़यामत के मुन्किरीन को लाजवाब करने के लिये क़यामत के क़ायम होने की और लोगों के दोबारा जी उठने की दलील दे रहा है। फ़रमाता है कि जब हमने पहली मर्तबा जबकि तुम कुछ न थे तुम्हें पैदा कर दिया तो अब फ़ना होने के बाद जबकि कुछ न कुछ तो तुम रहोगे ही, तुम्हें दोबारा पैदा करना हम पर क्या गिराँ होगा? जब इब्तिदाई और पहली पैदाइश को मानते हो तो फिर दूसरी मर्तबा के पैदा होने से क्यों इंकार करते हो? देखो इंसान के ख़ास पानी के क़तरे तो औ़रत के बच्चादान में पहुँच जाते हैं इतना काम तो तुम्हारा था लेकिन अब उन क़तरों को बसूरते इंसान पैदा करना ये किस का काम है? ज़ाहिर है कि तुम्हारा इसमें कोई दख़ल नहीं, कोई हाथ नहीं, कोई क़ुदरत नहीं, कोई तद्बीर नहीं। पैदा करना ये सिफ़त सिर्फ़ ख़ालिक़े कुल अल्लाह की ही है। फिर ठीक उसी तरह मार डालने पर भी वही क़ादिर है। कुल आसमान व ज़मीन वालों की मौत का मुतसर्रिफ़ भी अल्लाह ही है। भला इतनी बड़ी क़ुदरतों का मालिक क्या ये नहीं कर सकता कि क़यामत के दिन तुम्हारी पैदाइश में तब्दील करके जिस सिफ़त और जिस हाल में चाहे तुम्हें नये सिरे से पैदा कर दे। पस जबकि जानते हो मानते हो कि इब्तिदाई आफ़रीश उसी ने की है और अ़क़्ल बावर करती है कि पहली पैदाइश दूसरी पैदाइश से मुश्किल है। फिर दूसरी पैदाइश का इंकार क्यों करते हो? यही और जगह है, वहुवल्लज़ी यब्दउल् ख़ल्क़ सुम्म युईदुहू वहुव अह्वनु अ़लैहि अल्लाह ही ने पहली मर्तबा पैदा किया है और वही दोबारा दोहरायेगा और ये उस पर बहुत आसान है। सूरह यासीन में है, अवलम् यरल् इन्सानु से अ़लीम तक इरशाद फ़रमाया, हम इंसान को नुत्फ़े से पैदा करते हैं फिर वो हुज्जतबाज़ियाँ करने लगता है और हमारे सामने मिसालें बयान करने लगता है और कहता फिरता है इन बौसीदा गली-सड़ी हड्डियों को कौन ज़िन्दा करेगा? तुम ऐ नबी! हमारी तरफ़ से जवाब दो कि इन्हें वो ज़िन्दा करेगा जिसने इन्हें पहले-पहल पैदा किया है। वो हर पैदाइश का इल्म रखने वाला है। क़ियामा में फ़रमाया, अयह्सबुल इन्सानु क्या इंसान ये समझ बैठा है कि उसे यूंही आवारा छोड़ दिया जायेगा? क्या ये एक ग़लीज़ पानी के नुत्फ़े की शक्ल में न था? फिर ख़ून के लोथड़े की सूरत में नुमायाँ हुआ था, फिर अल्लाह तआ़ला ने उसे पैदा किया, दुरुस्त किया, मर्द-औ़रत बनाया। क्या ऐसा अल्लाह मुर्दों के जिलाने पर क़ादिर नहीं?

***

أَفَرَءَيْتُم مَّا تَحْرُثُونَ ﴿٦٣﴾ ءَأَنتُمْ تَزْرَعُونَهُۥٓ أَمْ نَحْنُ ٱلزَّٰرِعُونَ ﴿٦٤﴾ لَوْ نَشَآءُ لَجَعَلْنَٰهُ
حُطَٰمًا فَظَلْتُمْ تَفَكَّهُونَ ﴿٦٥﴾ إِنَّا لَمُغْرَمُونَ ﴿٦٦﴾ بَلْ نَحْنُ مَحْرُومُونَ ﴿٦٧﴾ أَفَرَءَيْتُمُ
ٱلْمَآءَ ٱلَّذِى تَشْرَبُونَ ﴿٦٨﴾ ءَأَنتُمْ أَنزَلْتُمُوهُ مِنَ ٱلْمُزْنِ أَمْ نَحْنُ ٱلْمُنزِلُونَ ﴿٦٩﴾ لَوْ
نَشَآءُ جَعَلْنَٰهُ أُجَاجًا فَلَوْلَا تَشْكُرُونَ ﴿٧٠﴾ أَفَرَءَيْتُمُ ٱلنَّارَ ٱلَّتِى تُورُونَ ﴿٧١﴾ ءَأَنتُمْ
أَنشَأْتُمْ شَجَرَتَهَآ أَمْ نَحْنُ ٱلْمُنشِـُٔونَ ﴿٧٢﴾ نَحْنُ جَعَلْنَٰهَا تَذْكِرَةً وَمَتَٰعًا لِّلْمُقْوِينَ
﴿٧٣﴾ فَسَبِّحْ بِٱسْمِ رَبِّكَ ٱلْعَظِيمِ ﴿٧٤﴾

तर्जुमा : ''अच्छा फिर ये भी बतलाओ कि तुम जो कुछ बोते हो (63) उसे तुम ही उगाते हो या हम उगाने वाले हैं (64) अगर हम चाहें तो उसे रेज़ा-रेज़ा कर डालें और तुम हैरत के साथ बातें बनाते ही रह जाओ। (65) कि हम पर तो तावान ही पड़ेगा। (66) बल्कि हम बिल्कुल बेनसीब ही रह गये। (67) अच्छा ये बताओ कि जिस पानी को तुम पीते हो। (68) उसे बादलों से भी तुम उतारते हो या हम बरसाते हैं। (69) अगर हमारी मन्शा हो तो हम उसे कड़वा ज़हर कर दें फिर तुम हमारी शुक्रगुज़ारी क्यों नहीं करते? (70) अच्छा ज़रा ये भी बताओ कि जो आग तुम सुलगाते हो (71) उसके दरख़्त को तुमने पैदा किया है या हम उसके पैदा करने वाले हैं। (72) हमने उसे सबबे नसीहत किया है और मुसाफ़िरों के फ़ायदे की चीज़ बनाया है। (73) पस अपने बहुत बड़े ख़ालिक़ (अल्लाह) के नाम की तस्बीह किया करा।'' (74)

फलों की पैदाइश अल्लाह की क़ुदरत है (आयत 63-74) : इरशादे बारी है कि तुम जो खेतियाँ बोते हो ज़मीन खोदकर बीज डालते हो, फिर उन बीजों को उगाना भी क्या तुम्हारे बस में है? नहीं-नहीं बल्कि उन्हें उगाना, उन्हें फल-फूल देना हमारा काम है। इब्ने जरीर में है हुज़ूर (ﷺ) ने फ़रमाया, 'ज़रअ़तु न कहा करो बल्कि हरस़तु कहा करो। यानी यूँ कहो मैंने बोया, यूँ न कहो कि मैंने उगाया।' हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने ये हदीस़ सुना कर फिर इसी आयत की तिलावत की। (अत्तबरी : 23/132)

इमाम हजर मदरी (रह.) इन आयतों के ऐसे सवाल के मौक़ों को जब पढ़ते तो कहते, बल अन्त या रब्बी हमने नहीं बल्कि ऐ हमारे परवरदिगार! तूने ही। फिर फ़रमाता है कि पैदा करने के बाद भी हमारी मेहरबानी है कि हम उसे बढ़ायें और पकायें वरना हमें क़ुदरत है कि सुखा दें और मज़बूत न होने दें, बर्बाद कर दें और बेनिशान बना दें और तुम हाथ मलते और बातें बनाते ही रह जाओ कि हाय हम पर आफ़त आ गई। हाय हमारी तो असल भी मारी गई, बड़ा नुक़सान हो गया, नफ़ा एक तरफ़, पूँजी भी ग़ारत हो गई। ग़म व रंज से न जाने क्या-क्या भांत-भांत बोलियाँ बोलने लग जाओ। कभी कहो काश कि अब की मर्तबा बोते ही नहीं, काश कि यूँ करते यूँ करते। ये भी हो सकता है कि ये मतलब हो कि उस वक़्त तुम अपने गुनाहों पर नादिम हो जाओ। तफ़क्का का लफ़्ज़ अपने में दोनों मअ़ना रखता है नफ़ा के और ग़म के।

पानी अल्लाह की नेमत है : मुज़्न बादल को कहते हैं। फिर अपनी पानी जैसी आला नेमत का ज़िक्र करता है कि देखो उसका बरसाना भी मेरे क़ब्ज़े में है। कोई है जो उसे बादल से उतार लाये? और जब उतर आया फिर भी उसमें मिठास-कड़वास पैदा करने पर मुझे क़ुदरत है। ये मीठा पानी बैठे-बिठाये मैंने तुम्हें दिया, जिससे तुम नहाओ-धोओ, कपड़े साफ़ करो, खेतियों और बाग़ों को सैराब करो, जानवरों को पिलाओ, फिर क्या तुम्हें यही चाहिये कि मेरा शुक्र भी अदा न करो। जनाब रसूलुल्लाह (ﷺ) पानी पीकर फ़रमाया करते थे, अल्हम्दुलिल्लाहिल्लज़ी सक़ानाहु अ़ज्बन् फ़ुरातम्-बिरह़्मतिही वलम् यज्अ़ल्हु मिल्हन उजाजम्-बिज़ुनूबिना यानी अल्लाह का शुक्र है कि उसने हमें मीठा और उ़म्दा पानी अपनी रहमत से पिलाया और हमारे गुनाहों के बाइस इसे खारी और कड़वा न बना दिया। (ज़ईफ़ुन जिद्दा : अद्दुरुल मन्सूर : 8/24)

अ़रब में दो दरख़्त होते हैं मरख़ और इफ़ार। उनकी सब्ज़ शाख़ें जब एक दूसरी से रगड़ी जायें तो आग निकलती है। इस नेमत को याद दिलाकर फ़रमाता है कि ये आग जिससे तुम पकाते-रेंधते हो और सैंकड़ों फ़ायदे हासिल कर रहे हो, बतलाओ इसकी असल यानी दरख़्त इसके पैदा करने वाले तुम हो या मैं हूँ? इस आग को हमने तज़्किरा बनाया है यानी इसे देखकर जहन्नम की आग को याद करो और उससे बचने की राह लो। हज़रत क़तादा (रह.) की एक मुर्सल हदीस़ में है कि हुज़ूर (ﷺ) ने फ़रमाया, 'तुम्हारी ये दुनिया की आग दोज़ख़ की आग का सत्तरवाँ हिस्सा है।' लोगों ने कहा, हुज़ूर यही बहुत कुछ है। आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'हाँ! फिर ये सत्तरवाँ हिस्सा भी दो मर्तबा पानी से बुझाया गया है अब ये इस क़ाबिल हुआ है कि तुम इससे नफ़ा उठा सको और इसके क़रीब जा सको।' (अत्तबरी : 23/144) ये मुर्सल हदीस़ मुस्नद में मरवी है और बिल्कुल सहीह है। (सहीह : अहमद : 2/244, हुमैदी : 1136, इब्ने हिब्बान : 7463, इसकी सनद सहीह है।)

मुक़वीन से मुराद मुसाफ़िर हैं। कुछ ने कहा है, जंगल में रहने-सहने वाले लोग मुराद हैं। कुछ ने कहा है, हर भूखा मुराद है। ग़र्ज़ दरअसल हर वो शख़्स मुराद है जिसे आग की ज़रूरत हो और वो उससे फ़ायदा हासिल करने का मुहताज हो। हर अमीर-फ़क़ीर, शहरी-देहाती, मुसाफ़िर-मुक़ीम को इसकी हाजत होती है। पकाने के लिये, तापने के लिये, रोशनी के लिये वग़ैरह। फिर अल्लाह की उस करीमी को देखिये कि दरख़्तों में लोहे में उसने

उसे रख दिया ताकि मुसाफ़िर अपने साथ ले जा सके और ज़रूरत के वक़्त अपना काम निकाल सके। अबू दाऊद वग़ैरह में हदीस है कि हुज़ूर (ﷺ) ने फ़रमाया, 'तीन चीज़ों में तमाम मुसलमानों का बराबर हिस्सा है, आग, घास और पानी।' (सहीह:अबू दाऊद, किताबुल बुयूअ, बाब फ़ी मनइल माअ:3477, अहमद: 5/364)

इब्ने माजह में है, ये तीनों चीज़ें रोकने का किसी को हक़ नहीं। (सहीह : इब्ने माजह, किताबुर्रहून, बाब अल्मुस्लिमून शुरकाअ फ़ी सलास़ : 2473)

एक रिवायत में उनकी क़ीमत का ज़िक्र भी है लेकिन उसकी सनद ज़ईफ़ है। वल्लाहु आलम! फिर फ़रमाता है है तुम सबको चाहिये कि उस बहुत बड़ी क़ुदरतों के मालिक अल्लाह की हर वक़्त पाकीज़गी बयान करते रहो जिसने आग जैसी जला देने वाली चीज़ को तुम्हारे लिये नफ़ा देने वाली बना दिया। जिसने पानी को खारी और कड़वा न कर दिया कि तुम प्यास के मारे तकलीफ़ उठाओ। बल्कि उसे मीठा साफ़-शफ़्फ़ाफ़ और मज़ेदार बनाया। दुनिया में रब की इन नेमतों से फ़ायदे उठाओ और उसका शुक्र बजा लाओ तो फिर आख़िरत में भी फ़ायदे ही फ़ायदे हैं। दुनिया में ये आग, उसने तुम्हारे फ़ायदे के लिये बनाई है और साथ ही इसलिये कि आख़िरत की आग का भी तुम अन्दाज़ा कर सको और उससे बचने के लिये अल्लाह के फ़रमांबरदार बन जाओ।

***

فَلَآ اُقْسِمُ بِمَوٰقِعِ النُّجُوْمِ ﴿٧٥﴾ وَاِنَّهٗ لَقَسَمٌ لَّوْ تَعْلَمُوْنَ عَظِيْمٌ ﴿٧٦﴾ اِنَّهٗ لَقُرْاٰنٌ كَرِيْمٌ
﴿٧٧﴾ فِيْ كِتٰبٍ مَّكْنُوْنٍ ﴿٧٨﴾ لَّا يَمَسُّهٗٓ اِلَّا الْمُطَهَّرُوْنَ ﴿٧٩﴾ تَنْزِيْلٌ مِّنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٨٠﴾
اَفَبِهٰذَا الْحَدِيْثِ اَنْتُمْ مُّدْهِنُوْنَ ﴿٨١﴾ وَتَجْعَلُوْنَ رِزْقَكُمْ اَنَّكُمْ تُكَذِّبُوْنَ ﴿٨٢﴾

तर्जुमा : "पस मैं क़सम खाता हूँ सितारों के गिरने की। (75) और अगर तुम्हें इल्म हो तो ये बहुत बड़ी क़सम है। (76) कि बेशक ये क़ुरआन बहुत बड़ी इज़्ज़त वाला है। (77) जो एक महफ़ूज़ किताब में दर्ज है। (78) जिसे सिर्फ़ पाक लोग ही छू सकते हैं। (79) ये रब्बुल आलमीन की तरफ़ से उतरा हुआ है। (80) पस क्या तुम ऐसी बात को सरसरी और मामूली समझ रहे हो? (81) और अपने हिस्से में यही लेते हो कि झुठलाते फिरो?" (82)

सितारों के तुलूअ की क़सम (आयत 75-82) : हज़रत ज़हहाक (रह.) फ़रमाते हैं, अल्लाह की ये क़समें कलाम को शुरू करने के लिये हुआ करती हैं लेकिन ये क़ौल ज़ईफ़ है। जुम्हूर फ़रमाते हैं, ये क़समें हैं और इनमें उन चीज़ों की अज़मत का इज़हार भी है। कुछ मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि यहाँ पर ला ज़ाइद है और

इन्नहू लकुरआनुन अल्अख़ जवाबे क़सम है और लोग कहते हैं ला को ज़ाइद बतलाने की कोई वजह नहीं। कलामे अ़रब के दस्तूर के मुताबिक़ वो क़सम के शुरू में आता है जबकि जिस चीज़ पर क़सम खाई जाये वो मन्फ़ी हो। जैसे हज़रत आइशा (रज़ि.) के इस क़ौल में कि अल्लाह की क़सम हुज़ूर (ﷺ) ने अपना हाथ किसी औरत के हाथ से लगाया नहीं। (सहीह बुख़ारी, किताबुश्शुरूत, बाब मा यजूज़ु मिनश्शुरूति फ़िल्इस्लामि वल्अहकामि वल्मुबायिअ़ह : 2713, सहीह मुस्लिम : 1866)

यानी बैअ़त में औरतों से मुसाफ़हा नहीं किया। इसी तरह यहाँ भी ला क़सम के शुरू में मुताबिक़े क़ाइदा है न कि ज़ाइद। तो कलाम का मक़सूद ये है कि तुम्हारे जो ख़्यालात कुरआन करीम की निस्बत हैं कि ये जादू है या कहानत है, ग़लत हैं। बल्कि ये पाक किताब कलामुल्लाह है। कुछ अ़रब कहते हैं कि ला से उनके कलाम का इंकार है फिर असल अम्र का इसबात अल्फ़ाज़ में है। मवाक़िइन्नुजूम से मुराद कुरआन का बदतरीज उतरना है। लौहे महफ़ूज़ से तो लैलतुल क़द्र में एक साथ आसमाने अव्वल पर उतर आया। फिर हस्बे ज़रूरत थोड़ा-थोड़ा वक़्त-बरवक़्त उतरता रहा। यहाँ तक कि कई बरसों में पूरा उतर आया। मुजाहिद (रह.) फ़रमाते हैं, इससे मुराद सितारों के तुलूअ़ और ज़ाहिर होने की आसमानी जगहें हैं। मवाक़िअ़ से मुराद मनाज़िल हैं।

हसन (रह.) फ़रमाते हैं, क़यामत के दिन उनका मुन्तशिर हो जाना है। ज़ह्हाक (रह.) फ़रमाते हैं, इससे मुराद वो सितारे हैं जिनकी निस्बत मुश्रिकीन अ़क़ीदा रखते हैं कि फ़लाँ-फ़लाँ तारे की वजह से हम पर बारिश बरसी। फिर बयान होता है कि ये बहुत बड़ी क़सम है इसलिये कि जिस बात पर ये क़सम खाई जा रही है वो बहुत बड़ी बात है। यानी ये कुरआन बड़ी अ़ज़मत वाली किताब है। मुअ़ज़्ज़म व महफ़ूज़ और मज़बूत किताब में है जिसे सिर्फ़ पाक हाथ ही लगते हैं यानी फरिश्तों के। हाँ ये और बात है कि दुनिया में इसे सबके हाथ लगते हैं। इब्ने मसऊद (रज़ि.) की क़िरअत में मा यमस्सुहू है। अबुल आ़लिया (रह.) कहते हैं, यहाँ पाक से मुराद इंसान नहीं इंसान तो गुनहगार है। ये कुफ़्फ़ार का जवाब है। वो कहते थे कि इस कुरआन को लेकर शैतान उतरते हैं, नऊ़ज़ुबिल्लाह। जैसे दूसरी जगह साफ़ फ़रमाया, 'इसे न तो शैतान लेकर उतरते हैं, न उनके ये लायक़, न उनकी ये मजाल बल्कि वो तो इसके सुनने से भी अलग हैं। यही क़ौल इस आयत की तफ़्सीर में दिल को ज़्यादा लगता है और क़ौल भी इसके मुताबिक़ हो सकते हैं।

फ़र्रा ने कहा है इसका ज़ायक़ा और इसका लुत्फ़ सिर्फ़ बाईमान लोगों को ही मयस्सर आता है। कुछ कहते हैं, मुराद जनाबत और हदस़ से पाक होना है। गोया ख़बर है लेकिन मुराद इससे इन्शा है और कुरआन से मुराद यहाँ पर मुस्हफ़ है। मतलब ये है कि मुसलमान नापाकी की हालत में कुरआन को हाथ न लगाये। एक हदीस़ में है हुज़ूर (ﷺ) ने कुरआन साथ लेकर हरबी काफ़िरों के मुल्क में जाने से मना फ़रमाया है कि ऐसा न हो कि इसे दुश्मन कुछ नुक़सान पहुँचाये। (सहीह बुख़ारी, किताबुल जिहाद, बाब कराहियतुस्सफ़र बिल्मसाहिफ़ इलल्अरज़िल अ़दुव्व : 2990, सहीह मुस्लिम: 1869, अबू दाऊद : 2610, अहमद : 2/7, इब्ने हिब्बान : 4715)

कुरआन दुश्मन के मुल्क में न ले जाया जाये : नबी (ﷺ) ने जो फ़रमान हज़रत अ़म्र बिन हज़्म (रज़ि.)

को लिखकर दिया था उसमें ये भी था कि क़ुरआन को न छूए मगर पाक। (मोत्ता इमाम मालिक : 1/199, 470, ये हदीस़ हसन है। हाकिम : 1/395) मरासीले अबू दाऊद में है ज़ुहरी (रह.) फ़रमाते हैं, मैंने ख़ुद इस किताब को देखा है और इसमें ये जुम्ला पढ़ा है। गो इस रिवायत की बहुत सी सनदें हैं लेकिन हर एक क़ाबिले ग़ौर है, वल्लाहु आलम!

क़ुरआन हक़ है : फिर इरशाद है कि ये क़ुरआन शेअ़र व सुख़न जादू और फ़न्न नहीं, बल्कि कलामे रब्बानी है और उसी की जानिब से उतरा है ये सरासर हक़ है। बल्कि सिर्फ़ यही हक़ है इसके सिवा इसके ख़िलाफ़ जो है बातिल और यकसर मर्दूद है। फिर तुम ऐसी पाक बात का क्यों इंकार करते हो? क्यों इससे हटना और यकसू हो जाना चाहते हो? क्या उसका शुक्र यही है कि तुम उसे झुठलाओ? क़बीला अज़द के कलाम में रिज़्क़ बमअ़ाना शुक्र आता है। मुस्नद की एक हदीस़ में भी रिज़्क़ का मअ़ाना शुक्र किया है। यहाँ तक कहते हो कि फ़लाँ सितारे की वजह से हमें पानी मिला और फ़लाँ सितारे से फ़लाँ चीज़। (ज़ईफ़ : तिर्मिज़ी, किताब तफ़्सीरुल क़ुरआन, बाब व मिन सूरतिल वाक़िअह : 3295, अ़ब्दुल आला स़अ़ल्बी ज़ईफ़ है। अहमद : 1/108)

इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) फ़रमाते हैं, हर बारिश के मौक़े पर कुछ लोग कुफ़्रिया कलिमात बक देते हैं कि बारिश की वजह फ़लाँ सितारा है। मोत्ता में है हम हुदैबिया के मैदान में थे। रात को बारिश हुई थी। सुबह की नमाज़ के बाद हुज़ूर (ﷺ) ने लोगों की तरफ़ मुतवज्जह होकर फ़रमाया, 'जानते हो आज रात तुम्हारे रब ने क्या फ़रमाया?' लोगों ने कहा, अल्लाह को मालूम और उसके रसूल को। आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'सुनो! ये फ़रमाया कि आज मेरे बन्दों में से बहुत से मेरे साथ काफ़िर हुए और बहुत से ईमानदार बन गये। जिसने कहा, कि हम पर अल्लाह के फ़ज़्ल व करम से पानी बरसा वो तो मेरी ज़ात पर ईमान रखने वाला और सितारों से कुफ़्र करने वाला हुआ और जिसने कहा, फ़लाँ-फ़लाँ सितारे से बारिश बरसी उसने मेरे साथ कुफ़्र किया और उस सितारे पर ईमान लाया।' (सहीह बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ग़ज़वतुल हुदैबिया : 4147, सहीह मुस्लिम : 71, अबू दाऊद : 3906, मोत्ता इमाम मालिक : 1/192)

मुस्लिम की हदीस़ में उ़मूम है कि आसमान से जो बरकत नाज़िल होती है वो कुछ के ईमान का और कुछ के कुफ़्र का बाइ़स़ बन जाती है.... आख़िर तक। (सहीह मुस्लिम, किताबुल ईमान, बाब कफ़र मन क़ाल मुतिरना बिन्नौअ : 72)

हाँ ये ख़्याल रहे कि एक मर्तबा हज़रत उ़मर (रज़ि.) ने हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से पूछा था कि सुरय्या सितारा कितना बाक़ी है? फिर कहा था कि इस इ़ल्म वालों का ख़्याल है कि ये अपने साक़ित हो जाने के हफ़्ते भर बाद उफ़ुक़ पर नमूदार होता है। चुनाँचे यही हुआ भी कि इस सवाल व जवाब और इस्तिस्क़ा को सात दिन गुज़रे थे जो पानी बरसा। ये वाक़िया महमूल है आ़दत और तजुर्बे पर न ये कि इस सितारे में ही और इस सितारे को ही अस़र का मौजिब जानते हों। इस क़िस्म का अ़क़ीदा तो कुफ़्र है। हाँ तजुर्बे से कोई चीज़ मालूम कर लेना या कोई बात कह देना दूसरी चीज़ है। इस बारे की बहुत सी हदीसें आयत मा यफ़्तहिल्लाहु लिन्नासि

मिर्रहमतिन की तफ़्सीर में गुज़र चुकी है। एक शख़्स को हुज़ूर (ﷺ) ने ये कहते हुए सुन लिया कि फ़लाँ सितारे के असर से बारिश हुई तो आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'तू झूठा है ये तो अल्लाह की बरसाई हुई है, ये अल्लाह का रिज़्क़ है।' एक मरफ़ूअ हदीस में है, लोगों को न जाने क्या हो गया है? अगर सात साल क़हतसाली रहे और फिर अल्लाह अपने फ़ज़्ल व करम से बारिश बरसाये तो भी ये झट से ज़बान से निकालने लगेंगे कि फ़लाँ सितारे ने बरसाया।' (हसन : दारमी : 2/405, अहमद : 3/7, मुस्नद हुमैदी : 2/331 हदीस 751, ये हदीस हसन है और इसके अलावा दारमी : 2/405, सुननुल कुबरा : 10762, मुस्नद अबी यअ़ला : 1312 में अशरा सिनीन के अल्फ़ाज़ हैं।)

मुजाहिद (रह.) फ़रमाते हैं, अपनी रोज़ी तकज़ीब को ही न बना लो। यानी यूँ न कहो कि फ़लाँ फ़राख़ी का सबब फ़लाँ चीज़ है बल्कि यूँ कहो कि सब कुछ अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से है। पस ये भी मतलब है और ये भी क़ुरआन में उनका कुछ हिस्सा नहीं बल्कि उनका हिस्सा यही है कि ये उसे झूठा कहते रहें। और इसी मतलब की ताईद इससे पहले की आयत से भी होती है।

***

فَلَوْلَآ إِذَا بَلَغَتِ الْحُلْقُوْمَ ﴿٨٣﴾ وَاَنْتُمْ حِيْنَئِذٍ تَنْظُرُوْنَ ﴿٨٤﴾ وَنَحْنُ اَقْرَبُ اِلَيْهِ
مِنْكُمْ وَلٰكِنْ لَّا تُبْصِرُوْنَ ﴿٨٥﴾ فَلَوْلَآ اِنْ كُنْتُمْ غَيْرَ مَدِيْنِيْنَ ﴿٨٦﴾ تَرْجِعُوْنَهَآ اِنْ
كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٨٧﴾ فَاَمَّآ اِنْ كَانَ مِنَ الْمُقَرَّبِيْنَ ﴿٨٨﴾ فَرَوْحٌ وَّرَيْحَانٌ ۙ وَّجَنَّتُ
نَعِيْمٍ ﴿٨٩﴾ وَاَمَّآ اِنْ كَانَ مِنْ اَصْحٰبِ الْيَمِيْنِ ﴿٩٠﴾ فَسَلٰمٌ لَّكَ مِنْ اَصْحٰبِ الْيَمِيْنِ ﴿٩١﴾
وَاَمَّآ اِنْ كَانَ مِنَ الْمُكَذِّبِيْنَ الضَّآلِّيْنَ ﴿٩٢﴾ فَنُزُلٌ مِّنْ حَمِيْمٍ ﴿٩٣﴾ وَّتَصْلِيَةُ جَحِيْمٍ ﴿٩٤﴾
اِنَّ هٰذَا لَهُوَ حَقُّ الْيَقِيْنِ ﴿٩٥﴾ فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيْمِ ﴿٩٦﴾

तर्जुमा : "पस जबकि रूह नरख़रे तक पहुँच जाये। (83) और तुम उस वक़्त तक रहे हो। (84) हम उस शख़्स से बनिस्बत तुम्हारे बहुत ज़्यादा क़रीब होते हैं लेकिन तुम नहीं देख सकते। (85) पस अगर तुम किसी के ज़ेरे फ़रमान नहीं। (86) और इस क़ौल में सच्चे हो तो ज़रा इस रूह को

तो लौटा लो। (87) पस जो कोई बारगाहे इलाही से करीब होगा। (88) उसे तो राहत है और ग़िज़ायें हैं और आराम वाली जन्नत है। (89) और जो शख़्स दाहिने वालों में से है। (90) तो भी सलामती है तेरे लिये कि तू दाहिने वालों में से है। (91) लेकिन अगर कोई झुठलाने वालों गुमराहों में से है। (92) तो खोलते गर्म पानी की मेहमानी है। (93) और दोज़ख़ में जाना। (94) ये ख़बर सरासर हक़ और क़त्अ़न यक़ीनी है। (95) पस तू अपने अ़ज़ीमुश्शान परवरदिगार की तस्बीह कर।" (96)

आ़लमे नज़अ़ का ज़िक्र (आयत 83-96) : इसी मज़मून की आयतें सूरह क़ियामा में भी हैं। फ़रमाता है कि एक शख़्स अपने आख़िरी वक़्त में है, नज़अ़ का आ़लम है, रूह परवाज़ कर रही है, तुम सब पास बैठे देख रहे हो, कोई कुछ नहीं कर सकता, हमारे फ़रिश्ते जिन्हें तुम देख नहीं सकते, तुमसे भी ज़्यादा क़रीब उस मरने वाले से हैं।

जैसे और जगह है वहुवल क़ाहिरु फ़ौ-क़ इबादिही व युरसिलु अ़लैकुम हफ़ज़ह अल्लाह अपने बन्दों पर ग़ालिब है वो तुम पर अपने पास से मुहाफ़िज़ भेजता है जब तुममें से किसी की मौत का वक़्त आ जाता है तो हमारे भेजे हुए उसे ठीक तौर पर फ़ौत कर लेते हैं, फिर वो सबके सब अल्लाह तआ़ला मौलाए हक़ की तरफ़ बाज़गश्त कराये जायेंगे जो हाकिम है और जल्द हिसाब लेने वाला है। यहाँ फ़रमाता है अगर सचमुच तुम लोग किसी के ज़ेर फ़रमान नहीं हो, अगर ये हक़ है कि तुम दोबारा जीने और मैदाने क़यामत में हाज़िर होने के क़ाइल नहीं हो और उसमें तुम हक़ पर हो अगर तुम्हें हश्र व नश्र का यक़ीन नहीं, अगर तुम अ़ज़ाब नहीं किये जाओगे वग़ैरह तो हम कहते हैं इस रूह को जाने ही क्यों देते हो? अगर तुम्हारे बस में है तो हलक़ तक पहुँची हुई रूह को वापस उसकी असली जगह पहुँचा दो। पस ये याद रखो जैसे इस रूह और इस जिस्म में डालने पर हम क़ादिर थे और तुमने देख लिया ऐसे ही उसे निकालने पर क़ादिर थे और उसे भी तुमने बचश्म खुद देख लिया। यक़ीन मानो इसी तरह हम दोबारा इस रूह को इस जिस्म में डाल कर नई ज़िन्दगी देने पर भी क़ादिर हैं।

तुम्हारा न अपनी पैदाइश में दख़ल, न तो मरने में। फिर दोबारा जी उठने में तुम्हारा दख़ल कहाँ से हो गया? जो तुम कहते-फिरते हो कि हम मरकर नहीं जियेंगे।

सआ़दतमन्द की मौत की हालत : यहाँ वो अहवाल बयान हो रहे हैं जो मौत के वक़्त सकरात के वक़्त दुनिया की आख़िरी घड़ी में इंसानों के होते हैं कि या तो वो आ़ला दर्जे का अल्लाह का मुक़र्रब है या उससे कम दर्जे का है जिनके दाहिने हाथ में नामाए आ़माल दिया जायेगा या बिल्कुल बदनसीब है जो अल्लाह से जाहिल रहा और राहे हक़ से ग़ाफ़िल रहा। तो फ़रमाता है कि जो मुक़र्रबीने बारगाहे इलाही हैं जो अहकाम के आ़मिल थे नाफ़रमानियाँ नहीं करते थे उन्हें तो फ़रिश्ते तरह-तरह की ख़ुशख़बरियाँ सुनाते हैं। जैसे कि पहले बराअ (रज़ि.) की हदीस़ गुज़री कि रहमत के फ़रिश्ते उससे कहते हैं, ऐ पाक रूह! पाक जिस्म वाली रूह! चल राहत व आराम की तरफ़ चल! कभी न नाराज़ होने वाले रहमान की तरफ़। (इसकी तख़रीज सूरह इब्राहीम : 27 के तहत गुज़र चुकी है)

रौह से मुराद राहत है और रेहान से मुराद आराम है। ग़र्ज़ दुनिया के मसाइब से राहत मिल जाती है अबदी सुरूर और सच्ची ख़ुशी अल्लाह के ग़ुलाम को उसी वक़्त हासिल होती है। वो एक फ़राख़ी और वुस्अत देखता है। उसके सामने रिज़्क़ और रहमत होती है। वो जन्नते अ़द्न की तरफ़ लपकता है। हज़रत अबुल आ़लिया (रह.) फ़रमाते हैं, जन्नत की एक हरी-भरी शाख़ आती है और उस वक़्त अल्लाह के मुक़र्रब की रूह क़ब्ज़ की जाती है। मुहम्मद बिन कअ़ब (रह.) फ़रमाते हैं, मरने से पहले हर मरने वाले को मालूम हो जाता है कि वो जन्नती है या जहन्नमी है। या अल्लाह! हमारे इस वक़्त तू हमारी मदद कर हमें ईमान से उठा और अपनी रज़ामन्दी की ख़ुशख़बरी सुनाकर सुकून व राहत के साथ यहाँ से ले जा, आमीन। गो सकरात के वक़्त की अहादीस़ हम सूरह इब्राहीम की आयत युस़ब्बितुल्लाहु की तफ़्सीर में वारिद कर चुके हैं लेकिन चूंकि ये इनका बेहतरीन मौक़ा है इसलिये यहाँ एक टुकड़ा बयान करते हैं। हुज़ूर (ﷺ) फ़रमाते हैं, 'अल्लाह तआ़ला हज़रत मलकुल मौत से फ़रमाता है, मेरे फ़लाँ बन्दे के पास जा और उसे मेरे दरबार में ले आ। मैंने उसे रंज, राहत, आराम, तकलीफ़, ख़ुशी, नाख़ुशी, ग़र्ज़ हर आज़माइश में आज़मा लिया और अपनी मर्ज़ी के मुताबिक़ पाया। पस अब मैं उसे अबदी राहत देना चाहता हूँ। जा उसे मेरे ख़ास दरबार में पेश कर। मलकुल मौत (अ़लै.) पाँच सौ रहमत के फ़रिश्ते और जन्नत के कफ़न और जन्नती ख़ुश्बूयें साथ लेकर उसके पास आते हैं। गो रेहान एक ही होता है लेकिन सरे पर बीस क़िस्में होती हैं। हर एक की जुदागाना महक होती है। सफ़ेद रेशम साथ होता है जिसमें से मुश्क की लपटें आती हैं, अल्अख़। मुस्नद अहमद में है, हुज़ूर (ﷺ) की क़िरअत फ़रूहुन रा के पेश से थी। (हसन:अबू दाऊद, किताबुल हुरूफ़:3991, तिर्मिज़ी:2938, अहमद:6/64, मुस्नद अबी यअ़ला: 4515)

लेकिन तमाम क़ारियों की क़िरअत रा के ज़बर से है यानी फ़रौहुन। मुस्नद में है, हज़रत उम्मे हानी (रज़ि.) ने रसूलुल्लाह (ﷺ) से पूछा, क्या मरने के बाद हम आपस में एक-दूसरे से मिलेंगे? और एक दूसरे को देखेंगे? आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'रूह एक परिन्द हो जायेगी।' (ज़ईफ़ : अहमद : 6/424-425, इब्ने लहीआ़ लम युहद्दिस़ बिही क़ब्ल इख़्तिलातिही)

जो दरख़्तों के मेवे चुगेगी यहाँ तक कि क़यामत क़ायम हो जायेगी। उस वक़्त अपने-अपने जिस्म में चली जायेगी। इस हदीस़ में हर मोमिन के लिये बहुत बड़ी बशारत है। मुस्नद अहमद में भी इसकी शाहिद एक हदीस़ है। (सहीह : अहमद : 3/455) जिसकी इस्नाद बहुत बेहतर और मतन भी बहुत क़वी है।

और सहीह रिवायत में है शहीदों की रूहें सब्ज़ रंग परिन्दों के क़ालिब में हैं। सारी जन्नत में जहाँ चाहें खाती-पीती रहती हैं और अ़र्श तले लटकी हुई क़िन्दीलों में आ बैठती हैं। (सहीह मुस्लिम, किताबुल अम्मारह, बाब बयानु अन अरवाहिश्शुहदा फ़िल्जन्नत व अन्नहुम अहयाउन इन्द रब्बिहिम युरज़क़ून : 1887)

मुस्नद अहमद में है कि अ़ब्दुर्रहमान बिन अबू लैला (रह.) एक जनाज़े में गधे पर सवार जा रहे थे आपकी उ़म्र उस वक़्त बुढ़ापे की थी। सर और दाढ़ी के बाल सफ़ेद थे इसी अस़ना (बीच) में आपने ये हदीस़ बयान फ़रमाई कि हुज़ूर (ﷺ) ने फ़रमाया, 'जो अल्लाह की मुलाक़ात को पसंद करता है, अल्लाह भी उससे

मिलना चाहता है और जो अल्लाह से मिलने को बुरा जानता है अल्लाह भी उसकी मुलाक़ात से कराहत करता है।' सहाबा (रज़ि.) ये सुनकर सर झुकाये रोने लगे। आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'क्यों रोते हो? सहाबा (रज़ि.) ने कहा, हुज़ूर भला मौत कौन चाहता है? फ़रमाया, 'सुनो-सुनो! मतलब सकरात के वक़्त से है। उस वक़्त नेक और मुक़र्रब बन्दे को तो राहत व इनाम और आरामदेह जन्नत की ख़ुशख़बरी सुनाई जाती है, जिस पर वो तड़प उठता है और चाहता है कि जहाँ तक मुम्किन हो जल्द अल्लाह से मिले ताकि उन नेमतों से मालामाल हो जाये पस अल्लाह भी उसकी मुलाक़ात की तमन्ना करता है और अगर बद बन्दा है तो उसे मौत के वक़्त गर्म पानी और जहन्नम की मेहमानी की ख़बर दी जाती है जिससे ये बेज़ार हो जाता है और उसकी रूह रोंगटे में छिपने और अटकने लगती है और ये दिल से चाहता है कि किसी तरह अल्लाह के हुज़ूर में हाज़िर न होओं। पस अल्लाह भी उसकी मुलाक़ात को नापसंद करता है। (हसन : अहमद : 4/259-260, हम्माम समिअ मिन अ़ता बिन साइब क़ब्ल इख़्तिलातिही, उन्ज़ुर मुश्किलुल आसार लित्तहावी तबक़तुल जदीदा : 10/149)

फिर फ़रमाता है अगर वो सआदत मन्दों से है तो मौत के फ़रिश्ते उसे सलाम कहते हैं, तुझ पर सलामती हो, तू अस्हाबे यमीन में से है, अल्लाह के अ़ज़ाबों से तू सलामती पायेगा और ख़ुद फ़रिश्ते भी उसे सलाम करते हैं। जैसे और आयत में है, इन्नल्लज़ी-न क़ालू रब्बुनल्लाहु सुम्मस्-तक़ामू यानी सच्चे-पक्के तौहीद वालों के पास उनके इन्तिक़ाल के वक़्त रहमत के फ़रिश्ते आते हैं और बशारत देते हैं कि कुछ डर-ख़ौफ़ नहीं, कुछ रंज व ग़म न कर, जन्नत तेरे लिये हस्बे वादा तैयार है। दुनिया और आख़िरत में हम तेरी हिमायत के लिये मौजूद हैं जो तुम्हारा जी चाहे तुम्हारे लिये मौजूद है, जो तुम तमन्ना करोगे पूरी होकर रहेगी। ग़फ़ूर व रहीम अल्लाह के तुम इ़ज़्ज़तदार मेहमान हो। बुख़ारी में है यानी तेरे लिये मुसल्लम है कि तू अस्हाबे यमीन में से है। ये भी हो सकता है कि सलाम यहाँ दुआ के मआ़ना में हो। (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरतुल वाक़िअह : 4881) वल्लाहु आ़लम!

और अगर मरने वाला हक़ को झुठलाने वाला और हिदायत से खोया हुआ है तो उसकी ज़ियाफ़त उस गर्म हमीम से होगी जो आतें और खाल तक झुलसा दे। फिर चारों तरफ़ से जहन्नम की आग घेर लेगी जिसमें जलता-भुनता रहेगा। फिर फ़रमाया, ये यक़ीनी बातें हैं जिनके हक़ होने में कोई शुब्हा नहीं। पस अपने बड़े रब के नाम की तस्बीह करता रह। मुस्नद में है इस आयत के उतरने पर आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'इसे रुकूअ़ में रखो।' और सब्बिहिस्म रब्बिकल अअ़्ला उतरने पर फ़रमाया, 'इसे सज्दे में रखो।' (सहीह : अबू दाऊद, किताबुस्सलात, बाब मा यक़ूलुर्रजुलु फ़ी रुकूइही व सुजूदिही : 869, इब्ने माजह : 887, अहमद : 4/155, मुस्नद तयालिसी : 1000, इब्ने हिब्बान : 1898)

आप (ﷺ) फ़रमाते हैं, 'जिसने सुब्हानल्लाहिल अ़ज़ीमि व बिहम्दिही कहा उसके लिये जन्नत में एक दरख़्त लगाया जाता है' (ज़ईफ़ : तिर्मिज़ी, किताबुद्दअवात, बाब फ़ी फ़ज़ाइलि सुब्हानल्लाहि वबिहम्दिही : 3464, अबू ज़ुबैर मुदल्लस के सिमाअ़ की सराहत नहीं है।)

सहीह बुख़ारी शरीफ़ के ख़त्म पर ये हदीस है कि हुज़ूर (ﷺ) ने फ़रमाया, 'दो कलिमे हैं जो ज़बान पर

हल्के हैं, मीज़ान में भारी हैं, अल्लाह को बहुत प्यारे हैं, सुब्हानल्लाहि वबिहम्दिही सुब्हानल्लाहिल अज़ीम।' (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तौहीद, बाब क़ौलुल्लाहि तआला व नज़उल मवाज़ीनल क़िस्त लियौमिल क़ियामह : 7563, सहीह मुस्लिम : 2694, तिर्मिज़ी : 3467, इब्ने माजह : 3806, अहमद : 2/232)

अल्हम्दुलिल्लाह सूरह वाक़िया की तफ़्सीर ख़त्म हुई, अल्लाह क़ुबूल फ़रमाये (और हमारे कुल वाक़ियात का अन्जाम भला करे)।

***

FLOW CHART
तरतीबी नक्श-ए-रब्त

MACRO-STRUCTURE
नज़्मे-जली

सूरह हदीद - 57

आयात : 29, मदनी, पैराग्राफ : 5

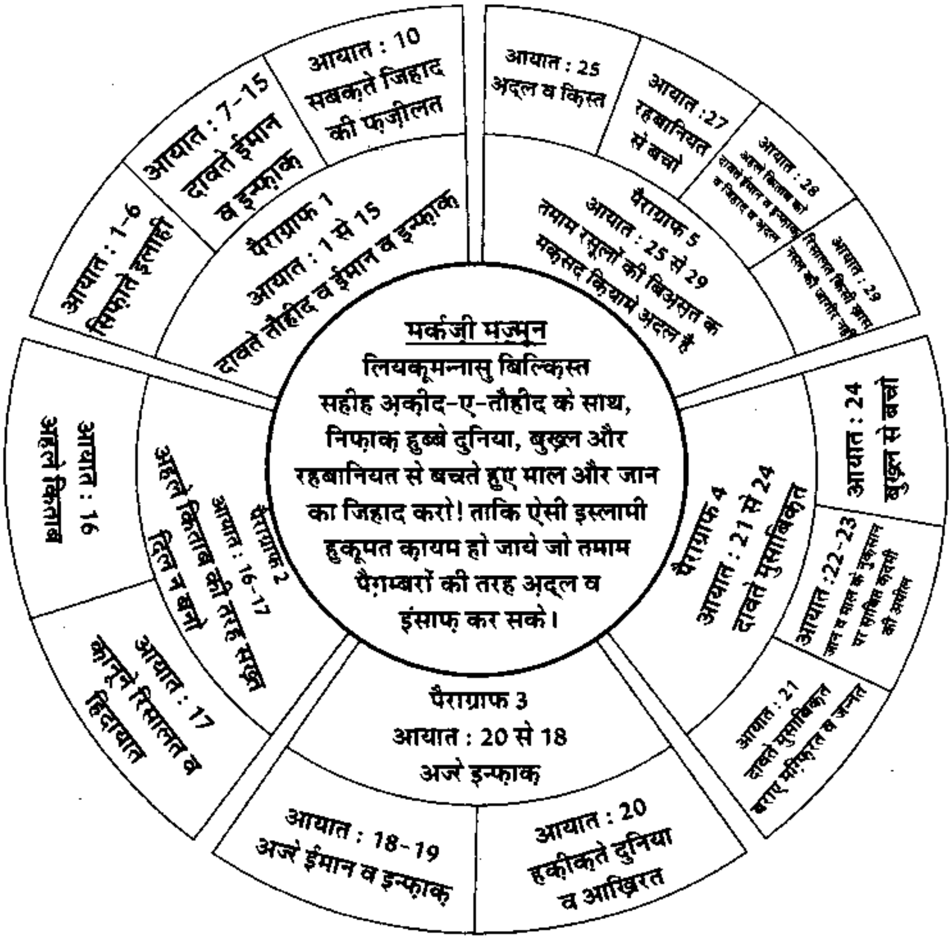

तफ़्सीर सूरह हदीद

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

तर्जुमा : "शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है।"

سَبَّحَ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ① لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضِ ۚ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ ۚ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ② هُوَ الْاَوَّلُ وَالْاٰخِرُ
وَالظَّاهِرُ وَالْبَاطِنُ ۚ وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ③

तर्जुमा : "आसमानों और ज़मीन में जो है सब अल्लाह की तस्बीह कर रहा है वो ज़बरदस्त, बाहिक्मत है। (1) आसमानों और ज़मीन की बादशाहत उसी की है, वही ज़िन्दगी देता है और मौत भी और वो हर चीज़ पर क़ादिर है। (2) वही पहले है और वही पीछे, वही ज़ाहिर है और वही छिपा है और वो हर चीज़ को बख़ूबी जानने वाला है।" (3)

तआरुफ़े सूरत : अबू दाऊद वग़ैरह में है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) सोने से पहले उन सूरतों को पढ़ते थे जिनका शुरू सब्बह या युसब्बिहु है और फ़रमाते थे उनमें एक आयत है जो एक हज़ार आयतों से अफ़ज़ल है। (हसन : अबू दाऊद, किताबुल अदब, बाब मा यक़ूलु इन्दन्नौम : 5057, तिर्मिज़ी : 2921)

जिस आयत की फ़ज़ीलत इस हदीस में बयान हुई है ग़ालिबन वो आयत हुवल् अव्वलु वल्आख़िरु आख़िर तक है, वल्लाहु आलम! इसका तफ़्सीली बयान अन्क़रीब आ रहा है इन्शाअल्लाह तआला।

अल्लाह की तस्बीह (आयत 1-3) : तमाम हैवानात, सब नबातात उसकी पाकी बयान करते हैं। सातों आसमान और ज़मीनें और उनकी मख़्लूक़ और हर-हर चीज़ उसकी सताइश करने में मशग़ूल है, गो तुम उनकी तस्बीह न समझ सको, अल्लाह हलीम व ग़फ़ूर है। उसके सामने हर कोई पस्त व आजिज़ व लाचार है, उसकी

मुक़र्रर करदा शरीअत और उसके अहकाम हिक्मत से भरे हैं। हक़ीक़ी बादशाह जिसकी मिल्कियत में आसमान व ज़मीन हैं वही है। ख़ल्क में मुतसर्रिफ़ वही है, ज़िन्दगी मौत उसी के क़ब्ज़े में है, वही फ़ना करता है, वही पैदा करता है, जिसे जो चाहे इनायत फ़रमाता है, हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है, जो चाहता है हो जाता है, जो न चाहे नहीं हो सकता।

अल्लाह अव्वल और आख़िर है : उसके बाद आयत हुवल अव्वलु वो आयत है जिसकी बाबत ऊपर की हदीस़ में गुज़रा कि एक हज़ार आयतों से अफ़ज़ल है। हज़रत अबू ज़मील (रह.) हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से कहते हैं कि मेरे दिल में एक खटका है लेकिन ज़बान पर लाने को जी नहीं चाहता इस पर हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से मुस्कुरा कर फ़रमाया, शायद कुछ शक होगा जिससे कोई नहीं बचा, यहाँ तक कि क़ुरआन में है किताब पढ़ते हैं उनसे पूछ ले.... आख़िर तक। फिर फ़रमाया, जब तेरे दिल में कोई शक हो तो इस आयत को पढ़ लिया कर हुवल् अव्वलु.... आख़िर तक। (हसन : अबू दाऊद, किताबुल अदब, बाब रद्दुल वस्वसा : 5110)

इस आयत की तफ़्सीर में दस से ऊपर-ऊपर क़ौल हैं। बुख़ारी (रह.) फ़रमाते हैं, यहया का क़ौल है कि ज़ाहिर व बातिन से मुराद अज़रूए इल्म के हर चीज़ पर ज़ाहिर और पौशीदा होना है। ये यहया ज़ियाद फ़र्रा के लड़के हैं उनकी एक तस्नीफ़ है जिसका नाम मआ़निउल क़ुरआन है।

सोते वक़्त की एक दुआ : मुस्नद अहमद में है रसूलुल्लाह (ﷺ) सोने के वक़्त ये दुआ पढ़ा करते, ''ऐ अल्लाह ऐ सातों आसमानों के और अ़र्शे अ़ज़ीम के रब! ऐ हमारे और हर चीज़ के रब! ऐ तौरात व इंजील के उतारने वाले! ऐ दानों और गुठलियों को उगाने वाले! तेरे सिवा कोई लायक़े इबादत नहीं! मैं तेरी पनाह में आता हूँ हर उस चीज़ की बुराई से कि उसकी चोटी तेरे हाथ है तू अव्वल है कि तुझसे पहले कुछ न था, तू ही आख़िर है कि तेरे बाद कुछ नहीं, तू ज़ाहिर है कि तुझसे ऊँची कोई चीज़ नहीं, तू बातिन है कि तुझसे छिपी कोई चीज़ नहीं, हमारे क़र्ज़ अदा कर दे और हमें फ़क़ीरी से ग़िना दे।'' (ज़ईफ़ : अहमद : 2/404, 2/381, हदीस़ नम्बर : 5960, सनद सहीह रवाहु मुस्लिम : 2713)

हज़रत अबू सालेह (रह.) अपने मुताल्लिक़ीन को ये दुआ सिखाते और फ़रमाते, सोते वक़्त दाहिनी करवट पर लेटकर ये दुआ पढ़ लिया करो। अल्फ़ाज़ में कुछ हेर-हेर है। मुलाहिज़ा हो मुस्लिम। (सहीह मुस्लिम, किताबुज़्ज़िक्र वद्दुआ, बाब अद्दुआउ इन्दन्नौम : 2713)

अबू यअ़ला में है हज़रत आइशा (रज़ि.) फ़रमाती हैं कि हुज़ूर (ﷺ) के हुक्म से आपका बिस्तर क़िब्ला रुख़ बिछाया जाता। आप (ﷺ) आकर अपने दाहिने हाथ पर तकिया लगाकर आराम फ़रमाते। फिर आहिस्ता-आहिस्ता कुछ पढ़ते रहते लेकिन आख़िर रात में बआवाज़े बुलंद ये दुआ पढ़ते जो ऊपर बयान हुई। अल्फ़ाज़ में कुछ हेर-फेर है। इस आयत की तफ़्सीर में जामेअ़ तिर्मिज़ी में है कि हुज़ूर (ﷺ) अपने सहाबा (रज़ि.) समेत तशरीफ़ फ़रमा थे जो एक बादल सर पर आ गया। आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'जानते हो ये क्या

है?' सहाबा (रज़ि.) ने बाअदब जवाब दिया, अल्लाह और उसके रसूल ज़्यादा जानने वाले हैं। फ़रमाया, 'इसे अ़नान कहते हैं, ये ज़मीन को सैराब करने वाले हैं। उन लोगों पर भी बरसाये जाते हैं जो न अल्लाह के शुक्रगुज़ार हैं न अल्लाह के पुकारने वाले। फिर पूछा मालूम है, तुम्हारे ऊपर क्या है?' उन्होंने कहा, अल्लाह और उसका रसूल ज़्यादा बाख़बर है। फ़रमाया, 'बुलंद महफ़ूज़ छत और लिपटी हुई मोज। जानते हो तुममें इसमें किस क़द्र फ़ासला है?' वही जवाब मिला। फ़रमाया, 'पाँच सौ साल का रास्ता।' फिर पूछा, जानते हो उसके ऊपर क्या है? सहाबा (रज़ि.) ने फिर अपनी लाइल्मी उन ही अल्फ़ाज़ में ज़ाहिर की तो आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'उसके ऊपर फिर दूसरा आसमान है और उन दोनों आसमानों में भी पाँच सौ साल का फ़ासला है।' इसी तरह आप (ﷺ) ने सात आसमान गिनवाये और हर दो में उतनी ही दूरी बयान फ़रमाई। फिर सवाल करके जवाब सुनकर फ़रमाया, 'इस सातवें के ऊपर इतने ही फ़ासले से अ़र्श है।' फिर पूछा जानते हो तुम्हारे नीचे क्या है? और जवाब वही सुनकर फ़रमाया, 'दूसरी ज़मीन है।' फिर सवाल व जवाब के बाद फ़रमाया, उसके नीचे दूसरी ज़मीन और दोनों ज़मीनों के दरम्यान भी पाँच सौ साल का फ़ासला है।' इसी तरह सात ज़मीनें इसी फ़ासले के साथ एक-दूसरी के नीचे बतलाईं। फिर फ़रमाया, 'उसकी क़सम जिसके हाथ में मुहम्मद की जान है! अगर तुम कोई रस्सी सबसे नीचे की ज़मीन की तरफ़ लटकाओ तो वो भी अल्लाह के पास पहुँचेगी।' फिर आप (ﷺ) ने इसी आयत की तिलावत की। लेकिन ये हदीस़ ग़रीब है इसके रावी हसन (रह.) का इसे अपने उस्ताद हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से सुनना साबित नहीं। जैसे कि अय्यूब यूनुस और अ़ली बिन ज़ैद मुहद्दिसीन का क़ौल है। कुछ अहले इल्म ने इस हदीस़ की शरह में कहा है कि इससे मुराद रस्सी का अल्लाह तआ़ला के इल्मे क़ुदरत और ग़ल्बे तक पहुँचना है (न कि ज़ाते बारी तक) अल्लाह तआ़ला का इल्म उसकी क़ुदरत और उसका ग़ल्बा और सल्तनत बेशक हर जगह है लेकिन वो अपनी ज़ात से अ़र्श पर है। जैसे कि उसने अपना ये वस्फ़ अपनी किताब में ख़ुद बयान फ़रमाया है। (ज़ईफ़ : तिर्मिज़ी, किताब तफ़्सीरुल क़ुरआन, बाब वमिन सूरतिल हदीद : 3298, इसकी सनद में हसन बसरी हैं जिनका हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से सिमाअ़ साबित नहीं।)

मुस्नद अहमद में भी ये हदीस़ है और उसमें दो-दो ज़मीनों के दरम्यान का फ़ासला सात सौ साल का बयान हुआ है। (ज़ईफ़ : अहमद : 2/370, इसकी सनद में भी हसन की तदलीस है जबकि हकम बिन अ़ब्दुल मलिक ज़ईफ़ रावी है। अल्मीज़ान : 1/576, हदीस़ नम्बर : 2187)

इब्ने अबी हातिम और बज़्ज़ार में भी ये हदीस़ है लेकिन इब्ने अबी हातिम में रस्सी लटकाने का जुम्ला नहीं और हर दो ज़मीन के दरम्यान की दूरी उसमें भी पाँच सौ साल की बयान हुई है। इमाम बज़्ज़ार (रह.) ने ये भी फ़रमाया है कि इस रिवायत का रावी आँहज़रत से बग़ैर हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) के और कोई नहीं। इब्ने जरीर में ये हदीस़ मुरसलन मरवी है यानी क़तादा (रह.) फ़रमाते हैं, हमसे यूँ ज़िक्र किया गया है फिर हदीस़ बयान करते हैं, सहाबी का नाम नहीं लेते। मुम्किन है यही ठीक हो, वल्लाहु आ़लम!

हज़रत अबू ज़र ग़िफ़ारी (रज़ि.) मुस्नद बज़्ज़ार और किताबुल अस्मा वस्सिफ़ात बैहक़ी में ये हदीस़

मरवी है लेकिन उसकी इस्नाद में नज़र है और मतन में ग़राबत व नकारत है, वल्लाहु सुब्हानहू व तआला आलम! इमाम इब्ने जरीर आयत व मिनल् अरज़ि मिस्लहुन्न की तफ़्सीर में हज़रत क़तादा (रह.) का क़ौल लाये हैं कि आसमान व ज़मीन के दरम्यान चार फ़रिश्तों की मुलाक़ात हुई। आपस में पूछा कि तुम कहाँ से आ रहे हो? तो एक ने कहा, सातवें आसमान से मुझे अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल ने भेजा है और मैंने अल्लाह को वहीं छोड़ा है। दूसरे ने कहा, सातवीं ज़मीन से मुझे अल्लाह ने भेजा था और अल्लाह वहीं था। तीसर ने कहा, मेरे रब ने मुझे मश्रिक़ से भेजा है जहाँ वो था। चौथे ने कहा, मुझे मग़्रिब से अल्लाह तआला ने भेजा है और मैं उसे वहीं छोड़कर आ रहा हूँ। लेकिन ये रिवायत भी ग़रीब है बल्कि ऐसा मालूम होता है हज़रत क़तादा (रह.) वाली ऊपर की रिवायत जो मुरसलन बयान हुई है मुम्किन है वो भी हज़रत क़तादा (रह.) का अपना क़ौल हो जैसे ये क़ौल ख़ुद क़तादा का अपना है, वल्लाहु आलम!

***

هُوَ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ ۚ يَعْلَمُ مَا يَلِجُ فِي الْاَرْضِ وَمَا يَخْرُجُ مِنْهَا وَمَا يَنْزِلُ مِنَ السَّمَآءِ وَمَا يَعْرُجُ فِيْهَا ۚ وَهُوَ مَعَكُمْ اَيْنَ مَا كُنْتُمْ ۚ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿٤﴾ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ وَاِلَى اللّٰهِ تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ ﴿٥﴾ يُوْلِجُ الَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُوْلِجُ النَّهَارَ فِي الَّيْلِ ۚ وَهُوَ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿٦﴾

तर्जुमा : "वही है जिसने आसमानों और ज़मीन को छः दिन में पैदा किया फिर अर्श पर बैठा, वो ख़ूब जानता है उस चीज़ को जो ज़मीन में जाये और जो उससे निकले और जो आसमान से नीचे आये और जो कुछ चढ़कर उसमें जाये, जहाँ कहीं तुम हो वो तुम्हारे साथ है और जो तुम कर रहे हो, अल्लाह देख रहा है। (4) आसमानों की और ज़मीन की बादशाही उसी की है और तमाम काम उसी की तरफ़ पहुँचाये जाते हैं। (5) वही रात को दिन में ले जाता है और वही दिन को रात में दाख़िल कर देता है, सीने के अंदर की छिपी हुई चीज़ों का वो पूरा आलिम है।" (6)

आसमान व ज़मीन की पैदाइश छः दिन में (आयत 4-6) : अल्लाह तआला का ज़मीन व आसमान को छः दिन में पैदा करना और अर्श पर क़रार पकड़ना सूरह आराफ़ की तफ़्सीर में पूरी तरह बयान हो चुका है

इसलिये यहाँ दोबारा बयान करने की ज़रूरत नहीं। उसे बख़ूबी इल्म है कि किस क़द्र बूँदें बारिश की ज़मीन में गईं, कितने दाने ज़मीन में पड़े और क्या चारे पैदा हुए, किस क़द्र खेतियाँ हुईं, कितने ही फल खिले। जैसे और आयत में है, इन्दहु मफ़ातिहुल ग़ैब 'ग़ैब की कुन्जियाँ उसी के पास हैं जिन्हें बजुज़ उसके और कोई जानता ही नहीं। वो ख़ुश्की और तरी की तमाम चीज़ों का आलिम है।' किसी पत्ते का गिरना भी उसके इल्म से बाहर नहीं। ज़मीन की अंधेरियों में पौशीदा दाना और कोई तर व ख़ुश्क चीज़ ऐसी नहीं जो खुली किताब में मौजूद न हो। इसी तरह आसमान से नाज़िल होने वाली बारिश वाले और बर्फ और तक़दीरें और अहकाम जो बज़रिय-ए-बरतर फ़रिश्तों के नाज़िल होते हैं, सब उसके इल्म में हैं। सूरह बक़रह की तफ़्सीर में ये गुज़र चुका है कि अल्लाह के मुक़र्रर करदा फ़रिश्ते बारिश के एक-एक क़तरे को अल्लाह की बतलाई हुई जगह में पहुँचा देते हैं। आसमान से उतरने वाले फ़रिश्ते और आमाल भी उसके वसीअ इल्म में हैं जैसे सहीह हदीस में है, 'रात के आमाल दिन से पहले और दिन के अमल रात से पहले उसकी जनाब में पेश कर दिये जाते हैं।' (सहीह मुस्लिम, किताबुल ईमान, बाब फ़ी क़ौलिही अलैहिस्सलाम इन्नल्लाह ला यनाम : 179)

वो तुम्हारे साथ है यानी तुम्हारा निगेहबान है, तुम्हारे आमाल व अफ़आल को देख रहा है। जैसे भी हों, जो भी हों और तुम भी ख़्वाह ख़ुश्की में ख़्वाह तरी में हो, रातें हों या दिन हों, तुम घर में हो या जंगल में हो, हर हालत में उसके इल्म के लिये बराबर हर वक़्त उसकी निगाहें और उसका सुनना तुम्हारे साथ है। तुम्हारे कलिमात वो सुनता रहता है, तुम्हारा हाल वो देखता रहता है। तुम्हारे छिपे-खुले का उसे इल्म है। जैसे फ़रमाया है कि उससे जो छिपना चाहे उसका वो फ़ैअल फ़िज़ूल है। भला ज़ाहिर-बातिन बल्कि दिलों के इरादे तक से वाक़िफ़ियत रखने वाले से कोई कैसे छिप सकता है। दूसरी आयत में है पौशीदा बातें, ज़ाहिर बातें, रातों को, दिन को जो भी हों सब उस पर रोशन हैं, सच है वही रब है वही माबूदे बरहक़ है।

सहीह हदीस में है कि जिब्रईल (अलै.) के सवाल पर आँहज़रत ने फ़रमाया, 'एहसान ये है कि तू अल्लाह की इबादत इस तरह कर कि गोया तू अल्लाह को देख रहा है, पस अगर तू उसे नहीं देख रहा तो वो तुझे देख रहा है।' (सहीह बुख़ारी, किताबुल ईमान, बाब सुआलु जिब्रईलन्नबी अनिल ईमान वल्इस्लाम वल्इहसान व इल्मुस्साअत : 50, सहीह मुस्लिम : 9)

एक शख़्स आकर रसूलुल्लाह (ﷺ) से अर्ज़ करता है कि ऐ अल्लाह के रसूल! मुझे कोई ऐसा हिक्मत का तौशा दीजिये कि मेरी ज़िन्दगी संवर जाये। आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'अल्लाह तआला का लिहाज़ कर और उससे इस तरह शर्मा जैसे कि तू अपने किसी नज़दीकी नेक क़राबतदार से शरमाता है, जो तुझसे कभी अलग न होता हो।' ये हदीस अबू बकर इस्माईली ने रिवायत की है, सनद ग़रीब है। हुज़ूर (ﷺ) का इरशाद है, 'जिसने तीन काम कर लिये उसने ईमान का मज़ा उठा लिया। अल्लाह एक की इबादत की और अपने माल की ज़कात हँसी-ख़ुशी राज़ी-रज़ामन्दी से अदा की। जानवर अगर ज़कात में देने हैं तो बूढ़े-बेकार दुबले-पतले और बीमार न दिये बल्कि दरम्याना राहे अल्लाह में दिया और अपने नफ़्स को पाक किया। इस पर एक शख़्स

ने सवाल किया कि हुज़ूर! नफ़्स को पाक करने का क्या मतलब है? आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'इस बात को दिल में महसूस करे और यक़ीन व अक़ीदा रखे कि हर जगह अल्लाह तआला उसके साथ है।' (अबू नुऐम) और हदीस़ में है, 'अफ़ज़ल ईमान ये है कि तू जान रखे कि तू जहाँ कहीं है अल्लाह तेरे साथ है।' (नुऐम बिन हम्माद) हज़रत इमाम अहमद (रह.) अक्सर इन दो शेअरों को पढ़ते रहते थे,

اذا ما خلوت الدهر يوما فلا تقل   خلوت ولكن قل على رقيب

ولا تحسبن الله يغفل ساعته   ولا ان ما يخفى عليه يغيب

जब तू बिल्कुल तन्हाई और ख़लवत में हो उस वक़्त भी ये न कह कि मैं अकेला ही हूँ बल्कि कहता रह कि तुझ पर एक निगेहबान है यानी अल्लाह तआला। किसी साअत अल्लाह तआला को बेख़बर न समझ और मख़्फ़ी से मख़्फ़ी काम को उस पर मख़्फ़ी न मान। फिर फ़रमाता है कि दुनिया और आख़िरत का मालिक वही है जैसे और आयत में है, वइन्ना लना लल्आख़िर-त वल्ऊला दुनिया और आख़िरत की मिल्कियत हमारी ही है। इसकी तारीफ उस बादशाहत पर भी करनी हमारा फ़र्ज़ है। फ़रमाता है, वहुवल्लाहु ला इला-ह इल्ला हु-व लहुल् हम्दु फ़िल्ऊला वल्आख़िरह वही माबूदे बरहक़ है और वही सज़ावारे हम्द व स़ना है दुनिया में भी और आख़िरत में भी। और आयत में है अल्लाह के लिये तमाम तारीफ़ें हैं जिसकी मिल्कियत में आसमान व ज़मीन की तमाम चीज़ें हैं और उसी की हम्द है आख़िरत में और वो दाना (जानने वाला) और ख़बरदार है। पस हर वो चीज़ जो आसमान व ज़मीन में है उसकी बादशाहत में है। सारी आसमान व ज़मीन की मख़्लूक़ उसकी गुलाम और उसकी ख़िदमत गुज़ार और उसके सामने पस्त है।

जैसे फ़रमाया, इन् कुल्लु मन् फ़िस्समावाति वल्अरज़ि इल्ला आतिर्रहमानि अ़ब्दा आसमान व ज़मीन की कुल मख़्लूक़ रहमान के सामने गुलामी की हैसियत में पेश होने वाली है। उन सबको उसने घेर रखा है और सबको एक-एक करके गिन रखा है। उसी की तरफ़ तमाम काम लौटाये जाते हैं। अपनी मख़्लूक़ में जो चाहे हुक्म देता है वो आ़दिल है ज़ुल्म नहीं करता बल्कि एक नेकी को दस गुना बढ़ा कर देता है और फिर अपने पास से अज्रे अ़ज़ीम इनायत फ़रमाता है। इरशाद है, व नज़उ़ल मवाज़ीन क़यामत के दिन हम अ़द्ल की तराज़ू रखेंगे और किसी पर ज़ुल्म न किया जायेगा, राई के बराबर का अ़मल भी हम सामने ला रखेंगे और हम हिसाब करने और लेने में काफ़ी हैं। फिर फ़रमाया, ख़ल्क़ में तसर्रुफ़ भी उसी का चलता है, दिन-रात की गर्दिश भी उसी के हाथ है। अपनी हिक्मत से घटाता-बढ़ाता है। कभी के दिन लम्बे, कभी की रातें, कभी दोनों बराबर। कभी जाड़ा, कभी गर्मी, कभी बारिश, कभी बहार कभी ख़िज़ाँ और ये सब बन्दों की ख़ैरख़्वाही और उनकी मस्लिहत के लिहाज़ से है। वो दिलों की छोटी से छोटी बातों और दूर के पौशीदा राज़ों से भी वाक़िफ़ है।

***

اٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَاَنْفِقُوْا مِمَّا جَعَلَكُمْ مُّسْتَخْلَفِيْنَ فِيْهِ ؕ فَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ
وَاَنْفَقُوْا لَهُمْ اَجْرٌ كَبِيْرٌ ۝ وَمَا لَكُمْ لَا تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ ۚ وَالرَّسُوْلُ يَدْعُوْكُمْ
لِتُؤْمِنُوْا بِرَبِّكُمْ وَقَدْ اَخَذَ مِيْثَاقَكُمْ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۝ هُوَ الَّذِيْ يُنَزِّلُ عَلٰى
عَبْدِهٖۤ اٰيٰتٍۭ بَيِّنٰتٍ لِّيُخْرِجَكُمْ مِّنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ؕ وَاِنَّ اللّٰهَ بِكُمْ لَرَءُوْفٌ
رَّحِيْمٌ ۝ وَمَا لَكُمْ اَلَّا تُنْفِقُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَلِلّٰهِ مِيْرَاثُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ
لَا يَسْتَوِيْ مِنْكُمْ مَّنْ اَنْفَقَ مِنْ قَبْلِ الْفَتْحِ وَقٰتَلَ ؕ اُولٰٓئِكَ اَعْظَمُ دَرَجَةً مِّنَ
الَّذِيْنَ اَنْفَقُوْا مِنْۢ بَعْدُ وَقٰتَلُوْا ؕ وَكُلًّا وَّعَدَ اللّٰهُ الْحُسْنٰى ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ۝
مَنْ ذَا الَّذِيْ يُقْرِضُ اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا فَيُضٰعِفَهٗ لَهٗ وَلَهٗۤ اَجْرٌ كَرِيْمٌ ۝

तर्जुमा : ''अल्लाह पर और उसके रसूल पर ईमान ले आओ और उस माल में से ख़र्च करो जिसमें अल्लाह ने तुम्हें दूसरों का जांनशीन बनाया है, पस तुममें से जो ईमान लायें और ख़ैरातें करें उन्हें बहुत बड़ा सवाब मिलेगा। (7) तुम अल्लाह पर ईमान क्यों नहीं लाते? हालांकि ख़ुद रसूल तुम्हें अपने रब पर ईमान लाने की दावत दे रहा है और अगर तुम्हें बावर हो तो वो तो तुम से मज़बूत अहदो-पैमान भी ले चुका है। (8) वो है जो अपने बन्दे पर वाज़ेह आयतें उतारता है ताकि वो तुम्हें अंधेरियों से नूर की तरफ़ ले जाये, यक़ीनन अल्लाह तआला तुम पर नर्मी करने वाला और रहम करने वाला है। (9) तुम्हें क्या हो गया है जो तुम अल्लाह की राह में ख़र्च नहीं करते? दरअसल आसमानों और ज़मीनों की मीरास का मालिक तन्हा अल्लाह ही है। तुममें से जिन लोगों ने फ़तह से पहले राहे लिल्लाह दिया है और जिहाद किया है वो दूसरों के बराबर नहीं बल्कि उनसे बहुत बड़े दर्जे के हैं, जिन्होंने फ़तह के बाद ख़ैरातें दीं और जिहाद किये हाँ भलाई का वादा तो अल्लाह तआला का उन सबसे है जो कुछ तुम कर रहे हो, उससे अल्लाह ख़बरदार है। (10) कोई है जो अल्लाह तआला को अच्छी तरह क़र्ज़ के तौर पर दे फिर अल्लाह तआला उसे उसके लिये बढ़ाता चला जाये और उसका पसन्दीदा अजर साबित हो जाये।'' (11)

अल्लाह और रसूल (ﷺ) पर ईमान लाओ (आयत 7-11) : अल्लाह तबारक व तआला अपने ऊपर और अपने रसूल के ऊपर ईमान लाने और उस पर मज़बूती और हमेशगी के साथ जम कर रहने की हिदायत फ़रमाता है और अपनी राह में ख़ैरात करने की रग़बत दिलाता है, जो माल हाथों-हाथ तुम्हें उसने पहुँचाया हो तुम उसकी इताअत गुज़ारी में उसे ख़र्च करो और समझ लो कि जिस तरह दूसरे हाथों से तुम्हें मिला है उसी तरह अन्क़रीब तुम्हारे हाथों से दूसरे हाथों में चला जायेगा और तुम पर हिसाब और किताब रह जायेगा और इसमें ये भी इशारा है कि तेरे बाद तेरा वारिस़ मुम्किन है कि नेक हो और वो तेरे छोड़े हुए माल को मेरी राह में ख़र्च करके मुझसे बहुत नज़दीकी हासिल करे और मुम्किन है कि वो बद हो और अपनी बदमस्ती और स्याहकारी में तेरा अन्दोख़्ता (ख़ज़ाना) फ़ना कर दे और उसकी बदियों का बाइस़ तू बने, न तू छोड़ता न वो उड़ाता। हुज़ूर (ﷺ) सूरह तकासुर पढ़कर फ़रमाने लगे, 'इंसान गो कहता रहता है ये भी मेरा माल है ये भी मेरा माल है, हालांकि दरअसल इंसान का माल वो है जो खा लिया, पहन लिया, सदक़ा कर दिया। खाया हुआ फ़ना हो गया, पहना हुआ पुराना होकर बर्बाद हो गया, हाँ अल्लाह की राह में दिया हुआ बतौरे ख़ज़ाने के जमा रहा।' (सहीह मुस्लिम, किताबुज़्ज़ुहद, बाब अद्दुन्या सिजनुन लिल्मुअ्मिन व जन्नतुन लिल्काफ़िर : 2958, अहमद : 4/24)

और जो रह गया वो तो औरों का माल है तू तो उसे जमा करके छोड़कर जाने वाला है। (सहीह मुस्लिम : 2959)

फिर इन ही दोनों बातों की तरग़ीब दिलाता है और बहुत बड़े अज्र का वादा देता है। फिर फ़रमाता है तुम्हें ईमान से कौन सी चीज़ रोकती है? रसूलुल्लाह (ﷺ) तुममें मौजूद हैं, वो तुम्हें ईमान की तरफ़ बुला रहे हैं, दलीलें दे रहे और मुअज़्ज़े दिखा रहे हैं। सहीह बुख़ारी की शरह के शुरूआती हिस्से किताबुल ईमान में हम ये हदीस़ बयान कर आये हैं कि हुज़ूर (ﷺ) ने पूछा, सबसे ज़्यादा अच्छे ईमान वाले तुम्हारे नज़दीक कौन हैं? कहा, फ़रिश्ते। फ़रमाया, 'वो तो अल्लाह के पास ही हैं फिर ईमान क्यों न लाते?' कहा, फिर अम्बिया। फ़रमाया, 'उन पर तो वह्य और कलामुल्लाह उतरता है वो कैसे ईमान न लाते? कहा, फिर हम। फ़रमाया, 'वाह! तुम ईमान से कैसे रुक सकते थे मैं तुममें ज़िन्दा मौजूद हूँ। सुनो! बेहतरीन और अजीबतर ईमानदार वो लोग हैं जो तुम्हारे बाद आयेंगे, सहीफ़ों में लिखा देखेंगे और ईमान क़ुबूल करेंगे।' सूरह बक़रह के शुरू में आयत अल्लज़ी-न युअ्मिनु-न बिल्ग़ैबि की तफ़्सीर में भी हम ऐसी अहादीस़ लिख आये हैं।

फिर उन्हें रोज़े मीस़ाक़ का क़ौल-क़रार याद दिलाता है जैसे और आयत में है, वज़्कुरू निअ्मतल्लाहि अलैकुम इससे मुराद रसूलुल्लाह से बैअत करना है और इमाम इब्ने जरीर (रह.) फ़रमाते हैं, मुराद वो मीस़ाक़ है जो हज़रत आदम (अलै.) की पीठ में उनसे लिया गया था। मुजाहिद (रह.) का भी यही मज़हब है, वल्लाहु आलम! वो अल्लाह जो अपने बन्दे पर रोशन हुज्जतें और बेहतरीन दलाइल और उम्दातर आयतें नाज़िल फ़रमाता है ताकि जुल्म व जहल की घंघोर-घटाओं और राय-क़ियास की बदतरीन अंधेरियों से तुम्हें निकालकर नूरानी और रोशनी, साफ़ और सीधी राहे हक़ पर ला खड़ा कर दे, अल्लाह रऊफ़ है साथ ही रहीम

है। ये उसका सुलूक और करम है कि लोगों की राहनुमाई के लिये किताबें उतारीं, रसूल भेजे, शक-शुब्हात दूर कर दिये। हिदायत की वज़ाहत कर दी। ईमान और ख़ैरात का हुक्म करके फिर ईमान की रग़बत दिला कर और ये बयान फ़रमा कर कि ईमान न लाने का अब कोई उ़ज़्र मैंने बाक़ी नहीं रखा, फिर सदक़ात की रग़बत दिलाई और फ़रमाया, मेरी राह में ख़र्च करो और फ़क़ीरी से न डरो इसलिये कि जिसकी राह में तुम ख़र्च कर रहे हो वो ज़मीन व आसमान के ख़ज़ानों का तन्हा मालिक है। अ़र्श व कुर्सी उसी की है और वो तुमसे इस ख़ैरात के बदले का वादा कर चुका है। फ़रमाता है, वमा अन्फ़क़्तुम्-मिन् शैइन फ़हु-व युख़्लिफ़ुहू वहु-व ख़ैरुर्राज़िक़ीन जो कुछ तुम राहे अल्लाह दोगे उसका बेहतरीन बदला वो तुम्हें देगा और रोज़ी रसाँ दरहक़ीक़त वही है। और फ़रमाता है, मा इन्दकुम यन्फ़दु वमा इन्दल्लाहि बाक़ ये फ़ानी माल तुम ख़र्च करोगे वो अपने पास इसका हमेशगी वाला माल तुम्हें देगा। तवक्कल वाले ख़र्च करते रहते हैं और मालिके अ़र्श उन्हें तंगी-तुरशी से महफ़ूज़ रखता है। उन्हें इस बात का ऐतिमाद होता है कि हमारे फ़ी सबीलिल्लाह ख़र्च किये हुए माल का बदला दोनों जहान में हमें हर्गिज़ मिल कर रहेगा।

फ़ज़ाइले सहाबा : फिर इस बात का बयान हो रहा है कि फ़तहे मक्का से पहले जिन लोगों ने राहे लिल्लाह ख़र्च किये और जिहाद किये और जिन लोगों ने ये नहीं किया, गो बाद फ़तहे मक्का किया हो ये दोनों बराबर नहीं हैं। इस वजह से भी कि उस वक़्त तंगी-तुरशी ज़्यादा थी और कुव्वत-ताक़त कम थी और इसलिये भी कि उस वक़्त ईमान वही कुबूल करता था जिसका दिल हर मेल-कुचैल से पाक होता था। फ़तहे मक्का के बाद तो इस्लाम को खुला ग़ल्बा मिला और मुसलमानों की तादाद बहुत ज़्यादा हो गई और फ़ुतूहात की वुस्अ़त हुई और साथ ही माल भी नज़र आने लगा। पस उस वक़्त और इस वक़्त में जितना फ़र्क़ है उतना ही उन लोगों और इन लोगों के अज्र में फ़र्क़ है। उन्हें बहुत बड़े अज्र मिलेंगे। गो दोनों असल भलाई और असल अज्र में शरीक हैं। कुछ ने कहा है, फ़तह से मुराद सुलहे हुदैबिया है। इसकी ताईद मुस्नद अहमद की रिवायत से भी होती है कि हज़रत ख़ालिद बिन वलीद (रज़ि.) और हज़रत अ़ब्दुर्रहमान बिन औफ़ (रज़ि.) में कुछ इख़्तिलाफ़ हो गया, जिस पर हज़रत ख़ालिद बिन वलीद (रज़ि.) ने फ़रमाया, तुम इसी पर अकड़ रहे हो कि हमसे कुछ दिन पहले इस्लाम लाये। जब हुज़ूर (ﷺ) को इसका इ़ल्म हुआ तो आपने फ़रमाया, 'मेरे सहाबा को मेरे लिये छोड़ दो, उसकी क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है कि अगर तुम उहुद के या किसी पहाड़ के बराबर सोना ख़र्च करो तो भी उनके आ़माल को पहुँच नहीं सकते।' (ज़ईफ़ : अहमद : 3/266, हमीद तवील अ़न्अ़न)

ज़ाहिर है कि ये वाक़िया हज़रत ख़ालिद (रज़ि.) के मुसलमान हो जाने के बाद का है और आप सुलहे हुदैबिया के बाद फ़तहे मक्का से पहले ईमान लाये थे और ये इख़्तिलाफ़ जिसका ज़िक्र इस रिवायत में है बनू जज़ीमा के बारे में हुआ था। हुज़ूर (ﷺ) ने फ़तहे मक्का के बाद हज़रत ख़ालिद (रज़ि.) की एमारत में उनकी तरफ़ एक लश्कर भेजा था जब ये वहाँ पहुँचे तो उन लोगों ने पुकारना शुरू किया कि हम मुसलमान हो गये लेकिन अपनी नावाक़िफ़ियत से ये तो न कहा कि हम इस्लाम लाये बल्कि कहने लगे, हम साबी हुए, यानी बेदीन हुए। इसलिये कि कुफ़्फ़ार मुसलमानों को यही लफ़्ज़ कहा करते थे। हज़रत ख़ालिद (रज़ि.) ने (ग़ालिबन) इस कलिमे

का असली मतलब न समझकर उनके क़त्ल का हुक्म दे दिया बल्कि उनके जो लोग गिरफ़्तार किये गये थे उन्हें क़त्ल कर डालने को फ़रमाया। इस पर हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ और हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने उनकी मुख़ालिफ़त की। इस वाक़िये का मुख़्तसर बयान ऊपर वाली हदीस में है।

सहीह हदीस में है, 'मेरे सहाबा को बुरा न कहो उसकी क़सम जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है कि अगर तुममें से कोई उहुद पहाड़ के बराबर सोना ख़र्च करे तो भी उनके तीन पाव अनाज के सवाब को नहीं पहुँचेगा बल्कि डेढ़ पाव को भी न पहुँचेगा।' (सहीह बुख़ारी, किताब फ़ज़ाइलु अस्हाबिन्नबी, बाब क़ौलुन्नबी लौ कुन्तु मुत्तख़िज़न ख़लीला : 3673, सहीह मुस्लिम : 2541)

इब्ने जरीर में है, हुदैबिया वाले साल हम हुज़ूर (ﷺ) के साथ जब अस्फ़ान में पहुँचे तो आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'ऐसे लोग भी आयेंगे कि तुम अपने आमाल को उनके आमाल के मुक़ाबले में हक़ीर समझने लगोगे।' हमने कहा, क्या कुरैशी। फ़रमाया, 'नहीं! बल्कि यमनी निहायत नर्म दिल, निहायत ख़ुश अख़्लाक़ सादा मिज़ाज।' हमने कहा, हुज़ूर! फिर क्या वो हमसे बेहतर होंगे? आप (ﷺ) ने जवाब दिया कि अगर उनमें से किसी के पास उहुद पहाड़ के बराबर सोना भी हो और वो उसे राहे अल्लाह ख़र्च करे तो तुममें से एक के तीन पाव बल्कि डेढ़ पाव अनाज की ख़ैरात को भी नहीं पहुँच सकता। याद रखो कि हममें और दूसरे तमाम लोगों में यही फ़र्क़ है। फिर आप (ﷺ) ने इसी आयत ला यस्तवी की तिलावत की। लेकिन ये रिवायत ग़रीब है। बुख़ारी व मुस्लिम में हज़रत अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) की रिवायत में ख़ारजियों के ज़िक्र में है, 'तुम अपनी नमाज़ें उनकी नमाज़ों के मुक़ाबले में और अपने रोज़े उनके रोज़ों के मुक़ाबले पर हक़ीर और कमतर शुमार करोगे, वो दीन से इस तरह निकल जायेंगे जिस तरह तीर शिकार से।' (सहीह बुख़ारी, किताब इस्तिताबतुल मुर्तद्दीन, बाब क़त्लुल ख़वारिज वल्मुल्हिदीन बअ़द इक़ामतिल हुज्जत : 6391, सहीह मुस्लिम : 1064)

इब्ने जरीर में है, 'अन्क़रीब एक क़ौम आयेगी कि तुम अपने आमाल को कमतर समझने लगोगे जब उनके आमाल के सामने रखोगे।' सहाबा (रज़ि.) ने पूछा, क्या वो कुरैशियों में से होंगे? आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'नहीं वो सादा मिज़ाज, नर्म दिल यहाँ आने वाले हैं।' और आप (ﷺ) ने यमन की तरफ़ अपने हाथ से इशारा किया फिर फ़रमाया, 'वो यमनी लोग हैं, ईमान तो यमन वालों का ईमान है और हिक्मत यमन वालों की हिक्मत है।' हमने पूछा, क्या वो हमसे अफ़ज़ल होंगे? फ़रमाया, 'उसकी क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है! अगर उनमें से किसी के पास सोने का पहाड़ हो और उसे वो अल्लाह की राह में दे डाले तो भी तुम्हारे एक मुद्द या आधे मुद्द को भी नहीं पहुँच सकता।' फिर आप (ﷺ) ने अपनी और उंगलियाँ बंद कर लीं और अपनी छंगलिया को दराज़ करके फ़रमाया, 'ख़बरदार रहो! ये है फ़र्क़ हम में और दूसरे लोगों में।' फिर आप (ﷺ) ने यही आयत तिलावत फ़रमाई। पस इस हदीस में हुदैबिया का ज़िक्र नहीं। फिर ये भी हो सकता है कि मुम्किन है कि फ़तहे मक्का से पहले ही फ़तहे मक्का के बाद की खबर अल्लाह तआला ने आप (ﷺ) को दे दी हो जैसे कि सूरह मुज़्ज़म्मिल में जो उन शुरूआती सूरतों में से है जो मक्का में नाज़िल हुई थीं परवरदिगार ने ख़बर दी

थी कि व आख़रू-न युक़ातिलू-न फ़ी सबीलिल्लाह कुछ और लोग ऐसे भी हैं जो अल्लाह की राह में जिहाद करते हैं। पस जिस तरह उस आयत में एक आने वाले वाक़िये का तज़्किरा है उसी तरह इस आयत को और हदीस़ को भी समझ लिया जाये, वल्लाहु आलम!

सब सहाबा बड़े दर्जे वाले हैं : फिर फ़रमाता है कि हर एक से अल्लाह तआ़ला ने भलाई का वादा किया है। यानी फ़तहे मक्का से पहले और उसके बाद भी जिसने जो कुछ राहे लिल्लाह दिया है उसका अज्र वो पायेगा। ये अलग बात है कि किसी को बहुत ज़्यादा दिया जाये, किसी को उससे कम। जैसे दूसरी जगह है कि मुजाहिद और ग़ैर मुजाहिद जो उ़ज़्र वाले भी न हों, दर्जे में बराबर नहीं। गो भले वादे में दोनों शामिल हैं। सहीह हदीस़ में है, 'क़वी (ताक़तवर) मोमिन अल्लाह के नज़दीक ज़ईफ़ (कमज़ोर) मोमिन से अफ़ज़ल है लेकिन भलाई दोनों में है।' (सहीह मुस्लिम, किताबुल क़दर, बाब अल्ईमानु बिल्क़दर, वल्इज़्आन लहू : 2664, इब्ने माजह : 79, अहमद : 2/366)

अगर ये फ़िक़रा (बात) इस आयत में न होता तो मुम्किन था कि किसी को उनकी सुबकी का ख़्याल गुज़रता। इसलिये फ़ज़ीलत बयान फ़रमाकर फिर अ़त्फ़ डालकर असल अज्र में दोनों को शरीक बताया। फिर फ़रमाया तुम्हारे तमाम आ़माल की तुम्हारे रब को ख़बर है वो दर्जात में जो तफ़ावुत रखता है वो भी अन्दाज़ से नहीं बल्कि सहीह इ़ल्म से।

अल्लाह सदक़ात को बढ़ाता है : हदीस़ शरीफ़ में है, 'एक दिरहम एक लाख दिरहम से बढ़ जाता है।' (ज़ईफ़ : नसाई, किताबुज़्ज़ुकात, बाब जुहदिल मुक़िल्ल : 2528, इब्ने हिब्बान : 3347, हाकिम : 1/416, इसकी सनद में मुहम्मद बिन अ़ज्लान की तदलीस है।)

ये भी याद रहे कि इस आयत के बड़े हिस्सेदार हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ (रज़ि.) हैं। आपने शुरूआती तंगी के वक़्त अपना कुल माल राहे लिल्लाह दे दिया था। जिसका बदला बजुज़ अल्लाह के किसी और से मतलूब न था। हज़रत उ़मर (रज़ि.) फ़रमाते हैं, मैं दरबारे रिसालत मआब (ﷺ) में था और हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ (रज़ि.) भी थे सिर्फ़ एक अ़बा (लिबास का नाम) आपके जिस्म पर थी। गिरेबान कांटे से अटकाये हुए थे जो हज़रत जिब्रईल (अ़लै.) नाज़िल हुए और पूछा, क्या बात है जो हज़रत अबू बकर ने फ़क़त एक अ़बा पहन रखी है और कांटा लगा रखा है? हुज़ूर (ﷺ) ने फ़रमाया, 'इन्होंने अपना कुल माल मेरे कामों में फ़तह से पहले ही राहे लिल्लाह ख़र्च कर डाला है अब इनके पास कुछ भी नहीं। हज़रत जिब्रईल (अ़लै) ने फ़रमाया, इनसे कहो कि अल्लाह इन्हें सलाम कहता है और फ़रमाता है कि क्या इस फ़क़ीरी में तुम मुझसे ख़ुश हो या नाख़ुश हो? आप (ﷺ) ने हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ (रज़ि.) को ये कहकर सवाल किया। जवाब मिला कि मैं अपने रब अ़ज़्ज़ व जल्ल से नाराज़ कैसे हो सकता हूँ, मैं इस हाल में बहुत ख़ुश हूँ। ये हदीस़ सनदन् ज़ईफ़ है, वल्लाहु आ़लम! फिर फ़रमाता है कौन है जो अल्लाह को अच्छा क़र्ज़ दे। इससे मुराद अल्लाह तआ़ला की खुश्नूदी के लिये ख़र्च करना है।

कुछ लोगों ने कहा है बाल-बच्चों को खिलाना-पिलाना वग़ैरह ख़र्च मुराद है। हो सकता है कि आयत

अपने उमूम के लिहाज़ से दोनों सूरतों को शामिल हो। फिर इस पर वादा फ़रमाता है कि उसे बहुत बढ़ा-चढ़ा कर बदला मिलेगा और पाकीज़ातर रोज़ी जन्नत में मिलेगी। इस आयत को सुनकर हज़रत अबू वहदाह अन्सारी (रज़ि.) हुज़ूर (ﷺ) के पास आये और कहा, क्या हमारा रब हमसे क़र्ज़ माँगता है? आप (ﷺ) ने फ़रमाया, हाँ! कहा ज़रा अपना हाथ तो दीजिये। आप (ﷺ) ने हाथ बढ़ाया तो आपका हाथ अपने हाथ में लेकर कहा, मेरा बाग़ जिसमें खजूर के छः सौ दरख़्त हैं वो मैंने अपने रब को दिया। आपके बीवी-बच्चे भी उसी बाग़ में थे। आप आये और बाग़ के दरवाज़े पर खड़े रहकर अपनी बीवी साहिबा को आवाज़ दी। वो लब्बैक कहती हुई आईं तो फ़रमाने लगे, बच्चों को लेकर चली आओ। मैंने ये बाग़ अपने रब अ़ज़्ज़ व जल्ल को क़र्ज़ दे दिया है। वो ख़ुश होकर कहने लगीं, आपने बहुत नफ़े की तिजारत की और बाल-बच्चों को और घर के असासे को लेकर बाहर चली आईं। हुज़ूर (ﷺ) फ़रमाने लगे, 'जन्नती दरख़्त वहाँ के बाग़ात जो मेवों से लदे हुए और जिनकी शाख़ें याक़ूत और मोती की हैं अबू वहदाह को अल्लाह ने दे दीं।' (ज़ईफ़ : इब्ने अबी हातिम, इसकी सनद में हमीद अल्अअ़रज ज़ईफ़ रावी है। अल्मीज़ान : 1/614, हदीस नम्बर 2340)

***

يَوْمَ تَرَى الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ يَسْعٰى نُوْرُهُمْ بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَبِاَيْمَانِهِمْ
بُشْرٰىكُمُ الْيَوْمَ جَنّٰتٌ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۭ ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ
الْعَظِيْمُ ۚ ﴿۱۲﴾ يَوْمَ يَقُوْلُ الْمُنٰفِقُوْنَ وَالْمُنٰفِقٰتُ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوا انْظُرُوْنَا نَقْتَبِسْ
مِنْ نُّوْرِكُمْ ۚ قِيْلَ ارْجِعُوْا وَرَآءَكُمْ فَالْتَمِسُوْا نُوْرًا ۭ فَضُرِبَ بَيْنَهُمْ بِسُوْرٍ لَّهٗ
بَابٌ ۭ بَاطِنُهٗ فِيْهِ الرَّحْمَةُ وَظَاهِرُهٗ مِنْ قِبَلِهِ الْعَذَابُ ۭ ﴿۱۳﴾ يُنَادُوْنَهُمْ اَلَمْ نَكُنْ
مَّعَكُمْ ۭ قَالُوْا بَلٰى وَلٰكِنَّكُمْ فَتَنْتُمْ اَنْفُسَكُمْ وَتَرَبَّصْتُمْ وَارْتَبْتُمْ وَغَرَّتْكُمُ
الْاَمَانِيُّ حَتّٰى جَآءَ اَمْرُ اللّٰهِ وَغَرَّكُمْ بِاللّٰهِ الْغَرُوْرُ ﴿۱۴﴾ فَالْيَوْمَ لَا يُؤْخَذُ مِنْكُمْ
فِدْيَةٌ وَّلَا مِنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۭ مَاْوٰىكُمُ النَّارُ ۭ هِيَ مَوْلٰىكُمْ ۭ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ﴿۱۵﴾

तर्जुमा : "क़यामत के दिन तू देखेगा कि ईमानदार मर्दों और औरतों का नूर उनके आगे-आगे और उनके दायें दौड़ रहा होगा, आज तुम्हें उन जन्नतों की ख़ुशख़बरी है जिनके नीचे नहरें जारी हैं, जिनमें हमेशा की रिहाइश है, ये है बेहतरीन कामयाबी। (12) उस दिन मुनाफ़िक़ मर्द-औरत ईमानदारों से कहेंगे कि हमारा इन्तिज़ार कर लो कि हम भी तुम्हारे नूर से कुछ रोशनी हासिल कर लें। जवाब दिया जायेगा कि तुम अपने पीछे लौट जाओ और रोशनी तलाश करो। फिर उनके और इनके दरम्यान एक दीवार हाइल कर दी जायेगी जिसमें दरवाज़ा भी होगा, उसके अंदरूनी हिस्से में तो रहमत होगी और बाहर की तरफ़ अज़ाब होगा। (13) ये चिल्ला-चिल्लाकर उनसे कहेंगे कि क्या हम तुम्हारे साथ न थे? ये कहेंगे कि हाँ थे तो सही लेकिन तुम ने अपने तईं गुमराही में फँसा रखा था और इन्तिज़ार में ही रहे और शक-शुब्हा करते रहे और तुम्हें तुम्हारी फ़िज़ूल तमन्नाओं ने धोखे में ही रखा, यहाँ तक कि अल्लाह का हुक्म आ पहुँचा और तुम्हें धोखा देने वाले ने धोखे में ही रखा। (14) अल्ग़र्ज़ आज तुमसे न फ़िदया और बदला क़ुबूल किया जाये और न काफ़िरों से, तुम सबका ठिकाना दोज़ख़ है वही तुम्हारी रफ़ीक़ है और वो बुरा ठिकाना है।" (15)

रोज़े क़यामत मोमिन मर्द और औरतों की हालत : यहाँ बयान हो रहा है कि मुसलमानों के नेक आमाल के मुताबिक़ उन्हें नूर मिलेगा जो क़यामत के दिन उनके साथ-साथ रहेगा। हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) फ़रमाते हैं, उनमें कुछ का नूर पहाड़ों के बराबर होगा और कुछ का खजूर के दरख़्तों के बराबर और कुछ का खड़े इंसान के क़द के बराबर, सबसे कम नूर जिस गुनाहगार मोमिन का होगा उसके पैर के अंगूठे पर नूर होगा जो कभी रोशन होता होगा और कभी बुझ जाता होगा। (अत्तबरी : 23/179)

हज़रत क़तादा (रह.) फ़रमाते हैं, हमसे ज़िक्र किया गया है कि हुज़ूर (ﷺ) का इरशाद है, 'कुछ मोमिन ऐसे भी होंगे जिनका नूर इस क़द्र होगा कि जिस क़द्र मदीना से अदन दूर है और अबीन दूर है और सनआ दूर है। कुछ इससे कम, कुछ इससे कम यहाँ तक कि कुछ वो भी होंगे जिनके नूर से सिर्फ़ उनके दोनों क़दमों के पास ही उजाला होगा।'

हज़रत जुनादा बिन अबू उमय्या (रज़ि.) फ़रमाते हैं, लोगो! तुम्हारे नाम वल्दियत के साथ और ख़ास निशानियों के साथ अल्लाह के यहाँ लिखे हुए हैं, उसी तरह तुम्हारा ज़ाहिर-बातिन अमल भी वहाँ लिखा हुआ है। क़यामत के दिन नाम लेकर पुकार कर कह दिया जायेगा कि ऐ फ़लाँ! ये तेरा नूर है और ऐ फ़लाँ! तेरे लिये कोई नूर हमारे यहाँ नहीं। फिर आपने इसी आयत की तिलावत फ़रमाई।

रोज़े क़यामत मोमिनों के लिये नूर : हज़रत ज़ह्हाक (रह.) फ़रमाते हैं, अव्वल तो हर शख़्स को नूर अता होगा लेकिन जब पुल सिरात पर जायेंगे, मुनाफ़िक़ों का नूर बुझ जायेगा। उसे देखकर मोमिन भी डरने लगेंगे कि ऐसा न हो हमारा नूर भी बुझ जाये तो अल्लाह से दुआ करेंगे कि ऐ अल्लाह! हमारा नूर हमारे लिये पूरा-पूरा कर। हज़रत हसन (रह.) फ़रमाते हैं, इस आयत से मुराद पुल सिरात पर नूर का मिलना है ताकि इस अंधेरी

जगह से बआराम गुज़र जायें। रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़रमाते हैं, 'सबसे पहले सज्दे की इजाज़त क़यामत के दिन मुझे दी जायेगी और इसी तरह सबसे पहले सज्दे से सर उठाने का हुक्म भी मुझे होगा। मैं आगे-पीछे, दायें-बायें नज़रें डालूँगा और अपनी उम्मत को पहचान लूँगा। तो एक शख़्स ने कहा, हुज़ूर! हज़रत नूह (अलै.) से लेकर आपकी उम्मत तक की तमाम उम्मतें उस मैदान में इकट्ठी होंगी उनमें से आप अपनी उम्मत की शनाख़्त कैसे करेंगे? आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'कुछ मख़्सूस निशानियों की वजह से, मेरी उम्मत के आज़ाए वुज़ू चमक रहे होंगे। ये वस्फ़ किसी और उम्मत में न होगा और उन्हें उनके नामा-ए-आमाल उनके दाहिने हाथों में दिये जायेंगे और उनके चेहरे चमक रहे होंगे और उनका नूर उनके आगे-आगे चलता होगा और उनकी औलाद उनके साथ होगी।' (ज़ईफ़ : हाकिम : 2/478, अब्दुल्लाह बिन सालेह मिस्री ज़ईफ़ फ़ी ग़ैरि रिवायतिल हज़ाक़ अन्हू)

ज़हहाक (रह.) फ़रमाते हैं, उनके दायें हाथ में उनका आमालनामा होगा जैसे दूसरी आयतों में तशरीह है। उनसे कहा जायेगा कि आज तुम्हें उन जन्नतों की बशारत है जिनके चप्पे-चप्पे पर चश्मे जारी हैं जहाँ से कभी निकलना नहीं। ये ज़बरदस्त कामयाबी है। उसके बाद की आयत में मैदाने क़यामत के हौलनाक दिल शिकन और कपकपा देने वाले वाक़िये का बयान है कि सिवाय सच्चे ईमान और खरे आमाल वालों के निजात किसी को मुँह न दिखायेगी।

सुलैम बिन आमिर फ़रमाते हैं हम एक जनाज़े के साथ बाबे दमिश्क़ में थे जब जनाज़े की नमाज़ हो चुकी और दफ़न का काम शुरू हुआ तो हज़रत अबू उमामा बाहिली (रज़ि.) ने फ़रमाया, 'लोगो! तुम इस दुनिया की मंज़िल में आज सुबह-शाम कर रहे हो नेकियाँ-बुराइयाँ कर सकते हो उसके बाद एक और मंज़िल की तरफ़ तुम सब कूच करने वाले हो। वो मंज़िल यही क़ब्र की है जो तन्हाई का, अन्धेरे का, कीड़ों का और तंगी व तारीकी वाला घर है मगर जिसके लिये अल्लाह तआला उसे वुस्अत दे दे। यहाँ से तुम फिर मैदाने क़यामत के अलग-अलग मक़ामात पर वारिद होंगे। एक जगह बहुत से लोगों के चेहरे सफ़ेद हो जायेंगे और बहुत से लोगों के स्याह पड़ जायेंगे। फिर एक मैदान में जाओगे जहाँ सख़्त अन्धेरा होगा। वहाँ ईमानदारों को नूर तक़सीम किया जायेगा और काफ़िर व मुनाफ़िक़ बेनूर रह जायेंगे। इसी का ज़िक्र आयत औ कज़ुलुमातिन अल्अख़ में है। पस जिस तरह आँखों वालों की बसारत से अन्धा कोई नफ़ा हासिल नहीं कर सकता, मुनाफ़िक़ व काफ़िर ईमानदार के नूर से कुछ फ़ायदा न उठा सकेगा। तो मुनाफ़िक़ ईमानदारों से आरज़ू करेंगे कि इस क़द्र आगे न बढ़ जाओ कुछ तो ठहरो जो हम भी तुम्हारे नूर के सहारे चलें। तुम जिस तरह दुनिया में मुसलमानों के साथ फ़न्न-फ़रैब करते थे आज उनसे कहा जायेगा कि लौट जाओ और नूर तलाश कर लाओ। ये वापस नूर की तक़सीम की जगह जायेंगे लेकिन वहाँ कुछ न पायेंगे। यही अल्लाह का वो मक्र है जिसका बयान वहु-व ख़ादिउहुम में है। अब लौटकर यहाँ जो आयेंगे, तो देखेंगे कि मोमिनों और उनके दरम्यान एक दीवार हाइल हो गई है जिसके उस तरफ़ रहमत ही रहमत है और इस तरफ़ अज़ाब व सज़ा ही सज़ा है। पस मुनाफ़िक़ नूर की तक़सीम के वक़्त धोखे में ही पड़ा रहेगा। नूर मिल जाने पर भेद खुल जायेगा तमीज़ हो जायेगी और ये मुनाफ़िक़ अल्लाह की रहमत से मायूस हो जायेंगे। इब्ने अब्बास (रज़ि.) से मरवी है कि जब कामिल अन्धेरा

छाया हुआ होगा कि कोई इंसान अपना हाथ भी न देख सके उस वक़्त अल्लाह तआला एक नूर ज़ाहिर करेगा। मुसलमान उस तरफ़ जाने लगेंगे तो मुनाफ़िक़ भी पीछे लग जायेंगे, जब मोमिन ज़्यादा आगे निकल जायेंगे तो ये उन्हें ठहराने के लिये आवाज़ देंगे और याद दिलायेंगे कि दुनिया में हब सब साथ ही थे। तो मोमिन जवाब देंगे कि वापस अन्धेरे में लौट जाओ और वहाँ नूर तलाश करो। (अत्तबरी : 23/183)

हुज़ूर (ﷺ) का इरशाद है, 'क़यामत के दिन लोगों को उनकी पर्दापोशी के लिये उनके नामों से पुकारा जायेगा लेकिन पुल सिरात पर तमीज़ हो जायेगी, मोमिनों को नूर मिलेगा और मुनाफ़िक़ों को भी मिलेगा लेकिन जब दरम्यान में पहुँच जायेंगे मुनाफ़िक़ों का नूर बुझ जायेगा। ये मोमिनों को आवाज़ देंगे लेकिन उस वक़्त ख़ुद मोमिन ख़ौफ़ज़दा हो रहे होंगे। ये वो वक़्त होगा कि हर एक आपा-धापी में होगा। जिस दीवार का यहाँ ज़िक्र है ये जन्नत व दोज़ख़ के दरम्यान हद्दे फ़ासिल होगी। इसी का ज़िक्र आयत व बैनहुमा हिजाब में है। पस जन्नत में रहमत और जहन्नम में अज़ाब।

ठीक बात यही है लेकिन कुछ का क़ौल है कि इससे मुराद बैतुल मक़्दिस की दीवार है जो जहन्नम की वादी के पास होगी। इब्ने उमर (रज़ि.) से मरवी है कि ये दीवार बैतुल मक़्दिस की शरक़ी (पूर्वी) दीवार है जिसके बातिन में मस्जिद वग़ैरह है और जिसके ज़ाहिर में वादी जहन्नम है और कुछ बुज़ुर्गों ने भी यही कहा है। लेकिन ये याद रखना चाहिये कि इनका मतलब ये नहीं कि बिऐनिही यानी यही दीवार इस आयत में मुराद है। बल्कि इसका ज़िक्र क़ुर्ब मआना के इस आयत की तफ़्सीर में उन हज़रात ने कर दिया है इसलिये कि जन्नत आसमानों में आला इल्लिय्यीन में है और जहन्नम अस्फ़लुस्साफ़िलीन में और हज़रत कअब अहबार (रह.) से जो मरवी है कि जिस दरवाज़े का ज़िक्र इस आयत में है उससे मुराद मस्जिद का बाबुर्रहमत ये बनू इस्राईल की रिवायत है जो हमारे लिये सनद नहीं बन सकती। हक़ीक़त ये है कि ये दीवार क़यामत के दिन मोमिनों और मुनाफ़िक़ों के दरम्यान अलग करने के लिये खड़ी की जायेगी। मोमिन तो उस दरवाज़े में से जाकर जन्नत में पहुँच जायेंगे। फिर दरवाज़ा बंद हो जायेगा और मुनाफ़िक़ हैरतज़दा ज़ुल्मत व अज़ाब में रह जायेंगे। जैसे कि दुनिया में भी ये लोग कुफ़्र व जहालत, शक व हेरत की अन्धेरियों में थे। अब ये याद दिलायेंगे कि देखो दुनिया में हम तुम्हारे साथ थे जुम्आ जमाअत अदा करते थे। अरफ़ात और ग़ज़्वात में मौजूद रहते थे, वाजिबात अदा करते थे। ईमानदार कहेंगे, हाँ बात तो ठीक है लेकिन अपने कर्तूत तो देखो गुनाहों में, नफ़्सानी ख़्वाहिशों में, अल्लाह की नाफ़रमानियों में उम्रभर तुम लज़्ज़तें उठाते रहे आज तौबा कर लेंगे, कल बद आमालियाँ छोड़ देंगे, इसी में रहें, इन्तिज़ार में ही उम्र गुज़ार दी कि देखें मुसलमानों का नतीजा क्या होता है? और तुम्हें ये भी यक़ीन न हुआ कि क़यामत आयेगी भी या नहीं? और फिर इस आरज़ू में रहे कि अगर आयेगी भी तो हम ज़रूर बख़्श दिये जायेंगे और मरते दम तक अल्लाह की तरफ़ ख़ुलूस के साथ झुकने की तौफ़ीक़ तुम्हें मुयस्सर न आई और अल्लाह के साथ तुम्हें धोखेबाज़ शैतान ने धोखे में ही रखा। यहाँ तक कि आज तुम जहन्नम वासिल हो गये।

मतलब ये है कि जिस्मों से तो तुम हमारे साथ थे लेकिन दिल और निय्यत से हमारे साथ न थे बल्कि हेरत व शक में ही पड़े रहे। रियाकारी में रहे और दिल लगाकर अल्लाह की याद करनी भी तुम्हें नसीब न हुई। हज़रत मुजाहिद (रह.) फ़रमाते हैं कि ये मुनाफ़िक़ मोमिनों के साथ थे, निकाह-ब्याह, मज्लिस-मज्मअ मौत व ज़ीस्त में शरीक रहे लेकिन अब यहाँ बिल्कुल अलग कर दिये गये। सूरह मुद्दस्सिर की आयतों में है कि मुसलमान मुज्रिमों से उन्हें जहन्नम में देखकर पूछेंगे कि आख़िर यहाँ तुम कैसे फँस गये? और वो अपने बदआमाल गिनवायेंगे। तो याद रहे कि ये सवाल सिर्फ़ बतौरे डांट-डपट के और उन्हें शर्मिन्दा करने के होगा। वरना हक़ीक़ते हाल से मुसलमान ख़ूब आगाह होंगे। फिर जैसे वहाँ फ़रमाया था कि किसी की सिफ़ारिश उन्हें नफ़ा न देगी। यहाँ फ़रमाया, आज उनसे फ़िदया न लिया जायेगा, गो ज़मीन भर कर सोना दें, क़ुबूल न किया जायेगा, न मुनाफ़िक़ों से न काफ़िरों से। उनका ठिकाना जहन्नम है वही उनके लायक़ है और ज़ाहिर है कि वो बदतरीन जगह है।

***

اَلَمْ يَاْنِ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَنْ تَخْشَعَ قُلُوْبُهُمْ لِذِكْرِ اللّٰهِ وَمَا نَزَلَ مِنَ الْحَقِّ ۙ وَلَا
يَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلُ فَطَالَ عَلَيْهِمُ الْاَمَدُ فَقَسَتْ
قُلُوْبُهُمْ ۭ وَكَثِيْرٌ مِّنْهُمْ فٰسِقُوْنَ ﴿16﴾ اِعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ يُحْيِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ۭ
قَدْ بَيَّنَّا لَكُمُ الْاٰيٰتِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿17﴾

तर्जुमा : "क्या अब तक ईमान वालों के लिये वक़्त नहीं आया कि उनके दिल अल्लाह के ज़िक्र से और जो हक़ उतर चुका है उससे पिघल जायें और उनकी तरह न हो जायें जिन्हें इनसे पहले किताब दी गई थी फिर जब उन पर एक ज़माना दराज़ गुज़र गया तो उनके दिल सख़्त हो गये और उनमें के अक्सर फ़ासिक़ हैं। (16) यक़ीन मानो कि अल्लाह ही ज़मीन को उसकी मौत के बाद ज़िन्दा कर देता है हमने तुम्हारे लिये अपनी आयतें बयान कर दीं ताकि तुम समझो।" (17)

अल्लाह तआला का डर (आयत 16-17) : परवरदिगारे आलम फ़रमाता है क्या मोमिनों के लिये अब तक वो वक़्त नहीं आया कि ज़िक्रे इलाही वअज़ व नसीहत, क्या क़ुरआनी और अहादीसे नबवी (ﷺ) सुनकर उनके दिल मोम हो जायें, सुनें और मानें, अहकाम बजा लायें, मम्नूआत से परहेज़ करें। इब्ने अब्बास (रज़ि.)

फ़रमाते हैं, कुरआन नाज़िल होते ही तेरह साल का अरसा न गुज़रा था जो मुसलमानों के दिलों को इस तरफ़ न झुकने की देर की शिकायत की। इब्ने मसऊद (रज़ि.) फ़रमाते हैं, चार ही साल गुज़रे थे जो हमें ये एताब हुआ। (सहीह मुस्लिम, किताबुत्तफ़्सीर, बाब क़ौलुल्लाहि तआला अलम यअ्नि लिल्लज़ी-न आमनू अन् तख़्शअ कुलूबुहुम लिज़िक्रिल्लाह : 3027)

अस्हाबे रसूल पुर मलाल होकर हुज़ूर से कहते हैं, हज़रत! कुछ बात तो बयान फ़रमाइये पस ये आयत उतरी है नह्नु नक़ुस्सु अ़लै-क अह्सनल् क़सस। फिर एक मर्तबा कुछ दिनों बाद यही अ़र्ज़ करते हैं तो आयत उतरती है अल्लाहु नज़्ज़-ल अह्सनल हदीसि फिर एक अ़रसा बाद यही कहते हैं तो ये आयत अलम् यअ्नि उतरती है। रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़रमाते हैं, 'सबसे पहली ख़ैर जो मेरी उम्मत से उठ जायेगी वो ख़ुशूअ होगा।' (अत्तबरी : 23/188)

फिर फ़रमाया तुम यहूदो-नसारा की तरह न हो जाना जिन्होंने किताबुल्लाह को बदल दिया, थोड़े-थोड़े मोल पर उसे फ़रोख़्त कर दिया। पस किताबुल्लाह को पसे पुश्त डालकर राय-क़यास के पीछे पड़ गये और अज़ ख़ुद ईजाद करदा अक़्वाल को मानने लगे और अल्लाह के दीन में दूसरों की तक़लीद करने लगे। अपने उ़लमा और दुर्वेशों की बेसनद बातें दीन में दाख़िल कर लीं, उन पर बदआमालियों की सज़ा में अल्लाह ने उनके दिल सख़्त कर दिये, कुछ ही अल्लाह की बातें क्यों न सुनाओ, उनके दिल नर्म नहीं होते। कोई वअ़ज़ व नसीहत उन पर असर नहीं करता। कोई वादा-वईद उनके दिल अल्लाह की तरफ़ रुजूअ नहीं कर सकता बल्कि उनमें के अक्सर व बेश्तर फ़ासिक़ और खुले बदकार बन गये। दिल के खोटे और आमाल के भी कच्चे। जैसे दूसरी आयत में है, फ़बिमा नक़्ज़िहिम् मीसाक़हुम लअ़न्नाहुम उनकी बदअहदी की वजह से हमने उन पर लानत नाज़िल की और उनके दिल सख़्त कर दिये, ये कलिमात को अपनी जगह से बदल देते हैं और हमारी नसीहतें भुला बैठते हैं। यानी उनके दिल फ़ासिद हो गये, अल्लाह की बातें बदलने लग गये, नेकियाँ छोड़ दीं, बुराइयों में मुन्हमिक हो गये, इसीलिये रब्बुल आलमीन इस उम्मत को मुतनब्बह कर रहा है कि ख़बरदार! उनकी रंगत तुम पर न चढ़ जाये। असल व फ़रअ में उनसे बिल्कुल अलग रहो।

कुरआन पर अमल करो : इब्ने अबी हातिम में है हज़रत रबीअ़ बिन अबू अ़मीला फ़रमाते हैं, कुरआन व हदीस की मिठास तो मुसल्लम (यक़ीनी) ही है लेकिन मैंने हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) से एक बहुत ही प्यारी और मीठी बात सुनी है जो मुझे बेहद महबूब और मरग़ूब है। आपने फ़रमाया, जब बनू इस्राईल की इल्हामी किताब पर कुछ ज़माना गुज़र गया तो इन लोगों ने कुछ किताबें ख़ुद तसनीफ़ कर लीं और उनमें वो मसाइल लिखे जो उन्हें पसंद थे और जो अपने ज़हन से उन्होंने तराश लिये थे। अब मज़े ले-लेकर ज़बानें मोड़-मोड़कर उन्हें पढ़ने लगे। उनमें के अक्सर मसाइल अल्लाह की किताब के ख़िलाफ़ थे जिन-जिन अहकाम को मानने को उनका जी न चाहता था उन्होंने बदल डाले थे और अपनी किताब में अपनी तबीअ़त के मुताबिक़ मसाइल जमा कर लिये थे और उन्ही पर आमिल बन गये। अब उन्हें सूझी कि और लोगों को भी मनवायें और

उन्हें भी आमादा करें कि उन ही हमारी लिखी हुई किताबों को शरई किताबें समझें और मदारे अमल उन्हीं पर रखें। अब लोगों को इसी की दावत देने लगे और ज़ोर पकड़ते गये यहाँ तक कि जो उनकी किताबों को न मानता उसे ये सताते तकलीफ़ देते, मारते-पीटते बल्कि क़त्ल कर डालते। उनमें एक शख़्स अल्लाह वाले पूरे आलिम और मुत्तक़ी थे, उन्होंने उनकी ताक़त से और ज़्यादती से मरऊब होकर किताबुल्लाह को एक लतीफ़ चीज़ पर लिखकर एक नरसिंघे में डालकर अपनी गर्दन में उसे डाल लिया। उन लोगों का शर व फ़साद रोज़-बरोज़ बढ़ता जा रहा था यहाँ तक कि बहुत से उन लोगों को जो किताबुल्लाह पर आमिल थे उन्होंने क़त्ल कर दिया। फिर आपस में मशवरा किया कि देखो एक-एक को कब तक क़त्ल करते रहेंगे? उनका बड़ा आलिम और हमारी इस किताब को बिल्कुल न मानने वाला तमाम बनी इस्राईल में सबसे बढ़कर किताबुल्लाह का आमिल फ़लाँ आलिम है। उसे पकड़ो और उससे अपनी ये राय क़ियास की किताब मनवाओ अगर वो मान लेगा तो फिर हमारी चाँदी ही चाँदी है और अगर वो न माने तो उसे क़त्ल कर दो। फिर तुम्हारी इस किताब का मुख़ालिफ़ कोई न रहेगा और दूसरे लोग ख़्वाह मख़्वाह हमारी इन किताबों को क़ुबूल कर लेंगे और इन्हें मानने लगेंगे। चुनाँचे उन राय क़ियास वालों ने किताबुल्लाह के आलिम व आमिल उस बुज़ुर्ग को पकड़वा कर मंगवाया और उससे कहा कि देख हमारी इस किताब में जो है इन सबको तू मानता है या नहीं? इन पर तेरा ईमान है या नहीं? उस किताबुल्लाह के मानने वाले आलिम ने कहा कि इसमें तुमने क्या लिखा है? ज़रा मुझे सुनाओ। तो उन्होंने सुनाया और कहा, इसको तू मानता है? उस बुज़ुर्ग को अपनी जान का डर था इसलिये जुरअत के साथ ये तो न कह सका कि नहीं मानता बल्कि अपने नरसिंघे की तरफ़ इशारा करके कहा मेरा इस पर ईमान है। वो समझ बैठे कि उसका इशारा हमारी इस किताब की तरफ़ है। चुनाँचे उसकी ईज़ा रसानी से बाज़ रहे लेकिन ताहम उसके अतवार व अफ़्आल से खटकते ही रहे। यहाँ तक कि जब उसका इन्तिक़ाल हुआ तो उन्होंने तफ़्तीश शुरू की कि ऐसा न हो उसके पास किताबुल्लाह और दीन के सच्चे मसाइल की कोई किताब हो। आख़िर वो नरसिंघा उनके हाथ लग गया। पढ़ा तो उसमें असली मसाइल किताबुल्लाह के मौजूद थे। अब बात बना ली कि हमने तो कभी ये मसाइल नहीं सुने, ऐसी बातें दीन की नहीं। चुनाँचे ज़बरदस्त फ़ित्ना बर्पा हो गया ओर बहत्तर गिरोह हो गये। उन सब में बेहतर गिरोह जो रास्ती पर और हक़ पर था जो उस नरसिंघे वाले मसाइल पर आलिम थे। हज़रत इब्ने मसऊद (रज़ि.) ने ये वाक़िया बयान फ़रमा कर कहा, लोगो! तुममें से जो भी बाक़ी रहेगा वो ऐसे ही उमूर का मुआयना करेगा और वो बिल्कुल बेबस होगा, उन बुरी किताबों के मिटाने की उसमें क़ुदरत न होगी। पस ऐसे मजबूरी और बेकसी के वक़्त भी उसका ये फ़र्ज़ तो ज़रूरी है कि अल्लाह तआला पर ये साबित कर दे कि वो उन्हें सबको बुरा जानता है। इमाम अबू जाफ़री तबरी (रह.) ने भी ये रिवायत नक़ल की है कि अतरीस बिन अरक़ूब हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) के पास आये और कहने लगे, ऐ अब्दुल्लाह! जो शख़्स भलाई का हुक्म न करे और बुराई से न रोके वो हलाक हुआ। आपने फ़रमाया, हलाक वो होगा जो अपने दिल से अच्छाई को अच्छाई न समझे और बुराई को बुराई न जाने। फिर आपने बनी इस्राईल का ये वाक़िया बयान फ़रमाया।

फिर इरशादे बारी है कि जान रखो मुर्दा ज़मीन को अल्लाह ज़िन्दा कर देता है। इसमें इशारा है इस बात की तरफ़ कि सख़्त दिलों की सख़्ती के बाद भी अल्लाह उन्हें नर्म करने पर क़ादिर है। गुमराहियों की तह में उतर जाने के बाद भी अल्लाह राहे रास्त पर लाता है। जिस तरह बारिश ख़ुश्क ज़मीन को तर कर देती है कि उसी तरह किताबुल्लाह मुर्दा दिलों को ज़िन्दा कर देती है। दिलों में जबकि घटाटोप अन्धेरा छा गया हो किताबुल्लाह की रोशनी उसे अचानक मुनव्वर कर देती है। अल्लाह की वह्य दिल के क़फ़ल की कुन्जी है, सच्चा हादी वही है। गुमराही के बाद राह पर लाने वाला, जो चाहे करने वाला, हिक्मत व अ़द्ल, लुत्फ़ व ख़ैर वाला, किब्र व जलाल वाला, बुलंदी व उ़लू वाला वही है।

***

إِنَّ الْمُصَّدِّقِيْنَ وَالْمُصَّدِّقٰتِ وَأَقْرَضُوا اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا يُّضٰعَفُ لَهُمْ وَلَهُمْ
أَجْرٌ كَرِيْمٌ ﴿١٨﴾ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖۤ أُولٰٓئِكَ هُمُ الصِّدِّيْقُوْنَ ۖ وَالشُّهَدَآءُ
عِنْدَ رَبِّهِمْ ۗ لَهُمْ أَجْرُهُمْ وَنُوْرُهُمْ ۗ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَآ أُولٰٓئِكَ
أَصْحٰبُ الْجَحِيْمِ ﴿١٩﴾

तर्जुमा : "सदक़ा देने वाले मर्द और औ़रतें और जो अल्लाह को ख़ुलूस के साथ क़र्ज़ दे रहे हैं उनके लिये ये बढ़ाया जायेगा और उनके लिये पसन्दीदा अज्र व स़वाब है। (18) अल्लाह और उसके रसूल पर जो ईमान रखते हैं वही लोग अपने रब के नज़दीक सिद्दीक़ और शहीद हैं उनके लिये उनका अज्र और उनका नूर है और जो कुफ़्र करते हैं और हमारी आयतों को झुठलाते हैं वो जहन्नमी हैं।" (19)

दरजाते मोमिनीन (आयत 18-19) : फ़क़ीर-मिस्कीन वग़ैरह मुहताजों और हाजतमन्दों को ख़ालिस अल्लाह की मर्ज़ी की जुस्तजू में लोग अपने हलाल माल नेक नियती से राहे इलाही सदक़ा देते हैं, उनके बदले बहुत कुछ बढ़ा-चढ़ा कर अल्लाह तआ़ला उन्हें अ़ता फ़रमायेगा। दस-दस गुने और उससे भी ज़्यादा सात-सात सौ तक बल्कि उससे भी ज़्यादा। उनके स़वाब बेहिसाब हैं उनके अज्र बहुत बड़े हैं।

अल्लाह व रसूल पर ईमान रखने वाले ही सिद्दीक़ व शहीद हैं। इन दोनों औसाफ़ के मुस्तहिक़ सिर्फ़ बाईमान लोग हैं। कुछ हज़रात ने शुहदा को अलग जुम्ला माना है। ग़र्ज़ तीन क़िस्में हुईं मुस्सद्दिक़ीन, सिद्दीक़ीन, शुहदा। जैसे दूसरी आयत में है, अल्लाह और उसके रसूल का इताअ़त गुज़ार ईनामयाफ़्ता होता है कि ये दो

क़िस्म के लोग हैं। सिद्दीक़ का दर्जा शहीद से यक़ीनन बड़ा है। हुज़ूर (ﷺ) का इरशाद है, 'जन्नती लोग अपने से ऊपर के बालाख़ाने वालों को इस तरह देखेंगे जैसे चमकते हुए मश्रिक़ी या मग़्रिबी सितारे को तुम आसमान के किनारों पर देखते हो।' लोगों ने कहा, ये दर्जे तो सिर्फ़ अम्बिया के होंगे। आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'हाँ, क़सम है उसकी जिसके हाथ में मेरी जान है! ये वो लोग हैं जो अल्लाह पर ईमान लाये और रसूलों की तस्दीक़ की।' (सहीह बुख़ारी, किताब बदउल ख़ल्क़, बाब मा जाअ फ़ी सिफ़तिल जन्नति वअन्नहा मख़्लूक़ह : 3256, सहीह मुस्लिम : 2831)

एक ग़रीब हदीस़ से ये भी मालूम होता है कि शहीद और सिद्दीक़ दोनों वस्फ़ इस आयत में इसी मोमिन के हैं। हुज़ूर (ﷺ) फ़रमाते हैं, 'मेरी उम्मत के मोमिन शहीद हैं।' फिर आप (ﷺ) ने इसी आयत की तिलावत की। (ज़ईफ़ुन जिद्दा : अत्तबरी : 23/192, इसकी सनद में इस्माईल बिन यहया शैबानी मतरूक रावी है। अल्मीज़ान : 1/254, 966)

हज़रत अ़म्र बिन मैमून (रह.) का क़ौल है, ये दोनों इन दोनों उंगलियों की तरह क़यामत के दिन आयेंगे। बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस़ में है, 'शहीदों की रूहें सब्ज़ रंग परिन्दों के क़ालिब में होंगी। जन्नत में जहाँ चाहें खाती-पीती फिरेंगी और रात को क़िन्दीलों में सहारा लेंगी, उनके रब ने उनकी तरफ़ देखा और पूछा तुम क्या चाहते हो? उन्होंने कहा, ये कि तू हमें दुनिया में दोबारा भेज ताकि हम फिर तेरी राह में जिहाद करें और शहादत हासिल करें। अल्लाह ने जवाब दिया ये तो मैं फ़ैसला कर चुका हूँ कि कोई लौटकर फिर दुनिया में नहीं जायेगा।' (सहीह मुस्लिम, किताबुल इमारह, बाब बयान अरवाहुश्शुहदा फ़िल्जन्नत : 1887, बितसर्रुफ़िन यसीर)

फिर फ़रमाता है कि उन्हें अज्र व नूर मिलेगा जो नूर उनके सामने रहेगा और उनके आ़माल के मुताबिक़ होगा। मुस्नद अहमद की हदीस़ में है, 'शहीदों की चार क़िस्में हैं, वो पक्के ईमान वाला मोमिन जो अल्लाह के दुश्मन से भिड़ गया और लड़ता रहा यहाँ तक कि टुकड़े-टुकड़े हो गया, उसका वो दर्जा है कि अहले मह्शर इस तरह सर उठा-उठाकर उसकी तरफ़ देखेंगे।' और ये फ़रमाते हुए आप (ﷺ) ने इस क़द्र अपना सर बुलंद किया कि टोपी नीचे गिर गई। और इस हदीस़ के रावी हज़रत उ़मर (रज़ि.) ने भी इसे बयान करने के वक़्त इतना ही सर बुलंद किया कि आपकी टोपी भी ज़मीन पर जा पड़ी। दूसरा वो जो है ईमानदार निकला जिहाद में लेकिन दिल में जुरअत कम है कि यकायक तीर आ लगा और रूह परवाज़ कर गई। ये दूसरे दर्जे का जन्नती है शहीद है। तीसरा न जिसके भले बुरे आ़माल थे लेकिन रब ने उसे पसंद फ़रमा लिया और मैदाने जिहाद में कुफ़्र के हाथों शहादत नसीब हुई ये तीसरे दर्जे में है। चौथा वो जिसके गुनाह बहुत ज़्यादा हैं, जिहाद में निकला और अल्लाह ने शहादत नसीब फ़रमाकर अपने पास बुलवा लिया।' (ज़ईफ़ : तिर्मिज़ी, किताब फ़ज़ाइलुल जिहाद, बाब मा जाअ फी फ़ज़्लिश्शुहदा इन्दल्लाह : 1644, अहमद : 1/23, इसकी सनद में इब्ने लहीआ़ मुख़्तलत रावी है। अत्तक़रीब : 1/44, रक़्म : 574, जबकि अबू यज़ीद ख़ोलानी मजहूल है।) उन नेक लोगों का अन्जाम बयान करके अब बद लोगों का नतीजा बयान किया कि ये जहन्नमी हैं।

اِعْلَمُوْٓا اَنَّمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا لَعِبٌ وَّلَهْوٌ وَّزِيْنَةٌ وَّتَفَاخُرٌۢ بَيْنَكُمْ وَتَكَاثُرٌ فِي
الْاَمْوَالِ وَالْاَوْلَادِ ۭ كَمَثَلِ غَيْثٍ اَعْجَبَ الْكُفَّارَ نَبَاتُهٗ ثُمَّ يَهِيْجُ فَتَرٰىهُ
مُصْفَرًّا ثُمَّ يَكُوْنُ حُطَامًا ۭ وَفِي الْاٰخِرَةِ عَذَابٌ شَدِيْدٌ ۙ وَّمَغْفِرَةٌ مِّنَ اللّٰهِ
وَرِضْوَانٌ ۭ وَمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَآ اِلَّا مَتَاعُ الْغُرُوْرِ ۝ سَابِقُوْٓا اِلٰى مَغْفِرَةٍ مِّنْ
رَّبِّكُمْ وَجَنَّةٍ عَرْضُهَا كَعَرْضِ السَّمَاۗءِ وَالْاَرْضِ ۙ اُعِدَّتْ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ
وَرُسُلِهٖ ۭ ذٰلِكَ فَضْلُ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَاۗءُ ۭ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ۝

तर्जुमा : ''ख़ूब जान रखो कि दुनिया की ज़िन्दगी सिर्फ़ खेल-तमाशा ज़ीनत और आपस में फ़ख़्र व ग़ुरूर और माल व औलाद में एक-दूसरे से अपने तईं ज़्यादा बतलाना है। जैसे बारिश और उसकी पैदावार किसानों को अच्छी मालूम होती है लेकिन जब वो ख़ुश्क हो जाती है तो ज़र्द रंग दिखाई देने लगती है फिर तो बिल्कुल चूरा-चूरा हो जाती है और आख़िरत में सख़्त अ़ज़ाब हैं और अल्लाह की मग़्फ़िरत और रज़ामन्दी है, दुनिया की ज़िन्दगी बजुज़ धोखे के अस्बाब के और कुछ भी तो नहीं। (20) आओ दौड़ो! अपने रब की मग़्फ़िरत की तरफ़ और उस जन्नत की तरफ़ जिसकी वुस्अत (चौड़ाई) आसमान व ज़मीन की वुस्अत के बराबर है ये उनके लिये बनाई गई है जो अल्लाह पर और उसके रसूलों पर ईमान रखते हैं ये अल्लाह का फ़ज़्ल है जिसे चाहे दे और अल्लाह बड़े फ़ज़्ल वाला है।'

दुनिया आ़रिज़ी और फ़ानी है (आयत 20-21) : अम्रे दुनिया की तहक़ीर व तौहीन बयान हो रही है कि अहले दुनिया को बजुज़ लह्व व लइब, ज़ीनत व फ़ख़्र और औलाद व माल की बहतात की चाहत के सिवा और है ही क्या? जैसे दूसरी जगह है, ज़ुय्यि-न लिन्नासि हुब्बुश्शहवाति 'लोगों के लिये उनकी ख़्वाहिश की चीज़ों को मुज़य्यन कर दिया गया है जैसे औरतें-बच्चे वग़ैरह....।' फिर हयाते दुनिया की मिसाल बयान हो रही है कि उसकी ताज़गी फ़ानी है और यहाँ की नेमतें ज़वाल पज़ीर हैं। ग़ैस कहते हैं उस बारिश को जो लोगों की नाउम्मीदी के बाद बरसे जैसे फ़रमान है, वहुवल्लज़ी युनज़्ज़िलुल्-ग़ैसु मिम्-बअ्दि मा क़नतू 'अल्लाह वो है जो लोगों की नाउम्मीदी के बाद बारिश बरसाता है।' पस जिस तरह बारिश की वजह से ज़मीन की खेतियाँ पैदा

होती हैं और वो लहलहाती हुई किसान की आँखों को भली मालूम होती हैं उसी तरह अहले दुनिया अस्बाबे दुनियवी पर फूलते हैं। लेकिन नतीजा ये होता है कि वही हरी-भरी खेती ख़ुश्क होकर ज़र्द पड़ जाती है फिर आख़िर सूखकर रेज़ा-रेज़ा हो जाती है। ठीक उसी तरह दुनिया की तरो-ताज़गी और यहाँ की बहबूदी और तरक़्क़ी भी ख़ाक में मिल जाने वाली है। दुनिया की भी यही सूरतें होती हैं कि एक वक़्त जवान है फिर अधेड़ है फिर बुढ़िया है। ठीक इसी तरह ख़ुद इंसान की हालत है उसके बचपन जवानी और अधेड़ उम्र और बुढ़ापे को देख जाइये फिर उसकी मौत और फ़ना को सामने रखिये। कहाँ जवानी के वक़्त का उसका जोश-ख़रोश ज़ोर ताक़त और कस बल् और कहाँ बुढ़ापे की कमज़ोरी झुर्रियाँ पड़ा हुआ जिस्म ख़मीदा कमर और बेताक़त हड्डियाँ जैसे इरशादे बारी है, अल्लाहुल्लज़ी ख़ल-क़कुम्-मिन ज़ुअ्फ़िन् सुम्म ज-अ-ल मिम्बअ्दि ज़ुअ्फ़िन क़ुव्वतन सुम्म ज-अ-ल मिम्बअ्दि क़ुव्वतिन ज़ुअ्फ़ंव्-व शैबतन् यख़्लुक़ु मा यशाउ वहुवल् अलीमुल क़दीर 'अल्लाह वो है जिसने तुम्हें कमज़ोरी की हालत में पैदा किया फिर उस कमज़ोरी के बाद क़ुव्वत दी, फिर उस क़ुव्वत के बाद कमज़ोरी और बुढ़ापा कर दिया, वो जो चाहे पैदा करता है और वो आलिम और क़ादिर है।' इस मिसाल से दुनिया की फ़ना और उसका ज़वाल ज़ाहिर करके फिर आख़िरत के दोनों मन्ज़र दिखा कर एक से डराता है और दूसरे की रग़बत दिलाता है। पस फ़रमाता है, अन्क़रीब आने वाली क़यामत अपने साथ अज़ाबों और सज़ाओं को लायेगी और मग़्फ़िरत और रज़ामन्दी रब को लायेगी। पस तुम वो काम करो कि नाराज़ी से बच जाओ और रजा हासिल कर लो। सज़ाओं से बच जाओ और बख़्शिश के हक़दार बन जाओ। दुनिया सिर्फ़ धोखे की टट्टी है इसकी तरफ़ झुकने वाले पर आख़िर वो वक़्त आ जाता है कि ये उसके सिवा किसी और चीज़ का ख़्याल ही नहीं करता, इसकी धुन में दिन-रात मशग़ूल रहता है। बल्कि इस कमी वाली और ज़वाल वाली कमीनी दुनिया को आख़िरत पर तरजीह देने लगता है। शुदा-शुदा यहाँ तक नौबत पहुँच जाती है कि कई बार आख़िरत का मुन्कर बन जाता है। रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़रमाते हैं, 'एक कूड़े बराबर की जन्नत की जगह सारी दुनिया और उसकी तमाम चीज़ों से बेहतर है। पढ़ो क़ुरआन फ़रमाता है कि दुनिया तो सिर्फ़ धोखे का सामान है। (इब्ने जरीर) आयत की ज़्यादती बग़ैर ये हदीस़ सहीह में भी है वल्लाहु आलम! (तिर्मिज़ी:किताब तफ़्सीरुल क़ुरआन, बाब व मिन सूरति आले इमरान:3013, इसकी सनद हसन है और रावी अबू हुरैरह है। सहीह बुख़ारी:3250,अन सहल बिन सअ्द)

मुस्नद अहमद की मरफ़ूअ हदीस़ में है, 'तुममें से हर एक से जन्नत इससे भी ज़्यादा क़रीब है जितना तुम्हारा जूती का तस्मा और इसी तरह जहन्नम भी।' (सहीह बुख़ारी, किताबुर्रिक़ाक़, बाब अल्जन्नतु अक़रबु इला अहदिकुम मिन शराकि नअ्लह : 6488, अहमद : 1/387)

पस मालूम हुआ कि ख़ैर व शर इंसान से बहुत नज़दीक है और इसलिये उसे चाहिये कि भलाइयों की तरफ़ सबक़त करे और बुराइयों से मुँह फेर कर भागता रहे ताकि गुनाह और बुराइयाँ माफ़ हो जायें और स़वाब और दर्जे बुलंद हो जायें। इसीलिये इसके साथ ही फ़रमाया, दौड़ो अपने रब की बख़्शिश की तरफ़ और जन्नत की तरफ़ जिसकी वुस्अत (चौड़ाई) आसमान व ज़मीन की जिन्स के बराबर है। जैसे और आयत में है, 'अपने रब की मग़्फ़िरत की तरफ़ और जन्नत की तरफ़ सबक़त करो जिसकी कुशादगी कुल आसमान और सारी ज़मीनें

हैं जो पारसा लोगों के लिये बनाई गई है। यहाँ फ़रमाया ये अल्लाह व रसूल पर ईमान लाने वालों के लिये तैयार की गई है। ये लोग अल्लाह के उस फ़ज़्ल के लायक़ थे इसलिये बड़े फ़ज़्ल व करम वाले ने अपनी नवाज़िश के लिये उन्हें चुन लिया और उन पर अपना पूरा-पूरा एहसान और आला ईनाम किया।

पहले एक सहीह हदीस़ बयान हो चुकी है कि मुहाजिरीन के फ़ुक़रा ने हुज़ूर (ﷺ) से कहा, ऐ अल्लाह के रसूल! मालदार लोग तो जन्नत के बुलंद दर्जों को हमेशगी वाली नेमतों को पा गये। आप (ﷺ) ने फ़रमाया, ये कैसे? तो कहा, नमाज़, रोज़ा तो वो और हम सब करते हैं लेकिन माल की वजह से वो सदक़ा करते हैं, गुलाम आज़ाद करते हैं, जो मुफ़्लिसी की वजह से हमसे नहीं हो सकता। तो आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'आओ! मैं तुम्हें एक ऐसी चीज़ बताऊँ कि उसके करने से तुम हर शख़्स से आगे बढ़ जाओ, मगर उनसे जो तुम्हारी तरह ख़ुद भी उसको करने लगें। देखो तुम हर फ़र्ज़ नमाज़ के बाद तैंतीस मर्तबा सुब्हानअल्लाह कहो और इतनी ही बार अल्लाहु अकबर और इसी तरह अल्हम्दुलिल्लाह।' कुछ दिनों बाद ये बुज़ुर्ग फिर हाज़िरे हुज़ूर (ﷺ) हुए और कहा, ऐ अल्लाह के रसूल! हमारे मालदार भाइयों को भी इस वज़ीफ़े की इत्तिलाअ़ मिल गई और उन्होंने भी इसे पढ़ना शुरू कर दिया। आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'ये अल्लाह का फ़ज़्ल है जिसे चाहे दे।' (सहीह बुख़ारी, किताबुल अज़ान, बाब अज़्ज़िक्रु बअ़दस्सलात : 843, सहीह मुस्लिम : 595)

***

مَآ اَصَابَ مِنْ مُّصِيْبَةٍ فِي الْاَرْضِ وَلَا فِيْٓ اَنْفُسِكُمْ اِلَّا فِيْ كِتٰبٍ مِّنْ قَبْلِ اَنْ
نَّبْرَاَهَا ۭ اِنَّ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرٌ ۝۲۲ۙ لِّكَيْلَا تَاْسَوْا عَلٰي مَا فَاتَكُمْ وَلَا تَفْرَحُوْا
بِمَآ اٰتٰىكُمْ ۭ وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ كُلَّ مُخْتَالٍ فَخُوْرِۨ ۝۲۳ الَّذِيْنَ يَبْخَلُوْنَ وَيَاْمُرُوْنَ
النَّاسَ بِالْبُخْلِ ۭ وَمَنْ يَّتَوَلَّ فَاِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيْدُ ۝۲۴

तर्जुमा : "न कोई मुसीबत दुनिया में आती है न ख़ास तुम्हारी जानों में, मगर कि मख़्लूक़ को हम पैदा करें इससे पहले ही वो एक ख़ास किताब में लिखी हुई है ये काम अल्लाह तआ़ला पर बिल्कुल ही आसान है। (22) ताकि तुम अपने से फ़ौतशुदा किसी चीज़ पर रंजीदा न हो जाया करो और न अ़ता करदा चीज़ों पर इतर जाओ, इतराने वालो शैख़ीख़ोरों को अल्लाह पसंद नहीं फ़रमाता। (23) जो ख़ुद भी बुख़्ल करें और दूसरों को भी बुख़्ल की तालीम दें, सुनो! जो भी मुँह फेर ले अल्लाह बेनियाज़ और लायक़े हम्द व सना है।"

अल्लाह ने तक़दीर लिखी (आयत : 22-24) : अल्लाह तआला अपनी उस क़ुदरत की ख़बर दे रहा है कि जो उसने मख़्लूक़ात के रचाने से पहले ही अपनी मख़्लूक़ की तक़दीर मुक़र्रर की थी। तो फ़रमाया कि ज़मीन के जिस हिस्से में कोई बुराई आये या जिस किसी शख़्स की जान पर कुछ आ पड़े उसे यक़ीन रखना चाहिये कि ख़ल्क़ की पैदाइश से पहले ही अल्लाह के इल्म में मुक़र्रर था और उसका होना यक़ीनी था। कुछ कहते हैं जानों की पैदाइश से पहले ही। कुछ कहते हैं मुसीबत की पैदाइश से पहले ही। लेकिन ज़्यादा ठीक बात ये है कि मख़्लूक़ की पैदाइश से पहले ही। इमाम हसन (रह.) से इस आयत की बाबत सवाल हुआ तो फ़रमाने लगे, सुब्हानअल्लाह! हर मुसीबत जो आसमान व ज़मीन में है वो जानों की पैदाइश से पहले ही रब की किताब में मौजूद है। इसमें क्या शक है? ज़मीन की मुसीबतों से मुराद ख़ुश्क साली क़हत वग़ैरह है और जानों की मुसीबत दर्द-दुख और बीमारी है। जिस किसी को कोई ख़राश लगती है या लग़्ज़िशे पा से कोई तकलीफ़ पहुँचती है या किसी सख़्त मेहनत से पसीना आ जाता है ये सब उसके गुनाहों की वजह से है और अभी तो बहुत से गुनाह हैं जिन्हें वो ग़फ़ूर व रहीम अल्लाह बख़्श देता है। ये आयत बेहतरीन और बहुत आला दलील है क़दरिया की तर्दीद में जिनका ख़्याल है कि साबिक़इल्म कोई चीज़ नहीं, अल्लाह उन्हें ज़लील करे। सहीह मुस्लिम शरीफ़ में है, 'अल्लाह तआला ने तक़दीरें मुक़र्रर कीं आसमान व ज़मीन की पैदाइश से पचास हज़ार बरस पहले।' और रिवायत में है, 'उसका अर्श पानी पर था।' (सहीह मुस्लिम, किताबुल क़द्र, बाब हुज्जाजु आदम व मूसा : 2653, तिर्मिज़ी : 2156, इब्ने हिब्बान : 6138)

फिर फ़रमाता है कामों के वजूद में आने से पहले उनका अन्दाज़ा कर लेना, उनके होने का इल्म हासिल कर लेना और उसे लिख देना अल्लाह पर कुछ मुश्किल नहीं। वही तो उनका पैदा करने वाला है, जिसका मुहीत इल्म, हो चुकी हुई, होती हुई और होने वाली तमाम चीज़ों को शामिल है। फिर इरशाद होता है हमने तुम्हें ये ख़बर इसलिये दी है कि तुम यक़ीन रखो कि जो तुम्हें पहुँचा वो हर्गिज़ किसी सूरत से टलने वाला न था। पस मुसीबत के वक़्त सब्र व शुक्र, सहारा साबित क़दमी, मज़बूत दिली और रूहानी ताक़त तुममें मौजूद रहे। हाय-हाय! बेसब्री और बेज़बती तुमसे दूर रहे। जज़अ-फ़ज़अ तुम पर छा न जाये। तुम इत्मीनान से रहो कि ये तकलीफ़ तो आने वाली थी ही। इसी तरह अगर माल व दौलत ग़ल्बा मिल जाये तो उस वक़्त आपे से बाहर न हो जाओ उसे अल्लाह तआला का अतिया मानो, तकब्बुर और ग़ुरूर तुममें न आ जाये। ऐसा न हो कि दौलत व माल वग़ैरह के नशे में फूल जाओ और अल्लाह को भूल जाओ। इसलिये कि उस वक़्त भी हमारी ये तालीम तुम्हारे सामने होगी कि ये मेरे दस्त व बाज़ू का, मेरी अक़्ल व होश का नतीजा नहीं बल्कि ख़ालिक़ व राज़िक़ का है।

एक क़िरअत इसकी अताकुम है दूसरी आताकुम है और दोनों में तलाज़ुम है। इसीलिये इरशाद होता है कि अपने जी में अपने तईं बड़ा समझने वाले दूसरों पर फ़ख़्र करने वाले अल्लाह के दुश्मन हैं। हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) का फ़रमान है कि रंज व राहत, ख़ुशी व ग़म में तो हर शख़्स आता है ख़ुशी को शुक्र में और ग़म को सब्र में गुज़ार दो। फिर इरशाद है कि ये लोग ख़ुद भी बख़ील और ख़िलाफ़े शरअ काम करने वाले हैं और दूसरों को भी यही बुरा रास्ता बतलाते हैं। जो शख़्स अल्लाह के हुक्म बरदारी से हटाये वो अल्लाह का

कुछ नहीं बिगाड़ेगा क्योंकि वो तमाम मख़्लूक़ से बेनियाज़ है और हर तरह सज़ावारे हम्द है। जैसे हज़रत मूसा (अलै.) ने फ़रमाया, इन् तक्फ़ुरू अन्तुम् व मन् फ़िल्अरज़ि जमीअन फ़इन्नल्ला-ह लग़निय्युन हमीद 'अगर तुम रूए ज़मीन के इंसान काफ़िर हो जायें तो भी अल्लाह का कुछ नहीं बिगाड़ सकते, अल्लाह सारी मख़्लूक़ से ग़नी है और मुस्तहिक़े हम्द है।'

***

لَقَدْ اَرْسَلْنَا رُسُلَنَا بِالْبَيِّنٰتِ وَاَنْزَلْنَا مَعَهُمُ الْكِتٰبَ وَالْمِيْزَانَ لِيَقُوْمَ النَّاسُ بِالْقِسْطِ ۚ وَاَنْزَلْنَا الْحَدِيْدَ فِيْهِ بَاْسٌ شَدِيْدٌ وَّمَنَافِعُ لِلنَّاسِ وَلِيَعْلَمَ اللّٰهُ مَنْ يَّنْصُرُهٗ وَرُسُلَهٗ بِالْغَيْبِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ قَوِيٌّ عَزِيْزٌ ﴿٢٥﴾

तर्जुमा : ''यक़ीनन हमने अपने पैग़म्बरों को खुली दलीलें देकर भेजा और उनके साथ किताब और इंसाफ़ नाज़िल फ़रमाया ताकि लोग अद्ल पर क़ायम रहें और हमने लोहे को उतारा जिसमें सख़्त हेबत व लड़ाई है और लोगों के लिये और भी बहुत से फ़ायदे हैं और इसलिये भी कि अल्लाह जान ले कि उसकी और उसके रसूलों की मदद बेदेखे कौन करता है अल्लाह है कुव्वत वाला और ज़बरदस्त।' (25)

पैग़म्बरों पर मुअजज़ात के नुज़ूल (आयत : 25) : अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल फ़रमाता है कि हमने अपने पैग़म्बरों को मुअजज़े देकर और ज़ाहिर हुज्जतें अता फ़रमा कर और भरपूर और दलाइल देकर दुनिया में भेजा। फिर साथ ही किताब भी उन्हें दी जो खरी और साफ़ सच है और अद्ल व हक़ दिया जिससे हर अक़्लमंद इंसान उनकी बातों के क़ुबूल कर लेने पर फ़ितरतन मजबूर हो जाता है। हाँ बीमार राय वाले और ख़िलाफ़े अक़्ल वाले इससे महरूम रह जाते हैं। जैसे दूसरी जगह है, अफ़मन का-न अला बय्यिनतिम्-मिर्रब्बिही व यत्लूहु शाहिदुम्-मिन्हु 'जो शख़्स अपने रब की तरफ़ की दलील पर हो और साथ ही उसके मुशाहिद भी हो। और जगह है, 'अल्लाह की ये फ़ितरत है जिस पर मख़्लूक़ को उसने पैदा किया है।' और फ़रमाता है, 'आसमान को उसने बुलंद किया और मीज़ान रख दी।' पस यहाँ फ़रमान है ये इसलिये कि लोग हक़ व अद्ल पर क़ायम हो जायें। यानी इत्तिबाअे रसूल करने लगें, अम्रे रसूल बजा लायें। रसूलुल्लाह (ﷺ) ही की तमाम बातों को हक़ समझें क्योंकि उसके सिवा सरासर हक़ किसी और का कलाम नहीं। जैसे फ़रमान है, व तम्मत कलिमतु रब्बि-क सिद्क़ंव्-व अद्ला 'तेरे रब का कलिमा जो अपनी ख़बरों में सच्चा और अपने अहकाम में अद्ल वाला है पूरा हो चुका है।' यही वजह है कि जब ईमानदार जन्नतों में पहुँच जायेंगे, अल्लाह की नेमतों से मालामाल हो

जायेंगे तो कहेंगे अल्लाह का शुक्र है जिसने हमें इसकी हिदायत की, अगर उसकी हिदायत न होती तो हम इस राह नहीं लग सकते थे हमारे रब के रसूल हमारे पास हक़ लाये थे।

लोहा अल्लाह तआला की नेमत है : फिर फ़रमाता है हमने मुन्किरीने हक़ की सरकूबी के लिये लोहा बनाया है। यानी अव्वलन तो किताब व रसूल और हक़ से हुज्जत क़ायम की, फिर टेढ़े दिल वालों की कजी निकालने के लिये लौहे को पैदा कर दिया कि उसके हथियार बनें और अल्लाह के दोस्त हज़रात अल्लाह तआला के दुश्मन के दिल का कांटा निकाल दें। यही नमूना हुज़ूर (ﷺ) की ज़िन्दगी में बिल्कुल ज़ाहिर नज़र आता है कि मक्का शरीफ़ के तेरह साल मुश्रिकीन को समझाने-बुझाने तौहीद व सुन्नत की दावत देने, उनके बदअक़ाइद की इस्लाह करने में गुज़ारे। ख़ुद अपने ऊपर मुसीबतें झेलीं, लेकिन जब ये हुज्जत ख़त्म हो गई तो शरअ ने मुसलमानों को हिज्रत करने की इजाज़त दी। फिर हुक्म दिया कि अब उन मुख़ालिफ़ीन से जिन्होंने इस्लाम की इशाअत को रोके रखा है, मुसलमानों को तंग कर रखा है, उनकी ज़िन्दगी दुभर कर दी है उनसे बाक़ाइदा जंग करो उनकी गर्दनें मारो और उन मुख़ालिफ़ीने वह्ये इलाही से ज़मीन को पाक करो।

मुस्नद अहमद और अबू दाऊद में है, रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़रमाते हैं, 'क़यामत के आगे तलवार के साथ भेजा गया हूँ यहाँ तक कि अल्लाह वह्दहू ला शरीक लहू की ही इबादत की जाये और मेरा रिज़्क़ मेरे नेज़े के साये तले रखा गया है और कमीनापन और ज़िल्लत उन लोगों पर है जो मेरे हुक्म का ख़िलाफ़ करें और जो किसी क़ौम की मुशाबिहत करे वो उन्ही में से है।' (हसन : अहमद : 2/50, हदीस़ नम्बर : 5114, व सनदहू हसन व अख़्ता मिन ज़अ्अफ़ा इब्ने अबी शैबा : 5/313)

पस लोहे से लड़ाई के हथियार बनते हैं जैसे तलवार, नेज़े, छुरियाँ, तीर, ज़िरहें वग़ैरह और लोगों के लिये इसके अलावा भी बहुत से फ़ायदे हैं, जैसे सिले, कुदाल, फावड़े, आरे, खेती के आलात, पकाने के बर्तन, रोटी के तवे वग़ैरह-वग़ैरह और बहुत सी ऐसी ही चीज़ें जो इंसानी ज़िन्दगी की ज़रूरियात से हैं। हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) फ़रमाते हैं, तीन चीज़ें हज़रत आदम (अलै.) के साथ जन्नत से आईं, नहाई, सनसी और हथोड़ा। (इब्ने जरीर) फिर फ़रमाया ताकि अल्लाह जान ले कि उन हथियारों को उठाने से अल्लाह रसूल की मदद करने का नेक इरादा किसका है? अल्लाह क़ुव्वत व ग़ल्बे वाला है उसके दीन की जो मदद करे वो उसकी मदद करता है, उसने जिहाद तो सिर्फ़ अपने बन्दों की आज़माइश के लिये मुक़र्रर फ़रमाया। वरना ग़ल्बा व नुसरत तो उसी की तरफ़ से है।

***

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا نُوْحًا وَّاِبْرٰهِيْمَ وَجَعَلْنَا فِيْ ذُرِّيَّتِهِمَا النُّبُوَّةَ وَالْكِتٰبَ فَمِنْهُمْ مُّهْتَدٍ ۚ وَكَثِيْرٌ مِّنْهُمْ فٰسِقُوْنَ ﴿٢٦﴾ ثُمَّ قَفَّيْنَا عَلٰٓى اٰثَارِهِمْ بِرُسُلِنَا وَقَفَّيْنَا بِعِيْسَى ابْنِ مَرْيَمَ وَاٰتَيْنٰهُ الْاِنْجِيْلَ ۙ وَجَعَلْنَا فِيْ قُلُوْبِ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْهُ رَاْفَةً وَّرَحْمَةً ۭ وَرَهْبَانِيَّةَ ابْتَدَعُوْهَا مَا كَتَبْنٰهَا عَلَيْهِمْ اِلَّا ابْتِغَاۗءَ رِضْوَانِ اللّٰهِ فَمَا رَعَوْهَا حَقَّ رِعَايَتِهَا ۚ فَاٰتَيْنَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْهُمْ اَجْرَهُمْ ۚ وَكَثِيْرٌ مِّنْهُمْ فٰسِقُوْنَ ﴿٢٧﴾

तर्जुमा : "बेशक हमने नूह और इब्राहीम को पैग़म्बर बना कर भेजा और हमने उन दोनों की औलाद में पैग़म्बरी और किताब जारी रखी तो उनमें से कुछ तो राहयाफ़्ता हुए और उनमें अक्सर नाफ़रमान रहे। (26) उनके बाद फिर भी हम अपने रसूलों को पे-दर्पे भेजते रहे और और उनके बाद ईसा बिन मरयम को भेजा और उन्हें इन्जील अ़ता फ़रमाई और उनके मानने वालों के दिलों में शफ़क़त और रहम पैदा कर दिया है, हाँ रहबानियत (तर्के दुनिया) तो उन लोगों ने अज़ ख़ुद ईजाद कर ली थी, हमने उन पर उसे वाजिब न की थी, लेकिन उनकी निय्यत अल्लाह की रज़ाजूई थी, सो उन्होंने उसकी पूरी रिआयत न की फिर भी हमने उनमें से जो ईमान लाये थे उन्हें उनका अज्र दिया, उनमें ज़्यादातर लोग नाफ़रमान हैं।" (27)

हज़रत नूह और इब्राहीम (अ़लै.) का ज़िक्र (आयत 26-27) : हज़रत नूह और हज़रत इब्राहीम (अ़लै.) की इस फ़ज़ीलत को देखिये कि हज़रत नूह (अ़लै.) के बाद से लेकर हज़रत इब्राहीम (अ़लै.) तक जितने पैग़म्बर आये सब आप ही की नस्ल से आये और फिर हज़रत इब्राहीम (अ़लै.) के बाद जितने नबी और रसूल आये सबके सब आप ही की नस्ल से हुए। जैसे दूसरी आयत में है, व जअ़ल्ना फ़ी ज़ुर्रिय्यतिहीन्-नुबुव्व-त वल्किताब 'यहाँ तक कि बनू इस्राईल के आख़िरी पैग़म्बर हज़रत ईसा बिन मरयम (अ़लै.) ने हज़रत मुहम्मद (ﷺ) की ख़ुशख़बरी सुनाई। पस नूह और इब्राहीम (अ़लै.) के बाद बराबर रसूलों का सिलसिला रहा। हज़रत ईसा तक जिन्हें इन्जील मिली और जिनकी ताबेअ़ फ़रमान उम्मत रहमदिल और नर्म मिज़ाज वाक़ेअ़ हुई। ख़शियते इलाही और रहमते ख़ल्क़ के पाक औसाफ़ से मुत्तसिफ़। फिर नसरानियों की एक बिदअ़त का ज़िक्र है जो उनकी शरीअ़त में न थी लेकिन उन्होंने ख़ुद अपनी तरफ़ से उसे ईजाद कर ली थी। उसके बाद एक जुम्ले के दो मतलब बयान किये गये हैं। एक तो ये कि मक़सद उनका नेक था, अल्लाह की रज़ाजूई के लिये ये तरीक़ा

निकाला था। हज़रत सईद बिन जुबैर, हज़रत क़तादा (रह.) वग़ैरह का यही क़ौल है। दूसरा मतलब ये बयान किया गया है कि हमने उन पर उसे वाजिब न किया था हमने उन पर सिर्फ़ अल्लाह की रज़ाजूई वाजिब की थी।

फिर फ़रमाता है कि ये उसे भी निभा न सके। जैसा चाहिये था वैसे उस पर भी न जमे पस दोहरी ख़राबी आई। एक अपनी तरफ़ से एक नई बात दीने इलाही में ईजाद करने की, दूसरी उस पर भी क़ायम न रहने की। यानी जिसे वो ख़ुद क़ुर्बे इलाही का ज़रिया अपने ज़हन से समझ बैठे थे बिल्आख़िर उस पर भी पूरे न उतरे। इब्ने अबी हातिम में है हुज़ूर (ﷺ) ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) को पुकारा, आपने लब्बैक कहा। आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'सुनो! बनी इस्राईल के बहत्तर (72) गिरोह हो गये जिनमें से तीन ने निजात पाई। पहले फ़िर्क़े ने तो बनी इस्राईल की गुमराही देखकर उनकी हिदायत के लिये अपनी जानें हथेलियों पर रख कर उनके बड़ों को तब्लीग़ शुरू की लेकिन आख़िर वो लोग जिदाल व क़िताल पर उतर आये और बादशाह और उमरा ने जो इस तब्लीग़ से बहुत घबराते थे उन पर लश्करकशी की और उन्हें क़त्ल भी किया और क़ैद भी किया। उन लोगों ने तो निजात हासिल कर ली। फिर दूसरी जमाअत खड़ी हुई उनमें मुक़ाबले की ताक़त तो न थी ताहम अपने दीन की क़ुव्वत से सरकशों और बादशाहों के दरबार में हक़गोई की और अल्लाह के सच्चे दीन और हज़रत ईसा (अलै.) के मस्लके असली की तरफ़ उन्हें दावत देने लगे। उन बदनसीबों ने उन्हें क़त्ल भी कराया, आरों से भी चीरा और आग में भी जलाया। जिसे उस जमाअत ने सब्र व शुक्र के साथ बर्दाश्त किया और निजात हासिल की। फिर तीसरी जमाअत उठी, ये उनसे भी ज़्यादा कमज़ोर थे, उनमें ताक़त न थी कि असल दीन के अहकाम की तब्लीग़ उन ज़ालिमों में करें इसलिये उन्होंने अपने दीन का बचाव इसी में समझा कि जंगलों में निकल जायें और पहाड़ों पर चढ़ जायें, इबादत में मशग़ूल हो जायें और दुनिया को छोड़ दे और उन्ही का ज़िक्र रहबानियत वाली आयत में है। (ज़ईफ़ुन जिद्दा : अत्तबरी : 23/204, हाकिम : 2/480, व सनदन ज़ईफ़ुन जिद्दा उक़ैल बिन यहया मुन्करुल हदीस़)

हज़रत ईसा (अलै.) का ज़िक्र : हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) फ़रमाते हैं कि बनी इस्राईल के बादशाहों ने हज़रत ईसा (अलै.) के बाद तौरात व इन्जील में तब्दीलियाँ कर लीं। लेकिन एक जमाअत उन पर क़ायम रही और असली तौरात व इन्जील उनके हाथ में रही जिसे वो तिलावत किया करते थे। एक मर्तबा उन लोगों ने जिन्होंने किताबुल्लाह में रद्दो-बदल कर लिया था अपने बादशाहों से उन सच्चे मोमिनों की शिकायत की कि ये लोग किताबुल्लाह कहकर जिस किताब को पढ़ते हैं उसमें तो हमें गालियाँ लिखी हैं उसमें लिखा हुआ है जो कोई अल्लाह की नाज़िल करदा किताब के मुताबिक़ हुक्म न करे वो काफ़िर है। और इसी तरह की बहुत सी आयतें हैं। फिर ये लोग हमारे आमाल पर भी ऐबगीरी करते रहते हैं। पस आप उन्हें दरबार में बुलवाइये और उन्हें मजबूर कीजिये कि या तो वो उसी तरह पढ़ें जिस तरह हम पढ़ते हैं और वैसा ही वो अक़ीदा व ईमान रखें जैसा हमारा है वरना उन्हें बदतरीन इबरतनाक सज़ा दीजिये। चुनाँचे उन सच्चे मुसलमानों को दरबार में बुलवाया गया और उनसे कहा गया कि या तो हमारी इस्लाह करदा किताब पढ़ा करो और तुम्हारे अपने हाथों में जो इल्हामी किताबें हैं उन्हें छोड़ दो, वरना जान से हाथ धो लो और क़त्लगाह की तरफ़ क़दम बढ़ाओ। इस पर उन

पाकबाज़ों की एक जमाअत ने तो कहा कि तुम हमें सताओ नहीं। तुम ऊँची इमारत बना दो हमें वहाँ पहुँचा दो और डोरी-छड़ी दे दो हमारा खाना-पीना उसमें डाल दिया करो हम ऊपर से घसीट लिया करेंगे। नीचे उतरेंगे ही नहीं और तुममें आयेंगे ही नहीं। एक जमाअत ने कहा, सुनो! हम यहाँ से हिज्रत कर जाते हैं। जंगलों और पहाड़ों में निकल जाते हैं तुम्हारी बादशाहत की सरज़मीन से बाहर हो जाते हैं। चश्मों, नहरों, नदियों, नालों और तालाबों से जानवरों की तरह मुँह लगाकर पानी पिया करेंगे और जो फूल-पात मिल जायेंगे उन पर गुज़ारा कर लेंगे। उसके बाद अगर तुम हमें अपने मुल्क में देख लो तो बेशक गर्दन उड़ा देना। तीसरी जमाअत ने कहा, हमें अपनी आबादी की एक तरफ़ कुछ ज़मीन दे दो और वहाँ हिसार खींच दो, वहीं हम कुँऐं खोद लेंगे और खेती कर लिया करेंगे। तुममें हर्गिज़ न आयेंगे। चूंकि उस अल्लाह वाली जमाअत से उन लोगों की क़रीबी रिश्तेदारियाँ थीं इसलिये ये दरख़्वास्तें मन्ज़ूर कर ली गईं और ये लोग अपने-अपने ठिकाने चले गये। लेकिन उनके साथ कुछ दूसरे लोग भी लग गये। जिन्हें दरअसल इल्म व ईमान न था तक़लीदन साथ हो लिये, उनके बारे में ये आयत व रहबानिय्यत अल्अख़ नाज़िल हुई।

पस अल्लाह तआला ने हुज़ूर (ﷺ) को भेजा उस वक़्त उनमें के बहुत कम लोग रह गये थे। आप (ﷺ) की बिअसत की ख़बर सुनते ही ख़ानक़ाहों वाले अपनी ख़ानक़ाहों से और जंगलों से और हिसार वाले अपने हिसारों से निकल खड़े हुए। आप (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए। आप पर ईमान लाये, आपकी तस्दीक़ की, जिसका ज़िक्र इस आयत में है, या अय्युहल्लज़ी-न आमनुत्तक़ुल्ला-ह व आमिनू बिरसूलिही युअ्तिकुम किफ़्लैनि मिर्रहमतिही व यज्अल्-लकुम नूरन् तम्शू-न बिही 'ऐ ईमान वालो! अल्लाह से डरो और उसके रसूल पर ईमान लाओ, तुम्हें अल्लाह अपनी रहमत का दोहरा हिस्सा देगा (यानी हज़रत ईसा अलै. पर ईमान लाने का और फिर हज़रत मुहम्मद (ﷺ) पर ईमान लाने का) और तुम्हें नूर देगा जिसकी रोशनी में तुम चलो-फिरो (यानी कुरआन व सुन्नत) ताकि अहले किताब जान लें (जो तुम जैसे हैं) कि अल्लाह के किसी फ़ज़्ल का इख़्तियार उन्हें नहीं और सारा फ़ज़्ल अल्लाह के हाथ है जिसे चाहे देता है और अल्लाह बड़े फ़ज़्ल का मालिक है। ये सियाक़ ग़रीब है और इन दोनों पिछली आयतों की तफ़्सीर इस आयत के बाद ही है इन्शाअल्लाह।

अबू यअला में है कि लोग हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) के पास मदीना में हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ (रह.) की ख़िलाफ़त के ज़माने में आये। आप उस वक़्त अमीरे मदीना थे। जब ये आये उस वक़्त हज़रत अनस (रज़ि.) नमाज़ अदा कर रहे थे और बहुत हल्की नमाज़ पढ़ रहे थे जैसे मुसाफ़िर की नमाज़ हो या उसके क़रीब-क़रीब। जब सलाम फेरा तो लोगों ने आपसे पूछा कि क्या आपने फ़र्ज़ नमाज़ पढ़ी या नफ़िल? फ़रमाया, फ़र्ज़ और यही नमाज़ रसूलुल्लाह (ﷺ) की थी। मैंने अपने ख़्याल से अपनी याद्दश्त के हिसाब से ये अदा की तो इसमें कोई ख़ता नहीं की। हाँ अगर कुछ भूल गया हूँ तो उसकी बाबत नहीं कह सकता। हुज़ूर (ﷺ) का फ़रमान है, 'अपनी जानों पर सख़्ती न करो, वरना तुम पर सख़्ती की जायेगी। एक क़ौम ने अपनी जानों पर सख़्ती की और उन पर भी सख़्ती की गई। पस उनकी बक़ाया ख़ानक़ाहों में और ऐसे ही घरों में अब भी देख लो। ये थी वो सख़्ती की तर्के दुनिया जो अल्लाह ने उन पर वाजिब नहीं की थी।' दूसरे दिन हम

लोगों ने कहा, आइये! सवारियों पर चलें और देखें और इबरत हासिल करें। हज़रत अनस (रज़ि.) ने फ़रमाया, बहुत अच्छा। पस सब सवार हो कर चले और कई एक बस्तियाँ देखीं जो बिल्कुल उजड़ गई थीं और मकानात ओन्धे पड़े हुए थे, तो हमने कहा, उन शहरों से आप वाक़िफ़ हैं? फ़रमाया, ख़ूब अच्छी तरह बल्कि उनके बाशिन्दों से भी। उन्हें सरकशी और हसद ने हलाक किया। हसद नेकियों के नूर को बुझा देता है और सरकशी इसकी तस्दीक़ या तकज़ीब करती है। आँख का भी ज़िना है हाथ और क़दम और ज़बान का भी ज़िना है और शर्मगाह उसे सच्चाती है या झुठलाती है। (ज़ईफ़ुन जिद्दा : अबू दाऊद, किताबुल अदब, बाब फ़िल्हसद : 4904, मुस्नद अबी यअ़ला : 3694)

मुस्नद अहमद में है हुज़ूर (ﷺ) फ़रमाते हैं, 'हर नबी के लिये रहबानियत थी और मेरी उम्मत की रहबानियत अल्लाह अ़ज़्ज़ व जल्ल की राह में जिहाद करना है।'

एक शख़्स हज़रत अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) के पास आता है और कहता है, मुझे कुछ वसियत कीजिये। आपने फ़रमाया, तुमने मुझसे वो सवाल किया जो मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से किया था। मैं तुझे वसियत करता हूँ, 'अल्लाह से डरते रहने की। यही तमाम नेकियों का सर है और तू जिहाद को लाज़िम पकड़े रह, यही इस्लाम की रहबानियत है और ज़िक्रुल्लाह और तिलावते क़ुरआन पर मुदावमत कर यही तेरी राहत व रूह है आसमान में और तेरी याद है ज़मीन में।' (ज़ईफ़ : अहमद : 3/266, ज़ैद अल्अ़मी ज़ईफ़ है।)

***

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَاٰمِنُوْا بِرَسُوْلِهٖ يُؤْتِكُمْ كِفْلَيْنِ مِنْ رَّحْمَتِهٖ وَيَجْعَلْ لَّكُمْ نُوْرًا تَمْشُوْنَ بِهٖ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ۭ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝۲۸ لِّئَلَّا يَعْلَمَ اَهْلُ الْكِتٰبِ اَلَّا يَقْدِرُوْنَ عَلٰي شَيْءٍ مِّنْ فَضْلِ اللّٰهِ وَاَنَّ الْفَضْلَ بِيَدِ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَاۗءُ ۭ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ۝۲۹

तर्जुमा : ''ऐ वो लोगो जो ईमान लाये हो! अल्लाह से डरते रहा करो और उसके रसूल पर ईमान लाओ, अल्लाह तुम्हें अपनी रहमत का दोहरा हिस्सा देगा और तुम्हें नूर देगा जिसकी रोशनी में तुम चलो-फिरोगे और तुम्हारे गुनाह भी माफ़ फ़रमा देगा, अल्लाह बख़्शने वाला और मेहरबानी वाला है। (28) ये इसलिये कि अहले किताब जान लें कि अल्लाह के फ़ज़्ल के किसी हिस्से पर भी उन्हें इख़्तियार नहीं और ये कि सारा फ़ज़्ल अल्लाह ही के हाथ है वो जिसे चाहे दे और अल्लाह ही बड़े फ़ज़्ल वाला।'' (29)

अहले किताब मोमिन के लिये दोहरा अज्र है (आयत 28-29) : इससे पहले की आयत में बयान हो चुका है कि हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) फ़रमाते हैं, जिन मोमिनों का यहाँ ज़िक्र है उससे मुराद अहले किताब के मोमिन हैं और उन्हें दोहरा अज्र मिलेगा। जैसे कि सूरह क़सस की आयत में है और जैसे की एक हदीस़ में आया है, 'तीन शख़्सों को अल्लाह तआला दोहरा अज्र देगा। एक वो अहले किताब जो अपने नबी पर ईमान लाया फिर मुझ पर भी ईमान लाया उसे दोहरा अज्र है और वो गुलाम जो अपने आक़ा की ताबेदारी करे और अल्लाह का हक़ भी अदा करे उसे भी दोहरा अज्र हैं और वो शख़्स जो अपनी लौण्डी को अदब सिखाये और बहुत अच्छा अदब सिखाये। यानी शरई अदब, फिर उसे आज़ाद कर दे और निकाह कर दे वो भी दोहरे अज्र का मुस्तहिक़ है।' (बुख़ारी व मुस्लिम)

हज़रत सईद बिन जुबैर (रह.) फ़रमाते हैं, जब अहले किताब इस दोहरे अज्र पर फ़ख़्र करने लगे तो अल्लाह तआला ने ये आयत इस उम्मत के हक़ में नाज़िल फ़रमाई, पस उन्हें दोहरे अज्र के बाद नूरे हिदायत देने का भी वादा किया और मग़फ़िरत का भी। पस नूर और मग़फ़िरत उन्हें ज़्यादा मिली। (सहीह बुख़ारी, किताबुल इल्म, बाब तअलीमुर्रजुल अमतहू व अह्लहू : 97, सहीह मुस्लिम : 154)

इसी मज़मून की आयत याअय्युहल्लज़ी-न आमनू इन् तत्तकुल्लाह अल्अख़ है 'ऐ ईमान वालो! अगर तुम अल्लाह से डरते रहो तो वो तुम्हारे लिये फ़ुरक़ान करेगा और तुमसे तुम्हारी बुराइयाँ दूर कर देगा और तुम्हें माफ़ फ़रमा देगा, अल्लाह बड़े फ़ज़्ल वाला है।'

हज़रत उ़मर फ़ारूक़ (रज़ि.) ने यहूदियों के एक बहुत बड़े आ़लिम से पूछा कि तुम्हें एक नेकी पर ज़्यादा से ज़्यादा किस क़द्र फ़ज़ीलत मिलती है? उसने कहा, साढ़े तीन सौ तक। आपने अल्लाह का शुक्र किया और फ़रमाया, हमें तुमसे दोहरा मिले हैं। हज़रत सईद (रह.) ने इसे बयान फ़रमाकर यही आयत पढ़ी और फ़रमाया, इसी तरह जुम्आ़ का दोहरा अज्र है। (अत्तबरी : 23/210)

मुस्नद अहमद की हदीस़ में है, 'तुम्हारी और यहूदो-नसारा की मिसाल उस शख़्स जैसी है जिसने चंद मज़दूर किसी काम पर लगाने चाहे और ऐलान किया कि कोई है जो मुझसे एक क़ीरात ले और सुबह की नमाज़ से लेकर आधे-दिन तक काम करे? पस यहूद तैयार हो गये। उसने फिर कहा, ज़ुहर से अ़सर तक अब जो काम करे उसे मैं एक क़ीरात दूँगा, इस पर नसरानी तैयार हुए, काम किया और उज्रत ली। उसने फिर कहा, अब अ़सर से मग़रिब तक जो काम करे मैं उसे दो क़ीरात दूँगा, पस वो तुम मुसलमान हो। इस पर यहूदो-नसारा बहुत बिगड़े और कहने लगे, काम हमने ज़्यादा किया और दाम उन्हें ज़्यादा मिले, हमें कम दिया गया। तो उन्हें जवाब मिला कि मैंने तुम्हारा हक़ तो नहीं मारा? उन्होंने कहा, नहीं ऐसा तो नहीं हुआ। जवाब मिला कि फिर ये मेरा फ़ज़्ल है जिसे चाहे दूँ।' (अहमद : 2/6, सहीह बुख़ारी, किताबुल इजारह, बाब अल्इजारतु इला निस्फ़िन्नहार : 2268, तिर्मिज़ी : 2871, इब्ने माजह : 6639)

सहीह बुख़ारी शरीफ़ में है, मुसलमानों और यहूदो-नसारा की मिसाल उस शख़्स की तरह है जिसने

कुछ लोगों को काम पर लगाया, उज्रत ठहरा ली और कहा, दिन भर काम करो। वो काम पर लग गये, लेकिन आधे दिन काम करके कह दिया अब हमें ज़रूरत नहीं, जो हमने किया है हम उसकी उज्रत भी नहीं चाहते और अब हम काम भी नहीं करेंगे। उसने उन्हें समझाया भी कि ऐसा न करो काम पूरा करो और मज़दूरी ले जाओ। लेकिन उन्होंने साफ़ इंकार कर दिया और काम अधूरा छोड़कर उज्रत लिये बग़ैर चलते बने। उसने और मज़दूर लगाये और कहा कि बाक़ी काम शाम तक तुम पूरा करो और पूरे दिन की मज़दूरी मैं तुम्हें दूँगा। ये काम पर लगे, लेकिन अ़सर के वक़्त ये भी काम से हट गये और कह दिया कि अब हम से नहीं हो सकता हमें आपकी उज्रत नहीं चाहिये। उसने उन्हें भी समझाया कि देखो अब दिन बाक़ी ही क्या रह गया है? तुम काम पूरा करो और उज्रत ले जाओ, लेकिन ये न माने और चले गये। उसने फिर दूसरों को बुलाया और कहा, लो तुम मग़्रिब तक काम करो और दिन भर की मज़दूरी ले जाओ। चुनाँचे उन्होंने कुबूल किया। (सहीह बुख़ारी, किताब मवाक़ीतुस्सलात, बाब मन अदरक रकअ़तन मिनल अ़सर क़ब्लल गुरूब : 558)

फिर फ़रमाता है ये इसलिये कि अहले किताब यक़ीन कर लें कि अल्लाह जिसे दे ये उसके लौटाने की और जिसे न दे उसे देने की कुछ भी कुदरत नहीं रखते और इस बात को भी वो जान लें कि फ़ज़्ल व करम का मालिक सिर्फ़ वही परवरदिगार है। उसके फ़ज़्ल का कोई अन्दाज़ा और हिसाब नहीं लग सकता।

इमाम इब्ने जरीर (रह.) फ़रमाते हैं, लिअल्ला यअ्लम का मआना लियअ्लम है। हज़रत इब्ने मसऊद (रज़ि.) की क़िरअत में लिकै यअ्लम है। इसी तरह हज़रत अ़ता बिन अ़ब्दुल्लाह और हज़रत सईद बिन जुबैर (रह.) से भी यही क़िरअत मरवी है। ग़र्ज़ ये है कि कलामे अ़रब में (ला) सिला के लिये आता है जो कलाम के अव्वल व आख़िर में आ जाता है और वहाँ इंकार मुराद नहीं होता। जैसे मा मनअ़क अल्ला तस्जुद में और वमा युश्अिरुकुम अन्नहा इज़ा जाअत ला युअ्मिनून में और व हरामुन् अ़ला क़रयतिन अह्लक्नाहा अन्नहुम ला यरजिऊन में।

अल्हम्दुलिल्लाह सूरह हदीद की तफ़्सीर ख़त्म हुई और इसके साथ ही सत्ताइसवाँ पारह तमाम हुआ।

***

FLOW CHART
तरतीबी नक्श-ए-रब्त

MACRO-STRUCTURE
नज़्मे-जली

सूरह मुजादला - 58

आयात : 22, मदनी, पैराग्राफ : 3

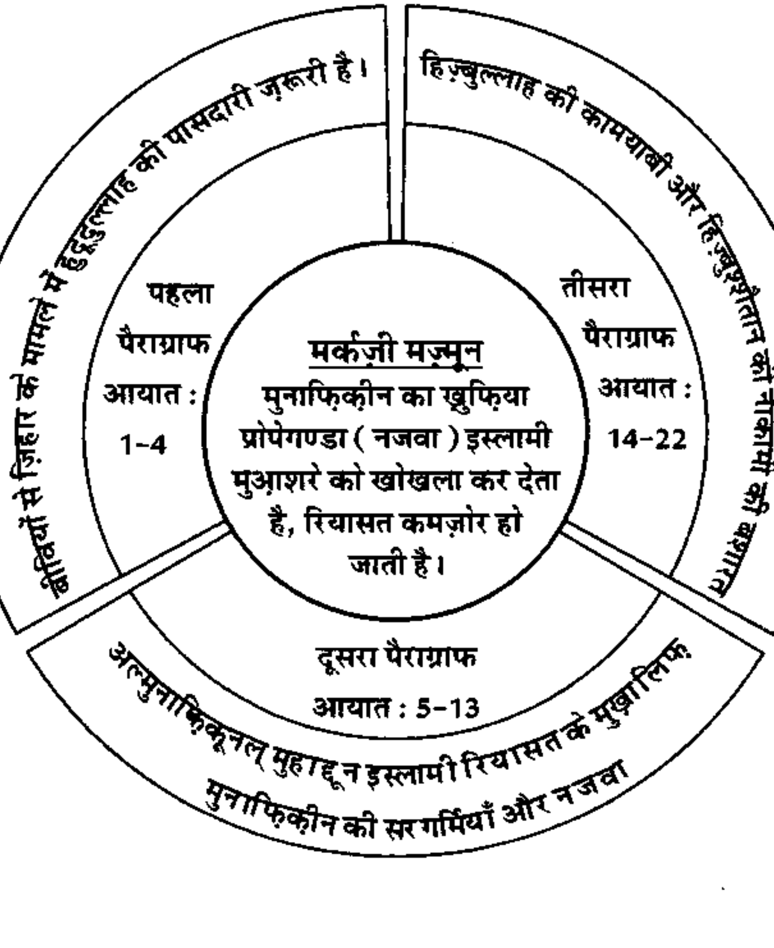

तफ़्सीर सूरह मुजादला

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ○

तर्जुमा : ''शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है।''

***

قَدۡ سَمِعَ اللّٰہُ قَوۡلَ الَّتِیۡ تُجَادِلُکَ فِیۡ زَوۡجِہَا وَ تَشۡتَکِیۡۤ اِلَی اللّٰہِ ٭ۖ وَ اللّٰہُ یَسۡمَعُ تَحَاوُرَکُمَا ؕ اِنَّ اللّٰہَ سَمِیۡعٌۢ بَصِیۡرٌ ①

तर्जुमा : ''यक़ीनन अल्लाह तआला ने उस औरत की बात सुनी जो तुझसे अपने शौहर के बारे में बातचीत कर रही थी और अल्लाह के आगे शिकायत कर रही थी, अल्लाह तआला तुम दोनों के सवाल व जवाब सुन रहा था, बेशक अल्लाह तआला सुनने-देखने वाला है।''

हज़रत ख़ौला (रज़ि.) का वाक़िया (आयत : 1) : हज़रत आइशा सिद्दीक़ा (रज़ि.) फ़रमाती हैं, 'अल्लाह की ज़ात हम्दो-सना के लायक़ है जिसके सुनने ने तमाम आवाज़ों को घेर रखा है। ये शिकायत करने वाली बीबी साहिबा आकर आँहज़रत (ﷺ) से इस तरह चुपके-चुपके बातें कर रही थीं कि बावजूद उसी घर में होने के मैं मुत्लक़न न सुन सकी कि वो क्या कह रही हैं? अल्लाह तआला ने उस पोशीदा आवाज़ को भी सुन लिया और ये आयत उतरी।' (अहमद : 6/46, सहीह बुख़ारी, किताबुत्तौहीद, बाब क़ौलुल्लाहि तआला वकानल्लाहु समीअम्-बसीरा मुअल्लक़न क़ब्ल हदीस़ : 7386, इब्ने माजह : 188, नसाई : 6/168, हदीस़ नम्बर : 3460, व रिवायातुल मुदल्लिसीन फ़िस्सहीहैन महमूलतन अलस्सिमाअ)

और रिवायत में आपका ये फ़रमान इस तरह मन्क़ूल है कि 'बाबरकत है वो अल्लाह जो हर ऊँची-नीची आवाज़ को सुनता है ये शिकायत करने वाली बीबी साहिबा हज़रत ख़ौला बिन्ते सअल्बा (रज़ि.) जब हुज़ूर (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुईं तो इस तरह सरगोशियाँ कर रही थीं कि कोई लफ़्ज़ तो कान तक पहुँच जाता था वरना अक्सर बातें बावजूद इसी घर में होने के मेरे कानों तक नहीं पहुँचती थीं, अपने मियाँ की शिकायतें करते हुए फ़रमाया कि ऐ अल्लाह के रसूल! मेरी जवानी तो उनके साथ कटी, बच्चे उनसे हुए अब जबकि मैं बुढ़िया हो गई, बाल-बच्चों की जूगा (क़ाबिल) न रही तो मेरे मियाँ ने मुझसे ज़िहार कर लिया। ऐ अल्लाह! मैं तेरे सामने अपने इस दुखड़े का रोना रोती हूँ। अभी ये बीबी साहिबा घर से बाहर नहीं निकली थीं तो

हज़रत जिब्रईल (अ़लै.) ये आयत लेकर उतरे। उनके ख़ाविन्द का नाम हज़रत औस बिन सामित (रज़ि.) था। (अत्तबरी : 23/226)

उन्हें कभी कुछ जुनून सा हो जाता था। इस हालत में अपनी बीबी साहिबा से ज़िहार कर लेते। फिर जब अच्छे हो जाते तो गोया कुछ न था। ये बीबी साहिबा हुज़ूर (ﷺ) से फ़तवा पूछने और अल्लाह के सामने अपनी इल्तिजा बयान करने को आईं जिस पर ये आयत उतरी। (सहीह : अबू दाऊद, किताबुत्तलाक़, बाब फ़िज़्ज़िहार : 2219, ये हदीस़ सहीह है।)

हज़रत अबू यज़ीद (रह.) फ़रमाते हैं कि हज़रत उ़मर (रज़ि.) अपनी ख़िलाफ़त के ज़माने में दूसरे लोगों के साथ जा रहे थे जो एक औ़रत ने आवाज़ देकर ठहरा लिया। हज़रत उ़मर (रज़ि.) फ़ौरन ठहर गये और उनके पास जाकर तवज्जह और अदब से सर झुकाये उनकी बातें सुनने लगे। जब वो अपनी फ़रमाइश की तामील करा चुकीं और ख़ुद लौट गईं तब अमीरुल मोमिनीन (रज़ि.) भी वापस हमारे पास आये। एक शख़्स ने कहा, अमीरुल मोमिनीन! एक बुढ़िया के कहने से आप रुक गये और इतने आदमियों को आपकी वजह से अब तक रुकना पड़ा। आपने फ़रमाया, अफ़सोस! जानते भी हो ये कौन थीं? उसने कहा, नहीं। फ़रमाया, ये वो औ़रत हैं जिनकी शिकायत अल्लाह तआ़ला ने सातवें आसमान पर सुनी, ये हज़रत ख़ौला बिन्ते स़अ़ल्बा (रज़ि.) हैं। अगर आज सुबह से शाम छोड़ रात कर देतीं और मुझसे कुछ फ़रमाती रहतीं तो भी उनकी ख़िदमत से न टलता, हाँ! नमाज़ के वक़्त नमाज़ अदा कर लेता और फिर कमर बस्ता ख़िदमत के हाज़िर हो जाता।' (इब्ने अबी हातिम) इसकी सनद मुन्क़तअ़ है और दूसरे तरीक़े से भी मरवी है। एक रिवायत में है कि ये ख़ुवैला बिन्ते सामित (रज़ि.) थीं और उनकी वालिदा का नाम मआ़ज़ा (रज़ि.) था। जिनके बारे में ये आयत वला तुक्रिहू फ़तयातिकुम नाज़िल हुई थी। लेकिन ठीक ये है कि हज़रत ख़ुवैला (रज़ि.) औस बिन सामित (रज़ि.) की बीवी थीं, अल्लाह तआ़ला उनसे राज़ी हो।

***

اَلَّذِيْنَ يُظٰهِرُوْنَ مِنْكُمْ مِّنْ نِّسَآىِٕهِمْ مَّا هُنَّ اُمَّهٰتِهِمْ ؕ اِنْ اُمَّهٰتُهُمْ اِلَّا الّٰٓـِٔيْ
وَلَدْنَهُمْ ؕ وَاِنَّهُمْ لَيَقُوْلُوْنَ مُنْكَرًا مِّنَ الْقَوْلِ وَزُوْرًا ؕ وَاِنَّ اللّٰهَ لَعَفُوٌّ غَفُوْرٌ ۞ ٢
وَالَّذِيْنَ يُظٰهِرُوْنَ مِنْ نِّسَآىِٕهِمْ ثُمَّ يَعُوْدُوْنَ لِمَا قَالُوْا فَتَحْرِيْرُ رَقَبَةٍ مِّنْ قَبْلِ
اَنْ يَّتَمَآسَّا ؕ ذٰلِكُمْ تُوْعَظُوْنَ بِهٖ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ۞ ٣ فَمَنْ لَّمْ يَجِدْ

فَصِيَامُ شَهْرَيْنِ مُتَتَابِعَيْنِ مِنْ قَبْلِ اَنْ يَّتَمَآسَّا فَمَنْ لَّمْ يَسْتَطِعْ فَاِطْعَامُ سِتِّيْنَ مِسْكِيْنًا ذٰلِكَ لِتُؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَتِلْكَ حُدُوْدُ اللّٰهِ وَلِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝٤

तर्जुमा : ''तुममें से जो लोग अपनी बीवी से ज़िहार करते हैं (यानी उन्हें माँ कह बैठते हैं) वो दरअसल उनकी मायें नहीं बन जातीं, उनकी मायें तो वही हैं जिनके बतन (पेट) से वो पैदा हुए, यक़ीनन ये लोग एक नामाक़ूल और झूठी बात कहते हैं, बेशक अल्लाह तआला माफ़ करने वाला और बख़्शने वाला है। (2) और जो लोग अपनी बीवी से ज़िहार करें फिर अपनी कही हुई बात से रुजूअ करें तो उनके ज़िम्मे आपस में एक-दूसरे को हाथ लगाने से पहले एक गुलाम आज़ाद करना है और अल्लाह तुम्हारे तमाम आमाल से बाख़बर है। (3) हाँ जो शख़्स न पाये उसके ज़िम्मे दो महीनों के लगातार रोज़े हैं इससे पहले कि एक-दूसरे को हाथ लगायें और जिस शख़्स को ये ताक़त भी न हो उस पर साठ मिस्कीनों को खिलाना है। ये इसलिये कि तुम अल्लाह और उसके रसूल की हुक्म बरदारी करो, ये अल्लाह तआला की मुक़र्रर करदा हदें हैं और कुफ़्फ़ार ही के लिये दुख की मार है।'' (4)

मसल-ए-ज़िहार (आयत 2-4) : हज़रत ख़ुवैला बिन्ते सअल्बा (रज़ि.) फ़रमाती हैं कि अल्लाह की क़सम! मेरे और मेरे ख़ाविन्द औस बिन सामित (रज़ि.) के बारे में इस सूरह मुजादला की शुरू की चार आयतें उतरी हैं। मैं उनके घर में थी, ये बूढ़े और बड़ी उम्र के थे और कुछ अख़्लाक़ के भी अच्छे न थे। एक दिन बातों ही बातों में, मैंने उनकी किसी बात का ख़िलाफ़ किया और उन्हें कुछ जवाब दिया। जिस पर वो बड़े ग़ज़बनाक हुए और गुस्से में फ़रमाने लगे, तू मुझ पर मेरी माँ की पीठ की तरह है। फिर घर से चले गये और क़ौमी मज्लिस में कुछ देर बैठे रहे। फिर वापस आये और मुझसे ख़ास बातचीत करनी चाही। मैंने कहा, अल्लाह की क़सम! जिसके हाथ में ख़ुवैला की जान है! तुम्हारे इस कहने के बाद अब ये बात नामुम्किन है यहाँ तक कि अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) का फ़ैसला हमारे बारे में न हो, लेकिन वो न माने और ज़बरदस्ती करने लगे। मगर चूंकि कमज़ोर और ज़ईफ़ थे मैं उन पर ग़ालिब आ गई और वो अपने मक़सद में कामयाब न हो सके। मैं अपनी पड़ौसन के यहाँ गई और उससे कपड़ा माँगकर ओढ़ कर रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास पहुँची। इस वाक़िये को भी बयान किया और भी अपनी मुसीबतें और तकलीफ़ें बयान करनी शुरू कर दीं। आप (ﷺ) यही फ़रमाते जाते थे, ख़ुवैला अपने ख़ाविन्द के बारे में अल्लाह से डरो, वो बूढ़े हैं। अभी ये बातें हो ही रही थीं कि आँहज़रत (ﷺ) पर वह्य की कैफ़ियत तारी हुई। जब वह्य उतर चुकी तो आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'ऐ ख़ुवैला! तेरे और तेरे

ख़ाविन्द के बारे में कुरआन करीम की आयतें नाज़िल हुई हैं। फिर आप (ﷺ) ने क़द समिअल्लाहु से अज़ाबुन अलीम तक पढ़कर सुनाया और फ़रमाया, 'जाओ अपने मियाँ से कहो कि एक गुलाम आज़ाद कर दें।' मैंने कहा, हुज़ूर! उनके पास गुलाम कहाँ? वो तो बहुत मिस्कीन शख़्स हैं। आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'अच्छा तो दो महीने के लगातार रोज़े रख लें।' मैंने कहा, हुज़ूर वो तो बड़ी उम्र के बूढ़े, नातवाँ कमज़ोर हैं, उन्हें दो माह के रोज़ों की भी ताक़त नहीं। आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'फिर साठ मिस्कीनों को एक वसक़ (तक़रीबन चार मन पुख़्ता) खजूरें दे दें। मैंने कहा, हुज़ूर! इस मिस्कीन के पास ये भी नहीं। आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'अच्छा आधा वसक़ खजूरें मैं अपने पास से उन्हें दे दूँगा।' मैंने कहा, बेहतर! आधा वसक़ मैं दे दूँगी। आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'ये तुमने बहुत अच्छा किया और ख़ूब काम किया, जाओ ये अदा कर दो और अपने ख़ाविन्द के साथ जो तुम्हारे चाचा के लड़के हैं मुहब्बत, प्यार, ख़ैरख़्वाही और फ़रमांबरदारी से गुज़ारा करो।' (ज़ईफ़ : अबू दाऊद, किताबुत्तलाक़, बाब अज़्ज़िहार : 2214, मअ़मर बिन अब्दुल्लाह मज्हूलुल हाल रावी है। अहमद : 6/410-411)

उनका नाम कुछ रिवायतों में ख़ुवैला के बजाय ख़ौला भी आया है और बिन्ते सअ़्लबा के बदले बिन्ते मालिक बिन सअ़्लबा भी आया है। इन अक़्वाल में ऐसा कोई इख़्तिलाफ़ नहीं जो एक-दूसरे के ख़िलाफ़ हो, वल्लाहु आलम! इस सूरत की इन शुरू की आयतों का सहीह शाने नुज़ूल यही है। हज़रत सलमा बिन सख़र (रज़ि.) का वाक़िया जो अब आ रहा है वो इसके उतरने का बाइस नहीं हुआ। हाँ अल्बत्ता जो हुक्मे ज़िहार इन आयतों में था उन्हें भी दिया गया। यानी आज़ादगी-ए-गुलाम या रोज़े या खाना देना। हज़रत सलमा बिन सख़र (रज़ि.) का वाक़िया ख़ुद उनकी ज़बानी ये है कि मुझमें जिमाअ़ की ताक़त दूसरों से ज़्यादा थी। रमज़ान में इस ख़ौफ़ से कि कहीं ऐसा न हो दिन में रोज़े के वक़्त मैं बच न सकूँ, मैंने रमज़ान भर के लिये अपनी बीवी से ज़िहार कर लिया। एक रात जबकि वो मेरी ख़िदमत में मसरूफ़ थी बदन के किसी हिस्से पर से कपड़ा हट गया। फिर ताब कहाँ थी? उससे बातचीत कर बैठा, सुबह अपनी क़ौम के पास आकर मैं ने कहा, रात ऐसा वाक़िया हो गया है। तुम मुझे लेकर रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास चलो और आप (ﷺ) से पूछो कि इस गुनाह का बदला क्या है? सबने इंकार किया और कहा कि हम तो तेरे साथ नहीं जायेंगे, ऐसा न हो कि कुरआन करीम में इसकी बाबत कोई आयत उतरे या हुज़ूर कोई ऐसी बात फ़रमा दें कि हमेशा के लिये हम पर आर बाक़ी रह जाये, तू जाने तेरा काम, तू ने ऐसा क्यों किया? हम तेरे साथी नहीं। मैंने कहा, अच्छा! फिर मैं अकेला जाता हूँ। चुनाँचे मैं गया और हुज़ूर (ﷺ) से तमाम वाक़िया बयान किया। आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'तुमने ऐसा किया?' मैंने कहा, जी हाँ हुज़ूर! मुझसे ऐसा हो गया। आप (ﷺ) ने फिर फ़रमाया, 'तुमने ऐसा किया?' मैंने फिर यही अर्ज़ किया कि हुज़ूर! मुझसे ये ख़ता हो गई। आप (ﷺ) ने तीसरी बार भी यही फ़रमाया। मैंने फिर इक़रार किया और कहा कि हुज़ूर मैं मौजूद हूँ, जो सज़ा मेरे लिये तजवीज़ की जाये मैं उसे सब्र से बर्दाश्त करूँगा, आप हुक्म दीजिये। आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'जाओ एक गुलाम आज़ाद करो। मैंने अपनी गर्दन पर हाथ रखकर कहा हुज़ूर! मैं तो सिर्फ़ इसका मालिक हूँ। अल्लाह की क़सम! मुझमें गुलाम आज़ाद करने की ताक़त नहीं। आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'फिर दो महीने के पे-दर्पे रोज़े रखो। मैंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल! रोज़ों ही की वजह से तो ये हुआ।

आपने फ़रमाया, 'फिर जाओ सदक़ा करो।' मैंने कहा, उस अल्लाह की क़सम! जिसने आप को हक़ के साथ भेजा है मेरे पास कुछ नहीं है, बल्कि आज की रात सब घर वालों ने फ़ाक़ा किया है। फ़रमाया, 'अच्छा बनू ज़ुरैक़ के क़बीले के सदक़े वाले के पास जाओ और उससे कहो कि वो सदक़े का माल तुम्हें दे दे, तुम उसमें से एक वसक़ खजूर तो साठ मिस्कीनों को दे दो और बाक़ी तुम अपने आप और बाल-बच्चों के काम में लाओ। मैं ख़ुश-ख़ुश वापस लौटा और अपनी क़ौम के पास आया और उनसे कहा, तुम्हारे पास तो मैंने तंगी और बुराई पाई हज़रत मुहम्मद (ﷺ) के पास मैंने कुशादगी और बरकत पाई। हुज़ूर (ﷺ) का हुक्म है कि अपने सदक़े तुम मुझे दे दो। चुनाँचे उन्होंने मुझे दे दिये। (अहमद : 4/37, अबू दाऊद, हवाला साबिक़ : 2213 और इसकी सनद ज़ईफ़ है इब्ने इस्हाक़ मुदल्लस रावी है और सिमाअ की सराहत नहीं। नीज़ सुलैमान बिन यसार ने मुस्लिमा बिन सख़र रज़ि. से कुछ नहीं सुना। तिर्मिज़ी : 3299, इब्ने माजह : 2062, अल्मुन्तक़ा लिइब्निल जारूद : 744, सहीह इब्ने ख़ुज़ैमा : 2378, हाकिम : 2/203, बैहक़ी : 7/390)

बज़ाहिर ऐसा मालूम होता है कि ये वाक़िया हज़रत औस बिन सामित (रज़ि.) और उनकी बीवी साहिबा हज़रत ख़ुवैला बिन्ते सअल्बा (रज़ि.) के वाक़िये के बाद का है। चुनाँचे हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) का फ़रमान है कि ज़िहार का पहला वाक़िया हज़रत औस बिन सामित (रज़ि.) का है। जो हज़रत उबादा बिन सामित (रज़ि.) के भाई थे। उनकी बीवी साहिबा का नाम ख़ौला बिन्ते सअल्बा बिन मालिक था। इस वाक़िये से हज़रत ख़ौला को डर था कि शायद तलाक़ हो गई। उन्होंने आकर हुज़ूर (ﷺ) से कहा कि मेरे मियाँ ने मुझसे ज़िहार कर लिया और अगर हम अलग-अलग हो गये तो दोनों बर्बाद हो जायें, मैं अब इस लायक़ भी नहीं रही कि मुझसे औलाद हो, हमारे इस ताल्लुक़ को भी ज़माना गुज़र चुका। और भी इसी तरह की बातें कहती जाती थी और रोती-जाती थीं। अब तक ज़िहार का कोई हुक्म इस्लाम में न था, इस पर ये आयत शुरू सूरत से अलीम तक उतरीं। हुज़ूर (ﷺ) ने हज़रत औस (रज़ि.) को बुलवाया और पूछा कि क्या तुम गुलाम आज़ाद कर सकते हो? उन्होंने क़सम खाकर इंकार किया। हुज़ूर (ﷺ) ने उनके लिये रक़म जमा की, उन्होंने उससे गुलाम ख़रीदकर आज़ाद किया और अपनी बीवी साहिबा से रुजूअ किया। (अत्तबरी : 23/227)

ज़िहार की तारीफ़ : लफ़्ज़े ज़िहार मुश्तक़ है ज़ह्र से चूंकि अहले जाहिलिय्यत अपनी बीवी से ज़िहार करते वक़्त यूँ कहते थे कि तू मुझ पर ऐसी है जैसे मेरी माँ की पीठ। शरीअत में हुक्म ये है कि इस तरह ख़्वाह किसी अज़्व का नाम ले ज़िहार हो जायेगा। ज़िहार जाहिलिय्यत के ज़माने में तलाक़ समझा जाता था। अल्लाह तआला ने इस उम्मत के लिये इसमें कफ़्फ़ारा मुक़र्रर कर दिया और इसे तलाक़ शुमार नहीं किया जैसे कि जाहिलिय्यत का दस्तूर था। सलफ़ में से अक्सर हज़रात ने यही फ़रमाया है। हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) जाहिलिय्यत के इस दस्तूर का ज़िक्र करके फ़रमाते हैं, इस्लाम में जब हज़रत ख़ुवैला (रज़ि.) वाला वाक़िया पेश आया और दोनों मियाँ-बीवी पछताने लगे तो हज़रत औस (रज़ि.) ने अपनी बीवी साहिबा को हुज़ूर (ﷺ) की ख़िदमत में भेजा। ये जब आईं तो देखा कि आप (ﷺ) कंघी कर रहे हैं। आप (ﷺ) ने वाक़िया सुन कर फ़रमाया, 'हमारे पास इसका कोई हुक्म नहीं। इतने में ये आयतें उतरी और आप (ﷺ) ने हज़रत ख़ुवैला

(रज़ि.) को इसकी ख़ुशख़बरी दी और पढ़ कर सुनाईं। जब गुलाम की आज़ादगी का ज़िक्र आया तो उ़ज़्र किया कि हमारे पास गुलाम नहीं, फिर रोज़ों का ज़िक्र सुन कर कहा कि अगर हर रोज़ तीन मर्तबा पानी न पियें तो बवजह अपने बुढ़ापे के फ़ौत हो जायें, जब खाना खिलाने का ज़िक्र सुना तो कहा, कुछ लुक़्मों पर तो सारा दिन गुज़रता है औरों को देना तो कहाँ? चुनाँचे हुज़ूर (ﷺ) ने आधा वसक़ तीस साअ़ मंगवाकर उन्हें दिये और फ़रमाया, 'इसे सदक़ा कर दो और अपनी बीवी से रुजूअ़ कर लो।' (अत्तबरी : 23/222)

हज़रत अबुल आ़लिया से भी इसी तरह मरवी है फ़रमाते हैं, 'ख़ौला बिन्ते दुलैज (रज़ि.) एक अन्सारी की बीवी थीं जो कम निगाह वाले मुफ़्लिस और कज ख़ुल्क़ थे। किसी दिन किसी बात पर मियाँ-बीवी में झगड़ा हो पड़ा तो जाहिलिय्यत की रस्म के मुताबिक़ ज़िहार कर लिया जो उनकी तलाक़ थी। ये बीवी साहिबा हुज़ूर (ﷺ) के पास पहुँचीं। उस वक़्त आप (ﷺ) हज़रत आ़इशा (रज़ि.) के घर में थे और माई साहिबा आपका सर धो रही थीं, जाकर सारा वाक़िया बयान किया। आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'अब क्या हो सकता है? मेरे इल्म में तो तू उस पर हराम हो गई ये सुनकर कहने लगीं, या अल्लाह! मेरी अ़र्ज़ तुझसे है। अब हज़रत आ़इशा (रज़ि.) आप (ﷺ) के सर मुबारक का एक तरफ़ का हिस्सा धोकर घूम कर दूसरी जानिब आईं और उधर का हिस्सा धोने लगीं तो हज़रत ख़ौला (रज़ि.) भी घूमकर उस तरफ़ आ बैठीं और अपना वाक़िया दोहराया। आप (ﷺ) ने फिर यही जवाब दिया। हज़रत उम्मुल मोमिनीन ने देखा कि आप (ﷺ) के चेहरे का रंग मुतग़य्यर हो गया है तो उनसे कहा कि दूर हट कर बैठो, ये दूर खिसक गईं, इधर वह्य नाज़िल होनी शुरू हुई। जब उतर चुकी तो आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'वो औरत कहाँ है?' हज़रत उम्मुल मोमिनीन ने आवाज़ देकर बुलाया। आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'जाओ अपने ख़ाविन्द को ले आओ।' ये दौड़ती हुई गईं और अपने शौहर को बुला लाईं तो वाक़ई वो ऐसे ही थे जैसे उन्होंने कहा था। आप (ﷺ) अस्तईज़ु बिल्लाहिस्समीइल अ़लीमि बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम पढ़कर इस सूरत की ये आयतें सुनाईं और फ़रमाया कि तुम गुलाम आज़ाद कर सकते हो? उन्होंने कहा, नहीं। कहा, दो महीने के लगातार एक-पीछे-एक रोज़े रख सकते हो? उन्होंने क़सम खाकर कहा कि अगर दो तीन बार दिन में न खाऊँ तो बीनाई बिल्कुल जाती रहती है। फ़रमाया कि साठ मिस्कीनों को खाना दे सकते हो? उन्होंने कहा, नहीं। लेकिन अगर आप मेरी इम्दाद फ़रमायें तो और बात है। पस हुज़ूर (ﷺ) ने उनकी इम्दाद (मदद) की और फ़रमाया, 'साठ मिस्कीनों को खिलादो और जाहिलिय्यत की इस रस्मे तलाक़ को हटाकर अल्लाह तआ़ला ने इसे ज़िहार मुक़र्रर फ़रमाया।' (अत्तबरी : 23/220)

हज़रत सईद बिन जुबैर (रह.) फ़रमाते हैं, 'ईला और ज़िहार जाहिलिय्यत के ज़माने की तलाक़ें थीं। अल्लाह तआ़ला ने ईला में तो चार महीने की मुद्दत मुक़र्रर फ़रमाई और ज़िहार में कफ़्फ़ारा मुक़र्रर फ़रमाया। हज़रत इमाम मालिक (रह.) ने लफ़्ज़ मिन्कुम से इस्तिदलाल किया है कि चूंकि यहाँ ख़िताब मोमिनों से है इसलिये इस हुक्म में काफ़िर दाख़िल नहीं। जुम्हूर का मज़हब इसके बरख़िलाफ़ है। वो इसका जवाब ये देते हैं कि ये बाऐतिबारे ग़ल्बे के कह दिया गया है। इसलिये बतौरे क़ैद के इसका मफ़्हूम मुख़ालिफ़ मुराद नहीं ले सकते। लफ़्ज़ मिन्निसाइहिम से जुम्हूर ने इस्तिदलाल किया है कि लौण्डी से ज़िहार नहीं न वो इस ख़िताब में

दाख़िल है। फिर फ़रमाता है कि उसके कहने से कि तू मुझ पर मेरी माँ की तरह है या मेरे लिये तू मिस्ल मेरी माँ के है या मिस्ल मेरी माँ की पीठ के है या और ऐसे ही अल्फ़ाज़ अपनी बीवी को कह देने से वो सचमुच माँ नहीं बन जाती। हक़ीक़ी माँ तो वही है जिसके बतन से ये तवल्लुद (पैदा) हुआ है। ये लोग अपने मुँह से फ़हश और बातिल क़ौल बोल देते हैं। अल्लाह तआला दरगुज़र करने वाला और बख़्शने वाला है। उसने जाहिलिय्यत की इस तंगी को तुमसे दूर कर दिया। इसी तरह हर वो काम जो एक दम ज़बान से बग़ैर सोचे-समझे और बिला क़सद निकल जाये, चुनाँचे अबू दाऊद वग़ैरह में है कि हुज़ूर (ﷺ) ने सुना कि एक शख़्स अपनी बीवी से कह रहा है, ऐ मेरी बहन! तो आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'क्या ये तेरी बहन है?' (ज़ईफ़ : अबू दाऊद, किताबुत्तलाक़, बाब फ़िर्रजुलि यक़ूलु लिइम्रातिही या उख़्ती : 2210, ये रिवायत मुरसल होने की वजह से ज़ईफ़ है।)

ग़र्ज़ ये कहना बुरा लगा, उसे रोका, मगर इससे हुरमत साबित नहीं की। क्योंकि दरअसल इसका मक़सूद ये न था यूंही ज़बान से बग़ैर क़सद के निकल गया था वरना ज़रूर हुरमत साबित हो जाती। क्योंकि सहीह क़ौल यही है कि अपनी बीवी को जो शख़्स इस नाम से याद करे जो मुहर्रिमाते अबदिया हैं जैसे बहन या फूफी या ख़ाला वग़ैरह तो वो भी हुक्म में माँ के हैं। जो लोग ज़िहार करें फिर अपने कहने से लौटें, उसका मतलब एक तो ये बयान किया गया है कि ज़िहार किया फिर मुकर्रर (बार-बार) इस लफ़्ज़ को कहा, लेकिन ये ठीक नहीं।

ज़िहार के मुताल्लिक़ अइम्मा के अक़्वाल : बक़ौले हज़रत इमाम शाफ़ई (रह.) मतलब ये है कि ज़िहार किया फिर उस औरत को रोके रखा यहाँ तक कि इतना ज़माना गुज़र गया कि अगर चाहता तो उसमें बाक़ाइदा तलाक़ दे सकता था लेकिन तलाक़ न दी। इमाम अहमद (रह.) फ़रमाते हैं कि फिर लौटे जिमाअ की तरफ़ या इरादा करे तो ये हलाल नहीं जब तक कि तयशुदा कफ़्फ़ारा अदा न करे। इमाम मालिक (रह.) फ़रमाते हैं कि मुराद इससे जिमाअ का इरादा या फिर बसाने का अ़ज़्म या जिमाअ है। इमाम अबू हनीफ़ा (रह.) वग़ैरह कहते हैं, मुराद ज़िहार की तरफ़ लौटना है उसकी हुरमत और जाहिलिय्यत के हुक्म के उठ जाने के बाद पस जो शख़्स अब ज़िहार करेगा उस पर उसकी बीवी हराम हो जायेगी जब तक ये कफ़्फ़ारा अदा न करे। हज़रत सईद फ़रमाते हैं, मुराद ये है कि जिस चीज़ को उसने अपनी जान पर हराम कर लिया था अब फिर उस काम को करना चाहे तो ये कफ़्फ़ारा अदा करे। हज़रत हसन बसरी (रह.) का क़ौल है कि मुजामिअत करना चाहे, वरना छूने में क़ब्ल कफ़्फ़ारा के भी उनके नज़दीक कोई हर्ज नहीं। इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) वग़ैरह फ़रमाते हैं, यहाँ मस्स से मुराद सुहबत करना है। (अत्तबरी : 23/231)

ज़ुहरी (रह.) फ़रमाते हैं कि हाथ लगाना, प्यार करना भी कफ़्फ़ारे की अदायगी से पहले जाइज़ नहीं। सुनन में है कि एक शख़्स ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल! मैंने अपनी बीवी से ज़िहार किया था, फिर कफ़्फ़ारा अदा करने से पहले मैं उससे मिल लिया। आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'अल्लाह तुझ पर रहम करे, ऐसा तूने क्यों किया?' कहने लगा, ऐ अल्लाह के रसूल! चाँदनी रात में उसके ख़ल्ख़ाल (पाज़ेब) की चमक ने मुझे बेताब कर दिया। आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'अब उससे क़ुरबत न करना जब तक कि अल्लाह तआला के फ़रमान के

मुताबिक़ कफ़्फ़ारा अदा न करे।' नसाई में ये हदीस़ मुरसलन मरवी है और इमाम नसाई (रह.) मुरसल को ज़्यादा सहीह बतलाते हैं। (हसन : अबू दाऊद, किताबुत्तलाक़, बाब फ़िज़्ज़िहार : 2221 यह हदीस़ हसन है। तिर्मिज़ी : 1199, नसाई : 3487, इब्ने माजह : 2065)

फिर कफ़्फ़ारा बयान हो रहा है कि एक गुलाम आज़ाद करे। यहाँ ये क़ैद नहीं कि मोमिन ही हो, जैसे क़त्ल के कफ़्फ़ारे में गुलाम के मोमिन होने की क़ैद है। इमाम शाफ़ई (रह.) तो फ़रमाते हैं, 'ये मुत्लक़ इस मुक़य्यद पर महमूल होगी क्योंकि आज़ादगी जैसी वहाँ है, ऐसी ही यहाँ भी है।' इसकी दलील ये हदीस़ भी है कि एक स्याह फ़ाम लौण्डी की बाबत हुज़ूर (ﷺ) ने फ़रमाया था, 'इसे आज़ाद कर दो ये मोमिना है।' (सहीह मुस्लिम, किताबुल मसाजिद, बाब तहरीमुल कलाम फ़िस्सलात : 537, अबू दाऊद : 930, अहमद : 5/447, इब्ने हिब्बान : 165)

ऊपर वाक़िया गुज़र चुका जिससे मालूम होता है कि ज़िहार करके फिर कफ़्फ़ारा से पहले वाक़ेअ होने वाले को आप (ﷺ) ने दूसरा कफ़्फ़ारा अदा करने को नहीं फ़रमाया। फिर फ़रमाता है इससे तुम्हें नसीहत की जाती है, यानी धमकाया जा रहा है। अल्लाह तआला तुम्हारी मस्लिहतों से ख़बरदार है और तुम्हारे अहवाल का आलिम है। जो आज़ादगी-ए-गुलाम पर क़ादिर न हो वो दो महीने के लगातार रोज़े रखने के बाद अपनी बीवी से इस सूरत में मिल सकता है और अगर इसका भी मक़्दूर न हो तो फिर साठ मिस्कीनों को खाना देने के बाद। पहले हदीसें गुज़र चुकीं जिनसे मालूम होता है कि मुक़द्दम पहली सूरत, फिर दूसरी, फिर तीसरी। जैसे कि बुख़ारी व मुस्लिम की इस हदीस़ में भी है जिसमें आप (ﷺ) ने रमज़ान में अपनी बीवी से जिमाअ करने वाले को फ़रमाया था। (सहीह बुख़ारी, किताबुस्सौम, बाब इज़ा जामअ फ़ी रमज़ान वलम यकुल्लहू शैअ : 1936, सहीह मुस्लिम : 1111)

हमने ये अहकाम इसलिये मुक़र्रर किये हैं कि तुम्हारा कामिल ईमान अल्लाह पर और उसके रसूल पर हो जाये। ये अल्लाह की मुक़र्रर करदा हदें हैं, उसके मुहर्रमात हैं , ख़बरदार इस हुरमत को न तोड़ना जो काफ़िर हों यानी ईमान न लायें, हुक्म बरदारी न करें, शरीअत के अहकाम की बेइज़्ज़ती करें उनसे लापरवाही बरतें उन्हें बलाओ से बचने वाला न समझो बल्कि उनके लिये दुनिया व आख़िरत में दर्दनाक अज़ाब हैं।

***

إِنَّ الَّذِينَ يُحَادُّونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ كُبِتُوا كَمَا كُبِتَ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ وَقَدْ

أَنزَلْنَا آيَاتٍ بَيِّنَاتٍ ۚ وَلِلْكَافِرِينَ عَذَابٌ مُّهِينٌ ﴿٥﴾ يَوْمَ يَبْعَثُهُمُ اللَّهُ جَمِيعًا

فَيُنَبِّئُهُمْ بِمَا عَمِلُوا ۚ أَحْصَاهُ اللَّهُ وَنَسُوهُ ۚ وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ ﴿٦﴾
أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۖ مَا يَكُونُ مِنْ نَجْوَىٰ
ثَلَاثَةٍ إِلَّا هُوَ رَابِعُهُمْ وَلَا خَمْسَةٍ إِلَّا هُوَ سَادِسُهُمْ وَلَا أَدْنَىٰ مِنْ ذَٰلِكَ وَلَا
أَكْثَرَ إِلَّا هُوَ مَعَهُمْ أَيْنَ مَا كَانُوا ۖ ثُمَّ يُنَبِّئُهُمْ بِمَا عَمِلُوا يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۚ إِنَّ اللَّهَ
بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿٧﴾

तर्जुमा : ''बेशक जो लोग अल्लाह से और उसके रसूल से मुख़ालिफ़त करते हैं वो ज़लील किये जायेंगे जैसे इनसे पहले के लोग ज़लील किये गये थे और बेशक हम वाज़ेह आयतें उतार चुके हैं, मुन्किरों के लिये तो ज़िल्लत की मार है ही। (5) जिस दिन अल्लाह तआला उन सबको उठायेगा फिर उन्हें उनके किये हुए अमल से आगाह करेगा, जिसे अल्लाह ने याद रखा और जिसे ये भूल गये थे और अल्लाह तआला हर चीज़ से वाक़िफ़ है। (6) क्या तूने नहीं देखा कि अल्लाह आसमानों की और ज़मीन की हर चीज़ से वाक़िफ़ है। तीन आदमियों का मशवरा नहीं होता मगर अल्लाह तआला उनका चौथा होता है और न पाँच का मगर उनका छठा वो होता है और न इससे कम और न ज़्यादा का, मगर वो साथ ही होता है जहाँ भी वो हों, फिर क़यामत के दिन उन्हें उनके आमाल से आगाह करेगा, बेशक अल्लाह तआला हर चीज़ से वाक़िफ़ है।' (7)

अल्लाह और रसूल (ﷺ) की मुख़ालिफ़त से बचने का हुक्म : (आयत : 5-7) : फ़रमान है कि अल्लाह की और उसके रसूल की मुख़ालिफ़त करने वाले और अहकामे शरअ से सरताबी करने वाले ज़िल्लते अदबार नहूसत और फटकार के लायक़ हैं। जिस तरह इनसे अगले इन ही आमाल के बाइस बर्बाद और रुस्वा कर दिये गये, उसी तरह ये भी इस सरकशी के बाइस तबाह और रुस्वा किये जायेंगे। हमने इस तरह वाज़ेह, इस क़द्र ज़ाहिर, इतनी साफ़ और ऐसी खुली हुई आयतें बयान कर दी हैं और निशानियाँ ज़ाहिर कर दी हैं कि सिवाय उसके जिसके दिल में सरकशी हो, कोई उनसे इंकार नहीं कर सकता और जो उनका इंकार करे वो काफ़िर है। और ऐसे कुफ़्फ़ार के लिये यहाँ की ज़िल्लत के बाद वहाँ के भी अहानत वाले अज़ाब हैं। यहाँ उनके तकब्बुर ने अल्लाह की तरफ़ झुकने से रोका, वहाँ उसके बदले उन्हें बेइन्तिहा ज़लील किया जायेगा, ख़ूब रौन्दा जायेगा। क़यामत के दिन अल्लाह तआला तमाम अगलों-पिछलों को एक ही मैदान में जमा करेगा और

जो भलाई-बुराई जिस किसी ने की थी उससे आगाह करेगा। गो ये भूल गये थे लेकिन अल्लाह तआला ने तो उसे याद रखा था, उसके फ़रिश्तों ने उसे लिख रखा था, न तो अल्लाह पर कोई चीज़ छिप सके न अल्लाह तआला किसी चीज़ को भूले। फिर बयान फ़रमाता है कि तुम जहाँ हो जिस हालत में हो, न तुम्हारी बातें अल्लाह के सुनने से रह सकीं, न तुम्हारी हालतें अल्लाह के देखने से पौशीदा रहीं। उसके इल्म ने सारी दुनिया का एहाता कर रखा है उसे हर ज़मान व मकान की इत्तिलाअ हर वक़्त है। वो ज़मीन व आसमान की तमामतर कायनात से बाइल्म है।

तीन शख़्स आपस में मिलकर निहायत पौशीदगी से राज़दारी से अपनी बातें ज़ाहिर करें उन्हें वो सुनता है और वो अपने आपको तीन ही न समझें बल्कि अपना चौथा अल्लाह को गिनें और जो पाँच शख़्स तन्हाई में राज़दारियाँ कर रहे हों वो भी यक़ीन रखें कि वो जहाँ कहीं भी हैं, उनके साथ उनका अल्लाह है। यानी उनके हाल व क़ाल से मुत्तलअ (ख़बरदार) है उनके कलाम को सुन रहा है और उनकी हालतों को देख रहा है। फिर साथ ही साथ उसके फ़रिश्ते भी लिखते जा रहे हैं जैसे और जगह है, (اَلَمْ يَعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ سِرَّهُمْ وَنَجْوٰىهُمْ وَ اَنَّ اللّٰهَ عَلَّامُ الْغُيُوْبِ ۝) (सूरह तौबा : 78) 'क्या लोग नहीं जानते कि अल्लाह तआला उनकी पौशीदगियों को और उनकी सरगोशियों को बख़ूबी जानता है और अल्लाह तआला तमाम ग़ैबों पर इत्तिलाअ रखने वाला है।' और जगह इरशाद है, (اَمْ يَحْسَبُوْنَ اَنَّا لَا نَسْمَعُ سِرَّهُمْ وَنَجْوٰىهُمْ ۭ بَلٰى وَرُسُلُنَا لَدَيْهِمْ يَكْتُبُوْنَ ۝) (सूरह ज़ुख़रुफ़ : 80) 'क्या उनका ये गुमान है कि हम उनकी पौशीदा बातों और ख़ुफ़िया मशवरों को सुन नहीं रहे? बराबर सुन रहे हैं और हमारे भेजे हुए उनके पास मौजूद हैं जो लिखते जा रहे हैं।' अक्सर बुज़ुर्गों ने इस बात पर इज्माअ नक़ल किया है कि इस आयत से मुराद मइयते इल्मी है (यानी अल्लाह तआला का वजूद नहीं बल्कि अल्लाह तआला का इल्म हर जगह है हर तीन के मज्मए में चौथा उसका इल्म है, तबारक व तआला) बेशक व शुब्हा इस बात पर ईमाने कामिल और यक़ीने रासिख़ रखना चाहिये कि यहाँ मुराद ज़ात से साथ होना नहीं बल्कि इल्म से हर जगह मौजूद होना है। हाँ बेशक उसका सुनना-देखना भी उसी तरह उसके इल्म के साथ-साथ है। अल्लाह सुब्हानहू व तआला अपनी तमाम मख़्लूक़ पर मुत्तलअ है। उनका कोई काम उससे पौशीदा नहीं। फिर क़यामत के दिन उन्हें उनके तमाम आमाल पर तम्बीह करेगा, अल्लाह तआला हर चीज़ को जानने वाला है।

हज़रत इमाम अहमद बिन हम्बल (रह.) फ़रमाते हैं कि इस आयत को शुरू भी अपने इल्म के बयान से किया था और ख़त्म भी इल्म के बयान पर किया।' (मतलब ये है कि दरम्यान में अल्लाह का साथ होना जो बयान किया था उसे भी अज़रूए इल्म के साथ होना है न कि अज़रूए ज़ात के- मुतर्जिम)

***

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ نُهُوْا عَنِ النَّجْوٰى ثُمَّ يَعُوْدُوْنَ لِمَا نُهُوْا عَنْهُ وَيَتَنٰجَوْنَ
بِالْاِثْمِ وَالْعُدْوَانِ وَمَعْصِيَتِ الرَّسُوْلِ وَاِذَا جَآءُوْكَ حَيَّوْكَ بِمَا لَمْ يُحَيِّكَ بِهِ
اللّٰهُ وَيَقُوْلُوْنَ فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ لَوْلَا يُعَذِّبُنَا اللّٰهُ بِمَا نَقُوْلُ حَسْبُهُمْ جَهَنَّمُ
يَصْلَوْنَهَا فَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ⑧ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا تَنَاجَيْتُمْ فَلَا تَتَنَاجَوْا
بِالْاِثْمِ وَالْعُدْوَانِ وَمَعْصِيَتِ الرَّسُوْلِ وَتَنَاجَوْا بِالْبِرِّ وَالتَّقْوٰى وَاتَّقُوا اللّٰهَ
الَّذِيْٓ اِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ⑨ اِنَّمَا النَّجْوٰى مِنَ الشَّيْطٰنِ لِيَحْزُنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا
وَلَيْسَ بِضَآرِّهِمْ شَيْـًٔا اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ⑩

तर्जुमा : ''क्या तूने उन लोगों को नहीं देखा? जिन्हें काना-फूसी से रोक दिया गया था वो फिर भी उस रोके हुए काम को दोबारा करते हैं और आपस में गुनहगारी की और ज़ुल्म व ज़्यादती और नाफरमानी पैग़म्बर की सरगोशियाँ करते हैं और जब तेरे पास आते हैं तो तुझे उन लफ़्ज़ों में सलाम करते हैं जिन लफ़्ज़ों में अल्लाह तआला ने नहीं कहा और अपने दिल में कहते हैं कि अल्लाह तआला हमें हमारे इस किये पर सज़ा क्यों नहीं देता, उनके लिये जहन्नम काफ़ी सज़ा है जिसमें ये जायेंगे, सो वो बुरा ठिकाना है।' (8) ऐ ईमान वालो! तुम चुप-चुपाते बातें करो तो ये सरगोशियाँ गुनाहगारी और ज़ुल्म व ज़्यादती और नाफ़रमानी-ए-पैग़म्बर की न हों, बल्कि नफ़ा रसानी और परहेज़गारी की बातों पर आपस में तबादला-ए-ख़्यालात करो और अल्लाह से डरते रहो जिसके पास तुम सब जमा किये जाओगे? (9) बुरी सरगोशियाँ शैतानी काम है जिससे ईमानदारों को रंज पहुँचे। गो अल्लाह तआला की चाहत बग़ैर वो उन्हें कोई नुक़सान नहीं पहुँचा सकता। ईमान वालों को चाहिये कि अल्लाह ही पर भरोसा रखें।''

सरगोशी के अहकाम (आयत 8-10) : काना-फूसी से यहूदियों को रोक दिया गया था इसलिये कि उनमें और आँहज़रत (ﷺ) में जब सुलह व सफ़ाई थी तो ये लोग ये हरकत करने लगे कि जहाँ कहीं किसी मुसलमान को देखा और जहाँ कोई उनके पास गया कि ये इधर-उधर जमा हो-होकर चुपके-चुपके इशारों-किनायों में इस

तरह काना-फूसी करने लगते कि अकेला-दुकेला मुसलमान ये गुमान करता कि शायद ये मेरे क़त्ल की साज़िशें कर रहे या मेरे ख़िलाफ़ और ईमानदारों के ख़िलाफ़ कुछ मख़्फ़ी तरकीबें सोच रहे हैं, उसे उनकी तरफ़ जाते हुए भी डर लगता। जब ये शिकायतें आम हुईं तो हुज़ूर (ﷺ) ने यहूदियों को इस सुफ़ली (घटिया) हरकत से रोक दिया। लेकिन उन्होंने फिर भी यही करना शुरू किया। इब्ने अबी हातिम की एक हदीस़ में है कि 'हम लोग बारी-बारी रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में रात को हाज़िर होते कि अगर कोई काम-काज हो तो करें। एक रात को बारी वाले भी आ गये और कुछ दूसरे लोग भी बनिय्यते स़वाब आ गये। चूंकि लोग ज़्यादा जमा हो गये तो हम टोलियाँ-टोलियाँ बन कर इधर-उधर बैठ गये और हर जमाअ़त अपने वालों से बातें करने लगी। इतने में आँहज़रत (ﷺ) तशरीफ़ लाये और फ़रमाया, 'ये क्या सरगोशियाँ हो रही हैं? क्या तुम्हें इससे रोका नहीं गया?' हमने कहा, हुज़ूर हमारी तौबा है। हम मसीह दज्जाल का ज़िक्र कर रहे थे क्योंकि उससे खटका लगा रहता है। आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'मैं तुम्हें इससे भी ज़्यादा ख़ौफ़ की चीज़ बतलाऊँ, वो पौशीदा शिर्क है। इस तरह कि एक शख़्स उठ खड़ा हो और दूसरों को दिखाने के लिये कोई दीनी काम करे (यानी रियाकारी)।' इसकी इस्नाद ग़रीब है और इसमें कुछ रावी ज़ईफ़ हैं।

फिर बयान होता है कि उनकी ख़ानगी सरगोशियाँ या तो गुनाह के कामों पर होती हैं जिसमें उनका ज़ाती नुक़सान है या ज़ुल्म पर होती हैं जिसमें दूसरों के नुक़सान की तरकीबें सोचते हैं। या पैग़म्बर (ﷺ) की मुख़ालिफ़त पर एक-दूसरों को पुख़्ता करते हैं और आप (ﷺ) की नाफ़रमानियों के मन्सूबे गांठते हैं। फिर उन बदकारों की एक बदतरीन ख़स्लत बयान हो रही है कि सलाम के अल्फ़ाज़ को भी ये बदल देते हैं। हज़रत आइशा (रज़ि.) फ़रमाती हैं कि एक मर्तबा यहूदी हुज़ूर (ﷺ) के पास आये और कहा, अस्सामु अ़लैक या अबल क़ासिम (साम के मआ़ना मौत के हैं) मैंने कहा, व अ़लैकुमुस्साम। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़रमाया, 'ऐ आइशा! अल्लाह तआ़ला बुरे अल्फ़ाज़ और सख़्त कलामी को नापसंद फ़रमाता है।' मैंने कहा, क्या हुज़ूर ने नहीं सुना? इन्होंने आप (ﷺ) को अस्सलामु नहीं कहा बल्कि अस्सामु कहा है। आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'क्या तुमने नहीं सुना? मैंने कह दिया, व अ़लैकुम।' (अत्तबरी : 23/236, अहमद : 6/229, ये हदीस़ सहीह है। ये रिवायत इख़्तिलाफ़ के साथ सहीह मुस्लिम किताबुस्सलाम, बाब अन्नह्यु अ़न इब्तिदाइ अहलिल किताब बिस्सलाम : 2165 में भी मौजूद है।) इसी का बयान हो रहा है। दूसरी रिवायत में है कि हज़रत आइशा (रज़ि.) ने उनके जवाब में फ़रमाया था, अ़लैकुमुस्सामु वद्दामु वल्लअ़नतु और आप (ﷺ) ने आइशा (रज़ि.) को रोकते हुए फ़रमाया कि 'हमारी दुआ उनके हक़ में मक़्बूल है और उनका हमीं को सुनाना मक़्बूल है।'
(सहीह बुख़ारी, किताबुद्दअ़वात, बाब क़ौलुन्नबी (ﷺ) युस्तजाबु लना फ़िल यहूद : 6401, सहीह मुस्लिम: 2165-66)

एक मर्तबा हुज़ूर (ﷺ) अपने अस्हाब के मज्मअ़े में तशरीफ़ फ़रमा थे कि एक यहूदी ने आकर सलाम किया, सहाबा (रज़ि.) ने जवाब दिया। फिर हज़रत (ﷺ) ने सहाबा (रज़ि.) से पूछा, मालूम भी है इसने क्या कहा था? उन्होंने कहा, हज़रत सलाम किया था। आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'नहीं! इसने कहा था, सामुन् अ़लैकुम यानी तुम्हारा दीन मग़लूब हो, मिट जाये।' फिर आप (ﷺ) ने हुक्म दिया कि इस यहूदी को बुला

लाओ। जब वो आ गया तो आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'सच-सच बता क्या तूने सामुन् अलैकुम नहीं कहा था? उसने कहा, हाँ! हुज़ूर मैंने यही कहा था। आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'सुनो जब कभी कोई अहले किताब तुममें से किसी को सलाम करे तो सिर्फ़ अलैक कह दिया करो। यानी जो तूने कहा हो वो तुझ पर।' (अत्तबरी : 23/240, इब्ने माजह, किताबुल अदब, बाब रद्दुस्सलाम अला अहलिज़्ज़िम्मह : 3697, मुख़्तसरन व सनद सहीह, इसकी असल बुख़ारी : 6926, सहीह मुस्लिम : 2163 में मौजूद है।)

फिर ये लोग अपने इस करतूत पर ख़ुश होकर अपने दिल में कहते कि अगर ये नबी बरहक़ होता तो अल्लाह तआला हमारी इस चालबाज़ी पर हमें दुनिया में ज़रूर अज़ाब करता। इसलिये कि अल्लाह तआला तो हमारे बातिनी हाल से बख़ूबी वाक़िफ़ है। पस अल्लाह तआला फ़रमाता है, उन्हें दारे आख़िरत का अज़ाब ही बस है जहाँ ये जहन्नम में जायेंगे और बुरी जगह पहुँचेंगे।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र (रज़ि.) से मरवी है कि इस आयत का शाने नुज़ूल यहूदियों का इस तरीक़े से सलाम है। (हसन : अहमद : 2/170, इमाम हैसमी कहते हैं इसकी सनद जय्यिद लिअन्ना हम्माद (बिन सलमा) समिअ मिन अता बिन साइब फ़ी हालतिस्सिहहति, मज्मउज़्ज़वाइद : 7/124)

हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) से मन्क़ूल है कि मुनाफ़िक़ इसी तरह सलाम करते थे। फिर अल्लाह तआला मोमिनों को अदब सिखाता है कि तुम उन मुनाफ़िक़ों और यहूदियों के से काम न करना। तुम गुनाह के कामों और हद से गुज़र जाने और नबी को न मानने के मशवरे न करना बल्कि तुम्हें उनके बरख़िलाफ़ नेकी के और अपने बचाव के मशवरे करने चाहियें। तुम्हें हर वक़्त उस अल्लाह से डरते रहना चाहिये जिसकी तरफ़ तुम्हें जमा होना है, जो उस वक़्त तुम्हें हर नेकी-बदी की जज़ा-सज़ा देगा और तमाम आमाल व अक़्वाल से मुतनब्बह करेगा गो तुम भूल गये हो, लेकिन उसके पास सब महफ़ूज़ और मौजूद हैं। हज़रत सफ़वान (रह.) फ़रमाते हैं, 'मैं हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) का हाथ थामे हुआ था कि एक शख़्स आया और उसने कहा, आपने रसूलुल्लाह (ﷺ) से मोमिन की जो सरगोशी क़यामत के दिन अल्लाह तआला से होगी उसके बारे में क्या सुना है? आप (रज़ि.) ने फ़रमाया, रिसालत मआब (ﷺ) से मैंने सुना है कि अल्लाह तआला मोमिन को अपने क़रीब बुलायेगा और इस क़द्र क़रीब कि अपना बाज़ू उस पर रख देगा और लोगों से उसे पर्दे में कर लेगा और उससे उसके गुनाहों का इक़रार करायेगा और पूछेगा याद है? फ़लाँ गुनाह तुमने किया था, फ़लाँ किया था? ये इक़रार करता जायेगा और दिल धड़क रहा होगा कि अब हलाक हुआ। इतने में अल्लाह तआला फ़रमायेगा, देख दुनिया में मैंने तेरी परवरिश की और आज भी मैंने बख़्शिश की। फिर उसे उसकी नेकियों का नामा-ए-आमाल दिया जायेगा। लेकिन काफ़िर व मुनाफ़िक़ के बारे में तो गवाह पुकार कर कह देंगे कि ये अल्लाह तआला पर झूठ बोलने वाले लोग हैं, ख़बरदार हो जाओ! इन ज़ालिमों पर अल्लाह तआला की लानत है।' (सहीह बुख़ारी, किताबुल मज़ालिम, बाब क़ौलुल्लाहि तआला अला लअ्नतुल्लाहि अलज़्ज़ालिमीन : 2441, सहीह मुस्लिम : 2728, इब्ने हिब्बान : 7356, अहमद : 2/74)

फिर फ़रमान है कि इस क़िस्म की सरगोशी जिससे मुसलमान को तकलीफ़ पहुँचे और उसे बदगुमानी हो शैतान की तरफ़ से है। शैतान उन मुनाफ़िक़ों वग़ैरह से ये काम इसलिये करवाता है कि मोमिनों को ग़म व रंज हो लेकिन हक़ीक़त ये है कि अल्लाह तआला की इजाज़त के बग़ैर न शैतान न कोई दूसरा उन्हें नुक़सान पहुँचा सकते। जिसे कोई ऐसी हरकत मालूम हो उसे चाहिये कि (अऊज़ुबिल्लाह) पढ़े अल्लाह तआला की पनाह ले और अल्लाह पर भरोसा रखे, इन्शाअल्लाह उसे कोई नुक़सान न पहुँचेगा। ऐसी काना-फ़ूसी जो किसी मुसलमान को नागवार गुज़रे हदीस में भी मना है। मुस्नद अहमद में है कि आँहज़रत (ﷺ) ने फ़रमाया, 'जब तुम तीन आदमी हो तो दो मिलकर कान में मुँह डालकर बातें करने न बैठ जाओ। इससे उस तीसरे का दिल मेला होगा।' (सहीह बुख़ारी, किताबुल इस्तिअज़ान, बाब इज़ा कानू अक्सरु मिन सलासति फ़ला बअ्स : 6290, सहीह मुस्लिम : 2184, अबू दाऊद : 4851, तिर्मिज़ी : 2825, इब्ने माजह : 3775, अहमद : 1/375, इब्ने हिब्बान : 583) और रिवायत में है, 'हाँ अगर उसकी इजाज़त हो तो कोई हर्ज नहीं।' (सहीह मुस्लिम, किताबुस्सलाम, बाब तहरीमु मुनाजातिल इस्नैन दूनस्सालिस : 2183, अहमद : 2/146)

***

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوٓاْ إِذَا قِيلَ لَكُمۡ تَفَسَّحُواْ فِي ٱلۡمَجَٰلِسِ فَٱفۡسَحُواْ يَفۡسَحِ ٱللَّهُ
لَكُمۡۖ وَإِذَا قِيلَ ٱنشُزُواْ فَٱنشُزُواْ يَرۡفَعِ ٱللَّهُ ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ مِنكُمۡ وَٱلَّذِينَ
أُوتُواْ ٱلۡعِلۡمَ دَرَجَٰتٖۚ وَٱللَّهُ بِمَا تَعۡمَلُونَ خَبِيرٞ ⑪

तर्जुमा : ''ऐ मुसलमानो! जब तुमसे कहा जाये कि मज्लिसों में ज़रा खुलकर बैठो तो तुम जगह कुशादा कर दो अल्लाह तुम्हें कुशादगी देगा और जब कहा जाये कि उठ खड़े हो जाओ तो तुम उठ खड़े हो जाओ अल्लाह तआला तुममें से उन लोगों को जो ईमान लाये हैं और जो इल्म दिये गये हैं दर्जे बुलंद कर देगा, अल्लाह तआला हर उस काम से जो तुम कर रहे हो ख़ूब ख़बरदार है।''

आदाबे मज्लिस की तफ़्सील (आयत :11) : यहाँ ईमान वालों को अल्लाह तआला मज्लिसी आदाब सिखाता है। उन्हें हुक्म देता है कि नशिस्त व बरख़ास्त में भी एक-दूसरे का ख़्याल व लिहाज़ रखो। तो फ़रमाता है कि जब मज्लिस में हो और कोई आये तो ज़रा इधर-उधर हट हटाकर उसे भी जगह दो, मज्लिस में कुशादगी करो। उसके बदले अल्लाह तआला तुम्हें कुशादगी देगा। इसलिये कि हर अमल का बदला उसी जैस होता है। चुनाँचे एक हदीस में है, 'जो शख़्स अल्लाह तआला के लिये मस्जिद बना दे अल्लाह तआला उसके लिये घर बना देगा।' (सहीह बुख़ारी, किताबुस्सलात, बाब मम्बना मस्जिदा : 450, सहीह मुस्लिम : 533)

और हदीस में है कि जो किसी सख़्ती वाले पर आसानी करे अल्लाह तआला उस पर दुनिया व आख़िरत में आसानी करेगा। 'जो शख़्स अपने किसी मुसलमान भाई की मदद में लगा रहे अल्लाह तआला ख़ुद अपने उस बन्दे की मदद पर रहता है।' (सहीह मुस्लिम, किताबुज़्ज़िक्र वद्दुआ, बाब फ़ज़्लुल इज्तिमाइ अला तिलावतिल क़ुरआन : 2699)

और भी इसी तरह की बहुत सी हदीसें हैं। हज़रत क़तादा फ़रमाते हैं, ये आयत मज्लिसे ज़िक्र के बारे में उतरी हैं जैसे वअज़ हो रहा है। हुज़ूर (ﷺ) कुछ नसीहत की बातें फ़रमा रहे हैं, लोग बैठे सुन रहे हैं अब जो दूसरा कोई आया तो कोई अपनी जगह से नहीं सिरकता ताकि उसे भी जगह मिल जाये। तो क़ुरआन करीम ने हुक्म दिया कि ऐसा न करो, इधर-उधर खुल जाया करो ताकि उस आने वाले की जगह हो जाये। (अत्तबरी:23/244)

हज़रत मुक़ातिल (रह.) फ़रमाते हैं, जुम्आ के दिन ये आयत उतरी। रसूलुल्लाह (ﷺ) उस दिन सुफ़्फ़ह में थे यानी मस्जिद के एक छप्पर तले, जगह तंग थी और आपकी आदत मुबारक थी कि जो मुहाजिर और अन्सार बद्र की लड़ाई में आपके साथ थे आप (ﷺ) उनकी बड़ी इज़्ज़त और तकरीम किया करते थे। उस दिन इत्तिफ़ाक़ से चंद बद्री सहाबा ज़रा देर से आये तो आँहज़रत (ﷺ) के आस-पास खड़े हो गये, आपसे सलाम अलैक हुई। आप (ﷺ) ने जवाब दिया। फिर और अहले मज्लिस को सलाम किया, उन्होंने भी जवाब दिया। अब ये इसी उम्मीद पर खड़े रहे कि मज्लिस में ज़रा कुशादगी देखें तो बैठ जायें लेकिन कोई शख़्स अपनी जगह से न हिला जो उन के लिये जगह होती। आँहज़रत (ﷺ) ने जब ये दखा तो रहा न गया, नाम ले-लेकर कुछ लोगों को उनकी जगह से खड़ा किया और उन बद्री सहाबियों को बैठने को फ़रमाया। जो लोग खड़े कराये गये थे उन्हें ज़रा भारी पड़ा, इधर मुनाफ़िक़ीन के हाथ में एक मशग़ला लग गया। कहने लगे, लीजिये ये अद्ल करने के मुद्दई नबी हैं कि जो लोग शौक़ से आये, पहले आये, अपने नबी के क़रीब जगह ली, इत्मीनान से अपनी-अपनी जगह बैठ गये उन्हें तो उनकी जगह से खड़ा कर दिया और देर से आने वालों को उनकी जगह दिलवा दी, किस क़द्र नाइंसाफ़ी है। इधर हुज़ूर (ﷺ) ने इसलिये कि उनके दिल मेले न हों, दुआ की कि अल्लाह उस पर रहम करे जो अपने मुसलमान भाई के लिये मज्लिस में जगह कर दे। इस हदीस को सुनते ही सहाबा (रज़ि.) ने फ़ौरन ख़ुद-बख़ुद अपनी जगह से हटना शुरू कर दी और जुम्आ ही के दिन ये आयत उतरी। (ये रिवायत मुअज़ल यानी ज़ईफ़ है।)

बुख़ारी, मुस्लिम, मुस्नद अहमद वग़ैरह में हदीस है, 'कोई शख़्स किसी दूसरे शख़्स को उस की जगह से हटाकर आप न बैठे बल्कि तुम्हें चाहिये कि इधर-उधर सिरक कर उसके लिये जगह बना दो।' (सहीह बुख़ारी, किताबुल इस्तिअज़ान, बाब ला युक़ीमुर्रजुल मिम्मजलिसिही : 6269-6270, सहीह मुस्लिम : 2177, अहमद : 2/17, मुसन्नफ़ अब्दुर्रज़्ज़ाक़ : 19707, इब्ने अबी शैबा : 8/584, इब्ने हिब्बान : 586)

मुस्नद शाफ़ई में है, 'तुममें से कोई शख़्स अपने भाई को जुम्आ के दिन उसकी जगह से हर्गिज़ न उठाये बल्कि कह दे कि गुंजाइश करो।' (इसकी सनद मुन्क़तअ है जबकि हज़रत जाबिर रज़ि. से इन अल्फ़ाज़

में सहीह मुस्लिम, किताबुस्सलाम, बाब तहरीमु इक़ामतिल इन्सान मिम्मौज़िइहिल मुबाहल्लज़ी सबक़ इलैहि : 2178 में मौजूद है। लिहाज़ा ये रिवायत सहीह है।)

इस मसले में उलमा का इख़्तिलाफ़ है कि किसी आने वाले के लिये खड़ा होना जाइज़ है या नहीं? कुछ लोग तो इजाज़त देते हैं और ये हदीस पेश करते हैं, हुज़ूर (ﷺ) ने फ़रमाया, 'अपने सरदार की तरफ़ खड़े हो जाओ।' (सहीह बुख़ारी, किताबुल इस्तिअज़ान, बाब क़ौलुन्नबी क़ूमू इला सय्यिदिकुम : 6262, सहीह मुस्लिम : 1768)

कि 'जो शख़्स ये चाहे कि लोग उसके लिये सीधे खड़े हो जाया करें वो जहन्नम में अपनी जगह बना ले।' (अबू दाऊद, किताबुल अदब, बाब अर्रजुलु यक़ूमु लिर्रजुलि युअज़्ज़िमुहू बिज़ालिक : 5229, वहुव हसन, तिर्मिज़ी : 2755)

कुछ बुज़ुर्ग तफ़्सील करते हैं और फ़रमाते हैं कि सफ़र से अगर कोई आया हो तो और हाकिम के लिये उसकी हुकूमत की जगह खड़े हो जाना दुरुस्त है। क्योंकि हुज़ूर (ﷺ) ने जिनके लिये खड़ा होने को फ़रमाया था ये हज़रत सअद बिन मुआज़ (रज़ि.) थे। बनू कुरैज़ा के आप हाकिम बनाये गये थे जब उन्हें आता हुआ देखा तो हुज़ूर (ﷺ) ने फ़रमाया था, 'अपने सरदार के लिये खड़े हो जाओ।' और ये बतौरे तअज़ीम के न था बल्कि सिर्फ़ इसलिये था कि उनके अहकाम को बख़ूबी जारी कराया जाये। वल्लाहु आलम! हाँ इसे आदत बना लेना कि मज्लिस में जहाँ कोई बड़ा आदमी आया और लोग खड़े हो गये ये अज्मियों का तरीक़ा है। सुनन की हदीस में है कि सहाबा किराम (रज़ि.) के नज़दीक रसूलुल्लाह (ﷺ) से ज़्यादा महबूब और बाइज़्ज़त कोई न था लेकिन ताहम आप (ﷺ) को देखकर वो खड़े नहीं हुआ करते थे। जानते थे कि आप (ﷺ) इसे मक्रूह समझते हैं। (सहीह : तिर्मिज़ी, किताबुल अदब, बाब मा जाअ फी कराहियति क़ियामिर्रजुलि लिर्रजुल : 2754, अल्अदबुल मुफ़रद : 946)

सुनन की और हदीस में है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) आते ही मज्लिस के ख़ात्मे पर बैठ जाया करते थे और जहाँ आप (ﷺ) तशरीफ़ फ़रमा हो जाते वही जगह सदारत की जगह हो जाती और सहाबा किराम अपने-अपने मरातिब के मुताबिक़ मज्लिस में बैठ जाते। (अबू दाऊद, किताबुल अदब, बाब फ़िर्रजुलि यक़ूमु लिर्रजुलि मिम्मजलिस : 4825, तिर्मिज़ी, किताबुल इस्तिअज़ान, बाब फ़िस्सलासतिल्लज़ीन अक़बलू फ़ी मजलिस : 2725, इसकी सनद ज़ईफ़ है। शरीक क़ाज़ी मुदल्लस के सिमाअ की सराहत नहीं है। अल्अदबुल मुफ़रद : 1141, मुख़्तसरन)

हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ (रज़ि.) आपके दायें, जनाब उमर फ़ारूक़ (रज़ि.) आपके बायें और उमूमन हज़रत उसमान, अली (रज़ि.) आपके सामने बैठते थे क्योंकि ये दोनों बुज़ुर्ग कातिबे वह्य थे। आप (ﷺ) इनसे फ़रमाते और ये वह्य लिख लिया करते थे। सहीह मुस्लिम में है कि हुज़ूर (ﷺ) का फ़रमान था कि, 'मुझसे क़रीब होकर अक़्लमन्द साहिबे फ़रासत लोग बैठें फिर दर्जा-बदर्जा।' (सहीह मुस्लिम, किताबुस्सलात, बाब तस्वियतुस्सुफ़ूफ़ व इक़ामतिहा : 432)

और ये इन्तिज़ाम इसलिये था कि हुज़ूर (ﷺ) के मुबारक इरशादात ये हज़रात सुनें और बख़ूबी समझें, यही वजह थी कि सुफ़्फ़ह वाली मज्लिस में जिसका ज़िक्र अभी-अभी गुज़रा है आप (ﷺ) ने और लोगों को

उनकी जगह से हटाकर वो जगह बद्री अस्हाब को दिलवाई तो उसके साथ और वजहें भी थीं, जैसे उन लोगों को ख़ुद चाहिये था कि उन बुज़ुर्ग सहाबा का ख़्याल करते और लिहाज़ व मुरव्वत बरत कर ख़ुद हटकर उन्हें जगह देते। जब उन्होंने अज़ ख़ुद ऐसा नहीं किया तो फिर हुक्मन उनसे ऐसा कराया गया। इसी तरह पहले के लोग हुज़ूर (ﷺ) के कलिमात पूरी तरह सुन चुके थे, अब ये हज़रात आये थे तो आप (ﷺ) ने चाहा कि ये भी बआराम बैठ कर मेरी हदीसें सुन लें और तालीमे इलाही हासिल कर लें, इसी तरह उम्मत को इस बात की तालीम भी देनी थी कि वो अपने बड़ों और बुज़ुर्गों को इमाम के पास बैठने दें और उन्हें अपने से मुक़द्दम रखें।

मुस्नद अहमद में है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) नमाज़ की सफ़ों की दुरुस्ती के वक़्त हमारे मूण्ढे ख़ुद पकड़कर ठीक-ठाक करते और ज़बानी भी फ़रमाते जाते, 'सीधे रहो, टेढ़े-तिरछे न खड़ा हुआ करो, दानाई और अक़्लमन्दी वाले मुझसे क़रीब रहें फिर दर्जा-बदर्जा।' (सहीह मुस्लिम, हवाला साबिक़ : 432, अबू दाऊद, किताबुस्सलात, बाब मंय्यस्तहिब्ब अंय्युलियल इमाम : 674, इब्ने माजह : 976, मुसन्नफ़ अब्दुर्रज़्ज़ाक़ : 2430, इब्ने हिब्बान : 2178, अहमद : 4/122)

हज़रत इब्ने मसऊद (रज़ि.) इस हदीस को बयान फ़रमा कर फ़रमाते हैं, बावजूद इस हुक्म के अफ़सोस कि तुम अब बड़ी टेढ़ी सफ़ें करते हो। मुस्लिम, अबू दाऊद, नसाई और इब्ने माजह में भी ये हदीस है। ज़ाहिर है कि जब आप (ﷺ) का ये हुक्म नमाज़ के लिये था तो नमाज़ के सिवा और वक़्तों में तो बतौरे औला यही हुक्म रहेगा। अबू दाऊद में है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'सफ़ों को दुरुस्त करो, मूण्ढे मिलाये रखो, सफ़ों के दरम्यान ख़ाली जगह न छोड़ो, अपने भाइयों के पास सफ़ में नर्म बन जाया करो, सफ़ में शैतान के लिये सूराख़ न छोड़ो, सफ़ मिलाने वाले को अल्लाह तआला मिलाता है और सफ़ तोड़ने वाले को अल्लाह तआला काट देता है।' (हसन:अबू दाऊद, किताबुस्सलात, बाब तस्वियतुस्सुफ़ूफ़: 666, इसकी सनद हसन है। नसाई: 820)

इसीलिये सय्यिदुल क़ुर्रा उबय बिन कअब (रज़ि.) जब पहुँचते तो सफ़े अव्वल में से किसी ज़ईफ़ुल अक़्ल शख़्स को पीछे हटा देते और ख़ुद पहली सफ़ में मिल जाते और इसी हदीस को दलील में लाते कि हुज़ूर (ﷺ) ने फ़रमाया, 'मुझसे क़रीब ज़ी राय और आला अक़्लमन्द खड़े हों, फिर दर्जा-बदर्जा।' (सहीह : अहमद : 5/140, नसाई, किताबुल इमामत, बाब मंय्यलिल इमाम सुम्मल्लज़ी यलीहि : 809 इसकी सनद सहीह है।)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) को देखकर अगर कोई शख़्स खड़ा हो जाता तो आप उसकी जगह पर न बैठते। (सहीह बुख़ारी, किताबुल इस्तिअज़ान, बाब इज़ा क़ील लकुम् तफ़स्सहू फ़िल्मजालिसि फ़फ़्सहू : 6270, सहीह मुस्लिम : 2177)

और इस हदीस को पेश करते जो ऊपर गुज़री कि किसी को उठाकर उसकी जगह में कोई और न बैठे। यहाँ बतौरे नमूने के ये चंद और थोड़ी हदीसें लिखकर हम आगे चलते हैं। बस्त (विस्तार) व तफ़्सील की यहाँ गुंजाइश नहीं, न ये मौक़ा है। एक सहीह हदीस में है कि एक मर्तबा हुज़ूर (ﷺ) बैठे हुए थे कि तीन शख़्स आये। एक तो मज्लिस के दरम्यान जगह ख़ाली देखकर वहाँ आकर बैठ गया। दूसरे ने मज्लिस के आख़िर में जगह

बना ली, तीसरा वापस चला गया। हुज़ूर (ﷺ) ने फ़रमाया, 'लोगो! मैं तुम्हें तीन शख़्सों की बाबत ख़बर दूँ, एक ने तो अल्लाह तआला की तरफ़ जगह ली और अल्लाह तआला ने उसे जगह दी, दूसरे ने शर्म की अल्लाह ने भी उससे हया की, तीसरे ने मुँह फेर लिया तो अल्लाह तआला ने भी उससे मुँह फेर लिया।' (सहीह बुख़ारी, किताबुल इल्म, बाब मन क़अद हैसु यन्तही बिहिल मज्लिस : 66, सहीह मुस्लिम : 2176, तिर्मिज़ी : 2724, अहमद : 5/219, इब्ने हिब्बान : 86)

मुस्नद अहमद में है, 'किसी को हलाल नहीं कि दो शख़्सों के दरम्यान तफ़रीक़ करे, हाँ उनकी ख़ुशनूदी से हो तो ओर बात है।' (हसन : अबू दाऊद, किताबुल अदब, बाब फ़िर्रजुलि यज्लिसु बैनर्रजुलैनि बिग़ैरि इज़्निहिमा : 4845, तिर्मिज़ी : 2752, अहमद : 2/213, इमाम तिर्मिज़ी ने इसे हसन कहा है।)

हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) हसन बसरी (रह.) वग़ैरह फ़रमाते हैं, मज्लिसों की कुशादगी का हुक्म जिहाद के बारे में है। (अत्तबरी : 23/244)

इसी तरह उठ खड़े होने का हुक्म भी जिहाद के बारे में है।

हज़रत क़तादा (रह.) फ़रमाते हैं, यानी जब तुम्हें भलाई और कारे ख़ैर की तरफ़ बुलाया जाये तो तुम फ़ौरन आ जाओ। (अत्तबरी : 23/245)

हज़रत मुक़ातिल (रह.) फ़रमाते हैं, मतलब ये है कि जब तुम्हें नमाज़ के लिये बुलाया जाये तो उठ खड़े हो जाया करो। हज़रत अब्दुर्रहमान बिन ज़ैद (रह.) फ़रमाते हैं कि सहाबा जब हुज़ूर (ﷺ) के यहाँ आते तो जाते वक़्त हर एक की चाहत ये होती कि सबसे आख़िर हुज़ूर (ﷺ) से जुदा मैं होऊँ। कई बार आपको कोई काम-काज होता तो बड़ा हर्ज होता, लेकिन आप मुरव्वत से कुछ न फ़रमाते। इस पर ये हुक्म हुआ कि जब तुम से खड़े होने को कहा जाये तो खड़े हो जाया करो। जैसे दूसरी जगह है, (وَإِنْ قِيلَ لَكُمُ ارْجِعُوا) (सूरह नूर : 28) 'अगर तुम से लौट जाने को कहा जाये तो लौट जाओ।'

फिर फ़रमाता है कि मज्लिसों में जब जगह देने को कहा जाये तो जगह देने में और जब चले जाने को कहा जाये तो चले जाने में अपनी हतक (बेइज़्ज़ती) न समझो। बल्कि ये अल्लाह तआला के नज़दीक मर्तबा बुलंद करना और अपनी तौक़ीर कराना है, इसे अल्लाह ज़ाया न करेगा, बल्कि इस पर दुनिया और आख़िरत में नेक बदला देगा। जो शख़्स अहकामे इलाही पर तवाज़ोअ से गर्दन झुका दे अल्लाह तआला उसकी इज़्ज़त बढ़ाता है और उसकी शोहरत नेकी के साथ करता है। ईमान वालों और सहीह इल्म वालों का यही काम होता है कि अल्लाह के अहकाम के सामने गर्दन झुका दिया करें और उससे वो बुलंद दर्जों के मुस्तहिक़ हो जाते हैं। अल्लाह तआला को बख़ूबी इल्म है कि बुलंद मर्तबों का मुस्तहिक़ कौन है और कौन नहीं।

हज़रत नाफ़ेअ बिन अब्दुल हारिस (रज़ि.) से अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूक़ (रज़ि.) की मुलाक़ात अस्फ़ान में हुई हज़रत उमर (रज़ि.) ने उन्हें मक्का का आमिल बनाया था तो उनसे पूछा कि तुम

मक्का में अपनी जगह किसे छोड़ आये हो? जवाब दिया कि इब्ने अबज़ा को। हज़रत फ़ारूक़ (रज़ि.) ने फ़रमाया, वो तो हमारे मौला हैं यानी आज़ाद करदा गुलाम, उन्हें तुम अहले मक्का का अमीर बना कर चले हो? कहा, हाँ! इसलिये कि वो अल्लाह की किताब का माहिर और फ़राइज़ का जानने वाला और अच्छा वअ़ज़ कहने वाला है। हज़रत उमर (रज़ि.) ने उस वक़्त फ़रमाया, सच फ़रमाया रसूलुल्लाह (ﷺ) ने कि अल्लाह तआ़ला इस किताब की वजह से एक क़ौम को इज़्ज़त पर पहुँचा कर बुलंद मर्तबा करेगा और दूसरों को पस्त व कम मर्तबा बना देगा।' (सहीह मुस्लिम, किताब सलातुल मुसाफ़िरीन, बाब फ़ज़्लु मंय्यक़ूम बिल्क़ुरआन व युअ़ल्लिमुहू : 817, इब्ने माजह : 218, अहमद : 1/35, इब्ने हिब्बान : 772)

इल्म और उ़लमा की फ़ज़ीलत तो इस आयत और दूसरी आयतों और हदीसों से ज़ाहिर है मैंने उन सबको बुख़ारी की किताबुल इल्म की शरह में जमा कर दिया है, वल्हम्दुलिल्लाह!

***

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِذَا نَاجَيْتُمُ الرَّسُوْلَ فَقَدِّمُوْا بَيْنَ يَدَيْ نَجْوٰىكُمْ صَدَقَةً ؕ
ذٰلِكَ خَيْرٌ لَّكُمْ وَاَطْهَرُ ؕ فَاِنْ لَّمْ تَجِدُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٢﴾ ءَاَشْفَقْتُمْ اَنْ
تُقَدِّمُوْا بَيْنَ يَدَيْ نَجْوٰىكُمْ صَدَقٰتٍ ؕ فَاِذْ لَمْ تَفْعَلُوْا وَتَابَ اللّٰهُ عَلَيْكُمْ فَاَقِيْمُوا
الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ؕ وَاللّٰهُ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿١٣﴾

तर्जुमा : ''ऐ मुसलमानो! जब तुम रसूल से बातचीत करना चाहो तो अपनी बातचीत से पहले कुछ सदक़ा दे दिया करो। ये तुम्हारे हक़ में बेहतर और पाकीज़ातर है, हाँ अगर न पाओ तो बेशक अल्लाह तआ़ला बख़्शने वाला मेहरबान है। (12) क्या तुम अपनी राज़ की बातों से पहले सदक़ा निकालने से डर गये? पस जब तुमने ये न किया और अल्लाह तआ़ला ने भी तुम्हें माफ़ फ़रमा दिया तो अब बख़ूबी नमाज़ों को क़ायम रखो, ज़कात देते रहा करो और अल्लाह तआ़ला की और उसके रसूल की ताबेदारी करते रहो, तुम जो कुछ करते हो उस सबसे अल्लाह तआ़ला ख़ूब ख़बरदार है।' (13)

पैग़म्बर (ﷺ) से बातचीत के अहकाम (आयत 12-13) : अल्लाह तआ़ला अपने मोमिन बन्दों को हुक्म देता है कि मेरे नबी से जब तुम कोई राज़ की बात करना चाहो तो इससे पहले मेरी राह में ख़ैरात किया करो ताकि तुम पाक-साफ़ हो जाओ और इस क़ाबिल बन जाओ कि मेरे पैग़म्बर से मशवरा कर सको, हाँ

अगर कोई ग़रीब-मिस्कीन शख़्स हो तो ख़ैर उसे अल्लाह तआला की बख़्शिश और उसके रहम पर नज़रें रखनी चाहियें। यानी ये हुक्म सिर्फ़ उन्हें है जो मालदार हों। फिर फ़रमाया, क्या तुम्हें इस हुक्म के बाक़ी रह जाने का अन्देशा था और ख़ौफ़ था कि ये सदक़ा कब तक वाजिब रहेगा। अच्छा जब तुमने इसे न किया और अल्लाह तआला ने भी तुम्हें माफ़ फ़रमाया तो अब और मज़्कूरा बाला फ़राइज़ का पूरी तरह ख़्याल रखो। कहा जाता है कि बातचीत से पहले सदक़ा निकालने का शर्फ़ हज़रत अली (रज़ि.) को हासिल हुआ है, फिर ये हुक्म हट गया। एक दीनार सदक़ा देकर हुज़ूर (ﷺ) से आप (रज़ि.) ने छिपी बातें कीं, दस मसाइल पूछे, फिर तो ये हुक्म ही हट गया। हज़रत अली (रज़ि.) से ख़ुद भी ये वाक़िया बतफ़्सील मरवी है कि आपने फ़रमाया, 'इस आयत पर न मुझसे पहले किसी ने अमल किया न मेरे बाद कोई अमल कर सका। मेरे पास एक दीनार था जिसे भुनाकर मैंने दस दिरहम लिये, एक दिरहम अल्लाह के नाम पर किसी मिस्कीन को दे दिया फिर आप (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर होकर आप से बातचीत की। फिर तो ये हुक्म उठ गया तो मुझसे पहले भी इस पर किसी ने अमल नहीं किया और न मेरे बाद कोई इस पर अमल कर सकता है। फिर आपने इस आयत की तिलावत की। (हसन : हाकिम : 2/482, इसकी सनद हसन है।)

इब्ने जरीर में है कि हुज़ूर (ﷺ) ने हज़रत अली (रज़ि.) से पूछा, 'क्या सदक़े की मिक़्दार एक दीनार मुक़र्रर करनी चाहिये?' तो आप (रज़ि.) ने फ़रमाया, एक जौ बराबर सोना। आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'वाह-वाह! तुम तो बड़े ही तंग दिल हो।' हज़रत अली (रज़ि.) फ़रमाते हैं, पस मेरी वजह से अल्लाह तआला ने इस उम्मत पर तख़्फ़ीफ़ (कमी) कर दी। (ज़ईफ़ : तिर्मिज़ी, किताब तफ़्सीरुल क़ुरआन, बाब व मिन सूरतिल मुजादला : 330 इसकी सनद ज़ईफ़ है। सुफ़ियान सौरी मुदल्लस रावी है और सिमाअ की सराहत नहीं और अली बिन अल्क़मा के हज़रत अली (रज़ि.) से सिमाअ में नज़र है। तिर्मिज़ी में भी ये रिवायत है और इसे हसन ग़रीब कहा है।)

हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) फ़रमाते हैं, मुसलमान बराबर हुज़ूर (ﷺ) से राज़दारी करने से पहले सदक़ा निकाला करते थे, लेकिन ज़कात के हुक्म ने इसे उठा दिया। आप फ़रमाते हैं, सहाबा (रज़ि.) ने कसरत से सवालात करने शुरू कर दिये जो हुज़ूर (ﷺ) पर गिराँ गुज़रते थे तो अल्लाह तआला ने ये हुक्म देकर आप (ﷺ) पर तख़्फ़ीफ़ कर दी। क्योंकि अब लोगों ने सवालात छोड़ दिये। फिर अल्लाह तआला ने मुसलमानों पर कुशादगी कर दी और इस हुक्म को मन्सूख़ कर दिया। (अत्तबरी : 23/249)

इक्रिमा और हसन बसरी (रह.) का भी यही क़ौल है कि ये हुक्म मन्सूख़ है। (अत्तबरी : 23/250)

हज़रत क़तादा और हज़रत मुक़ातिल (रह.) भी यही फ़रमाते हैं। हज़रत क़तादा (रह.) का क़ौल है कि सिर्फ़ दिन की चंद साअतों तक ये हुक्म रहा। हज़रत अली (रज़ि.) भी यही फ़रमाते हैं कि सिर्फ़ मैं ही अमल कर सका था और दिन का थोड़ा ही हिस्सा इस हुक्म को नाज़िल हुए हुआ था जो मन्सूख़ हो गया।

***

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ تَوَلَّوْا قَوْمًا غَضِبَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ مَا هُمْ مِنْكُمْ وَلَا مِنْهُمْ
وَيَحْلِفُونَ عَلَى الْكَذِبِ وَهُمْ يَعْلَمُونَ ﴿١٤﴾ أَعَدَّ اللَّهُ لَهُمْ عَذَابًا شَدِيدًا إِنَّهُمْ
سَاءَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٥﴾ اتَّخَذُوا أَيْمَانَهُمْ جُنَّةً فَصَدُّوا عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ فَلَهُمْ
عَذَابٌ مُهِينٌ ﴿١٦﴾ لَنْ تُغْنِيَ عَنْهُمْ أَمْوَالُهُمْ وَلَا أَوْلَادُهُمْ مِنَ اللَّهِ شَيْئًا
أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿١٧﴾ يَوْمَ يَبْعَثُهُمُ اللَّهُ جَمِيعًا فَيَحْلِفُونَ
لَهُ كَمَا يَحْلِفُونَ لَكُمْ وَيَحْسَبُونَ أَنَّهُمْ عَلَىٰ شَيْءٍ أَلَا إِنَّهُمْ هُمُ الْكَاذِبُونَ ﴿١٨﴾
اسْتَحْوَذَ عَلَيْهِمُ الشَّيْطَانُ فَأَنْسَاهُمْ ذِكْرَ اللَّهِ أُولَٰئِكَ حِزْبُ الشَّيْطَانِ أَلَا
إِنَّ حِزْبَ الشَّيْطَانِ هُمُ الْخَاسِرُونَ ﴿١٩﴾

तर्जुमा : ''क्या तूने उन लोगों को नहीं देखा? जिन्होंने उस क़ौम से दोस्ती की जिन पर अल्लाह ग़ज़बनाक हो चुका है, न ये मुनाफ़िक़ तुम्हारे ही हैं न उनके। ये बावजूद इल्म के फिर भी झूठ पर क़समें खा रहे हैं। (14) अल्लाह तआ़ला ने उन के लिये सख़्त अ़ज़ाब तैयार कर रखा है, तहक़ीक़ कि जो कुछ ये कर रहे हैं बुरा कर रहे हैं। (15) इन लोगों ने तो अपनी क़समों को ढाल बना रखा है और लोगों को अल्लाह तआ़ला की राह से रोकते हैं, इनके लिये रुस्वा करने वाला अ़ज़ाब है। (16) इनके माल और इनकी औलादें अल्लाह के यहाँ कुछ काम न आयेंगी। ये तो जहन्नमी हैं, हमेशा ही उसमें रहेंगे। (17) जिस दिन अल्लाह तआ़ला इन सबको खड़ा करेगा तो ये जिस तरह तुम्हारे सामने क़समें खाते हैं अल्लाह तआ़ला के सामने भी क़समें खाने लगेंगे और समझेंगे कि वो भी कुछ हैं, यक़ीन मानो बेशक ये झूठे हैं। (18) उन पर शैतान ने ग़ल्बा हासिल कर लिया है और इन्हें अल्लाह का ज़िक्र भुला दिया है, ये शैतानी लश्कर है, कोई शक नहीं कि शैतानी लश्कर ही ख़राब ख़स्ता है।'' (19)

मुनाफ़िक़ों का ज़िक्र (आयत 14-19) : मुनाफ़िक़ों का ज़िक्र हो रहा है कि ये अपने दिल में यहूद की मुहब्बत रखते हैं। गो दरअसल उनके भी हक़ीक़ी साथी नहीं न तुम्हारे हैं। न इधर के हैं न उधर के हैं। साफ़ झूठी क़समें खा जाते हैं ईमानदारों के पास आकर उनकी सी कहने लगते हैं, रसूल के पास आकर क़समें खाकर अपनी

ईमानदारी का यक़ीन दिलाते हैं और दिल में उसके ख़िलाफ़ जज़्बात पाते हैं और अपनी ग़लत गोई का इल्म रखते हुए धबा-धब बेधड़क क़समें खा लेते हैं। उनकी बद आमालियों की वजह से उन्हें सख़्ततर अज़ाब होंगे। इस धोखेबाज़ी का बुरा बदला उन्हें दिया जायेगा। ये तो अपनी क़समों को अपनी ढाल बनाये हुए हैं और अल्लाह की राह से रुक गये हैं। ईमान ज़ाहिर करते हैं, कुफ़्र दिल में रखते हैं और क़समों से अपनी बातिनी बदी को छिपाते हैं और नावाक़िफ़ लोगों पर अपनी सच्चाई का सुबूत अपनी क़समों से पेश करके उन्हें अपना मद्दाह बना लेते हैं और धीरे-धीरे उन्हें भी अपने रंग में रंग लेते हैं। चूंकि उन्होंने झूठी क़समों से अल्लाह तआ़ला के पुर अज़ सद हज़ार तकरीम की बेइज़्ज़ती की थी इसलिये उन्हें ज़िल्लत व अहानत वाले अज़ाब होंगे, जिन अज़ाबों को न उनके माल दूर कर सकें न उस वक़्त उनकी औलादें उनके कुछ काम आयें, ये तो जहन्नमी बन चुके और वहाँ से उनका निकलना भी कभी भी न होगा। क़यामत वाले दिन जब उनका हश्र होगा और एक भी उस मैदान में आये बग़ैर न रह सकेगा, सब जमा हो जायेंगे तो चूंकि ज़िन्दगी में उनकी आ़दत थी कि अपनी झूठ बातों को क़समों से सच साबित कर दिखाते थे, आज अल्लाह के सामने अपनी हिदायत व इस्तिक़ामत पर बड़ी-बड़ी क़समें खा लेंगे और समझते होंगे कि यहाँ भी ये चालाकी चल जायेगी मगर उन झूठों की भला अल्लाह के सामने चालबाज़ी कहाँ चल सकती है? वो तो उनका झूठा होना यहाँ भी मुसलमानों से बयान फ़रमा चुका।

इब्ने अबी हातिम में है आँहज़रत (ﷺ) अपने किसी हुज्रे के साये में तशरीफ़ फ़रमा थे और सहाबा किराम (रज़ि.) भी आस-पास बैठे थे, सायेदार जगह कम थी, बमुश्किल लोग उसमें पनाह लिये बैठे थे कि आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'देखो! अभी एक शख़्स आयेगा जो शैतानी निगाह से देखता है, वो आये तो उससे बात न करना।' थोड़ी देर में एक कायरी आँखों वाला शख़्स आया। हुज़ूर (ﷺ) ने उसे अपने पास बुलाकर फ़रमाया, 'क्यों भई तू और फ़लाँ-फ़लाँ मुझे क्यों गालियाँ देते हो?' ये यहाँ से चला गया और जिन-जिनका नाम हुज़ूर (ﷺ) ने लिया था उन्हें लेकर आया और फिर तो क़समों का ताँता बांध दिया कि हममें से किसी ने हुज़ूर (ﷺ) की कोई बेअदबी नहीं की। इस पर ये आयत उतरी कि ये झूठे हैं। (हसन : अहमद : 1/267, इसकी सनद हसन है। हाकिम : 2/482, तबरानी : 12308, दलाइलुन्नुबुव्वह लिल्बैहक़ी : 5/282)

यही हाल मुश्रिकों का भी दरबारे इलाही में होगा कि क़समें खा जायेंगे कि हमें अल्लाह की क़सम! जो हमारा रब है कि हमने शिर्क नहीं किया। फिर फ़रमाता है उन पर शैतान ने ग़लबा पा लिया है और उनके दिल को अपनी मुट्ठी में कर लिया है। यादे इलाही, ज़िक्रुल्लाह से उन्हें दूर डाल दिया है। अबू दाऊद की हदीस में है रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़रमाते हैं, 'जिस किसी बस्ती या जंगल में तीन शख़्स भी हों और उनमें नमाज़ न क़ायम की जाती हो तो शैतान उन पर छा जाता है। पस तू जमाअ़त को लाज़िम पकड़े रह। भेड़िया उसी बकरी को खाता है जो रेवड़ से अलग हो।' हज़रत साइब (रह.) फ़रमाते हैं, यहाँ मुराद जमाअ़त से नमाज़ की जमाअ़त है। (सहीह : अबू दाऊद, किताबुस्सलात, बाब अत्तशदीदु फ़ी तरकिल जमाअ़त : 547, इसकी सनद सहीह है। नसाई : 848, अहमद : 5/196, इब्ने हिब्बान : 2101, हाकिम : 1/211) फिर फ़रमाता है कि अल्लाह के ज़िक्र फ़रामोश करने वाले शैतानी जमाअ़त के अराफ़द हैं। शैतान का ये लश्कर यक़ीनन नामुराद और ज़ियाँकार है।

إِنَّ الَّذِينَ يُحَادُّونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ أُولَٰئِكَ فِي الْأَذَلِّينَ ﴿٢٠﴾ كَتَبَ اللَّهُ لَأَغْلِبَنَّ
أَنَا وَرُسُلِي ۚ إِنَّ اللَّهَ قَوِيٌّ عَزِيزٌ ﴿٢١﴾ لَا تَجِدُ قَوْمًا يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ
يُوَادُّونَ مَنْ حَادَّ اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَلَوْ كَانُوا آبَاءَهُمْ أَوْ أَبْنَاءَهُمْ أَوْ إِخْوَانَهُمْ أَوْ
عَشِيرَتَهُمْ ۚ أُولَٰئِكَ كَتَبَ فِي قُلُوبِهِمُ الْإِيمَانَ وَأَيَّدَهُمْ بِرُوحٍ مِنْهُ ۖ
وَيُدْخِلُهُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا ۚ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ
وَرَضُوا عَنْهُ ۚ أُولَٰئِكَ حِزْبُ اللَّهِ ۚ أَلَا إِنَّ حِزْبَ اللَّهِ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ﴿٢٢﴾

तर्जुमा : ''बेशक अल्लाह तआला की और उसके रसूल की जो लोग मुख़ालिफ़त करते हैं वही लोग सबसे ज़्यादा ज़लीलों में हैं। (20) अल्लाह तआला लिख चुका है कि बेशक मैं और मेरे पैग़म्बर ग़ालिब रहेंगे, यक़ीनन अल्लाह तआला ज़ोरावर और ग़ालिब है। (21) अल्लाह तआला पर और क़यामत के दिन पर ईमान रखने वालों को तू अल्लाह और उसके रसूल की मुख़ालिफ़त करने वालों से मुहब्बत रखते हुए हर्गिज़ न पायेगा गो वो उनके बाप या उनके बेटे या उनके भाई या उनके कुम्बे-क़बीले के अज़ीज़ ही क्यों न हो। यही लोग हैं जिनके दिलों में अल्लाह तआला ने ईमान लिख दिया है और जिनकी ताईद अपनी रूह से की है और जिन्हें उन जन्नतों में दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें बह रही हैं, जहाँ ये हमेशा रहेंगे, अल्लाह उनसे राज़ी है और ये अल्लाह से ख़ुश हैं, ये लश्करे इलाही है, आगाह रहो! बेशक अल्लाह के गिरोह वाले ही कामयाब लोग हैं।' (22)

अल्लाह और रसूलुल्लाह (ﷺ) के दुश्मन ज़लील होंगे (आयत : 20-22) : अल्लाह तआला बयान फ़रमाता है कि जो लोग हक़ से बरगश्ता हैं, हिदायत से दूर हैं, अल्लाह और उसके रसूल के मुख़ालिफ़ हैं, अहकामे शरअ की इताअत से अलग हैं ये लोग इन्तिहा दर्जे के ज़लील, बेवक़ार और ख़स्ता हाल हैं, रहमते रब से दूर अल्लाह की मेहरबानी भरी नज़रों से ओझल और दुनिया व आख़िरत में बर्बाद हैं। अल्लाह तआला तो फ़ैसला कर चुका है बल्कि अपनी पहली किताब में ही लिख चुका है और मुक़द्दर कर चुका है जो तक़दीर और जो तहरीज़ न मिटेगी, न बदलेगी न उसे हेर-फेर करने की किसी में ताक़त है कि वो और उसकी किताब

और उसके रसूल और उसके मोमिन बन्दे, दुनिया और आख़िरत में ग़ालिब रहेंगे। जैसे और जगह है, (اِنَّا لَنَنْصُرُ رُسُلَنَا وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا) (सूरह मोमिन 40 : 51) 'हम अपने रसूल की और ईमानदार बन्दों की ज़रूर-ज़रूर मदद करेंगे, दुनिया में भी और आख़िरत में भी, जिस दिन गवाह क़ायम हो जायेंगे और जिस दिन गुनाहगारों को कोई उ़ज़्र व मअ़ज़रत फ़ायदा न पहुँचायेगी, उन पर लानतें बरसती होंगी और उनके लिये बुरा घर होगा। ये लिखने वाला अल्लाह क़वी है और उसकी लिखत अटल है वो ग़ालिब व क़ह्हार है, अपने दुश्मनों पर हर वक़्त क़ाबू रखने वाला है। उसका ये अटल फ़ैसला और तयशुदा क़ज़ा है कि दोनों जहान में अन्जाम के ऐतिबार से ग़ल्बा व नुसरत मोमिनों का हिस्सा है।

मोमिन सबसे बढ़कर अल्लाह और रसूल से मुहब्बत रखते हैं : फिर फ़रमाया कि ये नामुम्किन है कि अल्लाह के दोस्त अल्लाह तआ़ला के दुश्मन से मुहब्बत रखें। दूसरी जगह है कि मुसलमानों को चाहिये कि मुसलमानों को छोड़कर काफ़िरों को अपना वली दोस्त न बनायें। ऐसा करने वाले अल्लाह के यहाँ किसी गिनती में नहीं, हाँ डर ख़ौफ़ के वक़्त बतौरे दफ़इल वक़्ती के हो तो और बात है। अल्लाह तआ़ला तुम्हें अपनी गिरामी ज़ात से डरा रहा है। दूसरी जगह है ऐ नबी! ऐलान कर दीजिये कि अगर तुम्हारे बाप-दादा, बेटे-पोते, बीवी-बच्चे, कुम्बे-क़बीले, माल व दौलत, तिजारत हिरफ़त, घर-बार वग़ैरह तुम्हें बनिस्बत अल्लाह तआ़ला और उसके रसूल के और उसकी राह के जिहाद के ज़्यादा अ़ज़ीज़ और महबूब हैं तो तुम अल्लाह के अन्क़रीब बरस पड़ने वाले अ़ज़ाबों का इन्तिज़ार करो, इस क़िस्म के फ़ासिक़ों की रहबरी भी अल्लाह की तरफ़ से नहीं होती। हज़रत सईद बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ (रह.) फ़रमाते हैं, ये आयत हज़रत अबू उ़बैदा आ़मिर बिन अ़ब्दुल्लाह बिन जर्राह (रज़ि.) के बारे में उतरी है। जंगे बद्र में उनके वालिद कुफ़्र की हिमायत में मुसलमानों के मुक़ाबले पर आये, आपने उन्हें क़त्ल कर दिया। (ज़ईफ़ : हाकिम : 3/265, मिन तरीक़िन आख़र मुरसलन फ़स्सनदु ज़ईफ़)

हज़रत उ़मर (रज़ि.) ने अपने आख़िरी वक़्त में जबकि ख़िलाफ़त के लिये एक जमाअ़त को ख़लीफ़ा मुक़र्रर किया कि लोग मिलकर जिसे चाहें ख़लीफ़ा बना लें उस वक़्त हज़रत अबू उ़बैदा (रज़ि.) की निस्बत फ़रमाया था कि अगर ये होते तो मैं इन्ही को ख़लीफ़ा मुक़र्रर करता। (ज़ईफ़ : हाकिम : 3/268, हाज़ा मिम बलाग़ाति साबित बिन अल्हज्जाज यअ़नी अन्नहू मुन्क़तअ़)

और ये भी फ़रमाया गया है कि एक-एक सिफ़त अलग-अलग बुज़ुर्गों में थी जैसे हज़रत अबू उ़बैदा बिन जर्राह (रज़ि.) ने तो अपने वालिद को क़त्ल किया था और हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ (रज़ि.) ने अपने बेटे अ़ब्दुर्रहमान के क़त्ल का इरादा किया था और हज़रत मुस्अ़ब बिन उ़मैर (रज़ि.) ने अपने भाई उ़बैद बिन उ़मैर को क़त्ल किया था और हज़रत उ़मर और हज़रत हम्ज़ह और हज़रत अ़ली और हज़रत उ़बैदा बिन हारिस (रज़ि.) ने अपने क़रीबी रिश्तेदारों उ़तबा, शैबा और वलीद बिन उ़तबा को क़त्ल किया था, वल्लाहु आ़लम!

इसी ज़िमन में ये वाक़िया भी दाख़िल हो सकता है कि जिस वक़्त रसूलुल्लाह (ﷺ) ने बद्री क़ैदियों की निस्बत मुसलमानों से मशवरा किया तो हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ (रज़ि.) ने फ़रमाया, उनसे फ़िदया ले

लिया जाये ताकि मुसलमानों की माली मुश्किलात दूर हो जायें, मुश्रिकों से जिहाद करने के लिये आलाते हर्ब जमा कर लें और ये छोड़ दिये जायेंगे। क्या अजब कि अल्लाह तआला इनके दिल इस्लाम की तरफ़ फेर दे, आख़िर हैं तो हमारे ही कुम्बे-रिश्ते के। लेकिन हज़रत उमर फ़ारूक़ (रज़ि.) ने अपनी राय इसके बिल्कुल बरख़िलाफ़ पेश की कि ऐ अल्लाह के रसूल! जिस मुसलमान का जो रिश्तेदार मुश्रिक है उसके हवाले कर दिया जाये और उसे हुक्म दिया जाये कि वो उसे क़त्ल कर दे हम अल्लाह तआला को दिखाना चाहते हैं कि हमारे दिलों में इन मुश्रिकों की कोई मुहब्बत नहीं, मुझे मेरा फ़लाँ रिश्तेदार सौंप दीजिये और हज़रत अली (रज़ि.) के हवाले अक़ील को कर दीजिये और फ़लाँ सहाबी को फ़लाँ काफ़िर दे दीजिये वग़ैरह। (सहीह मुस्लिम, किताबुल जिहाद, बाब अल्इम्दादु बिल्मलाइकति फ़ी ग़ज़्वति बद्र : 1763)

फिर फ़रमाता है कि जो अपने दिल को अल्लाह के दुश्मनों की मुहब्बत से ख़ाली कर दे और मुश्रिक रिश्तेदारों से भी मुहब्बत छोड़ दे वो कामिलुल ईमान शख़्स है जिसके दिल में ईमान ने जड़ें जमा ली हैं और जिनकी क़िस्मत में सआदत लिखी जा चुकी है और जिनकी निगाह में ईमान की ज़ीनत जच गई है और उनकी ताईद अल्लाह तआला ने अपने पास की रूह से की है, यानी उन्हें क़वी बना दिया है और यही लोग बहती नहरों वाली जन्नत में जायेंगे, जहाँ से कभी न निकाल ले जायें। अल्लाह तआला इनसे राज़ी ये अल्लाह से ख़ुश। चूंकि इन्होंने अल्लाह के लिये रिश्ते-कुम्बे वालों को नाराज़ कर दिया था, अल्लाह तआला उसके बदले उनसे राज़ी हो गया और उन्हें इस क़द्र दिया कि ये भी ख़ुश-ख़ुश हो गये। लश्करे इलाही यही है और कामयाब गिरोह भी यही है जो शैतानी लश्कर और नाकाम गिरोह के मुक़ाबिल है। हज़रत अबू हाज़िम अअरज (रह.) ने हज़रत ज़ुहरी (रह.) को लिखा कि जाह दो क़िस्म की है एक वो जिसे अल्लाह तआला अपने औलिया के हाथों पर जारी करता है जो हज़रात आम लोगों की निगाहें में नहीं जचते जिनकी आम शोहरत नहीं होती, जिनकी सिफ़त अल्लाह के रसूल (ﷺ) ने भी बयान फ़रमाई है कि अल्लाह तआला उन लोगों को दोस्त रखता है जो गुमनाम मुत्तक़ी नेकोकार हैं अगर वो न आयें तो पूछगछ न हो और आ जायें तो आव-भगत न हो उनके दिल हिदायत के चिराग़ हैं। हर स्याह रंग अन्धेरे वाले फ़ित्ने से निकलते हैं। ये हैं वो औलिया अल्लाह जिन्हें अल्लाह ने अपना लश्कर कहा है और जिनकी कामयाबी का ऐलान किया है। (ये रिवायत मुरसल यानी ज़ईफ़ है।)

नुऐम बिन हम्माद में है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने अपनी दुआ में फ़रमाया, 'ऐ अल्लाह! किसी फ़ासिक़-फ़ाजिर का कोई एहसान और सुलूक मुझ पर न रख क्योंकि मैंने तेरी नाज़िल करदा वह्य में पढ़ा है कि ईमानदार मुख़ालिफ़ीने रब के दोस्त नहीं होते।' हज़रत सुफ़ियान (रह.) फ़रमाते हैं, अगलों का ख़्याल है कि ये आयत उन लोगों के बारे में उतरी है जो बादशाह से ख़लत-मलत रखते हों। (अबू अहमद अस्करी)

अल्हम्दुलिल्लाह सूरह मुजादला की तफ़सीर ख़त्म हुई।

***

FLOW CHART
तरतीबी नक्श-ए-रब्त

MACRO-STRUCTURE
नज़्मे-जली

सूरह हश्र - 59

आयात : 24, मदनी, पैराग्राफ : 4

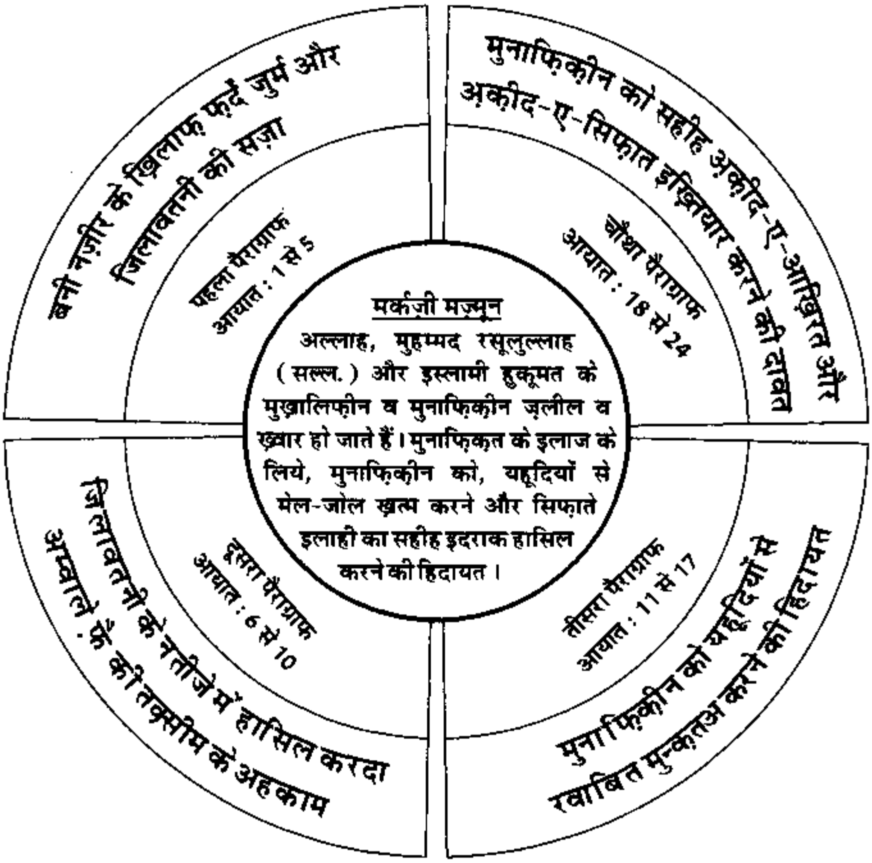

ज़मान-ए-नुज़ूल

यहूदी क़बीले बनी नज़ीर की मदीन-ए-मुनव्वरा से जिलावतनी (रबीउल अव्वल 4 हिजरी) के बाद, ग़ालिबन 4 हिजरी के वस्त में नाज़िल हुई।

तफ़्सीर सूरह हश्र

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ○

तर्जुमा : ''शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है।''

سَبَّحَ لِلّٰهِ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَمَا فِی الْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِیْزُ الْحَكِیْمُ ① هُوَ الَّذِیْٓ
اَخْرَجَ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ مِنْ دِیَارِهِمْ لِاَوَّلِ الْحَشْرِ ؕ مَا ظَنَنْتُمْ
اَنْ یَّخْرُجُوْا وَظَنُّوْٓا اَنَّهُمْ مَّانِعَتُهُمْ حُصُوْنُهُمْ مِّنَ اللّٰهِ فَاَتٰىهُمُ اللّٰهُ مِنْ حَیْثُ
لَمْ یَحْتَسِبُوْا ۗ وَقَذَفَ فِیْ قُلُوْبِهِمُ الرُّعْبَ یُخْرِبُوْنَ بُیُوْتَهُمْ بِاَیْدِیْهِمْ وَاَیْدِی
الْمُؤْمِنِیْنَ ۗ فَاعْتَبِرُوْا یٰۤاُولِی الْاَبْصَارِ ② وَلَوْلَاۤ اَنْ كَتَبَ اللّٰهُ عَلَیْهِمُ الْجَلَآءَ
لَعَذَّبَهُمْ فِی الدُّنْیَا ؕ وَلَهُمْ فِی الْاٰخِرَةِ عَذَابُ النَّارِ ③ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ شَآقُّوا اللّٰهَ
وَرَسُوْلَهٗ ۚ وَمَنْ یُّشَآقِّ اللّٰهَ فَاِنَّ اللّٰهَ شَدِیْدُ الْعِقَابِ ④ مَا قَطَعْتُمْ مِّنْ لِّیْنَةٍ اَوْ
تَرَكْتُمُوْهَا قَآئِمَةً عَلٰۤى اُصُوْلِهَا فَبِاِذْنِ اللّٰهِ وَلِیُخْزِیَ الْفٰسِقِیْنَ ⑤

तर्जुमा : ''आसमानों और ज़मीनों की हर चीज़ अल्लाह तआला की पाकी बयान करती है और वो ग़ालिब है और बाहिक्मत है। (1) वही है जिसने अहले किताब के काफ़िरों को घरों से निकालकर पहले हश्र की ज़मीन में ला खड़ा किया, तुम्हारा गुमान भी न था कि वो निकलेंगे और वो ख़ुद भी समझ रहे थे कि उनके संगीन क़िले उन्हें अल्लाह के अ़ज़ाब से बचा लेंगे, पस उन पर अ़ज़ाबे इलाही ऐसी जगह से आ पड़ा कि उन्हें गुमान में भी न था उनके दिलों में अल्लाह

ने रौब डाल दिया। अपने घरों को अपने ही हाथों बर्बाद करना शुरू कर दिया और मुसलमानों के हाथों भी बर्बाद हुए, पस ऐ आँखों वाला! इबरत हासिल करो। (2) और अगर अल्लाह तआला ने उन पर जिलावतनी को मुक़द्दर न कर दिया होता तो यक़ीनन उन्हें दुनिया ही में अ़ज़ाब देता और आख़िरत में तो उनके लिये आग का अ़ज़ाब है ही। (3) इसलिये कि उन्होंने अल्लाह तआला की और उसके रसूल की मुख़ालिफ़त की और जो भी अल्लाह से मुख़ालिफ़त करेगा तो अल्लाह तआला भी सख़्त अ़ज़ाब करने वाला है। (4) तुमने खजूरों के जो दरख़्त काट डाले या जिन्हें तुमने उनकी जड़ों पर बाक़ी रहने दिया ये सब अल्लाह तआला के फ़रमान से था और इसलिये भी कि बदकारों को अल्लाह तआला रुस्वा करे।" (5)

सहीह बुख़ारी व सहीह मुस्लिम में है कि हज़रत सईद बिन जुबैर (रह.) ने हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से कहा कि ये सूरह हश्र है। तो आप (रज़ि.) ने फ़रमाया, क़बीला बनू नज़ीर के बारे में उतरी है। (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरह हश्र बाब नम्बर 1, हदीस़ नम्बर : 4882, सहीह मुस्लिम : 3031)

बुख़ारी की दूसरी रिवायत में है कि आप (ﷺ) ने जवाबन फ़रमाया, 'ये सूरत सूरह बनू नज़ीर है।' (सहीह बुख़ारी, हवाला साबिक़ : 4883)

बनू नज़ीर का तफ़्सीली वाक़िया (आयत : 1-5) : अल्लाह तआला फ़रमाता है कि आसमानों और ज़मीन की हर चीज़ अल्लाह तआला की तस्बीह, तहमीद, तक़दीस, तमजीद, तकबीर तौहीद में मशग़ूल है। जैसे दूसरी जगह फ़रमान है, व इम्मिन् शैइन इल्ला युसब्बिहु बिहम्दिही (सूरह बनी इस्राईल 17 : 44) 'हर चीज़ अल्लाह तआला की पाकीज़गी और सनाख़्वानी करती है, वो ग़ल्बे वाला और बुलंद जनाब वाला और आ़ली सरकार वाला है और अपने तमाम अहकाम और कुल फ़रमान में हिक्मत वाला है।'

जिसने अहले किताब के काफ़िरों यानी क़बीला बनू नज़ीर के यहूदियों को उनके घरों से निकाला। इसका मुख़्तसर क़िस्सा ये है कि मदीना में आकर हुज़ूर (ﷺ) ने उन यहूदियों से सुलह कर ली थी कि न आप उनसे लड़ें न ये आप से लड़ें। लेकिन उन लोगों ने इस अ़हद को तोड़ दिया जिसकी वजह से अल्लाह का ग़ज़ब उन पर नाज़िल हुआ। अल्लाह तआला ने अपने नबी को उन पर ग़ालिब किया और आपने उन्हें यहाँ से निकाल दिया। मुसलमानों को कभी इसका ख़्याल तक न था। ख़ुद ये यहूदी भी समझ रहे थे कि उन मज़बूत क़िलों के होते हुए कोई उनका कुछ बिगाड़ नहीं सकता। लेकिन जब अल्लाह की पकड़ आई, ये सब चीज़ें यूंही रखी की रखी रह गईं और अचानक इस तरह गिरफ़्त में आ गये कि हैरान रह गये और आप (ﷺ) ने उन्हें मदीना से निकलवा दिया। कुछ तो शाम के मक़ाम अज़रआत की तरफ़ चले गये जो हश्र व नश्र की जगह है और कुछ ख़ैबर की तरफ़ जा निकले। उनसे कह दिया गया था कि अपने ऊँटों पर लादकर जो ले जा सको अपने साथ ले जाओ। इसलिये उन्होंने अपने घरों को उजाड़ दिया, तोड़-फोड़ कर जो चीज़ें ले जा सकते थे अपने साथ उठा लीं। जो रह गईं वो मुसलमानों के हाथ लगीं। इस वाक़िये को बयान करके फ़रमाता है कि अल्लाह और उसके

रसूल (ﷺ) के मुख़ालिफ़ीन का अन्जाम देखो और इससे इबरत हासिल करो कि किस तरह उन पर अ़ज़ाबे इलाही अचानक आ पड़ा और दुनिया में तबाह व बर्बाद किये गये और आख़िरत में भी ज़लील व रुस्वा हो गये और दर्दनाक अ़ज़ाबों में जा पड़े।

अबू दाऊद में है कि इब्ने उबय और उसके मुश्रिक साथियों को जो क़बीला-ए-औस व ख़ज़रज में से थे, कुफ़्फ़ारे कुरैश ने खत लिखा। जबकि हुज़ूर (ﷺ) मदीना में थे और ग़ज़्व-ए-बद्र पेश नहीं आया था। उसमें तहरीर था कि तुमने हुज़ूर (ﷺ) को अपने शहर में ठहराया है पस या तो तुम उससे लड़ाई करो और उसे निकाल बाहर करो या हम तुम्हें निकाल देंगे और अपने तमाम लश्करों को लेकर तुम पर हमला कर देंगे और तुम्हारे तमाम लड़ने वालों को तहे-तग़ कर देंगे और तुम्हारी औरतों-लड़कियों को लौण्डियाँ बना लेंगे। अल्लाह की क़सम ये होकर ही रहेगा अब तुम सोच-समझ लो। अ़ब्दुल्लाह बिन उबय और उसके बुतपरस्त साथियों ने इस ख़त को पाकर आपस में मशवरा किया और ख़ुफ़िया तौर पर हुज़ूर (ﷺ) से लड़ाई करने की तजवीज़ बिल्इत्तिफ़ाक़ मन्ज़ूर कर ली। जब हुज़ूर (ﷺ) को ये ख़बरें मालूम हुईं तो आप ख़ुद उनके पास गये और उनसे फ़रमाया, 'मुझे मालूम हुआ है कि कुरैशियों का ख़त काम कर गया और तुम लोग अपनी मौत के सामान अपने हाथों करने लगे हो, तुम अपनी औलादों और अपने भाइयों को अपने हाथों ज़िब्ह करना चाहते हो, मैं तुम्हें फिर एक मर्तबा मौक़ा देता हूँ कि सोच-समझ लो और अपने इस बद इरादे से बाज़ आ जाओ। हुज़ूर (ﷺ) के इस इरशाद ने उन पर असर किया और वो लोग अपनी जगह चले गये। लेकिन कुरैश ने बद्र से फ़ारिग़ होकर उन्हें फिर एक ख़त लिखा और उसी तरह धमकाया। उनहें उनकी कुव्वत की तादाद और उनके मज़बूत क़िले याद दिलाये। ये फिर भरे पर चढ़ गये और बनू नज़ीर ने साफ़ तौर पर बद अ़हदी पर कमर बांध ली और हुज़ूर (ﷺ) के पास आदमी भेजा कि आप (ﷺ) तीस आदमी लेकर आइये। हममें से भी तीस ज़ीइल्म आदमी आते हैं। हमारे तुम्हारे दरम्यान की जगह पर ये साठ आदमी मिलें और आपस में बातचीत हो। अगर ये लोग आपको सच्चा मान लें और ईमान ले आयें तो हम भी आपके साथ हैं। इस बदअ़हदी की वजह से दूसरे दिन सुबह रसूलुल्लाह (ﷺ) ने अपना लश्कर ले जाकर उनका मुहासिरा कर लिया और उनसे फ़रमाया, 'अब अगर तुम नये सिरे से अमन व अमान का अ़हद व पैमान करो तो ख़ैर वरना तुम्हें अमन नहीं।' उन्होंने साफ़ इंकार कर दिया और लड़ने मरने पर तैयार हो गये। चुनाँचे दिन भर लड़ाई होती रही। दूसरी सुबह को आप (ﷺ) बनू कुरैज़ा की तरफ़ लश्कर लेकर बढ़े और बनू नज़ीर को यूंही छोड़ा। उनसे भी यही फ़रमाया, 'तुम नये सिरे से अ़हद व पैमान करो।' उन्होंने मन्ज़ूर कर लिया और मुआ़हिदा हो गया। आप (ﷺ) वहाँ से फ़ारिग़ होकर फिर बनू नज़ीर के पास आये लड़ाई शुरू हुई। आख़िर वो हारे और हुज़ूर (ﷺ) ने उन्हें हुक्म दिया कि तुम मदीना ख़ाली करो, जो अस्बाब ले जाना चाहो ऊँटों पर लाद कर ले जाओ। चुनाँचे उन्होंने घर-बार का अस्बाब यहाँ तक कि दरवाज़े और लकड़ियाँ भी ऊँटों पर लादीं और जिला वतन हो गये। उनके खजूरों के दरख़्त ख़ास्सतन रसूलुल्लाह (ﷺ) के हो गये। अल्लाह तआ़ला ने ये आप (ﷺ) ही को दिलवा दिये। जैसे आयत मा अफ़ाअल्लाहु अ़ला रसूलिही में है लेकिन आँहज़रत (ﷺ) ने अक्सर हिस्सा मुहाजिरीन को दे दिया। हाँ

अन्सारियों में से सिर्फ़ दो हाजतमन्दों को ही हिस्सा दिया वरना सबका सब मुहाजिरीन में तक़सीम कर दिया जो बाक़ी रह गया था यही वो माल था जो रसूलुल्लाह (ﷺ) का सदक़े का था और जो बनू फ़ातिमा के हाथ लगा। (ज़ईफ़ : अबू दाऊद, किताबुल ख़िराज, बाब फ़ी ख़बरिन्नज़ीर : 3004 इसकी सनद ज़ईफ़ है। इब्ने शिहाब जुहरी मुदल्लस हैं और तसरीह बिस्सिमाअ साबित नहीं।)

ग़ज़्व-ए-बनू नज़ीर का मुख़्तसर-क़िस्सा : इसका सबब ये था कि मुश्रिकों ने धोखेबाज़ी से सहाबा किराम (रज़ि.) को बीरे मऊना में शहीद कर दिया, जिनकी तादाद सत्तर थी। उनमें से एक हज़रत अम्र बिन उमय्या ज़मरी (रज़ि.) बच कर भाग निकले। मदीना की तरफ़ आते-आते मौक़ा पाकर उन्होंने क़बीला, बनू आमिर के दो शख़्सों को क़त्ल कर दिया। हालांकि ये क़बीला रसूलुल्लाह (ﷺ) से मुआहिदा कर चुका था और आप (ﷺ) ने उन्हें अमन व अमान दे रखा था लेकिन इसकी ख़बर हज़रत अम्र (रज़ि.) को न थी। जब ये मदीना पहुँचे और हुज़ूर (ﷺ) से ज़िक्र किया तो आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'तुमने उन्हें क़त्ल कर डाला। अब मुझे उनके वारिसों को दिय्यत यानी जुर्माना क़त्ल व ख़ूँ बहा अदा करना पड़ेगा।' बनू नज़ीर और बनू आमिर में भी हलफ़ व अक़्द और आपस में मुसालिहत थी इसलिये हुज़ूर (ﷺ) उनकी तरफ़ चले ताकि कुछ ये दें कुछ आप दें और बनू आमिर को राज़ी कर लिया जाये। क़बीला बनू नज़ीर की गढ़ी मदीना के मश्रिक़ की जानिब कई मील के फ़ासले पर थी। जब आप (ﷺ) यहाँ पहुँचे तो उन्होंने कहा, हाँ! हुज़ूर हम मौजूद हैं अभी-अभी जमा करके अपने हिस्से के मुताबिक़ आप (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हैं। इधर आप (ﷺ) से हटकर ये लोग आपस में मशवरा करने लगे कि इससे बेहतर मौक़ा कब हाथ लगेगा? इस वक़्त आप (ﷺ) क़ब्ज़े में हैं आओ काम तमाम कर डालो। चुनाँचे ये मशवरा हुआ कि जिस दीवार से आप (ﷺ) लगे बैठे हैं उस घर पर कोई चढ़ जाये और वहाँ से बड़ा सा पत्थर आप पर फेंक दे कि आप (ﷺ) दब जायें। अम्र बिन जहाश बिन कअब इस काम पर मुक़र्रर हुआ। उसने आप (ﷺ) की जान लेने का बेड़ा उठाया और छत पर चढ़ गया चाहता था कि पत्थर लुढ़का दे इतने में अल्लाह तआला ने जिब्राईल (अलै.) को हुज़ूर (ﷺ) के पास भेजा और हुक्म दिया कि आप (ﷺ) यहाँ से उठ खड़े हों। चुनाँचे आप (ﷺ) फ़ौरन हट गये और ये बदबातिन अपने बुरे इरादे में नाकाम रहे। आप (ﷺ) के साथ उस वक़्त चंद सहाबा थे जैसे हज़रत अबू बकर सिद्दीक़, हज़रत उमर फ़ारूक़, हज़रत अली (रज़ि.) वग़ैरह।

आप यहाँ से फ़ौरन मदीना की तरफ़ चल पड़े। इधर जो सहाबा (रज़ि.) आपके साथ न थे और मदीना में आप (ﷺ) के मुन्तज़िर थे उन्हें देर लगने के बाइस ख़्याल हुआ और वो आप (ﷺ) को ढूण्ढने के लिये निकल खड़े हुए लेकिन एक शख़्स से मालूम हुआ कि आप (ﷺ) मदीना पहुँच गये हैं। चुनाँचे ये लोग वापस आये पूछा कि हुज़ूर! क्या वाक़िया है? आप (ﷺ) ने सारा क़िस्सा सुनाया और हुक्म दिया कि जिहाद की तैयारी करो। मुजाहिदीन ने कमरें बांध लीं और अल्लाह की राह में निकल खड़े हुए। यहूदियों ने लश्करों को देखकर अपने क़िले के फाटक बंद कर दिये और पनाह गुज़ीं हो गये। आप (ﷺ) ने मुहासिरा कर लिया फिर हुक्म दिया कि उनके खजूर के दरख़्त जो आस-पास हैं वो काट दिये जायें और जला दिये जायें। अब तो यहूद चीख़ने लगे कि ये क्या हो रहा है? आप (ﷺ) तो ज़मीन में फ़साद करने से औरों को रोकते थे और फ़सादियों को बुरा कहते

थे फिर ये क्या होने लगा? फिर इधर तो दरख़्त कटने का ग़म, उधर जो कुमुक आने वाली थी उसकी तरफ़ से मायूसी, इन दोनों चीज़ों ने उन यहूदियों की कमर तोड़ दी। कुमुक का वाक़िया ये है कि बनू औफ़ बिन ख़ज़रज का क़बीला जिसमें अ़ब्दुल्लाह बिन उबय बिन सलूल और वदीआ़ बिन मालिक इब्ने अबू क़ौक़ल और सुवेद और दाइस वग़ैरह थे उन लोगों ने बनू नज़ीर को कहलवा भेजा था कि तुम मुक़ाबले पर जमे रहो और क़िला हवाले न करो, हम तुम्हारी मदद पर हैं, तुम्हारा दुश्मन हमारा दुश्मन है। हम तुम्हारे साथ मिलकर उससे लड़ेंगे और अगर तुम निकले तो हम भी निकलेंगे। लेकिन अब तक उनका ये वादा पूरा न हुआ और उन्होंने यहूदियों की कोई मदद न की। इधर उनके दिल मरऊ़ब हो गये तो उन्होंने दरख़्वास्त की कि ऐ अल्लाह के रसूल! हमारी जान बख़्शी कीजिये, हम मदीना छोड़ जाते हैं लेकिन हम अपना जो माल ऊँटों पर लाद कर ले जा सकें वो हमें दे दिया जाये। आप (ﷺ) ने रहम खाकर उनकी ये दरख़्वास्त मन्ज़ूर फ़रमा ली और ये लोग यहाँ से चले गये। जाते वक़्त अपने दरवाज़ों तक को उखेड़ कर ले गये घरों को गिरा गये और शाम और ख़ैबर में जाकर आबाद हो गये। उनके बाक़ी के माल ख़ास रसूलुल्लाह (ﷺ) के हो गये कि आप (ﷺ) जिस तरह चाहें उन्हें ख़र्च करें। चुनाँचे आप (ﷺ) ने मुहाजिरीने अव्वलीन को ये तक़सीम कर दिया। हाँ अन्सार में से सिर्फ़ दो शख़्सों को यानी सहल बिन हनीफ़ और अबू दुजाना सम्माक बिन ख़रशा (रज़ि.) को दिया। इसलिये कि ये दोनों हज़रात मसाकीन थे। बनू नज़ीर में से सिर्फ़ दो शख़्स मुसलमान हुए जिनके माल उन्हीं के पास रहे एक तो यामीन बिन अ़म्र (रज़ि.) जो अ़म्र बिन हजाश के चाचा के लड़के का लड़का था ये अ़म्र वो है जिसने हुज़ूर (ﷺ) पर पत्थर फेंकने का बेड़ा उठाया था। दूसरे अबू सअ़द बिन वहब (रज़ि.) एक मर्तबा हुज़ूर (ﷺ) ने हज़रत यामीन (रज़ि.) से फ़रमाया कि 'ऐ यामीन! तेरे इस चाचाज़ाद भाई ने देख तो मेरे साथ किस क़द्र बुरा बर्ताव बरता और मुझे नुक़सान पहुँचाने की किस बेबाकी से कोशिश की? हज़रत यामीन (रज़ि.) ने एक शख़्स को कुछ दे करके अ़म्र को क़त्ल करा दिया। सूरह हश्र इसी वाक़िये बनू नज़ीर के बयान में उतरी है। हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) फ़रमाते हैं, जिसे इसमें शक हो कि महशर की ज़मीन शाम का मुल्क है वो इस आयत को पढ़ ले, यहूदियों से जब रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'तुम यहाँ से निकल जाओ।' तो उन्होंने कहा, हम कहाँ जायें। आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'महशर की ज़मीन की तरफ़।' (ज़ईफ़ : कशफ़ुल अस्तार : 3426, अबू सअ़द अल्बक़ाल ज़ईफ़ मुदल्लस, मज्मउ़उज़्ज़वाइद : 10/346)

हज़रत हसन फ़रमाते हैं जब हुज़ूर (ﷺ) ने बनू नज़ीर को जिला वतन किया तो ये अव्वल हशर है और हम भी उसके पीछे ही पीछे हैं। (इब्ने जरीर)

बनू नज़ीर के इन क़िलों का मुहासिरा सिर्फ़ छः दिन रहा था। मुहासिरीन को क़िले की मज़बूती, यहूदियों की ज़्यादती, यकजहती, मुनाफ़िक़ीन की साज़िशें और ख़ुफ़िया चालें वग़ैरह देखकर हर्गिज़ यक़ीन न था कि इस क़द्र जल्द ये क़िला ख़ाली कर देंगे। इधर ख़ुद यहूद भी अपने क़िले की मज़बूती पर नाज़ाँ थे और जानते थे कि वो हर तरह महफ़ूज़ हैं लेकिन अम्रुल्लाह (अल्लाह का हुक्म) ऐसी जगह से आ गया जो उनके ख़्याल में भी न था। यही दस्तूरे इलाही है कि मक्कार अपनी मक्कारी में ही रहते हैं और बेख़बरी में उन पर अ़ज़ाब आ जाता है। उनके

दिलों में रौब छा गया और भला रौब क्यों न छाता, मुहासिरा करने वाले वो थे जिन्हें अल्लाह की तरफ़ से रौब दिया गया था कि दुश्मन महीना भर की राह पर हो और वहीं उसका दिल दहलने लगता था। सलवातुल्लाहि व सलामुहू अलैहि! यहूदी अपने हाथों अपने घरों को बर्बाद करने लगे। छतों की लकड़ी और दरवाज़े ले जाने के लिये तोड़ने-फोड़ने शुरू कर दिये। मुक़ातिल फ़रमाते हैं, मुसलमानों ने भी उनके घर तोड़े इस तरह कि जूँ-जूँ आगे बढ़ते गये उनके जो-जो मकानात वग़ैरह क़ब्ज़े में आते गये, उनको ढहाकर जंग के लिये मैदान हमवार करते रहे। इसी तरह ख़ुद यहूद भी अपने मकान को आगे से तो महफ़ूज़ करते जाते थे और नक़्ब लगाकर निकलने के रास्ते बनाते जाते थे। फिर फ़रमाता है ऐ आँखों वालो! इबरत हासिल करो और अल्लाह से डरो जिसकी लाठी में आवाज़ नहीं। अगर उन यहूदियों के मुक़द्दर में जिलावतनी न होती तो उन्हें इससे भी सख़्त अज़ाब किया जाता, ये क़त्ल होते और क़ैद कर लिये जाते वग़ैरह-वग़ैरह। फिर आख़िरत के बदतरीन अज़ाब भी उनके लिये तैयार हैं। बनू नज़ीर की ये लड़ाई जंगे बद्र के छः माह बाद हुई। माल जो ऊँटों पर लद जायें उन्हें ले जाने की इजाज़त थी मगर हथियार ले जाने की इजाज़त न थी। ये उस क़बीले के लोग थे जिन्हें इससे पहले कभी जिलावतनी हुई ही न थी। बक़ौल हज़रत उरवह बिन ज़ुबैर (रह.) शुरू सूरत से फ़ासिक़ीन तक आयतें इसी वाक़िये के बयान में नाज़िल हुईं हैं। जलाअ के मआना क़त्ल व फ़ना के भी किये गये हैं। हुज़ूर (ﷺ) ने उन्हें जिला वतनी के वक़्त हर तीन आदमियों को एक-एक ऊँट और एक-एक मश्क दी थी। इस फ़ैसले के बाद हुज़ूर (ﷺ) ने हज़रत मुहम्मद बिन मुस्लिमा (रज़ि.) को उनके पास भेजा था और उन्हें इजाज़त दी थी कि तीन दिन में अपना सामान ठीक करके चले जायें। इस दुनियवी अज़ाब के साथ ही उख़रवी अज़ाब का भी बयान हो रहा है कि वहाँ भी उनके लिये हतमी और लाज़िमी तौर पर जहन्नम की आग है। उनकी इस दुर्गत की असली वजह ये है कि उन्होंने अल्लाह तआला का और उसके रसूल (ﷺ) का ख़िलाफ़ किया और एक ऐतिबार से तमाम नबियों को झुठलाया इसलिये कि हर नबी ने आप (ﷺ) की बाबत पेशिनगोई की थी। ये लोग आप (ﷺ) को पूरी तरह जानते थे बल्कि औलाद को उनका बाप जिस क़द्र पहचानता है उससे भी ज़्यादा ये लोग नबीए आख़िरुज़्ज़माँ (ﷺ) को जानते थे लेकिन ताहम सरकशी और हसद की वजह से माना नहीं। बल्कि मुक़ाबले पर तुल गये और ये ज़ाहिर बात है कि अल्लाह तआला भी अपने मुख़ालिफ़ों पर सख़्त अज़ाब नाज़िल फ़रमाता है। लीनत कहते हैं अच्छी खजूरों के दरख़्तों को अजवा और बरनी जो खजूर की क़िस्में हैं। बक़ौल कुछ वो लीनह में दाख़िल नहीं और कुछ कहते हैं सिर्फ़ अजवा नहीं और कुछ कहते हैं हर क़िस्म की खजूरें इसमें दाख़िल हैं। (अत्तबरी : 23/268)

बुवेरा भी दाख़िल है। यहूदियों ने जो बतौरे तअ़ना के कहा था कि खजूरों के दरख़्त कटवाकर अपने क़ौल के ख़िलाफ़ काम करके ज़मीन में क्यों फ़साद फैलाते हो? ये उसका जवाब है कि जो कुछ हो रहा है वो हुक्मे रब है और इजाज़ते इलाही से अल्लाह तआला के दुश्मनों को ज़लील व नाकाम करने और उन्हें पस्त व बदनसीब करने के लिये हो रहा है। जो दरख़्त बाक़ी रखे जायें वो इजाज़त से और जो काटे जाते हैं वो भी मस्लिहत के साथ। (अत्तबरी : 23/2271)

ये भी मरवी है कि कुछ मुहाजिरीन ने कुछ को उन दरख़्तों के काटने से मना किया था कि आख़िर को

तो ये मुसलमानों को बतौरे माले ग़नीमत मिलने वाले हैं फिर उन्हें क्यों काटा जाये? जिस पर ये आयत उतरी कि रोकने वाले भी हक़ बजानिब हैं और काटने वाले भी बरहक़ हैं। (अत्तबरी : 23/2271)

उनकी निय्यत मुसलमानों के नफ़ा की है और उनकी निय्यत काफ़िरों को ग़ैज़ व ग़ज़ब में लाने और उन्हें उनकी शरारत का मज़ा चखाने की है और ये भी इरादा है कि उससे जल कर वो गुस्से में बिफर कर मैदान में आ जायें तो फिर दो-दो हाथ हो जायें और आदाए (दुश्मनाने) दीन को कैफ़र किरदार तक पहुँचा दिया जाये। सहाबा (रज़ि.) ने ये काम करने को तो कर लिया फिर डरे कि ऐसा न हो काटने में या बाक़ी छोड़ने में अल्लाह की तरफ़ से कोई पकड़ हो। तो उन्होंने हुज़ूर (ﷺ) से पूछा और ये आयत नाज़िल हुई यानी दोनों बातों पर अज्र है काटने पर भी और छोड़ने पर भी।'

कुछ रिवायतों में है कि कटवाये भी थे और जलवाये भी थे। बनू क़ुरैज़ा के यहूदियों पर उस वक़्त हुज़ूर (ﷺ) ने एहसान किया और उनको मदीना मुनव्वरा में ही रहने दिया। बिल्आख़िर जब ये भी मुक़ाबले पर आये और मुँह की खाई तो उनके लड़ने वाले मर्द तो क़त्ल किये गये और औरतें और बच्चे और माल मुसलमानों में तक़सीम कर दिये गये। हाँ जो लोग हुज़ूर (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हो गये और ईमान लाये वो बचे रहे। फिर मदीना से तमाम यहूदियों को निकाल दिया। बनू क़ैनुक़ाअ को भी जिनमें से हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम (रज़ि.) थे और बनू हारिसा को भी और कुल यहूदियों को जिला वतन किया। (सहीह बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब हदीस बनी नज़ीर : 4028, सहीह मुस्लिम : 1766)

इन तमाम वाकियात को अरब शाइरों ने अपने अश्आर में भी निहायत ख़ूबी से अदा किया है जो सीरत इब्ने इस्हाक़ में मरवी हैं। ये वाक़िया बक़ौल इब्ने इस्हाक़ (रह.) के उहुद और बीरे मऊना के बाद का है और बक़ौल उरवह (रह.) बद्र के छः महीने बाद का है। वल्लाहु आलम!

وَمَآ اَفَآءَ اللّٰهُ عَلٰى رَسُوْلِهٖ مِنْهُمْ فَمَآ اَوْجَفْتُمْ عَلَيْهِ مِنْ خَيْلٍ وَّلَا رِكَابٍ وَّلٰكِنَّ
اللّٰهَ يُسَلِّطُ رُسُلَهٗ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ ۝۶ مَآ اَفَآءَ اللّٰهُ عَلٰى
رَسُوْلِهٖ مِنْ اَهْلِ الْقُرٰى فَلِلّٰهِ وَ لِلرَّسُوْلِ وَ لِذِى الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنِ
وَابْنِ السَّبِيْلِ ۙ كَىْ لَا يَكُوْنَ دُوْلَةًۢ بَيْنَ الْاَغْنِيَآءِ مِنْكُمْ ؕ وَمَآ اٰتٰىكُمُ الرَّسُوْلُ
فَخُذُوْهُ ۚ وَمَا نَهٰىكُمْ عَنْهُ فَانْتَهُوْا ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ۝۷

तर्जुमा : ''उनका जो माल अल्लाह तआला ने अपने रसूल के हाथ लगाया है जिस पर न तो तुमने अपने घोड़े दौड़ाये हैं और न ऊँट बल्कि अल्लाह तआला अपने रसूल को जिस पर चाहे ग़ालिब कर देता है और अल्लाह तआला हर चीज़ पर क़ादिर है। (6) जो माल बस्तियों वालों का अल्लाह तआला तुम्हारे लड़े-भिड़े बग़ैर अपने रसूल के हाथ लगाये वो अल्लाह ही का है और रसूल का और क़राबत वालों का और यतीमों-मिस्कीनों का और मुसाफ़िरों का है ताकि तुम्हारे दौलतमन्दों के हाथ में ही ये माल भी न रह जाये, तुम्हें जो कुछ रसूल दे, ले लो और जिससे रोके रुक जाओ और अल्लाह तआला से डरते रहा करो, अल्बत्ता अल्लाह तआला सख़्त अज़ाब करने वाला है।'' (7)

माले फ़ैय की तफ़्सील (आयत : 6-7) : फ़ैय किस माल को कहते हैं? इसकी सिफ़त क्या है? इसका हुक्म क्या है? ये सब बयान यहाँ हो रहा है। पस फ़ैय काफ़िरों के उस माल को कहते हैं जो उनसे लड़े-भिड़े बग़ैर मुसलमानों के क़ब्ज़े में आ जाये जैसे बनू नज़ीर का ये माल था जिसका ज़िक्र ऊपर गुज़र चुका कि मुसलमानों ने अपने घोड़े या ऊँट नहीं दौड़ाये थे यानी उन कुफ़्फ़ार से आमने-सामने कोई मुक़ाबला और लड़ाई नहीं हुई बल्कि उनके दिल अल्लाह ने अपने रसूल की हैबत से भर दिये और वो अपने क़िले ख़ाली कर गये। जो क़ब्ज़े में आ गये, उसे फ़ैय कहते हैं और ये माल हुज़ूर का हो गया। आप जिस तरह चाहें उसमें ख़र्च करें। पस आप (ﷺ) ने नेकी और सिला के कामों में उसे ख़र्च किया जिसका बयान इसके बाद वाली और दूसरी आयत में है। पस फ़रमाता है कि बनू नज़ीर का जो माल बतौरे फ़ैय के अल्लाह तआला ने अपने रसूल को दिलवाया जिस पर मुसलमानों ने अपने घोड़े या ऊँट दौड़ाये न थे बल्कि सिर्फ़ अल्लाह ने अपने फ़ज़्ल से अपने रसूल को उस पर ग़ल्बा दे दिया था और अल्लाह तआला पर ये क्या मुश्किल है? वो तो हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है न उस पर किसी का ग़ल्बा, न उसे कोई रोकने वाला। बल्कि सब पर ग़ालिब वही, सब उसके ताबेअ फ़रमान। फिर फ़रमाया कि जो शहर इस तरह पर फ़तह किये जायें उनके माल का यही हुक्म है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) उसे अपने क़ब्ज़े में करेंगे फिर उन्हें देंगे जिनका बयान इस आयत में है और इसके बाद वाली आयत में है। ये है फ़ैय के माल का मस्रफ़ और उसके ख़र्च का हुक्म। चुनाँचे हदीस में है कि बनू नज़ीर के माल बतौरे फ़ैय के ख़ास रसूलुल्लाह (ﷺ) के हो गये थे। आप (ﷺ) उसमें से अपने घर वालों का साल भर का ख़र्च देते थे और जो बचा रहता उसे आलाते जंग और सामाने हरब में ख़र्च करते।' (सहीह बुख़ारी, किताबुल जिहाद, बाब अलमजिन्न वमंय्यततर्रसु बितरसि साहिबिही : 2904, सहीह मुस्लिम : 1757, अबू दाऊद : 2965, तिर्मिज़ी : 1719, अहमद : 1/25)

अबू दाऊद में हज़रत मालिक बिन औस (रज़ि.) से मरवी है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) ने मुझे दिन चढ़े बुलाया। मैं घर गया तो देखा कि आप (रज़ि.) एक चोकी पर जिस पर कोई कपड़ा वग़ैरह न था बैठे हुए हैं। मुझे देखकर फ़रमाया, तुम्हारी क़ौम के चंद लोग आये हैं, मैंने उन्हें कुछ दिया है तुम उसे लेकर उनमें तक़सीम कर दो। मैंने कहा, अच्छा होता अगर जनाब किसी और को ये काम सौंपते। आप

(रज़ि.) ने फ़रमाया, नहीं तुम ही करो। मैंने कहा, बहुत बेहतर। इतने में आपका दारोग़ा यरफ़ा आया और कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन! हज़रत उ़समान बिन अफ़्फ़ान, हज़रत अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़, हज़रत ज़ुबैर बिन अ़वाम और हज़रत सअ़द बिन अबी वक़्क़ास (रज़ि.) तशरीफ़ लाये हैं, क्या उन्हें इजाज़त है? आप (रज़ि.) ने फ़रमाया, हाँ आने दो। चुनाँचे ये हज़रात तशरीफ़ लाये। यरफ़ा फिर आया और कहा, अमीरुल मोमिनीन! हज़रत अ़ब्बास और हज़रत अ़ली (रज़ि.) इजाज़त तलब कर रहे हैं। आपने फ़रमाया, इजाज़त है। ये दोनों हज़रात भी तशरीफ़ लाये। हज़रत अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन! मेरा और इनका फ़ैसला कीजिये यानी हज़रत अ़ली (रज़ि.) का। तो पहले जो चार बुज़ुर्ग आये थे उनमें से भी कुछ ने कहा, हाँ अमीरुल मोमिनीन! इन दोनों बुज़ुर्गों के दरम्यान फ़ैसला कर दीजिये और इन्हें राहत पहुँचाइये। हज़रत मालिक (रज़ि.) फ़रमाते हैं, उस वक़्त मेरे दिल में ख़्याल आया कि उन चार बुज़ुर्गों को उन दोनों हज़रात ने ही अपने से पहले यहाँ भेजा है। हज़रत उ़मर (रज़ि.) ने फ़रमाया, ठहरो। फिर उन चारों की तरफ़ मुतवज्जह होकर फ़रमाया, तुम्हें उस अल्लाह की क़सम जिसके हुक्म से आसमान व ज़मीन क़ायम हैं क्या तुम्हें मालूम है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया है, 'हमारा विरसा बांटा नहीं जाता हम जो कुछ छोड़ जायें वो सदक़ा है।' उन चारों ने इसका इक़रार किया। फिर आप (रज़ि.) उन दोनों की तरफ़ मुतवज्जह हुए और इसी तरह क़सम देकर उनसे भी यही सवाल किया और उन्होंने भी इक़रार किया। फिर आप (रज़ि.) ने फ़रमाया, अल्लाह तआ़ला ने अपने रसूल (ﷺ) के लिये एक ख़ास्सा किया था जो और किसी के लिये न था। फिर आप (रज़ि.) ने यही आयत वमा अफ़ाअल्लाहु पढ़ी और फ़रमाया, 'बनू नज़ीर के माल अल्लाह तआ़ला ने बतौर फ़ैय के अपने रसूल (ﷺ) को दिये थे। अल्लाह की क़सम! न तो मैंने तुम पर इसमें किसी को तरजीह दी और न ख़ुद ही इसे सबका सब ले लिया। रसूलुल्लाह (ﷺ) अपना और अपनी अहल का साल भर का ख़र्च इसमें से ले लेते थे और बाक़ी बैतुल माल के कर देते थे। फिर उन चार बुज़ुर्गों को इसी तरह क़सम देकर पूछा कि क्या तुम्हें ये मालूम है? उन्होंने कहा, हाँ। फिर उन दोनों से क़सम देकर पूछा और उन्होंने भी हाँ कही। फिर फ़रमाया, हुज़ूर (ﷺ) के फ़ौत होने के बाद अबू बकर (रज़ि.) वाली बने और तुम दोनों ख़लीफ़ए रसूल के पास आये, ऐ अ़ब्बास! तुम तो अपनी क़राबतदारी जताकर अपने चाचाज़ाद भाई के माल में से अपना वरसा तलब करते थे और ये यानी हज़रत अ़ली (रज़ि.) अपना हक़ जताकर अपनी बीवी यानी हज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) की तरफ़ से उनके वालिद के माल से वरसा तलब करते थे जिसके जवाब में तुम दोनों से हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ (रज़ि.) ने फ़रमाया, रसूलुल्लाह (ﷺ) का फ़रमान है, 'हमारा वरसा नहीं बांटा जाता हम जो छोड़ जायें वो सदक़ा है।' अल्लाह ख़ूब जानता है कि हज़रत अबू बकर (रज़ि.) यक़ीनन रास्तगो नेककार रुश्दो-हिदायत वाले और ताबेअ़ हक़ थे। चुनाँचे इस माल की विलायत हज़रत सिद्दीक़ (रज़ि.) ने की। आप (रज़ि.) फ़ौत हो जाने के बाद आप (रज़ि.) का और रसूलुल्लाह (ﷺ) का ख़लीफ़ा मैं बना और वो माल मेरी विलायत में रहा। फिर आप दोनों के दोनों एक सुलह से मेरे पास आये और मुझसे उसे माँगा जिसके जवाब में मैंने कहा कि अगर तुम इस शर्त से इस माल को अपने क़ब्ज़े में लो कि जिस तरह रसूलुल्लाह इसे ख़र्च करते थे तुम भी करते रहोगे तो मैं तुम्हें सौंप देता हूँ। तुमने इस बात को क़ुबूल किया और

अल्लाह को बीच में रखकर तुमने इस माल की विलायत की। फिर तुम जो अब आये हो तो क्या इसके सिवा कोई और फ़ैसला चाहते हो? क़सम अल्लाह की! क़यामत तक इसके सिवा इसका कोई फ़ैसला नही कर सकता, हाँ ये हो सकता है कि अगर तुम अपने वादे के मुताबिक़ इस माल की निगरानी और इसका ख़र्च नहीं कर सकते तो तुम इसे फिर लौटा दो (ताकि मैं आप इसे उसी तरह ख़र्च करूँ जिस तरह रसूलुल्लाह (ﷺ) करते थे और जिस तरह ख़िलाफ़ते सिद्दीक़ी में और अब तक होता रहा)। (सहीह बुख़ारी, किताब फ़रज़ुल ख़ुमुस, बाब फ़रज़ुल ख़ुमुस : 3094, सहीह मुस्लिम : 1757, अबू दाऊद : 2963, तिर्मिज़ी : 1610, इब्ने हिब्बान : 6608)

मुस्नद अहमद में है कि लोग नबी (ﷺ) को अपने खजूरों के दरख़्त वग़ैरह दे दिया करते थे। यहाँ तक कि बनू क़ुरैज़ा और बनू नज़ीर के अम्वाल आपके क़ब्ज़े में आये तो आप (ﷺ) ने उन लोगों को उनके दिये हुए माल वापस देने शुरू किये। हज़रत अनस (रज़ि.) को भी उनके घर वालों ने आप (ﷺ) की ख़िदमत में भेजा कि हमारा दिया हुआ भी सब या जितना चाहें हमें वापस कर दें। अनस (रज़ि.) ने जाकर हुज़ूर को याद दिलाया। आपने वो सब वापस करने को फ़रमाया, लेकिन आप (ﷺ) ये सब हज़रत उम्मे ऐमन (रज़ि.) को अपनी तरफ़ से दे चुके थे। उन्हें जब मालूम हुआ कि ये सब मेरे क़ब्ज़े से निकल जायेगा तो उन्होंने आकर मेरी गर्दन में कपड़ा डाल दिया और मुझसे फ़रमाने लगीं, अल्लाह की क़सम जिसके सिवा कोई माबूद नहीं! हज़रत तुझे ये नहीं देंगे आप (ﷺ) तो मुझे वो सब कुछ दे चुके। हुज़ूर (ﷺ) ने फ़रमाया, 'उम्मे ऐमन तुम घबराओ नहीं हम तुम्हें इसके बदले इतना-इतना देंगे।' लेकिन वो न मानी और यही कहे गईं। आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'अच्छा और इतना-इतना हम तुम्हें दे देंगे लेकिन वो अब भी ख़ुश न हुईं और वही फ़रमाती रहीं। आप (ﷺ) ने फिर फ़रमाया, 'लो हम तुम्हें इतना-इतना और देंगे यहाँ तक कि जितना उन्हें दे रखा था उससे जब तक़रीबन दस गुना ज़्यादा देने का वादा रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया तब आप राज़ी होकर ख़ामोश हो गईं और हमारा माल हमें मिल गया। (सहीह बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब मरजउन्नबी (ﷺ) मिनल अहज़ाब : 4120, सहीह मुस्लिम : 1771, अहमद : 3/319, मुस्नद अबी यअ़ला : 4079, इब्ने हिब्बान : 4505)

ये फ़ैय का माल जिन पाँच जगहों में ख़र्च होगा यही जगहें ग़नीमत के माल के ख़र्च करने की भी हैं और सूरह अन्फ़ाल में इनकी पूरी तशरीह व तौज़ीह के साथ कामिल तफ़्सीर अल्हम्दुलिल्लाह गुज़र चुकी है इसलिये हम यहाँ बयान नहीं करते।

फिर फ़रमाता है कि माले फ़ैय कि ये मसारिफ़ हमने इसलिये वज़ाहत के साथ बयान कर दिये हैं कि ये मालदारों के हाथ लगकर कहीं उनका लुक़्मा न बन जाये कि अपनी मनमानी ख़्वाहिशों के मुताबिक़ वो उसे उड़ायें और मिस्कीनों के हाथ न लगे। फिर फ़रमाता है कि जिस काम के करने को मेरे पैग़म्बर तुमसे कहें तुम उसे करो और जिस काम से वो तुम्हें रोकें तुम उससे रुक जाओ। यक़ीन मानो कि जिसका वो हुक्म करते हैं वो भलाई का काम होता है और जिससे वो रोकते हैं वो बुराई का काम होता है। इब्ने अबी हातिम में है कि एक औरत

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) के पास आई और कहा आप (रज़ि.) गूदने से यानी चमड़े पर या हाथों पर औरतें सूई वग़ैरह से गुदवाकर जो तिलों की तरह निशान वग़ैरह बना लेती हैं उससे और बालों में बाल मिला लेने से जो औरतें अपने बालों को लम्बा ज़ाहिर करने के लिये करती हैं उससे मना फ़रमाते हैं तो क्या ये मुमानिअ़त किताबुल्लाह में है या हदीसे रसूल (ﷺ) में? आप (रज़ि.) ने फ़रमाया, किताबुल्लाह में भी और हदीसे रसूलुल्लाह (ﷺ) में भी, दोनों में इस मुमानिअ़त को पाता हूँ। उस औरत ने कहा, अल्लाह की क़सम! दोनों लौहों के दरम्यान जिस क़द्र कुरआन में है मैंने सब पढ़ा है और ख़ूब देखभाल की है लेकिन मैंने तो कहीं इसकी मुमानिअ़त को नहीं पाया। आप (रज़ि.) ने फ़रमाया, क्या तुमने आयत मा उरीदु अन उख़ालिफ़कुम इला मा अन्हाकुम अ़न्हु नहीं पढ़ी? उसने कहा, हाँ ये तो पढ़ी है। फ़रमाया, (कुरआन से साबित हुआ कि हुक्मे रसूल और मुमानिअ़ते रसूल क़ाबिले अ़मल हैं अब सुनो) ख़ुद मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना है आप (ﷺ) ने गूदने से और बालों में बाल मिलाने से और पेशानी और चेहरे के बाल नोचने से मना फ़रमाया है (ये भी औरतें अपनी ख़ूबसूरती ज़ाहिर करने के लिये करती हैं और इस ज़माने तो मर्द भी बकस़रत करते हैं) उस औरत ने कहा, हज़रत ये तो आप (ﷺ) की घर वालियाँ भी करती हैं। आपने फ़रमाया, जाओ देखो। वो गईं और देखकर आईं और कहने लगीं, हज़रत माफ़ कीजिये ग़लती हुई इन बातों में से कोई बात आप (रज़ि.) के घराने वालियों में मैंने नहीं देखी। आप (रज़ि.) ने फ़रमाया, क्या तुम भूल गईं कि अल्लाह के नेक बन्दे (हज़रत शुऐब) ने क्या फ़रमाया था, मा उरीदु अन् उख़ालिफ़कुम यानी 'मैं ये नहीं चाहता कि तुम्हें जिस चीज़ से रोकूँ ख़ुद मैं उसका ख़िलाफ़ करूँ।' (सूरह हूद : 88, अहमद : 1/415-416, ज़ईफ़, क़तादा सईद बिन अबी उ़रूब मुदल्लसान व अ़न्अ़ना, मुअ़जम अल्कबीर : 9468)

मुस्नद अहमद और बुख़ारी व मुस्लिम में है कि हज़रत इब्ने मसऊ़द (रज़ि.) ने फ़रमाया, 'अल्लाह लानत भेजता है उस औरत पर जो गुदवाये और गूदे और जो अपनी पेशानी के बाल ले और जो ख़ूबसूरती के लिये अपने सामने के दाँतों की कुशादगी करे और अल्लाह तआ़ला की बनाई हुई पैदाइश को बदलना चाहे। ये सुनकर बनू असद की एक औरत जिनका नाम उम्मे याक़ूब था आपके पास आई और पूछा कि आपने इस तरह फ़रमाया है? आप (रज़ि.) ने जवाब दिया कि हाँ उस पर लानत क्यों न करूँ जिस पर अल्लाह के रसूल (ﷺ) ने लानत की है? और जो कुरआन में मौजूद है। उसने कहा, मैंने पूरा कुरआन जितना भी दोनों पुट्ठों के दरम्यान है अव्वल से आख़िरत तक पढ़ा है लेकिन मैंने तो ये हुक्म कहीं नहीं पाया। आप (रज़ि.) ने फ़रमाया, 'अगर तुम सोच-समझकर पढ़तीं तो ज़रूर पातीं क्या तुमने आयत मा आताकुमुर्रसूल नहीं पढ़ी? उसने कहा, हाँ ये तो पढ़ी है। फिर आप (रज़ि.) ने वो हदीस़ सुनाई। उसने आप (रज़ि.) के घर वालों की निस्बत कहा, फिर देखकर आईं और उ़ज़्रख़्वाही की। उस वक़्त आप (रज़ि.) ने फ़रमाया, अगर मेरी घर वाली ऐसा करती तो मैं उससे मिलना छोड़ देता। (अहमद : 1/433, सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरह हश्र, बाब व मा आताकुमुर्रसूलु फ़ख़ुज़ूह : 4886, सहीह मुस्लिम : 2125, अबू दाऊद : 4169, तिर्मिज़ी : 2782, इब्ने माजह : 1989)

बुख़ारी व मुस्लिम में हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'जब

मैं तुम्हें कोई हुक्म दूँ तो जहाँ तक तुमसे हो सके उसे बजा लाओ और जब मैं तुम्हें किसी चीज़ से रोकूँ तो तुम रुक जाओगे।' (सहीह बुख़ारी, किताबुल ऐतिसाम, बाब अल्इक़्तिदाउ बिसुननि रसूलुलिल्लाह : 7288, सहीह मुस्लिम : 1331)

नसाई में हज़रत उ़मर और हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से मरवी है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने कद्दू की तोंबी में और सब्ज़ ठलिया में और खजूर की लकड़ी के कुरेदे हुए बर्तन में और राल की रंगी हुई ठलिया में नबीज़ बनाने से यानी खजूर या किशमिश वग़ैरह के भिगो कर रखने से मना फ़रमाया। फिर इसी आयत की तिलावत की। (सहीह : नसाई, किताबुल अशरिबा, बाब ज़िक्रुद्दलालति अ़लन्नही लिल्मौसूफ़ मिनल औइयह : 5646, इसके अ़लावा ये रिवायत सहीह मुस्लिम : 1997, अबू दाऊद : 3690 में आयत के बग़ैर मौजूद है।) (याद रहे कि ये हुक्म अब बाक़ी नहीं, मुतर्जिम!)

फिर फ़रमाता है कि अ़ज़ाबों से बचने के लिये उसके अहकाम बजा लाओ और उसकी मम्नूआ़त से बचते रहो, याद रखो कि उसकी नाफ़रमानी, मुख़ालिफ़त इंकार करने वालों की और उसके मना किये हुए कामों के करने वालों को वो सख़्त सज़ा देता है और दुख की मार मारता है।

***

لِلْفُقَرَآءِ الْمُهٰجِرِيْنَ الَّذِيْنَ اُخْرِجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ وَاَمْوَالِهِمْ يَبْتَغُوْنَ فَضْلًا مِّنَ
اللّٰهِ وَرِضْوَانًا وَّيَنْصُرُوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ؕ اُولٰٓئِكَ هُمُ الصّٰدِقُوْنَ ۚ﴿۸﴾ وَالَّذِيْنَ تَبَوَّءُ
الدَّارَ وَالْاِيْمَانَ مِنْ قَبْلِهِمْ يُحِبُّوْنَ مَنْ هَاجَرَ اِلَيْهِمْ وَلَا يَجِدُوْنَ فِيْ صُدُوْرِهِمْ
حَاجَةً مِّمَّآ اُوْتُوْا وَيُؤْثِرُوْنَ عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ وَلَوْ كَانَ بِهِمْ خَصَاصَةٌ ؕۛ وَمَنْ يُّوْقَ شُحَّ
نَفْسِهٖ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ۚ﴿۹﴾ وَالَّذِيْنَ جَآءُوْ مِنْۢ بَعْدِهِمْ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَا اغْفِرْ
لَنَا وَلِاِخْوَانِنَا الَّذِيْنَ سَبَقُوْنَا بِالْاِيْمَانِ وَلَا تَجْعَلْ فِيْ قُلُوْبِنَا غِلًّا لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا
رَبَّنَآ اِنَّكَ رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ۚ﴿۱۰﴾

तर्जुमा : "(फ़ैय का माल) उन मुहाजिर मिस्कीनों के लिये है जो अपने घरों से और अपने मालों

से निकाल दिये गये हैं वो अल्लाह के फ़ज़्ल और उसकी रज़ामन्दी के तलबगार हैं और अल्लाह तआला की और उसके रसूल की मदद करते हैं, यही रास्तबाज़ लोग हैं। (8) और उनके लिये जिन्होंने इस घर में (यानी मदीना में) और ईमान में उनसे पहले जगह बना ली है अपनी तरफ़ हिजरत करके आने वालों से मुहब्बत करते हैं और मुहाजिरीन को जो कुछ दे दिया जाये उससे वो अपने दिलों में कोई तंगी नहीं रखते बल्कि ख़ुद अपने ऊपर उन्हें तरजीह देते हैं गो ख़ुद को कितनी ही सख़्त हाजत हो, बात ये है कि जो भी अपने नफ़्स की हिर्स से बचें वही कामयाब और बामुराद हैं। (9) और उनके लिये जो उनके बाद आयें जो कहेंगे कि ऐ हमारे परवरदिगार! हमें बख़्श दे और हमारे उन भाइयों को भी जो हमसे पहले ईमान ला चुके हैं और ईमानदारों की तरफ़ से हमारे दिल में कीना और दुश्मनी न डाल, ऐ हमारे रब! बेशक तू शफ़क़त मेहरबानी करने वाला है। (10)"

मुहाजिरीन और अन्सार के फ़ज़ाइल (आयत : 8-10) : ऊपर बयान हुआ था कि फ़ैय का माल यानी काफ़िरों का जो मुसलमानों के क़ब्ज़े में मैदाने जंग में लड़े-भिड़े बग़ैर आ गया हो उसके मालिक रसूलुल्लाह हैं। फिर आप (ﷺ) ये माल किसे देंगे? उसका बयान भी ऊपर हुआ था। अब इन आयतों में भी उन्ही मुस्तहिक़ीन का मज़ीद बयान हो रहा है कि उसके हक़दार वो ग़रीब मुहाजिर हैं जिन्होंने अल्लाह को रज़ामन्द करने के लिये अपनी क़ौम को नाराज़ कर लिया, यहाँ तक कि उन्हें अपना वतने अज़ीज़ और अपने हाथ का मुश्किलों से जमा किया हुआ माल वग़ैरह सब छोड़-छाड़ कर चल देना पड़ा। अल्लाह के दीन की और उसके रसूल (ﷺ) की मदद में बराबर मशग़ूल हैं। अल्लाह के फ़ज़्ल व ख़ुश्नूदी के मुतलाशी हैं, यही सच्चे लोग हैं जिन्होंने अपना काम अपने क़ौल के मुताबिक़ कर दिखाया। ये औसाफ़े सादात मुहाजिरीन (रज़ि.) में थे। फिर अन्सार की मदह बयान हो रही है और उनकी फ़ज़ीलत शराफ़त करम और बुज़ुर्गी का इज़हार हो रहा है, उनकी कुशादा दिली, नेक नफ़्सी, ईसार व सख़ावत का ज़िक्र हो रहा है कि उन्होंने मुहाजिरीन से पहले ही दारुल हिज्रत मदीना में अपनी बूदो-बाश रखी और ईमान पर क़ियाम रखा। मुहाजिरीन के पहुँचने से पहले ही ये ईमान ला चुके थे बल्कि बहुत से मुहाजिरीन से भी पहले ये ईमानदार बन चुके थे।

सहीह बुख़ारी में इस आयत की तफ़्सीर के मौक़े पर ये रिवायत है कि हज़रत उमर (रज़ि.) ने फ़रमाया, मैं अपने बाद के ख़लीफ़ा को वसिय्यत करता हूँ कि मुहाजिरीने अव्वलीन के हक़ अदा करता रहे, उनकी ख़ातिर मदारात में कमी न करे और मेरी वसिय्यत है कि अन्सार के साथ भी नेकी और भलाई करे जिन्होंने मदीना में जगह बनाई और ईमान में जगह हासिल की, उनके भले लोगों की भलाइयाँ क़ुबूल करे और उनकी ख़ताओं से दरगुज़र और चश्मपोशी करे। (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर सूरह हश्र, बाब वल्लज़ीन तबव्वउद्दार वल्ईमान : 4888)

उनकी शराफ़ते तबई मुलाहिज़ा हो कि जो भी राहे इलाही में हिज्रत करके आये ये अपने दिल में उसे

घर देते हैं और अपना जान व माल उन पर निसार करना अपना फ़ख़्र जानते हैं। मुस्नद अहमद में है कि मुहाजिरीन ने एक मर्तबा कहा, ऐ अल्लाह के रसूल! हमने तो दुनिया में इन अन्सार जैसे लोग नहीं देखे, थोड़े में से थोड़ा और बहुत में से बहुत बराबर हमें दे रहे हैं, मुद्दतों से हमारा कुल ख़र्च उठा रहे हैं बल्कि नाज़बरदारियाँ कर रहे हैं और कभी चेहरे पर शिकन भी नहीं बल्कि ख़िदमत करते हैं और ख़ुश होते हैं, देते हैं और एहसान नहीं रखते, काम-काज ख़ुद करें और कमाई हमें दें, हुज़ूर हमें तो डर है कि कहीं हमारे आमाल का सारा-सारा अज्र उन्हीं को न मिल जाये। आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'नहीं-नहीं! जब तक तुम उनकी सना और तारीफ़ करते रहोगे और उनके लिये दुआयें माँगते रहोगे।' (सहीह : अहमद : 3/200-201, तिर्मिज़ी : 2487)

सहीह बुख़ारी में है कि आँहज़रत ने अन्सारियों को बुलाकर फ़रमाया, 'मैं बहरैन का इलाक़ा तुम्हारे नाम लिख देता हूँ।' उन्होंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल! जब तक आप (ﷺ) हमारे मुहाजिर भाइयों को भी इतना ही न दें हम इसे न लेंगे। आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'अच्छा अगर नहीं लेते तो देखो आइन्दा भी सब्र करते रहना, मेरे बाद ऐसा वक़्त भी आयेगा कि औरों को दिया जायेगा और तुम्हें छोड़ दिया जायेगा।' (सहीह बुख़ारी, किताब मनाक़िबुल अन्सार, बाब क़ौलुन्नबी : लिल्अन्सारि इस्बिरू हत्ता तुल्क़ूनी अलल हौज़ : 3794)

सहीह बुख़ारी की और हदीस में है कि अन्सारियों ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल! हमारे खजूरों के बाग़ात हममें और हमारे भाइयों में तक़सीम कर दीजिये। आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'नहीं।' फिर फ़रमाया, 'सुनो! काम-काज भी तुम ही करो और हम सबको तो पैदावार में शरीक रखो।' अन्सार ने जवाब दिया, ऐ अल्लाह के रसूल! हमें ये भी बख़ुशी मन्ज़ूर है।' (सहीह बुख़ारी, किताबुल हर्स वल्मुज़ारिअह, बाब इज़ा क़ाल अक्फ़िना मऊनतुन्नख़्ल वग़ैरिही : 2325)

फिर फ़रमाता है ये अपने दिलों में कोई हसद उन मुहाजिरीन की क़द्रो-मन्ज़िलत और ज़िक्र व मर्तबत पर नहीं करते, जो उन्हें मिल जाये उन्हें उस पर रश्क नहीं होता। इसी मतलब पर इस हदीस की दलालत भी है जो मुस्नद अहमद में हज़रत अनस (रज़ि.) की रिवायत से मरवी है कि हम लोग रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास बैठे हुए थे कि आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'देखो अभी एक जन्नती शख़्स आने वाला है।' थोड़ी देर में एक अन्सारी अपने बायें हाथ में अपनी जूतियाँ लिये हुए ताज़ा वुज़ू करके आ रहे थे। दाढ़ी पर से पानी टपक रहा था। दूसरे दिन भी इसी तरह हम बैठे हुए थे कि आप (ﷺ) ने यही फ़रमाया। और वही शख़्स उसी तरह आये। तीसरे दिन भी यही हुआ। हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस (रज़ि.) आज देखते भालते रहे और जब मज्लिसे नबवी ख़त्म हुई और ये बुज़ुर्ग वहाँ से उठकर चले तो ये भी उनके पीछे हो लिये और उन अन्सारी से कहने लगे कि हज़रत मुझ में और मेरे वालिद में कुछ तकरार हो गई जिस पर मैं क़सम खा बैठा हूँ कि तीन दिन तक अपने घर नहीं जाऊँगा। पस अगर आप मेहरबानी फ़रमाकर मुझे इजाज़त दें तो मैं ये तीन दिन आपके यहाँ गुज़ार दूँ। उन्होंने कहा, बहुत अच्छा। चुनाँचे हज़रत अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने ये तीन रातें उनके घर उनके साथ गुज़ारीं। देखा कि वो रात को तहज्जुद की लम्बी नमाज़ भी नहीं पढ़ते सिर्फ़ इतना करते हैं कि जब आँख खुले अल्लाह

तआला का ज़िक्र और उसकी बड़ाई अपने बिस्तर पर ही लेटे-लेटे कर लेते हैं यहाँ तक कि सुबह की नमाज़ के लिये उठें। हाँ ये ज़रूरी बात थी कि मैंने उनके मुँह से सिवाय कलिम-ए-ख़ैर के और कुछ नहीं सुना। जब तीन रातें गुज़र गईं तो मुझे उनका अमल बहुत ही हल्का सा मालूम होने लगा। अब मैंने उसे कहा कि हज़रत दरअसल न तो मेरे और मेरे वालिद के दरम्यान कोई ऐसी बातें हुई थीं, न मैंने नाराज़ी के बाइस घर छोड़ा था बल्कि वाक़िया ये हुआ कि तीन मर्तबा आँहज़रत (ﷺ) ने फ़रमाया, 'अभी एक जन्नती शख़्स आ रहा है।' और तीनों मर्तबा आप ही आये। तो मैंने इरादा किया कि आप (रज़ि.) की ख़िदमत में कुछ दिन रह कर देखूँ तो सही कि आप (रज़ि.) ऐसी कौनसी इबादतें करते हैं जो जीते जी बज़बाने रसूल (ﷺ) के जन्नती होने की यक़ीनी ख़बर हम तक पहुँच गई। चुनाँचे मैंने ये बहाना किया और तीन रात तक आपकी ख़िदमत में रहा ताकि आपके आमाल देखकर मैं भी वैसे ही अमल शुरू कर दूँ लेकिन मैंने तो आप (रज़ि.) को न तो कोई नया और अहम अमल करते हुए देखा न इबादत में ही औरों से ज़्यादा बढ़ा हुआ देखा। अब जा रहा हूँ लेकिन ज़बानी एक सवाल है कि आप ही बताइये आख़िर वो कौनसा अमल है जिसने आपको पैग़म्बरे इलाही की ज़बानी जन्नती बनाया? आपने फ़रमाया, 'बस तुम मेरे आमाल को देख चुके इनके सिवा और कोई ख़ास पौशीदा अमल तो है नहीं।' चुनाँचे उनसे रुख़सत होकर चला थोड़ी ही दूर निकला था जो उन्होंने मुझे आवाज़ दी और फ़रमाया, 'हाँ! मेरा एक अमल सुनते जाओ वो ये कि मेरे दिल में कभी किसी मुसलमान से धोखेबाज़ी, हसद और बुग़्ज़ का इरादा भी नहीं हुआ मैं कभी किसी मुसलमान का बदख़्वाह नहीं बना।' हज़रत अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने ये सुनकर फ़रमाया कि बस अब मालूम हो गया, इसी अमल ने आपको इस दर्जे तक पहुँचाया है और यही वो चीज़ है जो हर एक के बस की नहीं। (सहीह : अहमद : 3/166, व सनदहू सहीह व अख़्तअ बअज़ुन्नास फ़ज़अ़अफ़हुस्सुननुल कुबरा : 10699, मुसन्नफ़ अब्दुर्रज़्ज़ाक़ : 20559, शौबुल ईमान : 6605, मुस्नद बज़्ज़ार : 1981)

इमाम नसाई (रह.) अपनी किताब अमलुल यौम वल्लैलह में इस हदीस़ को लाये हैं। ग़र्ज़ ये है कि उन अन्सार में ये वस्फ़ था कि मुहाजिरीन को अगर कोई माल वग़ैरह दिया जाये और उन्हें न मिले तो ये बुरा नहीं मानते थे। बनू नज़ीर के माल जब मुहाजिरीन ही में तक़सीम हुए तो किसी अन्सारी ने इसमें कलाम किया जिस पर आयत वमा अफ़ाअल्लाहु उतरी। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़रमाया, 'तुम्हारे मुहाजिर भाई भी माल व औलाद छोड़कर तुम्हारी तरफ़ आते हैं।' अन्सार ने कहा, फिर हुज़ूर हमारा माल उनमें और हममें बराबर बांट दीजिये। आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'इससे भी ज़्यादा ईस़ार कर सकते हो?' उन्होंने कहा, जो हुज़ूर का इरशाद हो। आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'मुहाजिर खेत और बाग़ात का काम नहीं जानते तुम आप अपने माल को क़ब्ज़े में रखो ख़ुद काम करो, ख़ुद बाग़ात में मेहनत करो और पैदावार में इन्हें शरीक कर दो।' अन्सार ने इसे भी बकुशादा पेशानी मन्ज़ूर कर लिया। (अत्तबरी : 23/283)

फिर फ़रमाता है कि बावजूद ख़ुद को हाजत होने के भी अपने दूसरे भाइयों की हाजत को मुक़द्दम रखते हैं, अपनी ज़रूरत ख़्वाह बाक़ी रह जाये लेकिन और मुसलमान की ज़रूरत जल्द पूरी हो जाये ये उनकी हर वक़्त की चाहत है। एक सहीह हदीस़ में भी है, 'जिसके पास कमी और क़िल्लत हो ख़ुद को ज़रूरत हो और फिर भी

सदक़ा करे उसका सदक़ा अफ़ज़ल और बेहतर है।' (अबू दाऊद, किताबुल वित्र, बाब तूलुल क़ियाम: 1449 वसनद हसन, नसाई : 2527, अहमद : 2/358, सहीह इब्ने ख़ुज़ैमा : 2444, इब्ने हिब्बान : 3346, हाकिम : 1/414)

ये दर्जा उन लोगों के दर्जे से भी बढ़ा हुआ है जिनका ज़िक्र और जगह है कि माल की चाहत के बावजूद वो उसे अल्लाह की राह में ख़र्च करते हैं लेकिन ये लोग तो ख़ुद अपनी हाजत होते हुए सर्फ़ करते हैं, मुहब्बत होती है और हाजत नहीं होती उस वक़्त का ख़र्च इस दर्जे को नहीं पहुँच सकता कि ख़ुद को ज़रूरत हो और फिर भी राहे लिल्लाह दे देना। हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ (रज़ि.) का सदक़ा इसी क़िस्म से है कि आपने अपना कुल माल लाकर अल्लाह के रसूल (ﷺ) के सामने ढेर लगा दिया। आप (ﷺ) ने पूछा भी कि अबू बकर कुछ बाक़ी भी रख आये हो? जवाब दिया, अल्लाह और उसके रसूल को बाक़ी रख आया हूँ। (अबू दाऊद, किताबुज़्ज़कात, बाब अर्रुख़्सतु फ़ी ज़ालिक : 1678, व सनदुहू हसन, तिर्मिज़ी : 3675, हाकिम : 1/414)

इसी तरह वो वाक़िया है जो जंगे यरमूक में हज़रत इक्रिमा (रज़ि.) और उनके साथियों को पेश आया था कि मैदाने जिहाद में ज़ख़्म ख़ुरदा पड़े हुए हैं, रेत और मिट्टी ज़ख़्मों में भर रही है, कराह रहे हैं, तड़प रहे हैं, सख़्त तेज़ धूप पड़ रही है, प्यास के मारे हलक़ चटख़ रहा है इतने में एक मुसलमान कन्धे पर मश्क लटकाये आ जाता है और उन मज्रूह मुजाहिदीन के सामने पेश करता है लेकिन एक कहता है इस दूसरे को पहले पिलाओ, दूसरा कहता है इस तीसरे को पहले पिलाओ। वो अभी तीसरे तक पहुँचता भी नहीं जो एक शहीद हो जाता है दूसरे को देखता है कि वो भी प्यासा ही चल बसा, तीसरे के पास आता है लेकिन देखता है वो भी सूखे होंटों ही अल्लाह से जा मिला। (ज़ईफ़ : हाकिम : 3/242)

अल्लाह तआ़ला उन बुज़ुर्गों से ख़ुश हो और उन्हें भी अपनी ज़ात से ख़ुश रखे। सहीह बुख़ारी में है कि एक शख़्स रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास आया और कहा, ऐ अल्लाह के रसूल! मैं सख़्त हाजतमन्द हूँ मुझे कुछ खिलवाइये। आप (ﷺ) ने और लोगों से कहा कि कोई है जो आज की रात इन्हें अपना मेहमान रखे? एक अन्सारी उठ खड़े हुए और कहा, हुज़ूर मैं इन्हें अपना मेहमान रखूँगा। चुनाँचे ये ले गये और अपनी बीवी से कहा, देखो ये रसूलुल्लाह के मेगहमान हैं। आज गो हमें कुछ भी खाने को न मिले लेकिन ये भूखे न रहें। बीवी साहिबा ने कहा, आज घर में भी बरकत है। बच्चों के लिये अल्बत्ता कुछ टुकड़े रखे हुए हैं। अन्सारी ने कहा, अच्छा बच्चों को बहला-फुसला कर भूखा सुला दो और हम तुम दोनों अपने पेट पर कपड़ा बांध कर फ़ाक़े से रात गुज़ार देंगे, खाते वक़्त चिराग़ बुझा देना ताकि मेहमान ये समझे कि हम खा रहे हैं और दर असल हम खायेंगे नहीं। चुनाँचे ऐसा ही किया। जब ये अन्सारी शख़्स रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास आये तो आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'इस शख़्स के और इसकी बीवी के रात के अ़मल से अल्लाह तआ़ला ख़ुश हुआ और हँस दिया।' इन्ही के बारे में आयत व युअ्सिरून अल्अख़ नाज़िल हुई। सहीह मुस्लिम की रिवायत में उस अन्सारी का नाम भी है यानी हज़रत अबू तलहा (रज़ि.)। (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरह हश्र बाब क़ौलुहू व युअ्सिरून अ़ला अन्फ़ुसिहिम : 4889, सहीह मुस्लिम : 2054, तिर्मिज़ी : 3304)

फिर फ़रमाता है जो अपने नफ़्स की बख़ीली हिर्स और लालच से बच गया उसने निजात पाई। मुस्नद

अहमद और मुस्लिम में है रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़रमाते हैं, 'लोगो ज़ुल्म से बचो, क़यामत के दिन ये ज़ुल्म अन्धेरियाँ बन जायेगा। लोगो! बख़ीली और हिर्स से बचो, यही वो चीज़ है जिसने तुमसे पहले लोगों को बर्बाद कर दिया, इसी की वजह से उन्होंने ख़ूनेज़ियाँ कीं और हराम को हलाल बना लिया।' (सहीह मुस्लिम, किताबुल बिर्र वस्सिलह, बाब तहरीमुज़्ज़ुल्म : 2578, अहमद : 3/323)

और सनद से ये भी मरवी है कि फ़हश (बेहयाई) से बचो अल्लाह तआ़ला फ़हश बातों और बेहयाई के कामों को नापसंद फ़रमाता है। हिर्स और बख़ीली की मज़म्मत में ये अल्फ़ाज़ भी हैं कि इसी के बाइस़ अगलों ने ज़ुल्म किये, फ़िस्क़ व फुजूर किये और क़तअ रहमी की। (सहीह : अबू दाऊद, किताबुज़्ज़कात, बाब अश्शुह्ह : 1698, व सनदहू सहीह, अहमद : 2/159-160)

अबू दाऊद वग़ैरह में है कि 'अल्लाह की राह का गुबार और जहन्नम का धुवाँ किसी बन्दे के पेट में जमा हो ही नहीं सकता। इसी तरह बख़ीली और ईमान भी किसी बन्दे के दिल में जमा नहीं हो सकते।' (हसन : नसाई, किताबुल जिहाद, बाब फ़ज़्लु मन अ़मिल फ़ी सबीलिल्लाह अ़ला क़दमिही : 3114, अल्अदबुल मुफ़रद : 281, हाकिम : 2/72, अहमद : 2/342, इब्ने हिब्बान : 3251)

यानी राहे इलाही की गर्द जिस पर पड़ी वो जहन्नम से आज़ाद हो गया और जिस के दिल में बख़ीली ने घर कर लिया उसके दिल में ईमान के रहने की गुंजाइश ही नहीं रहती। हज़रत अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) के पास आकर एक शख़्स ने कहा, ऐ अबू अ़ब्दुर्रहमान! मैं तो हलाक हो गया। आप (रज़ि.) ने फ़रमाया, क्या बात है? कहा, क़ुरआन में तो है जो अपने नफ़्स की बख़ीली से बचा लिया गया उसने फ़लाह पा ली और मैं तो माल को बड़ा रोकने वाला हूँ, ख़र्च करते हुए दिल रुकता है। आप (रज़ि.) ने फ़रमाया, 'इस कन्जूसी का ज़िक्र इस आयत में नहीं, यहाँ मुराद बख़ीली से ये है कि तू अपने किसी मुसलमान भाई का माल ज़ुल्म से खा जाये, हाँ बख़ीली बमआ़ना कन्जूसी भी है बहुत बुरी चीज़। (ज़ईफ़ : हाकिम : 2/490, सुफ़ियान स़ोरी अ़न्अ़न)

हज़रत अबुल हियाज असदी (रह.) फ़रमाते हैं कि बैतुल्लाह का तवाफ़ करते हुए मैंने देखा कि एक साहब सिर्फ़ यही दुआ पढ़ रहे हैं अल्लाहुम्-म क़िनी शुह्ह नफ़्सी ऐ अल्लाह! मुझे मेरे नफ़्स की हिर्स व आज़ से बचा ले। आख़िर मुझसे न रहा गया मैंने कहा, आप सिर्फ़ यही दुआ क्यों माँग रहे हैं? उसने कहा, जब इससे बचाव हो गया तो फिर न ज़िनाकारी हो सकेगी, न चोरी, न कोई और बुरा काम। अब जो मैंने देखा तो वो हज़रत अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ (रज़ि.) थे। (इब्ने जरीर)

एक हदीस़ में है, 'जिसने ज़कात अदा की और मेहमानदारी की और अल्लाह की राह के ज़रूरी कामों में दिया वो अपने नफ़्स की बख़ीली से दूर हो गया।' (ज़ईफ़ : अत्तबरी : 23/286, इसकी सनद में इस्माईल बिन अ़य्याश है जिसकी शामियों के अ़लावा रिवायत ज़ईफ़ होती है।)

फिर माले फ़ैय के मुस्तहिक़ीन लोगों की तीसरी क़िस्म का बयान हो रहा है कि अन्सार और

मुहाजिरीन के फ़ुक़रा के बाद उनके ताबेअ़ जो उनके बाद के लोग हैं उनमें के मसाकीन भी उस माल के मुस्तहिक़ हैं जो अल्लाह तआ़ला से अपने से अगले या ईमान वालों के लिये मग़्फ़िरत की दुआ़यें करते रहते हैं। जैसे कि सूरह बराअत में है, वस्साबिक़ूनल अव्वलू-न मिनल् मुहाजिरी-न वल्अन्सारि वल्लज़ीनत्तबऊ़हुम बिइह्सानिर्रज़ियल्लाहु अ़न्हुम व रज़ू अ़न्हु (सूरह तौबा 9 : 100) 'अव्वल-अव्वल सबक़त करने वाले मुहाजिर व अन्सार और उनके बाद के वो लोग जो एहसान में उनके मुत्तबिअ़ हैं अल्लाह तआ़ला उन सब से ख़ुश है और ये सब अल्लाह तआ़ला से राज़ी हैं।'

यानी ये बाद के लोग उन अगलों के आसारे हसना और औसाफ़े जमीला की इत्तिबाअ़ करने वाले और उन्हें नेक दुआ़ओं से याद रखने वाले हैं गोया ज़ाहिर-बातिन उनके ताबेअ़ हैं। इस दुआ से हज़रत इमाम मालिक ने कितना पाकीज़ा इस्तिदलाल किया है कि राफ़िज़ी को माले फ़ैय से इमामे वक़्त कुछ न दे क्यों कि वो अस्हाबे रसूल के लिये दुआ करने की बजाए उन्हें गालियाँ देते हैं। हज़रत आ़इशा सिद्दीक़ा (रज़ि.) फ़रमाती हैं, उन लोगों को देखो किस तरह क़ुरआन का ख़िलाफ़ करते हैं, क़ुरआन हुक्म देता है कि मुहाजिर व अन्सार के लिये दुआ़यें करें और ये गालियाँ देते हैं, फिर यही आयत आप (रज़ि.) ने तिलावत फ़रमाई। (इस मआ़ना की रिवायत सहीह मुस्लिम, किताबुत्तफ़्सीर : 3022 में भी मौजूद है।)

और रिवायत में इतना और भी है कि मैंने तुम्हारे नबी (ﷺ) से सुना है कि 'ये उम्मत ख़त्म न होगी यहाँ तक कि इनके पिछले इनके पहलों को लानत करेंगे।' (बग़वी)

अबू दाऊद में है कि हज़रत उ़मर (रज़ि.) ने फ़रमाया, मा अफ़ाअल्लाहु आयत में जिस माले फ़ैय का बयान है वो तो ख़ास रसूलुल्लाह का है। इसी तरह उसके बाद की आयत मिन अह्लिल् क़ुरा वाली ने आ़म कर दिया है, तमाम मुसलमानों को इसमें शामिल कर लिया है, अब एक मुसलमान भी ऐसा नहीं जिसका हक़ इस माल में न हो सिवाय तुम्हारे ग़ुलामों के। (ज़ईफ़ : अबू दाऊद, किताबुल ख़िराज, बाब फ़ी सिफ़ाया रसूलिल्लाह मिनल अम्वाल : 2966, सनद मुन्क़तअ़ है। इमाम ज़ोहरी ने हज़रत उ़मर रज़ि. से कुछ नहीं सुना।) इस हदीस़ की सनद में इन्क़िताअ़ है।

इब्ने जरीर में है हज़रत उ़मर फ़ारूक़ (रज़ि.) ने इन्नमस्सदक़ातु लिल्फ़ुक़राइ को हकीम तक पढ़कर फ़रमाया, माले ज़कात के मुस्तहिक़ तो ये लोग हैं। फिर वअ्लमू अन्नमा ग़निम्तुम वाली पूरी आयत को पढ़कर फ़रमाया, माले ग़नीमत के मुस्तहिक़ ये लोग हैं फिर ये आयत मा अफ़ाअल्लाहु पढ़कर फ़रमाया, माले फ़ैय के मुस्तहिक़ीन को बयान फ़रमाते हुए, इस आयत ने तमाम मुसलमानों को इस माले फ़ैय का मुस्तहिक़ कर दिया है, सब इसके मुस्तहिक़ हैं। अगर मैं ज़िन्दा रहा तो तुम देखोगे कि गांव-गोठ के चरवाहे को भी इसका हिस्सा दूँगा जिसकी पेशानी पर उस माल के हासिल करने के लिये पसीना तक न आया हो। (अत्तबरी : 23/276)

***

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ نَافَقُوْا يَقُوْلُوْنَ لِاِخْوَانِهِمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ
لَىِٕنْ اُخْرِجْتُمْ لَنَخْرُجَنَّ مَعَكُمْ وَلَا نُطِيْعُ فِيْكُمْ اَحَدًا اَبَدًا ۙ وَّاِنْ قُوْتِلْتُمْ
لَنَنْصُرَنَّكُمْ ؕ وَاللّٰهُ يَشْهَدُ اِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ⑪ لَىِٕنْ اُخْرِجُوْا لَا يَخْرُجُوْنَ مَعَهُمْ ۚ
وَلَىِٕنْ قُوْتِلُوْا لَا يَنْصُرُوْنَهُمْ ۚ وَلَىِٕنْ نَّصَرُوْهُمْ لَيُوَلُّنَّ الْاَدْبَارَ ۫ ثُمَّ لَا يُنْصَرُوْنَ
⑫ لَاَنْتُمْ اَشَدُّ رَهْبَةً فِيْ صُدُوْرِهِمْ مِّنَ اللّٰهِ ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَفْقَهُوْنَ ⑬ لَا
يُقَاتِلُوْنَكُمْ جَمِيْعًا اِلَّا فِيْ قُرًى مُّحَصَّنَةٍ اَوْ مِنْ وَّرَآءِ جُدُرٍ ؕ بَاْسُهُمْ بَيْنَهُمْ
شَدِيْدٌ ؕ تَحْسَبُهُمْ جَمِيْعًا وَّقُلُوْبُهُمْ شَتّٰى ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَعْقِلُوْنَ ⑭
كَمَثَلِ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ قَرِيْبًا ذَاقُوْا وَبَالَ اَمْرِهِمْ ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ⑮
كَمَثَلِ الشَّيْطٰنِ اِذْ قَالَ لِلْاِنْسَانِ اكْفُرْ ۚ فَلَمَّا كَفَرَ قَالَ اِنِّيْ بَرِيْٓءٌ مِّنْكَ اِنِّيْٓ
اَخَافُ اللّٰهَ رَبَّ الْعٰلَمِيْنَ ⑯ فَكَانَ عَاقِبَتَهُمَآ اَنَّهُمَا فِي النَّارِ خَالِدَيْنِ فِيْهَا ؕ
وَذٰلِكَ جَزٰٓؤُا الظّٰلِمِيْنَ ⑰

तर्जुमा : ''क्या तूने मुनाफ़िक़ों को न देखा? कि अपने अहले किताब काफ़िर भाइयों से कहते हैं अगर तुम जलावतन किये गये तो अल्लाह की क़सम हम भी तुम्हारे साथ वतन छोड़ देंगे और तुम्हारे बारे में हम कभी भी किसी की बात न मानेंगे और अगर तुमसे जंग की जायेगी तो बख़ुदा हम तुम्हारी मदद करेंगे, लेकिन अल्लाह तआला की गवाही है कि ये क़त्अन झूठे हैं। (11) अगर वो जलावतन किये गये तो ये उनके साथ न जायेंगे और अगर उनसे जंग छिड़ गई तो ये

उनकी मदद भी न करेंगे और अगर बिल्फ़र्ज़ मदद पर आ भी गये तो भी पीठ मोड़ कर भाग खड़े होंगे फिर मदद न किये जायेंगे। (12) मुसलमानो! यक़ीन मानो कि तुम्हारी हैबत उनके दिलों में बनिस्बत अल्लाह के बहुत ज़्यादा है, इसलिये कि ये बेसमझ लोग हैं। (13) ये सब मिलकर भी तुमसे लड़ नहीं सकते हाँ ये और बात है कि क़िलाबन्द मक़ामात में हों या दीवारों की आड़ में हों, उनकी लड़ाई तो उनमें आपस में ही बहुत कुछ है। गो तू उन्हें मुत्तफ़िक़ समझ रहा है लेकिन उनके दिल दरअसल एक से एक जुदा हैं। इसलिये कि ये बेअक़्ल लोग हैं। (14) उन लोगों की तरह जो इनसे कुछ ही पहले गुज़रे हैं जिन्होंने अपने गुनाहों का वबाल चख लिया और जिनके लिये अल्मनाक अ़ज़ाब तैयार हैं। (15) शैतान की तरह कि उसने इंसान से कहा, कुफ़्र कर! जब वो कर चुका तो कहने लगा, मैं तो तुझसे बेज़ार हूँ मैं तो अल्लाह रब्बुल आलमीन से डरता हूँ। (16) पस दोनों का अन्जाम ये हुआ कि आतिशे दोज़ख़ में हमेशा के लिये गये, गुनहगारों की यही सज़ा है।" (17)

मुनाफ़िक़ों की चालबाज़ियाँ (आयत : 11-17) : अ़ब्दुल्लाह बिन उबय और इसी जैसे मुनाफ़िक़ीन की चालबाज़ियाँ और अ़य्यारी का ज़िक्र हो रहा है कि उन्होंने यहूदियाने बनू नज़ीर को थपक कर झूठा दिलासा दिलाकर ग़लत वादा करके मुसलमानों से भिड़ा दिया, उनसे वादा किया कि हम तुम्हारे साथी हैं लड़ने में तुम्हारी मदद करेंगे और तुम हार गये और मदीना से देश निकाला मिला तो हम भी तुम्हारे साथ इस शहर को छोड़ देंगे, लेकिन बवक़्ते वादा ही ईफ़ा करने की निय्यत न थी और ये भी कि उनमें इतना हौसला भी नहीं कि ऐसा कर सकें, न लड़ाई में उनकी मदद कर सकें, न बुरे वक़्त उनका साथ दें, अगर बदनामी के ख़्याल से मैदान में आ भी जायें तो यहाँ आते ही तीर व तलवार की सूरत देखते ही रोंगटे खड़े हो जायें और नामर्दी के साथ भागते ही बन पड़े। फिर मुस्तक़िल तौर पर पेशिनगोई फ़रमाता है कि उन की तुम्हारे मुक़ाबले में इम्दाद न की जायेगी, ये अल्लाह से भी इतना नहीं डरते जितना तुम से ख़ौफ़ खाते हैं जैसे और जगह भी है, इज़ा फ़रीकुम्-मिन्हुम् यख़्शौनन्नास कख़श्यतिल्लाहि औ अशद्द ख़श्यह (सूरह निसा 4 : 77) 'उनका एक फ़रीक़ लोगों से इतना डरता है जितना अल्लाह से बल्कि उससे भी ज़्यादा, बात ये है कि ये बेसमझ लोग हैं।' इनकी नामर्दी और बुज़दिली की ये हालत है कि ये मैदान की लड़ाई कभी लड़ नहीं सकते हाँ अगर मज़बूत और महफ़ूज़ क़िलों में बैठे हुए हों या मोर्चों की आड़ में छिप कर कुछ कारवाई करने का मौक़ा हो तो ख़ैर बसबबे ज़रूरत के कर गुज़रेंगे लेकिन मैदान में आकर बहादुरी के जौहर दिखाना ये उनसे कोसों दूर है, ये आपस ही में एक-दूसरे के दुश्मन हैं जैसे और जगह है, व युज़ी-क़ बअ़्ज़कुम् बअ़्-स बअ़्ज़िन (सूरह अन्आम 6 : 65) 'कुछ को कुछ से लड़ाई का मज़ा चखाता है, तुम उन्हें शामिल और मुत्तफ़िक़ व मुत्तहिद समझ रहे हो लेकिन दरअसल ये मुतफ़र्रिक़ व अलग अलग हैं।' एक का दिल दूसरे से नहीं मिलता, मुनाफ़िक़ अपनी जगह और अहले किताब अपनी जगह एक दूसरे के दुश्मन हैं। वजह ये है कि बेअ़क़्ल लोग हैं। फिर फ़रमाया उनकी मिसाल उनसे कुछ ही पहले के काफ़िरों जैसी है जिन्होंने यहाँ भी अपने किये का बदला भुगता और वहाँ का भुगतना अभी बाक़ी है। इससे मुराद या तो

कुफ़्फ़ारे क़ुरैश हैं कि बद्र वाले दिन उनकी कमर कुबड़ी हो गई और सख़्त नुक़सान उठाकर कश्तों के पुश्ते छोड़ कर भाग खड़े हुए या बनू क़ैनुक़ाअ़ के यहूद हैं कि वो भी शरारत पर उतर आये। अल्लाह ने उन पर अपने नबी (ﷺ) को ग़ालिब किया और आप (ﷺ) ने उन्हें मदीना से ख़ारिजुल बलद करा दिया। ये दोनों वाक़िये अभी-अभी के हैं और तुम्हारी इबरत का सहीह सबक़ हैं लेकिन उस वक़्त कि कोई इबरत हासिल करने वाला अन्जाम को सोचने वाला हो भी। ज़्यादा मुनासिब मक़ाम बनू क़ैनुक़ाअ़ के यहूद का वाक़िया ही है वल्लाहु आलम!

मुनाफ़िक़ीन के वादों पर उन यहूदियों का शरारत पर आमादा होना और उनके भरे में आकर मुआहिदा तोड़ डालना फिर उन मुनाफ़िक़ीन का उन्हें मौक़े पर काम न आना, न लड़ाई के वक़्त मदद पहुँचाना जलावतनी में साथ देना एक मिसाल से समझाया जाता है कि देखो शैतान भी इसी तरह इंसान को कुफ़्र पर आमादा करता है और जब ये कुफ़्र कर चुकता है तो ख़ुद भी उसे मलामत करने लगता है और अपना अल्लाह वाला होना ज़ाहिर करने लगता है।

एक राहिब का वाक़िया : इसी मिसाल का एक वाक़िया भी सुन लीजिये। बनी इस्राईल में एक आबिद था। साठ साल उसे इबादते इलाही में गुज़र चुके थे। शैतान ने उसे वर्गलाना चाहा लेकिन वो क़ाबू में न आया। उसने एक औरत पर अपना असर डाला और ये ज़ाहिर किया कि गोया उसे जिन्नात सता रहे हैं। इधर उस औरत के भाइयों को ये वस्वसा डाला कि उसका इलाज उसी आबिद से हो सकता है। ये उस औरत को उस आबिद के पास लाये, उसने ईलाज-मुआल्जा यानी दम वग़ैरह करना शुरू किया और ये औरत यहीं रहने लगी। एक दिन आबिद उसके पास ही था जो शैतान ने उसके ख़्यालात ख़राब करने शुरू किये यहाँ तक कि वो ज़िना कर बैठा और वो औरत हामिला हो गई। अब रुस्वाई के ख़ौफ़ से शैतान ने छुटकारे की ये सूरत बतलाई कि इस औरत को मार डाल वरना राज़ खुल जायेगा। चुनाँचे उसने उसे क़त्ल कर डाला। इधर उसने जाकर औरत के भाइयों को शक दिलवाया वो दौड़े हुए आये। शैतान राहिब के पास आया और कहा, वो लोग आ रहे हैं अब इज़्ज़त भी जायेगी और जान भी जायेगी अगर मुझे ख़ुश कर ले और मेरा कहा मान ले तो इज़्ज़त और जान दोनों बच सकते हैं। उसने कहा, जिस तरह तू कहे मैं तैयार हूँ। शैतान ने कहा, मुझे सज्दा कर! आबिद ने उसे सज्दा कर लिया। ये कहने लगा, तुफ़्फ़ है तुझ पर कमबख़्त मैं तो अब तुझसे बेज़ार हूँ मैं तो अल्लाह से डरता हूँ जो रब्बुल आलमीन है।' (हाकिम : 2/484, इब्ने जरीर वस्सियाक़ लहू, व सनदहू हसन)

एक और रिवायत में इस तरह है कि एक औरत बकरियाँ चराया करती थी और एक राहिब की ख़ानक़ाह तले रात गुज़ारा करती थी। उसके चार भाई थे। एक दिन शैतान ने राहिब को गुदगुदाया और उससे ज़िना कर बैठा, उसे हमल रह गया। शैतान ने राहिब के दिल में डाली कि अब बड़ी रुस्वाई होगी इससे बेहतर ये है कि इसे मार डाल और कहीं दफ़न कर दे, तेरे तक़द्दुस को देखते हुए तेरी तरफ़ किसी का ख़्याल भी न जायेगा और अगर बिल्फ़र्ज़ फिर भी कुछ पूछगछ हो तो झूठ-मूठ कह देना। भला कौन है जो तेरी बात को ग़लत जाने उसकी समझ में भी ये बात आ गई। एक रोज़ रात के वक़्त मौक़ा पाकर उस औरत को जान से मार डाला और

किसी उजड़ी जगह ज़मीन में दबा आया। अब शैतान उसके चारों भाइयों के पास पहुँचा और हर एक के ख़्वाब में उसे सारा वाक़िया कह सुनाया और उसके दफ़न की जगह भी बता दी। सुबह जब ये जागे तो एक ने कहा, आज की रात तो मैंने एक अजीब ख़्वाब देखा है हिम्मत नहीं पड़ती कि आप से बयान करूँ। दूसरों ने कहा, नहीं कहो तो सही। चुनाँचे उसने अपना पूरा ख़्वाब बयान किया कि इस तरह फ़लाँ आबिद ने उससे बदकारी की, फिर जब हमल ठहर गया तो उसे क़त्ल कर दिया और फ़लाँ जगह उसकी लाश दबा आया। उन तीनों में से हर एक ने कहा, मुझे भी यही ख़्वाब आया है। अब तो उन्हें यक़ीन हो गया कि सच्चा ख़्वाब है। चुनाँचे उन्होंने जाकर हुकूमत को इत्तिलाअ दी और बादशाह के हुक्म से उस राहिब को उसकी ख़ानक़ाह से साथ लिया और उस जगह पहुँचकर ज़मीन खोदकर उसकी लाश बरामद की। कामिल सुबूत के बाद अब उसे शाही दरबार में ले चले। उस वक़्त शैतान उसके सामने ज़ाहिर होता है और कहता है, ये सब मेरे किये कोतक हैं, अब भी अगर तू मुझे राज़ी कर ले तो जान बचा दूँगा। उसने कहा, जो तू कहे। कहा, मुझे सज्दा कर ले। उसने ये भी कर दिया। पस पूरा बेईमान बनाकर शैतान कहता है, मैं तो तुझसे बरी हूँ, मैं तो अल्लाह से जो तमाम जहानों का रब है, डरता हूँ। चुनाँचे बादशाह ने हुक्म दिया और पादरी साहब को क़त्ल कर दिया गया। मशहूर है कि उस पादरी का नाम बरसीसा था। हज़रत अली, हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.), ताऊस, मुक़ातिल बिन हय्यान (रह.) वग़ैरह से ये क़िस्सा अलग-अलग अल्फ़ाज़ से कमी-बेशी के साथ मरवी है। वल्लाहु आलम!

इसके बरख़िलाफ़ जुरैज आबिद का क़िस्सा है कि एक बदकार औरत ने उन पर तोहमत लगा दी कि उसने मेरे साथ ज़िना किया और ये बच्चा जो मुझे हुआ है वो उसी का है। चुनाँचे लोगों ने हज़रत जुरैज के इबादतख़ाने को घेर लिया और निहायत बेअदबी से ज़दो-कूब करते हुए गालियाँ देते हुए बाहर ले आये और इबादतख़ाने को ढहा दिया। ये बेचारे घबराये हुए हर चंद पूछते हैं कि आख़िर वाक़िया क्या है? लेकिन मज्मअ आपे से बाहर है। आख़िर किसी ने कहा, दुश्मने इलाही औलियाअल्लाह के लिबास में ये शैतानी हरकत? उस औरत से तूने बदकारी की। हज़रत जुरैज ने फ़रमाया, अच्छा ठहरो, सब्र करो! उस बच्चे को लाओ। चुनाँचे वो दूध पीता छोटासा बच्चा लाया गया। हज़रत जुरैज (रह.) ने अपनी इज़्ज़त की बक़ा की अल्लाह से दुआ की, फिर उस बच्चे से पूछा, ऐ बच्चे! बतला तेरा बाप कौन है? उस बच्चे को अल्लाह ने अपने वली की इज़्ज़त बचाने के लिये अपनी क़ुदरत से गोयाई (बोलने) की क़ुव्वत अता फ़रमा दी और उसने साफ़ व फ़सीह ज़बान में ऊँची आवाज़ से कहा, मेरा बाप एक चरवाहा है। ये सुनते ही बनी इस्राईल के होश जाते रहे। ये उस बुज़ुर्ग के सामने उज़्र-मअज़्रत करने लगे, माफ़ी माँगने लगे। उन्होंने कहा, बस अब मुझे छोड़ दो। (इस मआना की रिवायत सहीह बुख़ारी, किताब अहादीसुल अम्बिया, बाब क़ौलुल्लाहि तआला वज़्कुर फ़िल्किताबि मरयम : 3436, सहीह मुस्लिम : 2550, में भी मौजूद हैं।)

लोगों ने कहा, हम आपकी इबादतगाह सोने की बना देते हैं। आपने फ़रमाया, बस उसे जैसी वो थी वैसे ही रहने दो। फिर फ़रमाता है कि आख़िर अन्जाम कुफ़्र के करने और हुक्म देने वाले का यही हुआ कि दोनों हमेशा के लिये जहन्नम वासिल हुए। हर ज़ालिम अपने ज़ुल्म की सज़ा पा ही लेता है।

يَاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَلْتَنْظُرْ نَفْسٌ مَّا قَدَّمَتْ لِغَدٍ ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ۗ اِنَّ
اللّٰهَ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿١٨﴾ وَلَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ نَسُوا اللّٰهَ فَاَنْسٰهُمْ اَنْفُسَهُمْ ۗ
اُولٰٓئِكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ﴿١٩﴾ لَا يَسْتَوِيْٓ اَصْحٰبُ النَّارِ وَاَصْحٰبُ الْجَنَّةِ ۗ اَصْحٰبُ
الْجَنَّةِ هُمُ الْفَآئِزُوْنَ ﴿٢٠﴾

तर्जुमा : "ऐ ईमान वालो! अल्लाह से डरते रहो और हर शख़्स देखभाल ले कि कल (क़यामत) के वास्ते उसने आमाल का क्या ज़ख़ीरा रख छोड़ा है और (हर वक़्त) अल्लाह से डरते रहो, अल्लाह तआला तुम्हारे सब आमाल से बाख़बर है। (18) और तुम उन लोगों की तरह मत हो जाना जिन्होंने अल्लाह (के अहकाम) को भुला दिया तो अल्लाह ने भी ऐसा कर दिया कि वो अपने आपको भूल गये और ऐसे ही लोग नाफ़रमान (फ़ासिक) होते हैं। (19) अहले नार (दोज़ख़ी) और अहले जन्नत आपस में बराबर नहीं जो अहले जन्नत हैं वही कामयाब हैं (और जो अहले नार हैं वो नाकाम)।" (20)

अल्लाह तआला से डरते रहो (आयत : 18-20) : हज़रत जरीर (रज़ि.) फ़रमाते हैं कि हम दिन चढ़े रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर थे कि कुछ लोग आये जो नंगे बदन और खुले पैर थे। सिर्फ़ चादरों या अबाओं से बदन छिपाये हुए। तलवारें गर्दनों में हमाइल किये हुए थे। अक्सर बल्कि कुल के कुल क़बीला मुज़र में से थे। उनकी इस फ़क़्रो-फ़ाक़ा की हालत ने रसूलुल्लाह (ﷺ) के चेहरे की रंगत को मुतग़य्यर (चेंज) कर दिया। आप (ﷺ) घर में गये फिर बाहर आये फिर हज़रत बिलाल (रज़ि.) को अज़ान कहने का हुक्म दिया, अज़ान हुई फिर इक़ामत हुई। आप (ﷺ) ने नमाज़ पढ़ाई फिर ख़ुत्बा शुरू किया और आयत याअय्युहन्नासुत्तक़ू रब्बकुमुल्लज़ी ख़लक़कुम (सूरह निसा 4:1) तिलावत की फिर सूरह हश्र की आयत वल्तन्ज़ुर नफ़्सुम् अल्अख़ पढ़ी और लोगों को ख़ैरात देने की रग़बत दिलाई जिस पर लोगों ने सदक़ा देना शुरू किया। बहुत से दिरहम-दीनार कपड़े-लत्ते, गेहूँ-खजूरें वग़ैरह आ गईं। आप (ﷺ) बराबर तक़रीर किये जाते थे। यहाँ तक कि फ़रमाया, 'अगर आधी खजूर भी दे सकते हो तो ले आओ।' एक अन्सारी एक थेली नक़दी की भरी हुई बहुत वज़नी जिसे बमुश्किल उठा सकते थे ले आये फिर तो लोगों ने ताबड़-तोड़ जो पाया लाना शुरू कर दिया। यहाँ तक कि हर चीज़ के ढेर लग गये और हुज़ूर (ﷺ) का उदास चेहरा अब खिल गया और मिस्ल सोने के चमकने लगा और आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'जो भी किसी इस्लामी कारे ख़ैर को शुरू करे उसे अपना भी और उसके बाद जो भी उस काम को करें सबका बदला मिलता है लेकिन बाद वालों के अज्र घट कर नहीं। इसी तरह जो इस्लाम

में किसी बुरे और ख़िलाफ़े शरअ तरीक़े को जारी करे उस पर उसका अपना गुनाह भी होता है और फिर जितने लोग उस पर कारबंद हों सबको जितना गुनाह मिलेगा उतना ही उसे भी मिलता है, मगर उनके गुनाह घटते नहीं।' (सहीह मुस्लिम, किताबुज़्ज़कात, बाब अल्हिस्स अलस्सदक़ति व लौ बिशिक़्क़ि तम्रतिन : 1017, अहमद : 4/359)

आयत में पहले हुक्म होता है कि अल्लाह तआला के अज़ाबों से बचाव की सूरत पैदा करो यानी उसके अहकाम बजा लाकर और उसकी नाफ़रमानियों से बच कर। फिर फ़रमान है कि वक़्त से पहले अपना हिसाब आप लिया करो, देखते रहो कि क़यामत के दिन जब अल्लाह तआला के सामने पेश होगे तब काम आने वाले नेक आमाल का कितना कुछ ज़ख़ीरा तुम्हारे पास है। फिर ताकीदन इरशाद होता है कि अल्लाह से डरते रहा करो और जान रखो कि तुम्हारे आमाल व अहवाल से अल्लाह तआला पूरा बाख़बर है, न कोई छोटा काम उससे छिपा है न बड़ा, न छिपा न खुला। फिर फ़रमान है कि अल्लाह के ज़िक्र को न भूलो, वरना वो तुम्हें नेक आमाल जो आख़िरत में नफ़ा देने वाले हैं भुला देगा। इसलिये कि हर अमल का बदला उसी की जिन्स से होता है। इसीलिये फ़रमाता है कि यही लोग फ़ासिक़ हैं यानी अल्लाह तआला की इताअत से निकल जाने वाले और क़यामत के दिन नुक़सान पाने वाले और हलाकत में पड़ने वाले यही लोग हैं जैसे और जगह इरशाद है, याअय्युहल्लज़ी-न आमनू ला तुल्हिकुम अम्वालुकुम वला औलादुकुम अन ज़िक्रिल्लाहि वमंय्यफ़अल् ज़ालि-क फ़उलाइ-क हुमुल ख़ासिरून (सूरह मुनाफ़िक़ून 63 : 9) 'मुसलमानो! तुम्हें तुम्हारे माल व औलाद अल्लाह की याद से ग़ाफ़िल न कर दें, जो ऐसा करें वो सख़्त ज़ियाँकार हैं।'

तबरानी में हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ (रज़ि.) के एक ख़ुत्बे का मुख़्तसर सा हिस्सा ये मन्क़ूल है कि आप (रज़ि.) ने फ़रमाया, क्या तुम नहीं जानते कि सुबह-शाम तुम अपने मुक़र्ररह वक़्त की तरफ़ बढ़ रहे हो। पस तुम्हें चाहिये कि अपनी ज़िन्दगी के अवक़ात अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल की फ़रमांबरदारी में गुज़ारो और इस मक़सद को बजुज़ अल्लाह तआला के फ़ज़्ल व करम के सिर्फ़ अपनी ताक़त व क़ुव्वत से कोई हासिल नहीं कर सकता जिन लोगों ने अपनी उम्र अल्लाह तआला की रज़ामन्दी के सिवा और कामों में खपाई उन जैसे तुम न होना। अल्लाह तआला ने तुम्हें उन जैसे बनने से मना फ़रमाया है, वला तकूनू कल्लज़ी-न नसुल्ला-ह फ़अन्साहुम अन्फ़ुसहुम ख़्याल करो कि तुम्हारी जान-पहचान के तुम्हारे भाई आज कहाँ हैं? उन्होंने अपने गुज़िश्ता दिनों में जो आमाल किये थे उनका बदला लेने या उनकी सज़ा भुगतने के लिये वो दरबारे इलाही में जा पहुँचे या तो उन्होंने सआदत और ख़ुशनसीबी पाई या नामुरादी और शक़ावत हासिल कर ली। कहाँ हैं वो सरकश लोग जिन्होंने बारोनक़ शहर बसाये और उनके मज़बूत क़िले खड़े किये। आज वो क़ब्रों के गढ़ों में पत्थरों तले दबे पड़े हैं, ये है किताबुल्लाह क़ुरआन करीम! तुम उस नूर से रोशनी हासिल करो जो तुम्हें क़यामत के दिन की अन्धेरियों में काम आ सके, इसकी ख़ूबी बयान से इबरत हासिल करो और बन-संवर जाओ देखो अल्लाह तआला ने हज़रत ज़करिया (अलै.) और उनके अहले बैत की तारीफ़ बयान करते हुए फ़रमाया, इन्नहुम् कानू युसारिऊ-न फ़िल्ख़ैराति व यदऊनना रग़बंव्-व रहबंव्-व कानू लना ख़ाशिईन (सूरह अम्बिया 21 : 9) 'वो नेक कामों में सबक़त करते थे और बड़ी लालच और

सख़्त ख़ौफ़ के साथ हमसे दुआयें किया करते थे और हमारे सामने झुके जाते थे।'

सुनो वो बात भलाई से ख़ाली है जिससे अल्लाह की रज़ामन्दी मक़सूद न हो, वो माल ख़ैर व बरकत वाला नहीं जो अल्लाह की राह में ख़र्च न किया जाता, वो शख़्स नेकबख़्ती से दूर है जिसकी जहालत बुर्दबारी पर ग़ालिब हो, इसी तरह वो शख़्स भी नेकी से ख़ाली हाथ है जो अल्लाह के अहकाम की तामील में किसी मलामत करने वाले की मलामत से ख़ौफ़ खाये। इसकी इस्नाद बहुत उ़म्दा है और इसके रावी सिक़ह हैं। गो इसके एक रावी नुऐम बिन नमहा सक़ाहत या अ़द्मे सक़ाहत से मअ़रूफ़ नहीं, लेकिन इमाम अबू दाऊद सजिस्तानी (रह.) का ये फ़ैसला काफ़ी है कि जरीर बिन उ़समान (रह.) के तमाम उस्ताद सिक़ह हैं और ये भी आप ही के उस्ताद में से हैं और इस ख़ुत्बे के और शवाहिद भी मरवी है, वल्लाहु आ़लम!

फिर इरशाद होता है कि जहन्नमी और जन्नती अल्लाह तआला के नज़दीक यकसाँ (बराबर) नहीं। जैसे फ़रमान है, अम् हसिबल्लज़ीनज्-तरहुस्सय्यिआति अन्नज्अलहुम् कल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति (सूरह जासिया 45 : 21) 'क्या बदकारों ने ये समझ रखा है कि हम उन्हें बाईमान नेककार लोगों के मिस्ल कर देंगे? उनका जीना और मरना यकसाँ है? उनका ये दावा बिल्कुल ग़लत और बुरा है।'

और जगह है, वमा यस्तविल् अअ्मा वल्बसीरु (सूरह मोमिन : 40 : 57) 'अन्धा और देखता, ईमानदार सालेह और बदकार बराबर नहीं, तुम बहुत ही कम नसीहत हासिल कर रहे हो।'

और फ़रमान है, अम् नज्अलुल्लज़ी-न आमनू (सूरह सॉद 38 : 28) 'क्या हम ईमान लाने वालों और नेक आ़माल करने वालों को फ़सादियों जैसा कर देंगे या परहेज़गारों को मिस्ल फ़ाजिरों के कर देंगे?'

और भी इस मज़्मून की बहुत सी आयतें हैं। मतलब ये है कि नेककार लोगों का इकराम होगा और बदकार लोगों की रुस्वाई होगी। यहाँ भी इरशाद होता है कि जन्नती लोग फ़ाइज़ुल मराम मक़सदवर कामयाब और फ़लाह व निजातयाफ़्ता हैं। अल्लाह अ़ज़्ज़ व जल्ल के अ़ज़ाबों से ये बाल-बाल बच जायेंगे।

***

لَوْ اَنْزَلْنَا هٰذَا الْقُرْاٰنَ عَلٰى جَبَلٍ لَّرَاَيْتَهٗ خَاشِعًا مُّتَصَدِّعًا مِّنْ خَشْيَةِ اللّٰهِ ؕ
وَتِلْكَ الْاَمْثَالُ نَضْرِبُهَا لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُوْنَ ﴿٢١﴾ هُوَ اللّٰهُ الَّذِىْ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا
هُوَ ۚ عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ ۚ هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ ﴿٢٢﴾ هُوَ اللّٰهُ الَّذِىْ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا
هُوَ ۚ اَلْمَلِكُ الْقُدُّوْسُ السَّلٰمُ الْمُؤْمِنُ الْمُهَيْمِنُ الْعَزِيْزُ الْجَبَّارُ الْمُتَكَبِّرُ ؕ سُبْحٰنَ

اللهِ عَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿٢٣﴾ هُوَ اللهُ الْخَالِقُ الْبَارِئُ الْمُصَوِّرُ لَهُ الْأَسْمَاءُ الْحُسْنَىٰ
يُسَبِّحُ لَهُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿٢٤﴾

तर्जुमा : "अगर हम इस क़ुरआन को किसी पहाड़ पर उतारते तो तू देखता कि ख़ौफ़े इलाही से वो पस्त होकर टुकड़े-टुकड़े हो जाता, हम इन मिसालों को लोगों के सामने बयान करते हैं ताकि वो ग़ौर व फ़िक्र करें। (21) वही अल्लाह है जिसके सिवा कोई माबूद नहीं, छिपे-खुले का जानने वाला, बख़्शने और रहम करने वाला। (22) वही है जिसके सिवा कोई माबूद नहीं, बादशाह, निहायत पाक, सब ऐबों से साफ़, अमन देने वाला, निगेहबान, ग़ालिब, ख़ुदमुख़्तार, बड़ाई वाला, पाक है अल्लाह उन चीज़ों से जिन्हें ये उसका शरीक बनाते हैं। (23) वही अल्लाह है पैदा करने वाला, बनाने वाला, सूरत खींचने वाला, उसी के लिये हैं निहायत अच्छे नाम, हर चीज़ चाहे वो आसमानों में हो चाहे ज़मीन में हो उसकी पाकी बयान करती हैं और वही ग़ालिब है हिक्मत वाला।" (24)

क़ुरआन की अज़मत (आयत : 21-24) : क़ुरआन करीम की बुज़ुर्गी बयान हो रही है कि फ़िल्वाक़ेअ ये पाक किताब इस क़द्र बुलंद मर्तबा है कि दिल इसके सामने झुक जायें, रोंगटे खड़े हो जायें, कलेजे कपकपा जायें, इसके सच्चे वादे और इसकी हक़्क़ानी डांट-डपट, हर-हर सुनने वाले को बेद की तरह थर्राये ओर दरबारे इलाही में सर-बसुजूद गिरा दे, अगर ये क़ुरआन जनाबे बारी किसी सख़्त बुलंद और ऊँचे पहाड़ पर भी नाज़िल फ़रमाता और उसे ग़ौर व फ़िक्र की फ़हम व फ़रासत की हिस्स (एहसास) भी देता तो वो भी अल्लाह के ख़ौफ़ से रेज़ा-रेज़ा हो जाता, फिर इंसानों के दिलों पर जो निस्बतन बहुत नर्म और छोटे हैं जिन्हें पूरी समझ-बूझ है इसका बहुत बड़ा असर पड़ना चाहिये। इन मिसालों को लोगों के सामने उनके ग़ौर व फ़िक्र के लिये अल्लाह तआला ने बयान फ़रमा दिया। मतलब ये है कि इंसानों को भी डर और आजिज़ी चाहिये। मुतवातिर हदीस में है कि मिम्बर तैयार होने से पहले रसूलुल्लाह (ﷺ) एक खजूर के तने पर टेक लगाकर ख़ुत्बा पढ़ा करते थे। जब मिम्बर बन गया, बिछ गया और हुज़ूर (ﷺ) उस पर ख़ुत्बा पढ़ने को खड़े हुए और वो तना दूर हो गया तो उसमें से रोने की आवाज़ आने लगी और इस तरह सिस्कियाँ ले-लेकर वो रोने लगा जैसे कोई बच्चा बिलक-बिलक कर रोता हो और उसे चुप कराया जा रहा हो क्योंकि उसे इस ज़िक्रे वह्य के सुनने से कुछ दूरी हो गई।' (सहीह बुख़ारी, किताबुल मनाक़िब, बाब अलामातुन्नुबूव्वत फ़िल्इस्लाम : 3583-3584, तिर्मिज़ी : 505, बैहक़ी : 3/196, दलाइलुन्नुबुव्वह लिल्बैहक़ी : 2/556, इब्ने हिब्बान : 6506)

और इमाम हसन बसरी (रह.) इस हदीस को बयान करके फ़रमाते थे कि लोगो! एक खजूर का तना इस क़द्र अल्लाह के रसूल का शाइक़ हो तो तुम्हें चाहिये कि इससे बहुत ज़्यादा शौक़ और चाहत तुम रखो।

(अबू यअ़ला:2756, इब्ने हिब्बान:6507, सनद ज़ईफ़, हसन बसरी अन्अन व हदीसि तिर्मिज़ी 3631 युग़नी अन्हू)

इसी तरह की ये आयत है कि जब एक पहाड़ का ये हाल हो तो तुम्हें चाहिये कि तुम तो इस हालत में इस से आगे रहो और जगह फ़रमाने इलाही है, वलौ अन्न क़ुरआनन् सुय्यिरत बिहिल् जिबालु (सूरह रअ़द 13 : 31) 'अगर कोई क़ुरआन ऐसा होता कि उसके बाइस पहाड़ चला दिये जायें या ज़मीन काट दी जाये या मुर्दे निकल पड़ें (तो इसके क़ाबिल यही क़ुरआन था) मगर फिर भी उन कुफ़्फ़ार को ईमान नसीब न होता।' और जगह फ़रमाने आलीशान है, व इन्न मिनल् हिजा-रति लिमा य-तफ़ज्जरु मिन्हुल अन्हार (सूरह बक़रह 2 : 74) 'कुछ पत्थर ऐसे हैं जिनमें से नहरें बह निकलती हैं, कुछ वो हैं कि फट जाते हैं और उनमें से पानी निकलता है, कुछ अल्लाह के ख़ौफ़ से गिर पड़ते हैं।' फिर फ़रमाता है, अल्लाह तआ़ला के सिवा न तो कोई पालने वाला और परवरिश करने वाला है, न उसके सिवा किसी की ऐसी ज़ात है कि उसकी किसी क़िस्म की इबादत कोई करे। उसके सिवा जिन-जिनकी लोग परस्तिश और पूजा करते हैं वो सब बातिल हैं, वो तमाम कायनात का इल्म रखने वाला है, जो चीज़ें हम पर ज़ाहिर हैं और जो चीज़ें हमसे पोशीदा हैं सब उस पर ज़ाहिर है, ख़्वाह बड़ी हों यहाँ तक कि अन्धेरियों के ज़र्रे भी उस पर ज़ाहिर हैं। वो इतनी बड़ी वसीअ़ रहमत वाला है कि उसकी रहमत तमाम मख़्लूक़ पर शामिल है, वो दुनिया और आख़िरत में रहमान भी है और रहीम भी है। हमारी तफ़्सीर के शुरू में इन दोनों नामों की पूरी तफ़्सीर गुज़र चुकी है।

क़ुरआन करीम में और जगह है, व रह्मती वसिअ़त् कुल्ल शैइन (सूरह आराफ़ 7 : 156) 'मेरी रहमत ने तमाम चीज़ों को घेर लिया है।' क-त-ब रब्बुकुम् अ़ला नफ़्सिहिर्रहमह (सूरह अन्आम 6 : 54) 'तुम्हारे रब ने अपनी ज़ात पर रहम व रहमत लिख ली है।' क़ुल् बिफ़ज़्लिल्लाहि व बिरह्मतिही फ़बिज़ालिक फ़ल्यफ़रहू हु-व ख़ैरुम्-मिम्मा यज्मऊन (सूरह यूनुस : 58) 'कह दो कि अल्लाह तआ़ला के फ़ज़्ल व रहमत के साथ ख़ुश होना चाहिये, तुम्हारी जमा करदा चीज़ से बेहतर यही है।' उस मालिक रब माबूद के सिवा कोई औसाफ़ वाला नहीं, तमाम चीज़ों का वही मालिक मुख़्तार है, हर चीज़ का हेर-फेर करने वाला, सब पर क़ब्ज़ा और तसर्रुफ़ रखने वाला भी वही है कोई नहीं जो उसकी मुज़ाहिमत या मुदाफ़िअ़त कर सके या उसे मुमानिअ़त कर सके, वो क़ुद्दूस है यानी ज़ाहिर है, मुबारक है, ज़ाती और सिफ़ाती नुक़सानात से पाक है, तमाम बुलंद मर्तबा फ़रिश्ते और सबकी सब आ़ला मख़्लूक़ उसकी तस्बीह व तक़दीस में अ़द्वाम मशग़ूल हैं, कुल ऐबों और नुक़सानों से मुबर्रा और मुनज़्ज़ा है उसका कोई काम हिक्मत से ख़ाली नहीं अपने अफ़आ़ल में भी उसकी ज़ात हर तरह के नुक़सान से पाक है। वो मोमिन है यानी तमाम मख़्लूक़ को उसने इस बात से बेख़ौफ़ रखा है कि उन पर किसी तरह का किसी वक़्त अपनी तरफ़ से ज़ुल्म हो। उसने ये फ़रमाकर कि वो हक़ है सब को अमन दे रखा है। अपने ईमानदारों के ईमान की तस्दीक़ करता है, वो मुहैमिन है यानी अपनी तमाम मख़्लूक़ के कुल आ़माल का हर वक़्त यकसाँ तौर पर शाहिद है और निगेहबान है। जैसे फ़रमान है, वल्लाहु अ़ला कुल्लि शैइन शहीद (सूरह बुरूज) 'अल्लाह तआ़ला हर चीज़ पर शाहिद है।' और फ़रमान है, सुम्मल्लाहु शहीदुन अ़ला मा यफ़्अ़लून (सूरह यूनुस 10 : 46) 'और अल्लाह तआ़ला उनके तमाम कामों पर गवाह है।' और जगह

फ़रमाया, अफ़मन् हु-व क़ाइमुन अ़ला कुल्लि नफ़्सिम्-बिमा कसबत (सूरह रअ़द 13 : 33) 'मतलब ये है कि हर नफ़्स जो कुछ कर रहा है अल्लाह तआ़ला उसे देख रहा है, वो अ़ज़ीज़ है हर चीज़ उसके ताबेअ़ फ़रमान है।' कुल मख़्लूक़ पर वो ग़ालिब है पस उसकी इ़ज़्ज़त, अ़ज़मत, जबरूत की वजह से उसका मुक़ाबला कोई नहीं कर सकता। वो जब्बार और मुतकब्बिर है, जबरिय्यत और तकब्बुर सिर्फ़ उसी की शायाने शान है। सहीह हदीस़ में है, 'अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है, अ़ज़मत मेरा तहबंद है और किब्रियाई मेरी चादर है जो मुझसे इन दोनों में से किसी को छीनना चाहेगा मैं उसे अ़ज़ाब करूँगा।' (सहीह मुस्लिम, किताबुल बिर्र वस्सिलह, बाब तहरीमुल किब्र : 2620, अबू दाऊद : 4090)

अपनी मख़्लूक़ को जिस चीज़ पर चाहे वो रख सकता है। कुल कामों की इस्लाह उसी के हाथ है, वो हर बुराई से नफ़रत और दूरी रखने वाला है। जो लोग कम समझी की वजह से दूसरों को उसका शरीक ठहरा रहे हैं, वो उन सबसे बेज़ार है, उसकी रब्बानी शिरकत से मुबर्रा है। अल्लाह तआ़ला ख़ालिक़ है यानी मुक़द्दर करने वाला। फिर बारी है यानी उसे जारी और ज़ाहिर करने वाला। कोई ऐसा नहीं कि जो तक़दीर और तन्फ़ीज़ दोनों पर क़ादिर हो जो चाहे अन्दाज़ा मुक़र्रर करे और फिर उसी के मुताबिक़ उसे चलाये भी। कभी भी उसमें फ़र्क़ न आने दे। बहुत से तर्तीब देने वाले और अन्दाज़ा करने वाले हैं जो फिर उसे जारी करने और उसी के मुताबिक़ बराबर जारी रखने पर क़ादिर नहीं। तक़दीर के साथ ईजाद और तन्फ़ीज़ पर भी क़ुदरत रखने वाली अल्लाह ही की ज़ात है। पस ख़ल्क़ से मुराद तक़दीर और बुर्अ से मुराद तन्फ़ीज़ है। अ़रब में ये अल्फ़ाज़ इन मआ़नों में बराबर बतौरे मिस़ाल के भी मुरव्वज (प्रचलित) हैं। उसी की शान है कि जिस चीज़ को जब जिस तरह करना चाहे कह देता है हो जा, वो उसी तरह, उसी सूरत में हो जाती है। जैसे फ़रमान है, फ़ी अय्यि सूरतिम्-मा शा-अ रक्कबक (सूरह इन्फ़ितार 82 : 8) 'जिस सूरत में उसने चाहा तुझे तरकीब दी।' इसलिये यहाँ फ़रमाता है, वो मुसव्विर है यानी जिसकी ईजाद जिस तरह की चाहता है कर गुज़रता है।

अल्लाह तआ़ला के अस्माए हुसना का बयान : प्यारे-प्यारे बेहतरीन और बुज़ुर्गतर नामों वाला वही है। सूरह आ़राफ़ में इस जुम्ले की तफ़्सीर गुज़र चुकी है नीज़ वो हदीस़ भी बयान हो चुकी है जो बुख़ारी व मुस्लिम में बरिवायत हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) मरवी है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'अल्लाह तआ़ला के निन्यानवे (99) नाम यानी एक कम एक सौ नाम हैं, जो उन्हें शुमार कर ले, याद रख ले वो जन्नत में दाख़िल होगा। वो वित्र है यानी वाहिद है और इकाई को दोस्त रखता है।' (सहीह बुख़ारी, किताबुद्दअ़वात, बाब लिल्लाहि मिअता इस्म ग़ैरि वाहिदा : 6410, सहीह मुस्लिम : 2677, तिर्मिज़ी : 3506, इब्ने माजह : 3860, अहमद : 2/267, इब्ने हिब्बान : 807)

तिर्मिज़ी में उन नामों की सराहत भी आई है जो नाम ये हैं, अल्लाह कि नहीं कोई माबूद मगर वही रहमान, रहीम, मलिक, क़ुद्दूस, सलाम, मुअ्मिन, मुहैमिन, अ़ज़ीज़, जब्बार, मुतकब्बिर, ख़ालिक़, बारी, मुसव्विर, ग़फ़्फ़ार, वह्हाब, रज़्ज़ाक़, क़ह्हार, फ़त्ताह, अ़लीम, क़ाबिज़, बासित, ख़ाफ़िज़, राफ़िअ, मुइ़ज़्ज़,

मुज़िल्ल, समीअ़, बसीर, हकम, अद्ल, लतीफ़, ख़बीर, हलीम, अ़ज़ीम, ग़फ़ूर, शकूर, अ़ली, कबीर, हफ़ीज़, मुक़ीत, हसीब, जलील, करीम, रक़ीब, मुजीब, वासिअ़, हकीम, वदूद, मजीद, बाइस, शहीद, हक़, वकील, क़वी, मतीन, वली, हमीद, मुहसी, मुबदी, मुहयी, मुमीत, हय्य, क़य्यूम, वाजिद, माजिद, वाहिद, समद, क़ादिर, मुक़्तदिर, मुक़द्दिम, मुअख़्ख़िर, अव्वल, आख़िर, ज़ाहिर, बातिन, वाली, मुतआ़ल, बर्र, तव्वाब, मुन्तक़िम, अ़फ़्व, रऊफ़, मालिकुल मुल्क, ज़ुल्जलालि वल्इकराम, मुक़्सित, जामिअ़, ग़नी, मुग़नी, मुअ़ती, मानिअ़, ज़ार्र, नाफ़िअ़, नूर, हादी, बदीअ़, बाक़ी, वारिस, रशीद, सबूर।' (ज़ईफ़ : तिर्मिज़ी : किताबुद्दअ़वात, बाब हदीस़ फ़ी अस्माइल्लाहिल हुसना : 3507, वलीद बिन मुस्लिम के सिमाअ़ मुसलसल की सराहत नहीं है। इब्ने माजह : 3861, मज़ीद तहक़ीक़ के लिये सूरह आ़राफ़ : 180)

और इसमें कुछ तक़दीम व ताख़ीर, कमी-ज़्यादती भी है। अल्ग़र्ज़ इन तमाम अहादीस़ वग़ैरह का बयान पूरी तरह तफ़्सीर सूरह आ़राफ़ में गुज़र चुका है। इसलिये यहाँ सिर्फ़ इतना लिख देना काफ़ी है, बाक़ी सब को दोबारा वारिद करने की ज़रूरत नहीं। आसमान व ज़मीन की कुल चीज़ें उसकी तस्बीह बयान करती हैं। जैसे और जगह फ़रमान है, तुसब्बिहु लहुस्समावातुस्सब्‌उ वल्अरज़ु वमन् फ़ीहिन्न वइम्-मिन् शैइन इल्ला युसब्बिहु बिहम्दिही वलाकिल्ला तफ़्क़हू-न तस्बीहहुम् इन्नहू का-न का-न हलीमन् ग़फ़ूरा (सूरह बनी इस्राईल 17 : 44) 'उसकी पाकीज़गी बयान करते हैं सातों आसमान और ज़मीनें और उनमें जो मख़्लूक़ है और कोई ऐसी चीज़ नहीं जो उसकी तस्बीह हम्द के साथ बयान न करती हो लेकिन तुम उनकी तस्बीह को समझ नहीं सकते, बेशक वो बुर्दबार और बख़्शिश करने वाला है।' वो अ़ज़ीज़ है, उसकी हिक्मत वाली सरकार अपने अहकाम और तक़दुर के तक़दीर में ऐसी नहीं कि किसी तरह की कमी निकाली जाये या कोई ऐतिराज़ क़ायम किया जा सके। मुस्नद अहमद की हदीस़ में है कि जो शख़्स सुबह को तीन मर्तबा अऊज़ुबिल्लाहिस्समीइल अ़लीमि मिनश्शैतानिर्रजीम पढ़कर सूरह हश्र की आख़िर की इन तीन आयतों को पढ़ ले अल्लाह तआ़ला उसके लिये सत्तर हज़ार फ़रिश्ते मुक़र्रर करता है जो शाम तक उस पर रहमत भेजते हैं, और अगर उसी दिन उसका इन्तिक़ाल हो जाये तो शहादत का मर्तबा पाता है। और जो शख़्स इनकी तिलावत शाम के वक़्त करे वो भी इसी हुक्म में है।' (ज़ईफ़ : तिर्मिज़ी, किताबु फ़ज़ाइलिल क़ुरआन, बाब फ़ी फ़ज़्लि क़िरअति आख़िरि सूरतिल हश्र : 2922 इमाम तिर्मिज़ी रह. इसे ग़रीब बतलाते हैं। अहमद : 5/26)

अल्हम्दुलिल्लाह सूरह हश्र की तफ़्सीर ख़त्म हुई।

***

FLOW CHART
तरतीबी नक्श-ए-रब्त

MACRO-STRUCTURE
नज़्मे-जली

सूरह मुम्तहिना - 60

आयात : 13, मदनी, पैराग्राफ : 4

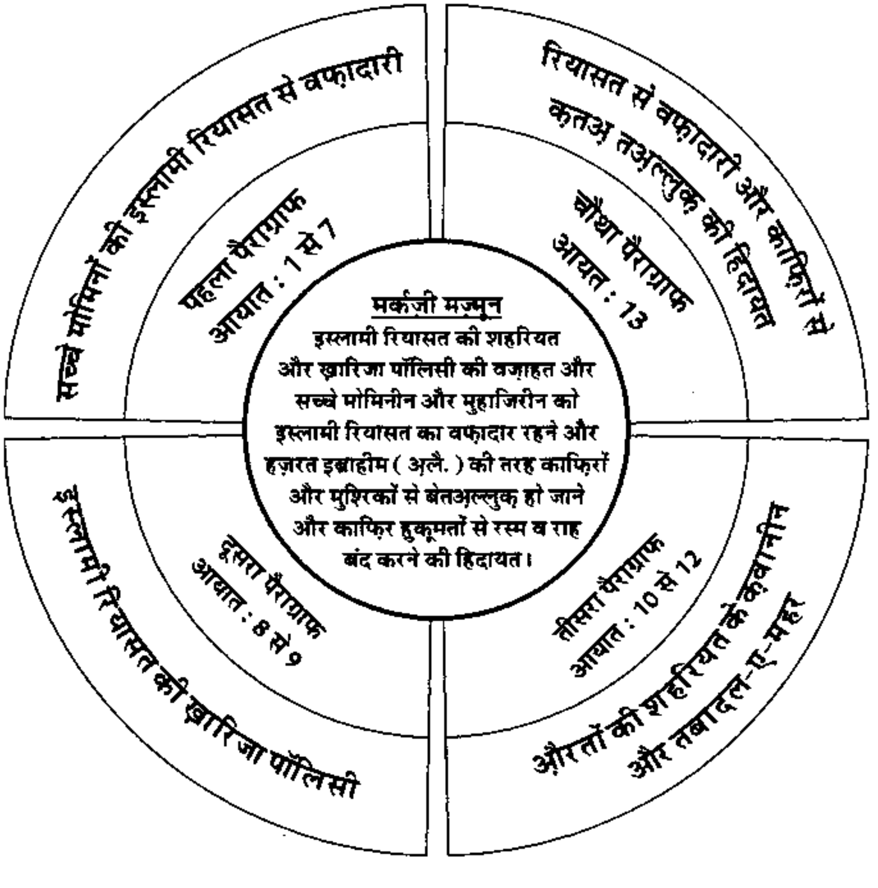

तफ़्सीर सूरह मुम्तहिना

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ ○

तर्जुमा : ''शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है।''

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا لَا تَتَّخِذُوۡا عَدُوِّىۡ وَعَدُوَّكُمۡ اَوۡلِيَآءَ تُلۡقُوۡنَ اِلَيۡهِمۡ بِالۡمَوَدَّةِ
وَقَدۡ كَفَرُوۡا بِمَا جَآءَكُمۡ مِّنَ الۡحَقِّ ۚ يُخۡرِجُوۡنَ الرَّسُوۡلَ وَاِيَّاكُمۡ اَنۡ تُؤۡمِنُوۡا بِاللّٰهِ
رَبِّكُمۡ ؕ اِنۡ كُنۡتُمۡ خَرَجۡتُمۡ جِهَادًا فِىۡ سَبِيۡلِىۡ وَابۡتِغَآءَ مَرۡضَاتِىۡ ۖ تُسِرُّوۡنَ اِلَيۡهِمۡ
بِالۡمَوَدَّةِ ۖ وَاَنَا اَعۡلَمُ بِمَاۤ اَخۡفَيۡتُمۡ وَمَاۤ اَعۡلَنۡتُمۡ ؕ وَمَنۡ يَّفۡعَلۡهُ مِنۡكُمۡ فَقَدۡ ضَلَّ
سَوَآءَ السَّبِيۡلِ ① اِنۡ يَّثۡقَفُوۡكُمۡ يَكُوۡنُوۡا لَكُمۡ اَعۡدَآءً وَّيَبۡسُطُوۡۤا اِلَيۡكُمۡ اَيۡدِيَهُمۡ
وَاَلۡسِنَتَهُمۡ بِالسُّوۡٓءِ وَوَدُّوۡا لَوۡ تَكۡفُرُوۡنَ ؕ ② لَنۡ تَنۡفَعَكُمۡ اَرۡحَامُكُمۡ وَلَاۤ
اَوۡلَادُكُمۡ ۚ يَوۡمَ الۡقِيٰمَةِ ۚ يَفۡصِلُ بَيۡنَكُمۡ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعۡمَلُوۡنَ بَصِيۡرٌ ③

तर्जुमा : ''ऐ वो लोगो जो ईमान लाये! मेरे और ख़ुद अपने दुश्मनों को अपना दोस्त न समझो, तुम तो मुहब्बत की बुनियाद डालने के लिये उनकी तरफ़ पैग़ाम भेजते हो और वो उस हक़ के साथ जो तुम्हारे पास आ चुका है कुफ़्र करते हैं, पैग़म्बर को और ख़ुद तुम्हें भी महज़ इस वजह से जला वतन करते हैं कि अपने परवरदिगार अल्लाह पर ईमान रखते हो, अगर तुम मेरी राह के जिहाद में और मेरी रज़ामन्दी की तलब में निकलते हो (तो उनसे दोस्तियाँ न करो) तुम उनके पास मुहब्बत का पैग़ाम पोशीदा-पोशीदा भेजते हो मुझे ख़ूब इल्म है जो तुमने छिपाया और वो भी जो तुमने ज़ाहिर किया, तुममें से जो भी इस काम को करेगा वो यक़ीनन राहे रास्त से बहक

जायेगा। (1) अगर उन्हें तुम पर कोई दस्तरस का मौक़ा मिल जाये तो वो तुम्हारे खुले दुश्मन हो जायें और बुराई के साथ तुम पर दस्तदराज़ी और ज़बानदराज़ी करने लगें और दिल से चाहने लगें कि तुम भी कुफ़्र करने लग जाओ। (2) तुम्हारी क़राबतें, रिश्तेदारियाँ और औलादें तुम्हें क़यामत के दिन काम न आयेंगी, अल्लाह तआला तुम्हारे दरम्यान फ़ैसला कर देगा और जो कुछ तुम कर रहे हो उसे अल्लाह तआला ख़ूब देख रहा है।" (3)

कुफ़्फ़ार व मुश्रिकीन से दोस्ती न रखो (आयत : 1-3) : हज़रत हातिब बिन अबू बल्तआ (रज़ि.) के बारे में इस सूरत की शुरू की आयतें नाज़िल हुई हैं। वाक़िया ये हुआ कि हातिब (रज़ि.) मुहाजिरीन में से थे। बद्र की लड़ाई में भी आपने मुसलमानों के लश्कर में शिरकत की थी। उनके बाल-बच्चे और माल व दौलत मक्का में ही था और ख़ुद क़ुरैश में से न थे। सिर्फ़ हज़रत उसमान (रज़ि.) के हलीफ़ थे इस वजह से मक्का में उन्हें अमन हासिल था। अब ये रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ मदीना में थे। यहाँ तक कि जब अहले मक्का ने अहद तोड़ दिया और रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उन पर चढ़ाई करनी चाही तो आप (ﷺ) की ख़्वाहिश ये थी कि उन्हें अचानक दबोच लें ताकि ख़ूनेज़ी न होने पाये और मक्का पर क़ब्ज़ा हो जाये। इसीलिये आप (ﷺ) ने अल्लाह तआला से दुआ भी की कि बारी तआला हमारी तैयारी की ख़बरें हमारे पहुँचने तक अहले मक्का को न पहुँचें। इधर आप (ﷺ) ने मुसलमानों को तैयारी का हुक्म दिया। हज़रत हातिब (रज़ि.) ने इस मौक़े पर एक ख़त अहले मक्का के नाम लिखा और एक क़ुरैशिया औरत के हाथ उसे चलता किया। जिसमें रसूलुल्लाह (ﷺ) के इस इरादे और मुसलमानों की लश्करकशी की ख़बर दर्ज थी। आपका इरादा इससे सिर्फ़ ये था कि मेरा कोई एहसान क़ुरैश पर हो जाये जिसके बाइस मेरे बाल-बच्चे और माल व दौलत महफ़ूज़ रहें। चूंकि हुज़ूर (ﷺ) की दुआ क़ुबूल हो चुकी थी नामुम्किन था कि क़ुरैशियों को किसी ज़रिये से भी इस इरादे का इल्म हो जाये इसलिये अल्लाह तआला ने अपने रसूल (ﷺ) को इस पोशीदा राज़ से मुत्तलअ फ़रमा दिया और आप (ﷺ) ने उस औरत के पीछे अपने सवार भेजे। रास्ते में उसे रोका गया और ख़त उससे हासिल कर लिया गया। ये मुफ़स्सल वाक़िया सहीह अहादीस में पूरी तरह आ चुका है।

हज़रत हातिब (रज़ि.) का वाक़िया : मुस्नद अहमद में है हज़रत अली (रज़ि.) ने फ़रमाया, मुझे और ज़ुबैर को और मिक़्दाद को रसूलुल्लाह (ﷺ) ने बुलवाकर फ़रमाया, 'तुम यहाँ से फ़ौरन कूच करो, रोज़ा ख़ाख़ में जब तुम पहुँचोगे तो तुम्हें एक साण्डनी सवार औरत मिलेगी। जिसके पास एक ख़त है तुम उसे क़ब्ज़े में करो और यहाँ ले आओ। हम तीनों घोड़ों पर सवार होकर बहुत तेज़ रफ़्तारी से रवाना हो गये। रोज़ा ख़ाख़ में जब पहुँचे तो फ़िल्वाक़ेअ हमें एक साण्डनी सवार औरत दिखाई दी। हमने उससे कहा कि जो ख़त तेरे पास है वो हमारे हवाले कर, उसने साफ़ इंकार कर दिया कि मेरे पास कोई ख़त नहीं। हमने कहा, ग़लत कहती है तेरे पास ख़त यक़ीनन है अगर तू राज़ी-ख़ुशी न देगी तो हम जामा तलाशी कर के जबरन वो ख़त तुझसे छीनेंगे। अब तो वो औरत सटपटाई और आख़िर उसने अपनी चुटिया खोलकर उसमें से वो पर्चा निकाल कर हमारे हवाले किया। हम उसी

वक़्त वहाँ से वापस रवाना हुए और हुज़ूर (ﷺ) की ख़िदमत में उसे पेश कर दिया। पढ़ने पर मालूम हुआ कि हज़रत हातिब (रज़ि.) ने उसे लिखा है और यहाँ की ख़बर रसानी की है। हुज़ूर (ﷺ) के इरादों से कुफ़्फ़ारे मक्का को आगाह किया है। आप (ﷺ) ने कहा, हातिब ये क्या हरकत है? हज़रत हातिब (रज़ि.) ने फ़रमाया, ऐ अल्लाह के रसूल! जल्दी न कीजिये मेरी भी सुन लीजिये, मैं कुरैशियों में मिला हुआ था ख़ुद कुरैशियों में से न था। फिर आप (ﷺ) पर ईमान लाकर आपके साथ हिज्रत की। जितने और मुहाजिरीन हैं उन सबके क़राबतदार मक्का में मौजूद हैं जो उनके बाल-बच्चे वग़ैरह में रह गये हैं वो उनकी हिमायत करते हैं लेकिन मेरा कोई रिश्तेदार नहीं जो मेरे बच्चों की हिफ़ाज़त करे, इसलिये मैंने चाहा कि आओ कुरैशियों के साथ कोई सुलूक व एहसान कर दो जिससे मेरे बच्चों की हिफ़ाज़त वो करें और जिस तरह औरों के नसब की वजह से उनका ताल्लुक़ है मेरे एहसान की वजह से मेरा ताल्लुक़ हो जाये। ऐ अल्लाह के रसूल! मैंने कोई कुफ़्र नहीं किया, न अपने दीन से मुर्तद हुआ हूँ, न इस्लाम के बाद कुफ़्र से राज़ी हुआ हूँ, बस इस ख़त की वजह सिर्फ़ अपने बच्चों की हिफ़ाज़त का मामला था। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़रमाया, 'लोगो! तुमसे जो वाक़िया हातिब बयान करते हैं वो बिल्कुल हर्फ़-बहर्फ़ सच्चा है कि अपने नफ़ा की ख़ातिर एक ग़लती कर बैठे हैं न कि मुसलमानों को नुक़सान पहुँचाना या कुफ़्फ़ार की मदद करना इनके पेशे नज़र हो। हज़रत उमर फ़ारूक़ (रज़ि.) इस मौक़े पर मौजूद थे और ये वाक़ियात आपके सामने हुआ। आपको बहुत गुस्सा आया और फ़रमाने लगे, ऐ अल्लाह के रसूल! मुझे इजाज़त दीजिये कि इस मुनाफ़िक़ की गर्दन उड़ा दूँ। आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'तुम्हें क्या मालूम नहीं कि ये बद्री सहाबी हैं? और बद्र वालों पर अल्लाह तआला ने झांका और फ़रमाया, 'जो चाहो अमल करो! मैंने तुम्हें बख़्श दिया।'' ये रिवायत और भी बहुत सी हदीस की किताबों में है। (सहीह बुख़ारी, किताबुल जिहाद, बाब अल्जासूसु वत्तजस्सुस : 3007, सहीह मुस्लिम : 2494, अबू दाऊद : 2650, तिर्मिज़ी : 3305, मुस्नद अबी यअ़ला : 394, बैहक़ी : 9/146, दलाइलुन्नुबुव्वत लिल्बैहक़ी : 5/17, अहमद : 1/79, इब्ने हिब्बान : 6499)

सहीह बुख़ारी की किताबुल मग़ाज़ी में इतना और भी है कि फिर अल्लाह तआला ने ये सूरत उतारी। (सहीह बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ग़ज़्वते फ़तह : 4274)

और किताबुत्तफ़्सीर में है कि हज़रत अम्र (रज़ि.) ने फ़रमाया, इसी बारे में आयत याअय्युहल्लज़ी-न उतरी लेकिन रावी को शक है कि आयत के उतरने का बयान हज़रत अम्र (रज़ि.) का है या हदीस में है। इमाम अली बिन मदीनी (रह.) फ़रमाते हैं, हज़रत सुफ़ियान (रह.) से पूछा गया कि ये आयत इसी में उतरी है? तो सुफ़ियान ने फ़रमाया है, ये लोगों की बात में है। मैंने इसे अम्र (रज़ि.) से हिफ़्ज़ किया है और एक हर्फ़ भी नहीं छोड़ा और मेरा ख़याल है कि मेरे सिवा किसी और ने इसे हिफ़्ज़ भी नहीं किया। (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरतुल मुम्तहिना, बाब ला तत्तख़िज़ू अदुव्वी व अदुव्वकुम औलिया : 4890)

बुख़ारी व मुस्लिम की एक रिवायत में हज़रत मिक़्दाद (रज़ि.) के नाम के बदले हज़रत अबू मरसद (रज़ि.) का नाम है। इसमें ये भी है कि हुज़ूर (ﷺ) ने ये भी बतला दिया था कि उस औरत के पास हज़रत

हातिब (रज़ि.) का ख़त है। उस औरत की सवारी को बिठाकर उसके इंकार पर हर चंद टटोलते हैं लेकिन कोई पर्चा हाथ नहीं लगता। आख़िर जब हम आजिज़ हो गये और कहीं से पर्चा न मिला तो हमने उस औरत से कहा कि इसमें तो मुत्लक़ शक नहीं कि तेरे पास पर्चा है गो हमें नही मिलता लेकिन तेरे पास है ज़रूर। ये नामुम्किन है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) की बात ग़लत हो अब अगर तू नहीं देती तो हम तेरे कपड़े उतार कर टटोलेंगे। जब उसने देख लिया कि उन्हें पुख़्ता यक़ीन है और ये बग़ैर लिये न टलेंगे तो उसने अपना सर खोलकर अपने बालों में से पर्चा निकालकर हमें दे दिया। हम उसे लेकर वापस ख़िदमते नबवी में हाज़िर हुए। हज़रत उ़मर (रज़ि.) ने ये वाक़िया देख-सुनकर फ़रमाया, इसने अल्लाह और उसके रसूल की और मुसलमानों की ख़यानत की मुझे इसकी गर्दन मारने की इजाज़त दीजिये। हुज़ूर (ﷺ) ने हातिब (रज़ि.) से पूछा और उन्होंने जवाब दिया जो ऊपर गुज़र चुका। आप (ﷺ) ने सबसे फ़रमा दिया कि इन्हें कुछ न कहो और हज़रत उ़मर (रज़ि.) से भी वो फ़रमाया जो पहले बयान हुआ कि 'बद्री सहाबी में से हैं जिनके लिये अल्लाह तआ़ला ने जन्नत वाजिब कर दी है।' जिसे सुनकर हज़रत उ़मर (रज़ि.) रो दिये और फ़रमाने लगे, अल्लाह को और उसके रसूल को ही कामिल इल्म है। (सहीह बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब फ़ज़्ल मन शहदिल बद्र : 3983, सहीह मुस्लिम : 2494, अबू दाऊद : 2651, अहमद : 1/105, मुस्नद अबी यअ़ला : 397, इब्ने हिब्बान : 7119)

ये हदीस़ इन अल्फ़ाज़ से सहीह बुख़ारी किताबुल मग़ाज़ी में ग़ज़्वए बद्र के ज़िक्र में है। और रिवायत में है कि हुज़ूर (ﷺ) ने अपने मक्का जाने का इरादा अपने चंद हमराज़ बड़े सहाबा (रज़ि.) के सामने तो ज़ाहिर किया था जिनमें हज़रत हातिब (रज़ि.) भी थे। बाक़ी आम तौर पर मशहूर था कि ख़ैबर जा रहे हैं।' इस रिवायत में ये भी है कि जब हम ख़त को सारे सामान में टटोल चुके और न मिला तो हज़रत अबू मरसद (रज़ि.) ने कहा, शायद इसके पास कोई पर्चा है ही नहीं। इस पर हज़रत अ़ली (रज़ि.) ने फ़रमाया, नामुम्किन है, न रसूलुल्लाह झूठ बोल सकते हैं न हम ने झूठ कहा। जब हमने उसे धमकाया तो उसने हमसे कहा, तुम्हें अल्लाह का ख़ौफ़ नहीं? क्या तुम मुसलमान नहीं हो? एक रिवायत में है कि उसने पर्चा अपने जिस्म में से निकाला। हज़रत उ़मर (रज़ि.) के फ़रमान में ये भी है कि आपने फ़रमाया, ये बद्र में मौजूद तो ज़रूर थे लेकिन अ़हदशिक्नी की और दुश्मनों में हमारी ख़बर रसानी की। और रिवायत में है कि ये औरत क़बीला मुज़ैना की औरत थी। कुछ कहते हैं उसका नाम सारह था औलादे अ़ब्दुल मुत्तलिब की आज़ाद करदा लौण्डी थी। हज़रत हातिब (रज़ि.) ने उसे कुछ मुआवज़ा दिया था और उसने अपने बालों तले काग़ज़ रख कर ऊपर से सर गूंध लिया था। आप (ﷺ) ने अपने घुड़सवारों से फ़रमा दिया था कि उसके पास हातिब का दिया हुआ इस मज़्मून का ख़त है। आसमान से इसकी ख़बर हुज़ूर (ﷺ) के पास आई थी। बनू अबू अहमद के हलीफ़ा में ये औरत पकड़ी गई थी। उस औरत ने उनसे कहा था कि तुम मुँह फेर लो मैं निकाल देती हूँ। उन्होंने मुँह फेर लिया, फिर उसने निकाल कर हवाले किया। इस रिवायत में हज़रत हातिब (रज़ि.) के जवाब में ये भी है कि अल्लाह की क़सम! मैं अल्लाह पर और उसके रसूल पर ईमान रखता हूँ, कोई तग़य्युर व तबद्दुल मेरे ईमान में नहीं हुआ और इसी बारे में इस सूरत की आयतें हज़रत इब्राहीम (अलै.) के क़िस्से के ख़त्म तक उतरीं। और रिवायत में है उस

औरत को उसकी उज्रत के दस दिरहम हज़रत हातिब (रज़ि.) ने दिये थे और हुज़ूर (ﷺ) ने उस ख़त के हासिल करने के लिये हज़रत उमर और हज़रत अली (रज़ि.) को भेजा था और जुहफ़ा में ये मिली थी। मतलब आयतों का ये है कि ऐ मुसलमानो! मुश्रिकीन और कुफ़्फ़ार को जो अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) और मोमिन बन्दों से लड़ने वाले हैं, जिनके दिल तुम्हारी अदावत से भरे हैं, तुम्हें हर्गिज़ लायक़ नहीं कि उनसे दोस्ती और मुहब्बत और मैल-मिलाप और अपनाइयत रखो, तुम्हें इसके ख़िलाफ़ हुक्म दिया गया है। इरशाद है याअय्युहल्लज़ी-न आमनू ला तत्तख़िज़ुल यहू-द वन्नसारा औलियाअ (सूरह माइदा 5 : 51) 'ऐ ईमानदारो! यहूदो-नसारा से दोस्ती मत गांठो वो आपस में ही एक-दूसरे के दोस्त हैं, तुममें से जो भी उनसे मवालात व मुहब्बत करे वो उन्ही में से होगा।' इसमें किस क़द्र डांट-डपट के साथ मुमानिअत फ़रमाई है। दूसरी जगह है, या अय्युहल्लज़ी-न आमनू ला तत्तख़िज़ुल्लज़ीनत्तख़ज़ू दी-नकुम हुज़ुवं-व लइबा (सूरह माइदा 5 : 57) 'मुसलमानो! उन अहले किताब और कुफ़्फ़ार से दोस्तियाँ मत करो जो तुम्हारे दीन का मज़ाक़ उड़ाते हैं और इसे खेलकूद समझते हैं, अगर तुम में ईमान है तो ज़ाते बारी से डरो।' और जगह इरशाद है, 'मुसलमानो! मुसलमानों को छोड़कर काफ़िरों से दोस्तियाँ न करो, क्या तुम चाहते हो कि अपने ऊपर अल्लाह तआला का खुला इल्ज़ाम साबित कर लो।'

और जगह फ़रमाया, 'मुसलमानों को चाहिये कि अपनों के अलावा काफ़िरों से दोस्ताना न करें। जो ऐसा करे वो अल्लाह की तरफ़ से किसी चीज़ में नहीं, हाँ! बतौरे दफ़उल वक़्ती और बचाव के हो तो और बात है अल्लाह तआला तुम्हें अपने आपसे डरा रहा है। इसी बिना पर रसूलुल्लाह (ﷺ) ने हज़रत हातिब (रज़ि.) का उज़्र कुबूल फ़रमा लिया कि अपने माल व औलाद के बचाव की ख़ातिर ये काम उनसे हो गया था।

मुस्नद अहमद में है कि हमारे सामने रसूलुल्लाह (ﷺ) ने कई मिसालें बयान फ़रमाईं एक और तीन और पाँच और सात और नौ और ग्यारह और फिर उनमें से बतफ़्सील सिर्फ़ एक बयान की, बाक़ी सब छोड़ दीं। फ़रमाया, 'एक ज़ईफ़ मिस्कीन क़ौम थी जिस पर ज़ोरावर ज़ालिम क़ौम चढ़ाई कर के आ गई लेकिन अल्लाह तआला ने उन कमज़ोरों की मदद की और उन्हें अपने दुश्मनों पर ग़ालिब कर दिया। ग़ालिब आकर उनमें रऊनत समा गई और उन्होंने उन पर मज़ालिम शुरू कर दिये जिस पर अल्लाह तआला उनसे हमेशा के लिये नाराज़ हो गया।' (ज़ईफ़ : 5/407, मज्मउज़्ज़वाइद : 5/235)

फिर मुसलमानों को होशियार करता है कि तुम उन दुश्मनाने दीन से क्यों मवद्दत व मुहब्बत रखते हो? हालांकि ये तुमसे बदसुलूकी करने में किसी मौक़े पर कमी नहीं करते। क्या ये ताज़ा वाक़िया भी तुम्हारे ज़हन से हट गया कि उन्होंने तुम्हें बल्कि ख़ुद रसूलुल्लाह (ﷺ) को भी जबरन वतन से निकाल बाहर किया और इसकी कोई और वजह न थी बजुज़ इसके कि तुम्हारी तौहीद और फ़रमान बरदारी-ए-रसूल उन पर गिराँ गुज़रती थी जैसे और जगह है, वमा नक़मू मिन्हुम् इल्ला अंय्युअ्मिनू बिल्लाहिल् अज़ीज़िल् हमीद (सूरह बुरूज : 8) 'मोमिनों से सिर्फ़ इस बिना पर मुख़ासिमत और दुश्मनी है कि वो अल्लाह बरतर व बुज़ुर्ग पर ईमान रखते हैं।'

और जगह है, 'ये लोग सिर्फ़ इस वजह से नाहक़ जलावतन किये गये कि वो कहते थे, हमारा रब अल्लाह है।' फिर फ़रमाता है अगर तुम सचमुच मेरी राह के जिहाद को निकले हो और मेरी रज़ामन्दी के तालिब हो तो हर्गिज़ उन कुफ़्फ़ार से जो तुम्हारे और मेरे दुश्मन हैं, मेरे दीन को और तुम्हारे जान व माल को नुक़सान पहुँचा रहे हैं, दोस्तियाँ न पैदा करो। भला किस क़द्र ग़लती है कि तुम उनसे पौशीदा तौर पर दोस्ताना रखो? क्या ये पौशीदगी अल्लाह से भी पौशीदा रह सकती है जो ज़ाहिर व बातिन का जानने वाला है। दिलों के भेद और नफ़्स के वस्वसे भी जिसके सामने खुले हुए हैं। बस सुन लो जो भी उन कुफ़्फ़ार से मवालात व मुहब्बत रखे वो सीधी राह से भटक जायेगा, तुम नहीं देख रहे कि उन काफ़िरों का अगर बस चले अगर उन्हें कोई मौक़ा मिल जाये तो न अपने हाथ-पाँव से तुम्हें नुक़सान पहुँचाने में देर करेंगे न बुरा कहने से अपनी ज़बानें रोकेंगे। जो उन के इम्कान में होगा वो कर गुज़रेंगे, बल्कि तमामतर कोशिश इस बात पर ख़र्च कर देंगे कि तुम्हें भी अपनी तरह काफ़िर बना लें। पस जब कि उनकी अन्दरूनी और बेरूनी दुश्मनी का हाल तुम्हें बख़ूबी मालूम है फिर क्या अन्धेर है? कि तुम अपने दुश्मनों को दोस्त समझ रहे हो और अपनी राह में आप काटे बो रहे हो। ग़र्ज़ ये है कि मुसलमानों को काफ़िरों पर ऐतिमाद करने और उनसे ऐसे गहरे ताल्लुक़ात रखने और दिली मैल रखने से रोका जा रहा है और वो बातें याद दिलाई जा रही हैं जो उनसे अलग करने पर आमादा करें। तुम्हारी क़राबतें और रिश्तेदारियाँ तुम्हें अल्लाह के यहाँ कुछ काम न आयेंगी। अगर तुम अल्लाह को नाराज़ करके उन्हें खुश करो और चाहो कि तुम्हें नफ़ा हो या नुक़सान हट जाये ये बिल्कुल ख़ाम-ख़्याली है। न अल्लाह की तरफ के नुक़सान को कोई टाल सकेगा न उसके दिये हुए नफ़ा को कोई रोक सकेगा। अपने वालों से उनके कुफ़्र पर जिसने मुवाफ़िक़त की वो बर्बाद हुआ। गो रिश्तेदार कैसा ही हो कुछ नफ़ा नहीं। मुस्नद अहमद में है कि एक शख़्स ने रसूलुल्लाह (ﷺ) से पूछा, ऐ अल्लाह के रसूल! मेरा बाप कहाँ है? आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'जहन्नम में।' जब वो जाने लगा तो आप (ﷺ) ने उसे बुलाया और फ़रमाया, 'सुन! मेरा बाप और तेरा बाप दोनों जहन्नमी हैं।' (सहीह मुस्लिम, किताबुल ईमान, बाब बयानु इन्न मम्मात अलल कुफ़्र फ़हुव फ़िन्नार : 203, अबू दाऊद : 4718, अहमद : 3/268, इब्ने हिब्बान : 578)

***

قَدْ كَانَتْ لَكُمْ اُسْوَةٌ حَسَنَةٌ فِيْٓ اِبْرٰهِيْمَ وَالَّذِيْنَ مَعَهٗ ۚ اِذْ قَالُوْا لِقَوْمِهِمْ اِنَّا
بُرَءٰٓؤُا مِنْكُمْ وَمِمَّا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۡ كَفَرْنَا بِكُمْ وَبَدَا بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمُ
الْعَدَاوَةُ وَالْبَغْضَآءُ اَبَدًا حَتّٰى تُؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ وَحْدَهٗٓ اِلَّا قَوْلَ اِبْرٰهِيْمَ لِاَبِيْهِ

لَاَسْتَغْفِرَنَّ لَكَ وَمَآ اَمْلِكُ لَكَ مِنَ اللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ ۭ رَبَّنَا عَلَيْكَ تَوَكَّلْنَا
وَاِلَيْكَ اَنَبْنَا وَاِلَيْكَ الْمَصِيْرُ ۝۴ رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا فِتْنَةً لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَاغْفِرْ
لَنَا رَبَّنَا ۚ اِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝۵ لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِيْهِمْ اُسْوَةٌ حَسَنَةٌ لِّمَنْ
كَانَ يَرْجُوا اللّٰهَ وَالْيَوْمَ الْاٰخِرَ ۭ وَمَنْ يَّتَوَلَّ فَاِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيْدُ ۝۶

तर्जुमा : "मुसलमानो! तुम्हारे लिये इब्राहीम में और उनके साथियों में बेहतरीन नमूना और अच्छी पैरवी है, जबकि उन सबने अपनी क़ौम से बरमला कह दिया कि हम तुमसे ओर जिन-जिन की तुम अल्लाह के सिवा इबादत करते हो उन सबसे बिल्कुल बेज़ार हैं, हम तुम्हारे (अक़ाइद के) मुन्किर हैं जब तक तुम अल्लाह की वहदानियत पर ईमान न लाओ हममें तुममें हमेशा के लिये बुग़्ज़ व अदावत ज़ाहिर हो गया, लेकिन इब्राहीम की इतनी बात तो अपने बाप से हुई थी कि मैं तुम्हारे लिये इस्तिग़फ़ार ज़रूर करूँगा और तुम्हारे लिये मुझे अल्लाह के सामने किसी चीज़ का इख़्तियार कुछ भी नहीं, ऐ परवरदिगार! तुझी पर हमने भरोसा किया है और तेरी ही तरफ़ हम रुजूअ करते हैं और तेरी ही तरफ़ लौटना है। (4) ऐ अल्लाह! तू हमें काफ़िरों का ज़ेरदस्त और तख़्ता मश्क़ न बना और ऐ हमारे पालने वाले! हमारी ख़ताओं को बख़्श दे, बेशक तू ही ग़ालिब हिक्मतों वाला है। (5) यक़ीनन तुम्हारे लिये उनमें नेक नमूना और उम्दा पैरवी है ख़ासकर हर उस शख़्स के लिये जो अल्लाह की और क़यामत के दिन की मुलाक़ात का ऐतिक़ाद रखता हो और अगर कोई रूगर्दानी करे तो अल्लाह तआला बिल्कुल बेपरवाह और वो सज़ावारे हम्द व सना है।" (6)

हज़रत इब्राहीम (अलै.) बेहतरीन नमूना (आयत : 4-6) : अल्लाह तबारक व तआला अपने मोमिन बन्दों को कुफ़्फ़ार से मवालात और दोस्ती न करने की हिदायत फ़रमाकर उनके सामने अपने ख़लील (अलै.) और उनके अस्हाब का नमूना पेश कर रहा है कि उन्होंने साफ़ तौर पर अपने रिश्ते-कुम्बे और क़ौम के लोगों से बरमला फ़रमा दिया कि हम तुमसे और जिन्हें तुम पूजते हो उनसे बेज़ार, बरीउज़्ज़िम्मा और अलग-थलग हैं। हम तुम्हारे दीन और तरीक़े से मुतनफ़्फ़िर हैं, जब तक तुम इसी तरीक़े और इसी मज़हब पर हो तो हमें अपना दुश्मन समझना। मुम्किन है कि बिरादरी की वजह से हम तुम्हारे इस कुफ़्र के बावजूद तुमसे भाईचारा और दोस्ताना ताल्लुक़ात रखें, हाँ ये ओर बात है कि अल्लाह तुम्हें हिदायत दे और तुम अल्लाह वह्दहू ला शरीक लहू पर ईमान ले आओ, उसकी तौहीद को मान लो और उसी एक की इबादत शुरू कर दो और जिन-जिनको

तुमने अल्लाह का शरीक और साथी ठहरा रखा है और जिन-जिनकी पूजा-पाठ में मशग़ूल हो उन सबको तर्क कर दो अपनी इस रविशे फ़िक्र और तरीक़े शिर्क से हट जाओ तो फिर बेशक हमारे भाई हो, हमारे अ़ज़ीज़ हो, वरना हम में तुममें कोई इत्तिहाद और इत्तिफ़ाक़ नहीं, हम तुमसे और तुम हमसे अलग हो। हाँ ये याद रहे कि हज़रत इब्राहीम (अ़लै.) ने अपने वालिद से जो इस्तिग़फ़ार का वादा किया था और फिर उसे पूरा किया उसमें उनकी इक़्तिदा नहीं। इसलिये कि ये इस्तिग़फ़ार उस वक़्त तक रहा जिस वक़्त तक कि अपने वालिद का अल्लाह का दुश्मन होना उन पर वज़ाहत के साथ ज़ाहिर न हुआ था। जब उन्हें यक़ीनी तौर पर उसकी अल्लाह से दुश्मनी खुल गई तो उससे साफ़ बेज़ारी ज़ाहिर कर दी। कुछ मोमिन अपने मुश्रिक माँ-बाप के लिये दुआ व इस्तिग़फ़ार करते थे और सनद में हज़रत इब्राहीम (अ़लै.) का अपने वालिद के लिये दुआ माँगना पेश करते थे। इस पर अल्लाह तआ़ला ने अपना फ़रमान, मा का-न लिनबिय्यिंव्-वल्लज़ी-न आमनू अंय्यस्तग़्फ़िरू लिल्मुश्रिकीन (सूरह तौबा 9 : 113) पूरी दो आयतों तक नाज़िल फ़रमाया और यहाँ भी उस्व-ए-इब्राहीमी में से उसका इस्तिसना कर लिया कि इस बात में उनकी पैरवी तुम्हारे लिये मम्नूअ है और हज़रत इब्राहीम (अ़लै.) के इस इस्तिग़फ़ार की तफ़्सील भी कर दी और इसका ख़ास सबब और ख़ास वक़्त भी बयान फ़रमा दिया। हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.), मुजाहिद, क़तादा, मुक़ातिल बिन हय्यान और ज़ह्हाक (रह.) वग़ैरह ने भी यही मतलब बयान किया है। (अत्तबरी : 23/418)

फिर इरशाद होता है कि क़ौम से बराअत करके अब दामने इलाही में छिपते हैं और जनाबे बारी में आजिज़ी और इन्किसारी से अ़र्ज़ करते हैं कि बारी तआ़ला तमाम कामों में हमारा भरोसा और ऐतिमाद तेरी ही पाक ज़ात पर है हम अपने तमाम काम तुझे सौंपते हैं। तेरी तरफ़ रुजूअ़ व रग़बत करते हैं और आख़िरत में भी हमें तेरी ही तरफ़ लौटना है। फिर कहते हैं, ऐ अल्लाह! तू हमें काफ़िरों के लिये फ़ित्ना न बना, यानी ऐसा न हो कि ये हम पर ग़ालिब आकर हमें मुसीबत में मुब्तला कर दें। इसी तरह ये भी न हो कि तेरी तरफ़ से हम पर कोई एताब व अ़ज़ाब नाज़िल हो और वो उनके और बहकने का सबब बने कि अगर ये हक़ पर होते तो अल्लाह उन्हें अ़ज़ाब क्यों करता? अगर ये किसी मैदान में जीत गये तो भी उनके लिये ये फ़ित्ने का सबब होगा कि हम इसलिये ग़ालिब आये कि हम ही हक़ पर हैं। इसी तरह अगर ये हम पर वर आ गये तो ऐसा न हो कि हमें तकलीफ़ें पहुँचा-पहुँचाकर तेरे दीन से बरगश्ता कर दें। फिर ये दुआ माँगते हैं कि ऐ अल्लाह! हमारे गुनाहों को भी बख़्श दे, हमारी पर्दापोशी कर और हमें माफ़ फ़रमा, तू अ़ज़ीज़ है, तेरी जनाब में पनाह लेने वाला नामुराद नहीं फिरता। तेरे दर को खड़काने वाला ख़ाली हाथ नहीं जाता। तू अपनी शरीअ़त के तक़र्रुर में अपने अक़्वाल व अफ़आ़ल में और क़ज़ा व क़द्र के मुक़द्दर करने में हिक्मत वाला है तेरा कोई काम हिक्मत से ख़ाली नहीं। फिर बतौरे ताकीद के वही पहली बात दोहराई जाती है कि उनमें तुम्हारे लिये नेक नमूना है जो भी अल्लाह तआ़ला पर और क़यामत के आने की हक़्क़ानियत पर ईमान रखता हो उसे इनके इक़्तिदा में आगे बढ़कर क़दम रखना चाहिये और जो अहकामे इलाही से रूगर्दानी करे वो जान ले कि अल्लाह उससे बेपरवाह है, वो सज़ावारे हम्द व सना है, मख़्लूक़ उस ख़ालिक़ की तारीफ़ में मशग़ूल है। जैसे और जगह है, इन् तक्फ़ुरू

अन्तुम् वमन् फ़िल्अरज़ि जमीअ़न् फ़इन्नल्ला-ह लग़निय्युन हमीद (सूरह इब्राहीम 14 : 8) 'अगर तुम और तमाम रूए ज़मीन के लोग कुफ़्र पर, अल्लाह के न मानने पर उतर आयें तो अल्लाह तआ़ला का कुछ नहीं बिगाड़ सकते, अल्लाह तआ़ला सबसे ग़नी, सबसे बेनियाज़ और सबसे बेपरवाह है और वो तारीफ़ किया गया है।' हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) फ़रमाते हैं, ग़नी उसे कहा जाता है जो अपनी ग़िना में कामिल हो। अल्लाह तआ़ला ही की ये सिफ़त है कि वो हर तरह बेनियाज़ और बिल्कुल बेपरवाह है। किसी और की ज़ात ऐसी नहीं, उसका कोई हमसर नहीं, उसके मिस्ल कोई और नहीं। वो पाक है, अकेला है, सब पर हाकिम, सब पर ग़ालिब, सबका बादशाह है, हमीद है, यानी मख़्लूक़ उसे सराह रही है। अपने जमीअ़ अक़्वाल में, तमाम अफ़आ़ल में वो सताइशों और तारीफ़ों वाला है। उसके सिवा कोई माबूद नहीं उसके सिवा कोई पालने वाला नहीं, रब वही है, माबूद वही है।

***

عَسَى اللّٰهُ اَنْ يَّجْعَلَ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَ الَّذِيْنَ عَادَيْتُمْ مِّنْهُمْ مَّوَدَّةً ؕ وَاللّٰهُ قَدِيْرٌ ؕ
وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۞ لَا يَنْهٰىكُمُ اللّٰهُ عَنِ الَّذِيْنَ لَمْ يُقَاتِلُوْكُمْ فِي الدِّيْنِ وَلَمْ
يُخْرِجُوْكُمْ مِّنْ دِيَارِكُمْ اَنْ تَبَرُّوْهُمْ وَتُقْسِطُوْٓا اِلَيْهِمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِيْنَ۞
اِنَّمَا يَنْهٰىكُمُ اللّٰهُ عَنِ الَّذِيْنَ قٰتَلُوْكُمْ فِي الدِّيْنِ وَاَخْرَجُوْكُمْ مِّنْ دِيَارِكُمْ
وَظٰهَرُوْا عَلٰٓى اِخْرَاجِكُمْ اَنْ تَوَلَّوْهُمْ ۚ وَمَنْ يَّتَوَلَّهُمْ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ۞

तर्जुमा : ''क्या अजब कि अन्करीब ही अल्लाह तआ़ला तुममें और तुम्हारे दुश्मनों में मुहब्बत पैदा कर दे, अल्लाह को सब क़ुदरतें हैं, अल्लाह बड़ा ग़फ़ूर व रहीम है। (7) जिन लोगों ने तुमसे मज़हबी लड़ाई नहीं लड़ी और तुम्हें जला वतन नहीं किया उनके साथ सुलूक व एहसान करने और मुन्सिफ़ाना भले-बर्ताव करने से अल्लाह तआ़ला तुम्हें नहीं रोकता, बल्कि अल्लाह तआ़ला तो इंसाफ़ करने वालों को दोस्त रखता है। (8) अल्लाह तआ़ला तुम्हें सिर्फ़ उन लोगों की मुहब्बत से रोकता है जो तुमसे मज़हबी लड़ाइयाँ लड़ें और तुम्हें देश निकाला दें और देश निकाला देने वालों की मदद करें, जो लोग ऐसे कुफ़्फ़ार से मुहब्बत करें वो क़त्अ़न ज़ालिम और बेइंसाफ़ हैं।'' (9)

हिदायत अल्लाह के हाथ में है (आयत 7-9) : काफ़िरों से मुहब्बत रखने की मुमानिअत और उनके बुग़्ज़ व अदावत रखने के बयान के बाद अब इरशाद होता है कि ऐसा मुम्किन है कि अभी-अभी अल्लाह तआला तुममें और उनमें मेल-मिलाप करा दे। बुग़्ज़, नफ़रत, और फ़ुरक़त के बाद मुहब्बत, मवद्दत और उल्फ़त पैदा कर दे, कौनसी चीज़ है जिस पर अल्लाह क़ादिर न हो। वो अलग-अलग और मुख़्तलिफ़ चीज़ों को जमा कर सकता है, अदावत व क़सावत के बाद दिलों में उल्फ़त व मुहब्बत पैदा कर देना उसके हाथ है। जैसे और जगह अन्सार पर अपनी नेमत बयान फ़रमाते हुए इरशाद होता है, वज़्कुरू निअ्मतल्लाहि अलैकुम (सूरह आले इमरान 3 : 103) 'तुम पर जो अल्लाह की नेमत है उसे याद करो कि तुम्हारी दिली अदावत को उसने उल्फ़ते क़ल्बी से बदल दिया और तुम ऐसे हो गये जैसे माँ जाए भाई हों। तुम आग के किनारे पहुँच चुके थे लेकिन उसने तुम्हें वहाँ से बचा लिया।'

आँहज़रत (ﷺ) ने अन्सारियों से फ़रमाया, 'क्या मैंने तुम्हें गुमराही की हालत में नहीं पाया था? फिर अल्लाह तआला ने मेरे ज़रिए से तुम्हें हिदायत दी और तुम मुतफ़र्रिक़ थे, मेरे ज़रिए से अल्लाह तआला ने तुम्हें जमा कर दिया।' (सहीह बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ग़ज़्वतुत्ताइफ़ : 4330, सहीह मुस्लिम : 1061)

क़ुरआन करीम में है, हुवल्लज़ी अय्यद-क बिनस्रिही (सूरह अन्फ़ाल 8 : 62) 'अल्लाह तआला ने अपनी मदद से मोमिनों को साथ करके ऐ नबी! तेरी मदद की और ईमानदारों में आपस में वो मुहब्बत और यकजहती पैदा कर दी कि अगर रूए ज़मीन की दौलत ख़र्च करके तू वो यगानगत पैदा करना चाहता तो न कर सकता था। ये उल्फ़त मिनजानिब अल्लाह थी जो अज़ीज़ व हकीम है।'

एक हदीस में है, 'दोस्तों की दोस्ती के वक़्त भी इस बात को पेशे नज़र रखो कि क्या अजब उससे किसी वक़्त दुश्मनी हो जाये और दुश्मनी में भी हद से तजावुज़ न करो, क्या ख़बर कब दोस्ती हो जाये।' (हसन : तिर्मिज़ी, किताबुल बिर्र वस्सिलह, बाब मा जाअ फ़िल्इक़्तिसाद फ़िल्हुब्बि वल्बुग़्ज़ : 1997)

अरब शाइर कहता है, 'ऐसे दो दुश्मनों में भी जो एक से एक जुदा हों और इस तरह कि दिल में गिरह दे ली हो कि हमेशा-हमेश तक अब कभी न मिलेंगे, अल्लाह तआला इत्तिफ़ाक़ व इत्तिहाद पैदा करा देता है और इस तरह एक हो जाते हैं कि गोया कभी दो न थे।' अल्लाह तआला ग़फ़ूर व रहीम है, काफ़िर जब तौबा करें अल्लाह क़ुबूल फ़रमा लेगा, जब वो उसकी तरफ़ झुकें वो उन्हें अपने साये में ले लेगा।

कोई सा गुनाह हो और कोई सा गुनहगार हो, इधर वो मालिक की तरफ़ झुका उधर उसकी रहमत की आग़ोश खुली। हज़रत मुक़ातिल बिन हय्यान (रह.) फ़रमाते हैं, ये आयत अबू सुफ़ियान सख़्र बिन हरब (रज़ि.) के बारे में नाज़िल हुई है उनकी साहबज़ादी साहिबा से रसूलुल्लाह (ﷺ) ने निकाह कर लिया था और यही मुनाकिहत मुहब्बत का सबब बन गई। लेकिन ये क़ौल कुछ जी को नहीं लगता। इसलिये कि रसूलुल्लाह (ﷺ) का ये निकाह फ़तहे मक्का से पहले हुआ था और हज़रत अबू सुफ़ियान (रज़ि.) का इस्लाम बिल्इत्तिफ़ाक़ फ़तहे मक्का की रात का है। बल्कि इससे अच्छी तौजीह तो वो है जो इब्ने अबी हातिम में मरवी

है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने हज़रत अबू सुफ़ियान सख़्र बिन हरब (रज़ि.) को किसी बाग़ के फलों का आमिल बना रखा था। हुज़ूर (ﷺ) के इन्तिक़ाल के बाद ये आ रहे थे कि रास्ते में ज़ुल्ख़मार मुर्तद मिल गया। आपने उससे जंग की और बाक़ाइदा लड़े, पस मुर्तदीन से पहले-पहल लड़ाई लड़ने वाले मुजाहिद फ़िद्दीन आप हैं। हज़रत इब्ने शिहाब का क़ौल है कि उन्ही के बारे में ये आयत अ़सल्लाहु उतरी है।

सहीह मुस्लिम की हदीस़ में है कि हज़रत अबू सुफ़ियान (रज़ि.) ने इस्लाम क़ुबूल करने के बाद हुज़ूर (ﷺ) से कहा, ऐ अल्लाह के रसूल! मेरी तीन दरख़्वास्तें हैं अगर इजाज़त हो तो अ़र्ज़ करूँ? आप (ﷺ) ने फ़रमाया, कहो। तो कहा, अव्वल तो ये कि मुझे इजाज़त दीजिये कि जिस तरह अपने कुफ़्र के ज़माने में मुसलमानों से मुसलसल जंग करता रहा अब इस्लाम के ज़माने में काफ़िरों से बराबर लड़ाई जारी रखूँ। आप (ﷺ) ने इसे मन्ज़ूर फ़रमाया। फिर कहा, मेरे लड़के मुआविया को अपना मुन्शी बना लीजिये। आप (ﷺ) ने इसे भी मन्ज़ूर फ़रमाया। (इस पर जो कलाम है वो पहले गुज़र चुका) और मेरी बेहतरीन अ़रब बच्ची उम्मे हबीबा को आप अपनी ज़ौजिय्यत में क़ुबूल फ़रमायें। आप (ﷺ) ने ये भी क़ुबूल फ़रमाया। (सहीह मुस्लिम, किताब फ़ज़ाइलुस्सहाबा, बाब मिन फ़ज़ाइले अबी सुफ़ियान सख़्र बिन हरब : 2501) (इस पर भी कलाम पहले गुज़र चुका है)।

फिर इरशाद होता है कि जिन कुफ़्फ़ार ने तुमसे मज़हबी लड़ाई नहीं की, न तुम्हें जला वतन किया जैसे औरतें और कमज़ोर लोग वग़ैरह उनके साथ सुलूक व एहसान और अ़द्ल व इंसाफ़ करने से अल्लाह तबारक व तआला तुम्हें नहीं रोकता बल्कि वो तो ऐसे बाइंसाफ़ लोगों से मुहब्बत रखता है। बुख़ारी व मुस्लिम में है कि हज़रत असमा बिन्ते अबू बकर (रज़ि.) के पास उनकी मुश्रिका माँ आईं। ये उस ज़माने का ज़िक्र है जिसमें आँहज़रत और मुश्रिकीने मक्का के दरम्यान सुलह नामा हो चुका था, तो हज़रत असमा (रज़ि.) ख़िदमते नबवी में हाज़िर होकर मसला पूछती हैं कि मेरी माँ आई हुई हैं और अब तक वो इस दीन से अलग हैं। क्या मुझे जाइज़ है कि मैं उनके साथ सुलूक करूँ? आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'हाँ जाओ उनसे सिला रहमी करो।' (सहीह बुख़ारी, किताबुल अदब, बाब सिलतुल मरअति उम्महा व लहा ज़ौज : 5979, सहीह मुस्लिम : 1003, अबू दाऊद : 1668, मुस्नद तयालिसी : 1643, अहमद : 6/347, इब्ने हिब्बान : 452)

मुस्नद की इस रिवायत में है कि उनका नाम क़तीला था। ये मक्का से गोह और पनीर और घी बतौरे तोहफ़े के लेकर आई थीं। लेकिन हज़रत असमा (रज़ि.) ने अपनी मुश्रिका माँ को न तो अपने घर में आने दिया न ये तोहफ़ा-हदिया क़ुबूल किया। फिर हुज़ूर (ﷺ) से पूछा और आप (ﷺ) की इजाज़त पर हदिया भी लिया और अपने यहाँ ठहराया भी। (ज़ईफ़ : अहमद : 4/4, हाकिम : 2/485, मज्मउज़्ज़वाइद : 7/123, इसकी सनद में मुस्अब बिन साबित लीनुल हदीस़ रावी है अत्तक़रीब : 2/251, हदीस़ नम्बर : 1150)

बज़्ज़ार की हदीस़ में हज़रत आइशा सिद्दीक़ा (रज़ि.) का नाम भी है लेकिन ये ठीक नहीं इसलिये कि हज़रत आइशा (रज़ि.) की वालिदा का नाम उम्मे रूम्मान (रज़ि.) था और वो इस्लाम ला चुकी थीं और हिज्रत करके मदीना में तशरीफ़ लाई थीं, हाँ हज़रत असमा (रज़ि.) की वालिदा उम्मे रूम्मान न थीं, चुनाँचे उनका नाम क़तीला ऊपर की हदीस़ में मज़्कूर है। वल्लाहु आलम!

मुक़्सितीन की तफ़्सीर सूरह हुजुरात में गुज़र चुकी है जिन्हें अल्लाह तआला पसंद फ़रमाता है। हदीस में मुक़्सितीन वो लोग हैं जो अद्ल के साथ हुक्म करते हैं। गो अहलो-अयाल का मामला हो या ज़ेरे दस्तों का, ये लोग अल्लाह तआला के अर्श के दायें जानिब नूर के मिम्बर पर होंगे। (सहीह मुस्लिम, किताबुल इमारह, बाब फ़ज़ीलतुल अमीरिल आदिल : 1827, अहमद : 2/159, इब्ने हिब्बान : 4485)

फिर फ़रमाता है कि अल्लाह की मुमानिअत तो उन लोगों की दोस्ती से है जो तुम्हारी अदावत से तुम्हारे मुक़ाबिल निकल खड़े हुए। तुमसे सिर्फ़ तुम्हारे मज़हब की वजह से लड़े-झगड़े, तुम्हें तुम्हारे शहरों से निकाल दिया। तुम्हारे दुश्मनों की मदद की फिर मुश्रिकीन से इत्तिहाद व इत्तिफ़ाक़, दोस्ती व यकजहती रखने वालों को धमकाता और उसका गुनाह बतलाता है कि ऐसा करने वाले ज़ालिम गुनहगार हैं और जगह फ़रमाया, यहूदियों नसरानियों से दोस्ती करने वाला हमारे नज़दीक उन्ही जैसा है।

***

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا جَآءَكُمُ الْمُؤْمِنٰتُ مُهٰجِرٰتٍ فَامْتَحِنُوْهُنَّ ؕ اَللّٰهُ اَعْلَمُ
بِاِيْمَانِهِنَّ ۚ فَاِنْ عَلِمْتُمُوْهُنَّ مُؤْمِنٰتٍ فَلَا تَرْجِعُوْهُنَّ اِلَى الْكُفَّارِ ؕ لَا هُنَّ حِلٌّ
لَّهُمْ وَلَا هُمْ يَحِلُّوْنَ لَهُنَّ ؕ وَاٰتُوْهُمْ مَّآ اَنْفَقُوْا ؕ وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ اَنْ
تَنْكِحُوْهُنَّ اِذَآ اٰتَيْتُمُوْهُنَّ اُجُوْرَهُنَّ ؕ وَلَا تُمْسِكُوْا بِعِصَمِ الْكَوَافِرِ وَاسْئَلُوْا
مَآ اَنْفَقْتُمْ وَلْيَسْئَلُوْا مَآ اَنْفَقُوْا ؕ ذٰلِكُمْ حُكْمُ اللّٰهِ ؕ يَحْكُمُ بَيْنَكُمْ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ
حَكِيْمٌ ﴿١٠﴾ وَاِنْ فَاتَكُمْ شَيْءٌ مِّنْ اَزْوَاجِكُمْ اِلَى الْكُفَّارِ فَعَاقَبْتُمْ فَاٰتُوا الَّذِيْنَ
ذَهَبَتْ اَزْوَاجُهُمْ مِّثْلَ مَآ اَنْفَقُوْا ؕ وَاتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِيْٓ اَنْتُمْ بِهٖ مُؤْمِنُوْنَ ﴿١١﴾

तर्जुमा : ''ऐ ईमान वालो! जब तुम्हारे पास मुसलमान औरतें हिज्रत करके आयें तो तुम उनका इम्तिहान ले लिया करो, दरअसल उनके ईमान को बख़ूबी जानने वाला तो अल्लाह ही है, लेकिन अगर वो तुम्हें ईमानदार मालूम हों तो अब तुम उन्हें काफ़िरों की तरफ़ वापस न करो, ये

उनके लिये हलाल नहीं और न वो इनके लिये हलाल हैं, जो ख़र्च उन काफ़िरों का हुआ हो वो उन्हें अदा कर दो उन औरतों को उनके महर देकर उनसे निकाह कर लेने में तुम पर कोई गुनाह नहीं और काफ़िर औरतों की नामूस अपने क़ब्ज़े में न रखो और जो कुछ तुमने ख़र्च किया हो माँग लो और जो कुछ उन काफ़िरों ने ख़र्च किया हो वो भी माँग लें, ये अल्लाह का फ़ैसला है जो वो तुम्हारे दरम्यान कर रहा है, अल्लाह तआला बड़े इल्म और कामिल हिक्मत वाला है। (10) और अगर तुम्हारी कोई बीवी तुम्हारे हाथ से निकल जाये और काफ़िरों के पास चली जाये फिर तुम्हें उसके बदले का वक़्त मिल जाये तो जिनकी बीवियाँ चली गई हैं उनके अख़राजात के बराबर अदा कर दो, और अल्लाह से डरते रहो जिस पर तुम ईमान रखते हो।" (11)

मुहाजिर औरतों का इम्तिहान (आयत : 10-11) : सूरह फ़तह की तफ़्सीर में सुलह हुदैबिया का वाक़िया मुफ़स्सल बयान हो चुका है। इस सुलह के मौक़े पर रसूलुल्लाह (ﷺ) और कुफ़्फ़ारे क़ुरैश के दरम्यान जो शराइत तय हुई थीं उनमें एक ये भी थी कि जो काफ़िर मुसलमान होकर हुज़ूर (ﷺ) के पास चला जाये आप (ﷺ) उसे अहले मक्का को वापस कर दें, लेकिन क़ुरआन करीम ने उनमें से औरतों को मुस्तसना कर दिया कि जो औरत ईमान क़ुबूल करके आये और फ़िल्वाक़ेअ हो भी वो सच्ची ईमानदार तो मुसलमान उसे काफ़िरों को वापस न दें। हदीस की तख़्सीस क़ुरआन करीम से होने की ये एक बेहतरीन मिसाल है और कुछ सलफ़ के नज़दीक ये आयत इस हदीस की नासिख़ है। इस आयत का शाने नुज़ूल ये है कि हज़रत उम्मे कुल्सूम (रज़ि.) बिन्ते उक़बा बिन अबू मुईत मुसलमान होकर हिज्रत करके मदीना चली आईं। उनके दोनों भाई अम्मारा और वलीद उनको वापस लेने के लिये रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए और आप (ﷺ) से कहा सुना। पस ये आयते इम्तिहान नाज़िल हुई और मोमिना औरतों को वापस लौटाने से मुमानिअत कर दी गई। हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) से सवाल होता है कि हुज़ूर (ﷺ) उन औरतों का इम्तिहान किस तरह लेते थे? फ़रमाया, इस तरह कि अल्लाह की क़सम खाकर सच-सच कहे कि वो अपने ख़ाविन्द की नाचाक़ी की वजह से नहीं चली आई। सिर्फ़ आबो-हवा और ज़मीन की तब्दीली करने के लिये बतौरे सैर व सियाहत नहीं आईं, किसी दुनिया तलबी के लिये नहीं आई बल्कि सिर्फ़ अल्लाह तआला की और उसके रसूल (ﷺ) की मुहब्बत में इस्लाम की ख़ातिर तर्के वतन किया और कोई ग़र्ज़ नहीं। क़सम देकर उन सवालात का करना और ख़ूब आज़मा लेना ये काम हज़रत उमर फ़ारूक़ (रज़ि.) के सुपुर्द था और रिवायत में है कि इम्तिहान इस तरह होता था कि वो अल्लाह तआला के माबूदे बरहक़ और ला शरीक होने की गवाही दें और आँहज़रत के अल्लाह के बन्दे और उसके भेजे हुए रसूल होने की शहादत दें। अगर आज़माइश में किसी ग़र्ज़े दुनियवी का पता चल जाता तो उन्हें वापस लौटाने का हुक्म था। जैसे ये मालूम हो जाये कि मियाँ-बीवी की अनबन की वजह से या किसी और शख़्स की मुहब्बत में चली आई है, वग़ैरह। (अत्तबरी : 23/326)

इस आयत के इस जुम्ले से कि 'अगर तुम्हें मालूम हो जाये कि ये बाईमान औरत है तो उसे काफ़िरों

की तरफ़ मत लौटाओ' साबित होता है कि ईमान पर भी यक़ीनी तौर पर मुत्तलअ़ हो जाना मुम्किन अम्र है। फिर इरशाद होता है कि मुसलमान औरतें काफ़िरों पर और काफ़िर मर्द मुसलमान औरतों के लिये हलाल नहीं। इस आयत ने इस रिश्ते को हराम कर दिया, वरना इससे पहले मोमिना औरतों का निकाह काफ़िर मर्दों से जाइज़ था। जैसे कि नबी (ﷺ) की साहबज़ादी हज़रत ज़ैनब (रज़ि.) का निकाह अबुल आ़स बिन रबीअ़ से हुआ था हालांकि ये उस वक़्त काफ़िर थे और बिन्ते रसूल मुस्लिमा थीं। बद्र की लड़ाई में ये भी काफ़िरों के साथ थे और जो काफ़िर ज़िन्दा पकड़े गये उनमें ये भी गिरफ़्तार होकर आये थे। हज़रत ज़ैनब (रज़ि.) ने अपनी वालिदा हज़रत ख़दीजा (रज़ि.) का हार उनके फ़िदये में भेजा था कि ये आज़ाद होकर आ जायें जिसे देखकर आँहज़रत पर बड़ी रिक़्क़त तारी हुई और आप (ﷺ) ने मुसलमानों से फ़रमाया, 'अगर मेरी बेटी के क़ैदी को छोड़ देना तुम पसंद करते हो तो उसे रिहा कर दो।' मुसलमानों ने बख़ुशी बग़ैर फ़िदये के उन्हें छोड़ देना मन्ज़ूर किया। चुनाँचे हुज़ूर (ﷺ) ने उन्हें आज़ाद कर दिया और फ़रमा दिया कि आप (ﷺ) की साहबज़ादी को आपके पास मदीना में भेज दें। उन्होंने इसे भी मन्ज़ूर कर लिया और हज़रत ज़ैद बिन हारिसा (रज़ि.) के साथ भेज दिया। (हसन : अबू दाऊद, किताबुल जिहाद, बाब फ़ी फ़िदाइल असीर बिल्माल : 2692)

ये वाक़िया 2 हिजरी का है। हज़रत ज़ैनब (रज़ि.) ने मदीना में ही इक़ामत फ़रमाई और यूंही बैठी रहीं यहाँ तक कि 8 हिजरी में उनके ख़ाविन्द हज़रत अबुल आ़स (रज़ि.) को अल्लाह तआ़ला ने तौफ़ीक़े इस्लाम दी और वो मुसलमान हो गये। तो हुज़ूर (ﷺ) ने फिर उसी अगली निकाह पर बग़ैर नये महर के अपनी साहबज़ादी को उनके पास रुख़्सत कर दिया। दूसरी रिवायत में है कि दो साल के बाद हज़रत अबुल आ़स (रज़ि.) मुसलमान हो गये थे और हुज़ूर (ﷺ) ने उसी पहले निकाह पर हज़रत ज़ैनब (रज़ि.) को लौटा दिया था। (ज़ईफ़ : अबू दाऊद, किताबुत्तलाक़, बाब इला मता तुरद्दु अ़लैहि इम्रअतुहू इज़ा अस्लम बअ़्दहा:2240, दाऊद बिन हुसैन की इक्रिमा से रिवायत मुन्कर होती है कमा क़ाल इब्ने मदीनी, तिर्मिज़ी:1143, इब्ने माजह : 2009)

यही सहीह है इसलिये कि मुसलमान औरतों के मुश्रिक मर्दों पर हराम होने के दो साल बाद ये मुसलमान हो गये थे। एक और रिवायत में है कि उनके इस्लाम के बाद नये सिरे से निकाह हुआ और नया महर बन्धा।

इमाम तिर्मिज़ी (रह.) फ़रमाते हैं कि हज़रत यज़ीद (रह.) ने फ़रमाया है, पहली रिवायत के रावी हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) हैं और वो रिवायत अज़रूए इस्नाद के बहुत आ़ला है और दूसरी रिवायात के रावी हज़रत अ़म्र बिन शुऐब हैं और इसी पर अ़मल है। लेकिन ये याद रहे कि अ़म्र बिन शुऐब वाली रिवायत के एक रावी हज्जाज इब्ने अरताह को हज़रत इमाम अहमद वग़ैरह ज़ईफ़ बतलाते हैं। हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) वाली हदीस का जवाब जुम्हूर ये देते हैं कि ये शख़्सी वाक़िया है। मुम्किन है उनकी इद्दत ख़त्म ही न हुई हो। अक्सर हज़रात का मज़हब ये है कि इस सूरत में जब औरत ने इद्दत के दिन पूरे कर लिये और अब तक उसका काफ़िर ख़ाविन्द मुसलमान नहीं हुआ तो वो निकाह फ़स्ख़ हो जाता है। हाँ कुछ हज़रात का मज़हब ये भी है कि इद्दत पूरी कर लेने के बाद औरत को इख़्तियार है अगर चाहे अपने उस निकाह को बाक़ी रखे, अगर चाहे फ़स्ख़ करके दूसरा निकाह कर ले और इसी पर इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) वाली रिवायत को महमूल करते हैं। फिर हुक्म

होता है कि उन मुहाजिर औरतों के काफ़िर ख़ाविन्दों को उनके ख़र्च-अख़राजात जो हुए हैं वो अदा कर दो जैसे कि महर। फिर फ़रमान है कि अब उन्हें उनके महर देकर उनसे निकाह कर लेने में तुम पर कोई हर्ज नहीं। इद्दत का गुज़र जाना, वली का मुक़र्रर कर लेना वग़ैरह जो उमूर निकाह में ज़रूरी हैं उन शराइत को पूरा करके उन मुहाजिर औरतों से जो मुसलमान निकाह करना चाहे कर सकता है। फिर इरशाद होता है कि तुम पर भी ऐ मुसलमानो! उन औरतों का अपने निकाह में बाक़ी रखना हराम है जो काफ़िरा हैं। इसी तरह काफ़िरा औरतों से निकाह करना भी हराम है। इस हुक्म के नाज़िल होते ही हज़रत उमर (रज़ि.) ने अपनी दो काफ़िर बीवियों को फ़ौरन तलाक़ दे दी जिनमें से एक ने तो मुआविया बिन अबी सुफ़ियान (रज़ि.) से निकाह कर लिया और दूसरी ने सफ़वान बिन उमय्या (रज़ि.) से। (सहीह बुख़ारी, किताबुश्शुरूत, बाब अश्शुरूतु फ़िल्जिहादि वल्मुसालिहति मअ अहलिल हरब : 2731-2732, अबू दाऊद : 2765, अहमद : 4/328)

हुज़ूर (ﷺ) ने काफ़िरों से सुलह की और अभी तो आप (ﷺ) हुदैबिया के नीचे के हिस्से में ही थे जो ये आयत नाज़िल हुई और मुसलमानों से कह दिया गया कि जो औरत मुहाजिरा आये उसका बाईमान (ईमानदार) होना और ख़ुलूस निय्यत से हिज्रत करना भी मालूम हो जाये तो उसके काफ़िर ख़ाविन्दों को उनके दिये हुए महर वापस कर दो। इसी तरह काफ़िरों को भी ये हुक्म सुना दिया गया। (अत्तबरी : 23/329)

इस हुक्म की वजह वो अहदनामा था जो अभी-अभी मुरत्तब हुआ था। हज़रत उमर फ़ारूक़ (रज़ि.) ने अपनी जिन दो काफ़िरा बीवियों को तलाक़ दी उनमें से पहली का नाम क़ुरैबा था। ये अबू उमय्या बिन मुग़ीरह की लड़की थी और दूसरी का नाम उम्मे कुल्सूम था जो अम्र बिन जरवल ख़ुज़ाई की लड़की थी। हज़रत उबैदुल्लाह (रज़ि.) की वालिदा ये ही थी। इससे अबू जहम बिन हुज़ैफ़ा ग़ानिम ख़ुज़ाई ने निकाह कर लिया ये भी मुश्रिक था। इसी तरह इस हुक्म के मातहत हज़रत तलहा बिन उबैदुल्लाह (रज़ि.) ने अपनी काफ़िरा बीवी औरा बिन्ते रबीआ इब्ने हारिस बिन अब्दुल मुत्तलिब को तलाक़ दे दी। उससे ख़ालिद इब्ने सईद बिन आस ने निकाह कर लिया।

फिर इरशाद होता है तुम्हारी बीवियों पर जो तुमने ख़र्च किया है उसे काफ़िरों से ले लो जब कि वो उनमें चली आयें और काफ़िरों की औरतें जो मुसलमान होकर तुममें आ जायें उन्हें तुम उनका किया हुआ ख़र्च दे दो। सुलह के बारे में और औरतों के बारे में रब्बानी फ़ैसला बयान हो चुका जो उसने अपनी मख़्लूक़ में कर दिया। अल्लाह तआला अपने बन्दों की तमामतर मस्लिहतों से बाख़बर है और उसका कोई काम हिक्मत से ख़ाली नहीं होता। इसलिये कि अलल इत्लाक़ हकीम वही है। उसके बाद की आयत वइन् फ़ातकुम् का मतलब हज़रत क़तादा (रह.) ये बयान फ़रमाते हैं कि जिन कुफ़्फ़ार से तुम्हारा अहदो-पैमान सुलह व सफ़ाई नहीं, अगर कोई औरत किसी मुसलमान के घर से जाकर उनमें जा मिले तो ज़ाहिर है कि वो उसके ख़ाविन्द का किया हुआ ख़र्च नहीं देंगे तो उसके बदले तुम्हें भी इजाज़त दी जाती है कि अगर उनमें से कोई औरत मुसलमान होकर तुममें चली आये तो तुम भी उसके ख़ाविन्द को कुछ न दो जब तक कि वो न दें। (अत्तबरी : 23/338)

हज़रत ज़ोहरी (रह.) फ़रमाते हैं, मुसलमानों ने तो अल्लाह के इस हुक्म की तामील की और काफ़िरों की जो औरतें मुसलमान होकर हिज्रत करके आईं उनके लिये हुए महर उनके ख़ाविन्दों को वापस किये लेकिन मुश्रिकों ने इस हुक्म के मानने से इंकार कर दिया। इस पर ये आयत उतरी और मुसलमानों को इजाज़त दी गई कि अगर तुममें से कोई औरत उनके यहाँ चली गई है और उन्होंने तुम्हारी ख़र्च की हुई रक़म अदा नहीं की तो जब उनमें से कोई औरत तुम्हारे यहाँ आ जाये तो तुम अपना वो ख़र्च निकाह कर बाक़ी अगर कुछ बचे तो दे दो वरना मामला ख़त्म हुआ। (अत्तबरी : 23/338)

हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) से इसका ये मतलब मरवी है कि इसमें रसूलुल्लाह (ﷺ) को ये हुक्म दिया जाता है कि जो मुसलमान औरत काफ़िरों में जा मिले और काफ़िर उसके ख़ाविन्द को उसका किया हुआ ख़र्च अदा न करें तो माले ग़नीमत में से आप (ﷺ) उस मुसलमान को बक़द्र उसके ख़र्च के दे दें। पस फ़आक़बतुम के मआना ये हुए कि फिर तुम्हें क़ुरैश या किसी और जमाअते कुफ़्फ़ार से माले ग़नीमत हाथ लगे तो उन मर्दों को जिनकी औरतें काफ़िरों में चली गई हैं, उनका किया हुआ ख़र्च अदा करो यानी महरे मिस्ल। इन अक़्वाल में कोई तज़ाद और ख़िलाफ़ नहीं। मतलब ये है कि पहली सूरत अगर मुम्किन हो तो वो सही वरना माले ग़नीमत में से उसे उसका हक़ दे दिया जाये दोनों बातों में इख़्तियार है और हुक्म में वुस्अत है। हज़रत इमाम इब्ने जरीर (रह.) इस तत्बीक़ को पसंद फ़रमाते हैं फ़ल्हम्दुलिल्लाह!

***

يَٰٓأَيُّهَا ٱلنَّبِيُّ إِذَا جَآءَكَ ٱلْمُؤْمِنَٰتُ يُبَايِعْنَكَ عَلَىٰٓ أَن لَّا يُشْرِكْنَ بِٱللَّهِ شَيْـًٔا وَلَا يَسْرِقْنَ وَلَا يَزْنِينَ وَلَا يَقْتُلْنَ أَوْلَٰدَهُنَّ وَلَا يَأْتِينَ بِبُهْتَٰنٍ يَفْتَرِينَهُۥ بَيْنَ أَيْدِيهِنَّ وَأَرْجُلِهِنَّ وَلَا يَعْصِينَكَ فِى مَعْرُوفٍ فَبَايِعْهُنَّ وَٱسْتَغْفِرْ لَهُنَّ ٱللَّهَ ۖ إِنَّ ٱللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿١٢﴾

तर्जुमा : "ऐ पैग़म्बर! जब मुसलमान औरतें तुझसे इन बातों पर बैअत करने को आयें कि वो अल्लाह के साथ किसी को शरीक न करेंगी, चोरी न करेंगी, ज़िनाकारी न करेंगी, अपनी औलादों को न मार डालेंगी और ऐसा बोहतान न बांधेंगी जो ख़ुद अपने हाथों-पैरों के सामने घड़ लें और किसी अम्रे शरई में तेरी बेहुक्मी न करेंगी तो तू उनसे बैअत कर लिया कर और उनके लिये अल्लाह से बख़्शिश तलब कर। बेशक अल्लाह तआला बख़्शिश और माफ़ी वाला है।" (12)

(आयत : 12) : सहीह बुख़ारी में है हज़रत आइशा (रज़ि.) ने फ़रमाया, जो मुसलमान औरतें आँहज़रत (ﷺ) के पास हिज्रत करके आती थीं उनका इम्तिहान इसी आयत से होता था। जो औरत इन तमाम बातों का इक़रार कर लेती उसे हुज़ूर (ﷺ) ज़बानी फ़रमा देते कि मैंने तुमसे बैअ़त की, ये नहीं कि आप (ﷺ) उनके हाथ से हाथ मिलाते हों, क़सम अल्लाह की! आपने कभी बैअ़त करते हुए किसी औरत के हाथ को हाथ नहीं लगाया, सिर्फ़ ज़बानी फ़रमा देते कि इन बातों पर मैंने तेरी बैअ़त ली। (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरतुल मुम्तहिना, बाब इज़ा जाअकुमुल मुअ्मिनातु मुहाजिरात : 4891, सहीह मुस्लिम : 1866, इब्ने माजह : 2875)

औरतों से बैअ़त का बयान : तिर्मिज़ी, नसाई, इब्ने माजह, मुस्नद अहमद वग़ैरह में है कि हज़रत उमैमा बिन्ते रक़ीक़ा (रज़ि.) फ़रमाती हैं कई एक औरतों के साथ मैं भी आँहज़रत (ﷺ) से बैअ़त करने के लिये हाज़िर हुई तो क़ुरआन की इस आयत के मुताबिक़ आप (ﷺ) ने हमसे अहदो-पैमान लिया और 'हम भली बातों में हुज़ूर (ﷺ) की नाफ़रमानी न करेंगी।' के इक़रार के वक़्त फ़रमाया, ये भी कह लो कि जहाँ तक तुम्हारी ताक़त है। हमने कहा, अल्लाह को और उसके रसूल (ﷺ) को हमारा ख़्याल हमसे बहुत ज़्यादा है और उनकी मेहरबानी भी हम पर ख़ुद हमारी मेहरबानी से बढ़-चढ़ कर है। फिर हमने कहा, हुज़ूर (ﷺ) आप हमसे मुसाफ़हा नहीं करते? फ़रमाया, 'नहीं मैं ग़ैर औरतों से मुसाफ़हा नहीं किया करता मेरा एक औरत से कह देना सौ औरतों की बैअ़त के लिये काफ़ी है, बस बैअ़त हो चुकी।' (सहीह : तिर्मिज़ी, किताबुस्सियर, बाब मा जाअ फ़ी बैअ़तिन्निसा : 1597, नसाई : 4186, इब्ने माजह : 2874, अहमद : 6/357) इमाम तिर्मिज़ी (रह.) इस हदीस को हसन सहीह कहते हैं। मुस्नद अहमद में इतनी ज़्यादती और भी है कि हममें से किसी औरत के साथ हुज़ूर (ﷺ) ने मुसाफ़हा नहीं किया। ये हज़रत उमैमा हज़रत ख़दीजा की बहन और हज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) की ख़ाला होती हैं। मुस्नद अहमद में है, हज़रत सलमा बिन्ते क़ैस (रज़ि.) जो रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़ाला थीं और दोनों क़िब्लों की तरफ़ हुज़ूर (ﷺ) के साथ नमाज़ अदा की थी, बनू अदी बिन नज्जार के क़बीले में से थीं, फ़रमाती हैं, अन्सार की औरतों के साथ ख़िदमते नबवी में बैअ़त करने के लिये मैं भी आई थी और इस आयत में जिन बातों का ज़िक्र है उनका हमने इक़रार किया आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'एक इस बात का भी इक़रार करो कि अपने ख़ाविन्दों की ख़यानत और उनके साथ धोखा न करोगी।' हमने इस का भी इक़रार किया, बैअ़त की और जाने लगीं। फिर मुझे ख़्याल आया और एक औरत को मैंने हुज़ूर (ﷺ) के पास भेजा कि वो पूछे कि ख़्यानत-धोखा न करने से आप (ﷺ) का क्या मतलब है? आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'ये कि उसका माल चुपके से किसी और को न दो।' (ज़ईफ़ : अहमद : 6/379-380)

मुस्नद की हदीस में है, हज़रत आइशा बिन्ते क़ुदामा (रज़ि.) फ़रमाती हैं, मैं अपनी वालिदा राइता बिन्ते सुफ़ियान ख़ुज़ाइया (रज़ि.) के साथ हुज़ूर (ﷺ) से बैअ़त करने वालों में थी। हुज़ूर (ﷺ) इन बातों पर बैअ़त ले रहे थे और औरतें इसका इक़रार करती थीं। मेरी वालिदा के फ़रमान से मैंने भी इक़रार किया और बैअ़त वालियों में शामिल हुई। (ज़ईफ़ : अहमद : 6/365, मज्मउज़्ज़वाइद : 6/41)

सहीह बुख़ारी में हज़रत उम्मे अ़तिय्या (रज़ि.) से मन्क़ूल है कि हमने इन बातों पर और इस बात पर कि हम किसी मुर्दे पर नौहा न करेंगी हुज़ूर (ﷺ) से बैअ़त की। इस दौरान एक औ़रत ने अपना हाथ समेट लिया और कहा कि मैं नौहा करने से बाज़ रहने पर बैअ़त नहीं करती इसलिये कि फ़लाँ औ़रत ने मेरे फ़लाँ मुर्दे पर नौहा करने में मेरी मदद की हैं तो मैं उसका बदला ज़रूर उतारूँगी। हज़रत (ﷺ) उसे सुनकर ख़ामोश रहे और कुछ न फ़रमाया। वो चली गईं लेकिन थोड़ी ही देर में वापस आईं और बैअ़त कर ली।

मुस्लिम में भी ये हदीस़ है और इतनी ज़्यादती भी है कि इस शर्त को सिर्फ़ उस औ़रत ने और उम्मे सुलैम बिन्ते मल्हान (रज़ि.) ने ही पूरा किया। (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरतुल मुम्तहिना, बाब इज़ा जाअकल मुअ्मिनात युबायिअ़्नक : 4892, सहीह मुस्लिम : 936)

बुख़ारी की और रिवायत में है कि पाँच औ़रतों ने इस अ़हद को पूरा किया उम्मे सुलैम (रज़ि.), उम्मे अ़ला (रज़ि.) और अबू सबरह (रज़ि.) की बेटी जो हज़रत मआ़ज़ (रज़ि.) की बीवी थीं और दो औ़रतें या अबू सबरह (रज़ि.) की बेटी और हज़रत मआ़ज़ (रज़ि.) की बीवी और एक औ़रत और। (सहीह बुख़ारी, किताबुल जनाइज़, बाब मा यन्हा मिनन्नौह वल्बुकाअ वज़्ज़जर अ़न ज़ालिक : 1306, सहीह मुस्लिम : 936)

नबी (ﷺ) ईद वाले दिन भी औ़रतों से इस बैअ़त का मुआ़हिदा कर लिया करते थे। बुख़ारी में है हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) फ़रमाते हैं कि रमज़ान की ईद की नमाज़ में मैंने आँहज़रत (ﷺ) के साथ और अबू बकर, उ़मर, उ़स़मान (रज़ि.) के साथ पढ़ी है। सबके सब ख़ुत्बे से पहले नमाज़ पढ़ते थे फिर नमाज़ के बाद ख़ुत्बा कहते थे। एक मर्तबा नबी (ﷺ) ख़ुत्बा देकर उतरे गोया वो नक़्शा मेरी निगाह के सामने है कि लोगों को बिठाया जा रहा था और आप (ﷺ) उनके दरम्यान से तशरीफ़ ला रहे थे, यहाँ तक कि औ़रतों के पास आये। आप (ﷺ) के साथ हज़रत बिलाल (रज़ि.) थे। यहाँ पहुँचकर आप (ﷺ) ने इसी आयत की तिलावत की फिर आप (ﷺ) ने पूछा कि क्या तुम अपने इस इक़रार पर स़ाबित क़दम हो? एक औ़रत ने खड़े होकर जवाब दिया कि हाँ हुज़ूर इस पर मज़बूती के साथ क़ायम हैं। किसी और ने जवाब नहीं दिया। रावी हदीस़ हज़रत हसन को ये नहीं मालूम कि ये जवाब देने वाली कौनसी औ़रत थीं। फिर आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'अच्छा! ख़ैरात करो।' और हज़रत बिलाल (रज़ि.) ने अपना कपड़ा फैला दिया। चुनाँचे औ़रतों ने उसमें बेनगीना की और नगीनादार अंगूठियाँ राहे लिल्लाह डालीं।' (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरतुल मुम्तहिना बाब इज़ा जाअकल मुअ्मिनात युबायिअ़्नक : 4895, सहीह मुस्लिम : 884)

मुस्नद अहमद की रिवायत में हज़रत उमैमा (रज़ि.) की बैअ़त के ज़िक्र में आयत के अ़लावा इतना और भी है कि नौहा न करना और जाहिलिय्यत के ज़माने की तरह अपना बनाव-सिंघार ग़ैर मर्दों को न दिखाना। (अहमद : 2/196, इसकी सनद हसन है। मज्मउ़ज़्ज़वाइद : 6/37)

बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस़ में है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मर्दों से भी एक मज्लिस में फ़रमाया, 'मुझसे इन बातों पर बैअ़त करो जो इस आयत में हैं जो शख़्स इस बैअ़त को निभा दे उसका अज्र अल्लाह के

ज़िम्मे है और जो इसके कुछ ख़िलाफ़ कर गुज़रे और वो मुस्लिम हुकूमत से पौशीदा रहे उसका हिसाब अल्लाह से है, अगर चाहे बख़्श दे और अगर चाहे अज़ाब करे।' (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरतुल मुम्तहिना, बाब इज़ा जाअकल मुअ्मिनातु युबायिअ्नक : 4894, सहीह मुस्लिम : 1709, तिर्मिज़ी : 1439, अहमद : 5/314)

हज़रत उबादा बिन सामित (रज़ि.) फ़रमाते हैं कि उक़बा ऊला में हम बारह शख़्सों ने रसूलुल्लाह (ﷺ) से बैअ़त की और उन्ही बातों पर जो इस आयत में मज़्कूर हैं आप (ﷺ) ने हमसे बैअ़त ली और फ़रमाया, 'अगर तुम इस पर पूरे उतरे तो यक़ीनन तुम्हारे लिये जन्नत है।' ये वाक़िया जिहाद की फ़रज़िय्यत से पहले का है। इब्ने जरीर की रिवायत में है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने हज़रत उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) को हुक्म दिया कि वो औरतों से कहें कि रसूलुल्लाह (ﷺ) तुमसे इस बात पर बैअ़त लेते हैं कि तुम अल्लाह तआला के साथ किसी को शरीक न करो। इन बैअ़त के लिये आने वालियों में हज़रत हिन्द भी थीं जो उतबा बिन रबीआ की बेटी और हज़रत अबू सुफ़ियान (रज़ि.) की बीवी थीं। यही थीं जिन्होंने अपने कुफ़्र के ज़माने में हुज़ूर (ﷺ) के चाचा हज़रत हम्ज़ह (रज़ि.) का पेट चीर दिया था। इस वजह से ये उन औरतों में ऐसी हालत में आई थीं कि कोई उन्हें पहचान न सके। उसने जब फ़रमान सुना तो कहने लगी, मैं कुछ कहना चाहती हूँ लेकिन अगर बोलूँगी तो हुज़ूर (ﷺ) मुझे पहचान लेंगे और अगर पहचान लेंगे तो मेरे क़त्ल का हुक्म दे देंगे। मैं इसी वजह से इस तरह आई हूँ कि पहचानी न जाऊँ मगर वो औरतें सब ख़ामोश रहीं और उनकी बात अपनी ज़बान से कहने से इंकार कर दिया। आख़िर उन ही को कहना पड़ा कि ये ठीक है जब शिर्क से मुमानिअ़त मर्दों को है तो औरतों को क्यों न होगी? हुज़ूर (ﷺ) ने उनकी तरफ़ देखा लेकिन आप (ﷺ) ने कुछ न फ़रमाया। फिर हज़रत उमर (रज़ि.) से कहा, इनसे कह दो कि दूसरी बात ये है कि ये चोरी न करें। इस पर हिन्द ने कहा, मैं अबू सुफ़ियान की मामूली सी चीज़ कभी-कभी ले लिया करती हूँ क्या ख़बर ये भी चोरी में दाख़िल है या नहीं? और मेरे लिये ये हलाल भी है या नहीं? हज़रत अबू सुफ़ियान (रज़ि.) भी उसी मज्लिस में मौजूद थे, ये सुनते ही कहने लगे, मेरे घर में से जो कुछ भी तूने लिया हो ख़्वाह वो ख़र्च में आ गया हो या अब भी बाक़ी हो वो सब मैं तेरे लिये हलाल करता हूँ। अब तो नबी (ﷺ) ने साफ़ पहचान लिया कि ये मेरे चाचा हम्ज़ह की क़ातिला और उनके कलेजे को चीरने वाली, फिर उसे चबाने वाली औरत हिन्द है। आप (ﷺ) उन्हें पहचान कर और उनकी ये बातचीत सुनकर और हालत देखकर मुस्कुरा दिये और उन्हें अपने पास बुलाया। उन्होंने आकर हुज़ूर (ﷺ) का हाथ थाम कर माफ़ी माँगी। आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'तुम वही हिन्द हो?' उन्होंने कहा, गुज़िश्ता गुनाह अल्लाह तआला ने माफ़ फ़रमा दिये। हुज़ूर (ﷺ) ख़ामोश रहे और बैअ़त के सिलसिले में फिर लग गये और फ़रमाया, तीसरी बात ये है कि उन औरतों में से कोई बदकारी न करे। उस पर हज़रत हिन्द ने कहा, क्या कोई आज़ाद औरत भी बदकारी करती है? आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'ठीक है! अल्लाह की क़सम आज़ाद औरतें इस बुरे काम से हर्गिज़ आलूद नहीं होतीं।' आप (ﷺ) ने फिर फ़रमाया, 'पाँचवीं बात ये है कि ख़ुद अपनी ही तरफ़ से जोड़कर बेसर-पैर का कोई ख़ास बोहतान न तराश लें और छठी बात ये है कि मेरी शरई बातों में मेरी नाफ़रमानी न करें और सातवाँ अहद आप (ﷺ) ने उनसे ये भी लिया कि वो नौहा न करें। अहले जाहिलिय्यत अपने किसी के मर जाने

पर कपड़े फाड़ डालते थे मुँह नोच लेते थे, बाल कटवा देते थे और हाय-वाय किया करते थे। (अत्तबरी : 23/342, इसकी सनद ज़ईफ़ुन जिद्दा है।) ये असर ग़रीब है और इसके कुछ हिस्से में नकारत भी है, इसलिये कि अबू सुफ़ियान और उनकी बीवी हिन्द के इस्लाम के वक़्त उन्हें हुज़ूर (ﷺ) की तरफ़ से कोई अन्देशा न था बल्कि उससे भी आप (ﷺ) ने सफ़ाई और मुहब्बत का इज़हार कर दिया था, वल्लाहु आलम!

एक और रिवायत में है कि फ़तहे मक्का वाले दिन बैअ़त वाली ये आयत नाज़िल हुई, नबी (ﷺ) ने सफ़ा पर मर्दों से बैअ़त ली और हज़रत उमर (रज़ि.) ने औरतों से बैअ़त ली। उसमें इतना और भी है कि औलाद के क़त्ल की मुमानिअ़त सुनकर हज़रत हिन्द (रज़ि.) ने फ़रमाया कि हमने तो इन्हें बचपने से पाल-पोस कर बड़ा किया लेकिन इन बड़ों को तुमने क़त्ल किया। इस पर हज़रत उमर (रज़ि.) मारे हँसी के लोट-लोट गये। (ये रिवायत मुरसल यानी ज़ईफ़ है।) इब्ने अबी हातिम में है कि जब हिन्द बैअ़त करने आईं तो उनके हाथ मर्दों की तरफ़ सफ़ेद थे। आप (ﷺ) ने फ़रमाया, जाओ इनका रंग बदल लो। चुनाँचे वो मेहंदी लगाकर हाज़िर हुईं। उनके हाथ में दो सोने के कड़े थे। उन्होंने पूछा कि इनकी निस्बत क्या हुक्म है? फ़रमाया, 'जहन्नम की आग के दो अंगारे हैं।' (इसकी सनद में ग़ब्ता बिन्ते सुलैमान मज्हूला है। लिहाज़ा ये रिवायत ज़ईफ़ है।) (ये हुक्म उस वक़्त का है जब उनकी ज़कात न अदा की जाये) इस बैअ़त के लेने के वक़्त आप (ﷺ) के हाथ में एक कपड़ा था। जब औलादों के क़त्ल की मुमानिअ़त पर उनसे अ़हद लिया गया तो एक औरत ने कहा, उनके बाप-दादों को तो क़त्ल किया और उनकी औलाद की वसिय्यत हमें हो रही है। ये शुरू सूरत बैअ़त की थी लेकिन फिर उसके बाद तो आप (ﷺ) ने ये दस्तूर कर रखा था कि जब बैअ़त करने के लिये औरतें जमा हो जातीं तो आप (ﷺ) ये सब बातें उन पर पेश करते वो उनका इक़रार करतीं और वापस लौट जातीं। (अद्दुर्रुल मन्सूर : 8/140)

पस फ़रमाने इलाही है कि जो औरत इन बातों पर बैअ़त करने के लिये आये तो उससे बैअ़त ले लो कि अल्लाह के साथ किसी को शरीक न करना, ग़ैर लोगों के माल न चुराना, हाँ उस औरत को जिसका ख़ाविन्द अपनी ताक़त के मुताबिक़ खाने-पीने, पहनने-ओढ़ने को न देता हो तो जाइज़ है कि अपने ख़ाविन्द के माल से मुताबिक़े दस्तूर और बक़द्र अपनी हाजत के ले ले गो ख़ाविन्द को इसका इल्म न हो। इसकी दलील हज़रत हिन्द (रज़ि.) वाली हदीस़ है कि उन्होंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से पूछा, ऐ अल्लाह के रसूल! मेरे ख़ाविन्द अबू सुफ़ियान बख़ील आदमी हैं , वो मुझे इतना ख़र्च नहीं देते जो मुझे और मेरी औलाद को काफ़ी हो सके तो क्या मैं उनकी बेख़बरी में उनके माल में से ले लूँ तो मुझे जाइज़ है? आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'बतरीक़े मअ़रूफ़ उसके माल से उतना ले ले जो तुझे और तेरे बाल-बच्चों को किफ़ायत करे।' (सहीह बुख़ारी, किताबुन्नफ़क़ात, बाब इज़ा लम युन्फ़िक़ुर्रजुलु लिल्मरअति अन तअ्ख़ुज़ुहू बिग़ैरि इल्मिही : 5364, सहीह मुस्लिम : 1714)

और वो ज़िनाकारी न करें। जैसे और जगह है, वला तक़्रबुज़्ज़िना इन्नहू का-न फ़ाहिशतंव्-व साअ सबीला 'ज़िना के क़रीब न जाओ वो बेहयाई है और बुरी राह है।' हज़रत समुरह (रज़ि.) वाली हदीस़ में ज़िना की सज़ा दर्दनाक अ़ज़ाबे जहन्नम बयान की गई है।(सहीह बुख़ारी,किताबुत्ताबीर,बाब तअ़बीर्रुउया बअ़द सलातिस्सुब्ह:7047)

मुस्नद अहमद में है कि हज़रत फ़ातिमा बिन्ते उ़क़्बा (रज़ि.) जब बैअ़त के लिये आईं और इस आयत की तिलावत उनके सामने की गई तो उन्होंने शर्म से अपना हाथ अपने सर पर रख लिया। आप (ﷺ) को उनकी ये हया अच्छी मालूम हुई। हज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने फ़रमाया, इन्ही शर्तों पर सबने बैअ़त की है। ये सुनकर उन्होंने भी बैअ़त कर ली। (ज़ईफ़ : अहमद : 6/151, ज़ुहरी अ़न्अ़न व ग़ैरिही मज्हूल)

हुज़ूर (ﷺ) की बैअ़त के तरीक़े ऊपर बयान हो चुके हैं। औलाद को क़त्ल न करने का हुक्म आ़म है। पैदाशुदा औलाद को मार डालना भी इसी मुमानिअ़त में है। जैसे कि जाहिलिय्यत के ज़माने वाले इस ख़ौफ़ से क़त्ल करते थे कि उन्हें कहाँ से खिलायेंगे पिलायेंगे और हमल गिरा देना भी इसी मुमानिअ़त में है जैसे कुछ जाहिल औ़रतें कूद-फांद कर अपना जनीन गिरा देती थीं।

बुरी ग़र्ज़ वग़ैरह से बोहतान न बांधने का एक मतलब तो हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रजि.) ने ये बयान फ़रमाया कि दूसरे की औलाद को अपने ख़ाविन्द के सर चिपकाना। (अत्तबरी : 23/340)

अबू दाऊद की हदीस़ में है कि मुलाइना की आयत के नाज़िल होने के वक़्त रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'जो औ़रत किसी क़ौम में उसे दाख़िल करे जो उस क़ौम का नहीं वो अल्लाह तआ़ला के नज़दीक किसी गिनती में शुमार नहीं और जो शख़्स अपनी औलाद से इंकार कर जाये हालांकि वो उसके सामने मौजूद हो तो अल्लाह तआ़ला उससे आड़ लेगा और तमाम अगलों-पिछलों के सामने उसे रुस्वा और ज़लील करेगा।' (हसन : अबू दाऊद, किताबुत्तलाक़, बाब अत्तग़लीज़ु फ़िल्इन्तिफ़ा : 2263, नसाई : 3511)

हुज़ूर (ﷺ) की नाफ़रमानी न करें यानी आप (ﷺ) के अहकाम बजा लायें और आप (ﷺ) के मना किये हुए कामों से रुक जाया करें। ये शर्त यानी मअ़रूफ़ होने की औ़रतों के लिये अल्लाह तआ़ला ने लगा दी है। (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरतुल मुम्तहिना, बाब इज़ा जाअकल मुअ्मिनातु युबायिअ़्नक : 4893)

हज़रत मैमून (रह.) फ़रमाते हैं, अल्लाह तआ़ला ने अपने नबी की इताअ़त भी फ़क़त मअ़रूफ़ में रखी है और मअ़रूफ़ ही इताअ़त है। हज़रत इब्ने ज़ैद (रह.) फ़रमाते हैं कि देख लो कि बेहतरीन ख़ल्क़ रसूलुल्लाह (ﷺ) की फ़रमांबरदारी का हुक्म भी मअ़रूफ़ में ही है। (अत्तबरी : 23/345)

इस बैअ़त वाले दिन आँहुज़ूर (ﷺ) ने औ़रतों से नौहा न करने का इक़रार भी कर लिया था। जैसे हज़रत उम्मे अ़तिय्या (रज़ि.) की हदीस़ में पहले गुज़र चुका। हज़रत क़तादा (रह.) फ़रमाते हैं, हमसे ज़िक्र किया गया है कि उस बैअ़त में ये भी था कि औ़रतें ग़ैर महरमों से बातचीत न करें। इस पर हज़रत अ़ब्दुर्रहमान बिन औफ़ (रज़ि.) ने फ़रमाया, रसूलुल्लाह (ﷺ) कई बार ऐसा भी होता है कि हम घर पर मौजूद नहीं होते और मेहमान आ जाते हैं? आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'मेरी मुराद इनसे बातचीत करने की मुमानिअ़त से नहीं, मैं उनसे काम की बात करने से नहीं रोकता।' (इब्ने जरीर : ये रिवायत मुरसल यानी ज़ईफ़ है।)

इब्ने अबी हातिम में है कि हुज़ूर (ﷺ) ने इस बैअ़त के मौक़े पर औ़रतों को नामहरम मर्दों से बातें करने

से मना फ़रमाया। और हसन (रह.) ने कहा, कुछ लोग वो भी होते हैं कि पराई औरतों से बातें करने में ही मज़ा लिया करते हैं यहाँ तक कि मज़ी निकल जाती है। (ये रिवायत भी मुरसल यानी ज़ईफ़ है।)

ऊपर हदीस़ बयान हो चुकी है कि नौहा न करने की शर्त पर एक औरत ने कहा, फ़लाँ क़बीले की औरतों ने मेरा साथ दिया है तो उनके नौहे में मैं भी उनका साथ देकर बदला ज़रूर उतारूँगी। चुनाँचे वो गईं बदला उतारा फिर आकर हुज़ूर (ﷺ)-से बैअत की....। हज़रत उम्मे सुलैम (रज़ि.) जिनका नाम उन औरतों में है जिन्होंने नौहा न करने की बैअत को पूरा किया, ये मल्हान की बेटी और हज़रत अनस (रज़ि.) की वालिदा हैं। और रिवायत में है कि जिस औरत ने बदले के नौहे की इजाज़त माँगी थी ख़ुद हुज़ूर (ﷺ) ने उसे इजाज़त दी थी। यही वो मअरूफ़ है जिसमें नाफ़रमानी मना है। बैअत करने वाली औरतों में से एक का बयान है कि मअरूफ़ में हम हुज़ूर (ﷺ) की नाफ़रमानी न करें, इससे मतलब ये है कि मुसीबत के वक़्त मुँह न नोचें, बाल न मुण्डवायें, कपड़े न फाड़ें, हाय-वाय न करें।

इब्ने जरीर में हज़रत उम्मे अतिय्या (रज़ि.) से मरवी है कि जब हुज़ूर (ﷺ) हमारे यहाँ मदीना में तशरीफ़ लाये तो एक दिन आप (ﷺ) ने हुक्म दिया कि सब अन्सारिया औरतें फ़लाँ घर में जमा हों। फिर हज़रत उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) को वहाँ भेजा। आप दरवाज़े पर खड़े हो गये और सलाम किया। हमने आप (रज़ि.) के सलाम का जवाब दिया। फिर फ़रमाया, मैं रसूलुल्लाह (ﷺ) का क़ासिद हूँ। हमने कहा, रसूलुल्लाह को भी मरहबा हो और आपके क़ासिद को भी हो। हज़रत उमर (रज़ि.) ने फ़रमाया, मुझे हुक्म हुआ है कि मैं तुम्हें हुक्म करूँ कि तुम अल्लाह तआला के साथ शरीक न करने पर, चोरी और ज़िनाकारी से बचने पर बैअत करो। हमने कहा, हम सब हाज़िर हैं और इक़रार करती हैं। चुनाँचे आपने वहीं बाहर खड़े-खड़े अपना हाथ अंदर की तरफ़ बढ़ा दिया और हमने अपने हाथ अंदर से ही अंदर ही अंदर बढ़ाये। फिर आपने फ़रमाया, ऐ अल्लाह! गवाह रह। फिर हमें हुक्म हुआ कि दोनों ईदों में हम अपनी हाइज़ा औरतों और जवान कुंवारी लड़कियों को ले जाया करें हम पर जुम्आ फ़र्ज़ नहीं। हमें जनाज़ों के साथ न जाना चाहिये।' हज़रत इस्माईल (रह.) रावीए हदीस़ फ़रमाते हैं, मैंने अपनी दादी साहिबा हज़रत उम्मे अतिय्या (रज़ि.) से पूछा कि औरतें मअरूफ़ में हुज़ूर (ﷺ) की नाफ़रमानी न करें इससे क्या मतलब है? फ़रमाया, ये कि नौहा न करें। (ज़ईफ़ : अत्तबरी : 23/346)

बुख़ारी व मुस्लिम में है रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'जो कोई मुसीबत के वक़्त अपने गालों पर थप्पड़ मारे, दामन चाक करे और जाहिलिय्यत के वक़्त की हाइ-दुहाई मचाये वो हममें से नहीं।' (सहीह बुख़ारी, किताबुल जनाइज़, बाब लैस मिन्ना मन ज़रबल ख़ुदूद : 1297, सहीह मुस्लिम : 103, इब्ने माजह : 1584, अहमद : 1/432, इब्ने हिब्बान : 3149)

और रिवायत में है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) उससे बरी हैं जो गला फाड़-फाड़कर हाय-वाय करे, बाल नोचे या मुण्डवाये और कपड़े फाड़े या दामन चीरे। (सहीह बुख़ारी, किताबुल जनाइज़, बाब मा यन्हा मिनल हलक़ इन्दल मुसीबत : 1296, सहीह मुस्लिम : 104, इब्ने माजह : 1586)

मुस्नद अबी यअ़ला में है, 'मेरी उम्मत में चार काम जाहिलिय्यत के हैं जिन्हें वो न छोड़ेगी। हसब-नसब पर फ़ख़्र करना, इंसान को उसके नसब का तअ़ना देना, सितारों से बारिश तलब करना और मय्यित पर नौहा करना।' और फ़रमाया, 'नौहा करने वाली औरत अगर बग़ैर तौबा किये मर जाये तो उसे क़यामत के दिन गंधक का पैराहन (लिबास) पहनाया जायेगा और खुजली की चादर ओढ़ाई जायेगी।' (सहीह मुस्लिम, किताबुल जनाइज़, बाब अत्तशदीदु फ़िन्नयाहा : 934, मुस्नद अबी यअ़ला : 1577, इब्ने माजह : 1581, अहमद : 5/43)

मुस्लिम में है रसूलुल्लाह (ﷺ) ने नौहा करने वालियों और नौहा को कान लगाकर सुनने वालियों पर लानत फ़रमाई। (ज़ईफ़ : अबू दाऊद, किताबुल जनाइज़, बाब फ़िन्नौह : 3128, अ़तिय्या औ़फ़ी और उसका वालिद दोनों ज़ईफ़ रावी हैं। अहमद : 3/65, बैहक़ी : 4/63)

इब्ने जरीर की एक मरफ़ूअ़ हदीस़ में है कि मअ़रूफ़ में नाफ़रमानी न करने से मुराद नौहा न करना है। ये हदीस़ तिर्मिज़ी की किताबुत्तफ़्सीर में भी है और इमाम तिर्मिज़ी (रह.) इसे हसन ग़रीब कहते हैं। (हसन : तिर्मिज़ी, किताब तफ़्सीरुल क़ुरआन, बाब व मिन सूरतिल मुम्तहिना : 3307, इब्ने माजह : 1579)

***

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ لَا تَتَوَلَّوْا۟ قَوْمًا غَضِبَ ٱللَّهُ عَلَيْهِمْ قَدْ يَئِسُوا۟ مِنَ ٱلْءَاخِرَةِ
كَمَا يَئِسَ ٱلْكُفَّارُ مِنْ أَصْحَٰبِ ٱلْقُبُورِ ﴿١٣﴾

तर्जुमा : "ऐ मुसलमानो! तुम उस क़ौम से दोस्ती न रखो जिन पर अल्लाह का ग़ज़ब नाज़िल हो चुका है जो आख़िरत से इस तरह मायूस हो चुके हैं जैसे कि मुर्दा अहले क़ब्र काफ़िर नाउम्मीद हैं।" (13)

काफ़िर अहले क़ुबूर से नाउम्मीद हो चुके हैं (आयत : 13) : इस सूरत के शुरू में जो हुक्म था वही इन्तिहा में बयान हो रहा है कि यहूदो-नसारा और दूसरे कुफ़्फ़ार से जिन पर अल्लाह का ग़ज़ब और उसकी लानत गुज़र चुकी है और अल्लाह की रहमत और उसकी शफ़क़त से दूर हो चुके हैं तुम उनसे दोस्ताना ताल्लुक़ और मेल-मीलाप न रखो, वो आख़िरत के स़वाब से और वहाँ की नेमतों से ऐसे नाउम्मीद हो चुके हैं जैसे क़ब्रों वाले काफ़िर। इससे पिछले जुम्ले के दो मआ़ना किये गये हैं। एक तो ये कि जैसे ज़िन्दा काफ़िर अपने मुर्दा काफ़िरों के दोबारा ज़िन्दा होने से मायूस हो चुके हैं। दूसरा ये कि जिस तरह मुर्दा काफ़िर हर भलाई से नाउम्मीद हो चुके हैं वो मरकर आख़िरत के अहवाल देख चुके और अब उन्हें किसी क़िस्म की भलाई की उम्मीद नहीं रही।

अल्हम्दुलिल्लाह सूरह मुम्तहिना की तफ़्सीर ख़त्म हुई।

FLOW CHART
तरतीबी नक्श-ए-रब्त

MACRO-STRUCTURE
नज़्मे-जली

सूरह सफ़्फ़ - 61

आयात : 14, मदनी, पैराग्राफ : 6

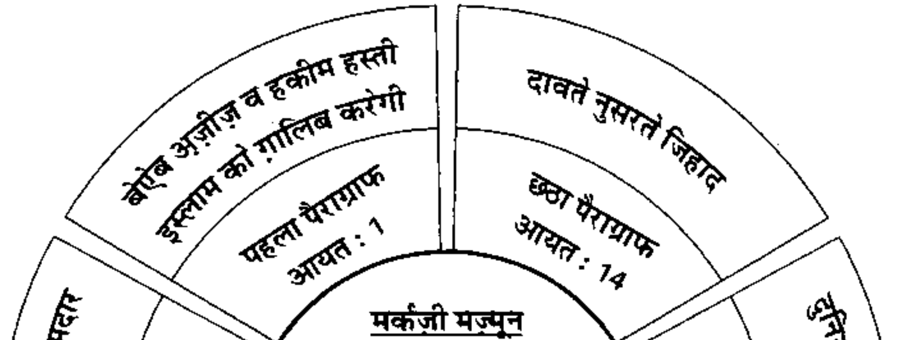

ज़मान-ए-नुज़ूल

सूरह सफ़्फ़ जंगे उहुद (शव्वाल 3 हिजरी) की शिकस्त के बाद, ग़ालिबन 3 हिजरी में नाज़िल हुई, जब ख़ाम मुसलमानों और मुनाफ़िक़ीन को, जिहाद में साबित क़दमी, इताअ़ते अमीर, इत्तिहाद व इत्तिफ़ाक़ और मुनज़्ज़म सफ़बन्दी के साथ, सीसा पिलाई हुई दीवार की तरह, मैदाने जिहाद में जोलानी दिखाने की तालीमात और तर्बियत की अशद ज़रूरत थी।

जंगे उहुद (शव्वाल 3 हिजरी) के बाद किसी वक़्त नाज़िल हुई।

तफ़्सीर सूरह सफ़्फ़

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ ○

तर्जुमा : ''शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है।''

سَبَّحَ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الۡاَرۡضِ ۚ وَهُوَ الۡعَزِيۡزُ الۡحَكِيۡمُ ① يٰۤاَيُّهَا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا لِمَ تَقُوۡلُوۡنَ مَا لَا تَفۡعَلُوۡنَ ② كَبُرَ مَقۡتًا عِنۡدَ اللّٰهِ اَنۡ تَقُوۡلُوۡا مَا لَا تَفۡعَلُوۡنَ ③ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الَّذِيۡنَ يُقَاتِلُوۡنَ فِيۡ سَبِيۡلِهٖ صَفًّا كَاَنَّهُمۡ بُنۡيَانٌ مَّرۡصُوۡصٌ ④

तर्जुमा : ''ज़मीन व आसमान की हर-हर चीज़ अल्लाह तआला की पाकी बयान करती है और वही ग़ालिब हिक्मत वाला है। (1) ऐ ईमान वालो! वो बात क्यों कहो जो न करो? (2) तुम जो न करो उसका कहना अल्लाह को सख़्त नापसंद है। (3) बेशक अल्लाह तआला उन लोगों को दोस्त रखता है जो उसकी राह में सफ़बस्ता जिहाद करते हैं गोया वो सीसा पिलाई हुई इमारत हैं।'' (4)

सूरत का तआरुफ़ और शाने नुज़ूल : हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम (रज़ि.) फ़रमाते हैं कि हम सहाबा (रज़ि.) एक दिन बैठे-बैठे आपस में तज़्किरे कर रहे थे कि कोई जाये और रसूलुल्लाह (ﷺ) से ये पूछे कि अल्लाह को सबसे ज़्यादा महबूब अमल कौनसा है? मगर अभी कोई खड़ा भी न हुआ था कि हमारे पास रसूलुल्लाह (ﷺ) का क़ासिद पहुँचा और हमसे एक-एक को बुलाकर हुज़ूर (ﷺ) के पास ले गया। जब हम सब जमा हो गये तो आप (ﷺ) ने इस पूरी सूरत की तिलावत की। (सहीह : अहमद : 5/452, तिर्मिज़ी : 3309)

इसमें ज़िक्र है कि जिहाद सबसे ज़्यादा महबूबे इलाही है। इब्ने अबी हातिम की उस हदीस में है कि हम हुज़ूर (ﷺ) से सवाल करते हुए डरे और उसमें ये भी है कि जिस तरह हुज़ूर (ﷺ) ने पूरी सूरत पढ़कर सुनाई थी उसी तरह उस रिवायत के बयान करने वाले सहाबी ने ताबेई को पढ़कर सुनाई और ताबई ने अपने शागिद्र को उसने अपने शागिर्द को इसी तरह आख़िर तक। दूसरी रिवायत में है कि हमने कहा था, अगर हमें ऐसे अमल की ख़बर हो जाये तो हम ज़रूर उस पर आमिल हो जायें। (सहीह : तिर्मिज़ी, किताब तफ़्सीरुल क़ुरआन, बाब वमिन सूरतिस्सफ़ : 3309, दारमी : 2/200, हाकिम : 2/69)

मुझसे मेरे उस्ताद शैख़ मुस्नद अबुल अ़ब्बास अहमद बिन अबू तालिब हिजार (रह.) ने भी अपनी सनद से ये हदीस़ बयान की है और इसमें भी मुसलसल हर उस्ताद का अपने शागिर्द को ये सूरत पढ़कर सुनाना मरवी है। यहाँ तक कि मेरे उस्ताद ने भी अपने उस्ताद से उसे सुना है लेकिन चूंकि वो ख़ुद उम्मी थे और उसे याद करने का उन्हें वक़्त नहीं मिला उन्होंने मुझे पढ़कर नहीं सुनाई लेकिन अल्हम्दुलिल्लाह मेरे दूसरे उस्ताद हाफ़िज़ कबीर अबू अ़ब्दुल्लाह मुहम्मद बिन अहमद बिन उ़स़मान (रह.) ने अपनी सनद से ये हदीस़ मुझे पढ़ाते वक़्त ये सूरत भी पूरी पढ़कर सुनाई है।

आयत 1-4 : पहली आयत की तफ़्सीर कई बार गुज़र चुकी है। अब फिर इसका इआ़दा करने की ज़रूरत नहीं। फिर उन लोगों पर इंकार होता है जो कहें और न करें, वादा करें और वफ़ा न करें। कुछ उ़लमाए सलफ़ ने इस आयत से इस्तिदलाल किया है कि वादा पूरा करना मुत्लक़न वाजिब है। जिससे वादा किया है ख़्वाह वो ताकीद करे या न करे। उनकी दलील बुख़ारी व मुस्लिम की ये हदीस़ भी है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'मुनाफ़िक़ की तीन आ़दतें होती हैं, जब वादा करे ख़िलाफ़ करे, जब बात करे झूठ बोले, जब अमानत दिया जाये ख़यानत करे।' (सहीह बुख़ारी, किताबुल ईमान, बाब अ़लामातुल मुनाफ़िक़ : 33, सहीह मुस्लिम : 59)

दूसरी सहीह हदीस़ में है, 'चार बातें जिसमें हों वो ख़ालिस़ मुनाफ़िक़ है और जिसमें इन चार में से एक हो उसमें एक ख़स्लत निफ़ाक़ की है, जब तक उसे न छोड़े। उनमें से एक आ़दत वादा ख़िलाफ़ी की है।' (सहीह बुख़ारी, किताबुल ईमान, बाब:34, सहीह मुस्लिम:58, तिर्मिज़ी:2633, अहमद : 2/357, अबू अ़वाना : 1/21)

शरह सहीह बुख़ारी शुरूआ़त में हमने इन दोनों अहादीस़ की पूरी शरह कर दी है फ़ल्हम्दुलिल्लाह! इसीलिये यहाँ भी इसकी ताकीद में फ़रमाया गया, अल्लाह तआ़ला को ये बात सख़्त नापसंद है कि तुम वो कहो, जो ख़ुद न करो।

जो कहो वो करो : मुस्नद अहमद और अबू दाऊद में हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन आ़मिर बिन रबीआ़ (रज़ि.) से रिवायत है कि हमारे पास रसूलुल्लाह (ﷺ) आये। मैं उस वक़्त छोटा बच्चा था, खेल-कूद के लिये जाने लगा तो मेरी वालिदा ने मुझे आवाज़ देकर कहा, इधर आ कुछ दूँ। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़रमाया, 'कुछ देना भी चाहती हो?' मेरी वालिदा ने कहा, हाँ हुज़ूर! खजूरें दूँगी। आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'फिर तो ख़ैर! वरना याद रखो कुछ न देने का इरादा होता और यूँ कहतीं तो तुम पर एक झूठ लिखा जाता।' (ज़ईफ़ : अबू दाऊद, किताबुल अदब, बाब अत्तशदीद फ़िल्किज़्ब : 4991, इसकी सनद रावी की जहालत की वजह से ज़ईफ़ है। अहमद : 3/447)

हज़रत इमाम मालिक (रह.) फ़रमाते हैं कि जब वादा के साथ वादा किये हुए की ताकीद का ताल्लुक़ है तो उस वादे को वफ़ा करना वाजिब हो जाता है। जैसे किसी शख़्स ने किसी से कह दिया कि तू निकाह कर ले और इतना-इतना हर रोज़ मैं तुझे देता रहूँगा। उसने निकाह कर लिया तो जब तक निकाह बाक़ी है उस शख़्स पर वाजिब है कि उसे अपने वादे के मुताबिक़ देता रहे इसलिये कि उसमें आदमी के हक़ का ताल्लुक़ स़ाबित हो गया जिस पर उससे बाज़पुर्स सख़्ती के साथ हो सकती है।

जिहाद की फ़र्ज़िय्यत : जुम्हूर का मज़हब ये है कि ईफ़ाए अ़हद मुत्लक़ वाजिब नहीं। इस आयत का जवाब वो ये देते हैं कि जब लोगों ने जिहाद की फ़र्ज़िय्यत की ख़्वाहिश की और फ़र्ज़ हो गया तो अब कुछ लोग हटने लगे जिस पर ये आयत उतरी। जैसे और जगह है, अलम् त-र इलल्लज़ी-न क़ी-ल लहुम् कुफ़्फ़ू ऐदियकुम (सूरह निसा 4 : 77) 'क्या तूने उन्हें न देखा जिनसे कहा गया, तुम अपने हाथ रोके रखो। फिर जब उन पर जिहाद फ़र्ज़ किया गया तो उनमें ऐसे लोग भी निकल आये जो लोगों से इस तरह डरने लगे जैसे अल्लाह से डरते हैं बल्कि उससे भी ज़्यादा। कहने लगे परवरदिगार! तूने हम पर जिहाद क्यों फ़र्ज़ कर दिया? क्यों हमें एक वक़्ते मुक़र्ररह तक पीछे न छोड़ा जो क़रीब ही तो है। कह दे कि अस्बाबे दुनिया तो बहुत ही कम हैं, हाँ! परहेज़गारों के लिये आख़िरत बेहतरीन चीज़ है। तुम पर कुछ भी ज़ुल्म न किया जायेगा। तुम कहीं भी हो तुम्हें मौत ढूण्ढ निकालेगी गो तुम मज़बूत महलों में हों।' और जगह है, व यक़ूलुल्लज़ी-न आमनू लौ ला नुज़्ज़िलत् सूरतुन (सूरह मुहम्मद 47 : 20) 'मुसलमान कहते हैं क्यों कोई सूरत नहीं उतारी जाती? फिर जब कोई मुहकम सूरत उतारी जाती है और उसमें लड़ाई का ज़िक्र होता है तो तू देखेगा कि बीमार दिल वाले तेरी तरफ़ इस तरह देखेंगे जैसे वो देखता है जिस पर मौत की बेहोशी हो।' इसी तरह की ये आयत भी है। हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) फ़रमाते हैं कि कुछ मोमिनों ने जिहाद की फ़र्ज़िय्यत से पहले कहा कि क्या ही अच्छा होता अल्लाह तआ़ला हमें वो अ़मल बतलाता जो उसे सबसे ज़्यादा पसंद होता ताकि हम उस पर आ़मिल होते। पस अल्लाह तआ़ला ने अपने नबी (ﷺ) को ख़बर की कि सबसे ज़्यादा पसन्दीदा अ़मल मेरे नज़दीक ईमान है जो शक व शुब्हा से पाक हो और बेईमानों से जिहाद करना है तो कुछ मुसलमानों पर ये भारी पड़ा। जिस पर ये आयत उतरी कि वो बातें ज़बान से क्यों निकालते हो जिन्हें करते नहीं। इमाम इब्ने जरीर (रह.) इसी को पसंद फ़रमाते हैं कि मुसलमानों ने कहा, अगर हमें मालूम हो जाता कि किस अ़मल को अल्लाह तआ़ला बहुत पसंद फ़रमाता है तो हम ज़रूर वो अ़मल बजा लाते। इस पर अल्लाह अ़ज़्ज़ व जल्ल ने वो अ़मल बताया कि मेरी राह में सफ़ें बांधकर मज़बूती के साथ जमकर जिहाद करने वालों को मैं बहुत पसंद फ़रमाता हूँ। फिर उहुद वाले दिन उनकी आज़माइश हो गई और लोग पीठ फेर कर भाग खड़े हुए जिस पर ये फ़रमाने आ़लीशान उतरा कि क्यों वो कहते हो जो कर नहीं दिखाते? (अद्दुर्रुल मन्सूर : 8/146)

कुछ हज़रात फ़रमाते हैं, ये उनके बारे में नाज़िल हुई है जो कहें हमने जिहाद किया और हालांकि जिहाद न किया हो, कह दें कि हम ज़ख़्मी हुए और हुए न हों, कह दें कि हम पर मार पड़ी और पड़ी न हो, कह दें कि हम क़ैद किये गये हों और न किये गये हों। इब्ने ज़ैद (रह.) फ़रमाते हैं, इससे मुराद मुनाफ़िक़ हैं कि मुसलमानों की मदद का वादा करते लेकिन वक़्त पर पूरा न करते। ज़ैद बिन अस्लम (रह.) जिहाद मुराद लेते हैं।

हज़रत मुजाहिद (रह.) फ़रमाते हैं, उन कहने वालों में हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन रवाहा अन्सारी (रज़ि.) भी थे। जब ये आयत उतरी और मालूम हुआ कि जिहाद सबसे ज़्यादा उ़म्दा अ़मल है तो आपने अ़हद कर लिया कि मैं तो अब से लेकर मरते दम तक अल्लाह की राह में अपने तईं वक़्फ़ कर चुका चुनाँचे इसी पर क़ायम भी रहे यहाँ तक कि फ़ी सबीलिल्लाह शहीद हो गये। हज़रत मूसा (रज़ि.) ने बसरा के क़ारियों को एक मर्तबा बुलवाया

तो तीन सौ क़ारी उनके पास आये जिनमें से हर एक क़ारी क़ुरआन था। फिर फ़रमाया तुम अहले बसरा के क़ारी और उनमें से बेहतरीन लोग हो सुनो! हम एक सूरत पढ़ते थे जो मुसब्बिहात की सूरतों के मुशाबेह थी फिर हम उसे भूल गये हाँ मुझे उसमें से इतना याद रह गया याअय्युहल्लज़ी-न आमनू लि-म तक़ूलू-न मा ला तफ़अलून, फ़तुक्तबु शहादतन् फ़ी अअ्नाक़िकुम् फ़तुस्अलू-न अन्हा यौमल क़ियामह 'ऐ ईमान वालो! वो क्यों कहो जो न करो, फिर वो लिखा जाये और तुम्हारी गर्दनों में बतौर गवाह के लटका दिया जाये फिर क़यामत के दिन उसकी बाबत बाज़पुर्स हो।' फिर फ़रमाया, अल्लाह तआला के महबूब वो लोग हैं जो सफ़ें बांधकर अल्लाह तआला के दुश्मन के मुक़ाबले में डट जाते हैं ताकि अल्लाह का बोलबाला हो, इस्लाम की हिफ़ाज़त हो और दीन का ग़ल्बा हो। मुस्नद अहमद में है, 'तीन क़िस्म के लोगों की तीन हालतें हैं जिन्हें देखकर अल्लाह तबारक व तआला ख़ुश होता है और हँस देता है, रात को उठकर तहज्जुद पढ़ने वाले, नमाज़ के लिये सफ़ें बांधने वाले, मैदाने जंग में सफ़बन्दी करने वाले।' (ज़ईफ़ : इब्ने माजह, मुक़द्दमा, बाब फ़ीमा अन्करतिल जहमिय्या : 200, मुजालिद बिन सईद ज़ईफ़ और अब्दुल्लाह बिन इस्माईल मज्हूल रावी है। अहमद : 3/80)

जिहाद के फ़ज़ाइल : इब्ने अबी हातिम में है हज़रत मुतर्रिफ़ (रह.) फ़रमाते हैं, मुझे बरिवायत हज़रत अबू ज़र (रज़ि.) एक हदीस पहुँची थी, मेरे जी में था कि ख़ुद हज़रत अबू ज़र (रज़ि.) से मिलकर ये हदीस आमने-सामने सुन लूँ चुनाँचे एक मर्तबा जाकर आपसे मुलाक़ात की और वाक़िया बयान किया। आपने ख़ुश्नूदी का इज़हार फ़रमाकर कहा, वो हदीस क्या है? मैंने कहा, ये कि अल्लाह तआला तीन शख़्सों को दुश्मन जानता है और तीन को दोस्त रखता है। फ़रमाया, हाँ! मैं अपने ख़लील हज़रत मुहम्मद (ﷺ) पर झूठ नहीं बोल सकता। फ़िल्वाक़ेअ आप (ﷺ) ने हमसे ये हदीस बयान फ़रमाई है। मैंने पूछा, वो तीन कौन हैं? जिन्हें अल्लाह तआला महबूब जानता है। फ़रमाया, एक तो वो जो अल्लाह की राह में जिहाद करे ख़ालिस अल्लाह की ख़ुश्नूदी की निय्यत से निकले। दुश्मन से जब मुक़ाबला हो तो दिलेराना जिहाद करे तुम उसकी तस्दीक़ ख़ुद किताबुल्लाह में भी देख सकते हो। फिर आप (रज़ि.) ने यही आयत तिलावत फ़रमाई और फिर पूरी हदीस बयान की। इब्ने अबी हातिम में ये हदीस इसी तरह इन ही अल्फ़ाज़ में इतनी ही आई है। हाँ तिर्मिज़ी और नसाई में पूरी हदीस है। (हसन : तिर्मिज़ी, किताब सिफ़तुल जन्नत, बाब अहादीसु फ़ी सिफ़तिस्सलासतिल्लज़ीन युहिब्बुहुमुल्लाह : 2568, नसाई : 2581, अहमद : 5/153, इब्ने हिब्बान : 3349, हाकिम : 2/113)

और हमने भी इसे दूसरी जगह पूरी वारिद की है, फ़ल्हम्दुलिल्लाह!

हज़रत कअब अहबार (रह.) से इब्ने अबी हातिम में मन्क़ूल है, अल्लाह तआला अपने नबी (ﷺ) से फ़रमाता है, आप मेरे मुतवक्किल और पसन्दीदा बन्दे हैं, बदख़ुल्क़, बदज़बान, बाज़ारों में शोर व ग़ुल करने वाले नहीं, बुराई का बदला बुराई से नहीं देते बल्कि दरगुज़र करके माफ़ कर देते हैं। जाए पैदाइश आपकी मक्का है, जाए हिज्रत ताबा है, मुल्क आपका शाम है, उम्मत आपकी बकसरत अल्लाह तआला की हम्द करने वाली है। हर हाल में और हर मन्ज़िल में अल्लाह तआला की हम्द व सना बयान करते रहते हैं, सुबह के वक़्त

ज़िक्रुल्लाह में उनकी पस्त आवाज़ें बराबर सुनाई देती हैं जैसे शहद की मक्खियों की भिनभिनाहट, अपने नाख़ुन और मूंछें कतरते हैं और अपने तहबंद अपनी आधी पिण्डलियों तक बांधते हैं, उनकी सफ़ें मैदाने जिहाद में ऐसी होती हैं जैसी नमाज़ में। फिर हज़रत कअ़ब (रह.) ने इसी आयत की तिलावत की। फिर फ़रमाया, धूप का ख़्याल रखने वाले जहाँ वक़्ते नमाज़ आ जाये नमाज़ अदा कर लेने वाले गो (भले) सवारी पर हों। हज़रत सईद बिन जुबैर (रह.) फ़रमाते हैं, जब तक हुज़ूर (ﷺ) सफ़ें न बंधवा लें दुश्मन से लड़ाई शुरू नहीं करते थे। पस सफ़बन्दी की तालीम मुसलमानों को अल्लाह की दी हुई है। एक-दूसरे से मिले रहें, साबित क़दम रहें और टलें नहीं, एक-दूसरे से मिले हुए खड़े रहें। तुम नहीं देखते कि इमारत का बनाने वाला नहीं चाहता कि उसकी इमारत में कहीं ऊँच-नीच हो या टेढ़ी-तिरछी हो या सूराख़ रह जायें, इसी तरह अल्लाह तआ़ला नहीं चाहता उसके अम्र में इख़्तिलाफ़ हो मैदाने जंग में और बवक़्ते नमाज़ मुसलमानों की सफ़बन्दी ख़ुद उसने की है पस तुम अल्लाह तआ़ला के हुक्म की तामील करो जो अहकाम बजा लायेगा ये उसके लिये अ़स्मत और बचाव साबित होगा। अबू बहरिया फ़रमाते हैं, मुसलमान घोड़ों पर सवार होकर लड़ना पसंद नहीं करते थे। उन्हें तो ये अच्छा मालूम होता था कि ज़मीन पर पैदल सफ़ें बनाकर आमने-सामने का मुक़ाबला करें। आप फ़रमाते हैं कि जब तुम मुझे देखो कि मैंने सफ़ में से इधर-उधर तवज्जह की तो तुम जो चाहो मलामत करना और बुरा-भला कहना।

***

وَإِذْ قَالَ مُوسَىٰ لِقَوْمِهِ يَٰقَوْمِ لِمَ تُؤْذُونَنِي وَقَد تَّعْلَمُونَ أَنِّي رَسُولُ اللَّهِ
إِلَيْكُمْ ۖ فَلَمَّا زَاغُوا أَزَاغَ اللَّهُ قُلُوبَهُمْ ۚ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفَاسِقِينَ ۝٥
وَإِذْ قَالَ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ يَٰبَنِي إِسْرَاءِيلَ إِنِّي رَسُولُ اللَّهِ إِلَيْكُم مُّصَدِّقًا لِّمَا
بَيْنَ يَدَيَّ مِنَ التَّوْرَاةِ وَمُبَشِّرًا بِرَسُولٍ يَأْتِي مِن بَعْدِي اسْمُهُ أَحْمَدُ ۖ فَلَمَّا
جَاءَهُم بِالْبَيِّنَاتِ قَالُوا هَٰذَا سِحْرٌ مُّبِينٌ ۝٦

तर्जुमा : "याद कर जब कि मूसा ने अपनी क़ौम से कहा, ऐ मेरी क़ौम के लोगो! तुम मुझे क्यों सता रहे हो हालांकि तुम्हें बख़ूबी मालूम है कि मैं तुम्हारी जानिब अल्लाह का रसूल हूँ, पस जब वो लोग टेढ़े ही रहे तो अल्लाह ने उनके दिलों को और टेढ़ा कर दिया, अल्लाह तआ़ला नाफ़रमान क़ौम को हिदायत नहीं देता। (5) और जब मरयम के बेटे ईसा ने कहा, ऐ मेरी क़ौम

बनी इस्राईल! मैं तुम सबकी तरफ़ अल्लाह का रसूल हूँ मुझसे पहले की किताब तौरात की मैं तस्दीक़ करने वाला हूँ और अपने बाद आने वाले एक रसूल की मैं तुम्हें ख़ुशख़बरी सुनाने वाला हूँ जिनका नाम अहमद है। फिर जब वो उनके पास खुली दलीलें लाये तो ये कहने लगे, ये तो खुला जादू है।'' (6)

पैग़म्बरों की तकालीफ़ का बयान (आयत 5-6) : अल्लाह तआला फ़रमाता है कि कलीमुल्लाह हज़रत मूसा बिन इमरान (अलै.) ने अपनी क़ौम से फ़रमाया कि तुम मेरी रिसालत की सच्चाई जानते हो फिर क्यों मेरे दरपे आज़ाद हो रहे हो? इसमें गोया एक तरह पर आँहुज़ूर (ﷺ) को तसल्ली दी जाती है। चुनाँचे आप (ﷺ) जब भी सताये जाते तो फ़रमाते, अल्लाह तआला मूसा (अलै.) पर रहमत नाज़िल फ़रमाये, वो इससे ज़्यादा सताये गये लेकिन फिर भी साबिर रहे। (सहीह बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ग़ज़्वतुत्ताइफ़:4335, सहीह मुस्लिम: 1062)

और साथ ही इसमें मोमिनों को अदब सिखाया जा रहा है कि वो अल्लाह के नबी को ईज़ा न पहुँचायें ऐसा न करें जिससे आप (ﷺ) का दिल मैला हो, जैसे और जगह है ला तकूनू कल्लज़ी-न आज़ौ मूसा (सूरह अहज़ाब 33 : 69) 'ईमान वालो! तुम ऐसे न होना जैसे मूसा को अज़ियत देने वाले थे। अल्लाह तआला ने अपने इस ज़ीइज़्ज़त बन्दे को उनके बोहतानों से पाक किया। पस जब कि ये लोग बावजूद इल्म के इत्तिबाऐ हक़ से हट गये और टेढ़े चलने लगे तो अल्लाह तआला ने भी उनके दिल हिदायत से हटा दिये।' शक व हैरत उनमें समा गई जैसे और जगह है, व नुक़ल्लिबु अफ़्इद-तहुम (सूरह अन्आम 6 : 110) 'हम उनके दिल और आँखें उलट देंगे जिस तरह ये हमारी आयतों पर पहली बार ईमान नहीं लाये और हम उन्हें उनकी सरकशी की हालत में छोड़ देंगे जिसमें सरगरदाँ रहेंगे।' और जगह है वमंय्युशाक़िक़िर्रसूल (सूरह निसा 4 : 115) 'जो रसूल की मुख़ालिफ़त करे हिदायत ज़ाहिर हो चुकने के बाद और मोमिनों के रास्ते के सिवा किसी की ताबेदारी कर ले, हम उसे उसी तरफ़ मुतवज्जह करेंगे जिस तरफ़ वो मुतवज्जह हुआ है और बिल्आख़िर उसे हम जहन्नम में डाल देंगे और वो बहुत बुरी जगह है।' यहाँ भी इरशाद होता है अल्लाह तआला फ़ासिक़ों की रहबरी नहीं करता फिर हज़रत ईसा (अलै.) का ख़ुत्बा बयान होता है जो आपने बनी इस्राईल में दिया था। जिसमें फ़रमाया था कि तौरात में मेरी ख़ुशख़बरी दी गई थी और अब मैं तुम्हें अपने बाद आने वाले एक रसूल की पेशिनगोई सुनाता हूँ जो नबी उम्मी अरबी मक्की अहमद हज़रत मुहम्मद (ﷺ) हैं पस हज़रत ईसा (अलै.) बनी इस्राईल के नबियों के ख़त्म करने वाले और हज़रत मुहम्मद (ﷺ) कुल अम्बिया और मुर्सलीन के ख़ातिम हैं और आपके बाद न तो कोई नबी आयेगा न रसूल, नुबूवत व रिसालत सब आप (ﷺ) पर मुकम्मल तौर पर ख़त्म हो गई।

आँहज़रत (ﷺ) के फ़ज़ाइल : सहीह बुख़ारी में एक निहायत पाकीज़ा हदीस़ वारिद हुई है जिसमें है कि आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'मेरे बहुत से नाम हैं, मुहम्मद, अहमद, माही जिसके ज़रिए अल्लाह तआला ने कुफ़्र को मिटा दिया और मैं हाशिर हूँ जिसके क़दमों पर लोगों का हश्र किया जायेगा और मैं आक़िब हूँ।' (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरतुस्सफ़्फ़:4896, सहीह मुस्लिम:2354, तिर्मिज़ी:2840, अहमद:4/80, इब्ने हिब्बान:6313)

अबू दाऊद में है कि हुज़ूर (ﷺ) ने हमारे सामने अपने बहुत से नाम बयान फ़रमाये जो हमें महफ़ूज़ रहे। उनमें से ये चंद हैं : फ़रमाया, 'मैं मुहम्मद हूँ, मैं अहमद हूँ, मैं हाशिर हूँ, मैं मुक़्फ़ी हूँ, मैं नबीयुर्रहमा हूँ, मैं नबीयुत्तौबा हूँ, मैं नबीयुल मल्हमा हूँ।' ये हदीस़ भी सहीह मुस्लिम में है। क़ुरआन करीम में है, अल्लज़ी-न यत्तबिऊ़नर्रसूलन्-नबिय्यल् उम्मिय्यल्लज़ी-न यजिदू-नहू मक्तूबन् इन्दहुम् फ़ित्तौराति वल्इन्जील (सूरह आराफ़ 7 : 157) 'जो पैरवी करते हैं उस रसूल नबी उम्मी की जिन्हें अपने पास लिखा हुआ पाते हैं तौरात में भी और इन्जील में भी।' और जगह फ़रमान है, वइज़ अख़ज़ल्लाहु मीस़ाक़न्-नबिय्यीन (सूरह आले इमरान 3:81) 'अल्लाह तआ़ला ने जब नबियों से अ़हद लिया कि जब कभी मैं तुम्हें किताबो-हिक्मत दूँ फिर तुम्हारे पास मेरा रसूल आये जो उसे पहचानता हो जो तुम्हारे साथ है तो तुम उस पर ज़रूर ईमान लाओगे और उसकी ज़रूर मदद करोगे, क्या तुम इसका इक़रार करते हो और इस पर मेरा अ़हद लेते हो? सबने कहा, हमें इक़रार है। फ़रमाया, गवाह रहो और मैं भी तुम्हारे साथ गवाहों में हूँ।'

हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) फ़रमाते हैं, कोई नबी अल्लाह तआ़ला ने ऐसा नहीं भेजा जिससे ये इक़रार न लिया हो कि उनकी ज़िन्दगी में अगर मुहम्मद (ﷺ) भेजे जायें तो वो आपकी ताबेदारी करे बल्कि हर नबी से ये वादा भी लिया जाता रहा कि वो अपनी-अपनी उम्मत से भी ये अ़हद लेंगे। एक मर्तबा सहाबा (रज़ि.) ने पूछा, हुज़ूर! आप हमें अपनी ख़बर सुनाइये! आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'मैं अपने बाप हज़रत इब्राहीम (अ़लै.) की दुआ हूँ और हज़रत ईसा (अ़लै.) की ख़ुशख़बरी हूँ मेरी वालिदा का जब पाँव भारी हुआ तो ख़्वाब में देखा कि गोया उनमें से एक नूर निकला है जिससे शाम के शहर बसरा के महलात चमक उठे।' (इब्ने इस्हाक़) इसकी सनद उ़म्दा है और दूसरी सनदों से इसके शवाहिद भी हैं।

आँहज़रत (ﷺ) हज़रत ईसा (अ़लै.) की बशारत हैं : मुस्नद अहमद में है, 'मैं अल्लाह तआ़ला के नज़दीक ख़ातिमुन्नबिय्यीन था हालांकि हज़रत आदम (अ़लै.) अपनी मिट्टी में गुन्धे हुए थे। मैं तुम्हें इसकी शुरूआत सुनाऊँ। मैं अपने वालिद हज़रत इब्राहीम (अ़लै.) की दुआ, हज़रत ईसा (अ़लै.) की बशारत और अपनी माँ का ख़्वाब हूँ, अम्बिया की वालिदा को इसी तरह ख़्वाब दिखाये जाते हैं।' (ज़ईफ़ : अहमद : 4/127, अहमद : 4/127 युग़नीअ़न्हू, हाकिम : 2/418) मुस्नद अहमद में दूसरी सनद से भी इसी के क़रीब रिवायत मरवी है। (हसन : अहमद : 5/262, मुस्नद तयालिसी : 1140)

मुस्नद की और हदीस़ में है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने हमें नज्जाशी बादशाह हब्शा के यहाँ भेज दिया था। हम तक़रीबन अस्सी (80) आदमी थे। हममें हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द, हज़रत जाफ़र, हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन रवाहा, हज़रत उ़समान इब्ने मज़्ऊ़न, हज़रत अबू मूसा (रज़ि.) वग़ैरह भी थे। हमारे यहाँ पहुँचने पर क़ुरैश ने ये ख़बर पाकर हमारे पीछे अपनी तरफ़ से बादशाह के पास अपने दो सफ़ीर भेजे अ़म्र बिन आ़स और अ़म्मारा बिन वलीद। उनके साथ दरबारशाही के लिये तोहफ़े भी भेजे। जब ये आये तो उन्होंने बादशाह के सामने सज्दा किया फिर दायें-बायें घूमकर बैठ गये। फिर अपनी दरख़्वात पेश की हमारे कुम्बे-

क़बीले के कुछ लोग हमारे दीन को छोड़कर हमसे बिगड़कर आपके मुल्क में चले आये हैं, हमारी क़ौम ने हमें इसलिये आपकी ख़िदमत में भेजा है कि आप उन्हें हमारे हवाले कर दीजिये। नज्जाशी ने पूछा, वो कहाँ हैं? उन्होंने कहा, यहीं इसी शहर में हैं। हुक्म दिया कि उन्हें हाज़िर करो! चुनाँचे ये मुसलमान सहाबा (रज़ि.) दरबार में आये। उनके ख़तीब उस वक़्त हज़रत जाफ़र (रज़ि.) थे बाक़ी लोग उनके मातहत थे। ये जब आये तो उन्होंने सलाम तो किया लेकिन सज्दा नहीं किया। दरबारियों ने कहा, तुम बादशाह के सामने सज्दा क्यों नहीं करते? जवाब मिला कि हम अल्लाह तआला के सिवा किसी और को सज्दा नहीं करते। पूछा गया क्यों? फ़रमाया, अल्लाह तआला ने अपना रसूल हमारी तरफ़ भेजा है और उस रसूल ने हमें हुक्म दिया है कि अल्लाह के सिवा किसी और को सज्दा न करें और हुज़ूर ने हमें हुक्म दिया है कि हम नमाज़ पढ़ते रहें, ज़कात अदा करते रहें। अब अ़म्र बिन आ़स से न रहा गया कि ऐसा न हो कि इन बातों का असर बादशाह पर पड़े। दरबारियों और ख़ुद बाशाह को भिड़काने के लिये वो बीच में बोल पड़ा कि हुज़ूर इनके ऐतिक़ाद हज़रत ईसा बिन मरयम (अ़लै. के बारे में आप लोगों से बिल्कुल मुख़ालिफ़ है। इस पर बादशाह ने पूछा, बतलाओ! तुम हज़रत ईसा (अ़लै.) के और उनकी वालिदा के बारे में क्या अ़क़ीदा रखते हो? उसने कहा, हमारा अ़क़ीदा इस बारे में वही है जो अल्लाह तआ़ला ने अपनी किताब में हमें तालीम फ़रमाया है कि वो कलिमतुल्लाह हैं, रूहुल्लाह हैं जिस रूह को अल्लाह तआ़ला ने कुंवारी मरयम बतूल की तरफ़ इल्क़ा किया जो कुंवारी थीं, किसी इंसान ने हाथ भी नहीं लगाया था, न उन्हें बच्चा होने का कोई मौक़ा था। बादशाह ने ये सुनकर ज़मीन से एक तिनका उठाया और कहा, ऐ हब्शा के लोगो! और ऐ वाइज़ो! आ़लिमो और दुर्वेशो! इनका और हमारा इस बारे में एक ही अ़क़ीदा है, अल्लाह की क़सम! इनके और हमारे अ़क़ीदे में इस तिनके जितना भी फ़र्क़ नहीं। ऐ जमाअ़ते मुहाजिरीन तुम्हें मरहबा हो और उस रसूल को भी मरहबा हो जिनके पास से तुम आये हो। मेरी गवाही है कि वो अल्लाह के सच्चे रसूल हैं। वही हैं जिनकी पेशिनगोई हमने इन्जील में पढ़ी है और ये वही हैं जिनकी बशारत हमारे पैग़म्बर हज़रत ईसा (अ़लै.) ने दी है। मेरी तरफ़ से तुम्हें आ़म इजाज़त है जहाँ चाहो, रहो-सहो। अल्लाह की क़सम! अगर मुल्क के इस झन्झट से मैं आज़ाद होता तो मैं क़त्अ़न हुज़ूर (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर होता। आपकी जूतियाँ उठाता, आपकी ख़िदमत करता और आपको वुज़ू कराता। इतना कहकर हुक्म दिया कि ये दोनों क़ुरैशी जो तोहफ़ा लेकर आये हैं वो उन्हें वापस कर दिया जाये। उन मुहाजिरीने किराम में से हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) तो जल्द ही हुज़ूर (ﷺ) से आ मिले। जंगे बद्र में भी आपने शिरकत की। उस शाहे हब्शा के इन्तिक़ाल की ख़बर जब हुज़ूर (ﷺ) को पहुँची तो आप (ﷺ) ने उसके लिये बख़्शिश की दुआ माँगी। (ज़ईफ़ : अहमद : 1/461, अबू इस्हाक़ अ़न्अ़न वफ़ीहि इल्लतुन उख़रा) ये पूरा वाक़िया हज़रत जाफ़र और हज़रत उम्मे सलमा (रज़ि.) से मरवी है। (ज़ईफ़ : अहमद : 1/201-203, ज़ुहरी अ़न्अ़न)

तफ़्सीरी मौज़ूअ से चूंकि ये अलग चीज़ है इसलिये हमने यहाँ इसे मुख़्तसरन वारिद कर दिया। मज़ीद तफ़्सील सीरत की किताबों में मुलाहिज़ा हो, हमारा मक़सूद ये है कि आ़ली जनाब हुज़ूर मुहम्मद (ﷺ) की बाबत अगले अम्बियाए किराम (अ़लै.) बराबर पेशीनगोइयाँ करते रहे और अपनी उम्मत को अपनी किताब में

से आपकी सिफ़तें सुनाते रहे और आपकी इत्तिबाअ़ और नुसरत का उन्हें हुक्म करते रहे। हाँ आप (ﷺ) के अम्र की शोहरत हज़रत इब्राहीम ख़लीलुल्लाह (अ़लै.) की दुआ के बाद हुई जो तमाम अम्बिया के बाप थे। इसी तरह मज़ीद शोहरत का बाइ़स हज़रत ईसा (अ़लै.) की बशारत हुई। जिस हदीस़ में आप (ﷺ) ने साइल के सवाल पर अपने अम्रे नुबूवत की निस्बत दुआए ख़लील और नवीदे मसीह की तरफ़ की है आप (ﷺ) की शुरू शोहरत का बाइ़स ये ख़्वाब था। अल्लाह तआ़ला आप (ﷺ) पर बेशुमार दरूद व रहमत भेजे। फिर इरशाद होता है कि बावजूद इस क़द्र शोहरत और बावजूद अम्बिया की मुतवातिर पेशिनगोइयों के भी जब आप (ﷺ) रोशन दलीलें लेकर आये तो मुख़ालिफ़ीन ने और काफ़िरों ने कह दिया कि ये तो साफ़-साफ़ जादू है।

***

وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ وَهُوَ يُدْعَىٰ إِلَى الْإِسْلَامِ ۚ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ⑦ يُرِيدُونَ لِيُطْفِئُوا نُورَ اللَّهِ بِأَفْوَاهِهِمْ وَاللَّهُ مُتِمُّ نُورِهِ وَلَوْ كَرِهَ الْكَافِرُونَ ⑧ هُوَ الَّذِي أَرْسَلَ رَسُولَهُ بِالْهُدَىٰ وَدِينِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهُ عَلَى الدِّينِ كُلِّهِ وَلَوْ كَرِهَ الْمُشْرِكُونَ ⑨

तर्जुमा : "उस शख़्स से ज़्यादा ज़ालिम और कौन होगा जो अल्लाह पर झूठ इफ़्तिरा बांधे हालांकि वो इस्लाम की तरफ़ बुलाया जाता है और अल्लाह ऐसे ज़ालिमों को हिदायत नहीं करता। (7) चाहते हैं कि अल्लाह के नूर को अपने मुँह से बुझा दें और अल्लाह अपने नूर को कमाल तक पहुँचाने वाला है गो काफ़िर बुरा मानें। (8) वही है जिसने अपने रसूल को हिदायत और सच्चा दीन देकर भेजा है ताकि उसे तमाम मज़ाहिब पर ग़ालिब कर दे अगरचे मुश्रिकीन नाख़ुश हों।"

अल्लाह का दीन रोशन है (आयत : 7-9) : इरशाद होता है कि जो शख़्स अल्लाह तआ़ला पर झूठ इफ़्तिरा बांधे और उसके शरीक व सहीम मुक़र्रर करे, उससे बढ़कर कोई ज़ालिम नहीं। अगर ये शख़्स बेख़बर होता जब भी एक बात थी यहाँ तो ये हालत है कि वो इख़्लास और तौहीद की तरफ़ बराबर बुलाया जा रहा है। भला ऐसे ज़ालिमों की क़िस्मत में हिदायत कहाँ? इन कुफ़्फ़ार की चाहत तो ये है कि हक़ को बातिल से रद्द कर दें, उनकी मिसाल बिल्कुल ऐसी है जैसे कोई सूरज की किरणों को अपने मुँह की फूंक से बेनूर करना चाहे, जिस तरह ये महाल (असम्भव) है कि उसके मुँह कि फूंक से सूरज की रोशनी जाती रहे, उसी तरह ये भी महाल

है कि अल्लाह का दीन उन कुफ़्फ़ार से रद्द हो जाये। अल्लाह तआला फ़ैसला कर चुका है कि वो अपने नूर को पूरा करके ही रहेगा, काफ़िर बुरा मानें तो मानते रहें। उसके बाद अपने रसूल और अपने दीन की हक़्क़ानियत को वाज़ेह फ़रमाया, इन दोनों आयतों की पूरी तफ़सीर सूरह तौबा में गुज़र चुकी है, फ़ल्हम्दुलिल्लाह!

***

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا هَلْ اَدُلُّكُمْ عَلٰى تِجَارَةٍ تُنْجِيْكُمْ مِّنْ عَذَابٍ اَلِيْمٍ ⑩
تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَتُجَاهِدُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ بِاَمْوَالِكُمْ وَاَنْفُسِكُمْ ؕ
ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ⑪ يَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوْبَكُمْ وَيُدْخِلْكُمْ جَنّٰتٍ
تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ وَمَسٰكِنَ طَيِّبَةً فِيْ جَنّٰتِ عَدْنٍ ؕ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ⑫
وَّاُخْرٰى تُحِبُّوْنَهَا ؕ نَصْرٌ مِّنَ اللّٰهِ وَفَتْحٌ قَرِيْبٌ ؕ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ ⑬

तर्जुमा : "ऐ ईमान वालो! क्या मैं तुम्हें वो तिजारत बतलाऊँ जो तुम्हें दर्दनाक अ़ज़ाब से बचा ले? (10) अल्लाह तआला पर और उसके रसूल पर ईमान लाओ और अल्लाह की राह में अपने माल और अपनी जानों से जिहाद करो, ये तुम्हारे लिये बेहतर है अगर तुममें इल्म हो। (11) अल्लाह तआला तुम्हारे गुनाह माफ़ फ़रमा देगा और तुम्हें उन जन्नतों में पहुँचायेगा जिनके नीचे नहरें जारी होंगी और साफ़-सुथरे घरों में जो जन्नते अ़द्न में होंगे, यही है बहुत बड़ी कामयाबी। (12) और तुम्हें एक दूसरी नेमत भी देगा जिसे तुम चाहते हो वो अल्लाह की मदद और जल्द फ़तहयाबी है, ईमानदारों को ख़ुशख़बरी दे दो।'

बेहतरीन तिजारत (आयत : 10-13) : हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम (रज़ि.) वाली हदीस़ पहले गुज़र चुकी है कि सहाबा (रज़ि.) ने हुज़ूर (ﷺ) से ये पूछना चाहा कि सबसे ज़्यादा महबूब अ़मल अल्लाह तआला को कौनसा है? इस पर अल्लाह अ़ज़्ज़ व जल्ल ने ये सूरत नाज़िल फ़रमाई कि आओ मैं तुम्हें एक सरासर नफ़ा वाली तिजारत बताऊँ जिसमें घाटे की कोई सूरत ही नहीं है जिससे मक़सूद हासिल और डर ज़ाइल हो जायेगा। वो ये है कि तुम अल्लाह की वहदानियत और उसके रसूल की रिसालत पर ईमान लाओ, अपना जान-माल उसकी राह में क़ुर्बान करने पर तुल जाओ, जान लो कि ये दुनिया की तिजारत और इसके लिये कद्दो-काविश करने से बहुत ही बेहतर है। अगर इस मेरी बतलाई हुई तिजारत के तुम ताजिर बन गये तो तुम्हारी हर लग़्ज़िश से हर गुनाह से मैं

दरगुज़र कर लूँगा और जन्नतों के पाकीज़ा महलात में बुलंद व बाला दर्जों में तुम्हें पहुँचाऊँगा तुम्हारे बालाख़ानों और उन हमेशगी वाले बाग़ात के दरख़्तों तले से साफ़-शफ़्फ़ाफ़ नहरें पूरी रवानी से जारी होंगी। यक़ीन मान लो कि ज़बरदस्त कामयाबी और आला मक़सदवरी यही है। अच्छा इससे भी ज़्यादा सुनो! तुम जो हमेशा दुश्मनों के मुक़ाबले पर मेरी मदद तलब करते रहते हो और अपनी फ़तह चाहते हो तो मेरा वादा है कि ये भी तुम्हें दूँगा। इधर मुक़ाबला हुआ उधर फ़तह हुई। इधर सामने आये उधर फ़तह व नुसरत ने रिकाब बोसी की। दूसरी जगह इरशाद होता है, याअय्युहल्लज़ी-न आमनू इन् तन्सुरुल्ला-ह यन्सुरकुम् व युसब्बित अक़्दामकुम (सूरह मुहम्मद 47 : 7) 'ऐ ईमान वालो! अगर तुम अल्लाह के दीन की मदद करोगे तो अल्लाह तआला तुम्हारी मदद करेगा और तुम्हें साबित क़दमी इनायत फ़रमायेगा।' और फ़रमान है, व लयन्सुरन्नल्ला-ह मंय्यन्सुरुहू इन्नल्ला-ह लक़विय्युन अज़ीज़ (सूरह हज्ज 22 : 40) 'यक़ीनन अल्लाह तआला उसकी मदद करेगा जो अल्लाह के दीन की मदद करे, बेशक अल्लाह तआला बड़ी कुव्वत वाला और ग़ैर फ़ानी इज़्ज़त वाला है।' ये मदद और ये फ़तह दुनिया में और वो जन्नत और नेमत आख़िरत में उन लोगों के हिस्से में है जो अल्लाह तआला की और उसके रसूल की इताअत में लगे रहें और अल्लाह और अल्लाह के दीन की ख़िदमत में जान व माल से दरीग़ न करें, इसीलिये फ़रमा दिया कि ऐ नबी! ईमान वालों को मेरी तरफ़ से ये ख़ुशख़बरी पहुँचा दो।

***

يَاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُوْنُوْٓا اَنْصَارَ اللّٰهِ كَمَا قَالَ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ لِلْحَوَارِيّٖنَ مَنْ
اَنْصَارِيْٓ اِلَى اللّٰهِ ۭ قَالَ الْحَوَارِيُّوْنَ نَحْنُ اَنْصَارُ اللّٰهِ فَاٰمَنَتْ طَّاۗىِٕفَةٌ مِّنْۢ بَنِيْٓ
اِسْرَاۗءِيْلَ وَكَفَرَتْ طَّاۗىِٕفَةٌ ۚ فَاَيَّدْنَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا عَلٰي عَدُوِّهِمْ فَاَصْبَحُوْا ظٰهِرِيْنَ ۝١٤

तर्जुमा : "ऐ ईमान वालो! तुम अल्लाह के मददगार बन जाओ! जिस तरह मरयम के बेटे ईसा ने हवारियों से फ़रमाया कि कौन है जो अल्लाह की राह में मेरा मददगार बने? हवारियों ने कहा, हम अल्लाह की राह में मददगार हैं, पस बनी इस्राईल में से एक जमाअत तो ईमान लाई और एक जमाअत ने कुफ़्र किया, हमने मोमिनों की उनके दुश्मनों के मुक़ाबले पर मदद की पस वो ग़ालिब आ गये।" (14)

पैग़म्बर (अलै.) की मदद करो (आयत : 14) : अल्लाह सुब्हानहू व तआला अपने मोमिन बन्दों को हुक्म देता है कि वो हर आन और हर लहज़ा जान व माल, इज़्ज़त व आबरू, क़ौल व फ़ैअल, नक़्ल व हरकत से दिल और ज़बान से अल्लाह और उसके रसूल की तमामतर बातों की कुबूलियत में रहें। फिर मिसाल देता है

कि हज़रत ईसा (अलै.) के ताबेदारों को देखो कि हज़रत ईसा (अलै.) की आवाज़ पर फ़ौरन लब्बैक पुकार उठे और उनके इस कहने पर कि कोई है जो अल्लाह की बातों पर मेरी इम्दाद करे। उन्होंने बिला ग़ौर अलल फ़ौर कह दिया कि हम सब आपके साथी हैं और दीने इलाही की इम्दाद में आप (अलै.) के ताबेअ हैं। चुनाँचे रूहुल्लाह (अलै.) ने इस्राईलियों और यूनानियों में उन्हें मुबल्लिग़ बनाकर शाम के शहरों में भेजा। हज के दिनों में रसूलुल्लाह (ﷺ) भी फ़रमाया करते थे कि कोई है जो मुझे जगह दे ताकि मैं अल्लाह तआला की रिसालत को पहुँचा दूँ, कुरैश तो मुझे रब का पैग़ाम पहुँचाने से रोक रहे हैं। (सहीह : अहमद : 3/322, 3/339, हदीस़ नम्बर : 14653, दलाइलुन्नुबुव्वत लिल्बैहक़ी : 2/442, इस मआना की रिवायत तिर्मिज़ी, किताब फ़ज़ाइलुल कुरआन, बाब अला रजुलुंय्यहमिलुनी इला क़ौमिही : 2925)

चुनाँचे अहले मदीना के क़बीले औस व ख़जरज को अल्लाह तआला ने ये सआदते अबदी बख़्शी। उन्होंने आप (ﷺ) से बैअत की, आप (ﷺ) की बातें कुबूल कीं और मज़बूत अहदो-पैमान किये कि अगर आप (ﷺ) हमारे यहाँ आ जायें तो फिर किसी सुर्ख़ व स्याह की ताक़त नहीं जो आपको दुख पहुँचाये। हम आपकी तरफ़ से जानें लड़ा देंगे और आप (ﷺ) पर कोई आँच न आने देंगे। फिर जब हुज़ूर (ﷺ) अपने साथियों को लेकर हिज्रत करके उनके यहाँ गये तो फ़िल्वाक़ेअ उन्होंने अपने कहे को पूरा कर दिखाया और अपनी ज़बान की पासदारी की। इसीलिये अन्सार के मुअज़्ज़ज़ लक़ब से मुम्ताज़ हुए और ये लक़ब गोया उनका इम्तियाज़ी नाम बन गया। अल्लाह तआला उनसे ख़ुश हो और उन्हें भी राज़ी करे, आमीन। अब जबकि हवारियों को लेकर अल्लाह के दीन की तब्लीग़ के लिये खड़े हुए तो बनी इस्राईल के कुछ लोग तो राहेरास्त पर आ गये और कुछ लोग न आये बल्कि आपको और आपकी वालिदा माजिदा ताहिरा को बदतरीन बुराई की तरफ़ मन्सूब किया। उन यहूदियों पर अल्लाह की फटकार पड़ी और हमेशा के लिये रान्दा-ए-दरगाह बन गये। फिर मानने वालों में से भी एक जमाअत मानने ही में हद से गुज़र गई और उन्हें उनके दर्जे से बहुत बढ़ा दिया। फिर उस गिरोह में भी कई गिरोह हो गये। कुछ तो कहने लगे कि हज़रत ईसा (अलै.) अल्लाह के बेटे हैं, कुछ ने कहा, तीन में से तीसरे हैं, यानी बाप, बेटा और रूहुल कुदुस और कुछ ने तो आप (अलै.) को अल्लाह ही मान लिया, नऊज़ुबिल्लाह!

इन सबका ज़िक्र सूरह निसा में मुफ़स्सल मुलाहिज़ा हो। सच्चे ईमान वालों की जनाब बारी ने अपने आख़िरुज़्ज़माँ रसूलुल्लाह (ﷺ) की बिअसत से ताईद की, उनके दुश्मन नसरानियों पर उन्हें ग़ालिब कर दिया।

हज़रत ईसा (अलै.) के साथियों का ज़िक्र : हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) फ़रमाते हैं, जब अल्लाह तआला का इरादा हुआ कि हज़रत ईसा (अलै.) को आसमान पर चढ़ाये, आप (अलै.) नहा-धोकर अपने अस्हाब के पास आये। सर से पानी के क़तरे टपक रहे थे। ये बारह सहाबा थे जो एक घर में बैठे हुए थे। आते ही फ़रमाया, तुममें वो भी हैं जो मुझ पर ईमान ला चुके हैं लेकिन फिर मेरे साथ कुफ़्र करेंगे और एक दो बार नहीं बल्कि बारह-बारह मर्तबा। फिर फ़रमाया, तुममें से कौन इस बात पर आमादा है कि उस पर मेरी मुशाबिहत

डाली जाये और वो मेरे बदले क़त्ल किया जाये और जन्नत में मेरे दर्जे में मेरा साथी बने? एक नौजवान जो उन सबमें कम उम्र था उठ खड़ा हुआ और अपने आपको पेश किया। आप (अ.) ने फ़रमाया, तुम बैठ जाओ। फिर वही बात कही, अब की मर्तबा भी वही कम उम्र नौजवान सहाबी खड़े हुए। हज़रत ईसा (अलै.) ने अब की मर्तबा भी उन्हें बिठा दिया। फिर तीसरी मर्तबा यही सवाल किया, अबकी मर्तबा भी यही नौजवान खड़े हुए। आप (अलै.) ने फ़रमाया, बहुत बेहतर। उसी वक़्त उनकी शक्ल व सूरत बिल्कुल हज़रत ईसा (अलै.) जैसी हो गई और ख़ुद हज़रत ईसा (अलै.) उसी घर के एक रोज़न से आसमान की तरफ़ उठा लिये गये। अब यहूदियों की दौड़ आई और उन्होंने उस नौजवान को हज़रत ईसा (अलै.) समझकर गिरफ़्तार कर लिया और क़त्ल कर दिया और सूली पर चढ़ा दिया और हज़रत ईसा (अलै.) की पेशिनगोई के मुताबिक़ उन बाक़ी ग्यारह लोगों में से कुछ ने बारह-बारह मर्तबा कुफ़्र किया हालांकि इससे पहले ईमानदार थे।

फिर बनी इस्राईल के मानने वाले गिरोह के तीन फ़िर्क़े हो गये। एक फ़िर्क़े ने तो कहा कि ख़ुद अल्लाह हमारे दरम्यान बसूरते मसीह था जब तक चाहा रहा, फिर आसमान पर चढ़ गया, उन्हें याक़ूबिया कहा जाता है। एक फ़िर्क़े ने कहा, हममें अल्लाह का बेटा था जब तक अल्लाह ने चाहा उसे हममें रखा और जब चाहा अपनी तरफ़ चढ़ा लिया, उन्हें नस्तूरिया कहा जाता है। तीसरी जमाअत हक़ पर क़ायम रही, उनका अक़ीदा है कि अल्लाह के बन्दे और उसके रसूल हज़रत ईसा (अलै.) हममें थे, जब तक अल्लाह की चाहत रही आप (अलै.) हममें मौजूद रहे। फिर अल्लाह तआला ने अपनी तरफ़ उठा लिया, ये जमाअत मुसलमानों की है। फिर उन दोनों काफ़िर जमाअतों की ताक़त बढ़ गई और उन्होंने उन मुसलमानों को मार-पीटकर क़त्ल व ग़ारत करना शुरू किया और ये दबे-भिजे और मग़लूब ही रहे यहाँ तक कि अल्लाह तआला ने अपने नबी हज़रत मुहम्मद (ﷺ) को भेजा। पस बनी इस्राईल की वो मुसलमान जमाअत आप (ﷺ) पर ईमान लाई और उन काफ़िर जमाअतों ने आप (ﷺ) से भी कुफ़्र किया। पस उन ईमान वालों की अल्लाह तआला ने मदद की और उन्हें उनके दुश्मनों पर ग़ालिब कर दिया। आँहज़रत (ﷺ) का ग़ालिब आ जाना और दीने इस्लाम का तमाम दीनों को मग़लूब कर देना ही उनका ग़ालिब आना और अपने दुश्मनों पर फ़तह पाना है। मुलाहिज़ा हो तफ़्सीर इब्ने जरीर और सुनन नसाई। (अत्तबरी : 23/366)

पस ये उम्मत हक़ पर क़ायम रहकर हमेशा ग़ालिब रहेगी यहाँ तक कि अम्रुल्लाह यानी क़यामत आ जाये और यहाँ तक कि इस उम्मत के आख़िरी लोग हज़रत ईसा (अलै.) के साथ होकर मसीह दज्जाल से लड़ाई करेंगे जैसे कि सहीह अहादीस में मौजूद है, वल्लाहु आलम!

अल्लाह तआला के फ़ज़्ल व करम से सूरह सफ़्फ़ की तफ़्सीर ख़त्म हो गई फ़ल्हम्दुलिल्लाह!

***

FLOW CHART
तरतीबी नक्श-ए-रब्त

MACRO-STRUCTURE
नज़्मे-जली

सूरह जुमुआ - 62

आयात : 11, मदनी, पैराग्राफ : 3

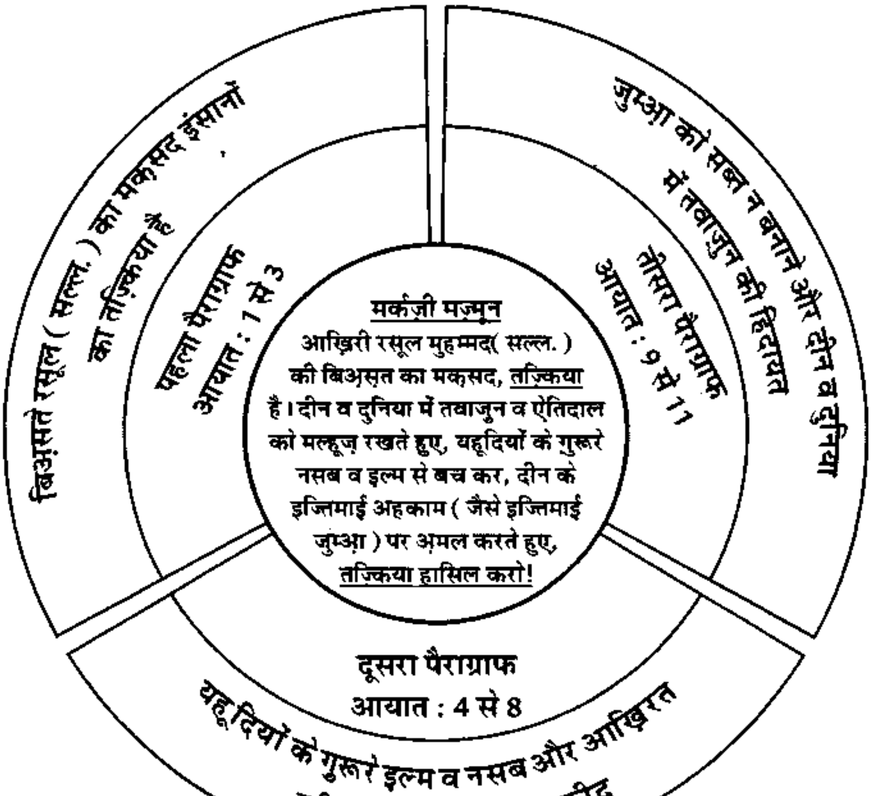

ज़मान-ए-नुज़ूल

सूरतुल जुमुआ का पहला हिस्सा : आयात 1 से 8 ग़ज़्व-ए-ख़ैबर (मुहर्रम 7 हिजरी) के बाद, यानी हज़रत अबू हुरैरह के क़ुबूले इस्लाम के बाद नाज़िल हुई, जिसमें यहूद के पिन्दारे नसब व इल्म पर चोट लगाई गई है कि नुबूवत व रिसालत, बनी इस्राईल की जागीर नहीं। आख़िरी रसूल उम्मिय्यीन यानी बनी इस्माईल में पैदा किया गया है।

जबकि सूरतुल जुमुआ का दूसरा हिस्सा आयात 9 से 11 ग़ालिबन हिजरत के फ़ौरन बाद छः या सात साल पहले नाज़िल हो चुका था, जिसमें नमाज़े जुम्आ की इज्तिमाइय्यत का इल्तिज़ाम करने की हिदायत और यहूद की रविश से बचने का इशारा मौजूद है।

तफ़्सीर सूरह जुमुआ

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ○

तर्जुमा : ''शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है।''

***

يُسَبِّحُ لِلّٰهِ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الۡاَرۡضِ الۡمَلِكِ الۡقُدُّوۡسِ الۡعَزِيۡزِ الۡحَكِيۡمِ ①
هُوَ الَّذِىۡ بَعَثَ فِى الۡاُمِّيّٖنَ رَسُوۡلًا مِّنۡهُمۡ يَتۡلُوۡا عَلَيۡهِمۡ اٰيٰتِهٖ وَيُزَكِّيۡهِمۡ
وَيُعَلِّمُهُمُ الۡكِتٰبَ وَالۡحِكۡمَةَ وَاِنۡ كَانُوۡا مِنۡ قَبۡلُ لَفِىۡ ضَلٰلٍ مُّبِيۡنٍ ② وَّاٰخَرِيۡنَ
مِنۡهُمۡ لَمَّا يَلۡحَقُوۡا بِهِمۡ ؕ وَهُوَ الۡعَزِيۡزُ الۡحَكِيۡمُ ③ ذٰلِكَ فَضۡلُ اللّٰهِ يُؤۡتِيۡهِ مَنۡ يَّشَآءُ ؕ
وَاللّٰهُ ذُو الۡفَضۡلِ الۡعَظِيۡمِ ④

तर्जुमा : ''आसमान व ज़मीन की हर-हर चीज़ अल्लाह तआला की पाकी बयान करती है जो बादशाह निहायत पाक है, ग़ालिब व बाहिक्मत है। (1) वही है जिसने नाख़्वान्दा लोगों में उन ही में से एक रसूल भेजा जो उन्हें उसकी आयतें पढ़कर सुनाता है और उनको पाक करता है और उन्हें किताब व हिक्मत सिखाता है, यक़ीनन ये इससे पहले खुली गुमराही में थे। (2) और दूसरों के लिये भी उन्ही में से जो अब तक उनसे नहीं मिले और वही है ग़ालिब व बाहिक्मत। (3) ये अल्लाह का फ़ज़्ल है जिसे चाहे अपना फ़ज़्ल दे, अल्लाह तआला बहुत बड़े फ़ज़्ल का मालिक है।'' (4)

सहीह मुस्लिम में हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) और हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) जुम्आ की नमाज़ में सूरह जुम्आ और सूरह मुनाफ़िक़ून पढ़ा करते थे। (सहीह मुस्लिम, किताबुल जुमुआ, बाब मा युक़रउ फ़ी सलातिल जुमुआ : 877, अबू दाऊद : 1124, तिर्मिज़ी : 519, इब्ने माजह : 1118, अहमद : 2/429)

फ़िर फ़रमाता है मौत से तो कोई बच ही नहीं सकता, जैसे सूरह निसा में है, (اَيْنَ مَا تَكُوْنُوْا يُدْرِكْكُّمُ الْمَوْتُ) (सूरह निसा 4 : 78) 'तुम जहाँ कहीं भी हो वहाँ तुम्हें मौत पा ही लेगी गो मज़बूत महलों में हो।' मुअजम तबरानी की एक मरफ़ूअ हदीस़ में है, 'मौत से भागने वाले की मिसाल ऐसी है जैसे एक लोमड़ी हो जिस पर ज़मीन का कुछ क़र्ज़ हो, वो उसे इस ख़ौफ़ से कि कहीं ये मुझसे माँग न बैठे भागते-भागते जब थक जाये तब अपने भट में घुस जाये जहाँ घुसी और ज़मीन ने फिर उससे तक़ाज़ा किया कि लोमड़ी मेरा क़र्ज़ अदा कर। वो फिर वहाँ से दुम दबाये हुए तेज़ी से भागी। आख़िर यूंही भागते-भागते हलाक हो गई।' (ज़ईफ़ : मुअजम अल्कबीर : 6922, मज्मउज़्ज़वाइद : 2/323)

***

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِذَا نُوْدِيَ لِلصَّلٰوةِ مِنْ يَّوْمِ الْجُمُعَةِ فَاسْعَوْا اِلٰى ذِكْرِ اللّٰهِ وَذَرُوا الْبَيْعَ ؕ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۝٩ فَاِذَا قُضِيَتِ الصَّلٰوةُ فَانْتَشِرُوْا فِي الْاَرْضِ وَابْتَغُوْا مِنْ فَضْلِ اللّٰهِ وَاذْكُرُوا اللّٰهَ كَثِيْرًا لَّعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ۝١٠

तर्जुमा : ''ऐ वो लोगो जो ईमान लाये हो! जुम्आ के दिन नमाज़ की अज़ान दी जाये तो तुम अल्लाह के ज़िक्र की तरफ़ आ जाया करो और ख़रीदो-फ़रोख़्त छोड़ दो, ये तुम्हारे हक़ में बेहतर है अगर तुमको समझ है। (9) फिर जब नमाज़ हो चुके तो ज़मीन में फैल जाओ और अल्लाह का फ़ज़्ल तलाश करो और बकस़रत अल्लाह का ज़िक्र किया करो ताकि तुम फ़लाह पा लो।'' (10)

जुम्आ का मआना व मफ़्हूम (आयत : 9-10) : जुम्आ का लफ़्ज़ जमा से मुश्तक़ है। वजहे इश्तिक़ाक़ ये है कि इस दिन मुसलमान बड़ी-बड़ी मसाजिद में अल्लाह की इबादत के लिये जमा होते हैं और ये भी वजह है कि इस दिन तमाम मख़्लूक़ कामिल हुई। छ: दिन में सारी कायनात बनाई गई है छठा दिन जुम्आ का है। इसी दिन हज़रत आदम (अ़लै.) पैदा किये गये, इसी दिन जन्नत में बसाये गये और इसी दिन वहाँ से निकाले गये, इसी दिन में क़यामत क़ायम होगी, इस दिन में एक ऐसी साअ़त है कि उस वक़्त मोमिन बन्दा अल्लाह तआ़ला से जो तलब करे अल्लाह तआ़ला उसे इनायत फ़रमाता है, जैसे कि सहीह अहादीस़ में आया है। इब्ने अबी हातिम में है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने हज़रत सलमान (रज़ि.) से पूछा, जानते हो जुम्आ का दिन क्या है? उन्होंने कहा, अल्लाह तआ़ला और उसके रसूल (ﷺ) को ज़्यादा इल्म है। आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'इसी दिन तेरे माँ-बाप (यानी आदम व हव्वा) को अल्लाह तआ़ला ने जमा किया था यूँ फ़रमाया कि तुम्हारे बाप को जमा किया। इसी तरह एक मौक़ूफ़ हदीस़ में हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से मरवी है, वल्लाहु आ़लम!

जुम्आ के फ़ज़ाइल : पहले इसे यौमुल उरूबा कहा जाता था। पहली उम्मतों को भी हर सात दिन में एक दिन दिया गया था, लेकिन जुम्आ की हिदायत उन्हें न हुई। यहूदियों ने हफ़्ता पसंद किया जिसमें मख़्लूक़ की पैदाइश शुरू भी न हुई थी। नसारा ने तो इतवार इख़्तियार किया जिसमें मख़्लूक़ की पैदाइश की इब्तिदा हुई है और इस उम्मत के लिये अल्लाह तआला ने जुम्आ को पसंद फ़रमाया है, जिस दिन अल्लाह तआला ने मख़्लूक़ को पूरा किया था। जैसे सहीह बुख़ारी की हदीस में है, 'हम दुनिया में आने के ऐतिबार से तो सबसे पीछे हैं लेकिन क़यामत के दिन सबसे पहले होंगे, सिवाय इसके कि उन्हें हम से पहले किताबुल्लाह दी गई। फिर उनके इस दिन में उन्होंने इख़्तिलाफ़ किया। अल्लाह तआला ने हमें राहे रास्त दिखाई। पस लोग इसमें भी हमारे पीछे हैं, यहूदी कल और नसरानी परसों।' (सहीह बुख़ारी, किताबुल जुमुअह, बाब फ़रज़ुल जुमुअह : 876, सहीह मुस्लिम : 855)

जुम्आ के मसाइल : मुस्लिम में इतना और भी है कि क़यामत के दिन तमाम मख़्लूक़ में से सबसे पहले फ़ैसला हमारे बारे में किया जायेगा। (सहीह मुस्लिम, किताबुल जुमुअह, बाब हिदायतु हाज़िहिल उम्मति लियौमिल जुमुअह : 856, इब्ने माजह : 1083)

यहाँ अल्लाह तआला मोमिनों को जुम्आ के दिन अपनी इबादत के लिये जमा होने का हुक्म दे रहा है। जैसे कि इस आयत में सई से मुराद दौड़ना नहीं बल्कि मतलब ये है कि नमाज़ के लिये क़सद करो, चल पड़ो, कोशिश करो, काम-काज छोड़कर उठ खड़े हो जाओ जैसे कि इस आयत में सई कोशिश के मआना में है, (وَمَنْ اَرَادَ الْاٰخِرَةَ وَسَعٰى لَهَا سَعْيَهَا) (सूरह बनी इस्राईल 17 : 19) 'जो शख़्स आख़िरत का इरादा करे फिर उसके लिये कोशिश भी करे।' हज़रत उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) और हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) की क़िरअत में बजाए फ़स्औ के फ़म्ज़ू है। (अत्तबरी : 23/381) ये याद रहे कि नमाज़ के लिये दौड़कर जाना मना है। बुख़ारी व मुस्लिम में है, 'जब तुम इक़ामत सुनो तो नमाज़ के लिये सकीनत और वक़ार के साथ चलो, दौड़ो नहीं जो पाओ पढ़ लो, जो फ़ौत हो अदा कर लो।' (सहीह बुख़ारी, किताबुल अज़ान, बाब ला युसआ इलस्सलात वल्यअतिहा बिस्सकीनति वल्वक़ार : 636, सहीह मुस्लिम : 602, इब्ने माजह : 775, अहमद : 2/532, इब्ने हिब्बान : 2146)

एक और रिवायत में है कि आप (ﷺ) नमाज़ में थे जो लोगों के पाँव की आहट ज़ोर से सुनी। फ़ारिग़ होकर फ़रमाया, क्या बात है? लोगों ने कहा, हज़रत हम जल्दी-जल्दी नमाज़ में शामिल हुए। फ़रमाया, 'ऐसा न करो! नमाज़ को इत्मीनान के साथ चलकर आओ, जो पाओ पढ़ लो, जो छूट जाये पूरी कर लो।' (सहीह बुख़ारी, किताबुल अज़ान, बाब क़ौलुर्रजुलि फ़अतिनस्सलात : 635, सहीह मुस्लिम : 602) हज़रत हसन (रह.) फ़रमाते हैं, अल्लाह की क़सम यहाँ ये हुक्म नहीं कि दौड़कर नमाज़ के लिये आओ, ये तो मना है बल्कि मुराद दिल और निय्यत और ख़ुशूअ व ख़ुज़ूअ है।' हज़रत क़तादा (रह.) फ़रमाते हैं, 'अपने दिल और अपने अमल से कोशिश करो।' (अत्तबरी : 23/380)

जैसे और जगह है, (فَلَمَّا بَلَغَ مَعَهُ السَّعْيَ) (सूरह साफ़्फ़ात 37: 102) 'हज़रत ज़बीहुल्लाह जब

ख़लीलुल्लाह के साथ चलने-फिरने के क़ाबिल हो गये।'

जुम्आ के लिये आने वाले को गुस्ल भी करना चाहिये। बुख़ारी व मुस्लिम में है, 'जब तुममें से कोई जुम्आ की नमाज़ के लिये जाने का इरादा करे वो गुस्ल कर लिया करे।' (सहीह बुख़ारी, किताबुल जुमुअ़ह, बाब फ़ज़्लुल गुस्लि यौमल जुमुअ़ह : 877, सहीह मुस्लिम : 844, तिर्मिज़ी : 492, अहमद : 2/9)

और हदीस़ में है, 'जुम्आ के दिन गुस्ल हर बालिग़ पर वाजिब है।' (सहीह बुख़ारी, किताबुल जुमुअ़ह, बाब फ़ज़्लुल गुस्लि यौमल जुमुअ़ह : 879, सहीह मुस्लिम : 846, अबू दाऊद : 341)

और रिवायत में है, 'हर बालिग़ पर सातवें दिन सर और जिस्म का धोना है।' (सहीह बुख़ारी, किताबुल जुमुअ़ह, बाब हल अ़ला मल्लम यश्हदिल जुमुअ़ता गुस्ल : 897, सहीह मुस्लिम : 849, बैहक़ी : 3/188)

सहीह मुस्लिम की हदीस़ में है, 'वो दिन जुम्आ का दिन है।' (सहीह : नसाई : किताबुल जुमुअ़ह, बाब ईजाबुल गुस्ल यौमल जुमुअ़ह : 1379, अहमद : 3/304, मुसन्नफ़ इब्ने अबी शैबा : 1/95, इब्ने हिब्बान : 1219)

सुनने अरबआ़ में है, 'जो शख़्स जुम्आ के दिन अच्छी तरह गुस्ल करे और सवेरे से ही मस्जिद की तरफ़ चल दे, पैदल जाये, सवार न हो और इमाम से क़रीब होकर बैठे, ख़ुत्बे को कान लगाकर सुने, लग़्व न करे तो उसे हर-हर क़दम के बदले साल भर के रोज़ों और साल भर के क़ियाम का स़वाब है।' (सहीह : अबू दाऊद : किताबुत्तहारत, बाब फ़िल्गुस्लि यौमल जुमुअ़ह : 345, तिर्मिज़ी : 496, नसाई : 1382, इब्ने माजह : 1087, अहमद : 4/104, हाकिम : 1/282, इब्ने हिब्बान : 2781)

बुख़ारी व मुस्लिम में है, 'जो शख़्स जुम्आ के दिन जनाबत के गुस्ल की तरह गुस्ल करके अव्वल साअ़त में जाये उसने गोया एक ऊँट अल्लाह की राह में क़ुर्बान किया, दूसरी साअ़त में जाने वाला मिस़्ल गाय की क़ुर्बानी करने वाले के है, तीसरी साअ़त में जाने वाला भेड़ की क़ुर्बानी करने वाले जैसा है, चौथी साअ़त में जाने वाला मुर्ग़ अल्लाह की राह में सदक़ा करने वाले की तरह है, पाँचवीं साअ़त में जाने वाला अण्डा राहेलिल्लाह देने वाले जैसा है। फिर जब इमाम आ जाये तो फ़रिश्ते ख़ुत्बा सुनने के लिये हाज़िर हो जाते हैं।' (सहीह बुख़ारी, किताबुल जुमुअ़ह, बाब अल्इस्तिमाउ़ अलल ख़ुत्बति यौमल जुमुअ़ह : 929, सहीह मुस्लिम : 750, अबू दाऊद : 351, तिर्मिज़ी : 499, अहमद : 2/460, इब्ने हिब्बान : 2775)

मुस्तहब है कि जुम्आ के दिन अपनी ताक़त के मुताबिक़ अच्छा लिबास पहने, ख़ुश्बू लगाये, मिस्वाक करे और सफ़ाई और पाकीज़गी के साथ जुम्आ की नमाज़ के लिये आये। एक हदीस़ में गुस्ल के बयान के साथ ही मिस्वाक करना और ख़ुश्बू मलना भी है। (सहीह बुख़ारी, किताबुल जुमुअ़ह, बाब अत्तीबु लिल्जुमुअ़ह : 880, सहीह मुस्लिम : 846)

मुस्नद अहमद में है, 'जो शख़्स जुम्आ के दिन गुस्ल करे और अपने घर वालों को ख़ुश्बू मले अगर हो और अच्छा लिबास पहने, फिर मस्जिद में आये और कुछ नवाफ़िल पढ़े अगर जी चाहे और किसी को ईज़ा

न दे (यानी गर्दनें फलांग कर न आये न किसी बैठे हुए को हटाये) फिर जब इमाम आ जाये और ख़ुत्बा शुरू हो ख़ामोशी से सुने तो उसके गुनाह जो उस जुम्आ से लेकर दूसरे जुम्आ तक के हों सबका कफ़्फ़ारा हो जाता है।' (हसन : अहमद : 5/420)

अबू दाऊद और इब्ने माजह में है हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम (रज़ि.) फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलल्लाह (ﷺ) से मिम्बर पर बयान फ़रमाते हुए सुना, 'तुममें से किसी पर क्या हर्ज है अगर वो अपने रोज़मर्रा के मेहनती लिबास के अलावा दो कपड़े ख़रीदकर जुम्आ के लिये मख़सूस कर रखे। (हसन : अबू दाऊद, किताबुस्सलात, बाब अल्लबिसु लिल्जुमुअह : 1078, इब्ने माजह : 1095)

हुज़ूर (ﷺ) ने ये फ़रमान उस वक़्त फ़रमाया जब लोगों पर वही मामूली चादरें देखीं तो फ़रमाया कि अगर ताक़त हो तो ऐसा क्यों न कर लो। (हसन बिश्शवाहिद : इब्ने माजह, किताब इक़ामतुस्सलात, बाब मा जाअ फ़िज़्ज़ीनति यौमल जुमुअह : 1096)

जुम्आ की अज़ान : जिस अज़ान का यहाँ इस आयत में ज़िक्र है उससे मुराद वो अज़ान है जो इमाम के मिम्बर पर बैठ जाने के बाद होती है। नबी (ﷺ) के ज़माने में यही अज़ान थी। जब आप घर से तशरीफ़ लाते, मिम्बर पर जाते और आपके बैठ जाने के बाद आप (ﷺ) के सामने ये अज़ान होती थी। इससे पहले की अज़ान हुज़ूर (ﷺ) के ज़माने में न थी, इसे अमीरुल मोमिनीन हज़रत उ़समान बिन अफ़्फ़ान (रज़ि.) ने सिर्फ़ लोगों की कसरत को देखकर ज़्यादा किया। सहीह बुख़ारी में है नबी (ﷺ) और हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ और उ़मर फ़ारूक़ (रज़ि.) के ज़माने में जुम्आ की अज़ान सिर्फ़ उसी वक़्त होती थी जब इमाम मिम्बर पर ख़ुत्बा देने के लिये बैठ जाते। हज़रत उ़समान (रज़ि.) के ज़माने में जब लोग बहुत ज़्यादा हो गये तो आप (रज़ि.) ने दूसरी अज़ान एक अलग मकान पर कहलवानी ज़्यादा की। उस मकान का नाम ज़ोरा था। (सहीह बुख़ारी, किताबुल जुमुअह, बाब अल्अज़ानु यौमुल जुमुअह : 912) मस्जिद से क़रीब सबसे बुलंद यही मकान था।

हज़रत मक्हूल से इब्ने अबी हातिम में रिवायत है कि अज़ान सिर्फ़ एक ही थी जब इमाम आता था उसके बाद सिर्फ़ तकबीर होती थी। जब नमाज़ खड़ी होने लगे उसी अज़ान के वक़्त ख़रीदो-फ़रोख़्त हराम होती है। हज़रत उ़समान (रज़ि.) ने इससे पहले की अज़ान का हुक्म सिर्फ़ इसलिये दिया था कि लोग जमा हो जायें। जुम्आ में आने का हुक्म आज़ाद मर्द को है, औरतों, गुलामों और बच्चों को नहीं। मुसाफ़िर, मरीज़ और तीमारदार और ऐसे ही और उ़ज़्र वाले भी मअज़ूर किये गये हैं जैसे कि कुतुबे फ़ुरूअ में इसका सुबूत मौजूद है। फिर फ़रमाता है बैअ को छोड़ दो यानी ज़िक्रुल्लाह के लिये चल पड़ो। तिजारत को तर्क कर दो, जब नमाज़े जुम्आ की अज़ान हो जाये। उ़लमाए किराम का इत्तिफ़ाक़ है कि अज़ान के बाद ख़रीदो-फ़रोख़्त हराम है। इसमें इख़्तिलाफ़ है कि देने वाला अगर दे तो वो भी सहीह है या नहीं? ज़ाहिर आयत से तो यही मालूम होता है कि वो भी सहीह न ठहरेगा। वल्लाहु आलम!

जुम्आ के लिये ख़रीदो-फ़रोख़्त छोड़ दो : फिर फ़रमाता है बैअ को छोड़कर ज़िक्रुल्लाह और नमाज़ की

इल्म अल्लाह तआ़ला अ़ता करता है (आयत : 1-4) : हर बेज़बान और नातिक़ (बोलने वाली) चीज़ अल्लाह तआ़ला अ़ज़्ज़ व जल्ल की पाकीज़गी बयान करती रहती है। जैसे और जगह भी फ़रमाया है कि कोई चीज़ ऐसी नहीं जो उसकी तस्बीह उसकी हम्द के साथ न करती हो, तमाम मख़्लूक़ चाहे आसमान की हो चाहे ज़मीन की, उसकी तारीफ़ों और पाकीज़गियों के बयान में मसरूफ़ व मशग़ूल है। वो आसमान और ज़मीन का बादशाह और इन दोनों में अपना पूरा तसर्रुफ़ और अटल हुक्म जारी करने वाला है, वो तमाम नुक़सानात से पाक और बेऐब है। तमाम सिफ़ाते कमालिया के साथ मौसूफ़ है, वो अ़ज़ीज़ व हकीम है। इसकी तफ़्सीर कई बार गुज़र चुकी है। उम्मिय्यून से मुराद अ़रब हैं। जैसे और जगह फ़रमाने बारी है, (وَ قُلْ لِّلَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ وَالْاُمِّيّٖنَ ءَاَسْلَمْتُمْ) (सूरह आले इमरान 3 : 20) 'तू अहले किताब और अनपढ़ लोगों से कह दे कि क्या तुमने इस्लाम क़ुबूल किया? और वो मुसलमान हो जायें तो राहेरास्त पर हैं और अगर मुँह फेर लें तो तुझ पर तो सिर्फ़ पहुँचा देना है और अपने बन्दों की पूरी देखभाल करने वाला अल्लाह तआ़ला है।' यहाँ अ़रब का ज़िक्र इसलिये नहीं कि ग़ैर अ़रब की नफ़ी हो बल्कि सिर्फ़ इसलिये है कि उन पर एहसान व इक्राम बनिस्बत दूसरों के बहुत ज़्यादा है। जैसे और जगह है, (اِنَّهٗ لَذِكْرٌ لَّكَ وَلِقَوْمِكَ) व इन्नहू लज़िक्रुल्-लक वलि-क़ौमिक (सूरह ज़ुख़रुफ़ 43 : 44) 'ये तेरे लिये भी नसीहत है और तेरी क़ौम के लिये भी।' यहाँ भी क़ौम की ख़ुसूसियत नहीं क्योंकि क़ुरआन करीम सब जहान वालों के लिये नसीहत है। इसी तरह और जगह फ़रमान है, (وَ اَنْذِرْ عَشِيْرَتَكَ الْاَقْرَبِيْنَ ﴿٢١٤﴾) (सूरह शुअ़रा 26 : 214) 'अपने क़राबतदार और कुम्बे वालों को डरा दे।' यहाँ भी ये मतलब हर्गिज़ नहीं कि आप (ﷺ) की तम्बीह सिर्फ़ अपने घर वालों के साथ मख़्सूस है बल्कि आ़म है। इरशादे बारी तआ़ला है, (قُلْ يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اِنِّيْ رَسُوْلُ اللّٰهِ اِلَيْكُمْ جَمِيْعًا) (सूरह आ़राफ़ 7 : 158) 'लोगो! मैं तुम सबकी तरफ़ अल्लाह का रसूल हूँ।'

और जगह फ़रमान है, (لِاُنْذِرَكُمْ بِهٖ وَ مَنْۢ بَلَغَ) (सूरह अन्आ़म 6 : 19) 'इसके साथ मैं तुम्हें ख़बरदार कर दूँ और हर उस शख़्स को जिसे ये पहुँचे।' इसी तरह क़ुरआन की बाबत फ़रमाया, (وَمَنْ يَّكْفُرْ بِهٖ مِنَ الْاَحْزَابِ فَالنَّارُ مَوْعِدُهٗ) (सूरह हूद 11 : 17) 'तमाम गिरोह में से जो भी इसका इंकार करे वो जहन्नमी है।' इसी तरह की और भी बहुत सी आयतें हैं जिनसे साफ़ साबित है कि हुज़ूर (ﷺ) की बिअ़सत तमाम रूए ज़मीन की तरफ़ थी कुल मख़्लूक़ के लिये आप (ﷺ) पैग़म्बर थे। हर सुर्ख़ व स्याह की तरफ़ आप (ﷺ) नबी बनाकर भेजे गये थे। सलवातुल्लाहि व सलामुहू अ़लैहि! सूरह अन्आ़म की तफ़्सीर में इसका पूरा बयान हम कर चुके हैं और बहुत सी आयात व अहादीस़ वारिद की हैं, फ़ल्हम्दुलिल्लाह! यहाँ ये फ़रमाना कि अनपढ़ों यानी अ़रबों में अपना रसूल भेजना इसलिये है कि हज़रत ख़लीलुल्लाह (अ़लै.) की दुआ़ की क़ुबूलियत मालूम हो जाये। आप (अ़लै.) ने अहले मक्का के लिये दुआ़ माँगी थी कि अल्लाह तआ़ला उनमें एक रसूल उन ही में से भेज जो उन्हें अल्लाह की आयतें पढ़कर सुनाये, उन्हें पाकीज़गी सिखाये और किताबो-हिक्मत की तालीम दे। पस अल्लाह तआ़ला ने आपकी ये दुआ़ क़ुबूल फ़रमाई और जबकि मख़्लूक़ को नबीयुल्लाह की सख़्त हाजत थी, सिवाय चंद अहले किताब के जो हज़रत ईसा (अ़लै.) के सच्चे दीन पर क़ायम थे और इफ़रात व

तफ़रीत से अलग थे बाक़ी तमाम दुनिया दीने हक़ को भुला बैठी थी और अल्लाह की मर्ज़ी के ख़िलाफ़ के कामों में मुब्तला थी। अल्लाह तआला ने आप (ﷺ) को भेजा। आप (ﷺ) ने उन अनपढ़ों को अल्लाह के कलाम की आयतें पढ़कर सुनाईं उन्हें पाकीज़गी सिखाई और किताबो-हिक्मत का मुअल्लिम बना दिया। हालांकि इससे पहले वो खुली गुमराही में थे। सुनिये! अरब हज़रत इब्राहीम (अलै.) के दीन के दावेदार थे लेकिन हालत ये थी कि असल दीन को ख़ुर्द-बुर्द कर चुके थे। उसमें इस क़द्र तग़य्युर व तबद्दुल (रद्दो-बदल) कर दिया था कि तौहीद व शिर्क से और यक़ीन शक से बदल चुका था। साथ ही बहुत सी अपनी ईजाद करदा बिदअतें दीने अल्लाह में शामिल कर दी थीं। इसी तरह अहले किताब ने अपनी किताब को बदल दिया था। उनमें तहरीफ़ कर ली थी और मुतग़य्यर (चेंज) कर दिया था। साथ ही मआना में भी उलट-फेर कर लिया था।

पस अल्लाह पाक ने हज़रत मुहम्मद (ﷺ) को अज़ीमुश्शान शरीअत और कामिल मुकम्मल दीन देकर दुनिया वालों की तरफ़ भेजा कि इस फ़साद की इस्लाह करें, अहले दुनिया को असल अहकामे इलाही पहुँचायें, अल्लाह की मर्ज़ी और नामर्ज़ी के अहकाम लोगों को मालूम करा दें, जन्नत से क़रीब करने वाले, अज़ाब से निजात दिलवाने वाले तमाम आमाल बतलायें, सारी मख़्लूक़ के हादी बनें, उसूल व फ़ुरूअ सब सिखायें, कोई छोटी बड़ी बात बाक़ी न छोड़ें तमामतर शक-शुब्हे सबके दूर कर दें और ऐसे दीन पर लोगों को डाल दें जिसमें हर भलाई मौजूद हो। इस बुलंद व बाला ख़िदमत के लिये आप (ﷺ) में वो बरतरियाँ और बुज़ुर्गियाँ जमा कर दीं जो न आपसे पहले किसी में थीं न आपके बाद किसी में हो सकीं। अल्लाह तआला आप (ﷺ) पर हमेशा-हमेशा दरूद व सलाम नाज़िल फ़रमाता रहे, आमीन!

दूसरी आयत की तफ़्सीर में हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से सहीह बुख़ारी में मरवी है कि हम आँहज़रत (ﷺ) के पास बैठे हुए थे कि आप (ﷺ) पर सूरह जुम्आ नाज़िल हुई। जब आप (ﷺ) ने इस आयत की तिलावत फ़रमाई तो लोगों ने पूछा कि आख़रीन मिन्हुम से क्या मुराद है? तीन मर्तबा हुज़ूर (ﷺ) से सवाल हुआ तब आप (ﷺ) ने अपना हाथ हज़रत सलमान फ़ारसी (रज़ि.) के सर पर रखा और फ़रमाया, 'अगर ईमान सुरय्या के सितारे के पास होता तो भी उन लोगों में से एक या कई एक पा लेते।' (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरतुल जुमुआ, बाब क़ौलुहू व आख़रीन मिन्हुम लम्मा यल्हक़ू बिहिम:4897, सहीह मुस्लिम:2546, तिर्मिज़ी: 3310)

इस रिवायत से मालूम हुआ कि ये सूरत मदनी है और ये भी साबित हुआ कि हुज़ूर (ﷺ) की पैग़म्बरी तमाम दुनिया वालों की तरफ़ है सिर्फ़ अरब के लिये ही मख़्सूस नहीं, क्योंकि आप (ﷺ) ने इस आयत की तफ़्सीर फ़ारस वालों को फ़रमाया। इसी आम बिअसत की बिना पर आप (ﷺ) ने फ़ारस व रोम के बादशाहों के नाम इस्लाम क़ुबूल करने के फ़रामीन भेजे।

हज़रत मुजाहिद (रह.) वग़ैरह भी फ़रमाते हैं, इससे मुराद अजमी लोग हैं। (अत्तबरी : 23/374)

यानी अरब के अलावा लोग जो हुज़ूर (ﷺ) पर ईमान लायें और आप (ﷺ) की वह्य की तस्दीक़ करें।

इब्ने अबी हातिम की हदीस में है कि अब से तीन-तीन पुश्तों के बाद आने वाले मेरे उम्मती बग़ैर

हिसाब के जन्नत में दाख़िल होंगे। फिर आप (ﷺ) ने इस आयत की तिलावत की। (ज़ईफ़ : सुनन लिइब्ने अबी आसिम : 309, वलीद बिन मुस्लिम लम युसर्रिह बिस्सिमाअ़ल मुसलसल)

वो अल्लाह इज़्ज़त वाला, हिक्मत वाला है, अपनी शरीअ़त और अपनी तक़दीर में ग़ालिब बाहिक्मत है। फिर फ़रमान है ये अल्लाह का फ़ज़्ल है यानी आँहज़रत (ﷺ) को ऐसी ज़बरदस्त अ़ज़ीमुश्शान नुबूवत के साथ सरफ़राज़ फ़रमाना और इस फ़ज़्ले अ़ज़ीम से बहरावर करना, ये ख़ास अल्लाह का फ़ज़्ल है। अल्लाह अपना फ़ज़्ल जिसे चाहे दे, वो बहुत बड़े फ़ज़्ल व करम वाला है।

***

مَثَلُ الَّذِيْنَ حُمِّلُوا التَّوْرٰىةَ ثُمَّ لَمْ يَحْمِلُوْهَا كَمَثَلِ الْحِمَارِ يَحْمِلُ اَسْفَارًا ؕ بِئْسَ
مَثَلُ الْقَوْمِ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿۵﴾ قُلْ
يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ هَادُوْۤا اِنْ زَعَمْتُمْ اَنَّكُمْ اَوْلِيَآءُ لِلّٰهِ مِنْ دُوْنِ النَّاسِ فَتَمَنَّوُا
الْمَوْتَ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿۶﴾ وَلَا يَتَمَنَّوْنَهٗۤ اَبَدًۢا بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْهِمْ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ
بِالظّٰلِمِيْنَ ﴿۷﴾ قُلْ اِنَّ الْمَوْتَ الَّذِىْ تَفِرُّوْنَ مِنْهُ فَاِنَّهٗ مُلٰقِيْكُمْ ثُمَّ تُرَدُّوْنَ اِلٰى
عٰلِمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿۸﴾

तर्जुमा : ''जिन लोगों को तौरात पर अ़मल करने का हुक्म दिया गया फिर उन्होंने उस पर अ़मल नहीं किया उनकी मिस़ाल उस गधे की सी है जो बहुत सी किताबें लादे हो, अल्लाह की बातों को झुठलाने वालों की बड़ी बुरी मिस़ाल है, अल्लाह ऐसे ज़ालिमों को हिदायत नहीं देता। (5) कह दे कि ऐ यहूदियो! अगर तुम्हारा दावा है कि तुम अल्लाह के दोस्त हो दूसरे लोग नहीं, तो तुम मौत की तमन्ना करो अगर तुम सच्चे हो। (6) ये हर्गिज़ मौत की तमन्ना न करेंगे बवजहे उन आमाल के जो अपने आगे अपने हाथों भेज रखे हैं, इन ज़ालिमों को अल्लाह तआ़ला ख़ूब जानने वाला है। (7) कह दे कि जिस मौत से तुम भागते फिरते हो वो तो तुम्हें पहुँच कर ही रहेगी फिर तुम सब छिपे-खुले के जानने वाले अल्लाह की तरफ़ लौटाये जाओगे और वो तुम्हें तुम्हारे किये हुए तमाम काम बतला देगा।' (8)

यहूद की मज़म्मत (निंदा) (आयत : 5-8) : इन आयतों में यहूदियों की मज़म्मत बयान की गई है कि उन्हें तौरात दी गई और अ़मल करने के लिये उन्होंने ली, फिर अ़मल न किया। फ़रमाया जाता है कि उनकी मिसाल गधे की सी है कि अगर उस पर किताबों का बोझ लाद दिया जाये तो उसे ये तो मालूम है कि उस पर कोई बोझ है लेकिन ये नहीं जानता कि उसमें क्या है? इसी तरह ये यहूद हैं कि ज़ाहिरी अल्फ़ाज़ तो ख़ूब रटे होते हैं लेकिन न तो ये मालूम है कि मतलब क्या है? न उस पर उनका अ़मल है बल्कि और तब्दील व तहरीफ़ करते रहते हैं। पस दरअसल ये उससे बेसमझ जानवर से भी बदतर हैं। क्योंकि उसे तो क़ुदरत ने समझ ही नहीं दी लेकिन ये समझ रखते हुए फिर भी उसका इस्तेमाल नहीं करते। इसीलिये दूसरी आयत में फ़रमाया गया है, (أُولَٰئِكَ كَالْأَنْعَامِ بَلْ هُمْ أَضَلُّ ۚ أُولَٰئِكَ هُمُ الْغَافِلُونَ ﴿١٧٩﴾) (सूरह आराफ़ 7 : 179) 'ये लोग मिस्ल चौपायों के हैं बल्कि उनसे भी ज़्यादा बहके हुए, ये ग़ाफ़िल लोग हैं।' यहाँ फ़रमाया अल्लाह की आयतों के झुठलाने वालों की बुरी मिसाल है। ऐसे ज़ालिम अल्लाह की रहनुमाई से महरूम रहते हैं। मुस्नद अहमद में है, 'जो शख़्स जुम्आ के दिन इमाम के ख़ुत्बे की हालत में बात करे वो मिस्ल गधे के है जो किताबें उठाये हुए हो और जो उसे कहे कि चुप रह उसका भी जुम्आ जाता रहा।' (ज़ईफ़ : अहमद : 1/230, मुजालिद बिन सईद ज़ईफ़ मशहूर)

फिर फ़रमाता है ऐ यहूदियो! अगर तुम्हारा दावा है कि तुम हक़ पर हो और आँहज़रत (ﷺ) और आप के अस्हाब नाहक़ पर हैं तो आओ और दुआ माँगो कि हम दोनों में से जो नाहक़ पर हो अल्लाह तआला उसे मौत दे। फिर फ़रमाता है कि उन्होंने जो आमाल आगे भेज रखे हैं वो उनके सामने हैं जैसे कुफ़्र, फ़िस्क़ व फ़ुजूर, ज़ुल्म, नाफ़रमानी वग़ैरह। इस वजह से हमारी पेशीनगोई है कि वो उस पर आमादगी नहीं करेंगे, उन ज़ालिमों को अल्लाह बख़ूबी जानता है।

सूरह बक़रह की आयत (قُلْ إِن كَانَتْ) (सूरह बक़रह 2 : 94) की तफ़्सीर यहूदियों के इस मुबाहिले का पूरा ज़िक्र हम कर चुके हैं और वहीं ये भी बयान कर दिया है कि मुराद ये है कि अपने ऊपर अगर ख़ुद गुमराह हों या अपने मुक़ाबिल पर अगर वो गुमराह हों तो मौत की बद्दुआ करें, जैसे कि नसरानियों के मुबाहिले का ज़िक्र सूरह आले इमरान में गुज़र चुका है। मुलाहिज़ा हो तफ़्सीर सूरह मरयम। (فَمَنْ حَاجَّكَ) (सूरह आले इमरान 3 : 61) मुश्रिकीन से भी मुबाहिले का ऐलान किया गया था, मुलाहिज़ा हो तफ़्सीर (قُلْ مَن كَانَ فِي الضَّلَالَةِ) (सूरह मरयम 19 : 75) 'ऐ नबी! उनसे कह दे कि जो गुमराही में हो रहमान उसे बढ़ा दे।'

मुस्नद अहमद में हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से मरवी है कि अबू जहल लअ़नतुल्लाहि अ़लैह ने कहा कि अगर मुहम्मद (ﷺ) को कअ़बा के पास देखूँगा तो उसकी गर्दन नापूँगा। जब ये ख़बर हुज़ूर को पहुँची तो आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'अगर ये ऐसा करता तो सब देखते फ़रिश्ते उसे पकड़ लेते और अगर यहूद मेरे मुक़ाबले पर आकर मौत तलब करते तो यक़ीनन वो मर जाते और अपनी जगह जहन्नम में देख लेते और अगर मुबाहिले के लिये लोग निकलते तो वो लौटकर अपने अहलो-अ़याल को हर्गिज़ न पाते।' (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरह इक़रअ् बिस्मि रब्बिकल्लज़ी ख़लक़, बाब क़ौलुहू तआ़ला : कल्ला लइल्लम् यन्तहि लनस्फ़अ़म्-बिन्नासियह : 4958, तिर्मिज़ी : 3345, अहमद : 1/248)

मुनाफ़िक़ों की मज़म्मत (आयत 1-4) : अल्लाह तआला मुनाफ़िक़ों के निफ़ाक़ को ज़ाहिर करता है कि गो ये तेरे पास आकर क़समें खा-खाकर कर अपने इस्लाम का इज़हार करते हैं, तेरी रिसालत का इक़रार करते हैं, मगर दरअसल दिल के खोटे हैं। फ़िल्वाक़ेअ आप (ﷺ) रसूलुल्लाह हैं, उनका ये क़ौल भी है मगर चूंकि दिल में इसका कोई असर नहीं लिहाज़ा ये झूठे हैं। इस बात में कि ये तुझे रसूलुल्लाह मानते हैं। ये सच्चे होने के लिये गो क़समें खायें लेकिन आप (ﷺ) यक़ीन न कीजिये ये क़समें तो उनके बायें हाथ का खेल है, ये तो अपने झूठ को सच बनाने का ज़रिया हैं। मक़सद ये है कि मुसलमान उनसे होशियार रहे कहीं उन्हें सच्चा ईमानदार समझकर किसी बात में उनकी तक़लीद न करने लगें कि ये इस्लाम के रंग में कुफ़्र करा दें, ये अल्लाह की राह से दूर और बद आमाल लोग हैं।

ज़ह्हाक की क़िरअत में ईमानहुम अलिफ़ के ज़ेर के साथ है तो मतलब ये होगा कि उन्होंने अपनी ज़ाहिरी तस्दीक़ को अपने लिये तक़िया बना लिया है कि क़त्ल से और हुक्मे कुफ़्र से दुनिया में बच जायें। ये निफ़ाक़ उनके दिलों में इस गुनाह की शूमी के बाइस रच गया है कि ईमान से घूमकर कुफ़्र की तरफ़ और हिदायत से हटकर ज़लालत की जानिब आ गये हैं। अब दिलों पर अल्लाह की मुहर लग चुकी है और बात की तह को पहुँचने की क़ाबिलियत सब सल्ब (छिन) हो चुकी है।

बज़ाहिर तो ख़ुशरू ख़ुशगो हैं। इस फ़साहत और बलाग़त से बातचीत करते हैं कि ख़्वाह-मख़्वाह दूसरे का दिल अटका लें, लेकिन बातिन में बड़े खोटे, बड़े कमज़ोर दिल वाले नामर्द और बदनिय्यत हैं। जहाँ कोई वाक़िया भी रूनुमा हुआ और समझ बैठे कि हाय मरे। और जगह है, (أَشِحَّةً عَلَيْكُمْ) (सूरह अहज़ाब 33 : 19) 'तुम्हारे मुक़ाबले में बुख़्ल करते हैं।'

फिर जिस वक़्त ख़ौफ़ होता है तो तुम्हारी तरफ़ इस तरह आँखें फेर-फेर कर देखते हैं गोया किसी शख़्स पर मौत की बेहोशी तारी है फिर जब ख़ौफ़ चला जाता है तो तुम्हें अपनी बदकलामी से छेद डालते हैं और माले ग़नीमत की हिर्स में न कहने की बातें कह गुज़रते हैं। ये बेईमान हैं, इनके आमाल ग़ारत हैं, अल्लाह पर ये बात निहायत ही आसान है।

पस इन की ये आवाज़ें ख़ाली पेट के ढोल की बुलंद बांग से ज़्यादा वक़अत नहीं रखतीं, यही तुम्हारे दुश्मन हैं इनकी चिकनी-चुपड़ी बातों और सिक़ह् और मिस्कीन सूरतों के धोखे में न आ जाना। अल्लाह इन्हें बर्बाद करे ज़रा सोचें तो क्यों हिदायत को छोड़कर बेराही पर चल रहे हैं?

मुस्नद अहमद में है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'मुनाफ़िक़ों की बहुत सी अलामतें हैं जिनसे वो पहचान लिये जाते हैं उनका सलाम लानत है, उनकी ख़ूराक लूटमार है, उनकी ग़नीमत हराम और ख़यानत है, वो मस्जिदों की नज़दीकी नापसंद करते हैं, वो नमाज़ों के लिये आख़िरी वक़्त आते हैं, तकब्बुर और नुख़ुव्वत वाले होते हैं, नर्मी और सुलूक, तवाज़ोअ और इन्किसारी से महरूम होते हैं। न ख़ुद उन कामों को करें, न दूसरों के उन कामों को वक़अत की निगाह से देखें, रात की लकड़ियाँ और दिन के शोर व गुल करने वाले।' और रिवायत में है, 'दिन को ख़ूब खाने-पीने वाले और रात को ख़ुश्क लकड़ी की तरह पड़े रहने वाले।' (ज़ईफ़ : अहमद : 2/293, मज्मउज़्ज़वाइद : 1/107)

وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ تَعَالَوْا يَسْتَغْفِرْ لَكُمْ رَسُولُ اللهِ لَوَّوْا رُءُوسَهُمْ وَرَأَيْتَهُمْ
يَصُدُّونَ وَهُمْ مُّسْتَكْبِرُونَ ۝٥ سَوَآءٌ عَلَيْهِمْ أَسْتَغْفَرْتَ لَهُمْ أَمْ لَمْ تَسْتَغْفِرْ
لَهُمْ ؕ لَنْ يَّغْفِرَ اللهُ لَهُمْ ؕ إِنَّ اللهَ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الْفٰسِقِيْنَ ۝٦ هُمُ الَّذِيْنَ
يَقُوْلُوْنَ لَا تُنْفِقُوْا عَلٰى مَنْ عِنْدَ رَسُوْلِ اللهِ حَتّٰى يَنْفَضُّوْا ؕ وَلِلّٰهِ خَزَآئِنُ
السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَلٰكِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ لَا يَفْقَهُوْنَ ۝٧ يَقُوْلُوْنَ لَئِنْ رَّجَعْنَآ اِلَى
الْمَدِيْنَةِ لَيُخْرِجَنَّ الْاَعَزُّ مِنْهَا الْاَذَلَّ ؕ وَلِلّٰهِ الْعِزَّةُ وَلِرَسُوْلِهٖ وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ
وَلٰكِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝٨

और जब उनसे कहा जाता है कि आओ तुम्हारे लिये अल्लाह के रसूल (ﷺ) इस्तिग़फ़ार करें तो अपने सर मटकाते हैं और आप देखेंगे कि वो तकब्बुर करते हुए रुक जाते हैं। (5) उनके हक़ में आप का इस्तिग़फ़ार करना और न करना दोनों बराबर है। अल्लाह तआला उन्हें हरगिज़ न बख़्शेगा। बेशक अल्लाह तआला (ऐसे) नाफ़रमान लोगों को हिदायत नहीं देता। (6) यही वो हैं जो कहते हैं कि जो लोग रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास हैं उन पर कुछ ख़र्च न करो यहाँ तक कि वो इधर-उधर हो जाएं और आसमान व ज़मीन के कुल ख़ज़ाने अल्लाह तआला की मिल्कियत हैं लेकिन ये मुनाफ़िक़ बे समझ हैं। ये कहते हैं कि अगर अब लौटकर मदीना जायेंगे तो हर इज़्ज़त वाला वहाँ से ज़िल्लत वाले को निकाल देगा, सुनो! इज़्ज़त तो सिर्फ़ अल्लाह तआला के लिये है और उसके रसूल के लिये और ईमानदारों के लिये है लेकिन ये मुनाफ़िक़ बेइल्म हैं।

मुनाफ़िक़ों की बद ख़स्लतें (आयत 5-8) : मल्ऊन मुनाफ़िक़ीन का ज़िक्र हो रहा है कि उनके गुनाहों पर जब उनसे सच्चे मुसलमान कहते हैं कि आओ रसूलुल्लाह (ﷺ) तुम्हारे लिये इस्तिग़फ़ार करेंगे, तो अल्लाह तआला तुम्हारे गुनाह माफ़ फ़रमा देगा तो ये तकब्बुर के साथ सर हिलाने लगते हैं और ऐराज़ करते हैं और रुक जाते हैं, इसका बदला यही है कि अब उनके लिये बख़्शिश के दरवाज़े बंद हैं। नबी का इस्तिग़फ़ार भी उन्हें कुछ नफ़ा न देगा। भला उन फ़ासिक़ों की क़िस्मत में हिदायत कहाँ? सूरह बराअत में भी इसी मज़मून की आयत गुज़र चुकी है और वहीं इसकी तफ़्सीर और साथ ही इसके मुताल्लिक़ की हदीसें भी बयान कर दी गई हैं।

इब्ने अबी हातिम में है कि सुफ़ियान (रह.) रावी ने अपना मुँह दायें जानिब फेर लिया और और ग़ज़ब व तकब्बुर के साथ तिरछी आँख से घूरकर दिखाया कि इसी का ज़िक्र इस आयत में है और सलफ़ में से अक्सर हज़रात का फ़रमान है कि ये सब का सब बयान अब्दुल्लाह बिन उबय बिन सलूल का है जैसे कि अन्क़रीब आ रहा है इन्शाअल्लाह। सीरत मुहम्मद बिन इस्हाक़ में है कि अब्दुल्लाह बिन उबय बिन सलूल अपनी क़ौम का बड़ा और शरीफ़ शख़्स था। जब नबी (ﷺ) जुम्आ के दिन ख़ुत्बे के लिये मिम्बर पर बैठते थे तो ये खड़ा हो जाता और कहता था लोगो! ये हैं अल्लाह के रसूल जो तुममें मौजूद हैं जिनकी वजह से अल्लाह तआला ने तुम्हारा इकराम किया और तुम्हें इज़्ज़त दी। अब तुम पर फ़र्ज़ है कि तुम आप (ﷺ) की मदद करो और आपकी इज़्ज़त व तकरीम करो। आपका फ़रमान सुनो, और जो फ़रमायें बजा लाओ। ये कहकर बैठ जाया करता था। उहुद के मैदान में उसका निफ़ाक़ खुल गया और ये वहाँ से हुज़ूर (ﷺ) की खुली नाफ़रमानी करके तिहाई लश्कर को लेकर मदीना को वापस लौट आया।

जब रसूलुल्लाह (ﷺ) ग़ज़्व-ए-उहुद से फ़ारिग़ हुए और मदीना में भलाई के साथ तशरीफ़ लाये, जुम्आ का दिन आया और आप (ﷺ) मिम्बर पर चढ़े तो हस्बे आदत ये आज भी खड़ा हुआ और कहना चाहता ही था कि कुछ सहाबा (रज़ि.) इधर-उधर से खड़े हो गये और उसके कपड़े पकड़ कर कहने लगे, दुश्मने इलाही! बैठ जा तू अब ये कहने का मुँह नहीं रखता तूने जो कुछ किया वो किसी से छिपा नहीं, अब तू इसका अहल नहीं कि ज़बान से जो जी में आये बंकारे। ये नाराज़ होकर लोगों की गर्दनें फलांगता हुआ बाहर निकल गया और कहता जाता था कि गोया मैं किसी बुरी बात के कहने के लिये खड़ा हुआ था, मैं तो उसका काम और मज़बूत करने के लिये खड़ा हुआ था। चंद अन्सारी उसे मस्जिद के दरवाज़े पर मिल गये। उन्होंने कहा क्या बात है? तो कहा, मैं तो उसका काम मज़बूत करने के लिये खड़ा हुआ था जो चंद अस्हाब मुझ पर उछलकर आ गये मुझे घसीटने लगे और डांट-डपट करने लगे गोया कि मैं किसी बुरी बात के कहने के लिये खड़ा हुआ था? हालांकि मेरी निय्यत ये थी कि मैं आप (ﷺ) की बातों की ताईद करूँ। उन्होंने कहा, ख़ैर अब तुम वापस चलो हम रसूलुल्लाह (ﷺ) से अर्ज़ करेंगे आप (ﷺ) तुम्हारे लिये अल्लाह तआला से बख़्शिश चाहेंगे। उसने कहा, मुझे कोई ज़रूरत नहीं।

अब्दुल्लाह बिन उबय का वाक़िया : हज़रत क़तादा और हज़रत सुद्दी (रह.) फ़रमाते हैं, ये आयत अब्दुल्लाह बिन उबय के बारे में उतरी है। वाक़िया ये था कि उसी क़ौम के एक नौजवान मुसलमान ने उसकी ऐसी ही चंद बुरी बातें रसूलुल्लाह तक पहुँचाई थीं, हुज़ूर (ﷺ) ने उसे बुलवाया तो ये साफ़ इंकार कर गया और क़समें खा गया। अन्सारियों ने उस सहाबी को मलामत और डांट-डपट की और उसे झूठा जाना, इस पर ये आयतें उतरीं और उस मुनाफ़िक़ की झूठी क़समों का और उस नौजवान सहाबी की सच्चाई का अल्लाह तआला ने बयान फ़रमाया। अब उससे कहा गया तू चल और रसूलुल्लाह (ﷺ) से इस्तिग़फ़ार कर, तो उसने इंकार के लहजे में सर हिला दिया और न गया। (अत्तबरी : 23/399)

इब्ने अबी हातिम में है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) की आदते मुबारक थी कि जिस मन्ज़िल में उतरते वहाँ से कूच न करते जब तक नमाज़ न पढ़ लें। ग़ज़्व-ए-तबूक में हुज़ूर (ﷺ) को ख़बर पहुँची कि अ़ब्दुल्लाह बिन उबय कह रहा है कि हम इज़्ज़त वाले उन ज़िल्लत वालों को मदीना पहुँचकर निकाल देंगे। पस आप (ﷺ) ने आख़िरी दिन में उतरने से पहले ही कूचकर दिया। उससे कहा गया कि हुज़ूर (ﷺ) के पास जाकर अपनी ख़ता की माफ़ी अल्लाह से तलब कर। इसका बयान इस आयत में है। इसकी सनद इब्ने ज़ुबैर (रह.) तक तो सहीह है लेकिन ये कहना कि ये वाक़िया ग़ज़्व-ए-तबूक का है इसमें नज़र है बल्कि ये ठीक नहीं है। इसलिये कि अ़ब्दुल्लाह बिन उबय बिन सलूल तो इस ग़ज़्वे में था ही नहीं बल्कि लश्कर की एक जमाअ़त को लेकर ये तो लौट गया था।

कुतुबे सियर व मग़ाज़ी के मुसन्निफ़ीन में ये तो मशहूर है कि ये वाक़िया ग़ज़्व-ए-मरीसीअ़ यानी ग़ज़्व-ए-बनू मुस्तलिक़ का है। चुनाँचे इस क़िस्से में हज़रत मुहम्मद बिन यहया बिन हिब्बान और हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अबू बकर और आ़सिम बिन उ़मर बिन क़तादा (रह.) से मरवी है कि 'उस लड़ाई के मौक़े पर हुज़ूर (ﷺ) का एक जगह क़ियाम था। वहाँ हज़रत जहजाह बिन सईद ग़िफ़ारी और हज़रत सिनान बिन यज़ीद का पानी के इज़्दहाम पर कुछ झगड़ा हो गया। जहजाह हज़रत उ़मर (रज़ि.) के कारिन्दे थे झगड़े ने तूल पकड़ा। सिनान ने अन्सारियों को अपनी मदद के लिये आवाज़ दी और जहजाह ने मुहाजिरीन को। उस वक़्त हज़रत ज़ैद बिन अरक़म (रज़ि.) वग़ैरह अन्सार की एक जमाअ़त अ़ब्दुल्लाह बिन उबय के पास बैठी हुई थी। उसने जब ये फ़रियाद सुनी तो कहने लगा, लो हमारे ही शहरों में उन लोगों ने हम पर हमले शुरू कर दिये। अल्लाह की क़सम! हमारी इन क़ुरैशियों की मिसाल वही है जो किसी ने कहा कि अपने कुत्ते को मोटा-ताज़ा कर ताकि तुझे ही काटे अल्लाह की क़सम! अगर हम लौटकर मदीना गये तो हम इज़्ज़तदार लोग उन बेइज़्ज़तदारों को वहाँ से निकाल देंगे। फिर उसकी क़ौम के जो लोग उसके पास बैठे थे उनसे कहने लगा, ये सब आफ़त तुमने ख़ुद अपने हाथों अपने ऊपर ली है तुमने उन्हें अपने शहर में बसाया, तुमने उन्हें अपने माल का आधो-आध हिस्सा दिया अब भी अगर तुम उनकी माली इम्दाद न करो तो ये ख़ुद तंग आकर मदीना से निकल भागेंगे। हज़रत ज़ैद बिन अरक़म (रज़ि.) ने ये तमाम बातें सुनीं। आप (ﷺ) उस वक़्त बहुत कम उ़म्र थे। सीधे रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास हाज़िर हुए और कुल वाक़िया बयान फ़रमाया। उस वक़्त आप (ﷺ) के पास उ़मर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) भी बैठे हुए थे, ग़ज़बनाक होकर फ़रमाने लगे, ऐ अल्लाह के रसूल! अ़ब्बाद बिन बिश्र को हुक्म फ़रमाइये कि उसकी गर्दन अलग कर दे। हुज़ूर (ﷺ) ने फ़रमाया, 'फिर तो लोगों में ये मशहूर हो जायेगा कि मुहम्मद अपने साथियों की गर्दनें मारते हैं। ये ठीक नहीं, जाओ लोगों में कूच की मुनादी कर दो।' अ़ब्दुल्लाह बिन उबय को जब ये मालूम हुआ कि उसकी बातचीत का इल्म आँहज़रत (ﷺ) को हो गया है तो बहुत सटपटाया और हुज़ूर (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर होकर मअ़ज़रत और हीले-हवाले तावील और तहरीफ़ करने लगा और क़समें खा गया कि मैंने ऐसा हर्गिज़ नहीं कहा। चूंकि ये शख़्स अपनी क़ौम में क़वी, बाइज़्ज़त और बावक़अ़त था और लोग भी कहने लगे, हुज़ूर शायद इस बच्चे ने ही ग़लती की हो, इसे वहम हो गया हो, वाक़िया साबित तो होता नहीं। हुज़ूर (ﷺ) यहाँ से जल्दी ही कूच के वक़्त से पहले ही तशरीफ़ ले चले। रास्ते में हज़रत उसैद बिन हुज़ैर

तरफ़ तुम्हारा आना ही तुम्हारे हक़ में दीन व दुनिया की बेहतरी का बाइस है अगर तुममें इल्म हो। हाँ जब नमाज़ से फ़रागत हो जाये तो उस मज्मऐ से चले जाना और अल्लाह के फ़ज़्ल की तलाश में लग जाना तुम्हारे लिये हलाल है। उराक बिन मालिक (रज़ि.) जुम्आ की नमाज़ से फ़ारिग़ होकर लौटकर मस्जिद के दरवाज़े पर खड़े हो जाते और ये दुआ पढ़ते, अल्लाहुम्म इन्नी अजबतु दअ्वतक व सल्लैतु फ़रीज़तक वन्शरतु कमा अमर्तनी फ़रज़ुक़्नी मिन् फ़ज़्लिक व अन्-त ख़ैरुर्राज़िक़ीन 'ऐ अल्लाह! मैंने तेरी आवाज़ पर हाज़िरी दी और तेरी फ़र्ज़ करदा नमाज़ अदा की फिर तेरे हुक्म के मुताबिक़ इस मज्मअ से उठ आया, अब तू मुझे अपना फ़ज़्ल नसीब फ़रमा, तू सबसे बेहतर रोज़ी रसाँ है।' (तफ़्सीर कुर्तुबी : 18/108) इस आयत को पेशे नज़र रखकर कुछ सलफ़े-सालेहीन ने फ़रमाया है कि जो शख़्स जुम्आ के दिन नमाज़े जुम्आ के बाद ख़रीदो-फ़रोख़्त करे उसे अल्लाह तआला सत्तर हिस्से ज़्यादा बरकत देगा। फिर फ़रमाता है कि ख़रीदो-फ़रोख़्त की हालत में भी ज़िक्रुल्लाह किया करो। दुनिया के नफ़े में इस क़द्र मशग़ूल न हो जाओ कि उख़रवी नफ़ा भूल बैठो। हदीस में है, 'जो शख़्स बाज़ार जाये और वहाँ ला इला-ह इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरीक लहू लहुल् मुल्कु व लहुल् हम्दु वहु-व अला कुल्लि शैइन क़दीर पढ़े अल्लाह तआला उसके लिये एक लाख नेकियाँ लिखता है और एक लाख बुराइयाँ माफ़ फ़रमाता है। (ज़ईफ़ : इब्ने माजह, किताबुत्तिजारात, बाब अल्अस्वाकु व दुख़ूलुहा : 2235, इसकी सनद में अम्र बिन दीनार मौला आलिज़्ज़ुबैर ज़ईफ़ रावी है। अत्तक़रीब : 2/69, 577)

हज़रत मुजाहिद (रह.) फ़रमाते हैं, कसीरुज़्ज़िक्र उसी वक़्त कहलाता है जबकि खड़े, बैठे, लेटे हर वक़्त अल्लाह की याद में मशग़ूल रहे।

***

وَإِذَا رَأَوْا تِجَارَةً أَوْ لَهْوًا انْفَضُّوا إِلَيْهَا وَتَرَكُوكَ قَائِمًا ۚ قُلْ مَا عِنْدَ اللَّهِ خَيْرٌ مِنَ اللَّهْوِ وَمِنَ التِّجَارَةِ ۚ وَاللَّهُ خَيْرُ الرَّازِقِينَ ⑪

और जब कोई सौदा बिकता देखें या कोई तमाशा नज़र आ जाए तो उसकी तरफ़ दौड़ जाते हैं, और आप को खड़ा ही छोड़ देते हैं। आप कह दीजिये कि अल्लाह के पास जो है वो खेल और तिजारत से बेहतर है और अल्लाह तआला बेहतरीन रोज़ी रसाँ है। (11)

जुम्आ और तिजारत (आयत 11) : मदीना में जुम्आ वाले दिन तिजारती माल के आ जाने की वजह से जो हज़रात ख़ुत्बा छोड़कर उठ खड़े हुए थे, उन्हें अल्लाह तआला एताब कर रहा है कि ये लोग जब कोई तिजारत या खेल-तमाशा देख लेते हैं तो उसकी तरफ़ चल खड़े होते हैं और तुझे ख़ुत्बे में ही खड़ा छोड़ देते हैं। हज़रत मुक़ातिल बिन हय्यान (रह.) फ़रमाते हैं, ये माले तिजारत दहिया बिन ख़लीफ़ा (रज़ि.) का था। जुम्आ वाले दिन

आया और शहर में ख़बर के लिये तबल बजने लगा। हज़रत दहिया (रज़ि.) उस वक़्त मुसलमान न हुए थे। तबल की आवाज़ सुनकर सब लोग उठ खड़े हुए सिर्फ़ चंद आदमी रह गये। मुस्नद अहमद में है, सिर्फ़ बारह आदमी रह गये बाक़ी लोग उस तिजारती क़ाफ़िले की तरफ़ चल दिये जिस पर ये आयत उतरी। (अहमद : 3/313, सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरतुल जुमुअह, बाब वइज़ा रऔ तिजारतन औ लहवनिन : 4899, सहीह मुस्लिम : 563, तिर्मिज़ी : 3311)

मुस्नद अबी यअ्ला में इतना और भी है कि हुज़ूर (ﷺ) ने फ़रमाया, 'अगर ये भी बाक़ी न रहते और सब उठकर चले जाते तो तुम सब पर ये वादी आग बनकर भड़क उठती।' जो लोग हुज़ूर (ﷺ) के पास से नहीं गये थे उनमें हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ और हज़रत उमर फ़ारूक़ (रज़ि.) भी थे। इस आयत से ये भी मालूम हुआ कि जुम्आ का ख़ुत्बा खड़े होकर देना चाहिये।

सहीह मुस्लिम में है नबी (ﷺ) जुम्आ के दिन दो ख़ुत्बे देते थे, दरम्यान में बैठ जाते थे। क़ुरआन पढ़ते थे और लोगों को तज़्कीर व नसीहत फ़रमाते थे। (सहीह मुस्लिम, किताबुल जुमुअह, बाब ज़िक्रुल ख़ुत्बतैन क़ब्लस्सलात : 862)

यहाँ ये बात भी मालूम रहनी चाहिये कि ये वाक़िया बक़ौल कुछ के उस वक़्त का है जब आँहज़रत (ﷺ) जुम्आ की नमाज़ के बाद ख़ुत्बा दिया करते थे। मरासील अबू दाऊद में है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ख़ुत्बे से पहले की नमाज़ पढ़ा करते थे। जैसे ईदैन में होता है यहाँ तक कि एक मर्तबा आप (ﷺ) ख़ुत्बा सुना रहे थे कि एक शख़्स ने आकर कहा, दहिया बिन ख़लीफ़ा माले तिजारत लेकर आ गया है। ये सुनकर सिवाय चंद लोगों के और सब उठ खड़े हुए। (किताबुल मरासील, : 59 सनद ज़ईफ़ लिइन्क़िताइही)

अल्हम्दुलिल्लाह सूरह जुम्आ की तफ़्सीर पूरी हुई।

***

FLOW CHART
तरतीबी नक्शा-ए-रब्त

MACRO-STRUCTURE
नज़्मे-जली

सूरह मुनाफ़िक़ून - 63

आयात : 11, मदनी, पैराग्राफ : 2

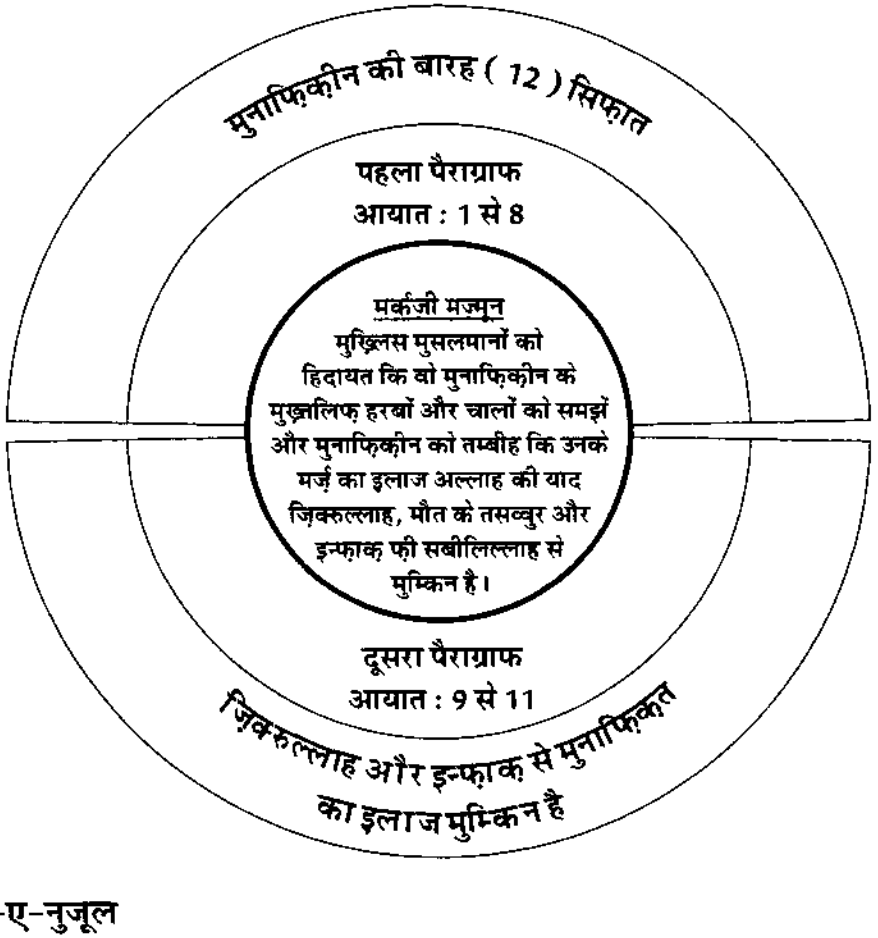

ज़मान-ए-नुज़ूल

सूरह मुनाफ़िक़ून ग़ज़्व-ए-बनी मुस्तलक़ (शअ़बान 6 हिजरी) से वापसी पर नाज़िल हुई, जब रईसुल मुनाफ़िक़ीन अ़ब्दुल्लाह बिन उबय ने कहा था कि वो ज़्यादा इज़्ज़त वाला अल्अ़ज़्ज़ु है और नऊज़ुबिल्लाह रसूलुल्लाह (सल्ल.) अल्अज़ल्ल यानी ज़्यादा ज़लील हैं, वो रसूलुल्लाह (सल्ल.) को मदीने से निकाल बाहर करेगा।

तफ़्सीर सूरह मुनाफ़िक़ून

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ ○

तर्जुमा : ''शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है।''

إِذَا جَآءَكَ الْمُنٰفِقُوْنَ قَالُوْا نَشْهَدُ إِنَّكَ لَرَسُوْلُ اللّٰهِ ۘ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ إِنَّكَ
لَرَسُوْلُهٗ ؕ وَاللّٰهُ يَشْهَدُ إِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ لَكٰذِبُوْنَ ① اِتَّخَذُوْٓا اَيْمَانَهُمْ جُنَّةً
فَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ اِنَّهُمْ سَآءَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ② ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ اٰمَنُوْا
ثُمَّ كَفَرُوْا فَطُبِعَ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ فَهُمْ لَا يَفْقَهُوْنَ ③ وَاِذَا رَاَيْتَهُمْ تُعْجِبُكَ
اَجْسَامُهُمْ ؕ وَاِنْ يَّقُوْلُوْا تَسْمَعْ لِقَوْلِهِمْ ؕ كَاَنَّهُمْ خُشُبٌ مُّسَنَّدَةٌ ؕ يَحْسَبُوْنَ
كُلَّ صَيْحَةٍ عَلَيْهِمْ ؕ هُمُ الْعَدُوُّ فَاحْذَرْهُمْ ؕ قٰتَلَهُمُ اللّٰهُ ۟ اَنّٰى يُؤْفَكُوْنَ ④

तर्जुमा : ''तेरे पास जब मुनाफ़िक़ आते हैं तो कहते हैं कि हम इस बात के क़ाइल हैं कि बेशक आप अल्लाह के रसूल हैं, अल्लाह जानता है कि यक़ीनन तू उसका रसूल है, अल्लाह गवाही देता है कि ये मुनाफ़िक़ क़त्अन झूठे हैं। (1) उन्होंने अपनी क़समों को ढाल बना रखा है पस अल्लाह की राह से रुक गये, बेशक बुरा है वो काम जो ये कर रहे हैं। (2) ये इस सबब से है कि ये ईमान लाकर फिर काफ़िर हो गये पस उनके दिलों पर मुहर कर दी गई अब ये नहीं समझते। (3) जब तू उन्हें देखे तो उनके जिस्म तुझे ख़ुशनुमा मालूम हों, ये जब बातें करने लगें तो तू उनकी बातों पर अपना कान लगा ले, गोया कि ये लकड़ियाँ हैं सहारे से लगाई हुई, हर सख़्त आवाज़ को अपनी हलाकत समझते हैं, यही हक़ीक़ी दुश्मन हैं इनसे बचता रह, अल्लाह इन्हें ग़ारत करे, कहाँ से फिरे जाते हैं।'' (4)

(रज़ि.) मिले और आप (ﷺ) की शाने नुबूवत के क़ाबिल बाअदब सलाम किया फिर अ़र्ज़ की कि हुज़ूर आज क्या बात है जो वक़्त से पहले ही जनाब ने कूच किया। हुज़ूर (ﷺ) ने फ़रमाया, 'क्या तुम्हें मालूम नहीं हुआ कि तुम्हारे साथी इब्ने उबय ने क्या कहा, वो कहता है कि मदीना जाकर हम अ़ज़ीज़ उन ज़लीलों को निकाल देंगे।' हज़रत उसैद (रज़ि.) ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल! इ़ज़्ज़त वाले आप हैं और ज़लील वो हैं। ऐ अल्लाह के रसूल! आप उसकी बातों का ख़्याल भी न फ़रमाइये। दरअसल ये बहुत जला हुआ है, सुनिये कि अहले मदीना ने उसे सरदार बनाने पर इत्तिफ़ाक़ कर लिया था। ताज तैयार हो रहा था कि अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त ने आप (ﷺ) को लाया। उसके हाथ से मुल्क निकल गया पस ये चिराग़ पा हो रहा है। हुज़ूर (ﷺ) चलते ही रहे दोपहर को ही चल दिये थे, शाम हुई, रात हुई, सुबह हुई यहाँ तक कि धूप में तेज़ी आ गई तब आप (ﷺ) ने पड़ाव किया ताकि लोग इस बात पर फिर न उलझ जायें। चूंकि तमाम लोग थके-हारे और रात के जागे हुए थे उतरते ही सब सो गये।' इधर ये सूरत नाज़िल हुई। (ज़ईफ़ लिइरसालिही : दलाइलुन्नुबुव्वह लिल्बैहक़ी : 4/52-53)

बैहक़ी में है कि हम ग़ज़्वे में हुज़ूर (ﷺ) के साथ थे एक मुहाजिर ने एक अन्सार को पत्थर मार दिया। इस पर बात बढ़ गई और दोनों ने अपनी जमाअ़त से फ़रियाद की और उन्हें पुकारा। हुज़ूर (ﷺ) सख़्त नाराज़ हुए और फ़रमाने लगे, ये क्या जाहिलिय्यत की हांक लगाने लगे, इस फ़िज़ूल ख़राब आ़दत को छोड़ दो। अ़ब्दुल्लाह बिन उबय बिन सलूल कहने लगा, अब मुहाजिर ये करने लग गये। अल्लाह की क़सम! मदीना पहुँचते ही हम ज़ीइ़ज़्ज़त उन ज़लीलों को वहाँ से निकालकर बाहर करेंगे। उस वक़्त मदीना में अन्सार की तादाद मुहाजिरीन से बहुत ज़्यादा थी, गो बाद में मुहाजिरीन बहुत ज़्यादा हो गये थे। हज़रत उ़मर (रज़ि.) को जब इब्ने उबय के इस क़ौल का इ़ल्म हुआ तो हुज़ूर (ﷺ) से उसके क़त्ल करने की इजाज़त चाही मगर आप (ﷺ) ने रोक दिया।' (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरतुल मुनाफ़िक़ून, बाब यक़ूलून लइर्रजअ्ना इलल मदीनह : 4907, सहीह मुस्लिम : 2584, तिर्मिज़ी : 3315, अहमद : 3/338, इब्ने हिब्बान : 5990)

मुस्नद अहमद में हज़रत ज़ैद बिन अरक़म (रज़ि.) से मरवी है कि ग़ज़्व-ए-तबूक में मैंने जब उस मुनाफ़िक़ का ये क़ौल हुज़ूर (ﷺ) के सामने बयान किया और उसने आकर इंकार किया और क़समें खा गया, उस वक़्त मेरी क़ौम ने मुझे बहुत कुछ बुरा कहा और हर तरह मलामत की कि मैंने ऐसा क्यों किया? मैं निहायत ग़मगीन दिल होकर वहाँ से चल दिया और सख़्त रंज व ग़म में था जो हुज़ूर (ﷺ) ने मुझे याद किया और फ़रमाया, 'अल्लाह तआ़ला ने तेरा उ़ज़्र नाज़िल फ़रमाया और तेरी सच्चाई ज़ाहिर की है और ये आयत उतरी हुमुल्लज़ीन...आख़िर तक।' (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरतुल मुनाफ़िक़ीन, बाब क़ौलुहू ज़ालिक बिअन्नहुम आमनू सुम्म कफ़रू फ़तुबिअ़:4902,तिर्मिज़ी:3314, अहमद : 4/368) ये हदीस़ और भी बहुत सी किताबों में है।

मुस्नद अहमद में हज़रत ज़ैद बिन अरक़म (रज़ि.) का ये बयान इस तरह है कि मैं अपने चाचा के साथ एक ग़ज़्वे में था और मैंने अ़ब्दुल्लाह बिन उबइ की ये दोनों बातें सुनी। मैंने अपने चाचा से बयान कीं और मेरे चाचा ने हुज़ूर (ﷺ) से अ़र्ज़ कीं। जब आप (ﷺ) ने उसे बुलाया, उसने इंकार किया और क़समें खा गया तो

हुज़ूर (ﷺ) ने उसे सच्चा और मुझे झूठ जाना। मेरे चाचा ने भी मुझे बहुत बुरा-भला कहा कि मुझे इस क़द्र ग़म और नदामत हुई कि मैंने घर से बाहर निकलना छोड़ दिया यहाँ तक कि ये सूरत उतरी और आपने मेरी तस्दीक़ की और मुझे ये पढ़ कर सुनाई। (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरतुल मुनाफ़िक़ीन, बाब इत्तख़ज़ू ऐमानहुम जुन्नतुन : 4900, अहमद : 4/373)

मुस्न्द अहमद की और रिवायत में है कि एक सफ़र के मौक़े पर जब सहाबा (रज़ि.) को तंगी पहुँची तो उसने उन्हें कुछ देने की मुमानिअ़त कर दी अल्अख़। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने जब उन्हें इसलिये बुलवाया कि आप (ﷺ) उनके लिये इस्तिग़फ़ार करें तो उन्होंने उससे भी मुँह फेर लिया। क़ुरआन करीम ने उन्हें टेक लगाये हुए लकड़ियाँ इसलिये कहा है कि ये लोग अच्छे जमील जिस्म वाले थे। (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, बाब इज़ा रऐतहुम तुअ्जिबुक : 4903, सहीह मुस्लिम : 2772, अहमद : 4/373)

तिर्मिज़ी वग़ैरह में हज़रत ज़ैद बिन अरक़म (रज़ि.) से रिवायत है कि हम एक ग़ज़्वे में हुज़ूर (ﷺ) के साथ निकले। हमारे साथ कुछ अ़राबी लोग भी थे। पानी की जगह वो पहले पहुँचना चाहते थे। इसी तरह हम भी इसी की कोशिश में रहते थे। एक मर्तबा एक अ़राबी ने जाकर पानी पर क़ब्ज़ा करके हौज़ पुर कर लिया और उसके आस-पास पत्थर रख दिये और ऊपर चमड़ा फैला दिया। एक अन्सारी ने आकर उस हौज़ में से अपने ऊँट को पानी पिलाना चाहा, उसने रोका। अन्सारी ने पिलाने पर ज़ोर दिया। उसने एक लकड़ी उठाकर अन्सारी के सर पर मारी जिससे उसका सर ज़ख़्मी हो गया। ये चूंकि अ़ब्दुल्लाह बिन उबय का साथी था, सीधा उसके पास आया और तमाम माजरा कह सुनाया। अ़ब्दुल्लाह बिगड़ा और कहने लगा, उन अ़राबियों को कुछ न दो, ये ख़ुद भूखे मरते भाग जायेंगे। ये खाने के वक़्त रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास आ जाते थे और खा लिया करते थे। तो अ़ब्दुल्लाह बिन उबइ ने कहा, तुम हुज़ूर का खाना ऐसे वक़्त ले जाओ जब ये लोग न हों। आप (ﷺ) अपने साथियों के साथ खाना खालेंगे। यह रह जायेंगे यूंही भूखों मरते भाग जायेंगे और अब हम मदीना जाकर उन कमीनों को निकाल बाहर करेंगे। मैं उस वक़्त रसूलुल्लाह (ﷺ) का रदीफ़ था और मैंने ये सब सुना, अपने चाचा से ज़िक्र किया। चाचा ने हुज़ूर (ﷺ) से ज़िक्र किया। आप (ﷺ) ने उसे बुलवाया, ये इंकार कर गया और हलफ़ उठा लिया। हुज़ूर (ﷺ) ने उसे सच्चा समझा और मुझे झूठा क़रार दिया। चाचा मेरे पास आये और कहा, तुमने ये क्या हरकत की? हुज़ूर (ﷺ) तुझ पर नाराज़ हो गये और तुझे झूठा जाना और दीगर मुसलमानों ने भी तुझे झूठा समझा। मुझ पर तो ग़म का पहाड़ टूट पड़ा, सख़्त ग़मगीनी की हालत में सर झुकाये मैं हुज़ूर (ﷺ) के साथ जा रहा था। थोड़ी ही देर गुज़री होगी जो आप (ﷺ) मेरे पास आये, मेरा कान पकड़ा। जब मैंने सर उठा कर आप की तरफ़ देखा तो आप (ﷺ) मुस्कुराये और चल दिये। अल्लाह की क़सम! मुझे इस क़द्र ख़ुशी हुई कि बयान से बाहर है। अगर दुनिया की अबदी ज़िन्दगी मुझे मिल जाती जब भी मैं इतना ख़ुश न हो सकता था। फिर हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ (रज़ि.) मेरे पास आये और पूछा कि आँहज़रत ने तुमसे क्या कहा? मैंने कहा, फ़रमाया तो कुछ भी नहीं मुस्कुराते हुए तशरीफ़ ले गये। आप (रज़ि.) ने फ़रमाया, बस फिर ख़ुश हो। आप (रज़ि.) के बाद ही हज़रत उ़मर फ़ारूक़ (रज़ि.) तशरीफ़ लाये। यही सवाल मुझसे किया और मैंने यही जवाब दिया। सुबह को

सूरह मुनाफ़िक़ून नाज़िल हुई। (सहीह : तिर्मिज़ी, किताब तफ़्सीरुल क़ुरआन, बाब व मिन सूरतिल मुनाफ़िक़ीन : 3313, दलाइलुन्नुबुव्वह : 4/54)

दूसरी रिवायत में इस सूरत का मिन्हल अज़ल्ल तक पढ़ना भी मरवी है। (हसन : हाकिम : 2/488-489, हदीस़ नम्बर : 3812)

अ़ब्दुल्लाह इब्ने लहीआ (रह.) और मूसा बिन उक़बा (रह.) ने भी इस हदीस़ को मग़ाज़ी में बयान किया है लेकिन उन दोनों की रिवायत में ख़बर पहुँचाने वाले का नाम औस बिन अरक़म (रज़ि.) है जो क़बीला बनू हारिस़ बिन ख़ज़रज में से थे। तो मुम्किन है कि हज़रत ज़ैद बिन अरक़म (रज़ि.) ने भी ख़बर पहुँचाई हो और हज़रत औस (रज़ि.) ने भी। और ये भी मुम्किन है कि रावी से नाम में ग़लती हो गई हो, वल्लाहु आलम! इब्ने अबी हातिम में है कि ये वाक़िया ग़ज़्व-ए-मरीसीअ़ का है। ये वो ग़ज़्वा है जिसमें हज़रत ख़ालिद (रज़ि.) को भेजकर हुज़ूर (ﷺ) ने मनात बुत को तुड़वाया था जो क़फ़ा मशल्लल और समुन्द्र के दरम्यान था। इसी ग़ज़्वे में दो शख़्सों के दरम्यान झगड़ा हो गया था एक मुहाजिर दूसरा क़बीला बहज़ का था और क़बीला बहज़ अन्सारियों का हलीफ़ था। बहज़ी ने अन्सारियों को और मुहाजिर ने मुहाजिरीन को आवाज़ दी। कुछ लोग दोनों तरफ़ से खड़े हो गये और झगड़ा होने लगा। जब ख़त्म हुआ तो मुनाफ़िक़ और बीमार दिल लोग अ़ब्दुल्लाह बिन उबय के पास जमा हुए और कहने लगे कि हमें तो तुमसे बहुत कुछ उम्मीदें थीं, तुम हमारे दुश्मनों से हमारा बचाव थे। अब तो तुम बेकार से हो गये, न नफ़ा का ख़्याल न नुक़सान का। तुमने ही उन जलालीब को इतना चढ़ा दिया कि बात-बात पर ये हम पर चढ़ दौड़ें। नये मुहाजिरीन को ये लोग जलालीब कहते थे। उस अल्लाह के दुश्मन ने जवाब दिया कि अब मदीना पहुँचते ही उन सब को वहाँ से देस निकाला देंगे। मालिक बिन दुख़्शन जो मुनाफ़िक़ था (मालिक बिन दुख़्शन मुनाफ़िक़ नहीं बल्कि मुख़्लिस सहाबी थे और उनके इख़्लास पर आँहज़रत ने गवाही दी थी)। उसने कहा कि मैं तो तुम्हें पहले ही से कहता हूँ कि उन लोगों के साथ सुलूक करना छोड़ दो, ख़ुद बख़ुद मुन्तशिर हो जायेंगे। ये बातें हज़रत उ़मर (रज़ि.) ने सुन लीं और ख़िदमते नबवी में आकर अ़र्ज़ करने लगे कि इस बानीए फ़ित्ना अ़ब्दुल्लाह बिन उबय का क़िस्सा पाक करने की मुझे इजाज़त दीजिये। आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'अच्छा! अगर इजाज़त दूँ तो क्या तुम उसे क़त्ल कर डालोगे?' हज़रत उ़मर (रज़ि.) ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल! अल्लाह तआला की क़सम! अभी अपने हाथ से उसकी गर्दन मार दूँगा। आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'अच्छा! बैठ जाओ।' इतने में हज़रत उसैद बिन हुज़ैर (रज़ि.) भी यही कहते हुए आये। आप (ﷺ) ने उनसे भी यही पूछा और उन्होंने भी यही जवाब दिया। आप (ﷺ) ने उन्हें भी बिठा लिया। फिर थोड़ी देर गुज़री होगी जो कूच करने का हुक्म दिया और वक़्त से पहले ही लश्कर ने कूच किया। वो रात दिन दूसरी सुबह तक बराबर चलते ही रहे। जब धूप में तेज़ी आ गई, उतरने को फ़रमाया। दोपहर ढलते ही जल्दी से कूच किया और इसी तरह चलते रहे। तीसरे दिन सुबह को क़फ़ामुशल्लल से मदीना पहुँच गये। हज़रत उ़मर (रज़ि.) को बुलवाया, उनसे पूछा कि क्या मैं इसके क़त्ल का तुझे हुक्म देता तो तू इसे मार डालता? हज़रत उ़मर (रज़ि.) ने अ़र्ज़ किया, यक़ीनन मैं इसका सर तन से जुदा कर देता। आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'अगर तू इसे इस दिन क़त्ल कर

डालता तो बहुत से लोगों की नाक ख़ाक आलूद हो जाती कि मैं अगर उन्हें कहता तो वो भी इसे मार डालने में तअम्मुल न करते। फिर लोगों को बातें बनाने का मौक़ा मिलता कि मुहम्मद अपने साथियों को बेदर्दी से मार डालता है।' इसी वाक़ियें का बयान इन आयतों में है। ये सियाक़ बहुत ग़रीब है और इसमें बहुत सी ऐसी उम्दा बातें हैं जो दूसरी रिवायतों में नहीं।

सीरत मुहम्मद बिन इस्हाक़ में है कि अब्दुल्लाह बिन उबय मुनाफ़िक़ के बेटे हज़रत अब्दुल्लाह (रज़ि.) जो पक्के-सच्चे मुसलमान थे, इस वाक़िये के बाद आँहज़रत (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए और गुज़ारिश की कि ऐ अल्लाह के रसूल! मैंने सुना है कि मेरे बाप ने जो बकवास बकी है उसके बदले आप (ﷺ) उसे क़त्ल करना चाहते हैं। अगर यूंही है तो उसके क़त्ल का हुक्म आप किसी और को न दीजिये मैं ख़ुद जाता हूँ और अभी उसका सर आप के क़दमों तले डालता हूँ। क़सम अल्लाह की! क़बीला ख़ज़रज का एक-एक शख़्स जानता है मुझसे ज़्यादा कोई बेटा अपने बाप से एहसान व सुलूक और मुहब्बत व इज़्ज़त करने वाला नहीं (लेकिन मैं फ़रमाने रसूल पर अपने प्यारे बाप की गर्दन मारने को तैयार हूँ) अगर आपने किसी और को ये हुक्म दिया और उसने उसे मारा तो मुझे डर है कि कहीं जोशे इन्तिक़ाम में मैं उसे न मार बैठूँ और ज़ाहिर है कि अगर ये हरकत मुझसे हो गई तो मैं एक काफ़िर के बदले एक मुसलमान को मार कर जहन्नमी बन जाऊँगा। आप मेरे बाप के क़त्ल का हुक्म मुझे दीजिये! आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'नहीं! मैं उसे क़त्ल करना नहीं चाहता हम तो उससे और नर्मी बरतेंगे और उसके साथ हुस्ने सुलूक करेंगे जब तक वो हमारे साथ है।' हज़रत इक्रिमा और हज़रत इब्ने ज़ैद (रज़ि.) का बयान है कि जब हुज़ूर (ﷺ) अपने श्लकरों समेत मदीने पहुँचे तो उस मुनाफ़िक़ अब्दुल्लाह बिन उबय के लड़के हज़रत अब्दुल्लाह (रज़ि.) मदीना के दरवाज़े पर खड़े हो गये, तलवार खींच ली। लोग मदीना में दाख़िल होने लगे, यहाँ तक कि उनका बाप आया तो ये फ़रमाने लगे, परे रहो! मदीना में न जाओ। उसने कहा क्या बात है? मुझे क्यों रोक रहा है? हज़रत अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने फ़रमाया, तू मदीना नहीं जा सकता जब तक कि अल्लाह के रसूल (ﷺ) तेरे लिये इजाज़त न दें। इज़्ज़त वाले आप (ﷺ) ही हैं और तू ज़लील है। ये रुक कर खड़ा हो गया, यहाँ तक कि रसूलुल्लाह (ﷺ) तशरीफ़ लाये। आप (ﷺ) की आदते मुबारक थी कि लश्कर के आख़िरी हिस्से में होते थे। आप (ﷺ) को देखकर उस मुनाफ़िक़ ने अपने बेटे की शिकायत की। आप (ﷺ) ने उनसे पूछा कि इसे क्यों रोके रखा है? उन्होंने कहा, क़सम है अल्लाह की! जब तक आप (ﷺ) की इजाज़त न हो ये अंदर नहीं जा सकता। चुनाँचे हुज़ूर (ﷺ) ने इजाज़त दी। अब हज़रत अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने अपने बाप को शहर में दाख़िल होने दिया। (अत्तबरी : 23/403)

मुस्नद हुमैदी में है कि आप (रज़ि.) ने अपने वालिद से कहा कि जब तक तू अपनी ज़बान से ये न कहे कि 'रसूलुल्लाह (ﷺ) इज़्ज़त वाले हैं और मैं, तू ज़लील' उस वक़्त तक मदीना में नहीं जा सकता और उससे पहले हुज़ूर (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ किया था कि ऐ अल्लाह के रसूल! अपने बाप की हैबत की वजह से मैंने आज तक निगाह ऊँची करके उनके चेहरे को भी नहीं देखा, लेकिन आप (ﷺ) अगर इस पर नाराज़ हैं तो मुझे हुक्म दीजिये अभी इसकी गर्दन हाज़िर करता हूँ किसी और को इसके क़त्ल का हुक्म न दीजिये ऐसा न

हो कि मैं अपने बाप के क़ातिल को अपनी आँखों से चलता फिरता न देख सकूँ। (ज़ईफ़ लिइन्क़िताअ : मुस्नद हुमैदी : 1245, अबू हारून मूसा अल्मदनी ताबई है लिहाज़ा सनद मुन्क़तअ है।)

***

يَاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُلْهِكُمْ اَمْوَالُكُمْ وَلَآ اَوْلَادُكُمْ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِۚ وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ۝ وَاَنْفِقُوْا مِنْ مَّا رَزَقْنٰكُمْ مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَ اَحَدَكُمُ الْمَوْتُ فَيَقُوْلَ رَبِّ لَوْلَآ اَخَّرْتَنِيْٓ اِلٰٓى اَجَلٍ قَرِيْبٍۙ فَاَصَّدَّقَ وَاَكُنْ مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ ۝ وَلَنْ يُّؤَخِّرَ اللّٰهُ نَفْسًا اِذَا جَآءَ اَجَلُهَاۗ وَاللّٰهُ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ۝

ऐ मुसलमानों! तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद तुम्हें अल्लाह के ज़िक्र से ग़ाफ़िल न करे दें। और जो ऐसा करें वा बड़े ही ज़याकार (ख़सारा उठाने वाले) लोग हैं।(9) और जो कुछ हमने तुम्हें दे रखा है उसमें से (हमारी राह में) इससे पहले ख़र्च करो कि तुममें से किसी को मौत आ जाए तो कहने लगे ऐ मेरे परवरदिगार! मुझे तू थोड़ी देर की मुहलत क्यों नहीं देता? कि मैं सदक़ा करूँ और नेक लोगों में हो जाऊँ। (10) और जब किसी का मुक़र्ररा वक़्त आ जाता है फिर उसे अल्लाह तआला हरगिज़ मुहलत नहीं देता और जो कुछ तुम करते हो उससे अल्लाह तआला बख़ूबी बाख़बर है। (11)

माल और औलाद की मुहब्बत और अल्लाह के ज़िक्र से ग़फ़लत (आयत : 9-11) : अल्लाह तआला अपने मोमिन बन्दों को हुक्म देता है कि वो बकसरत ज़िक्रुल्लाह किया करें और तम्बीह करता है कि ऐसा न हो कि माल व औलाद की मुहब्बत में फंस कर ज़िक्रुल्लाह से ग़ाफ़िल हो जाओ। फिर फ़रमाता है कि जो ज़िक्रुल्लाह से ग़ाफ़िल हो जाये और दुनिया की ज़ीनत पर रीझ जाये, अपने रब की इताअत में सुस्त पड़ जाये वो अपना नुक़सान आप करने वाला है। फिर अपनी इताअत में माल ख़र्च करने का हुक्म दे रहा है कि अपनी मौत से पहले ख़र्च कर लो, मौत के वक़्त की बेबसी देखकर नादिम होना और उम्मीदें बांधना कुछ नफ़ा न देगा, उस वक़्त चाहेगा कि थोड़ी सी देर के लिये भी अगर छोड़ दिया जाये तो जो कुछ नेक अमल हो सके कर ले और अपना माल भी दिल खोलकर अल्लाह की राह में दे ले, लेकिन आह अब वक़्त कहाँ? आने वाली मुसीबत आन पड़ी और न टलने वाली आफ़त सर पर खड़ी हो गई। दूसरी जगह है, (وَاَنْذِرِ النَّاسَ يَوْمَ يَاْتِيْهِمُ الْعَذَابُ) (सूरह इब्राहीम 14 : 44) 'लोगों को होशियार कर दे! जिस वक़्त उनके पास अज़ाब आ

जायेगा तो ये ज़ालिम कहने लगेंगे, ऐ हमारे रब! हमें थोड़ी सी मोहलत मिल जाये ताकि हम तेरी दावत क़ुबूल कर लें और तेरे रसूल की इत्तिबाअ़ करें अल्अख़्।' इस आयत में तो काफ़िरों की मज़म्मत का ज़िक्र है। दूसरी आयत में नेक अ़मल में कमी करने वलों के अफ़सोस का बयान इस तरह हुआ है, (حَتّٰٓى اِذَا جَآءَ اَحَدَهُمُ الْمَوْتُ قَالَ رَبِّ ارْجِعُوْنِ ﴿٩٩﴾) 'उनमें से किसी को मौत आने लगती है तो कहता है मेरे रब मुझे लौटा दे तो मैं नेक अ़मल कर लूँ।' (सूरह मोमिनून 23 : 99)

यहाँ फ़रमाता है कि मौत का वक़्त आगे पीछे नहीं होता, अल्लाह ख़बर रखने वाला है कि कौन अपने क़ौल में सादिक़ है और अपने सवाल में हक़ बजानिब है। ये लोग तो अगर लौटाये जायें तो फिर उन बातों को भूल जायेंगे और वही करतूत करने लग जायेंगे जो इससे पहले करते रहे।

तिर्मिज़ी में हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से मरवी है कि हर वो शख़्स जो मालदार हो और उसने हज न किया हो या ज़कात न दी हो, वो मौत के वक़्त दुनिया में वापस लौटने की आरज़ू करता है। एक शख़्स ने कहा, हज़रत! अल्लाह का ख़ौफ़ कीजिये वापसी की आरज़ू तो काफ़िर करते हैं। आपने फ़रमाया, जल्दी क्यों करते हो? सुनो क़ुरआन फ़रमाता है। फिर आपने ये पूरा रुकूअ़ तिलावत कर सुनाया। उसने पूछा, ज़कात कितने में वाजिब है? फ़रमाया, दो सौ और ज़्यादा में। पूछा, हज कब फ़र्ज़ हो जाता है? फ़रमाया, जब राह ख़र्च और सवारी ख़र्च की ताक़त हो। (ज़ईफ़ : तिर्मिज़ी, किताब तफ़्सीरुल क़ुरआन, बाब व मिन सूरतिल मुनाफ़िक़ीन : 3316, अबू जनाब मुदल्लस के सिमाअ़ की तसरीह नहीं है नीज़ ज़ह्हाक बिन मज़ाहिम की इब्ने अ़ब्बास रज़ि. से रिवायत मुन्क़तअ़ है।)

एक मरफ़ूअ़ रिवायत में भी इसी तरह मरवी है लेकिन मौक़ूफ़ ही ज़्यादा सहीह है।

ज़ह्हाक (रह.) की रिवायत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) वाली भी मुन्क़तअ़ है। दूसरी सनद में एक रावी अबू जनाब कल्बी है वो भी ज़ईफ़ है, वल्लाहु आलम! इब्ने अबी हातिम में है कि एक मर्तबा हुज़ूर (ﷺ) के सामने सहाबा (रज़ि.) ने ज़्यादति-ए-उ़म्र का ज़िक्र किया तो आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'जब अजल आ जाये फिर मुअख़्ख़र नहीं होती, ज़्यादती उ़म्र सिर्फ़ इस तरह है कि अल्लाह तआ़ला किसी बन्दा को नेक सालेह औलाद दे जो उसके मरने के बाद उसके लिये दुआ करती रहे।' (मौज़ूअ़ : तफ़्सीर इब्ने अबी हातिम, किताबुल मजरूहीन : 1/331, सुलैमान बिन अ़ता यरविल मौज़ूआत)

अल्लाह के फ़ज़्ल व करम और लुत्फ़ व रहम से सूरह मुनाफ़िक़ून की तफ़्सीर ख़त्म हुई, फ़ल्हम्दुलिल्लाह!

***

FLOW CHART
तरतीबी नक्श-ए-रब्त

MACRO-STRUCTURE
नज़्मे-जली

सूरह तग़ाबुन - 64

आयात : 18, मदनी, पैराग्राफ : 2

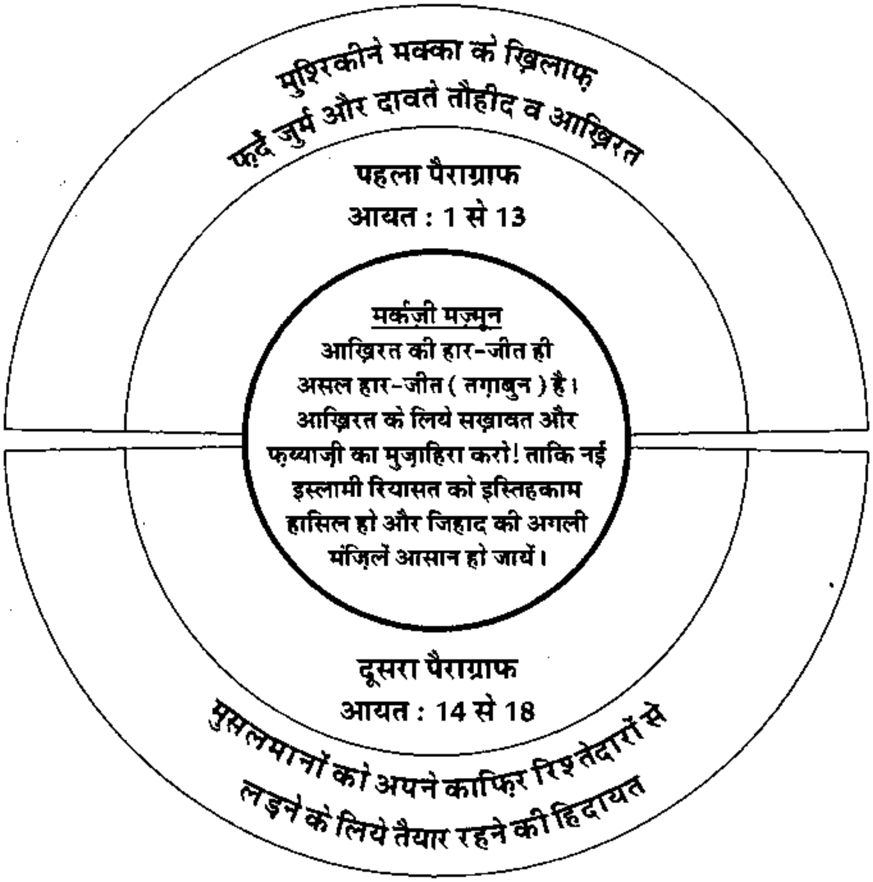

तफ़्सीर सूरह तग़ाबुन

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ○

तर्जुमा : "शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है।"

يُسَبِّحُ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۚ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ ۡ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ
شَيْءٍ قَدِيْرٌ ① هُوَ الَّذِيْ خَلَقَكُمْ فَمِنْكُمْ كَافِرٌ وَّمِنْكُمْ مُّؤْمِنٌ ۭ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ
بَصِيْرٌ ② خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ وَصَوَّرَكُمْ فَاَحْسَنَ صُوَرَكُمْ ۚ وَاِلَيْهِ
الْمَصِيْرُ ③ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَيَعْلَمُ مَا تُسِرُّوْنَ وَمَا تُعْلِنُوْنَ ۭ
وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ④

तर्जुमा : "आसमान व ज़मीन की हर-हर चीज़ अल्लाह की पाकी बयान करती है, उसी की सल्तनत है और उसी की तारीफ़ है और वो हर चीज़ पर क़ादिर है। (1) उसी ने तुम्हें पैदा किया है सो तुममें कुछ तो काफ़िर हैं और कुछ ईमानदार हैं, जो कुछ तुम कर रहे हो अल्लाह तआला ख़ूब देख रहा है। (2) उसी ने आसमानों को और ज़मीन को अद्ल व हिक्मत से पैदा किया, उसी ने तुम्हारी सूरतें बनाईं और बहुत अच्छी बनाईं और उसी की तरफ़ लौटना है। (3) वो आसमान व ज़मीन की हर-हर चीज़ का इल्म रखता है और जो कुछ तुम छिपाओ और जो ज़ाहिर करो वो सब को जानता है, अल्लाह तो दिलों की बातों तक को जानने वाला है।" (4)

इब्ने असाकिर की एक बहुत ही ग़रीब बल्कि मुनकर हदीस़ में है कि जो बच्चा पैदा होता है उसके सर के जोड़ों में सूरह तग़ाबुन की पाँच आयतें लिखी हुई होती हैं।

अल्लाह की तस्बीह (आयत : 1-4) : मुसब्बिहात की सूरतों में सबसे आख़िरी सूरत यही है। मख़लूक़ात

की तस्बीहे इलाही का बयान कई बार हो चुका है। मुल्क व हम्द वाला अल्लाह ही है। हर चीज़ पर उसकी हुकूमत, हर काम में और हर चीज़ का अन्दाज़ा मुक़र्रर करने में वो सज़ावारे तारीफ़, जिस चीज़ का इरादा करे उसे पूरा करने की कुदरत, न कोई उसका मुज़ाहिम बन सके न उसे कोई रोक सके, वो अगर न चाहे तो कुछ भी न हो, वही तमाम मख़्लूक़ का ख़ालिक़ है, उसके इरादे से कुछ इंसान काफ़िर हुए कुछ मोमिन, वो बख़ूबी जानता है कि मुस्तहिक़े हिदायत कौन है और मुस्तहिक़े ज़लालत कौन? वो अपने बन्दों के आमाल पर शाहिद है और हर-हर अमल का पूरा बदला देगा। उसने अद्ल व हिक्मत के साथ आसमान व ज़मीन की पैदाइश की है, उसी ने तुम्हें पाकीज़ा ख़ूबसूरत शक्लें दे रखी हैं। जैसे और जगह है, (يَاَيُّهَا الْاِنْسَانُ مَا غَرَّكَ بِرَبِّكَ الْكَرِيْمِ ۝) (सूरह इन्फ़ितार 82 : 6) 'ऐ इंसान! तुझे तेरे रब्बे करीम से किस चीज़ ने ग़ाफ़िल कर दिया, उसी ने तुझे पैदा किया, फिर दुरुस्त किया, फिर ठीक-ठाक किया और जिस सूरत में चाहा तुझे तरकीब दी।' और जगह इरशाद है, (اَللّٰهُ الَّذِىْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ قَرَارًا) (सूरह मोमिन 40 : 64) 'अल्लाह ही है जिसने तुम्हारे लिये ज़मीन को क़रारगाह और आसमान को छत बनाया और तुम्हें बेहतरीन सूरतें दीं और पाकीज़ा चीज़ें खाने को इनायत फ़रमाईं अल्अख़।' आख़िर सब को उसी की तरफ़ लौटना है। आसमान व ज़मीन और हर-हर नफ़्स कुल कायनात का इल्म उसे हासिल है यहाँ तक कि दिल के इरादों और पोशीदा बातों से भी वाक़िफ़ है।

***

اَلَمْ يَاْتِكُمْ نَبَؤُا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَبْلُ ۡ فَذَاقُوْا وَبَالَ اَمْرِهِمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ
اَلِيْمٌ ۝٥ ذٰلِكَ بِاَنَّهٗ كَانَتْ تَّاْتِيْهِمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَقَالُوْٓا اَبَشَرٌ يَّهْدُوْنَنَا ۡ
فَكَفَرُوْا وَتَوَلَّوْا وَّاسْتَغْنَى اللّٰهُ ؕ وَاللّٰهُ غَنِيٌّ حَمِيْدٌ ۝٦ زَعَمَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَنْ لَّنْ
يُّبْعَثُوْا ؕ قُلْ بَلٰى وَرَبِّيْ لَتُبْعَثُنَّ ثُمَّ لَتُنَبَّؤُنَّ بِمَا عَمِلْتُمْ ؕ وَذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرٌ ۝٧
فَاٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَالنُّوْرِ الَّذِيْٓ اَنْزَلْنَا ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ۝٨ يَوْمَ
يَجْمَعُكُمْ لِيَوْمِ الْجَمْعِ ذٰلِكَ يَوْمُ التَّغَابُنِ ؕ وَمَنْ يُّؤْمِنْ بِاللّٰهِ وَيَعْمَلْ صَالِحًا يُّكَفِّرْ
عَنْهُ سَيِّاٰتِهٖ وَيُدْخِلْهُ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ؕ ذٰلِكَ

الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ۝٩ وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ خَالِدِينَ
فِيهَا ۖ وَبِئْسَ الْمَصِيرُ ۝١٠

तर्जुमा : "क्या तुम्हारे पास इससे पहले के काफ़िरों की ख़बर नहीं पहुँची? जिन्होंने अपने आमाल का वबाल चख लिया और जिनके लिये दर्दनाक अ़ज़ाब है। (5) इसलिये कि उनके पास उनके रसूल मुअ़जज़े लेकर आये तो उन्होंने कह दिया कि क्या इंसान हमारी रहनुमाई करेगा? पस इंकार कर दिया और मुँह फेर लिया, अल्लाह ने भी बेनियाज़ी की और अल्लाह तो है ही बहुत बेपरवाह सब ख़ूबियों वाला। (6) उन काफ़िरों का ख़याल है कि दोबारा ज़िन्दा न किये जायेंगे, तू कह दे कि हाँ अल्लाह की क़सम! तुम ज़रूर दोबारा ज़िन्दा किये जाओगे, फिर जो तुमने किया है उसकी ख़बर दिये जाओगे, अल्लाह पर ये बिल्कुल ही आसान है। (7) सो तुम अल्लाह पर और उसके रसूल पर और उस नूर पर जिसे हमने नाज़िल फ़रमाया है ईमान लाओ और अल्लाह तआ़ला तुम्हारे हर अ़मल पर बाख़बर है। (8) जिस दिन तुम सब को उस जमा होने के दिन जमा करेगा वो यही दिन है हार-जीत का, जो शख़्स अल्लाह पर ईमान लाकर नेक अ़मल करे अल्लाह उससे उसकी बुराइयाँ दूर कर देगा और उसे जन्नतों में ले जायेगा जिनके नीचे नहरें बह रही हैं, जिनमें वो हमेशा-हमेशा रहेंगे, यही बहुत बड़ी कामयाबी है। (9) और जिन लोगों ने न माना और हमारी आयतों को झुठलाया वो सब जहन्नमी हैं जो जहन्नम में हमेशा रहेंगे, वो बहुत बुरी जगह है फिर जाने की।" (10)

काफ़िरों की सज़ा (आयत 5-10) : यहाँ अगले काफ़िरों के कुफ़्र का और उनकी बुरी सज़ा और बदतरीन बदले का ज़िक्र हो रहा है कि क्या तुम्हें तुमसे पहले मुन्करों का हाल मालूम नहीं कि रसूलों की मुख़ालिफ़त और हक़ की तकज़ीब क्या रंग लाई? दुनिया और आख़िरत में बर्बाद हो गये, यहाँ भी अपने बद अफ़आ़ल का ख़मियाज़ा भुगता और वहाँ का भुगतना अभी बाक़ी पड़ा है जो निहायत अलम अंगेज़ है। इसकी वजह इसके अ़लावा कुछ नहीं कि दलाइल व बराहीन और रोशन निशान के साथ जो अम्बिया अल्लाह उनके पास आये, उन्होंने उन्हें न माना और अपने नज़दीक उसे महाल जाना कि इंसान पैग़म्बर हो और उन्हीं जैसे एक आदमज़ाद के हाथ पर उन्हें हिदायत दी जाये। पस इंकार कर बैठे और अ़मल छोड़ दिया। अल्लाह तआ़ला ने भी उनसे बेपरवाई बरती, वो तो ग़नी है ही और साथ ही सज़ावारे हम्द व सना।

मुश्रिकीन क़यामत के मुन्किर (इन्कारी) हैं : अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि कुफ़्फ़ार व मुश्रिकीन मुल्हिदीन कहते हैं कि मरने के बाद उठेंगे नहीं। तुम ऐ नबी! इनसे कह दो कि हाँ उठोगे, फिर तुम्हारे तमाम छोटे-बड़े, खुले-छिपे आमाल का इज़हार तुम पर किया जायेगा। सुनो! तुम्हारा दोबारा पैदा करना, तुम्हें बदले

देना वग़ैरह तमाम काम अल्लाह तआला पर बिल्कुल आसान हैं। ये तीसरी आयत है कि अल्लाह तआला ने अपने नबी (ﷺ) को क़सम खाकर क़यामत की हक़्क़ानियत के बयान करने को फ़रमाया है, पहली आयत तो सूरह यूनुस में है, (وَيَسْتَنْبِئُونَكَ أَحَقٌّ هُوَ ۖ قُلْ إِي وَرَبِّي إِنَّهُ لَحَقٌّ ۖ وَمَا أَنتُم بِمُعْجِزِينَ ﴿٥٣﴾) (सूरह यूनुस 10 : 53) 'ये लोग तुझसे पूछते हैं कि क्या वो हक़ है? तू कह मेरे रब की क़सम वो हक़ है और तुम अल्लाह को हरा नहीं सकते।' दूसरी आयत सूरह सबा में है, व क़ालल्लज़ी-न कफ़रू ला तअ्तीनस्साअतु कुल बला व रब्बी लतअ्तियन्नकुम 'काफ़िर कहते हैं हम पर क़यामत न आयेगी तू कह दे कि हाँ मेरे रब की क़सम! यक़ीनन और बिज़्ज़रूर आयेगी।' और तीसरी आयत यही।

फिर इरशाद होता है कि अल्लाह पर, रसूल पर, नूर मुनज़्ज़ल यानी कुरआन करीम पर ईमान लाओ, तुम्हारा कोई ख़ुफ़िया अमल भी अल्लाह तआला पर पौशीदा नहीं क़यामत वाले दिन अल्लाह तआला तुम सब को जमा करेगा और इसीलिये इसका नाम यौमुल जम्अ है। जैसे और जगह है, (ذَٰلِكَ يَوْمٌ مَّجْمُوعٌ لَّهُ النَّاسُ وَذَٰلِكَ يَوْمٌ مَّشْهُودٌ ﴿١٠٣﴾) (सूरह हूद 11 : 103) 'ये लोगों के जमा किये जाने और उनके हाज़िरबाश होने का दिन है।' और जगह है, (قُلْ إِنَّ الْأَوَّلِينَ وَالْآخِرِينَ ﴿٤٩﴾ لَمَجْمُوعُونَ إِلَىٰ مِيقَاتِ يَوْمٍ مَّعْلُومٍ ﴿٥٠﴾) (सूरह वाक़िआ 56 : 49-50) 'क़यामत वाले दिन तमाम अव्वलीन और आख़िरीन जमा किये जायेंगे।' इब्ने अब्बास (रज़ि.) फ़रमाते हैं, यौमुत्तग़ाबुन क़यामत का एक नाम है, इस नाम की वजह ये है कि अहले जन्नत अहले दोज़ख़ को नुक़सान में डालेंगे। (अत्तबरी : 23/420)

हज़रत मुजाहिद (रह.) फ़रमाते हैं, इससे ज़्यादा तग़ाबुन क्या होगा कि उनके सामने इन्हें जन्नत में और इनके सामने उन्हें जहन्नम में ले जायेंगे। गोया इसकी तफ़्सीर इस बाद वाली आयत में है कि ईमानदार नेक आमाल वाले के गुनाह माफ़ कर दिये जायेंगे और बहती नहरों वाली हमेशगी की जन्नत में उसे दाख़िल किया जायेगा और पूरी कामायाबी को पहुँच जायेगा और कुफ़्र व तक्ज़ीब करने वाले जहन्नम की आग में जायेंगे जहाँ पड़े जलते-झुलसते रहेंगे, भला इससे बुरा ठिकाना और क्या हो सकता है?

***

مَآ أَصَابَ مِن مُّصِيبَةٍ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ ۗ وَمَن يُؤْمِن بِاللَّهِ يَهْدِ قَلْبَهُ ۚ وَاللَّهُ بِكُلِّ
شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿١١﴾ وَأَطِيعُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ ۚ فَإِن تَوَلَّيْتُمْ فَإِنَّمَا عَلَىٰ رَسُولِنَا
الْبَلَاغُ الْمُبِينُ ﴿١٢﴾ اللَّهُ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ۚ وَعَلَى اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ ﴿١٣﴾

तर्जुमा : "कोई मुसीबत बग़ैर अल्लाह की इजाज़त के नहीं पहुँच सकती, जो अल्लाह पर ईमान लाये अल्लाह उसके दिल को हिदायत देता है और अल्लाह हर चीज़ को ख़ूब जानने वाला है। (11) लोगो! अल्लाह का कहना मानो और रसूल का कहना मानो, पस अगर ऐराज़ करो तो हमारे रसूल के ज़िम्मे सिर्फ़ साफ़-साफ़ पहुँचा देना है। (12) अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं! मोमिनों को अल्लाह ही पर तवक्कल (भरोसा) रखना चाहिये।" (13)

मुसीबत भी अल्लाह की मशिय्यत (मर्ज़ी) से आती है (आयत : 11-13) : सूरह हदीद में भी ये मज़मून गुज़र चुका है कि जो कुछ होता है वो अल्लाह की इजाज़त और उसके हुक्म से होता है, उसकी क़द्रो-मशिय्यत के बग़ैर कुछ भी नहीं हो सकता। अब जिस शख़्स को कोई तकलीफ़ पहुँचे वो जान ले कि अल्लाह तआला की क़ज़ा व क़द्र से मुझे ये तकलीफ़ पहुँची, फिर सब्र व सिहार करे और अल्लाह की मर्ज़ी पर साबित क़दम रहे और सवाब की और भलाई की उम्मीद रखे। रज़ा बक़ज़ा के सिवा लब न हिलाये तो अल्लाह तआला उसके दिल की रहबरी करता है और उसे बदले के तौर पर हिदायते क़ल्बी अता फ़रमाता है। यक़ीने सादिक़ की चमक वो दिल में देखता है और कई बार ऐसा भी होता है कि उस मुसीबत का बदला या उससे भी बेहतर दुनिया में ही अता फ़रमा देता है। हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) का बयान है कि उस का ईमान मज़बूत हो जाता है उसे मसाइब ढीला नहीं कर सकते, वो जानता है कि जो पहुँचा वो ख़ता करने वाला न था और जो न पहुँचा वो मिलने वाला ही न था। (अत्तबरी : 23/421) हज़रत अल्क़मा के सामने ये आयत पढ़ी जाती है और आप से इसका मतलब पूछा जाता है तो फ़रमाते हैं, इससे मुराद वो शख़्स है जो हर मुसीबत के वक़्त इस बात का अक़ीदा रखे कि ये मिनजानिब अल्लाह है, फिर राज़ी ख़ुशी उसे बर्दाश्त करे। ये भी मतलब है कि वो इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन पढ़ ले। मुत्तफ़क़ अलैह हदीस में है, 'मोमिनों पर तअज्जुब है हर-हर बात में उसकी बेहतरी होती है, ज़रर व नुक़सान पर सब्र व सिहार करके, नफ़ा और भलाई पर शुक्र व एहसानमन्दी करके बेहतरी समेट लेता है। ये दो तरफ़ा भलाई मोमिन के सिवा किसी और के हिस्से में नहीं।' (सहीह मुस्लिम, किताबुज़्ज़ुहद, बाब अल्मुअ्मिनु अम्रुहू कुल्लुहू ख़ैर : 2999)

अफ़ज़ल अमल का तज़्किरा : मुस्नद अहमद में है कि एक शख़्स ने रसूलुल्लाह (ﷺ) से पूछा, ऐ अल्लाह के रसूल! सबसे अफ़ज़ल अमल कौनसा है? आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'अल्लाह तआला पर ईमान लाना, उसकी तस्दीक़ करनी, उसकी राह में जिहाद करना।' उसने कहा, हज़रत मैं कोई आसान काम चाहता हूँ। आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'जो फ़ैसला क़िस्मत का तुझ पर जारी हो तू उसमें अल्लाह तआला का गिला-शिक्वा न कर उसकी रज़ा पर राज़ी रह ये उससे हल्का अम्र है।' (ज़ईफ़ : अहमद : 5/318-319, हदीस नम्बर : 22717, सनद ज़ईफ़ व लहू शाहिद ज़ईफ़)

फिर अपनी और अपने रसूल की इताअत का हुक्म देता है कि उमूरे शरई में इन इताअतों से बाल बराबर तजावुज़ न करो जिसका हुक्म मिले बजा लाओ जिस से रोका जाये रुक जाओ। अगर तुम उसके मानने

से ऐराज़ करते हो तो हमारे रसूल (ﷺ) पर कोई बोझ नहीं, उनके ज़िम्मे सिर्फ़ तब्लीग़ थी जो वो कर चुके, अब अमल न करने की सज़ा तुम्हें भुगतनी पड़ेगी। फिर फ़रमान है कि अल्लाह तआला वाहिद व समद है, उसके सिवा किसी की ज़ात किसी तरह की इबादत के लायक़ नहीं। ये ख़बर मआना में तलब के है यानी अल्लाह तआला की तौहीद मानो, इख़्लास के साथ सिर्फ़ उसी की इबादतें करो। फिर फ़रमाता है चूंकि तवक्कल और भरोसे के लायक़ भी वही है तुम उसी पर भरोसा रखो जैसे और जगह इरशाद है, (رَبُّ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ فَاتَّخِذْهُ وَكِيْلًا ۝) (सूरह मुज़्ज़म्मिल 73 : 9) 'मश्रिक़ और मग़्रिब का रब वही है माबूदे हक़ीक़ी उसके सिवा कोई नहीं, तू उसी को अपना कारसाज़ बना ले।'

***

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنَّ مِنْ اَزْوَاجِكُمْ وَاَوْلَادِكُمْ عَدُوًّا لَّكُمْ فَاحْذَرُوْهُمْ ۚ وَاِنْ تَعْفُوْا وَتَصْفَحُوْا وَتَغْفِرُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝١٤ اِنَّمَآ اَمْوَالُكُمْ وَاَوْلَادُكُمْ فِتْنَةٌ ۭ وَاللّٰهُ عِنْدَهٗٓ اَجْرٌ عَظِيْمٌ ۝١٥ فَاتَّقُوا اللّٰهَ مَا اسْتَطَعْتُمْ وَاسْمَعُوْا وَاَطِيْعُوْا وَاَنْفِقُوْا خَيْرًا لِّاَنْفُسِكُمْ ۭ وَمَنْ يُّوْقَ شُحَّ نَفْسِهٖ فَاُولٰۗىِٕكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ۝١٦ اِنْ تُقْرِضُوا اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا يُّضٰعِفْهُ لَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ۭ وَاللّٰهُ شَكُوْرٌ حَلِيْمٌ ۝١٧ عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝١٨

तर्जुमा : ''ऐ ईमान वालो! तुम्हारी कुछ बीवियाँ और कुछ बच्चे तुम्हारे दुश्मन हैं, ख़बरदार उनसे होशियार रहना और अगर तुम माफ़ कर दो और दरगुज़र कर जाओ और बख़्श दो तो अल्लाह तआला बख़्शने वाला मेहरबान है। (14) तुम्हारे माल और औलाद तो सरासर तुम्हारी आज़माइश ही है और बहुत बड़ा अज्र अल्लाह के पास है। (15) पस जहाँ तक तुम से हो सके अल्लाह से डरते रहो और सुनते रहो और मानते चले जाओ और अल्लाह की राह में ख़ैरात करते रहो जो तुम्हारे लिये बेहतर है और जो शख़्स अपने नफ़्स की हिर्स से महफ़ूज़ रखा जाता है वही कामयाब है। (16) अगर तुम अल्लाह को अच्छा क़र्ज़ दोगे यानी उसकी राह में ख़र्च करोगे तो वो उसे तुम्हारे लिये बढ़ाता जायेगा और तुम्हारे गुनाह भी माफ़ फ़रमा देगा अल्लाह बड़ा क़द्रदान बड़ा बुर्दबार है। (17) वो पौशीदा और ज़ाहिर का जानने वाला है ज़बरदस्त हिक्मत वाला है।'' (18)

औरतों और बच्चों की तर्बियत (आयत : 14-18) : इरशाद होता है कि कुछ औरतें अपने मर्दों को और कुछ औलादें अपने माँ-बाप को यादे इलाही और नेक अमल से रोकती हैं जो दरहक़ीक़त दुश्मनी है। जिससे पहले तम्बीह हो चुकी है कि ऐसा न हो तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद तुम्हें यादे इलाही से ग़ाफ़िल कर दे, अगर ऐसा हो गया तो तुम्हें बड़ा घाटा रहेगा। यहाँ भी फ़रमाता है कि उनसे होशियार रहो, अपने दीन की निगेहबानी उनकी ज़रूरियात और फ़रमाइशों के पूरा करने पर मुक़द्दम रखो। बीवी-बच्चों और माल की ख़ातिर इंसान क़तअ रहमी कर गुज़रता है, अल्लाह की नाफ़रमानी पर तुल जाता है, उनकी मुहब्बत में फंस कर अहकामे इलाही को पसे पुश्त डाल देता है। हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) फ़रमाते हैं, कुछ अहले मक्का इस्लाम क़ुबूल कर चुके थे मगर ज़न व फ़रज़न्द की मुहब्बत ने उन्हें हिज्रत से रोक दिया। फिर जब इस्लाम का ख़ूब इफ़शा (शौहरत) हो गया तब ये लोग हाज़िरे हुज़ूर (ﷺ) हुए देखा कि उनसे पहले के मुहाजिरीन ने बहुत कुछ इल्मे दीन हासिल कर लिया है। अब जी में आया कि अपने बाल-बच्चों को सज़ा दें जिस पर ये फ़रमान हुआ कि इन् तअ़्फ़ू 'अब दरगुज़र करो।' (ज़ईफ़ : तिर्मिज़ी, किताब तफ़्सीरुल क़ुरआन, व मिन सूरतित्तग़ाबुन : 3317, सम्माक की इक्रिमा से रिवायत ज़ईफ़ व मुज़्तरब होती है।)

अल्लाह तआला माल व औलाद देकर इंसान को परख लेता है कि मअ़सियत में मुब्तला होने वाले कौन हैं? और इताअ़त गुज़ार कौन हैं? अल्लाह के पास जो अज्रे अज़ीम है तुम्हें चाहिये उस पर निगाहें रखो। जैसे और जगह फ़रमान है, (زُيِّنَ لِلنَّاسِ حُبُّ الشَّهَوٰتِ) (सूरह आले इमरान 3 : 14) 'बतौरे आज़माइश के लोगों के लिये दुनियवी ख़्वाहिशात यानी बीवियों और औलाद और सोने-चाँदी के बड़े-बड़े लगे हुए ढेर और शाइस्ता घोड़ों और मवेशी और खेती की मुहब्बत को ज़ीनत दी गई है मगर ये सब दुनिया की कुछ दिनों की ज़िन्दगी का सामान है और हमेशगी वाला अच्छा ठिकाना तो अल्लाह ही के पास है।'

मुस्नद अहमद में है कि एक मर्तबा आँहज़रत (ﷺ) ख़ुत्बा फ़रमा रहे थे कि हज़रत हसन और हज़रत हुसैन (रज़ि.) लम्बे-लम्बे कुर्ते पहने हुए आ गये दोनों बच्चे करतों से उलझ-उलझ कर गिरते-पड़ते आ रहे थे ये कुर्ते सुर्ख़ रंग के थे। हुज़ूर (ﷺ) की नज़रें जब उन पर पड़ीं तो मिम्बर से उतरकर उन्हें उठाकर लाये और अपने सामने बिठा लिया। फिर फ़रमाने लगे, अल्लाह तआ़ला सच्चा है और उसके रसूल ने सच फ़रमाया है कि तुम्हारे माल व औलाद फ़ित्ना हैं, उन दोनों को गिरते-पड़ते आते देखकर सब्र न आ सका, आख़िर ख़ुत्बा छोड़कर उन्हें उठाना पड़ा। (हसन : अबू दाऊद, किताबुस्सलात, बाब अल्इमामु यक़्तउल ख़ुत्बता लिल्अम्र : 1109, तिर्मिज़ी : 3774, नसाई : 1414, इब्ने माजह : 3600, अहमद : 5/354, इब्ने हिब्बान : 6039)

मुस्नद अहमद में है हज़रत अश्अ़स बिन क़ैस (रज़ि.) फ़रमाते हैं, कुन्दा क़बीले के वफ़्द में मैं भी हुज़ूर (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। आप (ﷺ) ने मुझसे पूछा, तुम्हारी कुछ औलाद भी है। मैंने कहा, हाँ! अब आते हुए एक लड़का हुआ है काश कि उसके बजाए कोई दरिन्दा होता। आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'ख़बरदार! ऐसा न कहो, उनमें आँखों की ठण्डक है और अगर इन्तिक़ाल कर जायें तो अज्र है।' फिर फ़रमाया,

'यही बुज़दिली और ग़म का सबब भी बन जाते हैं, ये बुज़दिली और ग़म व रंज भी हैं।' (ज़ईफ़ : अहमद : 5/211, हदीस़ नम्बर : 21840, सनद ज़ईफ़ व लिल्हदीसि शवाहिद ज़ईफ़ा हाकिम : 4/239)

बज़्ज़ार में है, 'औलाद दिल का फल है और ये बुख़्ल व नामर्दी और ग़मगीनी का बाइस़ भी है।' (ज़ईफ़ुन जिद्दा : मुस्नद बज़्ज़ार : 1892, मुस्नद अबी यअ़ला : 1033)

तबरानी में है, 'तेरा दुश्मन सिर्फ़ वही नहीं जो तेरे मुक़ाबले में कुफ़्र पर जम कर लड़ाई के लिये आया क्योंकि अगर तूने उसे क़त्ल कर दिया तो तेरे लिये बाइसे नूर है और अगर उसने तुझे क़त्ल किया तो तू क़त्अन जन्नती हो गया। फिर फ़रमाया, 'शायद तेरा पूरा दुश्मन तेरा बच्चा है जो तेरी पीठ से निकला फिर तुझसे दुश्मनी करने लगा।' (ज़ईफ़ लिइन्क़िताइही : तबरानी : 3445, शुरेह बिन उ़बैद लम युदरिक अबा मालिक अश्अ़री)

फिर फ़रमाता है अपने मक़्दूर भर अल्लाह का ख़ौफ़ रखो। उसके अ़ज़ाबों से बचाव मुहैया करो। बुख़ारी व मुस्लिम में है, 'जो हुक्म मैं करूँ उसे अपना मक़्दूर (ताक़त) भर बजा लाओ, जिससे मैं रोक दूँ रुक जाओ।' (सहीह बुख़ारी, किताबुल ऐतिसाम, बाब अल्इक़्तिदाउ बिसुननि रसूलिल्लाह : 7288, सहीह मुस्लिम : 1337)

कुछ मुफ़स्सिरीन का फ़रमान है कि सूरह आले इमरान की आयत (يَاۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ حَقَّ تُقٰتِهٖ وَلَا تَمُوْتُنَّ اِلَّا وَاَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ ﴿۱۰۲﴾) (सूरह आले इमरान 3 : 102) की नासिख़ ये आयत है। यानी पहले फ़रमाया था, अल्लाह तआ़ला से इस क़द्र डरो जितना कि उससे डरना चाहिये। लेकिन अब फ़रमा दिया कि अपनी ताक़त के मुताबिक़। चुनाँचे हज़रत सईद बिन जुबैर (रह.) फ़रमाते हैं, पहली आयत लोगों पर बड़ी भारी पड़ी थी, इस क़द्र लम्बे क़ियाम करते थे कि पैरों पर वरम आ जाता था और इतने लम्बे सज्दे करते थे कि पेशानियाँ ज़ख़्मी हो जाती थीं। पस अल्लाह तआ़ला ने ये दूसरी आयत उतारकर तख़्फ़ीफ़ कर दी। और भी कुछ मुफ़स्सिरीन ने यही फ़रमाया है और पहली आयत को मन्सूख़ और इस दूसरी आयत को नासिख़ बतलाया है। फिर फ़रमाता है अल्लाह और उसके रसूल के फ़रमांबरदार बन जाओ, उनके फ़रमान से एक इंच इधर-उधर न हटो, न आगे बढ़ो, न पीछे सरको। न अम्र को छोड़ो न नही का ख़िलाफ़ करो। जो अल्लाह ने तुम्हें दे रखा है उसमें से रिश्तेदारों को, फ़क़ीरों, मिस्कीनों को और हाजतमन्दों को देते रहो। अल्लाह ने तुम पर एहसान किया तुम दूसरी मख़्लूक़ पर एहसान करो ताकि इस जहान में भी अल्लाह के एहसान के मुस्तहिक़ बन जाओ और अगर ये न किया तो दोनों जहान की बर्बादी अपने हाथों आप मोल लोगे। आयत वमंय्यूक़ की तफ़्सीर सूरह हश्र की उस आयत में गुज़र चुकी है।

जब तुम कोई चीज़ अल्लाह की राह में दोगे अल्लाह तआ़ला उसका बदला देगा, हर सदक़े की जज़ा अ़ता फ़रमायेगा। तुम्हारा मिस्कीनों के साथ सुलूक करना गोया अल्लाह को क़र्ज़ देना है। बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस़ में है कि 'अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कौन है? जो ऐसे को क़र्ज़ दे जो न ज़ालिम है न मुफ़्लिस, न नादहिन्दा।' (सहीह मुस्लिम, किताब सलातुल मुसाफ़िरीन, बाब अत्तरग़ीबु फ़िदुआ वज़्ज़िक्रु फ़ी आख़िरिल्लैल 758, अल्अस्माउ वस्सिफ़ातु लिल्बैहक़ी : 496)

पस फ़रमाता है वो तुम्हें बहुत कुछ बढ़ा-चढ़ा कर फेर देगा। जैसे सूरह बक़रह में भी फ़रमाया है कि कई-कई गुना बढ़ा कर देगा, साथ ही ख़ैरात से तुम्हारे गुनाह माफ़ कर देगा, अल्लाह बड़ा क़द्रदान है। थोड़ी सी नेकी का बहुत बड़ा अज्र देता है। वो बुर्दबार है दरगुज़र करता है, बख़्श देता है गुनाहों से और लग़्ज़िशों से चश्मपोशी कर लेता है। ख़ताओं और बुराइयों को माफ़ फ़रमा देता है वो छिपे-खुले का आ़लिम है वो ग़ालिब और बाहिक्मत है। इन अस्माए हुसना की तफ़्सीर कई-कई मर्तबा इससे पहले गुज़र चुकी है। अल्लाह तआ़ला के फ़ज़्ल व करम और लुत्फ़ व रहम से सूरह तग़ाबुन की तफ़्सीर ख़त्म हुई, फ़ल्हम्दुलिल्लाह!

(इसके साथ ही तफ़्सीर इब्ने कसीर अ़रबी का नवाँ जुज़ पूरा हुआ। अब दसवें जुज़ की तफ़्सीर का तर्जुमा सूरह तलाक़ से शुरू होगा। अल्लाह तआ़ला ख़ैर व बरकत के साथ इसे भी पूरा कराये, आमीन!)

***

FLOW CHART
तरतीबी नक्श-ए-रब्त

MACRO-STRUCTURE
नज़्मे-जली

सूरह तलाक़ - 65

आयात : 12, मदनी, पैराग्राफ : 2

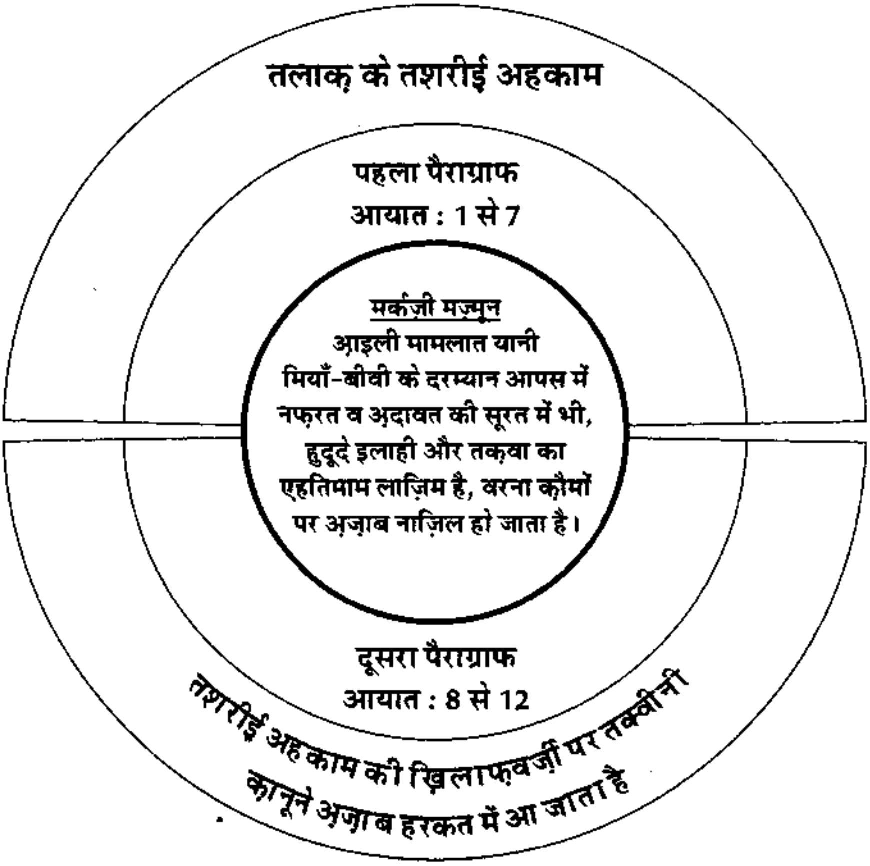

ज़मान-ए-नुज़ूल

सूरह बक़रह में (जो बेश्तर 2 हिजरी में नाज़िल हुई) तलाक़ के अहकाम दिये गये थे। इन ही अहकामे तलाक़ की तक्मील व तफ़्सील के लिये ग़ालिबन 2 हिजरी के अवाख़िर में सूरह तलाक़ नाज़िल हुई।

तफ़्सीर सूरह तलाक़

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ ○

तर्जुमा : "शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है।"

***

يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ اِذَا طَلَّقۡتُمُ النِّسَآءَ فَطَلِّقُوۡهُنَّ لِعِدَّتِهِنَّ وَاَحۡصُوا الۡعِدَّةَ ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ رَبَّكُمۡ ۚ لَا تُخۡرِجُوۡهُنَّ مِنۡ بُيُوۡتِهِنَّ وَلَا يَخۡرُجۡنَ اِلَّاۤ اَنۡ يَّاۡتِيۡنَ بِفَاحِشَةٍ مُّبَيِّنَةٍ ؕ وَتِلۡكَ حُدُوۡدُ اللّٰهِ ؕ وَمَنۡ يَّتَعَدَّ حُدُوۡدَ اللّٰهِ فَقَدۡ ظَلَمَ نَفۡسَهٗ ؕ لَا تَدۡرِىۡ لَعَلَّ اللّٰهَ يُحۡدِثُ بَعۡدَ ذٰلِكَ اَمۡرًا ①

तर्जुमा : "ऐ नबी! (अपनी उम्मत से कहो कि) जब तुम अपनी बीवियों को तलाक़ देना चाहो तो उनकी इद्दत में उन्हें तलाक़ दो और इद्दत का हिसाब रखो और अल्लाह से जो तुम्हारा परवरदिगार है डरते रहो, न तुम उन्हें उनके घरों से निकालो और न वो ख़ुद निकलें हाँ ये और बात है कि वो खुली बुराई कर बैठें, ये हैं अल्लाह की मुक़र्रर करदा हदें, जो शख़्स अल्लाह की हदों से आगे बढ़ जाये उसने यक़ीनन अपना ही बुरा किया, कोई नहीं जानता शायद उसके बाद अल्लाह तआला कोई नई बात पैदा कर दे।" (1)

तलाक़ के मसाइल (आयत : 1) : अव्वलन तो नबी (ﷺ) से शराफ़त व करामत के तौर पर ख़िताब किया गया फिर तबअन आप (ﷺ) की उम्मत से ख़िताब किया गया और तलाक़ के मसले को समझाया गया। इब्ने अबी हातिम में है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने हज़रत हफ़्सा (रज़ि.) को तलाक़ दी वो अपने मयके आ गईं इस पर ये आयत उतरी और आप (ﷺ) से फ़रमाया गया कि उनसे रुजूअ कर लो वो बहुत ज़्यादा रोज़ा रखने वाली और बहुत ज़्यादा नमाज़ पढ़ने वाली हैं और वो यहाँ भी आप (ﷺ) की बीवी हैं और जन्नत में भी आप (ﷺ) की अज़्वाज (बीवियों) में दाख़िल हैं। (ज़ईफ़ : अद्दुरुल मन्सूर : 6/348, हाकिम : 4/15, व सनद ज़ईफ़

फ़ीहि क़ैस बिन ज़ैद वहुव मज्हूल ज़अ्अफ़हुल अज़दी, इब्ने अबी हातिम, अल्लज़ी ज़करहू इब्ने कसीर सनद ज़ईफ़, सईद व क़तादा मुदल्लस व अन्अन)

यही रिवायत मुरसलन इब्ने जरीर में है। दूसरी सनदों से भी आई है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने हज़रत हफ़्सा (रज़ि.) को तलाक़ दी फिर रुजूअ कर लिया। (सहीह : अबू दाऊद, किताबुत्तलाक़, बाब फ़िल्मुराजिआ : 2283, नसाई : 3509, इब्ने माजह : 2016, इब्ने हिब्बान : 1324, हाकिम : 2/197, बैहक़ी : 7/321)

ये हदीस और भी बहुत सी किताबों में बहुत सी सनदों के साथ मज़्कूर है। हज़रत अब्दुर्रहमान बिन ऐमन (रह.) ने जो उज़्ज़ा के मौला हैं हज़रत अबू ज़ुबैर (रज़ि.) के सुनते हुए हज़रत इब्ने उमर (रज़ि.) से सवाल किया कि उस शख़्स के बारे में आप क्या फ़रमाते हैं, जिसने अपनी बीवी को हैज़ की हालत में तलाक़ दी, तो आपने फ़रमाया, सुनो! इब्ने उमर (रज़ि.) ने अपनी बीवी को हैज़ की हालत में रसूलुल्लाह (ﷺ) की ज़िन्दगी में तलाक़ दी तो हुज़ूर (ﷺ) ने हुक्म दिया कि उसे लौटा ले। चुनाँचे इब्ने उमर (रज़ि.) ने रुजूअ कर लिया और ये भी हुज़ूर (ﷺ) ने फ़रमाया था उसके पाक हो जाने के बाद उसे इख़्तियार है ख़्वाह तलाक़ दे ख़्वाह बसा ले और आँहज़रत (ﷺ) ने इस आयत की तिलावत की, याअय्युहन्नबिय्यु इज़ा तल्लक़्तुमुन्निसाअ फ़तल्लिक़ूहुन्न फ़ी क़ुबुलि इद्दतिहिन्न की। (सहीह मुस्लिम, किताबुत्तलाक़, बाब तहरीमु तलाक़िल हाइज़ बिग़ैरि रिज़ाहा : 1471, अबू दाऊद : 2185, अहमद : 2/81, बैहक़ी : 7/327)

दूसरी रिवायत में फ़तल्लिक़ूहुन्न लिइद्दतिहिन्न यानी पाकी की हालत में जिमाअ से पहले। बहुत से बुज़ुर्गों ने यही फ़रमाया है। (अत्तबरी : 23/432)

हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) फ़रमाते हैं, यानी हालते हैज़ में तलाक़ न दो न उस पाकी में तलाक़ दो जिसमें जिमाअ हो चुका हो बल्कि उस वक़्त तक छोड़ दो जब हैज़ आ जाये फिर उससे नहा ले तब एक तलाक़ दे। (अत्तबरी : 23/425)

हज़रत इक्रिमा फ़रमाते हैं, इद्दत से मुराद तुहर है। क़ुरुअ से मुराद हैज़ है या हमल की हालत में जब हमल ज़ाहिर हो। जिस पाकी में मुजामिअत कर चुका है उसमें तलाक़ न दे न मालूम हामिला है या नहीं। यहीं से समझदार उलमा ने अहकामे तलाक़ लिये हैं और तलाक़ की दो क़िस्में की हैं तलाक़े सुन्नत और तलाक़े बिदअत। तलाक़े सुन्नत तो ये है कि तुहर की यानी पाकीज़गी की हालत में जिमाअ करने से पहले तलाक़ दे दे या हालते हमल में तलाक़ दे और बिदई तलाक़ ये है कि हालते हैज़ में तलाक़ दे या तुहर में दे। लेकिन मुजामिअत कर चुका है और मालूम न हो कि हमल है या नहीं? तलाक़ की तीसरी क़िस्म भी है जो न तलाक़े सुन्नत है न तलाक़े बिदअत और वो नाबालिग़ा की तलाक़ है और उस औरत की जिसे हैज़ के आने से नाउम्मीदी हो चुकी हो और उस औरत की जिससे दुख़ूल न हुआ हो। इन सबके अहकाम और तफ़्सीली बहस की जगह कुतुबे फ़ुरूअ हैं न कि तफ़्सीर वल्लाहु सुब्हानहू व तआला आलम।

इद्दत की हिफ़ाज़त : फिर फ़रमान है कि इद्दत की हिफ़ाज़त करो इसकी इब्तिदा और इन्तिहा की देखभाल रखो ऐसा न हो कि इद्दत की लम्बाई औरत को दूसरा ख़ाविन्द करने से रोक दे और इस बारे में अपने माबूदे हक़ीक़ी परवरदिगारे आलम से डरते रहो। इद्दत के ज़माने में मुत्लक़न औरत की रिहाइश का मकान ख़ाविन्द के ज़िम्मे है वो उसे निकाल न दे और न ख़ुद उसे निकलना जाइज़ है क्योंकि वो अपने ख़ाविन्द के हक़ में रुकी हुई है। फ़ाहिशतुम्-मुबय्यिनह ज़िना को भी शामिल है और उसे भी कि औरत अपने ख़ाविन्द को तंग करे उसका ख़िलाफ़ करे और ईज़ा पहुँचाये या बदज़बानी व कज ख़ुल्क़ी शुरू कर दे और अपने कामों से और अपनी ज़बान से ससुराल वालों को तकलीफ़ पहुँचाये तो इन सूरतों में बेशक ख़ाविन्द को जाइज़ है कि उसे अपने घर से निकाल बाहर करे। (अत्तबरी : 23/438)

ये अल्लाह तआला की मुक़र्रर करदा हदें हैं, उसकी शरीअत और उसके बतलाये हुए अहकाम हैं, जो शख़्स इन पर अमल न करे, इन्हें बेहुरमती के साथ तोड़ दे, इन से आगे बढ़ जाये वो अपना ही बुरा करने वाला और अपनी ही जान पर ज़ुल्म ढहाने वाला है। शायद कि अल्लाह कोई नई बात पैदा कर दे। अल्लाह के इरादों को और होने वाली बातों को कोई नहीं जान सकता। इद्दत का ज़माना मुतल्लक़ा औरत को ख़ाविन्द के घर गुज़ारने का हुक्म देना इस मस्लिहत से है कि मुम्किन है कि इस इद्दत में उसके ख़ाविन्द के ख़्यालात बदल जायें। तलाक़ देने पर नादिम (शर्मिन्दा) हो और दिल में लौटा लेने का ख़्याल पैदा हो जाये फिर रुजूअ करके दोनों मियाँ-बीवी अमन व अमान से गुज़ारा करने लगें। नया काम पैदा करने से मुराद भी रज्अत है। (अत्तबरी : 23/441)

इसी बिना पर कुछ सलफ़ और उनके ताबेईन जैसे हज़रत इमाम अहमद बिन हम्बल (रह.) वग़ैरह का मज़हब है कि मब्तूता यानी वो औरत जिसकी तलाक़ के बाद ख़ाविन्द को रज्अत का हक़ बाक़ी न रहा हो उसके लिये इद्दत गुज़ारने के ज़माने तक मकान का देना ख़ाविन्द के ज़िम्मे नहीं। इसी तरह जिस औरत का ख़ाविन्द फ़ौत हो जाये उसे भी रिहाइशी मकान इद्दत तक के लिये देना उसके वारिसों पर नहीं। उनकी ऐतिमादी दलील हज़रत फ़ातिमा बिन्ते क़ैस फ़हरिया (रज़ि.) वाली हदीस है कि जब उनके ख़ाविन्द हज़रत अबू उमर बिन हफ़्स (रज़ि.) ने उनको तीसरी और आख़िरी तलाक़ दे दी और वो उस वक़्त यहाँ मौजूद न थे बल्कि यमन में थे और वहीं से तलाक़ दी थी तो उनके वकील ने उनके पास थोड़े से जो भेज दिये थे कि ये तुम्हारी ख़ूराक है। ये बहुत नाराज़ हुईं उसने कहा, बिगड़ती क्यों हो? तुम्हारा नफ़क़ा खाना-पीना हमारे ज़िम्मे नहीं। ये रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास आईं। आप (ﷺ) ने फ़रमाया, ठीक है तेरा नफ़क़ा उस पर नहीं।

इद्दत नफ़क़ा और रुक्नी : सहीह मुस्लिम में है न तेरे रहने-सहने का घर और उनसे फ़रमाया कि तुम उम्मे शरीक के घर अपनी इद्दत गुज़ारो। फिर फ़रमाया वहाँ तो मेरे अक्सर सहाबा जाया-आया करते हैं तुम अब्दुल्लाह बिन उम्मे मक्तूम (रज़ि.) के यहाँ अपनी इद्दत का ज़माना गुज़ारो वो एक नाबीना आदमी हैं तुम वहाँ आराम से अपने कपड़े भी रख सकती हो। (सहीह मुस्लिम, किताबुत्तलाक़, बाब अल्मुतल्लक़तुल बाइन ला नफ़क़हा लहा : 1480, इब्ने हिब्बान : 4253, अबू दाऊद : 2284, सुननुनल कुबरा : 6032)

मुस्नद अहमद में है कि उनके ख़ाविन्द को हुज़ूर (ﷺ) ने किसी जिहाद पर भेजा था, उन्होंने वहीं से उन्हें तलाक़ भेज दी। उनके भाई ने उनसे कहा कि हमारे घर से चली जाओ। उन्होंने कहा, नहीं जब तक इद्दत ख़त्म न हो जाये मेरा रहना-सहना और खाना-पीना मेरे ख़ाविन्द के ज़िम्मे है। उसने इंकार किया। आख़िर हुज़ूर (ﷺ) के पास ये मामला पहुँचा। जब आप (ﷺ) को ये मालूम हुआ कि ये आख़िरी तीसरी तलाक़ है तब आप (ﷺ) ने हज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) से फ़रमाया, 'नान-नफ़क़ा, घर-बार ख़ाविन्द के ज़िम्मे इस सूरत में है कि उसे हक़्क़े रज्अत हासिल हो, जब ये नहीं तो वो भी नहीं। तुम यहाँ से चली जाओ और फ़लाँ औरत के घर अपनी इद्दत गुज़ारो। फिर फ़रमाया वहाँ तो सहाबा का आना-जाना है तुम इब्ने उम्मे मक्तूम (रज़ि.) के घर इद्दत का ज़माना गुज़ारो वो नाबीना हैं तुम्हें देख नहीं सकते। (ज़ईफ़ : अहमद : 6/373-374, मुजालिद ज़ईफ़ व हदीस़ मुस्लिम : 2942, युग़नी अ़न्हु)

तबरानी में है कि फ़ातिमा बिन्ते क़ैस (रज़ि.) ज़ह्हाक बिन क़ैस क़ुर्शी (रज़ि.) की बहन थीं उनके ख़ाविन्द मख़ज़ूमी क़बीले के थे। तलाक़ की ख़बर के बाद उनके नफ़क़ा तलब करने पर उनके ख़ाविन्द के औलिया ने कहा था न तो तुम्हारे मियाँ ने कुछ भेजा है न हमें देने को कहा है और हुज़ूर (ﷺ) के फ़रमान में ये भी मरवी है कि जब औरत को वो तलाक़ मिल जाये जिसके बाद वो अपने अगले ख़ाविन्द पर हराम हो जाती है जब तक दूसरे से निकाह और फिर छूट-छुटाव न हो जाये तो उस सूरत में इद्दत का नान-नफ़क़ा और रहने का मकान उसके ख़ाविन्द के ज़िम्मे नहीं। (सहीह : नसाई, किताबुत्तलाक़, बाब अर्रुख़्सतु फ़ी ज़ालिक : 3432, सहीह वफ़ी सुननिल कुबरा : 5596, मुअ़जम अल्औसत : 1164)

***

فَإِذَا بَلَغْنَ أَجَلَهُنَّ فَأَمْسِكُوهُنَّ بِمَعْرُوفٍ أَوْ فَارِقُوهُنَّ بِمَعْرُوفٍ وَأَشْهِدُوا
ذَوَيْ عَدْلٍ مِّنكُمْ وَأَقِيمُوا الشَّهَادَةَ لِلَّهِ ۚ ذَٰلِكُمْ يُوعَظُ بِهِ مَن كَانَ يُؤْمِنُ
بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ ۚ وَمَن يَتَّقِ اللَّهَ يَجْعَل لَّهُ مَخْرَجًا ② وَيَرْزُقْهُ مِنْ حَيْثُ لَا
يَحْتَسِبُ ۚ وَمَن يَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ فَهُوَ حَسْبُهُ ۚ إِنَّ اللَّهَ بَالِغُ أَمْرِهِ ۚ قَدْ جَعَلَ اللَّهُ
لِكُلِّ شَيْءٍ قَدْرًا ③

तर्जुमा : "पस जब ये औरतें अपनी इद्दत पूरी करने के क़रीब पहुँच जायें तो इन्हें या तो क़ाइदे के मुताबिक़ अपने निकाह में रहने दो या दस्तूर के मुताबिक़ उन्हें अलग कर दो और आपस में से दो आदिल शख़्सों को गवाह कर लो और अल्लाह की रज़ामन्दी के लिये ठीक-ठीक गवाही दो, यही है वो जिसकी नसीहत उसे की जाती है जो अल्लाह पर और क़यामत के दिन पर ईमान रखता हो और जो शख़्स अल्लाह से डरता है अल्लाह उसके छुटकारे की शक्ल निकाल देता है। (2) और उसे ऐसी जगह से रोज़ी देता है जिसका उसे गुमान भी न हो और जो शख़्स अल्लाह पर तवक्कल करेगा अल्लाह उसे काफ़ी होगा, अल्लाह तआला अपना काम पूरा करके ही रहेगा, अल्लाह तआला ने हर चीज़ का एक अन्दाज़ा मुक़र्रर कर रखा है।" (3)

इद्दत के मसाइल (आयत : 2-3) : इरशाद होता है कि इद्दत वाली औरतों की इद्दत जब पूरी होने के क़रीब पहुँच जाये तो उनके ख़ाविन्दों को चाहिये कि दो बातों में से एक कर लें या तो उन्हें भलाई और सुलूक के साथ अपने ही निकाह में रोके रखें यानी तलाक़ जो दी थी उससे रुजूअ (वापसी) करके बाक़ाइदा उसके साथ बूदो-बाश रखें या उन्हें और तलाक़ दे दे लेकिन बुरा कहे बग़ैर, गाली-गलोच दिये बग़ैर, सरज़निश और डांट-डपट बग़ैर, भलाई, अच्छाई और ख़ूबसूरती के साथ (ये याद रहे कि रुज्अत का इख़्तियार उस वक़्त है जब एक तलाक़ हुई हो या दो हुई हों)। फिर फ़रमाता है अगर रज्अत का इरादा हो और रज्अत करो यानी लौटा लो तो उस पर दो आदिल मुसलमान गवाह रख लो। अबू दाऊद और इब्ने माजह में है कि हज़रत इमरान बिन हुसैन (रज़ि.) से पूछा किया गया कि एक शख़्स अपनी बीवी को तलाक़ देता है फिर उससे जिमाअ करता है न तलाक़ पर गवाह रखता है न रज्अत पर? तो आपने फ़रमाया, उसने ख़िलाफ़े सुन्नत तलाक़ दी और ख़िलाफ़े सुन्नत रुजूअ किया। तलाक़ पर भी गवाह रखना चाहिये और रज्अत पर भी, अब दोबारा ऐसा न करना। (हसन : अबू दाऊद, किताबुत्तलाक़, बाब अर्रजुलु युराजिउ वला यश्हद : 2186, इब्ने माजह : 2025)

हज़रत अता (रह.) फ़रमाते हैं, निकाह, तलाक़ रज्अत (तलाक़े रजई के बाद बीवी को लौटा लेना) बग़ैर दो आदिल गवाहों के जाइज़ नहीं। जैसे फ़रमाने इलाही है, हाँ मजबूरी हो तो और बात है। फिर फ़रमाता है गवाह मुक़र्रर करने का और सच्ची शहादत देने का हुक्म उन्हें हो रहा है जो अल्लाह पर और पिछले दिन पर ईमान रखते हों, अल्लाह की शरीअत के पाबंद और अज़ाबे आख़िरत से डरने वाले हों। हज़रत इमाम शाफ़ई (रह.) फ़रमाते हैं, रज्अत पर गवाह रखना वाजिब है। जिस तरह उनके नज़दीक निकाह के शुरू पर गवाह रखना वाजिब है। गो आपसे एक दूसरा क़ौल भी मरवी है एक और जमाअत का भी यही क़ौल है। इस मसले को मानने वाली उलमाए किराम की जमाअत ये भी कहती है कि रज्अत बग़ैर ज़बानी कहे साबित नहीं होती क्योंकि गवाह रखना ज़रूरी है और जब तक ज़बान से न कहे गवाह कैसे मुक़र्रर किये जायेंगे। फिर फ़रमाता है कि जो शख़्स अहकामे इलाही बजा लाये उसकी हराम करदा चीज़ों से परहेज़ करे अल्लाह तआला उसके लिये मुख़्लिसी पैदा करता है और ऐसी जगह से इस तरह रिज़्क़ पहुँचाता है कि उसके ख़्वाब व ख़्याल में भी न हो।

मुस्नद अहमद में है हज़रत अबू ज़र (रज़ि.) फ़रमाते हैं, एक मर्तबा मेरे सामने रसूलुल्लाह (ﷺ) ने इस आयत की तिलावत की फिर फ़रमाया, 'ऐ अबू ज़र! अगर तमाम लोग सिर्फ़ इसे ही ले लें तो काफ़ी है।' फिर आप (ﷺ) ने बार-बार इसकी तिलावत शुरू की यहाँ तक कि मुझे ऊँघ आने लगी। फिर आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'अबू ज़र! तुम क्या करोगे जब तुम्हें मदीना से निकाल दिया जायेगा?' जवाब दिया कि मैं और कुशादगी और रहमत की तरफ़ चला जाऊँगा। यानी मक्का को, वहीं का कबूतर बनकर रह जाऊँगा। आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'फिर क्या करोगे अगर तुम्हें वहाँ से भी निकाला जाये?' मैंने कहा, शाम की पाक ज़मीन में चला जाऊँगा। फ़रमाया, 'जब शाम से निकाला जायेगा तो क्या करेगा?' मैंने कहा, हुज़ूर अल्लाह की क़सम! जिसने आपको हक़ के साथ पैग़म्बर बनाकर भेजा है फिर अपनी तलवार कन्धे पर रख कर मुक़ाबले पर उतर आऊँगा। आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'क्या मैं तुझे इससे बेहतर तरकीब बतलाऊँ?' मैंने कहा, हाँ! हुज़ूर ज़रूर इरशाद हो। फ़रमाया, 'सुनता रह और मानता रह अगरचे हब्शी ग़ुलाम हो।' (ज़ईफ़ : अहमद : 5/178-179, इब्ने माजह, किताबुज़्ज़ुहद, बाब अल्वरअ वत्तक़वा : 4420, सनद में इन्क़िताअ है। अबू सलील की हज़रत अबू ज़र (रज़ि.) से मुलाक़ात नहीं है। हाकिम : 2/492, शोबुल ईमान : 1330)

इब्ने अबी हातिम में है हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) फ़रमाते हैं कि क़ुरआन में बहुत ही जामेअ आयत (إِنَّ اللّٰهَ يَأْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْإِحْسَانِ) (सूरह नहल 16 : 90) और सबसे ज़्यादा कुशादगी का वादा इस आयत वमंय्यत्तक़िल्लाह में है। मुस्नद अहमद में फ़रमाने रसूल है, 'जो शख़्स बकसरत इस्तिग़फ़ार करता है अल्लाह तआला उसे हर ग़म से निजात और हर तंगी से फ़राख़ी देगा और ऐसी जगह से रिज़्क़ पहुँचायेगा जहाँ का उसे ख़्याल व गुमान तक न हो।' (ज़ईफ़ : अबू दाऊद, किताबुल वित्र, बाब फ़िल्इस्तिग़फ़ार : 1518, हकम बिन मुस्अब रावी मज्हूलुल हाल है। इब्ने माजह : 3819, अहमद : 1/248, बैहक़ी : 3/351)

हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) फ़रमाते हैं, उसे अल्लाह तआला दुनिया और आख़िरत की कर्ब व बेचैनी से निजात देगा। रबीअ (रह.) फ़रमाते हैं, लोगों पर जो काम भारी हो उस पर आसान हो जायेगा। हज़रत इक्रिमा (रह.) फ़रमाते हैं, मतलब ये है कि जो शख़्स अपनी बीवी को अल्लाह के हुक्म के मुताबिक़ तलाक़ देगा अल्लाह उसे निकासी और निजात देगा। (अत्तबरी : 23/445)

इब्ने मसऊद (रज़ि.) वग़ैरह से मरवी है कि वो जानता है कि अल्लाह अगर चाहे दे, अगर न चाहे न दे। हज़रत क़तादा (रह.) फ़रमाते हैं, तमाम उमूर के शुब्हा से और मौत की तकलीफ़ से बचा लेगा और रोज़ी ऐसी जगह से देगा जहाँ का गुमान भी न हो। (अत्तबरी : 23/448)

हज़रत सुद्दी (रह.) फ़रमाते हैं, यहाँ अल्लाह से डरने के ये मआना हैं कि सुन्नत के मुताबिक़ तलाक़ दे और सुन्नत के मुताबिक़ रुजूअ करे। आप (रह.) फ़रमाते हैं, हज़रत औफ़ बिन मालिक अश्ज़ई (रज़ि.) के साहबज़ादे को कुफ़्फ़ार गिरफ़्तार करके ले गये और उन्हें जेलख़ाने में डाल दिया और उनके वालिद हुज़ूर (ﷺ) के पास आते और अपने बेटे की हालत और हाजत, मुसीबत और तकलीफ़ बयान करते रहते, आप (ﷺ) उन्हें

सब्र की तल्क़ीन करते और फ़रमाते, 'अन्क़रीब अल्लाह तआला उनके लिये छुटकारे की सबील बना देगा।' थोड़े दिन गुज़र होंगे जो उनके बेटे दुश्मनों में से निकल भागे रास्ते में दुश्मनों की बकरियों का रेवड़ मिल गया जिसे अपने साथ हंका लाये और बकरियाँ लिये हुए अपने वालिद की ख़िदमत में पहुँचे। पस ये आयत उतरी कि मुत्तक़ी बन्दों को अल्लाह तआला निजात दे देता है और उसका गुमान भी न हो वहाँ से उसे रोज़ी पहुँचाता है। (अत्तबरी : 23/447)

मुस्नद अहमद में है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़रमाते हैं, 'गुनाह की वजह से इंसान अपनी रोज़ी से महरूम हो जाता है। तक़दीर को लौटाने वाली चीज़ सिर्फ़ दुआ है, उम्र में ज़्यादती करने वाली चीज़ सिर्फ़ नेकी और ख़ुश सुलूकी है।' (ज़ईफ़ : इब्ने माजह, किताबुल फ़ितन, बाब बाबुल उक़ूबात : 4022, सुफ़ियान स़ोरी मुदल्लस हैं और तसरीह बिस्सिमाअ स़ाबित नहीं है। अहमद : 5/282)

सीरत इब्ने इस्हाक़ में है कि हज़रत औफ़ अश्जई (रज़ि.) के लड़के हज़रत सालिम (रज़ि.) जब काफ़िरों की क़ैद में थे तो हुज़ूर (ﷺ) ने फ़रमाया, 'उनसे कहलवा दो कि बकस़रत ला हौ-ल वला क़ुव्व-त इल्ला बिल्लाह पढ़ता रहे।' एक दिन अचानक बैठे-बैठे उनकी क़ैद खुल गई और ये वहाँ से निकल भागे। उन लोगों की एक ऊँटनी हाथ लग गई जिस पर सवार हो लिये। रास्ते में उनके ऊँटों के रेवड़ मिले उन्हें अपने साथ हंका लाये। वो लोग पीछे दौड़े लेकिन ये किसी के हाथ न लगे सीधे अपने घर आये और दरवाज़े पर खड़े होकर आवाज़ दी। बाप ने आवाज़ सुनकर फ़रमाया, अल्लाह की क़सम! ये तो सालिम है। माँ ने कहा, हाय वो कहाँ वो तो क़ैद व बन्द की मुसीबतें झेल रहा होगा। अब दोनों माँ-बाप और ख़ादिम दरवाज़े की तरफ़ दौड़े। खोला देखा तो उनके लड़के हज़रत सालिम (रज़ि.) हैं और तमाम अंगनाई ऊँटों से भरी पड़ी है। पूछा कि ये ऊँट कैसे हैं? उन्होंने वाक़िया बयान किया तो फ़रमाया, अच्छा ठहरो! मैं हुज़ूर (ﷺ) से इनकी बाबत मसला पूछकर आऊँ। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'वो सब तुम्हारा माल है जो चाहो करो।' और ये आयत उतरी कि अल्लाह से डरने वालों की मुश्किल अल्लाह आसान करता है और बेगुमान रोज़ी पहुँचाता है। (ये रिवायत मुरसल यानी ज़ईफ़ है।)

इब्ने अबी हातिम की हदीस़ में है, 'जो शख़्स हर तरफ़ से खींचकर अल्लाह का हो जाये अल्लाह उसकी हर मुश्किल में उसे किफ़ालत करता है और बेगुमान रोज़ियाँ देता है और जो अल्लाह से हटकर दुनिया ही का हो जाये अल्लाह उसे उसी की तरफ़ सौंप देता है।' (ज़ईफ़ : मुअजम औसत : 3383, हिशाम बिन हस्सान मुदल्लस व अन्अन वल्हसन अन इमरान मुन्क़तअ)

मुस्नद अहमद में है कि एक मर्तबा हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) हुज़ूर (ﷺ) के साथ आपकी सवारी पर आपके पास बैठे हुए थे जो आप ने फ़रमाया, 'बच्चे! मैं तुम्हें कुछ बातें सिखाता हूँ, सुनो! तुम अल्लाह को याद रखो वो तुम्हें याद रखेगा, अल्लाह के हुक्म की हिफ़ाज़त करो तू अल्लाह को अपने पास बल्कि अपने सामने पाओगे, जब कुछ माँगना हो अल्लाह ही से माँगो, जब मदद तलब करनी हो उसी से मदद चाहो कि

तमाम उम्मत मिलकर तुम्हें नफ़ा पहुँचाना चाहे और अल्लाह को मन्ज़ूर न हो तो ज़रा सा भी नफ़ा नहीं पहुँचा सकती और इसी तरह सारे के सारे जमा होकर तुझे कोई नुक़सान पहुँचाना चाहें तो भी नहीं पहुँचा सकते, अगर तक़दीर में न लिखा हो। क़लमें उठ चुकीं और सहीफ़े ख़ुश्क हो गये।' (हसन सहीह : तिर्मिज़ी, सिफ़तुल क़ियामह, बाब हदीसु हन्ज़ला : 2516, अहमद : 1/293)

मुस्नद अहमद की और हदीस में है, 'जिसे कोई हाजत हो और वो लोगों की तरफ़ ले जाये तो बहुत मुम्किन है कि वो सख़्ती में पड़ जाये और काम मुश्किल हो जाये और जो अपनी हाजत अल्लाह की तरफ़ ले जाये अल्लाह तआला ज़रूर उसकी मुराद पूरी करता है या तो जल्दी इसी दुनिया में ही या देर के बाद यानी मौत के बाद।' (हसन : अहमद : 1/389, अबू दाऊद, किताबुज़्ज़कात, बाब फ़िल्इस्तिअफ़ाफ़ : 1645, तिर्मिज़ी : 2326, अबू दाऊद और तिर्मिज़ी में हाजत की जगह फ़ाक़ा है।)

फिर इरशाद होता है कि अल्लाह तआला अपने क़ज़ा और अहकाम को जिस तरह और जैसे चाहे अपनी मख़्लूक़ में पूरा करने वाला और अच्छी तरह जारी करने वाला है हर चीज़ का उसने अन्दाज़ा मुक़र्रर किया हुआ है। जैसे और जगह है (وَكُلُّ شَيْءٍ عِنْدَهُ بِمِقْدَارٍ ۝٨) (सूरह रअ़द 13 : 8) 'हर चीज़ उसके पास एक अन्दाज़े से है।'

***

وَالّٰٓئِ يَئِسْنَ مِنَ الْمَحِيْضِ مِنْ نِّسَآئِكُمْ اِنِ ارْتَبْتُمْ فَعِدَّتُهُنَّ ثَلٰثَةُ اَشْهُرٍ ۙ وَّالّٰٓئِ
لَمْ يَحِضْنَ ؕ وَاُولَاتُ الْاَحْمَالِ اَجَلُهُنَّ اَنْ يَّضَعْنَ حَمْلَهُنَّ ؕ وَمَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ
يَجْعَلْ لَّهٗ مِنْ اَمْرِهٖ يُسْرًا ۝٤ ذٰلِكَ اَمْرُ اللّٰهِ اَنْزَلَهٗٓ اِلَيْكُمْ ؕ وَمَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ يُكَفِّرْ
عَنْهُ سَيِّاٰتِهٖ وَيُعْظِمْ لَهٗٓ اَجْرًا ۝٥

तर्जुमा : ''तुम्हारी औरतों में से जो औरतें हैज़ से नाउम्मीद हो गई हों अगर तुम्हें शुब्हा हो तो उनकी इद्दत तीन महीने है और उनकी भी जिन्हें अभी हैज़ आना शुरू ही न हुआ हो और हामिला औरतों की इद्दत उनके बच्चे का पैदा हो जाना है और जो शख़्स अल्लाह तआला से डरेगा अल्लाह उसके हर काम में आसानी कर देगा। (4) ये अल्लाह का हुक्म है जो उसने तुम्हारे पास भेजा है और जो शख़्स अल्लाह से डरेगा अल्लाह उसके गुनाह दूर कर देगा और उसे बड़ा भारी अज्र देगा।'' (5)

हामिला और नाउम्मीद औरत की इद्दत (आयत : 4-5) : जिन बुढ़िया औरतों के बवजह अपनी बड़ी उम्र के अय्याम बंद हो गये हों उनकी इद्दत यहाँ बतलाई जाती है कि तीन महीने की इद्दत गुज़ारें जैसे कि अय्याम वाली औरतों की इद्दत तीन हैज़ है। मुलाहिज़ा हो सूरह बक़र की आयत। इसी तरह वो नाबालिग़ लड़कियाँ जो इस उम्र को नहीं पहुँचीं कि उन्हें कपड़े आयें, उनकी इद्दत भी तीन महीने रखी। 'अगर तुम्हें शक हो।' इसकी तफ़्सीर में दो क़ौल हैं एक तो ये कि ये ख़ून देख लें और तुम्हें शुब्हा गुज़रे कि क्या हैज़ का ख़ून है या इस्तिहाज़ा की बीमारी का। (अत्तबरी : 23/450) दूसरा क़ौल ये है कि उनकी इद्दत के हुक्म में तुम्हें शक बाक़ी रह जाये और तुम उसे न पहचान सको तो तीन महीने याद रख लो। (अत्तबरी : 23/452) ये दूसरा क़ौल ही ज़्यादा बेहतर है।

इसकी दलील ये रिवायत भी है कि हज़रत उबय बिन कअ़ब (रज़ि.) ने कहा था, ऐ अल्लाह के रसूल! बहुत सी औरतों की इद्दत अभी बयान नहीं हुई, कमसिन लड़कियाँ, बूढ़ी औरतें और हमल वाली औरतें। इसके जवाब में ये आयत उतरी। (ज़ईफ़ लिइन्क़िताअ : हाकिम : 2/492-493 : ज़ईफ़ लिइन्क़िताअ अ़म्र बिन सालिम लम युदरिक उबय बिन कअ़ब (रज़ि.) व उन्ज़ुर इत्तिहाफ़ुल महरह : 1/25-255, अत्तबरी : 23/452)

फिर हामिला की इद्दत बयान फ़रमाई कि वज़अ़े हमल उसकी इद्दत है गो तलाक़ या ख़ाविन्द की मौत के ज़रा सी देर बाद ही हो जाये। जैसे कि इस आयते करीमा के अल्फ़ाज़ हैं और अहादीसे नबविया से साबित है और जुम्हूर उलमाए सलफ़ व ख़लफ़ का क़ौल है। हाँ हज़रत अ़ली और हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से मरवी है कि सूरह बक़रह की आयत और इस आयत को मिलाकर उनका फ़तवा है कि इन दोनों में जो ज़्यादा देर ख़त्म हो वो इद्दत ये गुज़ारे यानी अगर बच्चा तीन महीने से पहले पैदा हो गया तो तीन महीने की इद्दत और तीन महीने गुज़र चुके और बच्चा पैदा नहीं हुआ तो बच्चे के होने तक इद्दत है।

सहीह बुख़ारी में हज़रत अबू सलमा (रज़ि.) से रिवायत है कि एक शख़्स हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) के पास आया, उस वक़्त हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) भी मौजूद थे। उसने सवाल किया कि उस औरत के बारे में आपका क्या फ़तवा है जिसे अपने ख़ाविन्द के इन्तिक़ाल के बाद चालीसवें दिन बच्चा हो जाये। आप (रज़ि.) ने फ़रमाया, दोनों इद्दतों में से आख़िरी इद्दत उसे गुज़ारनी पड़ेगी यानी इस सूरत में तीन महीने की इद्दत इस पर है। अबू सलमा (रज़ि.) ने कहा, क़ुरआन में जो है कि हमल वालियों की इद्दत बच्चे का हो जाना है। हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने फ़रमाया, मैं भी अपने चाचाज़ाद भाई हज़रत अबू सलमा (रज़ि.) के साथ हूँ यानी मेरा भी यही फ़तवा है। हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने उसी वक़्त ग़ुलाम कुरैब को माई उम्मे सलमा (रज़ि.) के पास भेजा कि जाओ उनसे ये मसला पूछ आओ। उन्होंने फ़रमाया, सबीआ़ अस्लमिया (रज़ि.) के शौहर क़त्ल कर दिये गये और ये उस वक़्त दोजिया (प्रेगनेंट) थीं, चालीस रातों के बाद बच्चा हो गया, उसी वक़्त माँगा आया और आँहज़रत (ﷺ) ने निकाह कर दिया। माँगा डालने वालों में से हज़रत अबू सनाबिल (रज़ि.) भी थे। (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरह तलाक़ बाब व उलातिल अहमालि अजलहुन्न : 4909, सहीह मुस्लिम : 1485)

ये हदीस क़दरे तवालत (विस्तार) के साथ और किताबों में भी है। हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़तबा

(रज़ि.) ने हज़रत उमर बिन अब्दुल्लाह बिन अरक़म ज़ोहरी को लिखा कि वो सबीआ बिन्ते हारिस अस्लमिया (रज़ि.) के पास जायें और उनसे उनका वाक़िया पूछकर उन्हें लिख भेजें। ये गये, पूछा और लिखा कि उनके ख़ाविन्द हज़रत सअद बिन ख़ौला (रज़ि.) थे। ये बद्री सहाबी थे हज्जतुल विदाअ में फ़ौत हो गये उस वक़्त ये हमल से थीं थोड़े ही दिन के बाद उन्हें बच्चा पैदा हो गया। जब निफ़ास से पाक हुईं तो अच्छे कपड़े पहनकर तजम्मुल (सिंगार) करके बैठ गईं। अबू सनाबिल बिन बअलक (रज़ि.) जब उनके पास आये तो उन्हें इस हालत में देखकर कहने लगे, तुम जो इस तरह बैठी हो तो क्या निकाह करना चाहती हो, वल्लाह तुम निकाह नहीं कर सकतीं जब तक कि चार महीने दस दिन न गुज़र जायें। मैं ये सुनकर चादर ओढ़कर हुज़ूर (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुई और आपसे ये मसला पूछा। आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'बच्चा पैदा होते ही तुम इद्दत से निकल गईं। अब तुम्हें इख़्तियार है, अगर तुम चाहो अपना निकाह कर लो।' (सहीह मुस्लिम, किताबुत्तलाक़, बाब इन्क़िज़ाउ इद्दतिल मुतवफ़्फ़ा अन्हा वग़ैरिहा बिवज़्इल हमल : 1484, सहीह बुख़ारी : 3991, अबू दाऊद : 3306, इब्ने माजह : 2028, बैहक़ी : 7/428, इब्ने हिब्बान : 4294)

सहीह बुख़ारी में इस आयत के तहत में इस हदीस के वारिद करने के बाद ये भी है कि हज़रत मुहम्मद बिन सीरीन (रह.) एक मज्लिस में थे जहाँ हज़रत अब्दुर्रहमान बिन अबू लैला भी थे जिनकी इज़्ज़त व तकरीम उनके साथी बहुत ही किया करते थे, उन्होंने हामिला की इद्दत आख़िरी दो इद्दतों में की मीआद बतलाई। इस पर मैंने हज़रत सबीआ (रज़ि.) वाली हदीस बयान की इस पर मेरे कुछ साथी मुझे टहोके लगाने लगे। मैंने कहा, फिर तो मैंने बड़ी जुरअत की अगर अब्दुल्लाह पर मैंने बोहतान बांधा हालांकि वो कूफ़ा के कोने में ज़िन्दा मौजूद हैं। पस वो ज़रा शरमा गये और कहने लगे, लेकिन उनके चाचा तो ये नहीं कहते। मैं हज़रत अबू अतिय्या मालिक बिन आमिर से मिला, उन्होंने मुझे हज़रत सबीआ (रज़ि.) वाली हदीस पूरी सुनाई। मैंने कहा, तुमने इस बाबत हज़रत अब्दुल्लाह से भी कुछ सुना है? फ़रमाया, हम हज़रत अब्दुल्लाह के पास थे आपने फ़रमाया, क्या तुम इस पर सख़्ती करते हो और रुख़्सत नहीं देते? सूरह निसा कुसरा यानी सूरह तलाक़, सूरह निसा तूला के बाद उतरी है और इसमें फ़रमान है कि हामिला औरत की मुद्दत वज़अे हमल है। (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरह तलाक़ बाब व उलातिल अहमालि अजलहुन्न : 4910)

इब्ने जरीर में हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) से रिवायत है कि जो मुलाइना करना चाहे इसमें उससे मुलाइना करने को तैयार हूँ यानी मेरे फ़तवे के ख़िलाफ़ जिसका फ़तवा हो मैं तैयार हूँ कि वो मेरे मुक़ाबले में आये और झूठे पर अल्लाह की लानत करे। मेरा फ़तवा ये है कि हमल वाली की इद्दत बच्चे का पैदा हो जाना है। पहले आम हुक्म था कि जिन औरतों के ख़ाविन्द मर जायें वो चार महीने दस दिन इद्दत गुज़ारें उसके बाद ये आयत नाज़िल हुई कि हमल वालियों की इद्दत बच्चे का पैदा हो जाना है। पस ये औरतें उन औरतों में से मख़्सूस हो गईं। अब मसला यही है कि जिस औरत का ख़ाविन्द इन्तिक़ाल कर जाये और वो दोजिया हो तो जब हमल से फ़ारिग़ हो जाये मुद्दत से निकल गई। इब्ने अबी हातिम की रिवायत में है कि हज़रत इब्ने मसऊद (रज़ि.) ने ये उस वक़्त फ़रमाया था जब उन्हें मालूम हुआ कि हज़रत अली (रज़ि.) का फ़तवा ये है कि उसकी इद्दत उन दोनों

इद्दतों में से जो आख़िरी हो वो है।' मुस्नद अहमद में है कि हज़रत उबय बिन कअ़ब (रज़ि.) ने रसूलुल्लाह (ﷺ) से पूछा कि हमल वालियों की इद्दत जो वज़ऐ हमल है ये तीन तलाक़ वालियों की इद्दत है या फ़ौतशुदा ख़ाविन्द वालियों की आपने फ़रमाया, दोनों की। (अहमद : 5/116, ज़वाइद अ़ब्दुल्लाह बिन अहमद बिन हम्बल, व सनद ज़ईफ़ुन जिद्दा, इसकी सनद में मुसन्ना बिन अस्सबाह मतरूक रावी है। अल्मीज़ान : 3/435, 7061, जिस तरह कि हाफ़िज़ इब्ने कसीर रह. ने फ़रमाया है।) ये हदीस बहुत ही ग़रीब है बल्कि बहुत मुन्कर है इसलिये कि इस्नाद में मुसन्ना बिन सबाह है और वो बिल्कुल मतरूकुल हदीस है। लेकिन इसकी दूसरी सनदें भी हैं। फिर फ़रमाता है अल्लाह तआ़ला मुत्तक़ियों के लिये हर मुश्किल से आसानी और हर तकलीफ़ से राहत इनायत फ़रमा देता है, ये अल्लाह के अहकाम और उसकी पाक शरीअ़त है जो अपने रसूल के ज़रिये तुम्हारी तरफ़ उतार रहा है। अल्लाह से डरने वालों को दूसरी चीज़ों के डर से अल्लाह तआ़ला बचा लेता है और उनके थोड़े अ़मल पर बड़ा अज्र देता है।

***

أَسْكِنُوهُنَّ مِنْ حَيْثُ سَكَنْتُمْ مِّنْ وُّجْدِكُمْ وَلَا تُضَآرُّوهُنَّ لِتُضَيِّقُوا عَلَيْهِنَّ ۚ وَإِنْ كُنَّ أُولَاتِ حَمْلٍ فَأَنْفِقُوا عَلَيْهِنَّ حَتَّىٰ يَضَعْنَ حَمْلَهُنَّ ۚ فَإِنْ أَرْضَعْنَ لَكُمْ فَآتُوهُنَّ أُجُورَهُنَّ ۖ وَأْتَمِرُوا بَيْنَكُمْ بِمَعْرُوفٍ ۖ وَإِنْ تَعَاسَرْتُمْ فَسَتُرْضِعُ لَهُ أُخْرَىٰ ⑥ لِيُنْفِقْ ذُو سَعَةٍ مِّنْ سَعَتِهِ ۖ وَمَنْ قُدِرَ عَلَيْهِ رِزْقُهُ فَلْيُنْفِقْ مِمَّا آتَاهُ اللَّهُ ۚ لَا يُكَلِّفُ اللَّهُ نَفْسًا إِلَّا مَا آتَاهَا ۚ سَيَجْعَلُ اللَّهُ بَعْدَ عُسْرٍ يُسْرًا ⑦

तर्जुमा : ''तुम अपनी ताक़त के मुताबिक़ जहाँ तुम रहते हो वहाँ उन तलाक़ वाली औरतों को भी बसाओ और उन्हें तंग करने के लिये तकलीफ़ न पहुँचाओ और अगर ये हमल से हों तो जब तक कि बच्चा पैदा हो ले उन्हें ख़र्च देते रहा करो। फिर अगर तुम्हारे कहने से वही दूध पिलायें तो तुम उन्हें उनकी उजरत दे दो और आपस में मुनासिब तौर पर मशवरा कर लिया करो और अगर तुम आपस में कश्मकश करो तो उसके कहने से कोई और दूध पिलायेगी। (6) कुशादगी वाले

को अपनी कुशादगी से ख़र्च करना चाहिये और जिस पर उसके रिज़्क़ की तंगी की गई हो उसे चाहिये कि जो कुछ अल्लाह तआला ने उसे दे रखा है उसी में से अपनी हस्बे हैसियत दे, किसी शख़्स को अल्लाह तकलीफ़ नहीं देता मगर उतनी ही जितनी ताक़त उसे दे रखी है, अल्लाह तआला तंगी के बाद आसानी फ़राग़त भी कर देगा।'' (7)

औरतों पर ख़र्च करना (आयत : 6-7) : अल्लाह तआला अपने बन्दों को हुक्म देता है कि जब उनमें से कोई अपनी बीवी को तलाक़ दे तो इद्दत के गुज़र जाने तक उसके रहने-सहने को अपना मकान दे, ये जगह अपनी ताक़त के मुताबिक़ है। यहाँ तक कि हज़रत क़तादा (रह.) फ़रमाते हैं, अगर ज़्यादा वुस्अत न हो तो अपने ही मकान का एक कोना उसे दे दे। उसे तकलीफ़ पहुँचाकर इस क़द्र तंग न करो कि वो मकान छोड़कर चली जाये या तुम से छूटने के लिये अपना हक़्क़े महर छोड़ दे या इस तरह कि तलाक़ दी, देखा कि दो एक रोज़ इद्दत के रह गये हैं रुजूअ का ऐलान कर दिया फिर तलाक़ दे दी और इद्दत के ख़त्म होने के क़रीब रुज्अत कर ली ताकि न वो बेचारी सुहागिन रहे न राण्ड। फिर इरशाद होता है कि अगर तलाक़ वाली औरत हमल से हो तो बच्चा होने तक उसका नान व नफ़्क़ा उसके ख़ाविन्द के ज़िम्मे है। अक्सर उलमा का फ़रमान है कि ये हुक्म ख़ास उन औरतों के लिये बयान हो रहा है जिन्हें आख़िरी तलाक़ दे दी गई हो जिससे रुजूअ करने का हक़ उनके ख़ाविन्दों को न रहा हो, इसलिये कि जिनसे रुजूअ हो सकता है उनकी इद्दत तक का ख़र्च तो ख़ाविन्द के ज़िम्मे है ही, वो हमल से हों तब और बेहमल हों तो भी। और हज़राते उलमा फ़रमाते हैं, ये हुक्म भी उन्ही औरतों का बयान हो रहा है जिनसे रुज्अत का हक़ हासिल है क्योंकि ऊपर भी उन्हीं का बयान था उसे अलग इसलिये बयान कर दिया कि उमूमन हमल की मुद्दत लम्बी होती है तो कोई ये न समझ बैठे कि इद्दत के ज़माने जितना नफ़्क़ा तो हमारे ज़िम्मे है फिर नहीं , इसलिये साफ़ तौर पर फ़रमा दिया कि रुज्इय्यत वाली तलाक़ के वक़्त अगर औरत हमल से हो तो जब तक बच्चा न हो उसका खिलाना-पिलाना ख़ाविन्द के ज़िम्मे है। फिर इसमें भी उलमा का इख़्तिलाफ़ है कि ख़र्च उसके लिये हमल के वास्ते है या हमल के लिये ही। इमाम शाफ़ई (रह.) वग़ैरह से दोनों क़ौल मरवी हैं और इस बिना पर बहुत से फ़ुरूई मसाइल में भी इख़्तिलाफ़ रूनुमा हुआ है।

फिर फ़रमाता है कि जब ये मुतल्लक़ा औरतें हमल से फ़ारिग़ हो जायें तो अगर तुम्हारी औलाद को वो दूध पिलायें तो तुम्हें उनकी दूध पिलाई देनी चाहिये। हाँ औरत को इख़्तियार है ख़्वाह दूध पिलाये या न पिलाये। लेकिन पहली बार का दूध उसे ज़रूर पिलाना चाहिये गो फिर दूध न पिलाये क्योंकि उमूमन बच्चे की ज़िन्दगी उस दूध के साथ वाबस्ता है तो अगर वो बाद में भी दूध पिलाती रहे तो माँ-बाप के दरम्यान जो उज्रत तय हो जाये वो अदा करनी चाहिये। तुममें आपस में जो काम हों वो भलाई के साथ बाक़ाइदा दस्तूर के मुताबिक़ होने चाहियें न ये उसके नुक़सान के दरपे रहे न वो इसे ईज़ा पहुँचाने की कोशिश करो। जैसे सूरह बक़रह में फ़रमाया, (لَا تُضَآرَّ وَالِدَةٌۢ بِوَلَدِهَا وَ لَا مَوْلُوْدٌ لَّهٗ بِوَلَدِهٖ) (सूरह बक़रह 2 : 233) 'बच्चे के बारे में न उसकी माँ को नुक़सान पहुँचाया जाये न उसके बाप को।' फिर फ़रमाता है अगर आपस में इख़्तिलाफ़ बढ़ जाये जैसे लड़के का

बाप कम देना चाहता है जो उसकी माँ को मन्ज़ूर नहीं या माँ ज़्यादा माँगती है जो बाप पर गिराँ है और मुवाफ़िक़त नहीं हो सकती दोनों किसी बात पर रज़ामन्द नहीं होते तो इख़्तियार है कि किसी और दाया को दे दें। हाँ जो और दाया को दिया जाना मन्ज़ूर किया जाता है अगर उसी पर उस बच्चे की माँ रज़ामन्द हो जाये तो ज़्यादा मुस्तहिक़ यही है। फिर फ़रमाता है कि बच्चे का बाप या वली जो हो उसे चाहिये कि बच्चे पर अपनी वुस्अत के मुताबिक़ ख़र्च करे। तंगी वाला अपनी ताक़त के मुताबिक़ दे, ताक़त से बढ़कर तकलीफ़ अल्लाह किसी को नहीं देता। तफ़्सीर इब्ने जरीर में है कि हज़रत अबू उबैदा (रज़ि.) की बाबत हज़रत उमर (रज़ि.) ने पूछा तो मालूम हुआ कि वो मोटा कपड़ा पहनते हैं और हल्की ग़िज़ा खाते हैं। आप (रज़ि.) ने हुक्म दिया कि उन्हें एक हज़ार दीनार भेज दो और जिसके हाथ भिजवाये उनसे कह दिया कि देखना वो उन दीनारों को पाकर क्या करते हैं? जब ये अशरफ़ियाँ उन्हें मिल गईं तो उन्होंने बारीक कपड़े पहने और निहायत नफ़ीस ग़िज़ायें खानी शुरू कर दीं। क़ासिद ने वापस आकर हज़रत उमर (रज़ि.) से वाक़िया बयान किया। आप (रज़ि.) ने फ़रमाया, अल्लाह उस पर रहम करे उसने इस आयत पर अमल किया कि कुशादगी वाला अपनी कुशादगी के मुताबिक़ ख़र्च करे और तंगी-तरशी वाला अपनी हालत के मुताबिक़। (ये रिवायत मुरसल यानी ज़ईफ़ है।)

तबरानी की एक ग़रीब हदीस में है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'एक शख़्स के पास दस दीनार थे उसने उनमें से एक राहे लिल्लाह सदक़ा किया। दूसरे के पास दस औक़िया थे उसने उनमें से एक औक़िया यानी चालीस दिरहम ख़र्च किये। तीसरे के पास सौ औक़िया थे जिसमें से उसने अल्लाह के नाम पर दस औक़िया ख़र्च किये तो ये सब अज्र में अल्लाह के नज़दीक बराबर हैं इसलिये कि हर एक ने अपने माल का दसवाँ हिस्सा फ़ी सबीलिल्लाह दिया है।' (ज़ईफ़ : मुअजमुल कबीर : 3439, सनद ज़ईफ़ लिइन्क़िताइही शुरेह बिन उबैद लम युदरिक अबा मालिक)

फिर अल्लाह तआला सच्चा वादा देता है कि वो तंगी के बाद आसानी कर देगा जैसे और जगह फ़रमाया, (فَإِنَّ مَعَ الْعُسْرِ يُسْرًا ۝) 'तहक़ीक़ कि सख़्ती के साथ आसानी है।' (सूरह इन्शिराह 94 : 5)

मुस्नद अहमद की हदीस इस जगह वारिद करने के क़ाबिल है जिसमें है कि हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने फ़रमाया, अगले ज़माने में एक मियाँ-बीवी थे जो फ़क्रो-फ़ाक़ा से अपनी ज़िन्दगी गुज़ार रहे थे, पास कुछ भी न था। एक मर्तबा ये शख़्स सफ़र से आया और सख़्त भूखा था, भूख के मारे बेताब था। आते ही अपनी बीवी से पूछा कुछ खाने को है? उसने कहा, हाँ! आप ख़ुश हो जाइये अल्लाह तआला की दी हुई रोज़ी हमारे यहाँ आ पहुँची है। उसने कहा, फिर लाओ जो कुछ हो दे दो मैं बहुत भूखा हूँ। बीवी ने कहा, और ज़रा देर सब्र कर लो अल्लाह की रहमत से हमें बहुत कुछ उम्मीद है। फिर जब कुछ देर और हो गई उसने बेताब होकर कहा, जो कुछ तुम्हारे पास है देती क्यों नहीं? मुझे तो भूख से सख़्त तकलीफ़ हो रही है। बीवी ने कहा, इतनी जल्दी क्यों करते हो? अब तनव्वुर खोलती हूँ। थोड़ी देर गुज़रने के बाद जब बीवी ने देखा कि ये अब फिर तक़ाज़ा करना चाहते हैं तो ख़ुद-बख़ुद कहने लगीं अब उठकर तनव्वुर को देखती हूँ। उठकर जो देखती हैं तो कुदरते इलाही से उनके

तवक्कल के बदले वो बकरी के पहलू के गोश्त से भरा हुआ है और देखती हैं कि घर की दोनों चक्कियाँ अज़ ख़ुद चल रही हैं और बराबर आटा निकल रहा है। उन्होंने तनव्वुर में से सब गोश्त निकाल लिया और चक्कियों में से सारा आटा उठा लिया और झाड़ दीं। हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) क़सम खाकर फरमाते हैं कि आँहज़रत (ﷺ) का फ़रमान है, 'अगर वो सिर्फ़ आटा ले लेतीं और चक्की न झाड़तीं तो वो क़यामत तक चलती रहती।' (हसन : अहमद : 2/421)

***

وَكَاَيِّنْ مِّنْ قَرْيَةٍ عَتَتْ عَنْ اَمْرِ رَبِّهَا وَرُسُلِهٖ فَحَاسَبْنٰهَا حِسَابًا شَدِيْدًا ۙ وَّعَذَّبْنٰهَا عَذَابًا نُّكْرًا ⑧ فَذَاقَتْ وَبَالَ اَمْرِهَا وَكَانَ عَاقِبَةُ اَمْرِهَا خُسْرًا ⑨ اَعَدَّ اللّٰهُ لَهُمْ عَذَابًا شَدِيْدًا ۙ فَاتَّقُوا اللّٰهَ يٰٓاُولِي الْاَلْبَابِ ۚۖ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۛ قَدْ اَنْزَلَ اللّٰهُ اِلَيْكُمْ ذِكْرًا ⑩ رَّسُوْلًا يَّتْلُوْا عَلَيْكُمْ اٰيٰتِ اللّٰهِ مُبَيِّنٰتٍ لِّيُخْرِجَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ مِنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ۗ وَمَنْ يُّؤْمِنْ بِاللّٰهِ وَيَعْمَلْ صَالِحًا يُّدْخِلْهُ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ۗ قَدْ اَحْسَنَ اللّٰهُ لَهٗ رِزْقًا ⑪

तर्जुमा : "बहुत सी बस्तियों वालों ने अपने रब के हुक्म और उसके रसूलों से सरताबी की हमने भी उनसे सख़्त हिसाब किया और अनदेखी आफ़त उन पर डाल दी (8) पस उन्होंने अपने करतूत का वबाल चख लिया और अन्जामकार उनका ख़सारा ही हुआ। (9) उनके लिये अल्लाह तआला ने सख़्त अज़ाब तैयार कर रखा है, पस अल्लाह से डरो ऐ अक़्लमन्द ईमान वालो! यक़ीनन अल्लाह ने तुम्हारी तरफ़ नसीहत भेज दी है। (10) यानी रसूल जो तुम्हें अल्लाह के साफ़-साफ़ अहकाम पढ़कर सुनाता है ताकि उन लोगों को जो ईमान लायें और नेक आमाल करें वो तारीकियों से रोशनी की तरफ़ लेकर आये और जो शख़्स अल्लाह पर ईमान लाये और नेक अमल करे अल्लाह उसे ऐसी जन्नतों में दाख़िल करेगा जिसके नीचे नहरें जारी हैं जिनमें ये हमेशा-हमेशा रहेंगे। बेशक अल्लाह ने उसे बेहतरीन रोज़ी दे रखी है।" (11)

अल्लाह तआला की इताअत करो (आयत 8-11) : जो लोग अल्लाह के अम्र के ख़िलाफ़ करें, उसके

रसूल को न मानें, उसकी शरीअ़त पर न चलें, उन्हें डांटा जा रहा है कि देखो अगले लोगों में से भी जो इस रविश पर चले वो तबाह व बर्बाद हो गये जिन्होंने सरताबी, सरकशी और तकब्बुर किया। हुक्मे इलाही और इत्तिबाअ़े रसूल से बेपरवाही बरती। आख़िर उन्हें सख़्त हिसाब देना पड़ा और अपनी बदकारी का मज़ा चखना पड़ा, अन्जामकार नुक़सान उठाया। उस वक़्त नादिम होने लगे लेकिन अब नदामत किस काम की? फिर दुनिया के इन अ़ज़ाबों से ही अगर पल्ला (दामन) पाक हो जाता जब भी एक बात थी। नहीं फिर उनके लिये आख़िरत भी सख़्ततर अ़ज़ाब और बेपनाह मार है। अब सोच-समझ वालों तुम्हें चाहिये कि उन जैसे न बनो और उनके अन्जाम से इबरत हासिल करो, ऐ अ़क़्लमन्दो! अल्लाह ने तुम्हारी तरफ़ क़ुरआन नाज़िल फ़रमा दिया है। ज़िक्र से मुराद क़ुरआन है जैसे और जगह फ़रमाया, (اِنَّا نَحۡنُ نَزَّلۡنَا الذِّكۡرَ وَاِنَّا لَهٗ لَحٰفِظُوۡنَ۝) (सूरह हिज्र 15 : 9) 'हमने इस क़ुरआन को नाज़िल फ़रमाया और हम ही इसकी हिफ़ाज़त करने वाले हैं।' और कुछ ने कहा, ज़िक्र से मुराद यहाँ रसूल है चुनाँचे साथ ही फ़रमाया है, रसूलन तो ये बदल इश्तिमाल है चूंकि क़ुरआन के पहुँचाने वाले रसूलुल्लाह (ﷺ) ही हैं तो इस मुनासिबत से आप (ﷺ) को लफ़्ज़े ज़िक्र से याद किया गया। हज़रत इमाम इब्ने जरीर (रह.) भी इसी मतलब को दुरुस्त बतलाते हैं। (अत्तबरी : 23/468)

फिर रसूल की हालत बयान फ़रमाई अल्लाह की वाज़ेह और रोशन आयतें पढ़ कर सुनाते हैं ताकि मुसलमान अन्धेरों से निकल आयें और रोशनियों में पहुँच जायें। जैसे और जगह है, (كِتٰبٌ اَنۡزَلۡنٰهُ اِلَيۡكَ) (सूरह इब्राहीम 14 : 1) 'इस किताब को हमने तुझे दिया है ताकि तू लोगों को तारीकियों से रोशनी में लाये।' और जगह इरशाद है, (اَللّٰهُ وَلِيُّ الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا) (सूरह बक़रह 2 : 257) 'अल्लाह ईमान वालों का कारसाज़ है वो उन्हें अन्धेरों से उजाले की तरफ़ लाता है यानी कुफ़्र व जहालत से ईमान व इल्म की तरफ़।'

चुनाँचे और आयत में अल्लाह तआ़ला ने अपनी नाज़िल करदा वह्य को नूर फ़रमाया है क्योंकि इससे हिदायत और राहे रास्त हासिल होती है और इसी का नाम रूह भी रखा है क्योंकि इससे दिलों को ज़िन्दगी मिलती है। चुनाँचे इरशादे बारी है, (وَكَذٰلِكَ اَوۡحَيۡنَاۤ اِلَيۡكَ رُوۡحًا مِّنۡ اَمۡرِنَا) (सूरह शूरा 42 : 52) 'और हमने इसी तरह तेरी तरफ़ अपने हुक्म से रूह की वह्य की तू नहीं जानता था कि किताब क्या है और ईमान क्या है? लेकिन हमने इसे नूर कर दिया जिसके साथ हम अपने जिस बन्दे को चाहें हिदायत करते हैं। यक़ीनन तू सच्ची और सहीह राह की रहबरी करता है।' फिर ईमानदारों और नेक आमाल वालों का बदला बहती नहरों वाली हमेशगी की जन्नत बयान हुआ है, जिसकी तफ़्सीर बार-बार गुज़र चुकी है।

***

اَللّٰهُ الَّذِيۡ خَلَقَ سَبۡعَ سَمٰوٰتٍ وَّمِنَ الۡاَرۡضِ مِثۡلَهُنَّ ؕ يَتَنَزَّلُ الۡاَمۡرُ بَيۡنَهُنَّ

لِتَعۡلَمُوۡۤا اَنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَىۡءٍ قَدِيۡرٌ ۙ وَّاَنَّ اللّٰهَ قَدۡ اَحَاطَ بِكُلِّ شَىۡءٍ عِلۡمًا۝

तर्जुमा : "अल्लाह वो है जिसने सात आसमान बनाये और उसी के मिस्ल ज़मीनें भी, उसका हुक्म उनके दरम्यान उतरता है ताकि तुम जान लो कि अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है और अल्लाह तआला ने हर चीज़ को बऐतिबारे इल्म घेर रखा है।" (12)

सात ज़मीनों का ज़िक्र (आयत : 12) : अल्लाह तआला अपनी क़ुदरते कामिला और अपनी अज़ीमुश्शान सल्तनत का ज़िक्र फ़रमाता है ताकि मख़्लूक़ उसकी अज़मत व इज़्ज़त का ख़्याल करके उसके फ़रमान को क़द्र की निगाह से देखे और उस पर आमिल बनकर उसे ख़ुश करे। तो फ़रमाया कि सातों आसमान का ख़ालिक़ अल्लाह तआला है जैसे हज़रत नूह (अलै.) ने अपनी क़ौम से फ़रमाया था, (اَلَمْ تَرَوْا كَيْفَ خَلَقَ اللّٰهُ سَبْعَ سَمٰوٰتٍ طِبَاقًا) (सूरह नूह 71 : 15) 'क्या तुम नहीं देखते कि अल्लाह पाक ने सातों आसमानों को किस तरह ऊपर तले पैदा किया है?' और जगह इरशाद है, (تُسَبِّحُ لَهُ السَّمٰوٰتُ السَّبْعُ وَ الْاَرْضُ وَمَنْ فِيْهِنَّ) (सूरह बनी इस्राईल 17 : 44) 'सातों आसमान और ज़मीन और उनमें जो कुछ है सब उस अल्लाह की तस्बीह पढ़ते रहते हैं।' फिर फ़रमाता है उसी की मिस्ल ज़मीनें हैं जैसे कि बुख़ारी व मुस्लिम की सहीह हदीस में है, 'जो शख़्स ज़ुल्म करके किसी की एक बालिश्त भर ज़मीन ले लेगा उसे सातों ज़मीनों का तौक़ पहनाया जायेगा।' (सहीह बुख़ारी, किताब बदउल ख़ल्क़, बाब मा जाअ फ़ी सबइ अरज़ीन : 3195, सहीह मुस्लिम : 1612)

सहीह बुख़ारी में है, 'उसे सातवीं ज़मीन तक धंसा दिया जायेगा।' (सहीह बुख़ारी : 3196)

मैंने इसकी तमाम सनदें और कुल अल्फ़ाज़ शुरू इब्तिदा और इन्तिहा में ज़मीन की पैदाइश के ज़िक्र में बयान कर दिये हैं, फ़ल्हम्दुलिल्लाह! जिन कुछ लोगों ने कहा है कि इससे मुराद हफ़्त अक़्लीम है उन्होंने बेफ़ायदा दौड़-भाग की है और इख़्तिलाफ़े बेजा में फंस गये हैं और बिला दलील क़ुरआन व हदीस का सरीह ख़िलाफ़ किया है। सूरह हदीद में आयत (هُوَ الْاَوَّلُ وَ الْاٰخِرُ) (सूरह हदीद 57 : 3) की तफ़्सीर में सातों ज़मीनों का और उनके दरम्यान की दूरी का और उनकी मोटाई का जो पाँच सौ साल की है पूरा बयान हो चुका है।

हज़रत इब्ने मसऊद (रज़ि.) वग़ैरह भी यही फ़रमाते हैं, एक और हदीस में भी है सातों आसमान और जो कुछ उनमें और उनके दरम्यान है और सातों ज़मीनें और जो कुछ उनमें और उनके दरम्यान है कुर्सी के मुक़ाबले में ऐसे हैं जैसे किसी लम्बे-चौड़े बहुत चटियल मैदान में एक छल्ला पड़ा हो। इब्ने जरीर में हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) से मरवी है कि अगर मैं इसकी तफ़्सीर तुम्हारे सामने बयान करूँ तो उसे न मानोगे और न मानना झूठा जानना है और रिवायत में है कि किसी शख़्स ने इस आयत का मतलब पूछा तो उस पर आपने फ़रमाया था कि मैं कैसे बावर कर लूँ कि जो मैं तुझे बतलाऊँगा तू उसका इंकार न करेगा। और रिवायत में मरवी है कि हर ज़मीन में मिस्ल हज़रत इब्राहीम (अलै.) के और उस ज़मीन की मख़्लूक़ के है और इब्ने मुसन्ना वाली इस रिवायत में आया है हर आसमान में मिस्ल इब्राहीम (अलै.) के है। बैहक़ी की किताबुल अस्मा

वस्सिफ़ात में हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) का क़ौल है कि सातों ज़मीनों में से हर एक में नबी है, मिस्ल तुम्हारे नबी के और आदम हैं मिस्ल आदम (अ़लै.) के और नूह हैं मिस्ल नूह के और इब्राहीम हैं मिस्ल इब्राहीम (अ़लै.) के और ईसा हैं मिस्ल ईसा (अ़लै.) के। फिर इमाम बैहक़ी ने एक और रिवायत भी इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) की वारिद की है और फ़रमाया है इसकी सनद सहीह है लेकिन ये बिल्कुल शाज़ है। अबू ज़ुहा जो इसके एक रावी हैं, मेरे इल्म में तो उनकी मुताबिअ़त कोई नहीं करता, वल्लाहु आलम!

एक मुरसल और बहुत ही मुन्कर रिवायत इब्ने अबी दुनिया (रह.) लाये हैं जिसमें मरवी है कि हुज़ूर (ﷺ) एक मर्तबा सहाबा (रज़ि.) के मज्मअ़े में तशरीफ़ लाये देखा कि सब किसी ग़ौर व फ़िक्र में चुपचाप हैं, पूछा क्या बात है? जवाब मिला, अल्लाह के बारे में सोच रहे हैं। फ़रमाया, ठीक है मख़्लूक़ात पर नज़रें दौड़ाओ लेकिन कहीं अल्लाह की बाबत ग़ौर व ख़ोज़ में न पड़ जाना। सुनो! इस मग़्रिब की तरफ़ एक सफ़ेद ज़मीन है इसकी सफ़ेदी इसका नूर है या फ़रमाया इसका नूर इसकी सफ़ेदी है। सूरज का रास्ता चालीस दिन का है वहाँ अल्लाह की एक मख़्लूक़ है जिसने एक आँख झपकने के बराबर भी कभी उसकी नाफ़रमानी नहीं की। सहाबा (रज़ि.) ने कहा, फिर शैतान उनसे कहाँ है? फ़रमाया, 'उन्हें ये भी नहीं मालूम कि शैतान पैदा भी किया गया है या नहीं? पूछा, क्या वो भी इंसान हैं? फ़रमाया, उन्हें हज़रत आदम (अ़लै.) की पैदाइश का भी इल्म नहीं।' (ये रिवायत बातिल है जिस तरह कि हाफ़िज़ इब्ने कसीर रह. ने फ़रमाया कि ये रिवायत मुन्कर है)

अल्हम्दुलिल्लाह सूरह तलाक़ की तफ़्सीर भी पूरी हुई।

***

FLOW CHART
तरतीबी नक्श-ए-रब्त

MACRO-STRUCTURE
नज़्मे-जली

सूरह तहरीम - 66

आयात : 12, मदनी, पैराग्राफ : 4

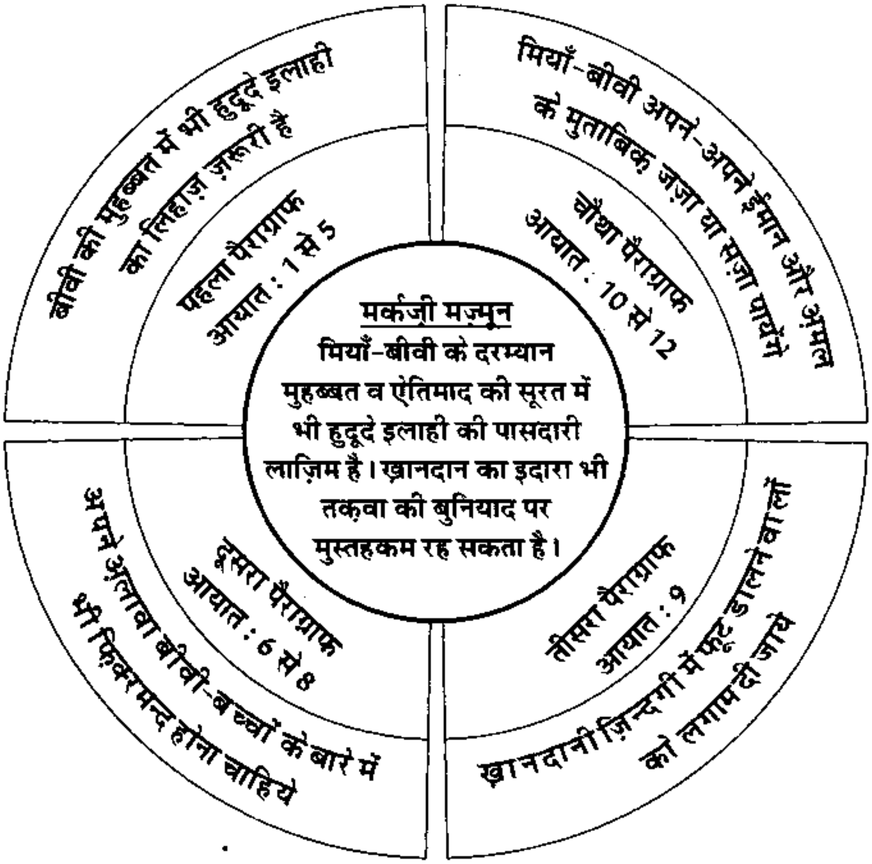

ज़मान-ए-नुज़ूल

सूरह तहरीम 8 या 9 हिजरी में नाज़िल हुई। हज़रत मारिया किब्तिया 7 हिजरी में हरमे नबवी में दाख़िल हुई और हज़रत सफ़िय्या से निकाह भी 7 हिजरी (फ़तहे ख़ैबर) के बाद में हुआ। आयत 9 में मुनाफ़िक़ीन से जिहाद का हुक्म है, जो 9 हिजरी में दिया गया। यही हुक्म सूरह तौबा आयत 73 में भी मौजूद है।

तफ़्सीर सूरह तहरीम

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

तर्जुमा : ''शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है।''

***

يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ لِمَ تُحَرِّمُ مَآ اَحَلَّ اللّٰهُ لَكَ ۚ تَبْتَغِيْ مَرْضَاتَ اَزْوَاجِكَ ۗ وَاللّٰهُ
غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ① قَدْ فَرَضَ اللّٰهُ لَكُمْ تَحِلَّةَ اَيْمَانِكُمْ ۚ وَاللّٰهُ مَوْلٰىكُمْ ۚ وَهُوَ الْعَلِيْمُ
الْحَكِيْمُ ② وَاِذْ اَسَرَّ النَّبِيُّ اِلٰى بَعْضِ اَزْوَاجِهٖ حَدِيْثًا ۚ فَلَمَّا نَبَّاَتْ بِهٖ وَاَظْهَرَهُ
اللّٰهُ عَلَيْهِ عَرَّفَ بَعْضَهٗ وَاَعْرَضَ عَنْۢ بَعْضٍ ۚ فَلَمَّا نَبَّاَهَا بِهٖ قَالَتْ مَنْ اَنْۢبَاَكَ
هٰذَا ۗ قَالَ نَبَّاَنِيَ الْعَلِيْمُ الْخَبِيْرُ ③ اِنْ تَتُوْبَآ اِلَى اللّٰهِ فَقَدْ صَغَتْ قُلُوْبُكُمَا ۚ
وَاِنْ تَظٰهَرَا عَلَيْهِ فَاِنَّ اللّٰهَ هُوَ مَوْلٰىهُ وَجِبْرِيْلُ وَصَالِحُ الْمُؤْمِنِيْنَ ۚ وَالْمَلٰٓئِكَةُ
بَعْدَ ذٰلِكَ ظَهِيْرٌ ④ عَسٰى رَبُّهٗٓ اِنْ طَلَّقَكُنَّ اَنْ يُّبْدِلَهٗٓ اَزْوَاجًا خَيْرًا مِّنْكُنَّ
مُسْلِمٰتٍ مُّؤْمِنٰتٍ قٰنِتٰتٍ تٰٓئِبٰتٍ عٰبِدٰتٍ سٰٓئِحٰتٍ ثَيِّبٰتٍ وَّاَبْكَارًا ⑤

तर्जुमा : ''ऐ नबी ! जिस चीज़ को अल्लाह तआला ने तेरे लिये हलाल कर दिया है उसे तू क्यों

हराम करता है, क्या तू अपनी बीवियों की रज़ामन्दी हासिल करना चाहता है, अल्लाह तआला बख़्शने वाला, रहम करने वाला है। (1) तहक़ीक़ कि अल्लाह तआला ने तुम्हारे लिये क़समों को खोल डालना मुक़र्रर कर दिया है और अल्लाह तुम्हारा कारसाज़ है और वही पूरे इल्म वाला और हिक्मत वाला है। (2) और याद कर जब नबी ने अपनी कुछ औरतों से एक पौशीदा बात कही, पस जब उसने उस बात की ख़बर कर दी और अल्लाह ने अपने नबी को उस पर आगाह कर दिया तो नबी ने थोड़ी सी बात तो जता दी और थोड़ी सी टाल गये, जब नबी ने अपनी उस बीवी को ये बात जताई तो वो कहने लगी, इसकी ख़बर आपको किसने दी। कहा, सब जानने वाले पूरी ख़बर रखने वाले अल्लाह ने मुझे ये बतला दिया। (3) ऐ नबी की दोनों बीवियों! अगर तुम अल्लाह के सामने तौबा कर लो तो बहुत बेहतर है यक़ीनन तुम्हारे दिल कज हो गये हैं और अगर तुम नबी के ख़िलाफ़ एक-दूसरे की मदद करोगी पस यक़ीनन उसका कारसाज़ अल्लाह है और जिब्राईल हैं और नेक ईमानदार और उनके अलावा फ़रिश्ते भी मदद करने वाले हैं। (4) अगर पैग़म्बर तुम्हें तलाक़ दे दें तो बहुत जल्द उन्हें उनका रब तुम्हारे बदले तुमसे बेहतर बीवियाँ इनायत फ़रमायेगा जो इस्लाम वालियाँ, ईमान वालियाँ, फ़रमांबरदारी करने वालियाँ, तौबा करने वालियाँ, इबादत बजा लाने वालियाँ, रोज़े रखने वालियाँ होंगी, बेवह और कुंवारियाँ।" (5)

शाने नुज़ूल के बारे में मुफ़स्सिरीन (रह.) के अक़्वाल (आयत : 1-5) : इस सूरत की शुरूआती आयतों के शाने नुज़ूल में मुफ़स्सिरीन के अक़्वाल ये हैं – कुछ तो कहते हैं ये हज़रत मारिया (रज़ि.) के बारे में नाज़िल हुई है। उन्हें हुज़ूर (ﷺ) ने अपने ऊपर हराम कर लिया था जिस पर ये आयतें नाज़िल हुईं। नसाई में ये रिवायत मौजूद है कि हज़रत आइशा और हज़रत हफ़्सा (रज़ि.) के कहने-सुनने से ऐसा हुआ था कि एक लौण्डी की निस्बत आप (ﷺ) ने ये फ़रमाया था इस पर ये आयत नाज़िल हुईं। (सहीह : नसाई, किताबु अशरतिन्निसा, बाब अल्ग़ैरह : 3411, हाकिम : 2/493)

इब्ने जरीर में है कि उम्मे इब्राहीम के साथ आप (ﷺ) ने उसे अपने ऊपर हराम कर लिया तो उन्होंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल! हलाल आप पर हराम कैसे हो जायेगा? तो आप (ﷺ) ने क़सम खाई कि अब उनसे इस क़िस्म की बातचीत न करूँगा। इस पर ये आयत उतरी। हज़रत ज़ैद फ़रमाते हैं, इससे मालूम हुआ कि किसी का ये कह देना कि तू मुझ पर हराम है लग़्व और फ़िज़ूल है। (अत्तबरी : 23/475, ये रिवायत मुरसल यानी ज़ईफ़ है।)

हज़रत ज़ैद बिन अस्लम फ़रमाते हैं आप (ﷺ) ने ये फ़रमाया था कि तू मुझ पर हराम है अल्लाह की क़सम! मैं तुझसे सोहबतदारी न करूँगा। (अत्तबरी : 23/475, ये रिवायत भी मुरसल यानी ज़ईफ़ है।)

हज़रत मसरूक़ (रह.) फ़रमाते हैं पस हराम करने के बाब में तो आप (ﷺ) पर एताब किया गया और क़सम के कफ़्फ़ारे का हुक्म हुआ।

इब्ने जरीर में है कि हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने हज़रत उमर (रज़ि.) से पूछा कि ये दोनों औरतें कौन थीं? फ़रमाया, आइशा (रज़ि.) और हज़रत हफ़्सा (रज़ि.) और इब्तिदाए क़िस्सा उम्मे इब्राहीम क़िब्तिया के बारे में हुई। हज़रत हफ़्सा (रज़ि.) के घर में उनकी बारी वाले दिन हुज़ूर (ﷺ) उनसे मिल लिये थे जिस पर हज़रत हफ़्सा (रज़ि.) को रंज हुआ कि मेरी बारी के दिन मेरे घर और मेरे बिस्तर पर! हुज़ूर (ﷺ) ने उन्हें रज़ामन्द करने-मनाने के लिये कह दिया कि मैं उसे अपने ऊपर हराम करता हूँ, अब तुम इस वाक़िये का ज़िक्र किसी से न करना। लेकिन हफ़्सा (रज़ि.) ने हज़रत आइशा (रज़ि.) से वाक़िया कह दिया। अल्लाह ने इसकी इत्तिलाअ़ अपने नबी को दी और ये कुल आयतें नाज़िल फ़रमाईं। आप ने कफ़्फ़ारा देकर अपनी क़सम तोड़ दी और उस लौण्डी से मिले-जुले। इसी वाक़िये को दलील बनाकर हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) का फ़तवा है कि जो कहे, फ़लाँ चीज़ मुझ पर हराम है, उसे क़सम का कफ़्फ़ारा देना चाहिये। (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरह तहरीम, बाब याअय्युहन्नबिय्यु लि-म तुहर्रिमु मा अहल्लल्लाहु लक : 4911, सहीह मुस्लिम : 1473)

एक शख़्स ने आप (ﷺ) से यही मसला पूछा कि मैं अपनी औरत को अपने ऊपर हराम कर चुका हूँ तो आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'वो तुझ पर हराम नहीं। कफ़्फ़ारा सबसे ज़्यादा सख़्त तो राहे लिल्लाह गुलाम आज़ाद करना है।' (हसन : नसाई, किताबुत्तलाक़, बाब तअ्वीलु क़ौलिही अज़्ज़ व जल्ल या अय्युहन्नबिय्यु लि-म तुहर्रिमु मा अहल्लल्लाहु लक : 3449)

इमाम अहमद (रह.) और बहुत से फ़ुक़हा का फ़तवा है कि जो शख़्स अपनी बीवी या लौण्डी या किसी खाने-पीने, पहनने-ओढ़ने की चीज़ को अपने ऊपर हराम करे तो उस पर कफ़्फ़ारा वाजिब हो जाता है। इमाम शाफ़ई (रह.) वग़ैरह फ़रमाते हैं, सिर्फ़ बीवी और लौण्डी के हराम करने पर तो कफ़्फ़ारा है किसी और पर नहीं और अगर हराम कहने से निय्यत तलाक़ की रखी है तो बेशक तलाक़ हो जायेगी। इसी तरह लौण्डी के बारे में अगर आज़ादगी की निय्यत हराम का लफ़्ज़ कहने से रखी है तो वो आज़ाद हो जायेगी।

इब्ने अब्बास (रज़ि.) से मरवी है कि ये आयत उस औरत के बारे में नाज़िल हुई है जिसने अपना नफ़्स आँहज़रत (ﷺ) को हिबा किया था लेकिन ये ग़रीब है। बिल्कुल सहीह बात ये है कि इन आयतों का उतरना आप (ﷺ) के शहद हराम कर लेने पर था। सहीह बुख़ारी में इस आयत के मौक़े पर है कि हज़रत ज़ैनब बिन्ते जहश (रज़ि.) के घर रसूलुल्लाह (ﷺ) शहद पीते थे और उसकी ख़ातिर ज़रा सी देर वहाँ ठहरते भी थे। इस पर हज़रत आइशा और हज़रत हफ़्सा (रज़ि.) ने आपस में मशवरा किया कि हममें से जिस के यहाँ हुज़ूर आयें वो कहे कि ऐ अल्लाह के रसूल! आज तो आपके मुँह से गूंद की सी बू आती है। शायद आपने मग़ाफ़ीर खाया होगा। चुनाँचे हमने यही किया। आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'नहीं! मैंने तो ज़ैनब के घर शहद पिया है। अब क़सम खाता हूँ कि न पियूँगा ये किसी से कहना मत।' (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरतुत्तहरीम, बाब या अय्युहन्नबिय्यु लि-म तुहर्रिमु मा अहल्लल्लाहु लक : 4912)

इमाम बुख़ारी (रह.) इस हदीस को किताबुल ईमान वन्नुज़ूर में भी कुछ ज़्यादती के साथ लाये हैं

जिसमें है कि दोनों औरतों से यहाँ मुराद आइशा और हफ़्सा (रज़ि.) हैं और चुपके से बात कहना यही था कि मैंने शहद पिया है। (सहीह बुख़ारी, किताबुल ईमान वन्नुज़ूर, बाब इज़ा हर्रम तआमन : 6691, सहीह मुस्लिम : 1474)

किताबुत्तलाक़ में इमाम साहब (रह.) इस हदीस़ को लाये हैं। (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तलाक़, बाब लि-म तुहर्रिमु मा अहल्लल्लाहु लक : 5267)

फिर फ़रमाया है मग़ाफ़ीर गूंद के मुशाबेह एक चीज़ है जो शोर घास में पैदा होती है। इसमें क़द्रे मिठास होती है। सहीह बुख़ारी की किताबुत्तलाक़ में ये हदीस़ हज़रत आइशा (रज़ि.) से इन अल्फ़ाज़ में मरवी है कि हुज़ूर (ﷺ) को मिठास और शहद बहुत पसंद था। अ़स्र की नमाज़ के बाद अपनी बीवियों के घर आते और किसी से नज़दीकी करते। एक मर्तबा आप (ﷺ) हज़रत हफ़्सा (रज़ि.) के पास गये और जितना वहाँ रुकते थे उससे ज़्यादा रुके। मुझे ग़ैरत सवार हुई तहक़ीक़ की तो मालूम हुआ कि उनकी क़ौम की एक औरत ने एक कपी शहद की उन्हें बतौरे हदिये के भेजी है। उन्होंने हुज़ूर (ﷺ) को शहद का शरबत पिलाया और इतनी देर रोके रखा। मैंने कहा, ख़ैर उसे किसी हीले से टाल दूँगी। चुनाँचे मैंने हज़रत सौदा बिन्ते ज़म्आ (रज़ि.) से कहा कि तुम्हारे पास जब हुज़ूर (ﷺ) आयें और क़रीब हों तो तुम कहना कि आज क्या आप (ﷺ) ने मग़ाफ़ीर खाया है? आप (ﷺ) फ़रमायेंगे, नहीं। तुम कहना फिर ये बदबू कैसी आती है? आप (ﷺ) फ़रमायेंगे मुझे हफ़्सा (रज़ि.) ने शहद पिलाया था। तो तुम कहना कि शायद शहद की मक्खी ने अ़रफ़त नामी ख़ारदार दरख़्त चूसा होगा। मेरे पास आयेंगे मैं भी यही कहूँगी, फिर ऐ सफ़िय्या! जब तुम्हारे पास आयें तो तुम भी यही कहना। हज़रत सौदा (रज़ि.) फ़रमाती हैं, जब हुज़ूर (ﷺ) मेरे घर आये अभी तो दरवाज़े पर ही थे जो मैंने इरादा किया तुम ने जो मुझसे कहा है मैं आप (ﷺ) से कह दूँ क्योंकि मैं तुमसे बहुत डरती थी लेकिन ख़ैर उस वक़्त तो ख़ामोश रही। जब आप (ﷺ) मेरे पास आये मैंने तुम्हारा तमाम कहना पूरा कर दिया। फिर हज़रत मेरे पास आये मैंने भी यही कहा, फिर सफ़िय्या (रज़ि.) के पास गये तो उन्होंने भी यही कहा। फिर हज़रत हफ़्सा (रज़ि.) के पास गये तो हज़रत हफ़्सा (रज़ि.) ने शहद का शरबत पिलाना चाहा, आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'मुझे इसकी हाजत नहीं।' हज़रत सौदा (रज़ि.) फ़रमाने लगीं, अफ़सोस! हमने इसे हराम कर दिया। मैंने कहा, ख़ामोश रहो।' (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तलाक़, बाब लि-म तुहर्रिमु मा अहल्लल्लाहु लक : 5268)

सहीह मुस्लिम की इस हदीस़ में इतनी ज़्यादती और है कि नबी (ﷺ) को बदबू से सख़्त नफ़रत थी। (सहीह मुस्लिम, किताबुत्तलाक़, बाब वुजूबुल कफ़्फ़ारति अ़ला मन हर्रम इम्रअतहू : 1474)

इसीलिये उन बीवियों ने कहा था आप (ﷺ) ने मग़ाफ़ीर खाया है। उसमें भी क़द्रे बदबू होती है। जब आप (ﷺ) ने जवाब दिया कि नहीं मैंने शहद पिया है तो उन्होंने कह दिया कि फिर इस शहद की मक्खी ने अ़रफ़त दरख़्त को चूसा होगा जिसके गूंद का नाम मग़ाफ़ीर है और इसके अस़र से शहद में इसकी बू रह गई होगी। इस रिवायत में लफ़्ज़े जरसत है जिसके मआना जोहरी ने किये है, खाया और शहद की मक्खियों को भी जवारिस कहते हैं और जरस मध्यम हल्की आवाज़ को कहते हैं। अ़रब कहते हैं, समिअ़तु जरसत्तैरि जबकि

परिन्दा दाना चुग रहा हो और उसकी चोंच की आवाज़ सुनाई देती हो। एक हदीस में है, फिर वो जन्नती परिन्दों की हल्की और मीठी सुहानी आवाज़ें सुनेंगे यहाँ भी अरबी में लफ़्ज़ जरस है।

अस्मई कहते हैं, मैं हज़रत शोबा (रह.) की मज्लिस में था, वहाँ उन्होंने इस लफ़्ज़ जरस को जरश बड़ी शीन के साथ पढ़ा, मैंने कहा, छोटा सीन से है। हज़रत शौबा ने मेरी तरफ़ देखा और फ़रमाया, ये हमसे ज़्यादा इसे जानते हैं यही ठीक है तुम इस्लाह कर लो। अल्ग़र्ज़ शहद नौशी के वाक़िये में शहद पिलाने वालियों में दो नाम मरवी हैं एक हज़रत हफ़्सा (रज़ि.) का दूसरा हज़रत ज़ैनब (रज़ि.) का। बल्कि इस बात पर इत्तिफ़ाक़ करने वालियों में हज़रत आइशा (रज़ि.) के साथ हज़रत हफ़्सा (रज़ि.) का नाम है। पस मुम्किन है ये दो वाक़िये हों यहाँ तक तो ठीक है। लेकिन इन दोनों के बारे में इस आयत का नाज़िल होना ज़रा ग़ौर तलब है, वल्लाहु आलम! आपस में इस क़िस्म का मशवरा करने वाली हज़रत आइशा (रज़ि.) और हज़रत हफ़्सा (रज़ि.) थीं और उस हदीस से भी मालूम होता है कि जो मुस्नद इमाम अहमद में हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) से मरवी है फ़रमाते हैं, मुझे मुद्दतों से आरज़ू थी कि हज़रत उमर (रज़ि.) से हुज़ूर की उन दोनों बीवी साहिबान का नाम मालूम करूँगा जिनका ज़िक्र आयत (इन ततूबा) में है। पस हज के सफ़र में जब ख़लीफ़तुर्रसूल चले तो मैं भी हमरिकाब हो गया। एक रास्ते में हज़रत उमर (रज़ि.) रास्ता छोड़कर जंगल की तरफ़ चले मैं डोलची लिये हुए पीछे-पीछे गया। आप (रज़ि.) हाजते ज़रूरी से फ़ारिग़ होकर आये। मैंने पानी डलवाया और वुज़ू कराया। अब मौक़ा पाकर सवाल किया कि ऐ अमीरुल मोमिनीन! जिनके बारे में ये आयत है वो दोनों कौन हैं? आपने फ़रमाया, इब्ने अब्बास! अफ़सोस। हज़रत ज़ुहरी (रह.) फ़रमाते हैं, हज़रत उमर (रज़ि.) को उनका ये पूछना बुरा मालूम हुआ लेकिन छिपाना जाइज़ न था। इसलिये जवाब दिया कि इससे मुराद हज़रत आइशा और हज़रत हफ़्सा (रज़ि.) हैं। फिर हज़रत उमर (रज़ि.) ने वाक़िया बयान करना शुरू किया कि हम क़ुरैश तो अपनी औरतों को अपने ज़ेरे फ़रमान रखते थे लेकिन मदीना वालों पर उमूमन उनकी औरतें हावी थीं। जब हम हिज्रत करके मदीना आये तो हमारी औरतों ने भी उनकी देखा-देखी हम पर ग़ल्बा हासिल करना चाहा। मैं मदीना के बालाई हिस्से में हज़रत उमय्या बिन ज़ैद (रज़ि.) के घर में ठहरा हुआ था एक मर्तबा अपनी बीवी पर कुछ नाराज़ हुआ और कुछ कहने-सुनने लगा तो पलटकर उसने मुझे जवाब देने शुरू किये। मुझे निहायत बुरा मालूम हुआ कि ये क्या हरकत है? ये नई बात कैसी? उसने मेरा तअज्जुब देखकर कहा कि आप किस ख़्याल में हैं? अल्लाह की क़सम! आँहज़रत की बीवियाँ भी आप (ﷺ) को जवाब देती हैं और कई बार तो दिन भर बोलचाल छोड़ देती हैं। अब मैं तो एक दूसरी उल्झन में पड़ गया। सीधा अपनी बेटी हफ़्सा (रज़ि.) के घर गया और पूछा कि क्या ये सच है कि तुम हुज़ूर (ﷺ) को जवाब देती हो? और कभी-कभार सारा दिन रूठती हो? जवाब मिला कि सच है। मैंने कहा, बर्बाद हुई और नुक़सान में पड़ी जिसने ऐसा किया। क्या तुम इससे ग़ाफ़िल हो गईं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) के गुस्से की वजह से ऐसी औरत पर अल्लाह नाराज़ हो जाये और वो कहीं की न रहे? ख़बरदार! आइन्दा से हुज़ूर (ﷺ) को कोई जवाब न देना न आप से कुछ तलब करना जो माँगना हो मुझसे माँग लिया करो। हज़रत आइशा (रज़ि.) को देखकर तुम उनकी हिर्स न करना वो तुम से अच्छी और तुमसे

ज़्यादा रसूलुल्लाह (ﷺ) की मन्ज़ूरे नज़र हैं। अब और सुनो! मेरा पड़ौसी एक अन्सारी था उसने और मैंने बारियाँ मुक़र्रर कर ली थीं, एक दिन मैं हुज़ूर (ﷺ) की ख़िदमत में गुज़ारता और एक दिन वो। मैं अपनी बारी वाले दिन की तमाम हदीसें आयतें वग़ैरह उन्हें आकर सुना देता और वो मुझे। ये बात हम में उस वक़्त मशहूर हो रही थी कि ग़स्सानी बादशाह अपने फ़ौजी घोड़ों के नअल लगवा रहा है और उसका इरादा हम पर चढ़ाई करने का है। एक मर्तबा मेरे साथी अपनी बारी वाले दिन गये हुए थे। इशा के वक़्त आ गये और मेरा दरवाज़ा खड़खड़ाकर मुझे आवाज़ें देने लगे। घबराकर बाहर निकला की ख़ैरियत तो है? उसने कहा, आज तो बड़ा भारी काम हो गया। मैंने कहा, क्या ग़सानी बादशाह आ पहुँचा? उसने कहा, इससे भी बढ़कर। मैंने पूछा, वो क्या? कहा, रसूलुल्लाह (ﷺ) ने अपनी बीवियों को तलाक़ दे दी। मैंने कहा, अफ़सोस! हफ़्सा बर्बाद हो गई और उसने तो नुक़सान उठाया। मुझे पहले ही से इस बात का खटका था। सुबह की नमाज़ पढ़ते ही कपड़े पहनकर मैं चला। सीधा हफ़्सा (रज़ि.) के पास गया। देखा कि वो रो रही हैं। मैंने कहा, क्या रसूलुल्लाह (ﷺ) ने तुम्हें तलाक़ दे दी? जवाब दिया ये तो कुछ मालूम नहीं। आप (ﷺ) हमसे अलग होकर अपने बालाख़ाने में तशरीफ़ फ़रमा हैं। मैं वहाँ गया देखा कि एक हब्शी ग़ुलाम पहरे पर है। मैंने कहा, जाओ! मेरे लिये इजाज़त तलब करो। वो गया फिर आकर कहा कि हुज़ूर (ﷺ) ने कुछ जवाब नहीं दिया। मैं वहाँ से वापस चला आया। मस्जिद में गया देखा कि मिम्बर के पास एक गिरोह सहाबा का बैठा हुआ है और कुछ-कुछ के तो आँसू निकल रहे हैं। मैं थोड़ी सी देर बैठा लेकिन चैन कहाँ? फिर उठ खड़ा हुआ और वहाँ जाकर ग़ुलाम से कहा कि मेरे लिये इजाज़त तलब करो। उसने फिर आकर यही कहा कि कुछ जवाब नहीं मिला। मैं दोबारा मस्जिद चला गया। फिर वहाँ से घबराकर निकला। यहाँ आया फिर ग़ुलाम से कहा, ग़ुलाम गया और वही जवाब दिया। मैं वापस मुड़ा ही था कि ग़ुलाम ने मुझे आवाज़ दी कि आइये आपको इजाज़त मिल गई। मैं गया, देखा कि हुज़ूर (ﷺ) एक बोरिया पर टेक लगाये बैठे हुए हैं जिसके निशान आप (ﷺ) के जिस्म मुबारक पर ज़ाहिर हैं। मैंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल! क्या आपने अपनी बीवियों को तलाक़ दे दी है? आप (ﷺ) ने सर उठाकर मेरी तरफ़ देखा और फ़रमाया, नहीं। मैंने कहा, अल्लाहु अकबर! ऐ अल्लाह के रसूल! बात ये है कि हम क़ौमे क़ुरैश तो अपनी बीवियों को दबाव में रखा करते थे लेकिन मदीने वालों पर उनकी बीवियाँ ग़ालिब हैं, यहाँ आकर हमारी औरतों ने भी उनकी देखा-देखी यही हरकत शुरू कर दी। फिर मैंने अपनी बीवी का वाक़िया बयान किया और अपना, ये ख़बर पाकर कि हुज़ूर (ﷺ) की बीवियाँ भी ऐसा करती हैं, ये कहना भी बयान किया कि उन्हें डर नहीं कि अल्लाह के रसूल (ﷺ) के ग़ुस्से की वजह से अल्लाह भी नाराज़ हो जाये और वो हलाक हो जायें। इस पर हुज़ूर (ﷺ) मुस्कुराये। मैंने फिर अपना हफ़्सा (रज़ि.) के पास जाना और उन्हें हज़रत आइशा (रज़ि.) की रेस करने से रोकना बयान किया। इस पर दोबारा मुस्कुराये, मैंने कहा, अगर इजाज़त हो तो ज़रा सी देर रुक जाऊँ? आप (ﷺ) ने इजाज़त दी मैं बैठ गया। अब जो सर उठाकर चारों तरफ़ नज़र दौड़ाई तो आप (ﷺ) की बैठक (दरबारे ख़ास) में सिवाय तीन ख़ुश्क खालों के और कोई चीज़ न देखी। आज़ुरदा दिल होकर अर्ज़ किया कि ऐ अल्लाह के रसूल! दुआ कीजिये कि अल्लाह तआला आप (ﷺ) की उम्मत पर कुशादगी करे, देखिये

तो फ़ारसी और रोमी जो अल्लाह की इबादत ही नहीं करते उन्हें किस क़द्र दुनिया की नेमतों में वुस्अत दी गई है? ये सुनते ही आप (ﷺ) सम्भल बैठे और फ़रमाने लगे, ऐ इब्ने ख़त्ताब! क्या तू शक में है? उस क़ौम की अच्छाइयाँ उन्हें बउज्लत दुनिया में ही दे दी गईं। मैंने कहा, हुज़ूर (ﷺ) मेरे लिये अल्लाह से तलबे बख़्शिश कीजिये। बात ये थी कि आप (ﷺ) ने बवजहे सख़्त नाराज़ी क़सम खा ली थी कि महीने भर तक अपनी बीवियों के पास न जाऊँगा, यहाँ तक कि अल्लाह तआला ने आप (ﷺ) को तम्बीह की। ये हदीस़ बुख़ारी, मुस्लिम, तिर्मिज़ी और नसाई में भी है। (अहमद : 1/33-34, सहीह बुख़ारी, किताबुन्निकाह, बाब मौइज़तुर्रजुलि इब्नतहू लिहाले ज़ौजिहा : 5191, सहीह मुस्लिम : 1479, तिर्मिज़ी : 3318)

बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस़ में है इब्ने अब्बास (रज़ि.) फ़रमाते हैं, साल भर इसी उम्मीद में गुज़र गया कि मौक़ा मिले तो हज़रत उमर (रज़ि.) से उन दोनों के नाम पूछ लूँ लेकिन हैबते फ़ारूक़ी से हिम्मत नहीं पड़ती थी यहाँ तक कि हज की वापसी में पूछा, फिर पूरी हदीस़ बयान की जो ऊपर गुज़र चुकी। (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरतुत्तहरीम, बाब तब्तग़ी मरज़ात अज़्वाजिक : 4913, सहीह मुस्लिम : 1479)

सहीह मुस्लिम में है कि तलाक़ की शोहरत का वाक़िया पर्दे की आयतों के नाज़िल होने से पहले का है। उसमें ये भी है कि हज़रत उमर (रज़ि.) जिस तरह हफ़्सा (रज़ि.) के पास जाकर उन्हें समझा आये थे उसी तरह हज़रत आइशा (रज़ि.) के पास भी हो आये थे और ये भी है कि वो गुलाम जो ड्यूटी पर पहरा दे रहे थे हज़रत रिबाह (रज़ि.) थे। ये भी है कि हज़रत उमर (रज़ि.) ने हुज़ूर (ﷺ) से कहा, आप औरतों के बारे में इस मशक़्क़त में क्यों पड़ते हैं? अगर आप उन्हें तलाक़ भी दे दें तो आप (ﷺ) के साथ अल्लाह तआला है और उसके फ़रिश्ते हैं और जिब्राईल और मीकाईल और मैं और अबू बकर और तमाम मोमिनीन। हज़रत उमर (रज़ि.) फ़रमाते हैं, अल्हम्दुलिल्लाह मैं इस क़िस्म की जो बात कहता मुझे उम्मीद लगी रहती कि अल्लाह तआला मेरी बात की तस्दीक़ नाज़िल फ़रमायेगा। पस इस मौक़े पर भी आयते तख़यीर यानी असा रब्बुहू और वइन तज़ाहर अलैहि आप (ﷺ) पर नाज़िल हुईं। मुझे जब आप (ﷺ) से मालूम हुआ कि आप (ﷺ) ने अपनी अज़्वाजे मुतह्हरात को तलाक़ नहीं दी तो मैंने मस्जिद आकर दरवाज़े पर खड़े होकर ऊँची आवाज़ से सबको इत्तिलाअ दे दी कि हुज़ूर (ﷺ) ने अज़्वाजे मुतह्हरात को तलाक़ नहीं दी। इसी के बारे में आयत (وَإِذَا جَآءَهُمْ أَمْرٌ مِّنَ الْأَمْنِ أَوِ الْخَوْفِ) (सूरह निसा 4 : 83) 'जहाँ उन्हें कोई अमन की या ख़ौफ़ की ख़बर पहुँची कि ये उसे शोहरत देने लगते हैं, अगर ये उस ख़बर को रसूल या ज़ीअक़्ल व इल्म मुसलमानों तक पहुँचा देते तो बेशक उनमें से जो लोग मुहक़्क़िक़ हैं वो उसे समझ लेते। उतरी। हज़रत उमर (रज़ि.) यहाँ तक इस आयत को पढ़कर फ़रमाते हैं, पस इस बात का इस्तिम्बात करने वालों में मैं ही हूँ। (सहीह मुस्लिम, किताबुत्तलाक़, बाब फ़िल्ईलाइ व इअतिज़ालुन्निसा : 1479)

और भी बहुत से बुज़ुर्ग मुफ़स्सिरीन से मरवी है कि सालिहुल मुअ्मिनीन से मुराद हज़रत अबू बकर और हज़रत उमर (रज़ि.) हैं। (अत्तबरी : 23/486)

कुछ ने हज़रत उ़समान (रज़ि.) का नाम भी लिया है कुछ ने हज़रत अ़ली (रज़ि.) का। एक ज़ईफ़ हदीस़ में मरफ़ूअ़न सिर्फ़ हज़रत अ़ली (रज़ि.) का नाम है लेकिन सनद ज़ईफ़ है और बिल्कुल मुन्कर है। सहीह बुख़ारी में है कि आप (ﷺ) की बीवियाँ ग़ैरत में आ गईं जिस पर मैंने उनसे कहा कि अगर हुज़ूर (ﷺ) तुम्हें तलाक़ दे देंगे तो अल्लाह तआ़ला तुमसे बेहतर बीवियाँ आप (ﷺ) को देगा। पस मेरे लफ़्ज़ों ही में क़ुरआन की ये आयत उतरी। (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरतुत्तहरीम, बाब अ़सा रब्बुहू इन तल्लक़कुन्न अंय्युबदिलहू : 4916)

पहले ये बयान हो चुका है कि हज़रत उ़मर (रज़ि.) ने बहुत सी बातों में क़ुरआन की मुवाफ़िक़त की जैसे पर्दे के बारे में, बद्री क़ैदियों के बारे में, मक़ामे इब्राहीम को क़िब्ला ठहराने के बारे में। इब्ने अबी हातिम की रिवायत में है कि मुझे उम्महातुल मोमिनीन की इस रंजिश की ख़बर पहुँची तो उनकी ख़िदमत में गया और उन्हें यही कहना शुरू किया यहाँ तक कि आख़िरी उम्मुल मोमिनीन के पास पहुँचा तो मुझे जवाब मिला कि क्या हमें रसूलुल्लाह (ﷺ) ख़ुद नसीहत करने के लिये कम हैं जो तुम आ गये? इस पर मैं तो ख़ामोश हो गया लेकिन क़ुरआन में अ़सा रब्बुहू आयत नाज़िल हुई। (अत्तबरी : 23/488)

सहीह बुख़ारी में है कि जवाब देने वाली उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा (रज़ि.) थीं। (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरह बक़रह, बाब वत्तख़ज़ू मिम्मक़ामि इब्राहीम मुसल्ला : 4483)

हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) फ़रमाते हैं, जो बात हुज़ूर (ﷺ) ने चुपके से अपनी बीवी साहिबा से कही थी कि इस का वाक़िया ये है कि हज़रत हफ़्सा (रज़ि.) के घर में आप (ﷺ) थे वो जब तशरीफ़ लाईं और हज़रत मारिया (रज़ि.) से आप (ﷺ) को मशग़ूल पाया तो आप (ﷺ) ने उन्हें फ़रमाया, 'तुम हज़रत आ़इशा (रज़ि.) को ख़बर न करना मैं तुम्हें एक बशारत सुनाता हूँ। मेरे इन्तिक़ाल के बाद मेरी ख़िलाफ़त पर हज़रत अबू बकर (रज़ि.) के बाद तुम्हारे वालिद आयेंगे। हज़रत हफ़्सा (रज़ि.) ने हज़रत आ़इशा (रज़ि.) को ख़बर कर दी। पस हज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने रसूलुल्लाह से कहा, इसकी ख़बर आप को किसने पहुँचाई? आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'मुझे अ़लीम व ख़बीर अल्लाह ने पहुँचाई।' सिद्दीक़ा (रज़ि.) ने कहा, मैं आप (ﷺ) की तरफ़ न देखूँगी जब तक कि आप (ﷺ) मारिया (रज़ि.) को अपने ऊपर हराम न कर लें। आप (ﷺ) ने कर ली इस पर आयत याअय्युहन्नबिय्यु नाज़िल हुई। (तबरानी) लेकिन इसकी सनद मख़्दूश है। मक़सद ये है कि इन तमाम रिवायात से इन पाक आयतों की तफ़्सीर तो ज़ाहिर ही है। साइहातुन की तफ़्सीर एक तो ये है कि रोज़े रखने वालियाँ। एक मरफ़ूअ़ हदीस़ में भी यही तफ़्सीर इस लफ़्ज़ की आई है जो हदीस़ सूरह बराअत के इस लफ़्ज़ की तफ़्सीर में गुज़र चुकी है कि इस उम्मत की सियाहत रोज़े रखना है। (अत्तबरी : 14/508)

दूसरी तफ़्सीर ये है कि मुराद इससे हिज्रत करने वालियाँ हैं, लेकिन अव्वल क़ौल ही औला (बेहतर) है वल्लाहु आ़लम!

अज़्वाजे मुतह्हरात (रज़ि.) का ज़िक्र : फिर फ़रमाया उनमें से कुछ बेवह होंगी और कुछ कुंवारियाँ इसलिये कि जी ख़ुश रहे क़िस्मों की तब्दीली नफ़्स को भली मालूम होती है। मुअजम तबरानी में इब्ने यज़ीद अपने बाप से

रिवायत करते हैं कि उन्होंने फ़रमाया, अल्लाह तआला ने अपने नबी से इस आयत में जो वादा फ़रमाया है उससे मुराद बेवह तो हज़रत आसिया (रज़ि.) जो फ़िरऔन की बीवी थी और कुंवारी से मुराद हज़रत मरयम (अलै.) हैं जो हज़रत इमरान की बेटी थीं। इब्ने असाकिर में है कि हज़रत जिब्राईल (अलै.) रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास आये उस वक़्त हज़रत ख़दीजा (रज़ि.) आपके पास आईं तो हज़रत जिब्राईल (अलै.) ने फ़रमाया, 'अल्लाह तआला हज़रत ख़दीजा को सलाम कहता है और फ़रमात है कि उन्हें ख़ुशी हो जन्नत के एक चाँदी के घर की जहाँ न गर्मी है, न तकलीफ़ है, न शोर व गुल। जो छिदे हुए मोती का बना हुआ है। जिसके दायें-बायें मरयम बिन्ते इमरान और आसिया बिन्ते मज़ाहिम के मकानात हैं। दूसरी रिवायत में है कि हज़रत ख़दीजा (रज़ि.) के इन्तिक़ाल के वक़्त आँहज़रत (ﷺ) ने फ़रमाया, 'ऐ ख़दीजा! अपनी सौकनों से मेरा सलाम कहना।' हज़रत ख़दीजा (रज़ि.) ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल! क्या मुझसे पहले भी आप (ﷺ) ने किसी से निकाह किया था? आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'नहीं मगर अल्लाह तआला ने मरयम बिन्ते इमरान और आसिया ज़ौजे फ़िरऔन और कुल्सुम बहन मूसा की ये तीनों मेरे निकाह में दे रखी हैं। ये हदीस भी ज़ईफ़ है। हज़रत उमामा से अबू यअला में मरवी है कि हुज़ूर (ﷺ) ने फ़रमाया, 'क्या जानते हो अल्लाह तआला ने जन्नत में मेरा निकाह मरयम बिन्ते इमरान, कुल्सुम मूसा की बहन और आसिया ज़ौजाए फ़िरऔन से कर दिया है।' मैंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल! आपको मुबारकबाद हो। (व सनदुन ज़ईफ़ुन जिद्दा) ये हदीस भी ज़ईफ़ है और साथ ही मुरसल भी है।

***

يَاۤيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قُوْۤا اَنْفُسَكُمْ وَاَهْلِيْكُمْ نَارًا وَّقُوْدُهَا النَّاسُ وَالْحِجَارَةُ عَلَيْهَا
مَلٰٓئِكَةٌ غِلَاظٌ شِدَادٌ لَّا يَعْصُوْنَ اللّٰهَ مَاۤ اَمَرَهُمْ وَيَفْعَلُوْنَ مَا يُؤْمَرُوْنَ ﴿٦﴾ يَاۤيُّهَا
الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَا تَعْتَذِرُوا الْيَوْمَ ۗ اِنَّمَا تُجْزَوْنَ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٧﴾ يَاۤيُّهَا الَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا تُوْبُوْۤا اِلَى اللّٰهِ تَوْبَةً نَّصُوْحًا ۗ عَسٰى رَبُّكُمْ اَنْ يُّكَفِّرَ عَنْكُمْ سَيِّاٰتِكُمْ
وَيُدْخِلَكُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۙ يَوْمَ لَا يُخْزِي اللّٰهُ النَّبِيَّ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا
مَعَهٗ ۚ نُوْرُهُمْ يَسْعٰى بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَبِاَيْمَانِهِمْ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَاۤ اَتْمِمْ لَنَا نُوْرَنَا وَاغْفِرْ
لَنَا ۚ اِنَّكَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٨﴾

तर्जुमा : "ऐ ईमान वालो! तुम अपने आपको और अपने घर वालों को उस आग से बचाओ जिसका ईंधन इंसान हैं और पत्थर जिस पर सख़्त दिल मज़बूत फ़रिश्ते मुक़र्रर हैं जिन्हें जो हुक्म अल्लाह तआला देता है उसकी नाफ़रमानी नहीं करते बल्कि जो हुक्म किया जाये बजा लाते हैं। (6) ऐ काफ़िरो! तुम आज उज़्र-मअ़ज़रत मत करो तुम्हें सिर्फ़ तुम्हारे करतूत का बदला दिया जा रहा है। (7) ऐ ईमान वालो! तुम अल्लाह के सामने सच्ची ख़ालिस तौबा करो, मुम्किन है कि तुम्हारा रब तुम्हारे गुनाह दूर कर दे और तुम्हें ऐसी जन्नतों में पहुँचाये जिनके नीचे नहरें जारी हैं जिस दिन अल्लाह तआला नबी को और ईमानदारों को जो उनके साथ हैं रुस्वा न करेगा, उनका नूर उनके सामने और उनके दायें दौड़ रहा होगा ये दुआ करते होंगे ऐ हमारे रब! हमें ज़िया अता फ़रमा और हमें बख़्श दे यक़ीनन तू हर चीज़ पर क़ादिर है।" (8)

जहन्नम से बचो और घर वालों को बचाओ (आयत : 6-8) : हज़रत अली (रज़ि.) फ़रमाते हैं, इरशादे इलाही है कि अपने घराने के लोगों को इल्म व अदब सिखाओ। (ज़ईफ़ुन जिद्दा: हाकिम: 2/494, अब्दुर्रज़्ज़ाक़ मुदल्लस व अन्अ़न)

हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) फ़रमाते हैं, अल्लाह के फ़रमान बजा लाओ उसकी नाफ़रमानियाँ मत करो अपने घराने के लोगों को ज़िक्रुल्लाह की ताकीद करो ताकि अल्लाह तुम्हें जहन्नम से बचा ले। (अत्तबरी: 23/491)

मुजाहिद (रह.) फ़रमाते हैं, अल्लाह से डरो और अपने घर वालों को भी यही तल्क़ीन करो। (अत्तबरी: 23/492)

क़तादा (रह.) फ़रमाते हैं, अल्लाह की इताअ़त का हुक्म दो और नाफ़रमानियों से रोकते रहो उन पर अल्लाह के हुक्म रखो और उन्हें अहकामे इलाही बजा लाने की ताकीद करते रहो नेक कामों में उनकी मदद करो और बुरे कामों पर उन्हें डांटो-डपटो। (अत्तबरी : 23/492)

ज़ह्हाक व मुक़ातिल (रह.) फ़रमाते हैं, हर मुसलमान पर फ़र्ज़ है कि अपने रिश्ते-कुम्बे के लोगों को और अपने लौण्डी-गुलाम को अल्लाह के फ़रमान बजा लाने की और उसकी नाफ़रमानियों से रोकने की तालीम देता रहे। मुस्नद अहमद में रसूलुल्लाह (ﷺ) का इरशाद है, 'जब बच्चे सात साल के हो जायें उन्हें नमाज़ पढ़ने को कहते-सुनते रहा करो, जब दस साल के हो जायें और नमाज़ में सुस्ती करें तो उन्हें मारकर धमका कर पढ़ाओ।' (हसन : अहमद : 3/404, अबू दाऊद, किताबुस्सलात, बाब मता युअ्मरुल गुलामु बिस्सलात : 494, तिर्मिज़ी : 407)

फ़ुक़हा का फ़रमान है कि इसी तरह रोज़े की भी ताकीद और तम्बीह इस उम्र से शुरू कर देनी चाहिये ताकि बालिग़ होने तक पूरी तरह नमाज़-रोज़े की आदत हो जाये। इताअ़त बजा लाने और मअ़सियत से बचते रहने और बुराई से दूर रहने का सलीक़ा पैदा हो जाये। इन कामों से तुम और वो जहन्नम की आग से बच

जाओगे जिसका ईंधन इंसानों के जिस्म और पत्थर है। इन चीज़ों से ये आग सुलगाई गई है फिर ख़्याल कर लो कि किस क़द्र तेज़ होगी, पत्थर से मुराद या तो वो पत्थर हैं जिनकी दुनिया में परस्तिश होती रहती है जैसे और जगह है, (إِنَّكُمْ وَمَا تَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللَّهِ حَصَبُ جَهَنَّمَ) (सूरह अम्बिया 21 : 98) 'तुम और तुम्हारे माबूद जहन्नम की लकड़ियाँ हैं या गंधक के निहायत ही बदबूदार पत्थर हैं।' एक रिवायत में है हुज़ूर (ﷺ) ने इस आयत की तिलावत की, उस वक़्त आप (ﷺ) की ख़िदमत में कुछ अस्हाब थे जिनमें से एक शैख़ ने पूछा, ऐ अल्लाह के रसूल! क्या जहन्नम के पत्थर दुनिया के पत्थरों जैसे हैं? (इब्ने अबी हातिम व सनदहू ज़ईफ़ मुन्क़तअ) हुज़ूर (ﷺ) ने फ़रमाया, 'अल्लाह की क़सम जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है कि जहन्नम का एक पत्थर सारी दुनिया के तमाम पहाड़ों से बड़ा है।' उन्हें ये सुनकर ग़शी आ गई। हुज़ूर (ﷺ) ने उनके दिल पर हाथ रखा तो दिल धड़क रहा था। आप (ﷺ) ने उन्हें आवाज़ दी कि ऐ शैख़! कहो ला इला-ह इल्लल्लाह उसने उसे पढ़ा फिर आप (ﷺ) ने उसे जन्नत की ख़ुशख़बरी दी। तो आप (ﷺ) के अस्हाब ने कहा, क्या हम सबके दरम्यान सिर्फ़ इसी को ख़ुशख़बरी दी जा रही है? आपने फ़रमाया, देखो कुरआन में है, (ذَٰلِكَ لِمَنْ خَافَ مَقَامِي وَخَافَ وَعِيدِ) (सूरह इब्राहीम 14 : 14) 'ये उसके लिये है जो मेरे सामने खड़ा होने और मेरी धमकियों का डर रखता हो।' (ये रिवायत मुअ़ज़ल और सख़्त ज़ईफ़ है जिस तरह कि हाफ़िज़ इब्ने कसीर रह. ने फ़रमाया है।) ये हदीस़ ग़रीब और मुरसल है।

फिर इरशाद होता है उस आग से अ़ज़ाब करने वाले फ़रिश्ते सख़्त तबीअ़त वाले हैं जिनके दिलों में काफ़िरों के लिये अल्लाह ने रहम रखा ही नहीं और जो बदतरीन तरकीबों से बड़ी भारी सज़ायें करते हैं। जिनके देखे से भी पता पानी और कलेजा छलनी हो जाये। इक्रिमा (रह.) फ़रमाते हैं, जब दोज़ख़ियों का पहला जत्था जहन्नम को चलेगा तो देखेगा कि पहले दरवाज़े पर चार लाख फ़रिश्ते अ़ज़ाब करने वाले तैयार हैं जिनके चेहरे बड़े हैबतनाक और निहायत स्याह हैं, कुचलियाँ बाहर को निकली हुई हैं, सख़्त बेरहम हैं एक ज़र्रे के बराबर भी अल्लाह ने उनके दिलों में रहम नहीं रखा। इस क़द्र जसीम हैं कि अगर कोई परिन्दा उनके खवे से उड़कर दूसरे खवे तक पहुँचना चाहे तो दो महीने गुज़र जायें। फिर दरवाज़े पर उन्नीस फ़रिश्ते पायेंगे जिनके सीनों की चौड़ाई सत्तर साल की राह है। फिर एक दरवाज़े से दूसरे दरवाज़े की तरफ़ धकेल दिये जायेंगे। पाँच सौ साल तक गिरते रहने के बाद दूसरा दरवाज़ा आयेगा वहाँ भी ऐसे ही और इतने ही फ़रिश्तों को मौजूद पायेंगे। इसी तरह हर दरवाज़े पर। ये फ़रिश्ते अल्लाह तआ़ला के फ़रमान के ताबेअ़ हैं। इधर फ़रमाया गया उधर उन्होंने अ़मल शुरू कर दिया। उनका नाम ज़बानिया है। अल्लाह हमें अपने अ़ज़ाबों से अपनी पनाह दे, आमीन!

क़यामत के दिन कुफ़्फ़ार से फ़रमाया जायेगा, आज तुम बेकार उ़ज़्र पेश न करो, कोई मअ़ज़रत हमारे सामने चल न सकेगी। तुम्हारे करतूत का मज़ा तुम्हें चखना ही पड़ेगा। फिर इरशाद है कि ईमान वालो! तुम सच्ची और ख़ालिस तौबा करो जिससे तुम्हारे अगले गुनाह माफ़ हो जायें, मेल-कुचैल धुल जाये, बुराइयों की आ़दत छुट जाये। नोमान बिन बशीर (रज़ि.) ने अपने एक ख़ुत्बे में बयान फ़रमाया कि लोगो! मैंने हज़रत उ़मर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) से सुना है कि ख़ालिस तौबा ये है कि इंसान गुनाह की माफ़ी चाहे और फिर उस गुनाह को न

करे। (ज़ईफ़ : हाकिम : 2/495, व सनद ज़ईफ़ : सुफ़ियान स़ोरी मुदल्लस व अ़न्अ़न)

और रिवायत में है फिर उसके करने का इरादा भी न करे। हज़रत अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) से भी इसी के क़रीब मरवी है। एक मरफ़ूअ़ हदीस़ में भी यही आया है। (व सनद ज़ईफ़ : हाकिम : 2/495, हदीस़ : 4264, इसकी सनद में इब्राहीम बिन मुस्लिम ज़ईफ़ रावी है।) जो ज़ईफ़ है और ठीक यही है कि वो भी मौक़ूफ़ ही है, वल्लाहु आ़लम!

उ़लमाए सलफ़ फ़रमाते हैं, तौब-ए-ख़ालिस ये है कि गुनाह को उसी वक़्त छोड़ दे जो हो चुका है, उस पर नादिम (शर्मिन्दा) हो और आइन्दा के लिये न करने का पुख़्ता अ़ज़्म (पक्का इरादा) हो और अगर गुनाह में किसी इंसान का हक़ है तो चौथी शर्त ये है कि वो हक़ बाक़ाइदा अदा करे। हुज़ूर (ﷺ) फ़रमाते हैं, 'नादिम होना भी तौबा करना है।' (हसन : इब्ने माजह, किताबुज़्ज़ुहद, बाब ज़िक्रुत्तौबा : 4252, अहमद : 1/376)

हज़रत उबय बिन कअ़ब (रज़ि.) फ़रमाते हैं, हमें कहा गया था कि इस उम्मत के आख़िरी लोग क़यामत के क़रीब क्या-क्या काम करेंगे? उनमें एक ये है कि इंसान अपनी बीवी या लौण्डी से उसके पाख़ाने की जगह में वती करेगा जो अल्लाह और उसके रसूल ने मुत्लक़ हराम कर दिया है और जिस काम पर अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) की नाराज़ी होती है। इसी तरह मर्द-मर्द से बद फ़ैअ़ली करेंगे जो अल्लाह और रसूलुल्लाह (ﷺ) की नाराज़ी का बाइस़ है। उन लोगों की नमाज़ भी अल्लाह के यहाँ मक़्बूल नहीं जब तक कि ये तौबा नसूह न करें। हज़रत ज़र (रह.) ने हज़रत उबय (रज़ि.) से पूछा, तौबा नसूह क्या है? फ़रमाया, मैंने हज़रत (ﷺ) से यही सवाल किया था तो फ़रमाया, 'कुसूर से गुनाह हो गया फिर उस पर नादिम होना, अल्लाह तआ़ला से माफ़ी चाहना और फिर उस गुनाह की तरफ़ माइल न होना।' हसन (रह.) फ़रमाते हैं, तौबाए नसूह ये है कि जैसे गुनाह की मुहब्बत थी वैसा ही बुग़्ज़ दिल में बैठ जाये और जब वो गुनाह याद आये उससे इस्तिग़फ़ार हो जब कोई शख़्स तौबा करने पर पुख़्तगी कर लेता है और अपनी तौबा पर जमा रहता है तो अल्लाह तआ़ला उसकी तमाम अगली ख़तायें मिटा देता है। जैसे कि सहीह हदीस़ में है, 'इस्लाम लाने से पहले की तमाम ख़तायें इस्लाम फ़ना कर देता है और तौबा से पहले की तमाम ख़तायें तौबा सोख़्त कर देती है।' (बेअसल रिवायत है। सहीह मुस्लिम 121 की हदीस़ इससे बेनियाज़ कर देती है।)

अब रही ये बात कि तौबाए नसूह में ये शर्त है कि तौबा करने वाला फिर मरते दम तक उस गुनाह को न करे जैसे कि अहादीस़ व आस़ार अभी बयान हुए जिनमें है कि फिर कभी न करे या सिर्फ़ उसका अ़ज़्मे रासिख़ काफ़ी है कि अब उसे कभी न करूँगा, गो फिर बतक़ाज़ाए बशरियत भूले-चूके हो जाये जैसे कि अभी हदीस़ गुज़री कि तौबा अपने से पहले गुनाहों को बिल्कुल मिटा देती है। तो सिर्फ़ तौबा करने ही से गुनाह माफ़ हो जाते हैं। या फिर मरते दम तक उस काम का न होना गुनाह की माफ़ी की शर्त के तौर पर है? पस पहली बात की दलील तो ये हदीसे सहीह है कि जो शख़्स इस्लाम में नेकियाँ करे वो अपनी जाहिलिय्यत की बुराइयों पर पकड़ा न जायेगा और जो इस्लाम लाकर भी बुराइयों में मुब्तला रहे वो इस्लाम की और जाहिलिय्यत की दोनों बुराइयों में

पकड़ा जायेगा। (सहीह बुख़ारी, किताबु इस्तिम्बातुल मुर्तद्दीन, बाब इस्मु मन अशरक बिल्लाहि व उक़ूबति फ़िद्दुन्या वल्आख़िरह : 6921, सहीह मुस्लिम : 120, इब्ने माजह : 4242, अहमद : 1/409, इब्ने हिब्बान : 396)

पस इस्लाम जो कि गुनाहों को दूर करने में तौबा से बढ़कर है, जब उसके बाद भी अपनी बदकिरदारियों की वजह से पहली बुराइयों में भी पकड़ हुई तो तौबा के बाद तो बतौरे औला होनी चाहिये, वल्लाहु आलम!

लफ़्ज़ असा गो तमन्ना, उम्मीद और इम्कान के मआना देता है, लेकिन कलामुल्लाह में उसके मआना तहक़ीक़ के होते हैं। पस फ़रमान है कि ख़ालिस तौबा करने वाले क़त्अन अपने गुनाहों को माफ़ करवालेंगे और सर-सब्ज़ व शादाब जन्नतों में जायेंगे। फिर इरशाद है क़यामत के दिन अल्लाह तआला अपने नबी को और उनके ईमानदार साथियों को हर्गिज़ शर्मिन्दा न करेगा, उन्हें अल्लाह की तरफ़ से नूर अता होगा जो उनके आगे-आगे और दायें तरफ़ होगा और सब अन्धेरों में होंगे और ये रोशनी में होंगे। जैसे कि पहले सूरह हदीद की तफ़्सीर में गुज़र चुका। जब ये देखेंगे कि मुनाफ़िक़ों को जो रोशनी मिली थी ऐन ज़रूरत के वक़्त वो उनसे छीन ली गई और वो अन्धेरों में भटकते रह गये तो दुआ करेंगे कि ऐ अल्लाह! हमारे साथ ऐसा न हो हमारी रोशनी तो आख़िर वक़्त तक हमारे साथ ही रहे, हमारा नूरे ईमान बुझने न पाये। बनू किनाना के एक सहाबी फ़रमाते हैं कि फ़तहे मक्क वो दिन रसूलुल्लाह (ﷺ) के पीछे मैंने नमाज़ पढ़ी तो मैंने आप (ﷺ) की इस दुआ को सुना अल्लाहुम्-म ला तुख़्ज़िनी यौमल क़ियामह मेरे अल्लाह! मुझे क़यामत के दिन रुस्वा न करना। (ज़ईफ़ : अहमद : 4/234, फ़ी लिक़ाइ यहया बिन हस्सानल फ़िलिस्तीनि लिरजुलि मिम्बनी किनाना नज़र फ़स्सनदु यख़्श अलैहिल इन्क़िताअ, वजाअ तसरीहुस्सिमाअ फ़िल्मुअजमिल कबीर वलाकिन फ़िस्सनदि इलैहि यहया बिन अब्दुल हमीद ज़ईफ़ुन ज़िद्दा, अल्मुअजम कबीर : 2524)

एक हदीस में है, हुज़ूर (ﷺ) फ़रमाते हैं, 'क़यामत के दिन सबसे पहले सज्दे की इजाज़त मुझे दी जायेगी और इसी तरह सबसे पहले सज्दे से सर उठाने की इजाज़त भी मुझ ही को मरहमत होगी, मैं अपने सामने और दायें-बायें नज़र डालकर अपनी उम्मत को पहचान लूँगा।' एक सहाबी ने कहा, हुज़ूर आप उन्हें कैसे पहचानेंगे? वहाँ तो बहुत सी उम्मतें मिली हुई होंगी। आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'मेरी उम्मत के लोगों की एक निशानी तो ये है कि उनके आज़ाए वुज़ू मुनव्वर होंगे, चमक रहे होंगे, किसी और उम्मत में ये बात न होगी दूसरी पहचान ये है कि उनके नामाए आमाल उनके दायें हाथ में होंगे, तीसरी निशानी ये होगी कि सज्दे के निशान उनकी पेशानियों पर होंगे जिनसे मैं पहचान लूँगा, चौथी अलामत ये है कि उनका नूर उनके आगे-आगे होगा।' (ज़ईफ़ : अहमद : 5/199, व सनदहू ज़ईफ़ बिहाज़स्सियाक़ वल्हदीसिल मुख़्तसर इन्द अहमद : 21739 हसन, मज्मउज़्ज़वाइद : 7/344, हाकिम : 478)

***

يَٰٓأَيُّهَا ٱلنَّبِيُّ جَٰهِدِ ٱلْكُفَّارَ وَٱلْمُنَٰفِقِينَ وَٱغْلُظْ عَلَيْهِمْ ۚ وَمَأْوَىٰهُمْ جَهَنَّمُ ۖ
وَبِئْسَ ٱلْمَصِيرُ ⑨ ضَرَبَ ٱللَّهُ مَثَلًا لِّلَّذِينَ كَفَرُوا۟ ٱمْرَأَتَ نُوحٍ وَٱمْرَأَتَ لُوطٍ ۖ
كَانَتَا تَحْتَ عَبْدَيْنِ مِنْ عِبَادِنَا صَٰلِحَيْنِ فَخَانَتَاهُمَا فَلَمْ يُغْنِيَا عَنْهُمَا مِنَ ٱللَّهِ
شَيْـًٔا وَقِيلَ ٱدْخُلَا ٱلنَّارَ مَعَ ٱلدَّٰخِلِينَ ⑩

तर्जुमा : "ऐ नबी! काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों से जिहाद कर और उन पर सख़्ती कर, उनका ठिकाना जहन्नम है जो बहुत बुरी जगह है। (9) अल्लाह तआला ने काफ़िरों के लिये नूह और लूत की बीवी की कहावत बयान फ़रमाई ये दोनों हमारे बन्दों में से शाइस्ता और नेक बन्दों के घर में थीं फिर उनकी उन्होंने ख़यानत की, पस वो दोनों नेक बन्दे उनसे अल्लाह के किसी अज़ाब को न रोक सके और हुक्म दे दिया गया कि ऐ औरतो! दोज़ख़ में जाने वालों के साथ तुम दोनों भी चली जाओ।" (10)

हज़रत नूह (अलै.) और लूत (अलै.) की बीवियों का ज़िक्र (आयत : 9-10) : अल्लाह तआला अपने नबी (ﷺ) को हुक्म देता है कि काफ़िरों से जिहाद करो, हथियारों के साथ मुनाफ़िक़ों से जिहाद करो, हुदूदे इलाही जारी करने के साथ उन पर दुनिया में सख़्ती करो, आख़िरत में भी उनका ठिकाना जहन्नम है जो बदतरीन बाज़गश्त है, फिर मिसाल देकर समझाया कि काफ़िरों का मुसलमानों से मिलना-जुलना, ख़लत-मलत रहना उन्हें उनके कुफ़्र के बावजूद अल्लाह के यहाँ कुछ नफ़ा नहीं दे सकता। देखो! दो पैग़म्बरों की औरतें हज़रत नूह (अलै.) और हज़रत लूत (अलै.) की जो हर वक़्त उन नबियों की सोहबत में रहने वाली और दिन-रात साथ उठने-बैठने वाली और साथ ही खाने-पीने वाली बल्कि सोने-जागने वाली थीं, लेकिन चूंकि ईमान में उनकी साथी न थीं और अपने कुफ़्र पर क़ायम थीं, पस पैग़म्बरों की आठ पहर की सोहबत उन्हें कुछ काम न आई। अम्बिया अल्लाह उन्हें उख़रवी नफ़ा न पहुँचा सके और न उख़रवी नुक़सान से बचा सके। बल्कि उन औरतों को भी दोज़ख़ियों के साथ जहन्नम में जाने को कह दिया गया है। ये याद रहे कि ख़यानत करने से मुराद यहाँ बदकारी नहीं, अम्बिया (अलै.) की हुरमत व अस्मत इससे बहुत आला और बाला है कि उनके घर वालियाँ फ़ाहिशा हों, हम इसका पूरा बयान सूरह नूर की तफ़्सीर में कर चुके हैं। बल्कि यहाँ मुराद ख़यानत फ़िद्दीन है यानी दीन में अपने ख़ाविन्दों की ख़यानत की, उनका साथ न दिया। हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) फ़रमाते हैं, उनकी ख़यानत ज़िनाकारी न थी बल्कि ये थी कि हज़रत नूह (अलै.) की बीवी तो लोगों से कहा करती थीं कि ये मजनूँ हैं और लूत (अलै.) की बीवी जो मेहमान हज़रत लूत (अलै.) के यहाँ आते तो काफ़िरों को ख़बर कर देती थी। (व सनद ज़ईफ़ सुफ़ियान सौरी अन्अन : हाकिम : 2/496)

ये दोनों बद्दीन थीं, नूह (अलै.) की राज़दारी और पौशीदा तौर पर ईमान लाने वालों के नाम काफ़िरों पर ज़ाहिर कर दिया करती थी। इसी तरह हज़रत लूत (अलै.) की बीवी भी अपने ख़ाविन्द, अल्लाह के रसूल की मुख़ालिफ़ थी और जो लोग आपके यहाँ मेहमान बनकर ठहरते ये जाकर अपनी क़ौम से ख़बर कर देती जिन्हें बद फ़ैअली की आदत थी। (अत्तबरी : 23/498)

बल्कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) से मरवी है कि किसी पैग़म्बर की किसी औरत ने बदकारी नहीं की। (अत्तबरी : 23/498)

इसी तरह इक्रिमा, सईद बिन जुबैर, ज़ह्हाक (रह.) वग़ैरह से मरवी है, इससे इस्तिदलाल करके कुछ उलमा ने कहा है कि वो जो आम लोगों में मशहूर कि हदीस में है, 'जो शख़्स किसी ऐसे के साथ खाये जो बख़्शा हुआ हो उसे भी बख़्श दिया जाता है।' (बेअसल रिवायत है) ये हदीस बिल्कुल ज़ईफ़ है और हक़ीक़त भी यही है कि ये हदीस महज़ बेअसल है। हाँ एक बुज़ुर्ग से मरवी है कि उन्होंने ख़्वाब में हज़रत (ﷺ) की ज़ियारत की और पूछा कि क्या हुज़ूर (ﷺ) ने ये हदीस इरशाद फ़रमाई है? आप (ﷺ) ने फ़रमाया, नहीं। लेकिन अब मैं कहता हूँ।

***

وَضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوا امْرَاَتَ فِرْعَوْنَ ۘ اِذْ قَالَتْ رَبِّ ابْنِ لِيْ عِنْدَكَ
بَيْتًا فِي الْجَنَّةِ وَنَجِّنِيْ مِنْ فِرْعَوْنَ وَعَمَلِهٖ وَنَجِّنِيْ مِنَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿١١﴾ وَمَرْيَمَ
ابْنَتَ عِمْرٰنَ الَّتِيْٓ اَحْصَنَتْ فَرْجَهَا فَنَفَخْنَا فِيْهِ مِنْ رُّوْحِنَا وَصَدَّقَتْ بِكَلِمٰتِ
رَبِّهَا وَكُتُبِهٖ وَكَانَتْ مِنَ الْقٰنِتِيْنَ ﴿١٢﴾

तर्जुमा : "अल्लाह तआला ने ईमान वालों के लिये फ़िरऔन की बीवी की कहावत बयान फ़रमाई जबकि उसने दुआ की कि ऐ मेरे रब! मेरे लिये अपने पास से जन्नत में मकान बना और मुझे फ़िरऔन से और उसके अमल से बचा और मुझे ज़ालिम लोगों से ख़ुलासी दे। (11) और मिसाल बयान फ़रमाई मरयम बिन्ते इमरान की जिसने अपने नामूस की हिफ़ाज़त की फिर हमने अपनी तरफ़ से उसमें जान फूंक दी, मरयम अपने रब की बातें और उसकी किताबों को मानती थी और इबादत गुज़ारों में से थी।" (12)

हज़रत आसिया और हज़रत मरयम (अलै.) के फ़ज़ाइल (आयत : 11-12) : यहाँ अल्लाह तआला मुसलमानों के लिये मिसाल बयान फ़रमाकर इरशाद फ़रमाता है कि अगर ये अपनी ज़रूरत पर काफ़िरों से ख़लत-मलत हों तो उन्हें कुछ नुक़सान न होगा जैसे और जगह है, (لَا يَتَّخِذِ الْمُؤْمِنُوْنَ الْكٰفِرِيْنَ اَوْلِيَآءَ مِنْ دُوْنِ الْمُؤْمِنِيْنَ) (सूरह आले इमरान 3 : 28) 'ईमानदारों को चाहिये कि मुसलमानों के सिवा औरों से दोस्तियाँ न करें, जो ऐसा करेगा वो अल्लाह की तरफ़ से किसी भलाई में नहीं, हाँ अगर बतौरे बचाव और दफ़इल वक़्ती के हो तो और बात है।'

क़तादा (रह.) फ़रमाते हैं, रूए ज़मीन के तमामतर लोगों में सबसे ज़्यादा सरकश फ़िरऔन था, लेकिन उसके कुफ़्र ने भी उसकी बीवी को कुछ नुक़सान न पहुँचाया, इसलिये कि वो अपने ज़बरदस्त ईमान पर पूरी तरह क़ायम थीं और रहीं। जान लो कि अल्लाह तआला आदिल हाकिम है, वो एक के गुनाह पर दूसरे को नहीं पकड़ता। (अत्तबरी : 23/500)

हज़रत सलमान (रज़ि.) फ़रमाते हैं, फ़िरऔन उस नेक बख़्त बीवी को तरह-तरह से सताता था, सख़्त गर्मियों में उन्हें धूप में खड़ा कर देता लेकिन परवरदिगार अपने फ़रिश्तों के परों का साया उन पर कर देता और उन्हें गर्मी की तकलीफ़ से बचा लेता बल्कि उन्हें उनके जन्नती मकान को दिखा देता। (अत्तबरी : 23/500, हाकिम : 2/496, व सनद ज़ईफ़ सुलैमान तैमी मुदल्लस अन्अन)

जिससे उनकी रूह की ताज़गी और ईमान की ज़्यादती हो जाती, फ़िरऔन और हज़रत मूसा (अलै.) की बाबत ये दरयाफ़्त करती रहती थीं कि कौन ग़ालिब रहा तो हर वक़्त यही सुनतीं कि मूसा ग़ालिब रहे बस यही उनके ईमान का बाइस बना और ये पुकार उठीं कि मैं मूसा और हारून (अलै.) के रब पर ईमान लाई। फ़िरऔन को जब ये मालूम हुआ तो उसने कहा, जो बड़ी से बड़ी पत्थर की चट्टान तुम्हें मिले उसे उठवा लाओ उसे चित लिटाओ और उसे कहो कि अपने इस अक़ीदे से बाज़ आये। अगर बाज़ आ जाये तो तू मेरी बीवी है। इज़्ज़त व हुरमत के साथ वापस लाओ और अगर न माने तो वो चट्टान उस पर गिरा दो और उसका क़ीमा-क़ीमा कर डालो, जब ये लोग पत्थर लाये उन्हें ले गये, लिटाया और पत्थर उन पर गिराने के लिये उठाया तो उन्होंने आसमान की तरफ़ निगाह उठाई, परवरदिगार ने हिजाब हटा दिये और जन्नत को और वहाँ जो मकान उनके लिये बनाया गया था-उसे उन्होंने अपनी आँखों से देख लिया और उसी में उनकी रूह परवाज़ कर गई। जिस वक़्त पत्थर फेंका गया उस वक़्त उनमें रूह थी ही नहीं। (अत्तबरी : 23/500, व सनदहू ज़ईफ़ लिइब्निल क़ासिम बिन अबी बज़्ज़ा लि-म यज़्कुर सनदहू) अपनी शहादत के वक़्त दुआ माँगती हैं कि ऐ अल्लाह! जन्नत में अपने क़रीब की जगह मुझे इनायत फ़रमा, उसकी दुआ-ए-बारीक पर भी निगाह डालिये कि पहले अल्लाह का पड़ौस माँगा जा रहा है फिर घर की दरख़्वास्त की जा रही है। इस वाक़िये के बयान में मरफ़ूअ हदीस भी वारिद हुई है। फिर दुआ करती हैं कि मुझे फ़िरऔन और उसके अमल से निजात दे मैं उसकी कुफ़्रिया हरकतों से बेज़ार हूँ, मुझे इस ज़ालिम क़ौम से आफ़ियत में रख।

उन बीवी साहिबा का नाम आसिया बिन्ते मज़ाहिम (अलै.) था। उनके ईमान लाने का वाक़िया अबुल आलिया (रह.) इस तरह बयान फ़रमाते हैं कि फ़िरऔन के दारोग़ा की औरत का ईमान उनके ईमान का बाइस बना, वो एक रोज़ फ़िरऔन की लड़की का सर गूंध रही थी। अचानक कंघी हाथ से गिर गई और उनके मुँह से निकल गया कि कुफ़्फ़ार बर्बाद हों। इस पर फ़िरऔन की लड़की ने कहा कि क्या मेरे बाप के सिवा तू किसी और को अपना रब मानती है? उसने कहा, मेरा और तेरे बाप का और हर चीज़ का रब अल्लाह तआला है। उसने गुस्से में आकर उन्हें ख़ूब मारा-पीटा और अपने बाप को उसकी ख़बर दी, फ़िरऔन ने उन्हें बुलाकर ख़ुद पूछा कि क्या तुम मेरे सिवा किसी और की इबादत करती हो? जवाब दिया कि हाँ मेरा और तेरा और तमाम मख़्लूक़ का रब अल्लाह है। मैं उसी की इबादत करती हूँ। फ़िरऔन ने हुक्म दिया और उन्हें चित लिटाकर उनके हाथ-पैरों पर मेख़ें गड़वा दीं और साँप छोड़ दिये जो उन्हें काटते रहें। फिर एक दिन आया और कहा, अब भी तेरे ख़्यालात दुरुस्त हुए? वहाँ से जवाब मिला कि मेरा और तेरा और तमाम मख़्लूक़ का रब अल्लाह ही है। फ़िरऔन ने कहा, अब तेरे सामने मैं तेरे लड़के को टुकड़े-टुकड़े कर दूँगा, वरना अब भी मेरा कहा मान ले और इस दीन से बाज़ आ जा। उन्होंने जवाब दिया, जो कुछ तू कर सकता है कर डाल! उस ज़ालिम ने उनके लड़के को पकड़वा मंगवाया और उनके सामने उसे मार डाला। जब उस बच्चे की रूह निकली तो उसने कहा, ऐ माँ! ख़ुश हो जा तेरे लिये अल्लाह तआला ने बड़े-बड़े सवाब तैयार कर रखे हैं और फ़लाँ-फ़लाँ नेमतें तुझे मिलेंगी। उन्होंने उस रूह फ़रसा सान्हा को बचश्मे ख़ुद देखा। लेकिन सब्र किया और राज़ी बक़ज़ा होकर बैठी रहीं। फ़िरऔन ने फिर उन्हें उसी तरह बांध कर डलवा दिया और साँप छोड़ दिये। फिर एक दिन आया और अपनी बात दोहराई, बीवी साहिबा ने फिर निहायत सब्र व इस्तिक़लाल से वही जवाब दिया, उसने फिर वही धमकी दी और उनके दूसरे बच्चे को भी उनके सामने ही क़त्ल करा दिया, उसकी रूह ने उसी तरह वालिदा को ख़ुशख़बरी दी और सब्र की तल्क़ीन की फ़िरऔन की उस बीवी ने बड़े बच्चे की रूह की ख़ुशख़बरी सुनी थी। अब उस छोटे बच्चे की भी ख़ुशख़बरी सुनी और ईमान ले आईं। इधर उन बीवी साहिबा की रूह अल्लाह तआला ने क़ब्ज़ कर ली और उनकी मन्ज़िल और मर्तबा जो अल्लाह के यहाँ था वो हिजाब हटाकर फ़िरऔन की बीवी को दिखा दिया गया, ये अपने ईमान और यक़ीन में बहुत बढ़ गईं यहाँ तक कि फ़िरऔन को भी उनके ईमान की ख़बर हो गई। उसने एक दिन अपने दरबारियों से कहा, तुम्हें कुछ मेरी बीवी की ख़बर है? तुम उसे क्या जानते हो? सब ने बड़ी तारीफ़ की और उनकी भलाइयाँ बयान कीं। फ़िरऔन ने कहा, तुम्हें नहीं मालूम? वो मेरे सिवा और दूसरे को अल्लाह मानती है। फिर मशवरा हुआ कि उन्हें क़त्ल कर दिया जाये चुनाँचे मेख़ें गाड़ी गईं और उनके हाथ-पांव बांधकर डाल दिया गया। उस वक़्त हज़रत आसिया (अलै.) ने अपने रब से दुआ की कि परवरदिगार मेरे लिये अपने पास जन्नत में मकान बना, अल्लाह तआला ने उनकी दुआ क़ुबूल फ़रमाई और हिजाब हटाकर उन्हें उनका जन्नती दर्जा दिखा दिया जिस पर ये हँसने लगीं, ठीक उसी वक़्त फ़िरऔन आ गया और उन्हें हँसता हुआ देखकर कहने लगा, लोगो! तुम्हें तअज्जुब नहीं मालूम होता? कि इतनी सख़्त सज़ा में ये मुब्तला है और फिर हँस रही है यक़ीनन इसका दिमाग़ ठिकाने नहीं, अलग़र्ज़ उन्ही अज़ाबों में ये शहीद हुईं। (व सनद ज़ईफ़ : रवाअ अबी जअफ़र राज़ी अन रबीअ बिन अनस ज़ईफ़)

फिर दूसरी मिसाल हज़रत मरयम बिन्ते इमरान (अलै.) की बयान की जाती है कि वो निहायत पाक दामन थीं हमने अपने फ़रिश्ते जिब्रईल (अलै.) की मअरिफ़त उनमें रूह फूंकी। हज़रत जिब्रईल (अलै.) को इंसानी सूरत में अल्लाह तआला ने भेजा था और हुक्म दिया था कि वो अपने मुँह से उनके गिरेबान में फूंक मार दें, उसी से हमल रह गया और हज़रत ईसा (अलै.) पैदा हुए। पस फ़रमान है कि हमने उसमें अपनी रूह फूंकी।

फिर हज़रत मरयम (अलै.) की तारीफ़ हो रही है कि वो अपने रब की तक़दीर और शरीअत को सच मानने वाली थीं और पूरी फ़रमांबरदार थीं। मुस्नद अहमद में है कि आँहज़रत (ﷺ) ने ज़मीन पर चार लकीरें खींचीं और सहाबा (रज़ि.) से पूछा, क्या जानते हो कि ये क्या है? उन्होंने जवाब दिया कि अल्लाह तआला और उसके रसूल ही को पूरा इल्म है। आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'सुनो! तमाम जन्नती औरतों में से अफ़ज़ल ख़दीजा बिन्ते ख़ुवेलद और फ़ातिमा बिन्ते मुहम्मद और मरयम बिन्ते इमरान और आसिया बिन्ते मज़ाहिम (रज़ि.) हैं जो फ़िरऔन की बीवी थीं।' (सहीह : अहमद : 1/293, हदीस़ नम्बर : 26687, मुस्नद अबी यअला : 2722, हाकिम : 3/185)

सहीह बुख़ारी व सहीह मुस्लिम में है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'मर्दों में तो साहिबे कमाल बहुत सारे हुए हैं लेकिन औरतों में से कामिल औरतें सिर्फ़ हज़रत आसिया हैं जो फ़िरऔन की बीवी थीं और हज़रत मरयम बिन्ते इमरान (अलै.) और हज़रत ख़दीजा बिन्ते ख़ुवेलद (रज़ि.) हैं और हज़रत आइशा (रज़ि.) की फ़ज़ीलत औरतों पर ऐसी ही है जैसे सालन में चूरी हुई रोटी की फ़ज़ीलत बाक़ी खानों पर।' (सहीह बुख़ारी, किताब फ़ज़ाइलु अस्हाबिन्नबी, बाब फ़ज़्लु आइशा : 3769, सहीह मुस्लिम : बाब ज़िक्रु ख़दीजा : 2431)

हम अपनी किताब अल्बिदाया वन्निहाया में हज़रत ईसा (अलै.) के क़िस्से के बयान के मौक़े पर इस हदीस़ की सनदें और अल्फ़ाज़ बयान कर चुके हैं, फ़ल्हम्दुलिल्लाह और अल्लाह तआला के फ़ज़्ल व करम से इसी सूरत के आयत के अल्फ़ाज़ स़य्यिबातिंव्-व अकबारा की तफ़्सीर के मौक़े पर वो हदीस़ भी हम बयान कर चुके हैं जिसमें है कि आँहज़रत (ﷺ) की जन्नती बीवियों में एक हज़रत आसिया बिन्ते मज़ाहिम (अलै.) भी हैं।

अल्हम्दुलिल्लाह सूरह तहरीम की तफ़्सीर ख़त्म हुई और इसके साथ ही अठाइस्वाँ पारह तमाम हुआ।

FLOW CHART
तरतीबी नक्श-ए-रब्त

MACRO-STRUCTURE
नज़्मे-जली

सूरह मुल्क - 67

आयात : 30, मक्की, पैराग्राफ : 7

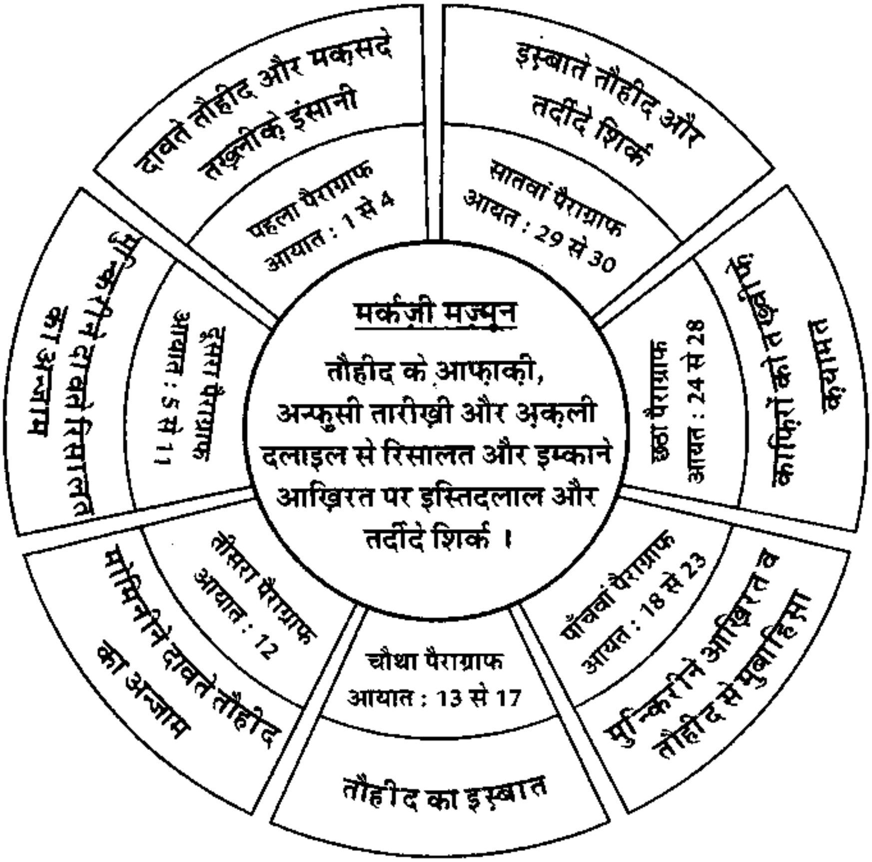

तफ़्सीर सूरह मुल्क

सूरह मुल्क की फ़ज़ीलत और फ़वाइद : मुस्नद अहमद में ये रिवायत है कि हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से मरवी है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'कुरआन करीम में तीस आयतों की एक सूरत है जो अपने पढ़ने वालों की सिफ़ारिश करती रहेगी यहाँ तक कि उसे बख़्श दिया जाये वो सूरत तबारकल्लज़ी बियदिहिल मुल्क है।' (हसन : अबू दाऊद, किताबु शहरे रमज़ान, बाब फ़ी अददिल आय : 1400, व सनदहू हसन, तिर्मिज़ी : 2891, इब्ने माजह : 3786, सुननुल कुबरा : 710, अहमद : 2/321)

तारीख़ इब्ने असाकिर में हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) से मरवी है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'तुमसे पहले का एक शख़्स मर गया, जिसके साथ किताबुल्लाह में सिवाय सूरह तबारकल्लज़ी के और कोई चीज़ न थी। जब उसे दफ़न किया गया और फ़रिश्ता उसके पास आया तो ये सूरत उसके सामने खड़ी हो गई। फ़रिश्ते ने कहा, तू किताबुल्लाह है मैं तुझे नाराज़ करना नहीं चाहता। तुझे मालूम है कि तेरे या अपने या इस मय्यित के किसी नफ़ा-नुक़सान का मुझे इख़्तियार नहीं। अगर तू यही चाहता है तो तू अल्लाह तआला के पास जाकर इसकी सिफ़ारिश कर। चुनाँचे ये सूरत अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल के पास जायेगी और कहेगी, ऐ अल्लाह! तेरी किताब में से मुझे फ़लाँ शख़्स ने सीखा पढ़ा, अब क्या तू इसे आग में जलायेगा? क्या बावजूद ये कि मैं इसके सीने में महफ़ूज़ हूँ तू इसे अज़ाब करेगा? अगर यही करना है तो मुझे अपनी किताब में से मिटा डाल। अल्लाह तआला फ़रमायेगा, तू इस वक़्त सख़्त ग़ज़बनाक है। ये कहेगी, मुझे हक़ है कि मैं अपनी नाराज़ी ज़ाहिर करूँ। पस जनाबे बारी तआला का इरशाद होगा कि जा मैंने इसे तुझे दिया और तेरी सिफ़ारिश कुबूल कर ली। अब ये सूरत उसके पास आयेगी और अज़ाब के फ़रिश्ते को हटा देगी ओर उसके मुँह से अपना मुँह मिलाकर कहेगी इस मुँह को मरहबा हो यही मेरी तिलावत किया करता था। इस सीने को सद शाबाश हो इसने मुझे याद कर रखा था। इन दोनों क़दमों को मुबारकबाद हो यही खड़े होकर रातों को मेरी क़िरअत के साथ क़ियाम करते थे और ये सूरत क़ब्र में उसकी मुनिस और ग़मख़्वार बन जायेगी और कोई डर, दहशत उसे नहीं पहुँचने देगी।' इस हदीस़ के सुनते ही तमाम छोटे-बड़े, आज़ाद और गुलाम ने इसे सीख लिया। इसका नाम रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मुन्जीह रखा यानी निजात दिलवाने वाली सूरत। (ज़ईफ़ : इसकी सनद में क़रात बिन साइब मतरूकुल हदीस़ है। अल्मीज़ान : 3/341, हदीस़ नम्बर : 6689, लिहाज़ा ये रिवायत सख़्त ज़ईफ़ है जैसाकि इमाम इब्ने कस़ीर रह. ने फ़रमाया।) लेकिन ये याद रहे कि ये हदीस़ बहुत ही मुन्कर है इसके रावी फ़रात बिन साइब को इमाम अहमद, इमाम यहया बिन मुईन, इमाम बुख़ारी, इमाम अबू हातिम, इमाम दार कुतनी (रह.) वग़ैरह ज़ईफ़ कहते हैं।

और दूसरी सनद से मरवी है कि ये क़ौल इमाम ज़ोहरी (रह.) का है मरफ़ूअ हदीस़ का नहीं। इमाम

बैहक़ी (रह.) ने किताब इस्बातु अज़ाबिल क़ब्र में हज़रत इब्ने मसऊद (रज़ि.) से एक हदीस मरफ़ूअ भी बयान की है और मौक़ूफ़ भी, उसमें भी जो मज़्मून है वो उसकी शहादत में काम दे सकता है। हमने उसे अहकामे कुबरा की किताबुल जनाइज़ में बयान किया है, वलिल्लाहिल हम्द!

तबरानी वग़ैरह में है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़रमाते हैं, 'कुरआन करीम की एक सूरत है जिसने अपने पढ़ने वाले की तरफ़ से अल्लाह तआला से लड़-झगड़कर उसे जन्नत में दाख़िल कराया, वो सूरत (तबारकल्लज़ी) है।' तिर्मिज़ी में है कि किसी सहाबी (रज़ि.) ने जंगल में एक डेरा लगाया जहाँ एक क़ब्र भी थी लेकिन उसे इल्म न था, उसने सुना कि कोई शख़्स सूरह मुल्क पढ़ रहा है और उसने उसे पूरी पढ़ी। उसने नबी (ﷺ) से सारा वाक़िया बयान किया तो हुज़ूर (ﷺ) ने फ़रमाया, 'ये सूरत रोकने वाली है, ये सूरत निजात दिलवाने वाली है, जो अज़ाबे क़ब्र से निजात दिलवाती है।' (ज़ईफ़ : तिर्मिज़ी, किताब फ़ज़ाइलुल कुरआन, बाब मा जाअ फ़ी फ़ज़्लि सूरतिल मुल्क : 2890, यहया बिन अम्र बिन मालिक रावी ज़ईफ़ है। दलाइलुन्नुबुव्वह लिल्बैहक़ी : 7/41) ये हदीस ग़रीब है।

तिर्मिज़ी की दूसरी रिवायत में है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) सोने से पहले सूरह अलिफ़ लाम्-मीम तन्ज़ील और सूरह तबारकल्लज़ी ज़रूर पढ़ लिया करते थे। (ज़ईफ़ : तिर्मिज़ी, किताब फ़ज़ाइलुल कुरआन, बाब मा जाअ फ़ी फ़ज़्लि सूरतिल मुल्क : 2892, अबू ज़ुबैर मुदल्लस रावी है और सिमाअ की सराहत नहीं है।)

हज़रत ताऊस (रह.) की रिवायत में है कि ये दोनों सूरतें कुरआन की और सूरतों पर सत्तर नेकियाँ फ़ज़ीलत रखती है। (ज़ईफ़ : लैस बिन अबी सुलैम ज़ईफ़ मशहूर)

तबरानी में है कि हुज़ूर (ﷺ) फ़रमाते हैं, 'मेरी दिली मन्शा है कि ये सूरत मेरी उम्मत में से हर एक के दिल में रहे, यानी सूरह मुल्क।' (ज़ईफ़ : हाकिम : 1/565, हदीस नम्बर : 2076, हफ़्स बिन उमर बिन मैमून अल्अदनी ज़ईफ़ कमा फ़ित्तक़रीब : 1420, मुअजम अल्कबीर : 11616, मज्मउज़्ज़वाइद : 7/127) ये हदीस भी ग़रीब है और इसके रावी इब्राहीम ज़ईफ़ हैं। और इसी जैसी रिवायत सूरह यासीन की तफ़्सीर में गुज़र चुकी है।

मुस्नद अब्द बिन हुमैद में ज़रा तफ़्सील के साथ बयान है कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) ने एक शख़्स से फ़रमाया कि आ मैं तुझे ऐसा तोहफ़ा दूँ कि तू ख़ुश हो जाये (तबारकल्लज़ी) पढ़ाकर और उसे अपने अहलो-अयाल को, औलाद को, घर के बच्चों को और पड़ौसियों को सिखा। ये सूरत निजात दिलवाने वाली और शफ़ाअत करने वाली है क़यामत के दिन अपने पढ़ने वाले की तरफ़ से अल्लाह तआला से सिफ़ारिश करेगी और उसे अज़ाबे आग से बचा लेगी और अज़ाबे क़ब्र से भी। रसूलुल्लाह (ﷺ) का इरशाद है, 'मैं तो चाहता हूँ कि मेरे एक-एक उम्मती के दिल में ये हो।' (ज़ईफ़ : अल्मुन्तख़ब लिअब्द बिन हुमैद : 601, इब्राहीम बिन हकम बिन अबान ज़ईफ़)

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ○

तर्जुमा : ''शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है।''

***

تَبٰرَکَ الَّذِیۡ بِیَدِہِ الۡمُلۡکُ ۫ وَ ہُوَ عَلٰی کُلِّ شَیۡءٍ قَدِیۡرُۨ ۙ﴿۱﴾ الَّذِیۡ خَلَقَ الۡمَوۡتَ
وَ الۡحَیٰوۃَ لِیَبۡلُوَکُمۡ اَیُّکُمۡ اَحۡسَنُ عَمَلًا ؕ وَ ہُوَ الۡعَزِیۡزُ الۡغَفُوۡرُ ۙ﴿۲﴾ الَّذِیۡ خَلَقَ
سَبۡعَ سَمٰوٰتٍ طِبَاقًا ؕ مَا تَرٰی فِیۡ خَلۡقِ الرَّحۡمٰنِ مِنۡ تَفٰوُتٍ ؕ فَارۡجِعِ الۡبَصَرَ ۙ ہَلۡ
تَرٰی مِنۡ فُطُوۡرٍ ﴿۳﴾ ثُمَّ ارۡجِعِ الۡبَصَرَ کَرَّتَیۡنِ یَنۡقَلِبۡ اِلَیۡکَ الۡبَصَرُ خَاسِئًا وَّ ہُوَ
حَسِیۡرٌ ﴿۴﴾ وَ لَقَدۡ زَیَّنَّا السَّمَآءَ الدُّنۡیَا بِمَصَابِیۡحَ وَ جَعَلۡنٰہَا رُجُوۡمًا لِّلشَّیٰطِیۡنِ
وَ اَعۡتَدۡنَا لَہُمۡ عَذَابَ السَّعِیۡرِ ﴿۵﴾

तर्जुमा : ''बहुत बाबरकत है वो अल्लाह तआला जिसके हाथ बादशाही है और जो हर चीज़ पर क़ुदरत रखने वाला है। (1) जिसने मौत और हयात को इसलिये पैदा किया कि तुम्हें आज़माये कि तुममें से अच्छे काम कौन करता है, जो ग़ालिब और बख़्शने वाला है। (2) जिसने सातों आसमानों को ऊपर तले पैदा किया, तू ऐ देखने वाले! अल्लाह तआला रहमान की पैदाइश में कोई बेज़ाब्तगी न देखेगा, दोबारा नज़रें डालकर देख ले क्या कोई शिगाफ़ भी नज़र आ रहा है? (3) फिर दोहरा कर दो-दो बार देख ले तेरी निगाह तेरी तरफ़ ज़लील व आजिज़ होकर थकी हुई लौट आयेगी। (4) बेशक हमने आसमाने दुनिया को चिराग़ों से ज़ीनत वाला बना दिया और उन्हें शैतानों के मारने का ज़रिया बना दिया और शैतानों के लिये हमने दोज़ख़ का जलाने वाला अज़ाब तैयार कर दिया।'' (5)

मौत व हयात का ख़ालिक़ अल्लाह है (आयत : 1-5) : अल्लाह तआला अपनी तारीफ़ बयान फ़रमा

रहा है और ख़बर दे रहा है कि तमाम मख़्लूक़ पर उसी का क़ब्ज़ा है जो चाहे करे कोई उसके हुक्मों को टाल नहीं सकता। उसके ग़ल्बे और हिक्मत और अ़द्ल की वजह से उससे कोई बाज़पुर्स भी नहीं कर सकता, वो तमाम चीजों पर क़ुदरत रखने वाला है। फिर अपना मौत व हयात का पैदा करना बयान फ़रमा रहा है। इस आयत से उन लोगों के लिये इस्तिदलाल किया है जो कहते हैं कि मौत एक वजूदी अम्र है क्योंकि वो भी पैदा करदा शुदा है। आयत का मतलब ये है कि तमाम मख़्लूक़ को अ़द्म से वजूद में लाया ताकि अच्छे आ़माल वालों का इम्तिहान हो जाये जैसे और जगह है, (كَيْفَ تَكْفُرُوْنَ بِاللّٰهِ وَكُنْتُمْ اَمْوَاتًا فَاَحْيَاكُمْ) (सूरह बक़रह 2 : 28) 'तुम अल्लाह तआ़ला के साथ क्यों कुफ़्र करते हो? तुम तो मुर्दा थे, फिर उसने तुम्हें ज़िन्दा कर दिया।' पस पहले हाल यानी अ़द्म को यहाँ भी मौत कहा गया और इस पैदाइश को हयात कहा गया। इसीलिये इसके बाद इरशाद होता है, (ثُمَّ يُمِيْتُكُمْ ثُمَّ يُحْيِيْكُمْ) (सूरह बक़रह 2 : 28) 'वो फिर तुम्हें मार डालेगा और फिर ज़िन्दा कर देगा।'

इब्ने अबी हातिम में है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़रमाते हैं, 'बनी आदम मौत की ज़िल्लत में थे, दुनिया को अल्लाह तआ़ला ने हयात का घर बना दिया फिर मौत का और आख़िरत को जज़ा का फिर बक़ा का।' (ज़ईफ़ : इब्ने अबी हातिम, ख़लीद बिन दअलज ज़ईफ़ वस्सनद मुरसल)

लेकिन यही रिवायत और जगह हज़रत क़तादा (रह.) का अपना क़ौल होना बयान की गई है। आज़माइश इस बात की है कि तुममें से अच्छे अ़मल वाला कौन है? अक्सर अ़मल वाला नहीं, बल्कि बेहतर अ़मल वाला। वो बावजूद ग़ालिब और बुलंद जनाब होने के फिर आ़सियों और सरताब लोगों के लिये जब वो रुजूअ़ करें और तौबा करें, माफ़ करने वाला और बख़्शने वाला भी है। जिसने सात आसमान ऊपर तले पैदा किये, एक पर एक। गो कुछ लोगों ने ये भी कहा है कि एक पर एक मिला हुआ है। लेकिन दूसरा क़ौल ये है कि दरम्यान में जगह है और एक दूसरे के ऊपर फ़ासले से है। ज़्यादा सहीह यही क़ौल है और हदीसे मेअ़राज वग़ैरह से भी यही बात साबित होती है। पैदाइशे परवरदिगार में तू कोई कमी व ऐब न पायेगा, बल्कि तू देखेगा कि वो बराबर है। न हेर-फेर है, न मुख़ालिफ़त और बेरब्ती है, न कमी और ऐब और ख़लल है। अपनी नज़र आसमान की तरफ़ डाल और ग़ौर से देख कि कहीं कोई ऐब, टूट-फूट, जोड़-तोड़, शिगाफ़ व सूराख़ दिखाई देता है? फिर भी अगर शक रहे तो दो-दो बार देख ले कोई कमी नज़र न आयेगी। गो तूने ख़ूब नज़रें जमाकर टटोल कर देखा हो फिर भी नामुम्किन है कि तुझे कोई शिकस्त व रेख़्त नज़र आये' तेरी निगाहें थक कर और नाकाम होकर नीची हो जायेंगी। कमी की नफ़ी करके अब कमाल का इस्बात हो रहा है। तो फ़रमाया, आसमाने दुनिया को हमने इन क़ुदरती चिराग़ों से सितारों से बारोनक़ बना रखा है जिनमें कुछ चलने-फिरने वाले हैं और कुछ जा ठहरे रहने वाले हैं। फिर उनका एक और फ़ायदा बयान हो रहा है ये कि उनसे शैतानों को मारा जाता है, उनमें से शौले निकलकर उन पर गिरते हैं, ये नहीं कि ख़ुद सितारा उन पर टूटे, वल्लाहु आ़लम!

***

وَلِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِرَبِّهِمْ عَذَابُ جَهَنَّمَ ۖ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ⑥ اِذَآ اُلْقُوْا فِيْهَا سَمِعُوْا
لَهَا شَهِيْقًا وَّهِىَ تَفُوْرُ ⑦ تَكَادُ تَمَيَّزُ مِنَ الْغَيْظِ ۖ كُلَّمَآ اُلْقِىَ فِيْهَا فَوْجٌ سَاَلَهُمْ
خَزَنَتُهَآ اَلَمْ يَاْتِكُمْ نَذِيْرٌ ⑧ قَالُوْا بَلٰى قَدْ جَآءَنَا نَذِيْرٌ ۙ فَكَذَّبْنَا وَقُلْنَا مَا نَزَّلَ
اللّٰهُ مِنْ شَىْءٍ ۚ اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا فِىْ ضَلٰلٍ كَبِيْرٍ ⑨ وَقَالُوْا لَوْ كُنَّا نَسْمَعُ اَوْ نَعْقِلُ مَا
كُنَّا فِىْٓ اَصْحٰبِ السَّعِيْرِ ⑩ فَاعْتَرَفُوْا بِذَنْۢبِهِمْ ۚ فَسُحْقًا لِّاَصْحٰبِ السَّعِيْرِ ⑪

तर्जुमा : ''अपने रब के साथ कुफ़्र करने वालों के लिये जहन्नम का अ़ज़ाब है जो बुरी जगह है। (6) जब उसमें ये डाले जायेंगे तो उसकी बड़े ज़ोर की आवाज़ सुनेंगे और वो जोश मार रही होगी। (7) मालूम होगा कि अभी ग़ुस्से के मारे फट जायेगी, जब कभी उसमें कोई गिरोह डाला जायेगा उससे जहन्नम के दारोग़े पूछेंगे कि क्या तुम्हारे पास डराने वाला कोई नहीं आया था? (8) वो जवाब देंगे कि बेशक आया तो था लेकिन हमने उसे झुठलाया और कहा कि अल्लाह तआ़ला ने कुछ भी नाज़िल नहीं फ़रमाया, तुम बहुत बड़े गुमराही में हो। (9) और कहेंगे कि अगर हम सुनते होते या अ़क़्ल रखते होते तो दोज़ख़ियों में (शरीक) न होते। (10) उन्होंने अपने जुर्म का इक़्बाल कर लिया, अब ये दोज़ख़ी दफ़अ़ हों और दूर हों।'' (11)

आयाते इलाही को झुठलाने वालों का बुरा अन्जाम (आयत 6-11) : अल्लाह तआ़ला का इरशाद है जो भी उसके साथ कुफ़्र करे वो जहन्नमी है उसका अन्जाम और जगह बद से बद है। ये बुलंद और मक्रूह गधे की सी आवाज़ें मारने वाली और जोश मारने वाली जहन्नम है जो उन पर जल-भुन रही है और जोश और ग़ज़ब से इस तरह कच-कचा रही है कि गोया अभी टूट-फूट जायेगी। उन दोज़ख़ियों को ज़्यादा ज़लील करने और आख़िरी हुज्जत क़ायम करने और इक़्बाली मुज्रिम बनाने के लिये दारोग़ा-ए-जहन्नम उनसे पूछते हैं कि बदनसीबो! क्या अल्लाह तआ़ला के रसूलों ने तुम्हें इससे डराया न था? तो ये हाय-वाय करते हुए अपनी जानों को पीटते हुए जवाब देते हैं कि आये तो थे लेकिन वाय बदनसीबी कि हमने उन्हें झूठा जाना और अल्लाह तआ़ला की किताब को भी न माना और पैग़म्बरों को बेराह बताया। अब अ़द्ले अल्लाह तआ़ला साफ़ साबित हो चुकता है और फ़रमाने बारी पूरा उतरता है, जो उसने फ़रमाया, (وَمَا كُنَّا مُعَذِّبِيْنَ حَتّٰى نَبْعَثَ رَسُوْلًا ﴿١٥﴾) (सूरह बनी इस्राईल 17 : 15) 'हम जब तक रसूल न भेजें अ़ज़ाब नहीं देते।' (इस आयत में दुनियावी अ़ज़ाब की तरफ़ इशारा है आख़िरत के अ़ज़ाब की तरफ़ नहीं)।

और जगह इरशाद है (حَتّٰى اِذَا جَآءُوْهَا) (सूरह ज़ुमर 39 : 71) 'जब जहन्नमी जहन्नम के पास पहुँच जायेंगे और जहन्नम के दरवाज़े खोल दिये जायेंगे और दारोग़-ए-जहन्नम उनसे पूछेंगे कि क्या तुम्हारे पास तुममें से ही रसूल नहीं आये थे? जो तुम पर तुम्हारे रब की आयतें पढ़ते थे और तुम्हें उस दिन की मुलाक़ात से डराते थे, तो कहेंगे कि हाँ आये तो थे और डरा भी दिया था, लेकिन काफ़िरों पर कलिम-ए-अज़ाब हक़ हो गया। अब अपने आपको मलामत करेंगे और कहेंगे कि अगर हमारे कान होते अगर हममें अक़्ल होती तो धोखे में न पड़े रहते। अपने मालिक व ख़ालिक़ के साथ कुफ़्र न करते, न रसूलों को झुठलाते, न उनकी ताबेदारी से मुँह मोड़ते। अल्लाह तआला फ़रमायेगा, अब तो उन्होंने ख़ुद अपने गुनाहों का इक़रार कर लिया उनके लिये लानत हो दूरी हो।' रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़रमाते हैं, 'लोग जब तक दुनिया में अपने आप पर ग़ौर न कर लेंगे और अपनी बुराइयों को आप देख न लेंगे हलाक न होंगे।' (सहीह : मुस्नद अहमद : 4/260, अबू दाऊद, किताबुल मलाहिम, बाब अल्अम्रु वन्नही : 4347, अहमद : 5/293)

और हदीस़ में है, 'क़यामत वाले दिन इस तरह हुज्जत क़ायम की जायेगी कि ख़ुद इंसान समझ लेगा कि मैं दोज़ख़ में जाने के ही क़ाबिल हूँ।' (हमें ये रिवायत नहीं मिली)

***

اِنَّ الَّذِيْنَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَيْبِ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّاَجْرٌ كَبِيْرٌ ﴿۱۲﴾ وَاَسِرُّوْا قَوْلَكُمْ
اَوِ اجْهَرُوْا بِهٖ ؕ اِنَّهٗ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿۱۳﴾ اَلَا يَعْلَمُ مَنْ خَلَقَ ؕ وَهُوَ اللَّطِيْفُ
الْخَبِيْرُ ﴿۱۴﴾ هُوَ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ ذَلُوْلًا فَامْشُوْا فِيْ مَنَاكِبِهَا وَكُلُوْا مِنْ
رِّزْقِهٖ ؕ وَاِلَيْهِ النُّشُوْرُ ﴿۱۵﴾

तर्जुमा : "बेशक जो लोग अपने परवरदिगार से ग़ायबाना तौर पर डरते रहते हैं उनके लिये बख़्शिश है और बड़ा स़वाब। (12) तुम अपनी बातों को छिपाओ या ज़ाहिर करो वो तो सीनों की पौशीदगियों को भी बख़ूबी जानता है। (13) क्या वो भी बेइल्म हो सकता है जो ख़ुद ख़ालिक़ हो? फिर बारीक बीन और बाख़बर भी हो। (14) वो अल्लाह तआला जिसने तुम्हारे लिये ज़मीन को पस्त व मुतीअ कर दिया ताकि तुम उसकी राहों में चलते-फिरते रहो और अल्लाह तआला की रोज़ियाँ खाओ-पियो, उसी की तरफ़ तुम्हें जी कर उठ खड़ा होना है।" (15)

अल्लाह तआला से ग़ायबाना डरने की फ़ज़ीलत (आयत : 12-15) : अल्लाह तआला उन लोगों को ख़ुशख़बरी दे रहा है जो अपने रब के सामने खड़े होने से डरते रहते हैं, गो तन्हाई में हों, जहाँ किसी की निगाहें उन पर न पड़ सकें, ताहम ख़ौफ़े इलाही से किसी नाफ़रमानी के काम को नहीं करते, न इताअत व इबादत से जी चुराते हैं, उनके गुनाह भी वो माफ़ फ़रमा देगा और ज़बरदस्त सवाब और बेहतरीन अज्र इनायत फ़रमायेगा। जैसे बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस़ में है, 'जिन सात शख़्सों को जनाबे बारी अपने अर्श का साया उस दिन देगा जिस दिन उसके सिवा कोई साया न होगा, उनमें से एक वो है जिसे कोई माल व जमाल वाली औरत ज़िनाकारी की तरफ़ बुलाये और वो कह दे कि मैं अल्लाह तआला से डरता हूँ और उसे भी जो इस तरह पोशीदगी से सदक़ा करे कि दायें हाथ के ख़र्च की ख़बर बायें हाथ को भी न लगे।' (सहीह बुख़ारी, किताबुल अज़ान, बाब मन जलस फ़िल्मस्जिदि यन्तज़िरुस्सलात : 660, सहीह मुस्लिम : 1031)

मुस्नद बज़्ज़ार में है कि सहाबा (रज़ि.) ने एक मर्तबा अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल! हमारे दिलों की जो कैफ़ियत आपके सामने होती है आपके बाद वो नहीं रहती। आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'ये बताओ रब के साथ तुम्हारा क्या ख़्याल रहता है?' जवाब दिया कि ज़ाहिर-बातिन अल्लाह तआला ही को रब मानते हैं। आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'जाओ फिर ये निफ़ाक़ नहीं।' (ज़ईफ़ : मुस्नद बज़्ज़ार : 52, व सनदहू ज़ईफ़ुन फ़ीहिल हारिस़ बिन उबैद अबू क़ुदामा अल्इयादी व हुव ज़ईफ़ुन ज़अ्अफ़हुल जुम्हूर, मुस्नद अबी यअ्ला : 3369, मज्मउज़्ज़वाइद : 1/34)

अल्लाह तआला सब कुछ जानता है : फिर फ़रमाता है कि तुम्हारी छिपी-खुली बातों का मुझे इल्म है दिलों के ख़तरों से भी आगाह हूँ, ये नामुम्किन है कि जो ख़ालिक़ हो वो आलिम न हो, मख़्लूक़ से ख़ालिक़ बेख़बर हो, वो तो बड़ा बारीक बीन और बेहद ख़बर रखने वाला है। उसके बाद अपनी नेमत का इज़हार करता है कि ज़मीन को उसने तुम्हारे लिये मुसख़्ख़र कर दिया, वो सुकून के साथ ठहरी हुई है। हिल-जुलकर तुम्हें नुक़सान नहीं पहुँचाती। पहाड़ों की मेख़ें उसमें गाड़ दी हैं, पानी के चश्मे उसमें जारी कर दिये हैं, रास्ते उसमें मुहैया कर दिये हैं। क़िस्म-क़िस्म के नफ़ा उसमें रख दिये हैं, फल और अनाज उसमें से निकल रहा है। जिस जगह तुम जाना चाहो जा सकते हो, तरह-तरह की लम्बी-चौड़ी सूदमन्द तिजारतें कर रहे हो, तुम्हारी कोशिश वो बार आवर करता है और तुम्हें अपनी रोज़ियाँ उन अस्बाब से दे रहा है। मालूम हुआ कि अस्बाब हासिल करने की कोशिश तवक्कल के ख़िलाफ़ नहीं।

मुस्नद अहमद की हदीस़ में है, 'अगर तुम अल्लाह तआला की ज़ात पर पूरा-पूरा भरोसा करो तो वो तुम्हें उस तरह रोज़ियाँ दे, जिस तरह परिन्दों को दे रहा है कि अपने घोंसलों से ख़ाली पेट निकलते हैं और आसूदा हाल वापस जाते हैं।' (हसन : तिर्मिज़ी, किताबुज़्ज़ुहद, बाब फ़ित्तवक्कल अलल्लाह : 2344, इब्ने माजह : 4164, अहमद : 1/30,52, इब्ने हिब्बान : 730)

पस उनका सुबह-शाम आना-जाना और रिज़्क़ की तलाश करना भी तवक्कल में दाख़िल समझा

गया क्योंकि अस्बाब का पैदा करने वाला, उन्हें आसान करने वाला वही अल्लाह तआला वाहिद है, उसी की तरफ़ क़यामत के दिन लौटना है। हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) वग़ैरह तो मनाकिब से मुराद रास्ते-कोने और इधर-उधर की जगहें लेते हैं। (अत्तबरी : 23/512)

और क़तादा (रह.) वग़ैरह से मरवी है कि मुराद पहाड़ हैं। हज़रत बशीर बिन कअब (रह.) ने इस आयत की तिलावत की और अपनी लौण्डी से जिससे उन्हें औलाद हुई थी फ़रमाया कि अगर मनाकिब की सहीह तफ़्सीर तुम बता दो तो तुम आज़ाद हो, उसने कहा, मुराद इससे पहाड़ हैं। आप (रह.) ने हज़रत अबू दरदा (रज़ि.) से पूछा, जवाब मिला कि ये तफ़्सीर सहीह है।

***

ءَاَمِنۡتُمۡ مَّنۡ فِى السَّمَآءِ اَنۡ يَّخۡسِفَ بِكُمُ الۡاَرۡضَ فَاِذَا هِىَ تَمُوۡرُ ۝١٦ اَمۡ اَمِنۡتُمۡ مَّنۡ فِى السَّمَآءِ اَنۡ يُّرۡسِلَ عَلَيۡكُمۡ حَاصِبًا ؕ فَسَتَعۡلَمُوۡنَ كَيۡفَ نَذِيۡرِ ۝١٧ وَلَقَدۡ كَذَّبَ الَّذِيۡنَ مِنۡ قَبۡلِهِمۡ فَكَيۡفَ كَانَ نَكِيۡرِ ۝١٨ اَوَلَمۡ يَرَوۡا اِلَى الطَّيۡرِ فَوۡقَهُمۡ صٰٓفّٰتٍ وَّيَقۡبِضۡنَ ؔؕ مَا يُمۡسِكُهُنَّ اِلَّا الرَّحۡمٰنُ ؕ اِنَّهٗ بِكُلِّ شَىۡءٍۢ بَصِيۡرٌ ۝١٩

तर्जुमा : ''क्या तुम इस बात से बेख़ौफ़ हो गये हो कि आसमानों वाला तुम्हें ज़मीन में धंसा दे और अचानक ज़मीन जुम्बिश करने लगे। (16) या क्या तुम्हें इस बात का खटका नहीं कि आसमानों वाला तुम पर पत्थर बरसा दे? फिर तो तुम्हें मालूम ही हो जायेगा कि मेरा डराना कैसा था? (17) इनसे पहले के लोगों ने भी झुठलाया था, तो देखो उन पर मेरा अज़ाब कैसा कुछ हुआ? (18) क्या ये अपने ऊपर पर खोले हुए और कभी-कभी समेटे हुए उड़ने वाले परिन्दों को नहीं देखते? उन्हें अल्लाह रहमान ही (हवा व फ़िज़ा में) थामे हुए है, बेशक हर चीज़ उसकी निगाह में है।'' (19)

अल्लाह के अज़ाब से बेख़ौफ़ नहीं होना चाहिये (आयत 16-19) : इन आयतों में भी अल्लाह तबारक व तआला अपने लुत्फ़ व रहम का बयान फ़रमा रहा है कि लोगों के कुफ़्र व शिर्क की बिना पर वो तरह-तरह के दुनियवी अज़ाबों पर क़ादिर है लेकिन उसका हुक्म व अफ़्व है कि वो अज़ाब नहीं करता। जैसे और जगह फ़रमाया, (وَلَوۡ يُؤَاخِذُ اللّٰهُ النَّاسَ بِمَا كَسَبُوۡا مَا تَرَكَ عَلٰى ظَهۡرِهَا مِنۡ دَآبَّةٍ مُّسَمًّى) (सूरह फ़ातिर 35 : 45) 'अगर अल्लाह तआला लोगों को उनकी बुराइयों पर पकड़ लेता तो रूए ज़मीन पर किसी

को बाक़ी न छोड़ता, लेकिन वो एक मुक़र्ररह वक़्त तक उन्हें मोहलत दिये हुए है। जब उनका वो वक़्त आ जायेगा तो अल्लाह तआला उन मुज्रिम बन्दों से आप समझ लेगा।' यहाँ भी फ़रमाया कि ज़मीन इधर-उधर हो जाती और हिलने और कांपने लग जाती और ये सारे के सारे उसमें धंसा दिये जाते। या उन पर ऐसी आन्धी भेज दी जाती जिस में पत्थर होते और उनके दिमाग़ तोड़ दिये जाते।

जैसे और जगह है, (اَفَاَمِنۡتُمۡ اَنۡ يَّخۡسِفَ بِكُمۡ جَانِبَ الۡبَرِّ) (सूरह बनी इस्राईल 17 : 68) 'क्या तुम निडर हो गये कि ज़मीन के किसी किनारे में तुम धंस जाओ या तुम पर वो पत्थर बरसाये और कोई न हो जो तुम्हारी वकालत कर सके।' यहाँ भी फ़रमान है कि उस वक़्त तुम्हें मालूम हो जायेगा कि मेरी धमकियों को और डराने को न मानने का अन्जाम क्या होता है? तुम आप देख लो कि पहले लोगों ने भी न माना और इंकार करके मेरी बातों की तक्ज़ीब की तो उनका किस क़द्र बुरा और इबरतनाक अन्जाम हुआ। तुम मेरी क़ुदरतों का रोज़मर्रा का ये मुशाहिदा क्या नहीं देख रहे हो कि परिन्दे तुम्हारे सरों पर उड़ते-फिरते हैं, कभी दोनों परों से कभी किसी को रोक कर फिर क्या मेरे सिवा कोई और उन्हें थामे हुए है? मैंने हवाओं को मुसख़्ख़र कर दिया है और ये मुअल्लक़ उड़ते-फिरते हैं, ये भी मेरा लुत्फ़ व करम और रहमत व नेमत है। मख़्लूक़ात की हाजतें ज़रूरतें उनकी इस्लाह और बेहतरी की निगरान और कफ़ील में ही हूँ जैसे और जगह फ़रमाया, (اَلَمۡ يَرَوۡا اِلَى الطَّيۡرِ مُسَخَّرٰتٍ فِىۡ جَوِّ السَّمَآءِ) (सूरह नहल 16 : 79) 'क्या उन्होंने उन परिन्दों को नहीं देखा जो आसमान व ज़मीन के दरम्यान मुसख़्ख़र हैं जिनका थामने वाला बजुज़ (सिवाय) ज़ाते बारी तआला के और कोई नहीं, यक़ीनन इसमें ईमानदारों के लिये बड़ी-बड़ी निशानियाँ हैं।

***

اَمَّنۡ هٰذَا الَّذِىۡ هُوَ جُنۡدٌ لَّـكُمۡ يَنۡصُرُكُمۡ مِّنۡ دُوۡنِ الرَّحۡمٰنِ‌ؕ اِنِ الۡـكٰفِرُوۡنَ اِلَّا فِىۡ
غُرُوۡرٍ‌ۚ ﴿۲۰﴾ اَمَّنۡ هٰذَا الَّذِىۡ يَرۡزُقُكُمۡ اِنۡ اَمۡسَكَ رِزۡقَهٗ‌ ۚ بَلْ لَّجُّوۡا فِىۡ عُتُوٍّ وَّنُفُوۡرٍ ﴿۲۱﴾
اَفَمَنۡ يَّمۡشِىۡ مُكِبًّا عَلٰى وَجۡهِهٖۤ اَهۡدٰٓى اَمَّنۡ يَّمۡشِىۡ سَوِيًّا عَلٰى صِرَاطٍ مُّسۡتَقِيۡمٍ ﴿۲۲﴾
قُلۡ هُوَ الَّذِىۡۤ اَنۡشَاَكُمۡ وَجَعَلَ لَـكُمُ السَّمۡعَ وَالۡاَبۡصَارَ وَالۡاَفۡـِٕدَةَ‌ ؕ قَلِيۡلًا مَّا
تَشۡكُرُوۡنَ ﴿۲۳﴾ قُلۡ هُوَ الَّذِىۡ ذَرَاَكُمۡ فِى الۡاَرۡضِ وَاِلَيۡهِ تُحۡشَرُوۡنَ ﴿۲۴﴾ وَيَقُوۡلُوۡنَ
مَتٰى هٰذَا الۡوَعۡدُ اِنۡ كُنۡتُمۡ صٰدِقِيۡنَ ﴿۲۵﴾ قُلۡ اِنَّمَا الۡعِلۡمُ عِنۡدَ اللّٰهِ ۖ وَاِنَّمَاۤ اَنَا نَذِيۡرٌ

مُّبِيْنٌ ﴿٢٦﴾ فَلَمَّا رَاَوْهُ زُلْفَةً سِيْٓـَٔتْ وُجُوْهُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَقِيْلَ هٰذَا الَّذِيْ كُنْتُمْ بِهٖ تَدَّعُوْنَ ﴿٢٧﴾

तर्जुमा : "सिवाय अल्लाह तआला के तुम्हारा वो कौनसा लश्कर है जो तुम्हारी मदद कर सके? काफ़िर तो सरासर धोखे में है। (20) अगर अल्लाह तआला अपनी रोज़ी रोक ले तो बताओ तो कौन है जो फिर तुम्हें रोज़ियाँ देगा? बल्कि काफ़िर तो सरकशी और बिदकने पर अड़ गये हैं। (21) अच्छा वो शख़्स ज़्यादा हिदायत वाला है जो अपने मुँह के बल औन्धा होकर चले या वो जो सीधा पैरों के बल राहेरास्त पर चल रहा हो? (22) कह दे कि वही अल्लाह तआला है जिसने तुम्हें पैदा किया और तुम्हारे कान, आँखें और दिल बनाये हैं, तुम बहुत ही कम शुक्रगुज़ारी करते हो। (23) कह दे कि वही (अल्लाह) है जिसने तुम्हें ज़मीन में फैला दिया और उसी की तरफ़ तुम इकट्ठे किये जाओगे। (24) काफ़िर पूछते हैं कि वो वादा कब ज़ाहिर होगा? अगर तुम सच्चे हो तो बताओ। (25) तू कह दे कि उसका इल्म तो अल्लाह तआला ही को है मैं तो सिर्फ़ खुले तौर पर आगाह कर देने वाला हूँ। (26) जब ये लोग उस वादे को क़रीबतर पा लेंगे उस वक़्त उन काफ़िरों के चेहरे बिगाड़ दिये जायेंगे और कह दिया जायेगा कि यही है जिसे तुम तलब किया करते थे। (27)

बातिल अक़ीदे की तर्दीद (आयत 20-27) : अल्लाह तआला मुश्रिकों के उस अक़ीदे की तर्दीद कर रहा है जो वो ख़्याल करते थे कि जिन बुज़ुर्गों की वो इबादत करते हैं वो उनकी इम्दाद कर सकते हैं और वो उन्हें रोज़िया पहुँचा सकते हैं। तो फ़रमाता है कि सिवाय अल्लाह तआला के न तो कोई मदद दे सकता है न रोज़ी पहुँचा सकता है न बचा सकता है काफ़िरों का ये अक़ीदा सिर्फ़ एक धोखा है। अगर अब अल्लाह तबारक व तआला तुम्हारी रोज़ियाँ रोक ले तो फिर कोई भी उन्हें जारी नहीं कर सकता, देने-लेने पर पैदा करने और फ़ना करने पर, रिज़्क़ देने और मदद पर सिर्फ़ अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल वह्दहू ला शरीक लहू को ही क़ुदरत है, ये लोग ख़ुद उसे दिल से जानते हैं। ताहम आमाल में उसके साथ दूसरों को शरीक करते हैं। हक़ीक़त ये है कि ये कुफ़्फ़ार अपनी गुमराही कज रवी, गुनाह और सरकशी में बहे-चले जाते हैं। उनकी तबीअतों में ज़िद्द तकब्बुर और हक़ से इंकार बल्कि हक़ की अदावत बैठ चुकी है, यहाँ तक कि भली बातों का सुनना भी उन्हें गवारा नहीं, अमल करना तो कहाँ? फिर मोमिन व काफ़िर की मिसाल बयान फ़रमाता है कि काफ़िर की मिसाल तो ऐसी है जैसे कोई शख़्स कमर कुबड़ी करके सर झुकाये नज़रें नीची किये जा रहा है न राह देखता है न उसे मालूम है कि कहाँ जा रहा है बल्कि हैरान-परेशान राह भूला और हक्का-बक्का है और मोमिन की मिसाल ऐसी है जैसे कोई शख़्स सीधी राह पर सीधा खड़ा हुआ चल रहा है रास्ता ख़ुद साफ़ और बिल्कुल सीधा है ये

शख़्स ख़ुद उसे बख़ूबी जानता है और बराबर सहीह तौर पर अच्छी चाल से चल रहा है।

यही हाल उनका क़यामत के दिन होगा कि काफ़िर तो ओन्धे मुँह जहन्नम की तरफ़ जमा किये जायेंगे और मुसलमान इज़्ज़त के साथ जन्नत में पहुँचाये जायेंगे। जैसे और जगह है, (اُحْشُرُوا الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا وَ اَزْوَاجَهُمْ وَمَا كَانُوْا يَعْبُدُوْنَ) (सूरह साफ़्फ़ात 37 : 22) 'ज़ालिमों को और उन जैसों को और उनके उन माबूदों को जो अल्लाह के सिवा थे जमा करके जहन्नम का रास्ता दिखा दो....।' मुस्नद अहमद में है रसूलुल्लाह (ﷺ) से पूछा गया कि हुज़ूर! लोग मुँह के बल चलाकर किस तरह हश्र किये जायेंगे? आपने फ़रमाया, 'जिसने पैरों के बल चलाया है वो मुँह के बल चलाने पर भी क़ादिर है।' (ज़ईफ़ुन जिद्दा : अहमद : 3/167, लेकिन हज़रत अनस रज़ि. से ही सहीह सनद के साथ सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरतुल फ़ुरक़ान, बाब क़ौलुहू अल्लज़ीन युहशरून अला वुजूहिहिम इला जहन्नम : 4760, सहीह मुस्लिम : 2806 में एक रिवायत है।)

अल्लाह तआला वो है जिसने तुम्हें पहली मर्तबा जबकि तुम कुछ न थे पैदा किया। तुम्हें कान, आँख और दिल दिये, यानी अक़्ल व इदराक तुममें पैदा किया, लेकिन तुम बहुत ही कम शुक्रगुज़ारी करते हो। यानी अपनी उन कुव्वतों को अल्लाह तआला की हुक्म बरदारी में और उसकी नाफ़रमानियों से बचने में बहुत ही कम ख़र्च करते हो। अल्लाह ही है जिसने तुम्हें ज़मीन में फैला दिया तुम्हारी ज़बानें अलग-अलग, तुम्हारे रंग-रूप अलग-अलग, तुम्हारी शक्लो-सूरतों में इख़्तिलाफ़ और तुम ज़मीन के चप्पे-चप्पे पर बसा दिये गये। फिर उस परागन्दगी और बिखरने के बाद वो वक़्त भी आयेगा कि तुम सब उसके सामने ला खड़े कर दिये जाओगे उसने जिस तरह तुम्हें इधर-उधर फैला दिया है उसी तरह एक तरफ़ समेट लेगा और जिस तरह अव्वलन उसने तुम्हें पैदा किया दोबारा तुम्हें लौटायेगा। फिर बयान होता है कि काफ़िर जो मरकर दोबारा जीने के क़ाइल नहीं, वो इस दूसरी ज़िन्दगी को महाल और नामुम्किन समझते हैं। इस का बयान सुनकर ऐतिराज़ करते हैं कि अच्छा फिर वो वक़्त कब आयेगा जिसकी हमें ख़बर दे रहे हो अगर सच्चे हो तो बता दो कि इस परागन्दगी के बाद इज्तिमाअ कब होगा?

पैग़म्बर का काम आगाह कर देना है : अल्लाह तआला अपने नबी से फ़रमाता है कि उन्हें जवाब दो कि इसका इल्म मुझे नहीं कि क़यामत कब क़ायम होगी? उसे तो सिर्फ़ वही अल्लामुल ग़ुयूब ही जानता है। हाँ इतना मुझे कहा गया है कि वो वक़्त आयेगा ज़रूर। मेरी हैसियत सिर्फ़ ये है कि मैं तुम्हें ख़बरदार कर दूँ और उस दिन की हौलनाकियों से मुत्तलअ कर दूँ। मेरा फ़र्ज़ तो सिर्फ़ तुम्हें पहुँचा देना था जिसे मैं बिहम्दिल्लाह अदा कर चुका हूँ। फिर इरशादे बारी तआला होता है कि जब क़यामत क़ायम होने लगेगी और कुफ़्फ़ार उसे अपनी आँखों देख लेंगे और मालूम कर लेंगे कि अब वो क़रीब आ गई, क्योंकि हर आने वाली चीज़ आ कर ही रहती है गो देर-सवेर आये जब ये उसे आ लगी हुई पा लेंगे जैसे अब तक झुठलाते रहे तो उन्हें बहुत बुरा लगेगा क्योंकि अपनी ग़फ़लत का नतीजा सामने देखने लगेंगे और क़यामत की हौलनाकियाँ बदहवास किये हुए होंगी, आसार सब सामने होंगे उस वक़्त उनसे बतौरे डांट के और बतौरे ज़लील करने के कहा जायेगा यही है जिसकी तुम जल्दी कर रहे थे।

قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ اَهْلَكَنِيَ اللّٰهُ وَمَنْ مَّعِيَ اَوْ رَحِمَنَا ۙ فَمَنْ يُّجِيْرُ الْكٰفِرِيْنَ مِنْ عَذَابٍ اَلِيْمٍ ﴿٢٨﴾ قُلْ هُوَ الرَّحْمٰنُ اٰمَنَّا بِهٖ وَعَلَيْهِ تَوَكَّلْنَا ۚ فَسَتَعْلَمُوْنَ مَنْ هُوَ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٢٩﴾ قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ اَصْبَحَ مَآؤُكُمْ غَوْرًا فَمَنْ يَّاْتِيْكُمْ بِمَآءٍ مَّعِيْنٍ ﴿٣٠﴾

तर्जुमा : "तू कह! अच्छा अगर मुझे और मेरे साथियों को अल्लाह तआला हलाक कर दे या हम पर रहम करे, बहर सूरत ये तो बताओ कि काफ़िरों को दर्दनाक अ़ज़ाबों से कौन बचायेगा? (28) तू कह कि वही रहमान है! हम तो उस पर ईमान ला चुके और उसी पर हमारा भरोसा है तुम्हें अ़न्क़रीब मालूम हो जायेगा कि सरीह गुमराही में कौन है (हम या तुम)। (29) तू कह कि अच्छा ये तो बताओ कि अगर तुम्हारे पीने का पानी ज़मीन चूस जाये तो कौन है जो तुम्हारे लिये निथरा हुआ जारी पानी लाये?" (30)

काफ़िरों को अ़ज़ाबे अलीम से कौन बचायेगा? (आयत:28-30) : अल्लाह तआला फ़रमाता है कि ऐ नबी! उन मुश्रिकों से कहो जो अल्लाह तआला की नेमतों का इंकार कर रहे हैं कि तुम जो इस बात की तमन्ना में हो कि हमें नुक़सान पहुँचे, तो फ़र्ज़ करो कि हमें अल्लाह तआला की तरफ़ से नुक़सान पहुँचा, या उसने मुझ पर और मेरे साथियों पर रहम किया लेकिन उससे तुम्हें क्या, सिर्फ़ इस बात से तुम्हारा छुटकारा तो नहीं हो सकता? तुम्हारी निजात की सूरत ये तो नहीं? निजात तो मौक़ूफ़ है तौबा करने पर, अल्लाह तआला की तरफ़ झुकने पर, उसके दीन को मान लेने पर। हमारे बचाव या हलकात पर तुम्हारी निजात नहीं तुम हमारा ख़्याल छोड़कर अपनी बख़्शिश की सूरत तलाश करो।

पानी अल्लाह तआला की नेमत : फिर फ़रमाया हम रब्बुल आ़लमीन रहमान व रहीम पर ईमान ला चुके अपने तमाम कामों में हमारा भरोसा और तवक्कल उसी की पाक ज़ात पर है। जैसे इरशाद है, (فَاعْبُدْهُ وَتَوَكَّلْ عَلَيْهِ) (सूरह हूद 11 : 123) 'उसी की इबादत कर और उसी पर भरोसा कर, अब तुम अ़न्क़रीब जान लोगे कि दुनिया और आख़िरत में फ़लाह व बहबूद किसे मिलती है और नुक़सान व ख़ुसरान में कौन पड़ता है?' रब की रहमत किस पर है और हिदायत पर कौन है? अल्लाह तआला का ग़ज़ब किस पर है और बुरी राह पर कौन है? फिर फ़रमाता है अगर उस पानी को जिसके पीने पर इंसान की ज़िन्दगी का दारो-मदार है ज़मीन चूस ले यानी ज़मीन से निकले ही नहीं गो तुम खोदते-खोदते थक जाओ तो सिवाय अल्लाह तआला के कोई है जो बहने वाला और उबलने वाला और जारी होने वाला पानी तुम्हें दे सके। (हदीस़ में है कि इस आयत के जवाब में अल्लाहु रब्बुल आ़लमीन कहना चाहिये) यानी अल्लाह तआला के सिवा इस पर क़ादिर कोई नहीं वही है जो अपने फ़ज़्ल व करम से पाक-साफ़ निथरे हुए और साफ़ पानी को ज़मीन पर जारी करता है। जो इधर से उधर तक फिर जाता है और बन्दों की हाजतों को पूरी करता है। ज़रूरत के मुताबिक़ हर जगह बआसानी मुहैया हो जाता है, फ़ल्हम्दुलिल्लाह!

अल्लाह तआला के फ़ज़्ल व करम से सूरह मुल्क की तफ़सीर ख़त्म हुई फ़ल्हम्दुलिल्लाहि रब्बिल आ़लमीन!

FLOW CHART
तरतीबी नक्श-ए-रब्त

MACRO-STRUCTURE
नज़्मे-जली

सूरह क़लम - 68

आयात : 52, मक्की, पैराग्राफ : 7

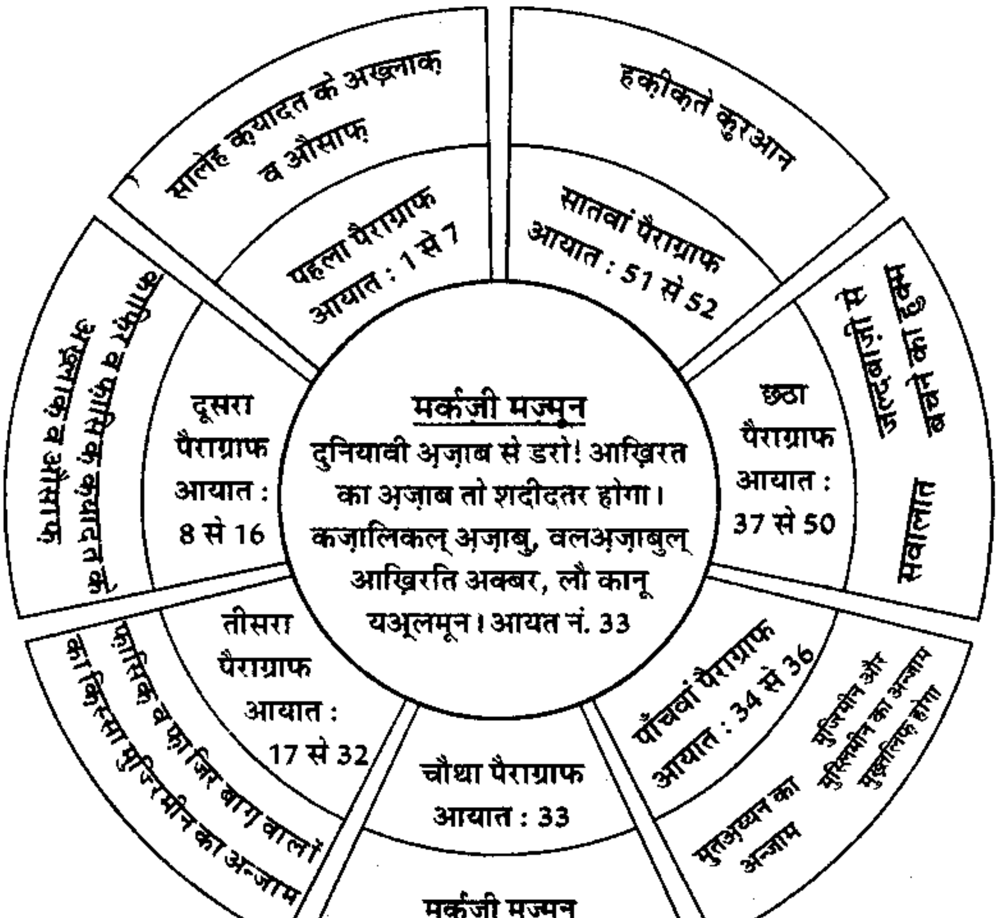

तफ़्सीर सूरह क़लम

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ ○

तर्जुमा : ''शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है।''

نٓ وَالۡقَلَمِ وَمَا يَسۡطُرُوۡنَ ① مَاۤ اَنۡتَ بِنِعۡمَةِ رَبِّكَ بِمَجۡنُوۡنٍ ② وَاِنَّ لَكَ لَاَجۡرًا
غَيۡرَ مَمۡنُوۡنٍ ③ وَاِنَّكَ لَعَلٰى خُلُقٍ عَظِيۡمٍ ④ فَسَتُبۡصِرُ وَيُبۡصِرُوۡنَ ⑤ بِاَيِّكُمُ
الۡمَفۡتُوۡنُ ⑥ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ اَعۡلَمُ بِمَنۡ ضَلَّ عَنۡ سَبِيۡلِهٖ وَهُوَ اَعۡلَمُ بِالۡمُهۡتَدِيۡنَ ⑦

तर्जुमा : ''नून और क़सम है क़लम की और उसकी जो कुछ वो (फ़रिश्ते) (फ़रिश्तों से मुराद वो फ़रिश्ते हैं जो कि कातिबुल आमाल हैं) लिखते हैं। (1) तू अपने रब के फ़ज़्ल से दीवाना नहीं है। (2) बेशक तेरे लिये बेइन्तिहा सवाब है। (3) और बेशक तू बहुत बड़े (उम्दा) अख़लाक़ पर है। (4) पस अब तू भी देख लेगा और ये भी देख लेंगे। (5) कि तुममें से मज्नून (पागल) कौन है? (6) बेशक तेरा रब अपनी राह से बहकने वालों को ख़ूब जानता है और वो राह याफ़्ता लोगों को भी बख़ूबी जानता है।'' (7)

नून का मफ़्हूम (आयत : 1-7) : नून वग़ैरह जैसे हुरूफ़े हिज्जा का मुफ़स्सल बयान सूरह बक़रह के शुरू में गुज़र चुका है इसलिये यहाँ दोहराने की ज़रूरत नहीं। कहा गया है कि यहाँ नून से मुराद वो बड़ी मछली है जो एक मुहीत आलमे पानी पर है जो सातों ज़मीनों को उठाये हुए है। इब्ने अब्बास (रज़ि.) से मरवी है कि सबसे पहले अल्लाह तआला ने क़लम को पैदा किया और उससे फ़रमाया, लिख! उसने कहा, क्या लिखूँ? फ़रमाया, तक़दीर लिख डाल। पस उस दिन से लेकर क़यामत तक जो कुछ होने वाला है उस पर क़लम जारी हो गया। फिर अल्लाह तआला ने मछली पैदा की और पानी के अबख़ुरे बुलंद किये जिससे आसमान बने और ज़मीन को उस मछली की पीठ पर रखा, मछली ने हरकत की जिससे ज़मीन भी हिलने लगी, पस ज़मीन पर पहाड़ गाड़कर उसे मज़बूत और साकिन कर दिया, फिर आपने इस आयत की तिलावत की। (हाकिम : 2/498, वहुव हदीसुन मौक़ूफ़ सहीह व रवाहु शौबा अनिल आमश बिही)

मतलब ये है कि यहाँ नून से मुराद ये मछली है। तबरानी में मरफ़ूअन मरवी है कि सबसे पहले अल्लाह तआला ने क़लम को और मछली को पैदा किया। क़लम ने पूछा कि मैं क्या लिखूँ? हुक्म हुआ, हर वो चीज़ जो क़यामत तक होने वाली है। फिर आपने पहली आयत की तिलावत की। (ज़ईफ़ : मुअजम अल्कबीर : 12227, फ़ीहि अबू हबीब ज़ैद बिन अल्मुहतदी अल्मरवज़ी ज़करल ख़तीब फ़ी तारीख़ि बग़दाद व लम अजिद मन वस्सक़हू फ़हुव मज्हूलुल हाल, मज्मउज़्ज़वाइद : 7/131)

पस नून से मुराद ये मछली है और क़लम से मुराद ये क़लम है। इब्ने असाकिर की हदीस़ में है, 'सबसे पहले अल्लाह तआला ने क़लम को पैदा किया फिर नून यानी दवात को। फिर क़लम से फ़रमाया लिख ले! उसने पूछा क्या? फ़रमाया, जो हो रहा है और जो होने वाला है अमल, रिज़्क़, उम्र, मौत वग़ैरह। पस क़लम ने सब कुछ लिख लिया।' यही मुराद है इस आयत में। फिर क़लम पर मुहर लगा दी। अब वो क़यामत तक न चलेगा। फिर अक़्ल को पैदा किया और फ़रमाया, मुझे अपनी इज़्ज़त की क़सम! अपने दोस्तों में तो मैं तुझे कमाल तक पहुँचाऊँगा और अपने दुश्मनों में तुझे नाक़िस रखूँगा। मुजाहिद (रह.) फ़रमाते हैं कि ये मशहूर था कि नून से मुराद वो मछली है जो सातवीं ज़मीन के नीचे है।

बग़वी (रह.) वग़ैरह मुफ़स्सिरीन फ़रमाते हैं कि उस मछली की पीठ पर एक चट्टान है जिसकी मौटाई आसमान व ज़मीन के बराबर है। उस पर एक बैल है जिसके चालीस हज़ार सींग हैं, उसकी पीठ पर सातों ज़मीन और उनकी तमाम मख़्लूक़ है, वल्लाहु आलम!

और तअज्जुब तो ये है कि उन कुछ मुफ़स्सिरीन ने इस हदीस़ को भी इन ही मअनों में महमूल किया है जो मुस्नद अहमद वग़ैरह में है कि जब अब्दुल्लाह बिन सलाम (रज़ि.) को ख़बर मिली कि रसूलुल्लाह (ﷺ) मदीना आ गये हैं तो वो आप (ﷺ) के पास आये और बहुत कुछ सवालात किये। कहा कि मैं वो बातें पूछना चाहता हूँ जिन्हें नबियों के सिवा और कोई नहीं जानता। बतलाइये क़यामत की पहली निशानी क्या है? और जन्नतियों का पहला खाना क्या है? और क्या वजह है कि कभी बच्चा अपने बाप की तरफ़ खिचता है कभी माँ की तरफ़? हुज़ूर (ﷺ) ने फ़रमाया, 'ये बातें अभी-अभी जिब्रईल (अलै.) ने मुझे बता दीं।' इब्ने सलाम (रज़ि.) कहने लगे, फ़रिश्तों में से यही फ़रिश्ता है जो यहूदियों का दुश्मन है। आपने फ़रमाया, 'सुनो! क़यामत की पहली निशानी एक आग का निकलना है जो लोगों को मश्रिक़ की तरफ़ से मग़्रिब ले जायेगी और जन्नतियों का पहला खाना मछली की कलेजी की ज़्यादती है और मर्द का पानी औरत के पानी पर साबिक़ आ जाये तो लड़का होता है और जब औरत का पानी मर्द के पानी पर सबक़त कर जाये तो वही खींच लेती है।' (सहीह बुख़ारी, किताब अहादीसुल अम्बिया, बाब ख़ल्क़ु आदम व ज़ुर्रिय्यातिही : 3329, अहमद : 3/108, इब्ने हिब्बान : 7161)

दूसरी हदीस़ में इतनी ज़्यादती है कि पूछा, जन्नतियों के उस खाने के बाद उन्हें क्या मिलेगा? फ़रमाया, 'जन्नती बैल ज़िब्ह किया जायेगा जो जन्नत में चरता-चुगता रहा था।' पूछा, उन्हें पानी कौनसा मिलेगा? फ़रमाया, 'सल्सबील नामी नहर का।' (सहीह मुस्लिम, किताबुल हैज़, बाब बयानु सिफ़ति मनिय्यिर्रजुलि वल्मरअत : 315, हाकिम : 3/481, इब्ने हिब्बान : 7422)

ये भी कहा गया है कि मुराद नून से नूर की तख़्ती है। एक मुरसल ग़रीब हदीस़ में है कि हुज़ूर (ﷺ) ने ये आयत पढ़कर फ़रमाया कि इससे मुराद नूर की तख़्ती और नूर का क़लम है जो क़यामत तक के अहवाल पर चल चुका है। इब्ने जुरैज फ़रमाते हैं, मुझे ख़बर दी गई है कि ये नूरानी क़लम सौ साल की तूलानी रखता है और ये भी कहा गया है कि नून से मुराद दवात है और क़लम से मुराद क़लम है। हसन और क़तादा (रह.) भी यही फ़रमाते हैं। एक बहुत ही ग़रीब मरफ़ूअ हदीस़ में भी ये मरवी है जो इब्ने अबी हातिम में है कि अल्लाह तआला ने नून को पैदा किया और वो दवात है। (ज़ईफ़ुन जिद्दा : अश्शरीअ़तुल आजुरी : 179, इसकी सनद में हसन बिन यहया अल्ख़ुशनी दमिश्क़ी सख़्त मजरूह है।)

हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) फ़रमाते हैं, अल्लाह तआला ने नू यानी दवात को पैदा किया और क़लम को पैदा किया। फिर फ़रमाया, लिख! उसने पूछा क्या लिखूँ? फ़रमाया, जो क़यामत तक होने वाला है, आमाल ख़्वाह नेक हों ख़्वाह बद, रोज़ी ख़्वाह हलाल हो ख़्वाह हराम। फिर ये भी कि कौनसी चीज़ दुनिया में कब जायेगी, किस क़द्र रहेगी, कैसे निकलेगी? फिर अल्लाह तआला ने बन्दों पर मुहाफ़िज़ फ़रिश्ते मुक़र्रर किये और किताब पर दारोग़े मुक़र्रर किये। मुहाफ़िज़ फ़रिश्ते हर दिन के अमल ख़ाजिन फ़रिश्तों से पूछ कर लिख लेते हैं। जब रिज़्क़ ख़त्म हो जाता है, उम्र पूरी हो जाती है, अजल आ पहुँचती है तो मुहाफ़िज़ फ़रिश्ते दारोग़े के फ़रिश्तों के पास आकर पूछते हैं बताओ आज के दिन का क्या सामान है? वो कहते हैं कि बस इस शख़्स के लिये हमारे पास अब कुछ भी नहीं रहा। ये सुनकर फ़रिश्ते नीचे उतरते हैं, तो देखते हैं कि वो मर गया। इस बयान के बाद हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने फ़रमाया, तुम तो अ़रब हो क्या तुमने क़ुरआन में मुहाफ़िज़ फ़रिश्तों की बाबत ये नहीं पढ़ा, (إِنَّا كُنَّا نَسْتَنسِخُ مَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٢٩﴾) (सूरह जासिया 45 : 29) 'हम तुम्हारे आमाल को असल से नक़ल करके लिख लिया करते थे।'

क़लम का ज़िक्र : ये तो लफ़्ज़ 'नून' के बारे में बयान। अब क़लम की निस्बत सुनिये। बज़ाहिर मुराद यहाँ आम क़लम है जिससे लिखा जाता है, जैसे और जगह फ़रमाने आलीशान है अल्लज़ी अ़ल्ल-म बिल्क़लम (सूरह अ़लक़ 96 : 4) 'अल्लाह तआला ने क़लम से लिखना सिखाया।' पस इसकी क़सम खाकर इस बात पर आगाही की जाती है कि मख़्लूक़ पर मेरी एक नेमत ये भी है कि मैंने उन्हें लिखना सिखाया। जिससे उ़लूम तक उसकी रसाई हो सके। इसीलिये इसके बाद फ़रमाया, वमा यस्तुरून यानी उस चीज़ की क़सम जो लिखते हैं। हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से इसकी तफ़्सीर ये भी मरवी है कि उस चीज़ की जो जानते हैं।

सुद्दी (रह.) फ़रमाते हैं कि मुराद इससे फ़रिश्तों का लिखना है जो बन्दों के आमाल लिखते हैं और मुफ़स्सिरीन कहते हैं कि मुराद इससे वो क़लम है जो क़ुदरती तौर पर चला और तक़्दीरें लिखीं। आसमान व ज़मीन की पैदाइश से पचास हज़ार बरस पहले और इस क़ौल की दलील में ये जमाअ़त वो हदीसें वारिद करती है जो क़लम के ज़िक्र में मरवी हैं। हज़रत मुजाहिद (रह.) फ़रमाते हैं कि क़लम से मुराद वो क़लम है जिससे ज़िक्र लिखा गया।

अख़्लाक़े नबवी (ﷺ) के कुछ वाक़ियात : फिर फ़रमाता है कि ऐ नबी! तू बिहम्दिल्लाह दीवाना नहीं जैसे

कि तेरी क़ौम के जाहिल मुन्किरीने हक़ कहते हैं बल्कि तेरे लिये अज्रे अज़ीम है और सवाबे बेपायाँ है। जो न ख़त्म हो न टूटे न कटे क्योंकि तूने हक़्क़े रिसालत अदा कर दिया है और हमारी राह में सख़्त से सख़्त मुसीबतें झेली हैं हम तुझे बेहिसाब बदला देंगे। तू बहुत बड़े ख़ुल्क़ पर है यानी दीने इस्लाम पर और बेहतरीन अदब पर है।

हज़रत आइशा (रज़ि.) से अख़्लाक़े नबवी (ﷺ) के बारे में सवाल होता है तो आप जवाब देती हैं कि आप (ﷺ) का ख़ुल्क़ क़ुरआन था। सईद (रह.) फ़रमाते हैं, यानी जैसे कि क़ुरआन में है। (अत्तबरी : 23/529)

दूसरी हदीस में है हज़रत आइशा सिद्दीक़ा (रज़ि.) ने पूछा, क्या तूने क़ुरआन नहीं पढ़ा? साइल हज़रत सईद बिन हिशाम (रज़ि.) ने कहा, हाँ पढ़ा है। आपने फ़रमाया, बस तो आप (ﷺ) का ख़ुल्क़ क़ुरआन करीम था। मुस्लिम में ये हदीस पूरी-पूरी है। (सहीह मुस्लिम, किताब सलातुल मुसाफ़िरीन, बाब जामिउ सलातिल्लैलि वमन्नाम अन्हू औ मर्ज़ : 746) जिसे हम सूरह मुज़्ज़म्मिल की तफ़्सीर में बयान करेंगे, इन्शाअल्लाह।

बनू सुवाद के एक शख़्स ने हज़रत आइशा (रज़ि.) से यही सवाल किया था तो आप (रज़ि.) ने यही फ़रमाकर फिर आयत व इन्न-क लअ़ला ख़ुलुक़िन अ़ज़ीम तिलावत फ़रमाई। उसने कहा, कोई एक-आध वाक़िया तो बयान कीजिये। तो हज़रत आइशा (रज़ि.) ने फ़रमाया कि सुनो! एक मर्तबा मैंने भी आप (ﷺ) के लिये खाना पकाया और हज़रत हफ़्सा (रज़ि.) ने भी। मैंने अपनी लौण्डी से कहा कि देख! अगर मेरे खाने से पहले हज़रत हफ़्सा (रज़ि.) के यहाँ का खाना आ जाये तो तू गिरा देना। चुनाँचे उसने यही किया और बर्तन भी टूट गया। हुज़ूर (ﷺ) बिखरे हुए खाने को समेटने लगे और फ़रमाया, 'इस बर्तन के बदले साबित (सहीह) बर्तन तुम दो।' वल्लाह! और कुछ डांटा-डपटा नहीं। (ज़ईफ़ : अहमद : 6/111, इब्ने माजह, किताबुल अहकाम, बाब अल्हुक्मु फ़ीमन कसर शैआ : 2333, सनद में एक रावी मज्हूल है।)

मतलब इस हदीस का जो कई तुरूक (सनदों) से मुख़्तलिफ़ अल्फ़ाज़ में कई किताबों में है ये है कि एक तो आप (ﷺ) की जिबिल्लत और पैदाइश में ही अल्लाह तआला ने पसन्दीदा अख़्लाक़ बेहतरीन ख़स्लतें और पाकीज़ा आदतें रखी थीं तो इस तरह आप (ﷺ) का अमल क़ुरआन करीम पर ऐसा था कि गोया अहकामे क़ुरआन का मुजस्सम अमली नमूना आप हैं। हर हुक्म को बजा लाने और हर नही से रुक जाने में आप (ﷺ) की हालत ये थी कि गोया क़ुरआन में जो कुछ है वो आपकी आदतों और आप (ﷺ) के करीमाना अख़्लाक़ का बयान ही है। हज़रत अनस (रज़ि.) का बयान है कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) की दस साल तक ख़िदमत की लेकिन किसी दिन उफ़्फ़ तक नहीं फ़रमाया। किसी करने के काम को न करूँ या न करने के काम को कर गुज़रूँ तो भी डांट-डपट तो कुजा इतना भी न फ़रमाते कि ऐसा क्यों हुआ। (सहीह बुख़ारी, किताबुल अदब, बाब हसनुल ख़ुल्क़ वस्सख़ा : 6038, सहीह मुस्लिम : 2309, अबू दाऊद : 4774, अहमद : 3/255)

हुज़ूर (ﷺ) सबसे ज़्यादा ख़ुश ख़ुल्क़ थे। (सहीह मुस्लिम, किताबुल फ़ज़ाइल,: 2310)

हुज़ूर (ﷺ) की हथेली से ज़्यादा नर्म न तो रेशम है न कोई और चीज़। हुज़ूर (ﷺ) के पसीने से ज़्यादा ख़ुश्बू वाली चीज़ मैंने तो कोई नहीं सूंघी, न मुश्क और न इत्र। (सहीह बुख़ारी, किताबुस्सौम, बाब मा यज़्कुरु मिन सौमिन्नबी व इफ़्तारिही : 1973, सहीह मुस्लिम : 2330)

सहीह बुख़ारी में है कि हज़रत बराअ (रज़ि.) फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) सबसे ज़्यादा ख़ूबसूरत और सबसे ज़्यादा ख़लीक़ थे। आप (ﷺ) का क़द न तो बहुत लम्बा था न आप (ﷺ) पस्त क़ामत थे। (सहीह बुख़ारी, किताबुल मनाक़िब, बाब सिफ़तुन्नबी : 3549, सहीह मुस्लिम : 2337)

इस बारे में और भी बहुत सी हदीसें हैं।

शमाइले तिर्मिज़ी में हज़रत आइशा (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने अपने हाथ से न तो कभी किसी ख़ादिम या गुलाम को मारा न बीवी-बच्चों को न किसी और को। हाँ अल्लाह तआला की राह का जिहाद अलग चीज़ है। जब कभी दो कामों में आप (ﷺ) को इख़्तियार दिया जाता तो आप (ﷺ) उसे पसंद फ़रमाते जो ज़्यादा आसान होता। हाँ ये और बात है कि उसमें कुछ गुनाह होता तो आप (ﷺ) उससे बहुत दूर हो जाते। कभी भी हुज़ूर (ﷺ) ने अपना बदला किसी से नहीं लिया। हाँ ये और बात है कि कोई अल्लाह तआला की हुरमतों को तोड़ता हो तो आप (ﷺ) अल्लाह तआला के अहकाम जारी करने के लिये ज़रूर इन्तिक़ाम लेते। (सहीह : अहमद : 6/232, अबू दाऊद : 4786, असलुहू इन्द मुस्लिम : 2328, इस मआना की रिवायत सहीह बुख़ारी : 3560, सहीह मुस्लिम : 2328, में भी मौजूद है।)

मुसनद अहमद में है कि हुज़ूर (ﷺ) इरशाद फ़रमाते हैं, 'मैं बेहतरीन अख़्लाक़ और पाकीज़ा तरीन आदतों को पूरा करने के लिये आया हूँ।' (ज़ईफ़ : अहमद : 2/381, फ़ीहि मुहम्मद बिन अज्लान मुदल्लस व अन्अन)

फिर फ़रमाता है कि ऐ नबी! आप और आपके मुख़ालिफ़ और मुन्किर अभी-अभी जान लेंगे कि दरअसल बहका हुआ और गुमराह कौन था? जैसे और जगह है, (سَيَعْلَمُونَ غَدًا مَّنِ الْكَذَّابُ الْأَشِرُ ﴿٢٦﴾) (सूरह क़मर 54 : 26) 'उन्हें अभी कल ही मालूम हो जायेगा कि झूठा और शेख़ीबाज़ शरारती कौन था? जैसे और जगह है व इन्ना औ इय्याकुम् लअला हुदन् औ फ़ी ज़लालिम्-मुबीन 'हम या तुम हिदायत पर हैं या खुली गुमराही पर।' हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) फ़रमाते हैं, यानी ये हक़ीक़त क़यामत के दिन खुल जायेगी। (तफ़्सीर क़ुर्तुबी : 18/229)

आपसे मरवी है कि मफ़्तून मज्नून (दीवाने) को कहते हैं। (अत्तबरी : 23/531)

मुजाहिद (रह.) वग़ैरह का भी यही क़ौल है। (अत्तबरी : 23/531)

क़तादा (रह.) वग़ैरह फ़रमाते हैं यानी कौन शैतान से नज़दीकतर है? मफ़्तून के ज़ाहिरी मआना ये हैं कि जो हक़ से बहक जाये और गुमराह हो जाये अय्युकुम पर 'बा' को इसलिये दाख़िल किया गया है कि दलालत हो जाये कि फ़सतुब्सिरु व युब्सिरून में तज़्मीन फ़ैअल है तो तक़दीरी इबारत को मिलाकर तर्जुमा यूँ

हो जायेगा कि तू भी और वो भी अन्क़रीब जान लेंगे और तू भी और वो सब भी बहुत जल्दी मफ़्तून की ख़बर देंगे, वल्लाहु आलम! फिर फ़रमाया कि तुममें से बहकने वाले और राहेरास्त वाले सब अल्लाह तआला पर ज़ाहिर हैं उसे ख़ूब मालूम है कि राहेरास्त से किस का क़दम फिसल गया है।

***

فَلَا تُطِعِ الْمُكَذِّبِيْنَ ۝٨ وَدُّوْا لَوْ تُدْهِنُ فَيُدْهِنُوْنَ ۝٩ وَلَا تُطِعْ كُلَّ حَلَّافٍ
مَّهِيْنٍ ۝١٠ هَمَّازٍ مَّشَّآءٍۢ بِنَمِيْمٍ ۝١١ مَّنَّاعٍ لِّلْخَيْرِ مُعْتَدٍ اَثِيْمٍ ۝١٢ عُتُلٍّۢ بَعْدَ ذٰلِكَ زَنِيْمٍ
۝١٣ اَنْ كَانَ ذَا مَالٍ وَّبَنِيْنَ ۝١٤ اِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِ اٰيٰتُنَا قَالَ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ۝١٥
سَنَسِمُهٗ عَلَى الْخُرْطُوْمِ ۝١٦

तर्जुमा : "पस तू झुठलाने वालों की न माना (8) वो तो चाहते हैं कि तू ज़रा ढीला हो तो ये भी ढीले पड़ जायें। (9) और तू किसी ऐसे शख़्स का भी कहा न मानना जो ज़्यादा क़समें खाने वाला। (10) बेवक़ार कमीना, ऐब गो, चुग़लख़ोर। (11) भलाई से रोकने वाला, हद से बढ़ जाने वाला गुनहगार। (12) गर्दन कश फिर साथ ही मशहूर व बदनाम हो। (13) उसकी सरकशी सिर्फ़ इसलिये है कि वो माल वाला और बेटों वाला है। (14) जब उसके सामने हमारी आयतें पढ़ी जा रही हैं तो कह देता है कि ये तो अगलों के क़िस्से हैं। (15) हम भी उसकी नाक पर दाग़ देंगे।" (16)

बुरे अख़लाक़ की मज़म्मत (आयत : 8-16) : अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है कि ऐ नबी! जो नेमतें हमने तुझे दीं, जो सिराते मुस्तक़ीम और ख़ल्क़े अज़ीम हमने तुझे अता फ़रमाया, अब तुझे चाहिये कि हमारी न मानने वालों की तू न माना उनकी तो ऐन ख़ुशी है कि आप ज़रा भी नर्म पड़ें तो ये खिल-खिलें। और ये भी मतलब है कि ये चाहते हैं कि आप उनके माबूदाने बातिल की तरफ़ कुछ तो रुख़ करें, हक़ से ज़रा सा तू इधर-उधर हो जायें। फिर फ़रमाता है कि ज़्यादा क़समें खाने वाले कमीने शख़्स की भी न माना चूंकि झूठे शख़्स को अपनी ज़िल्लत और किज़्ब बयानी के ज़ाहिर हो जाने का डर रहता है, इसलिये वो क़समें खा-खाकर दूसरे को अपना यक़ीन दिलाना चाहता है, धबा-धब क़समों पर क़समें खाये चला जाता है और अल्लाह तआला के नामों को बेमौक़ा इस्तेमाल करता फिरता है।

हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) फ़रमाते हैं कि महीन से मुराद काज़िब है। (अत्तबरी : 23/533)

मुजाहिद (रह.) कहते हैं, ज़ईफ़ दिल वाला। हसन (रह.) कहते हैं हल्लाफ़ मुकाबिरा करने वाला और महीन ज़ईफ़ कमज़ोर हम्माज़िन ग़ीबत करने वाला, चुग़लख़ोर ख़ुद जो इधर की उधर लगाये और उधर की इधर ताकि फ़साद हो जाये, तबीअतों में बल और दिल में बेर आ जाये। रसूलुल्लाह (ﷺ) के रास्ते में दो क़ब्रें आ गईं आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'इन दोनों को अज़ाब हो रहा है और किसी बड़े अम्र पर नहीं, एक तो पेशाब करने में पर्दे का ख़्याल न रखता था दूसरा चुग़लख़ोर था।' (सहीह बुख़ारी, किताबुल वुज़ू, बाब मिनल कबाइरि अल्ला यस्ततिरु मिम्बौलिही : 216, सहीह मुस्लिम : 292)

रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़रमाते हैं, 'चुग़लख़ोर जन्नत में न जायेगा।' (सहीह बुख़ारी, किताबुल अदब, मा यक्रहू मिनन्नमीमह : 6056, सहीह मुस्लिम : 105, अबू दाऊद : 4871, तिर्मिज़ी : 2026, अहमद : 5/386)

दूसरी रिवायत में है कि हज़रत हुज़ैफ़ा (रज़ि.) ने ये हदीस उस वक़्त सुनाई थी जब आपसे कहा गया कि ये शख़्स ख़ुफ़िया पुलिस का आदमी है। (सहीह मुस्लिम, किताबुल ईमान, बाब बयानु ग़लिज़ तहरीमुन्नमीमा : 105, अहमद : 5/389)

मुस्नद अहमद की हदीस में है कि हुज़ूर (ﷺ) ने फ़रमाया, 'क्या मैं तुम्हें न बताऊँ कि तुममें सबसे भला शख़्स कौन है?' लोगों ने कहा, ज़रूर इरशाद फ़रमाइये। फ़रमाया, 'वो कि जब उन्हें देखा जाये, अल्लाह तआला याद आ जाये और सुन लो सबसे बदतर शख़्स वो है जो चुग़लख़ोर हो, दोस्तों में फ़साद डलवाने वाला हो, पाक-साफ़ लोगों को तोहमत लगाने वाला हो।' (हसन : अहमद : 6/459, हदीस नम्बर : 27599, शहर बिन हौशम हसनुल हदीसि वल्हम्दुलिल्लाह) तिर्मिज़ी में भी ये रिवायत है।

फिर उन बद लोगों के और नापाक ख़साइल बयान हो रहे हैं कि भलाइयों से बाज़ रहने वाला और बाज़ रखने वाला है, हलाल चीज़ों और हलाल कामों से हटकर हरामख़ोरी और हरामकारी में पड़ता है, गुनहगार, बद किरदार, मुहर्रिमात को इस्तेमाल करने वाला, बदख़ू, बद गो, जमा करने वाला और न देने वाला है।

मुस्नद अहमद की हदीस में है कि हुज़ूर (ﷺ) ने फ़रमाया, 'जन्नती लोग गिरे पड़े आजिज़ व ज़ईफ़ हैं जो अल्लाह तआला के यहाँ उस बुलंद मर्तबे पर हैं कि अगर वो क़सम खा बैठें तो अल्लाह तआला पूरी कर दे और जहन्नमी लोग सरकश मुतकब्बिर और ख़ुदबीन होते हैं।' (सहीह बुखारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरह नून वल्क़लम बाब उतुल्लिम् बअद ज़ालिक ज़नीम : 4918, सहीह मुस्लिम : 2853, तिर्मिज़ी : 2605, इब्ने माजह : 4116, अहमद : 4/306)

और हदीस में है, 'जमा करने वाले और न देने वाले बद गो और सख़्त ख़ुल्क़।' (सहीह : अहमद : 2/169, मज्मउज़्ज़वाइद : 10/396)

एक और रिवायत में है कि हुज़ूर (ﷺ) से पूछा गया उतुल्लिन ज़नीम कौन है? फ़रमाया, 'बद ख़ुल्क़, ख़ूब खाने पीने वाला, लोगों पर ज़ुल्म करने वाला, पेटू आदमी।' (ज़ईफ़ : अहमद : 4/227, व सनदहू ज़ईफ़

लिइरसालिही, अब्दुर्रहमान बिन ग़नम रह. मिनत्ताबिईन व बाक़िस्सनद हसन, मज्मउज़्ज़वाइद : 10/396)

लेकिन इस रिवायत को अक्सर रावियों ने मुरसल बयान किया है। दूसरी हदीस़ में है, उस नालायक़ शख़्स पर आसमान रोता है जिसे अल्लाह तआ़ला ने तन्दुरुस्ती दी, पेट भर खाने को दिया माल व जाह भी अ़ता फ़रमाई फिर भी लोगों पर ज़ुल्म व सितम कर रहा है। ये हदीस़ भी दो मुरसल तरीक़ों से मरवी है। ग़र्ज़ उ़तुल्लिन कहते हैं जिसका बदन सहीह हो ताक़तवर हो और ख़ूब खाने-पीने वाला ज़ोरदार शख़्स हो।

ज़नीम का मफ़्हूम : ज़नीम से मुराद बदनाम है जो बुराई में मशहूर हो। लुग़ते अ़रबी में ज़नीम उसे कहते हैं जो किसी क़ौम में समझा जाता हो लेकिन दरअसल उसका न हो, अ़रब शाइ़रों ने इसे इसी मआ़ना में बांधा है। यानी जिसका नसब सहीह न हो। कहा गया है कि मुराद इससे अख़नस बिन शरीक़ स़क़फ़ी है जो बनू ज़ुहरा का हलीफ़ था और कुछ कहते हैं ये अस्वद बिन अ़ब्दे यग़ूस़ ज़ुहरी है। इक्रिमा (रह.) फ़रमाते हैं, वलदुज़्ज़िना मुराद है। ये भी बयान हुआ है कि जिस तरह एक बकरी जो तमाम बकरियों में से अलग-थलग अपना चरा हुआ कान अपनी गर्दन पर लटकाये हुए हो तो वो एक निगाह में पहचान ली जाती है उसी तरह काफ़िर मोमिनों में पहचान लिया जाता है। इसी तरह के और भी बहुत से अक़्वाल हैं लेकिन ख़ुलासा सबका सिर्फ़ इसी क़द्र है कि ज़नीम वो शख़्स है जो बुराई से मशहूर हो और उ़मूमन ऐसे लोग इधर-उधर से मिले हुए होते हैं जिनके सहीह नसब का और हक़ीक़ी बाप का पता नहीं होता, ऐसों पर शैतान का ग़ल्बा बहुत ज़्यादा रहा करता है, जैसे हदीस़ में है कि ज़िना की औलाद जन्नत में नहीं जायेगी। (ज़ईफ़ : अहमद : 2/203, हदीस़ नम्बर : 6892, जाबान मज्हूलुल हाल लम युवस़्सिक़्हू ग़ैरु इब्नि हिब्बान वला युअ़रिफ़ु लहू सिमाअ़ बिन अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन अल्आ़स व लिल्हदीसि तुरूक़ कस़ीरतू मअ़लूमातिही कुल्लिही, मज्मउज़्ज़वाइद : 6/257, हिलियतुल औलिया : 3/307, अल्मौज़ूआत लिइब्निल जौज़ी : 3/110)

और रिवायत में है कि ज़िना की औलाद तीन बुरे लोगों की बुराई का मज्मूआ़ है अगर वो भी अपने माँ-बाप के से काम करे। (ज़ईफ़ुन जिद्दा : अहमद : 6/109, इब्राहीम बिन इस्हाक़ हुव अबू इस्हाक़ इब्राहीम बिन अल्फ़ज़ल अल्मख़्ज़ूमी व हुव मतरूक अबू दाऊद : 3963, व सनदहू सहीह बिलफ़्ज़ि वलदुज़्ज़िना शर्रुस़्सलास़ा, मुश्किलुल आस़ार : 1/391, हाकिम : 2/214)

फिर फ़रमाया उसकी उन शरारतों की वजह ये है कि ये मालदार और बेटों का बाप बन गया है। हमारी इस नेमत का गुन-गाना तो कहाँ हमारी आयतों को झुठलाता है और तौहीन करके कहता फिरता है कि ये तो पुराने अफ़साने हैं। दूसरी जगह अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया है, (ذَرْنِيْ وَ مَنْ خَلَقْتُ وَحِيْدًا ﴿١١﴾) (सूरह मुद्दस़्सिर 74 : 11) 'मुझे छोड़ दे और उसे जिसे मैंने यकता व तन्हा पैदा किया है और बहुत सा माल दिया है और हाज़िर बाश लड़के दिये हैं और भी बहुत कशाइश दे रखी है फिर भी उसकी तमअ़ है कि मैं उसे और दूँ हर्गिज़ ऐसा नहीं हो सकता। ये तो मेरी आयतों का मुख़ालिफ़ है। मैं इसे अ़न्क़रीब बदतरीन मुसीबत में डालूँगा। उसने ग़ौर व फ़िक्र करके अन्दाज़ा लगाया ये तबाह हो कितनी बुरी तजवीज़ उसने सोची। मैं फिर कहता हूँ ये

बर्बाद हो उसने कैसी बुरी तजवीज़ की, उसने फिर नज़र डाली और तुर्शरू होकर मुँह बना लिया फिर मुँह फेरकर ऐंठने लगा और कह दिया कि ये कलामुल्लाह तो पुराना नक़ल किया हुआ जादू है, साफ़ ज़ाहिर है कि ये इंसानी कलाम है इसकी बात पर मैं भी इसे सक़र में डालूँगा। तुझे क्या मालूम कि सक़र क्या है? न वो किसी को बाक़ी रखती है, न छोड़ती है जिस्म पर लपट जाती है उस पर उन्नीस फ़रिश्ते मुतअय्यन हैं।' इसी तरह यहाँ भी फ़रमाया कि उसकी नाक पर हम दाग़ लगायेंगे यानी उसे हम इस क़द्र रुस्वा करेंगे कि उसकी बुराई किसी पर पौशीदा न रहेगी। हर एक उसे पहचान लेगा जैसे निशानदार नाक वाले को एक निगाह में हज़ारों आदमियों में लोग पहचान लेते हैं और जो दाग़ छिपायेगा तो छिप न सकेगा। ये भी कहा गया है कि बद्र वाले दिन उसकी नाक पर तलवार लगेगी और ये भी कहा गया है कि क़यामत वाले दिन जहन्नम की मुहर लगेगी यानी मुँह काला कर दिया जायेगा। तो नाक से मुराद पूरा चेहरा हुआ।

इमाम अबू जाफ़र इब्ने जरीर (रह.) ने इन तमाम अक़्वाल को नक़ल करके फ़रमाया है कि उन सबमें तत्बीक़ इस तरह हो जाती है कि ये तमाम उमूर उसमें हो जायेंगे। ये भी होगा और वो भी होगा, दुनिया में भी रुस्वा होगा, सचमुच नाक पर निशान लगेगा। आख़िरत में भी निशानदार मुज्रिम बनेगा। फ़िल्वाक़ेअ ये है भी बहुत दुरुस्त। इब्ने अबी हातिम में फ़रमाने रसूल है कि बन्दा हज़ारों बरस तक अल्लाह तआला के यहाँ मोमिन लिखा रहता है लेकिन मरता इस हालत में है कि अल्लाह तआला उस पर नाराज़ होता है और बन्दा अल्लाह तआला के यहाँ काफ़िर हज़ारों साल तक लिखा रहता है फिर मरते वक़्त अल्लाह तआला उससे ख़ुश हो जाता है। जो शख़्स ऐबगोई और चुग़लख़ोरी की हालत में मरेगा और जो लोगों को बदनाम करने वाला होगा तो क़यामत के दिन उसकी नाक पर दोनों होंटों की तरफ़ से निशान लगा दिया जायेगा जो उस मुज्रिम की अलामत बन जायेगा।

***

إِنَّا بَلَوْنٰهُمْ كَمَا بَلَوْنَآ أَصْحٰبَ الْجَنَّةِ ۚ إِذْ أَقْسَمُوا لَيَصْرِمُنَّهَا مُصْبِحِينَ ﴿١٧﴾ وَلَا
يَسْتَثْنُونَ ﴿١٨﴾ فَطَافَ عَلَيْهَا طَآئِفٌ مِّنْ رَّبِّكَ وَهُمْ نَآئِمُونَ ﴿١٩﴾ فَأَصْبَحَتْ
كَالصَّرِيمِ ﴿٢٠﴾ فَتَنَادَوْا مُصْبِحِينَ ﴿٢١﴾ أَنِ اغْدُوا عَلٰى حَرْثِكُمْ إِنْ كُنْتُمْ صٰرِمِينَ
﴿٢٢﴾ فَانْطَلَقُوا وَهُمْ يَتَخٰفَتُونَ ﴿٢٣﴾ أَنْ لَّا يَدْخُلَنَّهَا الْيَوْمَ عَلَيْكُمْ مِّسْكِينٌ ﴿٢٤﴾
وَّغَدَوْا عَلٰى حَرْدٍ قٰدِرِينَ ﴿٢٥﴾ فَلَمَّا رَأَوْهَا قَالُوٓا إِنَّا لَضَآلُّونَ ﴿٢٦﴾ بَلْ نَحْنُ

مَحْرُوْمُوْنَ ۝٢٧ قَالَ اَوْسَطُهُمْ اَلَمْ اَقُلْ لَّكُمْ لَوْلَا تُسَبِّحُوْنَ ۝٢٨ قَالُوْا سُبْحٰنَ رَبِّنَآ
اِنَّا كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ۝٢٩ فَاَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ يَّتَلَاوَمُوْنَ ۝٣٠ قَالُوْا يٰوَيْلَنَآ اِنَّا
كُنَّا طٰغِيْنَ ۝٣١ عَسٰى رَبُّنَآ اَنْ يُّبْدِلَنَا خَيْرًا مِّنْهَآ اِنَّآ اِلٰى رَبِّنَا رٰغِبُوْنَ ۝٣٢ كَذٰلِكَ
الْعَذَابُ ۭ وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ اَكْبَرُ ۘ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ۝٣٣

तर्जुमा : ''बेशक हमने उन्हें उसी तरह आज़मा लिया जिस तरह हमने बाग़ वालों को आज़माया था जबकि उन्होंने क़समें खाईं कि सुबह होते ही उस बाग़ के फल उतार लेंगे। (17) और इन्शाअल्लाह तआला न कहा। (18) पस उस पर तेरे रब की जानिब से एक बला चारों तरफ़ घूम गई और ये सो ही रहे थे। (19) पस वो बाग़ ऐसा हो गया जैसे कटी हुई खेती। (20) सुबह होते ही उन्होंने एक-दूसरे को आवाज़ दी। (21) कि अगर तुम्हें फल उतारने हैं तो अपनी खेती पर सवेरे ही सवेरे चल पड़ो। (22) फिर ये सब चुपके-चुपके ये बातें करते हुए चले। (23) कि आज के दिन कोई मिस्कीन तुम्हारे पास न आये। (24) और लपके हुए सुबह-सुबह पहुँच गये समझ रहे थे कि हम क़ाबू पा गये। (25) जब उन्होंने बाग़ को देखा तो कहने लगे, यक़ीनन हम रास्ता भूल गये। (26) नहीं-नहीं! बल्कि हमारी क़िस्मत फूट गई। (27) उन सबमें जो बेहतर था उसने कहा कि मैं तुमसे न कहता था कि तुम अल्लाह तआला की पाकीज़गी क्यों नहीं बयान करते? (28) तो सब कहने लगे, हमारा रब पाक है बेशक हम ही ज़ालिम थे। (29) फिर वो एक-दूसरे की तरफ़ रुख़ करके आपस में मलामत करने लगे। (30) कहने लगे, हाय अफ़सोस! यक़ीनन हम सरकश थे। (31) क्या अजब है कि हमारा रब हमें इससे बेहतर बदला दे दे हम तो अब अपने रब से ही आरज़ू रखते हैं। (32) यूँ ही आती है आफ़त और आख़िरत की आफ़त बहुत बड़ी है काश उन्हें समझ होती। (33)

बाग़ वालों का तफ़्सीली वाक़िया (आयत : 18-33) : यहाँ उन काफ़िरों की जो हुज़ूर (ﷺ) की नुबूवत को झुठला रहे थे, मिसाल बयान हो रही है कि जिस तरह ये बाग़ वाले थे कि अल्लाह तआला की नेमत की नाशुक्री की और अल्लाह तआला के अज़ाबों में अपने आपको डाल दिया। यही हालत उन काफ़िरों की है कि अल्लाह तआला की नेमत यानी हुज़ूर (ﷺ) की पैग़म्बरी की नाशुक्री यानी इंकार ने उन्हें भी अल्लाह तआला की नाराज़ी का मुस्तहिक़ कर दिया है। तो फ़रमाया कि हमने उन्हें भी आज़मा लिया जिस तरह हमने बाग़ वालों को आज़माया था। जिस बाग़ में तरह-तरह के फल-मेवे वग़ैरह थे। उन लोगों ने आपस में क़समें

खाईं कि सुबह से पहले ही पहले रात के वक़्त फल उतार लेंगे ताकि फ़क़ीरों, मिस्कीनों और साइलों को पता न चले जो वो आ खड़े हों और हमें उनको भी देना पड़े बल्कि तमाम फल और मेवे ख़ुद ही ले आयेंगे। अपनी इस तदबीर की कामयाबी पर उन्हें गुरूर था और इस ख़ुशी में फूले हुए थे। यहाँ तक कि अल्लाह तआला को भी भूल गये इन्शाअल्लाह तक किसी की ज़बान से न निकला। इसलिये उनकी ये क़सम पूरी न हुई। रात ही रात में उनके पहुँचने से पहले आसमानी आफ़त ने सारे बाग़ को जलाकर ख़ाकिसतर कर दिया। ऐसा हो गया जैसे स्याह रात और कटी हुई खेती। इसीलिये हुज़ूर (ﷺ) इरशाद फ़रमाते हैं, 'लोगो! गुनाहों से बचो, गुनाहों की शामत की वजह से इंसान उस रोज़ी से भी महरूम कर दिया जाता है जो उसके लिये तैयार कर दी गई है, फिर इन दोनों आयतों की तिलावत की कि ये लोग बसबब अपने गुनाह के अपने बाग़ के फल और उसकी पैदावार से बेनसीब हो गये।' (मौज़ूअ : फ़ीहि एलल मिन्हा उमर बिन सुबह वहुव मिन्हुम बिल्वज़अ)

सुबह के वक़्त ये आपस में एक-दूसरे को तअने देने लगे कि अगर फल उतारने का इरादा है तो अब देर न लगाओ सवेरे ही चल पड़ो। हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) फ़रमाते हैं कि ये बाग़ अंगूर का था। अब ये चुपके-चुपके बातें करते हुए चले ताकि कोई सुन न ले और ग़रीब-गुरबा को पता न लग जाये चूंकि उनकी सरगोशियाँ उस अल्लाह तआला से तो पौशीदा नहीं रह सकती थीं जो दिली इरादों से भी पूरी तरह वाक़िफ़ रहता है। वो बयान फ़रमाता है कि उनकी वो ख़ुफ़िया बातें ये थीं कि देखो! होशियार हो कोई मिस्कीन भनक पा कर कहीं आज न आ जाये, हर्गिज़ किसी फ़क़ीर को बाग़ में घुसने ही न देना। अब क़ुव्वत व शिद्दत के साथ पुख़्ता इरादे और ग़रीबों पर गुस्से के साथ अपने बाग़ को चले। सुद्दी (रह.) फ़रमाते हैं कि फ़रव उन की बस्ती का नाम था, लेकिन ये कुछ ज़्यादा ठीक नहीं मालूम होता। ये जानते थे कि अब हम फलों पर क़ाबिज़ हैं अभी उतारकर सब ले आयेंगे। लेकिन जब वहाँ पहुँचे तो हक्के-बक्के हो गये। देखते हैं कि लहलहाता हुआ हरा-भरा बाग़ मेवों से लदे हुए दरख़्त और पके हुए फल सब ग़ारत और बर्बाद हो चुके हैं। सारे बाग़ में आन्धी फिर गई है और तमाम बाग़ मेवों समेत जलकर कोयला हो गया है कोई फल आधी के दाम का भी नहीं रहा। सारी तरो-ताज़गी राख से बदल गई है। बाग़ सारा का सारा जल कर राख हो गया है दरख़्तों के काले-काले डरावने ठूठ खड़े हुए हैं, तो पहले तो समझे कि हम रास्ता भूल गये किसी और बाग़ में चले आये और ये मतलब भी हो सकता है कि हमारा तरीक़ेकार ग़लत था जिसका ये नतीजा है। फिर बग़ौर देखने से जब ये यक़ीन हो गया कि बाग़ तो ये हमारा ही है तब समझ गये और कहने लगे, है तो यही लेकिन हम बदक़िस्मत हैं हमारे नसीब में ही इसका फल और फ़ायदा नहीं। उन सब में जो अद्ल व इंसाफ़ वाला और भलाई और बेहतरी वाला था वो बोल पड़ा कि देखो मैं तो पहले ही तुमसे कहता था कि तुम इन्शाअल्लाह क्यों नहीं कहते? सुद्दी (रह.) फ़रमाते हैं कि उनके ज़माने में सुब्हानअल्लाह कहना भी इन्शाअल्लाह कहने के क़ायम मक़ाम था। इमाम इब्ने जरीर (रह.) फ़रमाते हैं कि इसके मआना ही इन्शाअल्लाह कहने के हैं और ये भी कहा गया है कि उनके बेहतर शख़्स ने उनसे कहा कि देखो मैंने तो तुम्हें पहले ही कह दिया था कि तुम क्यों अल्लाह तआला की पाकीज़गी और उसकी हम्द व सना नहीं करते? ये सुनकर अब वो कहने लगे, हमारा रब पाक है। बेशक हमने अपनी जानों

पर ज़ुल्म किया। अब इताअत बजा लाये जबकि अ़ज़ाब पहुँच चुका अब अपनी तक़सीर (कमज़ोरी) को माना जब सज़ा दे दी गई, अब तो एक-दूसरे को मलामत करने लगे कि हमने बहुत ही बुरा किया कि मिस्कीनों का हक़ मारना चाहा और अल्लाह तआ़ला की फ़रमांबरदारी से रुक गये। फिर सभी ने कहा कि कोई शक नहीं, हमारी सरकशी हद से बढ़ गई इसी वजह से अल्लाह का अ़ज़ाब आया।

फिर कहते हैं शायद हमारा रब हमें इससे बेहतर बदला दे यानी दुनिया में और ये भी मुम्किन है कि आख़िरत के ख़्याल से उन्होंने ये कहा हो, वल्लाहु आ़लम! कुछ सलफ़ का क़ौल है कि ये वाक़िया अहले यमन का है। हज़रत सईद बिन जुबैर (रह.) फ़रमाते हैं कि ये लोग ज़रवान के रहने वाले थे जो सनआ़ से छ: मील के फ़ासले पर एक बस्ती है और मुफ़स्सिरीन कहते हैं कि ये अहले हब्शा थे मज़्हबन अहले किताब थे ये बाग़ उन्हें उनके बाप के वरसे में मिला था। उसका ये दस्तूर था कि बाग़ की पैदावार में से बाग़ का ख़र्च निकालकर अपने और अपने बाल-बच्चों के लिये साल भर का ख़र्च रख कर बाक़ी नफ़ा अल्लाह तआ़ला के नाम सदक़ा कर देता था। उसके इन्तिक़ाल के बाद उन बच्चों ने आपस में मशवरा किया और कहा कि हमारा बाप तो बेवक़ूफ़ था जो इतनी बड़ी रक़म हर साल इधर-उधर देता था। हम उन फ़क़ीरों को अगर न दें और अपना माल बाक़ाइदा सम्भालें तो बहुत जल्द दौलतमन्द बन जायें ये इरादा उन्होंने पुख़्ता कर लिया तो उन पर वो अ़ज़ाब आया जिसने असल माल भी तबाह कर दिया और बिल्कुल ख़ाली हाथ रह गये। फिर फ़रमाता है जो शख़्स भी अल्लाह तआ़ला के हुक्मों का ख़िलाफ़ करे और अल्लाह तआ़ला की नेमतों में बुख़्ल करे और मिस्कीनों-मुहताजों का हक़ अदा न करे और अल्लाह तआ़ला की नेमतों की नाशुक्री करे उस पर उसी तरह के अ़ज़ाब नाज़िल होते हैं और ये तो दुनियवी अ़ज़ाब हैं आख़िरत के अ़ज़ाब तो अभी बाक़ी हैं जो सख़्ततर और बदतर हैं। बैहक़ी की एक हदीस़ में है रसूलुल्लाह (ﷺ) ने रात के वक़्त खेती काटने और बाग़ के फल उतारने से मना फ़रमा दिया है। (ज़ईफ़ : बैहक़ी : 9/290, ये रिवायत मुरसल यानी ज़ईफ़ है।)

***

إِنَّ لِلْمُتَّقِينَ عِندَ رَبِّهِمْ جَنَّٰتِ ٱلنَّعِيمِ ﴿٣٤﴾ أَفَنَجْعَلُ ٱلْمُسْلِمِينَ كَٱلْمُجْرِمِينَ ﴿٣٥﴾ مَا
لَكُمْ كَيْفَ تَحْكُمُونَ ﴿٣٦﴾ أَمْ لَكُمْ كِتَٰبٌ فِيهِ تَدْرُسُونَ ﴿٣٧﴾ إِنَّ لَكُمْ فِيهِ لَمَا
تَخَيَّرُونَ ﴿٣٨﴾ أَمْ لَكُمْ أَيْمَٰنٌ عَلَيْنَا بَٰلِغَةٌ إِلَىٰ يَوْمِ ٱلْقِيَٰمَةِ إِنَّ لَكُمْ لَمَا تَحْكُمُونَ ﴿٣٩﴾
سَلْهُمْ أَيُّهُم بِذَٰلِكَ زَعِيمٌ ﴿٤٠﴾ أَمْ لَهُمْ شُرَكَآءُ فَلْيَأْتُوا۟ بِشُرَكَآئِهِمْ إِن كَانُوا۟ صَٰدِقِينَ ﴿٤١﴾

तर्जुमा : "परहेज़गारों के लिये उनके रब के पास नेमतों वाली जन्नतें हैं। (34) क्या हम मुसलमानों को मिस्ल गुनहगारों के कर देंगे। (35) तुम्हें क्या हो गया? कैसे फ़ैसले कर रहे हो? (36) क्या तुम्हारे पास कोई किताब है जिसे तुम पढ़ते हो? (37) कि उसमें तुम्हारी मनमानी बातें हो या (38) तुमसे हमने कोई ऐसी क़समें खाईं हैं जो क़यामत तक बाक़ी रहें कि तुम्हारे लिये वो सब है जो तुम अपनी तरफ़ से मुक़र्रर कर लो? (39) उनसे पूछ तो कि उनमें से कौन इस बात का ज़िम्मेदार और दावेदार है? (40) क्या उनके कोई शरीक हैं? तो चाहिये कि अपने-अपने शरीकों को ले आयें अगर ये सच्चे हैं।" (41)

नेक और गुनहगार बराबर न होंगे (आयत : 34-41) : ऊपर चूंकि दुनियवी जन्नत वालों का हाल बयान हुआ था और अल्लाह तआला की नाफ़रमानी और उसके हुक्म का ख़िलाफ़ करने से उन पर जो बला और आफ़त आई उसका ज़िक्र हुआ था इसलिये अब उन मुत्तक़ी परहेज़गार लोगों का हाल ज़िक्र किया गया जिन्हें आख़िरत में जन्नतें मिलेंगी जिनकी नेमतें न फ़ना होंगी न घटेंगी न ख़त्म होंगी न सड़ेंगी न गलेंगी। फिर फ़रमाता है क्या हो सकता है कि मुसलमान और गुनहगार जज़ा में यकसाँ हो जायें? क़सम है ज़मीन व आसमान के रब की! कि ये नहीं हो सकता। क्या हो गया है तुम किस तरह ये चाहते हो? क्या तुम्हारे हाथों में अल्लाह तआला की तरफ़ से उतरी हुई कोई ऐसी किताब है ख़ुद तुम्हें भी महफ़ूज़ हो और अगलों के हाथों तुम पिछलों तक पहुँची हो और उसमें वही हो जो तुम्हारी चाहत है और जो तुम कह रहे हो? या हमारा कोई मज़बूत वादा और अहद तुमसे है कि तुम जो कुछ कह रहे हो वही होगा और तुम्हारी ये बेजा और ग़लत ख़्वाहिशें पूरी हो कर ही रहेंगी? उनसे ज़रा पूछो तो कि इस बात का कौन ज़ामिन है और किस के ज़िम्मे ये किफ़ालत है? न सही तुम्हारे जो झूठे माबूद हैं उन ही को अपनी सच्चाई के सुबूत में पेश करो।

***

يَوْمَ يُكْشَفُ عَنْ سَاقٍ وَّيُدْعَوْنَ إِلَى السُّجُوْدِ فَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ ﴿٤٢﴾ خَاشِعَةً
أَبْصَارُهُمْ تَرْهَقُهُمْ ذِلَّةٌ ۖ وَقَدْ كَانُوْا يُدْعَوْنَ إِلَى السُّجُوْدِ وَهُمْ سٰلِمُوْنَ ﴿٤٣﴾
فَذَرْنِيْ وَمَنْ يُّكَذِّبُ بِهٰذَا الْحَدِيْثِ ۖ سَنَسْتَدْرِجُهُمْ مِّنْ حَيْثُ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٤٤﴾
وَأُمْلِيْ لَهُمْ ۖ إِنَّ كَيْدِيْ مَتِيْنٌ ﴿٤٥﴾ أَمْ تَسْـَٔلُهُمْ أَجْرًا فَهُمْ مِّنْ مَّغْرَمٍ مُّثْقَلُوْنَ ﴿٤٦﴾
أَمْ عِنْدَهُمُ الْغَيْبُ فَهُمْ يَكْتُبُوْنَ ﴿٤٧﴾

तर्जुमा : "जिस दिन पिण्डली खोल दी जायेगी और वो सज्दे के लिये बुलाये जायेंगे तो सज्दा न कर सकेंगे। (42) निगाहें नीची होंगी और उन पर ज़िल्लत व ख़्वारी छा रही होगी। हालांकि ये सज्दे के लिये उस वक़्त भी बुलाये जाते थे जब कि सहीह सालिम थे। (43) मुझे और इस कलाम के झुठलाने वाले को छोड़ दे, हम उन्हें इस तरह आहिस्ता-आहिस्ता खींचेंगे कि उन्हें मालूम भी न होगा। (44) और मैं उन्हें ढील दूँगा, मेरी तदबीर बड़ी मज़बूत है। (45) क्या तू उनसे कोई उज्रत (बदला) चाहता है जिसके तावान (बोझ) से ये दबे जाते हों? (46) या क्या उनके पास इल्मे ग़ैब है जिसे वो लिखते हों? (47)

मुजिरम रोज़े क़यामत सज्दा न कर पायेगा (आयत : 42-47) : ऊपर चूंकि बयान हुआ था कि परहेज़गारों के लिये नेमतों वाली जन्नतें हैं इसलिये यहाँ बयान हो रहा है कि ये नेमतें उन्हें कब मिलेंगी? तो फ़रमाया कि उस दिन जिस दिन पिण्डली खोल दी जायेगी यानी क़यामत के दिन जो दिन बड़ी हौलनाकियों वाला ज़ल्ज़लों वाला, इम्तिहान वाला और आज़माइश वाला और बड़े-बड़े अहम उमूर के ज़ाहिर होने का दिन होगा। सहीह बुख़ारी में इस जगह हज़रत अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) की ये हदीस़ है कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना फ़रमाते थे, 'हमारा रब अपनी पिण्डली खोल देगा। पस हर मोमिन मर्द और हर मोमिन औरत सज्दे में गिर पड़ेंगे, हाँ दुनिया में जो लोग दिखाने-सुनाने के लिये सज्दे करते थे, वो भी सज्दा करना चाहेंगे, लेकिन उनकी कमर तख़्ते की तरह हो जायेगी, यानी सज्दा न कर सकेंगे।' (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरह नून वल्क़लम, बाब यौ-म युक्शफ़ु अन साक़ : 4919, सहीह मुस्लिम : 183, तिर्मिज़ी : 2598, इब्ने माजह : 179, अहमद : 3/16, इब्ने हिब्बान : 7377)

और दूसरी किताबों में भी है जो कई-कई सनदों से अल्फ़ाज़ के हेर-फेर के साथ मरवी है और ये हदीस़ लम्बी है और मशहूर है। हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) फ़रमाते हैं कि ये दिन तकलीफ़ दुख और शिद्दत का दिन होगा। (हसन : हाकिम : 2/499) जिसको यहाँ मुहावरे में बयान किया गया है। (इब्ने जरीर)

और इब्ने जरीर (रह.) इसे दूसरी सनद से शक के साथ बयान करते हैं कि इब्ने मसऊ़द (रज़ि.) या इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) युक्शफ़ु अ़न साक़ की तफ़्सीर बहुत बड़ा अ़ज़ीमुश्शान अम्र मरवी है। जैसे शाइर का क़ौल है, शालतिल् हरबु अ़न साक़ यहाँ भी लड़ाई की अ़ज़मत और बड़ाई बयान की गई है। मुजाहिद (रह.) से भी यही मरवी है। हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) फ़रमाते हैं कि क़यामत के दिन ये घड़ी बहुत सख़्त होगी। आप फ़रमाते हैं कि अम्र बहुत सख़्त बड़ी घबराहट वाला और हौलनाक है। आप फ़रमाते हैं कि जिस वक़्त अम्र खोल दिया जायेगा आ़माल ज़ाहिर हो जायेंगे और ये खुलना आख़िरत का आ जाना है और इससे मुराद काम का खुल जाना है। ये सब रिवायतें इब्ने जरीर में हैं। उसके बाद ये हदीस़ है कि नबी (ﷺ) ने इसकी तफ़्सीर में फ़रमाया, 'मुराद बहुत बड़ा नूर है। लोग उसके सामने सज्दे में गिर पड़ेंगे।' (ज़ईफ़ुन जिद्दा : मुस्नद अबी यअ़ला : 7283, रौह बिन जनाब मजरूह) ये हदीस़ अबू यअ़ला में भी है और इसकी सनदों में एक मुब्हम रावी है। वल्लाहु आ़लम!

सरकश नज़रें न उठा सकेंगे : फिर फ़रमाया आज के दिन उन लोगों की आँखें ऊपर को न उठेंगी और ज़लील व पस्त हो जायेंगे, क्योंकि दुनिया में बड़े सरकश और किब्र व गुरूर वाले थे। सेहत और सलामती की हालत में दुनिया में जब उन्हें सज्दे के लिये बुलाया जाता था तो रुक जाते थे जिसकी सज़ा ये मिली कि आज सज्दा करना चाहते हैं लेकिन नहीं कर सकते। पहले कर सकते थे मगर नहीं करते थे। अल्लाह तआला की तजल्ली देखकर मोमिन सब सज्दे में गिर पड़ेंगे लेकिन काफ़िर व मुनाफ़िक़ सज्दा न कर सकेंगे। कमर तख़्ता हो जायेगी झुकेगी नहीं। बल्कि पीठ के बल चित गिर पड़ेंगे। यहाँ भी उनकी हालत मोमिनों के ख़िलाफ़ थी, वहाँ भी ख़िलाफ़ ही रहेगी। फिर फ़रमाया मुझे और मेरी इस हदीस़ यानी क़ुरआन के झुठलाने वालों को तू छोड़ दे, इसमें बड़ी वईद है और सख़्त डांट है कि तू ठहर तो जा मैं आप उनसे निपट लूँगा। देख तो सही कि किस तरह बतदरीज उन्हें पकड़ता हूँ। ये अपनी सरकशी और गुरूर में बढ़ते जायेंगे। मेरी ढील के राज़ को न समझेंगे और फिर एक दम ये पाप का घड़ा फूटेगा और मैं अचानक उन्हें पकड़ लूँगा, मैं उन्हें बढ़ाता रहूँगा। ये बदमस्त होते चले जायेंगे, वो उसे करामत समझेंगे, हालांकि होगी वो अहानत। जैसे और जगह है, (اَيَحْسَبُوْنَ اَنَّمَا نُمِدُّهُمْ) (सूरह मोमिनून 23 : 55) 'क्या उनका गुमान है कि माल व औलाद का बढ़ना उनके लिये हमारी जानिब से किसी भलाई की बिना पर है? नहीं बल्कि ये बेशऊर हैं।' और जगह फ़रमाया, (فَلَمَّا نَسُوْا مَا ذُكِّرُوْا بِهٖ) फ़लम्मा नसू मा ज़ुक्किरू बिही 'जब ये हमारे वअ़ज़ व पन्द (नसीहत) को भुला चुके तो हमने उन पर तमाम चीज़ों के दरवाज़े खोल दिये, यहाँ तक कि उन्हें जो दिया गया था उस पर इतराने लगे तो हमने उन्हें नागहानी पकड़ लिया और उनकी उम्मीदें मुन्क़तअ़ हो गईं।' (सूरह अन्आम 6 : 44) यहाँ भी इरशाद होता है कि मैं उन्हें ढील दूँगा, बढ़ाऊँगा और ऊँचा करूँगा, ये मेरा दाव है और मेरी तदबीर मेरे मुख़ालिफ़ों और मेरे नाफ़रमानों के साथ बड़ी है।

बुख़ारी व मुस्लिम में है हुज़ूर (ﷺ) ने फ़रमाया, 'अल्लाह तआला ज़ालिम को मोहलत देता है फिर जब पकड़ता है तो छोड़ता नहीं।' फिर आप (ﷺ) ने ये आयत पढ़ी, (وَكَذٰلِكَ اَخْذُ رَبِّكَ اِذَآ اَخَذَ الْقُرٰى وَهِيَ ظَالِمَةٌ ۭ اِنَّ اَخْذَهٗٓ اَلِيْمٌ شَدِيْدٌ ؁) (सूरह हूद 11 : 102) 'इसी तरह तेरे रब की पकड़ बड़ी दर्दनाक और बहुत सख़्त है।' (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरह हूद बाब क़ौलुहू व कज़ालिक अख़्ज़ु रब्बिक इज़ा अख़ज़ल क़ुरा : 4686, सहीह मुस्लिम : 2583, तिर्मिज़ी : 3110, इब्ने माजह : 4018, इब्ने हिब्बान : 5175)

फिर फ़रमाया तू कुछ उनसे उज्रत और बदला तो माँगता ही नहीं, जो उन पर भारी पड़ता हो और जिसके तावान से ये झुके जाते हों, न उनके पास कोई इल्मे ग़ैब है जिसे ये लिख रहे हों। इन दोनों जुम्लों की तफ़्सीर सूरह तूर में गुज़र चुकी है। ख़ुलासा मतलब ये है कि ऐ नबी! आप उन्हें अल्लाह अ़ज़्ज़ व जल्ल की तरफ़ बग़ैर उज्रत और बग़ैर माल तलबी के और बग़ैर बदले की चाहत के बुला रहे हैं, आपकी ग़र्ज़ सिवाय स़वाब हासिल करने के और कोई नहीं तो उस पर भी ये लोग सिर्फ़ अपनी जहालत और सरकशी की वजह से आपको झुठला रहे हैं।

فَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ وَلَا تَكُنْ كَصَاحِبِ الْحُوتِ إِذْ نَادٰى وَهُوَ مَكْظُومٌ ﴿٤٨﴾ لَوْلَا
أَنْ تَدَارَكَهُ نِعْمَةٌ مِّنْ رَّبِّهِ لَنُبِذَ بِالْعَرَآءِ وَهُوَ مَذْمُومٌ ﴿٤٩﴾ فَاجْتَبٰهُ رَبُّهُ فَجَعَلَهُ
مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿٥٠﴾ وَإِنْ يَّكَادُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَيُزْلِقُوْنَكَ بِأَبْصَارِهِمْ لَمَّا سَمِعُوا
الذِّكْرَ وَيَقُوْلُوْنَ إِنَّهُ لَمَجْنُوْنٌ ﴿٥١﴾ وَمَا هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿٥٢﴾

तर्जुमा : "पस तू अपने रब के हुक्म का सब्र से इन्तिज़ार कर और मछली वाले की तरह न हो जा जबकि उसने ग़मगीनी की हालत में दुआ की। (48) अगर उसे उसके रब का एहसान न पा लेता तो यक़ीनन वो बुरे हालों में बंजर ज़मीन में डाल दिया जाता। (49) उसे उसके रब ने फिर नवाज़ा और उसे नेककारों में कर दिया। (50) यक़ीनन इन मुन्किरों की चाहत है कि अपनी तेज़ निगाहों से तुझे फिसला दें, ये जब कभी क़ुरआन सुनते हैं तो कह देते हैं ये तो ज़रूर दीवाना है। (51) दरहक़ीक़त ये क़ुरआन तो तमाम जहान वालों के लिये सरासर नसीहत ही है।" (52)

हज़रत यूनुस (अलै.) का वाक़िया (आयत : 48-52) : अल्लाह तआला फ़रमाता है, ऐ नबी! अपनी क़ौम की ईज़ा पर और उनके झुठलाने पर सब्र व सिहार करो अन्क़रीब अल्लाह तआला का फ़ैसला होने वाला है आख़िरकार आपका और आपके मातहतों का ही ग़ल्बा होगा। दुनिया में भी और आख़िरत में भी देखो तुम मछली वाले नबी की तरह न होना। इससे मुराद यूनुस बिन मत्ता (अलै.) हैं जबकि वो अपनी क़ौम पर ग़ज़बनाक होकर निकल खड़े हुए, फिर जो हुआ सो हुआ। यानी आपका जहाज़ में सवार होना, मछली का आपको निगल जाना और समुन्द्र की तह में बैठ जाना और उस तह-ब-तह अन्धेरियों में इस क़द्र नीचे आपका समुन्द्र को अल्लाह तआला की पाकीज़गी बयान करते हुए सुनना और ख़ुद आपका भी पुकारना और (لَّآ إِلٰهَ إِلَّآ أَنْتَ سُبْحٰنَكَ إِنِّيْ كُنْتُ مِنَ الظّٰلِمِيْنَ) पढ़ना (सूरह अम्बिया 21 : 87) फिर आपकी दुआ का कुबूल होना और उससे निजात पाना वग़ैरह। जिस वाक़िये का मुफ़स्सल बयान पहले गुज़र चुका है।

जिसके बयान के बाद अल्लाह सुब्हानहू व तआला का इरशाद है कि हम इसी तरह ईमानदारों को निजात दिया करते हैं और फ़रमाता है कि अगर वो तस्बीह न करते तो क़यामत तक उसी के पेट में पड़े रहते। यहाँ भी फ़रमान है कि जब उसने ग़म और दुख की हालत में हमें पुकारा। पहले बयान हो चुका है कि यूनुस (अलै.) की ज़बान से निकलते ही ये कलिमा अर्श पर पहुँचा। फ़रिश्तों ने कहा, अल्लाह तआला इस कमज़ोर ग़ैर मारूफ़ शख़्स की आवाज़ तो ऐसी मालूम होती है जैसे पहले की सुनी हुई हो। अल्लाह तबारक व तआला

ने फ़रमाया, क्या तुमने इसे पहचाना नहीं? फ़रिश्तों ने अर्ज़ किया, नहीं। जनाब बारी तआला ने फ़रमाया, ये मेरे बन्दे यूनुस की आवाज़ है। फ़रिश्तों ने कहा, परवरदिगार फिर तो तेरा ये बन्दा वो है जिसके आमाले सालेहा हर रोज़ आसमानों पर चढ़ते रहे जिसकी दुआयें हर वक़्त क़ुबूलियत का दर्जा पाती रहीं। अल्लाह तआला ने फ़रमाया, सच है। फ़रिश्तों ने कहा, फिर ऐ अरहमुर्राहिमीन! उनकी आसानियों के वक़्त के नेक आमाल की बिना पर उन्हें इस सख़्ती से निजात अता फ़रमा। चुनाँचे इरशादे बारी हुआ कि ऐ मछली तू उन्हें उगल दे और मछली ने उन्हें किनारे पर आकर उगल दिया। यहाँ भी यही बयान हो रहा है कि अल्लाह तआला ने उन्हें फिर बरगुज़ीदा बना लिया और नेकोकारों में कर दिया। मुस्नद अहमद में है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़रमाते हैं, 'किसी को लायक़ नहीं कि वो अपने आपको हज़रत यूनुस बिन मत्ता (अलै.) से अफ़ज़ल बताये।' (अहमद : 1/390, सहीह बुख़ारी, किताब अहादीसुल अम्बिया, बाब क़ौलुल्लाहि तआला व इन्न यूनुस लमिनल मुरसलीन : 3416, सहीह मुस्लिम : 2379, अबू दाऊद : 4669, इब्ने हिब्बान : 6238)

(बस कुछ अल्फ़ाज़ की हेर-फेर है। किसी रिवायत में इस तरह है कि मुझे यूनुस बिन मत्ता (अलै.) से अफ़ज़ल मत बताओ।' ये इसलिये कि कहीं लोग अल्लाह तआला के इस फ़रमान से ऐसा न कहने लगें कि ऐ मुहम्मद! मछली वाले की तरह न हो जाना कि इसमें हज़रत यूनुस (अलै.) की बुराई और मज़म्मत सी निकलती है।) अगली आयत का मतलब ये है कि तेरे बुग़्ज़ व हसद की वजह से ये कुफ़्फ़ार तो अपनी आँखों से घूर-घूर कर तुझे फिसला देना चाहते हैं। अगर अल्लाह तआला की तरफ़ से हिमायत और बचाव न होता तो यक़ीनन ये तो ऐसा कर गुज़रते। इस आयत में दलील है इस बात पर कि नज़र का लगना और उसकी तासीर का अल्लाह तआला के हुक्म से होना हक़ है जैसाकि बहुत सी अहादीस में भी जो कई-कई सनदों से मरवी हैं।

नज़रे बद का इलाज और बदशगूनी की मज़म्मत : अबू दाऊद में है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़रमाते हैं, 'दम-झाड़ा सिर्फ़ नज़र का और ज़हरीले जानवरों का और न थमने वाले ख़ून का है।' (ज़ईफ़ : अबू दाऊद, किताबुत्तिब्ब, बाब फ़िर्रुक़ा : 3889, हाकिम : 4/413, इसकी सनद में शरीक क़ाज़ी मुदल्लस है और सिमाअ की सराहत नहीं है। अत्तक़रीब : 1/351, रक़म : 64)

कुछ सनदों में नज़र का लफ़्ज़ नहीं। ये हदीस इब्ने माजह में भी है और सहीह मुस्लिम और तिर्मिज़ी में भी है। (सहीह : इब्ने माजह, किताबुत्तिब्ब, बाब मा रुख़्ख़ि-स फ़ीहि मिर्रुक़ा : 3513, सहीह मुस्लिम, किताबुल ईमान, बाब अद्दलीलु अला दुख़ूलि तवाइफ़ि मिनल मुस्लिमीनल जन्नतु बिग़ैरि हिसाब : 220, सहीह बुख़ारी, किताबुत्तिब्ब, बाब मिनल कतवी औ कवी ग़ैरुहू : 5705)

एक ग़रीब हदीस अबू यअला में है कि नज़र बहुक्मे बारी तआला इंसान को गिरा देती है। (ज़ईफ़ : अहमद : 5/146, हदीस नम्बर : 21302, फ़ीहि मेहजन ग़ैर मन्सूब, ला नअरिफ़ुहू)

मुस्नद अहमद में है कि उल्लू और नज़र में कुछ भी हक़ नहीं। सबसे अच्छा शगून फ़ाल है। ये हदीस तिर्मिज़ी में भी है और इमाम तिर्मिज़ी (रह.) इसे ग़रीब कहते हैं। (हसन : अहमद : 5/70, तिर्मिज़ी, किताबुत्तिब्ब, बाब मा जाअ इन्न लिऐनिन हक़्क़ुन वल्ग़ुस्ल लहा : 2061, अल्अदबुल मुफ़रद : 914)

और रिवायत में है कि कोई डर-ख़ौफ़ उल्लू और नज़र में नहीं और नेक फ़ाल सबसे ज़्यादा सच्चा फ़ाल है। दूसरी रिवायत में है कि नज़र हक़ है नज़र हक़ है वो बुलंदी वाले को भी उतार देती है। (ज़ईफ़ : अहमद : 1/294, सुफ़ियान स़ोरी मुदल्लस व अन्अन व दवीदा शैख़ लीन क़ालहू अबू हातिम राज़ी)

चंद मुफ़ीद अमलियात : सहीह मुस्लिम में है, 'नज़र हक़ है अगर कोई चीज़ तक़दीर से सबक़त करने वाली होती तो नज़र कर जाती। जब तुमसे ग़ुस्ल कराया जाये तो ग़ुस्ल कर लिया करो।' (सहीह मुस्लिम, किताबुस्सलाम, बाब अत्तिब्बु वल्मरज़ा वर्रुक़ा : 2188, मुअजम अल्कबीर : 10905, बैहक़ी : 9/351)

अब्दुर्रज़्ज़ाक़ में है कि आँहज़रत (ﷺ) हज़रत हसन और हज़रत हुसैन (रज़ि.) को इन अल्फ़ाज़ के साथ पनाह में देते, उईज़ुकुमा बिकलिमातिल्लाहित्-ताम्मातिम्-मिन् कुल्लि शैतानिंव्-व हाम्मातिंव्-व मिन् कुल्लि अ़ैनिल-लाम्मतिन 'तुम दोनों को अल्लाह तआ़ला के भरपूर कलिमात की पनाह में सौंपता हूँ हर शैतान से और हर एक ज़हरीले जानवर से और हर एक लग जाने वाली नज़र से।' और फ़रमाते कि हज़रत इब्राहीम (अलै.) भी हज़रत इस्हाक़ और हज़रत इस्माईल (अलै.) को इन्ही अल्फ़ाज़ से अल्लाह तआ़ला की पनाह में दिया करते थे। (सहीह बुख़ारी, किताब अहादीसुल अम्बिया : 3371, अबू दाऊद : 4737, तिर्मिज़ी : 2060, इब्ने माजह : 3525, अहमद : 1/236, इब्ने हिब्बान : 1013)

इब्ने माजह में है कि सहल बिन हनीफ़ (रज़ि.) ग़ुस्ल कर रहे थे। आ़मिर बिन रबीआ़ (रज़ि.) कहने लगे, मैंने तो आज तक ऐसा जिस्म किसी पर्दानशीन का भी नहीं देखा। पस ज़रा सी देर में वो बेहोश होकर गिर पड़े। लोगों ने हुज़ूर (ﷺ) से कहा, ऐ अल्लाह के रसूल! उनकी ख़बर लीजिये ये तो बेहोश हो गये। आप (ﷺ) ने फ़रमाया, किसी पर तुम्हारा शक भी है? लोगों ने कहा, हाँ आ़मिर बिन रबीआ़ पर। आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'तुममें से क्यों कोई अपने भाई को क़त्ल करता है? जब तुममें से कोई अपने भाई की किसी ऐसी चीज़ को देखे कि उसे बहुत अच्छी लगे तो उसे चाहिये कि उसके लिये बरकत की दुआ़ करे। फिर पानी मंगवाकर आ़मिर (रज़ि.) से फ़रमाया, 'तुम वुज़ू करो मुँह और कोहनियों तक हाथ और घुटने और तहबंद के अंदर का हिस्साए जिस्म धो डालो।' दूसरी रिवायत में है कि आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'बर्तन को उसकी पीठ के पीछे से उन्धा दो।' (सहीह : इब्ने माजह, किताबुत्तिब, बाब अल्अ़ैन : 3509, अहमद : 4/386, इब्ने हिब्बान : 6106)

नसाई वग़ैरह में भी ये रिवायत मौजूद है। हज़रत अबू सईद (रज़ि.) फ़रमाते हैं कि आँहज़रत (ﷺ) जिन्नात की और इंसानों की नज़रे बद से पनाह माँगा करते थे। जब सूरह मुअ़व्वज़तैन नाज़िल हुई तो आप (ﷺ) ने उन्हें ले लिया और सबको छोड़ दिया। (ज़ईफ़ : तिर्मिज़ी, किताबुत्तिब्ब, बाब मा जाअ फ़िर्रुक़ियति बिल्मुअ़व्वज़तैन : 2058, सईद बिन अयास अल्जरीरी मुख़्तलत रावी है। नसाई : 5496, इब्ने माजह : 3511)

मुस्नद वग़ैरह में है कि हज़रत जिब्राईल (अलै.) हुज़ूर (ﷺ) के पास आये और कहा, ऐ नबी! क्या आप बीमार हैं? आप (ﷺ) ने फ़रमाया, हाँ! तो जिब्राईल (अलै.) ने कहा, बिस्मिल्लाहि अरक़ीक मिन कुल्लि शैइंय्-यूज़ीक मिन शर्रि कुल्लि नफ़्सिंव्-व अ़ैनिंव्-वल्लाहु यश्फ़ीक़ बिस्मिल्लाहि अरक़ीक। कुछ रिवायात में कुछ अल्फ़ाज़ का हेर-फेर भी है। (सहीह मुस्लिम, किताबुस्सलाम, बाब अत्तिब्बु वल्मरज़ा वर्रुक़ा : 2186, तिर्मिज़ी : 972, अहमद : 3/28)

बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस़ में है कि यक़ीनन नज़र का लग जाना बरहक़ है। (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तिब्ब, बाब अल्अ़ैनु हक़्क़ : 5740, सहीह मुस्लिम : 2187, मुसन्नफ़ अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ : 19778, अहमद : 2/319, इब्ने हिब्बान : 5503)

मुस्नद की एक हदीस़ में इसके बाद यूँ भी लिखा है कि इसका सबब शैतान है और इब्ने आदम का हसद है। (ज़ईफ़ : अहमद : 2/439, इसकी सनद में मक्हूल और अबू हुरैरह रज़ि. के दरम्यान इन्तिक़ताअ़ है।)

मुस्नद की एक और रिवायत में है कि हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से पूछा गया कि क्या तुमने हुज़ूर (ﷺ) से ये सुना है कि शगून तीन चीज़ों में है, घर, घोड़ा और औरत। तो हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने फ़रमाया, फिर तो मैं रसूलुल्लाह (ﷺ) पर वो कहूँगा जो आपने नहीं फ़रमाया, हाँ! मैंने हुज़ूर (ﷺ) से ये तो सुना है कि आपने फ़रमाया, 'सबसे अच्छा शगून नेक फ़ाल है और नज़र का लगना हक़ है।' (ज़ईफ़ : अहमद : 2/289, अबू मअ़शर नजीह बिन अ़ब्दुर्रहमान ज़ईफ़ वस्सनद मुन्क़तअ़ वलिल्हदीसि शवाहिद ज़ईफ़तुन फ़िस्सहीहति लिल्अल्बानी : 2576)

तिर्मिज़ी वग़ैरह में है कि हज़रत असमा (रज़ि.) ने अ़र्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल! जाफ़र के बच्चों को नज़र लग जाया करती है तो क्या मैं कुछ दम करा लिया करूँ? आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'हाँ! अगर कोई चीज़ तक़दीर से सबक़त कर जाने वाली होती तो वो नज़र होती।' (सहीह : तिर्मिज़ी, किताबुत्तिब्ब, बाब मा जाअ फ़िर्रुक़ियति मिनल्अ़ैन : 2059, इब्ने माजह : 3510, अहमद : 6/438)

हज़रत आइशा (रज़ि.) को भी हुज़ूर (ﷺ) का नज़रे बद से दम करने का हुक्म मरवी है। (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तिब्ब, बाब रुक़ियतुल अ़ैन : 5738, सहीह मुस्लिम : 2195, इब्ने माजह : 3512, अहमद : 6/63, इब्ने हिब्बान : 6103)

हज़रत आइशा (रज़ि.) फ़रमाती हैं कि नज़र लगाने वाले को हुक्म किया जाता था कि वो वुज़ू करे और जिसको नज़र लगी है उसे उस पानी से ग़ुस्ल कराया जाता था। (ज़ईफ़ : अबू दाऊद, किताबुत्तिब्ब, बाब मा जाअ फ़िल्अ़ैन : 3880, आमश और इब्राहीम नख़ई दोनों मुदल्लस रावी हैं और सिमाअ़ की तसरीह नहीं है।)

दूसरी हदीस़ में है, 'नहीं है उल्लू और नज़र हक़ है और सबसे अच्छा शगून फ़ाल है।' मुस्नद अहमद में भी हज़रत सहल और हज़रत आमिर (रज़ि.) वाला क़िस्सा जो ऊपर बयान हुआ क़द्रे बस्त (तफ़्सील) के साथ मरवी है। (अहमद : 3/447, वल्मुस्तदरक : 4/215, इब्ने माजह : 3506, मुख़्तसरन वहुव हदीस़, उमय्या बिन हिन्द हसनुल हदीसि वस्सक़हू इब्ने हिब्बान वल्हाकिम वग़ैरहुमा)

कुछ रिवायात में ये भी है कि ये दोनों बुज़ुर्ग ग़ुस्ल के इरादे से चले और हज़रत आमिर (रज़ि.) पानी में ग़ुस्ल के लिये उतरे और उनका बदन देखकर हज़रत सहल (रज़ि.) की नज़र लग गई और वो वहीं पानी में ख़रख़राहट करने लगे। मैंने तीन मर्तबा आवाज़ दीं लेकिन जवाब न मिला। मैं आँहज़रत (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और वाक़िया सुनाया। आप (ﷺ) ख़ुद तशरीफ़ लाये और थोड़े से पानी में खच-खच करते हुए तहबंद ऊँचा उठाये हुए वहाँ तक पहुँचे और उनके सीने में हाथ मारा और दुआ की, अल्लाहुम्मस्रिफ़ अ़न्हु हर्रहा

व बर्दहा व वसबहा ऐ अल्लाह! तू इससे इसकी गर्मी और सर्दी और तकलीफ़ दूर कर दे, अल्अख़।' (हसन : अहमद : 3/447)

मुस्नद बज़्ज़ार में है, 'मेरी उम्मत की क़ज़ा व क़दर के बाद, अक्सर मौत नज़र से होगी। (ज़ईफ़ : मुस्नद बज़्ज़ार : 3052, तालिब बिन हबीब ज़ईफ़ ज़अ़अ़फ़हुल जुम्हूर)

फ़रमाते हैं कि नज़र हक़ है इंसान को क़ब्र तक पहुँचा देती है और ऊँट को हाण्डी तक। मेरी उम्मत की अक्सर हलाकी इसी में है। (मुहम्मद बिन अल्मुन्ज़िर अल्हरवी फ़ी किताबिल अ़जाइब व सनदहू मौज़ूअ़ अ़ली बिन अ़ली अल्हाशमी अल्मदनी मतरूक यरवी अ़न इब्निल मुन्कदिर अहादीस़ मौज़ूअतुन क़ालहुल हाकिम) एक और सहीह सनद से भी ये रिवायत मरवी है।

फ़रमाने रिसालत है, 'एक की बीमारी दूसरे को नहीं लगती और न उल्लू की वजह से बर्बादी का यक़ीन कर लेना कोई वाक़ेइयत रखता है और न हसद कोई चीज़ है। हाँ नज़र सच है।' (ज़ईफ़ : अहमद : 2/222, रुशदैन बिन सअ़द ज़ईफ़ मशहूर वस्सनदुल आख़िरुल्लज़ी ज़करहू इब्ने कस़ीर ऐज़न ज़ईफ़ सुफ़ियान स़ोरी मुदल्लस व अ़न्अ़न, मज्मउ़ज़्ज़वाइद : 5/101)

इब्ने अ़साकिर में है कि जिब्रईल (अ़लै.) हुज़ूर (ﷺ) के पास तशरीफ़ लाये। आप (ﷺ) उस वक़्त ग़मज़दा थे। सबब पूछा तो फ़रमाया, 'हसन और हुसैन को नज़र लग गई है।' फ़रमाया, ये सच्चाई के क़ाबिल चीज़ है नज़र वाक़ेई लगती है। आपने ये कलिमात पढ़कर उन्हें पनाह में क्यों न दिया? हुज़ूर (ﷺ) ने पूछा, वो कलिमात क्या हैं? फ़रमाया, यूँ कहो, अल्लाहुम्-म ज़स्सुल्तानिल् अ़ज़ीमि वल्मन्निल् क़दीमि ज़ल्वज्हिल् करीमि वलिय्यल् कलिमातित्-ताम्माति वद्दअ़वातिल् मुस्तजाबाति आ़फ़िल् हसन वल्हुसैन मिन् अन्फ़ुसिल् जिन्नि व अअ़्युनिल् इन्सि ऐ अल्लाह! ऐ बहुत बड़ी बादशाही वाले! ऐ ज़बरदस्त क़दीम एहसानों वाले! ऐ बुज़ुर्गतर चेहरे वाले! ऐ पूरे कलिमों वाले! और ऐ दुआओं को क़ुबूलियत का दर्जा देने वाले तू हसन और हुसैन को तमाम जिन्नात की हवाओं से और तमाम इंसानों की आँखों से अपनी पनाह दे। हुज़ूर (ﷺ) ने ये दुआ पढ़ी, वहीं दोनों बच्चे उठ खड़े हुए और आप (ﷺ) के सामने खेलने-कूदने लगे। तो हुज़ूर (ﷺ) ने फ़रमाया, लोगो! अपनी जानों को, अपनी बीवियों को, और अपनी औलाद को इसी पनाह के साथ पनाह दिया करो, इस जैसी और कोई पनाह की दुआ नहीं।' (ज़ईफ़ : फ़ीहि एलल मिन्हा ज़अ़अ़फ़हुल हारिस़ अल्अअ़वर कज़िबहू ग़ैर वाहिद)

फिर फ़रमाता है कि जहाँ ये काफ़िर अपनी हिक़ारत भरी नज़रें आप पर डालते हैं वहाँ अपनी तअ़ना आमेज़ ज़बान भी आप पर खोलते हैं और कहते हैं कि ये तो क़ुरआन लाने में मजनून हैं। अल्लाह तआ़ला उनके जवाब में फ़रमाता है कि क़ुरआन तो अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से तमाम आ़लम के लिये नसीहतनामा है। अल्हम्दुलिल्लाह सूरह क़लम की तफ़्सीर ख़त्म हुई।

***

FLOW CHART
तरतीबी नक्श-ए-रब्त

MACRO-STRUCTURE
नज़्मे-जली

सूरह हाक़्क़ह - 69

आयात : 52, मक्की, पैराग्राफ : 7

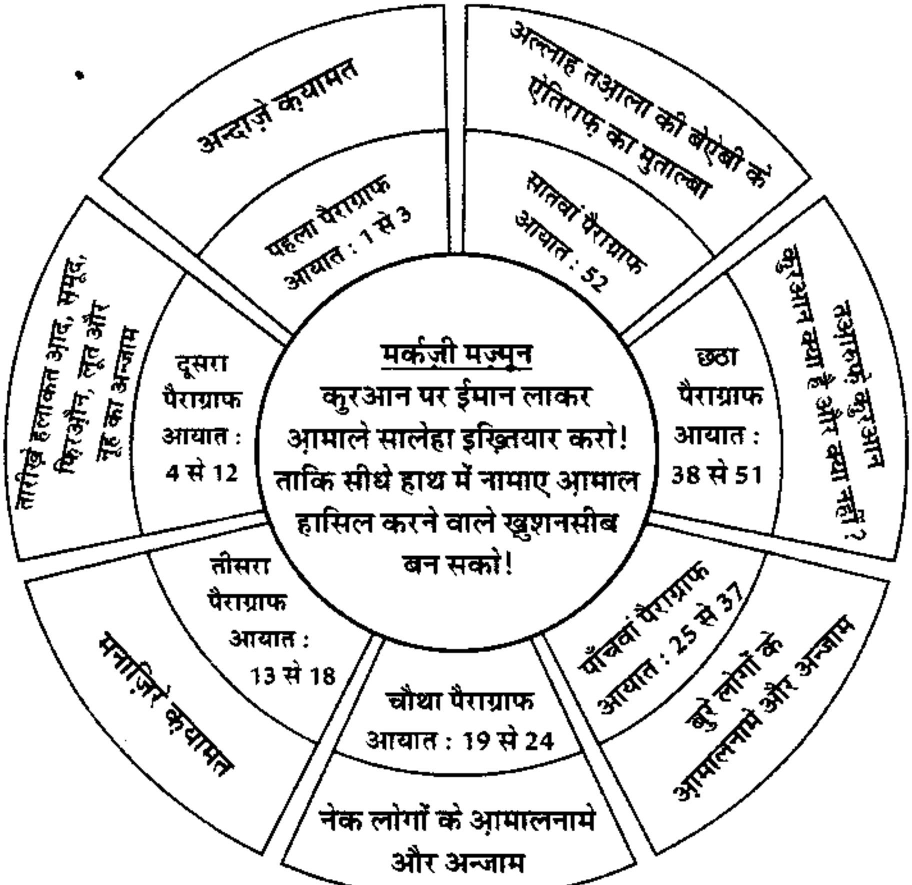

ज़मानए नुज़ूल

सूरह हाक़्क़ह, सूरह तूर की तरह ऐलाने आम के बाद, रसूल (सल्ल.) के क़ियामे मक्का के दूसरे दौर (4 से 5 नबवी) के आख़िर में नाज़िल हुई। जब आप (सल्ल.) पर इल्ज़ामात की बोछाड़ हो रही थी। जैसे शाइर, काहिन और मुतक़व्विल वग़ैरह। हज़रत उमर (रजि.) के दिल पर सबसे पहले सूरह हाक़्क़ह की आयात ही ने असर किया था।(मुस्नद अहमद, इब्ने उमर रजि.)

तफ़्सीर सूरह हाक़्क़ह

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

तर्जुमा : ''शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है।''

***

اَلْحَآقَّةُ ① مَا الْحَآقَّةُ ② وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا الْحَآقَّةُ ③ كَذَّبَتْ ثَمُوْدُ وَعَادٌۢ بِالْقَارِعَةِ ④
فَاَمَّا ثَمُوْدُ فَاُهْلِكُوْا بِالطَّاغِيَةِ ⑤ وَاَمَّا عَادٌ فَاُهْلِكُوْا بِرِيْحٍ صَرْصَرٍ عَاتِيَةٍ ⑥ سَخَّرَهَا
عَلَيْهِمْ سَبْعَ لَيَالٍ وَّثَمٰنِيَةَ اَيَّامٍ ۙ حُسُوْمًا ۙ فَتَرَى الْقَوْمَ فِيْهَا صَرْعٰى ۙ كَاَنَّهُمْ اَعْجَازُ
نَخْلٍ خَاوِيَةٍ ⑦ فَهَلْ تَرٰى لَهُمْ مِّنْۢ بَاقِيَةٍ ⑧ وَجَآءَ فِرْعَوْنُ وَمَنْ قَبْلَهٗ وَالْمُؤْتَفِكٰتُ
بِالْخَاطِئَةِ ⑨ فَعَصَوْا رَسُوْلَ رَبِّهِمْ فَاَخَذَهُمْ اَخْذَةً رَّابِيَةً ⑩ اِنَّا لَمَّا طَغَا الْمَآءُ
حَمَلْنٰكُمْ فِى الْجَارِيَةِ ⑪ لِنَجْعَلَهَا لَكُمْ تَذْكِرَةً وَّتَعِيَهَآ اُذُنٌ وَّاعِيَةٌ ⑫

तर्जुमा : ''सचमुच आने वाली (1) क्या है हक़ीक़तन क़ायम होने वाली? (2) और तुझे क्या मालूम कि वो साबितशुदा क्या है? (3) उस खड़का देने वाली को समूदियों और आदियों ने झुठलाया था। (4) जिसके नतीजे में समूदी तो बेहद ख़ौफ़नाक और ऊँची आवाज़ से हलाक कर दिये गये। (5) और आदी बेहद तेज़ व तुन्द हवा से ग़ारत कर दिये गये। (6) जो उन पर बराबर लगातार सात रात और आठ दिन तक अल्लाह के हुक्म से चलती रही, पस तू देखेगा कि ये लोग ज़मीन पर इस तरह गिर गये जैसे कि खजूर के खोखले तने हों। (7) क्या उनमें से कोई भी तुझे बाक़ी नज़र आ रहा है? (8) फ़िरऔन और उससे पहले के लोग और जिनकी बस्तियाँ

उलट दी गईं, उन्होंने भी ख़तायें कीं। (9) और अपने रब के रसूलों की नाफ़रमानी की, बिल्आख़िर अल्लाह तआला ने उन्हें भी ज़बरदस्त गिरफ़्त में ले लिया। (10) जब पानी में तुग़यानी आ गई तो उस वक़्त हमने तुम्हें कश्ती में चढ़ा लिया। (11) ताकि उसे तुम्हारे लिये नसीहत और यादगार बना दें और ताकि याद रखने वाले कान उसे याद रखें।" (12)

हाक़्क़ह क़यामत का नाम (आयत : 1-12) : हाक़्क़ह क़यामत का एक नाम है और इस नाम की वजह ये है कि वादा-वईद की हक़्क़ानियत का दिन वही है। इसीलिये इस दिन की हौलनाकी बयान करते हुए फ़रमाया, तुम उस हाक़्क़ह की सहीह कैफ़ियत से बेख़बर हो। फिर उन लोगों का बयान फ़रमाया जिन-जिन लोगों ने उसे झुठलाया था और फिर ख़मियाज़ा उठाया था।

आद व स़मूद के अ़ज़ाब का तज़्किरा : तो फ़रमाया स़मूदियों को देखो, एक तरफ़ तो फ़रिश्तों के दहाड़ने की कलेजों को पाश कर देने वाली आवाज़ आती है। दूसरी जानिब से ज़मीन में ग़ज़बनाकी का भौंचाल आता है और सब तहो बाला हो जाते हैं। पस बक़ौल हज़रत क़तादा (रह.) ताग़ियह के मआ़ना हैं चिंघाड़ के। (अत्तबरी : 23/571)

और मुजाहिद (रह.) फ़रमाते हैं कि इससे मुराद गुनाह हैं, यानी वो अपने गुनाहों के बाइस़ बर्बाद कर दिये गये। रबीअ़ बिन अनस और इब्ने ज़ैद (रह.) का क़ौल है कि इससे मुराद उनकी सरकशी है। इब्ने ज़ैद (रह.) ने इसकी शहादत में ये आयत पढ़ी (كَذَّبَتْ ثَمُوْدُ بِطَغْوٰىهَآ ﴿١١﴾) (सूरह शम्स 91 : 11) 'स़मूदियों ने अपनी सरकशी के बाइस़ झुठलाया, यानी ऊँटनी की कूचें काट दी और आ़दी ठण्डी हवाओं के तेज़ झोंकों से जिन्होंने उनके दिल छेद दिये, तहस-नहस कर दिये गये।' ये आन्धियाँ जो ख़ैर व बरकत से ख़ाली थीं और फ़रिश्तों के हाथों से निकली जाती थीं बराबर पे-दर्पे लगातार सात रातें और आठ दिन तक चलती रहीं, उन दिनों में उनके लिये सिवाय नहूसत और बर्बादी के और कोई भलाई न थी।

जैसे और जगह है, (فِيْٓ اَيَّامٍ نَّحِسَاتٍ) फ़ी अय्यामिन्-नहिसात (सूरह हाम्मीम सज्दा 41 : 16) हज़रत रबीअ़ (रह.) फ़रमाते हैं कि जुम्आ के दिन से ये शुरू हुई थीं, कुछ कहते हैं बुध से। उन हवाओं को अ़रब आ़जाज़ इसलिये भी कहते हैं कि क़ुरआन ने फ़रमाया है उन आ़दियों की हालतें आ़जाज़ यानी खजूरों के खोखले तनों जैसी हो गईं। दूसरी वजह ये भी है कि उ़मूमन ये हवायें जाड़ों के आख़िर में चला करती हैं और अ़जज़ कहते हैं आख़िर को और ये वजह बयान की जाती है कि आ़दियों की एक बुढ़िया एक ग़ार में घुस गई थी जो उन हवाओं से आठवें रोज़ वहीं तबाह हो गई और बुढ़िया को अ़रबी में अ़जूज़ कहते हैं, वल्लाहु आ़लम! ख़ावियह के मआ़ना हैं, ख़राब, सड़ा-गला, खोखला। मतलब ये है कि हवाओं ने उन्हें उठा-उठाकर उल्टा दे पटख़ा उनके सर फट गये, सरों का तो चूरा-चूरा हो गया और बाक़ी जिस्म ऐसा रह गया जैसे खजूर के दरख़्त का सिरा पत्तों वाला काट कर ठूठ रहने दिया हो।

बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस़ में है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़रमाते हैं, 'मेरी मदद की गई सबा के साथ यानी पुरवा हवा के साथ और आदी हलाक किये गये दबूर से यानी पछवा हवा से।' (सहीह बुख़ारी, किताबुल इस्तिस्क़ा, बाब क़ौलुन्नबी नुसिरतु बिस्सबा : 10350, सहीह मुस्लिम : 900)

इब्ने अबी हातिम में है हुज़ूर (ﷺ) फ़रमाते हैं, 'आदियों के हलाक करने के लिये हवाओं के ख़ज़ाने में से सिर्फ़ अंगूठी के बराबर कुशादा की गई थी।' (ज़ईफ़ : इब्ने अबी हातिम, मुस्लिम अल्मलाइ ज़ईफ़ मशहूर)

जिससे हवायें निकलीं और पहले वो गांव और देहात वालों पर आईं। उनके तमाम मर्दों, औरतों को, छोटों-बड़ों को, उनके मालों और जानवरों समेत लेकर आसमान व ज़मीन के दरम्यान मुअल्लक़ कर दिया, शहरियों को बवजह बहुत बुलंदी और काफ़ी ऊँचाई के ये मालूम होने लगा कि स्याह रंग का बादल चढ़ा हुआ है ख़ुश होने लगे कि गर्मी के बाइस़ जो हमारी बुरी हालत हो रही है अब पानी बरस जायेगा। इतने में हवाओं को हुक्म हुआ और उसने उन तमाम को उन शहरियों पर फेंक दिया। ये और वो सब हलाक हो गये। हज़रत मुजाहिद (रह.) फ़रमाते हैं कि उस हवा के पर और रोम थी। फिर फ़रमाता है बतालाओ तो उनमें से या उनकी नस्ल में से एक को भी तुम देख रहे हो? यानी सबके सब तबाह व बर्बाद कर दिये गये, कोई नामलेवा बाक़ी न रहा।

फ़िरऔनियों और गुज़िश्ता अक़्वाम की बर्बादी : फिर फ़रमाया फ़िरऔन उससे अगले ख़ताकार नाफ़रमाने रसूल का भी यही अन्जाम हुआ। क़ब्लहू की दूसरी क़िरअत क़िबलहू भी है तो मआना ये होंगे कि फ़िरऔन और उसके पास और साथ के लोग यानी फ़िरऔन क़िब्ती, कुफ़्फ़ार। मुअ्तफ़िकात से मुराद भी पैग़म्बरों को झुठलाने वाली अगली उम्मतें हैं ख़ातिअह् से मतलब मअ्सयित और ख़तायें हैं। पस फ़रमाया, उनमें से हर एक ने अपने-अपने ज़माने के रसूल (अलै.) की तकज़ीब की। जैसे और जगह है, (كُلٌّ كَذَّبَ الرُّسُلَ فَحَقَّ وَعِيدِ ﴿١٤﴾) (सूरह क़ॉफ़ 50 : 14) 'उन सब ने रसूलों की तकज़ीब की और उन पर अज़ाब आ पहुँचा।' और ये भी याद रहे कि एक पैग़म्बर का इंकार गोया तमाम अम्बिया (अलै.) का इंकार है। जैसे क़ुरआन ने फ़रमाया, (كَذَّبَتْ قَوْمُ نُوحٍ الْمُرْسَلِينَ ﴿١٠٥﴾) (सूरह शुअ़रा 26 : 105) और फ़रमाया, (كَذَّبَتْ عَادٌ الْمُرْسَلِينَ ﴿١٢٣﴾) (सूरह शुअ़रा 26 : 123) यानी क़ौमे नूह ने आदियों ने स़मूदियों ने रसूलों को झुठलाया, हालांकि सबके पास यानी हर एक उम्मत के पास एक ही रसूल आया था। यही मतलब यहाँ भी है कि उन्हों ने अपने रब के पैग़म्बर (अलै.) की नाफ़रमानी की। पस अल्लाह तआ़ला ने उन्हें सख़्ततर मुहलिक बड़ी दर्दनाक अल्मनाक पकड़ में पकड़ लिया। उसके बाद अपना एहसान जताता है कि देखो जब नूह (अलै.) की दुआ की वजह से ज़मीन पर तूफ़ान आया और पानी हद से गुज़र गया, चारों तरफ़ रेल-पेल हो गई, निजात की कोई जगह न रही, उस वक़्त हम ने तुम्हें कश्ती में चढ़ा लिया।

हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) फ़रमाते हैं कि जब क़ौमे नूह ने अपने नबी को झुठलाया और उनकी मुख़ालिफ़त की और तकलीफ़ पहुँचाना शुरू की, अल्लाह तआ़ला के सिवा दूसरों की इबादत करने लगे, उस वक़्त हज़रत नूह (अ़लै.) ने तंग आकर उनकी हलाकत की दुआ की, जिसे अल्लाह तआ़ला ने क़ुबूल फ़रमा

लिया और मशहूर तूफ़ाने नूह नाज़िल फ़रमाया जिससे सिवाय उन लोगों के जो हज़रत नूह (अलै.) के कश्ती में सवार थे रूए ज़मीन पर कोई न बचा। पस सब लोग हज़रत नूह (अलै.) की नस्ल और आपकी औलाद में से हैं।

हज़रत अली (रज़ि.) फ़रमाते हैं कि पानी का एक-एक क़तरा बइजाज़ते अल्लाह तआला पानी के दारोग़े फ़रिश्ते के नाप-तोल से बरसता है इसी तरह हवा का हल्का सा झोंका भी बे नापे तोले नहीं चलता। लेकिन हाँ आदियों पर जो हवायें चलीं और क़ौमे नूह पर जो तूफ़ान आया वो तो बेहद और बेशुमार और बग़ैर नाप-तोल के था। अल्लाह तआला की इजाज़त से पानी और हवा ने वो ज़ोर बांधा कि निगेहबान फ़रिश्तों की कुछ न चली, इसीलिये क़ुरआन में तग़ल माउ और बिरीहिन् सरसरिन् आतियह के अल्फ़ाज़ हैं, इसीलिये इस अहम एहसान को अल्लाह तआला याद दिला रहे हैं कि ऐसे पुर ख़तर मौक़े पर हमने तुम्हें कश्ती पर सवार करा दिया, ताकि ये कश्ती तुम्हारे लिये नमूना बन जाये। चुनाँचे आज भी वैसे ही कश्तियों पर सवार होकर समुन्द्र के लम्बे-चौड़े सफ़र तय कर रहे हो जैसे और जगह है, (وَجَعَلَ لَكُمْ مِّنَ الْفُلْكِ وَالْأَنْعَامِ) (सूरह ज़ुख़रुफ़ 43 : 12) 'तुम्हारी सवारी के लिये कश्तियाँ और चौपाये जानवर बनाये ताकि तुम उन पर सवारी करो और सवार होकर अपने रब की नेमत को याद करो।' और जगह फ़रमाया, (وَآيَةٌ لَّهُمْ أَنَّا حَمَلْنَا) (सूरह यासीन 36 : 41) 'उनके लिये एक निशाने क़ुदरत ये भी है कि हमने उनकी नस्ल को भरी कश्ती में चढ़ा लिया और भी हमने इस जैसी उनकी सवारियाँ पैदा कर दीं।' हज़रत क़तादा (रह.) ने ऊपर की इस आयत का ये मतलब भी बयान किया है कि वही कश्तीए नूह बाक़ी रही यहाँ तक कि इस उम्मत के अगलों ने भी उसे देखा। लेकिन ज़्यादा ज़ाहिर मतलब पहला ही है। फिर फ़रमाया ये इसलिये भी याद रखने और सुनने वाला कान उसे याद कर ले और महफ़ूज़ रख ले और उस नेमत को न भूले। यानी सहीह-समझ और सच्ची समाअत वाले अक़्ले सलीम और फ़हमे मुस्तक़ीम रखने वाले जो अल्लाह तआला की बातों और उसकी नेमतों से बेपरवाही और लाउबाली नहीं बरतते उनकी पन्द व नसीहत का एक ज़रिया ये भी बन गया। इब्ने अबी हातिम में है कि हज़रत मक्हूल (रह.) फ़रमाते हैं, जब ये अल्फ़ाज़ उतरे तो हुज़ूर (ﷺ) ने फ़रमाया, 'मैंने अपने रब से सवाल किया कि वो अली को एसा ही बना दे।'

चुनाँचे हज़रत अली (रज़ि.) फ़रमाया करते थे, रसूलुल्लाह (ﷺ) से कोई चीज़ सुनकर फिर मैंने फ़रामोश नहीं की। (अत्तबरी : 23/5/9 ये रिवायत मुरसल यानी ज़ईफ़ है।) ये रिवायत इब्ने जरीर में भी है लेकिन मुरसल है।

इब्ने अबी हातिम की एक और हदीस़ में है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने हज़रत अली (रज़ि.) से फ़रमाया, 'मुझे हुक्म किया गया है कि मैं तुझे नज़दीक करूँ दूर न करूँ और तुझे तालीम दूँ और तू भी याद रखे और यही तुझे भी चाहिये।' इस पर ये आयत उतरी। (ज़ईफ़ुन जिद्दा : अत्तबरी : 23/579, इब्ने असाकिर : 2/423)

ये रिवायत दूसरी सनद से भी इब्ने जरीर में मरवी है लेकिन वो भी सहीह नहीं।

***

فَإِذَا نُفِخَ فِي الصُّوْرِ نَفْخَةٌ وَّاحِدَةٌ ﴿١٣﴾ وَّحُمِلَتِ الْاَرْضُ وَالْجِبَالُ فَدُكَّتَا دَكَّةً
وَّاحِدَةً ﴿١٤﴾ فَيَوْمَئِذٍ وَّقَعَتِ الْوَاقِعَةُ ﴿١٥﴾ وَانْشَقَّتِ السَّمَآءُ فَهِيَ يَوْمَئِذٍ وَّاهِيَةٌ
﴿١٦﴾ وَّالْمَلَكُ عَلٰٓى اَرْجَآئِهَاۗ وَيَحْمِلُ عَرْشَ رَبِّكَ فَوْقَهُمْ يَوْمَئِذٍ ثَمٰنِيَةٌ ﴿١٧﴾ يَوْمَئِذٍ
تُعْرَضُوْنَ لَا تَخْفٰى مِنْكُمْ خَافِيَةٌ ﴿١٨﴾

तर्जुमा : ''पस जबकि सूर में एक फूंक फूंकी जायेगी। (13) और ज़मीन और पहाड़ उठा लिये जायेंगे और एक ही चोट में रेज़ा-रेज़ा कर दिये जायेंगे। (14) उस दिन हो पड़ने वाली (क़यामत) हो पड़ेगी। (15) और आसमान फट जायेगा और उस दिन बिल्कुल बूदा हो जायेगा उसके किनारों पर फ़रिश्ते होंगे। (16) और तेरे परवरदिगार का अ़र्श उस दिन आठ फ़रिश्ते अपने ऊपर उठाये हुए होंगे। (17) उस दिन तुम सब सामने पेश किये जाओगे, तुम्हारा कोई भेद पौशीदा न रहेगा।'' (18)

सूर फूंके जाने का वक़्त (आयत : 13-18) : क़यामत की हौलनाकियों का बयान यहाँ हो रहा है। सबसे पहली घबराहट पैदा करने वाली चीज़ सूर का फूंका जाना होगा जिससे सबके दिल हिल जायेंगे। फिर नफ़ख़ फूंका जायेगा। जिससे तमाम ज़मीन व आसमान की मख़्लूक़ बेहोश हो जायेगी, मगर जिसे अल्लाह तआ़ला चाहे। फिर सूर फूंका जायेगा जिसकी आवाज़ से तमाम मख़्लूक़ अपने रब के सामने खड़ी हो जायेगी। यहाँ इसी पहले नफ़ख़े का बयान है, यहाँ बतौरे ताकीद के ये भी फ़रमा दिया कि ये उठ खड़े होने का नफ़ख़ा एक ही है इसलिये कि जब अल्लाह तआ़ला का हुक्म होगा फिर न तो उसका ख़िलाफ़ हो सकता है न वो टल सकता है न दोबारा फ़रमान की ज़रूरत है और न ताकीद की।

इमाम रबीअ़ (रह.) फ़रमाते हैं, इससे मुराद आख़िरी नफ़ख़ा है। लेकिन ज़ाहिर क़ौल वही है जो हमने कहा। इसीलिये यहाँ इसके साथ ही फ़रमान कि ज़मीन व आसमान उठा लिये जायेंगे और खाल की तरह फैला दिये जायेंगे और ज़मीन बदल दी जायेगी और क़यामत वाक़ेअ़ हो जायेगी।

हज़रत अ़ली (रज़ि.) फ़रमाते हैं कि आसमान हर खुलने की जगह से फट जायेगा। जैसे सूरह नबा में है, (وَّفُتِحَتِ السَّمَآءُ فَكَانَتْ اَبْوَابًا ﴿١٩﴾) (सूरह नबा 78 : 19) 'और आसमान खोल दिया जायेगा और उसमें दरवाज़े-दरवाज़े हो जायेंगे।' इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) फ़रमाते हैं, आसमान में सूराख़ और ग़ार पड़ जायेंगे और शक़ हो जायेंगे। अ़र्श उसके सामने होगा, फ़रिश्ते उसके किनारों पर होंगे। जो किनारे अब तक टूटे न होंगे और दरवाज़ों पर होंगे, आसमान की लम्बाई में फैले हुए होंगे और ज़मीन वालों को देख रहे होंगे। फिर क़यामत

वाले दिन आठ फ़रिश्ते अल्लाह तआला का अ़र्श अपने ऊपर उठाये हुए होंगे। पस या तो मुराद अ़र्शे अ़ज़ीम का उठाना है या उस अ़र्श का उठाना मुराद है जिस पर क़यामत के दिन अल्लाह तआला लोगों के फ़ैसलों के लिये होगा, वल्लाहु आलम!

अ़र्श उठाने वाले फ़रिश्तों का ज़िक्र : हज़रत अ़ब्बास बिन अ़ब्दुल मुत्तलिब (रज़ि.) फ़रमाते हैं कि ये फ़रिश्ते पहाड़ी बकरों की सूरत में होंगे। (ज़ईफ़ : अबू दाऊद, किताबुस्सुन्नह, बाब फ़िल्जहमिया : 4723, सम्माक का हाफ़िज़ा ख़राब हो गया था नीज़ अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मेरह का अहनफ़ से सिमाअ़ साबित नहीं। तिर्मिज़ी : 3320, इब्ने माजह : 193, हाकिम : 2/500)

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) फ़रमाते हैं कि उनकी आँख के एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक सौ साल का रास्ता है। (मतलब ये है कि बहुत बड़े होंगे) इब्ने अबी हातिम की मरफ़ूअ़ हदीस में है कि मुझे इजाज़त दी गई है कि मैं तुम्हें अ़र्श के उठाने वाले फ़रिश्तों में से एक फ़रिश्ते की निस्बत ख़बर दूँ कि उसकी गर्दन और कान के नीचे तक की लौ के दरम्यान इतना फ़ासला है कि उड़ने वाला परिन्दा सात सौ साल तक उड़ता चला जाये। (सहीह सनद) इसकी सनद बहुत उ़म्दा हैं और इसके सब रावी सिक़ह हैं। इसे इमाम अबू दाऊद (रह.) ने भी अपनी सुनन में रिवायत किया है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने इसी तरह फ़रमाया। (सहीह : अबू दाऊद, किताबुस्सुन्नह, बाब फ़िल्जहमिया : 4727)

हज़रत सईद बिन जुबैर (रह.) फ़रमाते हैं कि इससे मुराद फ़रिश्तों की आठ सफ़ें हैं और भी बहुत से बुज़ुर्गों से ये मरवी है। हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) फ़रमाते हैं कि आ़ला फ़रिश्तों के आठ हिस्से हैं जिनमें से हर एक हिस्से की गिनती तमाम इंसानों-जिन्नों और सब फ़रिश्तों के बराबर है। फिर फ़रमाया क़यामत के दिन तुम उस अल्लाह तआला के सामने पेश किये जाओगे जो पौशीदा को और ज़ाहिर को बख़ूबी जानता है। जिस तरह खुली से खुली चीज़ का वो आ़लिम है उसी तरह छिपी से छिपी चीज़ को भी वो जानता है। इसीलिये फ़रमाया कि तुम्हारा कोई भेद उस रोज़ छिप न सकेगा।

हज़रत उ़मर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) का क़ौल है कि लोगों! अपनी जानों का हिसाब कर लो इससे पहले कि तुमसे हिसाब लिया जाये और अपने आ़माल का आप अन्दाज़ा कर लो इससे पहले कि उन आ़माल का वज़न किया जाये। ताकि कल क़यामत वाले दिन तुम पर आसानी हो। जिस दिन कि तुम्हारा पूरा-पूरा हिसाब लिया जायेगा और बड़ी पेशी में ख़ुद अल्लाह जल्ल शानुहू के सामने तुम पेश कर दिये जाओगे। मुस्नद अहमद में है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़रमाते हैं, 'क़यामत के दिन लोग तीन मर्तबा अल्लाह तआला के सामने पेश किये जायेंगे, पहली और दूसरी बार तो उ़ज़्र-मअ़ज़रत और झगड़ा-टंटा करते रहेंगे। लेकिन तीसरी पेशी जो आख़िरी होगी उस वक़्त नामाए आ़माल उड़ाये जायेंगे, किसी के दायें हाथ में आयेगा और किसी के बायें हाथ में।' (ज़ईफ़ : इब्ने माजह, किताबुज़्ज़ुहद, बाब ज़िक्रुल बअ़स : 4277, सनद में हसन बसरी मुदल्लस और अबू मूसा अश्अ़री रज़ि. के दरम्यान इन्क़िताअ़ है। तिर्मिज़ी : 2425, अहमद : 4/414) हज़रत अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) के क़ौल से भी ये रिवायत इब्ने जरीर में मरवी है और हज़रत क़तादा (रह.) से भी इस जैसी रिवायत मुरसल मरवी है।

فَأَمَّا مَنْ أُوتِيَ كِتٰبَهٗ بِيَمِيْنِهٖ ۙ فَيَقُوْلُ هَآؤُمُ اقْرَءُوْا كِتٰبِيَهْ ﴿۱۹﴾ إِنِّيْ ظَنَنْتُ أَنِّيْ
مُلٰقٍ حِسَابِيَهْ ﴿۲۰﴾ فَهُوَ فِيْ عِيْشَةٍ رَّاضِيَةٍ ﴿۲۱﴾ فِيْ جَنَّةٍ عَالِيَةٍ ﴿۲۲﴾ قُطُوْفُهَا دَانِيَةٌ
﴿۲۳﴾ كُلُوْا وَاشْرَبُوْا هَنِيْٓـًٔا بِمَآ أَسْلَفْتُمْ فِي الْأَيَّامِ الْخَالِيَةِ ﴿۲۴﴾

तर्जुमा : "सो जिसे उसका नामाए आमाल उसके दायें हाथ में दिया जायेगा तो वो तो कहने लगेगा कि लो मेरा नामाए आमाल पढ़ो। (19) मुझे तो कामिल यक़ीन था कि मुझे अपना हिसाब मिलना है। (20) पस वो एक ख़ातिर ख़्वाह ज़िन्दगी में होगा। (21) बुलंद व बाला जन्नत में। (22) जिसके मेवे झुके पड़ते होंगे। (23) (उनसे कहा जायेगा) कि खाओ-पियो सहता-पचता अपने उन आमाल के बदले जो तुमने गुज़िश्ता ज़माने में किये।" (24)

जिनको नामाए आमाल दायें हाथ में मिलेगा (आयत : 19-24) : यहाँ बयान हो रहा है कि जिन ख़ुशनसीब लोगों को क़यामत के दिन उनके आमाल नामे उनके दायें हाथ में दिये जायेंगे वो सआदतमन्द हज़रात बेहद ख़ुश होंगे और जोशे मसर्रत में बेसाख़्ता हर एक से कहते फिरेंगे कि मेरा नामाए आमाल तो पढ़ो और ये इसलिये कि जो गुनाह बतक़ज़ाए बशरियत उनसे हो गये थे वो भी उनकी तौबा की वजह से नामाए आमाल में से मिटा दिये गये हैं और न सिर्फ़ मिटा दिये गये हैं बल्कि उनके बजाय नेकियाँ लिख दी गई हैं। पस ये सरासर नेकियों का नामाए आमाल एक-एक को पूरे सुरूर और सच्ची ख़ुशी से दिखाते फिरते हैं। अब्दुर्रहमान बिन ज़ैद (रह.) फ़रमाते हैं, हा के बाद लफ़्ज़ वुम ज़्यादा है लेकिन ज़ाहिर बात ये है कि हाउम मआना में हाकुम के है। हज़रत अबू उसमान (रज़ि.) फ़रमाते हैं कि चुपके से हिजाब में मोमिन को उसका नामाए आमाल दिया जायेगा जिसमें उसके गुनाह लिखे हुए होंगे, वो उसे पढ़ता होगा और हर एक गुनाह पर उसके होश उड़-उड़ जाते होंगे। चेहरे की रंगत फीकी पड़ जाती होगी, इतने में उसकी निगाह अपनी नेकियों पर पड़ जायेगी, जब उन्हें पढ़ने लगेगा तब ज़रा चैन आयेगा। होश व हवास दुरुस्त होंगे और चेहरा खिल जायेगा। फिर नज़रें जमाकर पढ़ेगा तो देखेगा कि उसकी बुराइयाँ भी भलाइयों से बदल दी गई हैं। हर बुराई की जगह भलाई लिखी हुई है। अब तो उसकी बाछें खिल जायेंगी और ख़ुशी से निकल खड़ा होगा और जो भी मिलेगा उससे कहेगा कि ज़रा मेरा नामाए आमाल तो पढ़ो।

हज़रत हन्ज़ला (रज़ि.) जिन्हें फ़रिश्तों ने उनकी शहादत के बाद गुस्ल दिया था, उनके पोते हज़रत अब्दुल्लाह (रह.) फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला अपने बन्दे को क़यामत वाले दिन अपने सामने खड़ा करेगा और उसकी बुराइयाँ उसके नामाए आमाल की पुश्त पर लिखी हुई होंगी जो उस पर ज़ाहिर की जायेंगी और

अल्लाह तआला उससे फ़रमायेगा कि बता क्या तूने ये आमाल किये हैं? वो इक़रार करेगा कि हाँ! बेशक परवरदिगार! ये बुराइयाँ मुझसे हुई हैं। अल्लाह तआला फ़रमायेगा, देख मैंने दुनिया में तुझे रुस्वा नहीं किया, न फ़ज़ीलत की, अब यहाँ भी मैं तुझसे दरगुज़र करता हूँ और तेरे तमाम गुनाहों को माफ़ करता हूँ। जब ये उससे फ़ारिग़ होगा तब अपना नामाए आमाल लेकर बादिले शाद एक-एक को दिखाता फिरेगा।

हज़रत उमर (रज़ि.) वाली सहीह हदीस जो पहले बयान हो चुकी है जिसमें है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'अल्लाह तआला क़यामत के दिन अपने बन्दे को अपने पास बुलायेगा और उससे उसके गुनाहों की बाबत पूछेगा कि फ़लाँ गुनाह किया? फ़लाँ गुनाह किया? वो इक़रार करेगा यहाँ तक कि समझ लेगा कि अब मैं हलाक हुआ। उस वक़्त जनाब बारी अज़्ज़ इस्मुहू फ़रमायेगा कि ऐ मेरे बन्दे! दुनिया में मैंने तेरी इन बुराइयों पर पर्दा डाल रखा था। अब आज तुझे क्या रुस्वा करूँ? जा मैंने तुझे बख़्श दिया। फिर उसका नामाए आमाल उसके दायें हाथ में दिया जाता है। जिसमें सिर्फ़ नेकियाँ ही नेकियाँ होती हैं लेकिन काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों के बारे में तो गवाह पुकार उठते हैं कि ये लोग वो हैं जिन्होंने अल्लाह तआला पर झूठ कहा। लोगो, सुनो! इन ज़ालिमों पर अल्लाह तआला की फटकार है।' (सहीह बुख़ारी, किताबुल मज़ालिम, बाब क़ौलुल्लाहि तआला अला लअ्नतुल्लाहि अलज़्ज़ालिमीन : 2441, सहीह मुस्लिम : 2768)

फिर फ़रमाया कि ये दाहिने हाथ के नामाए आमाल वाला कहता है कि मुझे तो दुनिया में ही यक़ीने कामिल था कि ये हिसाब का दिन क़त्अन आने वाला है। जैसे और जगह फ़रमाया, (اَلَّذِيْنَ يَظُنُّوْنَ اَنَّهُمْ مُّلٰقُوْا رَبِّهِمْ) (सूरह बक़रह 2 : 46) 'उन्हें यक़ीन था कि ये अपने रब से मिलने वाले हैं।'

फ़रमाया उनकी जज़ा ये है कि ये पसन्दीदा और दिल ख़ुशकुन ज़िन्दगी पायेंगे और बुलंद व बाला बहिश्त में रहेंगे जिसके महलात ऊँचे-ऊँचे होंगे, जिसकी हूरें क़ुबूल सूरत और नेक सीरत होंगी। वो घर नेमतों के भरपूर ख़ज़ाने होंगे और ये तमाम नेमतें न टलने वाली न ख़त्म होने वाली बल्कि कमी से भी महफ़ूज़ होंगी। एक शख़्स ने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सवाल किया कि ऐ अल्लाह के रसूल! क्या ऊँचे-नीचे मर्तबे वाले जन्नती आपस में एक-दूसरे से मुलाक़ातें भी करेंगे? आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'हाँ! बुलंद मर्तबे के लोग कम मर्तबे के लोगों के पास मुलाक़ात के लिये उतर आयेंगे और ख़ूब मुहब्बत व इख़्लास के साथ सलाम मुसाफ़हे और आव-भगत होंगी, हाँ! अल्बत्ता नीचे वाले बसबब अपने आमाल की कमी के ऊपर न चढ़ेंगे।' एक और सहीह हदीस में है, 'जन्नत में एक सौ दर्जे हैं, हर दो दर्जों के दरम्यान इतना फ़ासला है जितना ज़मीन व आसमान में।' (सहीह बुख़ारी, किताबुल जिहाद वस्सियर, बाब दरजातुल मुजाहिदीन फ़ी सबीलिल्लाह : 2790)

फिर फ़रमाता है कि उसके फल नीचे-नीचे होंगे। हज़रत बराअ बिन आज़िब (रज़ि.) वग़ैरह फ़रमाते हैं कि इस क़द्र झुके हुए होंगे कि जन्नती अपने छप्पर खट पर लेटे ही लेटे उन मेवों को तोड़ लिया करेंगे। (अत्तबरी : 23/586)

रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़रमाते हैं, 'हर एक जन्नती को अल्लाह तआला की तरफ़ से एक लिखा हुआ

परवाना मिलेगा, जिसमें लिखा हुआ होगा बिसमिल्लाहिर्रहमानिर्रहीमि हाज़ा किताबुम्-मिनल्लाहि लिफ़ुलानिब्नि फ़ुलानिन अदख़िलूहु जन्नतन् आलियतन् क़ुतूफ़ुहा दानियतुन यानी अल्लाह तआला रहमान व रहीम के नाम से शुरू। ये परवाना है अल्लाह तआला की तरफ़ से फ़लाँ शख़्स के लिये, जो फ़लाँ का बेटा है, उसे बुलंद व बाला झुकी हुई शाख़ों और लदे फन्दे हुए ख़ोशों वाली ख़ुशगवार जन्नत में जाने दो।' (ज़ईफ़ : मुअजम अल्कबीर : 6191, इसकी सनद में अब्दुर्रहमान बिन ज़ियाद बिन अन्अम ज़ईफ़ है।)

कुछ रिवायतों में है, ये परवाना पुल सिरात पर हवाले कर दिया जायेगा। फिर फ़रमाया, उन्हें बतौरे एहसान और मज़ीद लुत्फ़ व करम के ज़बानी भी खाने-पीने की रुख़्सत मरहमत होगी और कहा जायेगा कि ये तुम्हारी नेक आमालियों का बदला है आमाल का बदला कहना सिर्फ़ बतौर लुत्फ़ व करम है, वरना सहीह हदीस में है कि हुज़ूर (ﷺ) फ़रमाते हैं, 'अमल करते जाओ, सीधे और क़रीब-क़रीब रहो और जान रखो कि सिर्फ़ आमाल जन्नत में ले जाने के लिये काफ़ी नहीं। लोगों ने अर्ज़ किया, हुज़ूर! आपके आमाल भी नहीं? फ़रमाया, 'न मेरे, हाँ! ये और बात है कि अल्लाह तआला का फ़ज़्ल व करम और उसकी रहमत शामिले हाल हो।' (सहीह बुख़ारी, किताबुर्रिक़ाक़, बाब अल्क़सदु वल्मुदावमतुल अमल : 6467, सहीह मुस्लिम : 2818)

***

وَاَمَّا مَنْ اُوْتِيَ كِتٰبَهٗ بِشِمَالِهٖ ۙ فَيَقُوْلُ يٰلَيْتَنِيْ لَمْ اُوْتَ كِتٰبِيَهْ ﴿٢٥﴾ وَلَمْ اَدْرِ مَا
حِسَابِيَهْ ﴿٢٦﴾ يٰلَيْتَهَا كَانَتِ الْقَاضِيَةَ ﴿٢٧﴾ مَآ اَغْنٰى عَنِّيْ مَالِيَهْ ﴿٢٨﴾ هَلَكَ عَنِّيْ
سُلْطٰنِيَهْ ﴿٢٩﴾ خُذُوْهُ فَغُلُّوْهُ ﴿٣٠﴾ ثُمَّ الْجَحِيْمَ صَلُّوْهُ ﴿٣١﴾ ثُمَّ فِيْ سِلْسِلَةٍ ذَرْعُهَا سَبْعُوْنَ
ذِرَاعًا فَاسْلُكُوْهُ ﴿٣٢﴾ اِنَّهٗ كَانَ لَا يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ الْعَظِيْمِ ﴿٣٣﴾ وَلَا يَحُضُّ عَلٰى طَعَامِ
الْمِسْكِيْنِ ﴿٣٤﴾ فَلَيْسَ لَهُ الْيَوْمَ هٰهُنَا حَمِيْمٌ ﴿٣٥﴾ وَّلَا طَعَامٌ اِلَّا مِنْ غِسْلِيْنٍ ﴿٣٦﴾ لَّا
يَأْكُلُهٗٓ اِلَّا الْخَاطِـُٔوْنَ ﴿٣٧﴾

तर्जुमा : "लेकिन जिसे उसके आमाल की किताब उसके बायें हाथ में दी जायेगी, वो तो कहेगा कि काश कि मुझे मेरी किताब दी ही न जाती। (25) और मैं अपने हिसाब की कैफ़ियत जानता

ही नहीं। (26) काश कि मौत मेरा काम ही तमाम कर देती। (27) मेरे माल ने भी मुझे कुछ नफ़ा न दिया। (28) मेरा ग़ल्बा भी मुझसे जाता रहा। (29) (हुक्म होगा) इसे पकड़ लो, फिर इसे तौक़ पहना दो। (30) फिर इसे दोज़ख़ में डाल दो। (31) फिर इसे ऐसी ज़ंजीर में जिसकी पैमाइश सत्तर गज़ की है जकड़ दो। (32) बेशक ये अल्लाह तआला बुज़ुर्ग व बरतर पर ईमान न रखता था। (33) और मिस्कीन के खिलाने पर रग़बत न देता था। (34) पस आज इसका न कोई दोस्त है। (35) और न सिवाय पीप के इसकी कोई ग़िज़ा है। (36) जिसे गुनहगारों के सिवा कोई नहीं खाता।'' (37)

वो जिनको नामाए आमाल बायें हाथ में दिया जायेगा (आयत : 25-37) : यहाँ गुनहगारों का हाल बयान हो रहा है कि जब मैदाने क़यामत में उन्हें उनके नामाए आमाल उनके बायें हाथ में दिया जायेगा, ये निहायत परेशान और पशेमान होंगे और हसरत व अफ़सोस से कहेंगे, काश कि हमें आमाल नामा मिलता ही नहीं और काश कि हम अपने हिसाब की इस कैफ़ियत से आगाह ही न होते। काश कि मौत ने ही हमारा काम ख़त्म कर दिया होता और ये दूसरी ज़िन्दगी हमें मिलती ही नहीं। जिस मौत से दुनिया में बहुत ही घबराते थे। आज उसकी आरज़ूएँ करेंगे, ये कहेंगे कि हमारे माल व जाह ने भी आज हमारा साथ छोड़ दिया और हमारी उन चीज़ों ने भी ये अज़ाब हमसे न हटाये। तन्हा हमारी ज़ात पर ये वबाल आ पड़े न कोई मददगार हमें नज़र आता है न बचाव की कोई सूरत दिखाई देती है। अल्लाह तबारक व तआला फ़रिश्तों को हुक्म देगा कि इसे पकड़ लो और इसके गले में तौक़ दो और इसे जहन्नम में ले जाओ और उसमें फेंक दो।

हज़रत मिन्हाल बिन अम्र (रह.) फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला के इस फ़रमान को सुनते ही कि उसे पकड़ो सत्तर हज़ार फ़रिश्ते उसकी तरफ़ लपकेंगे, जिनमें से अगर एक फ़रिश्ते को भी इस तरह अल्लाह तआला हुक्म करे तो एक छोड़ सत्तर हज़ार लोगों को पकड़कर जहन्नम में फेंक दे। इब्ने अबी दुनिया में है कि चार लाख फ़रिश्ते उसकी तरफ़ दौड़ेंगे और कोई चीज़ बाक़ी न रहेगी मगर उसे तोड़-फोड़ देंगे। ये कहेगा, तुम्हें मुझसे क्या ताल्लुक़? वो कहेंगे, अल्लाह तबारक व तआला तुझ पर ग़ज़बनाक है और इस वजह से हर चीज़ तुझ पर ग़ुस्से में है।

हज़रत फ़ुज़ैल बिन अयाज़ (रह.) फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला के इस फ़रमान के सादिर होते ही सत्तर हज़ार फ़रिश्ते उसकी तरफ़ ग़ुस्से से दौड़ेंगे जिनमें का हर एक दूसरे पर सबक़त करके चाहेगा कि इसे मैं तौक़ पहनाऊँ। फिर उसे जहन्नम की आग में ग़ोता देने का हुक्म होगा। फिर उन ज़ंजीरों में पकड़ा जायेगा जिनका एक हल्क़ा बक़ौले हज़रत कअब अहबार (रह.) के दुनिया भर के लोहे के बराबर होगा। हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) और इब्ने जुरैज (रह.) फ़रमाते हैं, ये नाप फ़रिश्तों के हाथ का है। हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) का फ़रमान है कि ये ज़ंजीरें उसके जिस्म में पिरो दी जायेंगी, पाख़ाना के रास्ते से डाली जायेंगी और मुँह से निकाली जायेंगी और इस तरह आग में भूना जायेगा जैसे सीख़ में कबाब और तीली में टिड्डी। ये भी मरवी है कि पीछे से ये ज़ंजीरें डाली जायेंगी और नाक के दोनों नथुनों से निकाली जायेंगी जिससे कि वो पैरों के बल खड़ा ही न हो सकेगा। (अत्तबरी : 23/589)

मुस्नद अहमद की मरफ़ूअ हदीस़ में है कि अगर कोई बड़ा सा पत्थर आसमान से फेंका जाये तो ज़मीन पर वो एक रात में आ जाये लेकिन अगर उसी को जहन्नम वालों के बांधने की ज़ंजीर के सिरे पर से छोड़ा जाये तो दूसरे सिरे तक पहुँचने में चालीस साल लग जायेंगे। ये हदीस़ तिर्मिज़ी में भी है और इमाम तिर्मिज़ी रह. इसे हसन बतलाते हैं। (हसन : अहमद : 2/197, तिर्मिज़ी, किताब सिफ़तु जहन्नम, बाब फ़ी बुअ़्दे क़अ़रे जहन्नम : 2588, किताबुज़्ज़ुहद : 290)

अल्लाह पर ईमान और मिस्कीन को खाना खिलाना : फिर फ़रमाया कि ये अल्लाह तआ़ला पर ईमान न रखता था, न मिस्कीन को खिला देने की किसी को रग़बत देता था, यानी न तो अल्लाह तआ़ला की इताअ़त व इबादत करता था न अल्लाह की मख़्लूक़ के हक़ अदा करके उसे नफ़ा पहुँचाता था। अललाह तआ़ला का हक़ तो मख़्लूक़ पर है कि उसकी तौहीद को मानें, उसके साथ किसी को शरीक न करें और बन्दों का आपस में एक-दूसरे पर हक़ ये है कि एक-दूसरे से एहसान व सुलूक करें और भले कामों में आपस में एक-दूसरे को इम्दाद पहुँचाते रहें इसीलिये अल्लाह तआ़ला ने इन दोनों हुक़ूक़ को उमूमन एक साथ बयान फ़रमाया है। जैसे नमाज़ पढ़ो और ज़कात दो औार नबी (ﷺ) ने इन्तिक़ाल के वक़्त में इन दोनों को एक साथ बयान फ़रमाया कि नमाज़ की हिफ़ाज़त और अपने मातहतों के साथ नेक सुलूक करो। (ज़ईफ़ : अबू दाऊद, किताबुल अदब, बाब फ़ी हक़्क़िल मम्लूक : 5156, मुग़ीरह बिन मुक़्सिम मुदल्लस की तसरीह बिस्सिमाअ़ स़ाबित नहीं। इब्ने माजह : 2698, अहमद : 2/117, इब्ने हिब्बान : 6605)

फिर फ़रमान होता है कि यहाँ पर आज के दिन उसका कोई ख़ालिस दोस्त ऐसा नहीं न कोई क़रीबी रिश्तेदार या सिफ़ारिशी ऐसा है कि उसे अल्लाह तआ़ला के अ़ज़ाबों से बचा सके और न उसके लिये कोई ग़िज़ा है सिवाय बदतरीन सड़ी-भुसी बेकार चीज़ के जिसका नाम ग़िस्लीन है। ये जहन्नम का एक दरख़्त है और मुम्किन है कि इसी का दूसरा नाम ज़क़्क़ूम हो और ग़िस्लीन के ये मआ़ना भी किये गये हैं कि जहन्नम वालों के बदन से जो ख़ून और पानी बहता है वो है और ये भी कहा गया है कि उनकी पीप वग़ैरह।

***

فَلَآ اُقْسِمُ بِمَا تُبْصِرُوْنَ ۝٣٨ وَمَا لَا تُبْصِرُوْنَ ۝٣٩ اِنَّهٗ لَقَوْلُ رَسُوْلٍ كَرِيْمٍ ۝٤٠ وَّمَا
هُوَ بِقَوْلِ شَاعِرٍ ؕ قَلِيْلًا مَّا تُؤْمِنُوْنَ ۝٤١ وَلَا بِقَوْلِ كَاهِنٍ ؕ قَلِيْلًا مَّا تَذَكَّرُوْنَ
۝٤٢ تَنْزِيْلٌ مِّنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝٤٣

तर्जुमा : "पस मुझे क़सम है उन चीज़ों की जिन्हें तुम देखते हो (38) और उन चीज़ों की जिन्हें तुम

नहीं देखते। (39) कि बेशक ये क़ुरआन बुज़ुर्ग रसूलुल्लाह का क़ौल है। (40) ये किसी शाइर का क़ौल नहीं (अफ़सोस) तुम्हें बहुत कम यक़ीन है। (41) और न किसी काहिन का क़ौल है, अफ़सोस बहुत कम नसीहत ले रहे हो। (42) रब्बुल आलमीन का उतारा हुआ है। (43)

क़ुरआन कलामे इलाही है (आयत : 38-43) : अल्लाह तआला क़सम खाता है, अपनी मख़्लूक़ात में से अपनी उन निशानियों की क़सम खा रहा है जिन्हें लोग देख रहे हैं और उनकी भी जो लोगों की निगाहों से पौशीदा हैं। इस बात पर कि क़ुरआन करीम उसका कलाम और उसकी वह्य है जो उसने अपने बन्दे और अपने बर गुज़ीदा रसूल पर उतारी है। जिसे उसने अदाए अमानत और तब्लीग़े रिसालत के लिये पसंद फ़रमाया है। रसूलुल्लाह से मुराद हज़रत मुहम्मद हैं, इसकी इज़ाफ़त हुज़ूर (ﷺ) की तरफ़ इसलिये की गई कि इसके मुबल्लिग़ और पहुँचाने वाले आप (ﷺ) ही हैं। इसीलिये लफ़्ज़ रसूल लाये, क्योंकि रसूलुल्लाह तो पैग़ाम अपने भेजने वाले का पहुँचाता है। गो ज़बान उसकी होती है लेकिन कहा हुआ भेजने वाले का होता है। यही वजह है कि सूरह तकवीर में इसकी निस्बत उस रसूल से की गई है जो फ़रिश्तों में से हैं, फ़रमान है, (إِنَّهُ لَقَوْلُ رَسُولٍ كَرِيمٍ ﴿١٩﴾) 'ये क़ौल उस बुज़ुर्ग रसूल का है जो कुव्वत वाला और मालिके अर्श के पास रुत्बे वाला है वहाँ उसका कहा माना जाता है और है भी वो अमानतदार।' (सूरह तकवीर) इससे मुराद हज़रत जिब्राईल (अलै.) हैं, इसीलिये इसके बाद फ़रमाया, तुम्हारे साथी, यानी मुहम्मद (ﷺ) मज्नून (दीवाने) नहीं बल्कि आप (ﷺ) ने हज़रत जिब्राईल (अलै.) को उनकी असली सूरत में साफ़ किनारों पर देखा भी है और वो पौशीदा इल्म पर बख़ील भी नहीं। न ये शैताने रजीम का क़ौल है।

इसी तरह यहाँ भी इरशाद होता है कि न तो शाइर का कलाम है न काहिन का क़ौल है। अल्बत्ता तुम्हारे ईमान में और नसीहत हासिल करने में कमी है। पस कभी तो अपने कलाम की निस्बत रसूले इन्सी की तरफ़ की और कभी रसूले मलकी की तरफ़। इसलिये कि ये उसके पहुँचाने वाले लाने वाले और उस पर अमीन हैं। हाँ दरअसल कलाम किसका है? उसे भी साथ ही साथ बयान फ़रमा दिया कि ये उतारा हुआ रब्बुल आलमीन का है। हज़रत उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) अपने इस्लाम लाने से पहले का अपना एक वाक़िया बयान करते हैं कि मैं आपके पास गया, देखा कि आप (ﷺ) मस्जिदे हरम में पहुँच गये हैं। मैं भी गया और आपके पीछे खड़ा हो गया आप (ﷺ) ने सूरह हाक़्क़ह शुरू की जिसे सुनकर मुझे इस प्यारी नशिस्त अल्फ़ाज़ और बन्दिशे मज़ामीन और फ़साहत व बलाग़त पर तअज्जुब आने लगा आख़िर में मेरे दिल में ख़्याल आया कि क़ुरैश ठीक कहते हैं कि ये शख़्स शाइर है। अभी मैं इसी ख़्याल में था कि आप (ﷺ) ने ये आयतें तिलावत की कि ये क़ौल रसूले करीम का है शाइर का नहीं। तुममें ईमान ही कम है। तो मैंने ख़्याल किया अच्छा शाइर न सही, काहिन तो ज़रूर है। इधर आप (ﷺ) की तिलावत में ये आयत आई कि ये काहिन का क़ौल भी नहीं तुमने नसीहत ही कम ली है। अब आप (ﷺ) पढ़ते चले गये यहाँ तक कि पूरी सूरत ख़त्म की। फ़रमाते हैं कि ये पहला मौक़ा था कि मेरे दिल में इस्लाम पूरी तरह घर कर गया और रोंगटे-रोंगटे में इस्लाम की सच्चाई घुस गई। (ज़ईफ़ : अहमद : 1/17, मज्मउज़्ज़वाइद : : 9/65 इसकी सनद में शुरेह बिन उबैद है जिसका हज़रत उमर रज़ि. से सिमाअ साबित नहीं।)

पस ये भी मिन्जुम्ला उन अस्बाब के जो हज़रत उ़मर (रज़ि.) के इस्लाम लाने का बाइ़स हुए, एक ख़ास सबब है। हमने आपके इस्लाम लाने की पूरी कैफ़ियत 'सीरते उ़मर' में लिख दी है वलिल्लाहिल हम्दु वल्मिन्नह!

***

وَلَوۡ تَقَوَّلَ عَلَيۡنَا بَعۡضَ الۡاَقَاوِيۡلِ ﴿۴۴﴾ لَاَخَذۡنَا مِنۡهُ بِالۡيَمِيۡنِ ﴿۴۵﴾ ثُمَّ لَقَطَعۡنَا مِنۡهُ
الۡوَتِيۡنَ ﴿۴۶﴾ فَمَا مِنۡكُمۡ مِّنۡ اَحَدٍ عَنۡهُ حٰجِزِيۡنَ ﴿۴۷﴾ وَاِنَّهٗ لَتَذۡكِرَةٌ لِّلۡمُتَّقِيۡنَ ﴿۴۸﴾ وَاِنَّا
لَنَعۡلَمُ اَنَّ مِنۡكُمۡ مُّكَذِّبِيۡنَ ﴿۴۹﴾ وَاِنَّهٗ لَحَسۡرَةٌ عَلَى الۡكٰفِرِيۡنَ ﴿۵۰﴾ وَاِنَّهٗ لَحَقُّ الۡيَقِيۡنِ
﴿۵۱﴾ فَسَبِّحۡ بِاسۡمِ رَبِّكَ الۡعَظِيۡمِ ﴿۵۲﴾

तर्जुमा : "और अगर ये हम पर कोई भी बात बना लेता (44) तो अल्बत्ता हम इसका दाहिना हाथ पकड़ कर (45) फिर उसकी रगे दिल काट देते। (46) फिर तुममें से कोई भी उससे रोकने वाला न होता। (47) यक़ीनन ये क़ुरआन परहेज़गारों के लिये नसीहत है। (48) हमें पूरी तरह मालूम है कि तुममें से कुछ इसके झुठलाने वाले हैं। (49) बेशक ये झुठलाना काफ़िरों पर हसरत है। (50) और बेशक व शुब्हा ये यक़ीनी हक़ है। (51) पस तू अपने बुज़ुर्ग परवरदिगार की पाकी बयान कर।" (52)

रसूलुल्लाह (ﷺ) को क़ुरआन में कमी-बेशी का इख़्तियार नहीं (आयत : 44-52) : यहाँ फ़रमाने बारी हो रहा है कि जिस तरह तुम कहते हो अगर फ़िल्वाक़ेअ़ हमारे ये रसूल ऐसे ही होते कि हमारी रिसालत में कुछ कमी-बेशी कर डालते या हमारी न कही हुई बात हमारे नाम से बयान कर देते तो यक़ीनन उसी वक़्त हम उन्हें बदतरीन सज़ा देते। यानी अपने दायें हाथ से इसका दायाँ हाथ थामकर इसकी वो रग काट डालते जिस पर दिल मुअ़ल्लक़ है और कोई हमारे और इसके दरम्यान भी न आ सकता कि इसे बचाने की कोशिश करे। पस मतलब ये हुआ कि हुज़ूर (ﷺ) सच्चे पाकबाज़, रुश्दो-हिदायत वाले हैं इसीलिये अल्लाह तआ़ला ने ज़बरदस्त तब्लीग़ी ख़िदमत आप (ﷺ) को सौंप रखी है और अपनी तरफ़ से बहुत से ज़बरदस्त मुअ़जज़े और आप (ﷺ) के सिद्क़ की बेहतरीन बड़ी-बड़ी निशानियाँ आप (ﷺ) को इनायत फ़रमा रखी हैं।

क़ुरआन नसीहत है : फिर फ़रमाया ये क़ुरआन मुत्तक़ियों के लिये तज़्किरा है। जैसे और जगह है कि कह दो ये क़ुरआन तो ईमानदारों के लिये हिदायत और शिफ़ा है और बेईमान तो अन्धे-बहरे हैं ही। फिर फ़रमाया बावजूद

इस सफ़ाई और खुले हक़ के हमें बख़ूबी मालूम है कि तुममें से कुछ इसे झूठा बतलाते हैं, ये तकज़ीब उन लोगों के लिये क़यामत के दिन बाइसे हसरत व अफ़सोस होगी। या ये मतलब है कि ये कुरआन और इस पर ईमान हक़ीक़तन कुफ़्फ़ार पर हसरत होगा, जैसे और जगह है कि इसी तरह हम इसे गुनाहगारों के दिलों में उतारते हैं कि वो इस पर ईमान नहीं लाते। और जगह है, (وَحِيلَ بَيْنَهُمْ وَبَيْنَ مَا يَشْتَهُونَ) (सूरह सबा 34 : 54) 'और उनमें और उनकी ख़्वाहिश में हिजाब डाल दिया गया है।' फिर फ़रमाया ये ख़बर बिल्कुल सच, हक़ और बेशक व शुब्हा है। फिर अपने नबी (ﷺ) को हुक्म देता है कि इस कुरआन के नाज़िल करने वाले रब्बे अ़ज़ीम के नाम की बुज़ुर्गियाँ और पाकीज़गियाँ बयान करते रहो।

अल्लाह तआ़ला के फ़ज़्ल व करम से सूरह हाक़्क़ह की तफ़सीर ख़त्म हुई। वल्हम्दुलिल्लाहि रब्बिल आ़लमीन!

***

FLOW CHART

तरतीबी नक्श-ए-रब्त

MACRO-STRUCTURE

नज़्मे-जली

सूरह मआरिज - 70

आयात : 44, मक्की, पैराग्राफ : 5

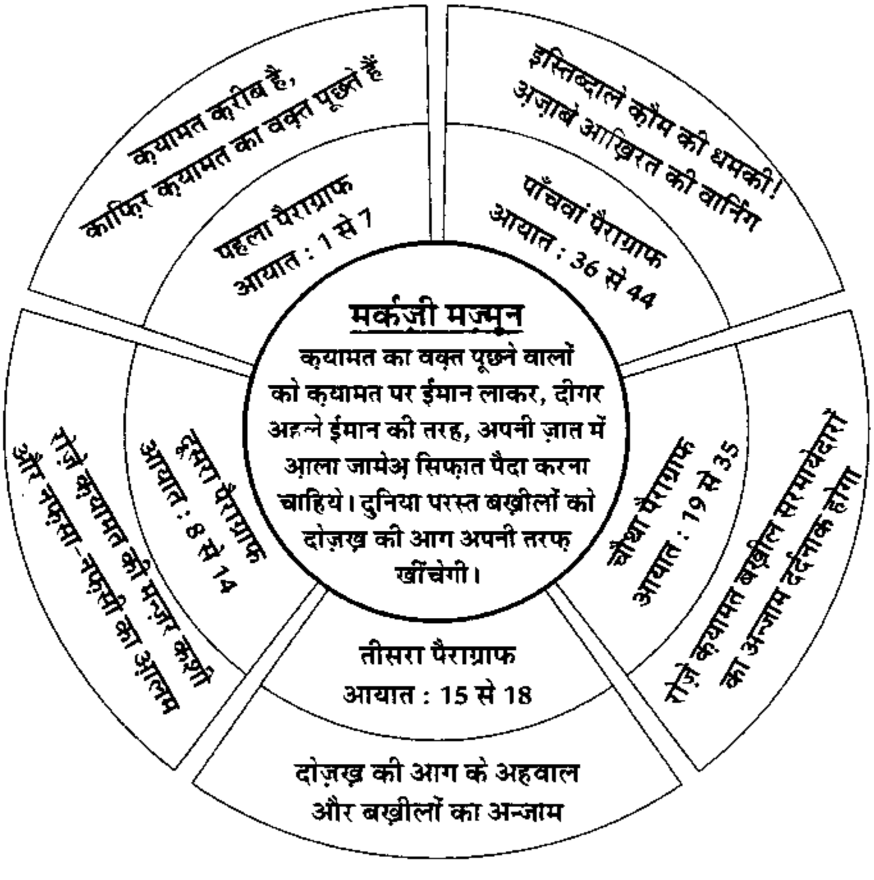

तफ़्सीर सूरह मआरिज

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ○

तर्जुमा : "शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है।"

***

سَاَلَ سَآئِلٌۢ بِعَذَابٍ وَّاقِعٍ ① لِّلۡکٰفِرِیۡنَ لَیۡسَ لَہٗ دَافِعٌ ② مِّنَ اللّٰہِ ذِی الۡمَعَارِجِ ③ تَعۡرُجُ الۡمَلٰٓئِکَۃُ وَ الرُّوۡحُ اِلَیۡہِ فِیۡ یَوۡمٍ کَانَ مِقۡدَارُہٗ خَمۡسِیۡنَ اَلۡفَ سَنَۃٍ ④ فَاصۡبِرۡ صَبۡرًا جَمِیۡلًا ⑤ اِنَّہُمۡ یَرَوۡنَہٗ بَعِیۡدًا ⑥ وَّ نَرٰىہُ قَرِیۡبًا ⑦

तर्जुमा : "एक तलब करने वाले ने उस अ़ज़ाब की ख़्वाहिश की जो होने वाला है। (1) काफ़िरों पर जिसे कोई हटाने वाला नहीं। (2) उस अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से जो सीढ़ियों वाला है। (3) जिसकी तरफ़ फ़रिश्ते और रूह चढ़ते हैं उस दिन में जिसकी मिक़्दार पचास हज़ार साल की है। (4) पस तू अच्छी तरह सब्र कर! (5) बेशक ये उस अ़ज़ाब को दूर समझ रहे हैं। (6) और हम उसे क़रीब ही देखते हैं।" (7)

आयत : 1-7 : बिअ़ज़ाबिन में जो 'ब' है वो बता रही है कि यहाँ फ़ैअल की तज़्मीन है गोया कि फ़ैअले मुक़द्दर है। यानी ये काफ़िर अ़ज़ाब के वाक़ेअ होने की तलब में जल्दी कर रहे हैं, जैसे और जगह है (وَ يَسۡتَعۡجِلُوۡنَكَ بِالۡعَذَابِ وَ لَنۡ يُّخۡلِفَ اللّٰهُ وَعۡدَهٗ) (सूरह हज 22 : 47) 'ये अ़ज़ाब के माँगने में उ़ज्लत (जल्दी) कर रहे हैं और अल्लाह तआ़ला हर्गिज़ वादाख़िलाफ़ी नहीं करता।' यानी उसका अ़ज़ाब यक़ीनन अपने वक़्ते मुक़र्ररह पर आकर ही रहेगा।

नसाई में हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से वारिद है कि काफ़िरों ने अ़ज़ाबे इलाही माँगा जो उन पर यक़ीनन आने वाला है। (अत्तबरी : 23/599) यानी आख़िरत में।

उनकी इस तलब के अल्फ़ाज़ भी दूसरी जगह कुरआन में मन्कूल हैं कहते हैं (وَ اِذۡ قَالُوا اللّٰهُمَّ اِنۡ كَانَ هٰذَا هُوَ الۡحَقَّ مِنۡ عِنۡدِكَ فَاَمۡطِرۡ عَلَيۡنَا حِجَارَةً مِّنَ السَّمَآءِ اَوِ ائۡتِنَا بِعَذَابٍ اَلِيۡمٍ ﴿۳۲﴾) (सूरह अन्फ़ाल 8 : 32) 'अल्लाह तआ़ला! अगर ये तेरे पास से हक़ है तो हम पर आसमान से पत्थर बरसा या हमारे पास कोई

दर्दनाक अ़ज़ाब ला।' इब्ने ज़ैद (रह.) वग़ैरह कहते हैं कि इससे मुराद वो अ़ज़ाब की वादी है जो क़यामत के दिन अ़ज़ाबों से बह निकलेगी। लेकिन ये क़ौल ज़ईफ़ है और मतलब से बहुत दूर है। सहीह क़ौल पहला है जिस पर रविशे कलाम की दलालत है। फिर फ़रमाता है कि वो अ़ज़ाब काफ़िरों के लिये तैयार है और उन पर आ पड़ने वाला है, जब आ जायेगा तो उसे कोई दूर करने वाला नहीं और न किसी में इतनी ताक़त है कि उसे हटा सके।

मआरिज का मफ़्हूम : ज़िल्मआरिज के मआना इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) की तफ़्सीर के मुताबिक़ दर्जों वाला यानी बुलंदियों और बुज़ुर्गियों वाला। (अत्तबरी : 23/600)

और हज़रत मुजाहिद (रह.) फ़रमाते हैं कि मआरिज से आसमान की सीढ़ियाँ मुराद हैं। (अत्तबरी : 23/600)

क़तादा (रह.) कहते हैं फ़ज़्ल व करम और नेमत व रहम वाला। यानी ये अ़ज़ाब उस अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से जो इन सिफ़तों वाला है। उसकी तरफ़ फ़रिश्ते और रूह चढ़ते हैं। रूह की तफ़्सीर में हज़रत अबू सालेह (रह.) फ़रमाते हैं कि ये एक क़िस्म की मख़्लूक़ है इंसान तो नहीं लेकिन इंसानों से बिल्कुल मुशाबेह है। मैं कहता हूँ कि इससे मुराद हज़रत जिब्रईल (अलै.) हों और ये अ़त्फ़ हो आ़म पर ख़ास का और मुम्किन है इससे मुराद बनी आदम की रूहें हों इसलिये कि वो भी क़ब्ज़ होने के बाद आसमान की तरफ़ चढ़ती हैं। जैसे कि हज़रत बराअ (रज़ि.) वाली लम्बी हदीस़ में है, 'जब फ़रिश्ते पाक रूह निकालते हैं तो उसे लेकर एक आसमान से दूसरे पर चढ़ते जाते हैं, यहाँ तक कि सातवें आसमान पर पहुँचते हैं।' (हसन : अहमद : 4/287, अबू दाऊद : 4753, ये रिवायत मुख़्तसरन इब्ने अबी शैबा : 3/310, किताबुज़्ज़ुहद : 339, अश्शरीअ़तु लिल्आजुरी : 367, हाकिम : 1/37 वग़ैरह में मौजूद है।)

गो इसके कुछ रावियों में कलाम है लेकिन ये हदीस़ मशहूर है और इसकी शहादत में हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) वाली हदीस़ भी है। (हसन : अहमद : 2/364-365, इब्ने माजह, किताबुज़्ज़ुहद, बाब ज़िक्रुल मौति वल्इस्तिअ़दाद लहू : 4262)

जैसे कि पहले बरिवायत इमाम अहमद, तिर्मिज़ी इब्ने माजह गुज़र चुकी है जिसकी सनद के रावी एक जमाअ़त की शर्त पर हैं। पहली हदीस़ भी मुस्नद अहमद, अबू दाऊद, नसाई और इब्ने माजह में है, हमने उसके अल्फ़ाज़ और उसके तुरूक़ का बसीत बयान आयत (يُثَبِّتُ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا) (सूरह इब्राहीम 14 : 27) की तफ़्सीर में कर दिया है।

पचास हज़ार साल का रोज़े क़यामत : फिर फ़रमाया उस दिन में जिसकी मिक़्दार पचास हज़ार साल की है। इसमें चार क़ौल हैं एक तो ये कि इससे मुराद वो दूरी है जो अस्फ़लुस्साफ़िलीन से अ़र्शे मुअ़ल्ला तक है और इसी तरह अ़र्श के नीचे से ऊपर तक का फ़ासला भी इतना ही है और अ़र्शे मुअ़ल्ला सुर्ख़ याक़ूत का है जैसे कि इमाम इब्ने अबी शैबा (रह.) ने अपनी किताब 'सिफ़तुल अ़र्श' में ज़िक्र किया है। इब्ने अबी हातिम में है हज़रत

इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) फ़रमाते हैं कि इसके हुक्म की इन्तिहा नीचे की ज़मीन से आसमानों के ऊपर तक पचास हज़ार साल की है और एक दिन एक हज़ार साल का है यानी आसमान से ज़मीन तक और ज़मीन से आसमान तक एक दिन में जो एक हज़ार साल के बराबर है इसलिये कि आसमान व ज़मीन का फ़ासला पाँच सौ साल है। यही रिवायत दूसरे तरीक़ से हज़रत मुजाहिद (रह.) के क़ौल से मरवी है। हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) के क़ौल से नहीं है। हज़रत इब्ने अ़ब्बास से इब्ने अबी हातिम में रिवायत है कि हर ज़मीन की मोटाई पाँच सौ साल के फ़ासले की है और एक ज़मीन से दूसरी ज़मीन तक पाँच सौ साल की दूरी है तो सात हज़ार साल ये हो गये, इसी तरह आसमान। तो चौदह हज़ार (14000) साल ये हुए और सातवें आसमान से अ़र्शे अ़ज़ीम तक छत्तीस हज़ार साल का फ़ासला है। यही मआना हैं अल्लाह तबारक व तआ़ला के इस फ़रमान के कि उस दिन में जिसकी मिक़्दार पचास हज़ार (50000) साल के बराबर है। दूसरा क़ौल ये है कि मुराद इससे ये है कि जब से इस आ़लम को अल्लाह तआ़ला ने पैदा किया है तब से लेकर क़यामत तक इसकी बक़ा की आख़िरी मुद्दत पचास हज़ार साल की है। चुनाँचे हज़रत मुजाहिद (रह.) फ़रमाते हैं कि दुनिया की कुल उम्र पचास हज़ार साल की है और यही एक दिन है जो इस आयत में मुराद लिया गया है। हज़रत इक्रिमा (रह.) फ़रमाते हैं कि दुनिया की पूरी मुद्दत यही है लेकिन किसी को मालूम नहीं कि किस क़द्र गुज़र गुई और कितनी बाक़ी है, बजुज़ अल्लाह तबारक व तआ़ला के। तीसरा क़ौल ये है कि ये दिन वो है जो दुनिया और आख़िरत में फ़ासला है। हज़रत मुहम्मद बिन कअ़ब (रह.) यही फ़रमाते हैं। लेकिन ये क़ौल बहुत ही ग़रीब है। चौथा क़ौल ये है कि इससे मुराद क़यामत का दिन है हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से बसनदे सहीह मरवी है।

हज़रत इक्रिमा (रह.) भी यही फ़रमाते हैं। (अत्तबरी : 23/601)

इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) का क़ौल है कि क़यामत के दिन को अल्लाह तआ़ला काफ़िरों पर चास हज़ार साल का कर देगा। (अत्तबरी : 23/603)

मुस्नद अहमद की हदीस़ में है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) से अ़र्ज़ किया गया कि ये दिन तो बहुत ही बड़ा है। आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है! ये मोमिन पर इस क़द्र आसान हो जायेगा कि दुनिया की एक फ़र्ज़ नमाज़ की अदायगी में जितना वक़्त लगता है उससे भी कम होगा।' (ज़ईफ़ : अहमद : 3/75, दराज की अबुल हैस़म से रिवायत ज़ईफ़ होती है। मुसनद अबी यअ़ला : 1390, इब्ने हिब्बान : 7334) ये हदीस़ इब्ने जरीर में भी है इसके दो रावी ज़ईफ़ है, वल्लाहु आ़लम!

मुस्नद की एक और हदीस़ में है कि हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) के पास से क़बीला बनू आ़मिर का एक शख़्स गुज़रा। लोगों ने कहा कि हज़रत ये अपने क़बीले में सबसे बड़ा मालदार है। आपने उसे बुलवाया और फ़रमाया, क्या वाक़ई तुम सबसे ज़्यादा मालदार हो? उसने कहा, हाँ! मेरे पास रंग-बिरंग के सैंकड़ों ऊँट, क़िस्म-क़िस्म के गुलाम, आ़ला-आ़ला दर्जे के घोड़े वग़ैरह हैं। हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने फ़रमाया, देखो! ख़बरदार ऐसा न हो कि ये जानवर अपने पाँव से तुम्हें रौंदें और अपने सींगों से तुम्हें मारें, बार-बार यही फ़रमाते

रहे यहाँ तक कि आमिरी के चेहरे का रंग उड़ गया और उसने कहा, हज़रत ये क्यों? आपने फ़रमाया, सुनो! मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना है कि जो अपने ऊँटों का हक़ अदा न करेगा उनकी सख़्ती में और उनकी आसानी में तो उसे अल्लाह तआला क़यामत के दिन एक चटियल लम्बे-चौड़े साफ़ मैदान में चित लिटायेगा और उन तमाम जानवरों को मोटा-ताज़ा करके हुक्म देगा कि इसे रौंदते हुए चलो। चुनाँचे एक-एक करके उसे कुचलते हुए गुज़रेंगे जब आख़िर वाला गुज़र जायेगा तो अव्वल वाला लौटकर आ जायेगा। यही अ़ज़ाब उसे होता रहेगा। उस दिन में जिसकी मिक़्दार पचास हज़ार साल की है यहाँ तक कि लोगों के दरम्यान फ़ैसला हो जायेगा। फिर वो अपना रास्ता देख लेगा। इसी तरह गाय, घोड़े, बकरी वग़ैरह भी सींगदार जानवर अपने सींगों से भी उसे मारते जायेंगे, कोई उनमें बेसींग का या टूटे हुए सींग वाला न होगा।' आमिरी ने पूछा, ऐ अबू हुरैरह! फ़रमाइये ऊँटों में अल्लाह तआला का हक़ क्या है? फ़रमाया, मिस्कीनों को सवारी के लिये तोहफ़ा देना, ग़ुरबा के साथ सुलूक करना, दूध पीने के लिये जानवर देना, उनके नरों की ज़रूरत जिन्हें मादा के लिये हो उन्हें माँगा हुआ बेक़ीमत देना। (हसन : अहमद : 2/489, अबू दाऊद, किताबुज़्ज़कात, बाब फ़ी हुक़ूक़िल माल : 1660, नसाई : 2444)

मुस्नद की एक हदीस़ में है कि सोने-चाँदी के ख़ज़ाने वाला उसका हक़ अदा न करेगा उसका सोना-चाँदी तख़्तियों की सूरत में बनाया जायेगा और जहन्नम की आग में तपाकर उसकी पेशानी, करवट और पीठ दाग़ी जायेगी, यहाँ तक कि अल्लाह तबारक व तआला अपने बन्दों के फ़ैसले कर ले। उस दिन में जिसकी मिक़्दार तुम्हारी गिनती से पचास हज़ार साल की होगी, फिर वो अपना रास्ता जन्नत की तरफ़ या जहन्नम की तरफ़ देख लेगा। फिर आगे बकरियों और ऊँटों का बयान है जैसे ऊपर गुज़रा और ये भी बयान है कि घोड़े तीन क़िस्म के लोगों के लिये हैं, एक क़िस्म के तो अज्र दिलाने वाले, दूसरी क़िस्म के पर्दापोशी करने वाले, तीसरी क़िस्म के बोझ ढोने वाले।' (सहीह मुस्लिम, किताबुज़्ज़कात, बाब इस्मु मानिइज़्ज़कात : 978, अहमद : 2/262) ये पूरी हदीस़ सहीह मुस्लिम शरीफ़ में है। इन रिवायतों के पूरा बयान करने की और इनकी सनदों और अल्फ़ाज़ के तमामतर नक़ल करने की मुनासिब जगह अहकाम की किताबुज़्ज़कात है। यहाँ इनके वारिद करने से हमारी ग़र्ज़ सिर्फ़ इन अल्फ़ाज़ से है कि यहाँ तक कि अल्लाह तआला अपने बन्दों के दरम्यान फ़ैसला करेगा, उस दिन में जिसकी मिक़्दार पचास हज़ार साल की है। हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) से एक शख़्स ने पूछा, कि वो दिन क्या है जिसकी मिक़्दार पचास हज़ार साल की है? इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने फ़रमाया, वो कौनसा पचास हज़ार साल का दिन होगा? उसने कहा कि हज़रत मैं तो ख़ुद पूछने आया हूँ। आपने फ़रमाया, 'सुनो! ये वो दिन हैं जिनका ज़िक्र अल्लाह तबारक व तआला ने अपनी किताब में किया है। अल्लाह तआला ही को उनकी हक़ीक़त का बख़ूबी इल्म है। मैं तो बावजूद न जानने के किताबुल्लाह में कुछ कहना मक्रूह जानता हूँ।

फिर फ़रमाता है कि ऐ नबी! तुम अपनी क़ौम के झुठलाने पर और अ़ज़ाब के माँगने की जल्दी पर जिसे वो अपने नज़दीक न आने वाला जानते हैं , सब्र व सिहार करो। जैसे और जगह है, (يَسْتَعْجِلُ بِهَا الَّذِينَ لَا

(يُؤْمِنُوْنَ بِهَا) (सूरह शूरा 42 : 18) 'बेईमान तो क़यामत के जल्द आने की तमन्नायें करते हैं और ईमानदार उसके आने को हक़ जानकर उससे डर रहे हैं।' इसीलिये यहाँ भी फ़रमाया कि ये तो उसे दूर जान रहे हैं बल्कि महाल (असम्भव) और वाक़ेअ न होने वाला मानते हैं। लेकिन हम उसे क़रीब ही देख रहे हैं। यानी मोमिन तो उसका आना हक़ जानते हैं और समझते हैं कि अब आया ही चाहता है, न जाने कब क़यामत क़ायम हो जाये और कब अ़ज़ाब आ पड़ें क्योंकि उसके सहीह वक़्त को तो बजुज़ ज़ाते बारी तआला के और कोई जानता ही नहीं, पस हर वो चीज़ जिसके आने और होने में कोई शक न हो उसका आना क़रीब ही समझा जाता है और उसके हो पड़ने का हर वक़्त खटका ही रहता है।

***

يَوْمَ تَكُوْنُ السَّمَآءُ كَالْمُهْلِ ﴿٨﴾ وَتَكُوْنُ الْجِبَالُ كَالْعِهْنِ ﴿٩﴾ وَلَا يَسْئَلُ حَمِيْمٌ
حَمِيْمًا ﴿١٠﴾ يُّبَصَّرُوْنَهُمْ ؕ يَوَدُّ الْمُجْرِمُ لَوْ يَفْتَدِيْ مِنْ عَذَابِ يَوْمِئِذٍ بِبَنِيْهِ ﴿١١﴾
وَصَاحِبَتِهٖ وَاَخِيْهِ ﴿١٢﴾ وَفَصِيْلَتِهِ الَّتِيْ تُـْٔوِيْهِ ﴿١٣﴾ وَمَنْ فِي الْاَرْضِ جَمِيْعًا ۙ ثُمَّ
يُنْجِيْهِ ﴿١٤﴾ كَلَّا ؕ اِنَّهَا لَظٰى ﴿١٥﴾ نَزَّاعَةً لِّلشَّوٰى ﴿١٦﴾ تَدْعُوْا مَنْ اَدْبَرَ وَتَوَلّٰى ﴿١٧﴾ وَجَمَعَ
فَاَوْعٰى ﴿١٨﴾

तर्जुमा : "जिस दिन आसमान मिस्ल तेल की तल्छट के हो जायेगा। (8) और पहाड़ मिस्ल रंगीन ऊन के हो जायेंगे। (9) और कोई दोस्त किसी दोस्त को न पूछेगा। (10) हालांकि एक-दूसरे को दिखा दिये जायेंगे, गुनहगार आज के दिन के अ़ज़ाब के बदले फ़िदये में अपने बेटों को (11) और अपनी बीवियों को और अपने भाई को (12) और अपने कुम्बे को जो उसे जगह देता था (13) और रूए ज़मीन के सब लोगों को देना चाहेगा ताकि उसे निजात मिल जाये। (14) मगर हर्गिज़ ये न होगा यक़ीनन वो शौले वाली आग है। (15) जो मुँह और सर की खाल खींच लाने वाली है। (16) वो हर उस शख़्स को पुकारेगी जो पीछे हटता और मुँह मोड़ता है। (17) और जमा करके सम्भाल रखता है।" (18)

क़यामत की हौलनाकियाँ (आयत : 8-18) : अल्लाह तआला फ़रमाता है कि जिस अ़ज़ाब को ये तलब कर रहे हैं वो अ़ज़ाब उन तलब करने वाले काफ़िरों पर उस दिन आयेगा जिस दिन आसमान मिस्ल मुह्ल

के हो जायेगा। यानी ज़ैतून के तेल की तल्छट जैसा हो जाये, और पहाड़ ऐसे हो जायें जैसे धुनी हुई ऊन। यही फ़रमान और जगह है, (وَتَكُونُ الْجِبَالُ كَالْعِهْنِ الْمَنفُوشِ) (सूरह क़ारिअह 101 : 5)

फिर फ़रमाता है कि कोई क़रीबी रिश्तेदार किसी अपने क़रीबी रिश्तेदार से पूछगछ भी न करेगा हालांकि एक-दूसरे को बुरी हालत में देख रहे होंगे लेकिन ख़ुद ऐसे मशग़ूल होंगे कि दूसरे का हाल पूछने का भी होश न रहेगा। सब आपा-धाबी में पड़े रहेंगे। इब्ने अब्बास (रज़ि.) फ़रमाते हैं कि एक दूसरे को देखेगा, पहचानेगा, फिर भाग खड़ा होगा। जैसे और जगह है (لِكُلِّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ يَوْمَئِذٍ شَأْنٌ يُغْنِيهِ) (सूरह अबस 80 : 37) 'हर एक शख़्स ऐसे मश्ग़ले में लगा हुआ होगा जो दूसरे की तरफ़ मुतवज्जह होने का मौक़ा ही न देगा।' (अत्तबरी : 23/605)

और जगह फ़रमान है कि लोगो! अपने रब से डरो और उस दिन का ख़ौफ़ करो जिस दिन बाप अपनी औलाद को और औलाद अपने बाप को कुछ काम न आयेगी। और जगह इरशाद है कि गो क़राबतदार हों लेकिन कोई किसी का बोझ न उठायेगा। और जगह फ़रमान है, (فَإِذَا نُفِخَ فِي الصُّورِ فَلَا أَنسَابَ بَيْنَهُمْ يَوْمَئِذٍ وَلَا يَتَسَاءَلُونَ) (सूरह मोमिनून 23 : 101) 'सूर फूंकते ही सब आपस के रिश्ते-नाते और पूछगछ ख़त्म हो जायेगी।' और एक जगह फ़रमान है, (يَوْمَ يَفِرُّ الْمَرْءُ مِنْ أَخِيهِ) (सूरह अबस 80 : 34) 'उस दिन इंसान अपने भाई से माँ से बाप से बीवी से और फ़र्ज़न्द से भागता-फिरेगा।' हर शख़्स बवजहे अपनी परेशानियों के दूसरे से ग़ाफ़िल होगा। ये वो दिन होगा कि उस दिन हर गुनहगार दिल से चाहेगा कि अपनी औलाद को अपने फ़िदये में देकर जहन्नम के अज़ाब से छूट जाये और अपनी बीवी को और अपने भाई को और अपने रिश्ते-कुम्बे को और अपने ख़ानदान और क़बीले को बल्कि चाहे तमाम रूए ज़मीन के लोगों को जहन्नम में डाल दिया जाये, लेकिन उसे आज़ाद कर दिया जाये।

आह! क्या ही दिल गुदाज़ मन्ज़र है कि अपने कलेजे के टुकड़ों को अपनी शाख़ों और अपनी जड़ों को और सब के सब को आज फ़िदा करने पर तैयार है ताकि ख़ुद बच जाये। फ़सीलह के एक मआना माल के भी किये गये हैं। ग़र्ज़ कि तमामतर महबूब हस्तियों को अपनी तरफ़ से भेंट में देने पर दिल से रज़ामन्द होगा। लेकिन कोई चीज़ काम न आयेगी, कोई बदला और फ़िदया न खपेगा। कोई ऐवज़ और मुआवज़ा क़ुबूल न किया जायेगा बल्कि उस आग के अज़ाबों में डाला जायेगा जो ऊँचे-नीचे और तेज़-तेज़ शौले फेंकने वाली और सख़्त भड़कने वाली है जो सर की खाल तक झुलसाकर खींच लाती है। बदन की खाल दूर कर देती है और खोपड़ी पिलपिली कर देती है, हड्डियों को गोश्त से अलग कर देती है, रग-पुट्ठे खिचने लगते हैं, हाथ-पाँव ऐंठने लगते हैं, पिण्डलियाँ कटी जाती हैं, चेहरा बिगड़ जाता है, हर-हर अंग बिगड़ जाता है, चीख़-पुकार करता रहता है, हड्डियों का चूरा करती रहती है, खालें जलाती जाती हैं, ये आग अपनी फ़सीह ज़बान और ऊँची आवाज़ से अपने वालों को जिन्होंने दुनिया में बदकारियाँ और अल्लाह तआला की नाफ़रमानियाँ की थीं, पुकारती है फिर जिस तरह परिन्द जानवर दाना चुगता है उसी तरह मैदाने महशर में से ऐसे बदकिरदार लोगों को एक-एक करके

देख भालकर चुन लेती है। अब उनकी बदआमालियाँ बयान हो रही हैं कि ये दिल से झुठलाने वाले और बदन से अ़मल छोड़ देने वाले थे, ये माल को जमा करने वाले और तिजोरी में बंद करके रख छोड़ने वाले थे, अल्लाह तआ़ला के ज़रूरी अहकाम में भी माल ख़र्च करने से गुरेज़ करते थे बल्कि ज़कात तक अदा न करते थे।

हदीस़ में है कि समेट-समेटकर सेंत-सेंत कर न रखो वरना अल्लाह तआ़ला भी तुझसे रोक लेगा। (सहीह बुख़ारी, किताबुज़्ज़कात, बाब अस्सलातु फ़ीमस्तताइ : 1434, सहीह मुस्लिम : 1029)

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन हकम तो इस आयत पर अ़मल करते हुए कभी थैली का मुँह ही न बांधते थे। इमाम हसन बसरी (रह.) फ़रमाते हैं कि ऐ इब्ने आदम! अल्लाह तआ़ला की वईद सुन रहा है फिर भी माल समेटता जा रहा है। हज़रत क़तादा (रह.) फ़रमाते हैं कि माल को जमा करने में हलाल-हराम का पास न रखता था और फ़रमाने इलाही होते हुए भी ख़र्च की हिम्मत नहीं करता था।

***

إِنَّ الْإِنسَانَ خُلِقَ هَلُوعًا ﴿١٩﴾ إِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ جَزُوعًا ﴿٢٠﴾ وَإِذَا مَسَّهُ الْخَيْرُ مَنُوعًا
﴿٢١﴾ إِلَّا الْمُصَلِّينَ ﴿٢٢﴾ الَّذِينَ هُمْ عَلَىٰ صَلَاتِهِمْ دَائِمُونَ ﴿٢٣﴾ وَالَّذِينَ فِي أَمْوَالِهِمْ
حَقٌّ مَّعْلُومٌ ﴿٢٤﴾ لِّلسَّائِلِ وَالْمَحْرُومِ ﴿٢٥﴾ وَالَّذِينَ يُصَدِّقُونَ بِيَوْمِ الدِّينِ ﴿٢٦﴾
وَالَّذِينَ هُم مِّنْ عَذَابِ رَبِّهِم مُّشْفِقُونَ ﴿٢٧﴾ إِنَّ عَذَابَ رَبِّهِمْ غَيْرُ مَأْمُونٍ ﴿٢٨﴾
وَالَّذِينَ هُمْ لِفُرُوجِهِمْ حَافِظُونَ ﴿٢٩﴾ إِلَّا عَلَىٰ أَزْوَاجِهِمْ أَوْ مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُهُمْ
فَإِنَّهُمْ غَيْرُ مَلُومِينَ ﴿٣٠﴾ فَمَنِ ابْتَغَىٰ وَرَاءَ ذَٰلِكَ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْعَادُونَ ﴿٣١﴾
وَالَّذِينَ هُمْ لِأَمَانَاتِهِمْ وَعَهْدِهِمْ رَاعُونَ ﴿٣٢﴾ وَالَّذِينَ هُم بِشَهَادَاتِهِمْ قَائِمُونَ ﴿٣٣﴾
وَالَّذِينَ هُمْ عَلَىٰ صَلَاتِهِمْ يُحَافِظُونَ ﴿٣٤﴾ أُولَٰئِكَ فِي جَنَّاتٍ مُّكْرَمُونَ ﴿٣٥﴾

तर्जुमा : ''बेशक इंसान बड़े कच्चे दिल वाला बनाया गया है। (19) जब उसे मुसीबत पहुँचती है तो हड़बड़ा उठता है। (20) और जब राहत मिलती है तो बुख़्ल (कन्जूसी) करने लगता है।

(21) मगर वो नमाज़ी (22) जो अपनी नमाज़ पर हमेशगी करने वाले हैं। (23) और जिनके मालों में मुक़र्ररह हिस्सा है। (24) माँगने वालों का भी और सवाल से बचने वालों का भी। (25) और जो इंसाफ़ के दिन पर यक़ीन रखते हैं। (26) और जो अपने रब के अ़ज़ाब से डरते रहते हैं। (27) बेशक उनके रब का अ़ज़ाब बेख़ौफ़ होने की चीज़ नहीं। (28) और जो लोग अपनी शर्मगाहों की (हराम से) हिफ़ाज़त करते हैं। (29) हाँ उनकी बीवियों और लौण्डियों के बारे में जिनके वो मालिक हैं उन्हें कोई मलामत नहीं। (30) अब जो कोई इसके अ़लावा (राह) ढूण्ढेगा तो ऐसे लोग हद से गुज़र जाने वाले होंगे। (31) और जो अपनी अमानतों की और अपने क़ौल व क़रार हर आन मल्हूज़ रखते हैं। (32) और जो अपनी गवाहियों पर सीधे और क़ायम रहते हैं। (33) और जो अपनी नमाज़ों की हिफ़ाज़त करते हैं। (34) उन ही लोगों की जन्नतों में इ़ज़्ज़त व तक्रीम की जायेगी।'' (35)

बेसब्री इंसानी आ़दत (आयत 19-35) : यहाँ इंसानी जिबिल्लत की कमज़ोरी बयान हो रही है कि बड़ा ही बेसब्रा है। मुसीबत के वक़्त तो मारे घबराहट और परेशानी के बावला सा हो जाता है गोया दिल उड़ गया और गोया अब कोई आस बाक़ी नहीं रही और राहत के वक़्त बख़ील-कन्जूस बन जाता है। अल्लाह तआ़ला का हक़ भी डकार जाता है। रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़रमाते हैं, 'बदतरीन चीज़ इंसान में बेहद बख़ीली और इन्तिहाई दर्जे की नामर्दी है।' (सहीह : अबू दाऊद, किताबुल जिहाद, बाब फ़िल्जुरअति वल्जुब्नि : 2511, अहमद : 2/320, इब्ने हिब्बान : 3250, हिलियतुल औलिया : 9/50)

फिर फ़रमाया कि हाँ इस मज़्मूम ख़स्लत से वो लोग दूर हैं जिन पर ख़ास फ़ज़्ले इलाही है और जिन्हें तौफ़ीक़ ख़ेज़ अज़ल से मिल चुकी है, जिनकी सिफ़तें ये हैं कि वो पूरे नमाज़ी हैं वक़्तों की निगेहबानी करने वाले वाजिबात नमाज़ को अच्छी तरह बजा लाने वाले, सुकून व इत्मीनान और ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़ से पाबंदी के साथ नमाज़ अदा करने वाले हैं। जैसे फ़रमाया, (قَدْ اَفْلَحَ الْمُؤْمِنُوْنَ ۝) (सूरह मोमिनून 23 : 1) 'उन ईमान वालों ने निजात पा ली जो अपनी नमाज़ ख़ौफ़े इलाही से अदा करते हैं।'

ठहरे हुए बेहरकत के पानी को भी अ़रब माउन दाइमुन कहते हैं (फ) इससे साबित हुआ कि नमाज़ में इत्मीनान वाजिब है जो शख़्स अपने रुकूअ़ व सुजूद पूरी तरह ठहरकर बाइत्मीनान (इत्मीनान के साथ) अदा नहीं करता वो अपनी नमाज़ पर दाइम नहीं क्योंकि न वो सुकून करता है न इत्मीनान बल्कि कव्वे की तरह ठोंगे मारता है उसकी नमाज़ उसे निजात नहीं दिलवायेगी और ये भी कहा गया है कि इससे मुराद हर नेक अ़मल पर मुदावमत और हमेशगी करना है जैसे कि नबी (ﷺ) का फ़रमान है, 'अल्लाह तआ़ला को सबसे ज़्यादा पसंद वो अ़मल है जिस पर मुदावमत (हमेशगी) की जाये गो कम हो।' (सहीह बुख़ारी, किताबुर्रिक़ाक़, बाब अल्क़सदु वल्मुदावमतु अ़लल अ़मल : 6465, सहीह मुस्लिम : 783)

ख़ुद हुज़ूर (ﷺ) की आ़दते मुबारक भी यही थी कि जिस काम को करते उस पर हमेशगी करते।

(सहीह बुख़ारी, किताबुस्सियाम, बाब सौमु शअ़बान : 1970, सहीह मुस्लिम : 785)

हज़रत क़तादा (रह.) फ़रमाते हैं कि हमसे ज़िक्र किया गया कि हज़रत दानियाल (अ़लै.) पैग़म्बर ने उम्मते मुहम्मद की तारीफ़ करते हुए फ़रमाया कि वो ऐसी नमाज़ पढ़ेगी कि अगर क़ौमे नूह ऐसी नमाज़ पढ़ती तो डूबती नहीं और क़ौमे आ़द की अगर ऐसी नमाज़ होती तो उन पर बेबरकती की हवायें न भेजी जातीं और अगर क़ौमे समूद की नमाज़ ऐसी होती तो उन्हें चीख़ से हलाक न किया जाता।' पस ऐ लोगो! नमाज़ को अच्छी तरह पाबंदी से पढ़ा करो। मोमिन का ये ज़ेवर और उसका बेहतरीन ख़ल्क़ है।

मालों में ग़रीब का हिस्सा : फिर फ़रमाता है कि उनके मालों में हाजतमन्दों का भी मुक़र्ररह हिस्सा है साइलुन और महरूमुन की पूरी तफ़्सीर सूरह ज़ारियात में गुज़र चुकी है। ये लोग हिसाब और जज़ा के दिन पर भी यक़ीने कामिल और पूरा ईमान रखते हैं। इसी वजह से वो आमाल करते हैं जिनसे सवाब पायें और अ़ज़ाब से छूटें। फिर उनकी सिफ़त बयान होती है कि वो अपने रब के अ़ज़ाब से डरने और ख़ौफ़ खाने वाले हैं, जिस अ़ज़ाब से कोई अ़क़्लमन्द इंसान बेख़ौफ़ नहीं रह सकता। हाँ जिसे अल्लाह तआ़ला अमन दे और ये लोग अपनी शर्मगाहों को हरामकारी से रोकते हैं। जहाँ अल्लाह तआ़ला की इजाज़त नहीं, उस जगह से बचाते हैं। हाँ अपनी बीवियों और अपनी मम्लूका लौण्डियों से अपनी ख़्वाहिश पूरी करते हैं, सो इसमें उन पर कोई मलामत और अलाहना नहीं। लेकिन जो शख़्स इनके अ़लावा और जगह या और तरह अपनी शहवत रानी करे वो यक़ीनन हुदूदे इलाही से तजावुज़ करने वाला है। इन दोनों आयतों की पूरी तफ़्सीर क़द अफ़्लहल् मुअ्मिनून में गुज़र चुकी है, यहाँ दोबारा लाने की ज़रूरत नहीं। ये लोग अमानत के अदा करने वाले, वादों और अ़हदों, क़ौल व क़रार को पूरा करने वाले और अच्छी तरह निबाहने वाले हैं, न ख़यानत करते हैं, न बदअ़हदी और न वादा शिक्नी करते हैं। ये सब सिफ़तें मोमिनों की हैं और उनके ख़िलाफ़ अ़मल करने वाला मुनाफ़िक़ है। जैसे कि सहीह हदीस में है, 'मुनाफ़िक़ की तीन ख़स्लतें हैं, जब कभी बात करे तो झूठ बोले, जब कभी वादा करते तो उसके ख़िलाफ़ करे और जब अमानत उसके पास रखी जाये तो ख़यानत करे।' (सहीह बुख़ारी, किताबुल ईमान, बाब अ़लामातुल मुनाफ़िक़ : 33, सहीह मुस्लिम : 59)

और एक रिवायत में है, 'जब कभी अ़हद करे तो उसे तोड़ दे और जब कभी झगड़े तो गालियाँ बोले।' (सहीह बुख़ारी, हवाला साबिक़ : 34, सहीह मुस्लिम : 58)

ये अपनी शहादतों की भी हिफ़ाज़त करने वाले हैं, यानी न उसमें कमी करते हैं न ज़्यादती, न शहादत देने से भागते हैं न उसे छिपाते हैं, जो छिपा ले तो वो दिल का गुनहगार है।

फिर फ़रमाया कि वो अपनी नमाज़ की पूरी चौकसी करते हैं यानी वक़्त पर अरकान और वाजिबात और मुस्तहब्बात को पूरी तरह बजा लाकर नमाज़ पढ़ते हैं। यहाँ ये बात ख़ास तवज्जह के लायक़ है कि उन जन्नतियों के औसाफ़ बयान करते हुए शुरू वस्फ़ भी नमाज़ की अदायगी का बयान किया और ख़त्म भी उसी पर किया। पस मा'लूम हुआ कि नमाज़ अम्रे दीन में अ़ज़ीमुश्शान काम है और सबसे ज़्यादा शर्फ़ और फ़ज़ीलत

वाली चीज़ भी यही है। इसका अदा करना सख़्त ज़रूरी और इसका बन्दोबस्त निहायत ही ताकीद वाला है। सूरह मोमिनून में ठीक इसी तरह बयान हुआ है और वहाँ औसाफ़ के बाद बयान फ़रमाया है कि यही लोग हमेशा-हमेशा के लिये वारिसे फ़िरदौस हैं और यहाँ फ़रमाया कि यही लोग जन्नती हैं और वहाँ क़िस्म-क़िस्म की लज़्ज़तों और ख़ुश्बूओं से इज़्ज़त व इक़्बाल के साथ मसरूर व महज़ूज़ होंगे।

***

فَمَالِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا قِبَلَكَ مُهْطِعِيْنَ ﴿٣٦﴾ عَنِ الْيَمِيْنِ وَعَنِ الشِّمَالِ عِزِيْنَ ﴿٣٧﴾
اَيَطْمَعُ كُلُّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ اَنْ يُّدْخَلَ جَنَّةَ نَعِيْمٍ ﴿٣٨﴾ كَلَّا ۭ اِنَّا خَلَقْنٰهُمْ مِّمَّا يَعْلَمُوْنَ
﴿٣٩﴾ فَلَآ اُقْسِمُ بِرَبِّ الْمَشٰرِقِ وَالْمَغٰرِبِ اِنَّا لَقٰدِرُوْنَ ﴿٤٠﴾ عَلٰٓى اَنْ نُّبَدِّلَ خَيْرًا
مِّنْهُمْ ۙ وَمَا نَحْنُ بِمَسْبُوْقِيْنَ ﴿٤١﴾ فَذَرْهُمْ يَخُوْضُوْا وَيَلْعَبُوْا حَتّٰى يُلٰقُوْا يَوْمَهُمُ
الَّذِيْ يُوْعَدُوْنَ ﴿٤٢﴾ يَوْمَ يَخْرُجُوْنَ مِنَ الْاَجْدَاثِ سِرَاعًا كَاَنَّهُمْ اِلٰى نُصُبٍ
يُّوْفِضُوْنَ ﴿٤٣﴾ خَاشِعَةً اَبْصَارُهُمْ تَرْهَقُهُمْ ذِلَّةٌ ۭ ذٰلِكَ الْيَوْمُ الَّذِيْ كَانُوْا
يُوْعَدُوْنَ ﴿٤٤﴾

तर्जुमा : "पस काफ़िर तेरी तरफ़ क्यों दौड़ते आते हैं? (36) दायें और बायें से गिरोह के गिरोह। (37) क्या उनमें से हर एक की उम्मीद ये है कि वो नेमतों वाली जन्नत में दाख़िल किया जायेगा? (38) ऐसा हर्गिज़ न होगा हमने उन्हें उस चीज़ से पैदा किया है जिसे वो जानते हैं। (39) पस मुझे क़सम है मश्रिक़ों और मग़्रिबों के रब की कि हम यक़ीनन क़ादिर हैं। (40) कि उनके ऐवज़ उनसे अच्छे लोग ले आयें, हम आजिज़ नहीं हैं। (41) पस तू उन्हें झगड़ता खेलता छोड़ दे यहाँ तक कि ये अपने उस दिन से जा मिलें जिसका उनसे वादा किया जाता है। (42) उनकी आँखें झुकी हुई होंगी उन पर ज़िल्लत छा रही होगी, ये है वो दिन जिसका उनसे वादा किया जाता था।" (44)

आयत : 36-44 : अल्लाह तआला अ़ज़्ज़ व जल्ल उन काफ़िरों पर इंकार कर रहा है जो हुज़ूर (ﷺ) के मुबारक ज़माने में थे। ख़ुद आपको वो देख रहे थे और आप (ﷺ) जो हिदायत लेकर आयें वो उनके सामने थी और आपके खुले मुअ़जज़े भी अपनी आँखों से देख रहे थे फिर बावजूद इन तमाम बातों के वो भाग जाते थे और टोलियाँ-टोलियाँ होकर दायें-बायें कतरा जाते थे। जैसे और जगह है, (فَمَا لَهُمْ عَنِ التَّذْكِرَةِ مُعْرِضِينَ ۝ كَأَنَّهُمْ حُمُرٌ مُّسْتَنفِرَةٌ ۝) (सूरह मुदस्सिर 74 : 49) 'ये नसीहत से मुँह फेरकर उन गधों की तरह जो शेर से भाग रहे हों, क्यों भाग रहे हैं?'

यहाँ भी इसी तरह फ़रमा रहा है कि उन कुफ़्फ़ार को क्या हो गया है? ये नफ़रत करके क्यों तेरे पास से भागे जा रहे हैं? क्यों दायें-बायें सिरकते जाते हैं? और क्या वजह है कि मुतफ़र्रिक़ तौर पर इख़्तिलाफ़ के साथ इधर-उधर हो रहे हैं।

हज़रत इमाम अहमद बिन हम्बल (रह.) ने ख़्वाहिशे नफ़्स पर अ़मल करने वालों के हक़ में यही फ़रमाया है कि वो किताबुल्लाह के मुख़ालिफ़ होते हैं और आपस में भी अलग-अलग होते हैं। हाँ किताबुल्लाह की मुख़ालिफ़त में सब मुत्तफ़िक़ हैं। हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से बरिवायत औफ़ी मरवी है कि वो टोलियाँ होकर बेपरवाही के साथ तेरे दायें-बायें होकर तुझे मज़ाक़ से घूरते हैं। हज़रत हसन फ़रमाते हैं कि दायें-बायें अलग हो जाते हैं और पूछते हैं कि इस शख़्स ने क्या कहा? हज़रत क़तादा (रह.) फ़रमाते हैं कि दायें-बायें टोलियाँ-टोलियाँ होकर हुज़ूर (ﷺ) के आस-पास फिरते रहते हैं न किताबुल्लाह की चाहत है न रसूलुल्लाह (ﷺ) की रग़बत है। एक हदीस़ में है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) लोगों के पास तशरीफ़ लाये और वो मुतफ़र्रिक़ तौर पर हल्क़े-हल्क़े थे तो आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'मैं तुम्हें अलग-अलग जमाअ़तों की सूरत में कैसे देख रहा हूँ?' (अहमद : 5/93, सहीह मुस्लिम, किताबुस्सलात, बाब अल्अम्रु बिस्सुकून फ़िस्सलात : 430)

काफ़िरों की जन्नत में जाने की ख़्वाहिश : फिर इरशाद होता है कि क्या उनकी चाहत है कि जन्नते नईम में दाख़िल किये जायें? ऐसा हर्गिज़ न होगा यानी जब उनकी ये हालत है कि किताबुल्लाह और रसूलुल्लाह (ﷺ) से दायें-बायें कतरा जाते हैं फिर उनकी ये चाहत पूरी नहीं हो सकती बल्कि ये जहन्नमी गिरोह है। अब जिस चीज़ को ये मुहाल जानते थे उसका बेहतरीन सुबूत उन ही की मालूमात और इक़रार से बयान हो रहा है कि जिसने तुम्हें ज़ईफ़ पानी से पैदा किया है जैसे कि ख़ुद तुम्हें भी मालूम है फिर क्या वो तुम्हें दोबारा नहीं पैदा कर सकता? जैसे और जगह है, (أَلَمْ نَخْلُقكُّم مِّن مَّاءٍ مَّهِينٍ ۝) (सूरह मुर्सलात 77 : 20) 'क्या हमने तुम्हें नाक़द्रे पानी से पैदा नहीं किया?' फ़रमान है, (فَلْيَنظُرِ الْإِنسَانُ مِمَّ خُلِقَ ۝ خُلِقَ مِن مَّاءٍ دَافِقٍ ۝ يَخْرُجُ مِن بَيْنِ الصُّلْبِ وَالتَّرَائِبِ ۝ إِنَّهُ عَلَىٰ رَجْعِهِ لَقَادِرٌ ۝ يَوْمَ تُبْلَى السَّرَائِرُ ۝ فَمَا لَهُ مِن قُوَّةٍ وَلَا نَاصِرٍ ۝) (सूरह तारिक़ 86 : 5) 'इंसान को देखना चाहिये कि वो किस चीज़ से पैदा किया गया है? उछलने वाले पानी से पैदा किया गया है जो पीठ और छाती के दरम्यान से निकलता है, यक़ीनन वो अल्लाह तआला उसके

लौटाने पर क़ादिर है जिस दिन पौशीदगियाँ खुल पड़ेंगी और कोई ताक़त न होगी न मददगार।'

पस यहाँ भी फ़रमाता है मुझे क़सम है उसकी जिसने ज़मीन व आसमान को पैदा किया और मश्रिक़-मग़्रिब मुतअय्यन की और सितारों के छिपने और ज़ाहिर होने की जगहें मुक़र्रर कर दीं। मतलब ये है कि ऐ काफ़िरो! जैसा तुम्हारा गुमान है वैसा मामला नहीं कि न हिसाब-किताब होगा न हश्र-नश्र होगा बल्कि ये सब यक़ीनन होने वाली चीज़ें हैं। इसीलिये क़सम से पहले उनके बातिल ख़्याल की तक्ज़ीब की और उसे इस तरह साबित किया कि अपनी क़ुदरते कामिला के अलग-अलग नमूने उनके सामने पेश किये। जैसे आसमान व ज़मीन की शुरूआती पैदाइश और उनमें हैवानात जमादात और अलग-अलग क़िस्म की मख़्लूक़ की मौजूदगी। जैसे और जगह है, (لَخَلْقُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ اَكْبَرُ مِنْ خَلْقِ النَّاسِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ) (सूरह मोमिन 40 : 57) 'आसमान व ज़मीन का पैदा करना लोगों के पैदा करने से बहुत बड़ा है लेकिन अक्सर लोग बेइल्म हैं।'

मतलब ये है कि जब बड़ी-बड़ी चीज़ों को पैदा करने पर अल्लाह तआला क़ादिर है तो छोटी-छोटी चीज़ों की पैदाइश पर क्यों क़ादिर न होगा? जैसे और जगह है, (بَلٰٓى اِنَّهٗ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ) अ-वलम् यरौ अन्नल्लाहल्लज़ी ख़-ल-क़स्समावाति वल्अर्-ज़ वलम् यअ्-य बिख़ल्क़िहिन्न बिक़ादिरिन् अला अंय्युह्यियल् मौता बला इन्नहू अला कुल्लि शैइन क़दीर (सूरह अहक़ाफ़ 46 : 33) 'क्या ये नहीं देखते कि जिसने आसमानों और ज़मीनों को पैदा किया और उनकी पैदाइश में न थका, क्या वो मुर्दों को ज़िन्दा करने पर क़ादिर नहीं? बेशक वो क़ादिर है और एक उसी पर क्या हर-हर चीज़ पर उसे क़ुदरत हासिल है।'

और जगह इरशाद है, अवलैसल्लज़ी 'क्या ज़मीन व आसमान को पैदा करने वाला उनके मिस्ल पैदा करने पर क़ादिर नहीं? हाँ है और वही पैदा करने वाला और जानने वाला है। वो जिस चीज़ का इरादा करे, कह देता है कि हो जा! वो उसी वक़्त हो जाती है।'

मश्रिक़ और मग़्रिब का रब : यहाँ इरशाद हो रहा है कि मश्रिक़ों और मग़्रिबों के परवरदिगार की क़सम! हम उनके उन जिस्मों को जैसे ये अब हैं उससे भी बेहतर सूरत में बदल डालने पर पूरे-पूरे क़ादिर हैं। कोई चीज़ कोई शख़्स कोई काम हमें आजिज़ और दरमान्दा नहीं कर सकता। जैसे और जगह इरशाद है, (اَيَحْسَبُ الْاِنْسَانُ اَلَّنْ نَّجْمَعَ عِظَامَهٗ) (सूरह क़ियामह 75 : 3) 'क्या किसी शख़्स का ये गुमान है कि हम उसकी हड्डियाँ जमा न कर सकेंगे? ग़लत गुमान है बल्कि हम तो उसकी पोर-पोर करके ठीक-ठाक बना देंगे।' और जगह फ़रमाया, (نَحْنُ قَدَّرْنَا بَيْنَكُمُ الْمَوْتَ وَمَا نَحْنُ بِمَسْبُوْقِيْنَ) 'हमने तुम्हारे दरम्यान मौत मुक़द्दर कर दी है और हम इससे आजिज़ नहीं कि तुम जैसों को बदल डालें और तुम्हें उस नई पैदाइश में पैदा करें जिसे तुम जानते भी नहीं।' (सूरह वाक़िअह 56 : 60)

पस एक तो मतलब ऊपर दर्ज की गई आयत का ये है, दूसरा मतलब इमाम इब्ने जरीर (रह.) ने ये भी बयान फ़रमाया है कि हम इस बात पर क़ादिर हैं कि तुम्हारे बदले ऐसे लोग पैदा कर दें जो हमारे मुतीअ और

फ़रमांबरदार हों और हमारी नाफ़रमानियों से रुके रहने वाले हों। जैसे और जगह फ़रमान है, वइन् ततवल्लौ 'अगर तुमने मुँह मोड़ा तो अल्लाह तआला तुम्हारे सिवा और क़ौम को लायेगा और वो तुम जैसी न होगी।' लेकिन पहला मतलब दूसरी आयतों को साफ़ दलालत की वजह से ज़्यादा ज़ाहिर है, वल्लाहु सुब्हानहू व तआला आलम!

झुठलाने वालों की रोज़े क़यामत पेशी : फिर फ़रमाता है ऐ नबी! इन्हें इनके झुठलाने और कुफ़्र करने और सरकशी में बढ़ने ही में छोड़ दो, जिसका वबाल उन पर उस दिन आयेगा जिसका उनसे वादा हो चुका है जिस दिन अल्लाह तआला उन्हें बुलायेगा और ये मैदाने महशर की तरफ़ जहाँ उन्हें हिसाब के लिये खड़ा किया जायेगा, इस तरह लपकते हुए जायेंगे जिस तरह दुनिया में किसी बुत या अलम (झण्डे) को या थान और और चिल्ले को छूने और डंडोत करने के लिये एक दूसरे से आगे बढ़ते हुए जाते हैं, मारे शर्म व निदामत के निगाहें ज़मीन में गड़ी हुई होंगी और चेहरों पर फटकार बरस रही होगी। ये है दुनिया में अल्लाह तआला की इताअत से सरकशी करने का नतीजा। और ये है वो दिन जिसके होने को आज मुहाल जानते हैं और हँसी-मज़ाक़ में नबी (ﷺ) की और शरीअत की और कलामुल्लाह की हिक़ारत करते हुए कहते हैं कि क़यामत क्यों क़ायम नहीं होती हम पर अज़ाब क्यों नहीं आता।

अल्हम्दुलिल्लाह सूरह मआरिज की तफ़्सीर भी ख़त्म हुई।

***

FLOW CHART
तरतीबी नक्श-ए-रब्त

MACRO-STRUCTURE
नज़्मे-जली

सूरह नूह - 71

आयात : 28, मक्की, पैराग्राफ : 5

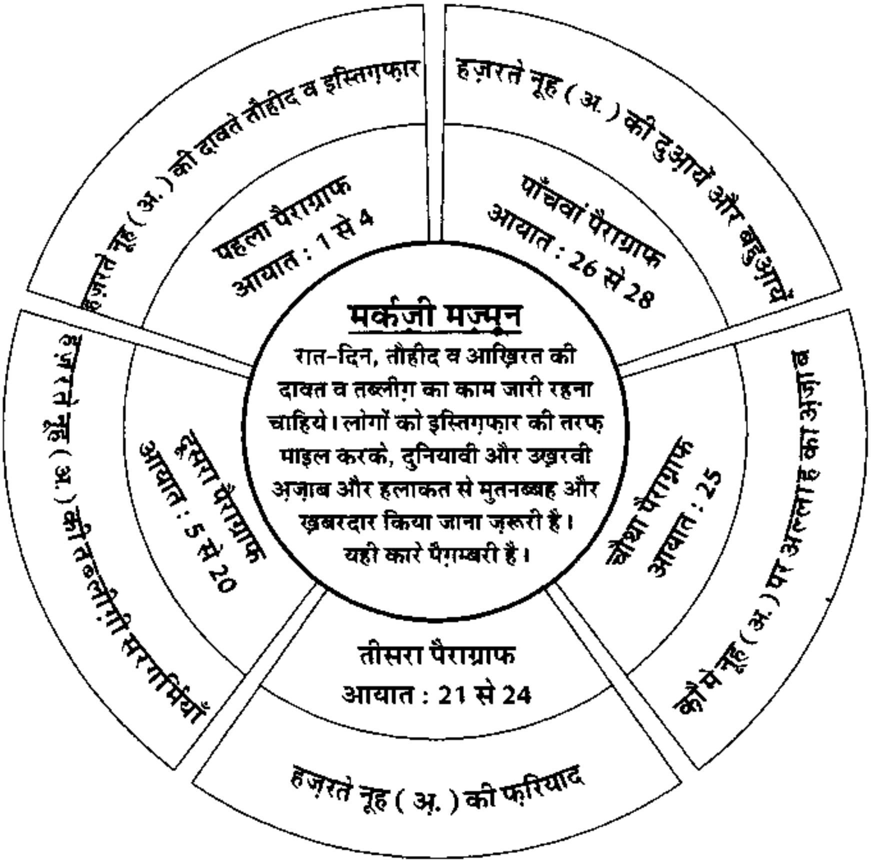

ज़मानए नुज़ूल

सूरह नूह भी ग़ालिबन हिजरते हब्शा (रजब 5 नबवी) के बाद, ग़ालिबन 5 नबवी के अवाख़िर में नाज़िल हुई, जब मुख़ालिफ़त में शिद्दत आ गई थी।

इस सूरत में दावत के इस मरहले में नौमुस्लिम सहाबा को हज़रते नूह (अलै.) की तवील दावती ज़िन्दगी से सब्र व इस्तिक़ामत की तालीम दी गई है और कुरैश को धमकी दी गई है कि दावते तौहीद व इस्तिग़फ़ार को मुस्तरद करने की सूरत में, क़ौमे नूह की तरह उन्हें भी हलाक किया जा सकता है।

तफ़्सीर सूरह नूह

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

तर्जुमा : "शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है।"

***

اِنَّآ اَرْسَلْنَا نُوْحًا اِلٰى قَوْمِهٖٓ اَنْ اَنْذِرْ قَوْمَكَ مِنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ
① قَالَ يٰقَوْمِ اِنِّىْ لَكُمْ نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ② اَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ وَاتَّقُوْهُ وَاَطِيْعُوْنِ ③
يَغْفِرْ لَكُمْ مِّنْ ذُنُوْبِكُمْ وَيُؤَخِّرْكُمْ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى ۭ اِنَّ اَجَلَ اللّٰهِ اِذَا جَاۗءَ لَا
يُؤَخَّرُ ۘ لَوْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ④

तर्जुमा : "यक़ीनन हमने नूह को उनकी क़ौम की तरफ़ भेजा कि अपनी क़ौम को डरा दो और ख़बरदार कर दो इससे पहले कि उनके पास दर्दनाक अ़ज़ाब आ जाये। (1) नूह ने कहा, ऐ मेरी क़ौम! मैं तुम्हें साफ़-साफ़ डराने वाला हूँ। (2) कि तुम अल्लाह तआ़ला की इबादत करो उसी से डरो और मेरा कहना मानो। (3) तो वो तुम्हारे गुनाह बख़्श देगा और तुम्हें एक वक़्ते मुक़र्ररह तक छोड़ देगा, यक़ीनन अल्लाह तआ़ला का वादा जब आ जाता है तो मौक़ूफ़ नहीं होता, काश कि तुम्हें समझ होती।" (4)

हज़रत नूह (अ़लै.) की तब्लीग़ (आयत : 1-4) : अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि उसने हज़रत नूह (अ़लै.) को उनकी क़ौम की तरफ़ अपना रसूल बनाकर भेजा और हुक्म दिया कि अ़ज़ाब के आने से पहले अपनी क़ौम को होशियार कर दो अगर वो तौबा कर लेंगे और अल्लाह तआ़ला की तरफ़ झुकने लगेंगे तो अ़ज़ाबे इलाही उनसे उठ जायेगा। हज़रत नूह (अ़लै.) ने ये पैग़ामे इलाही अपनी उम्मत को पहुँचा दिया और साफ़ कह दिया कि देखो मैं खुले लफ़्ज़ों में तुम्हें आगाह किये देता हूँ। मैं साफ़-साफ़ कह रहा हूँ कि अल्लाह तआ़ला की इबादत उसका डर और मेरी इताअ़त लाज़िमी चीज़ें हैं, जो काम तुम्हारे रब ने तुम पर हराम किये

हैं, उनसे बचो। गुनाह के कामों से अलग-थलग रहो जो कुछ मैं कहूँ बजा लाओ, जिससे रोकूँ रुक जाओ। मेरी रिसालत की तस्दीक़ करो, अल्लाह तआला तुम्हारी ख़ताओं से दरगुज़र फ़रमायेगा। यग़्फ़िर लकुम्-मिन् ज़ुनूबिकुम् में लफ़्ज़े 'मिन' यहाँ ज़ाइद है। इस्बात के मौक़े पर भी कभी लफ़्ज़े मिन ज़ाइद आता है। जैसे अरब के मक़ूले क़द का-न मिम्-मतरिन में और ये भी हो सकता है कि ये अन के मआना में हो। बल्कि इब्ने जरीर (रह.) तो इसी को पसंद फ़रमाते हैं।

और ये क़ौल भी है कि तब्ईज़ के लिये है, यानी तुम्हारे कुछ गुनाह माफ़ फ़रमा देगा। यानी वो गुनाह जिन पर सज़ा की वईद है और वो बड़े-बड़े गुनाह हैं। अगर तुमने ये तीनों काम किये तो वो माफ़ हो जायेंगे और जिन अज़ाबों से वो तुम्हें अब तुम्हारी उन ख़ताओं और ग़लतकारियों की वजह से बर्बाद करने वाला है, उस अज़ाब को हटा देगा और तुम्हारी उम्रें बढ़ा देगा। इस आयत से ये इस्तिदलाल भी किया गया है कि इताअते इलाही और नेकी का सुलूक और सिला रहमी से हक़ीक़तन उम्र बढ़ जाती है। हदीस में ये भी है कि सिला रहमी उम्र बढ़ाती है। (इसकी तख़्रीज सूरह रअद आयत 39 के तहत गुज़र चुकी है।)

फिर इरशाद होता है कि नेक आमाल इससे पहले कर लो कि अल्लाह तआला का अज़ाब आ जाये, इसलिये कि जब वो आ जाता है फिर न उसे कोई हटा सकता है और न रोक सकता है। उस बड़े की बड़ाई ने हर चीज़ को पस्त कर रखा है, उसकी इज़्ज़त व अज़्मत के सामने तमाम मख़्लूक़ पस्त है।

***

قَالَ رَبِّ إِنِّي دَعَوْتُ قَوْمِي لَيْلًا وَنَهَارًا ﴿٥﴾ فَلَمْ يَزِدْهُمْ دُعَاءِي إِلَّا فِرَارًا ﴿٦﴾
وَإِنِّي كُلَّمَا دَعَوْتُهُمْ لِتَغْفِرَ لَهُمْ جَعَلُوا أَصَابِعَهُمْ فِي آذَانِهِمْ وَاسْتَغْشَوْا
ثِيَابَهُمْ وَأَصَرُّوا وَاسْتَكْبَرُوا اسْتِكْبَارًا ﴿٧﴾ ثُمَّ إِنِّي دَعَوْتُهُمْ جِهَارًا ﴿٨﴾ ثُمَّ إِنِّي
أَعْلَنْتُ لَهُمْ وَأَسْرَرْتُ لَهُمْ إِسْرَارًا ﴿٩﴾ فَقُلْتُ اسْتَغْفِرُوا رَبَّكُمْ إِنَّهُ كَانَ
غَفَّارًا ﴿١٠﴾ يُرْسِلِ السَّمَاءَ عَلَيْكُمْ مِدْرَارًا ﴿١١﴾ وَيُمْدِدْكُمْ بِأَمْوَالٍ وَبَنِينَ
وَيَجْعَلْ لَكُمْ جَنَّاتٍ وَيَجْعَلْ لَكُمْ أَنْهَارًا ﴿١٢﴾ مَا لَكُمْ لَا تَرْجُونَ لِلَّهِ وَقَارًا ﴿١٣﴾ وَقَدْ

خَلَقَكُمْ اَطْوَارًا ﴿١٤﴾ اَلَمْ تَرَوْا كَيْفَ خَلَقَ اللّٰهُ سَبْعَ سَمٰوٰتٍ طِبَاقًا ﴿١٥﴾ وَّجَعَلَ
الْقَمَرَ فِيْهِنَّ نُوْرًا وَّجَعَلَ الشَّمْسَ سِرَاجًا ﴿١٦﴾ وَاللّٰهُ اَنْۢبَتَكُمْ مِّنَ الْاَرْضِ نَبَاتًا
﴿١٧﴾ ثُمَّ يُعِيْدُكُمْ فِيْهَا وَيُخْرِجُكُمْ اِخْرَاجًا ﴿١٨﴾ وَاللّٰهُ جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ بِسَاطًا ﴿١٩﴾
لِّتَسْلُكُوْا مِنْهَا سُبُلًا فِجَاجًا ﴿٢٠﴾

तर्जुमा : "नूह ने कहा, ऐ मेरे परवरदिगार! मैंने अपनी क़ौम को रात-दिन तेरी तरफ़ बुलाया। (5) मगर मेरे बुलाने से ये भागने में और बढ़ते ही गये। (6) मैंने जब कभी उन्हें तेरी बख़्शिश के लिये बुलाया उन्होंने अपनी उंगलियाँ अपने कानों में डाल लीं और अपने कपड़े ओढ़ लिये और अड़ गये और सख़्त सरकशी की। (7) फिर मैंने उन्हें बआवाज़े बुलंद बुलाया। (8) और बेशक मैंने उनसे ऐलानिया भी कहा और चुपके-चुपके भी। (9) और मैंने कहा कि अपने रब से अपने गुनाह बख़्शवाओ और माफ़ी माँगो वो यक़ीनन बड़ा बख़्शने वाला है। (10) वो तुम पर आसमान को ख़ूब बरसता हुआ छोड़ देगा। (11) और तुम्हें ख़ूब पे-दरपे माल और औलाद में तरक़्क़ी देगा और तुम्हें बाग़ात देगा और तुम्हारे लिये नहरें निकाल देगा। (12) तुम्हें क्या हो गया है कि तुम अल्लाह तआला की बुज़ुर्गी का अक़ीदा नहीं रखते। (13) हालांकि उसने तुम्हें मुख़्तलिफ़ तौर से पैदा किया है। (14) क्या तुम नहीं देखते कि अल्लाह तआला ने ऊपर तले किस तरह सात आसमान पैदा कर दिये हैं। (15) और उनमें चाँद को ख़ूब जगमगाता बनाया है और सूरज को रोशन चिराग़ बनाया है। (16) और तुमको ज़मीन से एक ख़ास तरीक़े से उगाया है और पैदा किया है। (17) फिर तुम्हें उसी में लौटा ले जायेगा और एक ख़ास तरीक़े से फिर निकालेगा। (18) और तुम्हारे लिये ज़मीन को अल्लाह तआला ने फ़र्श बना दिया है। (19) ताकि तुम उसकी कुशादा राहों में चलो-फिरो।" (20)

हज़रत नूह (अलै.) की क़ौम की हटधर्मी (आयत 5-20) : यहाँ बयान हो रहा है कि साढ़े नौ सौ साल तक की लम्बी मुद्दत में किस-किस तरह हज़रत नूह (अलै.) ने अपनी क़ौम को रुश्दो-हिदायत की तरफ़ बुलाया। क़ौम ने किस-किस तरह ऐराज़ किया, कैसी-कैसी तकलीफ़ें अल्लाह तआला के प्यारे पैग़म्बर को पहुँचाईं और किस तरह अपनी ज़िद पर अड़ गये। हज़रत नूह (अलै.) बतौरे शिकायत के जनाबे बारी में अर्ज़ करते हैं कि ऐ रब्बुल इज़्ज़त! मैंने तेरे हुक्म की पूरी तरह सरगर्मी से तामील की। तेरे फ़रमाने आलीशान के मुताबिक़ न दिन को दिन समझा, न रात को रात बल्कि धुन बांधे हर वक़्त उन्हें राहेरास्त की दावत देता रहा। वो

इसी सख़्ती से मुझसे भागते रहे, हक़ से रूगर्दानी करते रहे, यहाँ तक हुआ कि मैंने उनसे कहा कि आओ! रब की बात सुनो, ताकि रब भी तुम्हें बख़्शे। लेकिन उन्होंने मेरे इन अल्फ़ाज़ का सुनना भी गवारा न किया, कान बंद कर लिये। यही हाल कुफ़्फ़ारे कुरैश का था कि कलामुल्लाह को सुनना भी पसंद नहीं करते थे, जैसे इरशाद है, (وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَا تَسْمَعُوْا لِهٰذَا الْقُرْاٰنِ وَالْغَوْا فِيْهِ لَعَلَّكُمْ تَغْلِبُوْنَ ۝٢٦) (सूरह हाम्मीम सज्दा 41 : 26) 'काफ़िरों ने कहा, इस कुरआन को न सुनो और जब ये पढ़ा जाता हो तो शोर व गुल करो ताकि तुम ग़ालिब रहो।' क़ौम ने जहाँ अपने कानों में उंगलियाँ डालीं वहाँ अपने मुँह भी कपड़ों से छिपा लिये ताकि वो पहचाने भी न जायें और न कुछ सुनें, अपने कुफ़्र व शिर्क पर ज़िद्द के साथ अड़ गये और इत्तिबाअ़े हक़ से न सिर्फ़ इंकार कर दिया बल्कि उससे बेपरवाही की और उसे हक़ीर जानकर तकब्बुर से पीठ फेर ली। हज़रत नूह (अलै.) फ़रमाते हैं कि आ़म लोगों के मज्मअ़े में भी मैंने उन्हें कहा सुना बआवाज़े बुलंद भी, उनके कान खोल दिये और कई बार एक-एक को चुपके-चुपके भी समझाया।

ग़र्ज़ कि तमाम जतन कर लिये कि यूँ नहीं यूँ समझ जायें और यूँ नहीं तो यूँ राहेरास्त पर आ जायें। मैंने उनसे कहा, कम से कम तुम अपनी बदकारियों से तौबा ही कर लो, वो ग़फ़्फ़ार है हर झुकने वाले की तरफ़ तवज्जह फ़रमाता है और ख़्वाह उससे कैसे ही बद से बद आ़माल सरज़द हुए हों, एक आन में माफ़ फ़रमा देता है और यही नहीं बल्कि दुनिया में भी वो तुम्हें तुम्हारे इस्तिग़फ़ार की वजह से तरह-तरह की नेमतें अ़ता फ़रमायेगा और दर्द व दुख से बचा लेगा।

फ़ायदा : वो तुम पर ख़ूब मूसलाधार बारिश बरसायेगा। ये याद रहे कि क़हतसाली के मौक़े पर जब नमाज़े इस्तिस्क़ा के लिये मुसलमान निकलें तो मुस्तहब है कि उस नमाज़ में इस सूरत को पढ़ें, इसकी एक दलील तो यही आयत है दूसरी अमीरुल मोमिनीन हज़रत उ़मर फ़ारूक़ (रज़ि.) का फ़ैअ़ल भी यही है। आपसे मरवी है कि बारिश माँगने के लिये जब आप निकले तो मिम्बर पर चढ़कर आपने ख़ूब इस्तिग़फ़ार किया और इस्तिग़फ़ार वाली आयतों की तिलावत की जिनमें एक आयत ये भी थी। फिर फ़रमाने लगे, बारिश को मैंने बारिश की तमाम राहों से जो आसमान में हैं तलब कर लिया है। यानी वो काम अदा किये हैं जिनसे अल्लाह तआ़ला बारिश नाज़िल फ़रमाया करता है।

हज़रत नूह (अ़लै.) फ़रमाते हैं कि ऐ मेरी क़ौम के लोगो! अगर तुम इस्तिग़फ़ार करोगे तो बारिश के साथ ही साथ रिज़्क़ की बरकत भी तुम्हें मिलेगी, ज़मीन व आसमान की बरकतों से तुम मालामाल हो जाओगे, खेतियाँ ख़ूब होंगी, जानवरों के थन दूध से पुर रहेंगे, माल व औलाद में तरक़्क़ी होगी, क़िस्म-क़िस्म के फलों से लदे फन्दे बाग़ात तुम्हें नसीब होंगे, जिनके दरम्यान चारों तरफ़ और बाबरकत पानी की रेल-पेल होगी, हर तरफ़ नहरें और दरिया जारी हो जायेंगे। इस तरह रग़बतें दिलाकर फिर ज़रा ख़ौफ़ज़दा भी करते हैं और फ़रमाते हैं कि तुम अल्लाह तआ़ला की अ़ज़्मत के क़ाइल नहीं होते? उसके अ़ज़ाबों से बेबाक क्यों हो गये हो? देखते नहीं कि अल्लाह तआ़ला ने तुम्हें किन-किन हालात में, किस-किस लौट-फेर के साथ पैदा किया है? पहले

पानी की बूंद फिर जामिद ख़ून, फिर गोश्त का लोथड़ा, फिर और सूरत फिर और हालत वग़ैरह। इसी तरह देखो तो सही कि उसने एक पर एक इस तरह आसमान पैदा किये ख़्वाह वो सिर्फ़ सुनने से ही मालूम हुए हों या उन वुजूह से मालूम हुए हों जो महसूस हैं, जो सितारों की चाल और उनके कुसूफ़ (गहन) से समझी जा सकती हैं, जैसे कि इस इल्म वालों का बयान है।

गो इसमें भी इसका सख़्ततर इख़्तिलाफ़ है कि कवाकिब चलने-फिरने वाले बड़े-बड़े सात हैं, एक, एक को बे नूर कर देता है। सबसे क़रीब आसमाने दुनिया में तो चाँद है जो दूसरों को मान्द किए हुये है और दूसरे आसमान पर अतारिद है, तीसरे आसमान पर ज़हरा है, चौथे आसमान में सूरज है, पाँचवें आसमान में मिर्रीख़ है, छठे आसमान में मुश्तरी है, सातवें आसमान में ज़ोहल है और बाक़ी कवाकिब जो सवाबित हैं वो आठवें आसमान में हैं जिसका नाम ये लोग फ़लके सवाबित रखते हैं और उनमें से जो शरअ वाले हैं, वो इसे कुर्सी कहते हैं और नवाँ फ़लक उनके नज़दीक अतलस और असीर है जिसकी हरकत उनके ख़्याल में और अफ़लाक की बरकत के ख़िलाफ़ है इसलिये कि दरअसल इसकी हरकत और हरकतों का मबदा है वो मग़्रिब से मश्रिक़ की तरफ़ हरकत करता है और बाक़ी सब आसमान मश्रिक़ से मग़्रिब की तरफ़ और उन ही के साथ ही कवाकिब भी घूमते-फिरते रहते हैं लेकिन सय्यारों की हरकत अफ़लाक की हरकत से बिल्कुल बरख़िलाफ़ है, वो सब मग़्रिब से मश्रिक़ की तरफ़ हरकत करते हैं और उनमें से हर एक अपने आसमान का फेरा अपनी मक़्दूर के मुताबिक़ करता है। चाँद तो हर माह में एक बार, सूरज हर साल में एक बार, ज़ोहल हर तीस साल में एक मर्तबा, मुद्दत की ये कमी-बेशी बाऐतबार आसमान की लम्बाई-चौड़ाई के है वरना सबकी हरकत सुरअत में बिल्कुल मुनासिबत रखती है।

ये है ख़ुलासा उनकी तमामतर बातों का जिसमें उनमें आपस में भी बहुत कुछ इख़्तिलाफ़ है न हम उसे यहाँ वारिद करना चाहते हैं, न इसकी तहक़ीक़ व तफ़्तीश से इस वक़्त कोई ग़र्ज़ है। मक़सूद सिर्फ़ इस क़द्र है कि अल्लाह सुब्हानहू व तआला ने सात आसमान बनाये हैं और वो ऊपर तले हैं। फिर उनमें चाँद सूरज पैदा किया है। दोनों की चमक-दमक और रोशनी और उजाला अलग-अलग है जिससे दिन रात की तमीज़ हो जाती है। फिर चाँद की मुक़र्ररह मन्ज़िलें और बुरूज हैं। फिर उसकी रोशनी बढ़ती रहती है और ऐसा वक़्त भी आता है कि वो अपनी पूरी रोशनी के साथ होता है जिससे महीने और साल मालूम होते हैं। जैसे फ़रमान है, (هُوَ الَّذِیْ جَعَلَ الشَّمْسَ ضِیَآءً) (सूरह यूनुस 10 : 5) 'अल्लाह तआला वो है जिसने सूरज-चाँद ख़ूब रोशन और चमकदार बनाये और चाँद की मन्ज़िलें मुक़र्रर कर दीं ताकि तुम्हें साल और हिसाब मालूम हो जायें, उनकी पैदाइश हक़ ही के साथ है, आलिमों के सामने कुदरते इलाही के ये नमूने अलग-अलग मौजूद हैं।'

फिर फ़रमाया, 'अल्लाह तआला ने तुम्हें ज़मीन से उगाया।' इस मस्दर ने मज़्मून को बेहद लतीफ़ कर दिया। 'फिर तुम्हें मार डालने के बाद उसी में लौटा ले जायेगा फिर क़यामत के दिन उसी से तुम्हें निकालेगा, जैसे पहली बार पैदा किया था और अल्लाह तआला ने ज़मीन को तुम्हारे लिये फ़र्श बना दिया और वो हिले-

जुले नहीं इसलिये इस पर मज़बूत पहाड़ गाड़ दिये। इसी ज़मीन के कुशादा रास्तों पर तुम चलते-फिरते हो, इसी पर रहते-बसते हो, इधर से उधर जाते आते हो।' ग़र्ज़ हज़रत नूह (अ़लै.) की ये है कि अ़ज़्मते इलाही और कुदरते रब्बानी के नमूने अपनी क़ौम के सामने रखकर उन्हें आमादा कर रहे हैं कि ज़मीन की बरकतों के देने वाले, हर चीज़ के पैदा करने वाले, आ़लीशान कुदरत के रखने वाले रज़्ज़ाक़, ख़ालिक़े इलाही का क्या तुम पर इतना भी हक़ नहीं कि तुम उसे पूजो, उसका लिहाज़ रखो और उसके कहने से उसके सच्चे नबी हज़रत मुहम्मद (ﷺ) की राह इख़्तियार करो? तुम्हें ज़रूर चाहिये कि सिर्फ़ उसी की इबादत करो, किसी और को न पूजो, उस जैसा, उसका शरीक, उसका साझी, उसका मसील किसी को न जानो। उसे जोरू से, बेटों-पोतों से, वज़ीर व मुशीर से, अ़दील व नज़ीर से पाक मानो उसी को बुलंद व बाला और अ़ज़ीम व आ़ला जानो।

***

قَالَ نُوحٌ رَّبِّ إِنَّهُمْ عَصَوْنِي وَاتَّبَعُوا مَن لَّمْ يَزِدْهُ مَالُهُ وَوَلَدُهُ إِلَّا خَسَارًا ﴿٢١﴾
وَمَكَرُوا مَكْرًا كُبَّارًا ﴿٢٢﴾ وَقَالُوا لَا تَذَرُنَّ آلِهَتَكُمْ وَلَا تَذَرُنَّ وَدًّا وَلَا سُوَاعًا
وَلَا يَغُوثَ وَيَعُوقَ وَنَسْرًا ﴿٢٣﴾ وَقَدْ أَضَلُّوا كَثِيرًا ۖ وَلَا تَزِدِ الظَّالِمِينَ إِلَّا ضَلَالًا ﴿٢٤﴾

तर्जुमा : ''नूह ने कहा, ऐ मेरे परवरदिगार! इन लोगों ने मेरी तो नाफ़रमानी की और ऐसों की फ़रमांबरदारी की जिनके माल व औलाद ने इनको यक़ीनन नुक़सान में ही बढ़ाया है। (21) और उन लोगों ने बड़ा सख़्त फ़रेब किया। (22) और कहा उन्होंने कि हर्गिज़ अपने माबूदों को न छोड़ना और न वद्द और सुवाअ़ और यग़ूस और यऊ़क़ और नस्र को छोड़ना। (23) और उन्होंने बहुत से लोगों को गुमराह किया, ऐ अल्लाह! तू इन ज़ालिमों की गुमराही और बढ़ा।'' (24)

क़ौमे नूह की रविश (आयत : 21-24) : हज़रत नूह (अ़लै.) ने अपनी गुज़िश्ता शिकायतों के साथ ही जनाबे बारी में अपनी क़ौम के लोगों की इस रविश को भी बयान किया कि मेरी पुकार को जो उनके लिये सरासर नफ़ाबख़्श थी, उन्होंने कान तक न लगाया, हाँ अपने मालदारों और बेफ़िक्रों की मान ली जो तेरे अम्र से बिल्कुल ग़ाफ़िल थे और माल व औलाद के पीछे मस्त थे, गो फ़िल्वाक़ेअ़ वो माल व औलाद भी उनके लिये सरासर वबाले जान था। क्योंकि उनकी वजह से वो फूलते थे और अल्लाह तआ़ला को भूलते थे और ज़्यादा नुक़सान में इतरते जाते थे वलदुहू की दूसरी क़िरअत वलदहू भी है और उन रईसों ने जो माल व जाह वाले थे उनसे बड़ी मक्कारी की। कुब्बार किब्बार दोनों मआ़ना में कबीर के हैं, यानी बहुत बड़ा। क़यामत के दिन भी ये लोग यही कहेंगे कि तुम्हारा काम दिन रात मक्कारी से हमें कुफ़्र व शिर्क का हुक्म करना था और उन

बड़ों ने उन छोटों से कहा कि अपने उन बुतों को जिन्हें तुम पूजते रहे हो हर्गिज़ न छोड़ना।

क़ौमे नूह के बुतों का ज़िक्र : सहीह बुख़ारी में है, 'क़ौमे नूह के बुतों को कुफ़्फ़ारे अ़रब ने ले लिया दूमतुल जन्दल में क़बीला कल्ब वद्द को पूजते थे। हुज़ैल क़बीला सुवाअ़ का परस्तार था और क़बीला मुराद फिर क़बीला बनू ग़तीफ़ जो जर्फ़ के रहने वाले थे, ये शहर सबा के पास है। यग़ूस की पूजा करता था। हम्दान क़बीला यऊक़ का पुजारी था। आजे ज़ी कलाअ़ क़बीला हिम्यर नस्र बुत का मानने वाला था। ये सब बुत दरअसल क़ौमे नूह के सालेह बुज़ुर्ग औलिया लोग थे। उनके इन्तिक़ाल के बाद शैतान ने उस ज़माने के लोगों के दिलों में ये बात डाली कि उन बुज़ुर्गों की इबादतगाहों में उनकी कोई यादगार क़ायम करने वाले लोगों के मर जाने के बाद और इल्म के उठ जाने के बाद जो लोग आये बवजहे जहालत के उन्होंने बाक़ाइदा उन जगहों की और उन नामों की पूजापाठ शुरू कर दी।' (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरह नूह : 4920)

शिर्क का सबब अन्धी अ़क़ीदत है : हज़रत इक्रिमा, हज़रत ज़ह्हाक, हज़रत क़तादा, हज़रत इब्ने इस्हाक़ (रह.) भी यही फ़रमाते हैं। हज़रत मुहम्मद बिन क़ैस (रह.) फ़रमाते हैं, ये बुज़ुर्ग आ़बिद अल्लाह वाले औलिया अल्लाह हज़रत आदम और हज़रत नूह (अ़लै.) के सच्चे ताबेअ़ फ़रमान, सालेह लोग थे, जिनकी पैरवी और लोग भी करते थे। जब ये मर गये तो उनके मुक़्तदियों ने कहा कि अगर हम उनकी तस्वीरें बना लें तो हमें इबादत में ख़ूब दिलचस्पी रहेगी और शौक़े इबादत उन बुज़ुर्गों की सूरत देखकर बढ़ता रहेगा। चुनाँचे ऐसा ही किया। जब ये लोग भी मर खप गये और उनकी नस्लें आईं तो शैतान ने उन्हें ये घुट्टी पिलाई कि तुम्हारे बड़े तो इनकी पूजा-पाठ करते थे और इन ही से दुआ़ माँगते थे। चुनाँचे उन्होंने अब बाक़ाइदा उन बुज़ुर्गों की तस्वीरों की परस्तिश शुरू कर दी।

हाफ़िज़ इब्ने अ़साकिर (रह.) हज़रत शीस (अ़लै.) के क़िस्से में बयान करते हैं कि हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) ने फ़रमाया कि हज़रत आदम (अ़लै.) के चालीस बच्चे थे, बीस लड़के बीस लड़कियाँ। उनमें से जिनकी बड़ी उ़म्रें हुईं उनमें हाबील, क़ाबील, सालेह और अ़ब्दुर्रहमान थे जिनका पहला नाम अ़ब्दुल हारिस था और वद्द था जिन्हें शीस और हैबतुल्लाह भी कहा जाता है। तमाम भाइयों ने सरदारी उन्ही को दे रखी थी, उनकी औलाद ये चारों थे। यानी सुवाअ़, यग़ूस, यऊक़ और नस्र। हज़रत उ़रवह बिन ज़ुबैर (रह.) फ़रमाते हैं कि हज़रत आदम (अ़लै.) की बीमारी के वक़्त उनकी औलाद वद्द, यग़ूस, यऊक़, सुवाअ़ और नस्र थी। वद्द उन सब में बड़ा और सबसे नेक सुलूक था।

इब्ने अबी हातिम में है कि अबू जाफ़र नमाज़ पढ़ रहे थे कि लोगों ने यज़ीद बिन मुहलब का ज़िक्र किया। आपने फ़ारिग़ होकर फ़रमाया, सुनो! वो वहाँ क़त्ल किया गया जहाँ सबसे पहले ग़ैरुल्लाह की परस्तिश हुई। वाक़िया ये हुआ कि एक दीनदार वलीअल्लाह मुसलमान जिंसे लोग बहुत चाहते थे और बहुत मुअ़तक़िद थे वहीं मर गया। ये लोग मुजावर बनकर उस की क़ब्र पर बैठ गये और रोना-पीटना और उसे याद करना शुरू किया और बड़े बेचैन और मुसीबतज़दा हो गये। इब्लीस लईन ने ये देखकर इंसानी सूरत में उनके पास आकर

उनसे कहा कि उस बुज़ुर्ग की यादगार क्यों क़ायम नहीं कर लेते? जो हर वक़्त तुम्हारे सामने रहे और तुम उसे न भूलो। सबने इस राय को पसंद किया। इब्लीस ने उस बुज़ुर्ग की तस्वीर बनाकर उनके पास खड़ी कर दी जिसे देख-देखकर ये लोग उसे याद करते थे और उसकी इबादत के तज़्किरे करते रहते थे। जब वो सब उसमें मशग़ूल हो गये तो इब्लीस ने कहा कि तुम सबको यहाँ आना पड़ता है इसलिये ये बेहतर होगा मैं इसकी बहुत सी तस्वीरें बना दूँ तुम उन्हें अपने घरों में ही रख लो, वो इस पर भी राज़ी हो गये और ये भी हो गया। अब तक ये तस्वीरें और बुत बतौरे यादगार के ही थे मगर उनकी दूसरी पुश्त में जाकर बराहेरास्त उन ही की इबादत होने लगी, असल वाक़िया सब फ़रामोश कर गये और अपने बाप-दादों को भी उनकी इबादत करने वाला समझकर ख़ुद भी बुतपरस्ती में मशग़ूल हो गये। उनका नाम वद्द था और यही वो पहला बुत था जिसकी पूजा अल्लाह तआला के सिवा की गई। उन्होंने बहुत मख़्लूक़ को गुमराह किया। उस वक़्त से लेकर अब तक अ़रब व अ़जम में अल्लाह तआला के सिवा दूसरों की परस्तिश शुरू हो गई और मख़्लूक़े इलाही बहक गई। चुनाँचे ख़लीलुल्लाह (अ़लै.) अपनी दुआ में अ़र्ज़ करते हैं कि ऐ मेरे रब! मुझे और मेरी औलाद को बुतपरस्ती से बचा। या अल्लाह! इन्होंने अक्सर मख़्लूक़ को गुमराह कर दिया है। फिर हज़रत नूह (अ़लै.) अपनी क़ौम के लिये बद्दुआ करते हैं क्योंकि उनकी सरकशी ज़िद्द और अ़दावते हक़ ख़ूब मुलाहिज़ा फ़रमा चुके थे। तो कहते हैं कि अल्लाह तआला इन्हें गुमराही में और बढ़ा दे, जैसे कि हज़रत मूसा (अ़लै.) ने फ़िरऔन और फ़िरऔनियों के लिये बद्दुआ की थी कि ऐ परवरदिगार! इनके माल तबाह कर दे और इनके दिल सख़्त कर दे, इन्हें ईमान लाना नसीब न हो जब तक कि दर्दनाक अ़ज़ाब न देख लें। चुनाँचे नूह (अ़लै.) की दुआ क़ुबूल होती है और क़ौमे नूह बसबब अपनी तक्ज़ीब के ग़र्क़ कर दी जाती है।

***

مِمَّا خَطِيٓـَٔـٰتِهِمْ أُغْرِقُوا۟ فَأُدْخِلُوا۟ نَارًا فَلَمْ يَجِدُوا۟ لَهُم مِّن دُونِ ٱللَّهِ أَنصَارًا ٢٥

وَقَالَ نُوحٌ رَّبِّ لَا تَذَرْ عَلَى ٱلْأَرْضِ مِنَ ٱلْكَـٰفِرِينَ دَيَّارًا ٢٦ إِنَّكَ إِن تَذَرْهُمْ

يُضِلُّوا۟ عِبَادَكَ وَلَا يَلِدُوٓا۟ إِلَّا فَاجِرًا كَفَّارًا ٢٧ رَّبِّ ٱغْفِرْ لِى وَلِوَٰلِدَىَّ وَلِمَن

دَخَلَ بَيْتِىَ مُؤْمِنًا وَلِلْمُؤْمِنِينَ وَٱلْمُؤْمِنَـٰتِ وَلَا تَزِدِ ٱلظَّـٰلِمِينَ إِلَّا تَبَارًۢا ٢٨

तर्जुमा : "ये लोग बसबब अपने गुनाहों के डुबो दिये गये और जहन्नम में पहुँचा दिये गये और अल्लाह तआला के सिवा अपना कोई मददगार उन्होंने न पाया। (25) और नूह ने कहा कि ऐ

मेरे पालने वाले! तू रूए ज़मीन पर किसी काफ़िर को रहने-सहने वाला न छोड़। (26) अगर तू उन्हें छोड़ देगा तो यक़ीनन ये तेरे और बन्दों को भी गुमराह कर देंगे और उनके यहाँ जो बाल-बच्चे होंगे वो भी बदकार नाशुक्रे होंगे। (27) ऐ मेरे परवरदिगार! तू मुझे और मेरे माँ-बाप और जो भी ईमानदार होकर मेरे घर में आये और तमाम मोमिन मर्दों और कुल ईमानदार औरतों को बख़्श दे और काफ़िरों को सिवाय हलाकत के और किसी बात में न बढ़ा।'' (28)

हज़रत नूह (अलै.) की बद्दुआ और अज़ाब (आयत 25-28) : ख़तीआतिहिम् की दूसरी क़िरअत ख़तायाकुम भी है। फ़रमाता है कि अपने गुनाहों की कसरत की वजह से ये लोग हलाक कर दिये गये। उनकी सरकशी उनकी ज़िद्द और हटधर्मी उनकी मुख़ालिफ़त व दुश्मनीए रसूल हद से गुज़र गई, तो उन्हें पानी में डुबो दिया गया और यहाँ से आग के गढ़े में धकेल दिये गये और कोई न खड़ा हुआ जो उन्हें अज़ाबों से बचा सकता। जैसे फ़रमान है, (لَا عَاصِمَ الْيَوْمَ مِنْ اَمْرِ اللّٰهِ اِلَّا مَنْ رَّحِمَ) (सूरह हूद 11 : 43) 'आज के दिन अज़ाबे इलाही से कोई नहीं बचा सकता, सिर्फ़ वही निजात पायेगा जिस पर अल्लाह तआला रहम फ़रमायेगा।' नूह नबी (अलै.) उन बदनसीबों की अपने क़ादिर ज़ुल्जलाल अल्लाह तआला की बारगाह पर अपना माथा रखकर फ़रियाद करते हैं और उस मालिक से उन पर आफ़त व अज़ाब नाज़िल करने की दरख़्वास्त पेश करते हैं कि अब तू उन नाशुक्रों में से अल्लाह तआला एक को भी ज़मीन पर चलता-फिरता न छोड़ और यही हुआ भी कि सारे के सारे ग़र्क़ आब कर (डुबो) दिये गये यहाँ तक कि हज़रत नूह (अलै.) का सगा बेटा जो बाप से अलग रहा था वो भी न बच सका। समझा तो ये था कि पानी मेरा क्या बिगाड़ेगा, मैं किसी बड़े पहाड़ पर चढ़ जाऊँगा। लेकिन वो पानी तो न था अज़ाबे इलाही था, वो ग़ज़बे इलाही था, वो तो बद्दुआए नूह था, उससे भला कौन बचा सकता था? पानी उसे वहीं जा लेता है और वो अपने बाप के सामने बातें करते-करते डूब मरता है।

इब्ने अबी हातिम में है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'अगर तूफ़ाने नूह में अल्लाह तआला किसी पर रहम करता तो उसके लायक़ वो औरत थी जो पानी को उबलते और बरसते देख कर अपने बच्चे को लेकर उठ खड़ी हुई थी और पहाड़ पर चढ़ गई थी। जब पानी वहाँ पर भी जा चढ़ा तो बच्चे को उठाकर अपने मूण्ढे पर बिठा लिया, जब पानी वहाँ भी पहुँच गया तो उसको सर पर बिठा लिया, जब पानी सर तक जा चढ़ा तो अपने बच्चे को हाथों में लेकर सर से बुलंद उठा लिया। लेकिन आख़िर पानी वहाँ तक पहुँच गया और माँ-बेटा डूब गये, पस अगर उस दिन ज़मीन के काफ़िरों में से कोई भी क़ाबिले रहम होता तो ये थी मगर ये भी न बच सकी न बचा सकी।' (इसकी सनद में शबीब बिन सईद है इब्ने अदी कहते हैं इब्ने वहब इससे मुन्कर रिवायात बयान करता है। अल्मीज़ान : 2/262, 3658, लिहाज़ा ये सनद ज़ईफ़ है और ये रिवायत हाकिम : 2/342 में मुख़्तसरन हज़रत आइशा (रज़ि.) से मरवी है वसनदहू हसन मूसा बिन याक़ूब हसनुल हदीस रावी है।) ये हदीस ग़रीब है लेकिन रावी इसके सब सिक़ह हैं।

अल्ग़र्ज़ रूए ज़मीन के काफ़िर डूबा दिये गये सिर्फ़ वो बाईमान (ईमानदार) हस्तियाँ बाक़ी रहीं जो

हज़रत नूह (अलै.) के साथ उनकी कश्ती में थीं और बहुक्मे इलाही हज़रत नूह (अलै.) ने उन्हें अपने साथ अपनी कश्ती में सवार कर लिया था। चूंकि हज़रत नूह (अलै.) को सख़्त तल्ख़ और देरीना तजुर्बा हो चुका था इसलिये अपनी नाउम्मीदी को ज़ाहिर फ़रमाते हुए कहते हैं ऐ अल्लाह! मेरी चाहत है कि इन तमाम कुफ़्फ़ार को बर्बाद कर दिया जाये। इनमें से जो भी बाक़ी बच रहेगा वही दूसरों की गुमराही का बाइस़ बनेगा और जो नस्ल उसकी फैलेगी वो भी उस जैसी बदकार और काफ़िर दिल होगी। साथ ही अपने लिये बख़्शिश तलब करते हैं और अर्ज़ करते हैं कि ऐ मेरे रब! मुझे बख़्श, मेरे वालिदैन को बख़्श और हर उस शख़्स को जो मेरे घर में आ जाये और हो भी वो बाईमान। घर से मुराद मस्जिद भी ली गई है, लेकिन आम मुराद यही है। मुस्नद अहमद में है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़रमाते हैं, 'मोमिन ही के साथ उठ-बैठ, रह-सह और सिर्फ़ परहेज़गार ही तेरा खाना खायें।' (सहीह : अबू दाऊद, किताबुल अदब, बाब मंय्युअ्मर अंय्युजालिस : 4832, तिर्मिज़ी : 2395, अहमद : 3/38) इमाम तिर्मिज़ी (रह.) फ़रमाते हैं कि सिर्फ़ इसी इस्नाद से ये हदीस़ मअ़रूफ़ है।

फिर अपनी दुआ को आम करते हैं और कहते हैं कि तमाम ईमानदार मर्दों और औरतों को भी बख़्श ख़्वाह ज़िन्दा हों ख़्वाह मुर्दा। इसीलिये मुस्तहब है कि हर शख़्स अपनी दुआ में दूसरे मोमिनों को भी शामिल रखे ताकि हज़रत नूह (अलै.) की इक़्तिदा भी हो और इन अहादीस़ पर भी अमल हो जायें जो इस बारे में हैं वो दुआयें भी आ जायें जो मन्क़ूल हैं। फिर दुआ के ख़ातमे पर कहते हैं कि बारी तआला उन काफ़िरों को तू तबाही व बर्बादी, हलाकत और नुक़सान में ही बढ़ाता रह, दुनिया व आख़िरत में वो बर्बाद ही रहें।

अल्हम्दुलिल्लाह सूरह नूह की तफ़्सीर भी ख़त्म हो गई।

***

FLOW CHART — MACRO-STRUCTURE

तरतीबी नक्श-ए-रब्त — नज़्मे-जली

सूरह जिन्न - 72

आयात : 28, मक्की, पैराग्राफ : 3

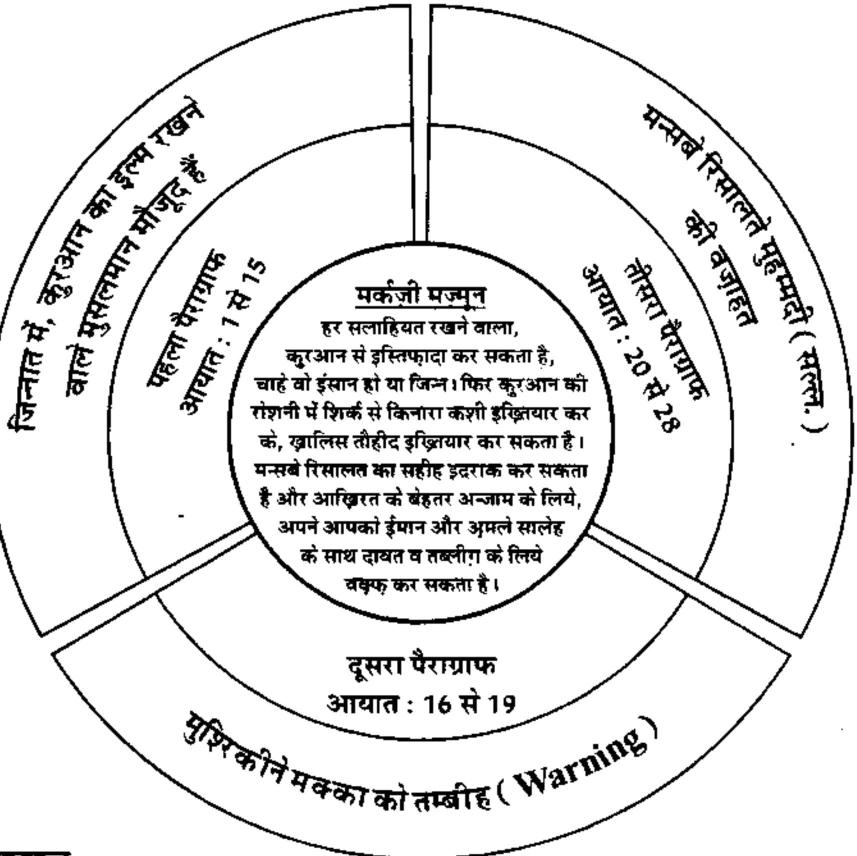

ज़मानए नुज़ूल

सूरह जिन्न ग़ालिबन सूरह अहक़ाफ़ के साथ सफ़रे ताइफ़ से वापसी पर, बमुक़ाम नख़्ला शव्वाल 10 नबवी में नाज़िल हुई। ये वो ज़माना था जब आप (सल्ल.) शअबे अबी तालिब की असीरी के बाद रिहाई पाते ही हज़रत ख़दीजा (रज़ि.) और चाचा अबू तालिब की वफ़ात के सदमे से दोचार थे और मुश्रिकीन का रवैया कुरआन के बारे में निहायत सख़्त और मुतअस्सिबाना था। इन हालात में चन्द जिन्नात के इस्लाम की ख़बर, हवा का ख़ुशगवार झोंका था। इस मौक़े पर ये मुनासिब था कि कुरैश को ग़ैरत दिलाई जाये और एक निहायत पुर तासीर अन्दाज़ में तौहीद की दावत का इआदा किया जाये, मन्सबे रिसालत की वज़ाहत की जाये और ईमान के दुनियावी और उख़रवी फ़ायदों से तज़्कीर की जाये।

तफ़्सीर सूरह जिन्न

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

तर्जुमा : ''शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है।''

***

قُلْ اُوْحِيَ اِلَيَّ اَنَّهُ اسْتَمَعَ نَفَرٌ مِّنَ الْجِنِّ فَقَالُوْٓا اِنَّا سَمِعْنَا قُرْاٰنًا عَجَبًا ① يَّهْدِيْٓ
اِلَى الرُّشْدِ فَاٰمَنَّا بِهٖ ؕ وَلَنْ نُّشْرِكَ بِرَبِّنَآ اَحَدًا ② وَّاَنَّهٗ تَعٰلٰى جَدُّ رَبِّنَا مَا
اتَّخَذَ صَاحِبَةً وَّلَا وَلَدًا ③ وَّاَنَّهٗ كَانَ يَقُوْلُ سَفِيْهُنَا عَلَى اللّٰهِ شَطَطًا ④ وَّاَنَّا
ظَنَنَّآ اَنْ لَّنْ تَقُوْلَ الْاِنْسُ وَالْجِنُّ عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا ⑤ وَّاَنَّهٗ كَانَ رِجَالٌ مِّنَ
الْاِنْسِ يَعُوْذُوْنَ بِرِجَالٍ مِّنَ الْجِنِّ فَزَادُوْهُمْ رَهَقًا ⑥ وَّاَنَّهُمْ ظَنُّوْا كَمَا
ظَنَنْتُمْ اَنْ لَّنْ يَّبْعَثَ اللّٰهُ اَحَدًا ⑦

तर्जुमा : ''तुम कह दो! कि मुझे वह्य की गई है कि जिन्नों की एक जमाअत ने क़ुरआन सुना और कहा कि हमने अजीब क़ुरआन सुना है। (1) जो राहे रास्त समझाता है हम तो उस पर ईमान ला चुके, अब हम हर्गिज़ किसी को भी अपने रब का शरीक न बनायें। (2) बेशक हमारे रब की बड़ी शान बुलंद है न उसकी बीवी है न औलाद। (3) यक़ीनन हममें से बेवक़ूफ़ों ने अल्लाह तआला के ज़िम्मे झूठी बातें लगा दी हैं। (4) और हम तो यही समझते रहे कि नामुम्किन है कि इंसान और जिन्नात अल्लाह तआला पर झूठी बातें लगायें। (5) बात ये है कि चंद इंसान कुछ जिन्नात से पनाह तलब किया करते थे जिससे जिन्न अपनी सरकशी में और बढ़ गये। (6) और

इंसानों ने भी तुम जिन्नों की तरह गुमान कर लिया था कि अल्लाह तआला किसी को न भेजेगा (या किसी को दोबारा ज़िन्दा न करेगा)।'' (7)

जिन्नों ने भी क़ुरआन सुना (आयत : 1-7) : अल्लाह तबारक व तआला अपने रसूल मुहम्मद (ﷺ) से फ़रमाता है कि अपनी क़ौम को इस वाक़िये की इत्तिलाअ दो कि जिन्नों ने क़ुरआन करीम सुना, इसे सच्चा माना, इस पर ईमान लाये और इसके मुतीअ बन गये। तो फ़रमाता है कि ऐ नबी! तुम कहो कि मेरी तरफ़ वह्य की गई है कि जिन्नों की एक जमाअत ने क़ुरआन करीम सुना और अपनी क़ौम में जाकर ख़बर की कि आज हमने अजीबो-ग़रीब किताब सुनी जो सच्चा और निजात का रास्ता बतलाती है। हम तो उसे मान चुके, नामुम्किन है कि अब हम अल्लाह तआला के साथ किसी और की इबादत करें। यही मज़्मून इन आयतों में गुज़र चुका है (وَاِذْ صَرَفْنَآ اِلَيْكَ نَفَرًا مِّنَ الْجِنِّ يَسْتَمِعُوْنَ الْقُرْاٰنَ ۚ فَلَمَّا حَضَرُوْهُ قَالُوْٓا اَنْصِتُوْا ۚ فَلَمَّا قُضِيَ وَلَّوْا اِلٰى قَوْمِهِمْ مُّنْذِرِيْنَ ﴿٢٩﴾) (सूरह अहक़ाफ़ 46 : 29) 'जबकि हमने जिन्नों की एक जमाअत को तेरी तरफ़ लौटाया ताकि वो क़ुरआन सुनें।' और इसकी तफ़सीर अहादीस से वहीं हम बयान कर चुके हैं, यहाँ दोहराने की ज़रूरत नहीं। फिर ये जिन्नात अपनी क़ौम से फ़रमाते हैं कि हमारे रब के काम क़ुदरत और अम्र बहुत बुलंद व बाला बड़ा ज़ी शान और ज़ी इज़्ज़त है, उसकी नेमतें क़ुदरतें और मख़्लूक़ पर मेहरबानियाँ बहुत बावक़अत हैं, उसकी जलालत व अज़्मत बुलंद पाया है। उसका जलाल व इकराम बहुत बढ़ा-चढ़ा हुआ है, उसका ज़िक्र बुलंद रुत्बा है उसकी शान आला है।

एक रिवायत में हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) से मरवी है कि जद्द कहते हैं बाप को। अगर जिन्नात को ये इल्म होता कि इंसानों में जद्द होता है तो वो अल्लाह तआला की निस्बत ये लफ़्ज़ न कहते। गो ये क़ौल सनदन क़वी है लेकिन कलाम बनता नहीं और कोई मतलब समझ में नहीं आता। मुम्किन है कि इसमें कुछ कलाम छूट गया हो, वल्लाहु आलम! फिर अपनी क़ौम से कहते हैं कि अल्लाह तआला इससे पाक और बरतर है कि उसकी बीवी हो या उसकी औलाद हो। फिर कहते हैं कि हमारा बेवक़ूफ़ यानी शैतान अल्लाह तआला पर झूठ तोहमत रखता है और ये भी हो सकता है कि मुराद इससे आम हो यानी जो शख़्स अल्लाह तआला की औलाद और बीवी साबित करता है बेअक़्ल है, झूठ बकता है, बातिल अक़ीदा रखता है और ज़ालिमाना बात मुँह से निकालता है। फिर फ़रमाते हैं कि हम तो इसी ख़्याल में थे कि जिन्न व इन्स अल्लाह तआला पर झूठ नहीं बांध सकते। लेकिन क़ुरआन सुन कर मालूम हुआ कि ये दोनों जमाअतें रब्बुल आलमीन पर तोहमत रखती थीं दरअसल अल्लाह तआला की ज़ात इस ऐब से पाक है। फिर कहते हैं कि जिन्नात के ज़्यादा बहकने का सबब ये हुआ कि वो देखते थे कि जब कभी इंसान किसी जंगल या वीराने में जाते हैं तो जिन्नात की पनाह तलब किया करते हैं जैसे कि जाहिलिय्यत के ज़माने के अरब की आदत थी कि जब किसी पड़ाव पर उतरते तो कहते कि इस जंगल के बड़े जिन्न की पनाह में हम आते हैं और समझते थे कि ऐसा कह लेने के बाद तमाम जिन्नात के शर से हम महफ़ूज़ हो जाते हैं। जिस तरह किसी शहर में जाते तो वहाँ के बड़े रईस की पनाह ले लेते ताकि शहर के

और दुश्मन लोग उन्हें तकलीफ़ न पहुँचायें। जिन्नों ने जब ये देखा कि इंसान भी हमारी पनाह लेते हैं तो उनकी सरकशी और बढ़ गई और उन्होंने बुरी तरह इंसानों को सताना शुरू किया और ये भी मतलब हो सकता है कि जिन्नात ने ये हालत देखकर इंसानों को और ख़ौफ़ज़दा करना शुरू किया और उन्हें तरह-तरह से सताने लगे। दरअसल जिन्नात इंसानों से डरा करते थे जैसे कि इंसान जिन्नों से। बल्कि उससे भी ज़्यादा यहाँ तक कि जिस जंगल-ब्याबान में इंसान जा पहुँचता था तो वहाँ से जिन्नात भाग खड़े होते थे। लेकिन जब से अहले शिर्क ने ख़ुद उनसे पनाह माँगनी शुरू की और कहने लगे कि इस वादी के सरदार जिन्न की पनाह में हम आते हैं इससे कि हमें या हमारी औलाद व माल को नुक़सान पहुँचे। अब जिन्नों ने समझा कि ये तो ख़ुद हम से डरते हैं तो इनकी जुरअत और बढ़ गई और अब उन्होंने तरह-तरह से डराना-सताना और छेड़ना शुरू कर दिया वो गुनाह में, ख़ौफ़ में और तुग़यानी में और सरकशी में ज़्यादा बढ़ गये।

करदम बिन अबू साइब अन्सारी (रज़ि.) कहते हैं कि मैं अपने वालिद के साथ मदीना से किसी काम के लिये बाहर निकला उस वक़्त हुज़ूर (ﷺ) की बिअ़सत हो चुकी थी और मक्का मुकर्रमा में आप (ﷺ) बहैसियते पैग़म्बर ज़ाहिर हो चुके थे। रात के वक़्त हम एक चरवाहे के पास जंगल में ठहर गये। आधी रात के वक़्त एक भेड़िया आया और बकरी उठा कर ले भागा। चरवाहा उसके पीछे दौड़ा और पुकार कर कहने लगा कि ऐ इस जंगल के आबाद रखने वाले तेरी पनाह में आया हुआ शख़्स लुट गया। साथ ही एक आवाज़ आई हालांकि कोई शख़्स नज़र न आता था कि ऐ भेड़िये! इस बकरी को छोड़ दे। थोड़ी देर में हमने देखा कि वही बकरी भागी-भागी आई और रेवड़ में मिल गई। उसे ज़ख़्म भी न आया था। (ज़ईफ़ : मुअ़जम अल्कबीर लित्तबरानी : 19/191-192, अब्दुर्रहमान बिन इस्हाक़ अल्कूफ़ी ज़ईफ़ रावी है। मज्मउ़ज़्ज़वाइद : 7/129)

यही बयान इस आयत में है जो अल्लाह के रसूल (ﷺ) पर मक्का में उतरी कि कुछ लोग जिन्नात की पनाह माँगा करते थे, ऐसा मुम्किन है कि ये भेड़िया बनकर आने वाला भी जिन्न ही हो और बकरी के बच्चे को पकड़ ले गया हो और चरवाहे की इस दुहाई पर छोड़ दिया हो ताकि चरवाहे को और फिर उसकी बात सुनकर औरों को इस बात का यक़ीने कामिल हो जाये कि वो जिन्नात की पनाह में आ जाने से नुक़सानात से महफ़ूज़ रहते हैं और फिर इस अक़ीदे के बाइस वो और गुमराह हों और अल्लाह तआला के दीन से ख़ारिज हो जायें, वल्लाहु आलम!

ये मुसलमान जिन्न अपनी क़ौम से कहते हैं कि ऐ जिन्नो! जिस तरह तुम्हारा गुमान था उसी तरह इंसान भी इस ख़्याल में थे कि अब अल्लाह तआला किसी रसूल को न भेजेगा।

***

وَّاَنَّا لَمَسْنَا السَّمَآءَ فَوَجَدْنٰهَا مُلِئَتْ حَرَسًا شَدِيْدًا وَّشُهُبًا ۝٨ وَّاَنَّا كُنَّا نَقْعُدُ

مِنْهَا مَقَاعِدَ لِلسَّمْعِ ۖ فَمَنْ يَسْتَمِعِ الْاٰنَ يَجِدْ لَهٗ شِهَابًا رَّصَدًا ⑨ وَّاَنَّا لَا نَدْرِيْٓ
اَشَرٌّ اُرِيْدَ بِمَنْ فِي الْاَرْضِ اَمْ اَرَادَ بِهِمْ رَبُّهُمْ رَشَدًا ⑩

तर्जुमा : ''हमने आसमान को टटोल कर देखा तो उसे सख़्त चौकीदारों और सख़्त शौलों से पुर पाया। (8) इससे पहले हम बातें सुनने के लिये आसमान में जगह-जगह बैठ जाया करते थे, अब जो भी कान लगाता है वो एक शौले को अपनी ताक में पाता है। (9) हम नहीं जानते कि ज़मीन वालों के साथी किसी बुराई का इरादा किया गया है या उनके रब का इरादा उनके साथ भलाई का है।'' (10)

जिन्नों पर पाबंदी (आयत : 8-10) : आँहज़रत (ﷺ) की बिअ़सत से पहले जिन्नात आसमानों पर जाते, किसी जगह बैठते और कान लगाकर फ़रिश्तों की बातें सुनते और फिर आकर काहिनों को ख़बर देते थे और काहिन उन बातों को बहुत कुछ नमक-मिर्च लगाकर और एक में सौ झूठ मिला कर अपने मानने वालों से कहते। अब जब हुज़ूर (ﷺ) को पैग़म्बर बनाकर भेजा गया और आप (ﷺ) पर क़ुरआन करीम नाज़िल होना शुरू हुआ तो आसमानों पर ज़बरदस्त पहरे बिठा दिये गये और उन शयातीन को पहले की तरह वहाँ जा बैठने और बातें उड़ा लाने का का मौक़ा न रहा। ताकि क़ुरआन करीम और काहिनों का कलाम ख़लत-मलत न हो जाये और हक़ के मुतलाशी को दिक़्क़त वाक़ेअ़ न हो। ये मुसलमान जिन्नात अपनी क़ौम से कहते हैं कि पहले तो हम आसमान पर जा बैठते थे, मगर अब तो सख़्त पहरे लगे हुए हैं और आग के शौले ताक में लगे हुए हैं ऐसे छूटकर आते हैं कि ख़ता ही नहीं करते, जला-झुलसा देते हैं। अब हम नहीं कह सकते कि इससे हक़ीक़ी मुराद क्या है अहले ज़मीन की कोई बुराई चाही गई है या उनके साथ उनके रब का इरादा नेकी और भलाई का है। ख़्याल कीजिये कि ये मुसलमान जिन्न किस क़द्र अदब दाँ थे कि बुराई की इस्नाद के लिये किसी फ़ाइल का ज़िक्र नहीं किया और भलाई की इज़ाफ़त अल्लाह तआ़ला की तरफ़ की और कहा दरअसल आसमान की चौकीदारी और उस हिफ़ाज़त से क्या मतलब है? इसे हम नहीं जानते।

इसी तरह हदीस़ शरीफ़ में भी आया है, 'ऐ अल्लाह! तेरी तरफ़ से शर और बुराई नहीं।' (सहीह मुस्लिम, किताब सलातुल मुसाफ़िरीन, बाब सलातुन्नबी व दुआइही बिल्लैल : 771)

सितारे इससे पहले भी कभी-भी झड़ते थे लेकिन इस तरह कस़रत से उन का आग बरसाना, क़ुरआन करीम की हिफ़ाज़त व सियानत के बाइस़ हुआ था। चुनाँचे एक हदीस़ में है कि हम रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास बैठे हुए थे कि नागहाँ एक सितारा झड़ा और बड़ी रोशनी हो गई। तो आपने हमसे पूछा, पहले इसे झड़ता देखकर तुम क्या कहा करते थे? हमने कहा, हुज़ूर हमारा ख़्याल था कि या तो किसी बड़े के तवल्लुद (जन्म)

पर झड़ता है या किसी बड़े की मौत पर। आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'नहीं-नहीं! बल्कि अल्लाह तआला जब कभी किसी का आसमान पर फ़ैसला करता है।' (सहीह मुस्लिम, किताबुस्सलाम, बाब तहरीमुल कहानत व इत्यानिल कुह्हान : 2229, तिर्मिज़ी : 3224, अहमद : 1/218, इब्ने हिब्बान : 6129) ये हदीस़ पूरे तौर पर सूरह सबा की तफ़्सीर में गुज़र चुकी है।

दरअसल सितारों का बकस़रत गिरना, जिन्नात का उनसे हलाक होना, आसमान की हिफ़ाज़त का बढ़ जाना, उनका आसमान की ख़बरों से महरूम हो जाना ही इस बात का बाइस़ बना कि ये निकल खड़े हुए और उन्होंने चारों तरफ़ तलाश शुरू कर दी कि क्या वजह हुई जो हमारा आसमानों पर जाना मौक़ूफ़ हो गया। चुनाँचे उनमें से एक जमाअ़त का गुज़र अ़रब में हुआ और यहाँ रसूलुल्लाह (ﷺ) को सुबह की नमाज़ में क़ुरआन शरीफ़ पढ़ते हुए सुना और समझ गये कि इस नबी की बिअ़स़त और इस कलाम का नुज़ूल ही हमारी बन्दिश का सबब है। पस ख़ुशनसीब समझदार जिन्न तो मुसलमान हो गये, बाक़ी और जिन्नात को ईमान नसीब न हुआ। सूरह अहक़ाफ़ की आयत (وَإِذْ صَرَفْنَآ إِلَيْكَ نَفَرًا مِّنَ الْجِنِّ يَسْتَمِعُونَ الْقُرْاٰنَ ۚ فَلَمَّا حَضَرُوهُ قَالُوٓا أَنصِتُوا ۖ فَلَمَّا قُضِيَ وَلَّوْا إِلَىٰ قَوْمِهِم مُّنذِرِينَ ﴿٢٩﴾) (सूरह अहक़ाफ़ 46 : 29) में इसका पूरा बयान गुज़र चुका है। सितारों का झड़ना, आसमान का महफ़ूज़ हो जाना जिन्नात ही के लिये नहीं बल्कि इंसानों के लिये भी एक ख़ौफ़नाकी की अ़लामत थी वो घबरा रहे थे और मुन्तज़िर थे कि देखिये क्या नतीजा होता है, उ़मूमन अम्बिया (अ़लै.) की तशरीफ़ आवरी और दीने अल्लाह तआला के इज़हार के वक़्त ऐसा होता भी था।

हज़रत सुद्दी (रह.) फ़रमाते हैं कि शयातीन इससे पहले आसमानी बैठकों में बैठकर फ़रिश्तों की आपस की बातें उड़ा लाया करते थे। जब हुज़ूर (ﷺ) पैग़म्बर बनाये गये तो एक रात उन शयातीन पर बड़ी शौलाबारी हुई जिसे देखकर अहले ताइफ़ घबरा गये कि शायद आसमान वाले हलाक हो गये। उन्होंने देखा कि ताबड़-तोड़ सितारे टूट रहे हैं शौले उठ रहे हैं और दूर-दूर तक तेज़ी के साथ जा रहे हैं। उन्होंने ग़ुलाम आज़ाद करने, अपने जानवरों को राहे लिल्लाह छोड़ना शुरू कर दिया। आख़िर अ़ब्दे यलील बिन अ़म्र बिन उ़मैर ने उनसे कहा कि ऐ ताइफ़ वालो! तुम क्यों अपने माल बर्बाद कर रहे हो? तुम नुजूम देखो अगर सितारों को अपनी-अपनी जगह पाओ तो समझ लो कि आसमान वाले तबाह नहीं हुए बल्कि ये सब कुछ इन्तिज़ामात सिर्फ़ इब्ने अबी कब्शा के लिये हो रहे हैं (और अगर तुम देखो कि फ़िल्हक़ीक़त सितारे अपनी मुक़र्ररह जगह पर नहीं हैं तो बेशक अहले आसमान को हलाकशुदा मान लो।) उन्होंने नुजूम देखा तो सितरते सब अपनी-अपनी मुक़र्ररह जगह पर नज़र आये, तब उन्हें चैन आया।

शैतानों में हलचल : शयातीन में भी भाग-दौड़ मच गई ये इब्लीस के पास आये, वाक़िया कह सुनाया तो इब्लीस ने कहा, मेरे पास हर-हर इलाक़े की मिट्टी लाओ, तो मिट्टी लाई गई। उसने सूंघी और सूंघ कर बताया कि इसका बाइस़ मक्का में है। सात जिन्नात नसीबैन के रहने वाले मक्का पहुँचे। यहाँ हुज़ूर (ﷺ) मस्जिदे हराम में नमाज़ पढ़ रहे थे और क़ुरआन करीम की तिलावत कर रहे थे जिसे सुनकर उनके दिल नर्म हो गये। बहुत ही

क़रीब होकर क़ुरआन सुना फिर उसके असर से मुसलमान हो गये और अपनी क़ौम को भी दावते इस्लाम दी। (क़ुरआन मजीद के मतन से ये मालूम होता है कि ये सब बातें जिन्नात हुज़ूर से कह रहे हैं अपनी क़ौम से नहीं। हाँ! अल्बत्ता सूरह अहक़ाफ़ में जो जिन्नों का ज़िक्र है उसमें उनके अपनी क़ौम को इस्लाम की तरफ़ दावत देने का ज़िक्र है। इससे अगला मज़मून भी मुलाहिज़ा हो, वल्लाहु आलम! अल्हम्दुलिल्लाह हमने इन तमाम वाक़िये को पूरा-पूरा अपनी किताबुस्सीरत में हुज़ूर (ﷺ) की नुबूवत के आग़ाज़ के बयान में लिखा है, वल्लाहु आलम!

***

وَّاَنَّا مِنَّا الصّٰلِحُوْنَ وَمِنَّا دُوْنَ ذٰلِكَ ؕ كُنَّا طَرَآئِقَ قِدَدًا ﴿۱۱﴾ وَّاَنَّا ظَنَنَّاۤ اَنْ لَّنْ
نُّعْجِزَ اللّٰهَ فِى الْاَرْضِ وَلَنْ نُّعْجِزَهٗ هَرَبًا ﴿۱۲﴾ وَّاَنَّا لَمَّا سَمِعْنَا الْهُدٰۤى اٰمَنَّا بِهٖ ؕ فَمَنْ
يُّؤْمِنْۢ بِرَبِّهٖ فَلَا يَخَافُ بَخْسًا وَّلَا رَهَقًا ﴿۱۳﴾ وَّاَنَّا مِنَّا الْمُسْلِمُوْنَ وَمِنَّا
الْقٰسِطُوْنَ ؕ فَمَنْ اَسْلَمَ فَاُولٰٓئِكَ تَحَرَّوْا رَشَدًا ﴿۱۴﴾ وَاَمَّا الْقٰسِطُوْنَ فَكَانُوْا لِجَهَنَّمَ
حَطَبًا ﴿۱۵﴾ وَّاَنْ لَّوِ اسْتَقَامُوْا عَلَى الطَّرِيْقَةِ لَاَسْقَيْنٰهُمْ مَّآءً غَدَقًا ﴿۱۶﴾ لِّنَفْتِنَهُمْ
فِيْهِ ؕ وَمَنْ يُّعْرِضْ عَنْ ذِكْرِ رَبِّهٖ يَسْلُكْهُ عَذَابًا صَعَدًا ﴿۱۷﴾

तर्जुमा : "और ये कि बेशक कुछ तो हममें नेकोकार हैं और कुछ इसके बरख़िलाफ़ भी हैं, हम अलग-अलग फ़रीक़ हैं। (11) हमें यक़ीने कामिल हो गया कि हम अल्लाह तआला को ज़मीन में हर्गिज़ आजिज़ नहीं कर सकते और न हम भाग कर उसे हरा सकते हैं। (12) हम तो हिदायत सुनते ही उस पर ईमान ला चुके और जो भी अपने रब पर ईमान लायेगा उसे न किसी नुक़सान का अन्देशा है न ज़ुल्म व सितम का। (13) हाँ हममें कुछ तो मुसलमान हैं और कुछ बेइंसाफ़ हैं, पस जो मुसलमान हो गये उन्होंने तो राहेरास्त का क़सद किया। (14) और जो ज़ालिम हैं वो जहन्नम का ईंधन बन गये। (15) और (ऐ नबी! ये भी कह दो) कि अगर लोग राहेरास्त पर सीधे रहते तो यक़ीनन हम उन्हें बहुत कुछ वाफ़िर पानी पिलाते। (16) ताकि हम उसमें उन्हें आज़मा लें और जो शख़्स अपने परवरदिगार के ज़िक्र से मुँह फेर लेगा तो अल्लाह तआला उसे सख़्त अज़ाब में मुब्तला करेगा।" (17)

जिन्नात का ऐतिक़ाद और अमली हालत (आयत : 11-17) : जिन्नात अपनी क़ौम का इख़्तिलाफ़ बयान करते हैं और कहते हैं कि हममें नेकोकार भी हैं और बदकार भी हैं। हम अलग-अलग राहों पर लगे हुए थे। हज़रत आमश (रह.) फ़रमाते हैं कि एक जिन्न हमारे पास आया था। मैंने एक मर्तबा उससे पूछा कि तमाम खानों में से तुम्हें कौनसा खाना पसंद है? उसने कहा, चावल। मैंने ला दिये तो देखा कि लुक़्मा बराबर उठ रहा है लेकिन खाने वाला कोई नज़र नहीं आता। मैंने पूछा, जो ख़्वाहिशात हममें हैं क्या वो तुममें भी हैं? उसने कहा, हाँ हैं। मैंने फिर पूछा कि राफ़ज़ी तुममें कैसे गिने जाते हैं? उसने कहा, बदतरीन। हाफ़िज़ अबुल हज्जाज मुज़ी (रह.) फ़रमाते हैं कि इसकी सनद सहीह है।

इब्ने असाकिर में है कि हज़रत अब्बास बिन अहमद दमिश्क़ी (रह.) फ़रमाते हैं कि मैंने रात के वक़्त एक जिन्न को अश्आर में ये कहते हुए सुना कि दिल अल्लाह तआला की मुहब्बत से पुर हो गये हैं यहाँ तक कि मश्रिक़ व मग़्रिब में उसकी जड़ें जम गई हैं और वो हैरान व परेशान इधर-उधर अल्लाह तआला की मुहब्बत में फिर रहे हैं जो उनका रब है उन्होंने मख़्लूक़ से ताल्लुक़ात काटकर अपने ताल्लुक़ात अल्लाह तआला से वाबस्ता कर लिये हैं।

फिर कहते हैं कि हमें मालूम हो चुका कि अल्लाह तआला की क़ुदरत हम पर हाकिम है, हम उससे भाग कर न बच सकेंगे, न किसी और तरह उसे आजिज़ कर सकेंगे, अब फ़ख़्रिया कहते हैं कि हम तो हिदायत नाम को सुनते ही उस पर ईमान ला चुके। फ़िल्वाक़ेअ है भी ये फ़ख़्र का मक़ाम, इससे ज़्यादा शर्फ़ और फ़ज़ीलत क्या हो सकती है कि रब का कलाम फ़ौरन असर करे।

फिर कहते हैं कि मोमिन के न तो अमले नेक ज़ाया होंगे न उस पर ख़्वाह-मख़्वाह की बुराइयाँ लादी जायेंगी। जैसे और जगह है, (فَلَا يَخَافُ ظُلْمًا وَّلَا هَضْمًا ﴿١١٢﴾) (सूरह ताहा 20 : 112) 'नेकोकार मोमिन को ज़ुल्म व नुक़सान का डर नहीं।' फिर कहते हैं कि हममें कुछ तो मुसलमान हैं और कुछ हक़ से हटे हुए और अद्ल को छोड़े हुए हैं। मुसलमान निजात के मुतलाशी हैं और ज़ालिम जहन्नम की लकड़ियाँ और ईंधन हैं। उसके बाद की आयत व अल्लविस्-तक़ामू के दो मतलब बयान किये गये हैं। एक तो ये कि अगर तमाम लोग इस्लाम पर और राहेरास्त पर और इताअते इलाही पर जम जाते तो उन पर बकसरत बारिशें बरसाते और ख़ूब वुस्अत से रोज़ियाँ देते, जैसे और जगह है (وَلَوْ اَنَّهُمْ اَقَامُوا التَّوْرٰىةَ وَالْاِنْجِيْلَ) वलौ अन्नहुम अक़ामुत्तौरात वल्इन्जील 'अगर ये तौरात व इन्जील और आसमानी किताबों पर सीधे उतरते तो उन्हें आसमान व ज़मीन से रोज़ियाँ मिलतीं।' (सूरह माएदा 5 : 66)

और फ़रमान है, (وَلَوْ اَنَّ اَهْلَ الْقُرٰى اٰمَنُوْا وَاتَّقَوْا لَفَتَحْنَا عَلَيْهِمْ بَرَكٰتٍ مِّنَ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ) (सूरह आराफ़ 7 : 96) 'अगर बस्ती वाले ईमान ले आते और इस तरह मुत्तक़ी बन जाते तो हम उन पर आसमान व ज़मीन की बरकतें खोल देते, ये इसलिये कि उनकी पुख़्ता जाँच हो जाये कि हिदायत पर कौन जमा रहता है और कौन फिर से गुमराही की तरफ़ लौट जाता है।'

हज़रत मुक़ातिल (रह.) फ़रमाते हैं कि ये आयत कुफ़्फ़ारे क़ुरैश के बारे में उतरी है जबकि उन पर सात साल का क़हत पड़ा था। दूसरा मतलब ये बयान किया गया है कि अगर ये सबके सब गुमराही पर जम जाते तो उन पर रिज़्क़ के दरवाज़े खोल दिये जाते, ताकि ये ख़ूब मस्त हो जायें और अल्लाह तआला को भूल जायें और बदतरीन सज़ाओं के क़ाबिल हो जायें जैसे फ़रमाने बारी है, (فَلَمَّا نَسُوْا) (सूरह अन्आम 6 : 44) 'जब वो नसीहतें भुला बैठे तो हमने भी उन पर हर चीज़ के दरवाज़े खोल दिये जिससे वो मस्त हो गये और नागहाँ हमने उन्हें पकड़ लिया और फिर वो मायूस हो गये।' इसी तरह की आयत (اَيَحْسَبُوْنَ اَنَّمَا نُمِدُّهُمْ) (सूरह मोमिनून 23 : 55) फिर फ़रमाता है कि जो भी अपने रब के ज़िक्र से बेपरवाही बरतेगा उसका रब उसे दर्दनाक सख़्त और मुहलिक अज़ाबों में मुब्तला करेगा। हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) से मरवी है कि सअदा पहाड़ का नाम है जबकि सईद बिन जुबैर कहते हैं जहन्नम के एक कुँऐं का नाम है।

***

وَّاَنَّ الْمَسٰجِدَ لِلّٰهِ فَلَا تَدْعُوْا مَعَ اللّٰهِ اَحَدًا ﴿١٨﴾ وَّاَنَّهٗ لَمَّا قَامَ عَبْدُ اللّٰهِ يَدْعُوْهُ
كَادُوْا يَكُوْنُوْنَ عَلَيْهِ لِبَدًا ﴿١٩﴾ قُلْ اِنَّمَآ اَدْعُوْا رَبِّيْ وَلَآ اُشْرِكُ بِهٖٓ اَحَدًا ﴿٢٠﴾ قُلْ
اِنِّيْ لَآ اَمْلِكُ لَكُمْ ضَرًّا وَّلَا رَشَدًا ﴿٢١﴾ قُلْ اِنِّيْ لَنْ يُّجِيْرَنِيْ مِنَ اللّٰهِ اَحَدٌ ۙ وَّلَنْ
اَجِدَ مِنْ دُوْنِهٖ مُلْتَحَدًا ﴿٢٢﴾ اِلَّا بَلٰغًا مِّنَ اللّٰهِ وَرِسٰلٰتِهٖ ۭ وَمَنْ يَّعْصِ اللّٰهَ
وَرَسُوْلَهٗ فَاِنَّ لَهٗ نَارَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ﴿٢٣﴾ حَتّٰٓى اِذَا رَاَوْا مَا يُوْعَدُوْنَ
فَسَيَعْلَمُوْنَ مَنْ اَضْعَفُ نَاصِرًا وَّاَقَلُّ عَدَدًا ﴿٢٤﴾

तर्जुमा : "और ये कि मस्जिदें सिर्फ़ अल्लाह तआला ही की हैं पस अल्लाह तआला के साथ किसी और को न पुकारो। (18) और जब अल्लाह तआला का बन्दा उसकी इबादत के लिये खड़ा हुआ तो क़रीब था कि वो भीड़ की भीड़ बनकर उस पर झुक पड़ें। (19) तू कह दे कि मैं तो सिर्फ़ अपने रब ही को पुकारता हूँ और उसके साथ किसी को शरीक नहीं करता। (20) कह दे कि मुझे तुम्हारे किसी नुक़सान-नफ़ा का इख़्तियार नहीं। (21) कह दे कि मुझे हर्गिज़-हर्गिज़ कोई उससे बचा नहीं सकता और मैं हर्गिज़ उसके सिवा कोई जाए पनाह भी पा नहीं सकता। (22) मैं तो सिर्फ़ अल्लाह तआला की तरफ़ से पहुँचा देता हूँ और उसका पैग़ाम सुना देता हूँ अब जो भी अल्लाह तआला और उसके रसूल की न मानेगा उसके लिये जहन्नम की आग है

जिसमें वो हमेशा-हमेशा रहेगा। (23) (उनकी आँख न खुलेगी) यहाँ तक कि उसे देख लें जिसका उनको वादा दिया जाता है पस अन्क़रीब जान लेंगे कि किसका मददगार कमज़ोर और किसकी जमाअत कम है।'' (24)

सिर्फ़ अल्लाह तआला को पुकारो (आयत : 18-24) : अल्लाह तआला अपने बन्दों को हुक्म देता है कि उसकी इबादत की जगहों को शिर्क से पाक रखें, वहाँ किसी दूसरे का नाम न पुकारें, न किसी और को अल्लाह तआला की इबादत व इताअत में शरीक करें। हज़रत क़तादा (रह.) फ़रमाते हैं कि यहूदो-नसारा अपने गिर्जों और कनीसों में जाकर अल्लाह तआला के साथ औरों को भी शरीक करते थे तो इस उम्मत को हुक्म हो रहा है कि वो ऐसा न करें बल्कि नबी (ﷺ) भी और उम्मत भी सब तौहीद वाले रहें। हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) फ़रमाते हैं कि इस आयत के नुज़ूल के वक़्त सिर्फ़ मस्जिदे अक़्सा और मस्जिदे हराम थीं। हज़रत आमश (रह.) ने इस आयत की तफ़्सीर ये भी बयान की है कि जिन्नात ने हुज़ूर (ﷺ) से इजाज़त चाही कि आप (ﷺ) की मस्जिद में और इंसानों के साथ नमाज़ अदा करें। तो गोया उनसे कहा जा रहा है कि नमाज़ पढ़ो लेकिन इंसानों के साथ ख़लत-मलत न हो। हज़रत सईद बिन जुबैर (रह.) फ़रमाते हैं कि जिन्नों ने हुज़ूर (ﷺ) से अर्ज़ किया कि हम तो दूर-दराज़ रहते हैं नमाज़ों में आपकी मस्जिद में कैसे पहुँच सकेंगे? तो उन्हें कहा जाता है कि मक़सूद नमाज़ का अदा करना और सिर्फ़ अल्लाह तआला ही की इबादत बजा लाना है ख़्वाह कहीं हो। हज़रत इक्रिमा (रह.) फ़रमाते हैं कि ये आयत आम है और तमाम मसाजिद को शामिल है।

हज़रत सईद बिन जुबैर (रह.) फ़रमाते हैं कि ये आयत आज़ाए सज्दा के बारे में नाज़िल हुई है। यानी जिन आज़ा पर तुम सज्दा करते हो वो सब अल्लाह तआला ही के हैं, पस तुम पर उन आज़ा से दूसरे के लिये सज्दा करना हराम है। सहीह हदीस में है, 'मुझे सात हड्डियों पर सज्दा करने का हुक्म दिया गया है, पेशानी और हाथ के इशारे से नाक को भी उसमें शामिल कर लिया और दोनों हाथ, दोनों घुटने और दोनों पहुँचे।' (सहीह बुख़ारी, किताबुल अज़ान, बाब अस्सुजूद अलल अन्फ़ : 812, सहीह मुस्लिम : 490)

आयत लम्मा क़ाम का एक मतलब तो ये है कि जिन्नात ने जब हुज़ूर (ﷺ) की ज़बानी तिलावते क़ुरआन सुनी तो इस तरह आगे बढ़-बढ़ कर झुकने लगे कि गोया एक-दूसरे के सिरों पर चढ़े चले जाते हैं। दूसरा मतलब ये है कि जिन्नात अपनी क़ौम से कह रहे हैं कि हुज़ूर (ﷺ) के अस्हाब की इताअत व चाहत की हालत ये है कि जब हुज़ूर (ﷺ) नमाज़ को खड़े होते हैं और अस्हाब (रज़ि.) पीछे होते हैं तो बराबर इताअत व इक़्तिदा में आख़िर तक मशग़ूल रहते हैं गोया एक हल्क़ा है। तीसरा क़ौल ये है कि जब रसूलुल्लाह (ﷺ) लोगों में अल्लाह तआला की तौहीद का ऐलान करते हैं तो काफ़िर लोग दाँत चबा-चबा कर उलझ जाते हैं। जिन्नात व इंसान मिल जाते हैं गो इस अम्रे दीन को मिटा दें और इसकी रोशनी को छिपा लेंगे मगर अल्लाह तआला का इरादा इसके ख़िलाफ़ हो चुका है। ये तीसरा क़ौल ही ज़्यादा ज़ाहिर मालूम होता है क्योंकि इसके बाद ही है कि मैं तो सिर्फ़ अपने रब का नाम पुकारता हूँ और किसी और की इबादत नहीं करता। यानी जब दावते हक़ और

तौहीद की आवाज़ उनके कान में पड़ी जो मुद्दतों से ग़ैर मानूस हो चुकी थी तो उन कुफ़्फ़ार ने ईज़ा रसानी (तकलीफ़ पहुँचाना) और मुख़ालिफ़त और तकज़ीब (झुठलाने) पर कमर बांध ली और हक़ को मिटा देना चाहा और रसूलुल्लाह (ﷺ) की अदावत पर इज्माअ कर लिया उस वक़्त उनसे रसूलुल्लाह (ﷺ) ने कहा कि मैं तो अपने पालने वाले वह्दहू ला शरीक लहू की इबादत में मशग़ूल रहूँगा। मैं उसी की पनाह में हूँ, उसी पर मेरा तवक्कुल (भरोसा) है वो ही मेरा सहारा है मुझसे ये तवक़्क़ोअ हर्गिज़ न रखो कि मैं किसी और के सामने झुकूँ या उसकी परस्तिश करूँ, मैं तुम जैसा इंसान हूँ, तुम्हारे नफ़ा-नुक़सान का मालिक नहीं हूँ, मैं तो अल्लाह तआला का एक ग़ुलाम हूँ, अल्लाह तआला के बन्दों में से एक बन्दा हूँ, तुम्हारी हिदायत व ज़लालत का मुख़्तार व मालिक नहीं, सब चीज़ें अल्लाह तआला के क़ब्ज़े में हैं, मैं तो सिर्फ़ पैग़ाम पहुँचाने वाला हूँ, अगर मैं ख़ुद भी अल्लाह तआला की मअसयित (नाफ़रमानी) करूँ तो अल्लाह तआला मुझे ज़रूर अज़ाब देगा और किसी से न हो सकेगा कि मुझे बचा ले, मुझे कोई पनाह की जगह उसके सिवा नज़र ही नहीं आती, मेरी हैसियत सिर्फ़ मुबल्लिग़ और रसूल की है।

कुछ तो कहते हैं इल्ला का इस्तिस्ना ला अम्लिकु से है। यानी मैं नफ़ा व नुक़सान और हिदायत व ज़लालत का मालिक नहीं, मैं तो सिर्फ़ तब्लीग़ करने वाला, पैग़ाम पहुँचाने वाला हूँ। और हो सकता है कि लंय्युजीरनी से ये इस्तिस्ना हो। यानी अल्लाह तआला के अज़ाबों से मुझे सिर्फ़ मेरी रिसालत की अदायगी ही बचा सकती है। जैसे और जगह है, (يَآيُّهَا الرَّسُوْلُ بَلِّغْ مَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ) (सूरह माएदा 5 : 67) 'ऐ रसूल! तेरी तरफ़ जो तेरे रब की तरफ़ से उतारा गया है उसे पहुँचा दे और अगर तूने ये न किया तो तूने हक़्क़े रिसालत अदा नहीं किया, अल्लाह तआला तुझे लोगों से बचा लेगा।' नाफ़रमानों के लिये हमेशगी वाली जहन्नम की आग है जिसमें से न वो निकल सकेंगे और न भाग सकेंगे। जब ये मुश्रिकीन जिन्न व इन्स क़यामत वाले दिन डरावने अज़ाबों को देख लेंगे उस वक़्त मालूम हो जायेगा कि कमज़ोर मददगारों वाला और बेवक़्अत गिनती वाला कौन है? यानी मोमिन, मुवह्हिद या मुश्रिक, हक़ीक़त ये है कि मुश्रिकों को बराए नाम भी कोई मदद करने वाला उस दिन न होगा और अल्लाह तआला के लश्करों के मुक़ाबले पर उनकी गिनती भी गोया न होगी।

***

قُلْ اِنْ اَدْرِيْٓ اَقَرِيْبٌ مَّا تُوْعَدُوْنَ اَمْ يَجْعَلُ لَهٗ رَبِّيْٓ اَمَدًا ﴿٢٥﴾ عٰلِمُ الْغَيْبِ
فَلَا يُظْهِرُ عَلٰى غَيْبِهٖٓ اَحَدًا ﴿٢٦﴾ اِلَّا مَنِ ارْتَضٰى مِنْ رَّسُوْلٍ فَاِنَّهٗ يَسْلُكُ مِنْۢ
بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهٖ رَصَدًا ﴿٢٧﴾ لِّيَعْلَمَ اَنْ قَدْ اَبْلَغُوْا رِسٰلٰتِ رَبِّهِمْ وَاَحَاطَ
بِمَا لَدَيْهِمْ وَاَحْصٰى كُلَّ شَيْءٍ عَدَدًا ﴿٢٨﴾

तर्जुमा : ''कह दे कि मुझे नहीं मालूम कि जिसका वादा तुमसे किया जाता है वो क़रीब है या मेरे रब उसके लिये दूर की मुद्दत मुक़र्रर कर दे। (25) वो ग़ैब का जानने वाला है और अपने ग़ैब पर किसी को मुत्तलअ़ नहीं करता। (26) सिवाय उस पैग़म्बर के जिसे वो पसंद कर ले लेकिन उसके भी आगे-पीछे पहरेदार मुक़र्रर कर देता है। (27) ताकि उनके अपने रब के पैग़ाम पहुँचा देने का इल्म हो जाये अल्लाह तआ़ला ने उनके आस-पास की तमाम चीज़ों का एहाता कर रखा है और हर चीज़ की गिनती का शुमार कर रखा है।'' (28)

क्या आँहज़रत (ﷺ) ग़ैब जानते थे? (आयत : 25-28) : अल्लाह तआ़ला अपने रसूल (ﷺ) को हुक्म देता है कि लोगों से कह दें कि क़यामत कब होगी इसका इल्म मुझे नहीं। बल्कि मैं ये भी नहीं जानता कि उसका वक़्त क़रीब है या दूर है और लम्बी मुद्दत के बाद आने वाली है।

(फ़ायदा) इस आयते करीमा में दलील है इस बात की कि अक्सर जाहिलों में जो मशहूर है कि हुज़ूर (ﷺ) ज़मीन के अंदर की चीज़ों का इल्म रखते हैं वो बिल्कुल ग़लत है। इस रिवायत की कोई असल नहीं महज़ झूठ है और बिल्कुल बेअसल रिवायत है। हमने तो इसे किसी किताब में नहीं पाया। हाँ इसके ख़िलाफ़ साफ़ साबित है। हुज़ूर (ﷺ) से क़यामत के क़ायम होने का वक़्त पूछा जाता था और आप (ﷺ) उसके मुअ़य्यन वक़्त से अपनी लाइल्मी ज़ाहिर करते थे, आराबी की सूरत में हज़रत जिब्राईल (अ़लै.) ने भी आकर जब क़यामत के बारे में सवाल किया था तो आपने साफ़ फ़रमा दिया था, 'उसका इल्म न पूछने वाले को है और न उसे है जिससे पूछा जाता है।' (सहीह बुख़ारी, किताबुल ईमान, बाब सुआलु जिब्राईलन्नबी (ﷺ) अ़निल ईमान : 50, सहीह मुस्लिम : 9)

एक और हदीस़ में है कि एक देहात के रहने वाले ने बआवाज़े बुलंद आपसे पूछा कि हुज़ूर! क़यामत कब आयेगी? आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'वो आयेगी ज़रूर और बता कि तूने उसके लिये क्या तैयारी कर रखी है?' उसने कहा, मेरे पास रोज़े-नमाज़ की कस़रत तो नहीं, अल्बत्ता अल्लाह तआ़ला व रसूल की मुहब्बत है। आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'फिर तू उसके साथ होगा जिससे तुझे मुहब्बत है।' हज़रत अनस (रज़ि.) फ़रमाते हैं कि मुसलमान किसी हदीस़ से इस क़द्र ख़ुश नहीं हुए जितने इस हदीस़ से हुए। (सहीह बुख़ारी, किताबुल अदब, बाब मा जाअ फ़ी क़ौलिर्रजुलि वैलक : 6167, सहीह मुस्लिम : 2639, तिर्मिज़ी : 2385)

इस हदीस़ से भी मालूम हुआ कि क़यामत का ठीक वक़्त आप (ﷺ) को मालूम न था। इब्ने अबी हातिम में है कि आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'ऐ लोगो! अगर तुम को कुछ इल्म है तो अपने आपको मुर्दों में शुमार किया करो अल्लाह तआ़ला की क़सम! जिसका तुमसे वादा किया जाता है वो यक़ीनन एक वक़्त आने वाली है।' (ज़ईफ़ : हिलियतुल औलिया : 6/91, अबू बक्र बिन अबी मरयम ज़ईफ़ मशहूर, इब्ने असाकिर : 2/348)

यहाँ भी आप (ﷺ) इसका कोई मुक़र्रर वक़्त नहीं बतलाते। अबू दाऊद में किताबुल मलाहिम के आख़िर में है कि 'अल्लाह तआ़ला इस उम्मत को क्या अ़जब है कि आधे दिन तक की मोहलत दे दे।' (सहीह

: अबू दाऊद, किताबुल मलाहिम, बाब क़ियामुस्साअ़त : 4349, हाकिम : 4/424)

एक और रिवायत में इतना और भी है कि हज़रत सअ़द (रज़ि.) से पूछा गया कि आधे दिन से क्या मुराद है? फ़रमाया, पाँच सौ साल। (ज़ईफ़ : अबू दाऊद, किताबुल मलाहिम, बाब क़ियामुस्साअ़त : 4350, शुरेह बिन उ़बैद और हज़रत सअ़द बिन अबी वक़्क़ास रज़ि. के दरम्यान इन्क़िताअ़ है।)

फिर फ़रमाता है कि अल्लाह तआ़ला आ़लिमुल ग़ैब है वो अपने ग़ैब पर किसी को इत्तिलाअ़ नहीं देता, मगर रसूलों में से जिसे चुन ले उसको बता देता है। जैसे और जगह है, (وَلَا يُحِيطُونَ بِشَيْءٍ مِّنْ عِلْمِهِ إِلَّا بِمَا شَاءَ) (सूरह बक़रह 2 : 255) 'उसके इल्म में से किसी चीज़ को नहीं घेर सकते (यानी मालूम नहीं कर सकते) मगर जो अल्लाह तआ़ला चाहे।' यानी रसूलुल्लाह (ﷺ) ख़्वाह इंसानों में से हों ख़्वाह फ़रिश्तों में से हों, जिसे अल्लाह तआ़ला जितना चाहता है बतला देता है, बस वो उतना ही जानते हैं।

फिर इसकी मज़ीद तख़सीस ये होती है कि उसकी हिफ़ाज़त और साथ ही उस इल्म की इशाअ़त के लिये जो अल्लाह तआ़ला ने उसे दिया है उसके आस-पास हर वक़्त निगेहबान फ़रिश्ते मुक़र्रर रहते हैं। लियअ़्लम की ज़मीर कुछ ने तो कहा है कि नबी (ﷺ) की तरफ़ है। यानी हज़रत जिब्रईल (अ़लै.) के आगे-पीछे चार-चार फ़रिश्ते होते थे ताकि हुज़ूर (ﷺ) को यक़ीन आ जाये कि उन्होंने अपने रब का पैग़ाम सहीह तौर पर मुझे पहुँचाया है।

और कुछ कहते हैं कि मरजअ़ ज़मीर का अहले शिर्क है। यानी बारी-बारी आने वाले फ़रिश्ते नबी अल्लाह की हिफ़ाज़त करते हैं, शैतान से और उसकी ज़ुर्रियत से ताकि अहले शिर्क जान लें कि रसूलों ने रिसालते इलाही अदा कर दी है। यानी रसूलों के झुठलाने वाले भी रसूलों की रिसालत को जान लें मगर इसमें ज़रा नज़र है। याक़ूब की क़िरअत पेश के साथ है यानी लोग जान लेंगे कि रसूलों ने तब्लीग़ कर दी और मुम्किन है कि ये मतलब हो कि अल्लाह तआ़ला जान ले यानी वो अपने रसूलों की अपने फ़रिश्ते भेजकर हिफ़ाज़त करता है ताकि वो रिसालत अदा कर सकें और वह्ये इलाही महफ़ूज़ रख सकें और अल्लाह जान ले कि उन्होंने रिसालते अल्लाह अदा कर दी है। जैसे फ़रमाया, (وَمَا جَعَلْنَا الْقِبْلَةَ الَّتِي كُنتَ عَلَيْهَا) (सूरह बक़रह 2 : 143) 'जिस क़िब्ले पर तू था उसे हमने सिर्फ़ इसलिये मुक़र्रर किया था कि हम रसूल के सच्चे ताबेदारों और मुर्तदों को जान लें।' और जगह है, (وَلَيَعْلَمَنَّ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا وَلَيَعْلَمَنَّ الْمُنَافِقِينَ ﴿١١﴾) (सूरह अ़न्कबूत 29 : 11) 'अल्लाह तआ़ला ईमान वालों को और मुनाफ़िक़ों को बराबर जान कर रहेगा (कि मोमिन कौन हैं और मुनाफ़िक़ कौन हैं?' और भी इस क़िस्म की आयतें हैं। मतलब ये है कि अल्लाह तआ़ला पहले ही से जानता है, लेकिन उसे ज़ाहिर कर के भी जान लेता है, इसीलिये यहाँ उसके बाद ही फ़रमाया कि हर चीज़ और सबकी गिनती अल्लाह तआ़ला के इल्म के इहाते (घेरे) में है।

अल्हम्दुलिल्लाह सूरह जिन्न की तफ़्सीर भी ख़त्म हुई।

***

FLOW CHART

तरतीबी नक्श-ए-रब्त

MACRO-STRUCTURE

नज़्मे-जली

सूरह मुज़्ज़म्मिल - 73

आयात : 20, मक्की, पैराग्राफ : 4

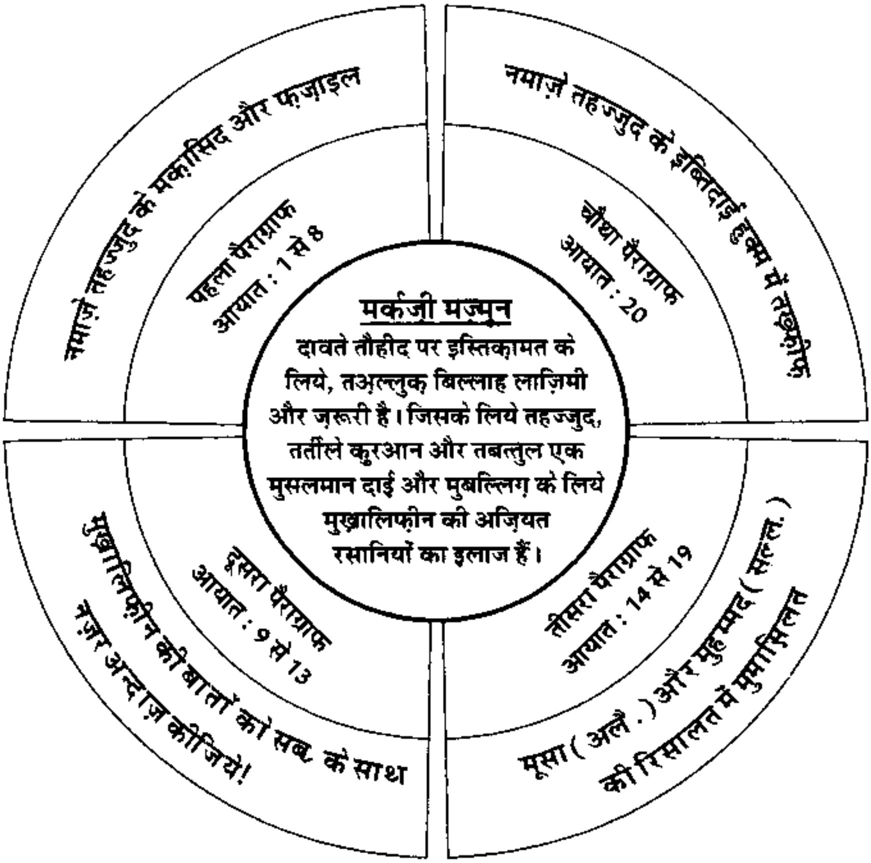

तफ़्सीर सूरह मुज़्ज़म्मिल

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ○

तर्जुमा : ''शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है।''

***

یٰۤاَیُّہَا الۡمُزَّمِّلُ ۙ﴿۱﴾ قُمِ الَّیۡلَ اِلَّا قَلِیۡلًا ۙ﴿۲﴾ نِّصۡفَہٗۤ اَوِ انۡقُصۡ مِنۡہُ قَلِیۡلًا ۙ﴿۳﴾ اَوۡ زِدۡ عَلَیۡہِ
وَ رَتِّلِ الۡقُرۡاٰنَ تَرۡتِیۡلًا ؕ﴿۴﴾ اِنَّا سَنُلۡقِیۡ عَلَیۡکَ قَوۡلًا ثَقِیۡلًا ﴿۵﴾ اِنَّ نَاشِئَۃَ الَّیۡلِ ہِیَ
اَشَدُّ وَطۡاً وَّ اَقۡوَمُ قِیۡلًا ؕ﴿۶﴾ اِنَّ لَکَ فِی النَّہَارِ سَبۡحًا طَوِیۡلًا ؕ﴿۷﴾ وَ اذۡکُرِ اسۡمَ رَبِّکَ
وَ تَبَتَّلۡ اِلَیۡہِ تَبۡتِیۡلًا ؕ﴿۸﴾ رَبُّ الۡمَشۡرِقِ وَ الۡمَغۡرِبِ لَاۤ اِلٰہَ اِلَّا ہُوَ فَاتَّخِذۡہُ وَکِیۡلًا ﴿۹﴾

तर्जुमा : ''ऐ झुरमुट मारकर कपड़ा ओढ़ने वाले। (1) रात को तहज्जुद पढ़ा कर मगर थोड़ी रात। (2) आधी रात या उससे भी कुछ कम कर ले। (3) या उस पर बढ़ा दे और कुरआन को ठहर-ठहर कर साफ़ पढ़ा कर। (4) यक़ीनन हम तुझ पर बहुत भारी बात अन्क़रीब नाज़िल करेंगे। (5) बेशक रात का उठना नफ़्स को ख़ूब कुचल देता है और बात को बहुत दुरुस्त कर देता है। (6) यक़ीनन तुझे दिन में बहुत शग़ल (काम) रहता है। (7) तू अपने रब के नाम का ज़िक्र किया कर और तमाम ख़लाइक़ से कट कर उसकी तरफ़ मुतवज्जह हो जा। (8) मश्‍रिक़ व मग़्रिब का परवरदिगार जिसके सिवा कोई माबूद नहीं , तू उसी को अपना कारसाज़ बना ले।'' (9)

सूरत का शाने नुज़ूल : बज़्ज़ार में हज़रत जाबिर (रज़ि.) से मरवी है कि कुरैश दारुन्नदवा में जमा होकर आपस में कहने लगे कि आओ मिलकर आँहज़रत (ﷺ) का एक ऐसा नाम तजवीज़ करें कि सबकी ज़बान से वही निकले ताकि बाहर के लोग एक ही आवाज़ सुन कर जायें। तो कुछ ने कहा, उनका नाम काहिन रखो। इस पर औरों ने कहा कि दरहक़ीक़त वो काहिन तो नहीं। कहा, अच्छा फिर उनका नाम मज्नून रखो। इस पर भी

औरों ने कहा कि वो मज्नून भी नहीं। फिर कुछ ने कहा, साहिर नाम रखो। इस पर और लोगों ने कहा कि वो साहिर यानी जादूगर भी नहीं हैं। ग़र्ज़ वो कोई ऐसा बुरा नाम तजवीज़ न कर सके जिस पर सबका इत्तिफ़ाक़ हो और ये मज्मअ यूंही उठ खड़ा हुआ। आँहज़रत (ﷺ) ये ख़बर सुनकर मुँह लपेट कर कपड़ा ओढ़कर लेटे रहे। जिब्रईल (अलै.) तशरीफ़ लाये और इसी तरह यानी ऐ कपड़े लपेटकर ओढ़ने वाले कहकर आप (ﷺ) को मुख़ातब किया। (मौज़ूअ : मुस्नद बज़्ज़ार : 2276, मज्मउज़्ज़वाइद : 7/133, इसकी सनद में मुअल्ला बिन अब्दुर्रहमान कज़्ज़ाब रावी है। अल्मीज़ान : 4/148, हदीस नम्बर : 8673)

इस रिवायत के एक रावी मुअल्ला बिन अब्दुर्रहमान से गो अहले इल्म की जमाअत रिवायत लेती है और वो इससे हदीसें नक़ल करते हैं लेकिन उनकी रिवायतों में बहुत सी ऐसी हदीसें भी हैं जिन पर उनकी मुताबिअत नहीं की जाती।

पैग़म्बर (अलै.) को नमाज़े तहज्जुद का हुक्म (आयत : 1-6) : अल्लाह तआला अपने नबी (ﷺ) को हुक्म देता है कि रातों के वक़्त कपड़े लपेटकर सो रहने को छोड़ दें और तहज्जुद की नमाज़ के क़ियाम को इख़्तियार कर लें। जैसे फ़रमान है, (تَتَجَافٰى جُنُوْبُهُمْ عَنِ الْمَضَاجِعِ يَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ خَوْفًا وَّطَمَعًا ۖ وَّمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ⑯) (सूरह सज्दा 32 : 16) 'उनकी करवटें बिस्तरों से अलग होती हैं और अपने रब को ख़ौफ़ और लालच से पुकारते हैं और हमारे दिये हुए में से देते रहते हैं।' हुज़ूर (ﷺ) पूरी उम्र इस हुक्म की बजा आवरी करते रहते, तहज्जुद की नमाज़ सिर्फ़ आप पर वाजिब थी यानी उम्मत पर वाजिब नहीं है। जैसे और जगह है (وَمِنَ الَّيْلِ فَتَهَجَّدْ بِهٖ نَافِلَةً لَّكَ ۖ) (सूरह बनी इस्राईल 17 : 79) 'रातों को तहज्जुद पढ़ा कर, ये हुक्म नफ़िल के तौर पर सिर्फ़ तुझे है तेरा रब तुझे मक़ामे महमूद में पहुँचाने वाला है।' यहाँ इस हुक्म के साथ ही मिक़्दार भी बयान फ़रमा दी कि आधी रात या कुछ कमो-बेश। मुज़्ज़म्मिल के मआना सोने वाले और कपड़ा लपेटने वाले के हैं। (अत्तबरी : 23/677)

उस वक़्त हुज़ूर (ﷺ) अपनी चादर ओढ़े लेटे हुए थे और ये भी कहा गया है कि ऐ क़ुरआन के अच्छी तरह लेने वाले! तू आधी रात तक तहज्जुद में मशग़ूल रहा कर या कुछ बढ़ा-घटा दिया कर और क़ुरआन करीम को आहिस्ता-आहिस्ता ठहर-ठहर पढ़ा कर ताकि ख़ूब समझा जाये। इस हुक्म के भी हुज़ूर (ﷺ) आमिल थे। हज़रत आइशा सिद्दीक़ा (रज़ि.) का बयान है कि आप (ﷺ) क़ुरआन करीम को तर्तील के साथ पढ़ते थे जिससे बड़ी देर में सूरत ख़त्म होती थी। गोया छोटी सी सूरत बड़ी से बड़ी हो जाती थी। (सहीह मुस्लिम, किताब सलातुल मुसाफ़िरीन, बाब जवाज़ुन्नाफ़िलति क़ाइमा व क़ाइदा : 733)

सहीह बुख़ारी शरीफ़ में है कि हज़रत अनस (रज़ि.) से रसूलुल्लाह (ﷺ) की क़िरअत का वस्फ़ पूछा जाता था तो आप फ़रमाते थे कि ख़ूब मद्द खींच करके हुज़ूर (ﷺ) पढ़ा करते थे। बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम पढ़कर सुनाई जिसमें लफ़्ज़ अल्लाह पर लफ़्ज़ रहमान पर लफ़्ज़ रहीम पर मद्द किया (खींचकर पढ़ा)। (सहीह बुख़ारी, किताब फ़ज़ाइलुल क़ुरआन, बाब मद्दुल क़िरअत : 5046, इब्ने हिब्बान : 6317)

इब्ने जुरैज में है कि हर-हर आयत पर आप (ﷺ) पूरा वक़्फ़ फ़रमाया करते थे। जैसे बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम पढ़कर वक़्फ़ करते अल्हम्दुलिल्लाहि रब्बिल् आलमीन पढ़कर वक़्फ़ करते अर्रहमानिर्रहीम पढ़कर वक़्फ़ करते मालिकि यौमिद्दीन पढ़कर ठहरते। (ज़ईफ़ : अबू दाऊद, किताबुल हुरूफ़ : 4001, अब्दुल्लाह बिन अबी मुलैका का उम्मे सलमा रज़ि. से सिमाअ नहीं है। नीज़ इब्ने जुरैज मुदल्लस रावी है। तिर्मिज़ी : 2927, अहमद : 6/302)

मुस्नद अहमद की एक हदीस में है, 'क़ुरआन के क़ारी से क़यामत के दिन कहा जायेगा कि पढ़ता जा और चढ़ता जा और तर्तील से पढ़ जैसे दुनिया में तर्तील से पढ़ा करता था, तेरा दर्जा वो है जहाँ तेरी आख़िरी आयत ख़त्म हो।' (हसन : अबू दाऊद, किताबुल वित्र, बाब कैफ़ युस्तहब्बुत्तर्तील फ़िल्क़िरअत : 1464, तिर्मिज़ी : 2914, अहमद : 2/192, इब्ने अबी शैबा : 10/498, इब्ने हिब्बान : 766, इमाम तिर्मिज़ी इसे हसन सहीह कहते हैं।) हमने इस तफ़्सीर के शुरू में वो अहादीस वारिद कर दी हैं जो तर्तील के मुस्तहब होने और अच्छी आवाज़ से क़ुरआन पढ़ने पर दलालत करती हैं। जैसे वो हदीस जिसमें है, 'क़ुरआन को अपनी आवाज़ों से मुज़य्यन करो।' (सहीह : अबू दाऊद, हवाला साबिक़ : 1468, नसाई : 1016, इब्ने माजह : 1342, इब्ने माजह : 1342, अहमद : 4/296)

और फ़रमाया, 'वो शख़्स हममें से नहीं (मुसलमान नहीं) जो ख़ुश आवाज़ से क़ुरआन न पढ़े।' (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तौहीद, बाब क़ौलुल्लाहि तआला : व असिर्रू क़ौलकुम अवजिहरू बिह : 7527, अबू दाऊद : 1469, अहमद : 1/175, इब्ने हिब्बान : 120, हाकिम : 1/569)

और हज़रत अबू मूसा अश्अरी (रज़ि.) की निस्बत हुज़ूर (ﷺ) का ये फ़रमाना, इसे आले दाऊद की ख़ुश आवाज़ी अता की गई है।' (सहीह बुख़ारी, किताब फ़ज़ाइलुल क़ुरआन, बाब हुस्नुस्सौत बिल्क़िरअति लिल्क़ुरआन : 5048, सहीह मुस्लिम : 793)

और हज़रत अबू मूसा (रज़ि.) का फ़रमाना, अगर मुझे मालूम होता कि आप (ﷺ) सुन रहे हैं तो मैं और अच्छे गले से ज़्यादा उम्दगी के साथ पढ़ता। (ज़ईफ़ : हाकिम : 3/466, व सनदहू ज़ईफ़ फ़ीहि ख़ालिद बिन नाफ़िअ अल्अश्अरी लिम युबय्यिल्ली हालहू ज़अ्अफ़हू जमाअतुन व क़वाहू जमाअतुन व लाकिन हदीसहू ज़ईफ़, बैहक़ी : 10/231, मज्मउज़्ज़वाइद : 7/171)

और हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) का ये फ़रमान कि रेत की तरह क़ुरआन को न फैलाओ और शेअरों की तरह क़ुरआन को बेतहज़ीबी से न पढ़ो, इसके अजाइब पर ग़ौर करो और दिलों में असर लेते जाओ और इसके पीछे न पड़ जाओ कि जल्द सूरत ख़त्म हो। (बग़वी)

एक शख़्स ने आकर हज़रत इब्ने मसऊद (रज़ि.) से कहा कि मैंने मुफ़स्सल की तमाम सूरतें आज की रात एक ही रकअत में पढ़ डालीं। आपने फ़रमाया कि फिर तूने शेअरों की तरह जल्दी-जल्दी पढ़ा होगा। मुझे वो

बराबर-बराबर की सूरतें ख़ूब याद हैं जिन्हें रसूलुल्लाह (ﷺ) मिलाकर पढ़ा करते थे। (सहीह बुख़ारी, किताबुल अज़ान, बाब अल्जमउ़ बैनस्सूरतैन फ़ी रकअ़तिही : 775, सहीह मुस्लिम : 822)

फिर मुफ़स्सल सूरतों में से बीस सूरतों के नाम लिये कि उनमें से दो-दो सूरतें हुज़ूर (ﷺ) एक-एक रकअ़त में पढ़ा करते थे।

फिर अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि हम तुझ पर अ़न्क़रीब भारी बोझल बात उतारेंगे। यानी अ़मल में स़क़ील होगी और उतरते वक़्त बवजहे अपनी अ़ज़्मत के गिराँ क़द्र होगी। हज़रत ज़ैद बिन स़ाबित (रज़ि.) फ़रमाते हैं कि एक मर्तबा रसूलुल्लाह (ﷺ) पर वह्य उतरी, उस वक़्त आप (ﷺ) का घुटना मेरे घुटने पर था। वह्य का इतना बोझ पड़ा कि मैं तो डरने लगा कि मेरी रान कहीं टूट न जाये। (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरतुन्निसा, बाब ला यस्तविल क़ाइदून मिनल मुअ्मिनीन : 4592)

मुस्नद अहमद में है कि हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र (रज़ि.) फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से पूछा कि वह्य का एहसास भी आप को होता है? आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'मैं ऐसी आवाज़ सुनता हूँ जैसे किसी ज़ंजीर के बजने की आवाज़ हो, मैं चपका हो जाता हूँ जब भी वह्य नाज़िल होती है मुझ पर इतना बोझ पड़ता है कि मैं समझता हूँ मेरी जान निकल जायेगी।' (ज़ईफ़ : अहमद : 2/222)

सहीह बुख़ारी के शुरू में है कि हज़रत हारिस़ बिन हिशाम (रज़ि.) पूछते हैं ऐ अल्लाह के रसूल! आपके पास वह्य किस तरह आती है? आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'कभी तो घण्टी की आवाज़ की तरह होती है जो मुझ पर बहुत भारी पड़ती है और जब वो गुनगुनाहट की आवाज़ ख़त्म हो जाती है तो उस दौरान में जो कुछ कहा गया था वो मुझे ख़ूब महफ़ूज़ हो जाता है और कभी फ़रिश्ता इंसानी सूरत में मेरे पास आता है और मुझसे कलाम करता है और मैं याद कर लेता हूँ।'

हज़रत आ़इशा (रज़ि.) फ़रमाती हैं कि मैंने देखा है कि सख़्त जाड़े वाले दिन में भी जब आप (ﷺ) पर वह्य उतर चुकती तो आप (ﷺ) की पेशानी मुबारक से पसीने के क़तरे टपकने लगते। (सहीह बुख़ारी, किताब बदउल वह्य, बाब कैफ़ का-न बदउल वह्य इला रसूलिल्लाह (ﷺ) : 2, सहीह मुस्लिम : 2333, मोत्ता इमाम मालिक : 1/202, इब्ने हिब्बान : 38)

मुस्नद अहमद में है कि कभी ऊँटनी पर हुज़ूर (ﷺ) सवार होते और इसी हालत में वह्य आती तो ऊँटनी झुक जाती। (हसन : अहमद : 6/118)

इब्ने जरीर में ये भी है कि फिर जब तक वह्य ख़त्म न हो लेती ऊँटनी से क़दम न उठाया जाता और न उसकी गर्दन ऊँची होती। मतलब ये है कि ख़ुद वह्य का उतरना भी अहम और बोझल था फिर अहकाम का बजा लाना और उनका आ़मिल होना भी ऐसा ही था। यही क़ौल हज़रत इमाम इब्ने जरीर (रह.) का है। हज़रत अ़ब्दुर्रहमान (रह.) से मन्क़ूल है कि जिस तरह दुनिया में ये स़क़ील (भारी) काम है उसी तरह आख़िरत में

अज्र भी भारी मिलेगा। फिर फ़रमाता है कि रात का उठना नफ़्स को ज़ेर करने के लिये और ज़बान को दुरुस्त करने के लिये अकसीर है। 'नशा' के मआना हब्शी ज़बान में क़ियाम करने के हैं, रात भर में जब उठे उसे नाशिअतल्लैलि कहते हैं। (अत्तबरी : 23/683)

तहज्जुद के फ़ायदे : तहज्जुद की नमाज़ की ख़ूबी ये है कि दिल और ज़बान एक हो जाता है और तिलावत के जो अल्फ़ाज़ ज़बान से निकलते हैं दिल में गड़ जाते हैं और बनिस्बत दिन के रात की तन्हाई में मआना मतलब ख़ूब ज़हन नशीन होता जाता है क्योंकि दिन भीड़-भाड़ का, शोर व गुल का, कमाई-धन्दे का वक़्त होता है। हज़रत अनस (रज़ि.) ने अक़्वमु क़ीला को अस्वबु क़ीला पढ़ा, तो लोगों ने कहा, हम तो अक़्वमु पढ़ते हैं। आपने फ़रमाया, अक़्वमु, अस्वबु, अह्याउ और इन जैसे सब अल्फ़ाज़ हम मआना हैं। फिर फ़रमाता है दिन में तुझे बहुत फ़राग़त है, नींद कर सकते हो, सो और बैठ सकते हो, राहत हासिल कर सकते हो, नवाफ़िल बकसरत अदा कर सकते हो, अपने दुनियवी काम-काज पूरे कर सकते हो। फिर रात को आख़िरत के काम के लिये ख़ास कर लो। इस बिना पर ये हुक्म उस वक़्त था जब रात की नमाज़ फ़र्ज़ थी। फिर अल्लाह तबारक व तआला ने अपने बन्दों पर एहसान किया और बतौरे तख़्फ़ीफ़ के इसमें कमी कर दी और फ़रमाया थोड़ी सी रात क़ियाम करो। इस फ़रमान के बाद हज़रत अब्दुर्रहमान बिन ज़ैद बिन असलम (रह.) ने इन्न रब्बक से फ़क़्रऊ मा तयस्सर मिन्हु तक पढ़ा और आयत व मिनल्लैलि की भी तिलावत की। (अत्तबरी : 23/683) आपका ये क़ौल है भी ठीक।

मुस्नद अहमद में है कि हज़रत सईद बिन हिशाम (रह.) ने अपनी बीवी को तलाक़ दे दी और मदीना की तरफ़ चले ताकि वहाँ के मकानात बेच डालें और उनकी क़ीमत से हथियार वग़ैरह ख़रीदकर जिहाद में जायें और रोमियों से लड़ते रहें। यहाँ तक कि या तो रोम फ़तह हो या शहादत नसीब हो। मदीना शरीफ़ में अपनी क़ौम वालों से मिले और अपना इरादा ज़ाहिर किया तो उन्होंने कहा, सुनो रसूलुल्लाह (ﷺ) की हयात में आप ही की क़ौम में से छ: शख़्सों ने यही इरादा किया था कि औरतों को तलाक़ें दे दें मकानात वग़ैरह बेच डालें और अल्लाह की राह में खड़े हो जायें। हुज़ूर (ﷺ) को जब ये मालूम हुआ तो आप (ﷺ) ने उनसे फ़रमाया, 'क्या जिस तरह मैं करता हूँ उस तरह करने में तुम्हारे लिये अच्छाई नहीं है? ख़बरदार ऐसा न करना! अपने इरादे से बाज़ आ जाओ।' ये हदीस़ सुनकर हज़रत सईद (रह.) ने भी अपना इरादा तर्क कर दिया और वहीं उसी जमाअत से कहा कि तुम गवाह रहना कि मैंने अपनी बीवी से रुजूअ कर लिया। अब हज़रत सईद (रह.) चले गये फिर जब उस जमाअत से मुलाक़ात हुई तो कहा कि यहाँ से जाने के बाद मैं हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) के पास गया और उनसे आँहज़रत (ﷺ) के वित्र पढ़ने की कैफ़ियत पूछी तो उन्होंने कहा कि इस मसले को सबसे ज़्यादा बेहतर तौर पर हज़रत आइशा (रज़ि.) बतला सकती हैं तुम वहीं जाओ और उन ही से पूछो और उनसे जो सुनो वो ज़रा मुझसे कह जाना। मैं हज़रत हकीम बिन अफ़लह (रज़ि.) के पास गया और उनसे मैंने कहा कि तुम मुझे उम्मुल मोमिनीन की ख़िदमत में ले चलो। उन्होंने फ़रमाया कि मैं वहाँ नहीं जाऊँगा इसलिये कि मैंने उन्हें मशवरा दिया कि उन दोनों आपस में लड़ने वाली जमाअतों यानी हज़रत अली (रज़ि.)

और उनके मुक़ाबलों के बारे में आप कुछ दख़ल न दीजिये। लेकिन उन्होंने न माना और दख़ल दिया। मैंने उन्हें क़सम दी और कहा कि नहीं आप मुझे ज़रूर वहाँ ले चलिये। ख़ैर बमुश्किले तमाम वो राज़ी हो गये और मैं उनके साथ गया। उम्मुल मोमिनीन (रज़ि.) ने हज़रत हकीम (रज़ि.) की आवाज़ पहचान ली और फ़रमाया, क्या हकीम है? जवाब दिया गया हाँ! मैं हकीम बिन अफ़लह हूँ। पूछा, तुम्हारे साथ कौन हैं? कहा, सईद बिन हिशाम (रह.)। पूछा, हिशाम कौन? आ़मिर के लड़के? कहा, हाँ! आ़मिर के लड़के। तो हज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने हज़रत आ़मिर (रज़ि.) के लिये दुआ़ए रहमत की और फ़रमाया, आ़मिर बहुत अच्छे आदमी थे अल्लाह तआ़ला उन पर रहम करे। मैंने अ़र्ज़ किया, उम्मुल मोमिनीन! मुझे बतलाइये कि रसूलुल्लाह (ﷺ) के अख़्लाक़ मुबारक क्या थे? आपने फ़रमाया, क्या तुम क़ुरआन नहीं पढ़ते? मैंने कहा, क्यों नहीं। फ़रमाया, बस हुज़ूर (ﷺ) का ख़ल्क़ क़ुरआन था। अब मैंने इजाज़त माँगने का क़सद किया, लेकिन फ़ौरन ही याद आ गया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) की रात की नमाज़ का हाल भी पूछ लूँ। इस सवाल के जवाब में उन्होंने फ़रमाया, क्या तुमने सूरह मुज़्ज़म्मिल नहीं पढ़ी? मैंने कहा, हाँ! पढ़ी है। फ़रमाया, सुनो! इस सूरत के अव्वल हिस्से में क़ियामुल्लैल फ़र्ज़ हुआ और साल भर तक हुज़ूर (ﷺ) और आपके अस्हाब तहज्जुद की नमाज़ बतौर फ़र्ज़िय्यत के अदा करते रहे यहाँ तक कि क़दमों पर वरम आ गया। बारह माह के बाद इस सूरत के ख़ातमे की आयतें उतरीं और अल्लाह तआ़ला ने तख़्फ़ीफ़ कर दी, फ़र्ज़िय्यत उठ गई और नफ़लियत बाक़ी रह गई। मैंने फिर उठने का इरादा किया, लेकिन ख़्याल आया कि वित्र का मसला भी पूछ लूँ। तो मैंने कहा, उम्मुल मोमिनीन! हुज़ूर (ﷺ) के वित्र पढ़ने की कैफ़ियत से भी आगाह फ़रमाइये? आपने फ़रमाया, हाँ, सुनो! हम आप (ﷺ) की मिस्वाक, वुज़ू का पानी वग़ैरह तैयार करके एक तरफ़ रख दिया करते थे, जब भी अल्लाह तआ़ला चाहता और आप (ﷺ) की आँख खुलती, उठते, मिस्वाक करते, वुज़ू करते और आठ रकअ़तें पढ़ते बीच में तशह्हुद में बिल्कुल न बैठते आठवीं रात पूरी करके आप (ﷺ) अत्तहिय्यात में बैठते, अल्लाह तबारक व तआ़ला का ज़िक्र करते, दुआ़ करते और ज़ोर से सलाम फैरते कि हम भी सुन लें। फिर बैठे ही बैठे दो रकअ़तें और अदा करते (और एक वित्र पढ़ते) बेटा! ये सब मिलकर ग्यारह रकअ़तें हुईं, फिर जब आप (ﷺ) उ़म्र रसीदा हो गये और बदन भारी हो गया तो आप (ﷺ) ने सात वित्र पढ़े, फिर सलाम फैरने के बाद बैठकर दो रकअ़तें अदा कीं, बस बेटा ये नौ रकअ़तें हुईं और हुज़ूर (ﷺ) की आ़दते मुबारक थी कि जब किसी नमाज़ को पढ़ते तो उस पर मुदावमत करते। हाँ अगर किसी शुग़्ल या नींद या दुख-तकलीफ़ और बीमारी की वजह से रात को नमाज़ न पढ़ सकते तो दिन को बारह रकअ़त अदा फ़रमा लिया करते। मैं नहीं जानती कि किसी एक रात में रसूलुल्लाह (ﷺ) ने पूरा क़ुरआन सुबह तक पढ़ा हो और न रमज़ान के सिवा किसी और महीने के पूरे रोज़े रखे हों। अब मैं उम्मुल मोमिनीन (रज़ि.) से रुख़्सत होकर हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) के पास आया और वहाँ के तमाम सवाल-जवाब दोहराये। आपने सब की तस्दीक़ की और फ़रमाया, अगर मेरी भी आमद व रफ़्त उनके पास होती तो जाकर ख़ुद अपने कानों से सुन आता।' (अहमद : 6/53-54, सहीह मुस्लिम, किताब सलातुल मुसाफ़िरीन, बाब जामिअ़ सलातुल्लैलि व मन ना-म अ़न्हु औ मरिज़ : 746, अबू दाऊद : 1342)

इब्ने जरीर में है कि हज़रत आइशा (रज़ि.) फ़रमाती हैं कि मैं नबी (ﷺ) के लिये बोरिया रख दिया करती जिस पर आप (ﷺ) तहज्जुद की नमाज़ अदा फ़रमा लिया करते। लोगों ने कहीं ये ख़बर सुन ली और रात की नमाज़ में हुज़ूर (ﷺ) की इक़्तिदा करने के लिये वो भी आ गये। हुज़ूर (ﷺ) ग़ज़बनाक होकर बाहर निकले चूंकि आपको उम्मत पर शफ़क़त व रहमत थी और साथ ही डर था कि ऐसा न हो कि ये नमाज़ फ़र्ज़ हो जाये, लिहाज़ा आप (ﷺ) उनसे फ़रमाने लगे, 'लोगो! उन ही आमाल की तकलीफ़ उठाओ जिनकी तुममें ताक़त हो, अल्लाह तआला सवाब देने से नहीं थकेगा, अल्बत्ता तुम अमल करने से थक जाओगे, सबसे बेहतर अमल वो है जिस पर मुदावमत हो सके और इंसान उसे निभा सके।' इधर क़ुरआन करीम में ये आयतें उतरीं और सहाबा (रज़ि.) ने क़ियामुल्लैल शुरू किया यहाँ तक कि रस्सियाँ बांधने लगे कि नींद न आ जाये, आठ महीने इसी तरह गुज़र गये। उनकी इस कोशिश को जो वो अल्लाह तआला की रज़ामन्दी की तलब में कर रहे थे, देखकर अल्लाह तआला ने भी उन पर रहम किया और उसे फ़र्ज़े इशा की तरफ़ लौटा दिया और क़ियामुल्लैल छोड़ दिया गया। ये रिवायत इब्ने अबी हातिम में भी है लेकिन इसका रावी मूसा बिन उबैदा रबज़ी ज़ईफ़ है। असल हदीस बग़ैर सूरह मुज़्ज़म्मिल के नाज़िल होने के ज़िक्र के सहीह में भी है। (सहीह मुस्लिम, किताब सलातुल मुसाफ़िरीन, बाब फ़ज़ीलतु अमलिद्दाइम मिन क़ियामिल्लैल वग़ैरिही : 782)

और इस हदीस के अल्फ़ाज़ की रवानी से तो ये पाया जाता है कि ये सूरत मदीना में नाज़िल हुई हालांकि दरअसल ये सूरत मक्का मुकर्रमा में उतरी है।

इसी तरह इस रिवायत में है कि आठ महीने के बाद इसकी आख़िरी आयतें नाज़िल हुईं। ये क़ौल भी ग़रीब है। सहीह वो है जो बहवाला मुस्नद पहले गुज़र चुका कि साल भर के बाद आख़िरी आयतें नाज़िल हुईं। हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) से भी इब्ने अबी हातिम में मन्क़ूल है कि सूरह मुज़्ज़म्मिल की शुरूआती आयतों के उतरने के बाद सहाबा किराम (रज़ि.) मिस्ल रमज़ानुल मुबारक के क़ियाम करते रहे और इस सूरत के अव्वल आख़िर आयतों के उतरने में तक़रीबन साल भर का फ़ासला था। हज़रत अबू उसामा (रज़ि.) से भी इब्ने जरीर में इस तरह मरवी है। हज़रत अबू अब्दुर्रहमान (रह.) फ़रमाते हैं कि शुरूआती आयतों के उतरने के बाद सहाबा किराम (रज़ि.) ने साल भर तक क़ियाम किया यहाँ तक कि उनके क़दम और पिण्डलियाँ वरमा गईं, फिर फ़क़्रऊ मा तयस्सर मिन्हु नाज़िल हुई और लोगों ने राहत पाई। (अत्तबरी : 23/679)

हसन बसरी और सुद्दी (रह.) का भी यही क़ौल है। (अत्तबरी : 23/280)

इब्ने अबी हातिम में बरिवायत हज़रत आइशा (रज़ि.) सोलह महीने की मुद्दत मरवी है। हज़रत क़तादा (रह.) फ़रमाते हैं कि एक साल या दो साल तक क़ियाम करते रहे, क़दम और पिण्डलियाँ सूज गईं फिर आख़िरी सूरत की आयतें उतरी और तख़्फ़ीफ़ हो गई। हज़रत सईद बिन जुबैर (रह.) दस साल की मुद्दत बताते हैं। (इब्ने जरीर)

हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) फ़रमाते हैं कि पहली आयत के हुक्म के मुताबिक़ ईमानदारों ने

क़ियामुल्लैल शुरू किया लेकिन बड़ी मशक़्क़त पड़ती थी। फिर अल्लाह तआला ने रहम फ़रमाया और अ़लिम अन सयकूनु से मा तयस्सर मिन्हु तक की आयतें नाज़िल फ़रमाकर वुस्अत कर दी और तंगी न रखी। (अत्तबरी : 23/280)

फ़लिल्लाहिल हम्द! फिर फ़रमान है कि अपने रब के नाम का ज़िक्र करता रह और उसकी इबादत के लिये फ़ारिग़ हो जा! यानी उमूरे दुनिया से फ़ारिग़ होकर दिलजमई और इत्मीनान के साथ बकसरत उसका ज़िक्र कर! उसकी तरफ़ माइल और सरासर राग़िब हो जा! जैसे और जगह है, (فَإِذَا فَرَغْتَ فَانْصَبْ ۝ وَإِلَىٰ رَبِّكَ فَارْغَبْ ۝) (सूरह इन्शिराह 94 : 7) 'जब अपने शुग़्ल से फ़ारिग़ हो तो हमारी इबादत मेहनत से बजा लाओ।' इख़्लास, फ़ारिग़ुल बाली, कोशिश, मेहनत, दिल लगी और यकसूई से अल्लाह तआला की तरफ़ झुक जाओ।

एक हदीस़ में है कि हुज़ूर (ﷺ) ने तबत्तुल (कुँवारा रहने) से मना फ़रमाया। (सहीह : तिर्मिज़ी, किताबुन्निकाह, बाब मा जाअ फ़िन्नही अनित्तबत्तुल : 1082, नसाई : 3216, इब्ने माजह : 1848)

यानी बाल-बच्चे और दुनिया को छोड़ देने से। यहाँ मतलब ये है कि अ़लाइक़े दुनियवी से कटकर अल्लाह तआला की इबादत में तवज्जह और इन्हिमाक का वक़्त भी ज़रूर निकाला करो। वो मालिक है वो मुतसर्रिफ़ है मश्रिक़-मग़रिब सब उसी के क़ब्ज़े में है उसके सिवा इबादत के लायक़ कोई नहीं। तू जिस तरह सिर्फ़ उसी अल्लाह तआला की इबादत करता है उसी तरह सिर्फ़ उसी पर भरोसा रख। जैसे और आयत में है, (فَاعْبُدْهُ وَتَوَكَّلْ عَلَيْهِ) 'उसी की इबादत करो और उसी पर भरोसा रख।' (सूरह हूद 11 : 123) यही मज़्मून (إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِينُ ۝) (सूरह फ़ातिहा 1 : 5) में भी है। इस मआना की और भी बहुत सी आयतें हैं कि इबादत, इताअत, तवक्कुल और भरोसे के लायक़ एक उसी की पाक ज़ात है।

***

وَاصْبِرْ عَلَىٰ مَا يَقُولُونَ وَاهْجُرْهُمْ هَجْرًا جَمِيلًا ۝١٠ وَذَرْنِي وَالْمُكَذِّبِينَ أُولِي
النَّعْمَةِ وَمَهِّلْهُمْ قَلِيلًا ۝١١ إِنَّ لَدَيْنَا أَنكَالًا وَجَحِيمًا ۝١٢ وَطَعَامًا ذَا غُصَّةٍ وَعَذَابًا
أَلِيمًا ۝١٣ يَوْمَ تَرْجُفُ الْأَرْضُ وَالْجِبَالُ وَكَانَتِ الْجِبَالُ كَثِيبًا مَّهِيلًا ۝١٤ إِنَّا
أَرْسَلْنَا إِلَيْكُمْ رَسُولًا شَاهِدًا عَلَيْكُمْ كَمَا أَرْسَلْنَا إِلَىٰ فِرْعَوْنَ رَسُولًا ۝١٥

فَعَصٰى فِرْعَوْنُ الرَّسُوْلَ فَاَخَذْنٰهُ اَخْذًا وَّبِيْلًا ﴿١٦﴾ فَكَيْفَ تَتَّقُوْنَ اِنْ كَفَرْتُمْ يَوْمًا

يَّجْعَلُ الْوِلْدَانَ شِيْبًا ﴿١٧﴾ السَّمَآءُ مُنْفَطِرٌۢ بِهٖ ۚ كَانَ وَعْدُهٗ مَفْعُوْلًا ﴿١٨﴾

तर्जुमा : ''और जो कुछ वो कहें तू सहता रह और उन्हें अच्छी तरह छोड़े रख। (10) और मुझे और उन झुठलाने वाले आसूदा हाल लोगों को छोड़ दे और उन्हें ज़रा सी मोहलत दे। (11) यक़ीनन हमारे यहाँ सख़्त बेड़ियाँ हैं और सुलगती हुई जहन्नम है। (12) और हलक़ में अटकने वाला खाना है और दर्द देने वाला अ़ज़ाब है। (13) जिस दिन ज़मीन और पहाड़ थरथरा जायेंगे और पहाड़ मिस्ल भुरभुरी रेत के टीलों के हो जायेंगे। (14) हमने तो तुम्हारी तरफ़ भी तुम पर गवाही देने वाला रसूल भेज दिया जैसे कि हमने फ़िरऔन के पास रसूल भेजा था। (15) फ़िरऔन ने उस रसूल की नाफ़रमानी की जिस की बिना पर हमने उसे सख़्त वबाल की पकड़ में लिया। (16) तुम अगर काफ़िर रहे तो उस दिन कैसे पनाह पाओगे जो दिन बच्चों को बूढ़ा कर देगा। (17) जिस दिन आसमान फट जायेगा अल्लाह तआला का ये वादा होकर ही रहने वाला है।'' (18)

मुन्किरों के लिये अ़ज़ाब (आयत : 10-18) : अल्लाह तबारक व तआला अपने नबी को कुफ़्फ़ार की तअ़न आमेज़ बातों पर सब्र करने की हिदायत करता है और फ़रमाता है कि उन्हें उनके हाल पर बग़ैर डांट-डपट के ही छोड़ दे, मैं ख़ुद उनसे निमट लूँगा। मेरे ग़ज़ब और गुस्से के वक़्त, देख लूँगा कि कैसे ये लोग निजात पाते हैं। हाँ उनके मालदार, ख़ुशहाल लोगों को जो बेफ़िक्रे हैं और तुझे सताने के लिये बातें बना रहे हैं, जिन पर दोहरे हुक़ूक़ हैं माल के और जान के और ये उनमें से एक भी अदा नहीं करते, तो उनसे बेताल्लुक़ हो जा, फिर देख कि मैं उनके साथ क्या करता हूँ? थोड़ी देर दुनिया में तो चाहे ये फ़ायदा उठा लें, मगर अन्जामकार अ़ज़ाबों में फंसेंगे और अ़ज़ाब भी कौनसे?

सख़्त क़ैद व बन्द के और बदतरीन भड़कती हुई न बुझने वाली और न कम होने वाली आग के और उस खाने के जो हलक़ में जाकर अटक जायेगा, न निगल सकेंगे, न उगल सकेंगे और भी तरह-तरह के अल्मनाक अ़ज़ाब होंगे फिर वो वक़्त भी होगा, जब ज़मीनों में और पहाड़ों पर ज़ल्ज़ला पड़ा हुआ होगा और सख़्त और बड़ी चट्टानों वाले पहाड़ आपस में टकरा-टकरा कर चूर-चूर हो गये होंगे, जैसे भुरभुरी रेत के बिखरे हुए ज़र्रे हों जिन्हें हवा इधर से उधर ले जायेगी और नामो-निशान तक मिटा देगी और ज़मीन में एक चटियल साफ़ मैदान की तरह रह जायेगी जिसमें कहीं ऊँच-नीच नज़र न आयेगी।

कुफ़्फ़ार की गिरफ़्त : फिर फ़रमाता है कि ऐ लोगो! और ख़ुसूसन ऐ काफ़िरो! हमने तुम पर गवाही देने वाला, अपना सादिक़ रसूल तुममें भेज दिया है जैसे कि फ़िरऔन के पास हमने अपने अहकाम के पहुँचा देने के

लिये अपने रसूल को भेजा था उसने जब उस रसूल की न मानी तो तुम जानते हो कि हमने उसे बुरी तरह बर्बाद किया और सख़्ती से पकड़ लिया। इसी तरह याद रखो! अगर इस नबी की तुमने भी न मानी तो तुम्हारी भी ख़ैर नहीं, अ़ज़ाबे इलाही तुम पर भी उतर आयेंगे और तहस-नहस कर दिये जाओगे, क्योंकि इनके झुठलाने का वबाल भी और वबालों से बड़ा है। इस के बाद की आयत के दो मआ़ना हैं। एक तो ये कि अगर तुमने कुफ़्र किया तो बताओ तो सही कि उस दिन के अ़ज़ाबों से कैसे निजात हासिल करोगे? जिस दिन की हैबत ख़ौफ़ और डर, बच्चों को बूढ़ा कर देगा और दूसरे मआ़ना ये है कि अगर तुमने इतने बड़े हौलनाक दिन का भी कुफ़्र किया और उसके बाद भी मुन्किर रहे तो तुम्हें तक़वा और अल्लाह तआ़ला का डर कैसे हासिल होगा? गो ये दोनों मआ़ना निहायत उ़म्दा हैं लेकिन अव्वल मआ़ना औला (बेहतर) हैं, वल्लाहु आ़लम!

तबरानी में है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने इस आयत की तिलावत की और फ़रमाया, 'ये क़यामत का दिन है जिस दिन अल्लाह तआ़ला हज़रत आदम (अ़लै.) से फ़रमायेगा, उठो! और अपनी औलाद में से जहन्नम वालों को अलग करो। वो पूछेंगे, अल्लाह तआ़ला कितनी तादाद में से कितने? हुक्म होगा कि हर हज़ार में से नौ सौ निनान्वे।' ये सुनते ही मुसलमानों के तो होश उड़ गये और घबरा गये। हुज़ूर (ﷺ) भी उनके चेहरे देखकर समझ गये और बतौरे तशफ़्फ़ी के फ़रमाया, 'सुनो! बनू आदम बहुत से हैं। याजूज व माजूज भी औलादे आदम में से हैं जिनमें से एक-एक अपने पीछे ख़ास अपनी सुलबी औलाद एक-एक हज़ार छोड़ कर जाता है। पस उनमें और उन जैसों में मिलकर जहन्नम वालों की ये तादाद हो जायेगी और जन्नत तुम्हारे लिये और तुम जन्नत के लिये हो जाओगे।' (ज़ईफ़ : मुअ़जम अल्कबीर : 12034, मज्मउ़ज़्ज़वाइद : 7/133, इसकी सनद में उ़समान बिन अ़ता ख़ुरासानी ज़ईफ़ रावी है देखिये मीज़ानुल ऐतिदाल : 3/48, हदीस़ नम्बर : 5540, व अब्वा ज़ईफ़ मुदल्लस मिनल मर्तबतिस़्स़ालिस़ा) ये हदीस़ ग़रीब है और सूरह हज की तफ़्सीर के शुरू में इस जैसी अहादीस़ का तज़्किरा गुज़र चुका है।

उस दिन की हैबत और दहशत के मारे आसमान भी फट जायेगा। कुछ ने ज़मीर का मरजअ़ अल्लाह तआ़ला की तरफ़ किया है, लेकिन ये क़वी नहीं। इसलिये कि यहाँ ज़िक्र ही नहीं। उस दिन का वादा यक़ीनन सच है और होकर ही रहेगा उस दिन के आने में कोई शक नहीं।

***

إِنَّ هَٰذِهِۦ تَذْكِرَةٌ ۖ فَمَن شَآءَ ٱتَّخَذَ إِلَىٰ رَبِّهِۦ سَبِيلًا ﴿١٩﴾ إِنَّ رَبَّكَ يَعْلَمُ أَنَّكَ تَقُومُ
أَدْنَىٰ مِن ثُلُثَىِ ٱلَّيْلِ وَنِصْفَهُۥ وَثُلُثَهُۥ وَطَآئِفَةٌ مِّنَ ٱلَّذِينَ مَعَكَ ۚ وَٱللَّهُ يُقَدِّرُ
ٱلَّيْلَ وَٱلنَّهَارَ ۚ عَلِمَ أَن لَّن تُحْصُوهُ فَتَابَ عَلَيْكُمْ ۖ فَٱقْرَءُوا۟ مَا تَيَسَّرَ مِنَ

الْقُرْاٰنِ ؕ عَلِمَ اَنْ سَيَكُوْنُ مِنْكُمْ مَّرْضٰى ۙ وَاٰخَرُوْنَ يَضْرِبُوْنَ فِي الْاَرْضِ
يَبْتَغُوْنَ مِنْ فَضْلِ اللّٰهِ ۙ وَاٰخَرُوْنَ يُقَاتِلُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۖ فَاقْرَءُوْا مَا تَيَسَّرَ
مِنْهُ ۙ وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ وَاَقْرِضُوا اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا ؕ وَمَا
تُقَدِّمُوْا لِاَنْفُسِكُمْ مِّنْ خَيْرٍ تَجِدُوْهُ عِنْدَ اللّٰهِ هُوَ خَيْرًا وَّاَعْظَمَ اَجْرًا ؕ
وَاسْتَغْفِرُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٢٠﴾

बेशक ये नसीहत है पस जो चाहे अपने रब की तरफ़ राह इख़्तियार करे। (19) आपका रब बख़ुबी जानता है कि आप और आपके साथ के लोगों की एक जमाअत क़रीब दो तिहाई रात के और आधी रात के और एक तिहाई रात के तहज्जुद पढ़ती है और रात दिन का पूरा अंदाज़ा अल्लाह तआला को ही है, वो (खुब) जानता है कि तुम उसे हरगिज़ ना निभा सकोगे पस उसने तुम पर मेहरबानी की लिहाज़ा जितना क़ुरआन पढ़ना तुम्हारे लिए आसान हो उतना ही पढ़ो, वो जानता है कि तुममें बअ़ज़ बीमार भी होंगे, बअ़ज़ दूसरे ज़मीन में चल-फिर कर अल्लाह तआला का फ़ज़ल (यानी रोज़ी भी) तलाश करेंगे और कुछ लोग अल्लाह तआला की राह में जिहाद भी करेंगे, सो तुम बा आसानी जितना क़ुरआन पढ़ सको पढ़ो और नमाज़ की पाबन्दी रखो और ज़कात देते रहा करो और अल्लाह तआला को अच्छा क़र्ज़ दो। और जो नेकी तुम अपने लिये आगे भेजोगे उसे अल्लाह तआला के यहाँ बेहतर से बेहतर और सवाब में बहुत ज़्यादा पाओगे अल्लाह तआला से माफ़ी मांगते रहो। यक़ीनन अल्लाह तआला बख़्शने वाला मेहरबान है। (20)

(आयत : 19-20) : अल्लाह तआला फ़रमाता है कि ये सूरत अक़्लमन्दों के लिये सरासर नसीहत व इबरत है जो भी तालिबे हिदायत हो, मर्ज़ी मौला से हिदायत का रास्ता पा लेगा और अपने रब की तरफ़ पहुँच जाने का ज़रिया हासिल कर लेगा। जैसे दूसरी सूरत में फ़रमाया, (وَمَا تَشَآءُوْنَ اِلَّآ اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ﴿٣٠﴾) (सूरह दहर 76 : 30) 'तुम्हारी चाहत काम नहीं आती वही होता है जो अल्लाह तआला का चाहा हुआ हो, सहीह इल्म वाला पूरी हिक्मत वाला अल्लाह तआला ही है।' फिर फ़रमाता है कि ऐ नबी! आपका और आप (ﷺ) के अस्हाब की एक जमाअत का कभी दो तिहाई रात तक क़ियामुल्लैल में मशग़ूल रहना, कभी आधी रात इसी में गुज़ारना, कभी तिहाई रात तक तहज्जुद पढ़ना अल्लाह तआला को बख़ूबी

मालूम है, गो तुम्हारा मक़सद ठीक इस वक़्त को पूरा करना नहीं होता और है भी वो मुश्किल काम क्योंकि रात दिन का सहीह अन्दाज़ा अल्लाह ही को है, कभी दोनों बराबर होते हैं, कभी रात छोटी दिन बड़ा, कभी दिन छोटा और रात बड़ी। अल्लाह तआला जानता है कि इसको निबाहने की ताक़त तुममें नहीं। तो अब रात की नमाज़ उतनी ही पढ़ो जितनी तुम बआसानी पढ़ सको, कोई वक़्त मुक़र्रर नहीं कि फ़रज़न (ज़रूरी तौर पर) इतना वक़्त लगाना ही होगा।

यहाँ सलात की ताबीर क़िरअत से की है जैसे सूरह सुब्हान में है, (وَلَا تَجْهَرْ بِصَلَاتِكَ) (सूरह बनी इस्राईल 17 : 110) 'अपनी क़िरअत न तो बुलंद कर न बिल्कुल पस्त।'

फ़ातिहा ख़ल्फ़ुल इमाम का मसला : इमाम अबू हनीफ़ा (रह.) के अस्हाब ने इस आयत से इस्तिदलाल करके ये मसला निकाला है कि नमाज़ में सूरह फ़ातिहा ही का पढ़ना मुतअय्यन नहीं, इसे पढ़े ख़्वाह और कहीं से पढ़ ले गो एक ही आयत पढ़ना काफ़ी है और फिर इस मसले की मज़बूती उस हदीस़ से की है जिसमें है कि बहुत जल्दी-जल्दी नमाज़ अदा करने वाले को हुज़ूर (ﷺ) ने फ़रमाया था, 'फिर पढ़ जो आसान हो तेरे साथ क़ुरआन से।' (सहीह बुख़ारी, किताबुल अज़ान, बाब वुजूबुल क़िरअत लिल्इमाम वल्मामूम फ़िस्सलाति कुल्लिहा : 757, सहीह मुस्लिम : 397)

और जुम्हूर ने उन्हें ये जवाब दिया कि बुख़ारी व मुस्लिम की हज़रत उबादा बिन सामित (रज़ि.) वाली हदीस़ में आ चुका है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'नमाज़ नहीं है, मगर ये कि तू सूरह फ़ातिहा पढ़े।' (सहीह बुख़ारी, हवाला साबिक़ : 756, सहीह मुस्लिम : 394)

और सहीह मुस्लिम में बरिवायत हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) मरवी है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'हर वो नमाज़ जिसमें सूरह फ़ातिहा न पढ़ी जाये वो बिल्कुल अधूरी, महज़ नाकारा, नाक़िस और नातमाम है।' (सहीह मुस्लिम, किताबुस्सलात, बाब वुजूबु क़िरअतिल फ़ातिहति फ़ी कुल्लि रकअत : 395, अहमद : 2/241, इब्ने हिब्बान : 1788)

सहीह इब्ने ख़ुज़ैमा में भी इन ही की रिवायत से मरवी है कि हुज़ूर (ﷺ) ने फ़रमाया, 'नमाज़ नहीं होती उस शख़्स की जो सूरह फ़ातिहा न पढ़े।' (सहीह : इब्ने ख़ुज़ैमा : 490, अहमद : 2/457, इब्ने हिब्बान : 1789, मवारिदुज़्ज़म्आन : 457) (पस ठीक क़ौल जुम्हूर का ही है कि हर नमाज़ की हर-हर रकअत में सूरह फ़ातिहा का पढ़ना लाज़िमी और मुतअय्यन है।)

फिर फ़रमाता है कि अल्लाह तआला को मालूम है कि इस उम्मत में उज़्र वाले लोग भी हैं जो क़ियामुल्लैल के तर्क पर मअज़ूर हैं, जैसे बीमार कि जिन्हें इसकी ताक़त नहीं, मुसाफ़िर की रोज़ी की तलाश में इधर-उधर जा आ रहे हैं, मुजाहिद जो अहमतर शुग़्ल में मशग़ूल हैं। ये आयत बल्कि ये पूरी सूरत मक्की है मक्का में नाज़िल हुई। उस वक़्त जिहाद नहीं था बल्कि मुसलमान निहायत पस्त हालत में थे। फिर ग़ैब की ये

ख़बर देना और इसी तरह ज़ुहूर में भी आना कि मुसलमानों को जिहाद में पूरी मशग़ूली हुई, ये नुबूवत की आला और बेहतरीन दलील है। तो उन उज़्रों के बाइस़ तुम्हें रुख़्सत दी जाती है कि जितना क़ियाम तुमसे बआसानी किया जा सके कर लिया करो। हज़रत अबू रजा मुहम्मद ने हसन (रह.) से पूछा, ऐ अबू सईद! उस शख़्स के बारे में आप क्या फ़रमाते हैं जो पूरे क़ुरआन का हाफ़िज़ है लेकिन तहज्जुद नहीं पढ़ता सिर्फ़ नमाज़े फ़र्ज़ पढ़ता है? आपने फ़रमाया, उसने क़ुरआन को तकिया बना लिया उस पर अल्लाह तआ़ला की लानत हो। अल्लाह तआ़ला ने अपने नेक ग़ुलाम के लिये फ़रमाया कि वो हमारे इल्म को जानने वाला था और फ़रमाया, तुम वो सिखाये गये हो जिसे न तुम जानते थे न तुम्हारे बाप-दादा। मैंने कहा, अबू सईद! अल्लाह तआ़ला तो फ़रमाता है कि जो क़ुरआन आसानी से तुम पढ़ सको पढ़ो। फ़रमाया, हाँ! ठीक तो है पाँच आयतें ही पढ़ लो। पस बज़ाहिर मालूम होता है कि हाफ़िज़े क़ुरआन का रात की नमाज़ में कुछ न कुछ क़ियाम करना इमाम हसन बसरी (रह.) के नज़दीक हक़ व वाजिब था।

एक हदीस़ भी इस पर दलालत करती है जिसमें है कि हुज़ूर (ﷺ) से उस शख़्स के बारे में सवाल हुआ जो सुबह तक सोया रहता है। फ़रमाया, 'ये वो शख़्स है जिसके कान में शैतान पेशाब कर जाता है।' (सहीह बुख़ारी, किताब बदउल ख़ल्क़, बाब सिफ़तु इब्लीस व जुनूदिही : 3270, सहीह मुस्लिम : 7710)

इसका एक मतलब तो ये बयान किया गया है कि इससे मुराद वो शख़्स है जो इशा के फ़र्ज़ भी न पढ़े और ये भी कहा गया है कि जो रात को नफ़ली क़ियाम न करे। सुनन की हदीस़ में है, ऐ क़ुरआन वालो! वित्र पढ़ा करो। (ज़ईफ़ : अबू दाऊद, किताबुल वित्र, बाब इस्तिहबाबुल वित्र : 1416, अबू इस्हाक़ मुदल्लस रावी है और तसरीह बिस्सिमाअ स़ाबित नहीं। तिर्मिज़ी : 453, नसाई : 1676, इब्ने माजह : 1169)

दूसरी रिवायत में है कि जो वित्र न पढ़े वो हममें से नहीं। (ज़ईफ़ : अबू दाऊद, किताबुल वित्र, बाब फ़ीमल्लम युअ़तिर : 1419, अबू मुनीब अल्अतकी की मुन्कर रिवायात में से ये एक है। अहमद : 2/443)

हसन बसरी (रह.) के क़ौल से भी ज़्यादा ग़रीब क़ौल अबू बकर इब्ने अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ हम्बली (रह.) का है जो कहते हैं कि रमज़ान के महीने का क़ियाम फ़र्ज़ है, वल्लाहु आलम!

(ये याद रहे कि सहीह मस्लक तो यही है कि तहज्जुद की नमाज़ न तो रमज़ान में वाजिब है न ग़ैर रमज़ान में। रमज़ान मुबारक की बाबत भी हदीस़ में साफ़ आ चुका है कि व क़ियामु लैलतिन् ततव्वुअन यानी अल्लाह तआ़ला ने इसके क़ियाम को नफ़ली क़रार दिया है, वग़ैरह। मुतर्जिम!)

तबरानी की हदीस़ में इस आयत की तफ़्सीर में मरफ़ूअन मरवी है कि गो सौ ही आयतें हों। लेकिन ये हदीस़ बहुत ग़रीब है सिर्फ़ मुअजम तबरानी में ही मैंने इसे देखा है। फिर इरशाद है कि फ़र्ज़ नमाज़ों की हिफ़ाज़त करो और फ़र्ज़ ज़कात की अदायगी किया करो। ये आयत उन हज़रात की दलील है जो फ़रमाते हैं कि फ़र्ज़िय्यते ज़कात का हुक्म मक्का में ही नाज़िल हो चुका था, हाँ कितनी निकाली जाये? निसाब क्या है? वग़ैरह ये सब

मदीना में बयान हुआ, वल्लाहु आलम!

हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.), इक्रिमा, मुजाहिद, हसन, क़तादा (रह.) वग़ैरह सलफ़ का फ़रमान है कि इस आयत ने इससे पहले के हुक्म रात के क़ियाम को मन्सूख़ कर दिया है। इन दोनों हुक्मों के दरम्यान किस क़द्र मुद्दत थी? इसमें जो इख़्तिलाफ़ है उसका बयान ऊपर गुज़र चुका। बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस़ में है हुज़ूर (ﷺ) ने एक शख़्स से फ़रमाया, 'पाँच नमाज़ें दिन-रात में फ़र्ज़ हैं।' उसने पूछा, इसके सिवा भी कोई नमाज़ मुझ पर फ़र्ज़ है? आपने फ़रमाया, 'बाक़ी सब नवाफ़िल हैं।' (सहीह बुख़ारी, किताबुल ईमान, बाब अज़्ज़कातु मिनल इस्लाम : 46, सहीह मुस्लिम : 11)

फ़ी सबीलिल्लाह ख़र्च करो : फिर फ़रमाता है कि अल्लाह तआला को अच्छा क़र्ज़ दो यानी राहे लिल्लाह सदक़ा ख़ैरात करते रहो जिस पर अल्लाह तआला तुम्हें बहुत बेहतर और आला और पूरा-पूरा बदला देगा। जैसे और जगह है, ऐसा कौन है जो अल्लाह तआला को क़र्ज़े हसना दे और अल्लाह तआला उसे बहुत कुछ बढ़ाये-चढ़ाये। तुम जो भी नेकियाँ करके भेजोगे वो तुम्हारे लिये उस चीज़ से जिसे तुम पीछे छोड़कर जाओगे बहुत ही बेहतर और अज्र व स़वाब में बहुत ही ज़्यादा है। अबू यअ़ला मूसिली की रिवायत में है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने अपने अस्हाब (रज़ि.) से एक मर्तबा पूछा, 'तुममें से कौन है जिसे अपने वारिस़ का माल अपने माल से ज़्यादा महबूब है?' उन्होंने कहा, हुज़ूर! हममें से तो एक भी ऐसा नहीं। आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'और सोच लो।' उन्होंने कहा, हुज़ूर (ﷺ) यही बात है। फ़रमाया, 'सुनो! तुम्हारा माल वो है जिसे तुम राहे लिल्लाह दे कर अपने लिये आगे भेज दो और जो छोड़ जाओगे वो तुम्हारा माल नहीं वो तो तुम्हारे वारिस़ों का माल है।' (सहीह बुख़ारी, किताबुर्रिक़ाक़, बाब मा क़द्दम मिम्मालिही फ़हुव लहू : 6442, अहमद : 1/382) ये हदीस़ नसाई में भी मरवी है।

फिर फ़रमान है कि ज़िक्रे इलाही बकस़रत किया करो और अपने तमाम कामों में इस्तिग़फ़ार किया करो, जो इस्तिग़फ़ार करे वो मग़्फ़िरत हासिल कर लेता है क्योंकि अल्लाह तआला मग़्फ़िरत करने वाला और मेहरबानियों वाला है।

अल्हम्दुलिल्लाह अल्लाह तआला के फ़ज़्ल व करम से सूरह मुज़म्मिल की तफ़्सीर ख़त्म हुई।

***

FLOW CHART

तरतीबी नक्श-ए-रब्त

MACRO-STRUCTURE

नज़्मे-जली

सूरह मुद्दस्सिर - 74

आयात : 56, मक्की, पैराग्राफ : 7

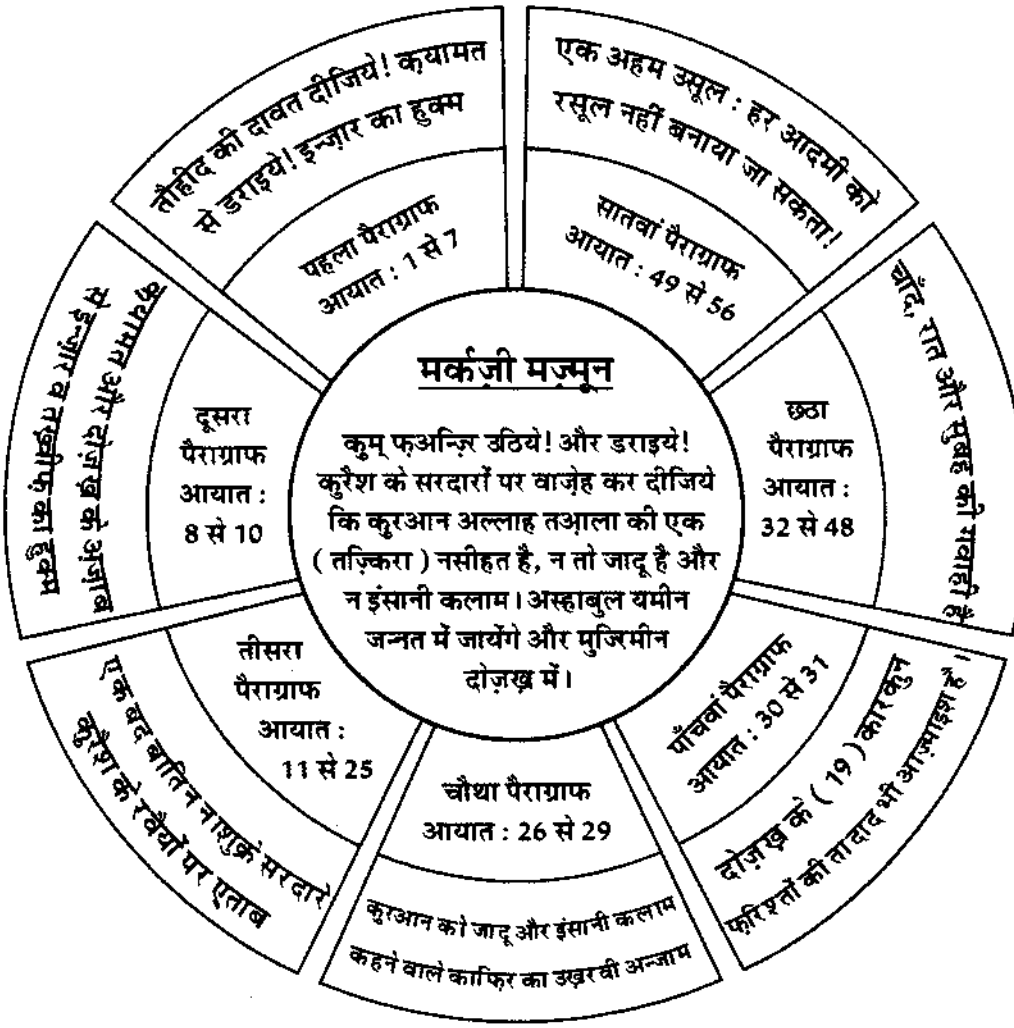

तफ़्सीर सूरह मुद्दस्सिर

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ○

तर्जुमा : "शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है।"

***

يَاۤيُّهَا الۡمُدَّثِّرُ ① قُمۡ فَاَنۡذِرۡ ② وَرَبَّكَ فَكَبِّرۡ ③ وَثِيَابَكَ فَطَهِّرۡ ④ وَالرُّجۡزَ فَاهۡجُرۡ
⑤ وَلَا تَمۡنُنۡ تَسۡتَكۡثِرُ ⑥ وَلِرَبِّكَ فَاصۡبِرۡ ⑦ فَاِذَا نُقِرَ فِى النَّاقُوۡرِ ⑧ فَذٰلِكَ
يَوۡمَئِذٍ يَّوۡمٌ عَسِيۡرٌ ⑨ عَلَى الۡكٰفِرِيۡنَ غَيۡرُ يَسِيۡرٍ ⑩

तर्जुमा : "ऐ कपड़ा ओढ़ने वाले! (1) खड़ा हो जा और आगाह कर दे। (2) और अपने रब ही की बड़ाइयाँ बयान कर। (3) अपने कपड़ों को पाक रखा कर। (4) नापाकी को छोड़ दे। (5) और एहसान करके ज़्यादती की ख़्वाहिश न कर। (6) और अपने रब की राह में सब्र कर। (7) पस जबकि सूर फूंका जायेगा। (8) उनका ये वक़्त एक सख़्त दिन होगा। (9) जो काफ़िरों पर आसान न होगा।" (10)

क़ुरआन की दूसरी वह्य (आयत : 1-10) : हज़रत जाबिर (रज़ि.) से सहीह बुख़ारी में मरवी है कि सबसे पहले क़ुरआन करीम की यही आयत याअय्युहल् मुद्दस्सिर नाज़िल हुई है। (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरतुल मुद्दस्सिर : 4922, सहीह मुस्लिम : 161)

लेकिन जुम्हूर का क़ौल ये है कि सबसे पहली वह्य इक़्रअ् बिस्मि रब्बिकल्लज़ी ख़लक़ की आयतें हैं। जैसे इसी सूरत की तफ़्सीर के मौक़े पर आयेगा, इन्शाअल्लाह! यहया बिन अबू कसीर (रह.) फ़रमाते हैं कि मैंने हज़रत अबू सलमा बिन अब्दुर्रहमान से सवाल किया कि सबसे पहले क़ुरआन करीम की कौनसी आयतें नाज़िल हुईं? तो फ़रमाया, याअय्युहल् मुद्दस्सिर मैंने कहा, लोग तो इक़्रअ् बिस्मि रब्बिकल्लज़ी ख़लक़ बतलाते हैं? तो आपने फ़रमाया, मैंने हज़रत जाबिर (रज़ि.) से पूछा था उन्होंने वही जवाब दिया जो मैंने तुम्हें

दिया और मैंने भी वही कहा जो तुमने मुझे कहा। उसके जवाब में हज़रत जाबिर (रज़ि.) ने फ़रमाया कि मैं तो तुमसे वही कहता हूँ जो हमसे रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया कि, 'मैंने हिरा में यादे इलाही की। जब मैं वहाँ से फ़ारिग़ हुआ और उतरा तो मैंने सुना कि गोया मुझे कोई आवाज़ दे रहा है। मैंने अपने आगे-पीछे, दायें-बायें देखा मगर कोई नज़र न आया तो मैंने सर उठाकर ऊपर को देखा और मुझे कुछ नज़र पड़ा। मैं ख़दीजा (रज़ि.) के पास आया और कहा, मुझे चादर ओढ़ा दो और मुझ पर ठण्डा पानी डालो। उन्होंने ऐसा ही किया और याअय्युहल् मुद्दस्सिर की आयतें उतरीं।' (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरतुल मुद्दस्सिर : 4922, सहीह मुस्लिम : 161)

सहीह बुख़ारी व सहीह मुस्लिम में है कि हुज़ूर (ﷺ) ने वह्य के रुक जाने की हदीस़ बयान फ़रमाते हुए कहा कि 'एक मर्तबा मैं चला जा रहा था कि नागहाँ (अचानक) आसमान की तरफ़ से मुझे सदा (आवाज़) सुनाई दी। मैंने निगाह उठाकर देखा कि जो फ़रिश्ता मेरे पास ग़ारे हिरा में आया था वो आसमान व ज़मीन के दरम्यान एक कुर्सी पर बैठा है मैं मारे डर और घबराहट के ज़मीन की तरफ़ झुक गया और घर आते ही कहा कि मुझे कपड़ों से ढांप दो। चुनाँचे घर वालों ने मुझे कपड़े ओढ़ा दिये और सूरह मुद्दस्सिर की फ़ह्जुर तक की आयतें उतरीं।' अबू सलमा (रह.) फ़रमाते हैं, रुज्ज़ से मुराद बुत हैं। फिर वह्य बराबर ताबड़-तोड़ गर्मा-गर्मी से आने लगी। (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरतुल मुद्दस्सिर : 4925-4926, सहीह मुस्लिम : 161, तिर्मिज़ी : 3325)

ये लफ़्ज़ बुख़ारी के हैं और यही सियाक़ महफ़ूज़ है। इससे साफ़ पता चलता है कि इससे पहले भी कोई वह्य आई थी क्योंकि आप (ﷺ) का वो फ़रमान मौजूद है कि ये वही था जो ग़ारे हिरा में मेरे पास आया था। यानी हज़रत जिब्रईल (अलै.) के ज़रिये जब ग़ारे हिरा में सूरह इक़्रअ् की आयतें मा लम् यअ्लम पढ़ाई गई थीं पस उसके बाद वह्य कुछ ज़माने तक न आई। फिर जो उसकी आमद शुरू हुई उसमें सबसे पहली वह्य सूर-ए-मुद्दस्सिर की शुरूआती आयतें थीं और इस तरह दोनों अहादीस़ में तत्बीक़ भी हो जाती है कि दरअसल सबसे पहली वह्य तो इक़्रअ् की आयतें हैं। फिर वह्य के रुक जाने के बाद की सबसे पहली वह्य इस सूरत की आयतें हैं। इसकी ताईद मुस्नद अहमद वग़ैरह की अहादीस़ से भी होती है जिनमें है कि वह्य रुक जाने के बाद की पहली वह्य इस सूरत की शुरूआती आयतें हैं। (सहीह बुख़ारी, किताब बदउल ख़ल्क़, बाब इज़ा क़ाल अहदुकुम आम्मीन वल्मलाइकतु फ़िस्समाअ : 3238, सहीह मुस्लिम : 161, अहमद : 3/325)

सूरह मुद्दस्सिर का शाने नुज़ूल : तबरानी में इस सूरत का शाने नुज़ूल ये मरवी है कि वलीद बिन मुग़ीरह ने कुरैशियों की दावत की, जब खा-पी चुके तो कहने लगा, बताओ तुम इस शख़्स की बाबत क्या कहते हो? तो कुछ ने कहा, जादूगर है। कुछ ने कहा, जादूगर नहीं है। कुछ ने कहा, काहिन है। किसी ने कहा काहिन नहीं है। कुछ ने कहा, शाइर है। कुछ ने कहा, शाइर नहीं है। कुछ ने कहा, इसका ये कलाम यानी क़ुरआन मन्क़ूल जादू है। चुनाँचे इस पर इज्माअ़ हो गया कि उन्हें मन्क़ूल जादू कहा जाये। हुज़ूर (ﷺ) को जब ये इत्तिलाअ़ पहुँची तो

ग़मगीन हुए और सर पर कपड़ा डाल लिया और कपड़ा ओढ़ भी लिया जिस पर ये आयतें फ़स्बिर तक उतरीं। (ज़ईफ़ुन जिद्दा : तबरानी : 11250, मज्मउज़्ज़वाइद : 7/134, इसकी सनद में इब्राहीम बिन यज़ीद अल्ख़ूज़ी सख़्त ज़ईफ़ रावी है।)

फिर फ़रमाता है कि खड़े हो जाओ यानी अ़ज़्म और क़वी इरादे के साथ कमर बस्ता और तैयार हो जाओ और लोगों को हमारी ज़ात से, जहन्नम से, उनके बद आ़माल की सज़ा से डरा दो, उनके कान खड़े कर दो, उनसे ग़फ़लत को दूर कर दो। पहली वह्य से नुबूवत के साथ हुज़ूर (ﷺ) को मुम्ताज़ किया गया और इस वह्य से आप रसूल बनाये गये। और अपने रब ही की तअ़ज़ीम करो और अपने कपड़ों को पाक रखो। यानी मअ़सियत, बद अ़हदी, वादा शिक्नी वग़ैरह से बचते रहो, जैसे कि शाइर के शेअ़र में है कि बिहम्दिल्लाह मैं फ़िस्क़ व फ़ुजूर के लिबास से और ग़द्र के रूमाल से आ़री हूँ। अ़रबी मुहावरे में ये बराबर आता है कि कपड़े पाक रखो, यानी गुनाह छोड़ दो, आ़माल की इस्लाह कर लो। ये भी मतलब कहा गया है कि दरअसल आप (ﷺ) न तो काहिन हैं, न जादूगर हैं, ये लोग कुछ ही कहा करें आप परवाह भी न करें। अ़रबी मुहावरे में जो मअ़सियत आलूद बद अ़हद हो उसे मैले और गन्दे कपड़ों वाला कहते हैं और जो अ़स्मत मआब पाबंदे वादा हो, उसे पाक कपड़ों वाला कहते हैं। शाइर कहता है,

اذا المر الم يدنس من اللوم عرضہ فكل ردا يرتديہ جميل

यानी इंसान जब कि स्याहकारियों से अलग है तो हर कपड़े में वो हसीन है और ये मतलब भी है कि ग़ैर ज़रूरी लिबास न पहनो, अपने कपड़ों को मअ़सयित आलूद न करो, कपड़े पाक-साफ़ रखो। मैलों को धो डाला करो, मुश्रिकों की तरह अपना लिबास नापाक न रखो। दरअसल ये सब मतलब ठीक हैं, ये भी हो वो भी हो और साथ ही दिल भी पाक हो। दिल पर भी कपड़े का इत्लाक़ कलामे अ़रब में पाया जाता है।

जैसे इम्रउल क़ैस के शेअ़र में है और हज़रत सईद बिन जुबैर (रह.) से इस आयत की तफ़्सीर में मरवी है कि अपने दिल को अपनी निय्यत को साफ़ रखो। (अत्तबरी : 24-13)

मुहम्मद बिन कअ़ब क़ुर्ज़ी और हज़रत हसन (रह.) से ये भी मरवी है कि अपने अख़्लाक़ को अच्छे रखो। फिर फ़रमाता है कि गन्दगी को छोड़ दो, यानी बुतों को और नाफ़रमानिये इलाही को छोड़ दो, जैसे और जगह फ़रमान है, (يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ اتَّقِ اللّٰهَ وَلَا تُطِعِ الْكٰفِرِيْنَ وَالْمُنٰفِقِيْنَ) 'ऐ नबी! अल्लाह तआ़ला से डरो और काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों की न मानो।' (सूरह अहज़ाब 33 : 1)

हज़रत मूसा (अ़लै.) ने अपने भाई हज़रत हारून (अ़लै.) से फ़रमाया था, ऐ हारून! मेरे बाद मेरी क़ौम में तुम मेरी जाँनशीनी करो, इस्लाह के दरपे रहो और मुफ़्सिदों की राह पर न लगो।

फिर फ़रमाता है कि अ़तिया दे कर ज़्यादती के ख़्वाहाँ न रहो। इब्ने मसऊ़द (रज़ि.) की क़िरअत में अन् तस्तकसि़र है, ये भी मतलब बयान किया गया है कि अपने नेक आ़माल का एहसान अल्लाह तआ़ला पर

तलबे ज़्यादती के साथ न रखो और ये भी कहा गया है कि ख़ैर की तलब की कसरत से कमज़ोरी न बरतो। (अत्तबरी : 24/16)

और ये भी कहा गया है कि अपनी नुबूवत का बारे एहसान लोगों पर रख कर उसके ऐवज़ दुनिया तलबी न करो। ये चार क़ौल हुए, लेकिन अव्वल औला (बेहतर) है, वल्लाहु आलम!

फिर फ़रमाता है कि उनकी ईज़ा पर जो राहे इलाही में तुझे पहुँचे, तू रब की रज़ामन्दी की ख़ातिर सब्र व सिहार कर। अल्लाह तआला ने जो आपको मन्सब दिया है उस पर लगे रहिये और जमे रहिये। नाक़ूर से मुराद सूर है। (अत्तबरी : 24/18)

सूर फूंका जाना : मुस्नद अहमद, इब्ने अबी हातिम वग़ैरह में है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'मैं कैसे राहत से रहूँ, हालांकि सूर वाले फ़रिश्ते ने अपने मुँह में सूर ले रखा है और पेशानी झुकाये हुए हुक्मे इलाही का मुन्तज़िर है कि कब हुक्म हो और वो सूर फूंक दे।' अस्हाबे रसूल (रज़ि.) ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल! फिर हमें क्या इरशाद होता है? फ़रमाया, कहो हस्बुनल्लाहु वनिअ़्मल वकीलु अ़लल्लाहि तवक्कल्ना (ज़ईफ़ : अहमद : 1/326, तिर्मिज़ी, किताब तफ़्सीरुल क़ुरआन, बाब व मिन सूरतिल अम्बिया : 3243, अ़तिया अल्औफ़ी रावी ज़ईफ़ है। हाकिम : 4/559, इब्ने हिब्बान : 823, अ़न अबी सईद ख़ुदरी)

फिर सूर के फूंके जाने का ज़िक्र करके ये फ़रमा कर कि जब सूर फूंका जायेगा। फिर फ़रमाता है और वो दिन और वो वक़्त काफ़िरों पर बड़ा सख़्त होगा जो किसी तरह आसान न होगा, जैसे और जगह ख़ुद कुफ़्फ़ार का क़ौल मरवी है कि (يَقُولُ الْكَافِرُونَ هَٰذَا يَوْمٌ عَسِرٌ ﴿٨﴾) (सूरह क़मर 54 : 8) 'काफ़िर कहेंगे, आज का दिन तो बेहद गिराँ बार और सख़्त मुश्किल का दिन है।' (फ़ायदा) हज़रत ज़ुरारा अबी औफ़ी (रह.) जो बसरा के क़ाज़ी थे वो एक मर्तबा अपने मुक़्तदियों को सुबह की नमाज़ पढ़ा रहे थे इसी सूरत की तिलावत की, जब इस आयत पर पहुँचे तो बेसाख़्ता ज़ोर की एक चीख़ मुँह से निकल गई और गिर पड़े, लोगों ने देखा तो रूह परवाज़ कर चुकी थी, अल्लाह तआला उन पर अपनी रहमत नाज़िल फ़रमाये। (ज़ईफ़ : सुनन तिर्मिज़ी, किताबुस्सलात, बाब इज़ा ना-म अ़न सलातिन बिल्लैलि सल्ला बिन्नहार, तहतल हदीस : 445, हाकिम : 2/506, उ़ताब बिन मुसन्ना मज्हूलुल हाल रावी है।)

***

ذَرْنِي وَمَنْ خَلَقْتُ وَحِيدًا ﴿١١﴾ وَجَعَلْتُ لَهُ مَالًا مَمْدُودًا ﴿١٢﴾ وَبَنِينَ شُهُودًا ﴿١٣﴾

وَمَهَّدْتُ لَهُ تَمْهِيدًا ﴿١٤﴾ ثُمَّ يَطْمَعُ أَنْ أَزِيدَ ﴿١٥﴾ كَلَّا إِنَّهُ كَانَ لِآيَاتِنَا عَنِيدًا ﴿١٦﴾

سَأُرْهِقُهُ صَعُودًا ﴿١٧﴾ إِنَّهُ فَكَّرَ وَقَدَّرَ ﴿١٨﴾ فَقُتِلَ كَيْفَ قَدَّرَ ﴿١٩﴾ ثُمَّ قُتِلَ كَيْفَ قَدَّرَ
﴿٢٠﴾ ثُمَّ نَظَرَ ﴿٢١﴾ ثُمَّ عَبَسَ وَبَسَرَ ﴿٢٢﴾ ثُمَّ أَدْبَرَ وَاسْتَكْبَرَ ﴿٢٣﴾ فَقَالَ إِنْ هَٰذَا إِلَّا سِحْرٌ
يُؤْثَرُ ﴿٢٤﴾ إِنْ هَٰذَا إِلَّا قَوْلُ الْبَشَرِ ﴿٢٥﴾ سَأُصْلِيهِ سَقَرَ ﴿٢٦﴾ وَمَا أَدْرَاكَ مَا سَقَرُ ﴿٢٧﴾
لَا تُبْقِي وَلَا تَذَرُ ﴿٢٨﴾ لَوَّاحَةٌ لِلْبَشَرِ ﴿٢٩﴾ عَلَيْهَا تِسْعَةَ عَشَرَ ﴿٣٠﴾

तर्जुमा : ''मुझे और उसे छोड़ दे जिसे मैंने अकेला पैदा किया है। (11) और उसे बहुत सा माल दे रखा है। (12) और हाज़िरबाश फ़रज़न्द भी। (13) और मैंने उसे बहुत कुछ कुशादगी दे रखी है। (14) फिर भी उसकी चाहत है कि मैं उसे और ज़्यादा दूँ। (15) नहीं-नहीं! वो हमारी आयतों का मुख़ालिफ़ है। (16) मैं तो उसे मशक़्क़त वाली तकलीफ़ पहुँचाऊँगा। (17) उसने ग़ौर करके तजवीज़ की। (18) उसे हलाकत हो कैसी सोची? (19) वो फिर ग़ारत होकर किस तरह अन्दाज़ा किया। (20) उसने फिर देखा। (21) और तुर्शरू होकर मुँह बना लिया। (22) फिर पीछे हट गया और ग़ुरूर किया। (23) और कहने लगा, ये तो सिर्फ़ जादू है जो नक़्ल किया जाता है। (24) सिवाय इंसानी क़ौल के कुछ नहीं। (25) मैं इसे अन्क़रीब दोज़ख़ में डालूँगा। (26) और तुझे क्या ख़बर कि दोज़ख़ क्या चीज़ है। (27) न वो बाक़ी रखती है न छोड़ती है। (28) खाल को झुलसा देती है। (29) और उस पर उन्नीस (19) फ़रिश्ते मुक़र्रर हैं।'' (30)

वलीद बिन मुग़ीरह की मज़म्मत (आयत 11-30) : जिस ख़बीस शख़्स ने अल्लाह तआला की नेमतों का कुफ़्र किया और क़ुरआन को इंसानी क़ौल कहा उसकी सज़ाओं का ज़िक्र हो रहा है, पहले जो नेमतें उस पर ईनाम हुई हैं उसका बयान हो रहा है कि ये तने-तन्हा ख़ाली हाथ दुनिया में आया था। माल या औलाद या और कुछ साथ न था। फिर अल्लाह तआला ने उसे मालदार बना दिया, हज़ारों-लाखों दीनार, ज़र, ज़मीन वग़ैरह इनायत फ़रमाई और बाऐतिबारे अक़्वाल के तेरह और कुछ और अक़्वाल के दस लड़के दिये जो सबके सब उसके पास बैठे रहते थे। नौकर-चाकर, लौण्डी-ग़ुलाम काम-काज करते थे और ये मज़े से अपनी ज़िन्दगी अपनी औलाद के साथ गुज़ारता था। ग़र्ज़ धन-दौलत, लौण्डी-ग़ुलाम, बाल-बच्चे, आराम-आसाइश हर तरह की मुहैया थी, फिर भी ख़्वाहिशे नफ़्स पूरी नहीं होती थी और चाहता था कि अल्लाह तआला और बढ़ा दे, हालांकि ऐसा अब न होगा। ये हमारी बातों के इल्म के बाद कुफ़्र और सरकशी करता है इसे तो सऊद पर चढ़ाया जायेगा।

मुस्नद अहमद की एक हदीस में है, 'वैल जहन्नम की एक वादी का नाम है जिसमें काफ़िर को गिराया जायेगा। चालीस साल तक अंदर ही अंदर जाता रहेगा लेकिन फिर भी तह तक न पहुँचेगा और सऊद जहन्नम के एक नारी पहाड़ का नाम है जिस पर काफ़िर को चढ़ाया जायेगा। सत्तर साल तक तो चढ़ता ही रहेगा, फिर वहाँ से नीचे गिरा दिया जायेगा। सत्तर साल तक नीचे लुढ़कता रहेगा और इसी अबदी सज़ा में गिरफ़्तार रहेगा।' (ज़ईफ़ : तिर्मिज़ी, किताब तफ़सीरुल क़ुरआन, बाब व मिन सूरतिल अम्बिया : 3164, अहमद : 3/75, मुस्नद अबी यअ़ला : 1383, इब्ने हिब्बान : 6467, अल्बअ़्सु लिल्बैहक़ी : 465, इमाम तिर्मिज़ी इसे ग़रीब कहते हैं साथ ही इसमें नकारत भी है।

इब्ने अबी हातिम में है कि सऊद जहन्नम के एक पहाड़ का नाम है जो आग का है उसे मजबूर किया जायेगा कि उस पर चढ़े हाथ रखते ही घुल जायेगा और उठाते ही बदस्तूर हो जायेगा इसी तरह पाँव भी। (ज़ईफ़ : अत्तबरी : 8/266, 23/266 इसकी सनद में अ़तिया औफ़ी ज़ईफ़ रावी है।)

हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) फ़रमाते हैं कि सऊद जहन्नम की एक चट्टान का नाम है जिस पर काफ़िर को अपने मुँह के बल घसीटा जायेगा। (अद्दुरुल मन्सूर : 8/331)

सुद्दी (रह.) कहते हैं कि ये पत्थर बड़ा फिसल्ना है। मुजाहिद (रह.) कहते हैं कि मतलब आयत का ये है कि हम उसे मशक़्क़त वाला अ़ज़ाब करेंगे। (अत्तबरी : 24/23)

क़तादा (रह.) फ़रमाते हैं कि ऐसा अ़ज़ाब जिस में और जिससे कभी भी राहत हासिल न हो। इमाम इब्ने जरीर (रह.) इसी को पसंद करते हैं। फिर फ़रमाता है कि हमने उसे उस तकलीफ़देह अ़ज़ाब से इसलिये क़रीब कर दिया कि वो ईमान से बहुत दूर था वो सोच-सोच कर घड़ नित घड़ रहा था कि वो क़ुरआन को क्या कहे और क्या बात बनाये। फिर उस पर अफ़सोस किया जाता है और मुहावर-ए-अ़रब के मुताबिक़ उसकी हलाकत के कलिमे कहे जाते हैं कि ये ग़ारत कर दिया जाये ये बर्बाद कर दिया जाये। कितना बद कलाम सोचा और कितनी बेहयाई की झूठ बात घड़ निकाली, बार-बार के ग़ौर व फ़िक्र के बाद पेशानी पर बल डाल-डाल कर मुँह बिगाड़-बिगाड़कर हक़ से हटकर भलाई से मुँह मोड़ कर इताअ़ते इलाही से सर फेर कर दिल कुड़ा कर के साफ़ कह दिया ये क़ुरआन अल्लाह का कलाम नहीं बल्कि मुहम्मद (ﷺ) अपने से पहले लोगों का जादू का मन्तर नक़ल कर लिया करते हैं और उसी को सुना रहे हैं ये क़लामे इलाही नहीं, बल्कि इंसानी क़ौल है और जादू जो नक़ल किया जाता है, नऊज़ुबिल्लाह! उस मल्ऊन का नाम वलीद बिन मुग़ीरह मख़्ज़ूमी था जो क़ुरैश का सरदार था।

हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) फ़रमाते हैं वाक़िया ये है कि एक मर्तबा वलीद पलीद हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ (रज़ि.) के पास आया और ख़्वाहिश ज़ाहिर की कि आप कुछ क़ुरआन सुनायें। हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ (रज़ि.) ने चंद आयतें पढ़कर सुनाई जो उसके दिल में घर कर गईं। जब यहाँ से निकला और कुफ़्फ़ारे क़ुरैश के मज्मअ़े में पहुँचा तो कहने लगा, लोगो! तअ़ज्जुब की बात है (हज़रत मुहम्मद) जो क़ुरआन पढ़ते हैं

अल्लाह तआला की क़सम! न तो वो शेअर है, न जादू का मन्तर है न मज्नूनाना बड़ (बकवास) है बल्कि वल्लाह! वो तो ख़ास अल्लाह तआला का कलाम है इसमें कोई शक नहीं। क़ुरैशियों ने ये सुनकर सर पकड़ लिया और कहने लगे अगर ये मुसलमान हो गया तो बस फिर क़ुरैश में से एक भी बग़ैर इस्लाम लाये बाक़ी न रहेगा। अबू जहल को जब ये ख़बर पहुँची तो उसने कहा, घबराओ नहीं! देखो मैं एक तरकीब से उसे इस्लाम से फेर दूँगा। ये कहते ही अपने ज़हन में एक तरकीब सोच कर ये वलीद के घर पहुँचा और कहने लगा, आपकी क़ौम ने आपके लिये चन्दा करके बहुत सा माल जमा कर लिया है और वो आपको सदक़े में देने वाले हैं। उसने कहा, वाह! क्या मज़े की बात है मुझे उनके चन्दों और सदक़ों की क्या ज़रूरत है दुनिया जानती है कि उन सब में मुझसे ज़्यादा माल व औलाद वाला कोई नहीं। अबू जहल ने कहा, ये तो ठीक है लेकिन लोगों में ऐसी बातें हो रही हैं कि आप जो अबू बकर के पास आते-जाते हैं वो सिर्फ़ इसलिये कि उनसे कुछ हासिल वसूल हो। वलीद ने कहा, ओहो! मेरे ख़ानदान में मेरी निस्बत ये बातचीत हो रही हैं, मुझे मुतलक़ मालूम न था, अच्छा अब अल्लाह की क़सम! न मैं अबू बकर के पास जाऊँगा, न उमर के पास जाऊँगा और न रसूल (ﷺ) के पास जाऊँगा और वो तो जो कुछ कहते हैं वो सिर्फ़ जादू है जो नक़ल किया जाता है। इस पर अल्लाह तआला ने ये आयतें नाज़िल फ़रमाईं यानी ज़रनी से ला तज़र तक। (अत्तबरी : 24/24)

हज़रत क़तादा (रह.) फ़रमाते हैं कि उसने कहा, था कि मैं क़ुरआन के बारे में बहुत कुछ ग़ौर व ख़ोज के बाद इस नतीजे पर पहुँचा हूँ कि ये शेअर तो नहीं इसमें हलावत है इसमें चमक है, ये ग़ालिब है, मग़्लूब नहीं, लेकिन है यक़ीनन जादू। इस पर ये आयतें उतरीं। इब्ने जरीर में है कि वलीद हुज़ूर (ﷺ) के पास आया था और क़ुरआन सुनकर उसका दिल नर्म पड़ गया था और पूरा असर हो चुका था। जब अबू जहल को ये मालूम हुआ तो वो दौड़ा-भागा आया और इस डर से कि कहीं ये खुल्लम-खुल्ला मुसलमान न हो जाये, उसे भड़काने के लिये झूठ-मूठ कहने लगा कि चाचा! आपकी क़ौम आपके लिये माल जमा करना चाहती है। पूछा, क्यों? कहा, इसलिये कि आपको दें और आपका मुहम्मद (ﷺ) के पास जाना छुड़वायें क्योंकि आप वहाँ माल हासिल करने की ग़र्ज़ से ही जाते-आते हैं। उसने गुस्से में आकर कहा कि मेरी क़ौम को मालूम नहीं कि मैं उन सबसे ज़्यादा मालदार हूँ? अबू जहल ने कहा, ये तो ठीक है लेकिन इस वक़्त तो लोगों का ये ख़्याल पुख़्ता हो गया है कि मुहम्मद (ﷺ) से माल हासिल करने की ग़र्ज़ से आप उसी के हो गये हैं। अगर आप चाहते हैं कि बात लोगों के दिलों से उठ जाये तो आप उसके बारे में कुछ सख़्त अल्फ़ाज़ कहें, ताकि लोगों को यक़ीन हो जाये कि आप उसके मुख़ालिफ़ हैं और आपको उससे कोई लालच नहीं है। उसने कहा, भई! बात तो ये है कि उसने जो क़ुरआन मुझे सुनाया है क़सम है अल्लाह तआला की! न वो शेअर है न क़सीदा और रजज़ है न जिन्नात का क़ौल और उनके अश्आर हैं तुम्हें ख़ूब मालूम है कि जिन्नात और इंसान का कलाम मुझे ख़ूब याद है मैं ख़ुद नामी शाइर हूँ, कलाम के हुस्न व क़ुबह से ख़ूब वाक़िफ़ हूँ लेकिन अल्लाह तआला की क़सम! मुहम्मद (ﷺ) का कलाम इसमें से कुछ भी नहीं, अल्लाह तआला जानता है इसमें अजीब हलावत, मिठास, लज़्ज़त, शगुफ़्तगी और दिलबरी है कि वो तमाम कलामों का सरदार है उसके सामने और कोई कलाम जचता नहीं वो

सब पर छा जाता है, उसमें कशिश बुलंदी और जज़्ब है। अब तुम ही बतलाओ कि मैं इस कलाम की निस्बत क्या कहूँ? अबू जहल ने कहा, सुनो! जब तक तुम उसे बुराई के साथ याद न करोगे तुम्हारी क़ौम के ख़्यालात तुम्हारी निस्बत साफ़ नहीं होंगे। उसने कहा, तो मुझे मोहलत दो मैं सोचकर उसकी निस्बत कोई ऐसा कलिमा कह दूँगा। चुनाँचे सोच-सोच कर क़ौमी हमियत और नाक रखने की ख़ातिर उसने कह दिया कि ये तो जादू है जिसे वो नक़ल करता है। इस पर ज़रनी से तिस्अत अशर तक की आयतें उतरीं। (ज़ईफ़ : ये रिवायत मुरसल है लेकिन हाकिम : 2/506-507, में इब्ने अब्बास (रज़ि.) से मरवी है ताहम इसकी सनद अब्दुर्रज़्ज़ाक़ की तदलीस की वजह से ज़ईफ़ है।)

सुद्दी (रह.) कहते हैं कि दारुन्नदवा में बैठकर उन सब लोगों ने मशवरा किया कि मौसमे हज पर लोग चारों तरफ़ से आयेंगे तो बतलाओ उन्हें मुहम्मद (ﷺ) की निस्बत क्या कहें? कोई ऐसी बात तजवीज़ करो कि सब एक ज़बान वही बात कहें ताकि अरब भर में और फिर और जगह वही मशहूर हो जाये। तो अब किसी ने शाइर कहा, किसी ने जादूगर कहा, किसी ने काहिन और नजूमी कहा, किसी ने मजनून और दीवाना कहा। वलीद बैठा सोचता रहा और ग़ौर व फ़िक्र करके देखभाल कर त्यौरी चढ़ाकर और मुँह बनाकर कहा, अगले जादूगरों का क़ौल है जिसे ये नक़ल कर रहा है।

जहन्नम और जन्नत का तज़्किरा : कुरआन करीम में दूसरी जगह है, (اُنْظُرْ كَيْفَ ضَرَبُوْا لَكَ الْاَمْثَالَ فَضَلُّوْا فَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ سَبِيْلًا) (सूरह फ़ुरक़ान 25 : 9) 'ज़रा देख तो सही, तेरी कैसी-कैसी मिसालें घड़ते हैं लेकिन बहक-बहक कर रह जाते हैं और किसी नतीजे तक नहीं पहुँच सकते।' अब उसकी सज़ा का ज़िक्र हो रहा है कि मैं उसे जहन्नम की आग में डुबा दूँगा, जो ज़बरदस्त ख़ौफ़नाक अज़ाब की आग है जो गोश्त-पोस्त को रग-पुट्ठों को खा जाती है। फिर ये सब नये आते हैं और फिर जलाये जाते हैं। न मौत आयेगी, न राहत वाली ज़िन्दगी मिलेगी। खाल उधेड़ देने वाली वो आग है जो एक ही लपक में जिस्म को रात से ज़्यादा स्याह कर देती है। जिस्म व जिल्द को भुन-भुलस देती है। 19-19 दारोग़े उस पर मुक़र्रर हैं जो न थकें न रहम करें। हज़रत बराअ (रज़ि.) से मरवी है कि चंद यहूदियों ने सहाबा (रज़ि.) से पूछा, बतलाओ तो जहन्नम के दारोग़ों की तादाद क्या है? उन्होंने कहा, अल्लाह तआला और उसका रसूल ही ज़्यादा जानते हैं। फिर किसी शख़्स ने आकर हुज़ूर (ﷺ) से ये वाक़िया बयान किया, उसी वक़्त आयत अलैहा तिस्अ-त अशर नाज़िल हुई। आप (ﷺ) ने सहाबा (रज़ि.) को सुना दी और फ़रमाया, 'ज़रा उन्हें मेरे पास तो लाओ, मैं भी उनसे पूछूँगा कि जन्नत की मिट्टी क्या है?' फ़रमाया, 'सुनो वो सफ़ेद मेदे की तरह है।' फिर यहूदी आप (ﷺ) के पास आये और आप से पूछा कि जहन्नम के दारोग़ों की तादाद कितनी है? आपने दोनों हाथों की उंगलियाँ दो बार झुकाईं, दूसरी बार अंगूठा रोक लिया यानी उन्नीस। फिर आपने फ़रमाया, तुम बतलाओ कि जन्नत की मिट्टी क्या है? उन्होंने इब्ने सलाम (रज़ि.) से कहा, आप ही कहिये। इब्ने सलाम (रज़ि.) ने कहा, वो सफ़ेद रोटी है। आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'याद रखो ये सफ़ेद रोटी वो जो ख़ालिस मेदे की हो।' (ज़ईफ़ : अल्बअसु लिल्बैहक़ी : 509, मुख़्तसरन व सनदहू ज़ईफ़, इसकी सनद में हरीस़ बिन अबी मतर ज़ईफ़ रावी है।)

मुस्नद बज़्ज़ार में है कि जिस शख़्स ने हुज़ूर (ﷺ) को सहाबा (रज़ि.) के लाजवाब होने की ख़बर दी थी उसने आकर कहा था कि आज तो आप (ﷺ) के अस्हाब हार गये। फ़रमाया, कैसे? उसने कहा, उनसे जवाब न बन पड़ा और कहना पड़ा कि हम अपने नबी (ﷺ) से पूछ लें। आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'भला वो भी हारे हुए कहे जा सकते हैं जिनसे वो बात पूछी जाती है जिसे वो नहीं जानते तो वो कहते हैं कि हम अपने नबी से पूछकर जवाब देंगे। उन यहूदियों को दुश्मनाने इलाही को ज़रा मेरे पास तो लाओ, हाँ! उन्होंने अपने नबी से अल्लाह तआला को देखने का सवाल किया था और उन पर अ़ज़ाब भेजा गया था।' अब यहूद बुलवाये गये। जवाब दिया गया और हुज़ूर (ﷺ) के सवाल पर ये बड़े चकराये और एक दूसरे की तरफ़ देखने लगे, अल्‌अख़। (ज़ईफ़ : तिर्मिज़ी, किताब तफ़्सीरुल क़ुरआन, बाब व मिन सूरतिल मुद्दस्सिर : 3327, इसकी सनद में मुजालिद बिन सईद ज़ईफ़ रावी है।)

***

وَمَا جَعَلْنَآ اَصْحٰبَ النَّارِ اِلَّا مَلٰٓئِكَةً ۙ وَّمَا جَعَلْنَا عِدَّتَهُمْ اِلَّا فِتْنَةً لِّلَّذِيْنَ
كَفَرُوْا ۙ لِيَسْتَيْقِنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ وَيَزْدَادَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِيْمَانًا وَّلَا
يَرْتَابَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ وَالْمُؤْمِنُوْنَ ۙ وَلِيَقُوْلَ الَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ
وَّالْكٰفِرُوْنَ مَاذَآ اَرَادَ اللّٰهُ بِهٰذَا مَثَلًا ؕ كَذٰلِكَ يُضِلُّ اللّٰهُ مَنْ يَّشَآءُ وَيَهْدِيْ
مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَمَا يَعْلَمُ جُنُوْدَ رَبِّكَ اِلَّا هُوَ ؕ وَمَا هِيَ اِلَّا ذِكْرٰى لِلْبَشَرِ ﴿٣١﴾ كَلَّا
وَالْقَمَرِ ﴿٣٢﴾ وَالَّيْلِ اِذْ اَدْبَرَ ﴿٣٣﴾ وَالصُّبْحِ اِذَآ اَسْفَرَ ﴿٣٤﴾ اِنَّهَا لَاِحْدَى الْكُبَرِ ﴿٣٥﴾
نَذِيْرًا لِّلْبَشَرِ ﴿٣٦﴾ لِمَنْ شَآءَ مِنْكُمْ اَنْ يَّتَقَدَّمَ اَوْ يَتَاَخَّرَ ﴿٣٧﴾

तर्जुमा : ''हमने दोज़ख़ के दारोग़े सिर्फ़ फ़रिश्तों को किया है और हमने उनकी तादाद सिर्फ़ काफ़िरों की आज़माइश के लिये मुक़र्रर की है ताकि अहले किताब यक़ीन कर लें और ईमानदार ईमान में बढ़ जाये और अहले किताब और मुसलमान शक न करें और जिनके दिलों में बीमारी है

वो और काफ़िर कहें कि इस बयान से अल्लाह तआला की क्या मुराद है? इसी तरह अल्लाह तआला जिसे चाहता है गुमराह करता है और जिसे चाहता है हिदायत देता है तेरे रब के लश्करों को उसके सिवा कोई नहीं जानता, ये तो तमाम बनी आदम के लिये सरासर पन्द व नसीहत है। (31) सच कहता हूँ! क़सम है चाँद की। (32) और रात की, जब वो पीछे हटे। (33) और सुबह की जब कि रोशन हो जाये। (34) कि यक़ीनन जहन्नम बड़ी चीज़ों में से एक है। (35) बनी आदम को डराने वाली। (36) यानी उसे जो तुममें से आगे बढ़ना चाहे या पीछे हटना चाहे।'' (37)

जहन्नम के दारोग़ों का ज़िक्र (आयत : 31-37) : अल्लाह तआला फ़रमाता है कि अज़ाब के करने पर और जहन्नम की निगेहबानी पर हमने फ़रिश्ते ही मुक़र्रर किये जो रहम न करने वाले और सख़्त कलामी करने वाले हैं। इसमें मुश्रिकीने क़ुरैश की तर्दीद है, उन्हें जिस वक़्त जहन्नम के दारोग़ों की तादाद बतलाई गई तो अबू जहल ने कहा, ऐ क़ुरैशियो! अगर ये उन्नीस हैं तो ज़्यादा से ज़्यादा एक सौ नव्वे, हम मिलकर उन्हें हरा देंगे। इस पर कहा जाता है कि वो फ़रिश्ते हैं इंसान नहीं हैं, उन्हें न तुम हरा सकोगे, न थका सकोगे। (फ़) ये भी कहा गया है कि अबुल अशदैन जिसका नाम कलदा बिन उसैद बिन ख़लफ़ था उसने इस तादाद को सुनकर कहा कि क़ुरैशियो! तुम सब मिलकर उनमें से दो को रोक लेना बाक़ी सतरह को मैं काफ़ी हूँ। ये बड़ा मग़रूर शख़्स था और साथ ही बड़ा क़वी था। ये गाय के चमड़े पर खड़ा हो जाता फिर दस ताक़तवर शख़्स मिलकर इसे इसके पैरों तले से निकालना चाहते खाल के टुकड़े उड़ते जाते लेकिन इसके क़दम जुम्बिश भी न खाते। यही शख़्स है जिसने रसूलुल्लाह (ﷺ) के सामने आकर कहा था कि आप मुझसे कुश्ती लड़ें अगर आपने मुझे गिरा दिया तो मैं आपकी नुबूवत को मान लूँगा। चुनाँचे हुज़ूर (ﷺ) ने उससे कुश्ती लड़ी और कई बार उसको गिराया लेकिन उसे ईमान लाना नसीब न हुआ।

इमाम इब्ने इस्हाक़ (रह.) ने कुश्ती वाला वाक़िया रुकाना बिन अब्दे यज़ीद बिन हाशिम बिन मुत्तलिब का बताया है। मैं कहता हूँ उन दोनों में कुछ मुनाफ़ात (डिस्पुट) नहीं (मुम्किन है कि इससे और उससे दोनों से कुश्ती हुई हो) वल्लाहु आलम!

फिर फ़रमाया कि इस गिनती का ज़िक्र था ही इम्तिहान के लिये। एक तरफ़ काफ़िरों का कुफ़्र खुल पड़ा, दूसरी तरफ़ अहले किताब का यक़ीन कामिल हो गया कि इस रसूलुल्लाह (ﷺ) की रिसालत हक़ है क्योंकि ख़ुद उनकी किताब में भी यही गिनती है, तीसरी तरफ़ ईमानदार अपने ईमान में मज़बूत हो गये। हुज़ूर (ﷺ) की बात की तस्दीक़ की और ईमान बढ़ा। अहले किताब और मुसलमानों को कोई शक व शुब्हा न रहा, बीमार दिल मुनाफ़िक़ चीख़ उठे कि भला बतलाओ कि इसे यहाँ ज़िक्र करने में क्या हिक्मत है? अल्लाह तआला फ़रमाता है कि ऐसी ही बातें बहुत से लोगों के ईमान की मज़बूती का सबब बन जाती हैं और बहुत से लोगों के शुब्हे वाले दिल और डांवाडोल हो जाते हैं। अल्लाह तआला के ये सब काम हिक्मत से और असरार से पुर हैं। तेरे रब के लश्करों की गिनती और उनकी सहीह तादाद और उनकी कसरत का किसी को इल्म नहीं

वही ख़ूब जानता है ये न समझो कि बस उन्नीस ही हैं, जैसे यूनानी फ़िलॉसफ़ियों और उनके हमख़्याल लोगों ने अपनी जहालत की वजह से समझ लिया कि इससे मुराद उ़क़ूले अ़शरा और नुफ़ूसे तिस्आ हैं। हालांकि ये मुजरदान का दावा है जिस पर दलील क़ायम करने से वो बिल्कुल आ़जिज़ हैं। अफ़सोस कि आयत के अव्वल पर तो उनकी नज़रें हैं लेकिन आख़िरी हिस्से के साथ वो कुफ़्र कर रहे हैं जहाँ साफ़ अल्फ़ाज़ मौजूद हैं कि तेरे रब के लश्करों को सिवाय उसके कोई नहीं जानता, फिर उन्नीस सिर्फ़ के क्या मआ़ना? बुख़ारी मुस्लिम की मेअ़राज वाली हदीस़ में स़ाबित हो चुका है कि आँहुज़ूर (ﷺ) ने बैतुल मअ़मूर का वस्फ़ बयान करते हुए फ़रमाया, 'वो सातवें आसमान पर है और उसमें हर रोज़ सत्तर हज़ार फ़रिश्ते जाते हैं, इसी तरह दूसरे रोज़ सत्तर हज़ार फ़रिश्ते जाते हैं, इसी तरह हमेशा तक। लेकिन फ़रिश्तों की तादाद इस क़द्र कस़ीर है कि जो आज गये उनकी बारी फिर क़यामत तक नहीं आने की।' (सहीह बुख़ारी, किताब बदउल ख़ल्क़, बाब ज़िक्रुल मलाइकति सलवातुल्लाहि अ़लैहिम : 3207, सहीह मुस्लिम : 164)

फ़रिश्तों की कस़रत का ज़िक्र : मुस्नद अहमद में है रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़रमाते हैं, 'मैं वो देखता हूँ जो तुम नहीं देखते और वो सुनता हूँ जो तुम नहीं सुनते, आसमान चरचरा रहे हैं और उन्हें चरचराने का हक़ है, एक उंगली टिकाने की जगह ऐसी ख़ाली नहीं जहाँ कोई न कोई फ़रिश्ता सज्दे में न पड़ा हो, अगर तुम वो जान लेते जो मैं जानता हूँ तो तुम बहुत कम हँसते, बहुत ज़्यादा रोते और बिस्तरों पर अपनी बीवियों के साथ लज़्ज़त न पा सकते बल्कि फ़रियाद वज़ारी करते हुए जंगलों की तरफ़ निकल खड़े होते।' इस हदीस़ को बयान फ़रमाकर हज़रत अबू ज़र (रज़ि.) की ज़बान से बेसाख़्ता ये निकल जाता कि काश मैं दरख़्त होता जो काट दिया जाता। (हसन : तिर्मिज़ी, किताबुज़्ज़ुहद, बाब मा जाअ फ़ी क़ौलिन्नबी (ﷺ) लौ तअ़लमून मा अअ़लम : 2312, इब्ने माजह : 4190, अहमद : 5/173, इमाम तिर्मिज़ी इसे हसन ग़रीब बतलाते हैं और हज़रत अबू ज़र (रज़ि.) से मरफ़ूअ़न भी रिवायत की गई है।)

तबरानी में है कि सातों आसमानों में क़दम रखने की बालिश्त भर या हथेली जितनी जगह भी ऐसी नहीं जहाँ कोई न कोई फ़रिश्ता क़ियाम की या रुकूअ़ की या सज्दे की हालत में न हो, फिर भी ये सब कल क़यामत के दिन कहेंगे कि अल्लाह तआ़ला तू पाक है हमें जिस क़द्र तेरी इबादत करनी चाहिये थी उस क़द्र हमसे अदा नहीं हो सकी, अल्बत्ता हमने तेरे साथ किसी को शरीक नहीं किया। (ज़ईफ़ : मुअ़जम अल्औसत : 3592, मज्मउ़ज़्ज़वाइद : 1/57, इसकी सनद में उ़रवह बिन मरवान अर्रुक़ी कमज़ोर रावी है। अल्मीज़ान : 3/64, हदीस़ नम्बर : 5610)

इमाम मुहम्मद बिन नसर मरवज़ी (रह.) की किताबुस्सलात में है कि हुज़ूर (ﷺ) ने एक मर्तबा सहाबा किराम (रज़ि.) से सवाल किया कि जो मैं सुन रहा हूँ तुम भी सुन रहे हो? उन्होंने जवाब में कहा, ऐ अल्लाह के रसूल! हमें तो कुछ सुनाई नहीं देता। आपने फ़रमाया, 'आसमानों का चरचर बोलना मैं सुन रहा हूँ और वो इस चरचराहट पर मलामत नहीं किया जा सकता क्योंकि उस पर इस क़द्र फ़रिश्ते हैं कि एक बालिश्त भर जगह

ख़ाली नहीं, कहीं कोई रुकूअ में है और कहीं कोई सज्दे में।' (ज़ईफ़ : अस्सलातु लिइब्ने नसर : 250, क़तादा व सईद बिन अबी उरूबह मुदल्लसान व अन्अना)

दूसरी रिवायत में है कि आसमाने दुनिया में एक क़दम रखने की जगह भी ऐसी नहीं जहाँ सज्दे में या क़ियाम में कोई फ़रिश्ता न हो, इसीलिये फ़रिश्तों का ये क़ौल कुरआन करीम में मौजूद है, (وَمَا مِنَّآ إِلَّا لَهُ مَقَامٌ مَّعْلُومٌ ﴿١٦٤﴾ وَّ إِنَّا لَنَحْنُ الصَّآفُّوْنَ ﴿١٦٥﴾ وَ إِنَّا لَنَحْنُ الْمُسَبِّحُوْنَ ﴿١٦٦﴾) (सूरह अहज़ाब 33 : 164-166) 'हममें से हर एक के लिये मुक़र्रर जगह है और हम सफ़ें बान्धने वाले और अल्लाह तआला की तस्बीह बयान करने वाले हैं।' इस हदीस़ का मरफ़ूअ होना बहुत ही ग़रीब है।

दूसरी रिवायत में ये क़ौल हज़रत इब्ने मसऊद (रज़ि.) का बयान किया गया है। एक और सनद से ये रिवायत हज़रत अला बिन सअद (रज़ि.) से भी मरफ़ूअन मरवी है ये सहाबी फ़तहे मक्का में और उसके बाद के जिहादों में हुज़ूर (ﷺ) के साथ थे। लेकिन सनदन ये भी ग़रीब है। एक और बहुत ही ग़रीब बल्कि सख़्त मुन्कर हदीस़ में है कि हज़रत उमर फ़ारूक़ (रज़ि.) आये, नमाज़ खड़ी हुई थी और तीन शख़्स बैठे हुए थे जिनमें एक अबू जहश लैसी था। आपने फ़रमाया, उठो हुज़ूर (ﷺ) के साथ नमाज़ में खड़े हो जाओ। तो वो शख़्स तो खड़े हो गये, लेकिन अबू जहश कहने लगा, अगर कोई ऐसा शख़्स आये जो ताक़त व कुव्वत में मुझसे ज़्यादा हो और मुझसे कुश्ती लड़े और मुझे गिरा दे फिर मेरा मुँह मिट्टी में मिला दे तो मैं उठूंगा वरना बस उठ चुका। हज़रत उमर (रज़ि.) ने फ़रमाया, और कौन आयेगा, आ जा मैं तैयार हूँ। चुनाँचे कुश्ती होने लगी और मैंने उसे पछाड़ा फिर उसके मुँह को मिट्टी में मिला दिया। इतने में हज़रत उसमान बिन अफ़्फ़ान (रज़ि.) आ गये और उसे मेरे हाथ से छुड़ा दिया। मैं बड़ा बिगड़ा और उसी गुस्से की हालत में आँहज़रत (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। आप (ﷺ) ने मुझे देखते ही फ़रमाया, अबू हफ़्स! आज क्या बात है? मैंने तमाम वाक़िया कह सुनाया। आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'अगर उमर की मर्ज़ी भी यही हो तो अल्लाह की क़सम मेरे नज़दीक तो उस ख़बीस़ का सर उतार लेता तो अच्छा था। ये सुनते ही हज़रत उमर (रज़ि.) यूंही वहाँ से उठ खड़े हुए और उसकी तरफ़ लपके, ख़ासी दूर निकल चुके थे जो हुज़ूर (ﷺ) ने उन्हें आवाज़ दी और फ़रमाया, बैठो! सुन तो लो कि अल्लाह तआला अबू जहश की नमाज़ से बिल्कुल बेनियाज़ है, आसमाने दुनिया में ख़ुशूअ व ख़ुज़ूअ वाले बेशुमार फ़रिश्ते अल्लाह तआला के सामने सज्दे में पड़े हुए हैं जो क़यामत तक सर ही नहीं उठाने के, क़यामत को सज्दे से सर उठायेंगे और ये कहते हुए हाज़िर होंगे कि ऐ हमारे रब! हम से तेरी इबादत का हक़ अदा नहीं हो सका, इसी तरह दूसरे आसमान में भी यही हाल है। हज़रत उमर (रज़ि.) ने सवाल किया कि ऐ अल्लाह के रसूल! उनकी तस्बीह क्या है? आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'आसमाने दुनिया के फ़रिश्ते तो कहते हैं, सुब्हान ज़िल्मुल्कि वल्मलकूत और दूसरे आसमान के फ़रिश्ते कहते हैं, सुब्हान ज़िल्इज़्ज़ति वल्जबरूत और तीसरे आसमान के फ़रिश्ते कहते हैं, सुब्हानल हय्यिल्लज़ी ला यमूत उमर तुम भी अपनी नमाज़ में इसे कहा करो। हज़रत उमर (रज़ि.) ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल! इससे पहले जो पढ़ना आप (ﷺ) ने सिखाया है और जिसके पढ़ने को फ़रमाया है उसका क्या होगा? फ़रमाया, कभी ये कहो कभी वो पढ़ो। पहले जो पढ़ने को आप

(ﷺ) ने फ़रमाया था वो ये था, अऊज़ु बिअफ़्वि-क मिन इक़ाबि-क वअऊज़ु बिरिज़ा-क मिन सख़ति-क व अऊज़ुबि-क मिन्क जल्ल वज्हुक यानी अल्लाह तआला तेरे अज़ाबों से मैं तेरी माफ़ी की पनाह में आता हूँ और तेरी नाराज़ी से तेरी रज़ामन्दी की पनाह चाहता हूँ और तुझसे तेरी ही पनाह पकड़ता हूँ, तेरा चेहरा जलाल वाला है।' (ज़ईफ़ : किताबुस्सलात, लिमुहम्मद बिन नसर : 256, अ़ब्दुल्लाह बिन क़ुदामा अल्जमई वहुव ज़ईफ़ मशहूर, हाकिम : 3/87-88, शुअबुल ईमान : 1/114)

और इस्हाक़ मरवज़ी (रह.) जो राविये हदीस़ है उससे हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) रिवायत करते हैं और इमाम इब्ने हिब्बान (रह.) भी उन्हें सिक़ह रावियों में गिनते हैं, लेकिन हज़रत इमाम अबू दाऊद, इमाम नसाई, इमाम उ़क़ैली और इमाम दार क़ुतनी (रह.) उन्हें ज़ईफ़ कहते हैं। इमाम अबू हातिम राज़ी (रह.) फ़रमाते हैं, थे तो ये सच्चे मगर नाबीना हो गये थे और कभी-कभी तल्क़ीन क़ुबूल कर लिया करते थे। हाँ उनकी किताबों की मरवियात सहीह हैं। उनसे ये भी मरवी है कि ये मुज़्तरिब हैं और उनके उस्ताद अ़ब्दुल मलिक बिन क़ुदामा अबू क़तादा जहमी में भी कलाम है। तअज्जुब है कि इमाम मुहम्मद बिन नसर (रह.) ने उनकी इस हदीस़ को कैसे रिवायत कर दिया? और न तो इस पर कलाम किया न इसके हाल को मालूम कराया, न इसके बाद रावियों के ज़ुअ़फ़ को बयान किया। हाँ इतना तो किया है कि इसे दूसरी सनद से मुरसलन रिवायत कर दिया है और मुरसल की दो सनदें लाये हैं, एक हज़रत सईद बिन जुबैर (रह.) से दूसरी हज़रत हसन बसरी (रह.) से।

फिर एक और रिवायत लाये हैं कि हज़रत अ़दी बिन अरताह (रह.) ने मदाइन की जामा मस्जिद में अपने ख़ुत्बे में फ़रमाया कि मैंने एक सहाबी से सुना है उन्होंने नबी (ﷺ) से सुना कि आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'अल्लाह तआला के बहुत से ऐसे फ़रिश्ते हैं जो हर वक़्त ख़ौफ़े इलाही से कपकपाते रहते हैं, उनके आँसू गिरते रहते हैं और वो उन फ़रिश्तों पर टपकते हैं जो नमाज़ में मशग़ूल हैं और उनमें से ऐसे फ़रिश्ते भी हैं जो शुरूआती दुनिया से रुकूअ़ में ही हैं और कुछ सज्दे में ही हैं, क़यामत के दिन अपनी पीठ और सर उठायेंगे और निहायत आजिज़ी से जनाबे बारी में अ़र्ज़ करेंगे कि या इलाही! तू पाक है हमसे तेरी इबादत का हक़ अदा नहीं हो सका। (ज़ईफ़ : किताबुस्सलात लिमुहम्मद बिन नसर : 260, अ़ब्बाद बिन मन्सूर ज़ईफ़ मशहूर) इस हदीस़ की इस्नाद में कोई हर्ज नहीं।

फिर फ़रमाता है कि ये आग जिसका वस्फ़ तुम सुन चुके, ये लोगों के लिये सरासर बाइसे इबरत व नसीहत है। फिर चाँद की रात के जाने की, सुबह के रोशन होने की क़समें खा-खाकर फ़रमाता है कि वो आग एक ज़बरदस्त और बहुत बड़ी चीज़ है, जो उस डरावे को क़ुबूल करके हक़ की राह लगना चाहे लग जाये, जो चाहे बावजूद इसके भी हक़ को पीठ ही देता रहे और इससे दूर भागता रहे और इसे रद्द करता रहे।

***

كُلُّ نَفْسٍۭ بِمَا كَسَبَتْ رَهِيْنَةٌ ﴿٣٨﴾ اِلَّآ اَصْحٰبَ الْيَمِيْنِ ﴿٣٩﴾ فِيْ جَنّٰتٍ ۛ يَتَسَآءَلُوْنَ ﴿٤٠﴾
عَنِ الْمُجْرِمِيْنَ ﴿٤١﴾ مَا سَلَكَكُمْ فِيْ سَقَرَ ﴿٤٢﴾ قَالُوْا لَمْ نَكُ مِنَ الْمُصَلِّيْنَ ﴿٤٣﴾ وَلَمْ
نَكُ نُطْعِمُ الْمِسْكِيْنَ ﴿٤٤﴾ وَكُنَّا نَخُوْضُ مَعَ الْخَآئِضِيْنَ ﴿٤٥﴾ وَكُنَّا نُكَذِّبُ بِيَوْمِ
الدِّيْنِ ﴿٤٦﴾ حَتّٰىٓ اَتٰىنَا الْيَقِيْنُ ﴿٤٧﴾ فَمَا تَنْفَعُهُمْ شَفَاعَةُ الشّٰفِعِيْنَ ﴿٤٨﴾ فَمَا لَهُمْ عَنِ
التَّذْكِرَةِ مُعْرِضِيْنَ ﴿٤٩﴾ كَاَنَّهُمْ حُمُرٌ مُّسْتَنْفِرَةٌ ﴿٥٠﴾ فَرَّتْ مِنْ قَسْوَرَةٍ ﴿٥١﴾ بَلْ يُرِيْدُ
كُلُّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ اَنْ يُّؤْتٰى صُحُفًا مُّنَشَّرَةً ﴿٥٢﴾ كَلَّا ۭ بَلْ لَّا يَخَافُوْنَ الْاٰخِرَةَ ﴿٥٣﴾ كَلَّآ
اِنَّهٗ تَذْكِرَةٌ ﴿٥٤﴾ فَمَنْ شَآءَ ذَكَرَهٗ ﴿٥٥﴾ وَمَا يَذْكُرُوْنَ اِلَّآ اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ ۭ هُوَ اَهْلُ
التَّقْوٰى وَاَهْلُ الْمَغْفِرَةِ ﴿٥٦﴾

तर्जुमा : "हर शख़्स अपने आमाल में महबूस और मुब्तला है। (38) मगर दायें हाथ वाले। (39) कि वो बहिश्तों में बैठे हुए। (40) गुनहगारों से सवाल करते होंगे। (41) कि तुम्हें दोज़ख़ में किस चीज़ ने डाला? (42) वो जवाब देंगे कि हम नमाज़ी न थे। (43) न मिस्कीनों को खाना खिलाते थे। (44) और हम बहस करने वाले इंकारियों का साथ देकर बहस-मुबाहिसे में मशग़ूल रहा करते थे। (45) और जज़ा-सज़ा के दिन को भी हम सच्चा नहीं जानते थे। (46) यहाँ तक कि हमें मौत आ गई। (47) पस उन्हें सिफ़ारिश करने वालों की सिफ़ारिश नफ़ा न देगी। (48) इन्हें क्या हो गया है कि नसीहत से मुँह मोड़ रहे हैं। (49) गोया कि वो बिदके हुए गधे हैं। (50) जो शेर से भागे हों। (51) बल्कि उनमें से हर शख़्स चाहता है कि उसे खुली हुई किताबें दी जायें। (52) हर्गिज़ ऐसा नहीं हो सकता, दरअसल ये क़यामत से बेख़ौफ़ हैं। (53) सच्ची बात तो ये है कि ये क़ुरआन एक नसीहत है। (54) अब जो चाहे इसे याद कर ले। (55) और वो तब ही याद करेंगे जब अल्लाह तआला चाहे, वो इसी लायक़ है कि उससे डरें और इस लायक़ भी कि वो बख़्शे।" (56)

हर कोई अपने आमाल का जवाबदेह होगा (आयत 38-56) : अल्लाह तआला ख़बर देता है कि हर शख़्स अपने आमाल में क़यामत के दिन जकड़ा-बन्धा होगा लेकिन जिनके दायें हाथ में आमाल नामा आया है,

वो जन्नत के बालाख़ानों में चैन से बैठे हुए जहन्नम वालों को बदतरीन अ़ज़ाबों में देखकर उनसे पूछेंगे कि तुम यहाँ कैसे पहुँच गये? वो जवाब देंगे कि हमने न तो रब की इबादत की, न मख़्लूक़ के साथ एहसान किया, बग़ैर इल्म के जो ज़बान पर चढ़ा, बकते रहे। जहाँ किसी को ऐतिराज़ करते सुना, हम भी साथ हो गये और बातें बनाने लगे और क़यामत के दिन को झुठलाते ही रहे, यहाँ तक कि मौत आ गई। यक़ीन के मआ़ना मौत के इस आयत में भी हैं, (وَاعْبُدْ رَبَّكَ حَتّٰى يَاْتِيَكَ الْيَقِيْنُ ﴿۹۹﴾) (सूरह हिज्र 15 : 99) 'मौत के वक़्त तक अल्लाह तआ़ला की इबादत में लगा रहा' हज़रत उ़समान बिन मज़ऊ़न (रज़ि.) की वफ़ात की निस्बत हदीस़ में भी यक़ीन का लफ़्ज़ आया है। (सहीह बुख़ारी, किताबुल जनाइज़, बाब अद्दुख़ूलु अ़लल मय्यिति इज़ा अदरज फ़िल्कफ़ानह : 1243)

अब अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त फ़रमाता है कि ऐसे लोगों को किसी की सिफ़ारिश और शफ़ाअ़त नफ़ा न देगी इसलिये कि शफ़ाअ़त वहाँ नाफ़ेअ़ होती है जहाँ महल्ले शफ़ाअ़त हो लेकिन जिनका दम भी कुफ़्र पर निकला हो उनके लिये शफ़ाअ़त कहाँ? वो हमेशा के लिये हाविया में गये। फिर फ़रमाया क्या बात है? कौनसी वजह है कि ये काफिर तेरी नसीहत और दावत से मुँह फेर रहे हैं और क़ुरआन व हदीस़ से इस तरह भागते हैं जैसे जंगली गधे शिकारी शेर से। फ़ारसी ज़बान में जिसे शेर कहते हैं उसे अ़रबी ज़बान में असद कहते हैं और हब्शी ज़बान में क़स्वरा कहते हैं और निबती ज़बान में औबा।

फिर फ़रमाता है कि ये मुश्रिकीन तो चाहते हैं कि उनके हर-हर शख़्स पर अलग-अलग किताब उतरे जैसे और जगह उनका मक़ूला है, (حَتّٰى نُؤْتٰى مِثْلَ مَآ اُوْتِيَ رُسُلُ اللّٰهِ) 'जब उनके पास कोई आयत आती है तो कहते हैं कि हम तो हर्गिज़ ईमान न लायेंगे जब तक कि वो न दिये जायें जो अल्लाह तआ़ला के रसूलों को दिया गया है। अल्लाह तआ़ला को बख़ूबी इल्म है कि रिसालत के क़ाबिल कौन है?' (सूरह अन्आ़म 6 : 124) और ये भी मतलब हो सकता है कि हम बग़ैर अ़मल के छुटकारा दे दिये जायें। (अत्तबरी : 24/42)

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है दरअसल वजह ये है कि उन्हें आख़िरत का ख़ौफ़ ही नहीं क्योंकि उन्हें इसका यक़ीन नहीं, इस पर ईमान नहीं बल्कि इसे झुठलाते हैं तो डरते क्यों? फिर फ़रमाया सच्ची बात तो ये है कि ये क़ुरआन सिर्फ़ नसीहत व मौइ़ज़त है जो चाहे इबरत हासिल कर ले और नसीहत पकड़ ले, जैसे फ़रमान है, (وَمَا تَشَآءُوْنَ اِلَّآ اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۲۹﴾) (सूरह तकवीर : 29) 'तुम्हारी चाहतें अल्लाह तआ़ला की चाहत की ताबेअ़ हैं।'

फिर फ़रमाया उसी की ज़ात इस क़ाबिल है कि उससे ख़ौफ़ खाया जाये और वही ऐसा है कि हर रुजूअ़ करने वाले की तौबा क़ुबूल फ़रमा ले। मुस्नद अहमद में है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने इस आयत की तिलावत की और फ़रमाया, 'तुम्हारा रब फ़रमाता है कि मैं इसका हक़दार हूँ कि मुझसे डरा जाये और मेरे साथ दूसरा माबूद न ठहराया जाये, जो मेरे साथ शरीक बनाने से बच गया, तो वो मेरी बख़्शिश का मुस्तहिक़ हो गया।' (ज़ईफ़:अहमद:3/143, तिर्मिज़ी, किताब तफ़्सीरुल क़ुरआन,:3328, इब्ने माजह:4299, मुस्नद अबी यअ़ला:3317, हाकिम:2/508, इसकी सनद में सुहैल बिन अ़ब्दुल्लाह ज़ईफ़ रावी है। अल्मीज़ान:2/244, हदीस़ नम्बर:3605)

अल्लाह तआ़ला के एहसान से सूरह मुद्दस्सिर की तफ़्सीर भी ख़त्म हुई।

FLOW CHART
तरतीबी नक्श-ए-रब्त

MACRO-STRUCTURE
नज़्मे-जली

सूरह क़ियामह - 75

आयात : 40, मक्की, पैराग्राफ : 7

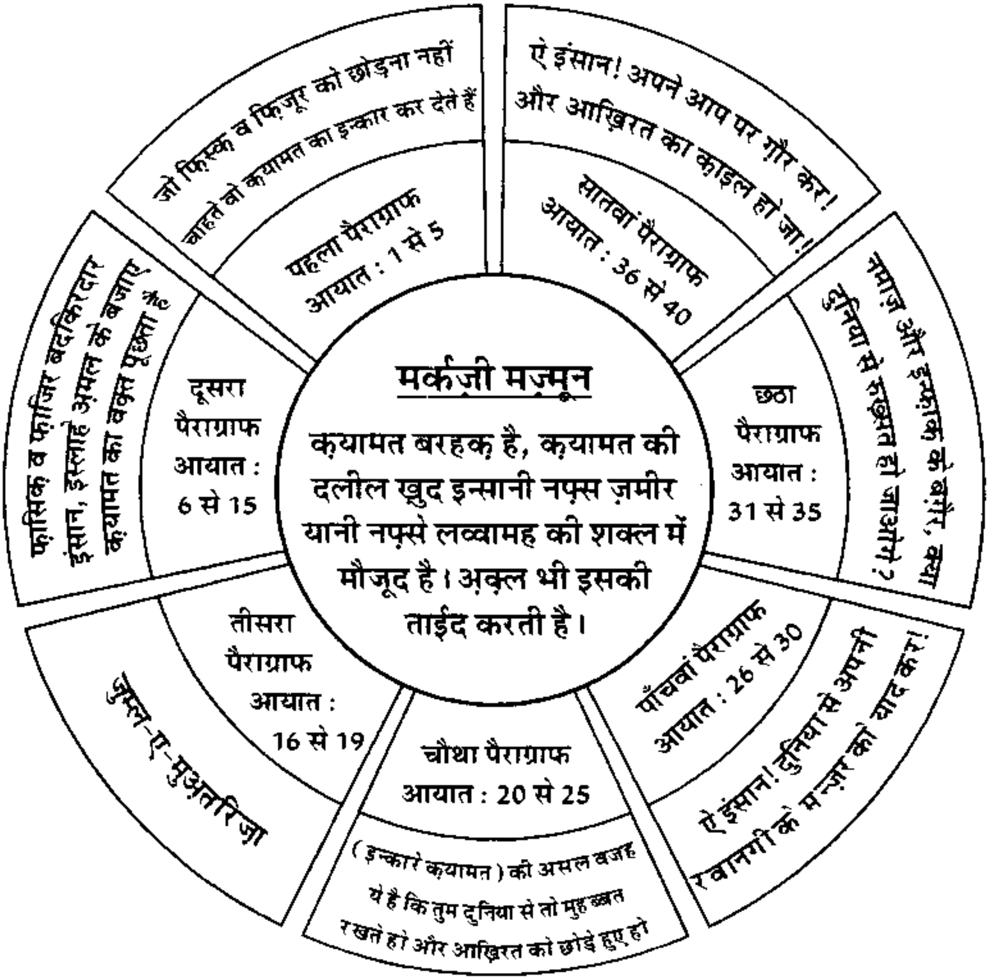

तफ़्सीर सूरह क़ियामह

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

तर्जुमा : ''शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है।''

***

لَآ اُقْسِمُ بِيَوْمِ الْقِيٰمَةِ ① وَلَآ اُقْسِمُ بِالنَّفْسِ اللَّوَّامَةِ ② اَيَحْسَبُ الْاِنْسَانُ
اَلَّنْ نَّجْمَعَ عِظَامَهٗ ③ بَلٰى قٰدِرِيْنَ عَلٰٓى اَنْ نُّسَوِّيَ بَنَانَهٗ ④ بَلْ يُرِيْدُ الْاِنْسَانُ
لِيَفْجُرَ اَمَامَهٗ ⑤ يَسْـَٔلُ اَيَّانَ يَوْمُ الْقِيٰمَةِ ⑥ فَاِذَا بَرِقَ الْبَصَرُ ⑦ وَخَسَفَ الْقَمَرُ ⑧
وَجُمِعَ الشَّمْسُ وَالْقَمَرُ ⑨ يَقُوْلُ الْاِنْسَانُ يَوْمَىِٕذٍ اَيْنَ الْمَفَرُّ ⑩ كَلَّا لَا وَزَرَ ⑪
اِلٰى رَبِّكَ يَوْمَىِٕذِ الْمُسْتَقَرُّ ⑫ يُنَبَّؤُا الْاِنْسَانُ يَوْمَىِٕذٍ بِمَا قَدَّمَ وَاَخَّرَ ⑬ بَلِ
الْاِنْسَانُ عَلٰى نَفْسِهٖ بَصِيْرَةٌ ⑭ وَّلَوْ اَلْقٰى مَعَاذِيْرَهٗ ⑮

तर्जुमा : ''मैं क़सम खाता हूँ क़यामत के दिन की। (1) और क़सम खाता हूँ उस नफ़्स की जो मलामत करने वाला हो। (2) क्या इंसान ये ख़्याल करता है कि हम उसकी हड्डियाँ जमा करेंगे ही नहीं। (3) हाँ करेंगे, हम तो क़ादिर हैं कि उसकी उंगलियों की पोर-पोर तक दुरुस्त कर दें। (4) बल्कि इंसान तो चाहता है कि आगे-आगे नाफ़रमानियाँ करता जाये। (5) पूछता है कि क़यामत का दिन कब आयेगा? (6) पस जिस वक़्त कि निगाह पथरा जाये। (7) और चाँद बेनूर हो जाये। (8) और सूरज और चाँद जमा कर दिये जायें। (9) उस दिन इंसान कहेगा कि

आज भागने की जगह कहाँ है? (10) नहीं-नहीं कोई पनाह नहीं। (11) आज तो तेरे परवरदिगार की तरफ़ ही क़रारगाह है। (12) आज इंसान को उसके आगे भेजे हुए और पीछे छोड़े हुए से आगाह किया जायेगा। (13) बल्कि इंसान ख़ुद अपने ऊपर आप हुज्जत है। (14) गो तमाम उ़ज़्र सामने डाल दे।" (15)

अल्लाह तआला क़सम उठाता है (आयत 1-15) : ये कई बार बयान हो चुका है कि जिस चीज़ पर क़सम खाई जाये अगर वो रद्द करने की चीज़ हो तो क़सम से पहले ला कलिमा नफ़ी की ताईद के लिये लाना जाइज़ होता है। यहाँ क़यामत के होने पर और जाहिलों के उस क़ौल की तर्दीद पर कि क़यामत न होगी, क़सम खाई जा रही है। तो फ़रमाता है, क़सम है क़यामत के दिन की और क़सम है मलामत करने वाली जान की। हज़रत हसन (रह.) तो फ़रमाते हैं कि क़यामत की क़सम है और मलामत करने वाले नफ़्स की क़सम नहीं है। हज़रत क़तादा (रह.) फ़रमाते हैं कि दोनों की क़सम है। (अत्तबरी : 24/48)

हसन और आ़रज (रह.) की क़िरअत ला उक़्सिमु बियौमिल् क़ियामह है। इससे भी हज़रत हसन (रह.) के क़ौल की ताईद होती है इसलिये कि उनके नज़दीक पहले की क़सम है और दूसरे की नहीं। लेकिन सहीह क़ौल यही है कि दोनों की क़सम खाई है जैसे कि हज़रत क़तादा (रह.) का फ़रमान है, इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) और सईद बिन जुबैर से भी यही मरवी है और इमाम इब्ने जरीर (रह.) का मुख़्तार क़ौल भी यही है। यौमे क़यामत को तो हर शख़्स जानता ही है।

नफ़्से लव्वामा की क़सम : नफ़्से लव्वामा की तफ़्सीर में हज़रत हसन बसरी (रह.) से मरवी है कि इससे मुराद मोमिन का नफ़्स है कि वो हर वक़्त अपने आपको मलामत ही करता रहता है कि यूँ क्यों कह दिया? ये क्यों खा लिया? ये ख़्याल दिल में क्यों आया? हाँ! फ़ासिक़-फ़ाजिर ग़ाफ़िल होता है उसे क्या पड़ी है जो अपने नफ़्स को रोके। (तफ़्सीर क़ुर्तुबी : 19/93)

ये भी मरवी है कि ज़मीन व आसमान की तमाम मख़्लूक़ अपने आपको मलामत करेगी, ख़ैर वाले ख़ैर की कमी पर और शर वाले शर के सरज़द हो जाने पर। ये भी कहा गया है कि इसे मुराद मज़्मूम नफ़्स है जो नाफ़रमान हो, फ़ौतशुदा पर नादिम होने वाला और उस पर मलामत करने वाला। इमाम इब्ने जरीर (रह.) फ़रमाते हैं कि ये सब अक़्वाल क़रीब-क़रीब हैं। मतलब ये है कि ये वो नफ़्स वाला है जो नेकी की कमी पर बुराई के होने पर अपने नफ़्स को मलामत करता है और फ़ौतशुदा पर नदामत करता है।

फिर फ़रमाता है कि इंसान ये सोचे हुए है कि हम क़यामत के दिन उसकी हड्डियों के जमा करने पर क़ादिर न होंगे। ये तो निहायत ग़लत ख़्याल है। हम इसे मुतफ़र्रिक़ जगह से जमा करके दोबारा खड़ा करेंगे और उसकी पोर-पोर बना देंगे। इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) वग़ैरह फ़रमाते हैं यानी हम क़ादिर हैं कि उसे ऊँट या घोड़े के तलवे की तरह बना दें। इमाम इब्ने जरीर (रह.) फ़रमाते हैं यानी दुनिया में भी अगर हम चाहते उसे ऐसा कर देते।

आयत के लफ़्ज़ों से तो बज़ाहिर यही मालूम होता है कि क़ादिरीन हाल है नज्मड़ से। यानी इंसान क्या ये गुमान करता है कि हम उसकी हड्डियाँ जमा न करेंगे। हाँ-हाँ! हम अन्क़रीब जमा कर देंगे हालांकि हमें उनके जमा करने की क़ुदरत है। बल्कि अगर हम चाहें तो जितना ये था उसे भी कुछ ज़्यादा बनाकर उसे उठायें, उसकी उंगलियों के सिरे बराबर करके, इब्ने क़ुतैबा और ज़ुजाज के क़ौल के यही मआना हैं।

तौबा की उम्मीद पर गुनाह : फिर फ़रमाता है कि इंसान अपने आगे फ़िस्क़ व फ़ुजूर करना चाहता है यानी क़दम-बक़दम बढ़ रहा है उम्मीदें बांधे हुए है, कहता जाता है कि गुनाह कर तो लूँ तौबा भी हो जायेगी। क़यामत के दिन से जो उसके आगे है कुफ़्र करता है वो गोया अपने सर पर सवार होकर आगे बढ़ रहा है, हर वक़्त यही पाया जाता है कि एक-एक अपने नफ़्स को अल्लाह तआला की मआसियत की तरफ़ बढ़ाता जाता है मगर जिन पर रब का रहम है। अक्सर सलफ़ का क़ौल इस आयत की तफ़्सीर में यही है कि गुनाहों में जल्दी करता है और तौबा में ताख़ीर करता है। हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) फ़रमाते हैं यौमे हिसाब से इंकारी है। इब्ने ज़ैद (रह.) भी यही कहते हैं और यही ज़्यादा ज़ाहिर मुराद है क्योंकि इसके बाद ही है कि वो पूछता है क़यामत कब होगी? उसका ये सवाल भी बतौरे इंकार के है ये तो जानता है कि क़यामत का आना मुहाल (असम्भव) है। जैसे और जगह है, (وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَٰذَا الْوَعْدُ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ۝) (सूरह सबा 34 : 29) 'कहते हैं कि अगर तुम सच्चे हो तो बता दो कि क़यामत कब आयेगी? उनसे कह दे कि उसका एक दिन मुक़र्रर है जिससे न तुम एक साअत आगे बढ़ सकोगे न पीछे हट सकोगे।' यहाँ भी फ़रमाता है कि जब आँखें पथरा जायेंगी, जैसे और जगह (لَا يَرْتَدُّ إِلَيْهِمْ طَرْفُهُمْ) (सूरह इब्राहीम 14 : 43) 'पलकें झपकेंगी नहीं बल्कि रुअब व दहशत के मारे आँखें फाड़-फाड़कर इधर-उधर देखते रहेंगे।' बरिक़ की दूसरी क़िरअत बरक़ भी है मआना क़रीब-क़रीब हैं और चाँद की रोशनी बिल्कुल जाती रहेगी और सूरज-चाँद जमा कर दिये जायेंगे यानी दोनों को बेनूर करके लपेट लिया जायेगा। जैसे फ़रमाया है, (إِذَا الشَّمْسُ كُوِّرَتْ ۝ وَإِذَا النُّجُومُ انكَدَرَتْ ۝) (सूरह तकवीर 81 : 1-2) हज़रत इब्ने मसऊद (रज़ि.) की क़िरअत में व जुमिअ बैनश्शम्सि वल्क़मर है, इंसान जब ये परेशानी शिद्दत हों घबराहट और इन्तिज़ामे आलम की ये ख़तरनाक हालत देखेगा तो भागता जायेगा और कहेगा कि जाए पनाह भागने की जगह कहाँ है? अल्लाह तआला की तरफ़ से जवाब मिलेगा कि कोई पनाह नहीं। रब के सामने और उसके पास ठहरने के सिवा कोई चाराए कार नहीं। जैसे और जगह है, (مَا لَكُم مِّن مَّلْجَإٍ يَوْمَئِذٍ وَمَا لَكُم مِّن نَّكِيرٍ ۝) (सूरह शूरा 42 : 47) 'आज न तो कोई जाए पनाह है न ऐसी जगह कि वहाँ जाकर तुम अन्जान और बेपहचान बन जाओ। आज हर शख़्स को उसके अगले-पिछले, नये-पुराने छोटे-बड़े आमाल से मुत्तलअ किया जायेगा।' जैसे फ़रमान है, (وَوَجَدُوا مَا عَمِلُوا حَاضِرًا) (सूरह कहफ़ 18 : 49) 'जो किया था मौजूद पा लेंगे और तेरा रब किसी पर ज़ुल्म न करेगा।' इंसान अपने आपको बख़ूबी जानता है, अपने आमाल का ख़ुद आइना है गो इंकार करे और उज़्र-मअज़्रत पेश करता फिरे।'

जैसे फ़रमान है, (اقْرَأْ كِتَابَكَ كَفَىٰ بِنَفْسِكَ الْيَوْمَ عَلَيْكَ حَسِيبًا ۝) (सूरह बनी इस्राईल 17 : 14) 'अपना नामाए आमाल ख़ुद पढ़ ले और अपने आपको आप ही जाँच ले।' उसके कान-आँख,

हाथ-पाँव और दीगर आज़ा ही उस पर शहादत (गवाही) देने को काफ़ी हैं, लेकिन अफ़सोस कि ये दूसरों के ऐबों और नुक़सानों को देखता है और अपने कीड़े चुनने से ग़ाफ़िल है। कहा जाता है कि तौरात में लिखा हुआ है कि ऐ इब्ने आदम! तू दूसरों की आँखों का तो तिनका देखता है और अपनी आँख का शहतीर भी तुझे दिखाई नहीं देता? क़यामत के दिन गो इंसान फ़िज़ूल बहाने बनाये और झूठी दलीलें दे और बेकार उ़ज़्र पेश करे, एक भी क़ुबूल न किया जायेगा। इस आयत के एक मआना ये भी किये गये हैं कि वो पर्दे डाले। अहले यमन पर्दे को उ़ज़ार कहते हैं। लेकिन सहीह मआना ऊपर वाले हैं, जैसे और जगह है कि कोई मअ़कूल उ़ज़्र न पाकर अपने शिर्क का सिरे से इंकार ही कर देंगे कि अल्लाह तआ़ला की क़सम हम मुश्रिक थे ही नहीं। और जगह है कि क़यामत के दिन अल्लाह तआ़ला के सामने भी क़समें खा-खाकर सच्चा होना चाहेंगे जैसे दुनिया में तुम्हारे सामने उनकी हालत है लेकिन अल्लाह तआ़ला पर तो उनका झूठ ज़ाहिर है गो वो अपने आपको कुछ भी समझते रहें। ग़र्ज़ उ़ज़्र-मअ़ज़रत उन्हें क़यामत के दिन कुछ कारआमद न होगी। जैसे और फ़रमाया, (لَا يَنْفَعُ الظّٰلِمِيْنَ مَعْذِرَتُهُمْ) (सूरह मोमिन 40 : 52) 'ज़ालिमों को उनकी मअ़ज़्रत कुछ कार आमद न होगी, ये अपने शिर्क के साथ ही अपनी तमाम बद आमालियों का इंकार कर देंगे लेकिन बेसूद होगा।'

***

لَا تُحَرِّكْ بِهٖ لِسَانَكَ لِتَعْجَلَ بِهٖ ﴿۱۶﴾ اِنَّ عَلَيْنَا جَمْعَهٗ وَقُرْاٰنَهٗ ﴿۱۷﴾ فَاِذَا قَرَاْنٰهُ
فَاتَّبِعْ قُرْاٰنَهٗ ﴿۱۸﴾ ثُمَّ اِنَّ عَلَيْنَا بَيَانَهٗ ﴿۱۹﴾ كَلَّا بَلْ تُحِبُّوْنَ الْعَاجِلَةَ ﴿۲۰﴾ وَتَذَرُوْنَ
الْاٰخِرَةَ ﴿۲۱﴾ وُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍ نَّاضِرَةٌ ﴿۲۲﴾ اِلٰى رَبِّهَا نَاظِرَةٌ ﴿۲۳﴾ وَوُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍۢ بَاسِرَةٌ ﴿۲۴﴾
تَظُنُّ اَنْ يُّفْعَلَ بِهَا فَاقِرَةٌ ﴿۲۵﴾

तर्जुमा : "ऐ नबी! तुम क़ुरआन को जल्दी याद करने के लिये अपनी ज़बान को हरकत न दो। (16) इसका जमा करना और पढ़ना हमारे ज़िम्मे है। (17) हम जब इसे पढ़ें तो तू इसके पढ़ने के दरपे रह। (18) फिर इसका वाज़ेह कर देना हमारे ज़िम्मे है। (19) नहीं-नहीं! तुम तो दुनिया की मुहब्बत रखते हो। (20) और आख़िरत को छोड़ बैठे हो। (21) उस रोज़ बहुत से चेहरे तरो-ताज़ा और बारोनक़ होंगे। (22) अपने रब की तरफ़ देखते होंगे। (23) और कितने चेहरे उस दिन बदरोनक़ और उदास होंगे। (24) समझते होंगे कि उनके साथ कमर तोड़ देने वाला मामला किया जायेगा।" (25)

आँहज़रत का क़ुरआन पढ़ना और याद करना (आयत : 16-25) : यहाँ अल्लाह अ़ज़्ज़ व जल्ल अपने नबी (ﷺ) को तालीम देता है कि फ़रिश्ते से वह्य किस तरह लें, आँहुज़ूर (ﷺ) उसके लेने में बहुत जल्दी करते थे और क़िरअत में फ़रिश्ते के बिल्कुल साथ-साथ रहते थे। पस अल्लाह अ़ज़्ज़ व जल्ल हुक्म फ़रमाता है कि जब फ़रिश्ता वह्य लेकर आये तो आप सुनते रहें। फिर जिस डर से आप ऐसा करते थे उसकी बाबत तसल्ली देता है कि आपके सीने में उसे जमा कर देना और बरवक़्त आप की ज़बान से उसका पढ़ा देना ये हमारे ज़िम्मे है इसी तरह उसका वाज़ेह कराना और तफ़्सीर और बयान आप से कराने के ज़िम्मेदार भी हम ही हैं। पस पहली हालत तो याद कराना दूसरी तिलावत कराना तीसरी तफ़्सीर मज़्मून और तौज़ीह मतलब कराना तीनों की किफ़ालत अल्लाह तआला ने अपने ज़िम्मे ली, जैसे और जगह है, (وَلَا تَعۡجَلۡ بِالۡقُرۡاٰنِ مِنۡ قَبۡلِ اَنۡ يُّقۡضٰٓى اِلَيۡكَ وَحۡيُهٗ ۖ وَقُلْ رَّبِّ زِدۡنِىۡ عِلۡمًا ﴿۱۱۴﴾) (सूरह ताहा 20 : 114) 'जब तक तेरे पास वह्य पूरी न आये तू पढ़ने में जल्दी न किया कर। हम से दुआ माँग कि मेरे रब! मेरे इल्म को ज़्यादा करता रह।' फिर फ़रमाता है कि उसे तेरे सीने में जमा करना और उसे तुझसे पढ़वाना हमारे ऊपर है जब हम उसे पढ़ें यानी जब हमारा नाज़िल करदा फ़रिश्ता उसे तिलावत करे तो तू सुन ले जब वो पढ़ चुके तब तू पढ़ हमारी मेहरबानी से तुझे पूरा याद निकलेगा, उतना ही नहीं बल्कि हिफ़्ज़ कराने तिलावत कराने के बाद हम तुझे उसके मआनी-मतालिब तबईन व तौज़ीह के साथ समझा देंगे ताकि हमारी असली मुराद और साफ़ शरीअ़त से तो पूरी तरह आगाह हो जाये।

मुस्नद में है कि हुज़ूर (ﷺ) को इससे पहले वह्य लेने में सख़्त तकलीफ़ होती थी इस डर के मारे कि कहीं में भूल न जाऊँ, फ़रिश्ते के साथ-साथ पढ़ते जाते थे और आप (ﷺ) के होंट मुबारक हिलते जाते थे। इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) रावी हदीस़ ने अपने होंट हिलाकर दिखाया कि इस तरह और उनके शागिर्द सईद (रह.) ने भी अपने उस्ताद की तरह होंट हिलाकर अपने शागिर्द को दिखाये। इस पर ये आयत उतरी कि इतनी जल्दी न करो और होंट न हिलाओ। उसे आपके सीने में जमा करना और आप (ﷺ) की ज़बान से उसकी तिलावत कराना हमारे ज़िम्मा है जब हम उसे पढ़ें तो आप सुनिये और चुप रहिये। जिब्रईल के चले जाने के बाद उन्ही की तरह उनका पढ़ाया हुआ पढ़ाना भी हमारे ज़िम्मा है। (अहमद : 1/343, सहीह बुख़ारी, किताब बदउल वह्य, बाब कैफ़ कान बदउल वह्य इला रसूलिल्लाह, सहीह मुस्लिम : 448, तिर्मिज़ी : 3229)

बुख़ारी में ये भी है कि फिर वह्य उतरती तो आप (ﷺ) नज़रें नीची कर लेते और जब वह्य उतर चुकती तो आप (ﷺ) पढ़ते। (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरतुल क़ियामह फ़इज़ा क़रअ्नाहु फ़त्तबिअ् क़ुरआनह : 4929)

इब्ने अबी हातिम में भी बरिवायत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ये हदीस़ मरवी है और बहुत से मुफ़स्सिरीन सलफ़-सालेहीन ने यही फ़रमाया है। ये भी मरवी है कि हुज़ूर (ﷺ) हर वक़्त तिलावत फ़रमाया करते थे कि ऐसा न हो कि मैं भूल जाऊँ, इस पर ये आयतें उतरीं। (ज़ईफ़ : अबू यहया इस्माईल बिन इब्राहीम तैमी ज़ईफ़ रावी है।)

हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) और अ़तिया औफ़ी (रह.) फ़रमाते हैं, इसका बयान हम पर है यानी

हलाल-हराम का वाज़ेह करना। हज़रत क़तादा (रह.) का क़ौल भी यही है। फिर फ़रमान होता है कि उन काफ़िरों को क़यामत के इंकार करने और अल्लाह तआला की पाक किताब को न मानने और अल्लाह तआला के रसूल की इताअत न करने पर आमादा करने वाली चीज़ हुब्बे दुनिया (दुनिया की मुहब्बत) और तर्के आख़िरत है, हालांकि आख़िरत का दिन बड़ी अहमियत वाला दिन है। (फ़) उस दिन बहुत से लोग तो वो होंगे जिनके चेहरे हश्शाश-बश्शाश, तरो-ताज़ा, ख़ुश व ख़ुर्रम होंगे और अपने रब के दीदार से मुशर्रफ़ हो रहे होंगे जैसे कि सहीह बुख़ारी में है, 'अन्क़रीब तुम अपने रब को साफ़-साफ़ खुल्लम-खुल्ला अपने सामने देखोगे।' (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तौहीद, बाब क़ौलुल्लाहि तआला वुजूहुंय्-यौमइज़िन नाज़िरह : 7435) बहुत सी सहीह अहादीस़ से मुतवातिर सनदों से जो अइम्म-ए-हदीस़ ने अपनी किताबों में वारिद की हैं साबित हो चुका है कि ईमान वाले अपने रब के दीदार से क़यामत के दिन मुशर्रफ़ होंगे, इन अहादीस़ को न तो कोई हटा सकेगा, न उनका कोई इंकार कर सकेगा।

सहीह बुख़ारी, सहीह मुस्लिम में हज़रत अबू सईद और हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से मरवी है कि लोगों ने पूछा, ऐ अल्लाह के रसूल! क्या हम अपने रब को क़यामत के दिन देखेंगे? आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'सूरज और चाँद को जब कि आसमान साफ़ बेअब्र (बादल न) हो देखने में तुम्हें कोई परेशानी और भीड़-भाड़ होती है? उन्होंने कहा, नहीं। आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'इसी तरह तुम अल्लाह तआला को देखोगे।' (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तौहीद, बाब क़ौलुल्लाहि तआला वुजूहुंय्-यौमइज़िन नाज़िरह : 7437, सहीह मुस्लिम : 182, अहमद : 2/293, इब्ने हिब्बान : 7429)

सहीह बुख़ारी व सहीह मुस्लिम में ही हज़रत जरीर (रज़ि.) से मरवी है कि नबी (ﷺ) ने चौदहवीं रात के चाँद को देखा और फ़रमाया, 'तुम इसी तरह अपने रब को देखोगे जिस तरह इस चाँद को देख रहे हो, पस अगर तुम से हो सके तो सूरज निकलने से पहले की नमाज़ (यानी सुबह की नमाज़) और सूरज डूबने से पहले की नमाज़ (यानी असर की नमाज़) में किसी तरह की सुस्ती न करो।' (सहीह बुख़ारी, हवाला साबिक़ : 7434, सहीह मुस्लिम : 633, इब्ने हिब्बान : 7443)

हज़रत अबू मूसा (रज़ि.) से इन ही दोनों मुतबर्रक किताबों में मरवी है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'दो जन्नतें सोने की हैं वहाँ के बर्तन भाण्डे और हर चीज़ सोने की है और दो जन्नतें चाँदी की हैं उनके बर्तन भाण्डे और हर चीज़ चाँदी ही की है उन जन्नतियों और अल्लाह तआला के दीदार के दरम्यान सिवाय किब्रियाई की चादरों के और कुछ आड़ नहीं।' ये जन्नते अद्न का ज़िक्र है। (सहीह बुख़ारी, हवाला साबिक़ : 7444, सहीह मुस्लिम : 180, तिर्मिज़ी : 2528, इब्ने माजह : 186, अहमद : 4/411)

सहीह मुस्लिम की हदीस़ में है, 'जब जन्नती जन्नत में पहुँच जायेंगे तो अल्लाह तआला उनसे पूछेगा कि कुछ चाहते हो कि बढ़ा दूँ? वो कहेंगे, अल्लाह तआला तूने हमारे चेहरे सफ़ेद नूरानी कर दिये हमें जन्नत में पहुँचा दिया, जहन्नम से बचा लिया, अब हमें किस चीज़ की ज़रूरत है? उसी वक़्त हिजाब हटा दिये जायेंगे

और उन अहले जन्नत की निगाहें जमाले बारी से मुनव्वर होंगी।' इसमें उन्हें जो सुरूर व लज़्ज़त हासिल होगी, वो किसी चीज़ में हासिल न होगी। सबसे ज़्यादा महबूब उन्हें दीदारे बारी होगा, उसी को इस आयत में लफ़्ज़ ज़ियादह से ताबीर किया गया है। फिर आप (ﷺ) ने ये आयत पढ़ी (لِلَّذِيْنَ اَحْسَنُوا الْحُسْنٰى وَ زِيَادَةٌ) (सूरह यूनुस 10 : 26) 'एहसान करने वालों को जन्नत भी मिलेगी और दीदारे इलाही भी।' (सहीह मुस्लिम, किताबुल ईमान, बाब इस्बातु रुअ्यतिल मुअ्मिनीन फ़िल्आख़िरति रब्बहुम सुब्हानहू व तआला : 181)

सहीह मुस्लिम की हज़रत जाबिर (रज़ि.) वाली रिवायत में है, 'अल्लाह तआला मोमिनों पर क़यामत के मैदान में मुस्कुराता हुआ तजल्ली फ़रमायेगा।' (सहीह मुस्लिम, किताबुल ईमान, बाब अदना अहलिल जन्नति मन्ज़िलतन फ़ीहा : 191)

पस मालूम हुआ कि ईमानदार क़यामत के अरसात में और जन्नतों में दीदारे इलाही से मुशर्रफ़ किये जायेंगे। मुस्नद अहमद की हदीस में है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़रमाते हैं, 'सबसे हल्के दर्जे का जन्नती अपनी मिल्कियत को दो हज़ार साल देखता रहेगा दूर की और नज़दीक की चीज़ें यकसाँ निगाह में होगी हर तरफ़ और हर जगह उसी की बीवियाँ और ख़ादिम नज़र आयेंगे और आला दर्जे के जन्नती एक-एक दिन में दो-दो मर्तबा अल्लाह तआला के बुज़ुर्ग चेहरे को देखेंगे।' (ज़ईफ़ : तिर्मिज़ी, किताब तफ़्सीरुल क़ुरआन, बाब व मिन सूरतिल क़ियामह : 3330, अहमद : 2/13, मज्मउज़्ज़वाइद : 10/401, मुस्नद अबी यअला : 5712, अश्शरीअतु लिल्आजुरी : 631, अल्बअ्सु लिल्बैहक़ी : 477, इसकी सनद में सुवेर बिन अबी फ़ाख़्ता ज़ईफ़ रावी है। अत्तक़रीब : 1/120, 54) ये हदीस बरिवायत हज़रत इब्ने उमर (रज़ि.) मरफ़ूअन भी मरवी है।

हमें डर है कि अगर इस क़िस्म की तमाम हदीसें और रिवायतें और उनकी सनदें और उनके मुख़्तलिफ़ अल्फ़ाज़ यहाँ जमा करेंगे तो मज़्मून बहुत तवील हो जायेगा, बहुत ही सहीह और हसन हदीसें बहुत सी मुस्नद और सुनन की किताबों में मरवी हैं जिनमें की अक्सर हमारी इस तफ़्सीर में मुतफ़र्रिक़ मक़ामात पर आ भी गई हैं। हाँ तौफ़ीक़ अल्लाह तआला के हाथ में है। अल्लाह तआला का शुक्र है कि इस मसले में यानी अल्लाह तआला का दीदार मोमिनों को क़यामत के दिन नसीब होने में सहाबा (रज़ि.) ताबेईन (रह.) और सलफ़े उम्मत का इत्तिफ़ाक़ और इज्माअ है।

अइम्म-ए-इस्लाम और काइदीन (रह.) सब इस पर मुत्तफ़िक़ हैं, जो लोग इसकी तावील करते हैं और कहते हैं कि मुराद इससे अल्लाह तआला की नेमतों को देखना है, जैसे मुजाहिद और अबू सालेह (रह.) से तफ़्सीर इब्ने जरीर में मरवी है कि उनका क़ौल हक़ से दूर और सरासर तकलीफ़ से मामूर है। उनके पास इस आयत का क्या जवाब है जहाँ बदकारों की निस्बत फ़रमाया गया है (كَلَّآ اِنَّهُمْ عَنْ رَّبِّهِمْ يَوْمَئِذٍ لَّمَحْجُوْبُوْنَ ۞) (सूरह मुतफ़्फ़िफ़ीन 83 : 15) 'फ़ाजिर क़यामत के दिन अपने परवरदिगार से पर्दे में कर दिये जायेंगे।' हज़रत इमाम शाफ़ई (रह.) फ़रमाते हैं कि फ़ाजिरों के दीदारे इलाही से महरूम रहने का साफ़ मतलब यही है कि अबरार यानी नेककार लोग दीदारे इलाही से सैराब किये जायेंगे और मुतवातिर अहादीस से साबित हो चुका है

और इसी पर इस आयत की रवानी अल्फ़ाज़ साफ़ दलालत करती है कि ईमानदार दीदारे बारी से महफ़ूज़ होंगे। हज़रत हसन (रह.) फ़रमाते हैं कि ये चेहरे हुस्न व ख़ूबी वाले होंगे क्योंकि दीदारे रब पर उनकी निगाहें पड़ती होंगी, फिर भला ये मुनव्वर व हसीन क्यों न हों। और बहुत से मुँह उस दिन बिगड़े हुए होंगे, बदशक्ल हो रहे होंगे, बेरोनक़ और उदास होंगे, उन्हें यक़ीन होगा कि हम पर अब कोई हलाकत और अल्लाह तआला की पकड़ आई, अभी हमें जहन्नम में जाने का हुक्म हुआ। जैसे और जगह है, (يَوْمَ تَبْيَضُّ وُجُوْهٌ وَّ تَسْوَدُّ وُجُوْهٌ) (सूरह आले इमरान 3 : 106) 'उस दिन कुछ चेहरे गोरे-चिट्टे ख़ूबसूरत और हसीन होंगे और कुछ काले मुँह वाले होंगे।' और जगह है, (وُجُوْهٌ يَّوْمَىِٕذٍ خَاشِعَةٌ ۝) (सूरह ग़ाशिया 88 : 2) 'क़यामत के दिन बहुत से चेहरे ख़ौफ़ज़दा, दहशत ज़दा और डर वाले बदरोनक़ और ज़लील होंगे जो अमल करते रहे तकलीफ़ उठाते रहे, लेकिन आज भड़कती हुई आग में जा घुसे।'

फिर फ़रमाया, (وُجُوْهٌ يَّوْمَىِٕذٍ نَّاعِمَةٌ ۝) (सूरह ग़ाशियह 88 : 8) 'कुछ मुँह उस दिन नेमतों वाले ख़ुश व ख़ुर्रम चमकीले शादाँ व फ़रहाँ भी होंगे, जो अपने गुज़िश्ता आमाल से ख़ुश होंगे और बुलंद व बाला जन्नतों में इक़ामत रखते होंगे। इसी मज़मून की और भी बहुत सी आयतें हैं।

***

كَلَّآ اِذَا بَلَغَتِ التَّرَاقِيَ ۝٢٦ وَقِيْلَ مَنْ ٜ رَاقٍ ۝٢٧ وَّظَنَّ اَنَّهُ الْفِرَاقُ ۝٢٨ وَالْتَفَّتِ
السَّاقُ بِالسَّاقِ ۝٢٩ اِلٰى رَبِّكَ يَوْمَىِٕذِ الْمَسَاقُ ۝٣٠ فَلَا صَدَّقَ وَلَا صَلّٰى ۝٣١ وَلٰكِنْ
كَذَّبَ وَتَوَلّٰى ۝٣٢ ثُمَّ ذَهَبَ اِلٰٓى اَهْلِهٖ يَتَمَطّٰى ۝٣٣ اَوْلٰى لَكَ فَاَوْلٰى ۝٣٤ ثُمَّ اَوْلٰى لَكَ
فَاَوْلٰى ۝٣٥ اَيَحْسَبُ الْاِنْسَانُ اَنْ يُّتْرَكَ سُدًى ۝٣٦ اَلَمْ يَكُ نُطْفَةً مِّنْ مَّنِيٍّ يُّمْنٰى ۝٣٧
ثُمَّ كَانَ عَلَقَةً فَخَلَقَ فَسَوّٰى ۝٣٨ فَجَعَلَ مِنْهُ الزَّوْجَيْنِ الذَّكَرَ وَالْاُنْثٰى ۝٣٩ اَلَيْسَ
ذٰلِكَ بِقٰدِرٍ عَلٰٓى اَنْ يُّحْيِۦَ الْمَوْتٰى ۝٤٠

तर्जुमा : "नहीं-नहीं जब रूह हंसली तक पहुँचेगी। (26) और कहा जायेगा कि कोई झाड़-फूंक करने वाला है? (27) और यक़ीन हो जायेगा कि ये वक़्ते जुदाई है। (28) और पिण्डली

से पिण्डली लिपट जायेगी। (29) आज तेरे परवरदिगार की तरफ़ चलना है। (30) उसने न तो तस्दीक़ की न नमाज़ अदा की। (31) बल्कि झुठलाया और रूगर्दानी की। (32) फिर अपने घर वालों के पास इतराता हुआ गया। (33) अफ़सोस है तुझ पर हसरत है तुझ पर। (34) वाय है और ख़राबी है तेरे लिये। (35) क्या इंसान ये समझता है कि उसे बेकार छोड़ दिया जायेगा। (36) क्या वो एक गाढ़े पानी का क़तरा न था जो टपकाया गया था। (37) फिर वो लहू की फुटकी हो गया, फिर अल्लाह तआला ने उसे पैदा किया और दुरुस्त बना दिया। (38) फिर उससे जोड़े यानी नर व मादा बनाये। (39) क्या अल्लाह तआला इस बात पर क़ादिर नहीं कि मुर्दे को ज़िन्दा कर दे?" (40)

आलमे नज़अ का ज़िक्र (आयत : 26-40) : यहाँ पर मौत का और सकरात के आलम का बयान हो रहा है, अल्लाह तआला हमें उस वक़्त हक़ पर साबित क़दम रखे। कल्ला को अगर यहाँ डांट के मआना में लिया जाये तो ये मआना होंगे कि ऐ इब्ने आदम! तू जो मेरी ख़बरों को झुठलाता है वो दुरुस्त नहीं बल्कि उनके मुक़द्दमात तो तू रोज़मर्रा खुल्लम-खुल्ला देख रहा है। और अगर इस लफ़्ज़ को हक़्क़ा के मआना में लें तो मतलब और ज़्यादा ज़ाहिर है यानी ये बात यक़ीनी है कि जब तेरी रूह तेरे जिस्म से निकलने लगे और तेरे नरख़रे तक पहुँच जाये। तराक़िय जमा है तरक़ुवतुन की, उन हड्डियों को कहते हैं जो सीने पर और मूण्ढों के दरम्यान में हैं जिसे हांस की हड्डी कहते हैं जैसे दूसरी जगह है, फ़लौला इज़ा बलग़तिल् हुल्क़ूम से सादिक़ीन तक फ़रमाया है। यानी जब कि रूह हलक़ तक पहुँच जाये और तुम देख रहे हो और हम तुमसे भी ज़्यादा उसके क़रीब हैं लेकिन तुम नहीं देख सकते। पस अगर तुम हुक्मे इलाही के मातहत नहीं हो और अपने क़ौल में सच्चे हो तो इस रूह को क्यों नहीं लौटा लाते?' (نَحْنُ جَعَلْنٰهَا تَذْكِرَةً وَّمَتَاعًا لِّلْمُقْوِيْنَ ﴿٧٣﴾) (सूरह वाक़िअह 56 : 73) इस मक़ाम में उस हदीस़ पर भी नज़र डाल ली जाये जो बसर बिन जहाश की रिवायत (सहीह : इब्ने माजह, किताबुल वसाया, बाब अन्नहयु अनिल इम्साक फ़िल्हयाति वत्तब्ज़ीर इन्दल मौत : 2707, अहमद : 4/210) से सूरह यासीन की तफ़्सीर में गुज़र चुकी है तराक़िय पर जो है तरक़ुवतुन उन हड्डियों को कहते हैं जो हुल्क़ूम के क़रीब हैं। उस वक़्त हाइ-दुहाई होती है कि कोई है जो झाड़-फूंक करे? यानी किसी तबीब वग़ैरह के ज़रिये शिफ़ा हो सकती है और ये भी कहा गया है कि ये फ़रिश्तों का क़ौल है। यासीन यानी इस रूह को लेकर कौन चढ़ेगा, रहमत के फ़रिश्ते या अज़ाब के?

और पिण्डली के पिण्डली से रगड़ा खाने का एक मतलब तो हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) वग़ैरह से ये मरवी है कि दुनिया और आख़िरत उस पर जमा हो जाती है दुनिया का आख़िरी दिन होता है और आख़िरत का पहला दिन होता है। जिससे सख़्ती पर सख़्ती हो जाती है मगर जिस पर रब्बे रहीम का रहम व करम हो। (अत्तबरी : 24/76) दूसरा मतलब हज़रत इक्रिमा से ये मरवी है कि एक बहुत बड़ा अम्र दूसरे बहुत बड़े अम्र से मिल जाता है, बला पर बला आ जाती है। तीसरा मतलब हज़रत हसन बसरी (रह.) वग़ैरह से ये मरवी है कि

ख़ुद मरने वाले की बेक़रारी और शिद्दते दर्द से पाँव पर पाँव का चढ़ जाना मुराद है। (अत्तबरी : 24/78) पहले तो ये उन पाँव पर चलता-फिरता था लेकिन अब उनमें जान कहाँ? और ये भी मरवी है कि कफ़न के वक़्त पिण्डली से पिण्डली का मिल जाना मुराद है।

चौथा मतलब हज़रत ज़ह्हाक (रह.) से ये भी मरवी है कि दो काम दो तरफ़ जमा हो जाते हैं उधर तो लोग उसके जिस्म को नहला-धुला कर सुपुर्दे ख़ाक करने को तैयार हैं। इधर फ़रिश्ते उसकी रूह ले जाने में मशग़ूल हैं, अगर नेक है तो उ़म्दा तैयारी और धूम-धाम के साथ अगर बद है तो निहायत बुराई और बदतर हालत के साथ। अब लौटने और क़रार पाने की जगह रहने-सहने और पहुँच जाने की जगह खिचकर जाने और चल कर पहुँचने की जगह अल्लाह तआ़ला ही की तरफ़ है, रूह आसमान की तरफ़ चढ़ जाती है फिर वहाँ से हुक्म होता है कि उसे ज़मीन की तरफ़ फेर ले जाओ। मैंने सब को उसी से पैदा किया है उसी में लौटा कर ले जाऊँगा और फिर उसी से उन्हें दोबारा निकालूँगा।

जैसे कि हज़रत बराअ (रज़ि.) की मुतव्वल (लम्बी) हदीस़ में आया है। (देखिये सूरह आ़राफ़ : 40) यही मज़्मून और जगह बयान हुआ है, (وَهُوَ الْقَاهِرُ فَوْقَ عِبَادِهٖ) 'वही अपने बन्दों पर ग़ालिब है वही तुम्हारी हिफ़ाज़त के लिये तुम्हारे पास फ़रिश्ते भेजता है यहाँ तक तुममें से किसी की मौत का वक़्त आ जाये तो हमारे भेजे हुए फ़रिश्ते उसे फ़ौत कर लेते हैं और वो कोई क़ुसूर नहीं करते, फिर सबके सब अपने सच्चे मौला की तरफ़ लौटाये जाते हैं, यक़ीन मानो कि हुक्म उसी का चलता है और वो सबसे जल्द हिसाब लेने वाला है।' (सूरह अन्आम 6 : 61) फिर उस काफ़िर इंसान का हाल बयान हो रहा है जो अपने दिल और अपने अ़क़ीदे से हक़ का झुठलाने वाला और अपने अ़मल से हक़ से रूगर्दानी करने वाला था। जिसका ज़ाहिर व बातिन बर्बाद हो चुका था और कोई भलाई उसमें बाक़ी नहीं रही थी, न वो अल्लाह तआ़ला की बातों की दिल से तस्दीक़ करता था न जिस्म से इबादते इलाही बजा लाता था यहाँ तक कि नमाज़ का भी चोर था। हाँ झुठलाने और मुँह मोड़ने में बेबाक था और अपने इस नाकारा अ़मल पर इतराता और फूलता हुआ बेहिम्मती और बद अ़मली के साथ अपने वालों में जा मिलता था। जैसे और जगह है, (وَاِذَا انْقَلَبُوْٓا اِلٰٓى اَهْلِهِمُ انْقَلَبُوْا فَكِهِيْنَ ﴿۳۱﴾) (सूरह मुतफ़्फ़िफ़ीन 83 : 31) 'जब अपने वालों की तरफ़ लौटते हैं तो ख़ूब बातें बनाते हुए मज़े करते हुए ख़ुश-ख़ुश जाते हैं।'

और जगह है, (اِنَّهٗ كَانَ فِيْٓ اَهْلِهٖ مَسْرُوْرًا ﴿۱۳﴾) (सूरह इन्शिक़ाक़ 84 : 13) 'ये अपने घराने वालों में शादमाँ था और समझ रहा था कि अल्लाह तआ़ला की तरफ़ उसे लौटना ही नहीं है, उसका ये ख़्याल महज़ ग़लत था उसके रब की निगाहें उस पर थीं।' फिर उसे अल्लाह तबारक व तआ़ला धमकाता है और डर सुनाता है और फ़रमाता है कि ख़राबी हो तुझे अल्लाह तआ़ला के साथ कुफ़्र करके फिर इतराता है। जैसे और जगह है, (ذُقْ ۚ اِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِيْزُ الْكَرِيْمُ ﴿۴۹﴾) (सूरह दुख़ान 44 : 49) 'क़यामत के दिन काफ़िर से बतौरे डांट के और हिक़ारत के कहा जायेगा कि ले अब मज़ा चख तू तो बड़ी इ़ज़्ज़त व बुज़ुर्गी वाला था।'

और फ़रमान है, (كُلُوا وَ تَمَتَّعُوا قَلِيلًا إِنَّكُمْ مُّجْرِمُونَ ﴿٤٦﴾) (सूरह मुर्सलात 77 : 46) 'कुछ खा-पी लो आख़िर तो बदकार गुनहगार हो।' और जगह है, (فَاعْبُدُوا مَا شِئْتُمْ مِّنْ دُونِهِ) (सूरह ज़ुमर 39 : 15) 'जाओ अल्लाह तआ़ला के सिवा जिसकी चाहो इबादत करो।' वग़ैरह-वग़ैरह। ग़र्ज़ ये है कि इन तमाम जगहों में ये अहकाम बतौरे डांट-डपट के हैं। हज़रत सईद बिन जुबैर (रह.) से जब ये आयत औला लक की बाबत पूछा गया तो आपने फ़रमाया, रसूलुल्लाह (ﷺ) ने अबू जहल को फ़रमाया था फिर क़ुरआन में भी यही अल्फ़ाज़ नाज़िल हुए। हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से भी इसी के क़रीब-क़रीब नसाई में मौजूद है। (सहीह : हाकिम : 2/510, सुननुल कुबरा लिन्नसाई : 6/504, हदीस़ नम्बर : 11638)

इब्ने अबी हातिम में हज़रत क़तादा (रह.) की रिवायत है कि हुज़ूर (ﷺ) के इस फ़रमान पर उस दुश्मने इलाही ने कहा कि तू मुझे धमकाता है? अल्लाह तआ़ला की क़सम तू और तेरा रब मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकते। इन दोनों पहाड़ों के दरम्यान चलने वालों में सबसे ज़्यादा ज़ी इ़ज़्ज़त मैं हूँ। फ़रमाता है क्या इंसान ये समझता है कि उसे यूंही छोड़ दिया जायेगा यानी मौत के बाद ज़िन्दा न किया जायेगा? उसे कोई हुक्म और किसी चीज़ की मुमानिअ़त न की जायेगी। ऐसा हर्गिज़ नहीं बल्कि दुनिया में उसे हुक्म व मुमानिअ़त और आख़िरत में अपने आ़माल के बमूजिब जज़ा व सज़ा ज़रूर मिलेगी। मक़सूद यहाँ पर क़यामत का इस्बात और मुन्किरीने क़यामत का रद्द है इसीलिये दलील के तौर पर कहा जाता है कि इंसान दरअसल नुत्फ़े के शक्ल में बेजान व बेबुनियाद था पानी का एक ज़लील क़तरा था जो पीठ से रहम में आया। फिर ख़ून की फुटकी बनी, फिर गोश्त का लोथड़ा हुआ, फिर अल्लाह तआ़ला ने शक्ल व सूरत देकर रूह फूंकी और सालिम आ़ज़ा वाला इंसान बनाकर मर्द या औ़रत की सूरत में पैदा किया। क्या वो अल्लाह तआ़ला जिसने नुत्फ़े ज़ईफ़ को ऐसा सहीहुल क़ामत क़वी इंसान बना दिया वो इस बात पर क़ादिर नहीं कि उसे फ़ना करके फिर दोबारा पैदा कर दे? यक़ीनन पहली मर्तबा का पैदा करने वाला दोबारा बनाने पर बहुत ज़्यादा और बतौरे औला क़ादिर है, या कम से कम उतना ही जितना पहली मर्तबा था। जैसे फ़रमाया, (وَهُوَ الَّذِي يَبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ وَهُوَ أَهْوَنُ عَلَيْهِ) (सूरह रूम 30 : 27) 'उसने शुरू में पैदा किया वही फिर लौटा लायेगा और वो उस पर बहुत ज़्यादा आसान है।' इस आयत के मतलब में भी दो क़ौल हैं, लेकिन पहला क़ौल ही ज़्यादा मशहूर है। जैसे कि सूरह रूम की तफ़्सीर में इसका बयान और तक़रीर गुज़र चुकी, वल्लाहु आ़लम!

फ़ायदा : इब्ने अबी हातिम में है कि एक सहाबी अपनी छत पर बआवाज़े बुलंद क़ुरआन पढ़ रहे थे जब इस सूरत की आख़िरी आयत की तिलावत की तो फ़रमाया, सुब्हानक बला, ऐ अल्लाह तू पाक है और बेशक क़ादिर है। लोगों ने इस कहने का बाइ़स पूछा तो फ़रमाया, मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को इस आयत का यही जवाब देते हुए सुना है। (ज़ईफ़ : अबू दाऊद, किताबुस्सलात, बाब अद्दुआउ फ़िस्सलात : 884, मूसा बिन अबी आ़इशा और सहाबी के दरम्यान मज्हूल आदमी का वास्ता है। इस जहालते रावी की बिना पर ये रिवायत ज़ईफ़ है।)

लेकिन दोनों किताबों में इस सहाबी का नाम नहीं, गोया ये नाम न होना मुज़िर नहीं। अबू दाऊद की

एक और हदीस में है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'जो शख़्स तुममें से सूरह वत्तीन की आख़िरी आयत अलैसल्लाहु बिअह्कमिल् हाकिमीन पढ़े वो बला व अना अ़ला ज़ालि-क मिनश्शाहिदीन कहे, यानी हाँ और मैं भी इस पर गवाह हूँ और जो शख़्स सूरह क़ियामह की आख़िरी आयत (اَلَيْسَ ذٰلِكَ بِقٰدِرٍ عَلٰٓى اَنْ يُّحْيِۦَ الْمَوْتٰى) पढ़े तो वो कहे बला और जो शख़्स सूरह वल्मुर्सलात की आख़िरी आयत फ़बिअय्यि हदीसिम्-बअ़्दहू युअ्मिनून पढ़े वो आमन्ना बिल्लाहि कहे।' (ज़ईफ़ : अहमद : 2/249, अबू दाऊद, किताबुस्सलात, बाब मिक़्दारुर्रुकूइ वस्सुजूद : 887, सनद में आ़राबी मज्हूल है। तिर्मिज़ी : 3347, हाकिम : 2/511, उनकी इस्नाद में मज्हूल रावी हैं।)

इब्ने जरीर में हज़रत क़तादा से मरवी है कि नबी (ﷺ) इस सूरत की इस आख़िरी आयत के बाद फ़रमाते सुब्हानक बला। हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से इस आयत के जवाब में ये कहना इब्ने अबी हातिम में मरवी है।

अल्हम्दुलिल्लाह सूरह क़ियामह की तफ़्सीर ख़त्म हुई।

***

FLOW CHART
तरतीबी नक्श-ए-रब्त

MACRO-STRUCTURE
नज़्मे-जली

सूरह दहर - 76

आयात : 31, मक्की, पैराग्राफ : 5

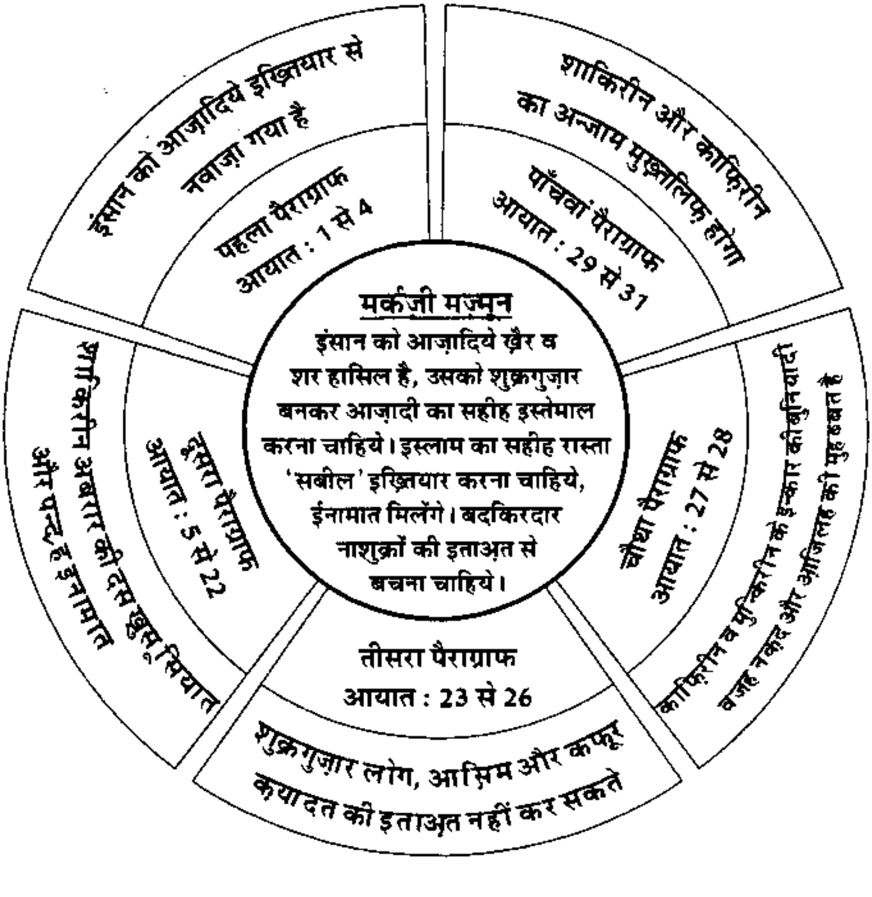

तफ़्सीर सूरह दहर

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ ○

तर्जुमा : ''शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है।''

***

هَلۡ اَتٰى عَلَى الۡاِنۡسَانِ حِيۡنٌ مِّنَ الدَّهۡرِ لَمۡ يَكُنۡ شَيۡـًٔـا مَّذۡكُوۡرًا ① اِنَّا خَلَقۡنَا
الۡاِنۡسَانَ مِنۡ نُّطۡفَةٍ اَمۡشَاجٍ ۖ نَّبۡتَلِيۡهِ فَجَعَلۡنٰهُ سَمِيۡعًۢا بَصِيۡرًا ② اِنَّا هَدَيۡنٰهُ
السَّبِيۡلَ اِمَّا شَاكِرًا وَّاِمَّا كَفُوۡرًا ③

तर्जुमा : ''यक़ीनन इंसान पर ज़माने का वो वक़्त भी गुज़र चुका है जब कि ये कोई क़ाबिले ज़िक्र चीज़ न था। (1) बेशक हमने इंसान को मिले-जुले नुत्फ़े से इम्तिहान के लिये पैदा किया और उसको सुनता-देखता बनाया। (2) हमने उसे राह दिखाई अब ख़्वाह वो शुक्रगुज़ार बने ख़्वाह नाशुक्रा।'' (3)

तआरुफ़ सूरते दहर : सहीह मुस्लिम के हवाले से ये हदीस़ पहले गुज़र चुकी है कि जुम्आ के दिन सुबह की नमाज़ में आँहज़रत (ﷺ) सूरह अलिफ़-लाम्-मीम तन्ज़ील यानी सूरह सज्दा और सूरह हल अता अ़लल इंसान पढ़ा करते थे। (सहीह मुस्लिम, किताबुल जुमुआ, बाब मा युक़्रउ फ़ी यौमिल जुमुअह : 879)

एक मुरसल ग़रीब हदीस़ में है कि जब ये सूरत उतरी और हुज़ूर (ﷺ) ने इसकी तिलावत की, उस वक़्त आप (ﷺ) के पास एक सांवले रंग के सहाबी बैठे हुए थे। जब जन्नत की सिफ़तों का ज़िक्र आया तो उनके मुँह से बेसाख़्ता एक चीख़ निकल गई और साथ ही रूह परवाज़ कर गई। जनाब रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'तुम्हारे साथी और तुम्हारे भाई की जान जन्नत के शौक़ में निकल गई।' (ज़ईफ़ : अद्दुर्रुल मन्सूर : 6/480, ये रिवायत मुरसल यानी ज़ईफ़ है।)

इंसान की पैदाइश से पहले की हालत (आयत : 1-3) : अल्लाह तआला बयान फ़रमाता है कि उसने

इंसान को पैदा किया, हालांकि इससे पहले वो अपनी हिक़ारत और अपने ज़ुअ्फ़ की वजह से ऐसी चीज़ न था कि उसका ज़िक्र किया जाये। उसे मर्द और औरत के मिले-जुले पानी से पैदा किया और अजब-अजब पल्टियों के बाद ये मौजूदा शक्ल व सूरत और हैयत पर आया, इसे हम आज़मा रहे हैं, (وَّ لِيَبْلُوَكُمْ اَيُّكُمْ اَحْسَنُ عَمَلًا) (सूरह मुल्क 67 : 2) 'ताकि वो तुम्हें आज़माये कि तुममें से अच्छे अमल करने वाला कौन है? पस उसने तुम्हें कान और आँखें अता फ़रमाईं ताकि इताअत और मअसियत में तमीज़ कर सको।' हमने उसे राह दिखा दी ख़ूब वाज़ेह और साफ़ करके अपना सीधा रास्ता उस पर खोल दिया। जैसे और जगह है, (وَ اَمَّا ثَمُوْدُ فَهَدَيْنٰهُمْ فَاسْتَحَبُّوا الْعَمٰى) (सूरह हाम्मीम अस्सजदा 41 : 17) 'समूदियों को हमने हिदायत की लेकिन उन्होंने अन्धापे को हिदायत पर तरजीह दी।' और जगह है, (وَ هَدَيْنٰهُ النَّجْدَيْنِ ۝) व हदैनाहुन्नज्दैन (सूरह बलद 90 : 10) 'हमने इंसान को दोनों राहें दिखा दीं, यानी भलाई-बुराई की।'

इस आयत की तफ़्सीर में मुजाहिद, अबू सालेह, ज़ह्हाक और सुद्दी (रह.) से मरवी है कि इसे हमने राह दिखाई, यानी माँ के पेट से बाहर आने की। लेकिन ये क़ौल ग़रीब है और सहीह क़ौल पहला ही है और जुम्हूर से यही मन्क़ूल है। शाकिरा और कफ़ूरा का नसब हाल की वजह से ज़ुल्हाल हु की ज़मीर है जो इन्ना हदैनाहुस्सबील में है, यानी वो इस हालत में या तो शक़ी है या सईद। जैसे सहीह मुस्लिम की हदीस में है, 'हर शख़्स सुबह के वक़्त अपने नफ़्स की ख़रीदो-फ़रोख़्त करता है या तो उसे हलाक कर देता है या आज़ाद करा लेता है।' (सहीह मुस्लिम, किताबुत्तहारत, बाब फ़ज़्लुल वुज़ू : 6230, तिर्मिज़ी : 3517, अहमद : 5/342, इब्ने हिब्बान : 844)

मुस्नद अहमद में है कि हज़रत कअ़ब बिन उ़जरह (रज़ि.) से आपने फ़रमाया, 'अल्लाह तुझे बेवक़ूफ़ों की सरदारी से बचाये।' हज़रत कअ़ब (रज़ि.) ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल! वो क्या है? फ़रमाया, 'वो मेरे बाद के सरदार होंगे जो मेरी सुन्नतों पर अमल न करेंगे न मेरे तरीक़े पर चलेंगे पस जो लोग उनके झूठ की तस्दीक़ करें और उनके ज़ुल्म की इम्दाद करें, वो न मेरे हैं और न मैं उनका हूँ। याद रखो वो मेरे हौज़े कौसर पर भी नहीं आ सकते और जो उनके झूठ को सच्चा न करे और उनके ज़ुल्मों में उनका मददगार न बने, वो मेरा है और मैं उसका हूँ। ये लोग मेरे हौज़े कौसर पर मुझसे मिलेंगे। ऐ कअ़ब! रोज़ा ढाल है और सदक़ा ख़ताओं को मिटा देता है और नमाज़ क़ुर्बे इलाही का सबब है।' या फ़रमाया, 'दलीले निजात है। ऐ कअ़ब! वो गोश्त-पोस्त जन्नत में नहीं जा सकता जो हराम से पला हो, वो तो जहन्नम में ही जाने के क़ाबिल है। ऐ कअ़ब! लोग हर सुबह अपने नफ़्स की ख़रीदो-फ़रोख़्त करते हैं, कोई तो उसे आज़ाद करा लेता है और कोई हलाक कर गुज़रता है।' (हसन : अहमद : 3/321, मज्मउ़ज़्ज़वाइद : 5/246)

सूरह रूम की आयत (فِطْرَتَ اللّٰهِ الَّتِىْ فَطَرَ النَّاسَ عَلَيْهَا) (सूरह रूम 30 : 30) की तफ़्सीर में हज़रत जाबिर (रज़ि.) की रिवायत से हुज़ूर (ﷺ) का ये फ़रमान भी गुज़र चुका है, 'हर बच्चा फ़ितरते इस्लाम पर पैदा होता है यहाँ तक कि ज़बान चलने लगती है फिर या तो शुक्रगुज़ार बनता है या नाशुक्रा।' (ज़ईफ़ :

अहमद : 3/353, रिवायत अबी जअ़फ़र राज़ी अन रबीअ़ बिन अनस ज़ईफ़तुन वल्हसनुल बसरी अन्अन इन्न सहहस्सनद इलैहि, इब्ने हिब्बान : 1658, बैहक़ी : 9/130, बितसर्रुफ़िने यसीर)

मुस्नद अहमद की और हदीस़ में है कि जो निकलने वाला निकलता है उसके दरवाज़े पर दो झण्डे होते हैं एक फ़रिश्ते के हाथ में दूसरा शैतान के हाथ में। पस अगर वो उस काम के लिये निकला जो अल्लाह तआ़ला की मर्ज़ी का काम है तो फ़रिश्ता अपना झण्डा लिये हुए उसके साथ हो लेता है और ये वापसी तक फ़रिश्ते के झण्डे तले ही रहता है और अगर ये अल्लाह तआ़ला की नाराज़ी के काम के लिये निकला है तो शैतान अपना झण्डा लगाये उसके साथ हो लेता है और वापसी तक ये शैतानी झण्डे तले रहता है। (हसन : अहमद : 2/323, मुअ़जम अल्औसत : 4783, किताबुज़्ज़ुहद लिल्बैहक़ी : 699)

***

إِنَّآ أَعْتَدْنَا لِلْكَٰفِرِينَ سَلَٰسِلَا۟ وَأَغْلَٰلًا وَسَعِيرًا ④ إِنَّ ٱلْأَبْرَارَ يَشْرَبُونَ مِن كَأْسٍ
كَانَ مِزَاجُهَا كَافُورًا ⑤ عَيْنًا يَشْرَبُ بِهَا عِبَادُ ٱللَّهِ يُفَجِّرُونَهَا تَفْجِيرًا ⑥ يُوفُونَ
بِٱلنَّذْرِ وَيَخَافُونَ يَوْمًا كَانَ شَرُّهُۥ مُسْتَطِيرًا ⑦ وَيُطْعِمُونَ ٱلطَّعَامَ عَلَىٰ حُبِّهِۦ
مِسْكِينًا وَيَتِيمًا وَأَسِيرًا ⑧ إِنَّمَا نُطْعِمُكُمْ لِوَجْهِ ٱللَّهِ لَا نُرِيدُ مِنكُمْ جَزَآءً وَلَا
شُكُورًا ⑨ إِنَّا نَخَافُ مِن رَّبِّنَا يَوْمًا عَبُوسًا قَمْطَرِيرًا ⑩ فَوَقَىٰهُمُ ٱللَّهُ شَرَّ ذَٰلِكَ
ٱلْيَوْمِ وَلَقَّىٰهُمْ نَضْرَةً وَسُرُورًا ⑪ وَجَزَىٰهُم بِمَا صَبَرُوا۟ جَنَّةً وَحَرِيرًا ⑫

तर्जुमा : "यक़ीनन हमने काफ़िरों के लिये ज़ंजीरें और तौक़ और शौलों वाली आग तैयार कर रखी है। (4) बेशक नेक लोग वो जाम पियेंगे जिसकी मलूनी काफ़ूर की है। (5) जो एक चश्मा है जिससे अल्लाह के बन्दे पियेंगे उसकी नहरें निकाल ले जायेंगे (जिधर चाहें)। (6) जो नज़्र पूरी करते हैं और उस दिन से डरते हैं जिसकी बुराई चारों तरफ़ फैल जाने वाली है। (7) और अल्लाह तआ़ला की मुहब्बत में खाना खिलाते हैं मिस्कीन, यतीम और क़ैदियों को। (8) हम तो तुम्हें सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला की रज़ामन्दी के लिये खिलाते हैं, न तुम से बदला चाहते हैं न

शुक्रगुज़ारी। (9) बेशक हम अपने परवरदिगार से उस दिन का ख़ौफ़ करते हैं जो तंगी-तुर्शी और सख़्ती वाला होगा। (10) पस उन्हें अल्लाह तआला ने उस दिन की बुराई से बचा लिया और उन्हें ताज़गी और ख़ुशी पहुँचाई। (11) और उन्हें अपने सब्र के बदले जन्नत और रेशमी लिबास अता फ़रमाये।'' (12)

(आयत : 4-12) : यहाँ अल्लाह तआला ख़बर देता है कि उसकी मख़्लूक़ में से जो भी उससे कुफ़्र करे उसके लिये ज़ंजीरें, तौक़ और शौलों वाली भड़कती हुई तेज़ आग तैयार है। जैसे और जगह है, (إِذِ الْأَغْلَٰلُ فِىٓ أَعْنَٰقِهِمْ وَٱلسَّلَٰسِلُ يُسْحَبُونَ ۝ فِى ٱلْحَمِيمِ ثُمَّ فِى ٱلنَّارِ يُسْجَرُونَ ۝) (सूरह मोमिन 40 : 71-72) 'जबकि तौक़ उनकी गर्दनों में होंगे और बेड़ियाँ उनके पाँव में होंगी और ये हमीम में घसीटे जायेंगे फिर जहन्नम में जलाये जायेंगे।'

नेकों की जज़ा : उन बदनसीबों की सज़ा का ज़िक्र करके अब नेक लोगों की जज़ा का ज़िक्र हो रहा है कि उन्हें वो जाम पिलाये जायेंगे जिनकी मलूनी काफ़ूर नामी नहर के पानी की होगी, ज़ायक़ा भी आला ख़ुश्बू भी उम्दा और फ़ायदा भी बेहतर। काफ़ूर की सी ठण्डक और सूंठ की सी ख़ुश्बू। काफ़ूर एक नहर का नाम है जिससे अल्लाह तआला के ख़ास बन्दे पानी पीते हैं और सिर्फ़ उसी से आसूदगी हासिल करते हैं इसीलिये यहाँ उसे 'ब' से मुतअद्दी किया और तमीज़ की बिना पर अैनन पर नसब दिया। ये पानी अपनी ख़ुश्बू में मिस्ल काफ़ूर के है या ये ठीक काफ़ूर ही है। और अैनन का ज़बर यश्रबु की वजह से है। फिर उस नहर तक उन्हें आने की ज़रूरत नहीं ये अपने बाग़ात में, मकानात में, मज्लिसों में, बैठकों में जहाँ भी चाहेंगे उसे ले जायेंगे और वहीं वो पहुँच जायेगी। तफ़्जीरा के मआना रवानगी और इजरा के हैं जैसे आयत (حَتَّىٰ تَفْجُرَ لَنَا) (सूरह बनी इस्राईल 17 : 9) में और फ़ज्जरना ख़िलालहुमा (فَجَّرْنَا خِلَٰلَهُمَا) (सूरह कहफ़ 18 : 33) में।

फिर उन लोगों की नेकियाँ बयान हो रही हैं कि जो इबादतें अल्लाह तआला की तरफ़ से उनके ज़िम्मे थीं वो तो बजा ही लाते थे बल्कि जो चीज़ ये अपने ऊपर कर लेते उसे भी बजा लाते यानी नज़्र भी पूरी करते।

हदीस में है, 'जो अल्लाह तआला की इताअत की नज़्र माने वो पूरी करे और जो नाफ़रमानी की नज़्र माने उसे पूरी न करे।' (सहीह बुख़ारी, किताबुल ऐमान वन्नुज़ूर, बाब अन्नुज़ूरु फ़ित्ताअत : 2696, अबू दाऊद : 3289, तिर्मिज़ी : 1526, अहमद : 6/36, मोत्ता : 2/476)

इमाम बुख़ारी (रह.) ने इसे इमाम मालिक (रह.) की रिवायत से बयान फ़रमाया है और अल्लाह तआला की नाफ़रमानियों से भागते रहते हैं क्योंकि क़यामत के दिन का डर है जिसकी घबराहट आम तौर पर सब को घेर लेगी और हर एक, एक उल्झन में पड़ जायेगा। मगर जिस पर अल्लाह तआला का रहम व करम हो, ज़मीन व आसमान तक होल रहे होंगे। इस्तितार के मआना ही हैं फैल जाने वाली और अतराफ़ को घेर लेने वाली। ये नेकोकार अल्लाह तआला की मुहब्बत में मुस्तहिक़ लोगों पर अपनी ताक़त के मुताबिक़ ख़र्च भी

करते रहते थे। और हू की ज़मीर का मरजअ कुछ लोगों ने तआम को भी कहा है। लफ़्ज़न ज़्यादा ज़ाहिर भी यही है यानी बावजूद तआम की मुहब्बत और ख़्वाहिश के राहे लिल्लाह गुरबा और हाजतमन्दों को दे देते हैं। जैसे और जगह है, (وَاٰتَى الْمَالَ عَلٰى حُبِّهٖ) (सूरह बक़रह 2 : 177) 'माल की चाहत के बावजूद भी उसे राहे लिल्लाह देते रहते हैं।'

और फ़रमान है, (لَنْ تَنَالُوا الْبِرَّ حَتّٰى تُنْفِقُوْا مِمَّا تُحِبُّوْنَ) (सूरह आले इमरान 3 : 92) 'तुम हर्गिज़ भलाई हासिल नहीं कर सकते जब तक कि अपनी चाहत की चीज़ें राहे लिल्लाह ख़र्च न करो।' हज़रत नाफ़ेअ (रह.) फ़रमाते हैं कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) बीमार पड़े। आपकी बीमारी में अंगूर का मौसम आया, जब अंगूर पकने लगे तो आपका दिल भी चाहा कि मैं अंगूर खाऊँ तो आपकी बीवी साहिबा हज़रत सफ़िय्या (रज़ि.) ने एक दिरहम के अंगूर मंगाये। आदमी जो लेकर आया उसके साथ ही साथ एक साइल भी आ गया और उसने आवाज़ दी कि मैं साइल हूँ। हज़रत अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने फ़रमाया, ये सब उसी को दे दो! चुनाँचे दे दिये गये फिर दोबारा आदमी गया और अंगूर ख़रीद लाया, अब की मर्तबा भी साइल आ गया और उसके सवाल पर उसी को सबके सब अंगूर दे दिये गये, लेकिन अब की मर्तबा हज़रत सफ़िय्या (रज़ि.) ने साइल को कहलवा भेजा कि अगर अब आये तो तुम्हें कुछ न मिलेगा। चुनाँचे तीसरी मर्तबा एक दिरहम के अंगूर मंगवाये गये। (बैहक़ी)

और सहीह हदीस़ में है, 'अफ़ज़ल सदक़ा वो है जो तू अपनी सेहत की हालत में बावजूद माल की मुहब्बत के बावजूद अमीरी की चाहत और इफ़्लास के ख़ौफ़ के, राहे लिल्लाह दे।' (सहीह बुख़ारी, किताबुज़्ज़कात, बाब फ़ज़्लु सदक़तुश्शहीहुस्सहीह : 1419, सहीह मुस्लिम : 1032, अबू दाऊद : 2865, बितसर्रुफ़िन यसीर, इब्ने माजह : 2706, अहमद : 2/25, इब्ने हिब्बान : 3312)

यानी माल की हिर्स भी हो जब भी हो और हाजत व ज़रूरत भी हो फिर भी राहे लिल्लाह उसे क़ुर्बान कर दे। यतीम और मिस्कीन किसे कहते हैं? वग़ैरह इसका मुफ़स्सल बयान पहले गुज़र चुका है। क़ैदी की निस्बत हज़रत सईद (रह.) वग़ैरह तो फ़रमाते हैं, मुसलमान अहले क़िब्ला क़ैदी मुराद है। (अत्तबरी : 24/67)

लेकिन इब्ने अब्बास (रज़ि.) वग़ैरह का फ़रमान है, उस वक़्त क़ैदियों में सिवाय मुश्रिकीन के और कोई मुस्लिम न था।

और इसी की ताईद उस हदीस़ से भी होती है जिसमें है कि हुज़ूर (.) ने बद्री क़ैदियों के बारे में अपने अस्हाब को फ़रमाया, 'उनका इकराम करो।' चुनाँचे खाने-पीने में सहाबा (रज़ि.) ख़ुद अपनी जानों से भी ज़्यादा उनका ख़्याल रखते थे। हज़रत इक्रिमा (रह.) फ़रमाते हैं, इससे मुराद गुलाम हैं। इब्ने जरीर बसबब आयत के आम होने के इसी को पसंद करते हैं और मुस्लिम मुश्रिक सबको शामिल करते हैं। (अत्तबरी : 24/68)

गुलामों और मातहतों के साथ एहसान व सुलूक करने की ताकीद बहुत सी अहादीस़ में आई है।

बल्कि हुज़ूर (ﷺ) की आख़िरी वसियत अपनी उम्मत को यही है कि अपनी नमाज़ों की निगेहबानी करो और अपने मातहतों के साथ अच्छा सुलूक करो और उनका पूरा ख़्याल रखो।' (ज़ईफ़ : अबू दाऊद, किताबुल अदब, बाब फ़ी हक़्क़िल मम्लूक : 5156, मुग़ीरह बिन मुक़्सिम मुदल्लस रावी है सिमाअ की तसरीह नहीं इब्ने माजह : 2698, अहमद : 3/112, इब्ने हिब्बान : 6605)

ये उस नेक सुलूक का न तो उन लोगों से कोई बदला चाहते हैं न शुक्रिया। बल्कि अपने हाल से गोया ऐलान कर देते हैं कि हम तुम्हें सिर्फ़ राहे लिल्लाह देते हैं इसमें हमारी ही बेहतरी है कि इससे रज़ाए रब और मर्ज़ीए मौला हमें हासिल हो जाये, हम सवाब और अज्र के मुस्तहिक़ हो जायें।

हज़रत सईद (रह.) फ़रमाते हैं, अल्लाह की क़सम ये बात वो लोग मुँह से नहीं निकालते ये दिली इरादा होता है जिसका इल्म अल्लाह को है तो अल्लाह तआला ने उसे ज़ाहिर फ़रमा दिया कि और लोगों की रग़बत का बाइस बने। (अत्तबरी : 24/98)

ये पाकबाज़ जमाअत ख़ैरात व सदक़ात करके उस दिन के अज़ाबों और हौलनाकियों से बचना चाहती है जो तुशरू तंग व तारीक और तूल-तवील है, उनका अक़ीदा है कि इस बिना पर अल्लाह तआला हम पर रहम करेगा और उस मुहताजी और बेकसी वाले हमें हमारी ये नेकियाँ काम आयेंगी। हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) से अबूस के मआना तंगी वाला और क़मतरीरा के मआना तूल-तवील मरवी है। (अत्तबरी : 24/98)

इक्रिमा (रह.) फ़रमाते हैं काफ़िर का मुँह उस दिन बिगड़ जायेगा उसकी त्यौरी चढ़ जायेगी और उसकी दोनों आँखों के दरम्यान से अर्क़ (पसीना) बहने लगेगा, जो मिस्ल रोग़न गंधक के होगा। (अत्तबरी : 24/100)

मुजाहिद (रह.) फ़रमाते हैं, होंट चढ़ जायेंगे और चेहरा सिमट जायेगा। हज़रत सईद और हज़रत क़तादा (रह.) का क़ौल है कि बवजह घबराहट और हौलनाकियों के सूरत बिगड़ जायेगी पेशानी तंग हो जायेगी।

इब्ने ज़ैद (रह.) फ़रमाते हैं, बुराई और सख़्ती वाला दिन होगा। लेकिन सबसे वाज़ेह बेहतर निहायत मुनासिब व ठीक क़ौल हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) का है, क़मतरीर के लुग़वी मआना इमाम इब्ने जरीर (रह.) ने शदीद के किये हैं यानी बहुत सख़्ती वाला। उनकी इस नेक नियती और पाक अमल की वजह से अल्लाह तआला ने उन्हें उस दिन की बुराई से बाल-बाल बचा लिया और इतना ही नहीं बल्कि उन्हें बजाए तुर्शरूई के ख़न्दा पेशानी और बजाए दिल की हौलनाकी के इत्मीनान व सुरूरे क़ल्ब अता फ़रमाया। ख़्याल कीजिये कि यहाँ इबारत में किस क़द्र बलीग़े तजानुस का इस्तेमाल किया गया है और जगह है, (وُجُوهٌ يَوْمَئِذٍ مُّسْفِرَةٌ ﴿٣٨﴾ ضَاحِكَةٌ مُّسْتَبْشِرَةٌ ﴿٣٩﴾) (सूरह अबस 80 : 38-39) 'उस दिन बहुत से चेहरे चमकीले होंगे। जो हँसते हुए और ख़ुशियाँ मनाते हुए होंगे।' ये ज़ाहिर है कि जब दिल मसरूर होगा तो चेहरा खिला हुआ होगा। हज़रत कअब बिन मालिक (रज़ि.) की लम्बी हदीस में है कि नबी (ﷺ) को जब कभी कोई ख़ुशी होती तो आप (ﷺ) का चेहरा चमकने लगता और ऐसा मालूम होता गोया चाँद का टुकड़ा है। (सहीह बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी,

बाब हदीसु कअ़ब बिन मालिक : 4418, सहीह मुस्लिम : 2769, तिर्मिज़ी : 3102, इब्ने हिब्बान : 3370)

हज़रत आइशा (रज़ि.) की लम्बी हदीस में है कि एक मर्तबा हुज़ूर (ﷺ) मेरे पास तशरीफ़ लाये। चेहरा मुबारक ख़ुशी से मुनव्वर हो रहा था और मुखड़े मुबारक की रगें चमक रही थीं....अल्अख़। (सहीह बुख़ारी, किताबुल मनाक़िब, बाब सिफ़तुन्नबी : 3555, सहीह मुस्लिम : 1459)

फिर फ़रमाता है उनके सब्र के अज्र में उन्हें रहने-सहने के लिये वसीअ़ जन्नत, पाक ज़िन्दगी और पहनने-ओढ़ने के लिये रेशमी लिबास मिला। इब्ने असाकिर में है कि अबू सुलैमान दारानी (रह.) के सामने इस सूरत की तिलावत हुई। जब क़ारी ने इस आयत को पढ़ा तो आपने फ़रमाया, उन्होंने दुनियावी ख़्वाहिशों को छोड़ रखा था। फिर ये अश्आर पढ़े :

अफ़सोस शहवते नफ़्स ने और भलाइयों के ख़िलाफ़ बुराइयों की चाहत ने बहुत सों का गला घोंट दिया और कई एक को पाबजोलाँ कर दिया। नफ़्सानी ख़्वाहिशें ही हैं जो इंसान को बदतरीन ज़िल्लत व रुस्वाई और बला व मुसीबत में डाल देती हैं।

***

مُّتَّكِـِٔينَ فِيهَا عَلَى الْأَرَآئِكِ ۖ لَا يَرَوْنَ فِيهَا شَمْسًا وَّلَا زَمْهَرِيرًا ﴿١٣﴾ وَدَانِيَةً
عَلَيْهِمْ ظِلٰلُهَا وَذُلِّلَتْ قُطُوفُهَا تَذْلِيلًا ﴿١٤﴾ وَيُطَافُ عَلَيْهِمْ بِاٰنِيَةٍ مِّنْ فِضَّةٍ
وَّاَكْوَابٍ كَانَتْ قَوَارِيرَا۟ ﴿١٥﴾ قَوَارِيرَا۟ مِنْ فِضَّةٍ قَدَّرُوهَا تَقْدِيرًا ﴿١٦﴾ وَيُسْقَوْنَ
فِيهَا كَاْسًا كَانَ مِزَاجُهَا زَنْجَبِيلًا ﴿١٧﴾ عَيْنًا فِيهَا تُسَمّٰى سَلْسَبِيلًا ﴿١٨﴾ وَيَطُوفُ
عَلَيْهِمْ وِلْدَانٌ مُّخَلَّدُونَ ۚ إِذَا رَاَيْتَهُمْ حَسِبْتَهُمْ لُؤْلُؤًا مَّنْثُورًا ﴿١٩﴾ وَإِذَا رَاَيْتَ
ثَمَّ رَاَيْتَ نَعِيمًا وَّمُلْكًا كَبِيرًا ﴿٢٠﴾ عٰلِيَهُمْ ثِيَابُ سُنْدُسٍ خُضْرٌ وَّإِسْتَبْرَقٌ ۫
وَّحُلُّوٓا أَسَاوِرَ مِنْ فِضَّةٍ ۚ وَسَقٰىهُمْ رَبُّهُمْ شَرَابًا طَهُورًا ﴿٢١﴾ إِنَّ هٰذَا كَانَ لَكُمْ
جَزَآءً وَّكَانَ سَعْيُكُمْ مَّشْكُورًا ﴿٢٢﴾

तर्जुमा : "ये वहाँ तख़्तों पर तकिये लगाये हुए बैठेंगे, न वहाँ आफ़ताब की गर्मी देखेंगे न जाड़े की सख़्ती। (13) उन जन्नतों के साये उन पर झुके हुए होंगे और उनके मेवे और लच्छे नीचे लटकाये हुए होंगे। (14) और उन पर चाँदी के बर्तनों और उन जामों का दौर कराया जायेगा जो शीशे के होंगे। (15) शीशे भी चाँदी के जिनको साक़ी ने अन्दाज़े से नाप रखा होगा। (16) और उन्हें वहाँ वो जाम पिलाये जायेंगे जिनकी मलूनी ज़न्जबील की होगी। (17) जो जन्नत की एक नहर है जिसका नाम सल्सबील है। (18) और उनके इर्द-गिर्द घूमते-फिरते हैं वो कमसिन बच्चे जो हमेशा रहने वाले हैं, जब तू उन्हें देखे तो समझे कि वो बिखरे हुए सच्चे मोती हैं। (19) तू वहाँ जहाँ कहीं भी नज़र डालेगा सरासर नेमतें और अज़ीमुश्शान सल्तनत ही देखेगा। (20) और उनके जिस्मों पर सब्ज़ महीन और मोटे रेशमी कपड़े होंगे और उन्हें चाँदी के कंगन का ज़ेवर पहनाया जायेगा और उन्हें उनका रब पाक-साफ़ शराब पिलायेगा। (21) (कहा जायेगा कि) ये है तुम्हारे आमाल का बदला और तुम्हारी कोशिशों की क़द्रदानी।" (22)

जन्नतियों पर इनामात की बारिश (आयत : 13-22) : जन्नतियों की नेमतों और राहतों का उनके मुल्क व माल और जाह व मनाल का ज़िक्र हो रहा है कि ये लोग बआरामे तमाम पूरे इत्मीनान और ख़ुश दिली के साथ जन्नत के मुरस्सअ और मुज़य्यन जड़ाव तख़्तों पर बेफ़िक्री से तकिये लगाये सुरूर व राहत से बैठे मज़े लूट रहे होंगे। सूरह साफ़्फ़ात की तफ़्सीर में इसकी पूरी शरह गुज़र चुकी है वहीं ये भी बयान हो चुका है कि इत्तिका से मुराद लेटना है या कोहनियाँ टिकाना है या चार ज़ानू बैठना है या कमर लगाकर टेक लगाना है और ये भी बयान हो चुका है कि अराइक छप्पर खटों को कहते हैं। फिर एक और नेमत बयान हो रही है कि वहाँ न तो सूरज की तेज़ शुआओं से उन्हें कोई तकलीफ़ पहुँचेगी, न जाड़े की बहुत सर्द हवायें उन्हें नागवार गुज़रेंगी, बल्कि बहार का सा मौसम हर वक़्त और हमेशा रहता है। गर्मी-सर्दी के झमेलों से अलग हैं, जन्नती दरख़्तों की शाख़ें झूम-झूम कर उन पर साया किये हुए होंगी और मेवे उनसे बिल्कुल क़रीब होंगे, चाहे लेटे-लेटे तोड़कर खा लें, चाहे बैठे-बैठे ले लें, चाहे खड़े होकर ले लें, दरख़्तों पर चढ़ने की और तकलीफ़ की कोई ज़रूरत नहीं, सरों पर मेवेदार गुच्छे और लदे हुए लच्छे लटक रहे होंगे, तोड़ा और खा लिया। अगर खड़े हैं तो मेवे इतने ऊँचे हैं, बैठे तो क़द्रे झुक गये, लेटे तो और क़रीब आ गये, न तो कांटों की रुकावट है और न दूरी की सर दर्दी है।

हज़रत मुजाहिद (रह.) फ़रमाते हैं कि जन्नत की ज़मीन चाँदी की है और उसकी मिट्टी मुश्के ख़ालिस है, उसके दरख़्तों के तने सोने-चाँदी के हैं। डालियाँ लुअ्लुअ्, ज़बरजद और याक़ूत की हैं। उनके दरम्यान पत्ते और फल हैं जिनके तोड़ने में कोई वक़्त और मुशकिल नहीं, चाहो बैठे-बैठे तोड़ लो, चाहो खड़े-खड़े बल्कि अगर चाहें लेटे-लेटे। एक तरफ़ ख़ुश ख़ुर्रम, ख़ुश दिल, ख़ूबसूरत, बा अदब, सलीक़ा शिआर, फ़रमांबरदार ख़ादिम क़िस्म-क़िस्म के खाने चाँदी के बर्तनों में लगाये खड़े हैं। दूसरी जानिब शराबे तुहूर से छलकते हुए बलवरें जाम लिये साक़ियाने मुहव्विश इशारे के मुन्तज़िर हैं, ये गिलास सफ़ाई में शीशे जैसे और सफ़ेदी में

चाँदी जैसे होंगे। दरअसल होंगे चाँदी के लेकिन शीशे की तरह शफ़्फ़ाफ़ होंगे कि अंदर की चीज़ बाहर से नज़र आयेगी। जन्नत की तमाम चीज़ों की यूंही सी बराए नाम मुशाबिहत दुनिया की चीज़ों में भी पाई जाती है लेकिन उन चाँदी के बलवर्रे गिलासों की कोई मिसाल नहीं मिलती। हाँ ये याद रहे कि पहले के लफ़्ज़ क़वारीर पर ज़बर तो इसलिये है कि वो का-न की ख़बर है और दूसरे पर ज़बर बदलियत की बिना पर है या तो तमीज़ की बिना पर। फिर ये जाम नपे-तुले हुए हैं, साक़ी के हाथ में भी ज़ैब दें, उनकी हथेलियों पर भले मालूम हों और पीने वालों की हस्बे ख़्वाहिश शराबे तुहूर उसमें समा जाये जो न बचे न घटे। उन नायाब गिलासों में जो पाक, ख़ुश ज़ायक़ा और सुरूर वाली बेनशे की शराब उन्हें मिलेगी वो जन्नत की नहर सल्सबील के पानी से मख़्लूत करके दी जायेगी, जैसा कि ऊपर गुज़र चुका है कि नहरे काफ़ूर के पानी से मख़्लूत करके दी जायेगी तो मतलब ये है कि कभी उस ठण्डक वाले सर्द मिज़ाज पानी से कभी उस नफ़ीस गर्म मिज़ाज पानी से ताकि ऐतिदाल क़ायम रहे। ये नेक लोगों का ज़िक्र है और ख़ास मुक़र्रबीन ख़ालिस उस नहर का शरबत पियेंगे।

सल्सबील बक़ौल इक्रिमा (रह.) जन्नत के एक चश्मे का नाम है क्योंकि वो तेज़ी के साथ मुसलसल रवानगी से लहरिया चाल बह रहा है, उसका पानी बहुत हल्का निहायत शीरीं, ख़ुश ज़ायक़ा और ख़ुश्बू है जो आसानी से पिया जाये और सहता पचता रहे। उन नेमतों के साथ ही ख़ूबसूरत हसीन नौ ख़ैज़ कम उम्र लड़के उनकी ख़िदमत के लिये कमर बस्ता होंगे, ये ग़िल्माने जन्नती जिस उम्र में होंगे उसी में रहेंगे ये नहीं कि उम्र बढ़कर सूरत बिगड़ जाये, ये नफ़ीस पोशाकें और बेश क़ीमत जड़ाव ज़ेवर पहने हुए बतादादे कसीर इधर-उधर मुख़्तलिफ़ कामों पर बटे हुए होंगे जिन्हें दौड़ते-भागते मुस्तअदी और चालाकी से अन्जाम दे रहे होंगे, ऐसा मालूम होगा कि गोया सफ़ेद आबदार मोती इधर-उधर जन्नत में बिखरे पड़े हैं, हक़ीक़त में उससे ज़्यादा अच्छी तश्बीह उनके लिये कोई और न थी कि ये साहिबे जमाल ख़ुश-ख़ुसाल बूटे से क़द वाले सफ़ेद नूरानी चेहरों वो पाक-साफ़ सजी हुई पौशाकें पहने हुए ज़ेवर में लदे हुए अपने मालिक की फ़रमांबरदारी में दौड़ते-भागते इधर-उधर फिरते ऐसे भले होंगे जैसे सजे-सजाये पुर तकल्लुफ़ फ़र्श पर सफ़ेद चमकीले सच्चे मोती इधर-उधर लुढ़क रहे हों।

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) फ़रमाते हैं कि हर एक जन्नती के एक हज़ार ख़ादिम होंगे जो अलग-अलग काम-काज में लगे हुए होंगे। (ज़ईफ़ : बैहक़ी फ़िल्बअसि वन्नुशूर : 412, मरवज़ी फ़ी ज़वाइदिज़्ज़ुहद : 158, अत्तबरी फ़ी तफ़्सीर : 29-136, क़तादा मुदल्लस व अ़न्अ़न)

फिर फ़रमाता है ऐ नबी! तुम जन्नत की जिस जगह नज़र डालो तुम्हें नेमत और अ़ज़ीमुश्शान सल्तनत ही नज़र आयेगी, तुम देखोगे कि राहत व सुरूर नेमत व नूर से चप्पा-चप्पा मामूर है। चुनाँचे सहीह हदीस़ में है, 'सबसे आख़िर में जो जहन्नम से निकाला जायेगा और जन्नत में भेजा जायेगा, उससे जनाब बारी तआ़ला फ़रमायेगा, जा! मैंने तुझे जन्नत में वो दिया जो मिस्ल दुनिया के है बल्कि उससे भी दस हिस्से ज़्यादा दिया।' (सहीह बुख़ारी, किताबुर्रिक़ाक़, बाब सिफ़तुल जन्नत वन्नार : 6571, सहीह मुस्लिम : 186)

और हज़रत इब्ने उ़मर (रज़ि.) की रिवायत से वो हदीस़ भी पहले गुज़र चुकी है जिसमें है कि अदना

जन्नती की मिल्कियत व मुल्क दो हज़ार साल की मसाफ़त का होगा। हर क़रीब व बईद की चीज़ पर उसकी बेक नज़र यकसाँ निगाहें होगी। (ज़ईफ़ : तिर्मिज़ी, किताब तफ़्सीरुल क़ुरआन, बाब व मिन सूरतिल क़ियामह : 3330, अहमद : 2/13, मुस्नद अबी यअ़ला : 5712, अश्शरीअ़तु लिल्आजुरी : 631, अल्बअ़सु लिल्बैहक़ी : 477, इसकी सनद में सुवेर बिन अबी फ़ाख़्ता ज़ईफ़ रावी है। अत्तक़रीब : 1/120, 54)

ये हाल तो है अदना जन्नती का फिर समझ लो कि आला जन्नती का दर्जा क्या होगा? और उसकी नेमतें कैसी होंगी (ऐ अल्लाह! ऐ बग़ैर हमारी दुआ और अ़मल के हमें शीरे मादर के चश्मे इनायत करने वाले! हम बआजिज़ी व इल्हाह तेरी पाक जनाब में अ़र्ज़ गुज़ार हैं कि तू हमारी लल्चाई हुई तबीअ़त के अरमानों को पूरा कर और हमें भी जन्नतुल फ़िरदौस नसीब फ़रमाना गो ऐसे आमाल न हों लेकिन ईमान है कि तेरी रहमत आमाल पर ही मौक़ूफ़ नहीं, आमीन! मुतर्जिम)

तबरानी की एक बहुत ही ग़रीब हदीस़ में वारिद है कि एक हब्शी दरबारे रिसालत में हाज़िर हुआ। आप (ﷺ) ने उसे फ़रमाया, 'तुम्हें जो कुछ पूछना हो जिस बात को समझना हो पूछ लो।' उसने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल! सूरत-शक्ल में, रंग-रूप में, नुबूवत व रिसालत में आपको हम पर फ़ज़ीलत दी गई है। अब तो ये फ़रमाइये कि अगर मैं भी उन चीज़ों पर ईमान लाऊँ जिन पर आप ईमान लाये हैं और जिन पर आप अ़मल करते हैं अगर मैं भी उसी पर अ़मल करूँ तो क्या जन्नत में आपके साथ हो सकता हूँ? आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'हाँ! क़सम है उस अल्लाह की जिसके हाथ में मेरी जान है कि स्याह रंग लोगों को जन्नत में वो सफ़ेद रंग दिया जायेगा जो एक हज़ार साल के फ़ासले से दिखाई देगा। फिर हुज़ूर (ﷺ) ने फ़रमाया, 'जो शख़्स ला इला-ह इल्लल्लाह कहे उसके लिये अल्लाह के पास अ़हद मुक़र्रर हो जाता है और जो शख़्स सुब्हानअल्लाहि वबि-हम्दिही कहे उसके लिये एक लाख चौबीस हज़ार नेकियाँ लिखी जाती हैं। तो एक शख़्स ने कहा, फिर ऐ अल्लाह के रसूल! हम कैसे हलाक हो जायेंगे? आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'सुनो! एक शख़्स इतनी नेकियाँ लायेगा कि अगर किसी बड़े पहाड़ पर रखी जायें तो उस पर बोझल पड़ें लेकिन फिर जो अल्लाह की नेमतें उसके मुक़ाबिल आयेंगी तो क़रीब होगा कि सब फ़ना हो जायेंगे मगर ये और बात है कि रहमते रब तवज्जह फ़रमाये।' उस वक़्त ये सूरत मुल्कन कबीरा तक उतरी तो उसी हब्शी ने कहा, ऐ हुज़ूर! जो कुछ आपकी आँखें जन्नत में देखेंगी क्या मेरी आँखें भी देखेंगी? आप (ﷺ) ने फ़रमाया, हाँ-हाँ! पस वो रोने लगा यहाँ तक कि उसकी रूह परवाज़ कर गई। हज़रत अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) फ़रमाते हैं, मैंने देखा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने अपने मुबारक हाथ से उसे दफ़न किया। (ज़ईफ़ : मुअ़जम अल्कबीर : 13595, मज्मउ़ज़्ज़वाइद : 10/356, इसकी सनद में अय्यूब बिन उ़तबा ज़ईफ़ रावी है। अल्मीज़ान : 1/290, हदीस़ नम्बर : 1090)

फिर अहले जन्नत के लिबास का ज़िक्र हो रहा है कि वो सब्ज़ हरे रंग का महीन और चमकदार रेशम होगा सुन्दुस आला दर्जे का ख़ालिस नर्म रेशम जो बदन से लगा हुआ होगा इस्तबरक़ उम्दा बेश-बहा गिराँ क़द्र रेशम जिसमें चमक-दमक होगी जो ऊपर पहनाया जायेगा साथ ही चाँदी के कंगन हाथों में होंगे, ये लिबास अबरार का है।

और मुक़र्रबीने ख़ास के बारे में और जगह इरशाद है, (يُحَلَّوْنَ فِيهَا مِنْ أَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبٍ وَلُؤْلُؤًا ۚ وَ لِبَاسُهُمْ فِيهَا حَرِيرٌ ﴿٢٣﴾) (सूरह हज 22 : 23) 'उन्हें सोने के कंगन हीरे जड़े हुए पहनाये जायेंगे और ख़ालिस नर्म साफ़ रेशमी लिबास होगा।'

उन ज़ाहिरी जिस्मानी इस्तेमाली नेमतों के साथ ही उन्हें पुरकैफ़ बालज़्ज़त, सुरूर वाली, पाक और पाक करने वाली शराब पिलाई जायेगी जो तमाम ज़ाहिरी बातिनी बुराई दूर कर देगी हसद कीना, बदख़ुल्क़ी, गुस्सा वग़ैरह सब दूर कर देगी। जैसे अमीरुल मोमिनीन हज़रत अ़ली बिन अबी तालिब (रज़ि.) से मरवी है कि जब अहले जन्नत, जन्नत के दरवाज़े पर पहुँचेंगे तो उन्हें दो नहरें नज़र आयेंगी और उन्हें अज़ ख़ुद ख़्याल पैदा होगा, एक का वो पानी पियेंगे तो उनके दिलों में जो कुछ था सब दूर हो जायेगा। दूसरी में ग़ुस्ल करेंगे जिससे चेहरे तरो-ताज़ा, हश्शाश-बश्शाश हो जायेंगे। ज़ाहिरी और बातिनी दोनों ख़ूबियाँ उन्हें बदर्जा कमाल हासिल होंगी, जिसका बयान यहाँ हो रहा है।

फिर उनसे उनके दिल ख़ुश करने के लिये और उनकी ख़ुशी दोबाला करने के लिये बार-बार कहा जायेगा कि ये तुम्हारे आ़माल का बदला और तुम्हारी भली कोशिशों की क़द्र दानी है। जैसे और जगह है, (كُلُوا وَاشْرَبُوا هَنِيئًا بِمَا أَسْلَفْتُمْ فِي الْأَيَّامِ الْخَالِيَةِ ﴿٢٤﴾) (सूरह हाक़्क़ह 69 : 24) 'दुनिया में जो आ़माल तुमने किये उनकी नेक जज़ा में आज तुम ख़ूब सहता-पचता बआराम व इत्मीनान खाते-पीते रहो।'

और फ़रमान है, (وَنُودُوا أَنْ تِلْكُمُ الْجَنَّةُ أُورِثْتُمُوهَا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٤٣﴾) (सूरह आ़राफ़ 7 : 43) 'मुनादी किये जायेंगे कि इन जन्नतों का वारिस़ तुम्हें तुम्हारी नेक किरदारियों की बिना पर बनाया गया है।' यहाँ भी फ़रमाया है कि तुम्हारी सई मश्कूर है थोड़े अ़मल पर बहुत अज्र है। अल्लाह तआ़ला हमें भी उनमें से करे, आमीन!

***

إِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا عَلَيْكَ الْقُرْآنَ تَنْزِيلًا ﴿٢٣﴾ فَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ وَلَا تُطِعْ مِنْهُمْ
آثِمًا أَوْ كَفُورًا ﴿٢٤﴾ وَاذْكُرِ اسْمَ رَبِّكَ بُكْرَةً وَأَصِيلًا ﴿٢٥﴾ وَمِنَ اللَّيْلِ فَاسْجُدْ لَهُ
وَسَبِّحْهُ لَيْلًا طَوِيلًا ﴿٢٦﴾ إِنَّ هَٰؤُلَاءِ يُحِبُّونَ الْعَاجِلَةَ وَيَذَرُونَ وَرَاءَهُمْ يَوْمًا
ثَقِيلًا ﴿٢٧﴾ نَحْنُ خَلَقْنَاهُمْ وَشَدَدْنَا أَسْرَهُمْ ۖ وَإِذَا شِئْنَا بَدَّلْنَا أَمْثَالَهُمْ تَبْدِيلًا

۞اِنَّ هٰذِهٖ تَذْكِرَةٌ ۚ فَمَنْ شَآءَ اتَّخَذَ اِلٰى رَبِّهٖ سَبِيْلًا ۞ وَمَا تَشَآءُوْنَ اِلَّآ اَنْ
يَّشَآءَ اللّٰهُ ۭ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ۞ يُّدْخِلُ مَنْ يَّشَآءُ فِيْ رَحْمَتِهٖ ۭ وَالظّٰلِمِيْنَ
اَعَدَّ لَهُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ۞

तर्जुमा : "बेशक हमने तुझ पर बतदरीज क़ुरआन नाज़िल किया है। (23) पस तू अपने रब के हुक्म पर क़ायम रह और उनमें से किसी गुनहगार या नाशुक्रे का कहा न मान। (24) और अपने रब के नाम का सुबह व शाम ज़िक्र किया कर। (25) और रात के वक़्त उसके सामने सज्दे कर और बहुत रात तक उसकी तस्बीह किया कर। (26) बेशक ये लोग दुनिया को चाहते हैं और अपने पीछे एक बड़े भारी दिन को छोड़े देते हैं। (27) हमने ही उन्हें पैदा किया और हमने ही उनके बंधन मज़बूत किये और हम जब चाहें उनके ऐवज़ उन जैसे औरों को बदल लायें। (28) यक़ीनन ये तो एक नसीहत है, पस जो चाहे अपने रब की राह ले। (29) और तुम न चाहोगे मगर ये कि अल्लाह तआला ही चाहे, बेशक अल्लाह तआला दाना और बाहिक्मत है। (30) जिसे चाहे अपनी रहमत में दाख़िल कर ले और दर्दनाक अज़ाब की तैयारी तो सिर्फ़ गुनहगारों के लिये है।" (31)

क़ुरआन का नुज़ूल बतदरीज हुआ (आयत : 23-31) : अल्लाह तआला ने अपने नबी (ﷺ) पर अपना ख़ास करम जो किया है उसे याद दिलाता है कि हम ने तुझ पर बतदरीज थोड़ा-थोड़ा करके ये क़ुरआन करीम नाज़िल फ़रमाया, अब इस इकराम के मुक़ाबले में तुम्हें भी चाहिये कि मेरी राह में सब्र व सिहार से काम लो, मेरी क़ज़ा व क़द्र पर साबिर-शाकिर हो देखो तो सही कि मैं अपने हुस्ने तदबीर से तुम्हें कहाँ से कहाँ पहुँचाता हूँ, उन काफ़िरों-मुनाफ़िक़ों की बातों में न आना गो ये तब्लीग़ से रोकें, लेकिन तुम न रुकना। बिला रू रिआयत बग़ैर मायूसी और थकान के हर वक़्त वअज़ व नसीहत, इरशाद व तल्क़ीन से ग़र्ज़ रखो, मेरी ज़ात पर भरोसा रखो मैं तुम्हें लोगों की ईज़ा से बचाऊँगा। तुम्हारी अस्मत का ज़िम्मेदार मैं हूँ। फ़ाजिर कहते हैं बद आमाल आसी को और कफ़ूर कहते हैं दिल के मुन्किर को, दिन के अव्वल आख़िर के हिस्से में रब का नाम लिया करो, रातों को तहज्जुद की नमाज़ पढ़ो और देर तक अल्लाह तआला की तस्बीह करो। जैसे और जगह फ़रमाया, (وَمِنَ الَّيْلِ فَتَهَجَّدْ بِهٖ نَافِلَةً لَّكَ) (सूरह बनी इस्राईल 17 : 79) 'रात को तहज्जुद पढ़ो अन्क़रीब तुम्हें तुम्हारा रब मक़ामे महमूद में पहुँचायेगा।' सूरह मुज़्ज़म्मिल के शुरू में फ़रमाया, (يٰٓاَيُّهَا الْمُزَّمِّلُ ۞ قُمِ الَّيْلَ اِلَّا قَلِيْلًا ۞ نِّصْفَهٗٓ اَوِ انْقُصْ مِنْهُ قَلِيْلًا ۞ اَوْ زِدْ عَلَيْهِ وَرَتِّلِ الْقُرْاٰنَ تَرْتِيْلًا ۞) 'ऐ लिहाफ़ ओढ़ने वाले! रात का क़ियाम कर मगर थोड़ी रात आधी रात या उससे कुछ कम या कुछ ज़्यादा और क़ुरआन को तर्तील से पढ़।' (सूरह मुज़्ज़म्मिल : 1-4) फिर कुफ़्फ़ार को रोकता है कि हुब्बे

दुनिया में फंसकर आख़िरत को तर्क न कर वो बड़ा भारी दिन है, इस फ़ानी दुनिया के पीछे पड़कर उस ख़ौफ़नाक दिन की दुश्वारियों से ग़ाफ़िल हो जाना अक़्लमन्दी का काम नहीं। फिर फ़रमाता है सबके ख़ालिक़ हम हैं और सबकी मज़बूत पैदाइश और क़वी-क़वा हमने ही बनाये हैं और हम बिल्कुल ही क़ादिर हैं कि क़यामत के दिन उन्हें बदल कर नई पैदाइश में पैदा कर दें। यहाँ इब्तिदा आफ़रींश को इआदा की दलील बनाया है।

और इस आयत का ये मतलब भी है कि अगर हम चाहें और जब चाहें हमें क़ुदरत हासिल है कि उन्हें फ़ना कर दें, मिटा दें और उन जैसे दूसरे इंसानों को उनके क़ायम मक़ाम कर दें। जैसे और जगह है, (اِنْ يَّشَاْ يُذْهِبْكُمْ وَيَاْتِ بِخَلْقٍ جَدِيْدٍ) (सूरह इब्राहीम 14 : 19) 'अगर अल्लाह तआला चाहे तो ऐ लोगो! तुम सबको बर्बाद कर दे और दूसरे लाये, अल्लाह तआला इस पर हर आन क़ादिर है।' और जगह फ़रमाया, अगर चाहे तुम्हें फ़ना कर दे और नई मख़्लूक़ लाये, अल्लाह पर ये गिराँ नहीं। फिर फ़रमाता है ये सूरत सरासर इबरत व नसीहत है जो चाहे इससे नसीहत हासिल करके अल्लाह तआला से मिलने की राह पर चलने लग जाये। जैसे और जगह फ़रमान है, वमा ज़ा अलैहिम 'उन पर क्या बोझ पड़ जाता अगर ये अल्लाह को क़यामत को मान लेते?' फिर फ़रमाया बात ये है कि जब तक अल्लाह न चाहे तुम्हें हिदायत की चाहत ही न होगी, अल्लाह तआला अलीम व हकीम है। मुस्तहिक़ीने हिदायत के लिये वो हिदायत की राहें आसान कर देता है और हिदायत के अस्बाब मुहैया कर देता है और जो अपने आपको मुस्तहिक़े ज़लालत बना लेता है उसे वो हिदायत से हटा देता है हर काम में उसकी हिक्मते बालिग़ा और हुज्जतनामा है, जिसे चाहे अपनी रहमत तले ले ले और राहे रास्त पर खड़ा कर दे और जिसे चाहे बेराह चलने दे और राहे रास्त न समझाये, उसकी हिदायत न तो कोई खो सकेगा न उसकी गुमराही को कोई रास्ती से बदल सकेगा, उसके अज़ाब गुनहगारों, ज़ालिमों और नाइंसाफ़ों के लिये ही मख़्सूस हैं।

अल्हम्दुलिल्लाह सूरह दहर की तफ़्सीर ख़त्म हुई, अल्लाह तआला का शुक्र है।

***

FLOW CHART
तरतीबी नक्श-ए-रब्त

MACRO-STRUCTURE
नज़्मे-जली

सूरह मुर्सलात - 77

आयात : 50, मक्की, पैराग्राफ : 5

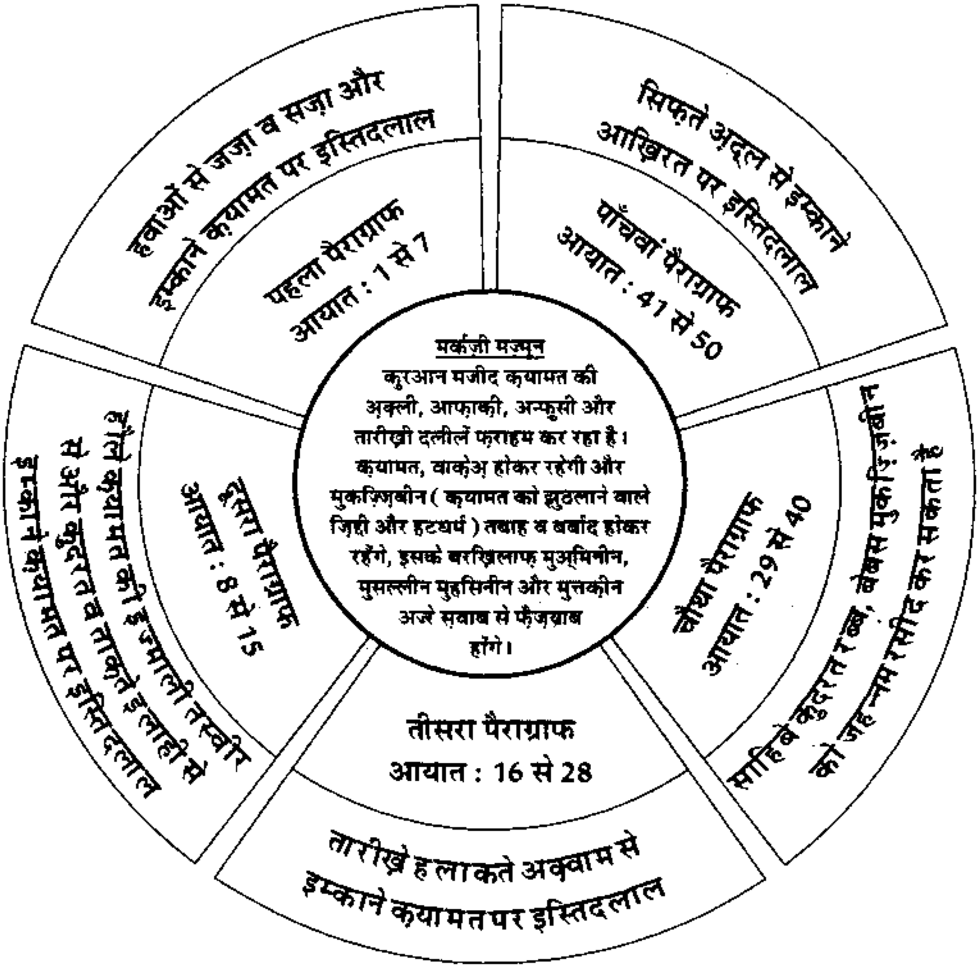

तफ़्सीर सूरह मुर्सलात

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ ○

तर्जुमा : "शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है।"

وَالۡمُرۡسَلٰتِ عُرۡفًا ① فَالۡعٰصِفٰتِ عَصۡفًا ② وَّالنّٰشِرٰتِ نَشۡرًا ③ فَالۡفٰرِقٰتِ فَرۡقًا
④ فَالۡمُلۡقِيٰتِ ذِكۡرًا ⑤ عُذۡرًا اَوۡ نُذۡرًا ⑥ اِنَّمَا تُوۡعَدُوۡنَ لَوَاقِعٌ ⑦ فَاِذَا النُّجُوۡمُ
طُمِسَتۡ ⑧ وَاِذَا السَّمَآءُ فُرِجَتۡ ⑨ وَاِذَا الۡجِبَالُ نُسِفَتۡ ⑩ وَاِذَا الرُّسُلُ اُقِّتَتۡ
⑪ لِاَىِّ يَوۡمٍ اُجِّلَتۡ ⑫ لِيَوۡمِ الۡفَصۡلِ ⑬ وَمَاۤ اَدۡرٰىكَ مَا يَوۡمُ الۡفَصۡلِ ⑭ وَيۡلٌ
يَّوۡمَئِذٍ لِّلۡمُكَذِّبِيۡنَ ⑮

तर्जुमा : "दिल ख़ुशकुन (ख़ुश करने वाली) हल्की हवाओं की क़सम। (1) फिर ज़ोर से झोंका देने वालियों की क़सम। (2) फिर अब्र को उभार कर परागन्दा करने वालियों की क़सम। (3) फिर हक़ व बातिल को जुदा-जुदा कर देने वाले। (4) और वह्य लाने वाले फ़रिश्तों की क़सम। (5) जो इल्ज़ाम उतारने या आगाह कर देने के लिये होती है। (6) कि जिस चीज़ का वादा किया जाता है वो यक़ीनन होने वाली है। (7) पस जब सितारे बेनूर कर दिये जायेंगे। (8) और जब आसमान तोड़-फोड़ दिया जायेगा। (9) और जब पहाड़ टुकड़े-टुकड़े करके उड़ा दिये जायेंगे। (10) और जब रसूलों को वक़्ते मुक़र्ररह पर लाया जायेगा। (11) किस दिन के लिये (उन्हें) ठहराया गया है? (12) फ़ैसले के दिन के लिये। (13) और तुझे क्या मालूम कि फ़ैसले का दिन क्या है? (14) उस दिन झुठलाने वालों की ख़राबी है।" (15)

तआरुफ़े सूरत : हज़रत इब्ने मसऊद (रज़ि.) फ़रमाते हैं कि हम मिना के एक ग़ार में थे जब ये सूरत उतरी। हुज़ूर (ﷺ) इसकी तिलावत कर रहे थे और मैं आप (ﷺ) से सुनकर याद कर रहा था कि नागहाँ (अचानक)

एक साँप हम पर कूदा। हुज़ूर (ﷺ) ने फ़रमाया, इसे मारो। हम गो झपटे लेकिन वो निकल गया तो आपने फ़रमाया, 'तुम्हारी सज़ा से वो बच गया जैसे तुम इसकी बुराई से महफ़ूज़ रहे।' (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरतुल मुर्सलात, बाब हाज़ा यौमु ला यन्तिक़ून : 4934, सहीह मुस्लिम : 2234, अहमद : 1/428, हाकिम : 1/453, इब्ने हिब्बान : 708)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) की वालिदा साहिबा हज़रत उम्मुल फ़ज़ल (रज़ि.) फ़रमाती हैं कि मैंने आँहज़रत को मग़्रिब की नमाज़ में इस सूरत की क़िरअत करते हुए सुना है। (अहमद : 6/338, वहुव हदीसुन सहीह, सहीह बुख़ारी : 4429, सहीह मुस्लिम : 462)

दूसरी हदीस में है कि हज़रत अब्दुल्लाह (रज़ि.) को इस सूरत को पढ़ते हुए सुन कर उम्मे फ़ज़ल (रज़ि.) ने फ़रमाया, प्यारे बच्चे! आज तो तुमने याद दिला दिया मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) की ज़बान मुबारक से इस सूरत को मग़्रिब की नमाज़ में पढ़ते हुए आख़िरी मर्तबा सुना है।' (सहीह बुख़ारी, किताबुल अज़ान, बाब अल्क़िरअतु फ़िल्मग़्रिब : 763, सहीह मुस्लिम : 462, अबू दाऊद : 810, तिर्मिज़ी : 308, इब्ने माजह : 831)

(आयत : 1-15) : कुछ बुज़ुर्ग सहाबा (रज़ि.) व ताबेईन (रह.) से तो मरवी है कि मज़्कूरा बाला क़समें उन औसाफ़ वाले फ़रिश्तों की खाई हैं। कुछ कहते हैं पहले की चार क़समें तो हवाओं की हैं और पाँचवीं क़सम फ़रिश्तों की है। कुछ ने तवक़्क़ुफ़ किया है कि वल्मुर्सलात से मुराद या तो फ़रिश्ते हैं या हवायें हैं। हाँ वल्आसिफ़ात में कहा है कि इससे मुराद तो हवायें हैं। कुछ आसिफ़ात में ये फ़रमाते हैं और नाशिरात में कोई फ़ैसला नहीं करते। ये भी मरवी है कि नाशिरात से मुराद बारिश है। बज़ाहिर तो ये मालूम होता है कि मुर्सलात से मुराद हवायें हैं जैसे और जगह फ़रमाने बारी तआला है, (وَأَرْسَلْنَا الرِّيٰحَ لَوَاقِحَ) (सूरह हिज्र 15 : 22) 'यानी हमने हवायें-चलाईं जो अब्र को बोझल करने वालियाँ हैं।' और जगह है, (وَهُوَ الَّذِىْ يُرْسِلُ الرِّيٰحَ بُشْرًا بَيْنَ يَدَىْ رَحْمَتِهٖ) (सूरह आराफ़ 7 : 57) 'अपनी रहमत से पेश्तर उसकी ख़ुशख़बरी देने वाली ठण्डी-ठण्डी हवायें वो चलाता है।' आसिफ़ात से भी मुराद हवायें हैं, वो नर्म हल्की और भीनी-भीनी हवायें थीं ये ज़रा तेज़ झोंकों वाली आवाज़ वाली हवायें हैं। नाशिरात से मुराद भी हवाएँ हैं जो बादलों को आसमान में हर चहार सू फैला देती हैं और जिधर अल्लाह का हुक्म होता है उन्हें ले जाती हैं। फ़ारिक़ात और मुल्क़ियात से मुराद अल्बत्ता फ़रिश्ते हैं जो अल्लाह करीम के हुक्म से रसूलों पर वह्य लेकर आते हैं, जिससे हक़ व बातिल, हलाल व हराम में, ज़लालत व हिदायत में इम्तियाज़ और फ़र्क़ हो जाता है ताकि लोगों के उ़ज़्र ख़त्म हो जायें और मुन्किरीन को तम्बीह हो जाये।

क़यामत क़रीब है : उन क़समों के बाद फ़रमान है कि जिस क़यामत का तुमसे वादा किया गया है जिस दिन तुम सबके सब अव्वल-आख़िर वाले अपनी-अपनी क़ब्रों से दोबारा ज़िन्दा किये जाओगे और अपने करतूत का फल पाओगे। नेकी की जज़ा और बदी की सज़ा। सूर फूंक दिया जायेगा और एक चटियल मैदान में तुम सब जमा कर दिये जाओगे, ये वादा यक़ीनन हक़ है और होकर रहने वाला और लाज़िमी तौर पर आने वाला है। उस

दिन सितारों का नूर और उनकी चमक-दमक माँद पड़ जायेगी। जैसे फ़रमाया, (وَإِذَا النُّجُومُ انْكَدَرَتْ ۝٢) (सूरह तकवीर 81 : 2) और जगह फ़रमाया, (وَإِذَا الْكَوَاكِبُ انْتَثَرَتْ ۝٢) (सूरह इन्फ़ितार 82 : 2) सितारे बेनूर होकर झड़ जायेंगे और आसमान फट जायेगा, टुकड़े-टुकड़े हो जायेगा और पहाड़ रेज़ा-रेज़ा होकर उड़ जायेंगे। यहाँ तक कि नामो-निशान भी बाक़ी न रहेगा। जैसे और जगह है, (وَيَسْأَلُونَكَ عَنِ الْجِبَالِ) (सूरह ताहा 20 : 105) 'और ये तुझसे सवाल करते हैं पहाड़ों के बारे में अल्अख़।' और जगह फ़रमाया, (وَيَوْمَ نُسَيِّرُ الْجِبَالَ) (सूरह कहफ़ 18 : 47) 'पहाड़ रेज़ा-रेज़ा होकर उड़ जायेंगे और उस दिन वो चलने लगेंगे, बिल्कुल नामो-निशान मिट जायेगा और ज़मीन हमवार बग़ैर ऊँच-नीच के रह जायेगी।' और रसूलों को जमा किया जायेगा उस वक़्ते मुक़र्ररह पर उन्हें लाया जायेगा।

जैसे और जगह है, (يَوْمَ يَجْمَعُ اللَّهُ الرُّسُلَ) (सूरह माइदा 5 : 109) 'उस दिन अल्लाह रसूलों को जमा करेगा और उनसे शहादतें लेगा।' जैसे और जगह है, (وَأَشْرَقَتِ الْأَرْضُ) (सूरह ज़ुमर 39 : 69) 'ज़मीन अपने रब के नूर से चमक उठेगी।' नामाए आमाल दे दिये जायेंगे, नबियों को और गवाहों को लाया जायेगा और हक़ व इंसाफ़ के साथ फ़ैसले किये जायेंगे और किसी पर ज़ुल्म न होगा। फिर फ़रमाता है कि उन रसूलों को ठहराया गया था इसलिये कि क़यामत के दिन फ़ैसले होंगे, जैसे फ़रमाया, (فَلَا تَحْسَبَنَّ اللَّهَ مُخْلِفَ وَعْدِهِ رُسُلَهُ) (सूरह इब्राहीम 14 : 47) 'ये ख़्याल न कर कि अल्लाह तआला अपने रसूलों से वादा ख़िलाफ़ी करेगा। नहीं-नहीं! अल्लाह तआला बड़े ग़ल्बे वाला और इन्तिक़ाम वाला है।' जिस दिन ये ज़मीन बदल दी जायेगी और आसमान भी बदल दिया जायेगा और सबके सब अल्लाह वाहिद व क़ह्हार के सामने पेश हो जायेंगे। उसी दिन को यहाँ फ़ैसले का दिन कहा गया फिर उस दिन की अज़्मत ज़ाहिर करने के लिये फ़रमाया, मेरे मालूम कराये बग़ैर ऐ नबी! तुम भी उस दिन की हक़ीक़त से बाख़बर नहीं हो सकते। उस दिन उन झुठलाने वालों के लिये सख़्त ख़राबी है। एक ग़ैर सहीह हदीस़ में ये भी गुज़र चुका है कि वैल जहन्नम की एक वादी का नाम है। (ज़ईफ़ : तिर्मिज़ी, किताब तफ़्सीरुल क़ुरआन, बाब व मिन सूरतिल अम्बिया : 3164, इसकी सनद में दराज है जिसकी अबुल हैस़म से रिवायत ज़ईफ़ होती है। अत्तक़रीब : 1/235, 54)

***

أَلَمْ نُهْلِكِ الْأَوَّلِينَ ۝١٦ ثُمَّ نُتْبِعُهُمُ الْآخِرِينَ ۝١٧ كَذَٰلِكَ نَفْعَلُ بِالْمُجْرِمِينَ ۝١٨
وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ۝١٩ أَلَمْ نَخْلُقْكُمْ مِنْ مَاءٍ مَهِينٍ ۝٢٠ فَجَعَلْنَاهُ فِي قَرَارٍ مَكِينٍ
۝٢١ إِلَىٰ قَدَرٍ مَعْلُومٍ ۝٢٢ فَقَدَرْنَا فَنِعْمَ الْقَادِرُونَ ۝٢٣ وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ۝٢٤

اَلَمْ نَجْعَلِ الْاَرْضَ كِفَاتًا ﴿٢٥﴾ اَحْيَآءً وَّاَمْوَاتًا ﴿٢٦﴾ وَّجَعَلْنَا فِيْهَا رَوَاسِيَ شٰمِخٰتٍ
وَّاَسْقَيْنٰكُمْ مَّآءً فُرَاتًا ﴿٢٧﴾ وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿٢٨﴾

तर्जुमा : "क्या हमने अगलों को हलाक नहीं किया? (16) फिर हम उनके बाद पिछलों को लाये। (17) हम गुनहगारों के साथ इसी तरह करते हैं। (18) उस दिन झुठलाने वालों के लिये वैल (अफ़सोस) है। (19) क्या हमने तुम्हें ज़लील पानी से (मनी से) पैदा नहीं किया? (20) फिर हमने उसे मज़बूत व महफ़ूज़ जगह में रखा। (21) एक मुक़र्ररह वक़्त तक। (22) फिर हमने अन्दाज़ा किया और हम कितना अच्छा अन्दाज़ा करने वाले हैं। (23) उस दिन तकज़ीब करने वालों की ख़राबी है। (24) क्या हमने ज़मीन को समेटने वाली नहीं बनाया? (25) ज़िन्दों को भी और मुर्दों को भी। (26) और हम ने उसमें बुलंद व भारी पहाड़ बना दिये और तुम्हें सैराब करने वाला मीठा पानी पिलाया। (27) उस दिन झूठ जानने वालों पर वाय और अफ़सोस है।" (28)

गुनहगारों का अन्जाम हलाकत है (आयत : 16-28) : अल्लाह तआला फ़रमाता है कि तुमसे पहले भी जिन लोगों ने मेरे रसूलों की रिसालत को झुठलाया, मैंने उन्हें तहस-नहस कर दिया, फिर उनके बाद और आये उन्होंने भी ऐसा ही किया और हमने उन्हें उसी तरह ग़ारत कर दिया। हम मुज्रिमों की ग़फ़लत का यही बदला देते चले आये हैं, उस दिन उन झुठलाने वालों की दुर्गत होगी। फिर अपनी मख़्लूक़ को अपना एहसान याद दिलाता है और मुन्किरीने क़यामत के सामने दलील पेश करता है कि हमने उसे हक़ीर और ज़लील क़तरे से पैदा किया जो ख़ालिक़े कायनात के सामने नाचीज़ महज़ था, जैसे सूरह यासीन की तफ़्सीर में गुज़र चुका कि ऐ इब्ने आदम! भला तू मुझे आजिज़ कर सकेगा? (देखिये सूरह यासीन : 77) मैंने तुझे इस जैसी चीज़ से पैदा किया है, फिर उस क़तरे को हमने रहम में जमा किया जो उस पानी के जमा होने की जगह है उसे बढ़ाता है और महफ़ूज़ रखता है। मुद्दते मुक़र्ररह तक वो वहीं रहा यानी छः महीने से नौ महीने, हमारे इस अन्दाज़े को देखो कि किस क़द्र सहीह और बेहतरीन है फिर भी अगर तुम उस आने वाले दिन को न मानोगे तो यक़ीन जानो कि तुम्हें क़यामत के दिन बड़ी हसरत और सख़्त अफ़सोस होगा। फिर फ़रमाया क्या हमने ज़मीन को ये ख़िदमत सुपुर्द नहीं की? कि वो तुम्हें ज़िन्दगी में अपनी पीठ पर चलाती रहे और मौत के बाद भी तुम्हें अपने पेट में छिपा रखे। फिर ज़मीन के न हिलने-जुलने के लिये हम ने मज़बूत वज़नी बुलंद पहाड़ उसमें गाड़ दिये और बादलों से बरसता हुआ और चश्मों से रिस्ता हुआ हल्का ज़ूद हज़म ख़ुशगवार पानी हमने तुम्हें पिलाया। उन नेमतों के बावजूद भी अगर तुम मेरी बातों को झुठलाते ही रहे तो याद रखो वो वक़्त आ रहा है जब हसरत व अफ़सोस करोगे और वो कुछ काम न आयेगी।

اِنْطَلِقُوْۤا اِلٰى مَا كُنْتُمْ بِهٖ تُكَذِّبُوْنَ ﴿۲۹﴾ اِنْطَلِقُوْۤا اِلٰى ظِلٍّ ذِىْ ثَلٰثِ شُعَبٍ ﴿۳۰﴾ لَّا
ظَلِيْلٍ وَّلَا يُغْنِىْ مِنَ اللَّهَبِ ﴿۳۱﴾ اِنَّهَا تَرْمِىْ بِشَرَرٍ كَالْقَصْرِ ﴿۳۲﴾ كَاَنَّهٗ جِمٰلَتٌ صُفْرٌ ﴿۳۳﴾
وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿۳۴﴾ هٰذَا يَوْمُ لَا يَنْطِقُوْنَ ﴿۳۵﴾ وَلَا يُؤْذَنُ لَهُمْ فَيَعْتَذِرُوْنَ
﴿۳۶﴾ وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿۳۷﴾ هٰذَا يَوْمُ الْفَصْلِ جَمَعْنٰكُمْ وَالْاَوَّلِيْنَ ﴿۳۸﴾ فَاِنْ
كَانَ لَكُمْ كَيْدٌ فَكِيْدُوْنِ ﴿۳۹﴾ وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿۴۰﴾

तर्जुमा : ''उस दोज़ख़ की तरफ़ जाओ जिसे तुम झुठलाते रहे थे। (29) चलो तीन शाख़ोंदार साये की तरफ़। (30) जो दरअसल न साया देने वाला है और न शौले से बचा सकता है। (31) यक़ीनन दोज़ख़ चिंगारियाँ फेंकती है जो मिस्ल क़िले के हैं। (32) गोया कि वो ज़र्द ऊँट हैं। (33) आज उन झूठ जानने वालों की दुर्गत है। (34) आज का दिन वो दिन है कि ये बोल भी न सकेंगे। (35) न उन्हें मअ्ज़रत की इजाज़त दी जायेगी। (36) आज झूठा जानने वालों की ख़राबी है। (37) ये है फ़ैसले का दिन, हमने तुम्हें और अगलों को सबको जमा कर लिया है। (38) पस तुम मुझ से कोई चाल चल सकते हो तो चल लो। (39) वाय है उस दिन झुठलाने वालों के लिये।'' (40)

आयत : 29-40 : जो कुफ़्फ़ार क़यामत के दिन और जज़ा-सज़ा को, जन्नत-दोज़ख़ को झुठलाते थे उनसे क़यामत के दिन कहा जायेगा कि लो जिसे सच्चा न मानते थे, वो सज़ा और वो दोज़ख़ ये मौजूद है इसमें जाओ इसके शौले भड़क रहे हैं और ऊँचे हो-होकर उनमें तीन फांकें खुल जाती हैं, तीन हिस्से हो जाते हैं और साथ ही धुवाँ भी ऊपर को चढ़ता है जिससे नीचे की तरफ़ छांव पड़ती है और साया मालूम होता है लेकिन फ़िल्वाक़ेअ न तो वो साया है न आग की हरारत को कम करता है, ये जहन्नम इतनी तेज़ व तुन्द सख़्त और बकसरत आग वाली है कि उसकी चिंगारियाँ जो उड़ती हैं वो भी मिस्ल क़िले के और तनावर दरख़्त के मज़बूत लम्बे-चौड़े तने के हैं, देखने वाले को ये जचता है कि गोया वो स्याह रंग के ऊँट हैं या कश्तियों के रस्से हैं या ताँबे के टुकड़े हैं।

जहन्नम का ज़िक्र : हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) फ़रमाते हैं कि हम जाड़े के मौसम में तीन-तीन हाथ की या कुछ ज़्यादा लम्बी लकड़ियाँ लेकर उन्हें बुलंद कर लेते, उसे हम क़स्र कहा करते थे। (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरतुल मुर्सलात, बाब इन्नहा तरमी बिशररिन क़ल्क़स्र : 4932)

कश्ती की रस्सियाँ जब इकट्ठी हो जाती हैं तो ख़ासी ऊँची क़दे आदम के बराबर हो जाती हैं, उसी को यहाँ मुराद लिया गया है। इन झुठलाने वालों पर हसरत व अफ़सोस है आज न ये बोल सकेंगे और न इन्हें उ़ज़्र व मअ़ज़रत करने की इजाज़त मिलेगी, क्योंकि इन पर हुज्जत क़ायम हो चुकी और ज़ालिमों पर अल्लाह तआला की बात साबित हो गई अब इन्हें बोलने की इजाज़त नहीं। ये याद रहे कि क़ुरआन करीम में इनका बोलना मुकरना छिपाना उ़ज़्र करना भी बयान हुआ है। तो मतलब ये है कि हुज्जत क़ायम होने से पहले उ़ज़्र-मअ़ज़रत ख़त्म हो जायेगी। ग़र्ज़ मैदाने हश्र के मुख़्तलिफ़ मवाक़ेअ़ और लोगों की मुख़्तलिफ़ हालतें होंगी, किसी वक़्त ये किसी वक़्त वो। इसीलिये यहाँ हर काम के ख़ातमे पर झुठलाने वालों की ख़राबी की ख़बर दे दी जाती है। फिर फ़रमाता है कि ये फ़ैसले का दिन है अगले-पिछले सब यहाँ जमा हैं अगर तुम किसी चालाकी और मक्कारी से होशियारी और फ़रेबदेही से मेरे क़ब्ज़े से निकल सकते हो तो निकल जाओ पूरी कोशिश कर लो। ख़्याल फ़रमाइये कि किस क़द्र दिल हिला देने वाला फ़िक़रा है, परवरदिगारे आलम ख़ुद क़यामत के दिन उन मुन्किरों से फ़रमायेगा कि अब ख़ामोश क्यों हो? वो चलत-फिरत चालाकी और बेबाकी क्या हुई? देखो मैंने तुम सबको एक मैदान में हस्बे वादा जमा कर दिया, आज अगर किसी हिक्मत से मुझसे छूट सकते हो तो कमी न करो, जैसे और जगह है, (يٰمَعْشَرَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ اِنِ اسْتَطَعْتُمْ اَنْ تَنْفُذُوْا مِنْ اَقْطَارِ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ فَانْفُذُوْا ۭ لَا تَنْفُذُوْنَ اِلَّا بِسُلْطٰنٍ) (सूरह रहमान 55 : 33) 'ऐ जिन्न व इन्स के गिरोह! अगर तुम आसमान व ज़मीन के किनारों से बाहर चले जाने की ताक़त रखते हो तो निकल जाओ, मगर इतना समझ लो कि बग़ैर कुव्वत के तुम बाहर नहीं जा सकते (और वो तुममें नहीं)।'

और जगह है, (وَلَا تَضُرُّوْنَهٗ شَيْـًٔا) (सूरह हूद 11 : 57) 'तुम अल्लाह का कुछ नहीं बिगाड़ सकते।' हदीस़ में है कि अल्लाह तबारक व तआला फ़रमाता है ऐ मेरे बन्दो! न तो तुम्हें मुझे नफ़ा पहुँचाने का इख़्तियार है न नुक़सान पहुँचाने का। न तुम मुझे कोई फ़ायदा पहुँचा सकते हो न मेरा कुछ बिगाड़ सकते हो।' (सहीह मुस्लिम, किताबुल बिर्र वस्सिलह, बाब तहरीमुज़्ज़ुल्म : 2577)

हज़रत अबू अ़ब्दुल्लाह जदली (रह.) फ़रमाते हैं कि मैं बैतुल मक़्दिस गया देखा कि वहाँ हज़रत उ़बादा बिन सामित (रज़ि.) और हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र (रज़ि.) और हज़रत कअ़ब अहबार (रह.) बैठे हुए बातें कर रहे हैं। मैं भी बैठ गया तो मैंने सुना कि हज़रत उ़बादा बिन सामित (रज़ि.) फ़रमाते हैं, 'क़यामत के दिन अल्लाह तआला तमाम अगलों-पिछलों को एक चटियल साफ़ मैदान में जमा करेगा, आवाज़ देने वाला आवाज़ देकर सबको होशियार कर देगा। फिर अल्लाह तआला फ़रमायेगा, आज का दिन फ़ैसलों का दिन है तुम सब अगले-पिछलों को मैंने जमा कर दिया है, अब मैं तुमसे कहता हूँ कि अगर मेरे साथ कोई दग़ा-फ़रेब, मक्र, हीला, कर सकते हो तो करो, सुनो! मुतकब्बिर सरकश मुन्किर और झुठलाने वाला आज मेरी पकड़ से बच नहीं सकता और न कोई नाफ़रमान शैतान मेरे अ़ज़ाबों से निजात पा सकता है।' हज़रत अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) ने फ़रमाया, लो एक हदीस़ मैं भी सुना दूँ, 'उस दिन जहन्नम अपनी गर्दन दराज़ करके लोगों के बीचो-बीच पहुँच कर बआवाज़े बुलंद कहेगी, ऐ लोगो! तीन क़िस्म के लोगों को अभी ही पकड़ लेने का मुझे हुक्म मिल

चुका है, मैं उन्हें ख़ूब पहचानती हूँ कोई बाप अपनी औलाद को और कोई भाई अपने भाई को इतना न जानता होगा जितना मैं उन्हें पहचानती हूँ, आज न तो वो मुझसे कहीं छिप सकते हैं, न कोई उन्हें छिपा सकता है, एक तो वो जिसने अल्लाह तआला के साथ किसी को शरीक किया हो, दूसरे वो जो मुन्किर और मुतकब्बिर हो और तीसरे वो जो नाफ़रमान शैतान हो, फिर वो मुड़-मुड़कर चुन-चुन कर उन औसाफ़ के लोगों को मैदाने हश्र में से छांट लेगी और एक-एक को पकड़-पकड़कर निगल जायेगी और हिसाब से चालीस साल पहले ही ये जहन्नम वासिल हो जायेंगे।' (अल्लाह तबारक व तआला हमें महफ़ूज़ रखे, आमीन!)

إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي ظِلَالٍ وَعُيُونٍ ﴿٤١﴾ وَفَوَاكِهَ مِمَّا يَشْتَهُونَ ﴿٤٢﴾ كُلُوا وَاشْرَبُوا هَنِيئًا
بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٤٣﴾ إِنَّا كَذَٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ﴿٤٤﴾ وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ
﴿٤٥﴾ كُلُوا وَتَمَتَّعُوا قَلِيلًا إِنَّكُمْ مُجْرِمُونَ ﴿٤٦﴾ وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ﴿٤٧﴾ وَإِذَا قِيلَ
لَهُمُ ارْكَعُوا لَا يَرْكَعُونَ ﴿٤٨﴾ وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ﴿٤٩﴾ فَبِأَيِّ حَدِيثٍ بَعْدَهُ
يُؤْمِنُونَ ﴿٥٠﴾

तर्जुमा : ''बेशक परहेज़गार लोग सायों में हैं और बहते चश्मों में। (41) और उन मेवों में जिनकी वो ख़्वाहिश करें। (42) (ऐ जन्नतियो!) खाओ-पियो, सहता-पचता अपने किए हुए आमाल के बदले। (43) यक़ीनन हम नेकी करने वालों को इसी तरह जज़ा देते हैं। (44) उस दिन के सच्चा न जानने वालों के लिये वैल (अफ़सोस) है। (45) (ऐ झुठलाने वालों! तुम दुनिया में) थोड़ा सा खा लो बरत लो बेशक तुम गुनहगार हो। (46) क़यामत के दिन झुठलाने वालों के लिये सख़्त हलाकत है। (47) उनसे जब कहा जाता है कि रुकूअ कर लो तो नहीं करते। (48) उस दिन झुठलाने वालों की तबाही है। (49) अब इस क़ुरआन के बाद किस बात पर ईमान लायेंगे?'' (50)

जन्नत और जन्नतियों का ज़िक्र (आयत : 41-50) : ऊपर चूंकि बदकारों की सज़ाओं का बयान हुआ था, यहाँ नेककारों की जज़ा का बयान हो रहा है कि जो लोग मुत्तक़ी-परहेज़गार थे, अल्लाह के इबादत गुज़ार थे, फ़राइज़ और वाजिबात के पाबंद थे, अल्लाह तआला की नाफ़रमानियों से, हराम कारियों से बचते थे, वो क़यामत के दिन जन्नतों में होंगे, जहाँ क़िस्म-क़िस्म की नहरें चल रही हैं। गुनहगार स्याह बदबूदार धूंऐ में घिरे हुए होंगे और नेक किरदार जन्नतों के घने ठण्डे और पुरकैफ़ सायों में लेटे-बैठे होंगे, सामने साफ़-शफ़्फ़ाफ़ चश्मे अपनी पूरी रवानी से जारी होंगे, क़िस्म-क़िस्म के फल-मेवे और तरकारियाँ मौजूद होंगे, जिसे जब जी

चाहे खायेंगे, न रोक-टोक होगी न कमी और नुक़सान का अन्देशा होगा। न फ़ना होने और ख़त्म होने का ख़तरा होगा। फिर हौसला बढ़ाने और दिल में ख़ुशी को दोबाला करने के लिये अल्लाह तबारक व तआला की तरफ़ से बार-बार फ़रमान होगा कि ऐ मेरे प्यारे बन्दो! ऐ जन्नतियों! तुम बख़ुशी और बाफ़राग़त सहता-पचता ख़ूब खाओ-पियो, हम हर नेककार, परहेज़गार, मुख़्लिस इंसान को इसी तरह भला बदला और नेक जज़ा देते हैं हाँ झुठलाने वालों की तो आज बड़ी ख़राबी है।

उन झुठलाने वालों को धमकाया जाता है कि अच्छा दुनिया में तो तुम कुछ खा-पी लो, बरत-बरता लो फ़ायदे उठा लो, अन्क़रीब ये नेमतें भी फ़ना हो जायेंगी और तुम भी मौत के घाट उतरोगे, फिर तुम्हारा नतीजा जहन्नम ही है (जिसका ज़िक्र ऊपर गुज़र चुका) तुम्हारी बद आमालियों और स्याहकारियों की सज़ा हमारे पास तैयार है। कोई मुज्रिम हमारी निगाह से बाहर नहीं। क़यामत को, हमारे नबी (ﷺ) को, हमारी वह्य को न मानने वाला, उसे झूठा जानने वाला, क़यामत के दिन सख़्त नुक़सान में और पूरे ख़सारे में होगा, उसकी सख़्त ख़राबी होगी। जैसे और जगह इरशाद है, (نُمَتِّعُهُمْ قَلِيلًا ثُمَّ نَضْطَرُّهُمْ إِلَىٰ عَذَابٍ غَلِيظٍ ﴿٢٤﴾) (सूरह लुक़मान 31 : 24) 'दुनिया में हम उन्हें थोड़ा सा फ़ायदा पहुँचा देंगे, फिर तो हम उन्हें सख़्त अज़ाब की तरफ़ बेबस कर देंगे।' और जगह फ़रमान है, (قُلْ إِنَّ الَّذِينَ يَفْتَرُونَ عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ لَا يُفْلِحُونَ ﴿٦٩﴾ مَتَاعٌ فِي الدُّنْيَا ثُمَّ إِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ ثُمَّ نُذِيقُهُمُ الْعَذَابَ الشَّدِيدَ بِمَا كَانُوا يَكْفُرُونَ ﴿٧٠﴾) 'अल्लाह तबारक व तआला पर झूठ बांधने वाले कामयाब नहीं हो सकते, दुनिया में यूंही सा फ़ायदा उठा लें, फिर उनका लौटना तो हमारी ही तरफ़ है, हम उन्हें उनके कुफ़्र की सज़ा में सख़्ततर अज़ाब चखायेंगे।' (सूरह यूनुस 10 : 69-70) फिर फ़रमाया कि इन नादान मुन्किरों को जब कहा जाता है कि आओ अल्लाह के सामने झुक तो लो, जमाअत के साथ नमाज़ अदा कर लो तो उनसे ये भी नहीं हो सकता। इससे भी जी चुराते हैं बल्कि इसे हिक़ारत से देखते हैं और तकब्बुर के साथ इंकार कर देते हैं। उनके लिये जो झुठलाने में उम्रें गुज़ार देते हैं, क़यामत के दिन बड़ी मुसीबत होगी।

फिर फ़रमाया जब ये लोग इस पाक कलाम पर भी ईमान नहीं लाते तो फिर किस कलाम को मानेंगे? जैसे और जगह है, (فَبِأَيِّ حَدِيثٍ بَعْدَ اللَّهِ وَآيَاتِهِ يُؤْمِنُونَ ﴿٦﴾) (सूरह जासिया 45 : 6) 'अल्लाह तबारक व तआला पर और उसकी आयतों पर जब ये ईमान न लाये, तो अब किस बात पर ईमान लायेंगे?'

इब्ने हातिम में हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'जो शख़्स इस सूरत की इस आयत को पढ़े तो उसे उसके जवाब में आमन्तु बिल्लाहि वबिमा उन्ज़िल कहना चाहिये यानी मैं अल्लाह तआला पर और उसकी उतारी हुई किताबों पर ईमान लाया।' (ज़ईफ़ : अबू दाऊद, किताबुस्सलात, बाब मिक़्दारुर्रुकूअ वस्सुजूद : 887, तिर्मिज़ी : 3347, हाकिम : 2/511, इसकी इस्नाद में आराबी मज्हूल रावी है।) ये हदीस सूर-ए-क़ियामा की तफ़्सीर में भी गुज़र चुकी है।

अल्हम्दुलिल्लाह सूर-ए-मुर्सलात की तफ़्सीर ख़त्म हुई।

अल्लाह तबारक व तआला का शुक्र है कि उन्तीसवें पारे की तफ़्सीर भी पूरी हुई, फ़ल्हम्दुलिल्लाह!

FLOW CHART
तरतीबी नक्श-ए-रब्त

MACRO-STRUCTURE
नज़्मे-जली

सूरह नबा - 78

आयात : 40, मक्की, पैराग्राफ : 6

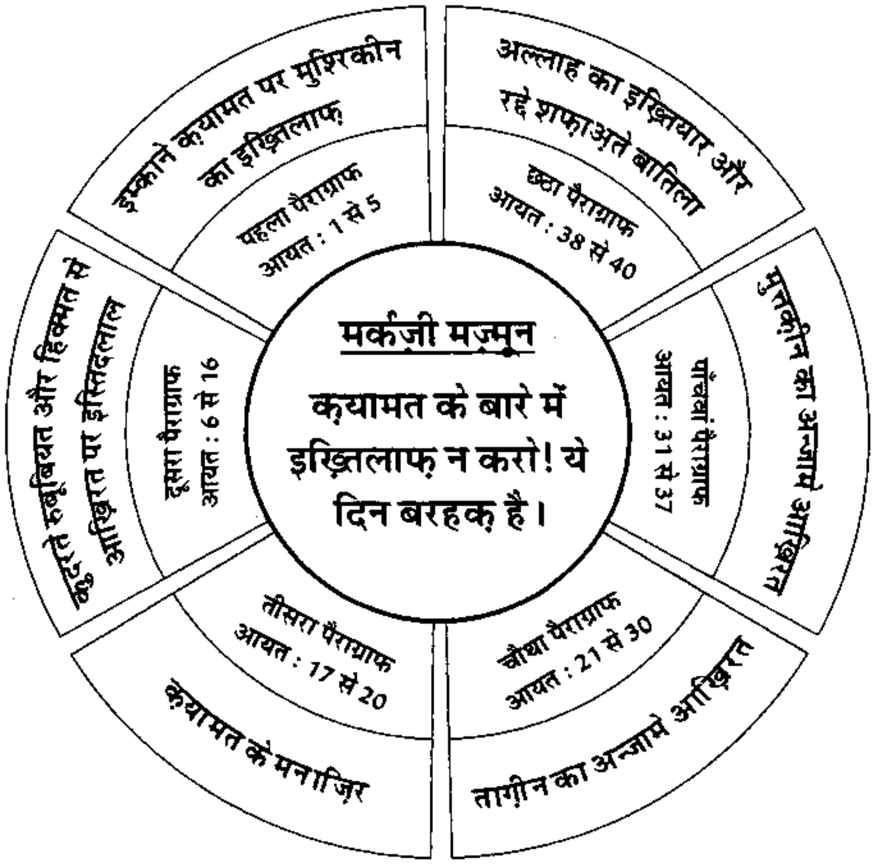

ज़मानए नुज़ूल

सूरह नबा क़ियामे मक्का के दूसरे दौर (4–5 नबवी) में ऐलाने आम के बाद आप (सल्ल.) पर नाज़िल हुई, जब क़यामत के बारे में इख़्तिलाफ़ बर्पा हो चुका था और जब क़यामत और इन्काने आख़िरत के अक़ीदे को पुख़्ता किया जा रहा था।

तफ़्सीर सूरह नबा

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ○

तर्जुमा : ''शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रह्म वाला है।''

***

عَمَّ یَتَسَآءَلُوۡنَ ① عَنِ النَّبَاِ الۡعَظِیۡمِ ② الَّذِیۡ ہُمۡ فِیۡہِ مُخۡتَلِفُوۡنَ ③ کَلَّا
سَیَعۡلَمُوۡنَ ④ ثُمَّ کَلَّا سَیَعۡلَمُوۡنَ ⑤ اَلَمۡ نَجۡعَلِ الۡاَرۡضَ مِہٰدًا ⑥ وَّ الۡجِبَالَ اَوۡتَادًا
⑦ وَّ خَلَقۡنٰکُمۡ اَزۡوَاجًا ⑧ وَّ جَعَلۡنَا نَوۡمَکُمۡ سُبَاتًا ⑨ وَّ جَعَلۡنَا الَّیۡلَ لِبَاسًا ⑩
وَّ جَعَلۡنَا النَّہَارَ مَعَاشًا ⑪ وَّ بَنَیۡنَا فَوۡقَکُمۡ سَبۡعًا شِدَادًا ⑫ وَّ جَعَلۡنَا سِرَاجًا
وَّہَّاجًا ⑬ وَّ اَنۡزَلۡنَا مِنَ الۡمُعۡصِرٰتِ مَآءً ثَجَّاجًا ⑭ لِّنُخۡرِجَ بِہٖ حَبًّا وَّ نَبَاتًا ⑮
وَّ جَنّٰتٍ اَلۡفَافًا ⑯

तर्जुमा : ''ये लोग किस चीज़ की पूछ-गछ करते हैं? (1) उस बड़ी ख़बर की। (2) जिसमें ये इख़्तिलाफ़ करते हैं। (3) यक़ीनन ये अभी जान लेंगे। (4) और बिल्यक़ीन उन्हें बहुत जल्द मालूम हो जायेगा। (5) क्या हमने ज़मीन को फ़र्श नहीं बनाया? (6) और पहाड़ों को मैख़ें नहीं बनाया? (7) और हमने तुम्हें जोड़ा-जोड़ा पैदा किया। (8) और हमने तुम्हारी नींद को आराम का सबब बनाया। (9) और रात को हमने पर्दा बनाया। (10) और दिन को हमने वक़्ते रोज़गार बनाया। (11) और तुम्हारे ऊपर हमने सात मज़बूत आसमान बनाये। (12) और एक चमकता हुआ रोशन चिराग़ पैदा किया। (13) और बदलियों से हमने बकसरत बहता हुआ पानी बरसाया। (14) ताकि उससे अनाज और सब्ज़ा उगायें। (15) और घने बाग भी उगायें।'' (16)

क़यामत यक़ीनन आयेगी (आयत 1-16) : जो मुश्रिक लोग क़यामत के आने का इंकार करते थे और उसको झुठलाने की निय्यत से आपस में तरह-तरह के सवालात किया करते थे। यहाँ अल्लाह तआला उन सवालात का जवाब और उनकी हक़ीक़त बयान फ़रमा कर उनकी तर्दीद करता है कि ये लोग आपस में किस बारे में सवालात कर रहे हैं? यानी किस चीज़ के बारे में पूछ-गछ कर रहे हैं? क्या क़यामत के बारे में पूछ-गछ कर रहे हैं? हालांकि वो तो एक बहुत बड़ी ख़बर है। यानी हौलनाक और बुरी ख़बर है और रोज़े रोशन की तरह ज़ाहिर है। हज़रत क़तादा (रह.) और इब्ने ज़ैद (रह.) ने इस नबा अज़ीम (बहुत बड़ी ख़बर) से मरने के बाद दोबारा जी उठना मुराद लिया है। मगर हज़रत मुजाहिद (रह.) कहते हैं कि इससे क़ुरआन मुराद है। लेकिन पहली बात ज़्यादा ठीक मालूम होती है कि इससे मरने के बाद दोबारा जी उठना मुराद है फिर इस आयत अल्लज़ी हुम् फ़ीहि मुख़्तलिफ़ून 'जिसमें ये लोग आपस में इख़्तिलाफ़ रखते हैं।' में जिस इख़्तिलाफ़ का ज़िक्र है वो ये है कि लोग इस बारे में दो अलग-अलग महाज़ों पर हैं। एक तो इसको मानते हैं कि वो होकर रहेगी और दूसरे इसको नहीं मानते।

फिर अल्लाह तआला उन मुन्किरीने क़यामत को धमकाते हुए फ़रमाता है कि यक़ीनन उनको इसकी हक़ीक़त बहुत जल्द मालूम हो जायेगी। बहुत जल्द तो क्या बल्कि अभी मालूम हो जायेगी। उनको अल्लाह तआला ने ये बहुत सख़्त धमकी और वईद सुनाई है। फिर अल्लाह तआला अपनी अजीबो-ग़रीब मख़्लूक़ात की बारीकियाँ बतलाकर अपनी अज़ीमुश्शान क़ुदरत की निशानियाँ बयान फ़रमाता है, जिनसे साबित हो जाता है कि जब अल्लाह तआला ऐसी ऐसी चीज़ें बग़ैर किसी नमूने के अव्वल मर्तबा पैदा कर सकता है तो क्या उनको दोबारा पैदा नहीं कर सकता?

अल्लाह तआला ने ज़मीन बनाई : चुनाँचे अल्लाह तआला फ़रमाता है कि क्या हमने ज़मीन को तुम्हारे लिये फ़र्श और बिछौना नहीं बनाया? यानी तमाम मख़्लूक़ के लिये उसको हमवार करके नहीं बिछा दिया। इस तरह कि वो तुम्हारे आगे पस्त और फ़रमांबरदार है। बग़ैर किसी हिलने-जुलने के ख़ामोशी के साथ जमी हुई पड़ी है। और पहाड़ों को (उसकी) मैख़ें बनाया है। यानी उनको इसकी मैख़ें बनाकर उसमें गाड़ दिया है ताकि वो उनसे जमी और थमी रहे। और पहले की तरह हिले-जुले नहीं और अपने ऊपर बसी हुई मख़्लूक़ को परेशान न करे।

अल्लाह तआला ने इंसान को जोड़ा-जोड़ा बनाया : फिर फ़रमाया कि उसके बाद अपने आपको देखो कि हमने तुमको जोड़ा-जोड़ा बनाकर पैदा किया है। यानी नर व मादा और मर्द व औरत। जो आपस में एक-दूसरे से मुतमत्तिअ (लुत्फ़ अन्दोज़) होकर अपनी ख़्वाहिश पूरी करते हैं और इस तरह उनकी नस्ल बढ़ती रहती है। जैसे एक और जगह फ़रमाता है कि (وَمِنْ اٰيٰتِهٖٓ اَنْ خَلَقَ لَكُمْ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ اَزْوَاجًا) (सूरह रूम 30 : 21) 'अल्लाह की निशानियों में से एक ये है कि उसने ख़ुद तुम्हीं में से तुम्हारे जोड़े पैदा किये ताकि तुम उनसे सुकून हासिल करो।' उसने अपनी मेहरबानी से तुममें आपस में मुहब्बत और रहम डाल दिया। फिर फ़रमाता है कि हमने तुम्हारी नींद को हरकत के कट जाने का सबब बनाया ताकि आराम और इत्मीनान हासिल कर लो और दिन भर की थकान कस्ल (सुस्ती) और मान्दगी दूर हो।

इसी मआना की एक और आयत सूरह फ़ुरक़ान में गुज़र चुकी है, 'रात को हमने लिबास बनाया कि उसका अन्धेरा और स्याही सब लोगों पर छा जाती है।' जैसे और जगह इरशाद फ़रमाया है, (وَالَّيْلِ إِذَا يَغْشٰهَا) (सूरह शम्स 91 : 4) 'क़सम है रात की जब कि वो ढक ले।' अरब शाइर भी अपने शेअरों में रात को लिबास कहते हैं। हज़रत क़तादा (रह.) ने फ़रमाया है कि रात सुकून का बाइस बन जाती है और बरखिलाफ रात के दिन को हमने रोशन उजाले वाला और [illegible] बनाया है, ताकि तुम काम-धन्दा [illegible] सको आ-जा सको, व्यापार, तिजारत, लेन-देन कर सको और अपनी रोज़ियाँ और रिज़्क़ हासिल कर सको और हमने जहाँ तुम्हें रहने-सहने को ज़मीन बना दी वहाँ हमने तुम्हारे ऊपर सात आसमान बनाये जो बड़े लम्बे-चौड़े मज़बूत पुख़्ता उम्दा और ज़ीनत वाले हैं तुम देखते हो कि उनमें हीरों की तरह चमकते हुए सितारे लग रहे हैं। कुछ चलते-फिरते रहते हैं और कुछ एक जगह क़ायम हैं।

फिर फ़रमाया हमने सूरज को चमकता चिराग़ बनाया जो तमाम जहाँ को रोशन कर देता है हर चीज़ को जगमगा देता है और दुनिया को मुनव्वर (रोशन) कर देता है और देखो कि हमने पानी की भरी बदलियों से बकसरत पानी बरसाया। इब्ने अब्बास (रज़ि.) फ़रमाते हैं कि हवायें चलती हैं। इधर से उधर बादलों को ले जाती हैं और फिर उन बादलों से ख़ूब बारिश बरसती है। (अत्तबरी : 24/153) और ज़मीन को सैराब करती है और भी बहुत से मुफ़स्सिरीन ने यही फ़रमाया है कि मुअ़सिरात से मुराद कुछ ने तो हवा ली है और कुछ ने बादल जो एक-एक क़तरा बराबर बरसाते रहते हैं मरअतुन मुअ़सिरात अ़रब में उस औ़रत को कहते हैं जिसके हैज़ का ज़माना बिल्कुल क़रीब आ गया हो, लेकिन अब तक हैज़ जारी न हुआ हो। हज़रत हसन और क़तादा (रह.) ने फ़रमाया है, मुअ़सिरात से मुराद आसमान है। लेकिन ये क़ौल ग़रीब है सबसे ज़्यादा ज़ाहिर क़ौल ये है कि मुराद इससे बादल हैं। जैसे और जगह है, (اَللّٰهُ الَّذِىْ يُرْسِلُ الرِّيٰحَ) (सूरह रूम 30 : 48) 'अल्लाह तआ़ला हवाओं को भेजता है जो बादलों को उभारती हैं और उन्हें परवरदिगार की मन्शा के मुताबिक़ आसमान पर फैला देती हैं और उन्हें वो टुकड़े-टुकड़े कर देता है फिर तू देखता है कि उनके दरम्यान से पानी निकलता है।' सज्जाजा के मअ़ने ख़ूब लगातार बहने के हैं। जो बकसरत बह रहा हो और ख़ूब बरस रहा हो। (अत्तबरी : 24/155)

एक हदीस़ में है, 'अफ़ज़ल हज वो है जिसमें लब्बैक ख़ूब पुकारी जाये और ख़ून बकसरत बहाया जाये।' (ज़ईफ़ : तिर्मिज़ी, किताबुल हज्ज, बाब मा जाअ फ़ी फ़ज़्लित्तल्बीह : 827, सनद मुन्क़तअ है। इब्ने माजह : 2924 बितसर्रुफ़िन यसीर)

यानी क़ुर्बानियाँ ज़्यादा की जायें। इस हदीस़ में भी लफ़्ज़ सज्जुन है। एक और हदीस़ में है कि इस्तिहाज़ा का मसला पूछने वाली एक सहाबिया औ़रत से हुज़ूर (ﷺ) ने फ़रमाया, 'तुम रूई का फाया रख लो।' (ज़ईफ़ : अबू दाऊद, किताबुत्तहारत, बाब इज़ा अक़्बलत्तिल हैज़्तु तदउस्सलात : 287, इब्ने उ़क़ैल रावी ज़ईफ़ है। तिर्मिज़ी : 128, इब्ने माजह : 627)

उसने कहा, हुज़ूर! वो तो बहुत ज़्यादा है। मैं तो हर वक़्त ख़ून बकसरत बहाती रहती हूँ। इस रिवायत में भी लफ़्ज़ असुज्जु सज्जा है, यानी बेरोक बराबर ख़ून आता रहता है। तो यहाँ इस आयत में भी मुराद यही है कि पानी अब्र से बकसरत बेरोक बरसता ही रहता है, वल्लाहु आलम!

फिर हम उस पानी से जो पाक-साफ़ बाबरकत नफ़ाबख़्श है अनाज और दाने पैदा करते हैं जो इंसान हैवान सबके खाने में फलते-फूलते हैं और क़िस्म-क़िस्म के ज़ायक़ों, रंगों, ख़ुश्बूओं वाले मेवे और फल-फूल उनसे पैदा होते हैं गो कि ज़मीन के एक ही टुकड़े पर वो मिले-जुले हैं। अल्फ़ाफ़ा के मअ़ने जमा के हैं। (अत्तबरी : 24/156)

और जगह है, (وَ فِي الْاَرْضِ قِطَعٌ مُّتَجٰوِرٰتٌ) (सूरह रअ़द 13 : 4) 'ज़मीन में मुख़्तलिफ़ टुकड़े हैं जो आपस में मिले-जुले हैं।' और अंगूर के दरख़्त हैं, कुछ शाख़दार कुछ बग़ैर ज़्यादा शाख़ों के। और वो सब एक ही पानी से सैराब किये जाते हैं और हम से एक को मेवे में ज़्यादा करते हैं यक़ीनन अ़क़्लमन्दों के लिये इसमें निशानियाँ हैं।

***

اِنَّ يَوْمَ الْفَصْلِ كَانَ مِيْقَاتًا ۝١٧ يَّوْمَ يُنْفَخُ فِي الصُّوْرِ فَتَاْتُوْنَ اَفْوَاجًا ۝١٨
وَّفُتِحَتِ السَّمَآءُ فَكَانَتْ اَبْوَابًا ۝١٩ وَّسُيِّرَتِ الْجِبَالُ فَكَانَتْ سَرَابًا ۝٢٠ اِنَّ جَهَنَّمَ
كَانَتْ مِرْصَادًا ۝٢١ لِّلطَّاغِيْنَ مَاٰبًا ۝٢٢ لّٰبِثِيْنَ فِيْهَآ اَحْقَابًا ۝٢٣ لَا يَذُوْقُوْنَ فِيْهَا
بَرْدًا وَّلَا شَرَابًا ۝٢٤ اِلَّا حَمِيْمًا وَّغَسَّاقًا ۝٢٥ جَزَآءً وِّفَاقًا ۝٢٦ اِنَّهُمْ كَانُوْا لَا يَرْجُوْنَ
حِسَابًا ۝٢٧ وَّكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا كِذَّابًا ۝٢٨ وَكُلَّ شَيْءٍ اَحْصَيْنٰهُ كِتٰبًا ۝٢٩ فَذُوْقُوْا
فَلَنْ نَّزِيْدَكُمْ اِلَّا عَذَابًا ۝٣٠

तर्जुमा : ''बेशक फ़ैसले के दिन का वक़्त मुक़र्रर है। (17) जिस दिन कि सूर फूंका जायगा फिर तुम सब जमाअ़त-जमाअ़त बनकर आओगे। (18) और आसमान खोल दिया जायेगा तो उसमें दरवाज़े-दरवाज़े हो जायेंगे। (19) और पहाड़ चलाये जायेंगे पस वो सफ़ेद बाल हो जायेंगे। (20) बेशक दोज़ख़ घात की जगह है। (21) सरकशों का ठिकाना वही है। (22) उसमें वो

कर्नों (सालहा-साल) सदियों तक पड़े रहेंगे। (23) न कभी उसमें ख़न्की का मज़ा चखेंगे न पानी का। (24) सिवाय गर्म पानी और बहती पीप के। (25) (उनको) पूरा-पूरा बदला मिलेगा। (26) उन्हें तो हिसाब की तवक़्क़ुअ ही न थी। (27) और मुकर-मुकर कर हमारी आयतों की तकज़ीब करते थे। (28) हमने हर एक चीज़ को लिख कर महफ़ूज़ कर रखा है। (29) अब तुम (अपने किये) का मज़ा चखो हम तुम्हारा अज़ाब ही बढ़ाते रहेंगे।'' (30)

क़यामत का इल्म अल्लाह तआला ही के पास है (आयत : 17-30) : यानी क़यामत का दिन हमारे इल्म में मुक़र्रर दिन है न वो आगे होगा न पीछे, ठीक वक़्त पर आ जायेगा। कब आयेगा? इसका सहीह इल्म अल्लाह तआला के सिवा किसी और को नहीं। जैसे और जगह है, (وَمَا نُؤَخِّرُهٗٓ اِلَّا لِاَجَلٍ مَّعْدُوْدٍ) (सूरह हूद 11 : 104) 'नहीं ढील देते हम उन्हें लेकिन वक़्ते मुक़र्रर के लिये।' उस दिन सूर में फूंक मारी जायेगी और लोग जमाअतें-जमाअतें बनकर आयेंगे। हर-हर उम्मत अपने-अपने नबी के साथ अलग-अलग होगी। जैसे फ़रमाया, (يَوْمَ نَدْعُوْا كُلَّ اُنَاسٍۭ بِاِمَامِهِمْ) (सूरह बनी इस्राईल 17 : 71) 'जिस दिन हम तमाम लोगों को उनके इमामों समेत बुलायेंगे।' सहीह बुख़ारी में हदीस़ है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़रमाते हैं, 'दोनों सूरों के दरम्यान चालीस होंगे?' लोगों ने पूछा, चालीस दिन? फ़रमाया, मैं नहीं कह सकता। पूछा, चालीस महीने। फ़रमाया, मुझे ख़बर नहीं। पूछा, चालीस साल। फ़रमाया, 'मैं ये भी नहीं कह सकता। फिर अल्लाह तआला आसमान से पानी बरसायेगा और जिस तरह दरख़्त उगते हैं लोग ज़मीन से उगेंगे। इंसान सारा का सारा गल-सड़ जाता है लेकिन एक हड्डी और वो कमर की रीढ़ की हड्डी है। उसी से क़यामत के दिन मख़्लूक़ मुरक्कब की जायेगी।' (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरह अम्म यतसाअलून : 4935, सहीह मुस्लिम : 2955, बितसर्रुफ़िन यसीर)

आसमान खोल दिये जायेंगे और उसमें फ़रिश्तों के उतरने के रास्ते और दरवाज़े बन जायेंगे। पहाड़ चलाये जायेंगे और बिल्कुल रेत के ज़र्रे बन जायेंगे। जैसे और जगह है, (وَتَرَى الْجِبَالَ تَحْسَبُهَا جَامِدَةً) व तरल् जिबा-ल तह्सबुहा जामिदतन 'तुम पहाड़ों को देख रहे हो जान रहे हो कि वो पुख़्ता मज़बूत और जामिद हैं लेकिन ये बादलों की तरह चलने-फिरने लगेंगे।' (सूरह नमल 27 : 88) एक और जगह है, (وَتَكُوْنُ الْجِبَالُ كَالْعِهْنِ الْمَنْفُوْشِ) (सूरह क़ारिअह 101 : 4) 'पहाड़ मिस्ल धुनी हुई ऊन के हो जायेंगे।' यहाँ फ़रमाया पहाड़ सराब हो जायेंगे। यानी देखने वाला समझता है कि वो कुछ है हालांकि दरअसल कुछ नहीं आख़िर में बिल्कुल बर्बाद हो जायेंगे नामो-निशान तक न रहेगा। जैसे और जगह है, (وَيَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الْجِبَالِ فَقُلْ يَنْسِفُهَا رَبِّيْ نَسْفًا) (सूरह ताहा 20 : 105) 'लोग तुझसे पहाड़ों के बारे में पूछते हैं, तू कह उन्हें मेरा रब परागन्दा कर देगा और ज़मीन बिल्कुल हमवार मैदान रह जायेगी जिसमें न कोई मोड़ होगा न टीला।' और जगह है, (وَيَوْمَ نُسَيِّرُ الْجِبَالَ وَتَرَى الْاَرْضَ بَارِزَةً) (सूरह कहफ़ 18 : 47) 'जिस दिन हम पहाड़ों को चलायेंगे और तू देखेगा कि ज़मीन बिल्कुल खुल गई है।'

फिर फ़रमाता है कि सरकश नाफ़रमान मुख़ालिफ़ीने रसूल की ताक में जहन्नम लगी हुई है। यही उनके

लौटने की और रहने-सहने की जगह है।

इसके मआना हज़रत हसन और हज़रत क़तादा (रह.) ने ये भी किये हैं कि कोई शख़्स जन्नत में भी नहीं जा सकता जब तक कि जहन्नम पर से न गुज़रे। अगर आमाल ठीक हैं तो निजात पा ली और अगर आमाल बद हैं तो रोक लिया गया और जहन्नम में झोंक दिया गया। हज़रत सुफ़ियान सौरी (रह.) फ़रमाते हैं कि उस पर तीन पुल हैं। फिर फ़रमाया, वो उसमें मुद्दतों और क़रनों पड़े रहेंगे। अहक़ाबुन जमा है हक़बुन की एक लम्बे ज़माने को हक़ब कहते हैं। कुछ कहते हैं, हक़ब (80) साल का होता है। साल बारह महीने का, महीने तीस दिन का और हर दिन एक हज़ार साल का। बहुत से सहाबा (रज़ि.) और ताबेईन से ये मरवी है। कुछ कहते हैं एक-एक दिन इतना बड़ा और ऐसे तीन सौ साल का एक हक़ब है। एक मरफ़ूअ हदीस में है कि हक़ब महीना, महीना तीस दिन का, साल बारह दिन तीन सौ साठ, हर दिन तुम्हारी गिनती के हिसाब से एक हज़ार साल का। (ज़ईफ़ुन जिद्दा : मुअजम अल्कबीर : 7957, इसकी सनद में जअफ़र बिन ज़ुबैर मतरूक रावी है जैसा कि हाफ़िज़ इब्ने कसीर रह. ने फ़रमाया) लेकिन ये हदीस सख़्त मुन्कर है। इसके रावी क़ासिम जो जअफ़र बिन ज़ुबैर के लड़के हैं, ये दोनों मतरूक हैं।

एक और रिवायत में है कि इब्ने मुस्लिम अबुल आला ने सुलैमान तैमी (रह.) से पूछा कि क्या जहन्नम में से कोई निकलेगा भी? तो जवाब दिया कि मैंने नाफ़ेअ (रह.) से उन्होंने इब्ने उमर (रज़ि.) से सुना कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'अल्लाह की क़सम! जहन्नम में से कोई भी बग़ैर मुद्दते दराज़ रहे न निकलेगा।' फिर फ़रमाया, उसी से कुछ ऊपर साल का हक़ब होता है और हर साल तीन सौ साठ दिन का जो तुम गिनते हो। (ज़ईफ़ुन जिद्दा मौज़ूअ : मुस्नद बज़्ज़ार : 5303, मज्मउज़्ज़वाइद : 10/395, इसकी सनद में सुलैमान बिन मुस्लिम अल्ख़स्साब सख़्त ज़ईफ़ रावी है। जबकि हाफ़िज़ ज़हबी ने इसे मौज़ूअ क़रार दिया है देखिये अल्मीज़ान : 2/223, 3512)

सुद्दी (रह.) कहते हैं, सात सौ हक़ब रहेंगे। हर हक़ब सत्तर साल का, हर साल तीन सौ साठ दिन का और हर दिन दुनिया के एक हज़ार साल के बराबर का। हज़रत मुक़ातिल बिन हय्यान (रह.) फ़रमाते हैं, ये आयत फ़ज़ूक़ू की आयत से मन्सूख़ हो चुकी है। ख़ालिद बिन मअदान (रह.) फ़रमाते हैं कि ये आयत और आयत (اِلَّا مَا شَآءَ رَبُّكَ) (सूरह हूद 11 : 107) 'जहन्नमी जब तक अल्लाह चाहेगा जहन्नम में रहेंगे।' ये दोनों आयतें तौहीद वालों के बारे में हैं। (अत्तबरी 24 : 162) इमाम इब्ने जरीर (रह.) फ़रमाते हैं, ये भी मुम्किन है कि अहक़ाब तक रहना मुताल्लिक़ हो आयत हमीमंव्-व ग़स्साक़ा के साथ। यानी वो एक ही अज़ाब गर्म पानी और बहती पीप का मुद्दतों रहेगा फिर दूसरी क़िस्म का अज़ाब शुरू होगा। लेकिन सहीह यही है कि इसका ख़ातमा ही नहीं।

हज़रत हसन (रह.) से जब ये सवाल हुआ तो कहा कि अहक़ाब से मुराद हमेशा जहन्नम में रहना है। लेकिन हक़ब कहते हैं सत्तर साल को जिसका हर दिन दुनिया के एक हज़ार साल के बराबर होता है। (अत्तबरी : 24/162)

हज़रत क़तादा (रह.) फ़रमाते हैं कि अहक़ाब कभी ख़त्म नहीं होते। एक हक़्ब ख़त्म हुआ और दूसरा शुरू हो गया। उन अहक़ाब की सहीह मुद्दत का अन्दाज़ा सिर्फ़ अल्लाह तआला ही को है हाँ ये हमने सुना है कि एक हक़्ब अस्सी साल का एक साल तीन सौ साठ दिन का हर दिन दुनिया के एक हज़ार साल का। उन दोज़ख़ियों को न तो कलेजे की ठण्डक नसीब होगी न कोई अच्छा पानी पीने को मिलेगा। हाँ ठण्डक के बदले गर्म खोलता हुआ पानी मिलेगा और खाने-पीने की चीज़ बहती हुई पीप मिलेगी। हमीम इतने सख़्त गर्म को कहते हैं जिसके बाद हरारत का कोई दर्जा न हो। और ग़स्साक़ कहते हैं जहन्नमी लोगों के लहू-पीप पसीना आँसू और ज़ख़्मों से बहे हुए ख़ून पीप वग़ैरह को। उस गर्म चीज़ के मुक़ाबले में ये इस क़द्र सर्द होगी जो बजाए ख़ुद अ़ज़ाब है और बेहद बदबूदार है।

सूरह सॉद में ग़स्साक़ की पूरी तफ़्सीर बयान हो चुकी है। अब यहाँ दोबारा उसके बयान की ज़रूरत नहीं। अल्लाह तआला अपने फ़ज़्ल व करम से हमें अपने कुल अ़ज़ाबों से बचाये। कुछ ने कहा है, बरदुन से मुराद नींद है। अ़रब शाइरों के शेअ़रों में भी बरदुन नींद के मअ़ने में पाया जाता है। फिर फ़रमाया कि उनके आ़माल का पूरा-पूरा बदला है। उनकी बद आ़मालियाँ भी तो देखो कि उनका अ़क़ीदा था कि हिसाब का कोई दिन आने ही का नहीं। हमने जो-जो दलीलें अपने नबी (ﷺ) पर नाज़िल फ़रमाई थीं ये उन सबको झुठलाते थे किज़्ज़ाबा मस्दर है उस वज़न पर और मस्दर भी आते हैं। फिर फ़रमाया कि हमने अपने बन्दों के तमाम आ़माल व अफ़्आ़ल को गिन रखा है और शुमार कर रखा है वो सब हमारे पास लिखे हुए हैं और सब का बदला भी हमारे पास तैयार है। उन दोज़ख़ियों से कहा जायेगा कि अब उन अ़ज़ाबों का मज़ा उठाओ, ऐसे ही और इससे भी बदतरीन अ़ज़ाब तुम्हें ज़्यादती के साथ होते रहेंगे। हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र (रज़ि.) फ़रमाते हैं कि दोज़ख़ियों के लिये इससे ज़्यादा सख़्त और मायूसकुन और कोई आयत नहीं। उनके अ़ज़ाब हर वक़्त बढ़ते ही रहेंगे। (अत्तबरी : 24/169)

हज़रत अबू बरज़ा अस्लमी (रज़ि.) से सवाल हुआ कि दोज़ख़ियों के लिये सबसे ज़्यादा सख़्त आयत कौनसी है? तो फ़रमाया, हुज़ूर (ﷺ) ने इस आयत को पढ़कर फ़रमाया, 'उन लोगों को अल्लाह की नाफ़रमानियों ने तबाह कर दिया।' (ज़ईफ़ : इसकी सनद में जसर बिन फ़ुरक़द ज़ईफ़ रावी है। अल्मीज़ान : 1/398, 1480, हैसमी इस रिवायत को मुख़्तसरन बयान करते हुए कहते हैं कि इसकी सनद में शुऐब बिन बयान ज़ईफ़ रावी है देखिये मज्मउ़ज़्ज़वाइद : 7/133)

***

إِنَّ لِلْمُتَّقِينَ مَفَازًا ﴿٣١﴾ حَدَآئِقَ وَأَعْنَٰبًا ﴿٣٢﴾ وَكَوَاعِبَ أَتْرَابًا ﴿٣٣﴾ وَكَأْسًا دِهَاقًا

﴿٣٤﴾ لَّا يَسْمَعُونَ فِيهَا لَغْوًا وَلَا كِذَّٰبًا ﴿٣٥﴾ جَزَآءً مِّن رَّبِّكَ عَطَآءً حِسَابًا ﴿٣٦﴾

तर्जुमा : ''यक़ीनन परहेज़गार लोगों के लिये कामयाबी है। (31) बाग़ात हैं और अंगूर हैं। (32) और नौजवान कुंवारी हमउम्र औरतें हैं। (330 और छलकते हुए जामे शराब हैं। (34) वहाँ न तो वो बेहूदा बातें सुनेंगे और न झूठी बातें सुनेंगे। (35) उनको तेरे रब की तरफ़ से (उनके नेक आमाल) का ये बदला मिलेगा जो काफ़ी ईनाम होगा।'' (36)

जन्नत में ईनामाते रब्बानी का तज़्किरा (आयत : 31-36) : नेक लोगों के लिये अल्लाह तआला के यहाँ जो नेमतें व रहमतें हैं उनका बयान हो रहा है कि ये कामयाब मक़सूद और नसीबदार हैं कि जहन्नम से निजात पाई और जन्नत में पहुँच गये। हदाइक़ कहते हैं खजूर वग़ैरह के बाग़ात को। उन्हें नौजवान कुंवारी हूरें भी मिलेंगी जो उभरे हुए सीने वालियाँ और हमउम्र होंगी। जैसे कि सूरह वाक़िअह की तफ़्सीर में इसका पूरा बयान गुज़र चुका है। एक हदीस में है कि जन्नतियों के लिबास ही अल्लाह की रज़ा के होंगे। बादल उन पर आयेंगे और उनसे कहेंगे कि बतलाओ हम तुम पर क्या बरसायें? फिर वो जो फ़रमायेंगे बादल उन पर बरसायेंगे। यहाँ तक कि नौजवान कुंवारी लड़कियाँ भी उन पर बरसेंगी।' (ज़ईफ़ : इसकी में अतिय्या बिन सुलैमान मज्हूल और अबू अब्दुर्रहमान क़ासिम दमिश्क़ी कसीरुल इरसाल है। अत्तक़रीब : 2/118, 29)

उन्हें शराबे तहूर के छलकते हुए पाक-साफ़ भरपूर जाम पर जाम मिलेंगे। जिसमें नशा न होगा कि बेहूदा गोई और लग़्व बातें मुँह से निकलें और कान में पड़ें। जैसे और जगह है, (لَّا لَغْوٌ فِيهَا وَلَا تَأْثِيمٌ ﴿٢٣﴾) (सूरह तूर 52 : 23) 'उसमें न लग़्व होगा न बुराई और न गुनाह की बातें, कोई बात झूठ और फ़िज़ूल न होगी।'

वो दारुस्सलाम है जिसमें कोई ऐब की और बुराई की बात ही नहीं। ये जो कुछ बदले उन पारसा लोगों को मिले हैं ये उनके नेक आमाल के नतीजे हैं जो अल्लाह तआला के फ़ज़्ल व करम से और उसके एहसान व इनाम की बिना पर उन्हें मिले हैं। जो बेहद काफ़ी-वाफ़ी हैं जो बकसरत और भरपूर हैं। अरब कहते हैं अअ्तानी फ़हसबनी ईनाम दियाऔर भरपूर दिया। इसी तरह कहते हैं, हस्बियल्लाहु यानी मुझे हर तरह काफ़ी-वाफ़ी है।

***

رَّبِّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا الرَّحْمٰنِ لَا يَمْلِكُوْنَ مِنْهُ خِطَابًا ﴿٣٧﴾ يَوْمَ
يَقُوْمُ الرُّوْحُ وَالْمَلٰٓئِكَةُ صَفًّا ۙ لَّا يَتَكَلَّمُوْنَ اِلَّا مَنْ اَذِنَ لَهُ الرَّحْمٰنُ وَقَالَ
صَوَابًا ﴿٣٨﴾ ذٰلِكَ الْيَوْمُ الْحَقُّ ۚ فَمَنْ شَآءَ اتَّخَذَ اِلٰى رَبِّهٖ مَاٰبًا ﴿٣٩﴾ اِنَّآ اَنْذَرْنٰكُمْ عَذَابًا
قَرِيْبًا ۖۚ يَّوْمَ يَنْظُرُ الْمَرْءُ مَا قَدَّمَتْ يَدٰهُ وَيَقُوْلُ الْكٰفِرُ يٰلَيْتَنِيْ كُنْتُ تُرٰبًا ﴿٤٠﴾

तर्जुमा : "(उस रब की तरफ़ से मिलेगा जो कि) आसमानों का और ज़मीन का और जो कुछ उनके दरम्यान है उनका परवरदिगार है और बड़ी बख़्शिश करने वाला है, किसी को उससे बातचीत करने का इख़्तियार नहीं होगा। (37) जिस दिन रूह और फ़रिश्ते सफ़ें बांधकर खड़े होंगे तो कोई कलाम न कर सकेगा, मगर जिसे रहमान इजाज़त दे दे और वो ठीक बात ज़बान से निकाले। (38) ये दिन हक़ है, अब जो चाहे अपने रब के पास (नेक आमाल करके) ठिकाना बना ले। (39) हमने तुम्हें अन्क़रीब आने वाले अज़ाब से डराया और चौकन्ना कर दिया है जिस दिन इंसान अपने हाथों की, की हुई कमाई को देख लेगा और काफ़िर कहेगा कि काश मैं मिट्टी बन जाता।" (40)

रोज़े क़यामत बग़ैर इजाज़त कोई बोल न सकेगा (आयत : 37-40) : अल्लाह तआला अपनी अज़्मत व जलाल की ख़बर दे रहा है कि आसमान व ज़मीन और उनके दरम्यान की तमाम मख़्लूक़ का पालने-पोसने वाला वही है। वो रहमान है जिसके रहम ने तमाम चीज़ों को घेर लिया है। जब तक उसकी इजाज़त न हो कोई उसके सामने लब नहीं हिला सकता। जैसे और जगह है, (مَنْ ذَا الَّذِیْ یَشْفَعُ عِنْدَهٗۤ اِلَّا بِاِذْنِهٖ) (सूरह बक़रह 2 : 255) 'कौन है जो उसकी इजाज़त के बग़ैर उसके सामने सिफ़ारिश ले जा सके।' और जगह इरशाद है, (یَوْمَ یَاْتِ لَا تَكَلَّمُ نَفْسٌ اِلَّا بِاِذْنِهٖ) (सूरह हूद 11 : 105) 'जिस दिन वो वक़्त आ जायेगा कि कोई भी बिला इजाज़त उससे बात न कर सकेगा।' रूह से मुराद या तो तमाम इंसानों की रूहें हैं या तमाम इंसान हैं। या एक क़िस्म की ख़ास मख़्लूक़ है जो इंसानों की सी सूरतों वाले हैं। खाते-पीते हैं, न वो फ़रिश्ते हैं, न इंसान या मुराद हज़रत जिब्रईल (अलै.) हैं। हज़रत जिब्रईल (अलै.) को और जगह भी रूह कहा गया है। इरशाद है, (نَزَلَ بِهِ الرُّوْحُ الْاَمِیْنُ) (सूरह शुअरा 26 : 193) 'इसे अमानतदार रूह ने तेरे दिल पर उतारा है ताकि तू डराने वाला बन जाये।' यहाँ मुराद रूह से यक़ीनन जिब्रईल (अलै.) हैं।

हज़रत मुक़ातिल (रह.) फ़रमाते हैं कि तमाम फ़रिश्तों से बुज़ुर्ग और अल्लाह तआला से बहुत ही नज़दीक और वह्य लेकर आने वाले यही हैं। या मुराद रूह से क़ुरआन है। इसकी दलील में ये आयत पेश की जा सकती है, (وَكَذٰلِكَ اَوْحَیْنَاۤ اِلَیْكَ رُوْحًا مِّنْ اَمْرِنَا) (सूरह शूरा 42 : 52) 'हमने अपने हुक्म से तेरी तरफ़ रूह उतारी।' यहाँ रूह से मुराद क़ुरआन है। छठा क़ौल ये है कि ये एक फ़रिश्ता है जो तमाम मख़्लूक़ के बराबर है। हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) फ़रमाते हैं कि ये फ़रिश्ता तमाम फ़रिश्तों से बहुत बड़ा है। हज़रत इब्ने मसऊद (रज़ि.) फ़रमाते हैं कि ये रूह नामी फ़रिश्ता चौथे आसमान में है, तमाम आसमानों, कुल पहाड़ों और सब फ़रिश्तों से बड़ा है हर दिन बारह हज़ार तस्बीहें पढ़ता है। हर तस्बीह से एक फ़रिश्ता पैदा होता है। (ज़ईफ़ : इसकी सनद में रवाद बिन अल्जर्राह मुतकल्लम फ़ीह रावी है। अल्मीज़ान : 2/55, 2795 और अबू हम्ज़ह मैमून क़स्साब जिसे अहमद ने मतरूकुल हदीस और दार क़ुतनी ने ज़ईफ़ कहा है। अल्मीज़ान : 4/334, 8969) क़यामत के दिन अकेला वही एक सफ़ बन कर आयेगा। लेकिन ये क़ौल बहुत ही ग़रीब है।

तबरानी में हदीस है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़रमाते हैं, 'फ़रिश्तों में एक फ़रिश्ता वो भी है कि अगर उसे हुक्म हो कि तमाम आसमानों और ज़मीनों को लुक़्मा बना ले तो वो एक लुक़्मे में सबको ले लेगा, उसकी तस्बीह ये है, सुब्हानक हैसु कुन्त ऐ अल्लाह! तू जहाँ कहीं भी है पाक है। (ज़ईफ़ : मुअजम अल्कबीर : 11476, इसकी सनद में वहबुल्लाह बिन रज़क मज्हूल रावी है।) ये हदीस भी बहुत ग़रीब है बल्कि इसके फ़रमाने रसूल (ﷺ) होने में भी कलाम है। मुम्किन है कि हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) का क़ौल हो और वो भी बनी इस्राईल से लिया हुआ, वल्लाहु आ़लम!

इमाम इब्ने जरीर (रह.) ने ये सब अक़्वाल वारिद किये हैं लेकिन कोई फ़ैसला नहीं किया। मेरे नज़दीक तो उन तमाम अक़्वाल से बेहतर क़ौल ये है कि यहाँ रूह से मुराद कुल इंसान हैं, वल्लाहु आ़लम! फिर फ़रमाया सिर्फ़ वही उस दिन बात कर सकेगा जिसे वो रहमान इजाज़त दे। जैसे फ़रमाया, यौ-म यअ्ति ला तकल्लमु नफ़्सुन् इल्ला बिइज़्निही 'जिस दिन वो वक़्त आ जायेगा कोई नफ़्स बग़ैर उसकी इजाज़त के कलाम भी न कर सकेगा।' सहीह हदीस में भी है कि उस दिन सिवाय रसूलों के और कोई बात न कर सकेगा। (सहीह बुख़ारी, किताबुल अज़ान, बाब फ़ज़्लुस्सुजूद : 806, सहीह मुस्लिम : 182)

फिर फ़रमाया कि उसकी बात भी ठीक-ठाक हो सबसे ज़्यादा हक़ बात ला इला-ह इल्लल्लाह है। फिर फ़रमाया कि ये दिन हक़ है यक़ीनन आने वाला है। जो चाहे अपने रब्बे तआ़ला के पास लौटने की जगह और वो रास्ता बना ले जिस पर चल कर वो उसके पास सीधा जा पहुँचे। हमने तुम्हें बिल्कुल क़रीब आई हुई आफ़त से आगाह कर दिया है। आने वाली चीज़ को तो आई हुई समझना चाहिये। उस दिन नये-पुराने, छोटे-बड़े, अच्छे-बुरे तमाम आ़माल इंसान के सामने होंगे। जैसे फ़रमाया, (وَوَجَدُوْا مَا عَمِلُوْا حَاضِرًا) (सूरह कहफ़ 18 : 49) 'जो किया होगा उसे सामने पा लेंगे।'

और जगह है, (يُنَبَّؤُا الْإِنْسَانُ يَوْمَئِذٍۭ بِمَا قَدَّمَ وَاَخَّرَ ﴿۱۳﴾) (सूरह क़ियामह 75 : 13) 'हर इंसान को उसके अगले-पिछले आ़माल से मुतनब्बह किया जायेगा।' उस दिन काफ़िर आरज़ू करेगा कि काश वो मिट्टी होता, पैदा ही न किया जाता, वुजूद में ही न आता। अल्लाह तआ़ला के अ़ज़ाबों को आँख से देख लेगा। अपनी बदकारियाँ सामने होंगी जो पाक फ़रिश्तों के मुन्सिफ़ हाथों की लिखी हुई हैं। पस एक मआ़ना तो ये हुए कि दुनिया में ही मिट्टी होने की यानी पैदा न होने की आरज़ू करेगा। दूसरे मआ़ना ये हैं कि जब जानवरों का फ़ैसला होगा और उनके क़िसास दिलवाये जायेंगे। यहाँ तक कि अगर बग़ैर सींग वाली बकरी को अगर सींग वाली बकरी ने मारा होगा तो उससे भी बदला दिलवाया जायेगा। फिर उनसे कहा जायेगा कि मिट्टी हो जाओ चुनाँचे वो मिट्टी हो जायेंगे। उस वक़्त ये काफ़िर इंसान भी कहेगा कि हाय-हाय काश! कि मैं भी हैवान होता और अब मिट्टी बन जाता। सूर की लम्बी हदीस में भी ये मज़्मून वारिद हुआ है और हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) और हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र (रज़ि.) वग़ैरह से भी यही मरवी है।

सूरह नबा की तफ़्सीर ख़त्म हुई वल्हम्दुलिल्लाहि रब्बिल आ़लमीन।

FLOW CHART
तरतीबी नक्श-ए-रब्त

MACRO-STRUCTURE
नज़्मे-जली

सूरह नाज़िआत - 79

आयात : 46, मक्की, पैराग्राफ : 6

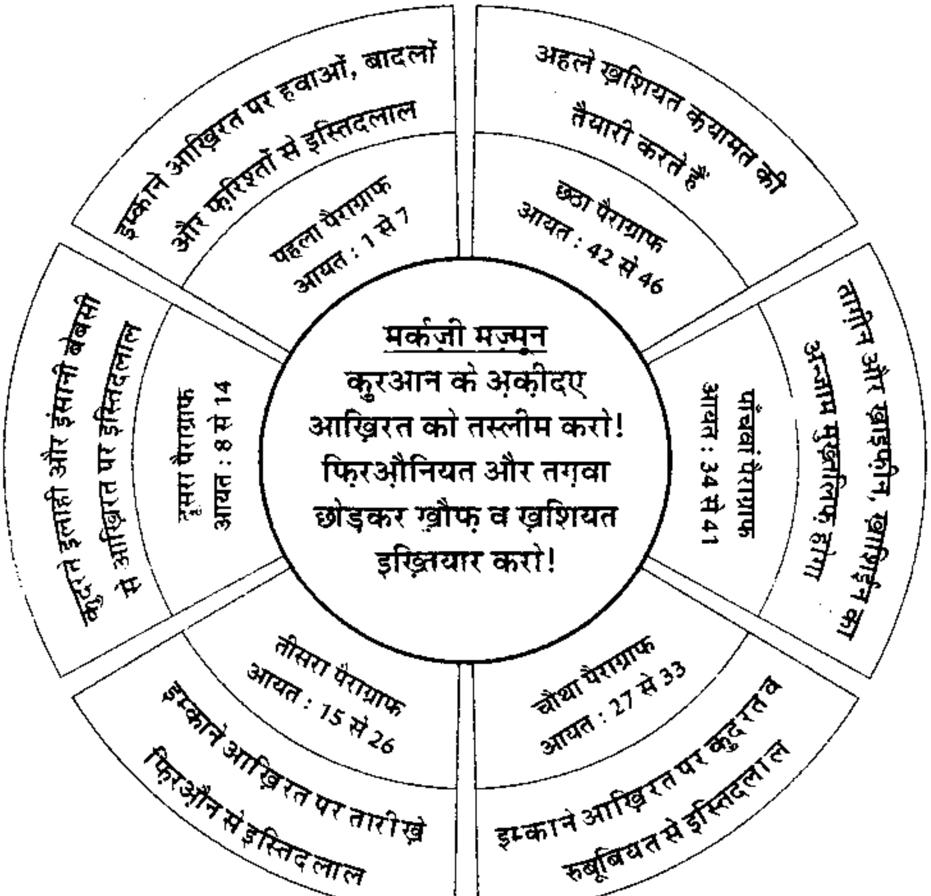

ज़मानए नुज़ूल

सूरह नाज़िआत भी सूरह नबा के बाद कियामे मक्का के दूसरे दौर (4-5 नबवी) में ऐलाने आम के बाद आप (सल्ल.) पर नाज़िल हुई, जब कयामत के बारे में इख़्तिलाफ़ बर्पा हो चुका था और मुश्रिकीने मक्का के सरकश रवैये, (फ़िरऔन) की तरह तागूती हो रहे थे।

तफ़्सीर सूरह नाज़िआत

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

तर्जुमा : ''शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है।''

***

وَالنّٰزِعٰتِ غَرْقًا ۝١ وَّالنّٰشِطٰتِ نَشْطًا ۝٢ وَّالسّٰبِحٰتِ سَبْحًا ۝٣ فَالسّٰبِقٰتِ سَبْقًا
۝٤ فَالْمُدَبِّرٰتِ اَمْرًا ۝٥ يَوْمَ تَرْجُفُ الرَّاجِفَةُ ۝٦ تَتْبَعُهَا الرَّادِفَةُ ۝٧ قُلُوْبٌ
يَّوْمَئِذٍ وَّاجِفَةٌ ۝٨ اَبْصَارُهَا خَاشِعَةٌ ۝٩ يَقُوْلُوْنَ ءَاِنَّا لَمَرْدُوْدُوْنَ فِى الْحَافِرَةِ
۝١٠ ءَاِذَا كُنَّا عِظَامًا نَّخِرَةً ۝١١ قَالُوْا تِلْكَ اِذًا كَرَّةٌ خَاسِرَةٌ ۝١٢ فَاِنَّمَا هِىَ زَجْرَةٌ
وَّاحِدَةٌ ۝١٣ فَاِذَا هُمْ بِالسَّاهِرَةِ ۝١٤

तर्जुमा : ''सख़्ती से खींचने वालों की क़सम (1) बन्द खोलकर छुड़ा देने वालों की क़सम (2) और तैरने-फिरने वालों की क़सम (3) फिर दौड़ कर आगे बढ़ने वालों की क़सम (4) फिर काम की तदबीर करने वालों की क़सम (5) जिस दिन कांपने वाली कांपेगी। (6) उसके बाद एक पीछे आने वाली पीछे-पीछे आयेगी। (7) बहुत से दिल उस दिन धड़कते होंगे। (8) जिनकी निगाहें नीची होंगी। (9) कहते हैं कि क्या हम पहली की सी हालत की तरफ़ फिर लौटाये जायेंगे? (10) क्या उस वक़्त जबकि हम बौसीदा हड्डियाँ हो जायेंगे? (11) कहते हैं कि फिर तो ये लौटना नुक़सानदेह है। (12) (मालूम होना चाहिये कि) वो तो सिर्फ़ एक ख़ौफ़नाक आवाज़ है। (13) कि (जिसके पैदा होते ही) वो एक दम मैदान में जमा हो जायेंगे।'' (14)

फ़रिश्तों के कुछ कामों का तज़्किरा (आयत : 1-14) : इससे मुराद फ़रिश्ते हैं जो कुछ लोगों की रूहों को सख़्ती से घसीटते हैं और कुछ रूहों को बहुत आसानी से निकालते हैं। जैसे किसी के बन्द खोल दिये जायें। कुफ़्फ़ार की रूहें खींची जाती हैं, फिर बन्द खोल दिये जाते हैं और जहन्नम में डुबो दिये जाते हैं। ये ज़िक्र मौत

के वक़्त का है। कुछ कहते हैं, वन्नाज़िआति ग़रक़ा से मुराद मौत है। (ज़ईफ़ : हाकिम : 2/513, इब्ने अबी नजीह मुदल्लस व अ़न्अ़न व फ़ीहि इल्लतुन उख़रा)

कुछ कहते हैं कि दोनों पहली आयतों से मतलब सितारे हैं। कुछ कहते हैं कि मुराद सख़्त लड़ाई करने वाले हैं। लेकिन सहीह बात पहली ही है यानी रूह निकालने वाले फ़रिश्ते। इसी तरह तीसरी आयत की निस्बत भी ये तीनों तफ़्सीरें मरवी हैं यानी फ़रिश्ते मौत और सितारे। (अत्तबरी : 24/190)

हज़रत अ़ता (रह.) फ़रमाते हैं, मुराद कश्तियाँ हैं। इसी तरह सबक़त की तफ़्सीर में भी तीनों क़ौल हैं। मआ़ना ये हैं कि ईमान और तस्दीक़ की तरफ़ आगे बढ़ने वाले। अ़ता (रह.) फ़रमाते हैं कि मुजाहिदीन के घोड़े मुराद हैं।

फिर हुक्मे इलाही की तामील तदबीर से करने वाले, इससे भी फ़रिश्ते मुराद हैं, जैसे हज़रत अ़ली (रज़ि.) वग़ैरह का क़ौल है। आसमान से ज़मीन की तरफ़ अल्लाह अ़ज़्ज़ व जल्ल के हुक्म से तदबीर करते हैं। इमाम इब्ने जरीर (रह.) ने इन अक़्वाल में कोई फ़ैसला नहीं किया। कांपने वाली के कांपने और उसके पीछे आने वाली के पीछे आने से मुराद दोनों नफ़ख़े हैं। पहले नफ़ख़े का बयान इस आयत में भी है, (يَوْمَ تَرْجُفُ الْأَرْضُ وَالْجِبَالُ وَكَانَتِ الْجِبَالُ كَثِيبًا مَّهِيلًا ﴿١٤﴾) (सूरह मुज़्ज़म्मिल 73 : 14) 'जिस दिन ज़मीन और पहाड़ कपकपा जायेंगे।' दूसरे नफ़ख़े का बयान इस आयत में है, (وَّحُمِلَتِ الْأَرْضُ وَالْجِبَالُ فَدُكَّتَا دَكَّةً وَّاحِدَةً ﴿١٤﴾) 'और ज़मीन और पहाड़ उठा लिये जायेंगे।' (सूरह हाक़्क़ह 69 : 14) फिर दोनों एक ही बार चूर-चूर कर दिये जायेंगे।

मुस्नद अहमद की हदीस में है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़रमाते हैं, 'कांपने वाली आयेगी उसके पीछे ही पीछे आने वाली होगी यानी मौत अपने साथ की कुल आफ़तों को लिये हुए आयेगी।' एक शख़्स ने कहा, हुज़ूर! अगर मैं अपने वज़ीफ़े का कुल वक़्त आप (ﷺ) पर दरूद पढ़ने में गुज़ारूँ तो? आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'फिर तो अल्लाह तआ़ला तुझे दुनिया और आख़िरत के तमाम ग़म व रंज से बचा लेगा।' (ज़ईफ़ : अहमद : 5/136, अ़ब्दुल्लाह बिन उ़क़ैल ज़ईफ़ इन्दल जुम्हूर फ़िल्क़ौलिर्राजिह व सुफ़ियान सौरी मुदल्लस व अ़न्अ़न)

तिर्मिज़ी में है कि दो तिहाई रात गुज़रने के बाद रसूलुल्लाह (ﷺ) खड़े होते और फ़रमाते, 'ऐ लोगो! अल्लाह तआ़ला को याद करो! कपकपाने वाली आ रही है फिर उसके पीछे ही और आ रही है।' (ज़ईफ़ : तिर्मिज़ी, किताब सिफ़तुल क़ियामह, बाब फ़ित्तरग़ीब फ़ी ज़िक्रिल्लाहि व ज़िक्रुल मौत : 2457, सुफ़ियान सौरी मुदल्लस रावी है और सिमाअ़ की सराहत नहीं है। हाकिम : 2/513)

मौत अपने साथ की तमाम आफ़तों को लिये हुए चली आ रही है। उस दिन बहुत से दिल डर रहे होंगे। ऐसे लोगों की निगाहें ज़िल्लत व हिक़ारत के साथ पस्त होंगी क्योंकि वो अपने गुनाहों और अल्लाह तआ़ला के अ़ज़ाबों का मुआ़यना कर चुके होंगे। मुश्रिकीन जो रोज़े क़यामत के मुन्किर थे और कहा करते थे कि क्या क़ब्रों में जाने के बाद भी हम ज़िन्दा किये जायेंगे? वो आज अपनी इस ज़िन्दगी का रुस्वाई और बुराई के साथ आँखों से देख लेंगे।

हाफ़िरह कहते हैं क़ब्रों को भी। यानी क़ब्रों में चले जाने के बाद जिस्म और हड्डी के सड़-गल जाने और रेज़ा-रेज़ा हो जाने के बाद भी क्या हम ज़िन्दा किये जायेंगे? फिर तो ये दोबारा की ज़िन्दगी ख़सारे और घाटे वाली होगी। कुफ़्फ़ारे क़ुरैश का ये मक़ूला था। हाफ़िरह के मआना मौत के बाद ज़िन्दगी के भी मरवी हैं और जहन्नम का नाम भी है। उसके नाम बहुत से हैं जैसे जहीम, सक़र, जहन्नम, हाविया, हाफ़िरह, लज़ा, हुतमा वग़ैरह। अब अल्लाह तआला फ़रमाता है कि जिस चीज़ को ये बड़ी भारी और अनहोनी और नामुम्किन समझे हुए हैं वो हमारी क़ुदरते कामिला के तहत एक अदना सी बात है। इधर एक आवाज़ दी उधर सब ज़िन्दा होकर एक मैदान में जमा हो गये। यानी अल्लाह तआला हज़रत इस्राफ़ील (अलै.) को हुक्म देगा वो सूर फूंक देंगे बस उनके सूर फूंकते ही तमाम अगले-पिछले जी उठेंगे और अल्लाह के सामने एक ही मैदान में खड़े हो जायेंगे। जैसे और जगह है, (يَوْمَ يَدْعُوكُمْ) (सूरह बनी इस्राईल 17 : 52) 'जिस दिन वो तुम्हें पुकारेगा और तम उसकी तारीफ़ें करते हुए उसे जवाब दोगे और जान लोगे कि बहुत ही कम ठहरे।' और जगह फ़रमाया, (وَمَآ أَمْرُنَآ إِلَّا وَاحِدَةٌ كَلَمْحٍ بِالْبَصَرِ) (सूरह क़मर 54 : 50) 'हमारा हुक्म बस ऐसा यकबारगी हो जायेगा, जैसे आँख का झपकना।'

और जगह है, (وَمَآ أَمْرُ السَّاعَةِ إِلَّا كَلَمْحِ الْبَصَرِ أَوْ هُوَ أَقْرَبُ) (सूरह नहल 16 : 77) 'अम्रे क़यामत मिस्ल आँख झपकने के है बल्कि उससे भी ज़्यादा क़रीब।' यहाँ भी बयान हो रहा है कि सिर्फ़ एक आवाज़ ही की देर है। उस दिन परवरदिगार सख़्त ग़ज़बनाक होगा। ये आवाज़ भी ग़ुस्से के साथ होगी। ये आख़िरी नफ़ख़ा है जिसके फूंके जाने के बाद ही तमाम लोग ज़मीन के ऊपर आ जायेंगे। हालांकि इससे पहले नीचे थे साहिरह रूए ज़मीन को कहते हैं और सीधे साफ़ मैदान को भी कहते हैं। सौरी (रह.) कहते हैं कि मुराद इससे शाम की ज़मीन है। उसमान बिन अबुल आलिया (रह.) का क़ौल है, मुराद बैतुल मक़्दिस की ज़मीन है।

वहब बिन मुनब्बह (रह.) कहते हैं कि बैतुल मक़्दिस के एक तरफ़ ये एक पहाड़ है। क़तादा (रह.) कहते हैं कि जहन्नम को भी साहिरह कहते हैं। लेकिन ये अक़्वाल सबके सब ग़रीब हैं। ठीक क़ौल पहला है यानी रूए ज़मीन। सब लोग ज़मीन पर जमा हो जायेंगे जो सफ़ेद होगी और बिल्कुल साफ़ और ख़ाली होगी, जैसे मेदे की रोटी होती है, और जगह है, (يَوْمَ تُبَدَّلُ الْأَرْضُ غَيْرَ الْأَرْضِ وَالسَّمٰوٰتُ) (सूरह इब्राहीम 14 : 48) 'जिस दिन ये ज़मीन बदल कर दूसरी ज़मीन हो जायेगी और आसमान भी बदल जायेंगे और सब मख़्लूक़ अल्लाह तआला वाहिद व क़ह्हार के रू-ब-रू हो जायेगी।'

और जगह है, (وَيَسْـَٔلُونَكَ عَنِ الْجِبَالِ فَقُلْ يَنسِفُهَا رَبِّي نَسْفًا) 'लोग तुझसे पहाड़ों की बाबत पूछते हैं, तू कह दे कि उन्हें मेरा रब टुकड़े-टुकड़े कर देगा और ज़मीन बिल्कुल मैदान हमवार बन जायेगी। जिसमें न कोई मोड़ होगा न ऊँची-नीची होगी।' (सूरह ताहा : 105) एक और जगह है, 'हम पहाड़ों को चलायेंगे और ज़मीन साफ़ ज़ाहिर हो जोयगी। ग़र्ज़ एक बिल्कुल नई ज़मीन होगी, जिस पर न कभी कोई ख़ता हुई होगी न क़त्ल व गुनाह।'

هَلْ اَتٰىكَ حَدِيْثُ مُوْسٰى ۞ اِذْ نَادٰىهُ رَبُّهٗ بِالْوَادِ الْمُقَدَّسِ طُوًى ۞ اِذْهَبْ
اِلٰى فِرْعَوْنَ اِنَّهٗ طَغٰى ۞ فَقُلْ هَلْ لَّكَ اِلٰٓى اَنْ تَزَكّٰى ۞ وَاَهْدِيَكَ اِلٰى رَبِّكَ
فَتَخْشٰى ۞ فَاَرٰىهُ الْاٰيَةَ الْكُبْرٰى ۞ فَكَذَّبَ وَعَصٰى ۞ ثُمَّ اَدْبَرَ يَسْعٰى ۞ فَحَشَرَ
فَنَادٰى ۞ فَقَالَ اَنَا رَبُّكُمُ الْاَعْلٰى ۞ فَاَخَذَهُ اللّٰهُ نَكَالَ الْاٰخِرَةِ وَالْاُوْلٰى ۞
اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَعِبْرَةً لِّمَنْ يَّخْشٰى ۞

तर्जुमा : "क्या मूसा का क़िस्सा भी तुम्हें मालूम है? (15) जबकि उन्हें उनके रब ने पाक मैदान तुवा में पुकारा। (16) कि तुम फ़िरऔन के पास जाओ उसने सरकशी इख़्तियार कर ली है। (17) उससे कहो कि क्या तू अपनी दुरुस्तगी और इस्लाह चाहता है? (18) और ये कि मैं तुझे तेरे रब की राह दिखाऊँ ताकि तू उससे डरने लगे। (19) पस उसे बड़ी निशानी दिखाई। (20) फिर भी वो झुठलाता और नाफ़रमानी करता रहा। (21) और अलग हटकर कोशिशें करने लगा। (22) फिर सबको जमा करके बआवाज़े बुलंद कहने लगा। (23) कि तुम सबका रब मैं ही हूँ। (24) सबसे बुलंद व बाला रब ने भी उसे आख़िरत के और दुनिया के अ़ज़ाब में गिरफ़्तार कर लिया। (25) बेशक इसमें उस शख़्स के लिये इबरत है जो डरे।" (26)

हज़रत मूसा (अलै.) का वाक़िया (आयत 15-26) : अल्लाह तआला अपने रसूल मुहम्मद (ﷺ) को ख़बर देता है कि उसने अपने बन्दे और अपने रसूल हज़रत मूसा (अलै.) को फ़िरऔन की तरफ़ भेजा और मुअजज़ात (चमत्कारों) से उनकी ताईद व इम्दाद की। लेकिन बावजूद इसके फ़िरऔन अपनी सरकशी और कुफ़्र से बाज़ न आया। बिल्आख़िर अल्लाह तआला का अ़ज़ाब उतरा और वो बर्बाद हो गया। इसी तरह ऐ पैग़म्बरे आख़िरुज़्ज़माँ! आप (ﷺ) के मुख़ालिफ़ीन का भी यही हश्र होगा। इसीलिये इस वाक़िये के ख़ातमे पर फ़रमाया, डरने वालों के लिये इसमें इबरत है। पस फ़रमाता है कि तुझे ख़बर भी है? मूसा (अलै.) को उसके रब्बे तआला ने आवाज़ दी जबकि वो एक मुक़द्दस मैदान में थे जिसका नाम तुवा है। इसका तफ़्सीली बयान सूरह ताहा में गुज़र चुका है। आवाज़ देकर फ़रमाया, फ़िरऔन ने सरकशी, तकब्बुर, तजब्बुर और तमर्रुद इख़्तियार कर रखा है तुम उसके पास पहुँचो और उसे मेरा ये पैग़ाम दो कि क्या तू चाहता है कि मेरी बात मान कर उस राह पर चले जो पाकीज़गी की राह है। मेरी सुन, मेरी मान, सलामती के साथ पाकीज़गी हासिल कर

लेगा, मैं तुझे अल्लाह की इबादत के वो तरीक़े बतलाऊँगा जिससे तेरा दिल नर्म और रोशन हो जायेगा। उसमें ख़ुशूअ व ख़ुज़ूअ पैदा हो जायेगा और दिल की सख़्ती और बदबख़्ती दूर होगी। हज़रत मूसा (अलै.) फ़िरऔन के पास पहुँचे। फ़रमाने इलाही पहुँचाया, हुज्जत पूरी की, दलाइल बयान किये। यहाँ तक कि अपनी सच्चाई के सुबूत में मुअजज़ात भी दिखाये लेकिन वो बराबर हक़ की तक्ज़ीब करता रहा और हज़रत मूसा (अलै.) की नाफ़रमानी पर जमा रहा। चूंकि दिल में कुफ़्र जा घुसा था उससे तबीअत न हटी और बावजूद हक़ वाज़ेह हो जाने के ईमान व तस्लीम नसीब न हुई। और बात है कि दिल से जानता था कि ये बरहक़ नबी हैं और इनकी तालीम भी बरहक़ है। लेकिन दिल की मअरिफ़त और चीज़ है और ईमान और चीज़ है दिल की मअरिफ़त पर अमल करने का नाम ईमान है कि हक़ का ताबेअ फ़रमान बन जाये और अल्लाह तआला व रसूल (अलै.) की बातों पर अमल करने के लिये झुक जाये। फिर उसने हक़ से मुँह मोड़ लिया और ख़िलाफ़े हक़ कोशिश करने लगा। जादूगरों को जमा करके उनके हाथों हज़रत मूसा (अलै.) को नीचा दिखाना चाहा। अपनी क़ौम को जमा किया और उसमें मुनादी की कि तुम सबका बुलंद व बाला रब मैं ही हूँ। उससे चालीस साल पहले वो कह चुका था कि (مَا عَلِمْتُ لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرِىْ) (सूरह क़सस 28 : 38) 'मैं नहीं जानता कि तुम्हारा माबूद मेरे सिवा कोई और भी हो।' अब तो उसकी तुग़यानी हद से बढ़ गई और साफ़ कह दिया कि मैं ही रब हूँ बुलन्दियों वाला और सब पर ग़ालिब मैं ही हूँ। अल्लाह तआला फ़रमाता है कि हमने भी उससे वो इन्तिक़ाम लिया जो उस जैसे तमाम सरकशों के लिये हमेशा-हमेशा सबबे इबरत बन जाये। दुनिया में भी और आख़िरत के बदतरीन अज़ाब तो अभी बाक़ी हैं। जैसे फ़रमाया, (وَجَعَلْنٰهُمْ اَئِمَّةً يَّدْعُوْنَ اِلَى النَّارِ ۚ وَيَوْمَ الْقِيٰمَةِ لَا يُنْصَرُوْنَ ۝) (सूरह क़सस 28 : 41) 'हमने उन्हें जहन्नम की तरफ़ बुलाने वाले पेशरू बनाया, क़यामत के दिन ये मदद न दिये जायेंगे।' पस सहीहतर मआना आयत के यही हैं कि आख़िरत और ऊला से मुराद दुनिया और आख़िरत है। कुछ ने कहा है कि अव्वल आख़िर से मुराद इसके दोनों क़ौल हैं। यानी पहले ये कहना कि मेरे इल्म में मेरे सिवा तुम्हारा कोई अल्लाह नहीं। फिर ये कहना कि तुम्हारा सब का बुलंद रब मैं हूँ। कुछ कहते हैं मुराद कुफ़्र व नाफ़रमानी है। लेकिन सहीह क़ौल पहला है और इसमें कोई शक नहीं। इसमें उन लोगों के लिये इबरत व नसीहत है जो नसीहत हासिल करें और बाज़ आ जायें।

***

ءَاَنْتُمْ اَشَدُّ خَلْقًا اَمِ السَّمَآءُ ۚ بَنٰهَا ۝٢٧ رَفَعَ سَمْكَهَا فَسَوّٰىهَا ۝٢٨ وَاَغْطَشَ
لَيْلَهَا وَاَخْرَجَ ضُحٰىهَا ۝٢٩ وَالْاَرْضَ بَعْدَ ذٰلِكَ دَحٰىهَا ۝٣٠ اَخْرَجَ مِنْهَا مَآءَهَا
وَمَرْعٰىهَا ۝٣١ وَالْجِبَالَ اَرْسٰىهَا ۝٣٢ مَتَاعًا لَّكُمْ وَلِاَنْعَامِكُمْ ۝٣٣

तर्जुमा : "क्या तुम्हारा पैदा करना सख़्त है या आसमान का? अल्लाह तआला ने उसे बनाया। (27) उसकी बुलंदी ऊँची की फिर उसे ठीक-ठाक कर दिया। (28) और उसमें से पानी और चारा पैदा किया। (31) और पहाड़ों को मज़बूत गाड़ दिया। (32) ये सब तुम्हारे और तुम्हारे जानवरों के फ़ायदे के लिये है।" (33)

क़ुदरते बारी तआला के दलाइल (आयत : 27-33) : जो लोग मरने के बाद जी उठने के मुन्किर थे उन्हें परवरदिगार दलीलें देता है कि तुम्हारी पैदाइश से तो बहुत ज़्यादा मुश्किल पैदाइश आसमानों की है। जैसे और जगह है, (لَخَلْقُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ اَكْبَرُ مِنْ خَلْقِ النَّاسِ) (सूरह मोमिन 40 : 57) 'ज़मीन व आसमान की पैदाइश इंसानों की पैदाइश से ज़्यादा भारी है।' और एक जगह है, (اَوَلَيْسَ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِقٰدِرٍ عَلٰٓى اَنْ يَّخْلُقَ مِثْلَهُمْ ۭ بَلٰى ۤ وَهُوَ الْخَلّٰقُ الْعَلِيْمُ) 'जिसने ज़मीन व आसमान पैदा कर दिया वो इन जैसे इंसानों को दोबारा पैदा करने पर क़ुदरत नहीं रखता? ज़रूर क़ादिर है और वो ही बड़ा पैदा करने वाला और ख़ूब जानने वाला है।' (सूरह यासीन 36 : 81) आसमान को उसने बनाया यानी बुलंद व बाला ख़ूब चौड़ा और कुशादा और बिल्कुल बराबर बनाया। फिर अन्धेरी रातों में ख़ूब चमकने वाले सितारे उसमें जड़ दिये। रात स्याह और अन्धेरे वाली बनाई और दिन को रोशन और नूर वाला बनाया और ज़मीन को उसके बाद बिछा दिया। यानी पानी और चारा निकाला। सूरह हाम्मीम सज्दा में ये बयान गुज़र चुका है कि ज़मीन की पैदाइश तो आसमान से पहले है। हाँ उसकी बरकात का इज़हार आसमानों की पैदाइश के बाद हुआ जिसका बयान यहाँ हो रहा है। इब्ने अब्बास (रज़ि.) और बहुत से मुफ़स्सिरीन से यही मरवी है। इमाम इब्ने जरीर (रह.) भी इसी को पसंद फ़रमाते हैं। इसका तफ़सीली बयान गुज़र चुका है। और पहाड़ों को उसने ख़ूब मज़बूत गाड़ दिया है। वो हिक्मतों वाला सहीह इल्म वाला है। और साथ ही अपनी मख़्लूक़ पर बेहद मेहरबान है। मुस्नद अहमद में है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़रमाते हैं, 'जब अल्लाह तआला ने ज़मीन को पैदा किया तो वो हिलने लगी। परवरदिगार ने पहाड़ों को पैदा करके ज़मीन पर गाड़ दिया जिससे वो ठहर गई। फ़रिश्तों को इससे सख़्ततर तअज्जुब हुआ और पूछने लगे, ऐ अल्लाह! तेरी मख़्लूक़ में इससे भारी भी कोई और चीज़ है? फ़रमाया, 'हाँ! वो इब्ने आदम है जो अपने दायें हाथ से जो ख़र्च करता है उसकी ख़बर बायें हाथ को भी नहीं होती।' (हसन : अहमद : 3/124, तिर्मिज़ी, किताबुत्तफ़्सीर, बाब फ़ी हिक्मति ख़ल्क़िल जिबाल : 3369)

इब्ने जरीर में हज़रत अली (रज़ि.) से मरवी है कि जब ज़मीन को अल्लाह तआला ने पैदा किया तो कांपने लगी और कहने लगी कि मुझ पर तू आदम (अलै.) को और उनकी औलाद को पैदा करने वाला है जो अपनी गन्दगी मुझ पर डालेंगे और मेरी पीठ पर तेरी नाफ़रमानियाँ करेंगे। अल्लाह तआला ने पहाड़ को गाड़ कर ज़मीन में ठहरा दिया है। बहुत से पहाड़ तुम देख रहे हो और बहुत से तुम्हारी निगाहों से ओझल हैं। ज़मीन का पहाड़ों के बाद सुकून हासिल करना बिल्कुल ऐसा ही था जैसे ऊँट को ज़िब्ह करते ही उसका गोश्त थिरकता रहता है फिर कुछ देर बाद ठहर जाता है। फिर फ़रमाता है कि ये सब तुम्हारे और तुम्हारे जानवरों के फ़ायदे के

लिये है। यानी ज़मीन से चश्मों और नहरों का जारी करना ज़मीन के पोशीदा ख़ज़ानों को ज़ाहिर करना, खेतियाँ और दरख़्त उगाना, पहाड़ों का गाड़ना ताकि ज़मीन से पूरा-पूरा फ़ायदा तुम उठा सको। ये सब बातें इंसानों के फ़ायदे के लिये हैं और उनके जानवरों के फ़ायदे के लिये। फिर वो जानवर भी उन ही के फ़ायदे के लिये हैं कि कुछ का गोश्त खाते हैं, कुछ पर सवारियाँ लेते हैं और अपनी उम्र इस दुनिया में सुख-चैन से बसर कर रहे हैं।

***

فَإِذَا جَآءَتِ الطَّآمَّةُ الْكُبْرٰى ﴿٣٤﴾ يَوْمَ يَتَذَكَّرُ الْإِنْسَانُ مَا سَعٰى ﴿٣٥﴾ وَبُرِّزَتِ
الْجَحِيْمُ لِمَنْ يَّرٰى ﴿٣٦﴾ فَأَمَّا مَنْ طَغٰى ﴿٣٧﴾ وَاٰثَرَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا ﴿٣٨﴾ فَإِنَّ الْجَحِيْمَ هِيَ
الْمَأْوٰى ﴿٣٩﴾ وَأَمَّا مَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهٖ وَنَهَى النَّفْسَ عَنِ الْهَوٰى ﴿٤٠﴾ فَإِنَّ
الْجَنَّةَ هِيَ الْمَأْوٰى ﴿٤١﴾ يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ السَّاعَةِ أَيَّانَ مُرْسٰهَا ﴿٤٢﴾ فِيْمَ أَنْتَ مِنْ
ذِكْرٰىهَا ﴿٤٣﴾ إِلٰى رَبِّكَ مُنْتَهٰهَا ﴿٤٤﴾ إِنَّمَآ أَنْتَ مُنْذِرُ مَنْ يَّخْشٰهَا ﴿٤٥﴾ كَأَنَّهُمْ يَوْمَ
يَرَوْنَهَا لَمْ يَلْبَثُوْٓا إِلَّا عَشِيَّةً أَوْ ضُحٰهَا ﴿٤٦﴾

तर्जुमा : ''पस जबकि वो बहुत बड़े हंगामे का दिन आ जायेगा। (34) जिस दिन कि इंसान अपने किये हुए कामों को याद करेगा। (35) और हर देखने वाले के सामने जहन्नम ज़ाहिर की जायेगी। (36) तो जिस शख़्स ने सरकशी की होगी (37) और दुनियवी ज़िन्दगी को तरजीह दी होगी (38) उसका ठिकाना जहन्नम ही है। (39) हाँ जो शख़्स अपने रब के सामने खड़े होने से डरता रहा होगा और अपने नफ़्स को उसने ख़्वाहिश से रोका होगा (40) तो उसका ठिकाना जन्नत ही है। (41) लोग तुझसे क़यामत के क़ायम होने का वक़्त पूछ रहे हैं। (42) तुझे उसके बयान करने से क्या ताल्लुक़? (43) उसके इल्म की इन्तिहा तो अल्लाह की जानिब है। (44) तू तो सिर्फ़ उससे डरते रहने वालों को आगाह करने वाला है। (45) जिस दिन ये उसे देख लेंगे तो ऐसा मालूम होगा कि सिर्फ़ दिन का आख़िरी हिस्सा था अव्वल हिस्सा ही दुनिया में रहे हैं।'' (46)

क़यामत की तल्ख़ियाँ (आयत 34-46) : ताम्मतुल कुबरा से मुराद क़यामत का दिन है। इसलिये कि वो

हौलनाक और बड़े हंगामे वाला दिन होगा। जैसे और जगह है, (وَالسَّاعَةُ اَدْهٰى وَ اَمَرُّ) (सूरह क़मर 54 : 46) 'क़यामत बड़ी सख़्त और नागवार चीज़ है।' उस दिन इब्ने आदम अपने भले-बुरे आमाल को याद करेगा और काफ़ी नसीहत हासिल करेगा। जैसे और जगह है, (يَوْمَىِٕذٍ يَّتَذَكَّرُ الْاِنْسَانُ وَاَنّٰى لَهُ الذِّكْرٰى) (सूरह फ़ज्र 89 : 23) 'उस दिन आदमी नसीहत हासिल कर लेगा लेकिन आज की नसीहत उसे कुछ फ़ायदा न देगी।' लोगों के सामने जहन्नम लाई जायेगी और वो अपनी आँखों से देख लेंगे। उस दिन सरकशी करने वाले और दुनिया को तरजीह देने वालों का ठिकाना जहन्नम होगा। उनकी ख़ूराक ज़क़्क़ूम होगा और उनका पानी हमीम होगा। हाँ हमारे सामने खड़े होने से डरते रहने वालों और अपने आपको नफ़्सानी ख़्वाहिशों से बचाते रहने वालों, ख़ौफ़े इलाही दिल में रखने वालों और बुराइयों से बाज़ रहने वालों का ठिकाना जन्नत है और वहाँ की कुल नेमतों के हिस्सेदार सिर्फ़ यही हैं।

फिर फ़रमाया क़यामत के बारे में तुमसे सवाल हो रहे हैं। तुम कह दो कि न मुझे उसका इल्म है न मख़्लूक़ में से किसी और को। सिर्फ़ अल्लाह तआला जानता है कि क़यामत कब आयेगी? उसका सहीह वक़्त किसी को मालूम नहीं। वो ज़मीन व आसमान पर भारी पड़ रही है वो अचानक आ जायेगी। लोग तुझसे इस तरह पूछते हैं कि गोया तुम उसे जानते हो। हालांकि दरअसल उसका इल्म सिवाय अल्लाह तबारक व तआला के और किसी को नहीं। हज़रत जिब्रईल (अलै.) भी जिस वक़्त इंसानी सूरत में आप (ﷺ) के पास आये और कुछ सवालात किये जिनके जवाबात आप (ﷺ) ने दिये। फिर उसी क़यामत के दिन के तअय्युन का सवाल किया। आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'जिससे पूछते हो न वो उसे जाने न ख़ुद पूछने वाले को उसका इल्म।' (सहीह बुख़ारी, किताबुल ईमान, बाब सुआलु जिब्रईलन्नबी अनिल ईमान : 50, सहीह मुस्लिम : 9)

फिर फ़रमाया कि ऐ नबी! आप तो सिर्फ़ लोगों के डराने वाले हैं और उससे नफ़ा उन ही को पहुँचेगा जो उस ख़ौफ़नाक दिन का डर रखते हैं। वो तैयारी कर लेंगे और उस दिन ख़तरे से बच जायेंगे। बाक़ी लोग जो हैं वो आप (ﷺ) के फ़रमान से इबरत हासिल नहीं करेंगे बल्कि मुख़ालिफ़त करेंगे और उस दिन बदतरीन नुक़सान और मुहलिक अज़ाबों में गिरफ़्तार होंगे। लोग जब अपनी-अपनी क़ब्रों से उठकर महशर के मैदान में जमा होंगे उस वक़्त अपनी दुनिया की ज़िन्दगी उन्हें बहुत ही कम नज़र आयेगी और ऐसा मालूम होगा कि सिर्फ़ सुबह का या सिर्फ़ शाम का कुछ हिस्सा दुनिया में गुज़ारा है। ज़ुहर से लेकर आफ़ताब के ग़ुरूब होने के वक़्त को अशिय्यह कहते हैं और सूरज निकलने से लेकर आधे दिन तक के वक़्त को ज़ुहा कहते हैं। (अद्दुर्रुल मन्सूर : 8/413) मतलब ये है कि आख़िरत को देखकर दुनिया की लम्बी उम्र भी इतनी कम महसूस होने लगेगी।

सूरह नाज़िआत की तफ़्सीर ख़त्म हुई फ़ल्हम्दुलिल्लाहि रब्बिल आलमीन!

***

FLOW CHART
तरतीबी नक्श-ए-रब्त

MACRO-STRUCTURE
नज़्मे-जली

सूरह अ़बस - 80

आयात : 42, मक्की, पैराग्राफ : 7

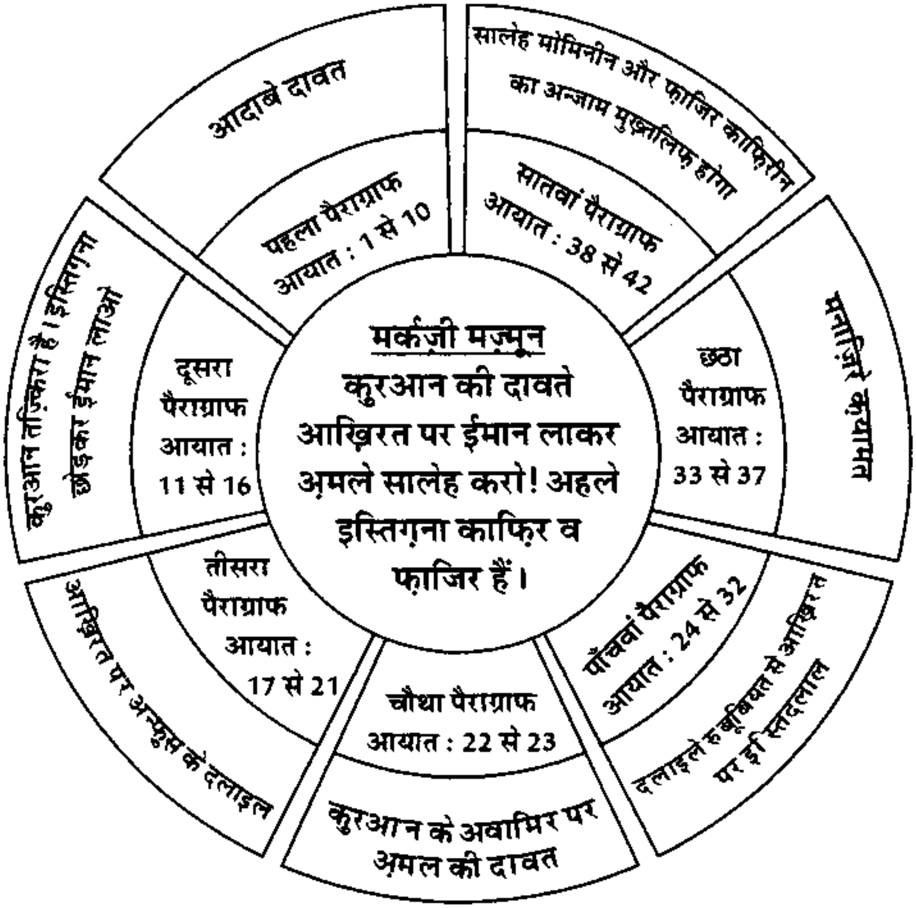

ज़मान-ए-नुज़ूल

सूरह अ़बस भी, रसूलुल्लाह (सल्ल.) के कि़यामे मक्का के दूसरे दौर (4 से 5 नबवी) में ऐलाने आ़म के बाद नाज़िल हुई, जब कुफ़्फ़ार की मजलिस में हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उम्मे मक्तूम (रज़ि.) से बेऐतिनाई हुई।

तफ़्सीर सूरह अबस

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

तर्जुमा : ''शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है।''

عَبَسَ وَتَوَلّٰٓى ① اَنْ جَآءَهُ الْاَعْمٰى ② وَمَا يُدْرِيْكَ لَعَلَّهٗ يَزَّكّٰٓى ③ اَوْ يَذَّكَّرُ
فَتَنْفَعَهُ الذِّكْرٰى ④ اَمَّا مَنِ اسْتَغْنٰى ⑤ فَاَنْتَ لَهٗ تَصَدّٰى ⑥ وَمَا عَلَيْكَ اَلَّا
يَزَّكّٰى ⑦ وَاَمَّا مَنْ جَآءَكَ يَسْعٰى ⑧ وَهُوَ يَخْشٰى ⑨ فَاَنْتَ عَنْهُ تَلَهّٰى ⑩ كَلَّآ اِنَّهَا
تَذْكِرَةٌ ⑪ فَمَنْ شَآءَ ذَكَرَهٗ ⑫ فِيْ صُحُفٍ مُّكَرَّمَةٍ ⑬ مَّرْفُوْعَةٍ مُّطَهَّرَةٍ ⑭ بِاَيْدِيْ
سَفَرَةٍ ⑮ كِرَامٍۢ بَرَرَةٍ ⑯

तर्जुमा : ''उसने तुर्शरू होकर मुँह मोड़ लिया। (1) सिर्फ़ इसलिये कि उसके पास एक नाबीना आया। (2) तुझे क्या ख़बर शायद वो संवर जाता। (3) या नसीहत सुनता और उसे नसीहत फ़ायदा पहुँचाती। (4) जो बेपरवाई करता है (5) उसकी तरफ़ तो तू पूरी तवज्जह करता है। (6) हालांकि उसके न संवरने से तेरा कोई नुक़सान नहीं। (7) और जो शख़्स तेरे पास दौड़ता हुआ आता है (8) और वो डर भी रहा है। (9) तो उससे तू बेरुख़ी बरतता है। (10) ये ठीक नहीं! क़ुरआन तो नसीहत की चीज़ है। (11) जो चाहे इसे याद कर ले। (12) ये तो पुर अ़ज़्मत सहीफ़ों में है। (13) जो बुलंद व बाला और पाक साफ़ हैं। (14) जो ऐसे लिखने वालों के हाथों में है (15) जो बुज़ुर्ग और पाकबाज़ हैं।'' (16)

सूरह अ़बस का शाने नुज़ूल और हज़रत इब्ने उम्मे मक्तूम (रज़ि.) की फ़ज़ीलत (आयत 1-16) : बहुत सारे मुफ़स्सिरीन से मरवी है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) एक मर्तबा क़ुरैश के सरदारों को इस्लामी तालीम समझा रहे थे और मशग़ूलियत के साथ उनकी तरफ़ मुतवज्जह थे। दिल में ख़्याल था कि क्या अ़जब अल्लाह तआ़ला इन्हें इस्लाम नसीब कर दे। नागहाँ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उम्मे मक्तूम (रज़ि.) आपके पास आये,

पुराने मुसलमान थे। उमूमन हुज़ूर (ﷺ) के ख़िदमत में हाज़िर होते रहते थे और दीने इस्लाम की तालीम सीखते रहते थे और मसाइल पूछते रहते थे। आज भी हस्बे आदत आते ही सवालात शुरू किये और आगे बढ़-बढ़कर हुज़ूर (ﷺ) को अपनी तरफ़ मुतवज्जह करना चाहा। आप (ﷺ) चूंकि उस वक़्त एक अहम अम्रे दीनी में पूरी तरह मशग़ूल थे। उनकी तरफ़ तवज्जह न फ़रमाई बल्कि ज़रा गिराँ ख़ातिर गुज़रा और पेशानी मुबारक पर बल पड़ गये। इस पर ये आयतें नाज़िल हुईं कि आप (ﷺ) की बुलंद शान और आला अख़्लाक़ के लायक़ ये बात न थी कि उस नाबीना से जो हमारे ख़ौफ़ से दौड़ता-भागता आप (ﷺ) की ख़िदमत में इल्मे दीन सीखने के लिये आये और आप (ﷺ) उससे मुँह फेर लें और उनकी तरफ़ मुतवज्जह रहें जो सरकश हैं और मग़रूर व मुतकब्बिर हैं। बहुत मुम्किन है कि यही पाक हो जाये और अल्लाह की बातें सुनकर बुराइयों से बच जायें और अहकाम की तामील के लिये तैयार हो जाये। ये क्या आप उन बेपरवा लोगों की जानिब तमामतर तवज्जह फ़रमा लें? आप (ﷺ) पर कोई उनका राहेरास्त पर ला खड़ा करना ज़रूरी थोड़ी है? वो अगर आपकी बातें न मानें तो आप पर उनके आमाल की पकड़ हर्गिज़ नहीं है। मतलब ये है कि तब्लीग़े दीन में शरीफ़ व ज़ईफ़, फ़क़ीर व ग़नी, आज़ाद व ग़ुलाम, मर्द व औरत, छोटे व बड़े सब बराबर हैं। आप (ﷺ) सबको यकसाँ नसीहत किया करें, हिदायत अल्लाह तआला के हाथ में है। वो अगर किसी को राहे रास्त से दूर रखे तो उसकी हिक्मत वही जानता है। जिसे अपनी राह पर लगा ले उसे भी वही ख़ूब जानता है। हज़रत इब्ने उम्मे मक्तूम (रज़ि.) के आने के वक़्त हुज़ूर (ﷺ) का मुख़ातब उबय बिन ख़ल्फ़ था। उसके बाद हुज़ूर (ﷺ) इब्ने उम्मे मक्तूम (रज़ि.) की बड़ी तक्रीम और आव-भगत किया करते थे। (मुस्नद अबू यअ़ला)

हज़रत अनस (रज़ि.) फ़रमाते हैं कि मैंने इब्ने उम्मे मक्तूम (रज़ि.) को क़ादसिया की लड़ाई में देखा है। ज़िरह पहने हुए थे और स्याह झण्डा लिये हुए थे। (ज़ईफ़ : मुस्नद अबी यअ़ला : 3123, क़तादा लम युस्रिह बिस्सिमाअ़ फ़ी हाज़ल्लफ़्ज़)

हज़रत आइशा (रज़ि.) फ़रमाती हैं कि जब ये आये और कहने लगे, कि हज़रत! मुझे भलाई की बातें सिखाइये तो उस वक़्त रऊसाए क़ुरैश आप (ﷺ) की मज्लिस में थे। आप (ﷺ) ने उनकी तरफ़ पूरी तवज्जह न फ़रमाई उन्हें समझाते जाते थे और फ़रमाते जाते थे, कहो मेरी बात ठीक है? (सहीह : तिर्मिज़ी : 3328, इमाम तिर्मिज़ी रह. ने इसे हसन ग़रीब कहा है। अबू यअ़ला : 4848, हाकिम : 2/514, अत्तबरी : 76318, सहीह व अख़्तअ मन ज़अ़अ़फ़ह)

वो कहते जाते थे हाँ (हज़रत) दुरुस्त है। उन लोगों में उतबा बिन रबीआ, अबू जहल बिन हिशाम, अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब थे। आप (ﷺ) की बड़ी कोशिश थी और पूरी हिर्स थी कि किसी तरह ये लोग दीने हक़ को क़ुबूल कर लें, इधर ये आ गये और कहने लगे कि हुज़ूर! क़ुरआन पाक की कोई आयत मुझे सुनाइये और अल्लाह की बातें सिखलाइये। आप (ﷺ) को उस वक़्त उनकी बात ज़रा बेमौक़ा लगी और मुँह फेर लिया और उधर ही मुतवज्जह रहे। जब उनसे बातें पूरी करके आप (ﷺ) घर जाने लगे तो आँखों तले अन्धेरा छा गया और सर नीचा हो गया और ये आयतें उतरीं। फिर तो आप (ﷺ) उनकी बड़ी इज़्ज़त किया

करते थे और पूरी तवज्जह से कान लगाकर उनकी बातें सुना करते थे। आते-जाते हर वक़्त पूछते कि कुछ काम है, कुछ हाजत है, कुछ कहते हो, कुछ माँगते हो? (ज़ईफ़ुन जिद्दा : अत्तबरी : 24/218, इसकी सनद में अतिया औफ़ी मज्रूह रावी है। अत्तक़रीब : 2/24,216) इस रिवायत में ग़राबत है नकारत है और इसकी सनद में भी कलाम है।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना आप (ﷺ) फ़रमाते थे कि बिलाल रात रहते हुए अज़ान दिया करते हैं तो तुम सहरी खाते-पीते रहो यहाँ तक कि इब्ने उम्मे मक्तूम की अज़ान सुनो। (ज़ईफ़ : ज़ुहरी लम युस्रिह बिस्सिमाअ)

ये वो नाबीना हैं जिनके बारे में अब-स व तवल्ला अन् जाअहुल अअ्मा उतरी थी। ये भी मुअज़्ज़िन थे। बीनाई में नुक़सान था। जब लोग सुबह सादिक़ देख लेते और इत्तिलाअ कर देते कि सुबह हो गई तब ये अज़ान कहा करते थे। (इब्ने अबी हातिम) इब्ने उम्मे मक्तूम (रज़ि.) का मशहूर नाम तो अब्दुल्लाह है। कुछ ने कहा है कि उनका नाम अम्र है, वल्लाहु आलम!

इन्नहा तज़्किरह यानी ये नसीहत है इससे मुराद या तो ये सूरत है या ये मसावात कि तब्लीग़े दीन में सब यकसाँ हैं मुराद है। सुद्दी (रह.) कहते हैं कि इससे क़ुरआन मुराद है जो शख़्स चाहे इसे याद कर ले। यानी अल्लाह को याद करे और अपने तमाम कामों में उसके फ़रमान को मुक़द्दम रखे। या ये मतलब है कि वह्ये इलाही को याद कर ले। ये सूरत और ये वअ़्ज़ व नसीहत बल्कि सारा का सारा क़ुरआन मुअक़्क़र मुअज़्ज़ज़ और मुअ़तबर सहीफ़ों में हैं जो बुलंद क़द्र और आला मर्तबे वाले हैं। जो मेल-कुचैल से और कमी ज़्यादती से महफ़ूज़ और पाक-साफ़ हैं। जो फ़रिश्तों के पाक हाथों में हैं और ये भी मतलब हो सकता है कि अस्हाबे रसूल (ﷺ) के पाकीज़ा हाथों में हैं। हज़रत क़तादा (रह.) का क़ौल है कि इससे मुराद क़ारी हैं।

इब्ने अब्बास (रज़ि.) फ़रमाते हैं कि ये निबती ज़बान का लफ़्ज़ है मआना हैं क़ारी। इमाम इब्ने जरीर (रह.) फ़रमाते हैं कि सहीह बात यही है कि इससे मुराद फ़रिश्ते हैं जो अल्लाह तआला और मख़्लूक़ के दरम्यान सफ़ीर हैं। सफ़ीर उसे कहते हैं कि जो सुलह और भलाई के लिये लोगों में कोशिश करता फिरे। अरब शाइर के एक शेअर में भी यही मआना पाये जाते हैं। इमाम बुख़ारी (रह.) फ़रमाते हैं कि इससे मुराद फ़रिश्ते हैं। वो फ़रिश्ते जो अल्लाह तआला की जानिब से वह्य वग़ैरह लेकर आते हैं। वो ऐसे ही हैं जैसे लोगों में सुलह कराने वाले सफ़ीर होते हैं। (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरह अबस क़ब्ल हदीस़ : 4937)

वो ज़ाहिर-बातिन में पाक हैं। वजीह, ख़ुशरू, शरीफ़ और बुज़ुर्ग ज़ाहिर हैं। अख़्लाक़ व अफ़आल के पाकीज़ा बातिन में। यहाँ से ये भी मालूम कर लेना चाहिये कि क़ुरआन के पढ़ने वालों को अख़्लाक़ व आमाल अच्छे रखने चाहियें। मुस्नद अहमद की एक हदीस़ में है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़रमाते हैं, 'जो क़ुरआन को पढ़े और उसकी महारत हासिल करे वो बुज़ुर्ग लिखने वाले फ़रिश्तों के साथ होगा और जो बावजूद मशक़्क़त के भी पढ़े उसे दोहरा अज्र मिलेगा।' (सहीह बुख़ारी, हवाला साबिक़ : 4937, सहीह मुस्लिम : 798, अबू दाऊद : 145, तिर्मिज़ी : 2904, इब्ने माजह : 3779, अहमद : 6/48)

قُتِلَ الْاِنْسَانُ مَآ اَكْفَرَهٗ ﴿١٧﴾ مِنْ اَيِّ شَيْءٍ خَلَقَهٗ ﴿١٨﴾ مِنْ نُّطْفَةٍ ؕ خَلَقَهٗ
فَقَدَّرَهٗ ﴿١٩﴾ ثُمَّ السَّبِيْلَ يَسَّرَهٗ ﴿٢٠﴾ ثُمَّ اَمَاتَهٗ فَاَقْبَرَهٗ ﴿٢١﴾ ثُمَّ اِذَا شَآءَ اَنْشَرَهٗ ﴿٢٢﴾ كَلَّا
لَمَّا يَقْضِ مَآ اَمَرَهٗ ﴿٢٣﴾ فَلْيَنْظُرِ الْاِنْسَانُ اِلٰى طَعَامِهٖٓ ﴿٢٤﴾ اَنَّا صَبَبْنَا الْمَآءَ صَبًّا
﴿٢٥﴾ ثُمَّ شَقَقْنَا الْاَرْضَ شَقًّا ﴿٢٦﴾ فَاَنْۢبَتْنَا فِيْهَا حَبًّا ﴿٢٧﴾ وَّعِنَبًا وَّقَضْبًا ﴿٢٨﴾ وَّزَيْتُوْنًا
وَّنَخْلًا ﴿٢٩﴾ وَّحَدَآئِقَ غُلْبًا ﴿٣٠﴾ وَّفَاكِهَةً وَّاَبًّا ﴿٣١﴾ مَّتَاعًا لَّكُمْ وَلِاَنْعَامِكُمْ ﴿٣٢﴾

तर्जुमा : "अल्लाह की मार! इंसान भी कैसा नाशुक्रा है। (17) उसे अल्लाह ने किस चीज़ से पैदा किया? (18) एक नुत्फ़े से पैदा किया है फिर उसकी तक़्दीर मुक़र्रर की। (19) फिर उसके लिये रास्ता आसान कर दिया। (20) फिर उसे मौत दी और फिर क़ब्र में दफ़न किया। (21) फिर जब चाहेगा उसे ज़िन्दा कर देगा। (22) हर्गिज़ नहीं! उसने अब तक अल्लाह के हुक्म की बजा आवरी नहीं की। (23) इंसान को चाहिये कि अपने खाने की तरफ़ देख ले। (24) कि हमने बारिश बरसाई। (25) फिर ज़मीन को शक़्क़ किया (फ़ाड़ा)। (26) फिर उसमें से अनाज उगाये। (27) और अंगूर और तरकारी। (28) और ज़ैतून और खजूर। (29) और गन्जान बाग़ात। (30) और मेवे और घास-चारा (भी उगाया)। (31) तुम्हारे इस्तेमाल व फ़ायदे के लिये और तुम्हारे चौपायों के (फ़ायदे व इस्तेमाल के) लिये।" (32)

मरने के बाद उठने के अक़्ली दलाइल (आयत : 17-32) : जो लोग मरने के बाद जी उठने के इंकारी थे उनकी यहाँ मज़म्मत बयान हो रही है। इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) फ़रमाते हैं, इंसान पर लानत हो ये कितना बड़ा नाशुक्रगुज़ार है और ये भी मआ़ना किये गये हैं कि उ़मूमन कुल इंसान झुठलाने वाले हैं बिला दलील महज़ अपने ख़्याल से एक चीज़ को नामुम्किन जानकर बावजूद इल्मी सरमाये की कमी के झट से अल्लाह की बातों की तक्ज़ीब कर देता है और ये भी कहा गया है कि उसे उस झुठलाने पर कौनसी चीज़ आमादा करती है? उसके बाद इसकी असलियत जतलाई जाती है कि वो ख़्याल करे कि किस क़द्र हक़ीर और ज़लील चीज़ से अल्लाह ने उसे बनाया है क्या वो उसे दोबारा पैदा करने पर क़ुदरत नहीं रखता? उसने इंसान को नुत्फ़े से पैदा किया फिर उसकी तक़दीर मुक़द्दर की यानी उ़म्र, रोज़ी, अ़मल और नेक व बद होना। फिर उसके लिये माँ के पेट से निकलने का रास्ता आसान कर दिया और ये भी मआ़ना हैं कि हमने अपने दीन का रास्ता आसान कर दिया यानी वाज़ेह और ज़ाहिर कर दिया जैसे और जगह है, (اِنَّا هَدَيْنٰهُ السَّبِيْلَ اِمَّا شَاكِرًا وَّاِمَّا كَفُوْرًا ﴿٣﴾) (सूरह दहर 76 : 3) 'हमने उसे राह दिखाई फिर या तो वो शुक्रगुज़ार बने या नाशुक्रा।' हसन और इब्ने ज़ैद

इसी को राजेह बतलाते हैं। (अत्तबरी : 24/224) वल्लाहु आलम!

उसकी पैदाइश के बाद फिर उसे मौत दी और फिर क़ब्र में ले गया। अरब का मुहावरा है कि वो जब किसी को दफ़न करें तो कहते हैं क़बरतुर्रजुल और कहते हैं कि अक़्बरहुल्लाहु इसी तरह के और भी मुहावरे हैं। मतलब ये है कि अब अल्लाह ने उसे क़ब्र वाला बना दिया फिर जब अल्लाह चाहेगा उसे दोबारा ज़िन्दा कर देगा उसी ज़िन्दगी को बअ़स भी कहते हैं और नुशूर भी। जैसे और जगह है, (وَمِنْ اٰيٰتِهٖٓ اَنْ خَلَقَكُمْ مِّنْ تُرَابٍ ثُمَّ اِذَآ اَنْتُمْ بَشَرٌ تَنْتَشِرُوْنَ) 'उसकी निशानियों में से एक ये भी है कि उसने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया फिर तुम इंसान बन कर उठ बैठे।' (सूरह रूम 30 : 20) और जगह है, (كَيْفَ نُنْشِزُهَا) (सूरह बक़रह 2 : 259) 'हड्डियों को देखो कि हम किस तरह उन्हें उठाते-बिठाते हैं फिर किस तरह उन्हें गोश्त चढ़ाते हैं।'

इब्ने अबी हातिम की हदीस़ में है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़रमाते हैं, 'इंसान के तमाम आज़ा वग़ैरह को मिट्टी खा जाती है मगर रीढ़ की हड्डी को।' लोगों ने कहा, वो क्या है? आपने फ़रमाया, 'एक राई के दाने के बराबर है उसी से फिर तुम्हारी पैदाइश होगी।' (ज़ईफ़ : इसकी सनद में दराज अबुस्समह है जिसकी अबुल हैस़म से की हुई रिवायत ज़ईफ़ होती है। अत्तक़रीब : 1/235, 54)

ये हदीस़ बग़ैर सवाल-जवाब की ज़्यादती के बुख़ारी व मुस्लिम में भी है कि इब्ने आदम सड़-गल जाता है मगर रीढ़ की हड्डी कि उसी से पैदा किया गया है और उसी से फिर तरकीब दिया जायेगा। (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरह अ़म्म यतसाअलून : 4935, सहीह मुस्लिम : 2955, अबू दाऊद : 4743, इब्ने माजह : 4266, अहमद : 2/322, इब्ने हिब्बान : 3139)

फिर अल्लाह तबारक व तआला फ़रमाता है कि जिस तरह ये नाशुक्रा और बेक़द्र इंसान कहता है कि उसने अपनी जान व माल में अल्लाह का जो हक़ था वो अदा कर दिया लेकिन ऐसा हर्गिज़ नहीं है बल्कि अभी तो उसने फ़राइज़े इलाही से भी सुबुकदोशी हासिल नहीं की। हज़रत मुजाहिद (रह.) का फ़रमान है कि किसी शख़्स से अल्लाह तआला के फ़राइज़ की पूरी अदायगी नहीं हो सकती। हसन बसरी (रह.) से भी ऐसे ही मआ़ना मरवी हैं। मुतक़द्दिमीन में से मैंने तो इसके सिवा कोई और कलाम नहीं पाया। हाँ मुझे इसके ये मआ़ना मालूम होते हैं कि फ़रमाने बारी का ये मतलब है फिर जब चाहे दोबारा पैदा करेगा। अब तक उसके फ़ैसले के मुताबिक़ वक़्त नहीं आया। यानी अभी वो ऐसा नहीं करेगा, यहाँ तक कि मुद्दते मुक़र्ररह ख़त्म हो और बनी आदम की तक़्दीर पूरी हो।

उनकी क़िस्मत में इस दुनिया में आना और यहाँ भला-बुरा करना वग़ैरह जो मुक़द्दर हो चुका है वो सब अल्लाह के अन्दाज़े के मुताबिक़ पूरा हो चुके उस वक़्त वो ख़ल्लाक़े कुल दोबारा ज़िन्दा करेगा और जैसे कि पहली मर्तबा पैदा किया था, अब दूसरी बार पैदा कर देगा। इब्ने अबी हातिम में हज़रत वहब बिन मुनब्बह (रह.) से मरवी है कि हज़रत उ़ज़ैर (अलै.) ने फ़रमाया, 'मेरे पास एक फ़रिश्ता आया और उसने मुझसे कहा कि क़ब्रें ज़मीन का पेट हैं और ज़मीन मख़्लूक़ की माँ है जब कि कुल मख़्लूक़ पैदा हो चुकेगी फिर क़ब्रों में पहुँच जायेगी और क़ब्रें सब भर जायेंगी उस वक़्त दुनिया का सिलसिला ख़त्म हो जायेगा और जो भी ज़मीन पर होंगे सब मर

जायेंगे और जो कुछ ज़मीन में है उसे ज़मीन उगल देगी और क़ब्रों में जो मुर्दे हैं सब बाहर निकाल दिये जायेंगे। ये क़ौल हम अपनी इस तफ़्सीर की दलील में पेश कर सकते हैं, वल्लाहु सुब्हानहू व तआ़ला आ़लम!

अल्लाह तआ़ला के एहसानात का तज़्किरा : फिर इरशाद होता है कि मेरे उस एहसान को देखें कि मैंने उन्हें खाना दिया। इसमें भी दलील है मौत के बाद जी उठने की कि जिस तरह ख़ुश्क ग़ैर आबाद ज़मीन में से हमने तरो-ताज़ा दरख़्त उगाये और उनसे अनाज वग़ैरह पैदा करके तुम्हारे लिये खाना मुहैया किया उसी तरह गली-सड़ी, खोखली और चूना हो गई हड्डियों को भी हम एक रोज़ ज़िन्दा कर देंगे और उन्हें गोश्त-पोस्त पहनाकर दोबारा तुम्हें ज़िन्दा कर देंगे। तुम देख लो कि हमने आसमान से बराबर पानी बरसाया फिर उसे हमने ज़मीन में पहुँचाकर ठहरा दिया वो बीज में पहुँचा और ज़मीन में पड़े हुए दानों में सिरायत की जिससे वो दाने उगे, दरख़्त फूटा, ऊँचा हुआ और खेतियाँ लहलहाने लगीं। कहीं अनाज पैदा हुआ, कहीं अंगूर और कहीं तरकारियाँ। हब्ब तो कहते हैं हर दाने को। इनब कहते हैं अंगूर को और क़ज़्ब उस सब्ज़ चारे को कहते हैं जिसे जानवर खाते हैं और ज़ैतून को पैदा किया जो रोटी के साथ सालन का काम देता है, जलाया जाता है, तेल निकाला जाता है और खजूर के दरख़्त पैदा किये जो गदराई हुई भी खाई जाती हैं, तर भी खाई जाती हैं और ख़ुश्क भी खाई जाती हैं और पकी भी और इसका शीरा भी बनाया जाता है और सिरका भी और बाग़ात पैदा किये। ग़ुलबा के मआ़ना खजूरों के बड़े-बड़े पुर मेवा दरख़्त भी हैं। हदाइक़ कहते हैं हर उस बाग़ को जो घना और ख़ूब भरा हुआ और गहरे साये वाला और बड़े दरख़्तों वाला हो। मोटी गर्दन वाले आदमी को भी अ़रब अग़्लब कहते हैं और मेवे पैदा किये और अब्ब (घास) कहते हैं ज़मीन की उस सब्ज़ी को जिसे जानवर खाते हैं और इंसान उसे नहीं खाते जैसे घास-पात वग़ैरह। अब जानवर के लिये ऐसा ही है जैसे इंसान के लिये फ़ाकिहा यानी फल मेवा।

हज़रत अ़ता (रह.) का क़ौल है कि ज़मीन पर जो उगता है उसे अब्ब कहते हैं। ज़ह्हाक (रह.) फ़रमाते हैं कि सिवाय मेवों के बाक़ी सब अब्ब हैं। अबू साइब (रह.) फ़रमाते हैं अब्ब आदमी के खाने में आता है और जानवर के खाने में भी। हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ (रज़ि.) से इसकी बाबत सवाल होता है तो फ़रमाते हैं कौनसा आसमान मुझे अपने तले साये देगा और कौनसी ज़मीन मुझे अपनी पीठ पर उठायेगी? अगर मैं किताबुल्लाह तआ़ला में वो कहूँ जिसका मुझे इल्म न हो, लेकिन ये असर मुन्क़तअ़ है। इब्राहीम तैमी (रह.) ने हज़रत सिद्दीक़ (रज़ि.) को नहीं पाया। हाँ अल्बत्ता सहीह सनद से इब्ने जरीर में हज़रत उ़मर फ़ारूक़ (रज़ि.) से मरवी है कि आपने मिम्बर पर सूरह अ़बस पढ़ी और यहाँ तक पहुँचकर कहा कि फ़ाकिहा को तो हम जानते हैं लेकिन ये अब्ब क्या चीज़ है? फिर ख़ुद ही फ़रमाया, उ़मर! इस तकलीफ़ को छोड़। (अत्तबरी : 24/229)

इससे मुराद ये है कि इसकी शक्ल व सूरत और इसकी तअ़यीन मालूम नहीं वरना इतना तो सिर्फ़ आयत के पढ़ने से ही साफ़ तौर पर मालूम हो रहा है कि ये ज़मीन से उगने वाली एक चीज़ है क्योंकि पहले ये लफ़्ज़ मौजूद है (फ़अम्बतना फ़ीहा)। फिर फ़रमाता है ये तुम्हारी ज़िन्दगी के क़ायम रखने और तुम्हें फ़ायदा पहुँचाने के लिये और तुम्हारे जानवरों के लिये है कि क़यामत तक ये सिलसिला जारी रहेगा और तुम इससे फ़ैज़याब होते रहोगे।

فَإِذَا جَآءَتِ الصَّآخَّةُ ﴿٣٣﴾ يَوْمَ يَفِرُّ الْمَرْءُ مِنْ أَخِيهِ ﴿٣٤﴾ وَأُمِّهِ وَأَبِيهِ ﴿٣٥﴾
وَصَاحِبَتِهِ وَبَنِيهِ ﴿٣٦﴾ لِكُلِّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ يَوْمَئِذٍ شَأْنٌ يُغْنِيهِ ﴿٣٧﴾ وُجُوهٌ يَوْمَئِذٍ
مُّسْفِرَةٌ ﴿٣٨﴾ ضَاحِكَةٌ مُّسْتَبْشِرَةٌ ﴿٣٩﴾ وَوُجُوهٌ يَوْمَئِذٍ عَلَيْهَا غَبَرَةٌ ﴿٤٠﴾ تَرْهَقُهَا
قَتَرَةٌ ﴿٤١﴾ أُولَٰئِكَ هُمُ الْكَفَرَةُ الْفَجَرَةُ ﴿٤٢﴾

तर्जुमा : ''पस जबकि कान बहरे कर देने वाली क़यामत आ जायेगी। (33) उस दिन आदमी अपने भाई से (34) और अपनी माँ और अपने बाप से (35) और अपनी बीवी और अपनी औलाद से भागेगा। (36) उनमें से हर एक को उस दिन एक ऐसा मश्ग़ला होगा जो उसे मश्ग़ूल रखने के लिये काफ़ी होगा। (37) उस दिन बहुत से चेहरे रोशन होंगे। (38) जो हँसते हुए और हश्शाश-बश्शाश होंगे। (39) और बहुत से चेहरे उस दिन गुबार आलूद होंगे। (40) जिन पर स्याही चढ़ी हुई होगी। (41) वो यही काफ़िर बदकिरदार लोग होंगे।'' (42)

क़यामत की हौलनाकियाँ (आयत : 33-42) : हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) फ़रमाते हैं कि साख़्ख़ह क़यामत का नाम है और इस नाम की वजह ये है कि इसके नफ़ख़े की आवाज़ और इसका शोर व गुल कानों के पर्दे फाड़ देगा, उस दिन इंसान अपने क़रीबी रिश्तेदारों को देखेगा लेकिन भागता फिरेगा कोई किसी के काम न आयेगा। मियाँ-बीवी को देख कर कहेगा कि बतला तेरे साथ मैंने दुनिया में कैसा कुछ सुलूक किया? वो कहेगी कि बेशक आपने मेरे साथ बहुत ही ख़ुश सुलूकी की, बहुत प्यार मुहब्बत से रखा। ये कहेगा कि आज मुझे ज़रूरत है सिर्फ़ एक नेकी दे दो ताकि इस आफ़त से छूट जाऊँ। तो वो जवाब देगी कि आपका सवाल थोड़ी सी चीज़ का ही है मगर क्या करूँ यही ज़रूरत मुझे दरपेश है और इसी का ख़ौफ़ मुझे लग रहा है मैं तो नेकी नहीं दे सकती। बेटा बाप से मिलेगा यही कहेगा और यही जवाब पायेगा।

शफ़ाअ़त का तज़्किरा : सहीह हदीस में शफ़ाअ़त का बयान फ़रमाते हुए हुज़ूर (ﷺ) का इरशाद है, 'ऊलुल अ़ज़्म पैग़म्बरों से लोग शफ़ाअ़त की तलब करेंगे और उनमें से हर एक यही कहेगा कि नफ़्सी-नफ़्सी। यहाँ तक कि हज़रत ईसा रूहुल्लाह (अ़लै.) भी यही फ़रमायेंगे कि आज मैं अल्लाह तआ़ला से सिवाय अपनी जान के और किसी के लिये कुछ भी न कहूँगा। मैं तो आज अपनी वालिदा हज़रत मरयम (अ़लै.) के लिये भी कुछ न कहूँगा जिनके बतन से मैं पैदा हुआ हूँ।' (इस मआ़ना की रिवायात सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरत बनी इस्राईल बाब ज़ुर्रिय्यतु मन हमल्ना मअ़ नूह : 4712, सहीह मुस्लिम : 194, वग़ैरह में मौजूद हैं।)

अल्ग़र्ज़ दोस्त-दोस्त से, रिश्तेदार-रिश्तेदार से मुँह छिपाता फिरेगा। हर एक आपा-धापी में लगा होगा।

किसी को दूसरे का होश भी न होगा। रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़रमाते हैं, 'तुम नंगे पैरों, नंगे बदन और बेख़त्ना अल्लाह तआला के यहाँ जमा किये जाओगे।' आप (ﷺ) की बीवी साहिबा ने पूछा कि ऐ अल्लाह के रसूल! फिर तो एक दूसरे की शर्मगाहों पर नज़रें पड़ेंगी? फ़रमाया, 'उस रोज़ की घबराहट वहाँ का हेरत अंगेज़ हंगामा हर शख़्स को मशग़ूल किये होगा भला किसी को दूसरे की तरफ़ देखने का मौक़ा उस दिन कहाँ?' (इब्ने अबी हातिम)

कुछ रिवायतों में है कि आप (ﷺ) ने फिर इसी आयत की तिलावत फ़रमाई लिकुल्लिम्रिइम (हसन सहीह : तिर्मिज़ी, किताब तफ़्सीरुल कुरआन, बाब व मिन सूरह अबस : 3332, इमाम तिर्मिज़ी रह. इसे हसन सहीह और इसकी सनद को हसन कहते हैं। नसाई : 2083, हाकिम : 2/251)

दूसरी रिवायत में है कि ये बीवी साहिबा हज़रत उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा (रज़ि.) थीं और रिवायत में है कि एक दिन हज़रत सिद्दीक़ा (रज़ि.) ने हुज़ूर (ﷺ) से कहा, ऐ अल्लाह के रसूल! मेरे माँ-बाप आप (ﷺ) पर फ़िदा हों, मैं एक बात पूछती हूँ ज़रा बता दीजिये। आप (ﷺ) ने फ़रमाया, अगर मैं जानता हूँ तो ज़रूर बतलाऊँगा। पूछा, हुज़ूर! लोगों का हश्र किस तरह होगा? आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'नंगे पैरों और नंगे बदन।' थोड़ी देर के बाद पूछा, क्या औरतें भी इसी हालत में होंगी? फ़रमाया, हाँ। ये सुनकर उम्मुल मोमिनीन (रज़ि.) अफ़सोस करने लगीं। आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'आइशा! इस आयत को सुन लो फिर तुम्हें इसका कोई रंज व ग़म न रहेगा कि कपड़े पहने हैं या नहीं? पूछा, हुज़ूर! वो आयत कौनसी है, फ़रमाया, लिकुल्लिमरिइम। (सहीह बिश्शवाहिद : नसाई, किताबुल जनाइज़, बाब अल्बअ़स : 2085)

एक रिवायत में है कि उम्मुल मोमिनीन हज़रत सौदा (रज़ि.) ने पूछा, ये सुनकर कि लोग इस तरह नंगे बदन, नंगे पाँव, बेख़त्ना जमा किये जायेंगे, पसीने में डूबे होंगे, किसी के मुँह तक पसीना पहुँच गया होगा और किसी के कानों तक, तो आप (ﷺ) ने ये आयत पढ़कर सुनाई। (ज़ईफ़ : हाकिम : 2/514, व सदहू ज़ईफ़ुन फ़ीहि इस्माईल बिन अबी उवैस वहुव ज़ईफ़ अलर्राजिह व अहादीसुहू फ़ी सहीह बुख़ारी सहीहा)

फिर इरशाद होता है कि वहाँ लोगों के दो गिरोह होंगे। कुछ तो वो होंगे जिनके चेहरे ख़ुशी से चमक रहे होंगे, दिल ख़ुशी से मुत्मइन होंगे, मुँह ख़ूबसूरत और नूरानी होंगे। ये तो जन्नती जमाअ़त है। दूसरा गिरोह दोज़ख़ियों का होगा, उनके चेहरे स्याह होंगे, गर्द आलूद होंगे। हदीस़ में है, 'उनका पसीना मिस्ल लगाम के हो रहा होगा फिर गर्दो-ग़ुबार पड़ रहा होगा।' (व सनदहू ज़ईफ़ मअ़ इरसालिही इसकी सनद में अबू अली मौला जअ़फ़र बिन मुहम्मद मज्हूल रावी है।)

ये वो हैं जिनके दिलों में कुफ़्र था और आमाल में बदकारी थी जैसे और जगह है, (وَلَا يَلِدُوٓا إِلَّا فَاجِرًا كَفَّارًا ﴿٢٧﴾) (सूरह नूह 71 : 27) 'उन कुफ़्फ़ार की औलाद भी बदकार काफ़िर ही होगी।'

सूरह अबस की तफ़्सीर ख़त्म हुई फ़ल्हम्दुलिल्लाहि वल्मिन्नतु!

***

FLOW CHART
तरतीबी नक्श-ए-रब्त

MACRO-STRUCTURE
नज़्मे-जली

सूरह तकवीर - 81

आयात : 29, मक्की, पैराग्राफ : 5

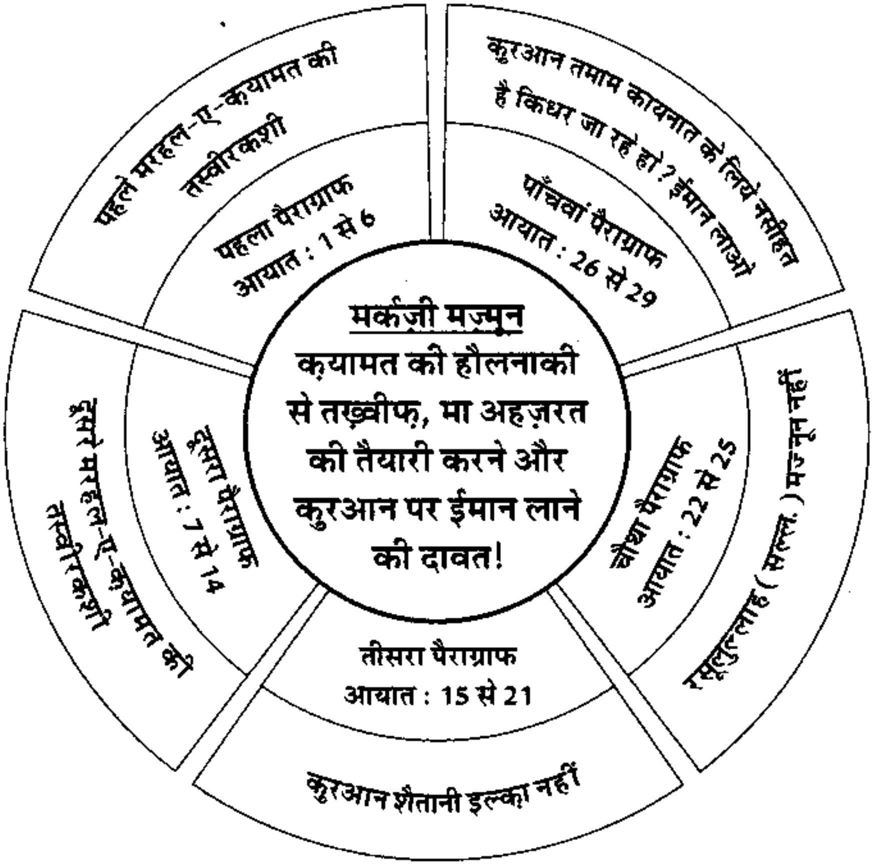

ज़मान-ए-नुज़ूल

1. सूरह तकवीर की इब्तिदाई 14 आयात, क़ियामे मक्का के पहले दौर (0 से 3 नबवी) में आप (सल्ल.) पर नाज़िल हुई, जब इस्लाम की दावत ख़ुफ़िया तौर पर दी जा रही थी।
2. आख़िरी 15 आयात, ऐलाने आ़म के बाद इल्ज़ामात के दौर में नाज़िल हुई, जब आपको मज्नून कहा जा रहा था।

तफ़्सीर सूरह तकवीर

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ ○

तर्जुमा : ''शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है।''

***

اِذَا الشَّمۡسُ كُوِّرَتۡ ① وَاِذَا النُّجُوۡمُ انۡكَدَرَتۡ ② وَاِذَا الۡجِبَالُ سُيِّرَتۡ ③
وَاِذَا الۡعِشَارُ عُطِّلَتۡ ④ وَاِذَا الۡوُحُوۡشُ حُشِرَتۡ ⑤ وَاِذَا الۡبِحَارُ سُجِّرَتۡ ⑥
وَاِذَا النُّفُوۡسُ زُوِّجَتۡ ⑦ وَاِذَا الۡمَوۡءٗدَةُ سُئِلَتۡ ⑧ بِاَىِّ ذَنۡۢبٍ قُتِلَتۡ ⑨ وَاِذَا
الصُّحُفُ نُشِرَتۡ ⑩ وَاِذَا السَّمَآءُ كُشِطَتۡ ⑪ وَاِذَا الۡجَحِيۡمُ سُعِّرَتۡ ⑫ وَاِذَا
الۡجَنَّةُ اُزۡلِفَتۡ ⑬ عَلِمَتۡ نَفۡسٌ مَّاۤ اَحۡضَرَتۡ ⑭

तर्जुमा : ''जब सूरज लपेट लिया जायेगा। (1) और जब सितारे बेनूर हो जायेंगे। (2) और जब पहाड़ चलाये जायेंगे। (3) और जब गाभिन ऊँटनियाँ छोड़ दी जायेगी। (4) और जब वहशी जानवर इकट्ठे किये जायेंगे। (5) और जब दरिया भड़काये जायेंगे। (6) और जब हर क़िस्म के लोग मिला दिये जायेंगे। (7) और जब ज़िन्दा गाड़ी हुई लड़की से सवाल किया जायेगा (8) कि किस गुनाह की वजह से वो क़त्ल की गई। (9) और जब नामाए आमाल खोल दिये जायेंगे। (10) और जब आसमान की खाल उतार ली जायेगी। (11) और जब जहन्नम भड़काई जायेगी। (12) और जब जन्नत नज़दीक कर दी जायेगी। (13) तो उस दिन हर शख़्स जान लेगा जो कुछ लेकर आया होगा।'' (14)

तआरुफ़े सूरत : मुस्नद अहमद में है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़रमाते हैं, 'जो शख़्स क़यामत को अपनी आँखों से देखना चाहे तो वो इज़श्शम्सु कुव्विरत और इज़स्समाउन्-फ़तरत और इज़स्समाउन्-शक़्क़त पढ़ ले।'

(हसन: तिर्मिज़ी, किताब तफ़्सीरुल क़ुरआन, बाब व मिन सूरति इज़श्शम्सु कुव्विरत : 3333, वसनदहू हसन, अहमद : 2/24, हाकिम : 2/515, मज्मउज़्ज़वाइद : 7/134)

क़यामत के मनाज़िर (आयत : 1-14) : यानी सूरज बेनूर हो जायेगा। ओन्धा करके लपेट कर ज़मीन पर फेंक दिया जायेगा। इब्ने अब्बास (रज़ि.) फ़रमाते हैं कि सूरज को, चाँद को और सितारों को लपेट कर बेनूर करके समुन्द्रों में डाल दिया जायेगा और फिर पछवा हवायें चलेंगी और आग लग जायेगी। एक मरफ़ूअ हदीस़ में है कि इसको तह करके जहन्नम में डाल दिया जायेगा। (व सनदहू ज़ईफ़ुन जिद्दा)

और एक हदीस़ में सूरज के साथ चाँद का भी ज़िक्र है लेकिन वो ज़ईफ़ है। (मुस्नद अबी यअला : 4116, वसनद ज़ईफ़ अल्उज़्मा लिअबी शैख़ : 643, किताबुल मौज़ूआत लिइब्निल जौज़ी : 1/140, इसकी सनद में यज़ीद रक़्क़ाशी ज़ईफ़ है। अत्तक़रीब : 2/361, 216)

सहीह बुख़ारी में ये हदीस़ अल्फ़ाज़ के हेर-फेर से मरवी है उसमें है कि सूरज और चाँद क़यामत के दिन लपेट लिये जायेंगे। (सहीह बुख़ारी, किताब बदउल ख़ल्क़, बाब सिफ़तुश्शम्स वल्क़मर : 3200)

इमाम बुख़ारी (रह.) इसे किताब बदउल ख़ल्क़ में लाये हैं लेकिन यहाँ लाना ज़्यादा मुनासिब था या मुताबिक़े आदत वहाँ और यहाँ दोनों जगह लाते जैसे कि इमाम साहब (रह.) की आदत है।

हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने जब ये हदीस़ बयान की कि क़यामत के दिन ये होगा तो हज़रत हसन (रह.) कहने लगे कि उनका क्या गुनाह है? फ़रमाया, मैंने हदीस़ कही और तुम उस पर बातें बनाते हो। सूरज की क़यामत वाले दिन ये हालत होगी, सितारे सारे के सारे मुतग़य्यर होकर झड़ जायेंगे। जैसे और जगह है (وَإِذَا الْكَوَاكِبُ انْتَثَرَتْ) (सूरह इन्फ़ितार 82 : 2) ये भी गदले और बेनूर हो कर बिछ जायेंगे। हज़रत उबय बिन कअब (रज़ि.) फ़रमाते हैं, क़यामत से पहले छः निशानियाँ होंगी। लोग अपने बाज़ारों में होंगे कि अचानक सूरज की रोशनी जाती रहेगी और फिर नागहाँ सितारे टूट-टूट कर गिरने लगेंगे। फिर अचानक पहाड़ ज़मीन पर गिर पड़ेंगे और ज़मीन ज़ोर-ज़ोर से झटके लेने लगेगी और बुरी तरह हिलने लगेगी। बस फिर क्या इंसान क्या जिन्नात क्या जानवर और क्या जंगली जानवर सब आपस में ख़लत-मलत हो जायेंगे। जानवर भी इंसानों से भागते फिरते थे, इंसानों के पास आ जायेंगे। लोगों को इस क़द्र बदहवासी और घबराहट होगी कि बेहतर से बेहतर माल ऊँटनियाँ जो ब्याहने वाली होंगी उनकी भी ख़ैर ख़बर न लेंगे। जिन्नात कहेंगे कि हम जाते हैं कि तहक़ीक़ करें क्या हो रहा है? लेकिन वो आयेंगे तो देखेंगे कि समुन्द्र में भी आग लग रही है। इसी हाल में एक दम ज़मीन फटने लगेगी और आसमान भी टूटने लगेंगे, सातों ज़मीनें और सातों आसमान का यही हाल होगा। इधर से एक तुन्द हवा चलेगी, जिससे तमाम जानदार मर जायेंगे। (अत्तबरी : 24/237)

एक और रिवायत में है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़रमाते हैं, सारे सितारे और जिन-जिनकी अल्लाह तआला के सिवा इबादत की गई है, सब जहन्नम में गिरा दिये जायेंगे। सिर्फ़ हज़रत ईसा (अलै.) और हज़रत

मरयम (अलै.) रहेंगे। अगर ये भी अपनी इबादत से ख़ुश होते तो ये भी जहन्नम में दाख़िल कर दिये जाते। (इब्ने अबी हातिम) पहाड़ अपनी जगह से टल जायेंगे और बेनामो-निशान हो जायेंगे। ज़मीन साफ़ चटियल और हमवार मैदान रह जायेगी, ऊँटनियाँ बेकार छोड़ दी जायेंगी, न कोई उनकी निगरानी करेगा न चरायेगा, न दूध निकालेगा न सवारी लेगा। इशार जमा है अशरा की। जो गाभिन ऊँटनी दसवें महीने में लग जाये उसे (अशरा) कहते हैं। मतलब ये है कि घबराहट और बदहवासी, बेचैनी और परेशानी इस क़द्र होगी कि बेहतर से बेहतर माल की भी परवाह न रहेगी। क़यामत की इन बलाओं ने दिल उड़ा दिया होगा, कलेजे मुँह को आ गये होंगे।

कुछ लोग कहते हैं कि ये क़यामत के दिन होगा और लोगों को इससे कुछ सरोकार न होगा। हाँ उनके देखने में ये होगा। इस क़ौल के क़ाइल इशार के कई मआ़ना बयान करते हैं। एक तो ये कहते हैं इससे मुराद बादल हैं जो दुनिया की बर्बादी की वजह से आसमान व ज़मीन के दरम्यान फिरते फिरेंगे। कुछ कहते हैं कि इससे मुराद वो ज़मीन है जिसका उ़श्र दिया जाता है। कुछ कहते हैं इससे मुराद घर हैं जो पहले आबाद थे, अब वीरान हैं। इमाम क़ुर्तुबी (रह.) इन अक़्वाल को बयान करके तरजीह इसी को देते हैं कि मुराद इससे ऊँटनियाँ हैं और अक्सर मुफ़स्सिरीन का यही क़ौल है और मैं तो कहता हूँ कि सलफ़ से और अइम्मा से इसके सिवा कुछ वारिद ही नहीं हुआ, वल्लाहु आ़लम!

और वहशी जानवर जमा किये जायेंगे, जैसे फ़रमान है, (وَمَا مِنْ دَآبَّةٍ فِي الْأَرْضِ وَلَا طٰٓئِرٍ) (सूरह अन्आ़म 6 : 38) 'ज़मीन पर चलने वाले कुल जानवर और हवा में उड़ने वाले कुल परिन्दे भी तुम्हारी तरह गिरोह हैं, हमने अपनी किताब में कोई चीज़ नहीं छोड़ी फिर ये सब अपने रब की तरफ़ जमा किये जायेंगे।'

सब जानदार का हश्र उसी के पास होगा यहाँ तक कि मक्खियाँ भी। इन सबका अल्लाह तआ़ला इंसाफ़ के साथ फ़ैसला करेगा। उन जानवरों का हश्र इनकी मौत ही है। अल्बत्ता जिन्न व इन्स अल्लाह के सामने खड़े किये जायेंगे और इनसे हिसाबो-किताब होगा। रबीअ़ बिन ख़ुसैम (रह.) ने कहा कि मुराद वहशियों के हश्र से इन पर अम्रुल्लाह आना है। लेकिन इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने ये सुनकर फ़रमाया, इससे मुराद मौत है ये तमाम जानवर भी एक-दूसरे के साथ और इंसानों के साथ हो जायेंगे ख़ुद क़ुरआन में और जगह है, (وَالطَّيْرَ مَحْشُوْرَةً) 'परिन्द जमा किये हुए।' (सूरह सॉद 38 : 19)

पस ठीक मतलब इस आयत का भी यही है कि वहशी जानवर जमा किये जायेंगे। हज़रत अ़ली (रज़ि.) ने एक यहूदी से पूछा, जहन्नम कहाँ है? उसने कहा, समुन्द्र में। आपने फ़रमाया, मेरे ख़्याल में ये सच्चा है क़ुरआन कहता है, (وَالْبَحْرِ الْمَسْجُوْرِ) (सूरह तूर 52 : 6) और फ़रमाता है, (وَإِذَا الْجِبَالُ سُيِّرَتْ ۞)

इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) वग़ैरह फ़रमाते हैं, अल्लाह तआ़ला पछवा हवायें भेजेगा वो उसे भड़का देंगे और शौले मारती हुई आग बन जायेगा। आयत (وَالْبَحْرِ الْمَسْجُوْرِ) (सूरह तूर 52 : 6) की तफ़्सीर में इसका मुफ़स्सल बयान गुज़रा।

हज़रत मुआविया बिन सईद (रह.) फ़रमाते हैं कि बहरे रौम में बरकत है, ये ज़मीन के बीच में है, सब नहरें इसमें आती हैं और बहरे कबीर भी इसमें पड़ता है। इसके नीचे कुँऐं हैं जिनके मुँह ताँबे से बंद किये हुए हैं, क़यामत के दिन वो सुलग उठेंगे। ये असर अजीब है और साथ ही ग़रीब है। हाँ अबू दाऊद में एक हदीस़ है कि समुन्द्र का सफ़र सिर्फ़ हाजी करें और उमरह करने वाले या जिहाद करने वाले ग़ाज़ी, इसलिये कि समुन्द्र के नीचे आग है और आग के नीचे पानी है, अल्अख़। (ज़ईफ़ : अबू दाऊद, किताबुल जिहाद, बाब फ़ी रुकूबिल बहर फ़िल्ग़ज़्व : 2489, बशीर बिन मुस्लिम रावी मज्हूल है। बैहक़ी : 4/334)

इसका बयान भी सूरह फ़ातिर की तफ़्सीर में गुज़र चुका है। सुज्जिरत के मआना ये भी किये गये हैं कि सिखा दिया जायेगा। एक क़तरा भी बाक़ी न रहेगा। ये मआना भी किये गये हैं कि बहा दिया जायेगा और इधर-उधर बह निकलेगा। फिर फ़रमाता है कि हर क़िस्म के लोग यकजा जमा कर दिये जायेंगे जैसे और जगह है, (اُحْشُرُوا الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا وَ اَزْوَاجَهُمْ وَمَا كَانُوْا يَعْبُدُوْنَ) (सूरह सॉफ़्फ़ात 37 : 22) 'ज़ालिमों को और उनके जोड़ों यानी उन जैसों को जमा करो।' हदीस़ में है, 'हर शख़्स का उस क़ौम के साथ हश्र किया जायेगा जो उस जैसे आमाल करती होगी।' अल्लाह तआला फ़रमाता है, (وَّكُنْتُمْ اَزْوَاجًا ثَلٰثَةً) (सूरह वाक़िअह 56 : 7) 'तुम तीन तरह के गिरोह हो जाओगे। कुछ वो जिनके दाहिने हाथ में नामाए आमाल होंगे, कुछ बायें हाथ वाले, कुछ सबक़त करने वाले।' (अत्तबरी : 24/245)

इब्ने अबी हातिम में है कि हज़रत उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) ने ख़ुत्बा पढ़ते हुए इस आयत की तिलावत फ़रमाई और फ़रमाया, हर जमाअत अपने जैसों से मिल जायेगी। दूसरी रिवायत में है कि वो दो शख़्स जिनके अमल एक जैसे हों वो या तो जन्नत में साथ रहेंगे या जहन्नम में साथ जलेंगे। (इब्ने अबी हातिम : व सनदहू ज़ईफ़, फ़ीहि वलीद बिन अबी स़ोर ज़ईफ़, हाकिम : 2/515-516, सनदहू ज़ईफ़, सुफ़ियान स़ौरी मुदल्लस व अन्अन)

हज़रत उमर (रज़ि.) से इस आयत की तफ़्सीर पूछी गई तो फ़रमाया, नेक नेकों के साथ मिल जायेंगे और बद बदों के साथ आग में। हज़रत उमर फ़ारूक़ (रज़ि.) ने एक मर्तबा लोगों से इस आयत की तफ़्सीर पूछी तो सब ख़ामोश रहे। आपने फ़रमाया, लो मैं बताऊँ, आदमी का जोड़ा जन्नत में उसी जैसा होगा उसी तरह जहन्नम में भी। हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) फ़रमाते हैं, मतलब इससे यही है कि तीन क़िस्म के लोग हो जायेंगे यानी अस्हाबुल यमीन अस्हाबुश्शिमाल और साबिक़ीन। मुजाहिद (रह.) फ़रमाते हैं कि हर क़िस्म के लोग एक साथ होंगे। यही क़ौल इमाम इब्ने जरीर (रह.) भी पसंद करते हैं और यही ठीक भी है।

दूसरा क़ौल ये है कि अर्श के पास से पानी का एक दरिया जारी होगा जो चालीस साल तक बहता रहेगा और बड़ी नुमायाँ चौड़ान में होगा। उससे तमाम मरे-सड़े, गले उगने लगेंगे। इस तरह के हो जायेंगे कि जो उन्हें पहचानता हो वो अगर उन्हें देख ले तो बेक निगाह पहचान ले, फिर रूहें छोड़ दी जायेंगी और हर रूह अपने जिस्म में आ जायेगी। यही मआना हैं, (وَ اِذَا النُّفُوْسُ زُوِّجَتْ) यानी रूहें जिस्मों से मिला दी

जायेंगी। और ये मआना भी किये गये हैं कि मोमिनों का जोड़ा हूरों से लगाया जायेगा और काफ़िरों का शैतानों से। (तज़्किरा कुर्तुबी) फिर इरशाद होता है, (وَإِذَا الْمَوْءُدَةُ سُئِلَتْ) जुम्हूर की क़िरअत यही है।

ज़मान-ए-जाहिलिय्यत की एक ज़ालिमाना रस्म : अहले जाहिलिय्यत लड़कियों को नापसंद करते थे और उन्हें ज़िन्दा दरगोर कर दिया करते थे। उनसे क़यामत के दिन सवाल होगा कि ये क्यों क़त्ल की गईं? ताकि उनके क़ातिलों को ज़्यादा डांट-डपट और शर्मिन्दगी हो। और ये भी समझ लीजिये कि जब मज़्लूम से सवाल हुआ तो ज़ालिम का तो कहना ही क्या है? और ये भी कहा गया है कि वो ख़ुद पूछेंगी कि उन्हें किस बिना पर ज़िन्दा दरगोर किया गया? इसके बारे में अहादीस़ सुनिये। मुस्नद अहमद में है, हुज़ूर (ﷺ) फ़रमाते हैं, 'मैंने क़सद किया कि लोगों को हालते हमल की मुजामिअत से रोक दूँ लेकिन मैंने देखा कि रोमी और फ़ारसी ये काम करते हैं और उनकी औलादों को उससे कुछ नुक़सान नहीं पहुँचता।' लोगों ने आप (ﷺ) से अ़ज़्ल के बारे में सवाल किया यानी बरवक़्त नुत्फ़े को बाहर डाल देने के बारे में। तो आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'ये पौशीदगी से ज़िन्दा गाड़ देना है और वइज़ल् मौऊदतु सुइलत् में इसी का बयान है।' (अहमद : 6/343, सहीह मुस्लिम, किताबुन्निकाह, बाब जवाज़ुल ग़ीलति वहिय वतीउल मुरज़िअ : 1442, तिर्मिज़ी : 2076, इब्ने माजह : 2011, इब्ने हिब्बान : 4196)

सलमा बिन यज़ीद (रज़ि.) और उनके भाई रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर होकर सवाल करते हैं कि हमारी माँ अमीर ज़ादी थीं वो सिला रहमी करती थीं मेहमान नवाज़ी करती थीं और भी नेक काम बहुत कुछ करती थीं लेकिन जाहिलिय्यत में ही मर गई हैं तो क्या उन्हें उनके ये नेक काम कुछ नफ़ा देंगे। आप (ﷺ) ने फ़रमाया, नहीं। उन्होंने कहा, उन्होंने हमारी एक बहन को ज़िन्दा दफ़न कर दिया था क्या वो भी उसे कुछ नफ़ा देगा। आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'ज़िन्दा गाड़ी हुई और ज़िन्दा गाड़ने वाली जहन्नम में हैं। हाँ ये और बात है कि वो इस्लाम को कुबूल कर ले।' (अहमद : 3/478, व सनदुहू सहीह मुअजम अल्कबीर : 6319)

इब्ने अबी हातिम में है, 'ज़िन्दा दफ़न करने वाली और जिसे दफ़न किया है दोनों जहन्नम में हैं।' एक सहाबिया (रज़ि.) के सवाल पर कि जन्नत में कौन जायेगा? आपने फ़रमाया, 'नबी शहीद और सच्चे और ज़िन्दा दरगोर की हुई।' (ज़ईफ़ : अबू दाऊद, किताबुल जिहाद, बाब फ़ी फ़ज़्लिश्शहादत : 2521, हसना मज्हूलुल हाल राविया है। अहमद : 5/58) ये हदीस़ मुरसल है हज़रत हसन (रह.) से जिसे कुछ मुहद्दिसीन ने कुबूलियत का दर्जा दिया है।

हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) फ़रमाते हैं कि मुश्रिकों के छोटी उ़म्र में मरे हुए बच्चे जन्नती हैं जो उन्हें जहन्नमी कहे वो झूठा है। अल्लाह तआला फ़रमाता है, वइज़ल् मौऊदतु। (इब्ने अबी हातिम)

क़ैस बिन आसिम (रज़ि.) सवाल करते हैं कि ऐ अल्लाह के रसूल! मैंने जाहिलिय्यत के ज़माने में अपनी बच्चियों को ज़िन्दा दबा दिया है मैं क्या करूँ? आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'हर एक के बदले एक ग़ुलाम आज़ाद करो।' उन्होंने अ़र्ज़ किया, हुज़ूर! ग़ुलाम वाला तो मैं हूँ नहीं, अल्बत्ता मेरे पास ऊँट हैं। फ़रमाया, 'हर

एक के बदले एक ऊँट अल्लाह तआला के नाम पर क़ुर्बान करो।' (हसन : मुस्नद बज़्ज़ार : 2280, बैहक़ी : 8/116)

दूसरी रिवायत में है कि मैंने अपनी आठ लड़कियाँ इस तरह ज़िन्दा दबा दी हैं। आप (ﷺ) के फ़रमान में है, 'अगर चाहो तो यूँ करो।' और रिवायत में है कि मैंने बारह-तेरह लड़कियाँ ज़िन्दा दफ़न कर दी हैं। आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'उनकी गिनती के मुताबिक़ गुलाम आज़ाद करो। उन्होंने कहा, बहुत बेहतर मैं यही करूँगा। दूसरे साल वो एक सौ ऊँट लेकर आये और कहने लगे, हुज़ूर! ये मेरी क़ौम का सदक़ा है जो उसके बदले है जो मैंने मुसलमानों के साथ किया। हज़रत अली (रज़ि.) फ़रमाते हैं, हम उन ऊँटों को ले जाते थे और उनका नाम क़ैसिया रख छोड़ा था। (इसकी सनद में क़ैस बिन रबीअ ज़ईफ़ रावी है लिहाज़ा ये सनद ज़ईफ़ है।)

फिर इरशाद है कि नामाए आमाल बाटे जायेंगे। किसी के दाहिने हाथ में और किसी के बायें हाथ में ऐ इब्ने आदम! तू लिखवा रहा है। जो लपेटकर फैलाकर तुझे दिया जायेगा, देख ले कि क्या लिखवा रहा है। आसमान घसीट लिया जायेगा और खींच लिया जायेगा और समेट लिया जायेगा और बर्बाद हो जायेगा। जहन्नम भड़काई जायेगी। अल्लाह तआला के ग़ज़ब और बनी आदम के गुनाहों से उसकी आग तेज़ हो जायेगी, जन्नत जन्नतियों के पास आ जायेगी। जब ये तमाम काम हो चुकेंगे उस वक़्त हर शख़्स जान लेगा कि उसने अपनी दुनिया की ज़िन्दगी में क्या कुछ आमाल किये थे वो सब अमल उसके सामने मौजूद होंगे। जैसे और जगह है, (يَوْمَ تَجِدُ كُلُّ نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ) (सूरह आले इमरान 3 : 30) 'जिस दिन हर शख़्स अपने किए हुए आमाल पा लेगा।' नेक हैं तो सामने देख लेगा और बद हैं तो उस दिन वो आरज़ू करेगा कि काश! उसके और उनके दरम्यान बहुत दूरी होती। और जगह है, (يُنَبَّؤُا الْإِنسَانُ يَوْمَئِذٍ بِمَا قَدَّمَ وَأَخَّرَ ﴿١٣﴾) (सूरह क़ियामा 75 : 13) 'उस दिन इंसान को उसके तमाम अगले-पिछले आमाल से तम्बीह की जायेगी।' हज़रत उमर (रज़ि.) इस सूरत को सुनते रहे और इसको सुनते ही फ़रमाया, अगली तमाम बातें इसीलिये बयान हुई थीं।

***

فَلَا أُقْسِمُ بِالْخُنَّسِ ﴿١٥﴾ الْجَوَارِ الْكُنَّسِ ﴿١٦﴾ وَاللَّيْلِ إِذَا عَسْعَسَ ﴿١٧﴾ وَالصُّبْحِ إِذَا
تَنَفَّسَ ﴿١٨﴾ إِنَّهُ لَقَوْلُ رَسُولٍ كَرِيمٍ ﴿١٩﴾ ذِي قُوَّةٍ عِندَ ذِي الْعَرْشِ مَكِينٍ ﴿٢٠﴾
مُّطَاعٍ ثَمَّ أَمِينٍ ﴿٢١﴾ وَمَا صَاحِبُكُم بِمَجْنُونٍ ﴿٢٢﴾ وَلَقَدْ رَآهُ بِالْأُفُقِ الْمُبِينِ ﴿٢٣﴾
وَمَا هُوَ عَلَى الْغَيْبِ بِضَنِينٍ ﴿٢٤﴾ وَمَا هُوَ بِقَوْلِ شَيْطَانٍ رَّجِيمٍ ﴿٢٥﴾ فَأَيْنَ

تَذْهَبُوْنَ ﴿٢٦﴾ اِنْ هُوَ اِلَّا ذِكْرٌ لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿٢٧﴾ لِمَنْ شَآءَ مِنْكُمْ اَنْ يَّسْتَقِيْمَ ﴿٢٨﴾ وَمَا تَشَآءُوْنَ اِلَّآ اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٢٩﴾

तर्जुमा : "मैं क़सम खाता हूँ पीछे हटने वाले (15) चलने-फिरने वाले, छिपने वाले सितारों की। (16) और रात की जब जाने लगे। (17) और सुबह की जब चमकने लगे। (18) यक़ीनन ये एक बुज़ुर्ग पैग़ाम्बर का कलाम है। (19) जो क़ुव्वत वाला है अर्श वाले अल्लाह तआ़ला के नज़दीक ज़ीइज़्ज़त है। (20) जिसकी आसमानों में इताअ़त की जाती है। (21) और तुम्हारा रफ़ीक़ दीवाना नहीं है। (22) इसने उस फ़रिश्ते को आसमान के खुले किनारे पर देखा भी है। (23) और ये पौशीदा बातों के बतलाने पर बख़ील भी नहीं। (24) और ये क़ुरआन शैतान मर्दूद का कलाम नहीं। (25) फिर तुम कहाँ जा रहे हो? (26) ये तो तमाम दुनिया जहान वालों के लिये नसीहतनामा है। (27) बिल्ख़ुसूस उसके लिये जो तुममें से सीधी राह पर चलना चाहे। (28) और तुम बग़ैर अल्लाह तबारक व तआ़ला के चाहे कुछ नहीं चाह सकते।" (29)

हज़रत मुहम्मद (ﷺ) की फ़ज़ीलत (आयत : 15-29) : हज़रत अ़म्र बिन हरीस़ (रज़ि.) फ़रमाते हैं कि सुबह की नमाज़ में मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को इस सूरत की तिलावत करते हुए सुना। उस नमाज़ में मैं भी मुक़्तदियों में शामिल था। (सहीह मुस्लिम, किताबुस्सलात, बाब अल्क़िराअतु फ़िस्सुब्ह : 456)

ये क़समें सितारों की खाई हैं जो दिन के वक़्त पीछे हट जाते हैं यानी छिप जाते हैं और रात को ज़ाहिर होते हैं। हज़रत अ़ली (रज़ि.) यही फ़रमाते हैं। (अत्तबरी : 24/251)

और भी सहाबा (रज़ि.) व ताबेईन (रह.) वग़ैरह से इसकी यही तफ़्सीर मरवी है। कुछ अइम्मा ने फ़रमाया है, तुलूअ़ के वक़्त सितारों को ख़ुन्नस कहा जाता है और अपनी-अपनी जगह पर उन्हें जवार कहा जाता है। कुछ ने कहा है, मुराद इससे जंगली गाय है। ये भी मरवी है कि मुराद हिरन है। इब्राहीम (रह.) ने हज़रत मुजाहिद (रह.) से इसके मआ़ना पूछे तो हज़रत मुजाहिद (रह.) ने फ़रमाया कि हमने इस बारे में कुछ नहीं सुना, अल्बत्ता लोग कहते हैं कि इससे मुराद सितारे हैं। उन्होंने फिर सवाल किया कि जो तुमने सुना हो वो कहो। तो फ़रमाया, हम सुनते हैं कि इससे मुराद नील गाय हैं जबकि वो अपनी जगह छिप जाये। हज़रत इब्राहीम (रह.) ने फ़रमाया, वो मुझ पर झूठ बांधते हैं जैसे हज़रत अ़ली (रज़ि.) से रिवायत करते हैं कि उन्होंने अस्फ़ल को आ़ला और आ़ला को अस्फ़ल का ज़ामिन बताया।

इमाम इब्ने जरीर (रह.) ने इसमें किसी का तअ़य्युन नहीं किया और फ़रमाया है मुम्किन है कि तीनों चीज़ें मुराद हों यानी सितारे, नील गाय और हिरन। अस्अ़स के मआ़ना हैं अन्धेरी वाली हुई और उठ खड़ी हुई

और लोगों को ढांप लिया और जाने लगी। सुबह की नमाज़ के वक़्त हज़रत अली (रज़ि.) एक मर्तबा निकले कि वित्र के पूछने वाले कहाँ हैं? फिर ये आयत पढ़ी। इमाम इब्ने जरीर (रह.) इसी को पसंद फ़रमाते हैं कि मआना ये हैं कि रात जब जाने लगे क्योंकि इसके मुक़ाबले में है कि जब सुबह चमकने लगे। शाइरों ने अस्अस को अदबर के मआना में बांधा है मेरे नज़दीक ठीक मआना ये हैं कि क़सम है रात की जब वो आये और अन्धेरा फैलाये और क़सम है दिन की जब वो आये और रोशनी फैलाये। जैसे और जगह है, (وَالَّيْلِ إِذَا يَغْشٰى ﴿١﴾ وَالنَّهَارِ إِذَا تَجَلّٰى ﴿٢﴾) (सूरह लैल 92 : 1-2) और जगह है, (وَالضُّحٰى ﴿١﴾ وَالَّيْلِ إِذَا سَجٰى ﴿٢﴾) (सूरह जुहा 93 : 1-2) और जगह है, (فَالِقُ الْإِصْبَاحِ ۚ وَجَعَلَ الَّيْلَ سَكَنًا) (सूरह अन्आम 6 : 96) और भी इस क़िस्म की आयतें बहुत सी हैं। मतलब सब का यकसाँ है। हाँ बेशक इस लफ़्ज़ के मआना पीछे हटने के भी हैं। उलमाए उसूल ने फ़रमाया है कि ये लफ़्ज़ आगे आने और पीछे जाने के दोनों मआना में आता है इस बिना पर ये दोनों मआना ठीक हो सकते हैं, वल्लाहु आलम! और क़सम है सुबह की जब कि वो तुलूअ हो और रोशनी के साथ आये फिर उन क़समों के बाद फ़रमाता है कि ये कुरआन एक बुज़ुर्ग शरीफ़, पाकीज़ा रव, ख़ुश मन्ज़र फ़रिश्ते का कलाम है। यानी हज़रत जिब्रईल (अलै.) का। वो कुव्वत वाले हैं जैसे कि और जगह है, अल्लमहू शदीदुल कुवा, (عَلَّمَهٗ شَدِيْدُ الْقُوٰى ﴿٥﴾ ذُوْ مِرَّةٍ ۭ فَاسْتَوٰى ﴿٦﴾) (सूरह नज्म 53 : 5-6) 'सख़्त मज़बूत और सख़्त पकड़ और फ़ैअल वाला फ़रिश्ता, वो अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल के पास जो अर्श वाला है बुलंद पाया और ज़ी मर्तबा है।' वो नूर के सत्तर परदों में जा सकते हैं और उन्हें आम इजाज़त है उनकी बात वहाँ सुनी जाती है। बरतर फ़रिश्ते उनके फ़रमांबरदार हैं, आसमानों में उनकी सरदारी है कि और फ़रिश्ते उनके ताबेअ फ़रमान हैं वो इस पैग़ाम रसानी पर मुक़र्रर हैं कि अल्लाह तआला का कलाम उसके रसूल तक पहुँचायें ये फ़रिश्ते अल्लाह तआला के अमीन हैं।

मतलब ये है कि फ़रिश्तों में से जो इस रिसालत पर मुक़र्रर हैं वो भी साफ़-पाक हैं और इंसानों में जो रसूल मुक़र्रर हैं वो भी साफ़ और बरतर हैं। इसीलिये इसके बाद फ़रमाया, तुम्हारे साथी हज़रत मुहम्मद (ﷺ) दीवाने नहीं। ये पैग़म्बर (ﷺ) इस फ़रिश्ते को इसकी असली सूरत पर भी देख चुके हैं कि जब कि वो अपने छः सौ परों समेत ज़ाहिर हुए थे। ये वाक़िया बतहा का है और ये पहली मर्तबा का देखना था। आसमान के खुले किनारों पर ये दीदारे जिब्रईल (अलै.) हासिल हुआ था।

इसी का बयान इस आयत में है, (عَلَّمَهٗ شَدِيْدُ الْقُوٰى ﴿٥﴾ ذُوْ مِرَّةٍ ۭ فَاسْتَوٰى ﴿٦﴾ وَهُوَ بِالْاُفُقِ الْاَعْلٰى ﴿٧﴾ ثُمَّ دَنَا فَتَدَلّٰى ﴿٨﴾ فَكَانَ قَابَ قَوْسَيْنِ اَوْ اَدْنٰى ﴿٩﴾ فَاَوْحٰى اِلٰى عَبْدِهٖ مَا اَوْحٰى ﴿١٠﴾) (सूरह नज्म 53 : 5-10) 'उन्हें एक फ़रिश्ता तालीम करता है जो बड़ा ताक़तवर और क़वी है असली सूरत पर आसमान के बुलंद व बाला किनारों पर ज़ाहिर हुआ था, फिर वो नज़दीक आया और बहुत क़रीब आ गया, सिर्फ़ दो कमानों का फ़ासला रह गया, बल्कि उससे भी कम फिर जो वह्य अल्लाह ने अपने बन्दे पर नाज़िल करनी चाही नाज़िल फ़रमाई।' इस आयत की तफ़्सीर सूरह नज्म में गुज़र चुकी है।

बज़ाहिर ये मालूम होता है कि ये सूरत मेअराज से पहले उतरी है इसलिये कि इसमें सिर्फ़ पहली मर्तबा का देखना ज़िक्र हुआ है और दोबारा का देखना इस आयत में मज़्कूर है, (وَلَقَدْ رَاٰهُ نَزْلَةً اُخْرٰی) व 'उन्होंने उसको एक मर्तबा और भी सिदरतुल मुन्तहा के पास देखा है जिसके क़रीब जन्नतुल मअ्वा है जबकि उस दरख़्त सिदरह को एक अजीबो-ग़रीब चीज़ छिपाये हुए थी।' (सूरह नज्म 53 : 13) इस आयत में दूसरी मर्तबा देखने का ज़िक्र है।

ये सूरत मेअराज के वाक़िया के बाद नाज़िल हुई थी बिज़नीन की दूसरी क़िरअत ज़ा से बिज़नीन भी मरवी है। यानी उन पर कोई तोहमत नहीं। और ज़ॉद से जब पढ़ो तो मआना होंगे ये बख़ील नहीं हैं। बल्कि हर शख़्स को जो ग़ैब की बातें आपको अल्लाह तआला की तरफ़ से मालूम कराई जाती हैं ये सिखा दिया करते हैं। ये दोनों क़िरअतें मशहूर हैं और सहीह हैं। पस आपने न तो तब्लीग़े अहकाम में कमी की न तोहमत लगी।

कुरआन की शान : ये कुरआन शैतान मर्दूद का कलाम नहीं, न शैतान इसे ले सके न इसके मतलब की ये चीज़ न इसके क़ाबिल। जैसे और जगह है, (وَمَا تَنَزَّلَتْ بِهِ الشَّيَاطِيْنُ، وَمَا يَنْبَغِيْ لَهُمْ وَمَا يَسْتَطِيْعُوْنَ، اِنَّهُمْ عَنِ السَّمْعِ لَمَعْزُوْلُوْنَ.) (सूरह शुअरा 26 : 21-22) 'न इसे लेकर शैतान उतरे न उन्हें ये लायक़ हैं न इसकी उसे ताक़त है वो तो इसके सुनने से भी महरूम और दूर है।'

फिर फ़रमाया, तुम कहाँ जा रहे हो? यानी कुरआन की हक़्क़ानियत इसकी सदाक़त (सच्चाई) ज़ाहिर हो चुकने के बाद भी तुम क्यों इसे झुटला रहे हो? तुम्हारी अक़्लें कहाँ जाती रहीं?

हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ (रज़ि.) के पास जब बनू हनीफ़ा क़बीले के लोग मुसलमान होकर हाज़िर हुए तो आपने फ़रमाया, मुसैलमा जिसने नुबूवत का झूठा दावा कर रखा है जिसे तुम आज तक मानते रहे उसने जो कलाम घड़ रखा है ज़रा उसे तो सुनाओ! जब उन्होंने सुनाया तो देखा कि निहायत रकीक अल्फ़ाज़ हैं बल्कि बकवासे महज़ है। तो आपने फ़रमाया, तुम्हारी अक़्लें कहाँ जाती रहीं? ज़रा तो सोचो कि एक फ़िज़ूल बकवास को तुम कलामुल्लाह मानते रहे, नामुम्किन है कि ऐसा बेमआना और बेनूर कलामे इलाही कलाम हो।

ये भी मतलब बयान किया गया है कि तुम किताबुल्लाह से और इताअ़ते इलाही से कहाँ भाग रहे हो? फिर फ़रमाया, ये कुरआन तमाम लोगों के लिये पन्द व नसीहत है।

हर एक हिदायत के तालिब को चाहिये कि इस कुरआन पर आमिल बन जाये यही निजात और हिदायत का कफ़ील है। इसके सिवा दूसरे कलाम में हिदायत नहीं। तुम्हारी चाहतें काम नहीं आतीं कि जो चाहे हिदायत पा ले और जो चाहे गुमराह हो जाये बल्कि ये सब कुछ मिनजानिब अल्लाह है वो रब्बुल आलमीन जो चाहे करता है उसी की चाहत चलती है। इससे अगली आयत को सुनकर अबू जहल ने कहा था फिर तो हिदायत व ज़लालत हमारे बस की बात है इसके जवाब में ये आयत उतरी। (अत्तबरी : 24/264)

अल्हम्दुलिल्लाह सूरह तकवीर की तफ़्सीर ख़त्म हुई।

FLOW CHART
तरतीबी नक्श-ए-रब्त

MACRO-STRUCTURE
नज़्मे-जली

सूरह इन्फ़ितार - 82

आयात : 19, मक्की, पैराग्राफ : 5

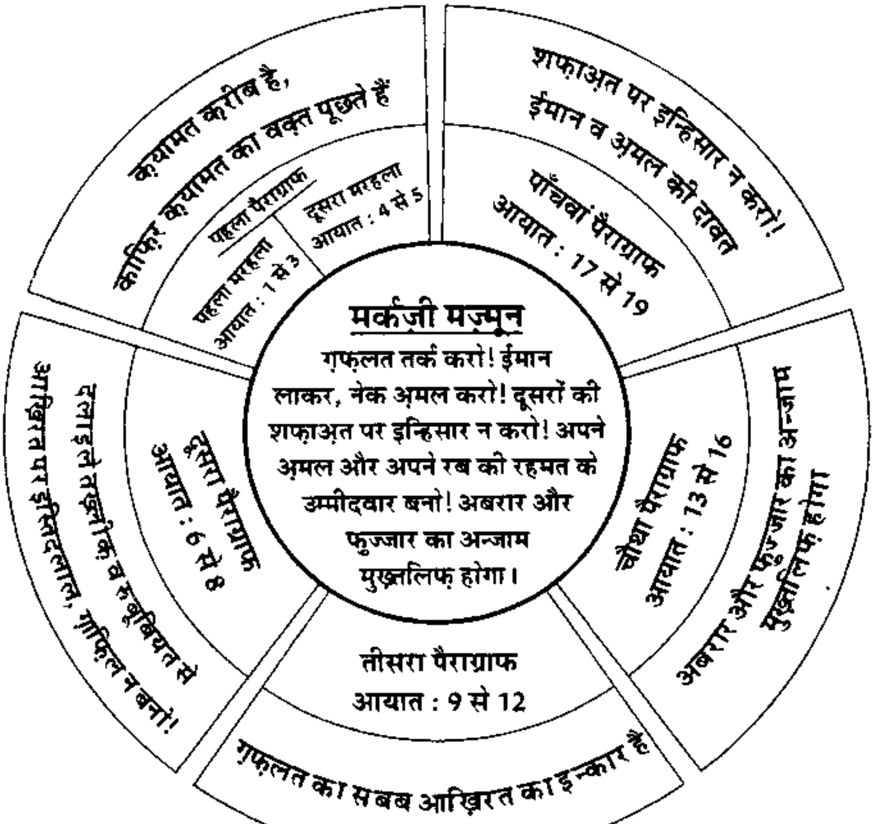

ज़मान-ए-नुज़ूल

सूरह इन्फ़ितार क़ियामे मक्का के पहले दौर (0-3 नबवी) में आप (सल्ल.) पर नाज़िल हुई, जब इस्लाम की दावत ख़ुफ़िया तौर पर दी जा रही थी और जब मनाज़िरे क़यामत से नौमुस्लिम नौजवानों की अज़्हान साज़ी की जा रही थी।

तफ़्सीर सूरह इन्फ़ितार

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

तर्जुमा : "शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है।"

***

तआरुफ़े सूरत : नसाई में है कि हज़रत मुआज़ (रज़ि.) ने इशा की नमाज़ पढ़ाई और उसमें लम्बी क़िरअत पढ़ी तों नबी (ﷺ) ने फ़रमाया, 'मुआज़ क्या ये सूरतें न थीं सब्बिहिस्म रब्बिकल् अअ्ला और वज़्ज़ुहा और इज़स्समाउन्-फ़तरत। (ज़ईफ़ : नसाई, किताबुल इफ़्तिताह, बाब अल्क़िराअतु फ़िल्इशाइल आख़िरह सब्बिहिस्म रब्बिकल् अअ्ला : 998, व सनदहू ज़ईफ़, आमश मुदल्लस व अन्अन) इस हदीस़ की असल बुख़ारी व मुस्लिम में भी है। (सहीह बुख़ारी, किताबुल अज़ान, बाब मन शका इमामहू इज़ा तव्वला : 705, सहीह मुस्लिम : 465)

हाँ इजस्समाउन्-फ़तरत का ज़िक्र सिर्फ़ नसाई की रिवायत में है और वो हदीस़ पहले गुज़र चुकी है जिसमें बयान है कि जो शख़्स क़यामत के दिन को अपनी आँखों से देखना चाहे तो वो इज़श्शम्सु कुव्विरत और इज़स्समाउन्-फ़तरत और इज़स्समाउन्-शक़्क़त पढ़ ले। (हसन : तिर्मिज़ी, किताब तफ़्सीरुल क़ुरआन, बाब व मिन सूरह इज़श्शम्सु कुव्विरत : 3333, अहमद : 2/27)

***

إِذَا السَّمَآءُ انْفَطَرَتْ ۝١ وَإِذَا الْكَوَاكِبُ انْتَثَرَتْ ۝٢ وَإِذَا الْبِحَارُ فُجِّرَتْ ۝٣
وَإِذَا الْقُبُوْرُ بُعْثِرَتْ ۝٤ عَلِمَتْ نَفْسٌ مَّا قَدَّمَتْ وَأَخَّرَتْ ۝٥ يٰٓأَيُّهَا الْإِنْسَانُ
مَا غَرَّكَ بِرَبِّكَ الْكَرِيْمِ ۝٦ الَّذِيْ خَلَقَكَ فَسَوّٰىكَ فَعَدَلَكَ ۝٧ فِيْٓ أَيِّ صُوْرَةٍ مَّا
شَآءَ رَكَّبَكَ ۝٨ كَلَّا بَلْ تُكَذِّبُوْنَ بِالدِّيْنِ ۝٩ وَإِنَّ عَلَيْكُمْ لَحٰفِظِيْنَ ۝١٠ كِرَامًا
كَاتِبِيْنَ ۝١١ يَعْلَمُوْنَ مَا تَفْعَلُوْنَ ۝١٢

तर्जुमा : "जब आसमान फट जायेगा। (1) और जब सितारे झड़ जायेंगे। (2) और जब दरिया बह चलेंगे। (3) और जब क़ब्रें शक़्क़ करके उखाड़ दी जायेगी। (4) उस वक़्त हर शख़्स अपने आगे भेजे हुए और पीछे छोड़े हुए (यानी अगले-पिछले आमाल) को मालूम कर लेगा। (5) ऐ इंसान! तुझे अपने रब्बे करीम से किस चीज़ ने बहकाया। (6) जिस रब ने तुझे पैदा किया, फिर ठीक-ठाक किया, फिर दुरुस्त और बराबर बनाया। (7) जिस सूरत में चाहा तेरी तरकीब की और तुझे ढाला। (8) नहीं-नहीं बल्कि तुम तो जज़ा-सज़ा के दिन को झुठलाते हो। (9) यक़ीनन तुम पर निगेहबान (10) बुज़ुर्ग लिखने वाले मुक़र्रर हैं। (11) जो कुछ तुम करते हो वो जानते हैं।" (12)

क़यामत के मनाज़िर (आयत : 1-12) : अल्लाह तआला फ़रमाता है कि क़यामत के दिन आसमान टुकड़े-टुकड़े हो जायेंगे जैसे फ़रमाया है, (السَّمَآءُ مُنۡفَطِرٌۢ بِهٖ) (सूरह मुज़्ज़म्मिल 73 : 18) 'जिस दिन आसमान फट जायेगा और सितारे सबके सब गिर पड़ेंगे।' और खारी और मीठे समुन्द्र आपस में ख़लत-मलत हो जायेंगे और पानी सूख जायेगा और क़ब्रें फट जायेंगी, उनके शक़्क़ होने के बाद मुर्दे जी उठेंगे। फिर हर शख़्स अपने अगले-पिछले आमाल को बख़ूबी जान लेगा। फिर अल्लाह तआला अपने बन्दों को धमकाता है कि तुम क्यों मग़रूर हो गये हो? ये नहीं कि अल्लाह तआला इसका जवाब तलब करता हो या सिखाता हो। कुछ ने ये भी कहा है बल्कि उन्होंने जवाब दिया है कि करमे इलाही ने ग़ाफ़िल कर रखा है ये मआना बयान करना ग़लत हैं। सहीह मतलब यही है कि ऐ इब्ने आदम! अपने बाअज़्मत रब से तूने क्यों बेपरवाही बरत रखी है? किस चीज़ ने तुझे उसकी नाफ़रमानी पर उकसा रखा है? और क्यों तू उसके मुक़ाबले पर आमादा हो गया है? हदीस़ में है कि क़यामत के दिन अल्लाह तआला फ़रमायेगा, ऐ इब्ने आदम! तुझे मेरी जानिब से किस चीज़ ने मग़रूर कर रखा था। ऐ इब्ने आदम! बता तूने मेरे नबियों को क्या-क्या जवाब दिया? (ला असल लहू फ़िल्मरफ़ूअ व रवाहु अब्दुल्लाह बिन अहमद फ़िस्सुन्नह : 1/258-259, हदीस़ : 475, मिन हदीस़ि अब्दुल्लाह बिन मसऊद, मौक़ूफ़न व सनदहू ज़ईफ़, शरीक बिन अब्दुल्लाह क़ाज़ी मुदल्लस व अन्अन)

रब्बे करीम से क्यों दूर हो : हज़रत उमर (रज़ि.) ने एक शख़्स को इस आयत की तिलावत करते हुए सुना तो फ़रमाया कि इंसानी जहालत ने उसे ग़ाफ़िल बना रखा है। इब्ने उमर और इब्ने अब्बास (रज़ि.) वग़ैरह से भी यही मरवी है। क़तादा (रह.) फ़रमाते हैं, इसका बहकाने वाला शैतान है। हज़रत फ़ुज़ैल बिन अयाज़ (रह.) फ़रमाते हैं कि अगर मुझसे ये सवाल हो तो मैं जवाब दूँ कि तेरे लटकाये हुए पर्दों ने। हज़रत अबू बकर वराक़ (रह.) फ़रमाते हैं, मैं तो कहूँगा कि करीम के करम ने बेफ़िक्र कर दिया। कुछ सुख़न शनास फ़रमाते हैं कि यहाँ पर करीम का लफ़्ज़ लाना गोया जवाब की तरफ़ इशारा सिखाना है लेकिन ये क़ौल कुछ फ़ायदेमन्द नहीं। बल्कि सहीह मतलब ये है कि करम वाले अल्लाह के करम के मुक़ाबले में बद अफ़आल और बुरे आमाल न करने चाहियें। कल्बी और मुक़ातिल (रह.) फ़रमाते हैं कि अस्वद बिन शरीक़ के बारे में ये आयत नाज़िल हुई

है। इस ख़बीस़ ने हुज़ूर (ﷺ) को मारा था और उसी वक़्त चूंकि उस पर कुछ अ़ज़ाब न आया तो वो फूल गया, इस पर ये आयत नाज़िल हुई। फिर फ़रमाता है वो अल्लाह जिसने तुझे पैदा किया, फिर दुरुस्त बनाया, फिर दरम्याना क़दो-क़ामत बख़्शा, ख़ुश शक्ल और ख़ूबसूरत बनाया।

मुस्नद अहमद की हदीस़ में है कि नबी (ﷺ) ने अपनी हथेली में थूका फिर उस पर अपनी उंगली रखकर फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है, ऐ इब्ने आदम! क्या तू मुझे आ़जिज़ कर सकता है? हालांकि मैंने तुझे इस जैसी चीज़ से पैदा किया है फिर ठीक-ठाक फिर सहीह क़ामत बनाया फिर तुझे पहना-ओढ़ा कर चलना-फिरना सिखाया। आख़िरकार तेरा ठिकाना ज़मीन के अंदर है तूने ख़ूब जमा-जत्था की और मेरी राह में देने से रुकता रहा यहाँ तक कि जब दम हलक़ में आ गया तो कहने लगा, मैं सदक़ा करता हूँ भला अब सदक़े का वक़्त कहाँ? (सहीह : इब्ने माजह, किताबुल वसाया, बाब अन्नही अ़निल इम्साक फ़िल्हयात : 2707, अहमद : 4/210)

जिस सूरत में चाहा तरकीब दी यानी बाप की, माँ की, मामू की चाचा की सूरत पर पैदा किया। एक शख़्स से हुज़ूर (ﷺ) ने फ़रमाया, 'तेरे यहाँ क्या बच्चा होगा।' उसने कहा, लड़का या लड़की। फ़रमाया, किसके मुशाबेह होगा? कहा, या मेरे या उसकी माँ के। फ़रमाया, ख़ामोश ऐसा न कह! नुत्फ़ा जब रहम में ठहरता है तो हज़रत आदम (अ़लै.) तक का नसब उसके सामने होता है। फिर आप (ﷺ) ने आयत फ़ी अय्यि सूरतिम्-मा शाअ रक्कबक पढ़ी और फ़रमाया, 'जिस सूरत में उसने चाहा तुझे चलाया।' (ज़ईफ़ुन जिद्दा : मुअ़जम अल्कबीर : 4624, इसकी सनद में मुतह्हिर बिन अल्हैसम मतरूक रावी है।)

ये हदीस़ अगर सहीह होती तो आयत के मआ़ना ज़ाहिर करने के लिये काफ़ी थी लेकिन इसकी इस्नाद साबित नहीं है। मुतह्हिर बिन हैसम जो इसके रावी हैं ये मतरूकुल हदीस़ हैं इन पर और जरह भी है।

बुख़ारी व मुस्लिम की एक और हदीस़ में है कि एक शख़्स ने हज़रत मुहम्मद (ﷺ) के पास आकर कहा, मेरी बीवी के जो बच्चा पैदा हुआ है वो स्याह फ़ाम है। आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'तेरे पास ऊँट भी हैं?' कहा, हाँ। फ़रमाया, किस रंग के हैं? कहा, सुर्ख़ (लाल) रंग के। फ़रमाया, क्या उनमें कोई चितकबरा भी है? कहा, हाँ! फ़रमाया, उस रंग का बच्चा सुर्ख़ नर व मादा के दरम्यान कैसे पैदा हो गया? कहने लगा, शायद ऊपर की नस्ल की तरफ़ कोई रंग खींच ले गई हो। आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'इसी तरह तेरे बच्चे के स्याह रंग होने की वजह भी शायद यही हो।' (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तलाक़, बाब इज़ा उरि-ज़ बिनफ़्यिल वलद : 5305, सहीह मुस्लिम : 1500, अबू दाऊद : 2260, तिर्मिज़ी : 2128, इब्ने माजह : 2002, इब्ने हिब्बान : 4107)

हज़रत इक्रिमा (रह.) फ़रमाते हैं कि अगर चाहे बन्दर की सूरत बना दे अगर चाहे सूअर की। अबू सालेह (रह.) फ़रमाते हैं, अगर चाहे कुत्ते की सूरत बना दे, अगर चाहे गधे की, अगर चाहे सूअर की।

क़तादा (रह.) फ़रमाते हैं, ये सब सच है और अल्लाह तआ़ला सब चीज़ पर क़ादिर है लेकिन वो मालिक हमें बेहतरीन उम्दा और ख़ुश शक्ल और दिल लुभाने वाली पाकीज़ा शक्लें-सूरतें इनायत फ़रमाता है

फिर फ़रमाता है कि उस करीम रब की नाफ़रमानियों पर तुम्हें आमादा करने वाली चीज़ सिर्फ़ यही है कि तुम्हारे दिलों में क़यामत की तकज़ीब है तुम उसका आना ही बरहक़ नहीं जानते इसलिये उससे बेपरवाही बरत रहे हो। तुम यक़ीन मानो कि तुम पर बुज़ुर्ग मुहाफ़िज़ और कातिब फ़रिश्ते मुक़र्रर हैं तुम्हें चाहिये कि उनका लिहाज़ रखो वो तुम्हारे आमाल लिख रहे हैं, तुम्हें बुराई करते हुए शर्म आनी चाहिये। रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़रमाते हैं, 'अल्लाह के ये बुज़ुर्ग फ़रिश्ते तुमसे जनाबत और पाख़ाना की हालत के सिवा किसी वक़्त अलग नहीं होते। तुम उनका एहतिराम करो। गुस्ल के वक़्त भी पर्दा कर लिया करो, दीवार से या ओट से ही सही, ये भी न हो तो अपने किसी साथी को खड़ा कर लिया करो ताकि वही पर्दा हो जाये।' (ज़ईफ़ : तफ़्सीर क़ुर्तुबी : 19/248, ये रिवायत मुरसल यानी ज़ईफ़ है।)

बज़्ज़ार की इस हदीस के अल्फ़ाज़ में कुछ हेर-फेर है और इसमें ये भी है कि अल्लाह तआला तुम्हें नंगा होने से मना करता है। अल्लाह तआला के उन फ़रिश्तों से शरमाओ। उसमें ये भी है कि गुस्ल के वक़्त भी ये फ़रिश्ते दूर हो जाते हैं। (इब्ने अबी हातिम व सनदहू ज़ईफ़ बज़्ज़ार : 317, व सनदहू ज़ईफ़ुन जिद्दा, हफ़्स बिन सुलैमान क़ारी ज़ईफ़ुन जिद्दा, मतरूक मअ इमामिही फ़िल्क़िराअत)

एक और हदीस में है कि जब ये किरामन-कातिबीन बन्दे का रोज़ाना नामाए आमाल अल्लाह तआला के सामने पेश करते हैं तो अगर शुरू और आख़िर में इस्तिग़फ़ार हो तो अल्लाह तआला फ़रमाता है कि उसके दरम्यान की सब ख़तायें मैंने अपने बन्दे की बख़्श दीं।' (ज़ईफ़ : मुस्नद बज़्ज़ार : 3252, तमाम बिन नजीह ज़ईफ़, मज्मउज़्ज़वाइद : 10/208)

बज़्ज़ार की एक और ज़ईफ़ हदीस में है कि अल्लाह तआला के कुछ फ़रिश्ते इंसानों को और उनके आमाल को जानते पहचानते हैं। जब किसी बन्दे को नेकी में मशग़ूल पाते हैं तो आपस में कहते हैं कि आज की रात फ़लाँ शख़्स निजात पा गया, फ़लाह हासिल कर गया और अगर उसके ख़िलाफ़ देखते हैं तो आपस में ज़िक्र करते हैं और कहते हैं कि आज की रात फ़लाँ हलाक हुआ। (ज़ईफ़ुन जिद्दा : मुस्नद बज़्ज़ार : 3214, मज्मउज़्ज़वाइद : 10/226, इसकी सनद में सलाम बिन सलम मतरूक रावी है। अल्मीज़ान : 2/175, 3343)

***

إِنَّ الْأَبْرَارَ لَفِي نَعِيمٍ ﴿١٣﴾ وَإِنَّ الْفُجَّارَ لَفِي جَحِيمٍ ﴿١٤﴾ يَصْلَوْنَهَا يَوْمَ الدِّينِ ﴿١٥﴾ وَمَا
هُمْ عَنْهَا بِغَائِبِينَ ﴿١٦﴾ وَمَا أَدْرَاكَ مَا يَوْمُ الدِّينِ ﴿١٧﴾ ثُمَّ مَا أَدْرَاكَ مَا يَوْمُ
الدِّينِ ﴿١٨﴾ يَوْمَ لَا تَمْلِكُ نَفْسٌ لِنَفْسٍ شَيْئًا ۖ وَالْأَمْرُ يَوْمَئِذٍ لِلَّهِ ﴿١٩﴾

तर्जुमा : "यक़ीनन नेक लोग (जन्नत के ऐश व आराम और) नेमतों में होंगे। (13) और यक़ीनन बदकार लोग दोज़ख़ में होंगे। (14) बदले वाले दिन उसमें जायेंगे। (15) ये लोग इससे कभी बाहर न निकलेंगे। (16) तुझे कुछ ख़बर भी है कि बदले का दिन क्या है? (17) मैं फिर कहता हूँ कि तुझे क्या मालूम कि जज़ा और सज़ा का दिन क्या है? (18) (वो है) जिस दिन कोई शख़्स किसी शख़्स के लिये किसी चीज़ का मुख़्तार न होगा और तमाम तर अहकाम और फ़रमान उस रोज़ अल्लाह के ही होंगे।" (19)

आयत 13-19 : जो अल्लाह तआला के इताअत गुज़ार फ़रमांबरदार हैं, गुनाहों से दूर रहते हैं, उन्हें अल्लाह तआला जन्नत की ख़ुशख़बरी देता है। हदीस़ में है उन्हें 'अबरार' इसलिये कहा जाता है कि ये अपने माँ-बाप के फ़रमांबरदार थे और अपनी औलाद के साथ नेक सुलूक करते थे। बदकार लोग हमेशगी वाले अ़ज़ाब में पड़े रहेंगे, क़यामत वाले दिन जो हिसाब का और बदले का दिन है उनका दाख़िला उसमें होगा, एक साअ़त (घड़ी) भी उन पर से अ़ज़ाब हल्का न होगा, न मौत आयेगी न राहत मिलेगी, न एक ज़रा सी देर उससे अलग होंगे। फिर क़यामत की बड़ाई और उस दिन की हौलनाकी ज़ाहिर करने के लिये दो-दो बार फ़रमाया कि तुम्हें किस चीज़ ने मालूम करा लिया कि वो दिन कैसा है? फिर ख़ुद ही बतलाया कि उस दिन कोई किसी को कुछ भी नफ़ा न पहुँचा सकेगा, न अ़ज़ाबों से निजात दिलवा सकेगा, हाँ ये और बात है कि किसी की सिफ़ारिश की इजाज़त ख़ुद अल्लाह तबारक व तआ़ला अ़ता फ़रमायेगा।

इस मौक़े पर ये हदीस़ वारिद करनी बिल्कुल मुनासिब है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'ऐ बनू हाशिम! अपनी जानों को जहन्नम से बचाने के लिये नेक आमाल की तैयारियाँ कर लो। मैं तुम्हें उस दिन अल्लाह के अ़ज़ाब से बचाने का इख़्तियार नहीं रखता।' (सहीह मुस्लिम, किताबुल ईमान, बाब फ़ी क़ौलिही तआला व अन्ज़िर अशीरतकल अक़रबीन : 204)

ये हदीस़ सूरह शुअ़रा की तफ़्सीर के आख़िर में गुज़र चुकी है। यहाँ ये भी फ़रमाया कि उस दिन अम्र महज़ अल्लाह ही का होगा, जैसे और जगह है, (لِمَنِ الْمُلْكُ الْيَوْمَ ۖ لِلَّهِ الْوَاحِدِ الْقَهَّارِ ﴿١٦﴾) (सूरह मोमिन 40 : 16) और जगह इरशाद है, (الْمُلْكُ يَوْمَئِذٍ الْحَقُّ لِلرَّحْمَٰنِ ۚ) (सूरह फ़ुरक़ान 25 : 26) और फ़रमाया, (مَالِكِ يَوْمِ الدِّينِ ﴿٣﴾) (सूरह फ़ातिहा 1 : 3) मतलब सब का यही है कि मुल्क व मिल्कियत उस दिन सिर्फ़ अल्लाह वाहिद क़ह्हार व रहमान की ही होगी, गो आज भी उसकी मिल्कियत है वो ही तन्हा मालिक है, उसी का हुक्म चलता है, मगर वहाँ तो कोई ज़ाहिरदारी हुकूमत और मिल्कियत और अम्र वाला भी न होगा।

सूरह इन्फ़ितार की तफ़्सीर ख़त्म हुई फ़ल्हम्दुलिल्लाह!

***

FLOW CHART
तरतीबी नक्श-ए-रब्त

MACRO-STRUCTURE
नज़्मे-जली

सूरह मुतफ़्फ़िफ़ीन - 83

आयात : 36, मक्की, पैराग्राफ : 4

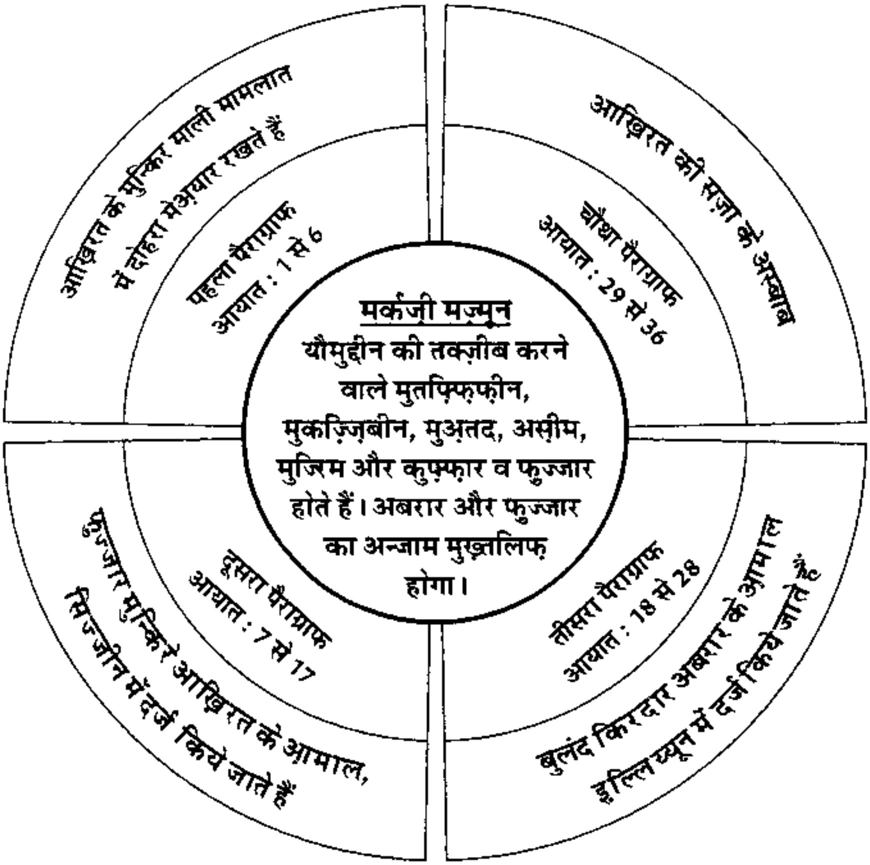

ज़मान-ए-नुज़ूल

सूरह मुतफ़्फ़िफ़ीन ऐलाने आ़म के बाद क़ियामे मक्का के दूसरे दौर (4-5 नबवी) में नाज़िल हुई, जब आप (सल्ल.) के ख़िलाफ़ तौहीन व तज़्लील और इस्तिहज़ा का बाज़ार गर्म था।

तफ़्सीर सूरह मुतफ़्फ़िफ़ीन

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ○

तर्जुमा : "शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है।"

***

وَيۡلٌ لِّلۡمُطَفِّفِيۡنَ ① الَّذِيۡنَ اِذَا اكۡتَالُوۡا عَلَى النَّاسِ يَسۡتَوۡفُوۡنَ ② وَاِذَا كَالُوۡهُمۡ اَوْ وَّزَنُوۡهُمۡ يُخۡسِرُوۡنَ ③ اَلَا يَظُنُّ اُولٰٓئِكَ اَنَّهُمۡ مَّبۡعُوۡثُوۡنَ ④ لِيَوۡمٍ عَظِيۡمٍ ⑤ يَّوۡمَ يَقُوۡمُ النَّاسُ لِرَبِّ الۡعٰلَمِيۡنَ ⑥

तर्जुमा : "बड़ी ख़राबी है नाप-तौल में कमी करने वालों की। (1) कि जब लोगों से नाप कर लेते हैं तो पूरा-पूरा लेते हैं। (2) और जब उन्हें नाप कर या तौल कर देते हैं तो कम देते हैं। (3) क्या उन्हें अपने मरने के बाद जी उठने का यक़ीन नहीं। (4) उस बड़े भारी दिन (5) जिस दिन सब लोग अल्लाह रब्बुल आलमीन के सामने खड़े होंगे।" (6)

नाप-तौल में कमी करने वालों के लिये हलाकत (आयत : 1-6) : नसाई और इब्ने माजह में है हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) फ़रमाते हैं कि जब नबी (ﷺ) मदीना में तशरीफ़ लाये उस वक़्त अहले मदीना नाप-तौल के ऐतिबार से बहुत बुरे थे जब ये आयत उतरी फिर उन्होंने नाप-तौल बहुत दुरुस्त कर ली। (हसन : इब्ने माजह, किताबुत्तिजारात, बाब अत्तौफ़ी फ़िल्कैलि वल्वज़न : 2223, मुअजम अल्कबीर : 2041, हाकिम : 2/33)

इब्ने अबी हातिम में है कि हज़रत बिलाल बिन तलक़ (रह.) ने एक मर्तबा हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) से कहा कि मक्के-मदीने वाले बहुत ही उम्दा नाप-तौल रखते हैं। आपने फ़रमाया, क्यों न रखते, जबकि अल्लाह तआला का फ़रमान है, वैलुल्-लिल्मुतफ़्फ़िफ़ीन अल्अख़ है। पस तत्फ़ीफ़ से मुराद नाप-तौल की कमी है ख़्वाह इस सूरत में कि औरों से लेते वक़्त ज़्यादा ले लिया और देते वक़्त कम दिया, इसीलिये उन्हें धमकाया कि ये नुक़सान उठाने वाले और हलाक होने वाले हैं कि जब अपना हक़ लें तो पूरा लें बल्कि ज़्यादा ले लें और दूसरों को देने बैठे तो कम दें। ठीक ये है कि कालू और वज़नू को मुतअद्दी मानें और हुम को महल्लन

मन्सूब कहें, गो कुछ ने इसे ज़मीरे मुअक्कद माना है। जो कालू और वज़नू की पौशीदा ज़मीर की ताकीद के लिये है और मफ़ऊल महज़ूफ़ माना है जिस पर दलालते कलाम मौजूद है, दोनों तरह मतलब क़रीब-क़रीब एक ही है। क़ुरआन करीम ने नाप-तौल दुरुस्त करने का हुक्म इस आयत में भी दिया है (وَاَوْفُوا الْكَيْلَ اِذَا كِلْتُمْ وَزِنُوْا بِالْقِسْطَاسِ الْمُسْتَقِيْمِ) (सूरह बनी इस्राईल 17 : 35) 'जब नापो तो नाप पूरा करो और वज़न भी सीधे तराज़ू से तौल कर दिया करो।' और जगह हुक्म है, (وَاَوْفُوا الْكَيْلَ وَالْمِيْزَانَ بِالْقِسْطِ) यानी नाप-तौल इंसाफ़ के साथ बराबर कर दिया करो, हम किसी को उसकी ताक़त से ज़्यादा तकलीफ़ नहीं देते। (सूरह अन्आम 6 : 152)

और जगह फ़रमाया, (وَاَقِيْمُوا الْوَزْنَ بِالْقِسْطِ وَلَا تُخْسِرُوا الْمِيْزَانَ) (सूरह रहमान 55 : 9) 'तौल को क़ायम रखो और मीज़ान को घटाओ नहीं।'

हज़रत शुऐब (अलै.) की क़ौम को इस बद आदत की वजह से अल्लाह तआला ने ग़ारत व बर्बाद कर दिया। यहाँ भी अल्लाह तआला डरा रहा है कि लोगों के हक़ मारने वाले क्या क़यामत के दिन से नहीं डरते? जिस दिन ये उस ज़ात के सामने खड़े किये जायेंगे, जिस पर न तो कोई पौशीदा बात पौशीदा है न ज़ाहिर बात। वो दिन भी निहायत हौलनाक व ख़तरनाक होगा, बड़ी घबराहट और परेशानी वाला दिन होगा उस दिन ये नुक़सान रसाँ लोग जहन्नम की भड़कती हुई आग में दाख़िल होंगे, जिस दिन लोग अल्लाह के सामने खड़े होंगे, इस हालत में कि नंगे पैर होंगे और नंगे बदन होंगे और बेख़त्ना होंगे, वो जगह भी निहायत तंग व तारीक होगी और मैदान आफ़ात व बलियात से पुर होगा और वो मसाइब नाज़िल हो रहे होंगे कि दिल परेशान होंगे हवास बिगड़े हुए होंगे, होश जाता रहा होगा। सहीह हदीस़ में है, 'आधे-आधे कानों तक पसीना पहुँच गया होगा।' (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरह वैलुल्लिल मुतफ़्फ़िफ़ीन : 4938, सहीह मुस्लिम : 2862, तिर्मिज़ी : 2422, इब्ने माजह : 4278)

मुस्नद अहमद की हदीस़ में है, 'उस दिन रहमान अज़्ज़ व जल्ल की अज़्मत के सामने सब खड़े कपकपा रहे होंगे।' (ज़ईफ़ : अहमद : 2/31, मुहम्मद बिन इस्हाक़ बिन यसार मुदल्लस व अ़न्अ़न व हदीसि बुख़ारी : 4938, सहीह मुस्लिम : 2862, युग़नी अ़न हदीस़)

और हदीस़ में है, 'क़यामत के दिन बन्दों से सूरज इस क़द्र क़रीब हो जायेगा कि एक या दो नेज़े के बराबर ऊँचा होगा और सख़्त तेज़ होगा। हर शख़्स अपने-अपने आमाल के मुताबिक़ अपने पसीने में डूबा होगा, कुछ की ऐड़ियों तक पसीना होगा, कुछ के घुटनों तक, कुछ की कमर तक, कुछ को तो उनका पसीना लगाम बना हुआ होगा।' (सहीह मुस्लिम, किताबुल जन्नत, बाब फ़ी यौमिल क़ियामह : 2864, तिर्मिज़ी : 2421, अहमद : 6/3, इब्ने हिब्बान : 7330)

और हदीस़ में है कि धूप इस क़द्र तेज़ होगी कि खोपड़ी भुना उठेगी और इस तरह उसमें जोश उठने लगेगा जिस तरह हण्डिया में खुदबुदियाँ आती हैं। (हसन : अहमद : 5/254)

और रिवायत में है कि हुज़ूर (ﷺ) ने अपने मुँह पर अपनी उंगलियाँ रखकर बताया कि इस तरह पसीने की लगाम चढ़ी हुई होगी। फिर आपने हाथ से इशारा करके बताया कि कुछ बिल्कुल डूबे हुए होंगे। (ज़ईफ़ : अहमद : 4/157, हाकिम : 4/571, इब्ने हिब्बान : 7329, व सनदुहू सहीह दूसरा नुस्ख़ा : 7285)

दूसरी हदीस़ में है, सत्तर साल तक बग़ैर बोले-चाले खड़े रहेंगे। ये भी कहा गया है कि तीन सौ साल तक खड़े रहेंगे और ये भी कहा गया है कि चालीस हज़ार साल तक खड़े रहेंगे और दस हज़ार साल में फ़ैसला किया जायेगा।

सहीह मुस्लिम में हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से मरफ़ूअन मरवी है, 'उस दिन में जिसकी मिक़्दार पचास हज़ार साल की होगी।' (सहीह मुस्लिम, किताबुज़्ज़कात, बाब इस्मु मानिइज़्ज़कात : 987)

इब्ने अबी हातिम की हदीस़ में है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने बशीर ग़िफ़ारी (रज़ि.) से फ़रमाया, 'तू क्या करेगा? जिस दिन लोग अल्लाह रब्बुल आलमीन के सामने तीन सौ साल तक खड़े रहेंगे, न तो कोई ख़बर आसमान से आयेगी, न कोई हुक्म किया जायेगा।' हज़रत बशीर (रज़ि.) कहने लगे, अल्लाह ही मददगार है। आपने फ़रमाया, 'सुनो! जब बिस्तर पर जाओ तो अल्लाह तआला से क़यामत के दिन की तकलीफ़ों से और हिसाब की बुराई से पनाह माँग लिया करो।' (ज़ईफ़ : अत्तबरी : 24/280, इब्ने अबी हातिम, वसनदहू ज़ईफ़, अब्दुस्सलाम बिन अज्लान ज़अअफ़हू राजेह)

सुनन अबू दाऊद में है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) क़यामत के दिन के खड़े होने की जगह की तंगी से पनाह माँगा करते थे। (हसन : अबू दाऊद, किताबुस्सलात, बाब मा यस्तफ़्तिहु बिहिस्सलातु मिनद्दुआ : 766, नसाई : 1618, इब्ने माजह : 1356, व सनदुहू हसन, अहमद : 6/143, इब्ने हिब्बान : 2602)

हज़रत इब्ने मसऊद (रज़ि.) से रिवायत है कि चालीस साल तक लोग सर ऊँचा किये खड़े रहेंगे, कोई बोलेगा नहीं, नेक व बद को पसीने की लगामें चढ़ी हुई होंगी। (अत्तबरी : 24/281)

इब्ने उमर (रज़ि.) फ़रमाते हैं, सौ साल तक खड़े रहेंगे। (अत्तबरी : 24/281)

अबू दाऊद, नसाई, इब्ने माजह में है कि हुज़ूर (ﷺ) जब रात को उठकर तहज्जुद की नमाज़ शुरू करते तो दस मर्तबा अल्लाहु अकबर कहते, दस मर्तबा अल्हम्दुलिल्लाह कहते, दस मर्तबा सुब्हानअल्लाह कहते, दस मर्तबा अस्तग़फ़िरुल्लाह कहते, फिर कहते, अल्लाहुम्मग़िफ़रली वहदिनी वरज़ुक़नी व आफ़िनी ऐ अल्लाह! मुझे बख़्श, मुझे हिदायत दे, मुझे रोज़ियाँ दे और आफ़ियत इनायत फ़रमा। फिर अल्लाह तआला से क़यामत के दिन के मक़ाम की तंगी से पनाह माँगते। (हसन : अबू दाऊद, किताबुस्सलात, बाब मा यस्तफ़्तिहु बिहिस्सलातु मिनद्दुआ : 722, नसाई : 1618, इब्ने माजह : 1356, व सनदुहू हसन, अहमद : 6/143, इब्ने हिब्बान : 2602)

كَلَّآ اِنَّ كِتٰبَ الْفُجَّارِ لَفِيْ سِجِّيْنٍ ۝٧ وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا سِجِّيْنٌ ۝٨ كِتٰبٌ مَّرْقُوْمٌ ۝٩
وَيْلٌ يَّوْمَىِٕذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ۝١٠ الَّذِيْنَ يُكَذِّبُوْنَ بِيَوْمِ الدِّيْنِ ۝١١ وَمَا يُكَذِّبُ
بِهٖٓ اِلَّا كُلُّ مُعْتَدٍ اَثِيْمٍ ۝١٢ اِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِ اٰيٰتُنَا قَالَ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ۝١٣
كَلَّا بَلْ ۜ رَانَ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ مَّا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ۝١٤ كَلَّآ اِنَّهُمْ عَنْ رَّبِّهِمْ يَوْمَىِٕذٍ
لَّمَحْجُوْبُوْنَ ۝١٥ ثُمَّ اِنَّهُمْ لَصَالُوا الْجَحِيْمِ ۝١٦ ثُمَّ يُقَالُ هٰذَا الَّذِيْ كُنْتُمْ بِهٖ
تُكَذِّبُوْنَ ۝١٧

तर्जुमा : "यक़ीनन बदकारों का नामाए आमाल सिज्जीन में है। (7) तुझे कौन बताये कि सिज्जीन क्या है। (8) ये तो किताब में लिखा जा चुका है। (9) उस दिन झुठलाने वालों की बड़ी ख़राबी है। (10) जो जज़ा-सज़ा के दिन को झुठलाते रहे। (11) उसे सिर्फ़ वही झुठलाता है जो हद से आगे निकल जाने वाला और गुनहगार होता है। (12) जब उसके सामने हमारी आयतें पढ़ी जाती हैं तो कह देता है कि ये अगलों के अफ़साने हैं। (13) यूँ नहीं बल्कि उनके दिलों पर उनके आमाल की वजह से ज़ंग चढ़ गया है। (14) यही नहीं ये लोग उस दिन दीदारे बारी तआला से महरूम रहेंगे। (15) फिर ये लोग बिल्यक़ीन जहन्नम में झोंके जायेंगे। (16) फिर कह दिया जायेगा कि यही है वो जिसे तुम झुठलाते रहे।" (17)

सिज्जीन गुनहगारों का नामाए आमाल है (आयत : 7-17) : मतलब ये है कि बुरे लोगों का ठिकाना सिज्जीन है। ये लफ़्ज़ फ़िइ़लुन के वज़न सिज्नुन से माख़ूज़ है सिज्न कहते हैं लुग़तन तंगी को ज़िय्यिकुन शिर्रीबुन ख़िम्मीरुन सिक्कीरुन वग़ैरह की तरह ये लफ़्ज़ भी सिज्जीन है। फिर इसकी मज़ीद बुराइयाँ बयान करने के लिये फ़रमाया कि तुम्हें इसकी हक़ीक़त मालूम नहीं वो अल्मनाक और हमेशा के दर्द-दुख की जगह है। मरवी है कि ये जगह सातों ज़मीनों के नीचे है। हज़रत बराअ बिन आज़िब (रज़ि.) की एक मुतव्वल (विस्तारपूर्वक) हदीस़ में ये गुज़र चुका है कि काफ़िर की रूह के बारे में जनाब बारी तआला का इरशाद होता है कि इसकी किताब सिज्जीन में लिख लो। (इसकी तख़रीज सूरह आराफ़ आयत नम्बर 40 के तहत गुज़र चुकी है।)

और सिज्जीन सातवीं ज़मीन के नीचे है। कहा गया है कि ये सातवीं ज़मीन के नीचे सब्ज़ रंग की एक चट्टान है और कहा गया है कि जहन्नम में एक गढ़ा है।

इब्ने जरीर की एक ग़रीब मुन्कर और ग़ैर सहीह हदीस़ में है कि फ़लक़ जहन्नम का एक मुँह बंद किया हुआ कुंआँ है और सिज्जीन खुले मुँह वाला गढ़ा है। (अत्तबरी : 24/284, व सनदहू ज़ईफ़)

सहीह बात ये है कि इसके मआना हैं तंग जगह जेलख़ाना के नीचे की मख़्लूक़ में तंगी है और ऊपर की मख़्लूक़ में कुशादगी। आसमानों में हर ऊपर वाला आसमान नीचे वाले आसमान से कुशादा है और ज़मीनों में हर नीचे की ज़मीन ऊपर की ज़मीन से तंग है यहाँ तक कि बिल्कुल नीचे की तह बहुत तंग है और सबसे ज़्यादा तंग जगह सातवीं ज़मीन का वसती मर्कज़ है। चूंकि काफ़िरों के लौटने की जगह जहन्नम है और वो सबसे नीचे है और जगह है, (ثُمَّ رَدَدْنٰهُ اَسْفَلَ سٰفِلِيْنَ ۝ اِلَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَلَهُمْ اَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُوْنٍ ۝) सुम्-म रदद्ना अस्फ़-ल साफ़िलीन, इल्लल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति (सूरह तीन 95 : 5-6) 'फिर हमने उसे नीचों का नीच कर दिया, हाँ जो ईमान वाले नेक आ़माल वाले हैं।' ग़र्ज़ सिज्जीन एक तंग और तह की जगह है। जैसे क़ुरआन करीम ने और जगह फ़रमाया है, (وَاِذَآ اُلْقُوْا مِنْهَا مَكَانًا ضَيِّقًا مُّقَرَّنِيْنَ دَعَوْا هُنَالِكَ ثُبُوْرًا ۝) (सूरह फ़ुरक़ान 25 : 13) 'जब वो जहन्नम की किसी तंग जगह में हाथ पाँव जकड़ कर डाल दिये जायेंगे तो वहाँ मौत ही मौत पुकारेंगे।'

किताबुम्-मरक़ूम ये सिज्जीन की तफ़्सीर नहीं बल्कि ये तफ़्सीर है उसकी जो उनके लिये लिखा जा चुका है कि आख़िरकार जहन्नम में पहुँचेंगे। उनका नतीजा ये लिखा जा चुका है और इससे फ़राग़त हासिल कर ली गई है, न इसमें अब कुछ ज़्यादती होगी न कमी। तो फ़रमाया उनका अन्जाम सिज्जीन होना हमारी किताब में पहले से ही लिखा जा चुका है। उन झुठलाने वालों की उस दिन ख़राबी होगी। उन्हें जहन्नम का क़ैदख़ाना और रुस्वाई वाले अल्मनाक अ़ज़ाब होंगे। वैलुन की मुकम्मल तफ़्सीर इससे पहले गुज़र चुकी है। ख़ुलासा मतलब ये है कि उनकी हलाकी, बर्बादी और ख़राबी है जैसे कहा जाता है वैलुल्-लिफ़ुनानिन। मुस्नद और सुनन की हदीस़ में है, 'वैल है उस शख़्स के लिये जो कोई झूठी बात कह कर लोगों को हँसाना चाहे उसे वैल है उसे वैल है।' (हसन : अबू दाऊद, किताबुल अदब, बाब अत्तशदीदु फ़िल्किज़्ब : 4990, तिर्मिज़ी : 2315, अहमद : 5/605)

फिर उन झुठलाने वालों बदकार काफ़िरों की मज़ीद तशरीह की और फ़रमाया, ये वो लोग हैं जो रोज़े जज़ा को नहीं मानते उसे ख़िलाफ़े अ़क़्ल कहकर उसके वाक़ेअ़ होने को मुहाल जानते हैं। फिर फ़रमाया कि क़यामत का झुठलाना उन्ही लोगों का काम है जो अपने कामों में हद से गुज़र जायें, हराम काम करने लगें या जाइज़ कामों में हद से बढ़ जायें। इसी तरह अपने अक़्वाल में गुनहगार हों, झूठ बोलें, वादा ख़िलाफ़ी करें, गालियाँ बकें वग़ैरह।

ये वो लोग हैं कि हमारी आयतों को सुनकर उन्हें झुठलाते हैं। बदगुमानी करते हैं और कह गुज़रते हैं कि

पहली किताबों से जमा-जत्था कर ली है। जैसे और जगह फ़रमाया, (وَإِذَا قِيلَ لَهُم مَّاذَا أَنزَلَ رَبُّكُمْ قَالُوٓا أَسَٰطِيرُ ٱلْأَوَّلِينَ) (सूरह नहल 16 : 24) 'जब उन्हें कहा जाता है कि तुम्हारे रब ने क्या कुछ नाज़िल फ़रमाया तो कहते हैं, अगलों के अफ़साने हैं।' और जगह है, (وَقَالُوٓا أَسَٰطِيرُ ٱلْأَوَّلِينَ ٱكْتَتَبَهَا فَهِىَ تُمْلَىٰ عَلَيْهِ بُكْرَةً وَأَصِيلًا) (सूरह फ़ुरकान 25 : 5) 'ये कहते हैं कि अगलों के क़िस्से हैं जो उसे सुबह शाम लिखवाये जा रहे हैं।' अल्लाह तआला उन्हें जवाब में फ़रमाता है कि वाक़िया उनके क़ौल और उनके ख़्याल के मुताबिक़ नहीं बल्कि दरअसल ये क़ुरआन कलामे इलाही है उसकी वह्य है जो उसने अपने बन्दे पर नाज़िल की है।

हाँ उनके दिलों पर उनके बद आमाल ने पर्दे डाल दिये हैं। गुनाहों और ख़ताओं की कसरत ने उनके दिलों को ज़ंग आलूद कर दिया है। काफ़िरों के दिलों पर रेन होता है और नेककार लोगों के दिलों पर ग़ैम होता है। तिर्मिज़ी, नसाई, इब्ने माजह वग़ैरह में है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़रमाते हैं, 'बन्दा जब गुनाह करता है तो उसके दिल पर एक स्याह नुक़्ता हो जाता है अगर तौबा कर लेता है तो उसकी सफ़ाई हो जाती है और अगर गुनाह करता है तो वो स्याही फैलती जाती है। इसी का बयान कल्ला बल्, रा-न अ़ला क़ुलूबिहिम्-मा कानू यक्सिबून में है।' (हसन : तिर्मिज़ी, किताब तफ़्सीरुल क़ुरआन, बाब व मिन सूरति वैलुल्-लिल्मुतफ़्फ़िफ़ीन : 3334, इब्ने माजह : 4244)

नसाई के अल्फ़ाज़ में कुछ इख़्तिलाफ़ भी है। मुस्नद अहमद में भी ये हदीस है। (हसन : अहमद : 2/297, इब्ने माजह : 4244)

हज़रत हसन बसरी (रह.) वग़ैरह का फ़रमान है कि गुनाहों पर गुनाह करने से दिल अन्धा हो जाता है और फिर मर जाता है। फिर फ़रमाया कि ये लोग उन अ़ज़ाबों में मुब्तला होकर दीदारे बारी तआला से भी महरूम और महजूब कर दिये जायेंगे।

फ़ायदा : हज़रत इमाम शाफ़ई (रह.) फ़रमाते हैं, इस आयत में दलील है कि मोमिन क़यामत के दिन दीदारे बारी तआला से मुशर्रफ़ होंगे। इमाम साहब (रह.) का ये फ़रमान बिल्कुल दुरुस्त है और आयत का साफ़ मफ़्हूम यही है और दूसरी जगह खुले अल्फ़ाज़ में भी ये बयान मौजूद है। फ़रमान है, (وُجُوهٌ يَوْمَئِذٍ نَّاضِرَةٌ ۝٢٢ إِلَىٰ رَبِّهَا نَاظِرَةٌ ۝٢٣) (सूरह क़ियामह 75 : 22-23) 'उस दिन बहुत से चेहरे तरो-ताज़ा होंगे और अपने रब को देख रहे होंगे।' सहीह और मुतवातिर हदीसों से भी ये साबित है कि ईमानदार क़यामत वाले दिन अपने रब्बे अ़ज़्ज़ व जल्ल को अपनी आँखों से क़यामत के मैदान में और जन्नत के नफ़ीस बाग़ीचों में देखेंगे। हज़रत हसन (रह.) फ़रमाते हैं कि हिजाब हट जायेंगे और मोमिन अपने रब को देखेंगे और काफ़िरों को पर्दों के पीछे कर दिया जायेगा। अल्बत्ता मोमिन हर सुबह व शाम परवरदिगारे आ़लम का दीदार हासिल करेंगे या उसी जैसा और कलाम है। फिर फ़रमाता है कि न सिर्फ़ अल्लाह से ही ये महरूम रहेंगे बल्कि ये लोग जहन्नम में झोंक दिये जायेंगे और उन्हें हिक़ारत, ज़िल्लत और डांट-डपट के तौर पर गुस्से के साथ कहा जायेगा कि यही है वो जिसे तुम झुठलाते रहे।

***

كَلَّآ اِنَّ كِتٰبَ الْاَبْرَارِ لَفِيْ عِلِّيِّيْنَ ﴿١٨﴾ وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا عِلِّيُّوْنَ ﴿١٩﴾ كِتٰبٌ مَّرْقُوْمٌ
﴿٢٠﴾ يَّشْهَدُهُ الْمُقَرَّبُوْنَ ﴿٢١﴾ اِنَّ الْاَبْرَارَ لَفِيْ نَعِيْمٍ ﴿٢٢﴾ عَلَى الْاَرَآئِكِ يَنْظُرُوْنَ ﴿٢٣﴾
تَعْرِفُ فِيْ وُجُوْهِهِمْ نَضْرَةَ النَّعِيْمِ ﴿٢٤﴾ يُسْقَوْنَ مِنْ رَّحِيْقٍ مَّخْتُوْمٍ ﴿٢٥﴾ خِتٰمُهٗ
مِسْكٌ ؕ وَفِيْ ذٰلِكَ فَلْيَتَنَافَسِ الْمُتَنَافِسُوْنَ ﴿٢٦﴾ وَمِزَاجُهٗ مِنْ تَسْنِيْمٍ ﴿٢٧﴾ عَيْنًا
يَّشْرَبُ بِهَا الْمُقَرَّبُوْنَ ﴿٢٨﴾

तर्जुमा : ''यक़ीनन-यक़ीनन नेकोकारों का नामाए आमाल इल्लिय्यीन में है। (18) तुझे कौन बताये कि इल्लिय्यीन क्या है? (19) वो तो किताब में लिखा जा चुका है। (20) उसके पास मुक़र्रब फ़रिश्ते हाज़िर होते हैं। (21) नेक लोग बड़ी नेमतों में होंगे। (22) मसहरियों पर बैठे देख रहे होंगे। (23) तू उनके चेहरों से ही नेमत की तरो-ताज़गी पहचान लेगा। (24) ये लोग सर बमुहर ख़ालिस शराब पिलाये जायेंगे। (25) जिस पर मुश्क की मुहर होगी। रग़बत करने वालों को इसी की रग़बत करनी चाहिये। (26) उसकी आमेज़िश तस्नीम होगी। (27) यानी वो चश्मा जिसका पानी मुक़र्रब लोग पियेंगे।'' (28)

नेकोकारों का नामा-ए-आमाल (आयत : 18-28) : बदकारों का हश्र बयान करने के बाद, अब नेक लोगों का बयान हो रहा है कि उनका ठिकाना इल्लिय्यीन है जो कि सिज्जीन के बिल्कुल बरअक्स (उल्टा) है। हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने हज़रत कअब (रह.) से सिज्जीन का सवाल किया, तो उन्होंने फ़रमाया, वो सातवीं ज़मीन है और उसमें काफ़िरों की रूहें हैं और इल्लिय्यीन के सवाल के जवाब में फ़रमाया, ये सातवाँ आसमान है और इसमें मोमिन की रूहें हैं। (अत्तबरी : 24/291) इब्ने अब्बास (रज़ि.) फ़रमाते हैं, मुराद इससे जन्नत है। (अत्तबरी : 24/291) औफ़ी (रह.) आपसे रिवायत करते हैं कि उनके आमाल अल्लाह तआला के नज़दीक आसमान में हैं। क़तादा (रह.) फ़रमाते हैं, ये अर्श का दाहिना पाया है और लोग कहते हैं ये सिदरतुल मुन्तहा के पास है। (अत्तबरी : 24/292)

ज़ाहिर ये है कि लफ़्ज़ उलूव यानी बुलंदी से माख़ूज़ है। जिस क़द्र कोई चीज़ ऊँची और बुलंद होगी उसी क़द्र बड़ी और कुशादा होगी। इसीलिये इसकी अज़्मत व बुज़ुर्गी के इज़हार के लिये फ़रमाया, तुम्हें इसकी हक़ीक़त मालूम ही नहीं। फिर इसकी ताकीद की कि ये यक़ीनी चीज़ है, किताब में लिखी जा चुकी है कि ये लोग इल्लिय्यीन में जायेंगे। जिसके पास हर आसमान के मुक़र्रब फ़रिश्ते जाते हैं। फिर फ़रमाया कि क़यामत के

दिन ये नेकोकार हमेशगी वाली नेमतों और बाग़ात में होंगे और अल्लाह तआला के आम फ़ज़्ल व करम उन पर बारिश की तरह बरस रहे होंगे। ये मसहरियों पर बैठे हुए होंगे अपने मुल्क व माल को और नेमतों और राहतों को इज़्ज़त व जाह को माल-मताअ को देख-देखकर ख़ुश हो रहे होंगे। ये ख़ैर व फ़ज़्ल, ये नेमत व रहमत न कभी कम हो, न गुम हो, न घटे, न मिटे।

और ये भी मआना हैं कि अपनी आरामगाहों में तख़्ते सल्तनत पर बैठे दीदारे बारी तआला से मुशर्रफ़ होते रहेंगे। तो गोया कि फ़ाजिरों के बिल्कुल बरअक्स होंगे। उन पर दीदारे बारी तआला हराम था इनके लिये हर वक़्त इजाज़त है जैसे कि इब्ने उमर (रज़ि.) की हदीस़ में है जो पहले बयान हो चुकी कि सबसे नीचे दर्जे का जन्नती अपने मुल्क और मिल्कियत को दो हज़ार साल की राह तक देखेगा और सबसे आख़िर की चीज़ें इस तरह उसकी नज़रों के सामने होंगी जिस तरह सबसे अव्वल चीज़ें और आला दर्जे के जन्नती तो दिन भर में दो-दो मर्तबा दीदारे बारी तआला की नेमत से अपने दिल को मसरूर और अपनी आँखों को पुर नूर करेंगे। (ज़ईफ़ : तिर्मिज़ी, किताब तफ़्सीरुल क़ुरआन, बाब व मिन सूरतिल क़ियामह : 3330, सुवेर रावी ज़ईफ़ है।)

अगर कोई उनके चेहरे पर नज़र डाले तो बैक निगाह आसूदगी और ख़ुशहाली, जाह व हश्मत, शौकत व सत्वत, ख़ुशी व सुरूर, बहजत व नूर देखकर उनका मर्तबा ताड़ ले और समझ ले कि राहत व आराम में ख़ुर्श व ख़ुर्रम हैं। जन्नती शराब का दौर चलता रहता है।

रहीक़िम्मख़तूम का तज़्किरा : रहीक़ जन्नत की एक क़िस्म की शराब है। रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़रमाते हैं, 'जो किसी प्यासे मुसलमान को पानी पिलाये उसे अल्लाह तआला रहीक़े मख़तूम पिलायेगा यानी जन्नत की मुहर वाली शराब और जो किसी भूखे को खाना खिलाये उसे अल्लाह तआला जन्नत के मेवे खिलायेगा और जो किसी नंगे मुसलमान को कपड़ा पहनाये अल्लाह तआला उसे जन्नती सब्ज़ रेशम के जोड़े पहनायेगा।' (ज़ईफ़ : अहमद : 3/13-14, तिर्मिज़ी, किताब सिफ़तुल क़ियामह, बाब फ़ी स़वाबिल इत्आम वस्सक़ा वल्कसौ : 2449, इसकी सनद में अतिय्या औफ़ी ज़ईफ़ व मजरूह रावी है। अत्तक़रीब : 2/24, 216).

ख़ितामुन के मआना मिलौनी और आमेज़िश के हैं। उसे अल्लाह तआला ने पाक साफ़ कर दिया है और मुश्क की मुहर लगा दी है। ये भी मआना हैं कि अन्जाम उसका मुश्क है। यानी कोई बदबू नहीं बल्कि मुश्क की सी ख़ुश्बू है, चाँदी की तरह सफ़ेद रंग शराब है जिसकी मुहर लगेगी या मिलौनी होगी। इस क़द्र ख़ुश्बू वाली है कि अगर किसी अहले दुनिया की उंगली उस पर लग जाये फिर गो वो उसी वक़्त निकाल ले लेकिन तमाम दुनिया उसकी ख़ुश्बू से महक जायेगी और ख़िताम के मआना ख़ुश्बू के भी किए गए हैं। फिर फ़रमाता है कि हिर्स करने वाले फ़ख़्र व मबाहात करने वाले कस़रत और सबक़त करने वालों को चाहिये कि इसकी तरफ़ तमामतर तवज्जह करें। जैसे और जगह है, (لِمِثْلِ هٰذَا فَلْيَعْمَلِ الْعٰمِلُوْنَ ﴿٦١﴾) (सूरह साफ़्फ़ात 37 : 61) 'ऐसी चीज़ों के लिये अमल करने वालों को अमल करना चाहिये।' तस्नीम जन्नत की बेहतरीन शराब का नाम है ये एक नहर है जिससे साबिक़ीन लोग तो बराबर पिया करते हैं और दाहिने हाथ वाले अपनी शराब रहीक़ में मिलाकर पीते हैं।

إِنَّ الَّذِينَ أَجْرَمُوا كَانُوا مِنَ الَّذِينَ آمَنُوا يَضْحَكُونَ ﴿٢٩﴾ وَإِذَا مَرُّوا بِهِمْ
يَتَغَامَزُونَ ﴿٣٠﴾ وَإِذَا انْقَلَبُوا إِلَىٰ أَهْلِهِمُ انْقَلَبُوا فَكِهِينَ ﴿٣١﴾ وَإِذَا رَأَوْهُمْ قَالُوا
إِنَّ هَٰؤُلَاءِ لَضَالُّونَ ﴿٣٢﴾ وَمَا أُرْسِلُوا عَلَيْهِمْ حَافِظِينَ ﴿٣٣﴾ فَالْيَوْمَ الَّذِينَ آمَنُوا
مِنَ الْكُفَّارِ يَضْحَكُونَ ﴿٣٤﴾ عَلَى الْأَرَائِكِ يَنْظُرُونَ ﴿٣٥﴾ هَلْ ثُوِّبَ الْكُفَّارُ مَا
كَانُوا يَفْعَلُونَ ﴿٣٦﴾

तर्जुमा : ''गुनहगार लोग ईमानदारों की हँसी उड़ाया करते थे। (29) उनके पास गुज़रते हुए इशारों-किनायों से उनकी हिक़ारत करते थे। (30) और जब अपने वालों की तरफ़ लौटते तो दिल लगियाँ करते थे। (31) और जब उन्हें देखते तो कहते यक़ीनन ये लोग गुमराह बेराह हैं। (32) ये उन पर पासबान बनाकर तो नहीं भेजे गये। (33) पस आज ईमानदार उन काफ़िरों पर हँसेंगे। (34) तख़्तों पर बैठे देख रहे होंगे। (35) कि अब उन मुन्किरों ने जैसा ये करते थे भर पाया।'' (36)

अहले ईमान को मज़ाक़ करने वालों का अन्जाम (आयत : 29-36) : यानी दुनिया में तो उन काफ़िरों की ख़ूब बन आई थी, ईमानदारों का मज़ाक़ उड़ाते रहे, चलते-फिरते आवाज़ें कसते रहे और हिक़ारत व तज़्लील करते रहे और अपने वालों में जाकर ख़ूब बातें बनाते थे, जो चाहते थे पाते थे, लेकिन शुक्र तो कहाँ और कुफ़्र पर आमादा होकर मुसलमानों की ईज़ा रसानी के दरपे हो जाते थे और चूंकि मुसलमान उनकी मानते न थे, तो ये उन्हें गुमराह कहा करते थे। अल्लाह तआला फ़रमाता है कि कुछ ये लोग मुहाफ़िज़ बनाकर तो नहीं भेजे गये उन्हें मोमिनों की क्या पड़ी। क्यों हर वक़्त उनके पीछे पड़े हैं और उनके आमाल-अफ़आल की देखभाल रखते हैं और तअना आमेज़ बातें बनाते रहते हैं। जैसे और जगह है, (اخْسَئُوا فِيهَا) इख़्सौ फ़ीहा (सूरह मोमिनून 23 : 108) 'उस जहन्नम में पड़े-झुलसते रहो मुझसे बात न करो।'

मेरे ख़ास बन्दे कहते थे कि ऐ हमारे परवरदिगार! हम ईमान लाये तू हमें बख़्श और हम पर रहम कर तू सबसे बड़ा रहम व करम करने वाला है। तो तुमने उन्हें मज़ाक़ में उड़ाया और इस क़द्र ग़ाफ़िल हुए कि मेरी याद भुला बैठे और उनसे हँसी-मज़ाक़ करने लगे। देखो आज मैंने उन्हें उनके सब्र का ये बदला दिया है कि वो हर तरह कामयाब हैं। यहाँ भी उसके बाद इरशाद फ़रमाता है कि आज क़यामत के दिन ईमानदार उन बदकारों पर

हँस रहे हैं और तख़्तों पर बैठे अपने अल्लाह को देख रहे हैं जो साफ़ सुबूत है इस बात का कि ये गुमराह न थे। गो तुम उन्हें राहगुम करदा कहा करते थे, बल्कि ये दरअसल औलिया अल्लाह थे, मुक़र्रबीने इलाही थे। इसीलिये आज अल्लाह का दीदार उनकी निगाहों के सामने है। ये अल्लाह के मेहमान हैं और उसके बुज़ुर्गी वाले घर में ठहरे हुए हैं। जैसा कुछ उन काफ़िरों ने मुसलमानों के साथ दुनिया में किया था उसका पूरा बदला क्या उन्हें आख़िरत में मिल गया या नहीं? उनके मज़ाक़ के बदले आज उन पर हँसी उड़ी ये उन्हें घटाते थे, अल्लाह ने उन्हें बढ़ाया। ग़र्ज़ पूरा-पूरा तमाम व कमाल बदला दे दिया गया।

अल्हम्दुलिल्लाह सूरह मुतफ़्फ़िफ़ीन की तफ़्सीर ख़त्म हुई।

***

FLOW CHART
तरतीबी नक्श-ए-रब्त

MACRO-STRUCTURE
नज़्मे-जली

सूरह इन्शिक़ाक़ - 84

आयात : 25, मक्की, पैराग्राफ : 4

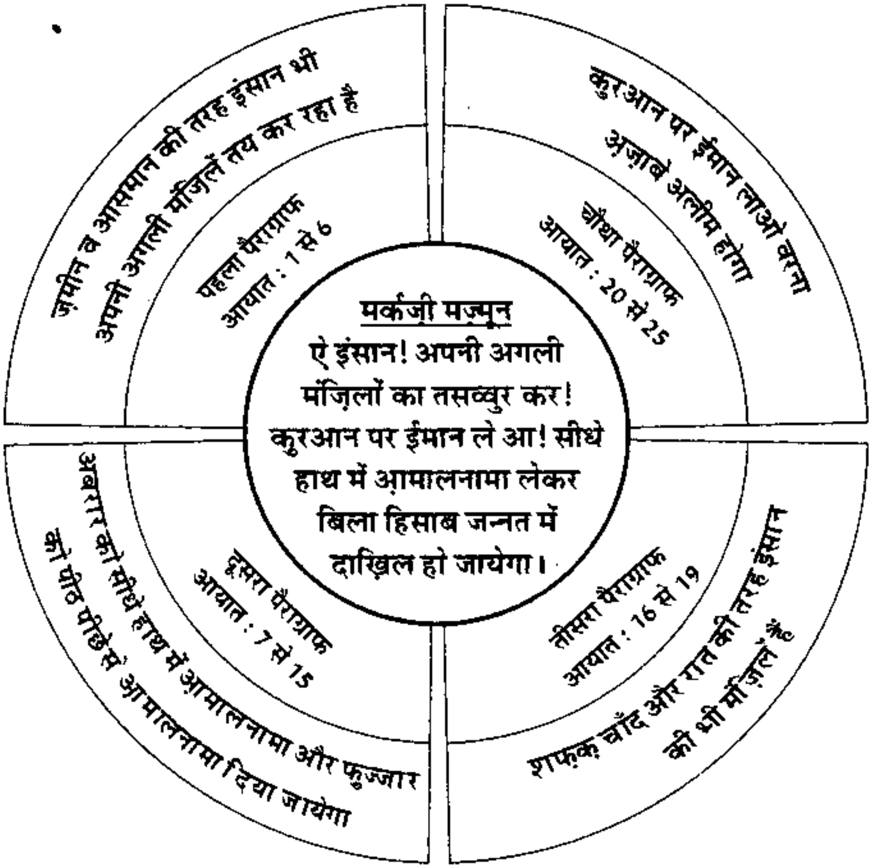

ज़मान-ए-नुज़ूल

सूरह इन्शिक़ाक़ भी ऐलाने आम के बाद क़ियामे मक्का के दूसरे दौर (4-5 नबवी) में नाज़िल हुई, जब आप (सल्ल.) के ख़िलाफ़ तौहीन व तज़्लील और इस्तिहज़ा का बाज़ार गर्म था।

तफ़्सीर सूरह इन्शिक़ाक

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

तर्जुमा : "शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है।"

إِذَا السَّمَآءُ انْشَقَّتْ ① وَأَذِنَتْ لِرَبِّهَا وَحُقَّتْ ② وَإِذَا الْأَرْضُ مُدَّتْ ③
وَأَلْقَتْ مَا فِيهَا وَتَخَلَّتْ ④ وَأَذِنَتْ لِرَبِّهَا وَحُقَّتْ ⑤ يَأَيُّهَا الْإِنْسَانُ إِنَّكَ
كَادِحٌ إِلَىٰ رَبِّكَ كَدْحًا فَمُلَاقِيهِ ⑥ فَأَمَّا مَنْ أُوتِيَ كِتٰبَهُ بِيَمِينِهِ ⑦ فَسَوْفَ
يُحَاسَبُ حِسَابًا يَسِيرًا ⑧ وَيَنْقَلِبُ إِلَىٰ أَهْلِهِ مَسْرُورًا ⑨ وَأَمَّا مَنْ أُوتِيَ كِتٰبَهُ
وَرَآءَ ظَهْرِهِ ⑩ فَسَوْفَ يَدْعُوا ثُبُورًا ⑪ وَيَصْلَىٰ سَعِيرًا ⑫ إِنَّهُ كَانَ فِي أَهْلِهِ
مَسْرُورًا ⑬ إِنَّهُ ظَنَّ أَنْ لَنْ يَحُورَ ⑭ بَلَىٰ إِنَّ رَبَّهُ كَانَ بِهِ بَصِيرًا ⑮

तर्जुमा : "जब आसमान फट जायेगा। (1) और अपने रब के हुक्म पर कान लगायेगा और इसी के लायक़ वो है। (2) और जब ज़मीन खींचकर फैला दी जायेगी। (3) और उसमें जो है वो उसे उगल देगी और ख़ाली हो जायेगी। (4) और अपने रब के हुक्म पर कान लगायेगी और इसी के लायक़ वो है। (5) ऐ इंसान! तू अपने रब से मिलने तक ये कोशिश और तमाम काम और मेहनतें करके उससे मुलाक़ात करने वाला है। (6) तो उस वक़्त जिस शख़्स के दाहिने हाथ में आमाल नामा दिया जायेगा (7) उसका हिसाब तो बड़ी आसानी से लिया जायेगा। (8) और वो अपने वालों की तरफ़ हँसी-ख़ुशी लौट आयेगा। (9) हाँ जिस शख़्स का आमाल नामा उसकी पीठ के पीछे दिया जायेगा (10) तो वो मौत को बुलाने लगेगा। (11) और भड़कती हुई जहन्नम में दाख़िल होगा। (12) ये शख़्स अपने मुताल्लिक़ीन में (दुनिया में) ख़ुश था। (13) उसका ख़याल था कि अल्लाह की तरफ़ लौटकर ही न जायेगा। (14) ये कैसे हो सकता है हालांकि उसका रब उसे बख़ूबी देख रहा था।" (15)

तआरुफ़े सूरत : मोत्ता इमाम मालिक में है कि हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने लोगों को नमाज़ पढ़ाई और उसमें सूरह इन्शिक़ाक़ की सूरत पढ़ी और सज्दा किया और फ़ारिग़ होकर फ़रमाया, रसूलुल्लाह (ﷺ) ने भी इसके पढ़ते हुए सज्दा किया था। (सहीह मुस्लिम, किताबुल मसाजिद, बाब सुजूदुत्तिलावत : 578, नसाई : 963, मोत्ता : 1/205)

बुख़ारी में है कि हज़रत अबू राफ़ेअ (रह.) फ़रमाते हैं कि मैंने हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) के पीछे इशा की नमाज़ पढ़ी। आपने उसमें इज़स्समाउन्-शक़्क़त की तिलावत की और सज्दा किया। मैंने पूछा, तो जवाब दिया कि मैंने अबुल क़ासिम (ﷺ) के पीछे सज्दा किया है (यानी हुज़ूर (ﷺ) ने भी इस सूरत को नमाज़ में पढ़ा और आयते सज्दा पर सज्दा किया और मुक़्तदियों ने भी सज्दा किया) पस मैं तो जब तक आप (ﷺ) से मिलूँगा (इस मौक़े पर) सज्दा करता रहूँगा। (सहीह बुख़ारी, किताबुल अज़ान, बाब अल्जहरु फ़िल्इशा : 766, सहीह मुस्लिम : 578, अबू दाऊद : 1408, नसाई : 969)

सहीह मुस्लिम और सुनन नसाई में मरवी है कि हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) फ़रमाते हैं कि हमने रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ सूरह इन्शिक़ाक़ में और सूरह इक़रअ् बिस्मि रब्बिकल्लज़ी ख़लक़ में सज्दा किया। (सहीह मुस्लिम, किताबुल मसाजिद, बाब सुजूदुत्तिलावत : 578, अबू दाऊद : 1407, तिर्मिज़ी : 573, नसाई : 964, इब्ने माजह : 1058)

आसमान फट जायेगा (आयत : 1-15) : अल्लाह तआला फ़रमाता है कि क़यामत के दिन आसमान फट जायेगा वो अपने रब के हुक्म पर कारबंद होने के लिये अपने कान लगाये हुए होगा। फटने का हुक्म पाते ही फट-फट कर टुकड़े हो जायेगा। उसे भी चाहिये कि अम्रे इलाही बजा लाये इसलिये कि ये उस अल्लाह का हुक्म है जिसे कोई रोक नहीं सकता, जिससे बड़ा और नहीं जो सब पर ग़ालिब है उस पर ग़ालिब कोई नहीं। हर चीज़ उसके सामने पस्त व लाचार है। बेबस व मजबूर है और ज़मीन फैला दी जायेगी, बिछा दी जायेगी और कुशादा कर दी जायेगी। हदीस़ में है, 'क़यामत के दिन अल्लाह तआला ज़मीन को चमड़े की तरह खींच लेगा यहाँ तक कि हर इंसान को सिर्फ़ दो क़दम टिकाने की जगह मिलेगी। सबसे पहले मुझे बुलाया जायेगा। हज़रत जिब्रईल (अलै.) अल्लाह तआला की दायें जानिब होंगे। अल्लाह की क़सम इससे पहले उसने कभी उसे नहीं देखा तो मैं कहूँगा, ऐ अल्लाह! फिर मुझे शफ़ाअत की इजाज़त हो। चुनाँचे मक़ामे महमूद में खड़ा होकर मैं शफ़ाअत करूँगा और कहूँगा ऐ अल्लाह! तेरे इन बन्दों ने ज़मीन के गोशे-गोशे पर तेरी इबादत की है।' (ज़ईफ़ : अत्तबरी : 24/311, ये रिवायत मुरसल यानी ज़ईफ़ है लेकिन हाकिम : 4/570-571 में हज़रत जाबिर (रज़ि.) से मौसूलन बइख़्तिलाफ़े अल्फ़ाज़ भी मौजूद है और हाकिम और इमाम ज़हबी ने इसे बुख़ारी और मुस्लिम की शर्त पर सहीह कहा है। लेकिन इसकी सनद ज़ईफ़ है। इब्ने शिहाब ज़ुहरी मुदल्लस हैं और रिवायत मुअन्अन है।)

फिर फ़रमाता है कि ज़मीन अपने अंदर के कुल मुर्दे उगल देगी और ख़ाली हो जायेगी। ये भी रब के फ़रमान की मुन्तज़िर होगी और इसे भी यही लायक़ है। फिर इरशाद होता है कि ऐ इंसान! तू कोशिश करता

रहेगा और अपने रब की तरफ़ आगे बढ़ता रहेगा, आमाल करता रहेगा यहाँ तक कि एक दिन उससे मिल जायेगा और उसके सामने खड़ा होगा और अपने आमाल और अपनी सई व कोशिश को अपने आगे देख लेगा। अबू दाऊद तयालिसी में है कि हज़रत जिब्राईल (अलै.) ने फ़रमाया, ऐ मुहम्मद! जी लें जब तक चाहें बिल्आख़िर मौत आने वाली है। जिससे चाह दिल बस्तगी पैदा कर ले एक दिन इससे जुदाई होनी है। जो चाहें अमल कर लें एक दिन उसकी मुलाक़ात होने वाली है। (ज़ईफ़ : मुस्नद तयालिसी : 1755, व सनदहू ज़ईफ़ फ़ीहिल हसन बिन अबी जअफ़र ज़ईफ़ अबू ज़ुबैर अन्अन इन सहहस्सनद इलैहि, शौबुल ईमान : 10540)

मुलाक़ीहि की ज़मीर का मरजअ कुछ ने लफ़्ज़े रब को भी बतलाया है तो ये मअने होंगे अल्लाह तआला से तेरी मुलाक़ात होने वाली है वो तुझे तेरे कुल आमाल का बदला देगा और तेरी तमाम कोशिश व सई का फल तुझे अता फ़रमायेगा। दोनों ही बातें आपस में एक दूसरी को लाज़िम-मल्ज़ूम हैं।

क़तादा (रह.) फ़रमाते हैं, ऐ इब्ने आदम! तू कोशिश करने वाला है लेकिन अपनी कोशिश में कमज़ोर है। जिससे ये न हो सके कि अपनी तमामतर सई व कोशिश नेकियों की करे तो वो कर ले दरअसल नेकी की कुदरत और बुराइयों से बचने की ताक़त बजुज़ इम्दादे इलाही हासिल नहीं हो सकती। फिर फ़रमाया, जिसके दाहिने हाथ में आमाल नामा मिल जायेगा उसका हिसाब सख़्ती के बग़ैर निहायत आसानी से होगा। उसके छोटे आमाल माफ़ भी हो जायेंगे और जिससे उसके तमाम आमाल का हिसाब लिया जायेगा वो हलाकत से न बचेगा। जनाब रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़रमाते हैं, 'जिससे हिसाब का मुनाक़शा होगा वो तबाह होगा।' तो हज़रत आइशा (रज़ि.) ने फ़रमाया, क़ुरआन में तो है कि नेक लोगों का भी हिसाब होगा फ़सौ-फ़ युहासबु हिसाबंय्-यसीरा आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'दरअसल ये वो हिसाब नहीं ये तो सिर्फ़ पेशी है। जिससे हिसाब में पूछ-गछ होगी वो बर्बाद होगा।' (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरह इज़स्समाउन्-शक़्क़त : 4939, सहीह मुस्लिम : 2876, तिर्मिज़ी : 3337, अहमद : 6/47)

दूसरी रिवायत में है कि ये बयान फ़रमाते हुए आप (ﷺ) ने अपनी उंगली अपने हाथ पर रखकर जिस तरह कोई चीज़ कुरेदते हों उस तरह उसे हिला-जुला कर बतलाया। (इसकी सनद में सुफ़ियान बिन वकीअ ज़ईफ़ रावी है। अल्मीज़ान : 2/173, 3334, लिहाज़ा ये रिवायत ज़ईफ़ है।)

मतलब ये है कि जिससे बाज़पुर्स और कुरेद होगी वो अज़ाब से बच नहीं सकता। ख़ुद हज़रत आइशा (रज़ि.) से मरवी है कि जिससे बाक़ाइदा हिसाब होगा वो तो बेअज़ाब नहीं रह सकता और हिसाबे यसीर से मुराद सिर्फ़ पेशी है, हालांकि अल्लाह ख़ूब देखता रहा है। हज़रत सिद्दीक़ा (रज़ि.) से मरवी है कि मैंने एक मर्तबा हुज़ूर (ﷺ) से सुना कि आप नमाज़ में ये दुआ माँग रहे थे अल्लाहुम्-म हासिब्नी हिसाबंय्यसीरा जब आप (ﷺ) फ़ारिग़ हुए तो मैंने पूछा, हुज़ूर! ये आसान हिसाब क्या है? फ़रमाया, 'सिर्फ़ नामाए आमाल पर नज़र डाल ली जायेगी और कह दिया जायेगा कि जाओ हमने दरगुज़र किया। लेकिन ऐ आइशा! जिससे अल्लाह तआला हिसाब लेने पर आयेगा वो हलाक होगा।' (हसन : अहमद : 6/48, हदीस़ नम्बर : 24215)

ग़र्ज़ जिसके दायें हाथ में नामाए आमाल आयेगा वो अल्लाह के सामने पेश होते ही छुट्टी पा जायेगा और अपने वालों की तरफ़ ख़ुश-ख़ुश जन्नत में वापस आयेगा। तबरानी में है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़रमाते हैं, 'तुम लोग आमाल कर रहे हो और हक़ीक़त का इल्म किसी को नहीं अन्क़रीब वो वक़्त आने वाला है कि तुम अपने आमाल को पहचान लोगे, कुछ वो लोग होंगे जो हँसी-ख़ुशी अपनों से आ मिलेंगे और कुछ ऐसे होंगे कि रंजीदा, अफ़सुरदा और नाख़ुश वापस आयेंगे और जिसे पीठ पीछे से बायें हाथ में हाथ मोड़कर नामाए आमाल दिया जायेगा वो नुक़सान और घाटे की पुकार पुकारेगा। हलाकत और मौत को बुलायेगा और जहन्नम में जायेगा। दुनिया में ख़ूब हश्शाश-बश्शाश था, बेफ़िक्री से मज़े कर रहा था, आख़िरत का ख़ौफ़, आक़िबत का अन्देशा मुत्लक़ न था। अब उसको ग़म व रंज, यास व हिरमान, रंजीदगी और अफ़सुर्दगी ने हर तरफ़ से घेर लिया। ये समझ रहा था कि मौत के बाद ज़िन्दगी नहीं। उसे यक़ीन न था कि लौटकर अल्लाह के पास भी जाना है। फिर फ़रमाता है कि हाँ-हाँ उसे अल्लाह ज़रूर दोबारा ज़िन्दा करेगा। जैसे कि पहली मर्तबा उसने उसे पैदा किया फिर उसके नेक व बद आमाल की जज़ा व सज़ा देगा। बन्दों के आमाल व अहवाल की उसे इत्तिलाअ़ है और वो उन्हें देख रहा है।

***

فَلَآ اُقْسِمُ بِالشَّفَقِ ﴿١٦﴾ وَالَّيْلِ وَمَا وَسَقَ ﴿١٧﴾ وَالْقَمَرِ اِذَا اتَّسَقَ ﴿١٨﴾ لَتَرْكَبُنَّ طَبَقًا
عَنْ طَبَقٍ ﴿١٩﴾ فَمَا لَهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٢٠﴾ وَاِذَا قُرِئَ عَلَيْهِمُ الْقُرْاٰنُ لَا يَسْجُدُوْنَ
﴿٢١﴾ {السجدہ} بَلِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا يُكَذِّبُوْنَ ﴿٢٢﴾ وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا يُوْعُوْنَ ﴿٢٣﴾ فَبَشِّرْهُمْ
بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ﴿٢٤﴾ اِلَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ اَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُوْنٍ ﴿٢٥﴾

तर्जुमा : ''मुझे शफ़क़ की क़सम। (16) और रात की और उसकी जमा करदा चीज़ों की क़सम। (17) और पूरे चाँद की क़सम। (18) यक़ीनन तुम एक हालत से दूसरी हालत पर पहुँचोगे। (19) इन्हें क्या हो गया कि ईमान नहीं लाते। (20) और जब उनके पास क़ुरआन पढ़ा जाता है तो सज्दा नहीं करते। (21) बल्कि ये कुफ़्फ़ार तो झूठा समझते हैं। (22) अल्लाह तआला ख़ूब जानता है जो कुछ ये दिलों में रखते हैं। (23) उन्हें अल्मनाक अज़ाबों की ख़ुशख़बरी सुना दो। (24) हाँ ईमान वालों और नेक आमाल वालों को बेशुमार और न ख़त्म होने वाला नेक बदला है।'' (25)

(शफ़क़) सुर्ख़ी की क़सम और लोगों की हालत (आयत : 16-25) : शफ़क़ से मुराद सुर्ख़ी है जो ग़ुरूबे आफ़ताब के बाद आसमान के मग़िबी किनारों पर ज़ाहिर होती है। हज़रत अ़ली, हज़रत इब्ने अ़ब्बास, हज़रत उ़बादा बिन सामित, हज़रत अबू हुरैरह, हज़रत शद्दाद बिन औस, हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.), मुहम्मद बिन अ़ली बिन हुसैन, मक्हूल बक्र बिन अ़ब्दुल्लाह मुज़नी, बुकैर बिन अश्जह मालिक, इब्ने अबी ज़िअब, अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन अबू सलमा, अजशून (रह.) यही फ़रमाते हैं कि शफ़क़ उस सुर्ख़ी को कहते हैं। (अत्तबरी : 19/274)

हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से ये भी मरवी है कि मुराद सफ़ेदी है। पस शफ़क़ किनारों की सुर्ख़ी को कहते हैं। वो तुलूअ़ से पहले हो या ग़ुरूब के बाद और अहले सुन्नत के नज़दीक मशहूर यही है। ख़लील कहते हैं, इशा के वक़्त तक ये शफ़क़ बाक़ी रहती है। (अत्तबरी : 19/275)

जोहरी कहते हैं, सूरज के ग़ुरूब होने के बाद जो सुर्ख़ी और रोशनी बाक़ी रहती है उसे शफ़क़ कहते हैं, ये अव्वल रात से इशा के वक़्त तक बाक़ी रहती है। इक्रिमा (रह.) फ़रमाते हैं, मग़िब से लेकर इशा तक। सहीह मुस्लिम की हदीस़ में है कि मग़िब का वक़्त शफ़क़ ग़ायब होने तक है। (सहीह मुस्लिम, किताबुल मसाजिद, बाब अवक़ातुस्सलातिल ख़ुमुस : 612)

मुजाहिद (रह.) से अल्बत्ता मरवी है कि इससे मुराद सारा दिन है और एक रिवायत में है कि मुराद सूरज है। ग़ालिबन इस मतलब की वजह इसके बाद का जुम्ला है। तो गोया रोशनी और अन्धेरे की क़सम खाई। इमाम इब्ने जरीर (रह.) फ़रमाते हैं, दिन के जाने और रात के आने की क़सम है। औरों ने कहा है, सफ़ेदी और सुर्ख़ी का नाम शफ़क़ है और क़ौल है कि ये लफ़्ज़ इन दोनों मुख़्तलिफ़ मअ़नों में बोला जाता है। वसक़ के मआ़ना हैं जमा किया। यानी रात के सितारों और रात के जानवरों की क़सम। इसी तरह रात के अन्धेरे में तमाम चीज़ों का अपनी-अपनी जगह चले जाना और चाँद की क़सम जबकि वो पूरा हो जाये भरपूर हो जाये और पूरी रोशनी वाला बन जाये।

लतरकबुन्न की तफ़्सीर बुख़ारी में मरफ़ूअ़ हदीस़ से मरवी है कि एक हालत से दूसरी हालत की तरफ़ चढ़ते चले जाओगे। (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरह इज़स्समाउन्-शक़्क़त, बाब लतरकबुन्न तबक़न अ़न तबक़ : 4940)

हज़रत अनस (रज़ि.) फ़रमाते हैं, जो साल आयेगा वो अपने पहले से ज़्यादा बुरा होगा। मैंने इसी तरह तुम्हारे नबी (ﷺ) से सुना है। (सहीह बुख़ारी, किताबुल फ़ित्न, बाब ला यअ्ती ज़मनुन इल्लल्लज़ी बअ़्दहू शर्रुम् मिन्हु : 7068, तिर्मिज़ी : 226, अहमद : 3/179)

इस हदीस़ के और ऊपर वाली हदीस़ के अल्फ़ाज़ बिल्कुल यकसाँ हैं। बज़ाहिर ये मालूम होता है कि ये मरफ़ूअ़ हदीस़ है, वल्लाहु आ़लम! और ये मतलब भी इस हदीस़ का बयान किया गया है कि इससे मुराद

ज़ाते नबी (ﷺ) है और इसकी ताईद हज़रत उ़मर, हज़रत इब्ने मसऊ़द, इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) और आम अहले मक्का और अहले कूफ़ा की क़िरअत से भी होती है। इनकी क़िरअत लतर्कबिन्न ब के ज़ेर से।

शअ़बी (रह.) कहते हैं कि मतलब ये है कि ऐ नबी! तुम एक आसमान के बाद दूसरे आसमान पर चढ़ोगे। मुराद इससे मेअ़राज है यानी मन्ज़िल-बमन्ज़िल चढ़ते चले जाओगे। सुद्दी (रह.) कहते हैं कि मुराद ये है कि अपने-अपने आ़माल के मुताबिक़ मन्ज़िलें तय करोगे। जैसे हदीस़ में है, 'तुम अपने से अगले लोगों के तरीक़ों पर चलोगे। बिल्कुल बराबर-बराबर यहाँ तक कि अगर उनमें से कोई गोह के सूराख़ में दाख़िल हुआ हो तो तुम भी यही करोगे।' लोगों ने कहा, अगलों से मुराद आपकी क्या यहूदो-नसारा हैं? आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'फिर और कौन?' (सहीह बुख़ारी, किताबुल ऐतिसाम बिल्किताब वस्सुन्नह, बाब क़ौलुन्नबी ल-तत्तबिउन्न सुन-न मन कान क़ब्लहुम : 7320, सहीह मुस्लिम : 2669, बितसरुफ़िन यसीर)

हज़रत मक्हूल (रह.) फ़रमाते हैं, हर बीस साल के बाद तुम किसी न किसी ऐसे काम की ईजाद करोगे जो उससे पहले न था। अ़ब्दुल्लाह फ़रमाते हैं, आसमान फटेगा, फिर सुर्ख़ रंग हो जायेगा फिर भी रंग बदलते चले जायेंगे।

इब्ने मसऊ़द (रज़ि.) फ़रमाते हैं, कभी तो आसमान धुवाँ बन जायेगा फिर फट जायेगा। हज़रत सईद बिन जुबैर (रह.) फ़रमाते हैं कि यानी बहुत से लोग जो दुनिया में पस्त व ज़लील थे आख़िरत में बुलंद व ज़ी इ़ज़्ज़त बन जायेंगे और बहुत से लोग जो दुनिया में मर्तबे और इ़ज़्ज़त वाले थे वो आख़िरत में ज़लील व नामुराद हो जायेंगे। इक्रिमा (रह.) ये मतलब बयान करते हैं कि पहले दूध पीते थे फिर ग़िज़ा खाते हुए। पहले जवान थे फिर बूढ़े हुए। हसन बसरी (रह.) फ़रमाते हैं, नर्मी के बाद सख़्ती, सख़्ती के बाद नर्मी। अमीरी के बाद फ़क़ीरी, फ़क़ीरी के बाद अमीरी। सेहत के बाद बीमारी, बीमारी के बाद तन्दुरुस्ती। एक मरफ़ूअ़ हदीस़ में है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़रमाते हैं, 'इब्ने आदम ग़फ़लत में है। वो परवाह नहीं करता कि किस लिये पैदा किया गया है। अल्लाह तआ़ला जब किसी को पैदा करना चाहता है तो फ़रिश्ते से कहता है कि इसकी रोज़ी, इसकी अजल, इसकी ज़िन्दगी, इसका बद या नेक होना लिख ले। फिर वो फ़ारिग़ होकर चला जाता है और दूसरा फ़रिश्ता आता है और उसकी हिफ़ाज़त करता है यहाँ तक कि उसे समझ आ जाये फिर वो फ़रिश्ता उठ जाता है। फिर दो फ़रिश्ते उसका नामाए आ़माल लिखने वाले आ जाते हैं। मौत के वक़्त वो भी चले जाते हैं और मलकुल मौत आ जाते हैं इसकी रूह क़ब्ज़ करते हैं। फिर क़ब्र में उसकी रूह लौटा दी जाती है। मलकुल मौत चले जाते हैं और सवाल व जवाब करने वाले फ़रिश्ते आ जाते हैं। अपने काम के बाद वो भी चले जाते हैं। क़यामत के दिन नेकी-बदी के फ़रिश्ते आ जायेंगे और उसकी गर्दन से उसका नामाए आ़माल खोल लेंगे फिर उसके साथ ही रहेंगे, एक साइक़ है, दूसरा शहीद है।

फिर अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा, (لَقَدْ كُنتَ فِي غَفْلَةٍ مِّنْ هَٰذَا فَكَشَفْنَا) (सूरह क़ॉफ़ 50 : 22) 'तू इससे ग़ाफ़िल था।' फिर रसूलुल्लाह (ﷺ) ने आयत (لَتَرْكَبُنَّ طَبَقًا عَن طَبَقٍ ۝١٩) पढ़ी। (व सनदहू

मौज़ूअ इसकी सनद में अम्र बिन शमर अल्जौफ़ी के बारे में इब्ने हिब्बान कहते हैं कि सिक़ात से मौज़ूअ रिवायत बयान करता था। अल्मीज़ान : 3/268, 6384) यानी एक हाल से दूसरा हाल। फिर फ़रमाया, लोगो! तुम्हारे आगे बड़े-बड़े अहम उमूर आ रहे हैं जिनकी तुम्हें ताक़त ही नहीं। अल्लाह तआला बुलंद व बरतर से मदद चाहो। ये हदीस़ इब्ने अबी हातिम में है मुन्कर हदीस़ है और इसकी सनद में ज़ईफ़ रावी हैं लेकिन इसका मतलब बिल्कुल सहीह और दुरुस्त है, वल्लाहु सुब्हानहू व तआला आलम!

इमाम इब्ने जरीर (रह.) ने इन तमाम अक़्वाल को बयान करके फ़रमाया है कि सहीह मतलब ये है कि आप ऐ मुहम्मद! सख़्त-सख़्त कामों में एक के बाद एक में पड़ने वाले हैं और गो ख़िताब हुज़ूर (ﷺ) से ही है लेकिन मुराद सब लोग हैं कि वो क़यामत की एक के बाद एक हौलनाकी देखेंगे।

फिर फ़रमाया कि इन्हें क्या हो गया ये क्यों नहीं ईमान लाते? और इन्हें क़ुरआन सुनकर सज्दे में गिर पड़ने से कौनसी चीज़ रोकती है? बल्कि ये कुफ़्फ़ार तो उल्टा झुठलाते हैं और हक़ की मुख़ालिफ़त करते हैं और सरकशी में और बुराई में फँसे हुए हैं। अल्लाह तआला उनके दिलों की बातों को जिन्हें ये छिपा रहे हैं बख़ूबी जानता है। तुम ऐ नबी! इन्हें ख़बर पहुँचा दो कि अल्लाह तआला ने इनके लिये दर्दनाक अज़ाब तैयार कर रखा है। फिर फ़रमाया कि उस अज़ाब से महफ़ूज़ होकर बेहतरीन अज्र के मुस्तहिक़ ईमानदार नेक किरदार लोग हैं। इन्हें पूरा-पूरा बेकटा बेहिसाब अज्र मिलेगा।

जैसे और जगह है, (عَطَآءً غَيْرَ مَجْذُوذٍ ﴿١٠٨﴾) (सूरह हूद 11 : 108) कुछ लोगों ने ये भी कह दिया है कि बिला एहसान। लेकिन ये मआना ठीक नहीं। हर आन हर लहज़ा और हर वक़्त अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल के अहले जन्नत पर एहसान व ईनाम होंगे। बल्कि सिर्फ़ उसके एहसान और उसके फ़ज़्ल व करम की बिना पर उन्हें जन्नत नसीब हुई न कि उनके आमाल की वजह से। पस उस मालिक का तो हमेशगी और मुदाम वाला एहसान अपनी मख़्लूक़ पर है ही। उसकी ज़ात पाक हर तरह की हर वक़्त की तारीफ़ों के लायक़ हमेशा-हमेशा है। इसीलिये अहले जन्नत पर अल्लाह की तस्बीह और उसकी हम्द का इल्हाम उसी तरह किया जायेगा जिस तरह साँस बिला तकलीफ़ और बेतकल्लुफ़ बल्कि बेइरादा चलता रहता है। क़ुरआन फ़रमाता है, (وَ اٰخِرُ دَعْوٰىهُمْ اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٠﴾) (सूरह यूनुस 10 : 10) 'उनका आख़िरी क़ौल यही होगा कि सब तारीफ़ जहानों के पालने वाले अल्लाह के लिये ही है।'

अल्हम्दुलिल्लाह सूरह इन्शिक़ाक़ की तफ़्सीर ख़त्म हुई। अल्लाह तआला हमें तौफ़ीक़े ख़ैर दे और हमें बुराई से बचाये, आमीन!

***

FLOW CHART
तरतीबी नक्श-ए-रब्त

MACRO-STRUCTURE
नज़्मे-ञली

सूरह बुरूज - 85

आयात : 22, मक्की, पैराग्राफ : 4

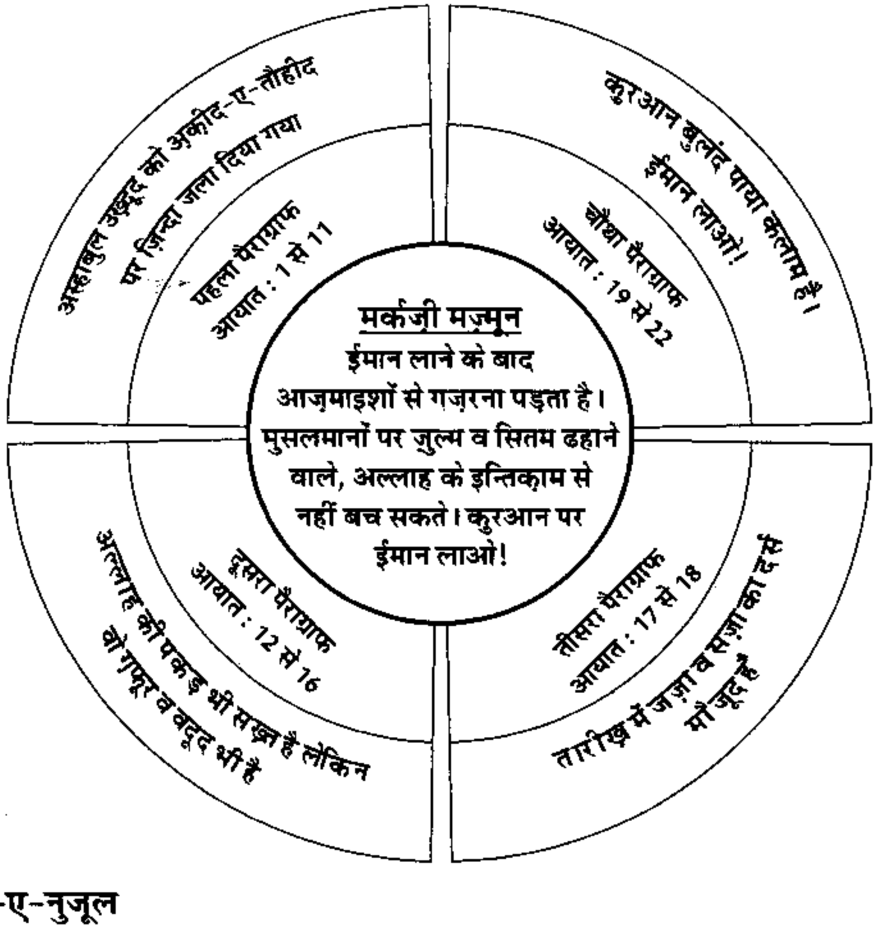

ज़मान-ए-नुज़ूल

सूरह बुरूज रसूलुल्लाह (सल्ल.) के क़ियामे मक्का के तीसरे दौर (6 से 10 नबवी) में नाज़िल हुई, जब अक़ीद-ए-तौहीद इख़्तियार करने के जुर्म में अस्हाबुल उख़्दूद की तरह, मक्के के मुशरिक सरदार मुसलमानों पर शिद्दत के साथ ज़ुल्म व सितम ढहा रहे थे। कुरैशे मक्का को फ़िरऔन और समूद के लश्करों के अन्जाम से डराया गया।

तफ़्सीर सूरह बुरूज

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ○

तर्जुमा : ''शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है।''

तआरुफ़े सूरत : मुस्नद अहमद में है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) इशा की नमाज़ में ये सूरत और सूरह वस्समाइ वत्तारिक़ पढ़ते थे। (ज़ईफ़ुन जिद्दा : अहमद : 2/326, 227, इसकी सनद में अबुल महज़म मतरूक रावी है। अत्तक़रीब : 2/478, 150)

और हदीस़ में है कि आप (ﷺ) ने समावात की इन सूरतों का इशा की नमाज़ में पढ़ने का हुक्म दिया है। (ज़ईफ़ुन जिद्दा : अहमद : 2/327, मज्मउज़्ज़वाइद : 2/121, इसकी सनद में भी अबुल महज़म है।)

وَالسَّمَآءِ ذَاتِ الۡبُرُوۡجِ ۙ① وَالۡیَوۡمِ الۡمَوۡعُوۡدِ ۙ② وَشَاہِدٍ وَّمَشۡہُوۡدٍ ؕ③ قُتِلَ
اَصۡحٰبُ الۡاُخۡدُوۡدِ ۙ④ النَّارِ ذَاتِ الۡوَقُوۡدِ ۙ⑤ اِذۡ ہُمۡ عَلَیۡہَا قُعُوۡدٌ ۙ⑥ وَّہُمۡ عَلٰی مَا
یَفۡعَلُوۡنَ بِالۡمُؤۡمِنِیۡنَ شُہُوۡدٌ ؕ⑦ وَمَا نَقَمُوۡا مِنۡہُمۡ اِلَّاۤ اَنۡ یُّؤۡمِنُوۡا بِاللّٰہِ الۡعَزِیۡزِ
الۡحَمِیۡدِ ۙ⑧ الَّذِیۡ لَہٗ مُلۡکُ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ ؕ وَاللّٰہُ عَلٰی کُلِّ شَیۡءٍ شَہِیۡدٌ ؕ⑨
اِنَّ الَّذِیۡنَ فَتَنُوا الۡمُؤۡمِنِیۡنَ وَالۡمُؤۡمِنٰتِ ثُمَّ لَمۡ یَتُوۡبُوۡا فَلَہُمۡ عَذَابُ جَہَنَّمَ
وَلَہُمۡ عَذَابُ الۡحَرِیۡقِ ؕ⑩

तर्जुमा : ''बुरजों वाले आसमान की क़सम। (1) वादा किए हुए दिन की क़सम। (2) हाज़िर होने वाले और हाज़िर किए गये की क़सम। (3) कि ख़न्दक़ों वाले हलाक किये गये। (4) वो एक आग थी ईंधन वाली। (5) ये लोग उसके आस-पास बैठे। (6) मुसलमानों के साथ जो कर

रहे थे अपने सामने देख रहे थे। (7) ये लोग उन मुसलमानों के किसी और गुनाह का बदला नहीं ले रहे थे सिवाय इसके कि वो अल्लाह तआला ग़ालिब लायक़े हम्द की ज़ात पर ईमान लाये थे। (8) जिसका आसमान व ज़मीन मुल्क है और अल्लाह तआला हर चीज़ पर हाज़िर ख़ूब वाक़िफ़ है। (9) बेशक जिन लोगों ने मुसलमान मर्दों-औरतों को सताया फिर तौबा भी न की, उनके लिये जहन्नम का अज़ाब है और जलने के अज़ाब हैं।'' (10)

बुरूजे आसमानी की क़सम (आयत : 1-10) : बुरूज से मुराद बड़े-बड़े सितारे हैं जैसे कि (جَعَلَ فِى السَّمَآءِ) (सूरह फ़ुरक़ान 25 : 61) की तफ़्सीर में गुज़र चुका है। हज़रत मुजाहिद (रह.) से मरवी है कि बुरूज वो हैं जिनमें हिफ़ाज़त करने वाले हैं। यहया (रह.) फ़रमाते हैं कि ये आसमानी महल है। मिन्हाल बिन अम्र (रह.) कहते हैं कि मुराद अच्छी बनावट वाले आसमान हैं। (तफ़्सीर कुर्तुबी : 19/283) इब्ने ख़ैसमा (रह.) फ़रमाते हैं कि इससे मुराद सूरज-चाँद की मन्ज़िलें हैं जो बारह हैं कि सूरज उनमें से हर एक में एक महीना चलता रहता है और चाँद उनमें से हर एक में दो दिन और एक तिहाई दिन चलता है तो ये अठाईस दिन हुए और दो रातों तक वो पौशीदा रहता है नहीं निकलता। (अत्तबरी : 24/332)

इब्ने अबी हातिम की हदीस़ में है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़रमाते हैं, 'यौमि मौऊद से मुराद क़यामत का दिन है और शाहिद से मुराद जुम्आ का दिन है।' सूरज जिन-जिन दिनों पर निकलता है और डूबता है उनमें से आला और अफ़ज़ल दिन जुम्आ का दिन है। इसमें एक साअत ऐसी है कि उसमें बन्दा जो भलाई तलब करे मिल जाती है और जिस बुराई से पनाह चाहे टल जाती है और मशहूद से मुराद अरफ़े का दिन है।

यौमे मशहूद क्या है? : इब्ने ख़ुज़ैमा में भी ये हदीस़ है। (अत्तबरी : 24/333, इब्ने ख़ुज़ैमा : 3/116, व सनदहू ज़ईफ़, इसकी सनद में मूसा बिन उबैदा रबज़ी ज़ईफ़ रावी है। अल्मीज़ान : 2/256, 3636) मूसा बिन उबैदा रबज़ी इसके रावी हैं और ये ज़ईफ़ हैं ये रिवायत हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से ख़ुद उनके क़ौल से मरवी है और यही ज़्यादा सहीह मालूम होती है। मुस्नद अहमद में हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से भी यही मरवी है। (अहमद : 2/298, सनदहू ज़ईफ़ अली बिन ज़ैद बिन जिदआन ज़ईफ़ व यूनुस बिन उबैद मुदल्लस फत्तरीक़ान ज़ईफ़ान) और हज़रात से भी ये तफ़्सीर मरवी है और उनमें इख़्तिलाफ़ नहीं। फ़ल्हम्दुलिल्लाह और रिवायत में मरफ़ूअन मरवी है कि जुम्आ के दिन को जिसे यहाँ शाहिद कहा गया है ये ख़ास हमारे लिये बतौर ख़ज़ाने के छिपा रखा गया था। (मुअजम अल्कबीर : 3458, व सनदहू ज़ईफ़ लिइन्क़िताअ) और हदीस़ में है कि तमाम दिनों का सरदार जुम्आ का दिन है। (अत्तबरी : 24/334) इब्ने अब्बास (रज़ि.) से ये भी मरवी है कि शाहिद से मुराद ख़ुद ज़ाते मुहम्मद (ﷺ) हैं और मशहूद से मुराद क़यामत का दिन है। फिर आपने ये आयत पढ़ी (ذٰلِكَ يَوْمٌ مَّجْمُوْعٌ ۙ لَّهُ النَّاسُ وَذٰلِكَ يَوْمٌ مَّشْهُوْدٌ ﴿١٠٣﴾) (सूरह हूद 11 : 103) 'उस दिन के लिये लोग जमा किए गये हैं और ये दिन मशहूद यानी हाज़िर किया गया है।'

एक शख़्स ने हज़रत हसन बिन अली (रज़ि.) से सवाल किया कि शाहिद और मशहूद क्या है?

आपने फ़रमाया, तुमने किसी और से पूछा? उसने कहा, हाँ! इब्ने उ़मर और इब्ने ज़ुबैर (रज़ि.) से। फ़रमाया, उन्होंने क्या जवाब दिया? कहा, कुर्बानी का दिन और जुम्अ़ा का दिन। फ़रमाया, नहीं बल्कि मुराद शाहिद से मुहम्मद (ﷺ) हैं। जैसे कुरआन में और जगह है, (فَكَيْفَ إِذَا جِئْنَا مِنْ كُلِّ أُمَّةٍ بِشَهِيدٍ وَجِئْنَا بِكَ عَلَىٰ هَٰؤُلَاءِ شَهِيدًا) (सूरह निसा 4 : 41) 'क्या हाल होगा जब हम हर उम्मत में से गवाह लायेंगे और तुझे उन पर गवाह बनायेंगे।' और मशहूद से मुराद क़यामत का दिन है कुरआन कहता है, व ज़ालि-क यौमुम्-मशहूद ये भी मरवी है कि शाहिद से मुराद इब्ने आदम और मशहूद से मुराद क़यामत का दिन और मशहूद से मुराद जुम्अ़ा भी मरवी है और शाहिद से मुराद ख़ुद अल्लाह भी है और अ़रफ़े का दिन भी है।

एक हदीस़ में है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, 'जुम्अ़ा के दिन मुझ पर बकस़रत दरूद पढ़ा करो, वो मशहूद दिन है जिस पर फ़रिश्ते हाज़िर होते हैं।' हज़रत सईद बिन जुबैर (रह.) फ़रमाते हैं, शाहिद अल्लाह है। कुरआन कहता है, (وَكَفَىٰ بِاللَّهِ شَهِيدًا) (सूरह निसा 4 : 79) और मशहूद हम हैं। क़यामत के दिन हम सब अल्लाह के सामने हाज़िर कर दिये जायेंगे। अक्स़र हज़रात का ये फ़रमान है कि शाहिद जुम्अ़ा का दिन है और मशहूद अ़रफ़े का दिन है। इन क़समों के बाद इरशाद होता है कि ख़न्दक़ों वालों पर लानत हो। ये कुफ़्फ़ार की एक क़ौम थी जिन्होंने ईमानदारों को मग़लूब करके उन्हें दीन से हटाना चाहा और उनके इंकार पर ज़मीन में गढ़े खोदकर उनमें लकड़ियाँ भरकर आग भड़काई फिर उनसे कहा कि अब भी दीन से पलट जाओ। उन अल्लाह वाले लोगों ने इंकार किया और उन नाअल्लाह तरस करने वाले कुफ़्फ़ार ने उन मुसलमानों को उस भड़कती हुई आग में डाल दिया। इसी को बयान किया जाता है कि ये लोग हलाक हुए। ये ईंधन भरी भड़कती हुई आग की ख़न्दक़ों के किनारों पर बैठे उन मोमिनों के जलने का तमाशा देख रहे थे और इस अ़दावत व अ़ज़ाब का सबब उन मोमिनों का कोई कुसूर न था, उन्हें तो सिर्फ़ उनकी ईमानदारी पर ग़ज़ब व गुस्सा था। दरअसल ग़ल्बा रखने वाला अल्लाह तआ़ला ही है उसकी पनाह में आ जाने वाला कभी बर्बाद नहीं होता वो अपने तमाम अक़्वाल व अफ़्आ़ल, शरीअ़त और तक़दीर में क़ाबिले तारीफ़ है वो अगर अपने ख़ास बन्दों को किसी वक़्त काफ़िरों के हाथ से तकलीफ़ भी पहुँचा दे और उसका राज़ किसी को मालूम न हो सके तो न हो लेकिन दरअसल वो मस्लिहत व हिक्मत की बिना पर ही होता है। अल्लाह तआ़ला के पाकीज़ा औसाफ़ में से ये भी है कि वो ज़मीनों और आसमानों और कुल मख़्लूक़ात का मालिक है और वो हर चीज़ का हाज़िर-नाज़िर है, कोई चीज़ उससे मख़्फ़ी नहीं।

हज़रत अ़ली (रज़ि.) फ़रमाते हैं कि ये वाक़िया अहले फ़ारस का है। उनके बादशाह ने ये क़ानून जारी करना चाहा कि मुहर्रिमाते अबदिया यानी माँ-बहन, बेटी वग़ैरह सब हलाल हैं। उस वक़्त के उ़लमाए किराम ने इसका इंकार किया और रोका। इस पर उसने ख़न्दक़ें खुदवाकर उसमें आग जलाकर उन हज़रात को उसमें डाल दिया। चुनाँचे ये अहले फ़ारस आज तक उन औरतों को हलाल ही जानते हैं। ये भी मरवी है कि ये लोग यमनी थे मुसलमानों में और काफ़िरों में लड़ाई हुई। मुसलमान ग़ालिब आ गये फिर दूसरी लड़ाई में काफ़िर ग़ालिब आ गये तो उन्होंने गढ़े खुदवाकर ईमान वालों को जला दिया। ये भी मरवी है कि ये वाक़िया अहले हबश का है। ये

भी मरवी है कि ये वाक़िया बनी इस्राईल का है। उन्होंने दानियाल और उनके साथियों के साथ ये सुलूक किया था और अक़्वाल भी हैं।

खाइयों वालों का वाक़िया : मुस्नद अहमद में है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़रमाते हैं, 'अगले ज़माने में एक बादशाह था, उसके यहाँ जादूगर था। जब जादूगर बूढ़ा हुआ तो उसने बादशाह से कहा कि अब मैं बूढ़ा हो गया हूँ और मेरी मौत का वक़्त आ रहा है मुझे किसी बच्चे को सौंप दो तो मैं उसे जादू सिखा दूँ। चुनाँचे एक ज़हीन लड़के को वो तालीम देने लगा। लड़का उसके पास जाता तो रास्ते में एक राहिब का घर पड़ता जहाँ वो इबादत में और कभी वअज़ में मशग़ूल होता। ये भी खड़ा हो जाता उसके तरीक़े इबाद को देखता और वअज़ सुनता। आते-जाते यहाँ रुक जाया करता था। जादूगर भी मारता और माँ-बाप भी मारते । क्योंकि वहाँ भी देर में पहुँचता और यहाँ भी देर में आता। एक दिन उस बच्चे ने राहिब के सामने अपनी ये शिकायत बयान की। राहिब ने कहा कि जब जादूगर तुझसे पूछे कि क्यों देर लग गई तो कह देना कि घर वालों ने रोक लिया था और घर वाले बिगड़ें तो कह देना कि आज जादूगर ने रोक लिया था। यूंही एक ज़माना गुज़र गया कि एक तरफ़ तो वो जादू सीखता था, दूसरी जानिब कलामुल्लाह और अल्लाह का दीन सीखता था। एक दिन ये देखता है कि रास्ते में एक ज़बरदस्त हैबतनाक जानवर पड़ा हुआ है। लोगों की आमद-रफ़्त बंद कर रखी है। इधर वाले उधर और उधर वाले इधर नहीं आ सकते और सब लोग इधर-उधर हैरान व परेशान खड़े हैं। उसने अपने दिल में सोचा कि आज मौक़ा है कि मैं इम्तिहान कर लें कि राहिब का दीन अल्लाह को पसंद है या जादूगर का। उसने एक पत्थर उठाया और ये कहकर उस पर फेंका कि ऐ अल्लाह! अगर तेरे नज़दीक राहिब का दीन और उसकी तालीम जादूगर के अम्र से ज़्यादा महबूब है तो तू इस जानवर को पत्थर से हलाक कर दे, ताकि लोगों को इस बला से निजात मिले। पत्थर के लगते ही वो जानवर मर गया और लोगों का आना-जाना शुरू हो गया। फिर जाकर राहिब को ख़बर दी उसने कहा, प्यारे बच्चे! तू मुझसे अफ़ज़ल है। अब अल्लाह की तरफ़ से तेरी आज़माइश होगी अगर ऐसा हो तो तू किसी को मेरी ख़बर न करना। अब उस बच्चे के पास हाजतमन्द लोगों का तांता लग गया और उसकी दुआ से मादर ज़ाद अन्धे, कोढ़ी, जुज़ामी और हर क़िस्म के बीमार अच्छे होने लगे। बादशाह के एक नाबीना वज़ीर के कान में भी ये आवाज़ पड़ी वो बड़े तोहफ़े-तहाइफ़ लेकर हाज़िर हुआ और कहने लगा कि अगर तू मुझे शिफ़ा दे तो ये सब मैं तुझे दे दूँगा। उसने कहा कि शिफ़ा मेरे हाथ नहीं। मैं किसी को शिफ़ा नहीं दे सकता, शिफ़ा देने वाला तो अल्लाह वह्दहू ला शरीक लहू है। अगर तू उस पर ईमान लाने का वादा करे तो मैं उससे दुआ करूँ, उसने इक़रार किया। बच्चे ने उसके लिये दुआ की, अल्लाह तआला ने उसे शिफ़ा दे दी। वो बादशाह के दरबार में आया और जिस तरह अन्धा होने से पहले काम करता था करने लगा और आँखें बिल्कुल रोशन थीं। बादशाह ने तअज्जुब से पूछा कि तुझे आँखें किसने दीं? उसने कहा, मेरे रब ने। बादशाह ने कहा, हाँ! यानी मैंने। वज़ीर ने कहा, नहीं-नहीं मेरा और तेरा रब अल्लाह है। बादशाह ने कहा, अच्छा तो क्या मेरे सिवा तेरे कोई और रब भी है। वज़ीर ने कहा, हाँ! मेरा और तेरा रब अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल है। अब उसने उसे मार-पीट शुरू कर दी और तरह-तरह की तकलीफ़ें और ईज़ायें पहुँचाने लगा और पूछने लगा, तुझे ये तालीम किसने

दी? आख़िर उसने बता दिया कि उस बच्चे के हाथ पर मैंने इस्लाम कुबूल किया। उसने उसे बुलवाया और कहा, अब तो तुम जादू में ख़ूब कामिल हो गये हो कि अन्धों को देखना और बीमार को तन्दुरुस्त करने लग गये। उसने कहा, ग़लत है। न मैं किसी को शिफ़ा दे सकता हूँ न जादू। शिफ़ा अल्लाह अ़ज़्ज़ व जल्ल के हाथ में है। कहने लगा, हाँ! यानी मेरे हाथ में है क्योंकि अल्लाह तो मैं ही हूँ। उसने कहा, हर्गिज़ नहीं। कहा, फिर क्या तू मेरे सिवा किसी और को रब मानता है। तो वो कहने लगा, हाँ! मेरा और तेरा रब अल्लाह तआ़ला है। उसने अब उसे भी तरह-तरह की सज़ायें देनी शुरू कीं यहाँ तक कि राहिब का पता लगा लिया। राहिब को बुलाकर उससे कहा कि तू इस्लाम को छोड़ दे और इस दीन से पलट जा। उसने इंकार किया तो बादशाह ने आरे से उसे चीर दिया और ठीक दो टुकड़े करके फेंक दिया। फिर उस नौजवान से कहा कि तू भी दीन से फिर जा। उसने भी इंकार किया तो बादशाह ने हुक्म दिया कि हमारे सिपाही इसे फ़लाँ-फ़लाँ पहाड़ पर ले जायें और उसकी बुलंद चोटी पर पहुँचकर फिर इसके दीन छोड़ देने को कहें। अगर मान ले तो अच्छा वरना वहीं से इसे लुढ़का दें। चुनाँचे ये लोग उसे ले गये। जब वहाँ से धक्का देना चाहा तो उसने अल्लाह तबारक व तआ़ला से दुआ़ की अल्लाहुम्मक्-फ़िनीहिम बिमा शिअ्त ऐ अल्लाह! जिस तरह चाह मुझे इनसे निजात दे। इस दुआ़ के साथ ही पहाड़ हिला और वो सब सिपाही लुढ़क गये, सिर्फ़ वो बच्चा ही बचा रहा। वहाँ से वो उतरा और हँसी-ख़ुशी फिर उस ज़ालिम बादशाह के पास आ गया। बादशाह ने कहा कि ये क्या हुआ? मेरे सिपाही कहाँ हैं? फ़रमाया, मेरे अल्लाह ने मुझे उनसे बचा लिया। उसने कुछ और सिपाही बुलवाये और उनसे कहा कि इसे कश्ती में बिठाकर ले जाओ और बीचो-बीच समुन्द्र में डुबो कर चले आओ। ये उसे लेकर चले और बीच में पहुँचकर जब समुन्द्र में फेंकना चाहा तो उसने फिर वही दुआ़ की कि बारे इलाह! जिस तरह चाह मुझे इनसे बचा। मौज उठी और वो सिपाही सारे के सारे समुन्द्र में डूब गये सिर्फ़ वो बच्चा ही बाक़ी रह गया। ये फिर बादशाह के पास आया और कहा, मेरे रब ने मुझे उनसे भी बचा लिया। ऐ बादशाह! तू चाहे तमामतर तदबीरें कर डाल लेकिन मुझे हलाक नहीं कर सकता। हाँ जिस तरह मैं कहूँ उस तरह अगर करे तो अल्बत्ता मेरी जान निकल जायेगी। उसने कहा, क्या करूँ? फ़रमाया, तमाम लोगों को एक मैदान में जमा कर फिर खजूर के तने पर सूली चढ़ा और मेरे तरकश में से एक तीर निकाल कर मेरी कमान पर चढ़ा और बिस्मिल्लाहि रब्बि हाज़ल ग़ुलाम यानी उस अल्लाह तआ़ला के नाम से जो इस बच्चे का रब है! कहकर वो तीर मेरी तरफ़ फेंक वो मुझे लगेगा और उससे मैं मरूँगा। चुनाँचे बादशाह ने यही किया, तीर बच्चे की कनपटी में लगा उसने अपना हाथ उस जगह रख लिया और शहीद हो गया। उसके इस तरह शहीद होते ही लोगों को उसके दीन की सच्चाई का यक़ीन आ गया। चारों तरफ़ से ये आवाज़ें उठने लगीं कि हम सब उस बच्चे के रब पर ईमान ला चुके। ये हाल देखकर बादशाह के साथी बड़े घबराये और बादशाह से कहने लगे, इस लड़के की तरकीब हम तो समझे ही नहीं। देखिये इसका ये असर पड़ा कि ये तमाम लोग इसके मज़हब पर हो गये। हमने तो इसीलिये इसे क़त्ल किया था कि कहीं ये मज़हब फैल न पड़े लेकिन वो डर तो सामने ही आ गया और सब मुसलमान हो गये। बादशाह ने कहा कि अच्छा ये करो कि तमाम मुहल्लों और रास्तों में ख़न्दक़ें खुदवाओ उनमें लकड़ियाँ भरो और उनमें आग लगा

दो। जो उस दीन से फिर जाये उसे छोड़ दो और जो न माने उसे इस आग में डाल दो। उन मुसलमानों ने सब्र व सिहार के साथ आग में जलना मन्ज़ूर कर लिया और उसमें कूद-कूद कर गिरने लगे। अल्बत्ता एक औरत जिसकी गोद में दूध पीता छोटा सा बच्चा था वो ज़रा झिझकी तो उस बच्चे को अल्लाह तआला ने बोलने की ताक़त दी, उसने कहा, अम्माँ क्या कर रही हो तुम तो हक़ पर हो सब्र करो और इसमें कूद पड़ो।' (अहमद : 6/16, सहीह मुस्लिम, किताबुज़्ज़ुहद, बाब किस्सतु अस्हाबिल उख़्दूदु वस्साहिर : 3005) ये हदीस मुस्नद अहमद में भी है और सहीह मुस्लिम के आख़िर में भी है और नसाई में भी क़द्रे इख़्तिसार के साथ है।

तिर्मिज़ी की हदीस में है कि हज़रत सुहैब (रज़ि.) फ़रमाते हैं कि नबी (ﷺ) अस्र की नमाज़ के बाद उमूमन ज़ेरे लब कुछ फ़रमाया करते थे। तो आप (ﷺ) से पूछा गया कि हुज़ूर! क्या फ़रमाते हैं? फ़रमाया, 'नबियों में से एक नबी थे जो अपनी उम्मत पर फ़ख़्र करते थे, कहने लगे, इनकी देखभाल कौन करेगा, तो अल्लाह तआला ने उनकी तरफ़ वह्य भेजी कि उन्हें इख़्तियार है ख़्वाह इस बात को पसंद करें कि मैं ख़ुद उनसे इन्तिक़ाम लूँ, ख़्वाह इस बात को पसंद करें कि मैं उन पर उनके दुश्मनों को मुसल्लत कर दूँ। उन्होंने इन्तिक़ाम को पसंद किया। चुनाँचे एक ही दिन में उनमें से सत्तर हज़ार मर गये उसके साथ ही आप (ﷺ) ने ये हदीस भी बयान की जो ऊपर गुज़री। फिर आख़िर में आप (ﷺ) ने कुतिल से मजीद तक की आयतों की तिलावत फ़रमाई। ये नौजवान शहीद दफ़न कर दिये गये थे और हज़रत उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) की ख़िलाफ़त के ज़माने में उनकी क़ब्र से उन्हें निकाला गया था। उनकी उंगली इसी तरह उनकी कनपटी पर रखी हुई थी जिस तरह बवक़्ते शहादत थी। (तिर्मिज़ी, किताब तफ़्सीरुल क़ुरआन, बाब वमिन सूरतिल बुरूज : 3340, सहीह मुस्लिम : 3005, मुसन्नफ़ अब्दुर्रज़्ज़ाक़ : 9751) इमाम तिर्मिज़ी (रह.) इसे हसन ग़रीब बतलाते हैं। लेकिन इस रिवायत में ये सराहत नहीं कि ये वाक़िया नबी (ﷺ) ने बयान फ़रमाया तो मुम्किन है कि हज़रत सुहैब रूमी (रज़ि.) ने ही इस वाक़िये को बयान फ़रमाया हो, उनके पास नसरानियों की ऐसी हिकायतें बहुत सारी थीं, वल्लाहु आलम!

इमाम मुहम्मद बिन इस्हाक़ (रह.) ने भी इस क़िस्से को दूसरे अल्फ़ाज़ में बयान फ़रमाया है जो इसके ख़िलाफ़ है वो कहते हैं कि नजरानी लोग बुतपरस्त मुश्रिक थे और नजरान के पास एक छोटा सा गाँव था जिसमें एक जादूगर था, नजरानियों को जादू सिखाया करता था। फैमून नामी एक बुज़ुर्ग आलिम यहाँ आये और नजरान और उस गाँव के दरम्यान उन्होंने अपना पड़ाव डाला। शहर के लड़के जो जादूगर से जादू सीखने जाया करते थे उनमें तामिर का एक लड़का अब्दुल्लाह नामी था। उसे आते-जाते राहिब की इबादत और उसकी नमाज़ वग़ैरह के देखने का मौक़ा मिलता। उस पर ग़ौर व ख़ोज करता और दिल में उसके मज़हब की सच्चाई जगह करती जाती। फिर तो उसने यहाँ आना-जाना शुरू कर दिया और मज़हबी तालीम भी उस राहिब से लेने लगा। कुछ दिनों बाद उस मज़हब में दाख़िल हो गया और इस्लाम क़ुबूल कर लिया, तौहीद का पाबंद हो गया और एक अल्लाह तआला की इबादत करने लगा और इल्मे दीन अच्छी तरह हासिल कर लिया। वो राहिब इस्मे आज़म भी जानता था। उसने हर तरह ख़्वाहिश की कि उसे बता दे लेकिन उसने न बताया और कह दिया

कि अभी तुममें इसकी सलाहियत नहीं आई तुम अभी कमज़ोर दिल वाले हो इसकी ताक़त मैं तुममें नहीं पाता। अ़ब्दुल्लाह के बाप तामिर को अपने बेटे के मुसलमान हो जाने की मुत्लक़ ख़बर न थी। वो तो अपने नज़दीक ये समझ रहा था कि मेरा बेटा जादू सीख रहा है और वहीं आता-जाता रहता है। अ़ब्दुल्लाह ने जब देखा कि राहिब मुझे इस्मे आ़ज़म नहीं सिखाते और उन्हें मेरी कमज़ोरी का ख़ौफ़ है तो एक दिन उन्होंने तीर लिये और जितने नाम अल्लाह तबारक व तआ़ला के उन्हें याद थे हर-हर तीर पर एक-एक नाम लिखा फिर आग जलाकर बैठ गये और एक-एक तीर को उसमें डालना शुरू किया। जब वो तीर आया जिस पर आ़ज़म था तो वो आग में पड़ते ही उछलकर बाहर निकल आया और उस पर आग ने बिल्कुल असर न किया। समझ लिया कि यही इस्मे आ़ज़म है। अपने उस्ताद के पास आये और कहा, इस्मे आ़ज़म का इ़ल्म मुझे हो गया। उस्ताद ने पूछा, बताओ क्या है? उसने बताया। राहिब ने पूछा, कैसे मालूम हुआ? तो उसने सारा वाक़िया कह सुनाया। तो फ़रमाया कि भलाई तुमने ख़ूब मालूम कर लिया वाक़ई यही इस्मे आ़ज़म है इसे अपने ही तक रखो लेकिन मुझे डर है कि तुम खुल जाओगे। उनकी ये हालत हुई कि ये नजरान में आये यहाँ जिस बीमार पर, जिस दुखी पर, जिस सितम रसीदा पर नज़र पड़ी उससे कहा कि अगर तुम मुवह्हिद बन जाओ और दीने इस्लाम कुबूल कर लो तो मैं अपने रब से दुआ़ करता हूँ, वो तुम्हें शिफ़ा और निजात दे देगा और दुख-बला को टाल देगा, वो उसे कुबूल कर लेता। ये इस्मे आ़ज़म के साथ दुआ़ करते, अल्लाह तआ़ला उसे भला चंगा कर देता। अब नजरानियों के क़तारें (होड़) लगने लगे और जमाअ़त की जमाअ़त रोज़ाना मुशर्रफ़ बइस्लाम और फ़ाइज़ुल मराम होने लगी। आख़िर बादशाह को इसका इ़ल्म हुआ उसने उसे बुलाकर धमकाया कि तूने मेरी जनता को बिगाड़ दिया और मेरे और मेरे बाप-दादों के मज़हब पर हमला किया। मैं इसकी सज़ा में तेरे हाथ-पाँव काट कर तुझे चोरंग करा दूँगा। अ़ब्दुल्लाह बिन तामिर ने जवाब दिया कि तू ऐसा नहीं कर सकता। अब बादशाह ने उसे पहाड़ पर से गिरा दिया लेकिन वो नीचे आकर सहीह सलामत रहा। सारे जिस्म पर कहीं चोट भी न आई। नजरान के उन तूफ़ान ख़ेज़ दरियाओं में गर्दाब की जगह उन्हें डाला जहाँ से कोई बच नहीं सकता, लेकिन ये वहाँ से भी सेहत व सलामती के साथ वापस आ गये। ग़र्ज़ हर तरह आजिज़ आ गया तो फिर हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन तामिर ने फ़रमाया, ऐ बादशाह सुन! तू मेरे क़त्ल पर कभी क़ादिर न होगा यहाँ तक कि तू उस दीन को मान ले जिसे मैं मानता हूँ और एक अल्लाह की इ़बादत करने लगे अगर तू ये कर लेगा तो फिर तू मुझे क़त्ल कर सकता है। बादशाह ने ऐसा ही किया। उसने हज़रत अ़ब्दुल्लाह का बतलाया हुआ कलिमा पढ़ा और मुसलमान होकर जो लकड़ी उसके हाथ में थी उससे हज़रत अ़ब्दुल्लाह को मारा जिससे कुछ यूंही से खुरेच आई और उसी से वो शहीद हो गये। अल्लाह उनसे ख़ुश हो और अपनी ख़ास रहमतें इनायत फ़रमाये। उनके साथ ही बादशाह भी मर गया। इस वाक़िये ने लोगों के दिलों में ये बात पेवस्त कर दी कि दीन उनका ही सच्चा है। चुनाँचे नजरान के तमाम लोग मुसलमान हो गये और हज़रत ईसा (अ़लै.) के सच्चे दीन पर क़ायम हो गये और वही मज़हब उस वक़्त बरहक़ था। अभी तक हुज़ूर (ﷺ) नबी बनकर दुनिया में आये न थे लेकिन फिर एक ज़माने के बाद उनमें बिदअ़तें पैदा होने लगीं और फैल गईं और दीने हक़ का नूर छिन गया। ग़र्ज़ नजरान में ईसाइयत के फैलने

का असली सबब ये था। एक ज़माने के बाद ज़ूनवास यहूदी ने अपने लश्कर लेकर उन नसरानियों पर चढ़ाई की और ग़ालिब आ गया फिर उनसे कहा या तो यहूदियत क़ुबूल कर लो या मौत। उन्होंने क़त्ल होना मन्ज़ूर किया। उसने ख़न्दक़ें खुदवाकर आग से पुर करके उनको जला दिया। कुछ को क़त्ल भी किया, कुछ के हाथ-पाँव, नाक-कान काट दिये वग़ैरह।

तक़रीबन बीस हज़ार मुसलमानों को उस सरकश ने क़त्ल किया। इसी का ज़िक्र आयत क़ुति-ल अस्हाबुल् उख़्दूद में है। ज़ूनवास का नाम ज़रआ था उसकी बादशाहत के ज़माने में उसे यूसुफ़ कहा जाता था। उसके बाप का नाम बयान अस्अद अबी कुरैब था जो तुब्बअ़ है जिसने मदीना में ग़ज़्वा किया और कअ़बा को पर्दा चढ़ाया उसके साथ दो यहूदी आ़लिम थे। यमन वाले उन ही के हाथ पर यहूदी मज़हब में दाख़िल हुए। ज़ूनवास ने एक ही दिन में सिर्फ़ सुबह के वक़्त उन खाइयों में बीस हज़ार ईमान वालों को क़त्ल किया। उनमें से सिर्फ़ एक ही शख़्स बच निकला जिसका नाम दौस ज़ी सअ़लबान था। ये घोड़े पर भाग खड़ा हुआ। गो उसके पीछे भी घोड़े सवार दौड़ाये लेकिन ये हाथ न लगा। ये सीधा शाहे रोम क़ैसर के पास गया उसने हब्शा के बादशाह नज्जाशी को लिखा। चुनाँचे दौस वहाँ से हब्शा के नसरानियों का लश्कर लेकर यमन आया उसके सरदार अरयात और अबरहा थे। यहूदी मग़लूब हुए यमन यहूदियों के हाथ से निकल गया। ज़ूनवास भाग निकला लेकिन वो पानी में डूब गया। फिर सत्तर साल तक यहाँ हब्शा के नसरानियों का क़ब्ज़ा रहा। बिल्आख़िर सैफ़ बिन ज़ी यज़न हिम्यरी ने फ़ारस के बादशाह से इम्दादी फ़ौजें अपने साथ लीं और सात सौ क़ैदी लोगों से उस पर चढ़ाई करके फ़तह हासिल की और फिर सल्तनते हिम्यरी क़ायम की। इसका कुछ बयान सूरह फ़ील में भी आयेगा, इन्शाअल्लाह तआ़ला!

सीरत इब्ने इस्हाक़ में है कि एक नजरानी ने हज़रत उमर फ़ारूक़ (रज़ि.) के ज़माने में नजरान की एक बंजर ग़ैर आबाद ज़मीन अपने किसी काम के लिये खोदी तो देखा कि हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन तामिर (रह.) का जिस्म उसमें है। आप बैठे हुए हैं, सर पर जिस जगह चोट आई थी वहीं हाथ है। हाथ अगर हटाते हैं तो ख़ून बहने लगता है फिर हाथ को छोड़ देते हैं तो हाथ अपनी जगह चला जाता है और ख़ून थम जाता है। हाथ की एक उंगली में अंगूठी है जिस पर रब्बी अल्लाह लिखा हुआ है यानी मेरा रब अल्लाह है। चुनाँचे इस वाक़िये की इत्तिलाअ़ क़स्रे ख़िलाफ़त में दी गई। यहाँ से हज़रत उमर फ़ारूक़ (रज़ि.) का फ़रमान गया कि उसे यूंही रहने दो और ऊपर से मिट्टी वग़ैरह जो हटाई है वो डाल कर जिस तरह था उसी तरह बेनिशान कर दो, चुनाँचे यही किया गया। इब्ने अबी अद्दुन्या (रह.) ने लिखा है कि जब हज़रत मूसा अश्अ़री (रज़ि.) ने अस्बहान फ़तह किया तो एक दीवार देखी कि वो गिर पड़ी है हुक्म पर बना दी गई लेकिन फिर गिर पड़ी, फिर बनवाई फिर गिर पड़ी। आख़िर मालूम हुआ कि उसके नीचे कोई नेकबख़्त शख़्स मदफ़ून हैं जब ज़मीन खोदी गई तो देखा कि एक शख़्स का जिस्म खड़ा हुआ है। साथ ही एक तलवार है जिस पर लिखा है मैं हारिस बिन मज़ाज़ हूँ जिसने खाइयों वालों से इन्तिक़ाम लिया।

हज़रत अबू मूसा (रज़ि.) ने उस लाश को निकाल लिया और वहाँ दीवार खड़ी करा दी जो बराबर रही। मैं कहता हूँ ये हारिस़ बिन मज़ाज़ बिन अ़म्र जुरहमी है जो कअ़बतुल्लाह के मुतवल्ली हुए थे। स़ाबित बिन इस्माईल बिन इब्राहीम की औलाद के बाद इसका लड़का अम्र बिन हारिस़ बिन मज़ाज़ था जो मक्का में जुरहुम ख़ानदान का आख़िरी बादशाह था। जिस वक़्त कि ख़ुज़ाआ क़बीले ने उन्हें यहाँ से निकाला और यमन की तरफ़ जिला वतन किया यही वो शख़्स है जिसने पहले-पहले अ़रब में शेअ़र कहा जिस शेअ़र में ऊजड़ मक्का को अपना आबाद करना और ज़माने के हेर-फेर से फिर वहाँ से निकाला जाना उसने बयान किया है। इस वाक़िये से तो मालूम होता है कि ये क़िस्सा हज़रत इस्माईल (अ़लै.) के कुछ ज़माने बाद का है और बहुत पुराना है जो कि हज़रत इस्माईल (अ़लै.) के तक़रीबन पाँच सौ साल के बाद का मालूम होता है लेकिन इब्ने इस्हाक़ की इस मुतव्वल (सविस्तार) रिवायत से जो पहले गुज़री ये स़ाबित हो रहा है कि ये क़िस्सा हज़रत ईसा (अ़लै.) के बाद का और हज़रत मुहम्मद (ﷺ) से पहले का है। ज़्यादा ठीक भी यही मालूम होता है, वल्लाहु आ़लम!

और ये भी हो सकता है कि ये वाक़िया दुनिया में कई बार हुआ हो। जैसे इब्ने अबी हातिम की रिवायत से मालूम होता है कि हज़रत अ़ब्दुर्रहमान बिन जुबैर (रह.) फ़रमाते हैं कि तुब्बअ़ के ज़माने में यमन में ख़न्दक़ें खुदवाई गई थीं और क़ुस्तुनतीन के ज़माने में क़ुस्तुन्तुनिया में भी मुसलमानों को यही अ़ज़ाब किया गया था। जब कि नसरानियों ने अपना क़िब्ला बदल दिया, दीने मसीह में बिदअ़तें ईजाद कर लीं, तौहीद को छोड़ बैठे तो उस वक़्त जो सच्चे दीनदार थे उन्होंने उनका साथ न दिया और असली दीन पर क़ायम रहे तो उन ज़ालिमों ने ख़न्दक़ें आग से पुर कराकर उन्हें जला दिया। और यही वाक़िया बाबिल की ज़मीन पर इराक़ में बुख़्ते नस्सर के ज़माने में हुआ जिसने एक बुत बना लिया था और लोगों से उसे सज्दा कराता था, हज़रत दानियाल और उनके दोनों साथी अ़ज़रा और मीशाइल ने इससे इंकार किया तो उसने उन्हें आग की ख़न्दक़ में डाल दिया। अल्लाह तआ़ला ने आग को उन पर ठण्डा कर दिया उन्हें सलामती अ़ता फ़रमाई। साफ़ निजात दी और उन सरकश काफ़िरों को उन ख़न्दक़ों में डाल दिया। ये नौ क़बीले थे सब जलकर ख़ाक हो गये। सुद्दी (रह.) फ़रमाते हैं, तीन जगह ये मामला हुआ, इराक़ में, शाम में और यमन में।

मुक़ातिल (रह.) फ़रमाते हैं कि ख़न्दक़ें तीन जगह थीं, एक तो यमन के शहर नजरान में, दूसरी शाम में, तीसरी फ़ारस में। शाम में उसका बानी अन्तना नौस रोमी था और फ़ारस में बुख़्ते नस्सर और ज़मीने अ़रब पर यूसुफ़ ज़ूनवास शाम और फ़ारस की ख़न्दक़ों का ज़िक्र क़ुरआन में नहीं ये ज़िक्र नजरान का है। हज़रत रबीअ़ बिन अनस (रह.) फ़रमाते हैं कि हमने सुना है फ़तरह के ज़माने में यानी हज़रत ईसा (अ़लै.) और पैग़म्बरे आख़िरुज़्ज़माँ (ﷺ) के दरम्यानी ज़माने में एक क़ौम थी उन्होंने जब देखा कि लोग फ़ित्ने और शर में गिरफ़्तार हो गये हैं और गिरोह-गिरोह बन गये हैं और हर गिरोह अपने ख़्यालात में ख़ुश है तो उन लोगों ने उन्हें छोड़ दिया और यहाँ से हिज्रत करके अलग एक जगह बनाकर वहीं रहना-सहना शुरू किया और अल्लाह तआ़ला की मुख़्लिसाना इबादत में यकसूई के साथ मशग़ूल हो गये, नमाज़ों की पाबंदी, ज़कातों की अदायगी में लग गये और उनसे अलग-थलग रहने लगे। यहाँ तक कि एक सरकश बादशाह को उस अल्लाह वाली जमाअ़त का

पता लग गया। उसने उनके पास अपने आदमी भेजे और उन्हें समझाया कि तुम भी हमारे साथ मिल जाओ और बुतपरस्ती शुरू कर दो। उन सब ने बिल्कुल इंकार किया कि हमसे ये नहीं हो सकता कि अल्लाह वह्दहू ला शरीक लहू के सिवा किसी और की बन्दगी करें। बादशाह ने कहलवाया कि अगर तुम्हें ये मन्ज़ूर नहीं तो मैं तुम्हें क़त्ल कराऊँगा। जवाब मिला कि जो चाहो करो लेकिन हमसे दीन नहीं छोड़ा जायेगा। उस ज़ालिम ने ख़न्दकें खुदवाईं आग जलवाई और उन सब मर्दों-औरतों, बच्चों को जमा किया और उन ख़न्दक़ों के किनारे खड़ा करके कहा, बोलो ये आख़िरी सवाल व जवाब है। क्या बुतपरस्ती क़ुबूल करते हो या आग में गिरना क़ुबूल करते हो? उन्होंने कहा, हमें जल मरना मन्ज़ूर है। लेकिन छोटे-छोटे बच्चों ने चीख़ पुकार शुरू कर दी। बड़ों ने उन्हें समझाया कि बस आज के बाद आग नहीं। न घबराओ और अल्लाह का नाम लेकर कूद पड़ो। चुनाँचे सबके सब कूद पड़े। उन्हें आँच भी नहीं लगने पाई थी कि अल्लाह ने उनकी रूहें क़ब्ज़ कर लीं और आग ख़न्दक़ों से बाहर निकल पड़ी और उन बदकिरदार सरकशों को घेर लिया और जितने भी थे सारे के सारे जला दिये गये। इसकी ख़बर इन आयतों क़ुतिल अल्अख़ में है। तो इस बिना पर फ़तनू के मआना हुए कि जलाया। तो फ़रमाता है कि उन लोगों ने मुसलमान मर्दों-औरतों को ज़ला दिया है अगर उन्होंने तौबा न की यानी अपने इस काम से बाज़ न आये, अपने इस किये पर नादिम न हुए तो उनके लिये जहन्नम है और जलने का अ़ज़ाब है ताकि बदला भी उनके अ़मल जैसा हो। हज़रत हसन बसरी (रह.) फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआ़ला बुज़ुर्ग व बरतर के करम व रहम उसकी मेहरबानी और इनायत को देखो कि जिन बदकारों ने उसके प्यारे बन्दों को ऐसे बदतरीन अ़ज़ाबों से मारा उन्हें भी वो तौबा करने को कहता है और उनसे भी मग़्फ़िरत और बख़्शिश का वादा करता है। ऐ अल्लाह! हमें भी अपनी वसीअ़ रहमतों से भरपूर हिस्सा अ़ता फ़रमा, आमीन!

***

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ جَنَّاتٌ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ذَٰلِكَ
الْفَوْزُ الْكَبِيرُ ⑪ إِنَّ بَطْشَ رَبِّكَ لَشَدِيدٌ ⑫ إِنَّهُ هُوَ يُبْدِئُ وَيُعِيدُ ⑬ وَهُوَ
الْغَفُورُ الْوَدُودُ ⑭ ذُو الْعَرْشِ الْمَجِيدُ ⑮ فَعَّالٌ لِمَا يُرِيدُ ⑯ هَلْ أَتَاكَ
حَدِيثُ الْجُنُودِ ⑰ فِرْعَوْنَ وَثَمُودَ ⑱ بَلِ الَّذِينَ كَفَرُوا فِي تَكْذِيبٍ ⑲ وَاللَّهُ
مِنْ وَرَائِهِمْ مُحِيطٌ ⑳ بَلْ هُوَ قُرْآنٌ مَجِيدٌ ㉑ فِي لَوْحٍ مَحْفُوظٍ ㉒

तर्जुमा : "बेशक ईमान कुबूल करने वालों और नेक काम करने वालों के लिये वो बाग़ात हैं जिनके नीचे नहरें बह रही हैं, यही बड़ी कामयाबी है। (11) यक़ीनन तेरे रब की पकड़ बड़ी सख़्त है। (12) वही पहली मर्तबा पैदा करता है और वही दोबारा पैदा करेगा। (13) वो बड़ा बख़्शिश करने वाला और बहुत मुहब्बत करने वाला है। (14) अर्श का मालिक अज़्मत वाला है। (15) जो चाहे उसे कर गुज़रने वाला है। (16) तुझे लश्करों की ख़बर भी मिली है। (17) यानी फ़िरऔन और समूद की। (18) कुछ नहीं बल्कि काफ़िर तो झुठलाने में पड़े हुए हैं। (19) अल्लाह तआला भी उन्हें हर तरफ़ से घेरे हुए है। (20) बल्कि ये क़ुरआन है बड़ी शान वाला। (21) लौहे महफ़ूज़ में लिखा हुआ।" (22)

जन्नत की नहरों का तज़्किरा (आयत : 11-22) : अपने दुश्मनों का अन्जाम बयान करके अपने दोस्तों का नतीजा बयान फ़रमा रहा है कि उनके लिये जन्नतें हैं जिनके नीचे नहरें जारी हैं। उन जैसी कामयाबी और किसे मिलेगी। फिर फ़रमाता है कि तेरे रब की पकड़ बड़ी सख़्त है। वो अपने उन दुश्मनों को जो उसके रसूलों को झुठलाते रहे और उसकी नाफ़रमानियों में लगे रहे सख़्ततर कुव्वत के साथ इस तरह पकड़ेगा कि कोई राहे निजात उनके लिये बाक़ी न रहे। वो बड़ी कुव्वतों वाला है। जो चाहा किया, जो कुछ चाहता है वो एक लम्हे में हो जाता है। उसकी क़ुदरतों और ताक़तों को देखो कि उसने तुम्हें पहले भी पैदा किया और फिर मार डालने के बाद दोबारा पैदा कर देगा। न उसे कोई रोके न आगे आये न सामने पड़े। वो अपने बन्दों के गुनाहों को माफ़ करने वाला है बशर्तेकि वो उसकी तरफ़ झुकें और तौबा करें और उसके सामने नाक रगड़ें। फिर चाहे कैसी ही ख़तायें हों एक दम में सब माफ़ हो जाती हैं। अपने बन्दों से वो प्यार व मुहब्बत रखता है, वो अर्श वाला है जो अर्श तमाम मख़्लूक़ से बुलंद व बाला और तमाम ख़लाइक़ के ऊपर है। मजीद की दो क़िरअतें हैं दाल का पेश भी और दाल का ज़ेर भी। पेश के साथ वो अल्लाह की सिफ़त बन जायेगा और ज़ेर के साथ अर्श की सिफ़त है। मअने दोनों के बिल्कुल सहीह और दुरुस्त बैठते हैं। वो जिस काम का जब इरादा करे, करने पर क़ुदरत रखता है। उसकी अज़्मत, अदालत, हिक्मत की बिना पर न कोई उसे रोक सके न उससे पूछ सके। हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ (रज़ि.) से उनकी उस बीमारी में जिसमें आपका इन्तिक़ाल होता है लोग कहते हैं कि किसी तबीब ने भी आपको देखा? फ़रमाया, हाँ। पूछा, फिर क्या जवाब दिया? फ़रमाया, जवाब दिया, इन्नी फ़अ़आलुल्-लिमा युरीद।

फिर फ़रमाता है कि क्या तुझे ख़बर भी है कि फ़िरऔनियों और समूदियों पर क्या-क्या अज़ाब आये? और कोई ऐसा न था कि उनकी किसी तरह मदद कर सकता और न कोई उस अज़ाब को हटा सका। मतलब ये है कि उसकी पकड़ सख़्त है। जब वो किसी ज़ालिम को पकड़ता है तो दर्दनाकी और सख़्ती से बड़ी ज़बरदस्त पकड़ पकड़ता है।

इब्ने अबी हातिम में है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) तशरीफ़ ले जा रहे थे कि आपने सुना कोई बीवी साहिबा

क़ुरआन पाक की ये आयत पढ़ रही हैं, हल् अता-क हदीसुल् जुनूद आप खड़े रह गये और कान लगाकर सुनते रहे और फ़रमाया, नअ़म् क़द जाअनी यानी हाँ मेरे पास वो ख़बरें आ गईं। (ये रिवायत मुरसल यानी ज़ईफ़ है।)

यानी क़ुरआन की इस आयत का जवाब दिया कि क्या तुझे फ़िरऔनियों और समूदियों की ख़बर पहुँची है? फिर फ़रमाया कि बल्कि काफ़िर शक व शुब्हा में, कुफ़्र व सरकशी में हैं और अल्लाह उन पर क़ादिर और ग़ालिब है, न ये उससे गुम हो सकें न उसे आजिज़ कर सकें। बल्कि ये क़ुरआन इ़ज़्ज़त व करामत वाला है वो लौहे महफ़ूज़ का नविश्ता है। बुलंद मर्तबा फ़रिश्तों में है। ज़्यादती कमी से पाक और सर ता पा महफ़ूज़ है न उसमें तब्दीली हो न तहरीफ़।

हज़रत अनस (रज़ि.) फ़रमाते हैं कि ये लौहे महफ़ूज़ हज़रत इस्राफ़ील (अ़लै.) की पेशानी पर है। अ़ब्दुर्रहमान बिन सलमान (रह.) फ़रमाते हैं कि दुनिया में जो कुछ हुआ, हो रहा है और होगा वो सब लौहे महफ़ूज़ में मौजूद है और लौहे महफ़ूज़ हज़रत इस्राफ़ील (अ़लै.) की दोनों आँखों के सामने है। लेकिन जब तक उन्हें इजाज़त न मिले वो उसे देख नहीं सकते। हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से मरवी है कि लौहे महफ़ूज़ की पेशानी पर ये इबारत है, 'कोई माबूद नहीं बजुज़ अल्लाह तआ़ला के, वो अकेला है, उसका दीन इस्लाम है, मुहम्मद उसके बन्दे हैं और उसके रसूल हैं जो अल्लाह तआ़ला पर ईमान लाये उसके वादे को सच्चा जाना, उसके रसूलों की ताबेदारी करे अल्लाह जल्ल जलालहू उसे जन्नत में दाख़िल करेगा। फ़रमाते हैं कि ये लौह सफ़ेद मोती की है। इसका तूल आसमान व ज़मीन के दरम्यान के बराबर है और इसकी चौड़ाई मश्रिक़ व मग़्रिब के बराबर है। इसके दोनों किनारे मोती और याक़ूत के हैं। इसके दोनों पुट्ठे सुर्ख़ याक़ूत के हैं। इसका क़लम नूर है। इसका कलाम अ़र्श के साथ वाबस्ता है, इसकी असल फ़रिश्ते की गोद में है। (इसकी सनद में अबू हुज़ैफ़ा इस्हाक़ बिन मुत्तहम बिल्किज़्ब है। अल्मीज़ान : 1/184, 739, लिहाज़ा ये सनद मौज़ूअ़ है।)

मुक़ातिल (रह.) फ़रमाते हैं, ये अल्लाह तआ़ला के अ़र्श के दायें तरफ़ है। तबरानी में है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़रमाते हैं, 'अल्लाह तआ़ला ने लौहे महफ़ूज़ को सफ़ेद मोती से पैदा किया उसके सफ़्हे सुर्ख़ याक़ूत के हैं, उसका क़लम नूर का है, उसकी किताबत नूर है, अल्लाह तआ़ला हर दिन तीन सौ साठ मर्तबा उसे देखता है, वो पैदा करता है, रोज़ी देता है, मारता है, जिलाता है, इ़ज़्ज़त देता है, ज़िल्लत देता है और जो चाहे करता है।' (मुअजम अल्कबीर : 12511, व सनदहू ज़ईफ़ लैस बिन अबी सुलैम ज़ईफ़ है।) अल्हम्दुलिल्लाह सूरह बुरूज की तफ़्सीर ख़त्म हुई, अल्लाह तआ़ला हमें नेक अ़मल की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाये, आमीन!

***

FLOW CHART
तरतीबी नक्श-ए-रब्त

MACRO-STRUCTURE
नज़्मे-जली

सूरह तारिक़ - 86

आयात : 17, मक्की, पैराग्राफ : 4

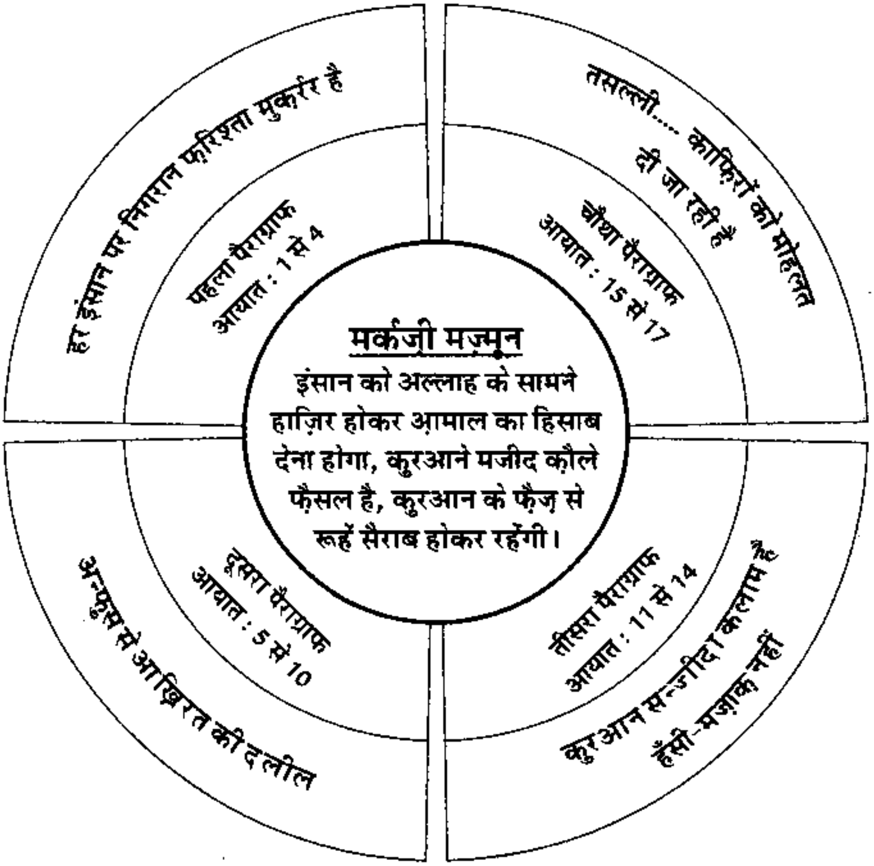

ज़माने-ए-नुज़ूल

सूरह तारिक़ रसूल (सल्ल.) के क़ियामे मक्का के तीसरे दौर (6-10 नबवी) में नाज़िल हुई, जब क़ुरैश आप (सल्ल.) के ख़िलाफ़ गहरी साज़िशों 'कैद' (मक्र) से काम ले रहे थे।

तफ़्सीर सूरह तारिक़

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ ○

तर्जुमा : ''शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है।''

***

सूर-ए-तारिक़ का तआरुफ़ : मुस्नद अहमद में है कि ख़ालिद बिन अबू हबल उदवानी (रज़ि.) ने सक़ीफ़ क़बीले की मश्रिक़ जानिब रसूलुल्लाह (ﷺ) को लकड़ी या कमान पर टेक लगाये हुए इस पूरी सूरत को पढ़ते सुना जबकि आप लोगों से मदद तलब करने के लिये यहाँ आये थे। हज़रत ख़ालिद (रज़ि.) ने इसे याद कर लिया। जब ये सक़ीफ़ के पास आये तो सक़ीफ़ ने उनसे पूछा, ये क्या कह रहे हैं? ये भी उस वक़्त मुश्रिक थे। इन्होंने बयान किया तो जो कुरैश वहाँ थे जल्दी से बोल पड़े कि अगर ये हक़ होता तो क्या अब तक हम न मान लेते। (हसन : अहमद : 4/335, हसन मरवान बिन मुआविया अल्फ़ज़ारी सरह बिस्सिमाअ इन्दत्तबरानी फ़िल्कबीर : 4126, व बाक़िस्सनद हसन : व सहहहू इब्ने ख़ुज़ैमा : 1778)

नसाई में हज़रत जाबिर (रज़ि.) से मरवी है कि हज़रत मुआज़ (रज़ि.) ने मग़रिब की नमाज़ में सूरह बक़रह या सूरह निसा पढ़ी तो हुज़ूर (ﷺ) ने फ़रमाया, 'ऐ मुआज़! क्या तू फ़ित्ने में डालने वाला है? क्या तुझे ये काफ़ी न था कि वस्समाइ वत्तारिक़ और वश्शम्सि वज़ुहाहा और ऐसी ही सूरतें पढ़ लेता।' (इसकी तख़रीज सूरह इन्फ़ितार की इब्तिदा में गुज़र चुकी है।)

***

وَالسَّمَآءِ وَالطَّارِقِ ۝١ وَمَآ اَدۡرٰىكَ مَا الطَّارِقُ ۝٢ النَّجۡمُ الثَّاقِبُ ۝٣ اِنۡ
كُلُّ نَفۡسٍ لَّمَّا عَلَيۡهَا حَافِظٌ ۝٤ فَلۡيَنۡظُرِ الۡاِنۡسَانُ مِمَّ خُلِقَ ۝٥ خُلِقَ مِنۡ مَّآءٍ
دَافِقٍ ۝٦ يَّخۡرُجُ مِنۡۢ بَيۡنِ الصُّلۡبِ وَالتَّرَآئِبِ ۝٧ اِنَّهٗ عَلٰى رَجۡعِهٖ لَقَادِرٌ ۝٨ يَوۡمَ
تُبۡلَى السَّرَآئِرُ ۝٩ فَمَا لَهٗ مِنۡ قُوَّةٍ وَّلَا نَاصِرٍ ۝١٠

तर्जुमा : "क़सम है आसमान की और अन्धेरे में रोशन होने वाले की। (1) तुझे मालूम भी है कि वो रात को नमूदार होने वाली चीज़ क्या है? (2) वो रोशन सितारा है। (3) कोई ऐसा नहीं जिस पर निगेहबान फ़रिश्ता न हो। (4) इंसान को देखना चाहिये कि वो किस चीज़ से पैदा किया गया है। (5) वो एक उछलते पानी से पैदा किया गया है। (6) जो पीठ और सीने के दरम्यान से निकलता है। (7) बेशक वो उसे फेर लाने पर यक़ीनन क़ुदरत रखने वाला है। (8) जिस दिन पौशीदा भेद खुल पड़ेंगे। (9) तो न कोई ज़ोर चले न कोई मददगार हो।" (10)

इंसान की हक़ीक़त (1-10) : अल्लाह तआला आसमानों की और उनके रोशन सितारों की क़सम खाता है। तारिक़ की तफ़्सीर चमकते तारे से की है, वजह ये है कि दिन को छिपे रहते हैं और रात को ज़ाहिर हो जाते हैं। एक हदीस में है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मना फ़रमाया, 'कोई अपने घर रात के वक़्त बेख़बर आ जाये।' (सहीह बुख़ारी, किताबुल उमरह, बाब ला यतरकु अहलहू इज़ा बलग़ल मदीनह : 1801, सहीह मुस्लिम : 715, 1928, अबू दाऊद : 2776, अहमद : 3/299, इब्ने हिब्बान : 4182)

यहाँ भी लफ़्ज़ तुरूक़ है। आप (ﷺ) की एक दुआ में भी तारिक़ का लफ़्ज़ आया है। (अहमद : 3/419, हसन)

साबिक़ कहते हैं, चमकीले और रोशनी वाले को जो शैतान पर गिरता है और उसे जला देता है हर शख़्स पर अल्लाह तआला की तरफ़ से एक मुहाफ़िज़ मुक़र्रर है जो उसे आफ़ात से बचाता है जैसे और जगह है, (لَهٗ مُعَقِّبٰتٌ مِّنْۢ بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهٖ يَحْفَظُوْنَهٗ مِنْ اَمْرِ اللّٰهِ) (सूरह रअ़द 13 : 11) आगे-पीछे से बारी-बारी आने वाले फ़रिश्ते मुक़र्रर हैं जो अल्लाह तआला के हुक्म से बन्दे की हिफ़ाज़त करते हैं।

फिर इंसान की ज़ईफ़ी का बयान हो रहा है कि देखो तो इसकी असल क्या है? और गोया इसमें निहायत बारीकी के साथ क़यामत का यक़ीन दिलाया गया है कि जो इब्तिदाई पैदाइश पर क़ादिर है वो लौटाने पर क़ादिर क्यों न होगा।

जैसे फ़रमाया, (وَهُوَ الَّذِىْ يَبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ وَهُوَ اَهْوَنُ عَلَيْهِ) 'जिसने पहले पैदा किया वो ही दोबारा लौटायेगा और ये उस पर बहुत ही आसान है।' (सूरह रूम 30 : 27) इंसान उछलने वाले पानी यानी औरत मर्द की मनी से पैदा किया गया है जो मर्द की पीठ से और औरत की छाती से निकलती है। औरत का ये पानी ज़र्द रंग और पतला होता है और दोनों से बच्चे की पैदाइश होती है तरीबह कहते हैं हार की जगह को। मूण्ढों से लेकर सीने तक को भी कहा गया है और नरख़रे से नीचे को भी कहा गया है और छातियों के ऊपर के हिस्से को भी कहा गया है और नीचे की तरफ़ चार पस्लियों को भी कहा गया है और दोनों छातियों और दोनों पैरों और दोनों आँखों के दरम्यान को भी कहा गया है। दिल के निचोड़ को भी कहा गया है। सीने और पीठ के दरम्यान को भी कहा जाता है। वो उसके लौटाने पर क़ादिर है यानी निकले हुए पानी को उसकी जगह वापस पहुँचा देने पर और ये मतलब कि उसे दोबारा पैदा करके आख़िरत की तरफ़ लौटाने पर भी। पिछला क़ौल ही

अच्छा है और ये दलील कई मर्तबा बयान हो चुकी है।

फिर फ़रमाया कि क़यामत के दिन पोशीदगियाँ खुल जायेंगी, राज़ ज़ाहिर हो जायेंगे, भेद आश्कारा हो जायेंगे। रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़रमाते हैं, 'हर ग़द्दार (अहद शिक्नी व ख़ाइन) की रानों के दरम्यान उसके ग़दर (अहद शिक्नी) का झण्डा गाड़ दिया जायेगा और ऐलान हो जायेगा कि ये फ़लाँ बिन फ़लाँ की ग़द्दारी (अहद शिक्नी या ख़यानत) है।' (सहीह बुख़ारी, किताबुल जिज़्या, बाब इस्मुल ग़ादिर लिल्बिर्रि वल्फ़ाजिर : 3188, सहीह मुस्लिम : 1735, अबू दाऊद : 2756, अहमद : 2/56, इब्ने हिब्बान : 7342)

उस दिन न तो ख़ुद इंसान को कोई क़ुव्वत हासिल होगी न उसका मददगार कोई और खड़ा होगा। यानी न तो ख़ुद अपने आपको अज़ाबों से बचा सकेगा, न कोई और होगा जो उसे अल्लाह तआला के अज़ाबों से बचा सके।

***

وَالسَّمَآءِ ذَاتِ الرَّجْعِ ⑪ وَالْاَرْضِ ذَاتِ الصَّدْعِ ⑫ اِنَّهٗ لَقَوْلٌ فَصْلٌ ⑬ وَّمَا هُوَ بِالْهَزْلِ ⑭ اِنَّهُمْ يَكِيْدُوْنَ كَيْدًا ⑮ وَّاَكِيْدُ كَيْدًا ⑯ فَمَهِّلِ الْكٰفِرِيْنَ اَمْهِلْهُمْ رُوَيْدًا ⑰

तर्जुमा : "बारिश वाले आसमान की क़सम। (11) और फटने वाली ज़मीन की क़सम। (12) बेशक ये क़ुरआन अल्बत्ता दो टूक फ़ैसला करने वाला कलाम है। (13) ये हँसी की और बेफ़ायदा बात नहीं। (14) अल्बत्ता काफ़िर दाव-घात में हैं। (15) और मैं भी दाव कर रहा हूँ। (16) तू काफ़िरों को मोहलत दे, उन्हें थोड़े दिनों छोड़ दे।" (17)

क़ुरआन के फ़ैसले बरहक़ हैं (आयत : 11-17) : रज्अ के मअने बारिश के, बादल बारिश वाले के, बरसने के, हर साल बन्दों की रोज़ी लौटाने के जिसके बग़ैर ये और इनके जानवर हलाक हो जायें, सूरज और चाँद-सितारों के इधर-उधर लौटने के मरवी हैं। ज़मीन फटती है, दाने घास चारा निकलता है। ये क़ुरआन हक़ है, अद्ल का हुक्म है ये कोई बेकार क़िस्सा, बातें नहीं। काफ़िर इसे झुठलाते हैं, अल्लाह की राह से लोगों को रोकते हैं। तरह-तरह के मकर व फ़रेब से लोगों को ख़िलाफ़े क़ुरआन पर उकसाते हैं। तो ऐ नबी! इन्हें ज़रा सी ढील दे फिर अन्क़रीब देख लेगा कि कैसे-कैसे बदतरीन अज़ाबों में ये पकड़े जाते हैं, जैसे और जगह है, (نُمَتِّعُهُمْ قَلِيْلًا ثُمَّ نَضْطَرُّهُمْ اِلٰى عَذَابٍ غَلِيْظٍ ﴿٢٤﴾) 'हम इन्हें कुछ यूंही सा फ़ायदा देंगे फिर निहायत सख़्त अज़ाब की तरफ़ इन्हें बेबस कर देंगे।' (सूरह लुक़मान 31 : 24)

अल्हम्दुलिल्लाह सूरह तारिक़ की तफ़सीर ख़त्म हुई।

***

FLOW CHART
तरतीबी नक्श-ए-रब्त

MACRO-STRUCTURE
नज़्मे-जली

सूरह अअ़ला - 87

आयात : 19, मक्की, पैराग्राफ : 5

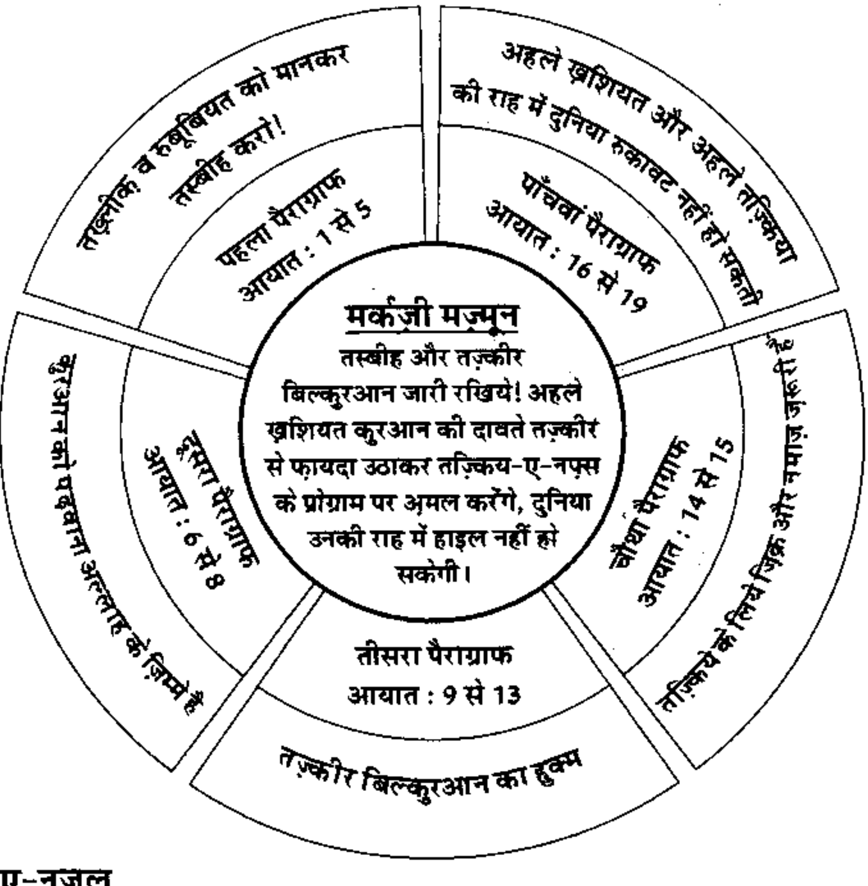

ज़मान-ए-नुज़ूल

1. सूरह अअ़ला क़ियामे मक्का के पहले दौर (0-3 नबवी) में आप (सल्ल.) पर नाज़िल हुई, जब इस्लाम की दावत ख़ुफ़िया तौर पर दी जा रही थी और जब इब्तिदाई दिनों में आप वह्‌य को सुनकर याद करने की कोशिश किया करते थे। सनुक़रिउ-क फ़ला तन्सा

2. इस सूरत का कुछ हिस्सा ग़ालिबन् ऐलाने आ़म के बाद दूसरे दौर के ज़मान-ए-तज़्कीर में नाज़िल हुआ 'फ़ज़क्किर इन्-नफ़अ़तिज़्ज़िक्रा'।

तफ़्सीर सूरह अअ्ला

तआरुफ़े सूरत : इस सूरह के मक्की होने की दलील यह ह़दीस है जो सह़ीह़ बुख़ारी में है। ह़ज़रत बरा' बिन आ़ज़िब (रज़ि.) फ़र्माते हैं कि ''अस्ह़ाबे रसूलुल्लाह (ﷺ) में सबसे पहले हमारे पास ह़ज़रत मुस्अ़ब बिन उ़मेर (रज़ि.) और ह़ज़रत इब्ने उम्मे मक्तूम (रज़ि.) आये, हमें कुरआन पढ़ाना शुरू किया। फिर ह़ज़रत अ़म्मार ह़ज़रत बिलाल ह़ज़रत सअ़द आए। फिर ह़ज़रत उ़मर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) अपने साथ बीस सह़ाबियों को लेकर आए फिर हुज़ूर (ﷺ) तशरीफ़ लाए, मैंने नहीं देखा कि अहले मदीना किसी चीज़ पर इस क़द्र ख़ुश हुए हों जैसे इस पर ख़ुश हुए यहाँ तक कि छोटे छोटे बच्चे और नाबालिग़ लड़के भी पुकार उठे कि यह हैं रसूलुल्लाह (ﷺ) आप तशरीफ़ लाए आप (ﷺ) के आने से पहले ही मैंने यह सूरह सब्बिह़िस्मा इसी जैसी और सूरतों के साथ याद कर ली थी।'' (सह़ीह़ बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरह सब्बिह़िस्म रब्बिकल आ'ला : 4941) मुस्नद अह़मद में है कि हुज़ूर (ﷺ) को यह सूरत बहुत मह़बूब थी। (अह़मद : 1/96; वसनदुहू ज़ईफ़ुन; इसकी सनद में सुवैर बिन अबी फ़ाख़्ता ज़ईफ़ रावी है (अत्तक़रीब : 1/120; रक़म : 54) बुख़ारी व मुस्लिम की ह़दीस में है कि ''हुज़ूर (ﷺ) ने ह़ज़रत मुआज़ (रज़ि.) से फ़र्माया कि तूने सूरह (सब्बिह़िस्मा रब्बिकल आ'ला) और वश्शम्सि व जुह़ाहा) और (वल्लैलि इज़ा यग़शा) के साथ नमाज़ क्यूँ न पढ़ाई?'' (इसकी तख़रीज सूरह इंफ़ित़ार के तह़त इब्तिदा में देखिए।)

मुस्नद अह़मद में मरवी है कि ''ह़ज़रत मुह़म्मद (ﷺ) (सब्बिह़िस्मा रब्बिकल आ'ला) और (हल अताका ह़दीसुल ग़ाशिया) दोनों ईद की नमाज़ों में पढ़ा करते थे और जुम्अ़े वाले दिन अगर ईद होती तो ईद में और जुम्आ में दोनों में इन ही दोनों सूरतों को पढ़ते।'' (सह़ीह़ मुस्लिम, किताबुल जुम्आ, बाब मा युक़रउ फ़ी सलातिल जुम्आ : 878; अबूदाऊद : 1122; तिर्मिज़ी : 533; इब्ने माजा : 1281; अह़मद : 4/271) यह ह़दीस सह़ीह़ मुस्लिम में भी है, अबूदाऊद, तिर्मिज़ी और नसाई में भी है। इब्ने माजा वग़ैरह में भी मरवी है। मुस्नद अह़मद में ह़ज़रत आ़इशा सिद्दीक़ा (रज़ि.) से रिवायत है कि ''वित्र नमाज़ में रसूलुल्लाह (ﷺ) (सब्बिह़िस्मा रब्बिकल आ'ला) और (कुल या अय्युहल काफ़िरून) और (कुल हुवल्लाहु अह़द) पढ़ते थे।'' एक रिवायत में इतनी ज़्यादती भी है कि सूरह मऊ़ज़तन यानी (कुल अऊ़ज़ुबि रब्बिल फ़लक़) और (कुल अऊ़ज़ुबि रब्बिन्नास) भी पढ़ते थे।'' (अबूदाऊद, किताबुल वित्र, बाब मा युक़रउ फ़िल्वित्र : 1423; वहुव सह़ीहुन; 1424; वसनदुहू ज़ईफ़ुन; तिर्मिज़ी : 463; इब्ने माजा : 1173; अह़मद : 6/227) यह ह़दीस भी बहुत से सह़ाबियों से बहुत से त़रीक़ के साथ मरवी है। हमें अगर किताब के मुत़व्वल (लम्बी) हो जाने का डर न होता तो इन सनदों को और तमाम रिवायतों के अल्फ़ाज़ को जहाँ तक मयस्सर होते वारिद करते लेकिन जितना कुछ इख़्तिसार के साथ बयान कर दिया यह भी काफ़ी है, वल्लाहु आ'लम।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

तर्जुमा : ''शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है।''

***

سَبِّحِ اسْمَ رَبِّكَ الْاَعْلَى ۝١ الَّذِىْ خَلَقَ فَسَوّٰى ۝٢ وَالَّذِىْ قَدَّرَ فَهَدٰى
۝٣ وَالَّذِىْٓ اَخْرَجَ الْمَرْعٰى ۝٤ فَجَعَلَهٗ غُثَآءً اَحْوٰى ۝٥ سَنُقْرِئُكَ فَلَا تَنْسٰٓى ۝٦ اِلَّا مَا شَآءَ اللّٰهُ ۭ اِنَّهٗ
يَعْلَمُ الْجَهْرَ وَمَا يَخْفٰى ۝٧ وَنُيَسِّرُكَ لِلْيُسْرٰى ۝٨ فَذَكِّرْ اِنْ نَّفَعَتِ الذِّكْرٰى ۝٩
سَيَذَّكَّرُ مَنْ يَّخْشٰى ۝١٠ وَيَتَجَنَّبُهَا الْاَشْقَى ۝١١ الَّذِىْ يَصْلَى النَّارَ الْكُبْرٰى ۝١٢ ثُمَّ
لَا يَمُوْتُ فِيْهَا وَلَا يَحْيٰى ۝١٣

तर्जुमा : ''अपने बहुत ही बुलंद अल्लाह के नाम की पाकीज़गी बयान कर। (1) जिसने पैदा किया और सही सालिम बनाया (2) और जिसने अंदाज़ा करके तज्वीज़ किया और फिर राह दिखाई (3) और जिसने ताज़ा घास पैदा की (4) फिर उसने उसको सुखाकर स्याह कूड़ा कर दिया (5) हम तुझे पढ़ाएँगे फिर तू न भूलेगा। (6) मगर जो कुछ अल्लाह चाहे, वह ज़ाहिर और पोशीदा को जानता है (7) हम तेरे लिए आसानी पैदा कर देंगे। (8) तू तो नसीहत करता रह अगर नसीहत कुछ फ़ायदा दे (9) डरने वाले तो इब्रत हासिल कर लेंगे (10) हाँ! बदबख़्त लोग इससे दूर रह जाएँगे (11) जो बड़ी आग में जाएँगे (12) जहाँ फिर न वह मरेंगे न जिएँगे (बल्कि हालते नज़्अ में पड़े रहेंगे।)'' (13)

ख़ालिक़ की क़ुदरतें (आयत : 1 से 13) : मुस्नद अहमद में है कि उक़्बा बिन आमिर जोहनी (रज़ि.) फ़र्माते हैं कि ''जब आयत (फ़सब्बिह् बिस्मि रब्बिकल अज़ीम) उतरी तो रसूलुल्लह (ﷺ) ने फ़र्माया इसे तुम रुकूअ में कर लो। (अबूदाऊद, किताबुस्सलात, बाब मा यक़ूलुर्रजुल फ़ी रुकूइही व सुजूदिही : 869; वसनदुहू सहीहुन; इब्ने माजा : 887; अहमद : 4/155) जब (सब्बिहिस्मा रब्बिकल आ'ला) पढ़ते तो कहते (सुब्हान रब्बियल आ'ला) (अबूदाऊद, किताबुस्सलात, बाब अद्दुआउ फ़िस्सलाति : 883; वसनदुहू

ज़ईफ़ुन; अबू इस्हाक़ मुदल्लस रावी है और सिमाअ की तसरीह नहीं है। अहमद : 1/232) हज़रत अली (रज़ि.) से भी यह मरवी है। हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) से भी यह मरवी है और आप (ﷺ) जब (ला उक़्सिमु बि यौमिल क़ियामा) पढ़ते और आख़िरी आयत (अलैसा ज़ालिका बि क़ादिरिन अला अंय्युहयियल मौता) पर पहुँचते तो फ़र्माते (सुब्हानक व बला) अल्लाह तआला यहाँ इर्शाद फ़र्माता है अपने बुलंदियों वाले परवरिश करने वाले अल्लाह के पाक नाम की पाकीज़गी और तस्बीह बयान करो जिसने तमाम मख़्लूक़ रचाई और सबको अच्छी हैयत बख़्शी। इंसान को सआदत शक़ावत (बुराई-भलाई) की रहनुमाई की, जानवर को चरने चुगने वग़ैरह की। जैसे और जगह है (رَبُّنَا الَّذِیْۤ اَعْطٰی کُلَّ شَیْءٍ خَلْقَهٗ ثُمَّ هَدٰی ۝) (20/ताहा : 50) यानी हमारा रब वह है जिसने हर चीज़ को उसकी पैदाइश अता की फिर रहबरी की।

आसमान व ज़मीन की पैदाइश : सहीह मुस्लिम की हदीस में है कि ज़मीन व आसमान की पैदाइश से पचास हज़ार साल पहले अल्लाह तआला ने अपनी मख़्लूक़ की तक़्दीर लिखी उसका अर्श पानी पर था। (सहीह मुस्लिम, किताबुल क़द्र, बाब हिजाज आदम व मूसा : 2653; तिर्मिज़ी : 2156; अहमद : 2/169; इब्ने हिब्बान : 6138) जिसने हर क़िस्म के नबातात और खेत निकाले। फिर उन सरसब्ज़ चारों को ख़ुश्क और स्याह रंग कर दिया। कुछ आरेफ़ाने कलामे अरब ने कहा है कि यहाँ कुछ अल्फ़ाज़ जो ज़िक्र में मुअख़्ख़र हैं मअनी के लिहाज़ से मुक़द्दम हैं यानी मतलब यह है कि जिसने घास चारा सब्ज़ रंग स्याही माइल पैदा किया, फिर उसे ख़ुश्क कर दिया। गो ये मअनी भी बन सकते हैं लेकिन कुछ ज़्यादा ठीक नज़र नहीं आते। क्योंकि मुफ़स्सिरीन (रह.) के अक़्वाल के ख़िलाफ़ हैं। फिर फ़र्माता है कि तुझे हम ऐ मुहम्मद (ﷺ)! ऐसा पढ़ाएँगे जिसे तू भूले नहीं। हाँ! अगर ख़ुद अल्लाह तआला कोई आयत भुला देनी चाहे तो और बात है।

इमाम इब्ने जरीर (रह.) तो इसी मतलब को पसंद करते हैं और मतलब इस आयत का यह है कि जो कुरआन हम तुझे पढ़ाते हैं उसे न भूला। हाँ! जिसे हम ख़ुद मंसूख़ कर दें उसकी और बात है। अल्लाह तआला पर बन्दों के छुपे खुले आमाल अहवाल अक़ाइद सब ज़ाहिर हैं। हम तुझ पर भलाई के काम अच्छी बातें, शरई अम्र आसान कर देंगे। न उनमें कजी होगी न सख़्ती न जुर्म होगा तू नसीहत कर अगर नसीहत फ़ायदा दे। इससे मालूम हुआ कि नालाइक़ों को न सिखाना चाहिए जैसे कि अमीरुल मोमिनीन हज़रत अली (रज़ि.) फ़र्माते हैं कि अगर तुम दूसरों के साथ वह बातें करोगे जो उनकी अक़्ल में न आ सकें तो नतीजा यह होगा कि वह तुम्हारी भली बातें उनके लिए बुरी बन जाएँगी और बाइसे फ़ित्ना हो जाएँगी। बल्कि लोगों से उनकी समझ के मुताबिक़ बातचीत करो ताकि लोग अल्लाह तआला व रसूल (ﷺ) को न झुठलाएँ।

फिर फ़र्माया कि इससे नसीहत वह हासिल करेगा जिसके दिल में अल्लाह तआला का ख़ौफ़ है जो उसकी मुलाक़ात पर यक़ीन रखता है और इससे वह इब्रत व नसीहत हासिल नहीं कर सकता जो बदबख़्त हो, जो जहन्नम में जाने वाला हो जहाँ न तो राहत की ज़िन्दगी है न भली मौत है बल्कि वह दाइमी अज़ाब और हमेशगी की बुराई है इसमें तरह तरह के अज़ाब और बदतरीन सज़ाएँ हैं। मुस्नद अहमद में है कि जो असली

जहन्नमी हैं उन्हें तो न तो मौत आए न कारआमद ज़िन्दगी मिले हाँ! जिनके साथ अल्लाह का इरादा रहमत का है वह आग में गिरते ही जलकर मर जाएँगे फिर सिफ़ारिशी लोग जाएँगे और उनके ढेर छुड़ा लाएँगे फिर नहरे हयात में डाल दिये जाएँगे। जन्नती नहरों का पानी उन पर डाला जाएगा और वह इस तरह जी उठेंगे जिस तरह दाना नाली के किनारे कूड़े पर उग आता है कि पहले सब्ज़ होता है फिर ज़र्द फिर हरा। लोग कहने लगे हुज़ूर (ﷺ) तो इस तरह बयान करते हैं जैसे आप जंगल से वाक़िफ़ हों। (सहीह मुस्लिम, किताबुल ईमान, बाब इस्बातुश्शफ़ाअति व इख़्राजुल मुवह्हिदीना मिनन्नारि : 185; इब्ने माजा : 4309; अहमद : 3/11) यह हदीस मुख़्तलिफ़ अल्फ़ाज़ से बहुत सी कुतुब में मरवी है। कुरआने करीम में एक और जगह वारिद है (وَنَادَوْا يٰمٰلِكُ لِيَقْضِ عَلَيْنَا رَبُّكَ) (43/ज़ुख़रुफ़ : 77) यानी जहन्नमी लोग पुकार पुकारकर कहेंगे कि ऐ मालिक दारोग़-ए-जहन्नम अल्लाह तआला से कह कि वह हमें मौत दे दे। जवाब मिलेगा तुम तो अब इसी में पड़े रहने वाले हो। और जगह है (لَا يُقْضٰى عَلَيْهِمْ فَيَمُوْتُوْا) (35/फ़ातिर : 36) न तो उनको मौत आएगी न अज़ाब ही हल्के होंगे और भी इस मअनी की आयतें हैं।

قَدْ اَفْلَحَ مَنْ تَزَكّٰى ﴿١٤﴾ وَذَكَرَ اسْمَ رَبِّهٖ فَصَلّٰى ﴿١٥﴾ بَلْ تُؤْثِرُوْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا ﴿١٦﴾ وَالْاٰخِرَةُ خَيْرٌ وَّاَبْقٰى ﴿١٧﴾ اِنَّ هٰذَا لَفِی الصُّحُفِ الْاُوْلٰى ﴿١٨﴾ صُحُفِ اِبْرٰهِيْمَ وَمُوْسٰى ﴿١٩﴾

तर्जुमा : "बेशक उन लोगों ने फ़लाह पा ली जो पाक हो गए। (14) और जिन्होंने अपने रब का नाम याद रखा और नमाज़ पढ़ते रहे। (15) लेकिन तुम तो दुनिया का जीना सामने रखते हो। (16) और आख़िरत बहुत बेहतर और बहुत बक़ा वाली है। (17) यह बातें पहली किताबों में भी हैं। (18) (यानी) इब्राहीम और मूसा की किताबों में।" (19)

कामयाब कौन? (आयत : 14 से 19) : अल्लाह तआला फ़र्माता है जिसने रज़ील अख़्लाक़ से अपने आपको पाक कर लिया, अहकामे इस्लाम की ताबेदारी की। नमाज़ को ठीक वक़्त पर क़ायम रखा सिर्फ़ अल्लाह तआला की रज़ामंदी और उसकी ख़ुशनुदी तलब करने के लिए, उसने नजात और फ़लाह पा ली। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने इस आयत की तिलावत करके फ़र्माया कि "जो शख़्स अल्लाह तआला के वहदहू ला शरीक लहू होने की गवाही दे उसके सिवा किसी की इबादत न करे और मेरी रिसालत को मान ले और पाँचों वक़्त की नमाज़ों की पूरी तरह से हिफ़ाज़त करे वह नजात पा गया।" (मुस्नदे बज़्ज़ार : 2284; वसनदुहू ज़ईफ़ुन जिद्दा, मज्मउज़्ज़वाइद : 7/140)

इब्ने अब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं कि इससे मुराद पाँच वक़्त की नमाज़ है। हज़रत अबुल आलिया (रह.) ने एक बार अबू ख़ल्दा से फ़र्माया कि कल जब ईदगाह जाओ तो मुझसे मिलते जाना। जब मैं गया तो

मुझसे कहा कुछ खा लिया है? मैंने कहा, हाँ! फ़र्माया नहा चुके हो? मैंने कहा, हाँ! फ़र्माया, ज़कात अदा कर चुके हो? मैंने कहा, हाँ! फ़र्माया बस यही कहना था कि इस आयत में यही मुराद है। अहले मदीना फ़ित्रा से और पानी पिलाने से अफ़ज़ल और कोई सदक़ा नहीं जानते थे। हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ (रह.) भी लोगों को फ़ित्रा अदा करने का हुक्म करते फिर इसी आयत की तिलावत करते। हज़रत अबुल अहवस (रह.) फ़र्माते हैं कि तुममें से कोई नमाज़ का इरादा करे और कोई साइल आ जाए तो उसे ख़ैरात दे दे फिर यही आयत पढ़ी। (तबरी : 24/374)

हज़रत क़तादा (रह.) फ़र्माते हैं कि उसने अपने माल को पाक कर लिया और अपने रब को राज़ी कर लिया। (तबरी : 24/374) फिर इर्शाद है कि तुम दुनिया की ज़िन्दगी को आख़िरत की ज़िन्दगी पर तर्जीह दे रहे हो, और दरअसल तुम्हारी मस्लिहत, तुम्हारा नफ़ा आख़िरत की ज़िन्दगी को दुनिया की ज़िन्दगी पर तर्जीह देने में है। दुनिया ज़लील है फ़ानी है, आख़िरत शरीफ़ है बाक़ी है। एक आक़िल ऐसा नहीं कर सकता कि फ़ानी को बाक़ी पर इख़्तियार कर ले और उसके इंतिज़ाम में पड़कर उसके एहतिमाम को छोड़ दे। मुस्नद अहमद में है कि "रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं दुनिया उसका घर है जिसका घर आख़िरत में न हो, दुनिया उसका माल है जिसका माल वहाँ न हो, इसके जमा करने के पीछे वह लगते हैं जो बेवक़ूफ़ हों।" (अहमद : 6/71; वसनदुहू ज़ईफ़ुन) इब्ने जरर में है हज़रत अर्फ़जा सक़फ़ी (रह.) इस सूरत को हज़रत इब्ने मसऊद (रज़ि.) के पास पढ़ रहे थे। जब इस आयत पर पहुँचे तो तिलावत छोड़कर अपने साथियों से फ़र्माने लगे कि सच है कि हमने दुनिया को आख़िरत पर तर्जीह दी, लोग ख़ामोश रहे तो आपने फिर फ़र्माया कि इसलिए कि हम दुनिया के गर्वीदा हो गए कि यहाँ की ज़ीनत को, यहाँ की औरतों को, यहाँ के खाने पीने को हमने देख लिया आख़िरत नज़रों से ओझल है तो हमने इस सामने वाली की तरफ़ तवज्जह कर ली और उस दूर वाली से आँखें फेर ली। या तो यह फ़र्मान हज़रत अब्दुल्लाह (रज़ि.) का बतौर तवाज़ोअ के है, या जिंसे इंसान की बाबत फ़र्माते हैं, वल्लाहु आलम! सूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं कि "जिसने दुनिया से मुहब्बत की उसने अपनी आख़िरत को नुक़्सान पहुँचाया और जिसने आख़िरत से मुहब्बत की उसने दुनिया को नुक़्सान पहुँचाया। तुम ऐ लोगों! बाक़ी रहने वालों को फ़ना होने वाली पर तर्जीह दो।" (मुस्नद अहमद : 4/412; वसनदुहू ज़ईफ़ुन; मुत्तलिब बिन अब्दुल्लाह लम यस्मअहू मिन अबी मूसा अश्अरी (रज़ि.))

फिर फ़र्माता है कि इब्राहीम व मूसा (عليهما السلام) के सहीफ़ों में भी यह था। रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं कि "यह सब बयान उन सहीफ़ों में भी था।" (मुस्नदे बज़्ज़ार : 2284; वसनदुहू ज़ईफ़ुन जिद्दा) नसाई में हज़रत अब्बास (रज़ि.) से यह मरवी है और जब आयत (व इब्राहीमल्लज़ी वफ़्फ़ा) नाज़िल हुई तो फ़र्माया कि इससे मुराद यह है कि एक का बोझ दूसरे को न उठाना है। सूरह नज्म में है (اَمْ لَمْ يُنَبَّاْ بِمَا فِىْ صُحُفِ مُوْسٰى) (53/नज्म : 36) आख़िरी मज़्मून तक की तमाम आयतें यानी यह सब अहकाम अगली किताबों में भी थे। इसी तरह यहाँ भी मुराद (सब्बिहिस्म) की यह आयतें हैं। कुछ ने पूरी सूरत कही है, कुछ ने (क़द अफ़्लह) से (अब्क़ा) तक कहा है। ज़्यादा क़वी भी यही मालूम होता है, वल्लाहु आलम!

अल्हम्दुलिल्लाह! सूरह आ'ला की तफ़्सीर मुकम्मल हुई। अल्लाह तआला हर शख़्स को इस पर अमल करने की तौफ़ीक़ दे और अज़ाबे जहन्नम से नजात दे, आमीन!

***

FLOW CHART
तरतीबी नक्श-ए-रब्त

MACRO-STRUCTURE
नज़्मे-जली

सूरह ग़ाशियह - 88

आयात : 26, मक्की, पैराग्राफ : 4

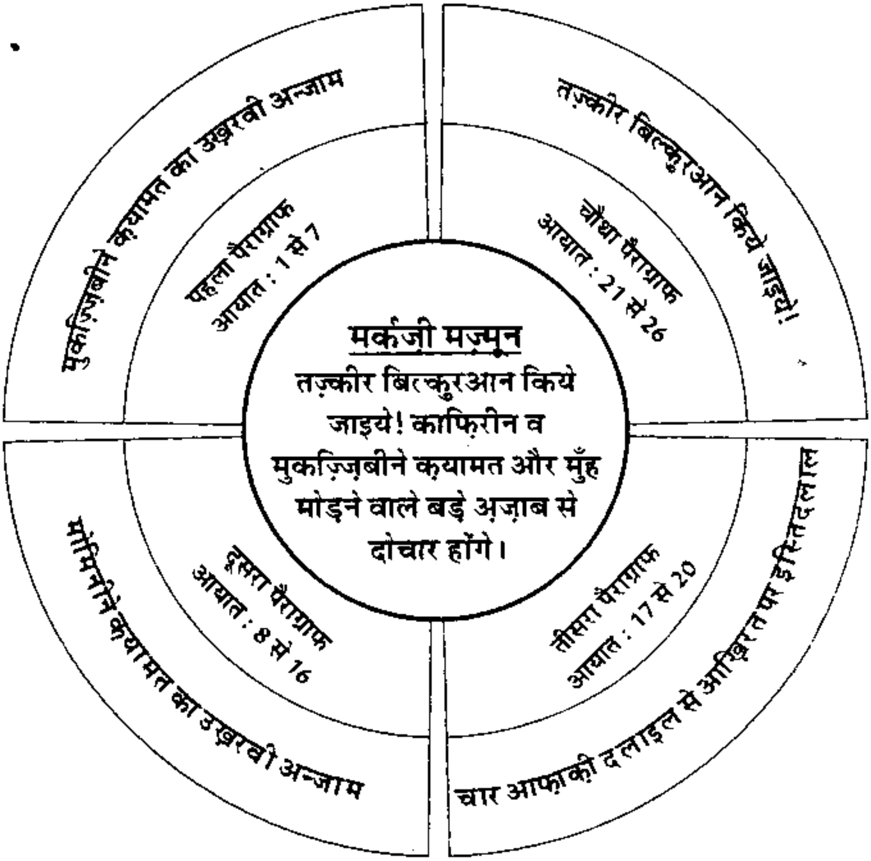

ज़मान-ए-नुज़ूल

सूरह ग़ाशियह की पहली आयत ही से मालूम होता है कि ये ऐलाने आम के बाद रसूल (सल्ल.) के क़ियामे मक्का के दूसरे दौर (4-5 नबवी) के ज़मान-ए-तज़्कीर में नाज़िल हुई।

फ़ज़क्किर इन्नमा अन्-त मुज़क्किर नसीहत व तज़्कीर कीजिये! आप तज़्कीर करने वाले ही तो हैं।

तफ़्सीर सूरह ग़ाशिया

तआरुफ़े सूरत : यह ह़दीस पहले गुज़र चुकी है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) सब्बिहिस्म और ग़ाशिया को नमाज़े ईदैन और जुम्आ में पढ़ते थे। (देखिए सूरह आ'ला) मौता इमाम मालिक में है कि जुम्अे के दिन पहली रकअत में सूरह जुम्आ और दूसरी में हल अताका ह़दीसुल ग़ाशिया पढ़ते थे। (स़ह़ीह़ मुस्लिम, किताबुल जुम्आ, बाब मा युक़रउ फ़ी स़लातिल जुम्आ : 878; अबूदाऊद : 1123; नसाई : 1423; इब्ने माजा : 1119)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

तर्जुमा : ''शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रह़म वाला है।''

***

هَلْ اَتٰىكَ حَدِيْثُ الْغَاشِيَةِ ① وُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍ خَاشِعَةٌ ② عَامِلَةٌ نَّاصِبَةٌ ③

تَصْلٰى نَارًا حَامِيَةً ④ تُسْقٰى مِنْ عَيْنٍ اٰنِيَةٍ ⑤ لَيْسَ لَهُمْ طَعَامٌ اِلَّا مِنْ ضَرِيْعٍ

⑥ لَّا يُسْمِنُ وَلَا يُغْنِيْ مِنْ جُوْعٍ ⑦

तर्जुमा : ''क्या तुझे भी छुपा लेने वाली क़ियामत की ख़बर पहुँची है। (1) उस दिन बहुत से चेहरे ज़लील (2) और मुसीबत के मारे ख़स्ता ह़ाल होंगे (3) वह दहकती हुई आग में जाएँगे (4) और निहायत गर्म चश्मे का पानी उनको पिलाया जाएगा। (5) उनके लिए सिवा काँटेदार दरख़्तों के और कुछ खाना न होगा। (6) जो न बदन बढ़ाएगा, न भूख मिटाएगा।'' (7)

क़ियामत का तज़्किरा (आयत : 1 से 7) : ग़ाशिया क़ियामत का नाम है इसलिए कि वह सब पर आएगी, सबको घेरे हुए होगी और हर एक को ढाँप लेगी। इब्ने अबी ह़ातिम में है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) कहीं जा रहे थे कि एक औरत की क़ुरआन पढ़ने की आवाज़ आई, आप खड़े होकर सुनने लगे। उसने यही आयत (हल अताका) पढ़ी यानी क्या तेरे पास ढाँप लेने वाली क़ियामत की बात पहुँची है? तो आपने जवाब में फ़र्माया (नअम क़द जाअनी) यानी हाँ! मेरे पास पहुँच चुकी है। (इसकी तख़रीज सूरह बुरूज आयत 22 के तह़त गुज़र

चुकी है।) उस दिन बहुत से लोग ज़लील चेहरों वाले होंगे, पस्ती उन पर बरस रही होगी उनके आमाल ग़ारत हो गए होंगे और बड़े बड़े आमाल किये थे सख़्त तक्लीफ़ें उठाई थीं वह आज भड़कती हुई आग में दाख़िल हो गए।

एक बार हज़रत उमर (रज़ि.) एक ख़ानक़ाह के पास से गुज़रे वहाँ के राहिब को आवाज़ दी वह हाज़िर हुआ, आप उसे देखकर रो दिये। लोगों ने पूछा हज़रत क्या बात है? तो फ़र्माया उसे देखकर यह आयत याद आग गई कि इबादत रियाज़त करते हैं लेकिन आख़िर जहन्नम में जाएँगे। (हाकिम : 2/522; वसनदुहू ज़ईफ़ुन लि इंक़िताइही; अबू इमरान अब्दुल मलिक बिन हबीब जूनी लम युदरिक उमर (रज़ि.)) हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं इससे मुराद नसरानी हैं। (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, तहत सूरत (हल अताका)) इक्रिमा और सुद्दी (रह.) फ़र्माते हैं कि दुनिया में गुनाहों के काम करते रहे और आख़िरत में अज़ाब की और मार की तक्लीफ़ें बर्दाश्त करेंगे। यह सख़्त भड़कने वाली जलती, तपती आग में जाएँगे जहाँ सिवा ज़रीअ के और कुछ खाने को न मिलेगा, यह आग का दरख़्त होगा, जहन्नम का पत्थर होगा, यह उफ़ूर की बेल होगी, उसमें ज़हरीले काँटेदार फल लगे होंगे, यह बदतरीन खाना होगा और निहायत ही बुरा होगा, न बदन बढ़ाएगा और न भूख मिटाएगा और न नुक़्सान दूर होगा।

***

وُجُوهٌ يَّوْمَئِذٍ نَّاعِمَةٌ ۝٨ لِّسَعْيِهَا رَاضِيَةٌ ۝٩ فِىْ جَنَّةٍ عَالِيَةٍ ۝١٠ لَّا تَسْمَعُ فِيْهَا
لَاغِيَةً ۝١١ فِيْهَا عَيْنٌ جَارِيَةٌ ۝١٢ فِيْهَا سُرُرٌ مَّرْفُوعَةٌ ۝١٣ وَّاَكْوَابٌ مَّوْضُوعَةٌ ۝١٤
وَّنَمَارِقُ مَصْفُوفَةٌ ۝١٥ وَّزَرَابِىُّ مَبْثُوثَةٌ ۝١٦

तर्जुमा : "बहुत से चेहरे उस दिन तरोताज़ा और आसूदा हाल होंगे (8) अपने आमाल से ख़ुश होंगे (9) बुलंद व बाला जन्नतों में होंगे (10) जहाँ कोई बेहूदा बात कान में न पड़ेगी। (11) जहाँ चश्में (झरने) जारी होंगे (12) और ऊँचे ऊँचे तख़्त होंगे (13) और आबख़ोरे रखे हुए होंगे (14) और एक क़तार में लगे हुए तकिये होंगे (15) और मख़मली मस्नदें (बैठकें) फैली पड़ी होंगी।" (16)

नेकों पर इन्आमात (आ. 8 से 16) : ऊपर चूँकि बदकारों का बयान और उनके अज़ाबों का ज़िक्र हुआ था तो यहाँ नेककारों का और उनके सवाबों का बयान हो रहा है। तो फ़र्माया कि उस दिन बहुत से चेहरे ऐसे भी होंगे जिन पर ख़ुशी के और आसूदगी के आसार ज़ाहिर होंगे, यह अपने आमाल से ख़ुश होंगे जन्नतों के बुलंद बालाख़ानों में होंगे जिसमें कोई लग़्व बात कान में न पड़ेगी, जैसे फ़र्माया (لَا يَسْمَعُوْنَ فِيْهَا

(لَغۡوًا اِلَّا سَلٰمًا) (19/मरयम : 62) इसमें सिवा सलामती और सलाम के कोई बुरी बात न सुनेंगे। और फ़र्माया (لَا لَغۡوٌ فِيۡهَا وَلَا تَاۡثِيۡمٌ) (52/तूर : 23) न उसमें बेहूदगी है न गुनाह की बातें।

और फ़र्माता है (لَا يَسۡمَعُوۡنَ فِيۡهَا لَغۡوًا وَّلَا تَاۡثِيۡمًا ﴿۲۵﴾ اِلَّا قِيۡلًا سَلٰمًا سَلٰمًا ﴿۲۶﴾) (56/वाक़िया : 25, 26) न उसमें फ़िज़ूलगोई सुनेंगे न बद बातें सिवा सलाम ही सलाम के और कुछ न होगा। उसमें बहती हुई नहरें होंगी। यहाँ नकरह इस्बात के स्याक़ में है एक ही नहर मुराद नहीं बल्कि जिंसे नहर मुराद है यानी नहरें बहती होंगी। रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं जन्नत की नहरें मुश्क के पहाड़ों और मुश्क के टीलों से निकलती हैं। (इब्ने हिब्बान : 7408; वसनदुहू हसन; दूसरा नुस्ख़ा : 7365) उसमें ऊँचे ऊँचे बुलंद व बाला तख़्त हैं जिन पर बेहतरीन फ़र्श हैं और उनके पास हूरें बैठी हुई हैं गो यह तख़्त बहुत ऊँचे और ज़ख़ामत वाले हैं लेकिन जब यह अल्लाह तआला के दोस्त उन पर बैठना चाहेंगे तो वह झुक जाएँगे, शराब के भरपूर जाम इधर उधर क़रीने से चुने हुए हैं जो चाहे, जिस क़िस्म का चाहे, जिस मिक़्दार में चाहे ले ले और पी ले, और तकिये हैं एक क़तार में लगे हुए और इधर उधर बेहतरीन बिस्तरे और फ़र्श बाक़ायदा बिछे हुए हैं।

इब्ने माजा वग़ैरह में हदीस है कि रसूलुल्लाह (ﷺ)फ़र्माते हैं, ''कोई है जो तहबन्द चढ़ाए, जन्नत की तैयारी कर ले, उस जन्नत की जिसकी लम्बाई चौड़ाई बेहिसाब है, रब्बे कअबा की क़सम! वह एक चमकता हुआ नूर है, वह एक लहलहाता हुआ सब्ज़ा है, वह बुलंद व बाला महल्लात हैं, वह बहती हुई नहरें हैं, वह बकसरत रेशमी हुल्ले हैं, वह पके पकाये तैयार उम्दा फल हैं, वह हमेशगी वाली जगह है, वह सरासर मेवे जात, सब्ज़ा राहत और नेअमत है वह तरोताज़ा बुलंद व बाला जगह है। सब लोग बोल उठे कि हम सब उसके ख़्वाहिशमंद हैं और उसके लिए तैयारी करेंगे। फ़र्माया कि इंशाअल्लाह तआला कहो। सहाबा किराम (रज़ि.) ने इंशाअल्लाह तआला कहा।'' (इब्ने माजा, किताबुज़्ज़ुहद, बाब सिफ़तुल जन्ना : 4332; वसनदुहू ज़ईफ़ुन; ज़हहाक मआफ़िरी मज्हूलुल हाल रावी है। इब्ने हिब्बान : 7381)

***

اَفَلَا يَنۡظُرُوۡنَ اِلَى الۡاِبِلِ كَيۡفَ خُلِقَتۡ ﴿۱۷﴾ وَاِلَى السَّمَآءِ كَيۡفَ رُفِعَتۡ ﴿۱۸﴾ وَاِلَى
الۡجِبَالِ كَيۡفَ نُصِبَتۡ ﴿۱۹﴾ وَاِلَى الۡاَرۡضِ كَيۡفَ سُطِحَتۡ ﴿۲۰﴾ فَذَكِّرۡ ۟ اِنَّمَاۤ اَنۡتَ
مُذَكِّرٌ ﴿۲۱﴾ لَسۡتَ عَلَيۡهِمۡ بِمُصَيۡطِرٍ ﴿۲۲﴾ اِلَّا مَنۡ تَوَلّٰى وَكَفَرَ ﴿۲۳﴾ فَيُعَذِّبُهُ اللّٰهُ
الۡعَذَابَ الۡاَكۡبَرَ ﴿۲۴﴾ اِنَّ اِلَيۡنَاۤ اِيَابَهُمۡ ﴿۲۵﴾ ثُمَّ اِنَّ عَلَيۡنَا حِسَابَهُمۡ ﴿۲۶﴾

तर्जुमा : "क्या यह ऊँटों को नहीं देखते कि वह किस तरह पैदा किये गए हैं (17) और आसमान को कि किस तरह ऊँचा किया गया है (18) और पहाड़ों की तरफ़ कि किस तरह गाड़ दिये गए हैं। (19) और ज़मीन की तरफ़ कि किस तरह बिछाई गई है (20) पस तू तो नसीहत कर दिया कर क्योंकि तू सिर्फ़ नसीहत करने वाला है (21) तू कुछ उन पर दारोग़ा नहीं है (22) हाँ! जो शख़्स रूगर्दानी करे और कुफ़्र करे। (23) उसे अल्लाह तआला बहुत बड़ा अ़ज़ाब देगा। (24) बेशक हमारी तरफ़ उनका लौटना है (25) फिर बेशक हमारे ज़िम्मे है उनसे हिसाब लेना।" (26)

क्या मुंकिरीन अल्लाह तआला की निशानियों को नहीं देखते (आ. 17 से 26) : अल्लाह तआला अपने बन्दों को हुक्म देता है कि वह उसकी मख़्लूक़ात पर तदब्बुर के साथ नज़रें डालें और देखें कि उसकी बेइंतिहा क़ुदरत उनमें से हर हर चीज़ से इस तरह ज़ाहिर होती है, उसकी पाक ज़ात पर हर हर चीज़ किस तरह दलालत कर रही है, ऊँट को ही देखो कि किस अ़जीबो ग़रीब तर्कीब और हेयत (शक्ल) का है कितना मज़बूत और क़वी है और बावजूद उसके किस तरह नर्मी और आसानी से बोझ लाद लेता है और एक बच्चे के साथ भी किस तरह इताअ़त गुज़ार बनकर चलता है। उसका गोश्त भी तुम्हारे खाने में आता है, उसके बाल भी तुम्हारे काम आते हैं, उसका दूध तुम पीते हो और तरह तरह के फ़ायदे उठाते हो। सबसे पहले उसे इसलिए बयान किया गया कि उमूमन अ़रब के मुल्क में और अ़रबों के पास यही जानवर था (उस जानवर की तरफ़ ख़ास तौर पर तवज्जह इसलिए डाली गई है कि उसके खाने पीने का, चलने का, बैठने का, रफ़ए हाजत का और तनासुल का तरीका सब जानवरों से जुदागाना है। अगर एक बार खा पी लेता है तो हफ़्तों काफ़ी रहता है। बैठता अजीब तरह है।

हज़रत शुरैह क़ाज़ी फ़र्माया करते थे कि आओ चलो चल कर देखें कि ऊँट की पैदाइश किस तरह है और आसमान की बुलंदी ज़मीन से किस तरह है वग़ैरह। और जगह इर्शाद है (اَفَلَمْ يَنْظُرُوْٓا اِلَى السَّمَآءِ فَوْقَهُمْ) (50/क़ाफ़ : 6) क्या इन लोगों ने अपने ऊपर आसमान को नहीं देखा कि हमने इसे किस तरह बनाया, कैसे मुज़य्यन किया और एक सूराख़ नहीं छोड़ा। फिर पहाड़ों को देखो कि कैसे गाड़ दिये गए ताकि ज़मीन हिल न सके और पहाड़ भी अपनी जगह न छोड़ सकें, फिर उसमें जो भलाई और नफ़ा की चीज़ें पेदा की हैं उन पर भी नज़र डालो, ज़मीन को देखो कि किस तरह फैला कर बिछा दी गई है, ग़र्ज़ यहाँ उन चीज़ों का ज़िक्र किया जो क़ुरआन के मुख़ातब अ़रबों के हर वक्त पेशेनज़र रहा करती हैं, एक बदवी जो अपने ऊँट पर सवार होकर निकलता है ज़मीन उसके नीचे होती है आसमान उसके ऊपर होता है। पहाड़ उसकी नज़रों के सामने होते हैं और ऊँट पर ख़ुद सवार है। इन बातों से ख़ालिक़ की क़ुदरते कामिला और सन्अ़ते ज़ाहिरा बिलकुल हुवैदा है और साफ़ ज़ाहिर है कि ख़ालिक़, सानेअ़, रब्बे अ़ज़्मत इज़्ज़त वाला मालिक और मुतसर्रिफ़ मअ़बूदे बरहक़ और अल्लाह हक़ीक़ी सिर्फ़ वही है, उसके सिवा कोई ऐसा नहीं जिसके सामने हम अपनी

आजिज़ी और पस्ती का इज़्हार करें, जिसे हम हाजतों के वक़्त पुकारें, जिसका नाम जपें और जिसके सामने सर ख़म करें।

हज़रत ज़िमाम (रज़ि.) ने जो सवालात हुज़ूर (ﷺ) से किये थे वह इस तरह की क़समें देकर किये थे। बुख़ारी, मुस्लिम, तिर्मिज़ी, मुस्नद अहमद वगैरह में हदीस है हज़रत अनस (रज़ि.) फ़र्माते हैं कि "हमें बार बार सवालात करने से रोक दिया गया था, तो हमारी यह ख़्वाहिश रहती थी कि बाहर का कोई अक़्लमंद शख़्स आए वह सवालात करे हम भी मौजूद हों और फिर हुज़ूर (ﷺ) की ज़ुबानी जवाबात सुनें, चुनाँचे एक दिन एक बादिया नशीन आए और कहने लगे, ऐ मुहम्मद (ﷺ)! आपके क़ासिद हमारे पास आए और हमसे कहा कि आप फ़र्माते हैं कि अल्लाह तआला ने आपको अपना रसूल बनाया है। आप (ﷺ) ने फ़र्माया उसने सच कहा। वह कहने लगा बतलाइए किसने आसमान को पैदा किया? आप (ﷺ) ने फ़र्माया अल्लाह तआला ने, कहा ज़मीन किसने पैदा की? आप (ﷺ) ने फ़र्माया, अल्लाह तआला ने, कहा इन पहाड़ों को किसने गाड़ दिया? और इनमें यह फ़ायदे की चीज़ें किसने पैदा कीं? आप (ﷺ) ने फ़र्माया अल्लाह तआला ने। कहा पस आपको क़सम है उस अल्लाह तआला की जिसने आसमान व ज़मीन पैदा किये और इन पहाड़ों को गाड़ दिया, अल्लाह तआला ही ने आपको अपना रसूल बनाकर भेजा है? आपने फ़र्माया हाँ! कहा आपके क़ासिद ने यह भी कहा कि हम पर रात दिन में पाँच नमाज़ें फ़र्ज़ हैं। फ़र्माया उसने सच कहा। कहा उस अल्लाह तआला की आपको क़सम है जिसने आपको भेजा है कि क्या यह अल्लाह का हुक्म है? आप (ﷺ) ने फ़र्माया हाँ! कहा आपके क़ासिद ने यह भी कहा कि हमारे मालों में हम पर ज़कात फ़र्ज़ है। फ़र्माया सच है। कहा आपको अपने भेजने वाले अल्लाह की क़सम! क्या अल्लाह ने आपको यह हुक्म दिया है? फ़र्माया, हाँ! कहा और आपके क़ासिद ने हममें से ताक़त रखने वाले लोगों को हज्ज का हुक्म भी दिया है? आपने फ़र्माया, हाँ! उसने सच कहा। वह यह सुनकर यह कहता हुआ चल दिया कि उस अल्लाह ला शरीक की क़सम! जिसने आपको हक़ के साथ भेजा है न मैं उन पर कुछ ज़्यादती करूँ, न उनमें कोई कमी करूँ। नबी (ﷺ) ने फ़र्माया, अगर उसने सच कहा तो यह जन्नत में दाख़िल होगा।" (सहीह मुस्लिम, किताबुल ईमान, बाब अस्सुआलु अन अरकानिल इस्लाम : 12; तिर्मिज़ी : 619; अहमद : 3/143) कुछ रिवायात में है कि उसने कहा मैं ज़िमाम बिन सअल्बा (रज़ि.) हूँ बनू सअद बिन बक्र का भाई। (सहीह बुख़ारी, किताबुल इल्म, बाब अल क़िराअतु वल अर्ज़ु अलल मुहद्दिसः 63; अबूदाऊद : 486; इब्ने माजा : 1402; अहमद : 3/168; इब्ने हिब्बान : 154)

अबू यअला में है कि "रसूलुल्लाह (ﷺ) हमें अक्सर यह हदीस सुनाया करते थे कि ज़माना जाहिलियत में एक औरत पहाड़ पर थी उसके साथ उसका एक छोटा सा बच्चा था, यह औरत बकरियाँ चराया करती थी, उसके लड़के ने उससे पूछा कि अम्माजान! तुम्हें किसने पैदा किया? उसने कहा, अल्लाह ने! पूछा मुझे? कहा अल्लाह ने, पूछा आसमान को? कहा अल्लाह ने, पूछा मेरे अब्बा जी को किसने पैदा किया? उसने कहा अल्लाह ने। पूछा पहाड़ों को? बतलाया कि उन्हें भी अल्लाह ने पैदा किया है। बच्चे ने फिर सवाल किया कि अच्छा इन बकरियों को किसने पैदा किया? माँ ने कहा, इन्हें भी अल्लाह तआला ने पैदा किया है।

बच्चे के मुँह से बेइख़्तियार निकला कि अल्लाह तआला बड़ी शान वाला है। उसका दिल अज़्मते अल्लाह से भर गया वह अपने नफ़्स पर क़ाबू न रख सका और पहाड़ पर से गिर पड़ा टुकड़े टुकड़े हो गया।" (वसनदुहू ज़ईफ़ुन; इसकी सनद में अब्दुल्लाह बिन जअफ़र मदीनी ज़ईफ़ रावी है (अल्मीज़ान : 2/401; रक़्म : 4247)

इब्ने दीनार (रह.) फ़र्माते हैं कि हज़रत इब्ने उमर (रज़ि.) भी यही हदीस हमसे अक्सर बयान फ़र्माया करते थे। इस हदीस की सनद में अब्दुल्लाह बिन जअफ़र मदीनी ज़ईफ़ हैं।

इमाम अली बिन मदीनी (रह.) जो उनके साहबज़ादे और जरह व तअदील के इमाम हैं वह उन्हें यानी अपने वालिद को ज़ईफ़ बतलाते हैं फिर फ़र्माता है कि ऐ नबी (ﷺ)! तुम तो अल्लाह की रिसालत की तब्लीग़ किया करो, तुम पर सिर्फ़ पहुँचाना है, हिसाब हमारे ज़िम्मे है। आप (ﷺ) उन पर मुसल्लत नहीं हैं, जबर करने वाले नहीं हैं, उनके दिलों में आप ईमान पैदा नहीं कर सकते, आप उन्हें ईमान लाने पर मजबूर नहीं कर सकते। रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं "मुझे हुक्म हुआ है कि मैं लोगों से लड़ूँ यहाँ तक कि ला इलाहा इल्लल्लाह कहें, जब वह उसे कह लें तो उन्होंने अपने जान व माल मुझसे बचा लिए मगर हक़्क़े इस्लाम के साथ और उनका हिसाब अल्लाह तआला के ज़िम्मे है। फिर आप (ﷺ) ने इसी आयत की तिलावत की।" (सहीह मुस्लिम, किताबुल ईमान, बाब अल्अम्र बि क़िताल्लिन्नासि हत्ता यक़ूलू ला इलाहा इल्लल्लाह.... : 21; तिर्मिज़ी : 3341; अहमद : 3/300)

फिर फ़र्माता है मगर वह जो मुँह मोड़े और कुफ़्र करे, यानी न अमल करे न ईमान लाए न इक़रार करे जैसे फ़र्मान है (﴿فَلَا صَدَّقَ وَلَا صَلّٰى ﴿٣١﴾ وَلٰكِنْ كَذَّبَ وَتَوَلّٰى ﴿٣٢﴾) (75/क़ियामा : 31, 32) न तो हक़ बात की तस्दीक़ की और न नमाज़ पढ़ी बल्कि झुठलाया और चेहरा फेर लिया। इसीलिए इसे बहुत बड़ा अज़ाब होगा। हज़रत अबू उमामा बाहिली (रज़ि.) हज़रत ख़ालिद बिन यज़ीद बिन मुआविया के पास गए तो उसने कहा कि "आपने नबी (ﷺ) से जो आसान से आसान हदीस सुनी हो उसे मुझे सुनाएँ। तो आपने फ़र्माया मैंने हुज़ूर (ﷺ) से सुना है कि तुममें से हर एक जन्नत में जाएगा मगर वह जो इस तरह की सरकशी करे जैसे शरीर ऊँट अपने मालिक पर करता है।" (अहमद : 5/258; ह : 22226; अल्हाकिम : 1/55, 56; व सनदुहू हसन) इन सबको लौटना हमारी ही जानिब है और फिर हम ही इनसे हिसाब लेंगे और इन्हें बदला देंगे, नेकी का नेक, बदी का बद।

अल्हम्दुलिल्लाह! सूरह ग़ाशिया की तफ़्सीर मुकम्मल हुई।

***

FLOW CHART
तरतीबी नक्श-ए-रब्त

MACRO-STRUCTURE
नज़्मे-जली

सूरह फ़ज्र - 89

आयात : 30, मक्की, पैराग्राफ : 6

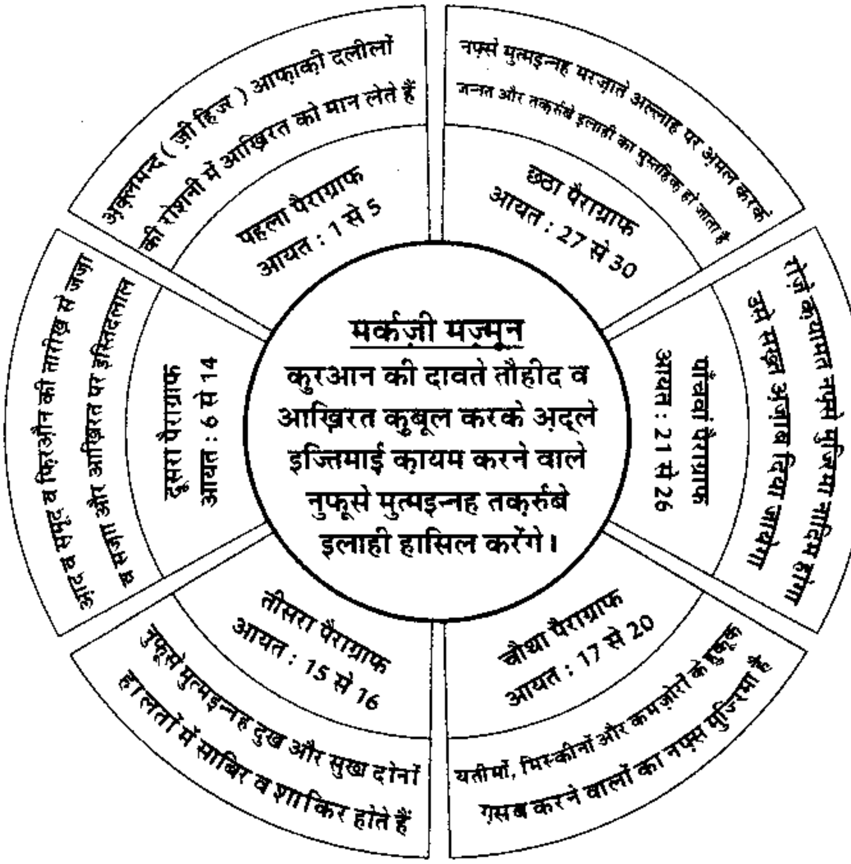

ज़मान-ए-नुज़ूल

सूरह फ़ज्र रसूल (सल्ल.) के क़ियामे मक्का के तीसरे दौर (6-10 नबवी) में नाज़िल हुई, जब मुसलमानों पर ज़ुल्म व सितम की इन्तिहा कर दी गई थी। कुरैश को आद व समूद व फ़िरऔन के अन्जाम से डराया गया और बताया गया कि अल्लाह घात में है इन्-न रब्ब-क लबिल् मिरसाद

सूरह फ़ज्र इस ऐतिबार से सूरह बुरूज से मुशाबिहत रखती है, जहाँ कहा गया था इन्-न बत्-श रब्बि-क लशदीद

तफ़्सीर सूरह फ़ज्र

तआरुफ़े सूरत : नसाई में है कि "हज़रत मुआज़ (रज़ि.) ने नमाज़ पढ़ाई एक शख़्स आया और जमाअत में शामिल हो गया। हज़रत मुआज़ (रज़ि.) ने नमाज़ में क़िराअत लम्बी की उसने मस्जिद के एक गोशे में अपनी नमाज़ पढ़ ली फिर फ़ारिग़ होकर चला गया। हज़रत मुआज़ (रज़ि.) को भी यह वाक़िया मालूम हुआ तो हुज़ूर (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर होकर बतौरे शिकायत यह वाक़िया बयान किया। आप (ﷺ) ने उस जवान को बुलवाकर पूछा तो उसने कहा, हुज़ूर (ﷺ)! मैं क्या करता मैं इनके पीछे नमाज़ पढ़ रहा था इन्होंने लम्बी क़िरअत शुरू की तो मैंने घूमकर मस्जिद के कोने में अपनी नमाज़ पढ़ ली फिर अपनी ऊँटनी को चारा डाला। आप (ﷺ) ने फ़र्माया ऐ मुआज़! क्या तू फ़ित्ने में डालने वाला है, तू इन सूरतों से कहाँ है? (सब्बिहिस्मा रब्बिकल आ'ला...) (वश्शम्सि व ज़ुहाहा...) (वल्फ़ज्र..) (वल्लैलि इज़ा यग़्शा..)।" इसकी तख़रीज सूरह इंफ़ितार के शुरू में गुज़र चुकी है।)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

तर्जुमा : "शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है।"

***

وَالْفَجْرِ ① وَلَيَالٍ عَشْرٍ ② وَّالشَّفْعِ وَالْوَتْرِ ③ وَالَّيْلِ إِذَا يَسْرِ ④ هَلْ فِيْ ذٰلِكَ
قَسَمٌ لِّذِيْ حِجْرٍ ⑤ أَلَمْ تَرَ كَيْفَ فَعَلَ رَبُّكَ بِعَادٍ ⑥ إِرَمَ ذَاتِ الْعِمَادِ ⑦ الَّتِيْ
لَمْ يُخْلَقْ مِثْلُهَا فِي الْبِلَادِ ⑧ وَثَمُوْدَ الَّذِيْنَ جَابُوا الصَّخْرَ بِالْوَادِ ⑨ وَفِرْعَوْنَ
ذِي الْأَوْتَادِ ⑩ الَّذِيْنَ طَغَوْا فِي الْبِلَادِ ⑪ فَأَكْثَرُوْا فِيْهَا الْفَسَادَ ⑫ فَصَبَّ
عَلَيْهِمْ رَبُّكَ سَوْطَ عَذَابٍ ⑬ إِنَّ رَبَّكَ لَبِالْمِرْصَادِ ⑭

तर्जुमा : "क़सम है फ़ज्र की (1) और दस रातों की (2) और जुफ़्त और ताक़ की। (3) और रात की जब वह चलने लगे (4) क्या इनमें अक़्लमंद के वास्ते काफ़ी क़सम है (5) क्या तूने न देखा कि तेरे रब ने आदियों के साथ क्या किया (6) इरम वाले सुतूनी आदी जो बुलंद क़ामत थे (7) ऐसे लोग दूसरे किसी शहर व मुल्क में पैदा नहीं किये गए। (8) और समूदियों के साथ जिन्होंने वाद में बड़े बड़े पत्थर तराशे थे (9) और फ़िरऔन के साथ जो मेख़ों वाला था। (10) इन सभी ने शहरों में सिर उठा रखा था (11) और फ़साद मचा रखा था। (12) आख़िर तेरे रब ने इन सब पर अज़ाब का कोड़ा बरसाया। (13) यक़ीनन तेरा रब घात में है।" (14)

फ़ज्र की क़सम और अल्लाह तआला की क़ुदरतों का तज़्किरा (आयत : 1 से 14) : फ़ज्र तो हर शख़्स जानता ही है यानी सुबह और यह मतलब भी है कि बक़र ईद के दिन की सुबह, और यह मुराद भी है कि सुबह के वक़्त की नमाज़, और पूरा दिन, और दस रातों से मुराद ज़िल हिज्ज महीने की पहली दस रातें। (तब्री : 24/396) चुनाँचे सहीह बुख़ारी, किताबुल ईदैन, बाब फ़ज़्लुल अमल फ़ी अय्यामि तशरीक़ : 969; अबूदाऊद : 2438; तिर्मिज़ी : 757; इब्ने माजा : 1727; अहमद : 1/224; इब्ने हिब्बान : 324) कुछ ने कहा है मुहर्रम के पहले दस दिन मुराद हैं। हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं, रमज़ान के पहले दस दिन। लेकिन सही क़ौल पहला ही है, यानी ज़िल हिज्ज की शुरू की दस रातें।

मुस्नद अहमद में है कि "रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं कि अशर से मुराद ईदुल अज़्हा के दस दिन हैं" और वत्र से मुराद अरफ़े का दिन है और शफ़्अ से मुराद क़ुर्बानी का दिन है। (अहमद : 3/327; वसनदुहू ज़ईफ़ुन; अबुज़्ज़ुबैर अन्अन) इसकी इस्नाद में तो कोई मुज़ायक़ा नहीं, लेकिन मतन में नकारत है, वल्लाहु आलम! वत्र से मुराद अरफ़े का दिन है, यह नवीं तारीख़ होती है तो शफ़्अ से मुराद दसवीं तारीख़ है यानी बक़र ईद का दिन है, वह ताक़ है यह जुफ़त है। हज़रत वासिल बिन साइब (रह.) ने हज़रत अता (रह.) से पूछा कि क्या वत्र से मुराद यही नमाज़े वित्र है? आपने फ़र्माया, नहीं! शफ़्अ अरफ़ा का दिन है और वित्र ईदुल अज़्हा की रात है। हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (रज़ि.) ख़ुत्बा दे रहे थे कि एक शख़्स ने खड़े होकर पूछा कि शफ़्अ क्या है और वत्र क्या है? आपने फ़र्माया (فَمَنْ تَعَجَّلَ فِي يَوْمَيْنِ) (2/बक़रह : 203) में जो दो दिन का ज़िक्र है वह शफ़्अ है और (मन तअख़्ख़र) में जो एक दिन है वह वत्र है। यानी ग्यारहवीं, बारहवीं ज़िल हिज्ज की शफ़्अ है और तेरहवीं वत्र है, आपने यह भी फ़र्माया है कि अय्यामे तशरीक़ का दरम्यानी दिन शफ़्अ है और आख़िरी दिन वत्र है।

जुफ़्त और ताक़ से क्या मुराद है : बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस में है कि "अल्लाह तआला के एक कम एक सौ नाम हैं जो उन्हें याद कर ले वह जन्नती है वह वित्र है वित्र को दोस्त रखता है।" (सहीह बुख़ारी, किताबुद्दअवात, बाब लिल्लाहि मिअत इस्मुन ग़ैरुंव्वाहिदा : 6410; सहीह मुस्लिम : 2677) ज़ेद बिन असलम (रह.) फ़र्माते हैं इससे मुराद तमाम मख़्लूक़ है इसमें शफ़्अ भी है और वत्र भी। यह भी कहा गया है

कि मख़्लूक़ शफ़्अ़ और अल्लाह वत्र है यह भी कहा गया है कि शफ़्अ़ सुबह़ की नमाज़ और वत्र मग़्रिब की नमाज़ है, यह भी कहा गया है कि शफ़्अ़ से मुराद जोड़ जोड़ और वत्र से मुराद अल्लाह अ़ज़्ज़ व जल्ला जैसे आसमान-ज़मीन, तरी-ख़ुश्की, जिन्न-इंस, सूरज-चाँद वग़ैरह क़ुरआन में है (وَمِنْ كُلِّ شَيْءٍ خَلَقْنَا زَوْجَيْنِ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ ﴿٤٩﴾) (51/ज़ारियात : 49) हमने हर चीज़ को जोड़ जोड़ पैदा किया है, ताकि तुम इब्रत ह़ासिल करो। यानी जान लो कि इन तमाम चीज़ों का ख़ालिक़ अल्लाह वाह़िद है, जिसका कोई शरीक नहीं। यह भी कहा गया है कि इससे मुराद गिनती है जिसमें जुफ़्त भी है और त़ाक़ भी है। एक ह़दीस में है कि शफ़्अ़ से मुराद दो दिन हैं और वत्र से मुराद तीसरा दिन। (त़ब्री : 25/397; वसनदुहू ज़ईफ़ुन; इसकी सनद में अबुज़्ज़ुबैर मुह़म्मद बिन मुस्लिम मुदल्लस रावी है।) यह ह़दीस इस ह़दीस के मुख़ालिफ़ है जो इससे पहले गुज़र चुकी है। एक क़ौल यह भी है कि इससे मुराद नमाज़ है कि उसमें शफ़्अ़ है, जैसे सुबह़ की दो, ज़ुहर, अ़स्र और ईशा की चार चार, और वित्र है जैसे मग़्रिब की तीन रकअ़तें हैं जो दिन के वत्र हैं और इसी त़रह़ आख़िरी रात का वित्र। एक मरफ़ूअ़ ह़दीस में मुत्लक़ नमाज़ के लफ़्ज़ के साथ मरवी है। (तिर्मिज़ी, किताब तफ़्सीरुल क़ुरआन, बाब वमिन सूरतिल फ़ज्र : 3342; वसनदुहू ज़ईफ़ुन; क़तादा मुदल्लस रावी है नीज़ सनद में एक मज्हूल रावी है। अह़मद : 4/437) कुछ स़ह़ाबा (रज़ि.) से फ़र्ज़ नमाज़ मरवी है लेकिन यह मरफ़ूअ़ ह़दीस नहीं ज़्यादा ठीक यही मालूम होता है कि ह़ज़रत इमरान बिन ह़ुसैन (रज़ि.) पर मौक़ूफ़ है, वल्लाहु आलम!

फ़ज्र का मफ़्हूम : इमाम इब्ने जरीर (रह़.) ने उन आठ नौ अक़्वाल में से किसी को फ़ैसल क़रार नहीं दिया। फिर फ़र्माता है रात की क़सम! जब जाने लगे, और यह भी मअ़नी किये गए हैं कि जब आने लगे बल्कि यही मअ़नी ज़्यादा मुनासिब और वल्फ़ज्र से ज़्यादा मुनासिबत रखते हैं। फ़ज्र कहते हैं रात के जाने को और दिन के आने को तो यहाँ रात का आना और दिन का जाना मुराद होगा जैसे (वल्लैलि इज़ा अ़स्अ़स. वस्सुब्ह़ि इज़ा तनफ़्फ़स) में इक्रिमा (रह़.) फ़र्माते हैं मुराद मुज़दलिफ़ा की रात है। ह़िज्र से मुराद अ़क़्ल है, ह़िज्र कहते हैं रोक को चूँकि अ़क़्ल भी ग़लत़कारियों और झूठी बातों से रोक देती है इसलिए इसे अ़क़्ल कहते हैं। ह़त़ीम को भी ह़िज्रुल बैत इसीलिए कहते हैं कि वह त़वाफ़ करने वाले को कअ़बतुल्लाह की शामी दीवार से रोक देता है, इसी से माख़ूज़ है ह़िज्रे यमामा, और इसीलिए अ़रब कहते हैं "ह़जरल ह़ाकिमु अ़ला फ़ुलानिन" जबकि किसी शख़्स़ को बादशाह तस़र्रुफ़ से रोक दे। और कहते हैं (حِجْرًا مَّحْجُوْرًا) (25/फ़ुरक़ान : 22) तो फ़र्माता है कि इनमें अ़क़्लमंदों के लिए क़ाबिले इब्रत क़सम है। कहीं तो क़समें हैं इबादतों की, कहीं इबादतों के वक़्तों की, जैसे ह़ज्ज नमाज़ वग़ैरह कि जिनसे उसके नेक बन्दे उसका क़ुर्ब और उसकी नज़दीकी ह़ासिल करते हैं और उसके सामने अपनी पस्ती और ख़ुद फ़रामोशी जाहिर करते हैं जब उन परहेज़गार नेक कार लोगों का और उनकी आ़जिज़ी और तवाज़ोअ़ का ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़ का ज़िक्र किया तो अब उनके साथ ही उनके ख़िलाफ़ जो सरकश और बदकार लोग हैं उनका ज़िक्र हो रहा है। तो फ़र्माता है कि क्या तुमने न देखा कि किस त़रह़ अल्लाह तआ़ला ने आ़दियों को ग़ारत कर दिया जो कि सरकश और मुतकब्बिर थे, अल्लाह तआ़ला की

नाफ़र्मानी, रसूल की तक्ज़ीब और बदियों पर झुक पड़ते थे, उनमें अल्लाह के रसूल हज़रत हूद (عليه السلام) आये थे; यह आदे ऊला हैं जो आद बिन इरम बिन औस बिन साम बिन नूह की औलाद में से थे। अल्लाह तआला ने उनमें से ईमान वालों को तो नजात दे दी और बाक़ी बेईमानों को तेज़ो तुन्द ख़ौफ़नाक और हलाकत वाली हवाओं से हलाक कर दिया, सात रातें और आठ दिन तक यह ग़ज़बनाक आँधी चलती रही और यह सारे के सारे इस तरह ग़ारत हो गए कि उनके सिर अलग हो गए और धड़ अलग थे, उनमें से एक भी बाक़ी न रहा। जिसका मुफ़स्सल बयान क़ुरआने करीम में कई जगह गुज़र चुका है।

सूरह हाक़्क़ा में भी यह बयान है। (इरमा ज़ातिल इमाद) यह आद की तफ़्सीर बतौर अत्फ़े बयान के है ताकि बख़ूबी वज़ाहत हो जाए, यह लोग मज़बूत और बुलंद सतूनों वाले घरों में रहते थे और अपने ज़माने के और लोगों से बहुत बड़े तनो तोश वाले, क़ुव्वत व ताक़त वाले थे, इसीलिए हज़रत हूद (عليه السلام) ने इन्हें नसीहत करते हुए फ़र्माया था (وَاذْكُرُوْٓا اِذْ جَعَلَكُمْ خُلَفَاۗءَ) (7/आराफ़ : 69) यानी याद करो कि अल्लाह तआला ने तुम्हें क़ौमे नूह के बाद ज़मीन पर ख़लीफ़ा बनाया है, और तुम्हें जिस्मानी कुशादगी पूरी दी है, तुम्हें चाहिए कि अल्लाह की नेअमतों को याद करो और ज़मीन में फ़सादी बनकर न रहो, और जगह है कि आदियों ने नाहक़ ज़मीन में सरकशी की और बोल उठे कि हमसे ज़्यादा क़ुव्वत वाला और कौन है? क्या वह भूल गए कि उनका पैदा करने वाला उनसे बहुत ही ज़बरदस्त ताक़त व क़ुव्वत वाला है। यहाँ भी इर्शाद होता है कि उस क़बीले जैसे ताक़तवर और शहरों में न थे। बड़े लम्बे क़द, क़वी जुस्सा थे, इरम उनका दारुस्सल्तनत था। उन्हें सतूनों वाले कहा जाता था इसलिए भी कि यह लोग बहुत दराज़ क़द थे बल्कि सही वजह यही है कि (मिस्लुहा) की ज़मीर का मरजअ इमादि बतलाया गया है उन जैसे और शहरों में न थे, यह अहक़ाफ़ में बने हुए लम्बे लम्बे थे और कुछ ने ज़मीर का मरजअ क़बीला बतलाया है यानी उस क़बीले जैसे लोग और शहरों में न थे, और यही क़ौल ठीक है और अगला क़ौल ज़ईफ़ है, इसलिए भी कि यही मुराद होती तो (लम यज्अल) कहा जाता न कि (लम युख़लक़)। इब्ने अबी हातिम में है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं कि उनमें इस क़द्र ज़ोर व ताक़त थी कि उनमें का कोई उठता और एक बड़ी सारी चट्टान लेकर किसी क़बीले पर फेंक देता तो बेचारे सबके सब दबकर मर जाते। (वसनदुहू ज़ईफ़ुन; इसकी सनद में एक मज्हूल रावी है जिसका नाम नहीं लिया गया।) हज़रत सौर बिन ज़ेद दैली (रह.) फ़र्माते हैं कि मैंने एक वरक़ पर यह लिखा हुआ पढ़ा है कि मैं शद्दाद बिन आद हू, मैंने सतून बुलंद किये हैं, मैंने हाथ मज़बूत किये हैं, मैंने सात ज़राअ के ख़ज़ाने जमा किये हैं जो उम्मते मुहम्मद (ﷺ) निकालेगी। ग़र्ज़ ख़्वाह यूँ कहो कि वह उम्दा, ऊँचे और मज़बूत मकानों वाले थे, ख़्वाह यूँ कहो कि वह बुलंद व बाला सतूनों वाले थे, या यूँ कहो कि वह बेहतरीन हथियारों वाले थे, या यूँ कहो लम्बे लम्बे क़द वाले थे, मतलब यह है कि एक क़ौम थी जिनका ज़िक्र क़ुरआने करीम में कई जगह समूदियों के साथ आ चुका है, यहाँ भी इसी तरह आदियों और समूदियों दोनों का ज़िक्र है, वल्लाहु आलम! कुछ हज़रात ने यह भी कहा है कि (इरम ज़ातिल इमाद) एक शहर है या तो दमिश्क़ या इस्कन्द्रिया, लेकिन यह क़ौल ठीक नहीं मालूम होता इसलिए कि इबारत का ठीक मतलब नहीं बनता, क्योंकि या तो यह बदल हो

सकता है या अत्फ़े बयान। दूसरे इसलिए भी कि यहाँ यह मक़्सद है कि हर एक सरकश को अल्लाह तआ़ला ने बर्बाद किया जिनका नाम आदी था, न कि किसी शहर को। मैंने इस बात को यहाँ इसलिए बयान कर दिया है ताकि जिन मुफ़स्सिरीन की जमाअ़त ने यहाँ यह तफ़्सीर की है उनमें से कोई शख़्स धोखे में न पड़ जाए। वह लिखते हैं कि यह एक शहर का नाम है जिसकी एक ईंट सोने की है दूसरी चाँदी की, उसके मकानात, बाग़ात, महल्लात वग़ैरह सब चाँदी सोने के हैं, कंकर लुअ लुअ और जवाहिर हैं , मिट्टी मुश्क है, नहरें बह रही हैं, फल तैयार हैं, कोई रहने सहने वाला नहीं है, दरो दीवार खाली हैं, कोई हाँ हूँ करने वाला भी नहीं, यह शहर मुंतक़िल होता रहता है, कभी शाम में कभी यमन में, कभी इराक़ में, कभी कहीं कभी कहीं वग़ैरह। यह सब ख़ुराफ़ात बनू इस्राईल की हैं उनके बद दीनों ने यह गढ़ लिया है ताकि जाहिलों में बातें बनाएँ।

सअ़ल्बी वग़ैरह ने बयान किया है कि एक आराबी हज़रत अमीर मुआविया (रज़ि.) के ज़माने में अपने गुमशुदा ऊँटों को ढूँढ़ रहा था कि जंगल बयाबान में उसने इसी सिफ़त का एक शहर देखा। उसमें गया घूमा फिरा, फिर लोगों से आकर ज़िक्र किया लोग भी वहाँ गए लेकिन फिर कुछ नज़र न आया। इब्ने अबी हातिम ने यहाँ ऐसे क़िस्से बहुत से लम्बे चौड़े नक़्ल किये हैं, यह हिकायत भी सही नहीं और अगर यह आराबी वाला क़िस्सा सनदन सही मान लें तो मुम्किन है कि उसे होश और ख़्याल हो और अपने ख़्याल में उसने यह नक़्शा जमा लिया हो और ख़्यालात की पुख़्तगी और अक़्ल की कमी न उसे यक़ीन दिलाया हो कि वह सही तौर पर यही देख रहा है और वाक़ेई में मामला ऐसा न हो।

फ़ायदा : ठीक इसी तरह जो जाहिल हरीस और ख़्यालात के कच्चे यूँ समझते हैं कि किसी ख़ास ज़मीन तले सोने चाँदी के पुल हैं और क़िस्म क़िस्म के जवाहिर याक़ूत लुअ लुअ और मोती हैं अक्सीर कबीर है, लेकिन ऐसे चंद मवानेअ़ हैं कि वहाँ लोग पहुँच नहीं सकते। मस्लन ख़ज़ाने के मुँह पर कोई अज़्दहा बैठा है, किसी जिन्न का पहरा है वग़ैरह। यह सब फ़िज़ूल बातें और बनावटी क़िस्से हैं, इन्हें गढ़गढ़ाकर बेवक़ूफ़ों और माल के हरीसों को अपने दाम में फांसकर उनसे कुछ वसूल करने के लिए मक्कारों ने मशहूर कर रखे हैं फिर कभी चिल्ले खींचने के बहाने से, कभी बख़ूर के बहाने से, कभी किसी और तरह से उनसे यह मक्कार रूपये वसूल कर लेते हैं और अपना पेट पालते हैं। हाँ! यह मुम्किन है कि ज़मीन में से जाहिलियत के ज़माने का, या मुसलमानों के ज़माने का किसी का गाड़ा हुआ माल निकल आए तो उसका पता जिसे चल जाए वह उसके हाथ लग जाता है, न वहाँ कोई मारगंज होता है न कोई देव भूत जिन्न परी। जिस तरह उन लोगों ने मशहूर कर रखा है यह बिलकुल ग़ैर सही है'' यह ऐसे ही लोगों की गढ़त है या उन जैसे ही लोगों से सुनी सुनाई है अल्लाह सुब्हानहू व तआ़ला नेक समझ दे।

इमाम इब्ने जरीर (रह.) ने भी फ़र्माया है कि मुम्किन है कि इससे क़बीला मुराद हो, और मुम्किन है कि शहर मुराद हो लेकिन ठीक नहीं, यहाँ तो साफ़ ज़ाहिर होता है कि एक क़ौम का ज़िक्र है न कि शहर का। इसीलिए उसके बाद ही समूदियों का ज़िक्र किया कि वह समूदी जो पत्थरों को तराश लिया करते थे, जैसे और

जगह है (وَتَنۡحِتُونَ مِنَ الۡجِبَالِ بُيُوتًا فَارِهِينَ) (26/शोअरा : 149) यानी तुम पहाडों में अपने कुशादा आरामदेह मकानात अपने हाथों से पत्थरों में तराश लिया करते हो। उसके सबूत में कि उसके मअनी तराश लेने के हैं अरबी शेअर भी हैं। इब्ने इस्हाक़ (रह.) फ़र्माते हैं कि समूदी अरब थे वादियुल कुरा में रहते थे, आदियों का क़िस्सा पूरा पूरा सूरह आराफ़ में हम बयान कर चुके हैं अब दोबारा यहाँ बयान करने की ज़रूरत नहीं। फिर फ़र्माया मेख़ों वाला फ़िरऔन, औताद के मअनी इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने लश्करों के किये हैं जो कि उसके कामों को मज़बूत करते रहते थे, यह भी मरवी है कि फ़िरऔन गुस्से के वक़्त लोगों के हाथ पैर में मेख़ें गड़वाकर मुड़वा डालता था, चौरंग करके ऊपर से बड़ा पत्थर फेंकता था जिससे उसका कचूमर निकल जाता था। कुछ लोग कहते हैं कि रस्सियों और मेख़ों वग़ैरह से उसके सामने खेल किये जाते थे, इसकी एक वजह यह भी बयान की गई है कि उसने अपनी बीवी साहिबा को जो मुसलमान हो गई थीं लिटाकर दोनों हाथों और दोनों पैरों में मेख़ें गाड़ी फिर बड़ा सारा चक्की का पत्थर उनकी पीठ पर मारकर जान ले ली, अल्लाह उन पर रहम करे।

फ़सादियों की हलाकत का तज़्किरा : फिर फ़र्माया कि इन लोगों ने सरकशी पर कमर बाँध ली थी और फ़सादी लोग थे। लोगों को हक़ीर व ज़लील जानते थे और हर एक को ईज़ा पहुचाते थे। नतीजा यह हुआ कि अल्लाह के अज़ाब का कोड़ा बरस पड़ा, वह वबाल आया जो टाले न टला और हलाक व बर्बाद और तहस नहस हो गये, तेरा रब घात में है देख रहा है सुन रहा है समझ रहा है, वक़्ते मुक़र्ररा पर हर बुरे भले को नेकी बदी की जज़ा सज़ा देगा, यह सब लोग उसके पास जाने वाले, तने तंहा उसके सामने खड़े होने वाले हैं, और वह अदलो इंसाफ़ के साथ उनमें फ़ैसले करेगा और हर शख़्स को पूरा पूरा बदला देगा जिसका वह मुस्तहिक़ था। वह ज़ुल्म व जोर से पाक है।

यहाँ पर इब्ने अबी हातिम ने एक हदीस वारिद की है जो बहुत ग़रीब है जिसकी सनद में कलाम है और सेहत में भी नज़र है। इसमें है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया "ऐ मुआज़ (रज़ि.)! मोमिन हक़ का क़ैदी है, ऐ मुआज़! मोमिन तो दग़दग़े में ही रहता है जब तक कि पुल सिरात से पार न हो जाए। ऐ मुआज़! मोमिन को कुरआन ने बहुत सी दिली ख़्वाहिशों से रोक रखा है ताकि वह हलाकत से बच जाए, कुरआन इसकी दलील है, ख़ौफ़ इसकी हुज्जत है, शौक़ इसकी सवारी है, नमाज़ इसकी पनाह है, रोज़ा इसकी ढाल है, सदक़ा इसका छुटकारा है, सच्चाई इसकी अमीर है, शर्म इसकी वज़ीर है, और इसका रब इन सबके बाद इस पर वाक़िफ़ व आगाह है वह तेज़ तेज़ निगाहों से इसे देख रहा है।" इसके रावी यूनुस अख़्ज़दा और अबू हम्ज़ा मज्हूल हैं फिर इसमें इर्साल भी है, मुम्किन है कि यह अबू हम्ज़ा ही का कलाम हो। इसी इब्ने अबी हातिम में है कि इब्ने अब्दुला कलाई ने अपने एक वअज़ में कहा "लोगों! जहन्नम के सात पुल हैं उन सब पर पुलसिरात है पहले ही पुल पर लोग रोके जाएँगे, यहाँ नमाज़ का हिसाब किताब होगा, यहाँ से नजात मिल गई तो दूसरे पुल पर रोक होगी यहाँ अमानतदारी का सवाल होगा जो अमानतदार होगा उसने नजात पाई और जो ख़यानत वाला निकला हलाक हुआ। तीसरे पुल पर सिलारह्मी की पूछताछ होगी उसके काटने वाले यहाँ से नजात न पा सकेंगे और

हलाक होंगे, रिश्तेदारी यानी सिलारहमी वहीं मौजूद होगी और यह कह रही होगी कि ऐ अल्लाह! जिसने मुझे जोड़ा तू उसे जोड़, और जिसने मुझे तोड़ा तू उसे तोड़। यही मअ़नी हैं (इन्न रब्बका लबिल मिर्साद) यह असर इतना ही है पूरा नहीं।

فَاَمَّا الْاِنْسَانُ اِذَا مَا ابْتَلٰىهُ رَبُّهٗ فَاَكْرَمَهٗ وَنَعَّمَهٗ ۙ فَيَقُوْلُ رَبِّيْٓ اَكْرَمَنِ ﴿١٥﴾
وَاَمَّآ اِذَا مَا ابْتَلٰىهُ فَقَدَرَ عَلَيْهِ رِزْقَهٗ ۙ فَيَقُوْلُ رَبِّيْٓ اَهَانَنِ ﴿١٦﴾ كَلَّا بَلْ لَّا
تُكْرِمُوْنَ الْيَتِيْمَ ﴿١٧﴾ وَلَا تَحٰٓضُّوْنَ عَلٰى طَعَامِ الْمِسْكِيْنِ ﴿١٨﴾ وَتَاْكُلُوْنَ التُّرَاثَ
اَكْلًا لَّمًّا ﴿١٩﴾ وَّتُحِبُّوْنَ الْمَالَ حُبًّا جَمًّا ﴿٢٠﴾ كَلَّآ اِذَا دُكَّتِ الْاَرْضُ دَكًّا دَكًّا ﴿٢١﴾
وَّجَآءَ رَبُّكَ وَالْمَلَكُ صَفًّا صَفًّا ﴿٢٢﴾ وَجِايْٓءَ يَوْمَىِٕذٍۢ بِجَهَنَّمَ ۙ يَوْمَىِٕذٍ يَّتَذَكَّرُ
الْاِنْسَانُ وَاَنّٰى لَهُ الذِّكْرٰى ﴿٢٣﴾ يَقُوْلُ يٰلَيْتَنِيْ قَدَّمْتُ لِحَيَاتِيْ ﴿٢٤﴾ فَيَوْمَىِٕذٍ لَّا
يُعَذِّبُ عَذَابَهٗٓ اَحَدٌ ﴿٢٥﴾ وَّلَا يُوْثِقُ وَثَاقَهٗٓ اَحَدٌ ﴿٢٦﴾ يٰٓاَيَّتُهَا النَّفْسُ الْمُطْمَىِٕنَّةُ ﴿٢٧﴾
ارْجِعِيْٓ اِلٰى رَبِّكِ رَاضِيَةً مَّرْضِيَّةً ﴿٢٨﴾ فَادْخُلِيْ فِيْ عِبٰدِيْ ﴿٢٩﴾ وَادْخُلِيْ جَنَّتِيْ ﴿٣٠﴾

तर्जुमा : "इंसान का यह हाल है कि जब उसे उसका रब आज़माता है और इज़्ज़त व नेअ़मत देता है तो वह कहने लगता है कि मेरे रब ने मेरा इकराम किया। (15) और जब वह उसका इम्तिहान लेते हुए उसकी रोज़ी तंग कर देता है तो वह कहने लगता है कि मेरे रब ने मेरी एहानत की और ज़लील किया। (16) ऐसा हर्गिज़ नहीं बल्कि बात यह है कि तुम ही लोग यतीमों की इज़्ज़त नहीं करते। (17) और मिस्कीनों के खिलाने की एक दूसरे को तर्ग़ीब नहीं करते। (18) और मुर्दों की मीरास समेट समेटकर खाते हो। (19) और माल को जी भरकर अ़ज़ीज़ रखते हो। (20) यक़ीनन जिस वक़्त ज़मीन बिलकुल बराबर पस्त करके बिछा दी जाएगी (21) और तेरा रब ख़ुद आ जाएगा और फ़रिश्ते सफ़ें बाँधें आ जाएँगे। (22) और जिस दिन जहन्नम भी लाई

जाएगी उस दिन इंसान इब्रत हासिल कर लेगा लेकिन आज इब्रत का फ़ायदा कहाँ? (23) वह कहेगा कि काश कि मैंने अपनी इस ज़िन्दगी के लिए कुछ नेक आमाल पहले ही कर रखे होते। (24) पस आज अल्लाह के अज़ाबों जैसा अज़ाब किसी का न होगा। (25) न उसकी क़ैदो बन्द जैसी किसी की क़ैदो बंद होगी। (26) ऐ इत्मिनान वाली रूह (27) तू अपने रब की तरफ़ लौट चल इस तरह कि तू उससे राज़ी वह तुझसे राज़ी (28) पस मेरे ख़ास बन्दों में दाख़िल हो जा (29) और मेरी जन्नत में चली जा।''(30)

(आयत : 15 से 30) : मतलब यह है कि जो लोग वुस्अत और कुशादगी पाकर यूँ समझ बैठते हैं कि अल्लाह तआला ने उनका इकराम किया, यह ग़लत है बल्कि दरअसल यह इम्तिहान है जैसे और जगह है (أَيَحْسَبُونَ أَنَّمَا نُمِدُّهُم) (23/मोमिनून : 55) यानी माल व औलाद के बढ़ जाने को यह लोग नेकियों की बढ़ोतरी समझते हैं, दरअसल यह इनकी बेसमझी है, इसी तरह इसके बरअक्स भी, यानी तंगी तुर्शी को इंसान अपनी एहानत समझ बैठता है, हालाँकि दरअसल यह भी अल्लाह तआला की तरफ़ से आज़माइश है, इसीलिए यहाँ (कल्ला) कहकर इन दोनों ख़्यालात की तर्दीद की कि यह वाक़िया नहीं कि जिसे अल्लाह तआला माल की वुस्अत दे उससे वह ख़ुश है और जिस पर तंगी करे उससे नाख़ुश है बल्कि मदारे ख़ुशी और नाख़ुशी इन दोनों हालतों में अमल पर है, ग़नी होकर शुक्रगुज़ारी करे तो अल्लाह तआला का महबूब, और फ़क़ीर होकर सब्र करे तो अल्लाह तआला का महबूब। अल्लाह तआला इस तरह और इस तरह आज़माता है। फिर यतीम की इज़्ज़त करने का हुक्म दिया। हदीस में है कि सबसे अच्छा घर वह है जिसमें यतीम हो और उसकी अच्छी परवरिश हो रही हो। और बदतरीन घर वह है जिसमें यतीम हो और उससे बदसलूकी की जाती हो, फिर आप (ﷺ) ने उँगली उठाकर फ़र्माया मैं और यतीम का पालने वाला जन्नत में इस तरह होंगे यानी क़रीब क़रीब। (इब्ने माजा, किताबुल अदब, बाब हक़्कुल यतीम : 3679; वसनदुहू ज़ईफ़ुन; यहया बिन अबी सुलेमान ज़ईफ़ रावी है।) अबूदाऊद की हदीस में है कि कलिमा की और बीच की उँगली मिलाकर उन्हें दिखाकर आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि मैं और यतीम का पालने वाला जन्नत में इस तरह होंगे। (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तलाक़, बाबुल्लिआन : 5304; अबूदाऊद : 5150; तिर्मिज़ी : 1918; अहमद : 5/333; इब्ने हिब्बान : 410) फिर फ़र्माया कि यह लोग फ़क़ीरों मिस्कीनों के साथ सुलूक एहसान करने, उन्हें खाना पीना देने की एक दूसरे को रग़बत व लालच नहीं दिलाते, और यह ऐब भी उनमें है कि मीरास का माल हलाल हो या हराम हज़म कर जाते हैं और माल की मुहब्बत भी इनमें बहुत ज़्यादा है।

क़ियामत की हौलनाकियाँ : क़ियामत के होलनाक मंज़र का बयान हो रहा है कि बिल्यक़ीन उस दिन ज़मीन पस्त कर दी जाएगी, ऊँची नीची ज़मीन बराबर कर दी जाएगी। और बिलकुल साफ़ हमवार हो जाएगी, पहाड़ ज़मीन के बराबर कर दिये जाएँगे तमाम मख़्लूक़ क़ब्र से निकल आएगी, ख़ुद अल्लाह तआला मख़्लूक़ के फ़ैसले करने के लिए आ जाएगा, यह उस आम शफ़ाअत के बाद जो तमाम औलादे आदम के सरदार

हज़रत मुहम्मद (ﷺ) की होगी, और यह शफ़ाअत उस वक़्त होगी जबकि तमाम मख़्लूक़ एक एक बड़े बड़े पैग़म्बर (عليه السلام) के पास होकर आएगी और हर नबी कह देगा कि मैं इस क़ाबिल नहीं फिर सबके सब हुज़ूरे अकरम (ﷺ) के पास आएँगे, आप (ﷺ) फ़र्माएँगे कि हाँ! हाँ! मैं इसके लिए तैयार हूँ, फिर आप जाएँगे और अल्लाह तआला के सामने सिफ़ारिश करेंगे कि वह परवरदिगार लोगों के बीच फ़ैसले करने के लिए तशरीफ़ लाए यही पहली शफ़ाअत है और यही वह मक़ामे महमूद है जिसका मुफ़स्सल बयान सूरह सुब्हान में गुज़र चुका है फिर अल्लाह तआला रब्बुल इज़्ज़त फ़ैसले के लिए तशरीफ़ लाएगा उसके आने की कैफ़ियत वही जानता है, फ़रिश्ते भी उसके आगे आगे सफ़बस्ता हाज़िर होंगे जहन्नम भी लाई जाएगी, सहीह मुस्लिम में है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं कि "जहन्नम की उस दिन सत्तर हज़ार लगामें होंगी हर लगाम पर सत्तर हज़ार फ़रिश्ते होंगे जो उसे घसीट रहे होंगे।" यही रिवायत ख़ुद हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) से भी मरवी है। (सहीह मुस्लिम, किताबुल जन्ना, बाब जहन्नमु अआज़नल्लाहु मिन्हा : 2842; तिर्मिज़ी : 2573) उस दिन इंसान अपने नए पुराने तमाम आमाल को याद करने लगेगा, बुराइयों पर पछताएगा, नेकियों के न करने या कम करने पर अफ़सोस करेगा गुनाहों पर नादिम होगा। (किताबुज़्ज़ुहद लि इब्निल मुबारक : 34; अहमद : 4/185; व सनदुहू सहीहुन मौक़ूफ़ुन अला मुहम्मद बिन अबी उमैरा (रज़ि.)) मुस्नद अहमद में है कि रसूले अकरम (ﷺ) फ़र्माते हैं "अगर कोई बन्दा अपने पैदा होने से लेकर मरते दम तक सज्दे में पड़ा रहे और अल्लाह तआला का पूरा इताअत गुज़ार रहे फिर भी अपनी उस इबादत को क़ियामत के दिन हक़ीर और नाचीज़ समझेगा और चाहेगा कि मैं दुनिया की तरफ़ अगर लौटाया जाऊँ तो अज्रो सवाब के काम और ज़्यादा करूँ" फिर अल्लाह तआला फ़र्माता है कि उस दिन अल्लाह तआला के अज़ाबों जैसा अज़ाब किसी और का न होगा जो वह अपने नाफ़र्मान और ना फ़र्जाम बन्दों को देगा, न उस जैसी ज़बरदस्त पकड़ धकड़ व क़ैदो बंद किसी की हो सकती है। ज़बानिया फ़रिश्ते बदतरीन बेड़ियाँ और हथकड़ियाँ उन्हें पहनाए हुए होंगे, यह तो हुआ बदबख़्तों का अंजाम, अब नेक बख़्तों का हाल सुनिए, जो रूहें सुकून और इत्मिनान वाली हैं, पाक और साबित हैं, हक़ की साथी हैं, उनसे मौत के वक़्त और क़ब्र से उठने के वक़्त कहा जाएगा कि तू अपने रब की तरफ़, उसके पड़ौस की तरफ़, उसके सवाब और अज्र की तरफ़, उसकी जन्नत और रज़ामंदी की तरफ़ लौट चल, यह अल्लाह तआला से ख़ुश है और अल्लाह तआला उससे राज़ी है और इतना देगा कि यह भी ख़ुश हो जाएगा। तू मेरे ख़ास बन्दों में आ जा और मेरी जन्नत में दाख़िल हो जा। हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं कि "यह आयत हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान (रज़ि.) के बारे में उतरी है।" बुरैदा (रह.) फ़र्माते हैं कि "हज़रत हम्ज़ा बिन अब्दुल मुत्तलिब (रज़ि.) के बारे में नाज़िल हुई है।" हज़रत अब्दुल्लाह (रज़ि.) से यह भी मरवी है कि क़ियामत के दिन इत्मिनान वाली रूहों से कहा जाएगा कि तू अपने रब यानी अपने साथी यानी अपने जिस्म की तरफ़ लौट जा जिसे तू दुनिया में आबाद किये हुए थी, तुम दोनों आपस में एक दूसरे से राज़ी रज़ामंद हो, यह भी मरवी है कि हज़रत अब्दुल्लाह (रज़ि.) इस आयत को (फ़दख़ुली फ़ी अब्दी) पढ़ते थे यानी ऐ रूह! मेरे बन्दे में यानी उसके जिस्म में चली जा। लेकिन यह ग़रीब है और ज़ाहिर क़ौल पहला ही है।

जैसे और आयत में है (ثُمَّ رُدُّوْا إِلَى اللَّهِ مَوْلٰهُمُ الْحَقِّ) (6/अन्आम : 62) यानी फिर सबके सब अपने सच्चे मौला की तरफ़ लौटाए जाएँगे। और आयत में है (وَأَنَّ مَرَدَّنَا إِلَى اللَّهِ) (40/मोमिन : 43) यानी हमारा लौटना अल्लाह तआला की तरफ़ यानी उसके हुक्म की तरफ़ और उसके सामने है। इब्ने अबी हातिम में है कि यह आयतें हज़रत सिद्दीक़े अकबर (रज़ि.) की मौजूदगी में उतरीं तो आपने कहा कितना अच्छा क़ौल है। हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने फ़र्माया, तुम्हें भी यही कहा जाएगा। (अद्दुर्रुल मंसूर : 8/513) दूसरी रिवायत में है कि हुज़ूरे अकरम (ﷺ) के सामने हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) ने यह आयतें पढ़ीं तो हज़रत सिद्दीक़ (रज़ि.) ने यह फ़र्माया जिस पर आप (ﷺ) ने यह ख़ुशख़बरी सुनाई कि तुझे फ़रिश्ता मौत के वक़्त यही कहेगा। (तब्री : 24/424; यह रिवायत मुर्सल यानी ज़ईफ़ है।) इब्ने अबी हातिम में यह रिवायत भी है कि जब हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) के चचाज़ाद भाई का ताइफ़ में इंतिक़ाल हुआ तो "एक परिन्दा आया उस जैसा परिन्दा कभी ज़मीन पर देखा नहीं गया। वह नअश में चला गया फिर निकलते हुए नहीं देखा गया जब आपको दफ़न किया गया तो क़ब्र के कोने से इसी आयत की तिलावत की आवाज़ आई और यह न मालूम हो सका कि कौन पढ़ रहा है।" (हाकिम : 3/543) यह रिवायत तब्रानी में है। अबू हाशिम क़ुबास बिन रज़ीन (रह.) फ़र्माते हैं कि जंगे रूम में हम दुश्मनों के हाथ क़ैद हो गए, शाहे रूम ने हमें अपने सामने बुलाया और कहा या तो तुम इस दीन को छोड़ दो या क़त्ल होना मंज़ूर कर लो। एक एक को वह यह कहता कि हमारा दीन क़बूल कर, वरना जल्लाद को हुक्म देता हूँ कि तुम्हारी गर्दन मार दे तीन शख़्स तो मुर्तद हो गए जब चौथा आया तो उसने साफ़ इंकार कर दिया, बादशाह के हुक्म से उसकी गर्दन उड़ा दी गई और सिर को नहर में डाल दिया गया वह नीचे डूब गया और ज़रा सी देर में पानी पर आ गया और उन तीनों की तरफ़ देखकर कहने लगा कि ऐ फ़लाँ और ऐ फ़लाँ! और ऐ फ़लाँ! उनका नाम लेकर उन्हें आवाज़ दी। जब यह मुतवज्जह हुए सब दरबारी लोग भी देख रहे थे और ख़ुद बादशाह भी ताज्जुब के साथ सुन रहा था। उस मुसलमान शहीद के सिर ने कहा सुनो! अल्लाह तआला फ़र्माता है (या अय्यतुहन्नफ़्सुल मुत्मइन्ना. इरजिई इला रब्बिकि राज़ियातम् मर्ज़िय्या. फ़दख़ुली फ़ी इबादी. वदख़ुली जन्नती) इतना कहकर वह सिर फिर पानी में ग़ोता लगा गया। इस वाक़िया का इतना अच्छा असर हुआ कि क़रीब था कि नसरानी उसी वक़्त मुसलमान हो जाते, बादशाह ने उसी वक़्त दरबार बरख़ास्त कर दिया और वह तीनों फिर मुसलमान हो गए और हम सब यूँ ही क़ैद में रहे, आख़िर ख़लीफ़ा अबू जअफ़र मंसूर की तरफ़ से हमारा फ़िदया आ गया और हमने नजात पाई। इब्ने असाकिर में है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने एक शख़्स से फ़र्माया कि, यह दुआ पढ़ा कर (अल्लाहुम्म इन्नी अस्अलुका नफ़्सन बिका मुत्मइन्नतन तुअमिनु बि लिक़ाइका व तर्ज़ा बि क़ज़ाइका व तक़्नउ़ बि अ़ताइका) ऐ परवरदिगार! मैं तुझसे ऐसा नफ़्स तलब करता हूँ जो तेरी ज़ात पर इत्मिनान और भरोसा रखता हो, तेरी मुलाक़ात पर ईमान रखता हो, तेरी क़ज़ा पर राज़ी हो, तेरे दिये हुए पर क़नाअत करने वाला हो। (इब्ने असाकिर : 19/211; दूसरा नुस्ख़ा : 37/57, 73/117; अल्कबीर लित्तब्रानी : 8/88; मज्मउ़ज़्ज़वाइद : 10/180; वसनदुहू ज़ईफ़ुन; फ़ीहि मजाहील) अल्हम्दुलिल्लाह! सूरह फ़ज्र की तफ़्सीर मुकम्मल हुई।

FLOW CHART
तरतीबी नक्श-ए-रब्त

MACRO-STRUCTURE
नज़्मे-जली

सूरह बलद - 90

आयात : 20, मक्की, पैराग्राफ : 4

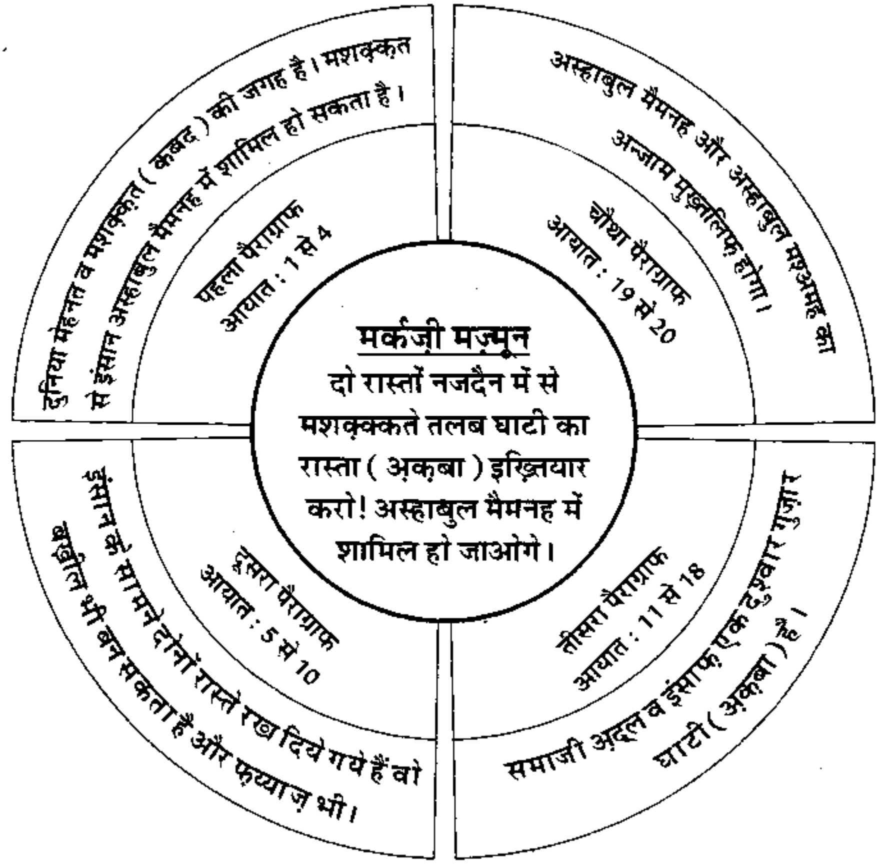

ज़मान-ए-नुज़ूल

सूरह बलद रसूल (सल्ल.) के क़ियामे मक्का के तीसरे दौर (6-10 नबवी) में नाज़िल हुई, जब मक्का जैसे पुरअम्न शहर में जिसे बलदुल अमीन का नाम दिया गया था, रसूल (सल्ल.) पर हर क़िस्म का ज़ुल्म व सितम हलाल कर लिया गया था 'व अन्-त हिल्लुम् बिहाज़ल् बलद'

तफ़्सीर सूरह बलद

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

तर्जुमा : ''शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है।''

***

لَآ اُقْسِمُ بِهٰذَا الْبَلَدِ ① وَاَنْتَ حِلٌّ بِهٰذَا الْبَلَدِ ② وَوَالِدٍ وَّمَا وَلَدَ ③ لَقَدْ
خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ فِيْ كَبَدٍ ④ اَيَحْسَبُ اَنْ لَّنْ يَّقْدِرَ عَلَيْهِ اَحَدٌ ⑤ يَقُوْلُ اَهْلَكْتُ
مَالًا لُّبَدًا ⑥ اَيَحْسَبُ اَنْ لَّمْ يَرَهٗٓ اَحَدٌ ⑦ اَلَمْ نَجْعَلْ لَّهٗ عَيْنَيْنِ ⑧ وَلِسَانًا
وَّشَفَتَيْنِ ⑨ وَهَدَيْنٰهُ النَّجْدَيْنِ ⑩

तर्जुमा : ''मैं इस शहर की क़सम खाता हूँ (1) तेरे लिए इस शहर में लड़ाई हलाल होने वाली है (2) और क़सम है इंसानी बाप और औलाद की। (3) यक़ीनन हमने इंसान को बड़ी मशक़्क़त में पैदा किया है। (4) क्या यह गुमान करता है कि यह किसी के बस में ही नहीं? (5) कहता फिरता है कि मैंने तो बहुत कुछ माल ख़र्च कर डाला। (6) क्या यूँ समझता है कि किसी ने उसे देखा ही नहीं? (7) क्या हमने उसकी दो आँखें नहीं बनाईं? (8) और ज़ुबान और होंठ (नहीं बनाए) (9) और दोनों राहें दिखा दीं।'' (10)

मक्का मुकर्रमा की फ़ज़ीलत (आयत : 1 से 10) : अल्लाह तबारक व तआ़ला यहाँ मक्का मुकर्रमा की कसम खाता है और इस हाल में कि वह आबाद है उसमें लोग बसते हैं, और वह भी अमन चैन में है (ला) से उन पर रद्द किया, फिर क़सम खाई और फ़र्माया कि ऐ नबी (ﷺ)! तेरे लिए यहाँ एक बार लड़ाई हलाल होने वाली है जिसमें कोई गुनाह और हर्ज न होगा और उसमें जो मिले वह हलाल होगा, सिर्फ़ उसी वक़्त के लिए यह हुक्म है। सहीह हदीस में भी है कि इस बाबरकत शहर मक्का को परवरदिगारे आ़लम ने पहले दिन से ही हुर्मत वाला बनाया है और क़ियामत तक यह हुर्मत व इज़्ज़त इसकी बाक़ी रहने वाली है, इसका दरख़्त न काटा जाए, इसके काँटे न उखेड़े जाएँ, मेरे लिए भी सिर्फ़ एक दिन ही की एक साअ़त के लिए हलाल किया गया था आज फिर इसकी हुर्मत उसी तरह लौट आई जैसे कल थी, हर हाज़िर को चाहिए कि ग़ैर हाज़िर को

पहुँचा दे।'' एक रिवायत में है कि अगर यहाँ के जंगो जिदाल के जवाज़ की दलील में कोई लड़ाई पेश करे तो कह देना कि अल्लाह तआला ने अपने रसूल (ﷺ) को इजाज़त दी थी और तुम्हें नहीं दी। (सहीह बुख़ारी, किताब जज़ाउस्सैदि, बाब ला युअज़दु शजरुल हरम : 1832, 1834; सहीह मुस्लिम : 1353, 1354; अबूदाऊद : 218; तिर्मिज़ी : 1590; इब्ने हिब्बान : 3720) फिर क़सम खाता है बाप की और औलाद की। कुछ ने तो कहा है कि (मा वलद) में (मा) नाफ़िया है यानी क़सम है उसकी जो औलाद वाला है और क़सम है उसकी जो बेऔलाद है। यानी अयालदार और बाँझ, और अगर (मा) को मौसूला माना जाए तो मअनी यह हुए कि बाप की और औलाद की क़सम!बाप से मुराद हज़रत आदम (ﷺ) और औलाद से मुराद कुल इंसान। (तब्री : 24/432) ज़्यादा क़वी और बेहतर बात यही मालूम होती है। क्योंकि इससे पहले क़सम है मक्का की जो तमाम ज़मीन और कुल बस्तियों की माँ है तो उसके बाद उसके रहने वालों की क़सम खाई और रहने वालों यानी इंसान की असल और उसकी जड़ यानी हज़रत आदम (ﷺ) की फिर उनकी औलाद की क़सम खाई। अबू इमरान (रह.) फ़र्माते हैं ''मुराद हज़रत इब्राहीम और आप (ﷺ) की औलाद है।'' (तब्री : 24/433) इमाम इब्ने जरीर (रह.) फ़र्माते हैं ''आम है यानी हर बाप और हर औलाद।'' (तब्री : 24/433) फिर फ़र्माता है कि हमने इंसान को बिलकुल सही क़ामत जचे तुले अअज़ा वाला ठीक ठाक पैदा किया है उसकी माँ के पेट में ही उसे यह पाकीज़ा तर्तीब और उम्दह तर्कीब दे दी जाती है। जैसे फ़र्माया (अल्लज़ी ख़लक़का फ़सव्वाक...) (तब्री : 24/434) यानी उस अल्लाह तआला ने तुझे पैदा किया, दुरुस्त किया, ठीक ठाक बनाया और फिर जिस सूरत में चाहा तर्कीब दी, और जगह है (لَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنسَانَ فِي أَحْسَنِ تَقْوِيمٍ) (95/सूरह तीन : 4) हमने इंसान को बेहतरीन सूरत पर बनाया है। इब्ने अब्बास (रज़ि.) वग़ैरह से मरवी है कि कुव्वत व ताक़त वाला पैदा किया है। ख़ुद इसे देखो इसकी पैदाइश की तरफ़ ग़ौर करो, इसके दाँतों का निकलना देखो वग़ैरह। हज़रत मुजाहिद (रह.) फ़र्माते हैं पहले नुत्फ़ा, फिर ख़ून बस्ता, फिर लोथड़ा गोश्त का, ग़र्ज़ अपनी पैदाइश में ख़ूब मशक़्क़तें उठाता है जैसे और जगह है (46/अहक़ाफ़ : 15) यानी उसकी माँ ने हमल में तक्लीफ़ उठाई फिर वज़्ए हमल में मशक़्क़त बर्दाश्त की, बल्कि दूध पिलाने में भी मशक़्क़त और मईशत में भी तक्लीफ़। हज़रत क़तादा (रह.) फ़र्माते हैं ''सख़्ती और तलबे कसब में पैदा किया गया है।'' इक्रिमा (रह.) फ़र्माते हैं ''शिद्दत और तूल में पैदा हुआ है।'' (अदुर्रुल मंसूर : 8/520) क़तादा (रह.) फ़र्माते हैं ''मशक़्क़त में, यह भी मरवी है कि एतिदाल और क़ियाम में। दुनिया और आख़िरत में सख़्तियाँ सहनी पड़ती हैं। हज़रत आदम (ﷺ) चूँकि आसमान में पैदा हुए थे इसलिए यह कहा गया। क्या वह यह समझता है कि उसके माल के लेने पर कोई क़ादिर नहीं। उस पर किसी का बस ही नहीं, क्या वह न पूछा जाएगा कि कहाँ से माल लाया और कहाँ ख़र्च किया? यक़ीनन उस पर अल्लाह तआला का बस है और वह पूरी तरह इस पर क़ादिर है। फिर फ़र्माता है कि मैंने बड़े वारे न्यारे किये हज़ारों लाखों ख़र्च कर डाले, क्या वह ख़याल करता है कि उसे कोई देख नहीं रहा? यानी क्या अल्लाह तआला की नज़रों से वह अपने आपको ग़ायब समझता है। क्या हमने इंसान को देखने वाली दो आखें नहीं दीं? और दिल की बातों के इज़्हार के लिए ज़ुबान अता नहीं की? और दो होंठ नहीं

दिये? जिनसे कलाम करने में मदद मिले, खाना खाने में मदद मिले और चेहरे की ख़ूबसूरती भी हो और मुँह की भी। इब्ने असाकिर में है कि नबी अकरम (ﷺ) फ़र्माते हैं कि "अल्लाह तआला फ़र्माता है, ऐ इब्ने आदम! मैंने बड़ी बड़ी बेहद नेअमतें तुझको बख़्शीं जिन्हें तू गिन भी नहीं सकता, न उसके शुक्र अदा करने की तुझमें ताक़त है, मेरी ही यह नेअमत भी है कि मैंने तुझे देखने को दो आँखें दीं, फिर मैंने उन पर पलकों का ग़िलाफ़ बना दिया है पस इन आँखों से मेरी हलालकर्दा चीज़ें देख अगर हराम चीज़ें तेरे सामने आएँ तो इन दोनों को बंद कर ले। मैंने तुझे ज़ुबान दी है और उसका ग़िलाफ़ भी इनायत किया है, मेरी मर्ज़ी की बात ज़ुबान से निकाल और मेरी मना की हुई बातों से ज़ुबान बंद कर ले। मैंने तुझे शर्मगाह दी है और उसका पर्दा भी अता किया है हलाल जगह तो बेशक इस्तेमाल कर लेकिन हराम जगह पर पर्दा डाल ले। ऐ इब्ने आदम! तू मेरी नाराज़गी नहीं उठा सकता और मेरे अज़ाबों के सहने की ताक़त नहीं रखता।" (यह रिवायत मुर्सल यानी ज़ईफ़ है।) फिर फ़र्माया कि हमने इसे दोनों रास्ते दिखा दिये भलाई का और बुराई का। रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं, "दो रास्ते हैं फिर तुम्हें बुराई का रास्ता भलाई के रास्ते से ज़्यादा अच्छा क्यूँ लगता है?" (वसनदुहू ज़ईफ़ुन) यह हदीस बहुत ज़ईफ़ है यह हदीस बहुत ज़ईफ़ है। यह हदीस मुर्सल तरीक़े से भी मरवी है। इब्ने अब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं "मुराद इससे दोनों दूध हैं।" और मुफ़स्सिरीन ने भी यही कहा है। इमाम इब्ने जरीर (रह.) फ़र्माते हैं "ठीक क़ौल पहला ही है। जैसे और जगह है (إِنَّا خَلَقْنَا الْإِنسَانَ مِن نُّطْفَةٍ) (76/दहर : 2) यानी हमने इंसान को मिले जुले नुत्फ़े से पैदा किया फिर हमने उसे सुनता देखता किया, हमने उसकी रहबरी की और रास्ता दिखा दिया, पस या तो शुक्रगुज़ार है या नाशुक्रा।

***

فَلَا اقْتَحَمَ الْعَقَبَةَ ﴿١١﴾ وَمَآ أَدْرٰىكَ مَا الْعَقَبَةُ ﴿١٢﴾ فَكُّ رَقَبَةٍ ﴿١٣﴾ أَوْ إِطْعٰمٌ فِىْ يَوْمٍ ذِىْ مَسْغَبَةٍ ﴿١٤﴾ يَّتِيْمًا ذَا مَقْرَبَةٍ ﴿١٥﴾ أَوْ مِسْكِيْنًا ذَا مَتْرَبَةٍ ﴿١٦﴾ ثُمَّ كَانَ مِنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَتَوَاصَوْا بِالصَّبْرِ وَتَوَاصَوْا بِالْمَرْحَمَةِ ﴿١٧﴾ أُولٰٓئِكَ أَصْحٰبُ الْمَيْمَنَةِ ﴿١٨﴾ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِنَا هُمْ أَصْحٰبُ الْمَشْـَٔمَةِ ﴿١٩﴾ عَلَيْهِمْ نَارٌ مُّؤْصَدَةٌ ﴿٢٠﴾

तर्जुमा : "सो उससे न हो सका कि घाटी में दाख़िल होता (11) और तू क्या समझा कि घाटी है क्या? (12) किसी गर्दन (ग़ुलाम लौण्डी) को आज़ाद करना। (13) या भूख वाले दिन खाना खिलाना। (14) किसी रिश्तेदार यतीम को (15) या ख़ाकसार मिस्कीन को (16) फिर उन लोगों में से हो जाता जो ईमान लाते और एक दूसरे को सब्र की और रहम करने की वसिय्यत

करते हैं (17) यही लोग हैं जिनके दाएँ हाथ में नामा-ए-आमाल दिये जाने वाले हैं, (18) और जिन लोगों ने हमारी आयतों के साथ कुफ़्र किया यह वह लोग हैं जिनके बाएँ हाथ में नामा-ए-आमाल दिये जाने वाले हैं (19) उन ही पर आग होगी जो चारों तरफ़ से घेरी हुई होगी।" (20)

गुलाम आज़ाद करने का सवाब, अक़बा से क्या मुराद है? (आयत : 11 से 20) : हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं कि अक़बा जहन्नम के एक फिसलने पहाड़ का नाम है, हज़रत कअब अहबार (रह.) फ़र्माते हैं कि उसके सत्तर (70) दर्जे हैं जहन्नम में। क़तादा (रह.) फ़र्माते हैं कि "यह सख़्त घाटी दाख़िले की है उसमें अल्लाह तआला की फ़र्मांबरदारी से दाख़िल हो जाओ।" फिर उसका दाख़िला बतलाया यह कहकर कि तुम्हें किसने बतलाया कि यह घाटी क्या है? तो फ़र्माया गुलाम आज़ाद करना और अल्लाह तआला के नाम खाना देना। इब्ने ज़ेद (रह.) फ़र्माते हैं "मतलब यह है कि यह नजात और ख़ैर की राहों में क्यूँ न चला? फिर हमें तंबीह की और फ़र्माया, तुम क्या जानो अक़बा क्या है? आज़ादगी गर्दन या सदक़ा तआम (फ़क्कु रक़बतिन) जो इज़ाफ़त के साथ है उसे (फ़क्कु रक़बतन) भी पढ़ा गया है यानी फ़ेअल फ़ाइल, दोनो क़िरअतों का मतलब क़रीबन एक ही है। मुस्नद अहमद में है रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं कि "जो किसी मुसलमान की गर्दन छुड़ाए अल्लाह तआला उसके हर हर हिस्से को उसके हर हर हिस्से के बदले जहन्नम से आज़ाद कर देता है यहाँ तक कि हाथ के बदले हाथ, पैर के बदले पैर और शर्मगाह के बदले शर्मगाह।" हज़रत अली बिन हुसैन यानी इमाम ज़ैनुल आबेदीन (रह.) ने जब यह हदीस सुनी तो सईद बिन मरजाना रावी हदीस से पूछा कि क्या तुमने ख़ुद हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) की ज़ुबानी यह हदीस सुनी है? आपने फ़र्माया, हाँ! तो आपने अपने गुलाम से फ़र्माया कि मुतरिफ़ को बुला लो, जब वह सामने आया तो आपने फ़र्माया, "जाओ! तुम अल्लाह तआला के नाम पर आज़ाद हो।" बुख़ारी व मुस्लिम व तिर्मिज़ी और नसाई में भी यह हदीस है। सहीह मुस्लिम में यह भी है कि यह गुलाम दस हज़ार दिरहम का ख़रीदा हुआ था। (सहीह बुख़ारी, किताबुल इत्क़, बाब फ़िल्इत्क़ व फ़ज़्लिही : 2517; सहीह मुस्लिम : 1509; तिर्मिज़ी : 1541; अहमद : 2/420) और हदीस में है कि "जो मुसलमान किसी मुसलमान गुलाम को आज़ाद करे उसकी भी एक एक हड्डी के बदले उसकी एक एक हड्डी जहन्नम से आज़ाद हो जाती है।" (अबूदाऊद, किताबुल इत्क़, बाब अय्युर्रिक़ाबि अफ़ज़ल : 3965; वसनदुहू सहीहुन; क़तादा सुरैह बिस्सिमाइ इन्दल बैहक़ी : 9/161) मुस्नद अहमद में है "जो शख़्स अल्लाह तआला के ज़िक्र के लिए मस्जिद बना दे अल्लाह तआला उसके लिए जन्नत में घर बनाता है और जो मुसलमान गुलाम को आज़ाद करे अल्लाह तआला उसे उसका फ़िदया बना देता है और उसे जहन्नम से आज़ाद कर देता है। जो शख़्स इस्लाम में बूढ़ा हुआ उसे क़ियामत के दिन नूर मिलेगा।" (अहमद : 4/386; वसनदुहू ज़ईफ़ुन; फ़ुर्ज बिन फ़ुज़ाला ज़ईफ़ है) और रिवायत में यह भी है कि "जो शख़्स अल्लाह तआला की राह में तीर चलाए ख़्वाह वह लगे या न लगे उसे औलादे इस्माईल में से एक गुलाम के आज़ाद करने का सवाब मिलेगा।" और हदीस में है कि "जिस मुसलमान के तीन बच्चे बुलूग़त से पहले मर जाएँ उसे अल्लाह तआला अपने फ़ज़्लो करम से जन्नत में दाख़िल करेगा। (अहमद : 4/113; अबूदाऊद, किताबुल

इत्क़, बाब अय्युर्रिक़ाबि अफ़ज़ल : 3966; वहुव हदीसुन हसन; तिर्मिज़ी : 1635, 1638; नसाई, बइख़्तिलाफ़ि अल्फ़ाज़) और जो शख़्स अल्लाह तआला की राह में जोड़े दे अल्लाह तआला उसके लिए जन्नत के आठों दरवाज़े खोल देगा जिससे चाहे दाख़िल हो जाए।'' (अहमद : 4/386; वसनदुहू ज़ईफ़ुन; फ़ुर्ज बिन फ़ुज़ाला ज़ईफ़ है।) इन तमाम अहादीस की सनदें निहायत उम्दा हैं। (फ़) अबूदाऊद में है कि ''एक बार हमने हज़रत वासिला बिन अस्क़अ (रज़ि.) से कहा कि हमें कोई ऐसी हदीस सुनाइए जिसमें कोई कमी ज़्यादती न हो तो आप बहुत नाराज़ हुए और फ़र्माने लगे कि तुममें से कोई पढ़े और उसका क़ुरआन उसके घर में हो तो क्या वह कमी ज़्यादती करता है? हमने कहा हज़रत हमारा मतलब यह नहीं, हम तो यह कहते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुनी हुई हदीस हमें सुनाएँ। आपने फ़र्माया हम एक बार रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में अपने एक साथी के बारे में हाज़िर हुए जिसने क़त्ल की वजह से अपने ऊपर जहन्नम वाजिब कर ली थी तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया, उसकी तरफ़ से ग़ुलाम आज़ाद करो, अल्लाह तआला उसके एक हिस्से के बदले उसका एक एक हिस्सा जहन्नम की आग से आज़ाद कर देगा।'' (अबूदाऊद, किताबुल इत्क़, बाब फ़ी सवाबिल इत्क़ : 3964; वसनदुहू हसन) यह हदीस नसाई में भी है। और हदीस में है कि ''जो शख़्स किसी की गर्दन आज़ाद कराये अल्लाह तआला उसे उसका फ़िदया बना देता है। (अहमद : 4/150; वसनदुहू ज़ईफ़ुन क़तादा अन्अन वस्सनदु मुंक़तअ) ऐसी और बहुत सी हदीसें हैं।''

ग़रीब व मिस्कीन को खाना खिलाओ : मुस्नद अहमद में है कि ''एक आराबी रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास आया और कहने लगा हुज़ूरे अकरम (ﷺ) कोई ऐसा काम बता दीजिए जिससे मैं जन्नत में जा सकूँ। आप (ﷺ) ने फ़र्माया थोड़े से अल्फ़ाज़ में बहुत सारी बातें तू पूछ बैठा नस्मा आज़ाद कर, रक़बा छुड़ा। उसने कहा हज़रत क्या यह दोनों एक चीज़ नहीं? आप (ﷺ) ने फ़र्माया, नहीं! नस्मा की आज़ादगी के मअनी यह हैं कि तू अकेला एक ग़ुलाम आज़ाद करे और (फ़क्कु रक़बतिन) के मअनी हैं कि थोड़ी बहुत मदद करे, दूध वाला जानवर दूध पीने के लिए किसी मिस्कीन को देना, ज़ालिम रिश्तेदार से नेक सुलूक करना, यह हैं जन्नत के काम, अगर उसकी तुझे ताक़त न हो तो भूखे को खिला, प्यासे को पिला, नेकियों का हुक्म कर, बुराइयों से रोक, अगर इसकी भी ताक़त न हो तो सिवा भलाई के और नेक बात के और कोई कलिमा ज़ुबान से न निकाल।'' (अहमद : 4/299; वसनदुहू सहीहुन) (ज़ी मस्ग़बतिन) के मअनी हैं भूख वाला। (तबरी : 24/442) जब खाने की इश्तिहा हो। ग़र्ज़ भूख के वक़्त का खिलाना और वह भी उसे जो नादान बच्चा है सिर से बाप का साया उठ चुका हो और है भी उसका रिश्तेदार। रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं, ''मिस्कीन को सदक़ा देना इकहरा सवाब रखता है और रिश्तेदार को देना दोहरा अज्र दिलवाता है।'' (तिर्मिज़ी, किताबुज़्ज़कात, बाब मा जाअ फ़िस्सदक़ति अला ज़िल क़राबत : 658; वहुव हदीसुन सहीहुन; नसाई : 2583; इब्ने माजा : 1844; अहमद : 4/214; सहीह इब्ने ख़ुज़ैमा : 2385; इब्ने हिब्बान : 3344) या ऐसे मिस्कीन को देना जो ख़ाक आलूद हो, रास्ते में पड़ा हुआ हो, घर दर न हो, बर बिस्तर न हो, भूख की वजह से पीठ ज़मीन से लग रही हो, अपने घर से दूर हो, मुसाफ़िरत में हो, फ़क़ीर, मिस्कीन, मोहताज, मक़रूज़, मुफ़्लिस हो, कोई

पुरसाने हाल भी न हो, अहलो अयाल वाला हो, यह सब मअनी क़रीब क़रीब एक ही हैं, फिर यह शख़्स बावजूद इन नेक कामों के दिल में ईमान रखता हो, उन नेकियों पर अल्लाह तआला से अज्र का तालिब हो, जैसे और जगह है (مَنْ أَرَادَ الْآخِرَةَ) (17/बनी इस्राईल : 19) जो शख़्स आख़िरत का इरादा रखे और उसी के लिए कोशिश करे और हो भी वह ईमान वाला तो उनकी कोशिश अल्लाह तआला के यहाँ मशकूर है। और जगह है (مَنْ عَمِلَ صَالِحًا مِّنْ ذَكَرٍ أَوْ أُنْثَى) (40/मोमिन : 40) ईमान वालों में से जो मर्द व औरत नेक अमल करे यह जन्नत में जाएँगे और वहाँ बेहिसाब रोज़ियाँ पाएँगे। फिर उनका और वस्फ़ बयान हो रहा है कि लोगों के सदमात सहने और उन पर रहमो करम करने की यह आपस में एक दूसरों को नसीहत व वसिय्यत करते हैं। जैसे कि हदीस में है "रहम करने वालों पर अल्लाह तआला भी रहम करता है। तुम ज़मीन वालों पर रहम करो, आसमान वाला तुम पर रहम करेगा।" (अबूदाऊद, किताबुल अदब, बाब फ़िर्रहमति : 4941; वसनदुहू हसन; तिर्मिज़ी : 1924; अहमद : 2/160) और हदीस में है जो रहम न करे उस पर रहम नहीं किया जाता। (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तौहीद, बाब क़ौलुल्लाहि तआला तबारक व तआला (कुलिदउल्लाह अविदउर्रहमान...) : 7376; सहीह मुस्लिम : 2319; अहमद : 4/562; इब्ने हिब्बान : 465) अबूदाऊद में है "जो हमारे छोटों पर रहम न करे और बड़ों के हक़ न समझे वह हममें से नहीं।" (अबूदाऊद, किताबुल अदब, बाब फ़िर्रहमति : 4943; वहुव हदीसुन हसन; तिर्मिज़ी : 1920; अल्अदबुल मुफ़्रद : 355) फिर फ़र्माता है कि यह लोग वह हैं जिनके दाहिने हाथ में आमाल नामा दिया जाएगा और हमारी आयतों के झुठलाने वालों के बाएँ हाथ में आमाल नामा मिलेगा। और सर बंद तह ब तह आग मे जाएँगे, जिससे न कभी छुटकारा मिलेगा न नजात न आराम न राहत। उस आग के दरवाज़े उन पर बंद रहेंगे, मज़ीद बयान उसका सूरह (वैलुल लि कुल्लि...) में आएगा, इंशाअल्लाह तआला! हज़रत क़तादा (रह.) फ़र्माते हैं, "मतलब यह है कि न उसमें रोशनी होगी न सूराख़ होगा, न कभी वहाँ से निकलना मिलेगा।" (तब्री : 24/447) हज़रत अबू इमरान जूनी (रह.) फ़र्माते हैं कि "जब क़ियामत का दिन आएगा अल्लाह तआला हुक्म देगा हर सरकश को हर एक शैतान को और हर उस शख़्स को जिसकी शरारत से लोग दुनिया में डरते रहते थे लोहे की ज़ंजीरों से मज़बूत बाँध दिया जाएगा फिर जहन्नम में झोंक दिया जाएगा। फिर जहन्नम बंद कर दी जाएगी, अल्लाह तआला की क़सम! कभी उनके क़दम टिकेंगे ही नहीं, अल्लाह तआला की क़सम! उन्हें कभी आसमान की सूरत ही दिखाई न देगी, अल्लाह तआला की क़सम! कभी आराम से उनकी आँख लगेगी ही नहीं, अल्लाह तआला की क़सम! उन्हें कभी कोई मज़े की चीज़ खाने पीने को मिलेगी ही नहीं।" (इब्ने अबी हातिम)

अल्हम्दुलिल्लाह! सूरह बलद की तफ़्सीर मुकम्मल हुई।

***

FLOW CHART
तरतीबी नक्श-ए-रब्त

MACRO-STRUCTURE
नज़्मे-जली

सूरह शम्स - 91

आयात : 15, मक्की, पैराग्राफ : 3

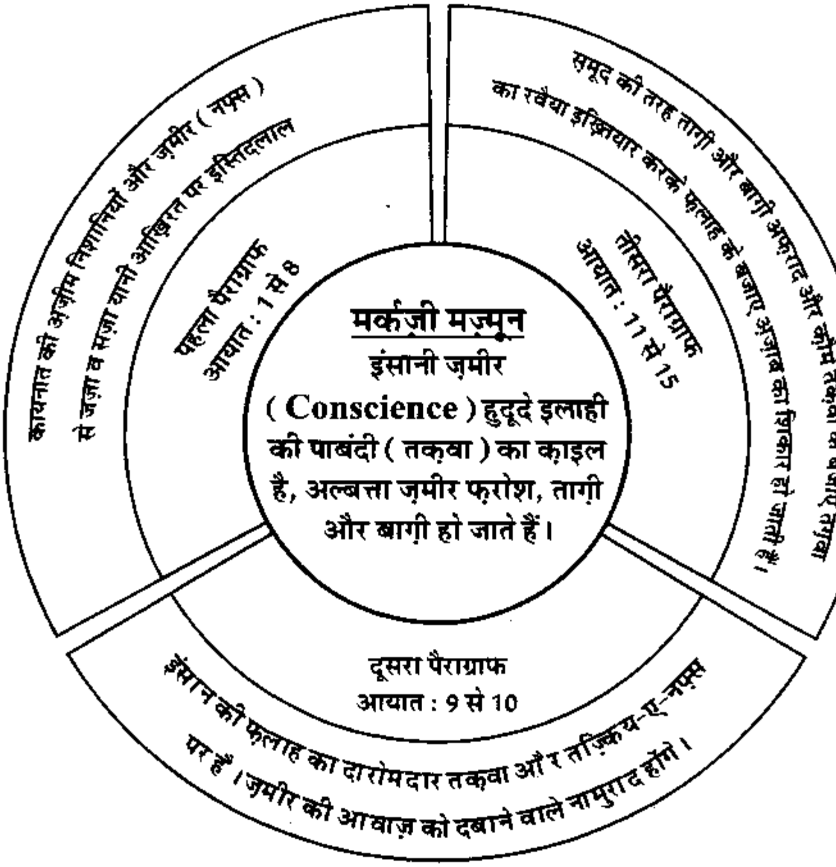

ज़मान-ए-नुज़ूल

सूरह शम्स ऐलाने आम के बाद रसूल (सल्ल.) के क़ियामे मक्का के दूसरे दौर (4-5 नबवी) के आख़िर में, पुर ज़ोर मुख़ालिफ़त के दौर में नाज़िल हुई। सरदाराने क़ुरैश के रवैये क़ौमे समूद की तरह सरकश और जाबिराना हो गये थे। उन्हें क़ौमे समूद की तरह अज़ाब की धमकी दी गई।

तफ़्सीर सूरह शम्स

हज़रत जाबिर (रज़ि.) की हदीस पहले गुज़र चुकी है कि नबी अकरम (ﷺ) ने हज़रत मुआज़ (रज़ि.) से फ़र्माया कि तुमने (सब्बिहिस्मा रब्बिकल अअ्ला) और (वश्शम्सि व ज़ुहाहा) और (वल्लैलि इज़ा यग़्शा) के साथ इमामत क्यों न कराई। (इसकी तख़रीज सूरह इंफ़ितार में गुज़र चुकी है।)

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ○

तर्जुमा : "शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है।"

***

وَالشَّمۡسِ وَضُحٰىهَا ۞ وَالۡقَمَرِ اِذَا تَلٰىهَا ۞ وَالنَّهَارِ اِذَا جَلّٰىهَا ۞ وَالَّيۡلِ اِذَا
يَغۡشٰىهَا ۞ وَالسَّمَآءِ وَمَا بَنٰىهَا ۞ وَالۡاَرۡضِ وَمَا طَحٰىهَا ۞ وَنَفۡسٍ وَّمَا
سَوّٰىهَا ۞ فَاَلۡهَمَهَا فُجُوۡرَهَا وَتَقۡوٰىهَا ۞ قَدۡ اَفۡلَحَ مَنۡ زَكّٰىهَا ۞ وَقَدۡ خَابَ مَنۡ
دَسّٰىهَا ۞

***

तर्जुमा : "क़सम है सूरज की और उसकी धूप की (1) क़सम है चाँद की जब उसके पीछे आए (2) क़सम है दिन की जब सूरज को नुमायाँ करे (3) क़सम है रात की जब उसे ढाँप ले (4) क़सम है आसमान की और उसके बनाने की (5) क़सम है ज़मीन की और उसे हमवार करने की (6) क़सम है नफ़्स की और उसे दुरुस्त बनाने की (7) फिर क़सम है उसके दिल में बदी और नेकी डालने की (8) जिसने उसे पाक किया वह कामयाब हुआ (9) और जिसने इसे ख़ाक में मिला दिया वह नाकाम हुआ।" (10)

सूरज और चाँद की क़सम (आयत : 1 से 10) : इमाम इब्ने जरीर (रह.) फ़र्माते हैं कि, "ठीक बात

यह है कि अल्लाह तआला ने सूरज की और दिन की क़सम खाई है'' और चाँद जबकि उसके पीछे आए यानी सूरज छुप जाए और चाँद चमकने लगे। इब्ने ज़ैद (रह.) फ़र्माते हैं कि ''महीने के पहले पन्द्रह दिन में तो चाँद सूरज के पीछे रहता है और पिछले पन्द्रह दिनों में यह आगे होता है।'' ज़ेद बिन असलम (रह.) फ़र्माते हैं ''मुराद इससे लैलतुल क़द्र है।'' फिर दिन की क़सम खाई जबकि वह मुनव्वर हो जाए यानी सूरज दिन को घेर ले। कुछ अरबी जानने वालों ने यह भी कहा है कि दिन जबकि अंधेरे को रोशन कर दे लेकिन अगर यूँ कहा जाता कि फैलावट को वह जब चमका दे तो और अच्छा होता ताकि (यग़शाहा) में भी यह मअनी ठीक बैठते, इसीलिए हज़रत मुजाहिद (रह.) फ़र्माते हैं ''दिन की क़सम! जबकि वह उसे रोशन कर दे।'' (तबरी : 24/451) इमाम इब्ने जरीर (रह.) इस क़ौल को पसंद फ़र्माते हैं कि इन सब में ज़मीर हा का मरजअ शम्स है क्योंकि इसी का ज़िक्र चल रहा है, रात जबकि उसे ढाँप ले और चारों तरफ़ अंधेरा फैल जाए। यज़ीद बिन ज़ी हमामा (रह.) कहते हैं कि ''जब रात आती है तो अल्लाह जल्ला जलालुहू फ़र्माता है मेरे बन्दों को मेरी एक बहुत बुरी ख़ल्क़ ने छुपा लिया, पस मख़्लूक़ रात से हैबत करती है तो उसके पैदा करने वाले से और ज्यादा हैबत करनी चाहिए।'' (इब्ने अबी हातिम) फिर आसमान की क़सम खाता है यहाँ जो मा है यह मसदरिया भी हो सकता है यानी आसमान और उसकी बनावट की क़सम। हज़रत क़तादा (रह.) का क़ौल यही है और यह मा मअनी में मन के भी हो सकता है तो मतलब यह होगा कि आसमान की क़सम। हज़रत क़तादा (रह.) का क़ौल यही है और यह मा मअनी में मन के भी हो सकता है तो मतलब यह होगा कि आसमान की क़सम और उसके बनाने वाले की क़सम यानी ख़ुद अल्लाह तआला की। मुजाहिद (रह.) यही फ़र्माते हैं। यह दोनों मअनी एक दूसरे को लाज़िम मल्ज़ूम हैं। बना के मअनी बुलंदी के हैं जैसे और जगह है (وَالسَّمَاءَ بَنَيْنَاهَا بِأَيْدٍ) (51/ज़ारियात : 47) यानी आसमान को हमने कुव्वत के साथ बनाया और हम कुशादगी वाले हैं। हमने ज़मीन को बिछाया और क्या ही अच्छा हम बिछाने वाले हैं। इसी तरह यहाँ भी फ़र्माया कि ज़मीन की और इसकी हमवारी की इसे बिछाने, इसे फैलाने की, इसकी तक़्सीम की, इसकी मख़्लूक़ की क़सम! ज़्यादा मशहूर क़ौल इसकी तफ़्सीर में फैलाने का है। अहले लुग़त के नज़दीक भी यही मअरूफ़ है। जोहरी फ़र्माते हैं तहौतुहू मिस्ल दहौतुहू के है और इसके मअनी फैलाने के हैं। अक्सर मुफ़स्सिरीन का यही क़ौल है। फिर फ़र्माया नफ़्स की और इसे ठीक ठाक बनाने की क़सम, यानी इसे पैदा किया दरआँ हाल यह कि यह ठीक ठाक और फ़ित्रत पर क़ायम था। जैसे और जगह है (فَأَقِمْ وَجْهَكَ) (30/रूम : 30) अपने चेहरे को क़ायम रख दीने हनीफ़ के लिए फ़ित्रत है अल्लाह की जिस पर लोगों को बनाया, अल्लाह तआला की ख़ुल्क़ की तब्दीली नहीं। हदीस में है कि ''हर बच्चा फ़ित्रत पर पैदा होता है फिर उसके माँ बाप उसे यहूदी या नसरानी या मजूसी बना लेते हैं। जैसे चौपाये जानवर का बच्चा सही सालिम पैदा होता है कोई उनमें तुम कनकटा न पाओगे।'' (सहीह बुख़ारी, किताबुल जनाइज़, बाब इज़ा अस्लमस्सबी फ़मात : 1358; सहीह मुस्लिम : 2658; तिर्मिज़ी : 2138; अहमद : 2/253; इब्ने हिब्बान : 130) सहीह मुस्लिम की एक हदीस में है कि ''अल्लाह तआला फ़र्माता है कि मैंने अपने बन्दे को यक्सूई वाले पैदा किये उनके पास शैतान पहुँचा और दीन से वरग़ला लिया।'' (सहीह

मुस्लिम, किताबुल जन्ना, बाब अस्सिफ़ातुल्लती युअरफ़ु बिहा फ़िद्दुनिया : 2865; अह़मद : 4/266; इब्ने ह़िब्बान : 653; मुस्नदे त़यालिसी : 1079) फिर फ़र्माता है कि अल्लाह तआ़ला ने इसे बदकारी व परहेज़गारी को बयान कर दिया। और जो चीज़ इसकी क़िस्मत में थी उसकी त़रफ़ इसकी रहबरी हुई। इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं यानी ख़ैरो शर्र ज़ाहिर कर दिया। (त़बरी : 24/454) इब्ने जरीर में है ह़ज़रत अबुल अस्वद (रह़.) फ़र्माते हैं कि "ह़ज़रत इमरान बिन ह़ुसैन (रज़ि.) ने पूछा ज़रा बतलाओ तो लोग जो कुछ आ़माल करते हैं और तक्लीफ़ें उठा रहे हैं यह क्या उनके लिए अल्लाह तआ़ला की जानिब से मुक़र्रर हो चुकी है और उनकी तक़्दीर में लिखी जा चुकी है या यह ख़ुद आइन्दा के लिए अपने त़ौर पर कर रहे हैं इस बिना पर कि अम्बिया (ﷺ) इनके पास आ चुके और अल्लाह तआ़ला की ह़ुज्जत इन पर पूरी हो चुकी है? मैं ने जवाब में कहा, नहीं! नहीं! बल्कि यह चीज़ पहले से फ़ैसलशुदा है और मुक़द्दर हो चुकी है। ह़ज़रत इमरान (रज़ि.) ने कहा फिर यह तो ज़ुल्म न होगा। मैं तो इसे सुनकर काँप उठा और घबराकर कहा कि हर चीज़ का ख़ालिक़ मालिक वही अल्लाह तआ़ला जल्ला जलालुहू है, तमाम मुल्क उसी के हाथ में है, उसके अफ़आ़ल की बाज़पुर्स कोई नहीं कर सकता वह सबसे सवाल कर सकता है। मेरा यह जवाब सुनकर ह़ज़रत इमरान (रज़ि.) बहुत ख़ुश हुए और कहा अल्लाह तआ़ला तुझे दुरुस्तगी इनायत करे मैंने तो यह सवालात इसीलिए किये थे कि इम्तिह़ान हो जाए। सुनो! एक शख़्स मुज़ैना जोहनिया क़बीले का ह़ुज़ूर (ﷺ) की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुआ और यही सवाल किया जो मैंने पहले आपसे किया और ह़ुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने भी वही जवाब दिया जो आपने दिया तो उसने कहा फिर हमारे आ़माल से क्या? आपने जवाबन इर्शाद फ़र्माया कि जिस किसी को अल्लाह तबारक व तआ़ला ने जिस मंज़िल के लिए पैदा किया है उसे वैसे ही काम होकर रहेंगे अगर जन्नती है तो आ़माले जन्नत और अगर दोज़ख़ी लिखा गया है तो वैसे ही आ़माल उस पर आसासन होंगे। सुनो! क़ुरआन में इसकी तस्दीक़ मौजूद है। अल्लाह तआ़ला फ़र्माता है (व नफ़्सिव्वमा सव्वाहा. फ़अल्हमहा फ़ुजूरहा व तक़्वाहा) यह ह़दीस मुस्लिम में भी है। (स़ह़ीह़ मुस्लिम किताबुल क़द्र, बाब कैफ़ियति ख़ल्क़े आदमी फ़ी बत़्नि उम्मिही : 2650; अह़मद : 4/438)

तज़्किया नफ़्स : मुस्नद अह़मद में भी है कि "जिसने अपने नफ़्स को पाक किया वह बामुराद हुआ, यानी इत़ाअ़ते रब में लगा रहा, निकम्मे आ़माल, रज़ील अख़्लाक़ छोड़ दिये। जैसे और जगह है (قَدْ اَفْلَحَ مَنْ تَزَكّٰى ﴿۱۴﴾ وَذَكَرَ اسْمَ رَبِّهٖ فَصَلّٰى ﴿۱۵﴾) (87/अ़'ला : 14, 15) जिसने पाकीज़गी की और अपने रब का नाम याद किया, फिर नमाज़ पढ़ी उसने कामयाबी पा ली और जिसने अपने ज़मीर का सतियानास किया और हिदायत से हटाकर उसे बर्बाद किया, नाफ़र्मानियों में पड़ गया, अल्लाह तआ़ला की इत़ाअ़त को छोड़ बैठा, यह नाकाम और नामुराद हुआ, और यह मअ़नी भी हो सकते हैं कि जिसके नफ़्स को अल्लाह तआ़ला ने पाक किया वह बामुराद हुआ और जिस नफ़्स को अल्लाह तआ़ला ने नीचे गिरा दिया वह बर्बाद और ख़ाइब व ख़ासिर रहा। औ़फ़ी और अ़ली बिन अबी तलह़ा ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से यही रिवायत करते हैं। (त़बरी : 24/455) इब्ने अबी ह़ातिम की एक मरफ़ूअ़ ह़दीस में है कि ह़ुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने आयत (क़द

अफ़्लह़ मन ज़क्काहा) पढ़कर फ़र्माया कि "जिस नफ़्स को अल्लाह तआ़ला ने पाक किया उसने छुटकारा पा लिया" लेकिन इस ह़दीस में एक इ़ल्लत तो यह है कि जुवेबिर बिन सईद मतरूकुल ह़दीस है, दूसरी इ़ल्लत यह है कि ज़ह़्ह़ाक जो ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) से रिवायत करते हैं इनकी मुलाक़ात साबित नहीं। (फ़ायदा) ह़दीस में है कि (फ़अल्हमहा फुजूरहा व तक़्वाहा) पढ़कर आप (ﷺ) ने यह दुआ पढ़ी (अल्लाहुम्मअति नफ़्सी तक़्वाहा व ज़क्किहा अन्त ख़ैरु मन ज़क्काहा अन्त वलिय्युहा व मौलाहा) (अस्सुन्नतु लि इब्ने अबी आ़सिम : 319; व सनदुहू ज़ईफ़ुन अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्दुल्लाह उमवी ज़ईफ़ व लिल ह़दीसि शाहिदुन ज़ईफ़ुन) मुस्नद अह़मद की ह़दीस में है कि ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) फ़र्माती हैं कि "रात को एक बार मेरी आँख खुली तो मैंने देखा कि हुज़ूरे अकरम (ﷺ) अपने बिस्तर पर नहीं अंधेरे की वजह से मैं घर में अपने हाथों से टटोलने लगी तो मेरे हाथ आप (ﷺ) पर पड़े आप उस वक़्त सज्दे में थे और यह दुआ पढ़ रहे थे। (रब्बि अअ़ति नफ़्सी तक़्वाहा व ज़क्किहा अन्त ख़ैरु मन ज़क्काहा अन्त वलिय्युहा व मौलाहा) (अह़मद : 6/209; वसनदुहू ज़ईफ़ुन; फ़ीही स़ालेह़ बिन सईद व सिक़ह इब्ने ह़िब्बान वह़दुहू मिनल मुतक़द्दिमीन) यह ह़दीस सिर्फ़ मुस्नद अह़मद में ही है। मुस्लिम और मुस्नद अह़मद की एक ह़दीस में है कि रसूले करीम (ﷺ) यह दुआ माँगते थे (अल्लाहुम्म इन्नी अऊ़ज़ुबिका मिनल अ़ज्ज़ि वल कसलि वल हरमि वल जुब्नि वल्बुख़्लि व अ़ज़ाबिल क़ब्रि अल्लाहुम्मअति नफ़्सी तक़्वाहा व ज़क्किहा अन्त ख़ैरु मन ज़क्काहा अन्त वलिय्युहा व मौलाहा अल्लाहुम्म इन्नी अऊ़ज़ुबिका मिन क़ल्बिल् ला यख़्शउ़ वमिन्नफ़्सिल् ला तश्बउ़ व इ़ल्मिल् ला यंफ़उ़ व दअ़वतिल्ला युस्तजाबु लहा) "या अल्लाह! मैं आजिज़ और बेचारा हो जाने से, सुस्ती से और हार जाने से, बुढ़ापे से और नामर्दी से और बख़ीली से और अ़ज़ाबे क़ब्र से तेरी पनाह चाहता हूँ, ऐ अल्लाह! मेरे दिल को उसका तक़्वा अ़ता फ़र्मा और उसे पाक कर दे तू ही उसे बेहतर पाक करने वाला है तू ही उसका वाली और मौला है। ऐ अल्लाह! मुझे ऐसे दिल से बचा जिसमें तेरा डर न हो और ऐसे नफ़्स से बचा जो आसूदा न हो, और ऐसे इ़ल्म से बचा जो नफ़ा न दे और ऐसी दुआ़ से बचा जो क़बूल न की जाए।" रावी ह़दीस ह़ज़रत ज़ैद बिन अरक़म (रज़ि.) फ़र्माते हैं कि अल्लाह तआ़ला के रसूल (ﷺ) ने हमें यह दुआ सिखलाई और हम तुम्हें सिखाते हैं। (स़ह़ीह़ मुस्लिम, किताबुज़्ज़िक्रि वद्दुआ, बाब फ़िल अदइ़या : 2722; अह़मद : 4/371)

***

كَذَّبَتْ ثَمُودُ بِطَغْوٰىهَآ ⑪ إِذِ انۢبَعَثَ أَشْقٰىهَا ⑫ فَقَالَ لَهُمْ رَسُولُ اللّٰهِ نَاقَةَ
اللّٰهِ وَسُقْيٰهَا ⑬ فَكَذَّبُوهُ فَعَقَرُوهَا ۠ فَدَمْدَمَ عَلَيْهِمْ رَبُّهُمْ بِذَنۢبِهِمْ فَسَوّٰىهَا
⑭ وَلَا يَخَافُ عُقْبٰهَا ⑮

तर्जुमा : "समूदियों ने अपनी सरकशी के बाइस झुठलाया (11) जब इनमें का बड़ा बदबख़्त उठ खड़ा हुआ। (12) उन्हें अल्लाह और रसूल ने फ़र्मा दिया था कि अल्लाह तआला की ऊँटनी और उसके पानी पीने की बारी की हिफ़ाज़त करो (13) उन लोगों ने अपने पैग़म्बर को झूठा समझकर उस ऊँटनी की कूचें काट दीं। पस उनके रब ने उनके गुनाहों के बाइस उन पर हलाकत डाली और फिर हलाकत को आम कर दिया और उस बस्ती को बराबर कर दिया। (14) वह उस सज़ा के अंजाम से बेख़ौफ़ है।"(15)

समूदियों की सरकशी का अंजाम (आ. 11 से 15) : अल्लाह तआला बयान फ़र्मा रहा है कि समूदियों ने अपनी सरकशी और तकब्बुर व तजब्बुर की बिना पर अपने रसूलों की तस्दीक़ न की, मुहम्मद बिन कअब (रह.) फ़र्माते हैं (बि तग़वाहा) का मतलब यह है कि उन सबने तक्ज़ीब की। लेकिन पहली बात ही ज़्यादा औला है। हज़रत मुजाहिद और हज़रत क़तादा (रह.) ने भी यही बयान किया है। (तबरी : 24/458) इस सरकशी की वजह से और इस तक्ज़ीब की शामत से यह इस क़द्र बदबख़्त हो गए कि उनमें से जो ज़्यादा बुरा शख़्स था वह तैयार हो गया उसका नाम क़िदार बिन सालिफ़ था, उसी ने हज़रत सालेह (ﷺ) की ऊँटनी की कूचें काटी थीं, उसी के बारे में फ़र्मान है (فَنَادَوْا صَاحِبَهُمْ فَتَعَاطَىٰ فَعَقَرَ) (54/क़मर : 29) समूदियों की आवाज़ पर यह आ गया और उसने ऊँटनी को मार डाला, यह शख़्स उस क़ौम में ज़ी इज़्ज़त था ज़ी नसब था शरीफ़ था क़ौम का रईस और सरदार था। मुस्नद अहमद की हदीस में है कि "रसूलुल्लाह (ﷺ) ने एक बार अपने ख़ुत्बे में उस ऊँटनी का और उसके मार डालने वाले का ज़िक्र किया और इस आयत की तिलावत की और फ़र्माया कि जैसे अबू ज़म्आ है, उसी जैसा यह शख़्स भी अपनी क़ौम में शरीफ़ अज़ीज़ और बड़ा आदमी था।" (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरह (वश्शम्सि व ज़ुहाहा) : 4942; सहीह मुस्लिम : 2855; तिर्मिज़ी : 3343; सुननुल कुब्रा : 11675; इब्ने माजा : 1983; अहमद : 4/17) इमाम बुख़ारी (रह.) भी इसे तफ़्सीर में और इमाम मुस्लिम जहन्नम की सिफ़त में लाए हैं, और सुनन तिर्मिज़ी, सुनन नसाई में भी ये रिवायत तफ़्सीर में है। इब्ने अबी हातिम में है कि "रसूलुल्लाह (ﷺ) ने हज़रत अली (रज़ि.) से फ़र्माया कि मैं तुझे दुनिया भर के बदबख़्त बदतरीन दो शख़्स बतलाता हूँ, एक तो अहीमर समूद जिसने ऊँटनी को मार डाला, दूसरा वह शख़्स जो तेरी पेशानी पर ज़ख़्म लगाएगा यहाँ तक कि दाढ़ी ख़ून से तर बतर हो जाएगी।" (अहमद : 4/263; वसनदुहू ज़ईफ़ुन मअ इंक़िताइहू उंज़ुरुत्तारीख़ुल कबीर : 1, 71; हाकिम : 3/140; मअरिफ़तुस्सहाबा लि अबी नुऐम : 675; मज्मउज़्ज़वाइद : 9/136; शरह मुश्किलुल आसार : 811; अल कुनिय लि अस्माइल अबी : 2/163; मुस्नदे बज़्ज़ार : 1417; मुख़्तसरन; दलाइलुन्नबुव्वा लिल्बैहक़ी : 3/12; अल ख़स्सास पेज : 28) अल्लाह तआला के रसूल हज़रत सालेह (ﷺ) ने अपनी क़ौम से फ़र्मा दिया था कि ऐ क़ौम! अल्लाह तआला की ऊँटनी को बुराई पहुँचाने से डरो, उसके पानी पीने के मुक़र्ररा दिन में ज़ुल्म करके उसे पानी से न रोको, तुम्हारी और उसकी बारियाँ बँधी हुई हैं लेकिन इन बदबख़्तों ने पैग़म्बर (ﷺ) की न मानी जिस गुनाह के बाइस उनके दिल सख़्त हो गए और फिर यह साफ़ तौर पर मुक़ाबला के

लिए तैयार हो गए और उस ऊँटनी की कूचें काट दीं जिसे अल्लाह तआला ने बग़ैर माँ बाप के पत्थर की एक चट्टान से पैदा किया था जो हज़रत सालेह (عليه السلام) का मोजिज़ा और अल्लाह तआला की कुदरत की कामिल निशानी थी, अल्लाह तआला भी उन पर ग़ज़बनाक हो गया और हलाकत डाल दी और सब पर बराबर से अज़ाब उतरा यह इसलिए कि अहीमर समूद के हाथ पर उसकी क़ौम के छोटे बड़ों ने मर्द व औरत ने बेअत कर ली थी और सबके मश्वरे से उसने उस ऊँटनी को काटा था इसलिए अज़ाब में भी सब पकड़े गए। (वला यख़ाफ़ु) को (फ़ला यख़ाफ़ु) भी पढ़ा गया है। मतलब यह है कि अल्लाह तआला किसी को सज़ा करे तो उसे यह ख़ौफ़ नहीं होता कि उसका अंजाम क्या होगा? कहीं यह बिगड़ न बैठें, यह मतलब भी हो सकता है कि उस बदकार अहीमर ने ऊँटनी को मार तो डाला लेकिन अंजाम से न डरा, मगर पहला क़ौल ही औला है, वल्लाहु आलम!

अल्हम्दुलिल्लाह! सूरह वश्शम्स की तफ़्सीर मुकम्मल हुई।

***

FLOW CHART
तरतीबी नक्श-ए-रब्त

MACRO-STRUCTURE
नज़्मे-जली

सूरह लैल - 92

आयात : 21, मक्की, पैराग्राफ : 5

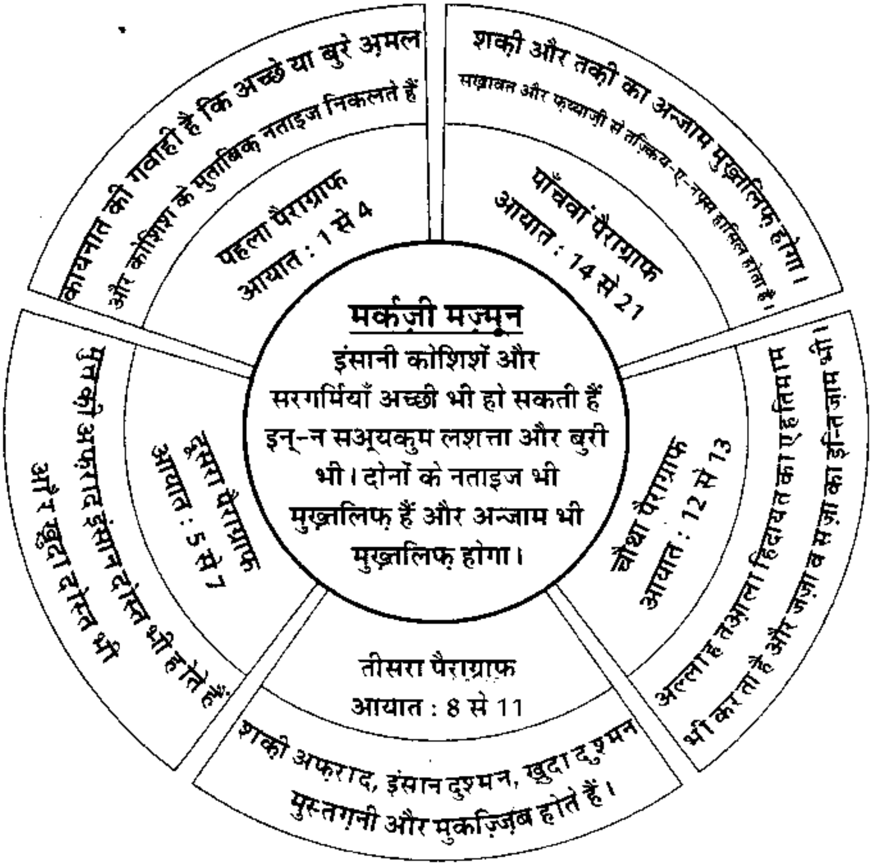

ज़मानए नुज़ूल

सूरह लैल सूरह शम्स के साथ ऐलाने आम के बाद रसूल (सल्ल.) के क़ियामे मक्का के दूसरे दौर (4-5 नबवी) के दौरे मुख़ालिफ़त में नाज़िल हुई। जब मुशिरकीने मक्का को अज़ाब की धमकी दी गई।

तफ़्सीर सूरह लैल

हुज़ूर (ﷺ) का हज़रत मुआज़ (रज़ि.) से फ़र्माना पहले बयान हो चुका है कि तूने (सब्बिहिस्मा) और (वश्शम्सि) और (वल्लैलि) के साथ इमामत क्यों न कराई। (इसकी तख़रीज सूरह इन्फ़ितार में गुज़र चुकी है।)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

तर्जुमा : ''शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है।''

***

وَالَّيْلِ اِذَا يَغْشٰى ① وَالنَّهَارِ اِذَا تَجَلّٰى ② وَمَا خَلَقَ الذَّكَرَ وَالْاُنْثٰى ③ اِنَّ
سَعْيَكُمْ لَشَتّٰى ④ فَاَمَّا مَنْ اَعْطٰى وَاتَّقٰى ⑤ وَصَدَّقَ بِالْحُسْنٰى ⑥ فَسَنُيَسِّرُهٗ
لِلْيُسْرٰى ⑦ وَاَمَّا مَنْۢ بَخِلَ وَاسْتَغْنٰى ⑧ وَكَذَّبَ بِالْحُسْنٰى ⑨ فَسَنُيَسِّرُهٗ لِلْعُسْرٰى
⑩ وَمَا يُغْنِيْ عَنْهُ مَالُهٗۤ اِذَا تَرَدّٰى ⑪

तर्जुमा : ''क़सम है रात की जब छा जाए (1) और क़सम है दिन की जब रोशन हो (2) और क़सम है उस ज़ात की जिसने नर मादा को पैदा किया (3) यक़ीनन तुम्हारी कोशिश मुख़्तलिफ़ क़िस्म की है (4) तो जो शख़्स देता रहे और डरता रहेगा (5) और नेक बात की तस्दीक़ करता रहेगा (6) तो हम भी उसके लिए आसानी पैदा कर देंगे (7) लेकिन जो बख़ीली करेगा और बेपरवाही बरतेगा (8) और नेक बात की तक्ज़ीब करेगा (9) तो हम भी उसकी तंगी व मुश्किल के सामान मयस्सर कर देंगे (10) उसका माल उसे औंधा गिरने के वक़्त कुछ काम न आएगा'' (11)

दिन और रात की क़सम और नेक व बुरे का अंजाम (आयत : 1 से 11) : मुस्नद अहमद में है

कि हज़रत अल्क़मा (रह.) शाम में आए और दमिश्क़ की मस्जिद में जाकर दो रकअ़त नमाज़ अदा की और अल्लह तआ़ला से दुआ की कि ऐ अल्लह! मुझे नेक साथी अ़ता फ़र्मा फिर चले तो हज़रत अबुद्दर्दा (रज़ि.) से मुलाक़ात हुई, पूछा कि तुम कहाँ के हो? तो हज़रत अल्क़मा (रह.) ने कहा मैं कूफ़े वाला हूँ। पूछा कि इब्ने उम्मे अ़ब्द (रज़ि.) इस सूरत को किस तरह पढ़ते थे? मैंने कहा वज़्ज़करि वल उन्सा पढ़ते थे। हज़रत अबुद्दर्दा (रज़ि.) फ़र्माने लगे कि मैंने भी रसूलुल्लाह (ﷺ) से यूँ ही सुना है और यह लोग मुझे शक व शुब्हा में डाल रहे हैं। फिर फ़र्माया तुममें तकिये वाले यानी जिनके पास सफ़र में हुज़ूरे अकरम (ﷺ) का बिस्तरा रहता था और राज़दाँ ऐसे भेदों से वाक़िफ़ जिनका इल्म और किसी को नहीं वह जो शैतान से बज़ुबाने रसूलुल्लाह (ﷺ) बचा लिये गए थे वह नहीं? (अहमद : 6/449; वहुव सहीहुन व अस्लहू फ़ी सहीहिल बुख़ारी (6287) व मुस्लिम : 824) यानी हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द(रज़ि.) यह हदीस बुख़ारी में भी है उसमें यह है कि हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) के शागिर्द और साथी हज़रत अबुद्दर्दा (रज़ि.) के पास आए आप भी उन्हें ढूँढ़ते हुए पहुँचे फिर पूछा कि तुममें हज़रत अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) की क़िरअत पर क़ुरआन पढ़ने वाला कौन है? तो कहा हम सब हैं, फिर पूछा कि तुम सबमें हज़रत अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) की क़िरअत को ज़्यादा याद रखने वाला कौन है? लोगों ने हज़रत अल्क़मा (रज़ि.) की तरफ़ इशारा किया तो उनसे सवाल किया कि (वल्लैलि इज़ा यग़्शा) को हज़रत अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) से तुमने किस तरह सुना? तो कहा वह (वज़्ज़करि वल उन्सा) पढ़ते थे। कहा मैंने भी हुज़ूर (ﷺ) से इसी तरह सुना है और यह लोग चाहते हैं कि मैं (वमा ख़लक़ज़्ज़कर वल उन्सा) पढ़ूँ, अल्लाह तआ़ला की क़सम! मैं तो उनकी मानूँगा नहीं। (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरह वल्लैलि इज़ा यग़्शा बाब (वमा ख़लक़ज़्ज़करा वल उन्सा) : 4944; सहीह मुस्लिम : 824) अल्ग़र्ज़ हज़रत इब्ने मसऊ़द और हज़रत अबुद्दर्दा (रज़ि.) की क़िरअत यही है, और हज़रत अबुद्दर्दा (रज़ि.) ने तो इसे मरफ़ूअ़ भी कहा है, बाक़ी जुम्हूर की क़िरअत वही है जो मौजूदा क़ुरआन में है। पस अल्लाह तआ़ला रात की क़सम खाता है जबकि मख़्लूक़ पर छा जाए, और दिन की क़सम खाता है जबकि वह तमाम चीज़ों को अपनी रोशनी से मुनव्वर कर दे, और अपनी ज़ात की क़सम खाता है जो नर व मादा का पैदा करने वाला है। जैसे फ़र्माया (وَخَلَقْنَاكُمْ أَزْوَاجًا) (78/नबा : 8) हमने तुम्हें जोड़ा जोड़ा पैदा किया है। और फ़र्माया (وَمِن كُلِّ شَيْءٍ خَلَقْنَا زَوْجَيْنِ) (51/ज़ारियात : 49) हर चीज़ के जोड़े हमने पैदा किये हैं। इन मुतज़ाद और एक दूसरी के ख़िलाफ़ क़समें खाकर फ़र्माता है कि तुम्हारी कोशिशें और तुम्हारे आमाल भी मुतज़ाद और एक दूसरे के ख़िलाफ़ हैं, भलाई करने वाले भी हैं और बुराइयों में मुब्तला रहने वाले भी हैं। फिर फ़र्माता है कि जिसने दिया यानी अपने माल को अल्लाह तआ़ला के हुक्म के मातहत ख़र्च किया और फूँक फूँक कर क़दम रखा हर हर अम्र में अल्लाह तआ़ला का डर रखता रहा और उसके बदले को सच्चा जानता रहा उसके सवाब पर यक़ीन रखा। (हुस्ना) के मअ़नी ला इलाहा इल्लल्लाह के भी किये गए हैं, अल्लाह तआ़ला की नेअ़मतों के भी किये गए हैं, नमाज़, रोज़ा, ज़कात, सदक़ा, फ़ित्र, जन्नत के भी मरवी हैं। फिर फ़र्माता है कि हम इसे आसानी की राह आसान करेंगे यानी भलाई की और जन्नत की और नेक बदले की और जिसने अपने माल को अल्लाह की राह

में न दिया और अल्लाह से बेनियाज़ी बरती और हुस्ना की यानी क़ियामत के बदले की तक्ज़ीब की तो उस पर हम बुराई का रास्ता आसान कर देंगे, जैसे फ़र्माया (وَنُقَلِّبُ أَفْئِدَتَهُمْ وَأَبْصَارَهُمْ) (6/अन्आम : 110) यानी हम इनके दिल और इनकी आँखें उलट देंगे जिस तरह वह पहली बार क़ुरआन पर ईमान न लाए थे और हम इन्हें इनकी सरकशी में ही बहकते छोड़ देंगे। इस मतलब की आयतें क़ुरआने करीम में जगह जगह मौजूद हैं कि हर अमल का बदला इसी जैसा होता है, ख़ैर का क़सद करने वाले को तौफ़ीक़े ख़ैर मिलती है और शर्र का क़सद रखने वालों को उसी की तौफ़ीक़ होती है, इस मअनी की ताईद में यह अहादीस भी हैं। हज़रत सिद्दीक़े अकबर (रज़ि.) ने एक बार रसूलुल्लाह (ﷺ) से सवाल किया कि हमारे आमाल फ़ारिग़शुदा तक़्दीर के मातहत हैं या नोपैद हमारी तरफ़ से हैं। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, "बल्कि तक़्दीर के लिखे हुए के मुताबिक़। कहने लगे फिर अमल की क्या ज़रूरत? फ़र्माया हर शख़्स पर वह अमल आसान होंगे जिस चीज़ के लिए वह पैदा किया गया है।" (अहमद : 1/6; वसनदुहू ज़ईफ़ुन वफ़िल बाबि अहादीसे उख़रा मुग़िनया अन्हु उंजुर सहीहुल बुख़ारी (1362) व मुस्लिम (6/2647) मुस्नदे बज़्ज़ार : 28; अल्मुअजमुल कबीर : 47) हज़रत अली (रज़ि.) फ़र्माते हैं कि "बक़ीअ ग़रक़द में हम रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ एक जनाज़े में शरीक थे तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया, सुनो! तुममें से हर एक की जगह जन्नत और दोज़ख़ में मुक़र्ररकर्दा है और लिखी हुई है। लोगों ने कहा फिर हम उस पर भरोसा करके बैठ क्यूँ न रहें? तो आपने फ़र्माया अमल करते रहो हर शख़्स को वही आमाल रास आएँगे जिनके लिए वह पैदा किया गया है। फिर आप (ﷺ) ने यही आयतें तिलावत कीं।" (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरह वल्लैलि इज़ा यग़शा, बाब क़ौलुहू (फ़अम्मा मन अअ़ता वत्तक़ा) : 4945) इसी रिवायत के और तरीक़ में है कि इस बयान के वक़्त आप (ﷺ) के हाथ में एक तिनका था और सिर नीचा किये हुए ज़मीन पर उसे फेर रहे थे। (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरह वल्लैलि इज़ा यग़शा बाब क़ौलुहू (व कज़्ज़बा बिल हुस्ना) : 4948; सहीह मुस्लिम : 2647; अबूदाऊद : 4694; तिर्मिज़ी : 2136; इब्ने माजा : 78) अल्फ़ाज़ में कुछ कमी बेशी भी है।

मुस्नद अहमद में हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) का भी एक ऐसा ही सवाल जैसा कि ऊपर की हदीस में हज़रत सिद्दीक़े अकबर (रज़ि.) का गुज़रा, मरवी है और आपका जवाब भी उन्हें तक़रीबन ऐसा ही मरवी है। (तिर्मिज़ी, किताबुल क़द्र, बाब मा जाअ फ़िश्शिफ़ाइ वस्सआदति : 2135; वहुव हसन बिश्शवाहिद, अहमद : 2/52) इब्ने जरीर में हज़रत जाबिर (रज़ि.) से भी ऐसी ही रिवायत मरवी है। (सहीह मुस्लिम, किताबुल क़द्र, बाब कैफ़ियतु ख़ल्क़े आदमी फ़ी बतनि उम्मिही : 2648; तबरी : 24/475) इब्ने जरीर की एक हदीस में दोनो जवानों का ऐसा ही सवाल और हुज़ूरे अकरम (ﷺ) का ऐसा ही जवाब मरवी है और फिर इन दोनों हज़रात का यह क़ौल भी है कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! हम बकोशिश नेक आमाल करते रहेंगे। (तबरी : 24/475) हज़रत अबुद्दर्दा (रज़ि.) से भी इसी तरह मरवी है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं कि "हर दिन ग़ुरूब के वक़्त सूरज के दोनों तरफ़ दो फ़रिश्ते होते हैं वह बाआवाज़े बुलंद दुआ करते हैं जिसे तमाम चीज़ें सुनती हैं सिवाय जिन्नात और इंसान के कि "ऐ अल्लाह! सख़ी को नेक बदला दे और कंजूस का

माल तल्फ़ करा'' (त़ब्री : 24/471) यही मअ़नी हैं क़ुरआन की इन चार आयतों के। इब्ने अबी ह़ातिम की एक बहुत ही ग़रीब ह़दीस में इस पूरी सूरत का शाने नुज़ूल यह लिखा है कि ''एक शख़्स का खजूरों का बाग़ था उनमें से एक दरख़्त की शाख़ें एक मिस्कीन शख़्स के घर में लटकती थीं वह बेचारा ग़रीब नेक बख़्त और बाल बच्चे वाला था, बाग़ वाला जब उस दरख़्त की खजूरें उतारने आता तो उस मिस्कीन के घर में जाकर वहाँ की खजूरें उतारता उसमें जो खजूरें नीचे गिरतीं उन्हें उस ग़रीब शख़्स के बच्चे चुन लेते तो यह आकर उनसे छीन लेता बल्कि अगर किसी बच्चे ने मुँह में डाल भी ली तो उँगली डालकर उसके मुँह से निकाल लेता, उस मिस्कीन ने उसकी शिकायत रसूलुल्लाह (ﷺ) से की। आप (ﷺ) ने उनसे तो फ़र्मा दिया कि अच्छा! तुम जाओ और आप (ﷺ) उस बाग़ वाले से मिले और फ़र्माया कि तू अपना वह दरख़्त जिसकी शाख़ें फ़लाँ मिस्कीन के घर में हैं मुझे दे दे अल्लाह तआला उसके बदले तुझे जन्नत का एक दरख़्त देगा वह कहने लगा अच्छा ह़ज़रत! मैंने दिया मगर मुझे इसकी खजूरें बहुत अच्छी लगती हैं, मेरे तमाम बाग़ में ऐसी खजूरें किसी और दरख़्त की नहीं। ह़ुज़ूर (ﷺ) यह सुनकर ख़ामोशी के साथ वापिस तशरीफ़ ले चले। एक शख़्स जो यह बातचीत सुन रहा था वह आप (ﷺ) की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुआ और कहने लगा ह़ज़रत! अगर यह दरख़्त मेरा हो जाए और मैं आपका कर दूँ तो क्या मुझे भी उसके बदले जन्नती दरख़्त मिल सकता है? आप (ﷺ) ने फ़र्माया, हाँ! यह शख़्स उस बाग़ वाले के पास आए उनका भी एक बाग़ खजूरों का था यह पहला शख़्स उनसे वह ज़िक्र करने लगा कि ह़ज़रत! मुझे मेरे फ़लाँ दरख़्त खजूर के बदले जन्नत का एक दरख़्त देने को फ़र्मा रहे थे मैंने यह जवाब दिया, यह सुनकर ख़ामोश हो रहे, फिर थोड़ी देर बाद फ़र्माया कि क्या तुम इसे बेचना चाहते हो? उसने कहा, नहीं! हाँ! यह और बात है कि जो क़ीमत इसकी माँगूँ वह कोई मुझे दे दे, लेकिन कौन दे सकता है? पूछा क्या क़ीमत लेना चाहते हो? कहा चालीस दरख़्त ख़ुरमा के। उसने कहा यह तो बड़ी ज़बरदस्त क़ीमत लगा रहे हो एक के चालीस? फिर और बातों में लग गए, फिर कहने लगे अच्छा! मैं इसे इतने में ही ख़रीदता हूँ। उसने कहा, अच्छा अगर सचमुच ख़रीदना है तो गवाह कर लो। उसने चंद लोगों को बुलवाया और मामला तै हो गया गवाह मुक़र्रर हो गये, फिर उसे कुछ सूझी तो कहने लगा कि देखिए स़ाह़ब! जब तक हम तुम अलग नहीं हुए यह मामला तै नहीं हुआ, उसने भी कहा, बहुत अच्छा मैं भी ऐसा अह़मक़ नहीं हूँ कि तेरे एक दरख़्त के बदले जो ख़म खाया हुआ है अपने चालीस दरख़्त दे दूँ, तो यह कहने लगा, अच्छा! अच्छा! मुझे मंज़ूर है लेकिन दरख़्त जो मैं लूँगा वह तने वाले बहुत उ़म्दा लूँगा। उसने कहा, अच्छा मंज़ूर। चुनाँचे गवाहों के रूबरू यह सौदा तै हुआ और मज्लिस बरख़ास्त हो गई। यह शख़्स ख़ुशी ख़ुशी रसूले करीम (ﷺ) की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए और कहने लगे, या रसूलल्लाह (ﷺ)! अब वह दरख़्त मेरा हो गया और मैंने उसे आप (ﷺ) को दे दिया। रसूलुल्लाह (ﷺ) उस मिस्कीन के पास तशरीफ़ ले गए और फ़र्माने लगे कि यह दरख़्त तुम्हारा है और तुम्हारे बाल बच्चों का। ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं इस पर यह सूरत नाज़िल हुई।'' (इसकी सनद में ह़फ़्स़ बिन उ़मर अदनी ज़ईफ़ रावी है (अल्मीज़ान : 1/560; रक़म : 2130) लिहाज़ा यह रिवायत मर्दूद है।) इब्ने जरीर में मरवी है कि यह आयतें ह़ज़रत अबूबक्र सि़द्दीक़ (रज़ि.) के बारे में नाज़िल हुई

हैं, आप मक्का में इब्तिदा-ए-इस्लाम के ज़माने में बुढ़िया औरतों को और ज़ईफ़ लोगों को जो मुसलमान हो जाते थे आज़ाद करा दिया करते थे उस पर एक बार आपके वालिद हज़रत अबू क़ुहाफ़ा ने जो अब तक मुसलमान नहीं हुए थे कहा बेटा! तुम जो इन कमज़ोर हस्तियों को आज़ाद कराते फिरते हो, इससे अच्छा यह हो कि नौजवान ताक़त वालों को आज़ाद कराओ ताकि वक़्त पर वह तुम्हें काम आएँ तुम्हारी मदद करें और दुश्मनों से लड़ें तो सिद्दीक़े अकबर (रज़ि.) ने जवाब दिया कि अब्बाजान! मेरा इरादा दुनियावी फ़ायदे का नहीं मैं तो सिर्फ़ रज़ाए रब मर्ज़ी मौला चाहता हूँ, इस बारे में यह आयतें नाज़िल हुईं। (इब्ने जरीर : 2/525; ह : 3942; वसनदुहू हसन) तरद्दा के मअनी मरने के भी मरवी हैं और आग में गिरने के भी। (तब्री : 24/476)

***

إِنَّ عَلَيْنَا لَلْهُدَىٰ ﴿١٢﴾ وَإِنَّ لَنَا لَلْآخِرَةَ وَالْأُولَىٰ ﴿١٣﴾ فَأَنذَرْتُكُمْ نَارًا تَلَظَّىٰ ﴿١٤﴾
لَا يَصْلَاهَا إِلَّا الْأَشْقَى ﴿١٥﴾ الَّذِي كَذَّبَ وَتَوَلَّىٰ ﴿١٦﴾ وَسَيُجَنَّبُهَا الْأَتْقَى ﴿١٧﴾ الَّذِي
يُؤْتِي مَالَهُ يَتَزَكَّىٰ ﴿١٨﴾ وَمَا لِأَحَدٍ عِندَهُ مِن نِّعْمَةٍ تُجْزَىٰ ﴿١٩﴾ إِلَّا ابْتِغَاءَ وَجْهِ رَبِّهِ
الْأَعْلَىٰ ﴿٢٠﴾ وَلَسَوْفَ يَرْضَىٰ ﴿٢١﴾

तर्जुमा : "राह दिखा देना हमारे ज़िम्मे है (12) और हमारे ही हाथ है आख़िरत और दुनिया (13) मैंने तो तुम्हें शोले मारती हुई आग से डराया है (14) जिसमें सिर्फ़ वह बदबख़्त तरीन लोग दाख़िल होंगे (15) जिन्होंने झुठलाया और (उसकी पैरवी से) मुँह फेर लिया है। (16) उससे ऐसा शख़्स दूर रखा जाएगा जो परहेज़गार होगा। (17) जो पाकी हासिल करने के लिए अपना माल देता होगा (18) किसी का उस पर कोई एहसान नहीं कि जिसका बदला दिया जा रहा हो (19) बल्कि सिर्फ़ अपने परवरदिगार बुज़ुर्ग व बुलंद की रज़ा मतलूब होती है। (20) यक़ीनन वह (अल्लाह तआला) भी अन्क़रीब रज़ामंद हो जाएगा।" (21)

ज़ालिमों का अंजाम (आयत : 12 से 21) : यानी हलाल व हराम का ज़ाहिर कर देना हमारे ज़िम्मे है। यह भी मअनी है कि जो हिदायत पर चला वह यक़ीनन हम तक पहुँच जाएगा। जैसे फ़र्माया (وَعَلَى اللَّهِ قَصْدُ السَّبِيلِ) (16/नहल : 9) आख़िरत और दुनिया की मिल्कियत हमारी ही है। मैंने भड़कती हुई आग से तुम्हें होशियार कर दिया है। मुस्नद अहमद में है कि हज़रत नोअमान बिन बशीर (रज़ि.) ने अपने ख़ुत्बे में फ़र्माया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) से मैंने ख़ुत्बा की हालत में सुना है कि आप बहुत बुलंद आवाज़ से फ़र्मा रहे थे। यहाँ

तक कि उस जगह से बाज़ार तक आवाज़ पहुँचे और बार बार फ़र्माते जाते थे लोगों! मैं तुम्हें जहन्नम की आग से डरा चुका, लोगों! मैं तुम्हें जहन्नम की आग से डरा रहा हूँ, बार बार यह फ़र्मा रहे थे। यहाँ तक कि चादरे मुबारक कँधों से सिरक कर पैरों में गिर पड़ी। (अह्मद : 4/272; वसनदुहू सहीहुन; व सह्हहुल हाकिम : 1/287; अला शर्ते मुस्लिम व वाफ़क़हुज़्ज़हबी वहुव कमा क़ाला) सहीह बुख़ारी में है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि, "सबसे हल्के अज़ाब वाला जहन्नमी क़ियामत के दिन वह होगा कि जिसके दोनों पैरों तले दो अंगारे रख दिये जाएँगे। जिससे उसका दिमाग़ उबल रहा होगा।" (सहीह बुख़ारी, किताबुर्रिक़ाक़, बाब सिफ़तिल जन्नति वन्नार : 6561; अह्मद : 4/471) मुस्लिम की हदीस में है कि "हल्के अज़ाब वाला जहन्नमी वह होगा जिसकी दोनों जूतियाँ और दोनों तस्मे आग के होंगे जिनसे उसका दिमाग़ इस तरह उबल रहा होगा जिस तरह हँडिया में खुदबुदा रही हो, बावजूद यह कि सबसे हल्के अज़ाब वाला यही है लेकिन उसके ख़याल में उससे ज़्यादा अज़ाब वाला कोई न होगा। (सहीह मुस्लिम, किताबुल ईमान, बाब अहवनु अहलिन्नारि अज़ाबा : 213) जहन्नम में सिर्फ़ वही लोग घेर घारकर बदतरीन अज़ाब किये जाएँगे जो बदबख़्त हों जिनके दिल में तक्ज़ीब हो और जिस्म से इस्लाम पर अमल न हो।" मुस्नद अह्मद में भी है कि "जहन्नम में सिर्फ़ शक़ी लोग जाएँगे। लोगों ने पूछा कि शक़ी कौन है? फ़र्माया जो इताअतगुज़ार न हो और न अल्लाह के डर से कोई बुराई छोड़ता हो।" (इब्ने माजा, किताबुज़्ज़ुहद, बाब मा यरजा मिर्रह्मतिल्लाहि यौमल क़ियामा : 4298; वसनदुहू ज़ईफ़ुन जिद्दा; अह्मद : 2/349; इसकी सनद में इब्ने लहीआ मुदल्लस मुख़्तलत़ रावी (अत्तक़रीब : 1/44; रक़म : 574) है।) मुस्नद की और हदीस में है कि "मेरी सारी उम्मत जन्नत में जाएगी सिवा उनके जो इंकार करें। लोगों ने पूछा, इंकारी कौन है? फ़र्माया जो हमारी इताअत करे वह जन्नत में गया और जिसने मेरी नाफ़र्मानी की उसने इंकार किया।" (सहीह बुख़ारी, किताबुल ऐतिसाम, बिल किताबि वस्सुन्नति, बाब अल्इक्तिदाउ बिसुननि रसूलिल्लाहि (ﷺ) : 7280; अह्मद : 2/361) और फ़र्माया कि जहन्नम से दूरी उसे होगी जो तक़्वा शआर, परहेज़गार, अल्लाह से डरने वाला हो, जो अपने माल को अल्लाह की राह में दे ताकि ख़ुद भी पाक हो जाए और अपनी चीज़ों को भी पाक कर ले और दीन व दुनिया में पाकीज़गी हासिल कर ले, यह इसलिए कि किसी के साथ सुलूक नहीं करता कि उसका भी कोई एहसान उस पर है बल्कि इसलिए कि आख़िरत में जन्नत ले और वहाँ अल्लाह का दीदार नसीब हो। फिर फ़र्माता है कि बहुत जल्द बिल्यक़ीन ऐसी पाक सिफ़तों वाला शख़्स राज़ी हो जाएगा।

फ़ज़ाइले सिद्दीक़े अकबर (रज़ि.) : अक्सर मुफ़स्सिरीन कहते हैं कि यह आयतें हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) के बारे में उतरी हैं। यहाँ तक कि कुछ मुफ़स्सिरीन ने तो इस पर इज्माअ नक़्ल किया है, बेशक सिद्दीक़े अकबर (रज़ि.) इसमें दाख़िल हैं, उन तमाम औसाफ़ में और कुल की कुल नेकियों में सबसे पहले और सबसे आगे और सबसे बढ़े चढ़े आप ही थे, आप सिद्दीक़ थे, परहेज़गार थे, सख़ी थे, अपने मालों को अपने मौला की इताअत में और रसूलुल्लाह (ﷺ) की इम्दाद में दिल खोलकर ख़र्च करते रहते थे, हर एक के साथ एहसान व सुलूक करते और किसी दुनियावी फ़ायदे की चाहत पर नहीं, किसी के एहसान के बदले नहीं,

बल्कि सिर्फ़ अल्लाह तआला की मर्ज़ी के लिए, रसूलुल्लाह की फ़र्मांबरदारी के लिए, जितने लोग थे ख़्वाह बड़े हों, ख़्वाह छोटे सबके सब पर हज़रत सिद्दीक़े अकबर (रज़ि.) के एहसानात के बार थे, यहाँ तक कि उर्वा बिन मसऊद जो क़बीला सक़ीफ़ का सरदार था सुलह हुदैबिया के मौक़े पर जबकि हज़रत सिद्दीक़ (रज़ि.) ने उसे डाँटा डपटा और दो बातें सुनाईं तो उसने कहा कि अगर आपके एहसान मुझ पर न होते जिसका बदला मैं नहीं दे सका तो मैं आपको ज़रूर जवाब देता। (सहीह बुख़ारी, किताबुश्शुरूत, बाब अश्शुरूत फ़िल जिहाद : 2731, 2732) पस जबकि अरब के सरदार और क़बाइले अरब के बादशाह के ऊपर आपके इस क़द्र एहसान थे कि वह सिर नहीं उठा सकते थे तो भला और तो कहाँ? इसीलिए यहाँ भी फ़र्माया गया कि किसी के एहसान का बदला उन्हें देना नहीं बल्कि सिर्फ़ दीदारे इलाही की ख़्वाहिश है। बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस में है कि "जो शख़्स जोड़ा अल्लाह तआला की राह में ख़र्च करे उसे जन्नत के दारोग़े पुकारेंगे कि ऐ अल्लाह के बन्दे! इधर से आओ, यह दरवाज़ा सबसे अच्छा है तो हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने फ़र्माया, या रसूलल्लाह (ﷺ)! कोई ज़रूरत तो ऐसी नहीं लेकिन फ़र्माइए कोई ऐसा भी है कि जो जन्नत के तमाम दरवाज़ों से बुलाया जाए? आप (ﷺ) ने फ़र्माया, हाँ है और मुझे अल्लाह तआला से उम्मीद है कि तुम उनमें से हो।" (सहीह बुख़ारी, किताबुस्सौम, बाबुर्रय्यान लिस्साइमीन : 1897; सहीह मुस्लिम : 1027; तिर्मिज़ी : 3674; इब्ने हिब्बान : 308)

अल्हम्दुलिल्लाह! सूरह वल्लैल की तफ़्सीर मुकम्मल हुई।

***

FLOW CHART
तरतीबी नक्श-ए-रब्त

MACRO-STRUCTURE
नज़्मे-जली

सूरह ज़ुहा - 93

आयात : 11, मक्की, पैराग्राफ : 3

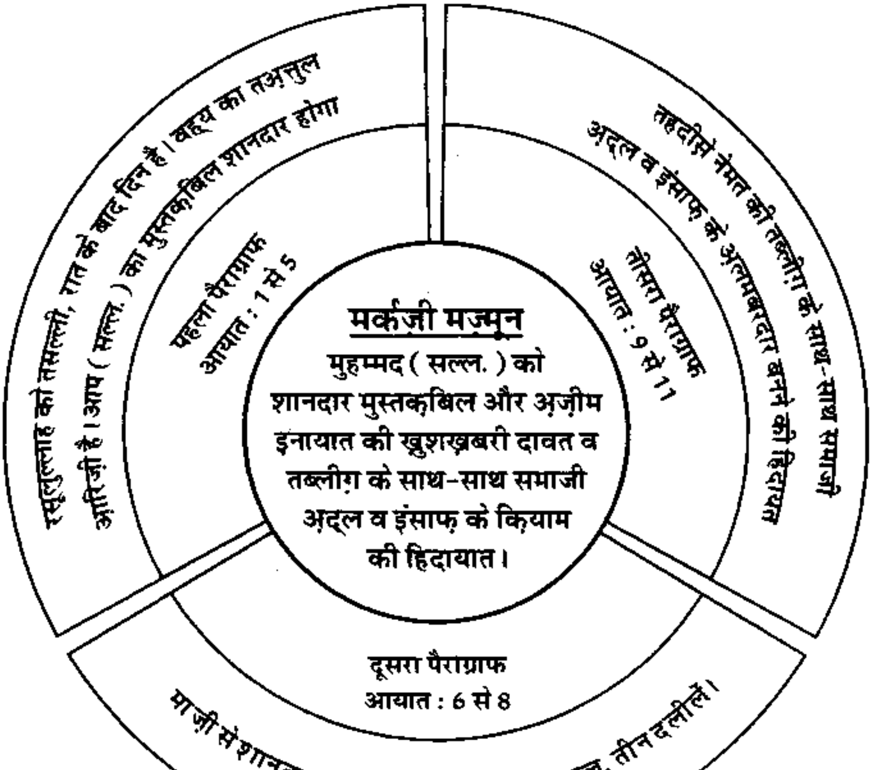

ज़मानए नुज़ूल

सूरह ज़ुहा कियामे मक्का के पहले दौर (0-3 नबवी) पर नाज़िल हुई, जब इस्लाम की दावत खुफ़िया तौर पर दी जा रही थी और जब मुख़्तसर वक़्फ़े फ़तरतुल वह्य के बाद दोबारा नुज़ूल का सिलसिला शुरू हो गया था। इन्क़िताए वह्य और तअत्तुल का ये दौरानिया 15-20 दिन था। इस बीच में आप (सल्ल.) परेशान होते तो हज़रत जिब्राईल (अलै.) आकर आप (सल्ल.) को तसल्ली देते कि आप (सल्ल.) रसूले बरहक़ हैं। (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तअ़बीर, बाब 1, ह6581)

तफ़्सीर सूरह ज़ुहा

तआरुफ़े सूरत : इस्माईल बिन क़ुस्तुन्तीन और शुबुल बिन इबाद के सामने हज़रत इक्रिमा (रह.) तिलावते क़ुरआन कर रहे थे जब इस सूरत तक पहुँचे तो दोनों ने फ़र्माया कि अब से आख़िर तक हर सूरत के ख़ात्मे पर अल्लाहु अकबर कहा करो। हमने इब्ने कसीर (रह.) के सामने पढ़ा तो उन्होंने हमें यही फ़र्माया और उन्होंने फ़र्माया कि हमसे मुजाहिद (रह.) ने यह फ़र्माया है और मुजाहिद (रह.) को हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) की यही ता'लीम थी और इब्ने अब्बास (रज़ि.) को हज़रत उबय बिन कअब (रज़ि.) ने यही फ़र्माया था, और उबय बिन कअब (रज़ि.) को रसूलुल्लाह (ﷺ) ने यह हुक्म दिया था। (हाकिम : 3/304; वसनदुहू ज़ईफ़ुन, फ़ीही अहमद बिन अब्दुल्लाह बिन क़ासिम बिन अबी बज़्ज़ा वहुव ज़ईफ़ुन अलर्राजेह उंज़ुर हाशियती अला लिसानिल मीज़ान (1/283)) इमामुल क़िरअत हज़रत अबुल हसन भी इस सुन्नत के रावी हैं। हज़रत अबू हातिम राज़ी (रह.) इस हदीस को ज़ईफ़ कहते हैं। इसलिए कि अबुल हसन ज़ईफ़ हैं, अबू हातिम (रह.) तो इनसे हदीस ही नहीं लेते। इसी तरह अबू जअफ़र अक़ीली (रह.) भी इन्हें मुंकरुल हदीस कहते हैं, लेकिन शैख़ शिहाबुद्दीन अबू शामा शरह शातबिया में हज़रत इमाम शाफ़ेई (रह.) से रिवायत करते हैं कि आपने एक शख़्स से सुना कि वह नमाज़ में इस तक्बीर को कहते थे तो आपने फ़र्माया तूने अच्छा किया और सुन्नत को पहुँच गया। यह वाक़िया इस बात का मुक़्तज़ा है कि यह हदीस सही हो। फिर क़ारियों में इस बात का भी इख़्तिलाफ़ है कि किस जगह यह तक्बीर पढ़े और किस तरह पढ़े, कुछ तो कहते हैं (वल्लैलि इज़ा यग़्शा) के ख़ात्मे से। कुछ कहते हैं वज़्ज़ुहा के आख़िर से। फिर कुछ तो कहते हैं कि सिर्फ़ अल्लाहु अकबर कहे, कुछ कहते हैं कि ला इलाहा इल्लल्लाहु वल्लाहु अकबर कहे। कुछ क़ारियों ने सूरह वज़्ज़ुहा से इन तक्बीरों के कहने की यह वजह बयान की है कि जब वही के आने में देर लगी और कुछ मुद्दत हुज़ूर (ﷺ) पर वही न उतरी फिर हज़रत जिब्राईल (عليه السلام) आए और यही सूरह लाए तो ख़ुशी और फ़रहत की वजह से आप (ﷺ) ने तक्बीर कही। लेकिन यह किसी ऐसी इस्नाद के साथ मरवी नहीं जिससे सेहत व ज़ुअफ़ का पता चल सके, वल्लाहु आलम!

***

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

तर्जुमा : ''शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है।''

***

وَالضُّحٰى ① وَالَّيْلِ إِذَا سَجٰى ② مَا وَدَّعَكَ رَبُّكَ وَمَا قَلٰى ③ وَلَلْاٰخِرَةُ خَيْرٌ
لَّكَ مِنَ الْاُوْلٰى ④ وَلَسَوْفَ يُعْطِيْكَ رَبُّكَ فَتَرْضٰى ⑤ اَلَمْ يَجِدْكَ يَتِيْمًا
فَاٰوٰى ⑥ وَوَجَدَكَ ضَآلًّا فَهَدٰى ⑦ وَوَجَدَكَ عَآئِلًا فَاَغْنٰى ⑧ فَاَمَّا الْيَتِيْمَ
فَلَا تَقْهَرْ ⑨ وَاَمَّا السَّآئِلَ فَلَا تَنْهَرْ ⑩ وَاَمَّا بِنِعْمَةِ رَبِّكَ فَحَدِّثْ ⑪

तर्जुमा : ''क़सम है चाश्त के वक़्त की (1) और क़सम है रात की जब छा जाए (2) न तो तेरे रब ने तुझे छोड़ा और न वह बेज़ार हो गया है (3) यक़ीनन तेरे लिए अंजाम आग़ाज़ से बेहतर है (4) तुझे तेरा रब बहुत जल्द इन्आम देगा और तू राज़ी ख़ुशी हो जाएगा (5) क्या उसने तुझे यतीम पाकर जगह न दी? (6) और तुझे राह भुला पाकर हिदायत न दी? (7) और तुझे तंगदस्त पाकर मालामाल नहीं बना दिया? (8) पस यतीम पर तू भी सख़्ती न किया कर (9) और न सवाल करने वाले को डाँट डपट (10) और अपने रब के एहसानों को बयान करता रह।'' (11)

शाने नुज़ूल (आयत : 1 से 11) : मुस्नद अहमद में है कि हुज़ूर (ﷺ) बीमार हो गए और एक या दो रातों तक आप (ﷺ) तहज्जुद की नमाज़ के लिए न उठ सके तो एक औरत कहने लगी कि तुझे तेरे शैतान ने छोड़ दिया। इस पर यह अगली आयतें नाज़िल हुईं'' (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरह वज़्ज़ुहा बाब क़ौलुहू (मा वअ़दक रब्बुका वमा क़ला) : 4950; सहीह मुस्लिम : 1797; अहमद : 4/312) हज़रत जुन्दुब (रज़ि.) फ़र्माते हैं कि जिब्राईल (عليه السلام) के आने में कुछ देर हुई तो मुश्रिकीन कहने लगे कि यह तो छोड़ दिये गए तो अल्लाह तआ़ला ने वज़्ज़ुहा से मा क़ला तक की आयतें नाज़िल कीं। (सहीह मुस्लिम, किताबुल जिहाद, बाब मा लक़ियन्नबी (ﷺ) मिन अज़ल मुश्रिकीना वल मुनाफ़िक़ीन : 1797) और रिवायत में है कि हुज़ूर (ﷺ) की उँगली पर पत्थर मारा गया था जिसमें से ख़ून निकला और जिस पर आप (ﷺ) ने फ़र्माया, (हल अन्ति इल्ला इस्बउ़न दमीती व फ़ी सबीलिल्लाहि मा लक़ीती) यानी तू सिर्फ़ एक उँगली है और अल्लाह

की राह में तुझे यह ज़ख़्म लगा है। तबीयत कुछ नासाज़ हो जाने की वजह से दो तीन रात आप (ﷺ) बेदार न हुए जिस पर उस औरत ने वह नाशाइस्ता अल्फ़ाज़ निकाले और यह आयतें नाज़िल हुईं। कहा गया है कि यह औरत अबू लहब की जोरू उम्मे जमील थी, उस पर अल्लाह की मार। आप (ﷺ) की उँगली का ज़ख़्मी होना और उस मोज़ूँ कलाम का बेसाख़्ता ज़ुबाने मुबारक से अदा होना तो बुख़ारी व मुस्लिम से भी साबित है। (सहीह बुख़ारी, किताबुल अदब, बाब मा यजूज़ु मिनश्शअरि वर्रजज़ : 4146; सहीह मुस्लिम : 1796) लेकिन तर्के क़याम का सबब इसे बताना और इस पर इन आयतों का नाज़िल होना यह ग़रीब है।

इब्ने जरीर में है कि "हज़रत ख़दीजा (रज़ि.) ने कहा था कि आपका रब आपसे कहीं नाराज़ न हो गया हो?" इस पर यह आयतें उतरीं। (तब्री : 24/486; यह रिवायत मुर्सल यानी ज़ईफ़ है।) और रिवायत में है कि जिब्रईल (عليه السلام) के आने में देर हुई तो हुज़ूर (ﷺ) बहुत घबराए, इस पर हज़रत ख़दीजा (रज़ि.) ने यह सबब बयान किया और इस पर यह आयतें उतरीं। (तब्री : 24/487) यह दोनों रिवायतें मुर्सल हैं और हज़रत ख़दीजा (रज़ि.) का नाम तो इसमें महफ़ूज़ नहीं मालूम होता, हाँ! यह मुम्किन है कि बीबी साहिबा (रज़ि.) ने अफ़सोस व रंज के साथ यह फ़र्माया हो, वल्लाहु आलम!

इब्ने इस्हाक़ और कुछ और सलफ़ ने फ़र्माया है कि जब हज़रत जिब्रईल (عليه السلام) अपनी असल सूरत में ज़ाहिर हुए थे और बहुत ही क़रीब हो गए थे उस वक़्त इसी सूरत की वह्यी नाज़िल की थी। इब्ने अब्बास (रज़ि.) का बयान है कि वह्यी के रुक जाने की बिना पर मुश्रिकीन के इस नापाक क़ौल के रद्द में यह आयतें उतरीं। (तब्री : 24/484) यहाँ अल्लाह तआला ने धूप चढ़ने के वक़्त की दिन की रोशनी और रात के सुकून और अंधेरे की क़सम खाई जो क़ुदरते क़ादिर और ख़ल्क़े ख़ालिक़ की साफ़ दलील है जैसे और जगह है (وَالَّيۡلِ اِذَا يَغۡشٰى ۙ﴿۱﴾ وَالنَّهَارِ اِذَا تَجَلّٰى ۙ﴿۲﴾) (92/लैल : 1, 2)

और जगह है (فَالِقُ الۡاِصۡبَاحِ) (6/अन्आम : 96) मतलब यह है कि अपनी इस क़ुदरत का यहाँ भी बयान किया है फिर फ़र्माता है कि तेरे रब ने न तो तुझे छोड़ा न तुझसे दुश्मनी की, तेरे लिए आख़िरत इस दुनिया से बहुत बेहतर है इसीलिए रसूलुल्लाह (ﷺ) दुनिया में सबसे ज़्यादा ज़ाहिद थे और सबसे ज़्यादा तारिके दुनिया थे आप (ﷺ) की सीरत का मुतालआ करने वाले पर यह बात हर्गिज़ छुपी न रह सकती।

हुज़ूर (ﷺ) की शाने मुबारक : मुस्नद अहमद में है कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) फ़र्माते हैं कि "हुज़ूर (ﷺ) बोरिये पर सोये जिस्मे मुबारक पर बोरिये के निशान पड़ गए जब बेदार हुए तो मैं आप (ﷺ) की करवट पर हाथ फेरने लगा और कहा हुज़ूर (ﷺ)! हमें क्यूँ इजाज़त नहीं देते कि इस बोरिये पर कुछ बिछा दिया करें। हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया मुझे दुनिया से क्या वास्ता है? मैं कहाँ दुनिया कहाँ? मेरी और दुनिया की मिसाल तो उस राहरू सवार की तरह है जो किसी दरख़्त तले ज़रा सी देर ठहर जाए फिर उसे छोड़कर चल दे।" (तिर्मिज़ी, किताबुज़्ज़ुहद, बाब हदीस (मा अद्दुनिया इल्ला कराकिबिन इस्तज़ल्ला) : 2377; इब्ने माजा : 4109; वहुव हदीसुन हसन; अहमद : 1/391) यह हदीस तिर्मिज़ी में भी है और हसन है। फिर

फ़र्माया तेरा रब तुझे आख़िरत में तेरी उम्मत के बारे में इस क़द्र नेअ़मतें देगा कि तू ख़ुश हो जाए उनकी बड़ी तक्रीम होगी और आप (ﷺ) को ख़ास करके हौज़े कौसर अ़ता किया जाएगा जिसके किनारे पर खोखले मोती के ख़ेमे होंगे जिसकी मिट्टी ख़ालिस मुश्क होगी, यह हदीसें बहुत जल्द आ रही हैं, इंशाअल्लाह तआ़ला! एक रिवायत में है कि "जो ख़ज़ाने आप (ﷺ) की उम्मत को मिलने वाले थे वह एक एक करके आप (ﷺ) पर ज़ाहिर किये गए आप बहुत ख़ुश हुए इस पर यह आयत उतरी। (तबरी : 24/487) जन्नत में एक हज़ार महल आपको दिये गए हर हर महल में पाक बीवियाँ और बेहतरीन ख़ादिम हैं" इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) तक इसकी सनद सही है और बज़ाहिर ऐसी बात बग़ैर हुज़ूरे अकरम (ﷺ) से सुने रिवायत नहीं हो सकती हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं हुज़ूरे अकरम (ﷺ) की रज़ामंदी में से यह भी है कि आप (ﷺ) के अहले बैत में से कोई दोज़ख़ में न जाए। हसन (रह.) फ़र्माते हैं इससे मुराद शफ़ाअ़त है।

इब्ने अबी शैबा में है कि हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया, "हम वह लोग हैं जिनके लिए अल्लाह तआ़ला ने आख़िरत पर दुनिया पसंद कर ली है फिर आपने आयत (व-ल सौफ़) की तिलावत की।" (मुसन्नफ़ इब्ने अबी शैबा : 37716; वसनदुहू ज़ईफ़ुन; इसकी सनद में यज़ीद बिन अबी ज़ियाद ज़ईफ़ रावी है।) फिर अल्लाह तआ़ला अपनी नेअ़मतें जताता है, पहली नेअ़मत यह बयान की कि आप (ﷺ) की यतीमी की हालत में अल्लाह तबारक व तआ़ला ने आपका बचाव किया और आपकी हिफ़ाज़त की और परवरिश की और जगह इनायत की। आप (ﷺ) के वालिद का इंतिक़ाल तो आपकी पैदाइश से पहले ही हो चुका था। कुछ कहते हैं कि विलादत के बाद हुआ। छः साल की उम्र में वालिदा साहिबा का भी इंतिक़ाल हो गया। अब आप (ﷺ) दादा की किफ़ालत में थे लेकिन जब आठ साल की आपकी उम्र हुई तो दादा का साया भी उठ गया। अब आप अपने चचा अबू तालिब की परवरिश में आये। अबू तालिब आपकी निगरानी और इम्दाद में रहे, आपकी पूरी तौक़ीर व इज़्ज़त करते और क़ौम की मुख़ालिफ़त के चढ़ते तूफ़ान को रोकते रहते थे और अपने नफ़्स को बतौर ढ़ाल के पेश कर दिया करते थे, क्योंकि चालीस साल की उम्र में आप (ﷺ) को नबुव्वत मिल चुकी थी, और कुरआन सख़्ततर मुख़ालिफ़ बल्कि जान के दुश्मन हो गए थे, अबू तालिब बावजूद बुतपरस्त मुश्रिक होने के आप (ﷺ) का साथ देता था और मुख़ालिफ़ीन से लड़ता भिड़ता रहता था। यह थी मिन्जानिब अल्लाह हुस्ने तदबीर कि आपकी यतीमी के अय्याम इस तरह गुज़ारे और मुख़ालिफ़ीन से आप (ﷺ) की ख़िदमत इसी तरह ली, यहाँ तक कि हिज्रत से कुछ पहले अबू तालिब भी फ़ौत हो गए, अब सुफ़हा व जोहलाए कुरैश उठ खड़े हुए तो परवरदिगारे आ़लम ने आप (ﷺ) को मदीना की तरफ़ हिज्रत करने की रुख़्सत अ़ता की और औस व ख़ज़रज जैसी क़ौमों को आपका अंसार (मददगार) बना दिया। उन बुज़ुर्गों ने आपको और आप (ﷺ) के साथियों को जगह दी और मदद की, हिफ़ाज़त की और मुख़ालिफ़ीन से सीना सिपर होकर मर्दानावार लड़ाईयाँ कीं, अल्लाह इन सबसे ख़ुश रहे, यह सबका सब अल्लाह की हिफ़ाज़त और उसकी इनायत एहसान और इकराम से था। फिर फ़र्माया कि राह भूला पाकर सही रास्ता दिखा दिया। जैसे और जगह है (مَا كُنتَ تَدْرِي مَا الْكِتَابُ وَلَا الْإِيمَانُ) (42/शूरा : 52) यानी इसी तरह हमने अपने हुक्म से तुम्हारी तरफ़ रूह (जिब्रईल या

क़ुरआन) की वह़ी की तुम यह भी नहीं जानते थे कि ईमान क्या चीज़ होती है, न किताब की ख़बर थी बल्कि हमने इसे नूर बनाकर जिसे चाहा हिदायत कर दी। कुछ कहते हैं कि मुराद यह है कि हुज़ूर (ﷺ) बचपन में मक्का की गलियों में गुम हो गए थे उस वक़्त अल्लाह ने लौटा लिया। कुछ कहते हैं कि शाम की त़रफ़ अपने चचा के साथ जाते हुए रात को शैत़ान ने आप (ﷺ) की ऊँटनी की नकेल पकड़कर राह से हटाकर जंगल में डाल दिया पस जिब्रईल (عليه السلام) आए और फूँक मारकर शैत़ान को तो ह़ब्शा में डाल दिया और सवारी को राह पर लगा दिया। बग़वी ने यह दोनों क़ौल नक़्ल किये हैं। फिर फ़र्माता है कि बाल बच्चों वाला होते हुए तंग दस्त पाकर हमने आप (ﷺ) को ग़नी कर दिया पस फ़क़ीर स़ाबिर और ग़नी शाकिर होने के दरजात आप (ﷺ) को मिल गए, स़लवातुल्लाहि व सलामुहू अ़लैहि।

मिस्कीन को न झिड़को : ह़ज़रत क़तादा (रह़.) फ़र्माते हैं कि यह सब ह़ाल नबुव्वत से पहले के हैं। बुख़ारी व मुस्लिम वग़ैरह में है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि "तवंगरी माल व अस्बाब की ज़्यादती से नहीं, बल्कि ह़क़ीक़ी तवंगर वह है जिसका दिल बेपरवाह हो।" (स़ह़ीह़ बुख़ारी, किताबुर्रिक़ाक़, बाब अल्ग़निय्यु ग़निय्युन्नफ़्स : 6446; स़ह़ीह़ मुस्लिम : 1051; तिर्मिज़ी : 2373; अह़मद : 2/389; इब्ने ह़िब्बान : 179) स़ह़ीह़ मुस्लिम में है "उसने फ़लाह़ पा ली जिसे इस्लाम नस़ीब हुआ, और जो काफ़ी हो जाए इतना रिज़्क़ भी मिला, और अल्लाह के दिये हुए पर क़नाअ़त की तौफ़ीक़ मिली। (स़ह़ीह़ मुस्लिम, किताबुज़्ज़कात, बाब फ़िल किफ़ाफ़ि वल क़नाअ़त : 1054; तिर्मिज़ी : 2348; इब्ने माजा : 4138; अह़मद : 2/168; इब्ने ह़िब्बान : 270) फिर फ़र्माता है कि यतीम को ह़क़ीर न ख़्याल कर न डाँट डपट कर बल्कि इसके साथ एह़सान व सुलूक कर और अपनी यतीमी को न भूल। क़तादा (रह़.) फ़र्माते हैं कि "यतीम के लिए ऐसा हो जाना चाहिए जैसे सगा बाप अपनी औलाद पर मेहरबान होता है।" साइल को न झिड़क जिस त़रह़ तुम बेराह थे और अल्लाह ने हिदायत दी तो अब जो तुमसे इल्मी बातें पूछे सही रास्ता पूछा तो तुम उसे डाँट डपट न करो, ग़रीब मिस्कीन ज़ईफ़ बंदों पर तकब्बुर तजब्बुर न करो, उन्हें डाँटो डपटो नहीं, बुरा भला न कहो, सख़्त सुस्त न बोलो, अगर मिस्कीन को कुछ न दे सके तो भी भला और अच्छा जवाब दे नर्मी और रह़म के साथ लौटा दे। फिर फ़र्माया कि अपने रब की नेअ़मतें बयान करते रहो, यानी जिस त़रह़ तुम्हारी फ़क़ीरी को हमने तवन्गरी से बदल दिया तुम भी हमारी इन नेअ़मतों को बयान करते रहो, इसीलिए हुज़ूर (ﷺ) की दुआओं में यह भी था (वज्अ़ल्ना शाकिरीना लि निअ़मतिक मुस्नीना बिहा काबिलीहा व अतिम्महा अ़लैना) यानी ऐ अल्लाह! हमें अपनी नेअ़मतों की शुक्रगुज़ारी करने वाला, उनकी वजह से तेरी सना बयान करने वाला, उनका इक़रार करने वाला कर दे और उन नेअ़मतों को हमें भरपूर दे। (अबूदाऊद, किताबुस्स़लात, बाबुत् तशह्हुद : 969; वहुव ह़दीसुन स़ह़ीह़ुन) अबू नज़रा (रह़.) फ़र्माते हैं कि "मुसलमानों का यह ख़्याल था कि नेअ़मतों की शुक्रगुज़ारी में यह भी दाख़िल है कि उनका बयान हो।"

मुस्नद अह़मद की ह़दीस में है कि "जिसने थोड़े पर शुक्र न किया उसने ज़्यादा पर भी शुक्र न किया, लोगों की शुक्रगुज़ारी जिसने न की उसने अल्लाह की भी नहीं की।" (ज़वाइद मुस्नद अह़मद : 4/278;

वसनदुहू ज़ईफ़ुन; फ़ीही अबू अब्दुर्रहमान लम नअरिफ़हू : नेअ़मतों का बयान भी शुक्र है और इनका बयान न करना नाशुक्री है, जमाअ़त के साथ रहना रहमत का सबब है और तफ़र्क़ा अज़ाब का बाइस है, इसकी इस्नाद ज़ईफ़ है। बुख़ारी व मुस्लिम में हज़रत अनस (रज़ि.) से मरवी है कि मुहाजिरीन ने कहा ''या रसूलल्लाह (ﷺ)! अंसार सारा का सारा अज्र ले गए फ़र्माया, नहीं! जब तक कि तुम उनके लिए दुआ किया करो और उनकी ता'रीफ़ करते रहो।'' (सहीहैन में यह रिवायत मौजूद नहीं जबकि अबू दाऊद, किताबुल अदब, बाब फ़ी शुक्रिल मअ़रूफ़ : 4812; वसनदुहू सहीहुन; तिर्मिज़ी : 2487; अहमद : 3/201 में मौजूद है।)

अबूदाऊद में है कि ''उसने अल्लाह की शुक्रगुज़ारी नहीं की जिसने लोगों की शुक्रगुज़ारी न की।'' (अबूदाऊद, किताबुल अदब, बाब फ़ी शुक्रिल मअ़रूफ़ : 4811; वसनदुहू सहीहुन; तिर्मिज़ी : 1954; अल्अदबुल मुफ़रद : 218; अहमद : 2/58; मुस्नदे तयालिसी : 2491; इब्ने हिब्बान : 3407) अबूदाऊद की हदीस में है कि जिसे कोई नेअ़मत मिली और उसने उसे बयान किया तो वह शुक्रगुज़ार है और जिसने उसे छुपाया उसने नाशुक्री की। (अबूदाऊद, किताबुल अदब, बाब फ़ी शुक्रिल मअ़रूफ़ : 4814; वसनदुहू ज़ईफ़ुन; अअ़मश रावी मुदल्लस है और सिमाअ़ की सराहत नहीं है। (और रिवायत में है कि ''जिसे कोई अता दी जाए उसे चाहिए कि अगर हो सके तो बदला उतार दे अगर न हो सके तो उसकी सना बयान करे, जिसने सना की वह शुक्रगुज़ार हुआ और जिसने उस नेअ़मत का इज़्हार न किया उसने नाशुक्री की।'' (अबूदाऊद, किताबुल अदब, बाब फ़ी शुक्रिल मअ़रूफ़ : 4813; वसनदुहू ज़ईफ़ुन; शुरहबील बिन सअ़द अंसारी रावी ज़ईफ़ है।)

मुजाहिद (रह.) फ़र्माते हैं कि यहाँ नेअ़मत से मुराद नबुव्वत है। एक रिवायत में है कि क़ुरआन मुराद है। हज़रत अ़ली (रज़ि.) फ़र्माते हैं मतलब यह है कि जो भलाई की बातें आपको मालूम हैं वह अपने भाईयों से भी बयान करो। मुहम्मद बिन इस्हाक़ (रह.) कहते हैं कि जो नेअ़मत व करामत नबुव्वत की तुम्हें मिली है उसे बयान करो, उसका ज़िक्र करो और उसकी तरफ़ लोगों को दअ़वत दो। चुनाँचे हुज़ूर (ﷺ) ने अपने वालों में से जिन पर आपको इत्मिनान होता पोशीदगी से पहले पहल दअ़वत देनी शुरू की और आप (ﷺ) पर नमाज़ फ़र्ज़ हुई जो आप (ﷺ) ने अदा की।

अल्हम्दुलिल्लाह! सूरह वज़्ज़ुहा की तफ़्सीर मुकम्मल हुई।

***

FLOW CHART

तरतीबी नक्श-ए-रब्त

MACRO-STRUCTURE

नज़्मे-जली

सूरह अलम् नशरह - 94

आयात : 8, मक्की, पैराग्राफ : 3

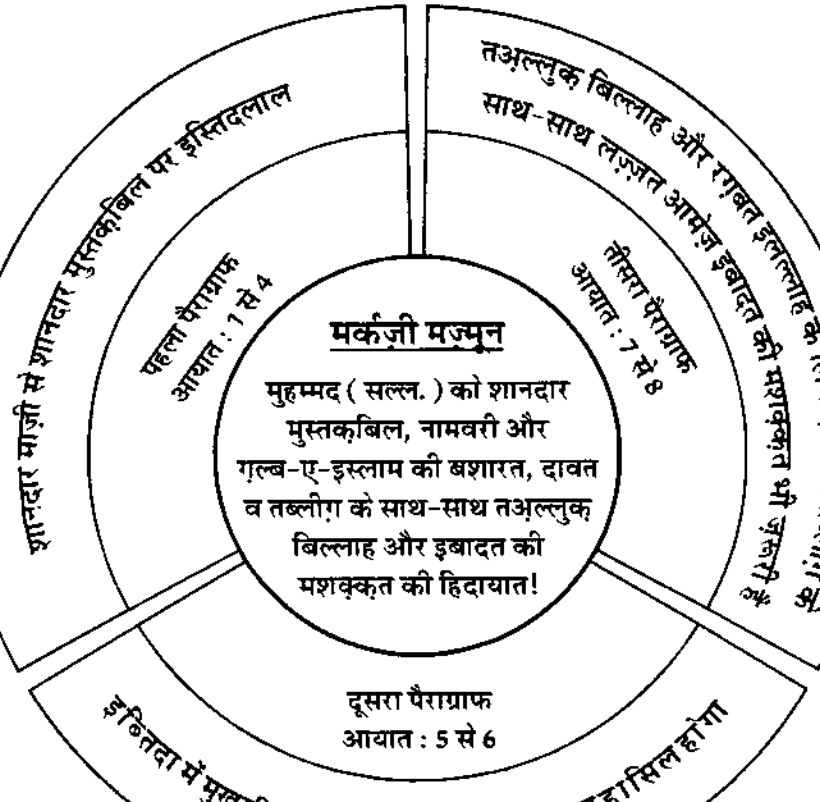

ज़मानए नुज़ूल

सूरह इन्शिराह, सूरह जुहा के बाद क़ियामे मक्का के पहले दौर (0-3 नबवी) में आप (सल्ल.) पर नाज़िल हुई, जब इस्लाम की दावत खुफ़िया तौर पर दी जा रही थी और जब मुख़्तसर वक़्फ़-ए-तअत्तुल (फ़तरतुल वह्य) के बाद दोबारा नुज़ूल का सिलसिला शुरू हो गया था। इन्क़िताअे वह्य का ये दौरानिया 15-20 दिन का था। इस बीच में आप (सल्ल.) परेशान होते तो हज़रत जिब्रईल (अलै.) आकर आप (सल्ल.) को तसल्ली देते कि आप (सल्ल.) रसूले बरहक़ हैं। (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तअबीर, बाब 1, ह6581)

तफ़्सीर सूरह अलम् नशरह

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

तर्जुमा : "शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है।"

***

اَلَمْ نَشْرَحْ لَكَ صَدْرَكَ ① وَوَضَعْنَا عَنْكَ وِزْرَكَ ② الَّذِیْٓ اَنْقَضَ ظَهْرَكَ ③
وَرَفَعْنَا لَكَ ذِكْرَكَ ④ فَاِنَّ مَعَ الْعُسْرِ يُسْرًا ⑤ اِنَّ مَعَ الْعُسْرِ يُسْرًا ⑥ فَاِذَا
فَرَغْتَ فَانْصَبْ ⑦ وَاِلٰى رَبِّكَ فَارْغَبْ ⑧

तर्जुमा : "क्या हमने तेरा सीना नहीं खोल दिया (1) और तुझ पर से तेरा बोझ हमने उतार दिया (2) जिसने तेरी पीठ तोड़ दी थी (3) और हमने तेरा ज़िक्र बुलंद कर दिया (4) तो अल्बत्ता मुश्किल के साथ आसानी है (5) यक़ीनन दुश्वारी के साथ सहूलत है (6) पस जब तू फ़ारिग़ हो तो इबादत में मेहनत कर (7) और अपने परवरदिगार ही की तरफ़ दिल लगा।" (8)

अल्लाह ने अपने पैग़म्बर (ﷺ) का सीना कुशादा कर दिया (आयत : 1 से 8) : यानी हमने तेरे सीने को मुनव्वर कर दिया चौड़ा कुशादा और रहमत व करम वाला कर दिया। और जगह है (فَمَنْ يُرِدِ اللهُ) (6/अन्आम : 125) यानी जिसे अल्लाह हिदायत देना चाहता है उसके सीने को इस्लाम के लिए खोल देता है। जिस तरह आप (ﷺ) का सीना कुशादा कर दिया गया था, इसी तरह आप (ﷺ) की शरीअत भी कुशादगी वाली नर्मी और आसानी वाली बना दी जिसमें न तो कोई हर्ज है न तंगी न तुर्शी न तक्लीफ़ और सख़्ती। और यह भी कहा गया है कि मुराद मेअराज वाली रात सीने का शक़्क़ किया जाना है, जैसे कि मालिक बिन सअसआ (रज़ि.) की रिवायत से पहले गुज़र चुका, इमाम तिर्मिज़ी (रह.) ने इस हदीस को यहीं वारिद किया है। (तिर्मिज़ी, किताबुत्तफ़्सीर, बाब वमिन सूरति अलम नशरह : 3346; वल्बुख़ारी : 3207; व मुस्लिम : 164) लेकिन यह याद रहे कि यह दोनों वाक़िये मुराद हो सकते हैं, यानी मेअराज की रात सीने का शक़्क़ किया जाना और सीने को राज़े इलाही का गंजीना बना देना, वल्लाहु आलम!

हज़रत उबय बिन कअब (रज़ि.) फ़र्माते हैं कि (हज़रत) अबू हुरैरा (रज़ि.) बड़ी दिलेरी से रसूलुल्लाह (ﷺ) से वह वह बातें पूछ लिया करते थे जिसे दूसरे न पूछ सकते थे। एक बार सवाल किया, "या रसूलल्लाह (ﷺ)! अम्रे नबुव्वत में सबसे पहले आपने क्या देखा? आप संभल बैठे और फ़र्माने लगे, अबू हुरैरा (रज़ि.)! मैं दस साल कुछ माह का था, जंगल में खड़ा था कि मैंने ऊपर आसमान की तरफ़ से कुछ आवाज़ सुनी कि एक शख़्स दूसरे से कह रहा है कि क्या यह वही हैं? अब दो शख़्स मेरे सामने आए जिनके मुँह ऐसे मुनव्वर थे कि मैंने ऐसे कभी नहीं देखे और ऐसी ख़ुश्बूएँ आ रही थीं कि मेरे दिमाग़ ने ऐसी ख़ुश्बू कभी नहीं सूँघी और ऐसे कपड़े पहने हुए थे कि मैंने कभी किसी पर ऐसे कपड़े नहीं देखे, और आकर उन्होंने मेरे दोनों बाज़ू थाम लिये लेकिन मुझे यह भी नहीं मालूम होता था कि कोई मेरे बाज़ू थामे हुए है, फिर एक ने दूसरे से कहा कि इन्हें लिटा दो। चुनाँचे उसने लिटा दिया लेकिन उसमें भी न मुझे तक्लीफ़ हुई, न महसूस हुआ। फिर एक ने दूसरे से कहा उनका सीना शक़्क़ करो। चुनाँचे मेरा सीना चीर दिया लेकिन न तो मुझे उसमें कुछ दुख हुआ न मैंने ख़ून देखा। फिर कहा उसमें से ग़िल व ग़श हसद व बुग़्ज़ सब निकाल दो। चुनाँचे उसने एक ख़ून बस्ता जैसी कोई चीज़ निकाली और उसे फेंक दिया। फिर उसने कहा उसमें राफ़्त व रहमत रहमो करम से भर दो। फिर एक चाँदी जैसी चीज़ जितनी निकाली थी उतनी डाल दी फिर मेरे दाएँ पैर का अंगूठा हिलाकर कहा जाईए और सलामती से ज़िन्दगी गुज़ारिये। अब मैं जो चला तो मैंने देखा कि हर छोटे पर मेरे दिल में रिक़्क़त है और हर बड़े पर रहमत है।" (ज़वाइद मुस्नद अहमद : 5/139; ह : 21261; वसनदुहू ज़ईफ़ुन फ़ीहि मुहम्मद बिन मुआज़ बिन मुहम्मद बिन उबय बिन कअब मज्हूल वस्सक़हुज़्ज़ियाउल मक़्दिसी वहदहू बि रिवायतिही फ़िल्मुख़्तारा, मज्मउज़्ज़वाइद : 8/223; इसकी सनद में मुहम्मद बिन मुआज़ मज्हूल रावी है।)

अल्लाह तआला ने पैग़म्बर (ﷺ) का बोझ हल्का किया : फिर फ़र्मान है कि हमने तेरा बोझ उतार दिया, यह इसी मअनी में है कि अल्लाह ने आप (ﷺ) के अगले पिछले गुनाह माफ़ कर दिये, जिसने तेरी कमर को बोझल कर दिया था, हमने तेरा ज़िक्र बुलंद किया। हज़रत मुजाहिद (रह.) फ़र्माते हैं यानी जहाँ मेरा ज़िक्र किया जाए वहाँ तेरा ज़िक्र किया जाएगा जैसे अश्हदु अल्ला इलाहा इल्लल्लाहु वश्हदु अन्ना मुहम्मदर्रसूलुल्लाहि क़तादा (रह.) फ़र्माते हैं कि दुनिया और आख़िरत में अल्लाह तआला ने आपका ज़िक्र बुलंद किया, कोई ख़तीब कोई वाइज़ कोई कलिमा गो कोई नमाज़ी ऐसा नहीं जो अल्लाह तआला की वहदानियत का और आप (ﷺ) की रिसालत का कलिमा न पढ़ता हो। इब्ने जरीर में है कि हुज़ूर (ﷺ) के पास हज़रत जिब्रईल (अलैहि.) आए और फ़र्माया कि मेरा और आपका रब फ़र्माता है कि मैं आपका ज़िक्र किस तरह बुलंद करूँ? आप (ﷺ) ने फ़र्माया, अल्लाह ही को पूरा इल्म है। फ़र्माया जब मैं ज़िक्र किया जाऊँ तो आप (ﷺ) का ज़िक्र भी किया जाएगा।

इब्ने अबी हातिम में है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं "मैंने अपने रब से एक सवाल किया लेकिन न करता तो अच्छा होता। मैंने कहा, ऐ अल्लाह! मुझसे पहले नबियों में से किसी के लिए तूने हवा को ताबेदार

कर दिया था, किसी के हाथों मुर्दों को ज़िन्दा कर दिया था, तो अल्लाह तआला ने मुझसे फ़र्माया क्या तुझे मैंने यतीम पाकर जगह न दी? मैंने कहा, बेशक। फ़र्माया राह गुमकर्दा पाकर मैंने तुझे हिदायत नहीं की? मैंने कहा, बेशक। फ़र्माया क्या फ़क़ीर पाकर ग़नी नहीं कर दिया? मैंने कहा, बेशक। फ़र्माया क्या मैंने तेरा सीना खोल नहीं दिया? क्या मैंने तेरा ज़िक्र बुलंद नहीं किया? मैंने कहा, बेशक किया है।'' (इब्ने अबी ह़ातिम, वसनदुहू ह़सन; ह़ाकिम : 2/526; अल्मुअजमुल औसत़ : 1/210)

अबू नुऐम दलाइलुन्नबुव्वा में लाए हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, ''जब मैं फ़ारिग़ हुआ उस चीज़ से जिसका हुक्म मुझे मेरे रब अ़ज़्ज़ व जल्ल ने किया था आसमान व ज़मीन के काम से तो मैंने कहा, ऐ अल्लाह! मुझसे पहले जितने अम्बिया (عليهم السلام) हुए उन सबकी तूने तकरीम की, इब्राहीम (عليه السلام) को ख़लील बनाया, मूसा (عليه السلام) को कलीम बनाया, दाऊद (عليه السلام) के लिए पहाड़ों को मुसख़्ख़र किया, सुलेमान (عليه السلام) के लिए हवाओं को ताबेदार बनाया और शयात़ीन को भी, ईसा (عليه السلام) के हाथ पर मुर्दे ज़िन्दा कराये हैं, पस मेरे लिए क्या किया है? अल्लाह तआला ने फ़र्माया, क्या मैंने तुझे इन सबसे अफ़ज़ल चीज़ नहीं दी? कि मेरे ज़िक्र के साथ ही तेरा ज़िक्र भी किया जाता है और मैंने तेरी उम्मत के सीनों को ऐसा कर दिया कि वह कुरआन को ज़ाहिरन पढ़ते हैं। यह मैंने किसी अगली उम्मत को नहीं दिया और मैंने तुझे अ़र्श के ख़ज़ानों में से ख़ज़ाना दिया जो (ला ह़ौला वला कुव्वता इल्ला बिल्लाहिल अ़लिय्यिल अ़ज़ीम)।'' (इसकी सनद में नस़र बिन ह़म्माद बजली सख़्त ज़ईफ़ रावी है देखिए (अल्मीज़ान : 4/250; रक़म : 9029) लिहाज़ा यह रिवायत मर्दूद है।)

नबी (ﷺ) का नाम ज़िन्दा रहेगा : इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) और मुजाहिद (रह़.) फ़र्माते हैं कि इससे मुराद अज़ान है, यानी अज़ान में आप (ﷺ) का ज़िक्र जिस त़रह़ ह़ज़रत ह़स्सान (रज़ि.) के शेअ़रों में है,

اغر عليه للنبوة خاتم من الله من نور يلوح ويشهد

وضم الاله اسم النبى اسمه اذا قال فى الخمس الموذن اشهد

وشق له من اسمه ليجله فذو العرش محمود وهذا محمد

यानी अल्लाह तआला ने मुहरे नबुव्वत को अपने पास का एक नूर बनाकर आप पर चमका दी जो आप (ﷺ) की रिसालत की गवाह है। अपने नाम के साथ अपने नबी (ﷺ) का नाम मिला लिया जबकि पाँचों वक़्त मुअज़्ज़िन अश्हद ... कहता है। आप (ﷺ) की इ़ज़्ज़त व जलाल के इज़्हार के लिए अपने नाम से आप (ﷺ) का नाम निकाला देखो वह अ़र्श वाला मह़मूद है और आप मुह़म्मद (ﷺ) हैं और लोग कहते हैं कि अगलों पिछलों में अल्लाह तआला ने आपका ज़िक्र बुलंद किया और तमाम अम्बिया (عليهم السلام) से रोज़े मीसाक़ में अ़हद लिया गया कि वह आप (ﷺ) पर ईमान लाएँ और अपनी अपनी उम्मतों को भी आप पर

ईमान लाने का हुक्म करें। फिर आपकी उम्मत में आप (ﷺ) के ज़िक्र को मशहूर किया कि अल्लाह के ज़िक्र के साथ आप (ﷺ) का ज़िक्र किया जाए।

सुरसुरी (रह.) ने कितनी अच्छी बात बयान की है, फ़र्माते हैं कि फ़र्ज़ों की अज़ान सही नहीं होती मगर आप (ﷺ) के प्यारे और मीठे नाम से जो पसंदीदा और अच्छे मुँह से अदा हो, और फ़र्माते हैं कि तुम नहीं देखते कि हमारी अज़ान और हमारा फ़र्ज़ सही नहीं होता, कि जब तक कि आप (ﷺ) का जिक्र बार बार उसमें न आए। फिर अल्लाह तबारक व तआला तकरार और ताकीद के साथ दो दो दफ़ा फ़र्माता है कि सख़्ती के साथ आसानी, दुश्वारी के साथ सहूलत है। इब्ने अबी हातिम में है कि "रसूलुल्लाह (ﷺ) बैठे हुए थे और आप (ﷺ) के सामने एक पत्थर था। पस आप (ﷺ) ने कहा अगर सख़्ती आए और उस पत्थर में घुस जाए तो आसानी भी आएगी और उसी में जाएगी और उसे निकाल लाएगी।" उस पर यह आयत उतरी। (हाकिम : 2/255; वसनदुहू ज़ईफ़ुन; इसकी सनद में हमीद बिन हम्माद और आइज़ बिन शुरैह दोनों ज़ईफ़ रावी हैं देखिए (मीज़ानुल एतिदाल : 1/611) रक़म : 2324, 2/363; रक़म : 4100) मुस्नदे बज़्ज़ार में है कि हुज़ूर (ﷺ) फ़र्माते हैं कि "अगर दुश्वारी उस पत्थर में दाख़िल हो जाए तो आसानी आकर उसे निकालेगी। फिर आप (ﷺ) ने इस आयत की तिलावत की।" (मुस्नदे बज़्ज़ार : 2288; वसनदुहू ज़ईफ़ुन देखिए हाशिया साबिक़ा : 1) यह हदीस सिर्फ़ आइज़ बिन शुरैह हज़रत अनस (रज़ि.) से रिवायत करते हैं और उनके बारे में अबू हातिम राज़ी (रह.) का फ़ैसला है कि इनकी हदीस में ज़ुअफ़ है और इब्ने मसऊद (रज़ि.) से यह मौक़ूफ़ मरवी है।

सख़्ती के बाद आसानी.... : हज़रत हसन (रह.) फ़र्माते हैं कि लोग कहते थे कि एक सख़्ती दो आसानियों पर ग़ालिब नहीं आ सकती। हज़रत हसन (रह.) से इब्ने जरीर में मरवी है कि हुज़ूर (ﷺ) एक दिन शादा व फ़रहाँ आए और हँसते हुए फ़र्माने लगे हर्गिज़ एक दुश्वारी दो नर्मियों पर ग़ालिब नहीं आ सकती, फिर इस आयत की आप (ﷺ) ने तिलावत की।" (हाकिम : 2/528; यह रिवायत मुर्सल यानी ज़ईफ़ है।) यह हदीस मुर्सल है। हज़रत क़तादा (रह.) फ़र्माते हैं कि हमसे ज़िक्र किया गया है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने अपने अस्हाब (रज़ि.) को ख़ुशख़बरी सुनाई कि दो आसानियों पर एक सख़्ती ग़ालिब नहीं आ सकती। (तब्री : 24/495; यह रिवायत मुर्सल यानी ज़ईफ़ है।) मतलब यह है कि उसरा के लफ़्ज़ को तो दोनों जगह मअरिफ़ा लाए हैं तो वह मुफ़रद हुआ और युस्र के लफ़्ज़ का नकिरह लाए हैं तो वह मुतअद्दद हो गया। एक हदीस में है कि मऊनता यानी इम्दादे अल्लाह बक़द्र मऊना यानी तक्लीफ़ के आसमान से नाज़िल होती है और सब्र मुसीबत की मिक़्दार पर नाज़िल होता है। (शुअबुल ईमान लिल्बैहक़ी : 9598) हज़रत इमाम शाफ़ेई (रह.) फ़र्माते हैं,

صبر اجميلا ما اقرب الفرجا من راقب الله فى الامر نجا

من صدق اللّٰہ لم ینلہ اذی ومن رجاہ یکون حیث رجا

यानी अच्छा सब्र कुशादगी से क्या ही क़रीब है? अपने कामों में अल्लाह तआला का लिहाज़ रखने वाला नजात याफ़्ता है। अल्लाह तआला की बातों की तस्दीक़ करने वाले को कोई ईज़ा नहीं पहुँचती। उससे भलाई की उम्मीद रखने वाला उसे अपनी उम्मीद के साथ ही पाता है। ह़ज़रत अबू ह़ातिम सजिस्तानी (रह़.) के अश्आर हैं कि जब मायूसी दिल पर क़ब्ज़ा कर लेती है और सीना बावजूद कुशादगी के तंग हो जाता है तक्लीफ़ें घेर लेती हैं और मुसीबतें डेरा जमा लेती हैं, कोई चारा सुझाई नहीं देता और कोई तदबीर कारगर नहीं होती, उस वक़्त अचानक अल्लाह की मदद आ पहुँचती है और वह दुआओं का सुनने वाला है, बारीक बीन अल्लाह उस सख़्ती को आसानी से और इस तक्लीफ़ को राह़त से बदल देता है। तंगियाँ जबकि भरपूर आ पड़ती हैं परवरदिगार साथ ही कुशादगियाँ नाज़िल फ़र्माकर नुक़्सान फ़ायदा से बदल देता है, किसी और शायर ने कहा है,

ولرب نازل یضیق بہ الفتی ذرھا وعند اللّٰہ منھا المخرج

کملت فلما :ستحلت حلقا تھا فرجت وکان یظنھا لا تفرج

यानी बहुत सी ऐसी मुसीबतें इंसान पर नाज़िल होती हैं जिनसे वह तंगदिल हो जाता है ह़ालाँकि अल्लाह के पास उनसे छुटकारा भी है, जब यह मुसीबतें कामिल हो जाती हैं और ज़ंजीर के ह़ल्क़े मज़बूत हो जाते हैं और इंसान गुमान करने लगता है कि भला अब यह क्या हटेगी? कि अचानक उस रह़ीमो करीम अल्लाह की शफ़क़त भरी नज़रें पड़ती हैं और इस मुसीबत को इस त़रह़ दूर कर देता है कि गोया आई ही न थी। उसके बाद इर्शादे बारी होता है जब तू दुनियावी कामों से और यहाँ के अश्ग़ाल से फ़ुर्सत पा लो तो हमारी इ़बादतों में लग जा और फ़ारिग़ुल बाली होकर दिली तवज्जह करके हमारे सामने आ़जिज़ी में लग जा, अपनी निय्यत ख़ालिस़ कर ले, अपनी पूरी रग़बत के साथ हमारी जनाब की त़रफ़ मुतवज्जह हो जा।

इसी मअ़नी की वह ह़दीस है जिसकी स़ेह़त पर इत्तिफ़ाक़ है जिसमें है खाना सामने मौजूद होने के वक़्त नमाज़ नही और इस ह़ालत में भी कि इंसान को पाख़ाना, पेशाब की ह़ाजत हो। (स़ह़ीह़ मुस्लिम, किताबुल मसाजिद, बाब कराहतुस्सलाति बि ह़ज़्रिहित्तआमिल्लज़ी युरीदु अक्लहू फ़िल्ह़ाल : 560; अबूदाऊद : 89; अह़मद : 6/43) और ह़दीस में है कि जब नमाज़ खड़ी की जाए और शाम का खाना सामने मौजूद हो तो पहले खाने से फ़राग़त ह़ासिल कर लो। (स़ह़ीह़ बुख़ारी, किताबुल अज़ान, बाब इज़ा ह़ज़रत्तआमु व उक़ीमतिस्सलात : 671; स़ह़ीह़ मुस्लिम : 557) ह़ज़रत मुजाहिद (रह़.) इस आयत की तफ़्सीर में फ़र्माते हैं कि जब अम्रे दुनिया से फ़ारिग़ होकर नमाज़ के लिए खड़ा हो तो मेह़नत के साथ इ़बादत कर और मशग़ूलियत के साथ रब की त़रफ़ तवज्जह कर। ह़ज़रत इब्ने मसऊ़द (रज़ि.) फ़र्माते हैं कि जब फ़र्ज़ नमाज़ से फ़ारिग़ हो तो तहज्जुद की नमाज़ में

खड़ा हो। हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) फ़र्माते हैं कि "नमाज़ से फ़ारिग़ होकर बैठे हुए अपने रब की तरफ़ तवज्जह कर।" हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं कि यानी दुआ कर।

ज़ैद बिन असलम और ज़ह्हाक (रह़ि.) फ़र्माते हैं कि जिहाद से फ़ारिग़ होकर अल्लाह की इबादत में लग जा। सौरी (रह़.) फ़र्माते हैं कि अपनी निय्यत और अपनी रग़बत अल्लाह ही की तरफ़ रख।

अल्हम्दुलिल्लाह! सूरह अलम् नशरह की तफ़्सीर मुकम्मल हुई।

***

FLOW CHART
तरतीबी नक्श-ए-रब्त

MACRO-STRUCTURE
नज़्मे-जली

सूरह तीन - 95

आयात : 8, मक्की, पैराग्राफ : 2

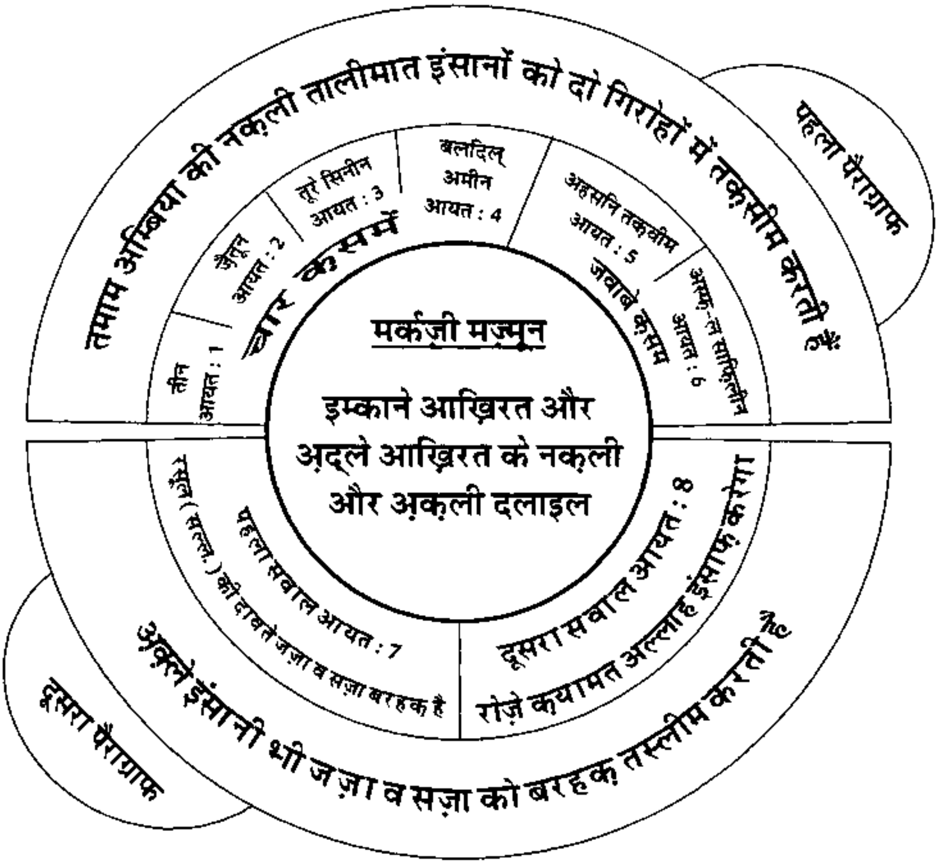

ज़मानए नुज़ूल

सूरह तीन क़ियामे मक्का के दूसरे दौर (4-5 नबवी) में ऐलाने आ़म के बाद दौरे तक्ज़ीब में नाज़िल हुई। जब इस्लाम की दावत को झुठलाया जा रहा था और क़ुरैश के दानिशवर क़यामत और जज़ा व सज़ा 'अद्दीन' के बारे में तरह-तरह के शुकूक व शुब्हात आ़म कर रहे थे।

तफ़्सीर सूरह तीन

तआरुफ़े सूरत : हज़रत बराअ बिन आज़िब (रज़ि.) फ़र्माते हैं कि "रसूलुल्लाह (ﷺ) अपने सफ़र में दो रकअतों में से किसी एक में यह सूरत पढ़ रहे थे मैंने आप (ﷺ) से ज़्यादा अच्छी आवाज़ और अच्छी क़िरअत किसी की नहीं सुनी।" (सहीह बुख़ारी, किताबुल अज़ान, बाब अल क़िरअतु फ़िल्इशा : 769; सहीह मुस्लिम : 464; अबूदाऊद : 1221; तिर्मिज़ी : 310; नसाई : 1001; इब्ने माजा : 834)

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ ○

तर्जुमा : "शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है।"

***

وَالتِّيۡنِ وَالزَّيۡتُوۡنِ ① وَطُوۡرِ سِيۡنِيۡنَ ② وَهٰذَا الۡبَلَدِ الۡاَمِيۡنِ ③ لَقَدۡ خَلَقۡنَا الۡاِنۡسَانَ فِىۡۤ اَحۡسَنِ تَقۡوِيۡمٍ ④ ثُمَّ رَدَدۡنٰهُ اَسۡفَلَ سٰفِلِيۡنَ ⑤ اِلَّا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَلَهُمۡ اَجۡرٌ غَيۡرُ مَمۡنُوۡنٍ ⑥ فَمَا يُكَذِّبُكَ بَعۡدُ بِالدِّيۡنِ ⑦ اَلَيۡسَ اللّٰهُ بِاَحۡكَمِ الۡحٰكِمِيۡنَ ⑧

तर्जुमा : "क़सम है अंजीर की और ज़ेतून की। (1) और तूरे सीनीन की (2) और इस अम्न वाले शहर की (3) यक़ीनन हमने इंसान को बेहतरीन सूरत में पैदा किया (4) फिर इसे नीचों से नीचा कर दिया (5) लेकिन जो लोग ईमान लाए और फिर नेक अमल किये तो इनके लिए ऐसा अज्र है जो कभी ख़त्म न होगा (6) पस तुझे अब रोज़े जज़ा के झुठलाने पर कौनसी चीज़ आमादा करती है? (7) क्या अल्लाह तआला सब हाकिमों का हाकिम नहीं?" (8)

अंजीर या तीन क्या है? (आयत : 1 से 8) : (तीन) से मुराद किसी के नज़दीक तो मस्जिदे दमिश्क़ है कोई कहता है ख़ुद दमिश्क़ मुराद है किसी के नज़दीक दमिश्क़ का एक पहाड़ मुराद है, कुछ कहते हैं कि अस्हाबे कहफ़ की मस्जिद मुराद है कोई कहता है जूदी पहाड़ पर मस्जिदे नूह जो है वह मुराद है, कुछ कहते

हैं कि अंजीर मुराद है। ज़ेतून से कोई कहता है मस्जिदे बैतुल मक़्दिस मुराद है।

ज़ेतून और तूरे सीना : किसी ने कहा वह ज़ेतून जिसे निचोड़ते हो। तूरे सीनीन वह पहाड़ है जिस पर हज़रत मूसा (ﷺ) से अल्लाह तआला ने कलाम किया था। (बलदिल अमीन) से मुराद मक्का है, इसमें किसी को इख़्तिलाफ़ नहीं, कुछ का क़ौल यह है कि यह तीनों वह जगहें हैं जहाँ तीन ऊलुल अज़्म साहिबे शरीअत पैग़म्बर (ﷺ) भेजे गए हैं, तीन से मुराद तो बैतुल मक़्दिस है जहाँ पर हज़रत ईसा (ﷺ) को नबी बनाकर भेजा गया था और तूरे सीनीन से मुराद तूरे सीना है जहाँ हज़रत मूसा बिन इमरान (ﷺ) से अल्लाह तआला ने कलाम किया था और बलदे अमीन से मुराद मक्का मुकर्रमा है जहाँ हमारे सरदार हज़रत मुहम्मद (ﷺ) भेजे गए। तौरात के आख़िर में इन तीनों जगहों का नाम है। इसमें है कि तूरे सीना से अल्लाह तआला आया यानी वहाँ पर हज़रत मूसा (ﷺ) से अल्लाह तआला ने कलाम किया और साईर यानी बैतुल मक़्दिस के पहाड़ से उसने नूर चमकाया।

मक्का की अज़्मत का बयान : यानी हज़रत ईसा (ﷺ) को वहाँ भेजा, और फ़ारान की चोटियों पर वह बुलंद हुआ यानी मक्का के पहाड़ों से हज़रत मुहम्मद (ﷺ) को भेजा, फिर इन तीनों ज़बरदस्त बड़े मर्तबे वाले पैग़म्बरों की ज़ुबानी और वजूदी तर्तीब बयान कर दी, इसी तरह यहाँ भी पहले जिसका नाम लिया उससे ज़्यादा शरीफ़ चीज़ का नाम फिर लिया, फिर उन दोनों से बुज़ुर्गतर चीज़ का नाम आख़िर में लिया, फिर इन क़समों के बाद बयान किया कि इंसान को अच्छी शक्लो सूरत में सही क़द व क़ामत वाला दुरुस्त और सुडोल अअज़ा (जिस्म) वाला ख़ूबसूरत और सुहावने चेहरे वाला पैदा किया। फिर उसे नीचों से नीचा कर दिया यानी जहन्नमी हो गया, अगर अल्लाह की इताअत और रसूल (ﷺ) की इत्तिबाअ न की तो, इसीलिए ईमान वालों को इससे अलग कर लिया। कुछ कहते हैं कि मुराद फूस बुढ़ापे की तरफ़ लौटा देना है।

हज़रत इक्रिमा (रह.) फ़र्माते हैं कि "जिसने कुरआन जमा किया वह रज़ील उम्र को न पहुँचेगा। इमाम इब्ने जरीर (रह.) इसी को पसंद फ़र्माते हैं, लेकिन अगर यही बुढ़ापा मुराद होता तो मोमिनों को अलग क्यूँ किया जाता। बुढ़ापा तो कुछ मोमिनों पर भी आता है। पस ठीक बात वही है जो ऊपर हमने ज़िक्र की। जैसे और जगह सूरह वल्अस्र में है कि तमाम इंसान नुक़्सान में हैं सिवा ईमान और आमाले सालेहा वालों के, कि उन्हें नेक जज़ा वह मिलेगी जिसकी इंतिहा न हो जैसे पहले बयान हो चुका, फिर फ़र्माता है ऐ इंसान! जबकि तू अपनी पहली और अव्वल मर्तबा की पैदाइश को जानता है तो फिर जज़ा व सज़ा के दिन के आने पर और तेरे दोबारा ज़िन्दा होने पर तुझे क्यूँ यक़ीन नहीं? क्या वजह है कि तू उसे नहीं मानता हालाँकि ज़ाहिर है कि जिसने पहली बार पैदा कर दिया, उस पर दूसरी बार का पैदा करना क्या मुश्किल है?

हज़रत मुजाहिद (रह.) एक मर्तबा हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) से पूछ बैठे कि इससे मुराद हुज़ूर (ﷺ) हैं? आपने फ़र्माया, मआज़ल्लाह! इससे मुराद मुत्लक़ इंसान है। इक्रिमा (रह.) वग़ैरह का भी यही क़ौल है। फिर फ़र्माता है कि क्या अल्लाह अहकमुल हाकिमीन नहीं है? वह न ज़ुल्म करे न बेइंसाफ़ी करे

इसीलिए वह क़ियामत क़ायम करेगा और हर एक ज़ालिम से मज़्लूम का इंतिक़ाम लेगा। हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) से मरफ़ूअ हदीस में गुज़र चुका है कि जो शख़्स (वत्तीनि वज़्ज़ैतून) पढ़े और उसके आख़िर की आयत (अलैसल्लाहु...) पढ़े तो कह दे (बला व अना अ़ला ज़ालिका मिनश्शाहिदीन) यानी हाँ और मैं इस पर गवाह हूँ। (अबूदाऊद, किताबुस्सलात, बाब मिक़्दारिर्रुकूअ वस्सुजूद : 887; वसनदुहू ज़ईफ़ुन; तिर्मिज़ी : 3347; इसकी सनद में आराबी बदवी आदमी मज्हूल है।)

अल्हम्दुलिल्लाह! सूरह वत्तीन की तफ़्सीर मुकम्मल हुई।

***

FLOW CHART
तरतीबी नक्श-ए-रब्त

MACRO-STRUCTURE
नज़्मे-जली

सूरह अ़लक़ - 96

आयात : 19, मक्की, पैराग्राफ : 5

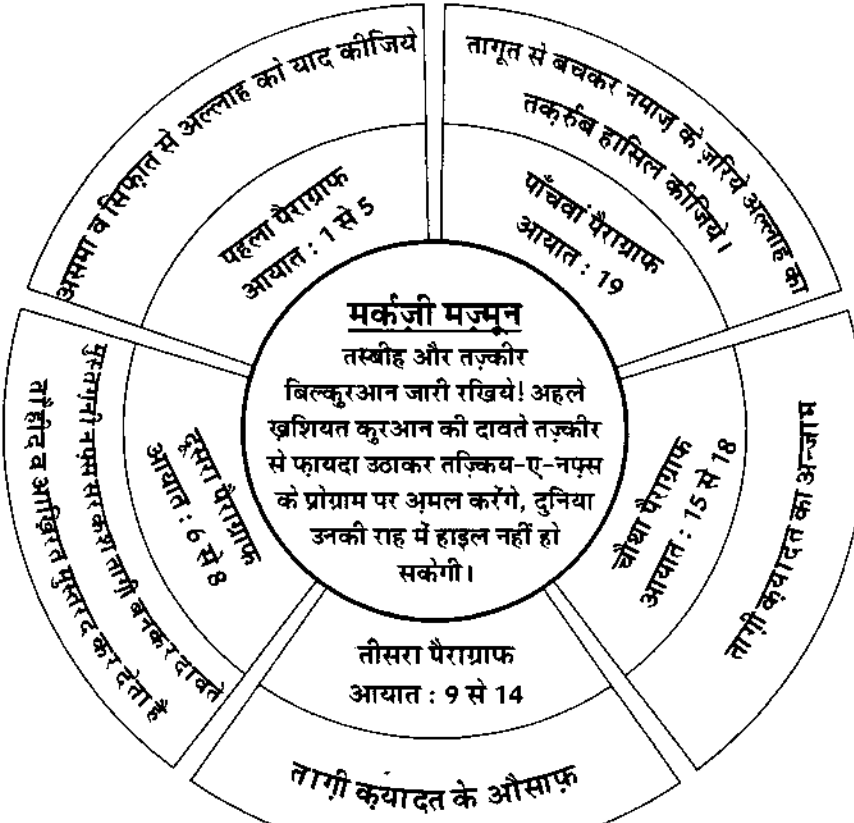

ज़मानए नुज़ूल

1. सूरह अ़लक़ की इब्तिदाई पाँच आयात से रसूलुल्लाह (सल्ल.) पर वह्य का आग़ाज़ हुआ।
(सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, बाब सूरह अ़लक़ : 4670, अ़न आ़इशा)
ये ग़ालिबन रमज़ान मुताबिक़ 10 अगस्त 610 का वाक़िया है।

2. इस सूरत की आख़िरी चौदह (14) आयात, दूसरे दौर में ऐलाने आ़म के बाद ग़ालिबन 4 या 5 नबवी में अबू जहल के बारे में नाज़िल हुईं, जब उसने आप (सल्ल.) को हरम में नमाज़ से रोका था।

तफ़्सीर सूरह अलक़

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ○

तर्जुमा : "शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है।"

***

اِقۡرَاۡ بِاسۡمِ رَبِّکَ الَّذِیۡ خَلَقَ ۚ﴿۱﴾ خَلَقَ الۡاِنۡسَانَ مِنۡ عَلَقٍ ۚ﴿۲﴾ اِقۡرَاۡ وَ رَبُّکَ الۡاَکۡرَمُ ﴿۳﴾ الَّذِیۡ عَلَّمَ بِالۡقَلَمِ ﴿۴﴾ عَلَّمَ الۡاِنۡسَانَ مَا لَمۡ یَعۡلَمۡ ؕ﴿۵﴾

तर्जुमा : "पढ़ो अपने रब के नाम से (1) जिसने इंसान को ख़ून के लोथड़े से पैदा किया (2) तू पढ़ता रह तेरा रब बड़े करम वाला है (3) जिसने क़लम के ज़रिये इल्म सिखाया (4) जिसने इंसान को वह सिखाया जिसे वह नहीं जानता था।" (5)

अलक़ पहली वही (आयत : 1 से 5) : उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा (रज़ि.) फ़र्माती हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) की वही की शुरुआत अच्छे ख़्वाबों से हुई, जो ख़्वाब आप (ﷺ) देखते वह सुबह ज़ाहिर हो जाते थे। फिर आप (ﷺ) ने गोशा नशीनी और ख़ल्वत इख़्तियार की। उम्मुल मोमिनीन हज़रत ख़दीजा (रज़ि.) से तोशा लेकर ग़ारे हिरा में तशरीफ़ ले जाते और कई कई रातें वहीं इबादत में गुज़ारते, फिर आते तोशा लेकर चले जाते यहाँ तक कि एक बार अचानक वहीं शुरू शुरू में वही आई फ़रिश्ता आप (ﷺ) के पास आया और कहा (इक़रा) यानी पढ़िए। आप (ﷺ) फ़र्माते हैं मैंने कहा मैं तो पढ़ा हुआ नहीं, फ़रिश्ते ने मुझे पकड़ा और दबोचा यहाँ तक कि मुझे तक्लीफ़ हुई फिर मुझे छोड़ दिया और फ़र्माया पढ़। मैंने फिर कहा मैं पढ़ना नहीं जानता। फ़रिश्ते ने मुझे दोबारा दबोचा जिससे मुझे तक्लीफ़ भी हुई फिर छोड़ दिया और फ़र्माया पढ़ो, मैंने फिर भी यही कहा कि मैं पढ़ने वाला नहीं, उसने मुझे तीसरी बार पकड़कर दबाया और तक्लीफ़ पहुँचाई फिर छोड़ दिया और (इक़रा बिस्मि रब्बिकल्लज़ी ख़लक़) से (मा लम यअलम) तक पढ़ा। आप (ﷺ) इन आयतों को लिये हुए काँपते हुए हज़रत ख़दीजा (रज़ि.) के पास आए और फ़र्माया मुझे कपड़ा ओढ़ा दो, चुनाँचे कपड़ा ओढ़ाया गया यहाँ तक कि डर ख़ौफ़ जाता रहा तो आप (ﷺ) ने हज़रत ख़दीजा (रज़ि.) से सारा वाक़िया बयान किया और फ़र्माया, मुझे अपनी जान जाने का डर है। हज़रत ख़दीजा (रज़ि.)

ने कहा, हुज़ूर (ﷺ)! आप ख़ुश हो जाइए, अल्लाह की क़सम! अल्लाह तआला आपको हर्गिज़ रुस्वा न करेगा, आप सिलारहमी करते हैं, सच्ची बातें करते हैं दूसरों का बोझ ख़ुद उठा लेते हैं, मेहमाननवाज़ी करते हैं, और हक़ पर दूसरों की मदद करते हैं। फिर हज़रत ख़दीजा (रज़ि.) आप (ﷺ) को लेकर अपने चचाज़ाद भाई वरक़ा बिन नौफ़िल बिन असद बिन अब्दुल उज़्ज़ा बिन क़ुसय के पास आईं, जाहिलियत के ज़माने में यह नसरानी हो गए थे, अरबी किताब लिखते थे और इब्रानी में इंजील लिखते थे, बहुत बड़ी उम्र के बूढ़े फूस थे, आँखों की रोशनी जा चुकी थीं। हज़रत ख़दीजा ने उनसे कहा कि अपने भतीजे का वाक़िया सुनिए। वरक़ा ने पूछा, भतीजे! आपने क्या देखा? रसूलुल्लाह (ﷺ) ने सारा वाक़िया कह सुनाया। वरक़ा ने सुनते ही कहा कि यही वह राज़ दाँ फ़रिश्ता है जो हज़रत ईसा (عليه السلام) के पास भी अल्लाह तआला का भेजा हुआ आया करता था, काश कि मैं उस वक़्त जवान होता, काश कि मैं उस वक़्त ज़िन्दा होता जबकि आपको आपकी क़ौम निकाल देगी। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने ताज्जुब से सवाल किया कि क्या वह मुझे निकाल देंगे? वरक़ा ने कहा कि हाँ! एक आप क्या जितने भी लोग आपकी तरह नबुव्वत से सरफ़राज़ होकर आए उन सबसे दुश्मनियाँ की गईं, अगर वह वक़्त मेरी ज़िन्दगी में आ गया तो मैं आपकी पूरी पूरी मदद करूँगा।

लेकिन इस वाक़िया के बाद वरक़ा बहुत कम मुद्दत ज़िन्दा रहे और इधर वह्यी भी रुक गई और उसके रुकने का हुज़ूर (ﷺ) को बड़ा सदमा था, कई बार आप (ﷺ) ने पहाड़ की चोटी पर से अपने आपको गिरा देना चाहा लेकिन हर वक़्त हज़रत जिब्रईल (عليه السلام) आ जाते और फ़र्मा देते कि ऐ मुहम्मद (ﷺ)! आप अल्लाह तआला के सच्चे रसूल हैं। उससे आप (ﷺ) का क़लक़ और रंजो ग़म जाता रहता और दिल में क़द्रे इत्मिनान पैदा हो जाता और आराम से घर वापिस आ जाते।'' ((अहमद : 6/232, 233; वसनदुहू सहीहुन; बुख़ारी : 4956, 6982; व मुस्लिम : 160)

यह हदीस सहीह बुख़ारी, सहीह मुस्लिम में भी बरिवायत ज़ोहरी मरवी है। (सहीह बुख़ारी, किताब बदउल वह्यी, बाब कैफ़ काना बदउल वह्यी इला रसूलिल्लाहि (ﷺ) : 3; सहीह मुस्लिम : 160 इसकी सनद में इसके मतन में, इसके मआनी में जो कुछ बयान करना चाहिए था वह हमने अपनी शरह बुख़ारी में पूरे तौर पर बयान कर दिया है अगर जी चाहे वहीं देख लिया जाए, वल्हम्दु लिल्लाह!

पस क़ुरआने करीम की बएतिबार नुज़ूल के सबसे पहली आयतें यही हैं, यही पहली नेअमत है जो अल्लाह तबारक व तआला ने अपने बन्दों पर इन्आम की और यही वह पहली रहमत है जो उस अरहमुर्राहिमीन ने अपने रहमो करम से हमें दी। इसमें तंबीह है इंसान की पहली पैदाइश पर कि वह एक जमे हुए ख़ून की शक्ल में था अल्लाह तआला ने उस पर यह एहसान किया कि उसे अच्छी सूरत में पैदा किया फिर इल्म जैसी अपनी ख़ास नेअमत उसे मर्हमत फ़र्माई और वह सिखाया जिसे वह नहीं जानता था, इल्म ही की बरकत थी कि कुल इंसानों बाप आदम (عليه السلام) फ़रिश्तों में भी मुमताज़ नज़र आए। इल्म कभी तो ज़हन में ही होता है और कभी ज़ुबान पर होता है और कभी किताबी सूरत में लिखा हुआ होता है, पस इल्म की तीन क़िस्में

हुई, ज़हनी, लफ़्ज़ी और रस्मी, और रस्मी इल्म ज़हनी, और लफ़्ज़ी को मुस्तल्ज़िम है लेकिन वह दोनों इसे मुस्तल्ज़िम नहीं, इसीलिए फ़र्माया कि पढ़! तेरा रब तो बड़े इकराम वाला है जिसने क़लम के ज़रिया इल्म सिखाया और आदमी को जो वह नहीं जानता था मालूम करा दिया।

एक असर में वारिद है कि इल्म को लिख लिया करो। (हाकिम : 1/106; ह : 361; अन अनस (रज़ि.) मौक़ूफ़न व सनदुहू हसन) इसी असर में है कि जो शख़्स अपने इल्म पर अमल करे उसे अल्लाह तआला उस इल्म का भी वारिस कर देता है जिसे वह नहीं जानता था। (लम अजिदहू मौक़ूफ़न व रवाहू अबू नुऐम फ़िल हिल्यतिः 10/4, 15; सनदुहू ज़ईफ़ुन जिद्दन मौज़ूउन अन अनस (रज़ि.) मरफ़ूअन वला अस्ल लहू फ़िल्मरफ़ूअ)

***

كَلَّآ إِنَّ الْإِنسَانَ لَيَطْغَىٰٓ ⑥ أَن رَّآهُ اسْتَغْنَىٰٓ ⑦ إِنَّ إِلَىٰ رَبِّكَ الرُّجْعَىٰٓ ⑧ أَرَءَيْتَ
الَّذِي يَنْهَىٰ ⑨ عَبْدًا إِذَا صَلَّىٰٓ ⑩ أَرَءَيْتَ إِن كَانَ عَلَى الْهُدَىٰٓ ⑪ أَوْ أَمَرَ
بِالتَّقْوَىٰٓ ⑫ أَرَءَيْتَ إِن كَذَّبَ وَتَوَلَّىٰٓ ⑬ أَلَمْ يَعْلَم بِأَنَّ اللَّهَ يَرَىٰ ⑭ كَلَّا لَئِن
لَّمْ يَنتَهِ لَنَسْفَعًا بِالنَّاصِيَةِ ⑮ نَاصِيَةٍ كَاذِبَةٍ خَاطِئَةٍ ⑯ فَلْيَدْعُ نَادِيَهُ ⑰
سَنَدْعُ الزَّبَانِيَةَ ⑱ كَلَّا لَا تُطِعْهُ وَاسْجُدْ وَاقْتَرِب ۩ ⑲ {السجدة}

तर्जुमा : ''सचमुच इंसान तो आपे से बाहर हो जाता है (6) इसलिए कि वह अपनें आपको बेपरवाह समझता है (7) यक़ीनन लौटना तेरे रब की तरफ़ है (8) भला उसे भी तूने देखा! जो बन्दे को रोकता है (9) जबकि वह बन्दा नमाज़ अदा करता है (10) भला बतला तो अगर वह हिदायत पर होता (11) या तक़्वा की ता'लीम देता (12) तो कितना अच्छा होता अच्छा यह भी बता कि अगर यह झुठलाता हो और मुँह फेरता हो तो (13) क्या यह नहीं जानता कि अल्लाह तआला इसे ख़ूब देख रहा है (14) यक़ीनन अगर यह बाज़ न रहा तो हम इसकी चोटी पकड़कर घसीटेंगे (15) ऐसी चोटी जो झूठी ख़ताकार है (16) यह अपनी मज्लिस वालों को बुला ले (17) हम भी दोज़ख़ के प्यादों को बुला लेंगे (18) ख़बरदार! इसका कहना हर्गिज़ न मानना और सज्दे में और क़ुर्बे इलाही की तलब में लगे रहना।'' (19)

अल्लाह से डरते रहो (आयत : 6 से 19) : फ़र्माता है कि इंसान के पास जहाँ दो पैसे हो गए ज़रा फ़ारिगुल बाली हुआ कि उसके दिल में किब्र ग़ुरूर अजब व ख़ुदपसंदी आई उसे डरते रहना चाहिए और ख़्याल रखना चाहिए कि उसे एक दिन अल्लाह की तरफ़ लौटना है, वहाँ जहाँ और हिसाब होंगे, माल की बाबत भी सवाल होगा कि लाया कहाँ से और ख़र्च कहाँ किया। हज़रत अब्दुल्लाह (रज़ि.) फ़र्माते हैं दो लालची ऐसे हैं जिनका पेट ही नहीं भरता, एक तालिबे इल्म, दूसरा तालिबे दुनिया। इन दोनों में बड़ा फ़र्क़ है, इल्म का तालिब तो अल्लाह की रज़ामंदी के हासिल करने में बढ़ता रहता है, और दुनिया का लालची सरकशी और ख़ुदपसंदी में बढ़ता रहता है। फिर आपने यह आयत तिलावत फ़र्माई जिसमें दुनियादारों का ज़िक्र है, फिर तालिबे इल्मों की फ़ज़ीलत बयान की, यह आयत तिलावत की (إِنَّمَا يَخْشَى اللَّهَ مِنْ عِبَادِهِ الْعُلَمَاءُ) (35/फ़ातिर : 28) यह हदीस मरफ़ूअन यानी नबी (ﷺ) के फ़र्मान से भी मरवी है कि "दो लालची हैं जो शिकमसेर नहीं होते तालिबे इल्म और तालिबे दुनिया।" (हाकिम : 1/92; ह : 312; अन अनस (रज़ि.) वसनदुहू ज़ईफ़ुन; क़तादा मुदल्लस व अन्अन अल्मुअजमुल कबीर : 10388; अन इब्ने मसऊद (रज़ि.) वसनदुहू ज़ईफ़ुन जिद्दन बातिल; अबूबक्र अब्दुल्लाह बिन हकीम दाहिरी मजरूह रावी अन इस्माईल बिन अबी ख़ालिद अल्मौज़ूआत, तर्जुमतु फ़ी लिसानिल मीज़ान) इसके बाद की आयतें अबू जहल मल्ऊन के बारे में नाज़िल हुई है कि यह हुज़ूर (ﷺ) को बैतुल्लाह में नमाज़ पढ़ने से रोकता था। पस पहले तो इसे बेहतरीन तरीक़े से समझाया गया कि जिन्हें तू रोक रहा है यही अगर सीधी राह पर हों, इन ही की बातें तक़्वा का हुक्म करती हों फिर तू इन्हें अगर डाँट डपट करे और अल्लाह के घर से रोके तो तेरी बदक़िस्मती की इंतिहा है या नहीं? क्या यह रोकने वाला जो ऐसे मुर्शिदे हक़ को राहे हक़ से रोकने के दर पे है, इतना भी नहीं जानता कि अल्लाह तआला इसे देख रहा है उसका कलाम सुन रहा है और उसके कलाम और काम पर उसे सज़ा देगा, इस तरह समझा चुकने के बाद अब डरा रहा है कि अगर उसने अपनी मुख़ालिफ़त और सरकशी और ईज़ारसानी न छोड़ी तो हम भी इसकी पेशानी के बाल पकड़कर घसीटेंगे जो अक़्वाल में काज़िब और अफ़आल में ख़ताकार है, यह अपने मददगारों, हमनशीनों को क़राबतदारों को कुंबा क़बीले को बुला ले, देखें तो कौन इसकी मदद कर सकता है हम भी अपने अज़ाब के फ़रिश्तों को बुला लेते हैं फिर हर एक को खुल जाएगा कि कौन जीता और कौन हारा। सहीह बुख़ारी में हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) से मरवी है कि अबू जहल ने कहा कि अगर मैं मुहम्मद (ﷺ) को कअबा में नमाज़ पढ़ते हुए देखूँगा तो गर्दन नापूँगा। हुज़ूर (ﷺ) को भी यह ख़बर पहुँची तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया, "अगर यह ऐसा करेगा तो अल्लाह के फ़रिश्ते इसे पकड़ लेंगे।" (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरह इक़रा बिस्मि रब्बिकल्लज़ी ख़लक़, बाब क़ौलुहू तआला (कल्ला लइल्लम यन्तही...) : 4958; तिर्मिज़ी : 3348; अहमद : 1/368) दूसरी रिवायत में है कि "हुज़ूर (ﷺ) मक़ामे इब्राहीम के पास बैतुल्लाह में नमाज़ पढ़ रहे थे कि यह मल्ऊन आया और कहने लगा, मैंने तुझे मना कर दिया फिर भी तू बाज़ न रहा। अगर अब मैंने तुझे कअबे में नमाज़ पढ़ते हुए देखा तो सख़्त सज़ा दूँगा वग़ैरह। नबी (ﷺ) ने सख़्ती से जवाब दिया उसकी बात ठुकरा दी और अच्छी तरह डाँट दिया, इस पर वह कहने लगा कि तू मुझे

डाँटता है, अल्लाह की क़सम! मेरी एक आवाज़ पर यह सारी वादी आदमियों से भर जाएगी।'' इस पर यह आयत उतरी कि अच्छा! तू अपने हामियों को बुला, हम भी अपने फ़रिश्तों को बुला लेते हैं।

अबू जहल का वाक़िया : हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं कि ''अगर वह अपने वालों को पुकारता तो उसी वक़्त अज़ाब के फ़रिश्ते उसे लपक लेते।'' (तिर्मिज़ी, किताब तफ़्सीरुल क़ुरआन, बाब वमिन सूरति इक़रा बिस्मि रब्बिक : 3349; वहुव हदीसुन सहीहुन; अहमद : 1/256)

मुस्नद अहमद में इब्ने अब्बास (रज़ि.) से मरवी है कि ''अबू जहल ने कहा कि अगर मैं रसूलुल्लाह (ﷺ) को बैतुल्लाह में नमाज़ पढ़ते हुए देख लूँगा तो उसकी गर्दन तोड़ दूँगा। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, अगर वह ऐसा करता तो उसी वक़्त लोगों के देखते हुए अज़ाब के फ़रिश्ते उसे पकड़ लेते'' और इसी तरह जबकि यहूदियों से क़ुरआन ने कहा था कि अगर तुम सच्चे हो तो मौत माँगो अगर वह उसे क़बूल कर लेते और मौत तलब करते तो सारे के सारे मर जाते और जहन्नम में अपनी जगह देख लेते।

और जिन नसरानियों को मुबाहिला की दावत दी गई थी अगर यह मुबाहिला के लिए निकलते तो लौटकर न अपना माल पाते न अपने बाल बच्चों को पाते। (अहमद : 1/248; वहुव हदीसुन सहीहुन) इब्ने जरीर में है कि अबू जहल ने कहा अगर मैं आप (ﷺ) को मक़ामे इब्राहीम के पास नमाज़ पढ़ता हुआ देख लूँगा तो जान से मार डालूँगा उस पर यह सूरत उतरी। हुज़ूर (ﷺ) तशरीफ़ ले गए अबू जहल मौजूद था, और आप (ﷺ) ने वहीं नमाज़ अदा की तो लोगों ने उस बदबख़्त से कहा कि क्यूँ बैठा रहा? उसने कहा क्या बताऊँ कौन मेरे और उनके बीच हाइल हो गए।

इब्ने अब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं अगर ज़रा भी हिलता जुलता तो लोगों के देखते हुए फ़रिश्ते उसे हलाक कर डालते। (तब्री : 24/526) इब्ने जरीर की एक और रिवायत में है कि ''अबू जहल ने पूछा कि क्या मुहम्मद (ﷺ) तुम्हारे सामने सज्दा करते हैं? लोगों ने कहा, हाँ! तो कहने लगा, अल्लाह की क़सम! अगर मेरे सामने उसने यह किया तो उसकी गर्दन रौंद दूँगा और उसके चेहरे में मिट्टी मिला दूँगा। इधर उस मल्ऊन ने यह कहा उधर रसूलुल्लाह (ﷺ) ने नमाज़ शुरू की जब आप (ﷺ) सज्दे मे गए तो यह आगे बढ़ा लेकिन साथ ही अपने हाथ से अपने आपको बचाता हुआ पिछले पैरों निहायत बदहवासी से पीछे हटा। लोगों ने कहा क्या है? कहने लगा कि मेरे और हुज़ूर (ﷺ) के बीच आग की ख़ंदक़ है और घबराहट की ख़ौफ़नाक चीज़ें हैं और फ़रिश्तों के पर हैं वग़ैरह। उस वक़्त हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया अगर यह और ज़रा क़रीब आ जाता तो फ़रिश्ते उसका एक एक हिस्सा अलग अलग कर देते।''

पस यह आयतें (कल्ला इन्नल इंसाना ल यत़्ग़ा) से आख़िर सूरत तक नाज़िल हुईं। (तब्री : 24/526) अल्लाह ही को इल्म है कि यह कलाम हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) की हदीस में है या नहीं?

यह हदीस मुस्नद अहमद, मुस्लिम, नसाई और इब्ने अबी हातिम में भी है। (सहीह मुस्लिम, किताब

सिफ़ातुल मुनाफ़िक़ीन, बाब क़ौलुहू (इन्नल् इन्सा-न लयत्ग़ा...) : 2797; नसाई फ़िस्सुननिल कुब्रा : 11683; अह़मद : 2/370) फिर फ़र्माया कि ऐ नबी (ﷺ)! तुम इस मर्दूद की बात न मानना, इबादत पर मुदाविमत करना और बकसरत इबादत करते रहना और जहाँ जी चाहे नमाज़ पढ़ते रहना और इसकी मुत्लक़ परवाह न करना अल्लाह तआला ख़ुद तेरा हाफ़िज़ और मददगार है वह तुझे दुश्मनों से महफ़ूज़ रखेगा, तू सज्दे में और क़ुर्बे इलाही की तलब में मशग़ूल रह। रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं "सज्दा की हालत में बन्दा अपने रब तबारक व तआला से बहुत ही क़रीब होता है, पस तुम बकसरत सज्दों में दुआएँ करते रहो।" (सह़ीह़ मुस्लिम, किताबुस्सलात, बाब युक़ाल फ़िर्रुकूइ वस्सुजूद : 482; अबूदाऊद : 875; अह़मद : 2/421; इब्ने हिब्बान : 1928) पहले यह ह़दीस भी गुज़र चुकी है कि हुज़ूर (ﷺ) सूरह (इज़स्समाउन् शक़्क़त) में और इस सूरह में सज्दा किया करते थे।" (इसकी तख़रीज सूरह इन्शिक़ाक़ की इब्तिदा में गुज़र चुकी है।)

अल्ह़म्दुलिल्लाह! सूरह अलक़ की तफ़्सीर मुकम्मल हुई।

***

FLOW CHART
तरतीबी नक्श-ए-रब्त

MACRO-STRUCTURE
नज़्मे-जली

सूरह क़द्र - 97

आयात : 5, मक्की, पैराग्राफ : 2

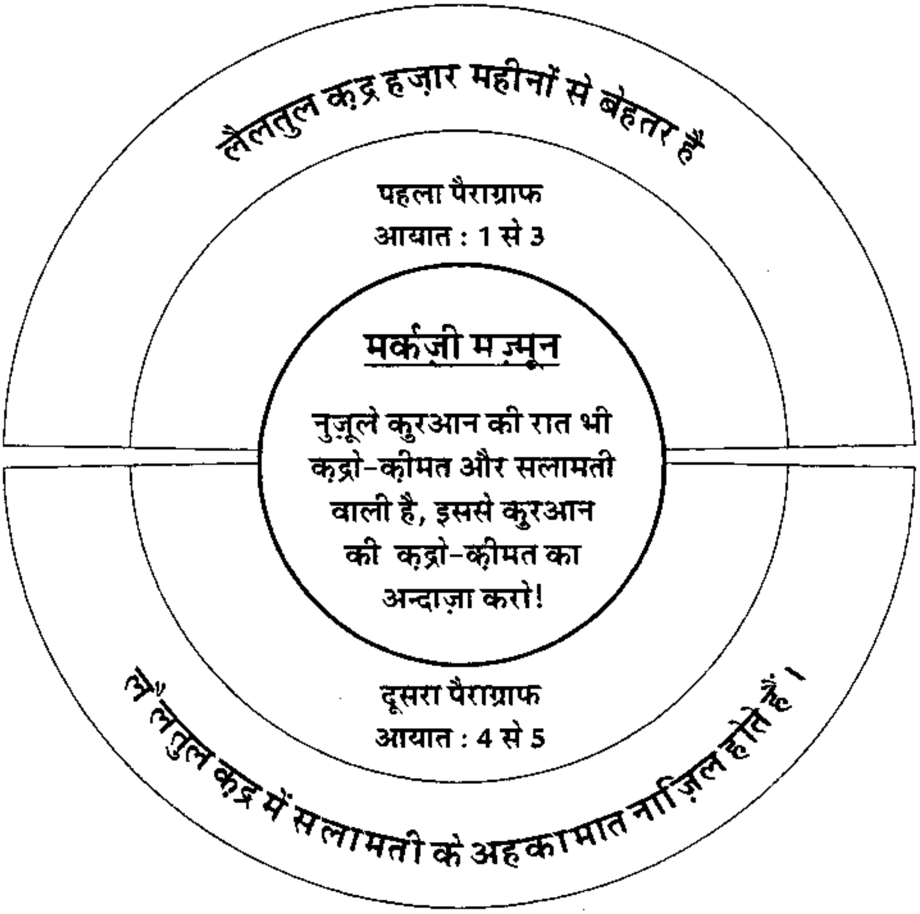

ज़मानए नुज़ूल

सूरह क़द्र ग़ालिबन क़ियामे मक्का के पहले दौर (0-3 नबवी) में नाज़िल हुई होगी, जब इस्लाम की दावत ख़ुफ़िया तौर पर दी जा रही थी और जब आप (सल्ल.) पर आला अदबी उस्लूब में मुख़्तसर, मुहकम और जामेअ़ सूरतें नाज़िल की जा रही थीं।

तफ़्सीर सूरह क़द्र

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ○

तर्जुमा : ''शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है।''

***

إِنَّآ أَنزَلۡنَٰهُ فِي لَيۡلَةِ ٱلۡقَدۡرِ ۝١ وَمَآ أَدۡرَىٰكَ مَا لَيۡلَةُ ٱلۡقَدۡرِ ۝٢ لَيۡلَةُ ٱلۡقَدۡرِ خَيۡرٞ
مِّنۡ أَلۡفِ شَهۡرٖ ۝٣ تَنَزَّلُ ٱلۡمَلَٰٓئِكَةُ وَٱلرُّوحُ فِيهَا بِإِذۡنِ رَبِّهِم مِّن كُلِّ أَمۡرٖ ۝٤
سَلَٰمٌ هِيَ حَتَّىٰ مَطۡلَعِ ٱلۡفَجۡرِ ۝٥

तर्जुमा : ''यक़ीनन हमने इसे शबे क़द्र में नाज़िल किया (1) तू क्या समझा कि शबे क़द्र क्या है? (2) शबे क़द्र एक हज़ार महीनों से बेहतर है (3) इसमें हर काम के सरअंजाम देने को अल्लाह के हुक्म से फ़रिश्ते और रूह (जिब्रईल) उतरते हैं (4) यह रात सरासर सलामती की होती है और फ़ज्र के तुलूअ होने तक (होती है)।'' (5)

लैलतुल क़द्र की फ़ज़ीलत (आयत : 1 से 5) : मक़्सद यह है कि अल्लाह तआला ने क़ुरआने करीम को लैतुल क़द्र में नाज़िल किया है, इसका नाम लैलतुल मुबारका भी है। जैसे और जगह है (إِنَّا أَنزَلْنَاهُ فِي لَيْلَةٍ مُّبَارَكَةٍ) (44/दुख़ान : 3) और यह भी क़ुरआन से साबित है कि यह रात रमज़ानुल मुबारक के महीने में है। जैसे फ़र्माया (شَهْرُ رَمَضَانَ الَّذِي أُنزِلَ فِيهِ الْقُرْآنُ) (2/बक़रह : 185) इब्ने अब्बास (रज़ि.) वग़ैरह का क़ौल है कि पूरा क़ुरआन पाक लौहे महफ़ूज़ से आसमाने अव्वल पर बैतुल इज़्ज़त में उस रात उतरा फिर तफ़्सील वार वाक़ियात के मुताबिक़ बतदरीज तैइस साल में रसूलुल्लाह (ﷺ) पर नाज़िल हुआ। फिर अल्लाह तआला लैलतुल क़द्र की शानो शौकत का इज़्हार करता है कि इस रात की एक ज़बरदस्त बरकत तो यह है कि क़ुरआने करीम जैसी आला नेअमत इसी रात उतरी। तो फ़र्माता है कि तुम्हें क्या ख़बर कि लैलतुल क़द्र क्या है? फिर ख़ुद फ़र्माता है कि यह एक रात एक हज़ार महीने से अफ़ज़ल है।

शाने नुज़ूल : इमाम अबू ईसा तिर्मिज़ी (रह.) ने तिर्मिज़ी में इस आयत की तफ़्सीर में एक रिवायत लाए हैं

कि यूसुफ़ बिन सअ़द ने हज़रत हसन बिन अ़ली (रज़ि.) से जबकि आपने हज़रत मुआ़विया (रज़ि.) से सुलह कर ली कहा कि तुमने ईमान वालों के मुँह काले कर दिये, या यूँ कहा कि ऐ मोमिनों के मुँह स्याह करने वाले! तो आपने फ़र्माया अल्लाह तुझ पर रहम करे मुझ पर ख़फ़ा न हो, नबी (ﷺ) को दिखलाया गया कि गोया आप (ﷺ) के मिम्बर पर बनू उमय्या हैं, आप (ﷺ) को यह बुरा मालूम हुआ तो (इन्ना अअ़तैना कल कौसर) नाज़िल हुई। यानी जन्नत की नहर कौसर आप (ﷺ) को अ़ता किये जाने की ख़ुशख़बरी मिली और (इन्ना अन्ज़ल्नाहु) उतरी। पस हज़ार महीने वह मुराद हैं जिनमें आप (ﷺ) के बाद बनू उमय्या की मम्लिकत रहेगी। क़ासिम कहते हैं कि हमने हिसाब लगाया तो वह पूरे एक हज़ार महीने हुए, न एक दिन ज़्यादा न एक दिन कम। (तिर्मिज़ी, किताब तफ़्सीरुल क़ुरआन, बाब वमिन सूरति लैलतिल क़द्र : 3350; वसनदुहू ज़ईफ़ुन; यूसुफ़ बिन सअ़द के हसन बसरी (रह.) से सुनने में नज़र है। हाकिम : 3/170) इमाम तिर्मिज़ी (रह.) इस रिवायत को ग़रीब बतलाते हैं और इसकी सनद में यूसुफ़ बिन सअ़द हैं जो मज्हूल हैं और सिर्फ़ इसी एक सनद से यह मरवी है।

मुस्तदरक हाकिम में भी यह रिवायत है, इमाम तिर्मिज़ी (रह.) का यह फ़र्माना कि यूसुफ़ मज्हूल हैं इसमें ज़रा नज़र है, इनके बहुत से शागिर्द हैं, यह्या बिन मुईन (रह.) कहते हैं कि यह मशहूर हैं और सिक़ा हैं। और इसकी सनद में कुछ इज़्तिराब जैसा भी है, वल्लाहु आलम!

बहर सूरत है यह रिवायत बहुत ही मुंकर, हमारे शैख़ हाफ़िज़े हुज्जत अबुल हज्जाज मिज़्ज़ी भी इस रिवायत को मुंकर बतलाते हैं (यह याद रहे कि क़ासिम का क़ौल जो तिर्मिज़ी के हवाले से बयान हुआ है कि वह कहते हैं कि हमने हिसाब लगाया तो बनी उमय्या की सल्तनत ठीक एक हज़ार दिन तक रही, यह नुस्ख़े की ग़लती है एक हज़ार महीने लिखना चाहिए था। मैंने तिर्मिज़ी में देखा तो वहाँ भी एक हज़ार महीने हैं और आगे भी यही आता है, मुतर्जिम) क़ासिम बिन फ़ज़्ल हदानी का यह क़ौल कि बनू उमय्या की सल्तनत की ठीक मुद्दत एक हज़ार महीने थी यह भी सही नहीं, इसलिए कि हज़रत मुआ़विया (रज़ि.) की मुस्तक़िल सल्तनत 41 हिज्री में क़ायम हुई जबकि हज़रत हसन (रज़ि.) ने आपके हाथ पर बेअ़त कर ली और अम्रे ख़िलाफ़त आपको सौंप दिया। और सब लोग भी हज़रत मुआ़विया (रज़ि.) की बेअ़त पर जमा हो गए और उस साल का नाम ही आ़मुल जमाआ़ मशहूर हुआ। फिर शाम वग़ैरह में बराबर बनू उमय्या की सल्तनत क़ायम रही, हाँ! तक़रीबन नौ साल तक हरमैन शरीफ़ैन और अहवाज़ और कुछ शहरों पर से हुकूमत हट गई थी। हाँ 132 हिज्री में बनुल अ़ब्बास ने उनसे ख़िलाफ़त अपने क़ब्ज़े में कर ली पस उनकी सल्तनत की मुद्दत 92वे बरस हुई और यह एक हज़ार माह से बहुत ज़्यादा है, एक हज़ार महीने के तेरासी साल चार माह होते हैं, हाँ! क़ासिम बिन फ़ज़्ल का यह हिसाब इस तरह तो तक़रीबन ठीक हो जाता है कि हज़रत इब्ने ज़ुबैर (रज़ि.) की मुद्दते ख़िलाफ़त इस गिनती में से निकाल दी जाए, वल्लाहु आलम! इस रिवायत के ज़ईफ़ होने की एक यह वजह भी है कि बनू उमय्या की सल्तनत के ज़माने की तो बुराई और मज़म्मत बयान करनी मक़्सूद है और लैलतुल क़द्र की उस ज़माने पर फ़ज़ीलत को साबित होना कुछ उनके ज़माने की मज़म्मत की दलील नहीं, लैलतुल क़द्र तो हर तरह बुज़ुर्गी वाली है और यह पूरी सूरत इस मुबारक रात की मदह व सताइश बयान कर रही है। पस बनू उमय्या के

ज़माने के दिनों की मजम्मत से लैतुल क़द्र की कौन्सी फ़ज़ीलत साबित हो जाएगी, यह तो बिलकुल वही मसल असल हो जाएगी कि कोई शख़्स तलवार की ता'रीफ़ करते हुए कहे कि लकड़ी से बहुत तेज़ है किसी बेहतरीन फ़ज़ीलत वाले शख़्स को किसी कम दर्जे के ज़लील शख़्स पर फ़ज़ीलत देना तो उस शरीफ़ बुज़ुर्ग की तौहीन करना है और वजह सुनिए इस रिवायत की बिना पर यह एक हज़ार महीने वह हुए जिनमें बनू उमय्या की सल्तनत रहेगी और यह सूरत उतरी है मक्का मुकर्रमा में तो उसमें उन महीनों का हवाला कैसे दिया जा सकता है जो बनू उमय्या के ज़माने के हैं, इस पर न कोई लफ़्ज़ दलालत करता है और न मअ़नी के तौर पर यह समझा जा सकता है मिम्बर तो मदीना में क़ायम होता है और हिज्रत के एक मुद्दत बाद मिम्बर बनाया जाता है और रखा जाता है, बस इन तमाम वजूहात से मालूम होता है कि यह रिवायत ज़ईफ़ और मुंकर है, वल्लाहु आलम!

इब्ने अबी हातिम में है कि हज़रत मुजाहिद (रह.) फ़र्माते हैं कि नबी (ﷺ) ने बनी इस्राईल के एक शख़्स का ज़िक्र किया जो एक हज़ार माह तक अल्लाह की राह में यानी जिहाद में हथियारबंद रहा। मुसलमानों को यह सुनकर ताज्जुब हुआ तो अल्लाह अ़ज़्ज़ व जल्ल ने यह सूरत उतारी कि एक लैलतुल क़द्र की इबादत उस शख़्स की एक हज़ार महीने की इबादत से अफ़ज़ल है। (यह रिवायत मुर्सल ज़ईफ़ है इसकी सनद में मुस्लिम बिन ख़ालिद ज़ईफ़ है।)

इब्ने जरीर में है कि बनी इस्राईल में एक शख़्स था जो रात को क़याम करता था सुबह तक और दिन में दुश्मनाने दीन से जिहाद करता था शाम तक, एक हज़ार महीने तक यही करता रहा, पस अल्लाह तआ़ला ने यह सूरत नाज़िल की कि इस उम्मत के किसी शख़्स का सिर्फ़ लैलतुल क़द्र का क़याम इस आ़बिद की एक हज़ार महीने की उस इबादत से अफ़ज़ल है।

इब्ने अबी हातिम में है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने बनी इस्राईल के चार आ़बिदों का ज़िक्र फ़र्माया जिन्होंने अस्सी (80) साल तक अल्लाह तआ़ला की इबादत की थी, एक आँख झपकने के बराबर भी अल्लाह तआ़ला की नाफ़र्मानी न की थी। हज़रत अय्यूब, हज़रत ज़करिय्या, हज़रत हज़्क़ील बिन अजूज़, हज़रत यूशअ़ बिन नून (अ़लैहि.) अस्हाबे रसूलुल्लाह (ﷺ) को सख़्त ताज्जुब हुआ, आप (ﷺ) के पास हज़रत जिब्राईल (عليه السلام) आए और कहा कि ऐ मुहम्मद! आप (ﷺ) की उम्मत ने इस जमाअ़त की उस इबादत पर ताज्जुब किया तो अल्लाह तआ़ला ने इससे भी अफ़ज़ल चीज़ आप (ﷺ) पर नाज़िल की और फ़र्माया कि यह अफ़ज़ल है उससे जिस पर आप और आपकी उम्मत ने ताज्जुब ज़ाहिर किया था पस हुज़ूर (ﷺ) और आपके सहाबा (रज़ि.) बेहद ख़ुश हुए। (यह रिवायत मुअ़ज़ल और सख़्त ज़ईफ़ व मर्दूद है। इसमें अ़ली बिन उ़र्वा और मुस्लिमा बिन अ़ली दोनों मजरूह मतरूक हैं।) हज़रत मुजाहिद (रह.) फ़र्माते हैं "मतलब यह है कि उस रात का नेक अ़मल, उसका रोज़ा, उसकी नमाज़ एक हज़ार महीनों के रोज़े नमाज़ से अफ़ज़ल है जिनमें लैलतिल क़द्र न हो।" और मुफ़स्सिरीन का भी यही क़ौल है।

इमाम इब्ने जरीर (रह.) ने भी इसी को पसंद किया है कि वह एक हज़ार महीने जिनमें लैलतुल क़द्र न

हो, यही ठीक है इसके सिवा और क़ौल ठीक नहीं, जैसे रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं कि "एक रात की जिहाद की तैयारी उसके सिवा की एक हज़ार रातों से अफ़ज़ल है।" (अहमद : 1/75; तिर्मिज़ी, किताबुल जिहाद, बाब मा जाअ फ़ी फ़ज़्लिल मराबित : 1667; वसनदुहू सहीहुन; नसाई : 3171; बि तसर्रुफ़िंय्यसीर) इसी तरह और हदीस में है कि "जो शख़्स अच्छी निय्यत और अच्छी हालत से जुम्अे की नमाज़ के लिए जाए उसके लिए साल के आमाल का सवाब लिखा जाता है साल भर के रोज़ों का और साल भर की नमाज़ों का।" (अबूदाऊद, किताबुत्तहारत, बाब फ़िल्गुस्लि लिल जुम्आ : 345; वसनदुहू सहीहुन; तिर्मिज़ी : 496; नसाई : 1382; इब्ने माजा : 1087) इसी तरह की और भी बहुत सी हदीसें हैं। पस कोई रात उस इबादत की न हो, और जैसे जुम्आ की तरफ़ जाने वाले को एक साल की नेकियाँ यानी वह साल में जिसमें जुम्आ न हो।

मुस्नद अहमद में है कि हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) फ़र्माते हैं कि "जब रमज़ानुल मुबारक आ गया तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया लोगों! तुम पर रमज़ानुल मुबारक का महीना आ गया यह बाबरकत महीना आ लगा, इसके रोज़े अल्लह ने तुम पर फ़र्ज़ किये हैं , इसमें जन्नत के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं और जहन्नम के दरवाज़े बन्द कर दिये जाते हैं, शैतान क़ैद कर लिये जाते हैं, इसमें एक रात है जो एक हज़ार महीने से अफ़ज़ल है इसकी भलाई से महरूम रहने वाला हक़ीक़ी बदक़िस्मत है।"(अहमद : 2/230; नसाई, किताबुस्सियाम, बाब ज़िक्रुल इख़्तिलाफ़ि अला मअमर फ़ीहि : 2108; वसनदुहू ज़ईफ़ुन; क़ालल अलाइ फ़ी रिवायति अबी क़लाबा अन अबी हुरैरा "वज़्ज़ाहिरु फ़ी ज़ालिका कुल्लिहिल इर्साल, पेज 211)

नसाई में भी यह रिवायत है चूँकि इस रात की इबादत एक हज़ार महीने की इबादत से अफ़ज़ल है इसलिए बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस में है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, "जो शख़्स लैलतुल क़द्र का क़याम ईमानदारी और नेक निय्यती से करे उसके तमाम अगले पिछले गुनाह बख़्श दिये जाते हैं।" (सहीह बुख़ारी, किताब फ़ज़्लु लैलतिल क़द्र, बाब फ़ज़्लु लैलतिल क़द्र : 2014; सहीह मुस्लिम : 760; अबूदाऊद : 1372; तिर्मिज़ी : 808; अहमद : 2/529) फिर फ़र्माता है कि उस रात की बरकत की ज़्यादती की वजह से बकसरत फ़रिश्ते उसमें नाज़िल होते हैं, फ़रिश्ते तो हर बरकत और रहमत के साथ नाज़िल होते रहते हैं, जैसे तिलावते कुरआन के वक़्त उतरते हैं और ज़िक्र की मज्लिसों को घेर लेते हैं और इल्मे दीन के सीखने वालों के लिए राज़ी ख़ुशी अपने पर बिछा दिया करते हैं और इनकी इज़्ज़त व तक्रीम करते हैं।

रूह से मुराद हज़रत जिब्रईल (عليه السلام) हैं : रूह से मुराद यहाँ हज़रत जिब्रईल (عليه السلام) हैं यह ख़ास का अत्फ़ है आम पर, कुछ कहते हैं कि रूह नाम के एक ख़ास क़िस्म के फ़रिश्ते हैं जैसे कि सूरह (अम्मा यतसाअलून) की तफ़्सीर में तफ़्सील से गुज़र चुका, वल्लाहु आलम! फिर फ़र्माया वह सरासर सलामती वाली रात है जिसमें शैतान न तो बुराई कर सकता है न ईज़ा पहुँचा सकता है, हज़रत क़तादा (रह.) वग़ैरह फ़र्माते हैं कि इसमें तमाम कामों का फ़ैसला किया जाता है, उमर और रिज़्क़ मुक़द्दर किया जाता है जैसे और जगह है (फ़ीहा युफ़्रकु कुल्लु अम्रिन हकीम) यानी इसी रात में हर हिक्मत वाले काम का फ़ैसला किया जाता है। हज़रत शअबी

(रह.) फ़र्माते हैं कि इस रात में फ़रिश्ते मस्जिद वालों पर सुबह तक सलाम भेजते रहते हैं। इमाम बैहक़ी (रह.) ने अपनी किताब फ़ज़ाइले औक़ात में हज़रत अली (रज़ि.) का एक ग़रीब असर फ़रिश्तों के नाज़िल होने में और नमाज़ियों पर उनके गुज़रने में और उन्हें बरकत हासिल होने में वारिद किया है। इब्ने अबी हातिम ने हज़रत कअ़ब अहबार (रह.) से एक अजीबो ग़रीब बहुत तूल तवील असर वारिद किया है जिसमें फ़रिश्तों का सिदरतुल मुंतहा से हज़रत जिब्रईल (ﷺ) के साथ ज़मीन पर आना और मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों के लिए दुआएँ करना वारिद है। अबू दाऊद तयालिसी फ़र्माते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं कि लैलतुल क़द्र सत्ताईस्वीं है या उनत्तीसवीं, इस रात में फ़रिश्ते ज़मीन पर संगरेज़ों की गिनती से भी ज़्यादा होते हैं।'' (मुस्नद तयालिसी : 2545; वसनदुहू ज़ईफ़ुन; क़तादा मुदल्लस व अन्अन व अहमद : 2/519) अ़ब्दुर्रहमान बिन अबू यअ़ला (रह.) फ़र्माते हैं इस रात में हर अम्र से सलामती है यानी कोई नई बात पैदा नहीं होती।

हज़रत क़तादा (रह.) और इब्ने ज़ेद का क़ौल है कि यह रात सरासर सलामती वाली है कोई बुराई सुबह होने तक नहीं होती। मुस्नद अहमद में है रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं कि ''लैलतुल क़द्र दस बाक़ी की रातों में है जो इनका क़याम तलबे सवाब की निय्यत से करे अल्लाह तआ़ला उसके अगले और पिछले गुनाह माफ़ कर देता है, यह रात इकाई की है यानी इक्कीसवीं, 23वीं, 25वीं, 27वीं, या आख़िरी रात। आप (ﷺ) फ़र्माते हैं कि यह रात बिलकुल साफ़ और ऐसी रोशन होती है कि गोया चाँद चढ़ा हुआ है उसमें सुकून और दिल्जमई होती है न सर्दी ज़्यादा होती है न गर्मी, सुबह तक सितारे नहीं झड़ते, एक निशानी उसकी यह भी है कि उसकी सुबह को सूरज तेज़ शुआओं से नहीं निकलता बल्कि वह 14वीं रात की तरह साफ़ निकलता है, उस दिन उसके साथ शैतान भी नहीं निकलता।'' (अहमद : 5/324; वसनदुहू ज़ईफ़ुन; ख़ालिद बिन मअ़दान लम यस्मअ़ मिन इबादति (रज़ि.) यह इस्नाद तो सही है लेकिन मतन में ग़राबत है और कुछ अल्फ़ाज़ में नकारत भी है।

अबूदाऊद तयालिसी में है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं कि ''लैलतिल क़द्र साफ़ पुरसुकून सर्दी गर्मी से ख़ाली रात है, उसकी सुबह व सूरज मद्धम रोशनी वाला सुर्ख़ निकलता है।'' (मुस्नद तयालिसी : 2680; वसनदुहू ज़ईफ़ुन; ज़म्आ बिन सालेह ज़ईफ़ मशहूर) हज़रत अबू आसिम नबील (रह.) अपनी इस्नाद से हज़रत जाबिर (रज़ि.) से रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने एक बार फ़र्माया, ''मैं लैलतुल क़द्र दिखलाया गया फिर भुला दिया गया, यह आख़िरी दस रातों में है, यह साफ़ शफ़्फ़ाफ़ सुकून व वक़ार वाली रात है न ज़्यादा सर्दी होती है न ज़्यादा गर्मी, इस क़द्र रोशन रात होती है कि यह मालूम होता है गोया चाँद चढ़ा हुआ है, सूरज के साथ शैतान नहीं निकलता। यहाँ तक कि धूप चढ़ जाए।'' (सहीह इब्ने ख़ुज़ैमा 2190; वसनदुहू ज़ईफ़ुन; फ़ुज़ैल बिन सुलेमान जअ़अफ़हुल जुम्हूर व अबुज़ुबैर अन्अन अन सहहुस्सनदि इलैहि)

क्या लैलतुल क़द्र पहली उम्मतों में भी थी : इस बाब में उलमा का इख़्तिलाफ़ है कि लैलतुल क़द्र अगली उम्मतों में भी थी या सिर्फ़ इसी उम्मत को ख़ुसूसियत के साथ अता की गई है। पस एक हदीस में तो यह आया है कि ''हुज़ूर (ﷺ) ने जब नज़रें डालीं और यह मालूम किया कि अगले लोगों की उम्रें बहुत ज़्यादा होती थीं तो

आप (ﷺ) को ख़्याल गुज़रा कि मेरी उम्मत की उम्रें उनके मुक़ाबले में कम हैं तो नेकियाँ भी कम रहेंगी और फिर दरजात और सवाब में कमी रहेगी, तो अल्लाह तआला ने आप (ﷺ) को यह रात इनायत की, और इसका सवाब एक हज़ार महीने की इबादत से ज़्यादा देने का वादा फ़र्माया।'' (शुअबुल ईमान : 3667; मौता : 1/321; ह : 715; वसनदुहू ज़ईफ़ुन लि इंक़िताइही) इस हदीस से तो यह मालूम होता है कि सिर्फ़ इसी उम्मत को यह रात दी गई है, बल्कि साहिबे इद्दत ने जो शाफ़ेइया में से एक इमाम हैं जुम्हूर उलमा का यही क़ौल नक़्ल किया है, वल्लाहु आलम!

और ख़त्ताबी ने तो इस पर इज्माअ नक़्ल किया है। लेकिन एक हदीस और है जिससे यह मालूम होता है कि यह रात जिस तरह इस उम्मत में है अगली उम्मतों में भी थी। चुनाँचे हज़रत मर्सद (रह.) फ़र्माते हैं कि ''मैंने हज़रत अबू ज़र (रज़ि.) से पूछा कि आपने लैलतुल क़द्र के बारे में रसूलुल्लाह (ﷺ) से क्या सवाल किया था? आपने फ़र्माया, सुनो! मैं हुज़ूर (ﷺ) से अक्सर बातें पूछा करता था, एक मर्तबा मैंने कहा या रसूलल्लाह (ﷺ)! यह तो फ़र्माईए कि लैलतुल क़द्र रमज़ान में ही है या और महीनों में? आपने फ़र्माया रमज़ान में। मैंने कहा अच्छा या रसूलल्लाह (ﷺ)! यह अम्बिया के साथ ही है कि जब तक वह हैं यह भी है जब अम्बिया क़ब्ज़ किये जाते हैं तो यह भी उठ जाती है या यह क़ियामत तक बाक़ी रहेगी? हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि नहीं! वह क़ियामत तक बाक़ी रहेगी। मैंने कहा रमज़ान के किस हिस्से में है? आपने फ़र्माया इसे रमज़ान के पहले अशरे में और आख़िरी अशरे में ढूँढ़ो। फिर मैं ख़ामोश हो गया, आप भी और बातों में मशग़ूल हो गए। मैंने फिर मौक़ा पाकर सवाल किया कि हुज़ूर (ﷺ)! इन दोनों अशरों में से किस अशरे में उस रात को तलाश करूँ? आप (ﷺ) ने फ़र्माया, आख़िरी अशरे मे बस अब कुछ न पूछना। मैं फिर चुप हो गया लेकिन फिर मौक़ा पाकर मैंने सवाल किया कि हुज़ूर (ﷺ) आपको क़सम है मेरा भी कुछ हक़ आप पर है। फ़र्मा दीजिए कि वह कौनसी रात है? आप (ﷺ) सख़्त नाराज़ हुए, मैंने तो कभी आप (ﷺ) को अपने ऊपर इतना गुस्सा होते हुए देखा ही नहीं, और फ़र्माया आख़िरी हफ़्ता में तलाश करो, अब कुछ न पूछना।'' (अहमद : 5/171; वसनदुहू हसनुन लिज़ातिही; सहीह इब्ने ख़ुज़ैमा : 217; मुस्नदे बज़्ज़ार : 1035; मुस्तदरक हाकिम : 1/437, 2/530, 531: व सह्हहू यानी शर्त मुस्लिम व वाफ़क़हुज़्ज़हबी, व अख़्तअ मिन ज़अ़्अफ़हू) यह रिवायत नसाई में भी मरवा है। इससे साबित होता है कि यह रात अगली उम्मतों में भी थी, और इस हदीस से यह भी साबित होता है कि यह रात नबी (ﷺ) के बाद भी क़ियामत तक हर साल आती रहेगी। कुछ शिया का क़ौल है कि यह रात बिलकुल उठ गई, यह क़ौल ग़लत है इनको ग़लत फ़हमी इस हदीस से हुई है जिसमें है कि वह उठा ली गई और मुम्किन है कि तुम्हारे लिए इसी में बेहतरी हो, यह हदीस पूरी अभी आएगी।

मतलब हुज़ूर (ﷺ) के इस फ़र्मान से यह है कि इस रात की तअयीन और इसका तक़र्रुर उठ गया न यह कि सिरे से लैलतुल क़द्र ही उठ गई। मुन्दरजा बाला हदीस से यह भी मालूम हुआ कि यह रात रमज़ानुल मुबारक में आती है किसी और महीने में नहीं। हज़रत इब्ने मसऊद (रज़ि.) और उलमा-ए- कूफ़ा का क़ौल है

कि सारे साल में एक रात है और हर महीने में उसका हो जाना मुम्किन है, यह हदीस इसके ख़िलाफ़ है। सुनन अबू दाऊद में बाब है कि उस शख़्स की दलील जो कहता है कि लैलतुल क़द्र सारे रमज़ान में है। फिर हदीस लाए हैं कि "हुज़ूर (ﷺ) से लैलतुल क़द्र के बारे में पूछा गया तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि सारे रमज़ान में है।" (अबूदाऊद, किताब शहरु रमज़ान, बाब मन क़ाल फ़ी कुल्लि रमज़ान : 1387; वसनदुहू ज़ईफ़ुन; अबू इस्हाक़ मुदल्लस रावी है और तस्रीह बिस्सिमाअ साबित नहीं।) इसकी सनद के कुल रावी सिक़ा हैं यह मौक़ूफ़ भी मरवी है। इमाम अबू हनीफ़ा (रह.) से एक रिवायत में है कि रमज़ानुल मुबारक के सारे महीने में उस रात का होना मुम्किन है। ग़ज़ाली (रह.) ने इसी को नक़्ल किया है लेकिन राफ़ेई इसे बिलकुल ग़रीब बतलाते हैं।

लैलतुल क़द्र कौनसी रात है : अबू रज़ीन (रह.) तो फ़र्माते हैं कि रमज़ान की पहली रात ही लैलतुल क़द्र है। इमाम शाफ़ेई मुहम्मद बिन इदरीस (रह.) का फ़र्मान है कि यह सत्तरहवीं रात है। अबूदाऊद में इस मज़्मून की एक हदीसे मरफ़ूअ मरवी है और हज़रत इब्ने मसऊद और हज़रत ज़ेद बिन अरक़म और हज़रत उस्मान बिन अबुल आस (रज़ि.) से मौक़ूफ़न भी मरवी है, हज़रत बसरी (रह.) का मज़हब भी यही नक़्ल किया गया है। इसकी एक दलील यह भी बयान की जाती है कि रमज़ानुल मुबारक की यही 17वीं रात शबे जुम्आ थी और यही रात बद्र की रात थी और 17वीं तारीख़ को जंगे बद्र वाक़ेअ हुई थी जिस दिन को क़ुरआन ने यौमुल फ़ुरक़ान कहा है। हज़रत अली और हज़रत इब्ने मसऊद (रज़ि.) से मरवी है कि 29वीं रात लैलतुल क़द्र है और यह भी कहा गया है कि 21वीं रात है।

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) की हदीस में है कि "रसूलुल्लाह (ﷺ) ने रमज़ानुल मुबारक के पहले दस दिन का ऐतिकाफ़ किया हम भी आप (ﷺ) के साथ ही एतिकाफ़ में बैठे, फिर आपके पास हज़रत जिब्राईल (عليه السلام) आए और फ़र्माया कि जिसे आप ढूँढ़ते हैं वह तो आप (ﷺ) के आगे है, फिर आपने दस से बीस दिन का एतिकाफ़ किया और हमने भी फिर जिब्राईल (عليه السلام) आए और यही फ़र्माया कि जिसे आप ढूँढ़ते हैं वह तो अभी आगे है यानी लैलतुल क़द्र। पस रमज़ान की 20वीं तारीख़ की सुबह को नबी (ﷺ) ने खड़े होकर ख़ुत्बा फ़र्माया कि मेरे साथ एतिकाफ़ करने वालों को चाहिए कि वह फिर एतिकाफ़ में बैठ जाएँ, मैंने लैलतुल क़द्र देख ली लेकिन मैं भूल गया, लैलतुल क़द्र आख़िरी अशरे की ताक़ रातों में है मैंने देखा है कि गोया में कीचड़ में सज्दा कर रहा हूँ। रावी हदीस फ़र्माते हैं कि मस्जिदे नबवी की छत सिर्फ़ खजूर के पत्तों की थी आसमान पर उस वक़्त बादल का एक छोटा सा टुकड़ा भी न था फिर बादल उठा और बारिश हुई और नबी (ﷺ) का ख़्वाब सच्चा हुआ और मैंने ख़ुद देखा कि नमाज़ के बाद आप (ﷺ) की पेशानी पर गीली मिट्टी लगी हुई थी।"

इसी रिवायत के एक तरीक़ में है कि यह 21वीं रात का वाक़िया है, यह हदीस सहीह बुख़ारी, सहीह मुस्लिम दोनों में है। (सहीह बुख़ारी, किताब फ़ज़्लु लैलतिल क़द्र, बाब तहर्रा लैलतिल क़द्र फ़िल्वित्र मिनल अशरिल अवाख़िर : 2018; सहीह मुस्लिम : 1167; अबूदाऊद : 1382; अहमद : 3/7; इब्ने हिब्बान :

3673) इमाम शाफ़ेई (रह.) फ़र्माते हैं, ''तमाम रिवायतों में सबसे ज़्यादा सही यही हदीस है।'' यह भी कहा गया है कि लैलतुल क़द्र रमज़ानुल मुबारक 23वीं रात है इसकी दलील हज़रत अब्दुल्लाह बिन उनैस (रज़ि.) की सहीह मुस्लिम वाली ऐसी ही एक रिवायत है। (सहीह मुस्लिम, किताबुस्सियाम, बाब फ़ज़्ले लैलतिल क़द्र वल हस्स अला तलबिहा : 1167) वल्लाहु आलम!

एक क़ौल यह भी है कि 24वीं रात है। अबूदाऊद तयालिसी में है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं कि ''लैलतिल क़द्र 24वीं रात है।'' (मुस्नद तयालिसी : 2167; वसनदुहू हसन) इसकी सनद भी सही है। मुस्नद अहमद में भी यह रिवायत है। (अहमद : 6/12; वसनदुहू ज़ईफ़ुन) लेकिन इसकी सनद में इब्ने लहीआ हैं जो ज़ईफ़ हैं। बुख़ारी में हज़रत बिलाल (रज़ि.) से जो हुज़ूर (ﷺ) के मुअज़्ज़िन हैं मरवी है कि यह पहली सातवीं है आख़िरी दस में से (सहीह बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब नम्बर : 89; हदीस : 4470) यह मौक़ूफ़ रिवायत ही सही है, वल्लाहु आलम! हज़रत इब्ने मसऊद (रज़ि.), इब्ने अब्बास, जाबिर (रज़ि.), हसन, क़तादा, अब्दुल्लाह बिन वहब (रह.) भी फ़र्माते हैं कि 24वीं रात लैलतुल क़द्र है। सूरह बक़रह की तफ़्सीर में हज़रत वासिला बिन अस्क़अ (रज़ि.) की रिवायत की हुई मरफ़ूअ हदीस बयान हो चुकी है कि क़ुरआने करीम रमज़ानुल मुबारक की 24वीं रात को उतरा, कुछ कहते हैं कि 25वीं रात लैलतुल क़द्र है, इनकी दलील बुख़ारी की यह हदीस है कि हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया ''इसे रमज़ान के आख़िरी अशरे में ढूँढ़ो'' नौ बाक़ी रहें तब, सात बाक़ी रहें तब, पाँच बाक़ी रहें तब। (सहीह बुख़ारी, किताब फ़ज़्ले लैलतिल क़द्र, बाब तहर्री लैलतिल क़द्र फ़िल वित्र मिनल अशरिल अवाख़िर : 2021) अक्सर मुहद्दिसीन ने इसका यही मतलब बयान किया है कि इससे मुराद ताक़ रातें हैं, यही ज़्यादा ज़ाहिर है और ज़्यादा मशहूर है, गो कुछ औरों ने इसे जुफ़्त रातों पर भी महमूल किया है जैसे कि सहीह मुस्लिम में है कि हज़रत अबू सईद (रज़ि.) ने इसे जुफ़्त पर महमूल किया है। (सहीह मुस्लिम, किताबुस्सियाम, बाब फ़ज़्ले लैलतिल क़द्र : 1167) वल्लाहु आलम! यह भी कहा गया है कि यह 27वीं रात है। इसकी दलील सहीह मुस्लिम की हदीस है जिसमें है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं, ''यह 27वीं रात है।'' (सहीह मुस्लिम, किताब सलातिल मुसाफ़िरीन, बाब अन्नुदबल अक्यदु इला क़ियामि लैलतिल क़द्र...: 762)

मुस्नद अहमद में है कि हज़रत ज़र्र (रह.) ने हज़रत उबय बिन कअब (रज़ि.) से कहा कि ''आपके भाई हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) फ़र्माते हैं कि जो शख़्स साल भर रातों को क़ियाम करेगा वह लैलतुल क़द्र का पाएगा। आपने फ़र्माया अल्लाह तआला इन पर रहम करे वह जानते हैं कि यह रात रमज़ान में ही है यह 27वीं रात रमज़ान की है फिर इस बात पर हज़रत उबय (रज़ि.) ने क़सम खाई, मैंने पूछा आपको यह कैसे मालूम हुआ? जवाब दिया कि इन निशानियों को देखने से जो हमको बताई गई हैं कि इस दिन सूरज शुआओं के बग़ैर निकलता है।'' (अहमद : 5/130; सहीह मुस्लिम : 762) और रिवायत में है कि हज़रत उबय (रज़ि.) ने कहा, ''उस अल्लाह की क़सम! जिसके सिवा कोई मअबूद नहीं कि यह रात रमज़ान में ही है, आपने इस पर इंशाअल्लाह भी नहीं फ़र्माया और पुख़्ता क़सम खा ली, फिर फ़र्माया मुझे ख़ूब मालूम है कि वह

कौनसी रात है जिसमें क़ियाम करने का रसूलुल्लाह (ﷺ) का हुक्म है यह 27वीं रात है इसकी निशानी यह है कि इसकी सुबह को सूरज सफ़ेद रंग का निकलता है और तेज़ी ज़्यादा नहीं होती।'' (सहीह मुस्लिम : 762; अबूदाऊद : 1378; तिर्मिज़ी : 793) हज़रत मुआविया, हज़रत इब्ने उमर, हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) वग़ैरह से भी मरवी है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, ''यह रात 27 वीं रात है।'' सलफ़ की एक जमाअत ने भी यही कहा है और इमाम अहमद बिन हम्बल (रह.) का मुख़्तार मस्लक भी यही है और इमाम अबू हनीफ़ा (रह.) से एक रिवायत इसी क़ौल की है।

कुछ सलफ़ ने क़ुरआने करीम के अल्फ़ाज़ से भी इसके सबूत का हवाला दिया है इस तरह कि (हिय) इस सूरत में 27वाँ कलिमा है और इसके मअनी हैं 'यह' वल्लाहु आलम! तब्रानी में है कि ''हज़रत उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) ने अस्हाबे रसूल (ﷺ) को जमा किया और उनसे लैलतुल क़द्र की बाबत सवाल किया तो सबका इज्माअ इस अम्र पर हुआ कि यह रमज़ान के आख़िरी अशरे में है। इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने उस वक़्त फ़र्माया कि मैं तो यह भी जानता हूँ कि वह कौनसी रात है। हज़रत उमर (रज़ि.) ने फ़र्माया फिर कहो वह कौनसी रात है? फ़र्माया इस आख़िरी अशरे में सात गुज़रने पर या सात बाक़ी रहने पर। हज़रत उमर (रज़ि.) ने पूछा, यह कैसे मालूम हुआ? तो जवाब दिया कि देखो अल्लाह तआला ने आसमान भी सात बनाया है, तवाफ़े बैतुल्लाह की ता'दाद भी सात की है, रमी जिमार की कंकरियाँ भी सात हैं और इसी तरह की सात की गिनती की बहुत सी चीज़ें और भी गिनवा दी। हज़रत फ़ारूक़े आ'ज़म (रज़ि.) ने फ़र्माया तुम्हारी समझ वहाँ पहुँची जहाँ तक हमारे ख़्यालात को रसाई न हो सकी। यह जो फ़र्माया सात ही खाना है इससे क़ुरआने करीम की आयतें (فَأَنبَتْنَا فِيهَا حَبًّا وَعِنَبًا) (80/अबस : 27) मुराद हैं, जिनमें सात चीज़ों का ज़िक्र है जो खाई जाती हैं'' इसकी इस्नाद भी जय्यद और क़वी है लेकिन मतन में बहुत ग़राबत है, वल्लाहु आ'लम!

यह भी मरवी है कि 29वीं रात है। हज़रत उबादा बिन सामित (रज़ि.) के सवाल के जवाब में हुज़ूर (ﷺ)ने फ़र्माया था कि ''उसे आख़िरी अशरे में ढूँढ़ व ताक़ रातों में, इक्कीस, तेईस, पच्चीस, सत्ताईस और उनत्तीस या आख़िरी रात।'' (अहमद : 5/318; वसनदुहू ज़ईफ़ुन इब्ने अक़ील ज़ईफ़ अलर्राजेह) मुस्नद में है कि लैलतुल क़द्र 27वीं रात है या 29वीं रात, उस रात फ़रिश्ते ज़मीन पर संगरेज़ों की गिनती से भी ज़्यादा होते हैं। (अहमद : 2/519; वसनदुहू ज़ईफ़ुन क़तादा मुदल्लस व अन्अन) इसकी इस्नाद भी अच्छी है, एक क़ौल यह भी है कि आख़िरी लैलतुल क़द्र है क्योंकि अभी जो हदीस गुज़री उसमें है और तिर्मिज़ी और नसाई में भी है कि जब नौ बाक़ी रह जाएँ, या सात, या पाँच या तीन या आख़िरी रात यानी इन रातों में लैलतुल क़द्र की तलाश करो। (तिर्मिज़ी, किताबुस्सौम, बाब मा जाअ फ़ी लैलतिल क़द्र : 794; वसनदुहू सहीहुन; अहमद : 5/36; हाकिम : 1/438; इब्ने हिब्बान) इमाम तिर्मिज़ी (रह.) इसे हसन सहीह कहते हैं मुस्नद में है कि यह आख़िरी रात है।

लैलतुल क़द्र की तलाश : हज़रत इमाम शाफ़ेई (रह.) फ़र्माते हैं कि इन मुख़्तलिफ़ अहादीस में तत्बीक़ यूँ हो सकती है कि यह सवालों का जवाब है किसी ने कहा हज़रत हम इसे फ़लाँ रात में तलाश करें तो आप

(ﷺ) ने फ़र्मा दिया, हाँ! हक़ीक़त यह है कि लैलतुल क़द्र मुक़र्रर है और इसमें तब्दीली नहीं होती। इमाम तिर्मिज़ी (रह.) ने इमाम शाफ़ेई (रह.) का इसी मआनी का क़ौल नक़्ल किया है। अबू क़लाबा (रह.) फ़र्माते हैं कि आख़िरी अशरे की रातों में यह फेरबदल हुआ करती है। इमाम मालिक, इमाम सौरी, इमाम अहमद बिन हंबल, इमाम इस्हाक़ बिन राहवे, अबू सौर मुज़्नी, अबूबक्र बिन ख़ुज़ैमा (रह.) वग़ैरह ने भी यही फ़र्माया है। इमाम शाफ़ेई (रह.) से भी क़ाज़ी ने यही नक़्ल किया है और यही ठीक भी है, वल्लाहु आलम! इस क़ौल की थोड़ी बहुत ताईद बुख़ारी व मुस्लिम की इस हदीस से भी होती है कि चंद अस्हाबे रसूलुल्लाह (ﷺ) ख़्वाब में लैलतुल क़द्र रमज़ान की सात पिछली रातों में दिखाये गए। आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि "मैं देखता हूँ कि तुम्हारे ख़्वाब इस बारे में मुवाफ़िक़ हैं, हर तलब करने वाले को चाहिए कि लैलतिल क़द्र को इन सात आख़िरी रातों में तलाश करो।" (सहीह बुख़ारी, किताब फ़ज़्ले लैलतिल क़द्र, बाब इल्तिमासु लैलतिल क़द्र फ़िस्सब्इल अवाख़िर : 2015; सहीह मुस्लिम : 1165; इब्ने हिब्बान : 3675)

हज़रत आइशा (रज़ि.) से भी बुख़ारी व मुस्लिम में मरवी है कि "रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, रमज़ान के आख़िरी अशरे की ताक़ रातों में शबे क़द्र की जुस्तजू करो।" (सहीह बुख़ारी, किताब फ़ज़्ले लैलतिल क़द्र, बाब तहरी लैलतिल क़द्रि फ़िल वित्र मिनल अशरिल अवाख़िर : 2017; सहीह मुस्लिम : 1169; तिर्मिज़ी : 792) इमाम शाफ़ेई (रह.) के इस फ़र्मान पर कि लैलतुल क़द्र हर रमज़ान में एक मुअय्यन रात है और इसका हेर फेर नहीं होता, यह हदीस दलील बन सकती है जो सहीह बुख़ारी में हज़रत उबादा बिन सामित (रज़ि.) की रिवायत से मरवी है कि "रसूलुल्लाह (ﷺ) हमें लैलतुल क़द्र की ख़बर देने के लिए फ़लाँ रात लैलतुल क़द्र है निकले यहाँ दो मुसलमान आपस में झगड़ रहे थे तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि तुम्हें लैलतुल क़द्र की ख़बर देने के लिए मैं आया था लेकिन फ़लाँ फ़लाँ की लड़ाई की वजह से वह उठा ली गई और मुम्किन है कि इसी में तुम्हारी बेहतरी हो। अब उसे नवीं सातवीं और पाँचवीं में ढूँढ़ो।" (सहीह बुख़ारी, किताब फ़ज़्ले लैलतिल क़द्र, बाब रुफ़िआ मअरिफ़तु लैलतिल क़द्रि लि तलाहुन्नास : 2023; अहमद : 5/313; इब्ने हिब्बान : 3679) वजह दलालत यह है कि अगर इसका तअय्युन हमेशा के लिए न होता तो हर साल की लैलतुल क़द्र का इल्म हासिल न होता अगर लैलतुल क़द्र का हेर फेर होता रहता तो सिर्फ़ इस साल के लिए तो मालूम हो जाता। कि फ़लाँ रात है लेकिन और बरसों के लिए तअयीन न होती। हाँ! यह एक जवाब इसका हो सकता है कि आप (ﷺ) सिर्फ़ इसी साल की इस मुबारक रात की ख़बर देने के लिए तशरीफ़ लाए थे, इस हदीस से यह भी मालूम हुआ कि लड़ाई झगड़ा ख़ैरो बरकत को और नफ़ा देने वाले इल्म को ग़ारत कर देता है। एक और सहीह हदीस में है कि "बन्दा अपने गुनाह की वजह से अल्लाह की रोज़ी से महरूम रख दिया जाता है।" (इब्ने माजा, किताबुल फ़ितन, बाब अल्उक़ूबात : 4022; वसनदुहू ज़ईफ़ुन; सुफ़्यान सौरी मुदल्लस रावी है और तस्रीह बिस्सिमाअ साबित नहीं।) यह याद रहे कि इस हदीस में जो आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि वह उठा ली गई इससे मुराद इसकी तअयीन के इल्म का उठा लिया जाना है न यह कि बिलकुल लैलतुल क़द्र ही दुनिया से उठा ली गई जैसे कि जाहिल शिया का क़ौल है इस पर बड़ी दलील यह है कि इस

लफ़्ज़ के बाद ही यह है कि आपने फ़र्माया इसे नवीं सातवीं और पाँचवीं में ढूँढो। आप (ﷺ) का यह फ़र्मान कि मुम्किन है इसी में तुम्हारी बेहतरी हो यानी इसकी मुक़र्रर तअयीन का इल्म न होने में, इसका मतलब यह है कि जब यह मुब्हम है तो इसका ढूँढ़ने वाला जिन जिन रातों में इसका होना मुम्किन देखेगा इन तमाम रातों में कोशिश व ख़ुलूस के साथ इबादत में लगा रहेगा बख़िलाफ़ इसके कि मालूम हो जाए कि फ़लाँ रात ही है तो वह सिर्फ़ इसी एक रात की इबादत करेगा। क्यों कि हिम्मतें पस्त हैं इसलिए हिक्मते हकीम का तक़ाज़ा यही हुआ कि इस रात की तअयीन की ख़बर न दी जाए ताकि इस रात के पा लेने के शौक़ में इस मुबारक महीने में जी लगाकर और दिल खोलकर बंदे अपने मअबूदे हक़ीक़ी की बंदगी करें और आख़िरी अशरे में तो पूरी कोशिश और ख़ुलूस के साथ इबादतों में मशग़ूल रहें। इसीलिए ख़ुद अल्लाह तआला के पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (ﷺ) भी अपने इंतिक़ाल तक रमज़ानुल मुबारक के आख़िरी अशरे का एतिकाफ़ करते रहे और आप (ﷺ) के बाद आपकी अज़्वाजे मुत्तह्हरात (रज़ि.) ने एतिकाफ़ किया। (सहीह बुख़ारी, किताबुल एतिकाफ़, बाब अल्एतिकाफ़ु फ़िल्अशरिल अवाख़िर : 2026; सहीह मुस्लिम : 1172; अबूदाऊद : 2462; तिर्मिज़ी : 791; मुख़्तसरन इब्ने माजा : 1771; बइख़्तिलाफ़े अल्फ़ाज़; अहमद : 6/167; इब्ने हिब्बान : 3665)

हज़रत इब्ने उमर (रज़ि.) की रिवायत में है कि आप (ﷺ) रमज़ानुल मुबारक के आख़िरी अशरे का एतिकाफ़ किया करते थे। (सहीह बुख़ारी, किताबुल एतिकाफ़, बाब अल्एतिकाफ़ु फ़िल्अशरिल अवाख़िर : 2025; सहीह मुस्लिम : 1171) हज़रत आइशा सिद्दीक़ा (रज़ि.) फ़र्माती हैं कि, "जब आख़िरी दस रातें रमज़ानुल मुबारक की रह जातीं तो अल्लाह के रसूल (ﷺ) सारी रात जागते और अपने घरवालों को भी जगाते और कमर कस लेते।" (सहीह बुख़ारी, किताब फ़ज़्ले लैलतिल क़द्र, बाब अल्अमलु फ़िल्अशरिल अवाख़िर मिन रमज़ान : 2024; सहीह मुस्लिम : 1174) मुस्लिम शरीफ़ में है कि "हुज़ूर (ﷺ) उन दिनों में जिस मेहनत के साथ इबादत करते इतनी मेहनत से इबादत आप (ﷺ) की और वक़्त नहीं होती थी।" (सहीह मुस्लिम, किताबुल एतिकाफ़, बाब अल्इज्तिहादु फ़िल्अशरिल अवाख़िर मिन शहरि रमज़ान : 1175) यही मअनी हैं ऊपर वाली हदीस के इस जुम्ले के कि आप तहबन्द मज़बूत बाँध लिया करते यानी कमर कस लिया करते यानी इबादत में पूरी कोशिश करते, गो इसके यह मअनी भी किये गए हैं कि आप बीवियों से न मिलते, और यह भी हो सकता है कि दोनों ही बातें मुराद हों यानी बीवियों से मिलना भी तर्क कर देते थे और इबादत की मशग़ूली में भी कमर बाँध लिया करते थे। चुनाँचे मुस्नद अहमद की हदीस के यह अल्फ़ाज़ हैं कि "जब रमज़ान का आख़िरी अशरा बाक़ी रह जाता तो आप तहबंद मज़बूत बाँध लेते और औरतों से अलग रहते।" (अहमद : 6/67; ह : 24377; वसनदुहू ज़ईफ़ुन; अबू मअशर ज़ईफ़ मशहूर) इमाम मालिक (रह.) फ़र्माते हैं कि "रमज़ान की आख़िरी दस रातों में लैलतुल क़द्र की यक्साँ जुस्तजू करे किसी एक रात को दूसरी रात पर तर्जीह न दे।" (शरह राफ़ेई)

रमज़ान में इबादत ज़्यादा करो : यह भी याद रहे कि यूँ तो हर वक़्त दुआ की कसरत मुस्तहब है लेकिन

रमज़ान में और ज़्यादती करे और ख़ुसूसन आख़िरी अशरे में और बिल्ख़ुसूस ताक़ रातों में और इस दुआ को बकसरत पढ़े (अल्लाहुम्म इन्नका अफ़ुव्वुन तुहिब्बुल अफ़्वा फ़अफ़ु अन्नी) ऐ अल्लाह! तू दरगुज़र करने वाला और दरगुज़र को पसंद फ़र्माने वाला है मुझसे भी दरगुज़र फ़र्मा। मुस्नद अहमद में है कि "हज़रत आइशा (रज़ि.) ने हुज़ूर (ﷺ) से पूछा कि अगर मुझे लैलतुल क़द्र से मुवाफ़िक़त हो तो मैं क्या दुआ पढ़ूँ? आप (ﷺ) ने यही बतलाई।" यह हदीस तिर्मिज़ी, नसाई और इब्ने माजा में भी है।

इमाम तिर्मिज़ी (रह.) इसे हसन सहीह कहते हैं मुस्तदरक हाकिम में भी यह मरवी है, और इमाम हाकिम इसे शर्ते बुख़ारी व मुस्लिम पर सहीह बतलाते हैं। (तिर्मिज़ी, किताबुद्दअवात, बाब फ़ी फ़ज़्लि सुआलिल आफ़ियतु वल मआफ़ातः 3513; वहुव हदीसुन सहीहुन; इब्ने माजाः 3850; अहमद : 6/182; हाकिम : 1/530)

एक अजीबो ग़रीब असर जिसका ता'ल्लुक़ लैलतुल क़द्र से है। इमाम अबू मुहम्मद बिन अबू हातिम (रह.) ने अपनी तफ़सीर में इस सूरत की तफ़्सीर में हज़रत कअब (रह.) से यह रिवायत वारिद की है कि सिदरतुल मुंतहा जो सातवें आसमान की हद पर जन्नत से मुत्तसिल है जो दुनिया और आख़िरत के फ़ासले पर है उसकी बुलंदी जन्नत में है उसकी शाख़ें और डालियाँ कुर्सी तले हैं इसमें इस क़द्र फ़रिश्ते हैं जिनकी गिनती अल्लाह तआला के सिवा और कोई नहीं जानता इसकी हर हर शाख़ पर बेशुमार फ़रिश्ते हैं, एक बाल बराबर भी जगह ऐसी नहीं जो फ़रिश्तों से ख़ाली हो उस दरख़्त के बीचों बीच हज़रत जिब्राईल (عليه السلام) का मक़ाम है, अल्लाह तआला की तरफ़ से हज़रत जिब्राईल (عليه السلام) को आवाज़ दी जाती है कि ऐ जिब्राईल! लैलतुल क़द्र में उस दरख़्त के तमाम फ़रिश्तों को लेकर ज़मीन पर जाओ। यह कुल के कुल फ़रिश्ते राफ़्त और रहमत वाले हैं, जिनके दिलों में हर हर मोमिन के लिए रहम के जज़्बात पेवस्त हैं, सूरज गुरूब होते ही यह कुल के कुल फ़रिश्ते हज़रत जिब्राईल (عليه السلام) के साथ लैलतुल क़द्र में उतरते हैं तमाम रूए ज़मीन पर फैल जाते हैं हर हर जगह सज्दे में क़याम में मशग़ूल हो जाते हैं, और तमाम मोमिन मर्दों और मोमिना औरतों के लिए दुआएँ माँगते रहते हैं, हाँ! गिरजाघर, मंदिर में, आतिशकदे, बुतख़ाने में ग़र्ज़ अल्लाह के सिवा औरों की जहाँ पूजा होती है वहाँ तो यह फ़रिश्ते नहीं जाते और उन जगहों में भी जिनमें तुम गंदी चीज़ें डालते हो और उस घर में जहाँ नशे वाला शख़्स हो या नशे वाली चीज़ हो या जिस घर में कोई बुत गड़ा हुआ हो जिस घर में बाजे गाजे घंटियाँ हों या कूड़ा करकट डालने की जगह हो वहाँ तो यह रहमत के फ़रिश्ते जाते नहीं, बाक़ी चप्पे चप्पे पर घूम जाते हैं और सारी रात मोमिन मर्दों, औरतों के लिए दुआएँ माँगने में गुज़ार देते हैं, हज़रत जिब्राईल (عليه السلام) तमाम मोमिनों से मुसाफ़ा करते हैं, इसकी निशानी यह है कि रोंगटे जिस्म पर खड़े हो जाएँ, दिल नर्म पड़ जाए आँखें बह निकलें। उस वक़्त आदमी को समझ लेना चाहिए कि उस वक़्त मेरा हाथ हज़रत जिब्राईल (عليه السلام) के हाथ में है।

हज़रत कअब (रह.) फ़र्माते हैं कि "जो शख़्स इस रात में तीन बार ला इलाहा इल्लल्लाह पढ़े उस पहली बार के पढ़ने पर गुनाहों की बख़्शिश हो जाती है, दूसरी बार के कहने पर आग से नजात मिल जाती है, तीसरी बार के कहने पर जन्नत में दाख़िल हो जाता है।" रावी ने पूछा कि ऐ अबू इस्हाक़! जो इस कलिमा को

सच्चाई से कहे उसके? फ़र्माया यह तो निकलेगा ही उसके मुँह से जो सच्चाई से उसका कहने वाला हो। उस अल्लाह की क़सम! जिसके हाथ में मेरी जान है कि लैलतिल क़द्र काफ़िर व मुनाफ़िक़ पर तो इतनी भारी पड़ती है कि गोया उसकी पीठ पर पहाड़ रख दिया हो। ग़र्ज़ कि फ़ज्र होने तक फ़रिश्ते इसी तरह रहते हैं फिर सबसे पहले हज़रत जिब्राईल (ﷺ) चढ़ते हैं और बहुत ऊँचे चढ़कर अपने परों को फैला देते हैं, बिल्ख़ुसूस उन दो सब्ज़ परों को जिन्हें उस रात के सिवा वह कभी नहीं फैलाते यही वजह है कि सूरज की तेज़ी धीमी पड़ जाती है और शुआएँ जाती रहती हैं फिर एक एक फ़रिश्ते को पुकारते हैं और सबके सब ऊपर चढ़ते हैं, पस फ़रिश्तों का नूर और जिब्राईल (ﷺ) के परों का नूर मिलकर सूरज को माँद कर देता है, उस दिन सूरज हैरान रह जाता है। हज़रत जिब्राईल (ﷺ) और यह सारे के सारे बेशुमार फ़रिश्ते उस दिन आसमान व ज़मीन के बीच मोमिन मर्दों और मोमिना औरतों के लिए रहमत की दुआएँ माँगने में और उनके गुनाहों की बख़्शिश तलब करने मे गुज़ार देते हैं, नेक निय्यती के साथ रोज़ा रखने वालों के लिए और उन लोगों के लिए भी जिनका यह ख़्याल रहा कि अगले साल भी अगर अल्लाह ने ज़िन्दगी रखी तो रमज़ान के रोज़े ऊम्दगी के साथ पूरे करेंगे, यही दुआएँ माँगते रहते हैं, शाम को आसमाने दुनिया पर चढ़ जाते हैं वहाँ के तमाम फ़रिश्ते हल्के बाँध बाँधकर उनके पास जमा हो जाते हैं और एक एक मर्द और एक एक औरत के बारे में उनसे सवाल करते हैं और यह जवाब देते हैं यहाँ तक कि वह पूछते हैं कि फ़लाँ शख़्स को इस साल तुमने किस हालत में पाया तो यह कहते हैं कि गुज़िश्ता साल तो हमने इसे इबादतों में पाया था लेकिन इस साल तो वह बिदअतों में मुब्तला था और फ़लाँ शख़्स गुज़िश्ता साल बिदअतों में मुब्तला था लेकिन इस साल हमने उसे सुन्नत के मुताबिक़ इबादतों में पाया। पस यह फ़रिश्ते उस पहले शख़्स के लिए बख़्शिश की दुआएँ माँगना बन्द कर देते हैं और उस दूसरे शख़्स के लिए दुआएँ माँगना शुरू कर देते हैं, और यह फ़रिश्ते उन्हें सुनाते हैं कि हमने फ़लाँ फ़लाँ को ज़िक्रुल्लाह में पाया और फ़लाँ को रुकूअ में और फ़लाँ को सज्दे में और फ़लाँ को किताबुल्लाह की तिलावत में, ग़र्ज़ कि एक रात दिन यहाँ गुज़ारकर दूसरे आसमान पर जाते हैं यहाँ भी यही होता है, यहाँ तक कि यह सिदरतुल मुंतहा में अपनी अपनी जगह पहुँच जाते हैं। उस वक़्त सिदरतुल मुंतहा इनसे पूछता है कि मुझमें बसने वालों! मेरा भी तुम पर हक़ है मैं भी उनसे मुहब्बत रखता हूँ जो अल्लाह तआला से मुहब्बत रखें, ज़रा मुझे तो लोगों की हालत की ख़बर दो और उनके नाम बताओ।

हज़रत कअब अहबार (रह.) फ़र्माते हैं कि "अब फ़रिश्ते उसके सामने गिनती करके और एक एक मर्द व औरत का वालिद के साथ नाम बतलाते हैं, फिर जन्नत सिदरतुल मुंतहा की तरफ़ मुतवज्जह होकर पूछती है कि तुझमें रहने वाले फ़रिश्तों ने जो ख़बरें तुझे दी हैं मुझसे भी तू बयान कर। चुनाँचे सिदरतुल मुंतहा उससे ज़िक्र करता है, यह सुनकर वह कहती है कि अल्लाह की रहमत हो फ़लाँ मर्द पर और फ़लाँ औरत पर, ऐ अल्लाह! इन्हें जल्दी मुझसे मिला। हज़रत जिब्राईल (ﷺ) सबसे पहले अपनी जगह पहुँच जाते हैं, उन्हें इल्हाम होता है और यह अर्ज़ करते हैं परवरदिगार! मैंने तेरे फ़लाँ फ़लाँ बन्दों को सज्दे में पाया, तू उन्हें बख़्श दे। अल्लाह तआला फ़र्माता है मैंने उन्हें बख़्श दिया। हज़रत जिब्राईल (ﷺ) उसे अर्श के उठाने वाले फ़रिश्तों को सुनाते हैं,

फिर सब कहते हैं कि फ़लाँ फ़लाँ मर्द औरत पर अल्लाह तआला की रहमत हुई और मग़्फ़िरत हुई।

फिर हज़रत जिब्राईल (عليه السلام) ख़बर देते हैं कि बारी तआला फ़लाँ को गुज़िश्ता साल तो आमिले सुन्नत और आबिद छोड़ा था लेकिन इस साल तो बिदअतों में पड़ गया है और तेरे अहकाम से रूगर्दानी कर ली है। अल्लाह तआला फ़र्माता है ऐ जिब्राईल! अगर यह मरने से तीन साअत पहले भी तौबा कर ले तो मैं उसे बख़्श दूँगा। उस वक़्त हज़रत जिब्राईल (عليه السلام) बेसाख़्ता कह उठते हैं कि ऐ अल्लाह! तेरे ही लिए सब ता'रीफ़ें सज़ावार हैं, इलाही! तू अपनी मख़्लूक़ पर सबसे ज़्यादा मेहरबान है, बन्दों पर तेरी मेहरबानी ख़ुद उनकी अपनी मेहरबानी से भी बढ़ी हुई है। उस वक़्त अर्श और उसके आसपास की चीज़ें और पर्दे और तमाम आसमान जुंबिश में आ जाते हैं और कह उठते हैं (अल्हम्दु लिल्लाहिर्रहीमि अल्हम्दु लिल्लाहिर्रहीमि) हज़रत कअब (रह.) यह भी फ़र्माते हैं कि जो शख़्स रमज़ानुल मुबारक के रोज़े पूरे करे और उसकी निय्यत यह भी हो कि रमज़ान के बाद भी गुनाहों से बचता रहूँगा, वह बग़ैर सवाल जवाब के और बग़ैर हिसाबो किताब के जन्नत में दाख़िल होगा।''

अल्हम्दुलिल्लाह! सूरह क़द्र की तफ़्सीर मुकम्मल हुई।

***

FLOW CHART
तरतीबी नक्श-ए-रब्त

MACRO-STRUCTURE
नज़्मे-जली

सूरह बय्यिनह – 98

आयात : 8, मदनी, पैराग्राफ : 5

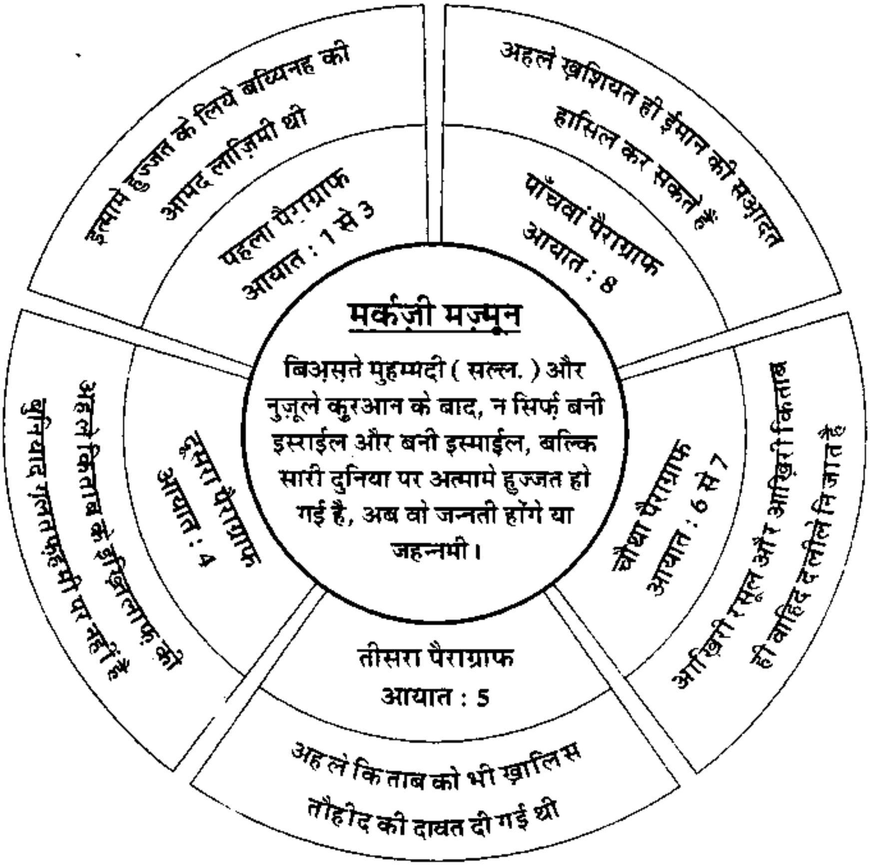

ज़मानए नुज़ूल

सूरह बय्यिनह उन आख़िरी दो सूरतों में से एक है, जो मदीन-ए-मुनव्वरा में वफ़ात से पहले रसूलुल्लाह (सल्ल.) पर नाज़िल की गई। इस सूरत के बाद ग़ालिबन सिर्फ़ सूर-ए-नस्र और चन्द मुतफ़र्रिक़ आयात नाज़िल हुई। क़ियास किया जा सकता है कि ये दस (10) हिज्री के आख़िर में नाज़िल हुई होगी।

तफ़्सीर सूरह बय्यिनह

तआरुफ़े सूरतः जब यह सूरत उतरी तो हज़रत जिब्राईल (ﷺ) ने हुज़ूर (ﷺ) से फ़र्माया कि "अल्लाह का आपको हुक्म हुआ है कि यह सूरत (हज़रत) उबय को सुनाएँ। हुज़ूर (ﷺ) ने हज़रत उबय (रज़ि.) से इसका ज़िक्र किया तो हज़रत उबय (रज़ि.) ने फ़र्माया, या रसूलल्लाह (ﷺ)! क्या वहाँ मेरा ज़िक्र किया गया है? आप (ﷺ) ने फ़र्माया, हाँ! हाँ! तो हज़रत उबय (रज़ि.) रो पड़े।" (अह़मद : 3/489; ह़ : 16001; वसनदुहू ज़ईफ़ुन; अली बिन ज़ेद बिन जिदआन ज़ईफ़ मशहूर, मज्मउज़्ज़वाइद : 9/311; उस्दुल ग़ाबा लि इब्निल असीर : 6/66; इसकी सनद में अली बिन ज़ेद बिन जिदआन ज़ईफ़ रावी है।) मुस्नद ही की एक दूसरी रिवायत में है कि हज़रत उबय (रज़ि.) ने पूछा था कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! क्या अल्लह तआला ने मेरा नाम लिया? (अह़मद : 3/130; स़ह़ीह़ बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरह लम यकुन बाब नम्बर 1, ह़दीस : 4959; स़ह़ीह़ मुस्लिम : 799) यह ह़दीस बुख़ारी, मुस्लिम, तिर्मिज़ी और नसाई में भी है। मुस्नद की एक और रिवायत में है कि जिस वक़्त हज़रत उबय (रज़ि.) ने यह वाक़िया बयान किया उस वक़्त हज़रत अब्दुर्रह़मान बिन अब्ज़ा (रज़ि.) ने कहा कि फिर तो तुम ऐ अबू मुंज़िर! बहुत ख़ुश हुए होंगे। कहा, हाँ ख़ुश क्यूँ न होता, ख़ुद अल्लाह तआला फ़र्माता है (قُلْ بِفَضْلِ اللّٰهِ وَبِرَحْمَتِهٖ فَبِذٰلِكَ فَلْيَفْرَحُوْا هُوَ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُوْنَ) (10/यूनुस : 58) यानी कह दे कि अल्लाह तआला के फ़ज़्ल व रह़मत के साथ लोग ख़ुश हुआ करें, यह उनके जमा किये हुए से बहुत ही बेहतर है। (अह़मद : 5/123; ह़ : 21137; वसनदुहू ह़सनुन लि ज़ातिही)

और ह़दीस में है कि "हुज़ूर (ﷺ) ने यह सूरत हज़रत उबय (रज़ि.) के सामने पढ़ी, उसमें यह आयत भी थी (لو ان ابن ادام سال واديا من مال فاعطيه لسأل ثانيا ولو سأل ثانيا فاعطيه لسأل ثالثا ولا يملا جوف ابن آدم الا التواب و يتوب الله على من تاب وان ذات الدين عند الله الحنيفة غير المشركته ولا اليهوديته ولا النصر انيته ومن يفعل خيرا فلن يكفره) यानी अगर इंसान मुझसे एक जंगल भरकर सोना माँगे और मैं उसे दे दूँ तो फिर दूसरा माँगेगा और दूसरे को दे दूँ तो यक़ीनन तीसरे की त़लब करेगा इंसान के पेट को सिवा मिट्टी के कोई चीज़ नहीं भर सकती, जो तौबा करे अल्लाह तआला भी उसकी तौबा क़बूल फ़र्माता है, अल्लाह के नज़दीक दीनदार वह है जो एक त़रफ़ा होकर सिर्फ़ उसकी इ़बादत करे, न वह मुश्रिक हो, न यहूदी हो, न नस़रानी हो, जो शख़्स भी कोई नेक काम करे अल्लाह के यहाँ उसकी नाक़द्री न की जाएगी।" (अह़मद : 5/131; तिर्मिज़ी, किताबुल मनाक़िब, बाब फ़ज़्ल उबय बिन कअ़ब (रज़ि.) : 3898; वहुव ह़दीसुन ह़सन) तिर्मिज़ी में भी यह रिवायत है और इसे इमाम तिर्मिज़ी (रह़.) ने ह़सन स़ह़ीह़ कहा है। त़ब्रानी में है कि "जब हुज़ूर (ﷺ) ने हज़रत उबय (रज़ि.) से फ़र्माया कि मुझे हुक्म हुआ है कि मैं तुम्हारे सामने क़ुरआन पढ़ूँ तो हज़रत उबय (रज़ि.) ने अ़र्ज़ किया कि हज़रत मैं अल्लाह पर ईमान लाया। आपके हाथ पर इस्लाम लाया। आप (ﷺ) ही से इ़ल्मे

दीन हासिल किया। आप (ﷺ) ने फिर यही फ़र्माया इस पर हज़रत उबय (रज़ि.) ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह (ﷺ)! क्या मेरा वहाँ ज़िक्र किया गया? आप (ﷺ) ने फ़र्माया तेरे नाम और नसब के साथ मलअ-ए-आला में तेरा ज़िक्र हुआ है। हज़रत उबय (रज़ि.) ने अर्ज़ किया अच्छा! फिर पढ़िए।'' यह रिवायत इस तरीक़े से ग़रीब है और साबित वह है जो पहले बयान हुआ।

फ़ायदा : यह याद रहे कि हुज़ूर (ﷺ) का इस सूरत को हज़रत उबय (रज़ि.) के सामने पढ़ना यह उनकी साबित क़दमी और उनके ईमान की ज़्यादती के लिए था। मुस्नद अहमद, नसाई, अबूदाऊद, और मुस्लिम में है कि ''एक बार हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) की क़िरअत सुनकर हज़रत उबय (रज़ि.) बिगड़ बैठे थे क्योंकि उन्होंने जिस तरह इस सूरत को हुज़ूर (ﷺ) से सीखा था हज़रत अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने उस तरह नहीं पढ़ा था, तो ग़ुस्से में आकर उन्हें लेकर ख़िदमते नबवी में हाज़िर हुए। हुज़ूर (ﷺ) ने उन दोनों से क़ुरआन सुना। उसने अपने तरीक़े पर, उसने अपने तौर पर पढ़ा। आप (ﷺ) ने फ़र्माया दोनों ने सही पढ़ा। हज़रत उबय (रज़ि.) फ़र्माते हैं मैं तो इस क़द्र शक व शुब्हा में पड़ गया कि जाहिलियत के ज़माने का शक सामने आ गया। आप (ﷺ) ने यह हालत देखकर मेरे सीने पर अपना हाथ रख दिया, जिससे मैं पसीने पसीने हो गया और इस क़द्र मुझ पर डर ख़ौफ़ तारी हुआ कि गोया मैं अल्लाह तआला को अपने सामने देख रहा हूँ, फिर आप (ﷺ) ने फ़र्माया सुन! जिब्रईल (अलै.) मेरे पास आए और फ़र्माया अल्लाह तआला का हुक्म है कि क़ुरआन एक ही क़िरअत पर अपनी उम्मत को पढ़ाओ। मैंने कहा, मैं अल्लाह तआला से अफ़ू व दरगुज़र और बख़्शिश व मग़फ़िरत चाहता हूँ, फिर मुझे दो तरह की क़िरअतों की इजाज़त हुई लेकिन फिर भी ज़्यादती तलब करता रहा यहाँ तक कि सात क़िरअतों की इजाज़त मिली।'' (सहीह मुस्लिम, किताब सलातिल मुसाफ़िरीन, बाब बयानु अन्नल क़ुरआन अंज़ल अला सब्अतु अहरफ़ : 820, 821) यह हदीस बहुत सी सनदों और मुख़्तलिफ़ अल्फ़ाज़ से तफ़्सीर शुरू में पूरी तरह बयान हो चुकी है। अब जबकि यह मुबारक सूरत नाज़िल हुई और इसमें आयत (रसूलुम् मिनल्लाहि यत्लू सुहुफ़म् मुतह्हरा. फ़ीहा कुतुबुन क़य्यिमा) भी नाज़िल हुई। इसलिए हुज़ूर (ﷺ) को हुक्म हुआ कि बतौर पहुँचा देने के और साबित क़दमी अता फ़र्माने के और आगाही करने के पढ़कर हज़रत उबय (रज़ि.) को सुना दें। किसी को यह ख़्याल न रहे कि बतौर सीखने के और याद रहने के आप (ﷺ) ने यह सूरत उनके पास तिलावत की थी, वल्लाहु आलम!

पस जिस तरह आप (ﷺ) ने हज़रत उबय (रज़ि.) के उस दिन के शक व शुब्हा को दूर करने के लिए जो उन्हें मुख़्तलिफ़ क़िरअतों को हुज़ूर (ﷺ) के जाइज़ रखने पर पैदा हुआ था उनके सामने यह सूरत तिलावत करके सुनाई, ठीक इसी तरह हज़रत उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) का वाक़िया है कि उन्होंने भी हुदैबिया वाले साल सुलह के मामले पर अपनी नाराज़गी ज़ाहिर करते हुए बहुत से सवालात हुज़ूर (ﷺ) से किये थे, जिनमें एक यह भी था कि क्या आप (ﷺ) ने हमें यह नहीं फ़र्माया था कि हम बैतुल्लाह में जाएँगे और तवाफ़ करेंगे? आप (ﷺ) ने फ़र्माया हाँ! यह तो ज़रूर कहा था लेकिन यह नहीं कहा था कि इसी साल यह होगा, यक़ीनन

वह वक़्त आ रहा है कि तू वहाँ पहुँचेगा और तवाफ़ करेगा। अब हुदेबिया से लौटते हुए सूरह फ़तह नाज़िल हुई तो हुज़ूर (ﷺ) ने हज़रत उमर (रज़ि.) को बुलवाया और यह सूरत पढ़कर सुनाई। (सहीह बुख़ारी, किताबुश्शुरूत, बाबुश्शुरूत फ़िल जिहादि वल मुसालिहति मअ अहलिल हर्ब... : 2731, 2732) जिसमें यह आयत भी है (لَقَدْ صَدَقَ اللّٰهُ رَسُولَهُ الرُّؤْيَا بِالْحَقِّ لَتَدْخُلُنَّ الْمَسْجِدَ الْحَرَامَ إِن شَاءَ اللّٰهُ آمِنِينَ) (48/फ़तह : 27) यानी अल्लाह तआला ने अपने रसूल का ख़्वाब सच्चा कर दिखाया यक़ीनन तुम्हारा दाख़िला मस्जिदे हराम में अम्नो अमान के साथ होगा जैसे कि पहले इसका बयान भी गुज़र चुका है। हाफ़िज़ अबू नुऐम (रह.) अपनी किताब अस्माए सहाबा में हदीस लाये हैं कि "जनाब रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि अल्लाह तआला जब सूरह बय्यिना की क़िरअत सुनता है तो फ़र्माता है मेरे बन्दे ख़ुश हो जा, मुझे अपनी इज़्ज़त की क़सम! मैं तुझे जन्नत में ऐसा ठिकाना दूँगा कि तू ख़ुश हो जाएगा।" (मअरिफ़तुस् सहाबा लि अबी नुऐम अल्अस्बहानी : 1/350; ह : 1083; वक़ाल : वहुव इन्दी इस्नाद मुन्क़तअ; वसनदुहू ज़ईफ़ुन; मुहम्मद बिन इस्माईल जअफ़री व अब्दुल्लाह बिन सलमा बिन असलम ज़ईफ़ानि वस्सनदु मुअल्लल) यह हदीस बहुत ही ग़रीब है। और रिवायत में इतनी ज़्यादती भी है कि मैं तुझे दुनिया और आख़िरत के अहवाल में से किसी हाल में न भूलूँगा।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

तर्जुमा : "शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है।"

***

لَمْ يَكُنِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ وَالْمُشْرِكِيْنَ مُنْفَكِّيْنَ حَتّٰى تَاْتِيَهُمُ
الْبَيِّنَةُ ① رَسُوْلٌ مِّنَ اللّٰهِ يَتْلُوْا صُحُفًا مُّطَهَّرَةً ② فِيْهَا كُتُبٌ قَيِّمَةٌ ③ وَمَا
تَفَرَّقَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ اِلَّا مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَتْهُمُ الْبَيِّنَةُ ④ وَمَآ اُمِرُوْٓا
اِلَّا لِيَعْبُدُوا اللّٰهَ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ ۙ حُنَفَآءَ وَيُقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَيُؤْتُوا الزَّكٰوةَ
وَذٰلِكَ دِيْنُ الْقَيِّمَةِ ⑤

तर्जुमा : "अहले किताब के काफ़िर और मुश्रिक लोग जब तक कि उनके पास ज़ाहिर दलील न आ जाए बाज़ रहने वाले न थे (1) (वह दलील यह थी कि) अल्लाह तआला का एक रसूल (ﷺ) जो पाक सहीफ़े पढ़े (2) जिनमें सही और दुरुस्त अहकाम हों (3) अहले किताब अपने पास ज़ाहिर दलील के आ जाने के बाद ही इख़्तिलाफ़ में पड़कर मुतफ़र्रिक़ (टुकड़े-टुकड़े) हो गए (4) उन्हें उसके सिवा हुक्म नहीं दिया गया कि सिर्फ़ अल्लाह की इबादत करें उसी के लिए दीन को ख़ालिस रखें, इब्राहीम हनीफ़ के दीन पर और नमाज़ को क़ायम रखें और ज़कात देते रहें यही दीन सही और मज़बूत है।" (5)

अहले किताब की हठधर्मी (आयत : 1 से 5) : अहले किताब से मुराद यहूद व नसारा हैं, और मुश्रिकीन से मुराद बुतपरस्त अरब और आतिश परस्त अज्मी हैं। फ़र्माता है कि यह लोग बग़ैर दलील के आ जाने के बाज़ रहने वाले न थे, फिर बतलाया कि वह दलील अल्लाह के रसूल मुहम्मद (ﷺ) हैं जो पाक सहीफ़े यानी कुरआने करीम पढ़कर सुनाते हैं जो आला फ़रिश्तों ने पाक वरक़ों में लिखा हुआ है। जैसे और जगह है (فِي صُحُفٍ مُّكَرَّمَةٍ) (80/अबस : 13) कि वह नामी गिरामी बुलंद व बाला पाक साफ़ सहीफ़ों में पाकबाज़ नेकोकार बुज़ुर्ग फ़रिश्तों के हाथों लिखे हुए हैं। फिर फ़र्माया कि इन पाक सहीफ़ों में अल्लाह की लिखी हुई बातें अदलो इस्तिक़ामत वाली मौजूद हैं जिनके अल्लाह की जानिब से होने में कोई शक व शुब्हा नहीं, न उनमें कोई ख़ता और ग़लती हुई है। हज़रत क़तादा (रह.) फ़र्माते हैं कि वह रसूल (ﷺ) की उम्दगी के साथ कुरआनी वअज़ फ़र्माते हैं और उसकी अच्छी ता'रीफ़ें बयान फ़र्माते हैं, इब्ने ज़ेद (रह.) फ़र्माते हैं कि इन सहीफ़ों में किताबें हैं इस्तिक़ामत और अदलो इंसाफ़ वाली।

फिर फ़र्माया कि अगली किताबों वाले अल्लाह की हुज्जतें क़ायम हो चुकने और दलीलें आ जाने के बाद कलामे इलाही की मुराद में इख़्तिलाफ़ करने लगे, और जुदा जुदा राहों में बट गए जैसे कि इस हदीस में है जो मुख़्तलिफ़ तरीक़ों से मरवी है कि "यहूदियों के 71 फ़िर्क़े हो गए और नसरानियों के 72 और इस उम्मत के 73 फ़िर्क़े हो जाएँगे। सिवा एक के सब जहन्नम में जाएँगे। लोगों ने पूछा वह एक कौन है? फ़र्माया वह जो उस पर हो जिस पर मैं और मेरे सहाबा (रज़ि.) हैं।" (इसकी तख़रीज सूरह यूनुस आयत 93 के तहत गुज़र चुकी है।) फिर फ़र्माया कि इन्हें सिर्फ़ इतना ही हुक्म था कि खुलूस और इख़्लास के साथ सिर्फ़ अपने सच्चे मअबूद की इबादत में लगे रहें, जैसे और जगह फ़र्माया (وَمَا أَرْسَلْنَا مِن قَبْلِكَ مِن رَّسُولٍ إِلَّا نُوحِي إِلَيْهِ أَنَّهُ لَا إِلَٰهَ إِلَّا أَنَا فَاعْبُدُونِ) (21/अम्बिया : 25) यानी तुझसे पहले भी हमने जिसने रसूल भेजे सबकी तरफ़ यही वही की कि मेरे सिवा कोई मअबूदे बरहक़ नहीं तुम सब सिर्फ़ मेरी ही इबादत करते रहो। इसीलिए यहाँ भी फ़र्माया है कि यक्सू होकर यानी शिर्क से दूर और तौहीद में मशग़ूल होकर, जैसे और जगह है (وَلَقَدْ بَعَثْنَا فِي كُلِّ أُمَّةٍ رَّسُولًا أَنِ اعْبُدُوا اللَّهَ وَاجْتَنِبُوا الطَّاغُوتَ) (16/नहल : 36) यानी हमने हर उम्मत में रसूल भेजा कि अल्लाह की इबादत करो और अल्लाह के सिवा किसी दूसरों की इबादत करने से बचो। हनीफ़ की पूरी तफ़्सीर सूरह अन्आम में

गुज़र चुकी है जिसे लौटाने की अब ज़रूरत नहीं।

फिर फ़र्माया कि नमाज़ों को क़ायम करें जो कि बदन की तमाम इबादतों में सबसे आला इबादत है और ज़कात देते रहें, यानी फ़क़ीरों और मोहताजों के साथ सुलूक करते रहें, यही दीन मज़बूत, सीधा, दुरुस्त, अदल वाला और उम्दगी वाला है।

फ़ायदा : बहुत से अइम्मा किराम जैसे इमाम ज़ोहरी (रह.), इमाम शाफ़ेई (रह.) वग़ैरह ने इस आयत से इस अम्र पर इस्तिदलाल किया है कि आमाल ईमान में दाख़िल हैं क्योंकि इन आयतों में अल्लाह तआला की ख़ुलूस और यक्सूई के साथ की इबादत और नमाज़ और ज़कात को दीन फ़र्माया गया है।

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ أَهْلِ الْكِتٰبِ وَالْمُشْرِكِينَ فِي نَارِ جَهَنَّمَ خٰلِدِينَ فِيهَا ۚ
أُولٰٓئِكَ هُمْ شَرُّ الْبَرِيَّةِ ۝٦ إِنَّ الَّذِينَ اٰمَنُوا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ۙ أُولٰٓئِكَ هُمْ خَيْرُ
الْبَرِيَّةِ ۝٧ جَزَاۤؤُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ جَنّٰتُ عَدْنٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهٰرُ خٰلِدِينَ
فِيهَآ أَبَدًا ۖ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَرَضُوا عَنْهُ ۚ ذٰلِكَ لِمَنْ خَشِيَ رَبَّهُ ۝٨

तर्जुमा : "बेशक जो लोग अहले किताब में से काफ़िर हुए और मुश्रिकीन वह दोज़ख़ की आग में जाएँगे जहाँ वह हमेशा हमेशा रहेंगे। यह लोग बदतरीन ख़लाइक़ हैं (6) बेशक जो लोग ईमान लाए और नेक अमल किये यह लोग बेहतरीन ख़लाइक़ हैं (7) इनका बदला इनके रब के पास हमेशगी वाली जन्नतें हैं जिनके नीचे नहरें बह रही हैं जिनमें हमेशा हमेशा रहेंगे। अल्लाह तआला इनसे ख़ुश रहेगा और यह उससे यह है उसके लिए जो अपने परवरदिगार से डरे।" (8)

कुफ़्फ़ार का अंजाम (आ. 6 से 8) : अल्लाह तआला काफ़िरों का अंजाम बयान कर रहा है वह काफ़िर ख़्वाह यहूद व नसारा हों या मुश्रिकीने अरब व अजम हों जो भी अम्बिया ए अल्लाह के मुख़ालिफ़ हों और किताबुल्लाह के झुठलाने वाले हों वह क़ियामत के दिन जहन्नम की आग में डाल दिये जाएँगे और उसी में पड़े रहेंगे न वहाँ से निकलें न छूटें, यह लोग तमाम मख़्लूक़ से बदतर और कमतर हैं। फिर अपने नेक बन्दों के अंजाम की ख़बर देता है जिनके दिलों में ईमान है और जो अपने जिस्मों से सुन्नत की बजाआवरी में रहा करते हैं कि यह सारी मख़्लूक़ से बेहतर और बुज़ुर्ग हैं।

फ़ायदा : इस आयत से हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) और उलमा-ए-किराम की एक जमाअत ने इस्तिदलाल

किया है कि ईमान वाले इंसान फ़रिश्तों से भी अफ़ज़ल हैं। फिर इर्शाद होता है कि उनका नेक बदला उनके रब के पास है उन हमेशगी वाली जन्नतों की सूरत में है जिनके चप्पे चप्पे पर पाक साफ़ पानी की नहरें बह रही हैं जिनमें दवाम और हमेशगी वाली ज़िन्दगी के साथ रहेंगे, न वहाँ से निकाले जाएँ न वह नेअ़मतें उनसे जुदा हों, न कम हों न और कोई खटका है न ग़म। फिर उन सबसे बढ़ चढ़कर नेअ़मत व रह़मत यह है कि रज़ाए रब मर्ज़ी मौला उन्हें ह़ासिल हो गई है, और उन्हें इस क़द्र नेअ़मतें जनाब बारी तआ़ला ने अ़ता की हैं कि यह भी दिल से राज़ी हो गए हैं। फिर इर्शाद होता है कि यह बेहतरीन बदला, यह जजाए जज़ील, यह अज्रे अ़ज़ीम दुनिया में अल्लाह से डरते रहने का बदला है। हर वह शख़्स जिसके दिल में डर हो, जिसकी इबादत में इख़्लास़ हो जो जानता हो कि अल्लाह की उस पर नज़रें हैं, बल्कि इबादत के वक़्त उस मशग़ूली और दिलचस्पी से इबादत कर रहा हो कि गोया वह ख़ुद अपनी आँखों से अपने ख़ालिक़, मालिक, सच्चे रब और ह़क़ीक़ी अल्लाह को देख रहा है।

मुस्नद अह़मद की ह़दीस में है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं "मैं तुम्हें बताऊँ कि सबसे बेहतर शख़्स कौन है? लोगों ने कहा ज़रूर। फ़र्माया वह शख़्स जो अपने घोड़े की लगाम थामे हुए है कि कब जिहाद की आवाज़ उठे और कब मैं कूदकर उसकी पीठ पर सवार हो जाऊँ, और कड़कड़ाता हुआ दुश्मन की फ़ौज में घुसूँ और दादे शुजाअ़त (बहादुरी दिखायें) दूँ। लो मैं तुम्हें एक और बेहतरीन मख़्लूक़ की ख़बर देता हूँ, वह शख़्स जो अपनी बकरियों के रेवड़ में है न नमाज़ को छोड़ता है न ज़कात से जी चुराता है। आओ अब मैं बदतरीन मख़्लूक़ बताऊँ वह शख़्स कि अल्लाह तआ़ला के नाम से सवाल करे और फिर न दिया जाए।" (अह़मद : 2/396; वसनदुहू ज़ईफ़ुन; अबू मअ़शर ज़ईफ़ुन मशहूरुन)

अल्ह़म्दुलिल्लाह! सूरह बय्यिना की तफ़्सीर मुकम्मल हुई।

***

FLOW CHART
तरतीबी नक्श-ए-रब्त

MACRO-STRUCTURE
नज़्मे-जली

सूरह ज़िल्ज़ाल - 99

आयात : 8, मक्की, पैराग्राफ : 2

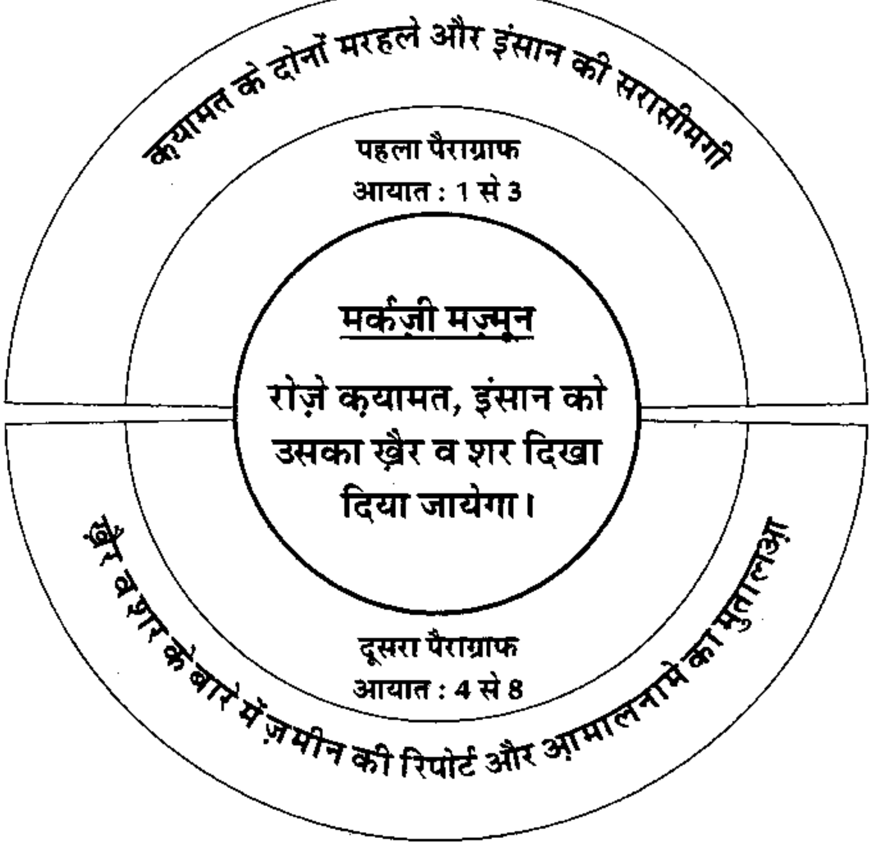

ज़मानए नुज़ूल

सूरह ज़िल्ज़ाल ग़ालिबन क़ियामे मक्का के पहले दौर (0-3 नबवी) में नाज़िल हुई, जब इस्लाम की दावत ख़ुफ़िया तौर पर दी जा रही थी और जब आप (सल्ल.) पर आ़ला अदबी उस्लूब में मुख़्तसर, मुहकम और जामेअ़ सूरतें नाज़िल की जा रही थीं।

तफ़्सीर सूरह ज़िल्ज़ाल

तआरुफ़े सूरत : मुस्नद में है कि एक शख़्स रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास आया और कहा, हुज़ूर (ﷺ)! मुझे पढ़ाइए। आप (ﷺ) ने फ़र्माया (अलिफ़ लाम रा) वाली तीन सूरतें पढ़ो, तो उसने कहा बूढ़ा हो गया, हाफ़्ज़ा कमज़ोर हो गया ज़ुबान मोटी हो गई। तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया, अच्छा (हामीम) वाली सूरतें पढ़ा करो, उसने फिर वही उज़्र बयान किया, आप (ﷺ) ने फ़र्माया (युसब्बिहु) वाली तीन सूरतें पढ़ लिया करो। उसने फिर वही उज़्र बयान किया और दरख़्वास्त किया कि हुज़ूर (ﷺ)! मुझे तो कोई जामेअ सूरह का सबक़ दे दीजिए, तो आप (ﷺ) ने उसे यह सूरत पढ़ाई, जब पढ़ा चुके तो वह कहने लगा कि उस अल्लाह की क़सम! जिसने आपको हक़ के साथ नबी बनाकर भेजा है कि मैं कभी इस पर ज़्यादती न करूँगा। फिर वह पीठ फेरकर जाने लगा तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया इस मर्द ने फ़लाह पा ली यह नजात को पहुँच गया। फिर फ़र्माया ज़रा उसे बुला लाना। वह हाज़िर हुआ तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया मुझे बक़रईद का हुक्म किया गया है, इस दिन को अल्लाह तआला ने उम्मत की ईद का दिन बनाया है, तो उस शख़्स ने कहा कि अगर मेरे पास क़ुर्बानी का जानवर न हो और किसी शख़्स ने मुझे दूध पीने के लिए कोई जानवर तोहफ़तन दिया हो तो क्या मैं उसे ज़िब्ह कर डालूँ? फ़र्माया नहीं! नहीं! फिर तो तू अपने बाल कतरवा, नाख़ुन काट, मूँछें पस्त करा, ज़ेरे नाफ़ के बाल ले, अल्लाह तआला अज़्ज़ व जल्ल के नज़दीक तेरी पूरी क़ुर्बानी यही है।'' (अहमद : 2/196; अबूदाऊद, किताब शहरु रमज़ान, बाब तहज़ीबुल क़ुरआन : 1399; वसनदुहू हसन) यह हदीस मुस्नद अहमद, अबूदाऊद और नसाई में भी है।

तिर्मिज़ी की और हदीस में है कि ''रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं कि जो शख़्स इस सूरह को पढ़े तो उसे आधा क़ुरआन पढ़ने का सवाब मिलता है।'' (तिर्मिज़ी, किताब फ़ज़ाइले क़ुरआन, बाब मा जाअ फ़ी इज़ा ज़ुल्ज़िला : 2893; वसनदुहू ज़ईफ़ुन; हसन बिन सलम रावी मज्हूल है।) यह हदीस ग़रीब है और रिवायत में है कि (इज़ा ज़ुल्ज़िलति) आधे क़ुरआन के बराबर है और (क़ुल हुवल्लाहु अहद) तिहाई क़ुरआन के बराबर है और (क़ुल या अय्यहुल काफ़िरून) चौथाई क़ुरआन के बराबर है।'' (तिर्मिज़ी, किताब फ़ज़ाइले क़ुरआन, बाब मा जाअ फ़ी इज़ा ज़ुल्ज़िला : 2894; वसनदुहू ज़ईफ़ुन यमान बिन मुग़ीरा ज़ईफ़ रावी है।) यह हदीस भी ग़रीब है और हदीस में है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने अपने सहाबियों में से एक से फ़र्माया कि ''क्या तुमने निकाह कर लिया? उसने कहा, नहीं! हुज़ूर (ﷺ) मेरे पास इतना है ही नहीं जो मैं अपना निकाह कर सकूँ। आप (ﷺ) ने फ़र्माया (क़ुल हुवल्लाहु) तेरे साथ नहीं? उसने कहा, हाँ यह तो है। फ़र्माया तिहाई क़ुरआन यह हुआ। फ़र्माया क्या (इज़ा जाअ) नहीं? कहा, वह भी है। फ़र्माया चौथाई क़ुरआन यह हुआ। फ़र्माया क्या (क़ुल या अय्युहल काफ़िरून) याद नहीं? कहा हाँ! फ़र्माया चौथाई क़ुरआन के बराबर यह है, जा अब निकाह कर ले।'' (तिर्मिज़ी, किताब फ़ज़ाइले क़ुरआन, बाब मा जाअ फ़ी इज़ा ज़ुल्ज़िलति : 2895; वसनदुहू ज़ईफ़ुन; सलमा बिन वरदान रावी ज़ईफ़ है।) यह हदीस हसन है, यह तीनों हदीसें सिर्फ़ तिर्मिज़ी में हैं।

***

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

तर्जुमा : "शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है।"

***

إِذَا زُلْزِلَتِ الْأَرْضُ زِلْزَالَهَا ﴿١﴾ وَأَخْرَجَتِ الْأَرْضُ أَثْقَالَهَا ﴿٢﴾ وَقَالَ الْإِنْسَانُ مَا لَهَا ﴿٣﴾ يَوْمَئِذٍ تُحَدِّثُ أَخْبَارَهَا ﴿٤﴾ بِأَنَّ رَبَّكَ أَوْحَىٰ لَهَا ﴿٥﴾ يَوْمَئِذٍ يَصْدُرُ النَّاسُ أَشْتَاتًا لِيُرَوْا أَعْمَالَهُمْ ﴿٦﴾ فَمَنْ يَعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَيْرًا يَرَهُ ﴿٧﴾ وَمَنْ يَعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ شَرًّا يَرَهُ ﴿٨﴾

तर्जुमा : "जब ज़मीन पूरी तरह झिंझोड़ दी जाएगी। (1) और अपने बोझ बाहर निकाल फेंकेगी (2) इंसान कहने लगेगा कि इसे क्या हो गया? (3) उस दिन ज़मीन अपनी सब ख़बरें बयान कर देगी (4) इसलिए कि तेरे रब ने उसे यह हुक्म दिया होगा (5) उस दिन लोग मुख़्तलिफ़ जमाअतें होकर वापिस लोटेंगे ताकि उन्हें उनके आमाल दिखा दिये जाएँ। (6) पस जिसने ज़र्रे बराबर नेकी की होगी वह उसे देख लेगा (7) और जिसने ज़र्रे बराबर बुराई की होगी वह उसे देख लेगा।" (8)

जब ज़मीन पर ज़लज़ला आएगा (आ. 1 से 8) : ज़मीन नीचे से ऊपर तक कपकपाने लगेगी और जितने मुर्दे उसमें हैं सब निकाल फेंकेगी, जैसे और जगह है (يَا أَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوا رَبَّكُمْ ۚ إِنَّ زَلْزَلَةَ السَّاعَةِ شَيْءٌ عَظِيمٌ) (22/हज्ज : 1) लोगों! अपने रब से डरो, यक़ीन मानो कि क़ियामत का ज़लज़ला उस दिन की भौचाल बड़ी चीज़ है, और जगह इर्शाद है (وَإِذَا الْأَرْضُ مُدَّتْ ﴿٣﴾ وَأَلْقَتْ مَا فِيهَا وَتَخَلَّتْ ﴿٤﴾) (84/इंशिक़ाक़ : 3, 4) जबकि ज़मीन खींच खांचकर बराबर हमवार कर दी जाएगी, और उसमें जो कुछ है वह उसे बाहर उगल देगी और बिल्कुल ख़ाली हो जाएगी। सहीह मुस्लिम में है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं "ज़मीन अपने कलेजे के टुकड़ों को उगल देगी सोना चाँदी मिस्ल सतूनों के बाहर निकल पड़ेगा, क़ातिल उसे देखकर अफ़सोस करता हुआ कहेगा कि हाय! इसी माल के लिए मैंने फ़लाँ को क़त्ल किया था आज यह यूँ इधर उधर

रुल रहा है कोई आँख भरकर देखता भी नहीं, इसी तरह सिलारहमी तोड़ने वाला भी कहेगा कि इसी की मुहब्बत में आकर रिश्तेदारों से मैं सुलूक नहीं करता था, चोर भी कहेगा कि इसी की मुहब्बत में मैंने हाथ कटवा दिये ग़र्ज़ कि वह माल यूँ ही रुलता फिरेगा कोई नहीं लेगा।'' (सहीह मुस्लिम, किताबुज़्ज़कात, बाब अत्तर्ग़ीबु फ़िस्सदक़ति क़ब्ल अल्ला यूजद मंय्युक़्बलहा : 1013; तिर्मिज़ी : 2208; इब्ने हिब्बान : 6697) इंसान उस वक़्त हक्का बक्का रह जाएगा और कहेगा कि यह तो हिलने जुलने वाली न थी बिलकुल ठहरी हुई बोझल और जमी हुई थी, उसे क्या हो गया कि यूँ बीद की तरह थर्राने लगी और साथ ही जब देखेगा कि तमाम अगली पिछली लाशें भी ज़मीन ने उगल दीं तो और हैरान व परेशान हो जाएगा कि आख़िर इसे क्या हो गया है?पस ज़मीन बिलकुल बदल दी जाएगी और आसमान भी, और सब लोग उस क़ह्हार अल्लाह के सामने खड़े हो जाएँगे, ज़मीन खुले तौर पर साफ़ साफ़ गवाही देगी कि फ़लाँ फ़लाँ शख़्स ने फ़लाँ फ़लाँ नाफ़र्मानी उस पर की है। हुज़ूर (ﷺ) ने इस आयत की तिलावत करके फ़र्माया, ''जानते भी हो कि ज़मीन की बयानकर्दा ख़बरें क्या होंगी? लोगों ने कहा अल्लाह तआला और उसके रसूल (ﷺ) ही को ख़ूब इल्म है, तो आपने फ़र्माया जो जो आमाल बनी आदम ने ज़मीन पर किये हैं वह तमाम वह ज़ाहिर कर देगी कि फ़लाँ फ़लाँ शख़्स ने फ़लाँ नेकी या बदी फ़लाँ जगह फ़लाँ वक़्त की है।'' (तिर्मिज़ी, किताब तफ़्सीरुल क़ुरआन, बाब वमिन सूरति इज़ा ज़ुल्ज़िलतिल अर्ज़ : 3353; वसनदुहू ज़ईफ़ुन; यह्या बिन अबी सुलेमान जुम्हूर के नज़दीक ज़ईफ़ रावी है। अहमद : 4/374; हाकिम : 2/256) इमाम तिर्मिज़ी (रह.) इस हदीस को हसन सहीह ग़रीब बतलाते हैं।

ज़मीन तमाम राज़ खोल देगी : मुअजम तब्रानी में है कि आप (ﷺ) ने फ़र्माया, ''ज़मीन से बचो यह तुम्हारी माँ है जो शख़्स जो नेकी बदी उस पर करता है। यह सब खोलकर बयान कर देगी।'' (मुअजमुल कबीर : 4596; वसनदुहू ज़ईफ़ुन; मज्मउज़्ज़वाइद : 1/241) यहाँ वह़ी से मुराद हुक्म देना है (औहा) और इसके हम मअनी अफ़आल का सिला हर्फ़े लाम भी आता है (इला) भी। मतलब यह है कि अल्लाह तआला उसे कहेगा कि बता और वह बताती जाएगी, उस दिन लोग हिसाब की जगह से मुख़्तलिफ़ क़िस्मों की जमाअतें बन बनकर लौटेंगे, कोई बुरा होगा कोई नेक, कोई जन्नती होगा कोई जहन्नमी। यह मअनी भी हैं कि यहाँ से जो अलग अलग होंगे तो फिर इज्तिमाअ न होगा। यह इसलिए कि वह अपने आमाल को जान लें और भलाई बुराई का बदला पा लें इसीलिए आख़िर में बयान कर दिया। रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं कि ''घोड़ों वाले तीन क़िस्म के हैं, एक अज्र पाने वाला, एक पर्दापोशी वाला, एक बोझ और गुनाह वाला। अज्र वाला तो वह है जो घोड़ा पालता है जिहाद की निय्यत से अगर उसके घोड़े की अगाड़ी पछाड़ी ढीली हो गई और यह इधर उधर से चरता रहा तो यह भी घोड़े वाले के लिए अज्र का बाइस है और अगर यह रस्सी उसकी टूट गई और यह इधर उधर चढ़ गया तो उसके निशाने क़दम और उसकी लीद का भी उसे सवाब मिलता है अगर यह किसी नहर पर जाकर पानी पी ले गो इरादा पिलाने का न हो ताहम सवाब मिल जाता है, यह घोड़ा तो उस शख़्स के लिए सरासर अज्रो सवाब है, दूसरा वह शख़्स जिसने इसलिए पाल रखा है कि दूसरों से बेपरवाह रहे और किसी से सवाल की ज़रूरत न हो लेकिन अल्लाह का हक़ न तो ख़ुद उसमें भूलता है न उसकी सवारी में पस यह उसके

लिए पर्दा है। तीसरा वह शख़्स है जिसने फ़ख़्र व रियाकारी और ज़ुल्मो सितम के लिए पाल रखा है पस यह उसके ज़िम्मे बोझ और उस पर गुनाह का भार है। फिर हुज़ूर (ﷺ) से सवाल हुआ कि गधों के बारे में क्या हुक्म है? आप (ﷺ) ने फ़र्माया मुझ पर अल्लाह तआला की जानिब से सिवा उस तंहा और जामेअ़ आयत के और कुछ नाज़िल नहीं हुआ कि ज़र्रे बराबर नेकी इतनी ही बदी हर शख़्स देख लेगा।" (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरह इज़ा ज़ुल्ज़िलतिल अर्ज़ बाब क़ौलुहू (फ़मंय्यअ़मल मिस्क़ाल ज़र्रतिन ख़ैरंय्यरा) : 4962; सहीह मुस्लिम : 987; मौत़ा : 2/444; इब्ने हिब्बान : 4672)

हज़रत सअसआ बिन मुआविया (रज़ि.) ने तो हुज़ूर (ﷺ) की ज़ुबानी यह आयत सुनकर कह दिया था कि सिर्फ़ यही आयत काफ़ी है और ज़्यादा अगर न भी सुनों तो कोई ज़रूरत नहीं। (अहमद : 5/59; वसनदुहू ज़ईफ़ुन; अल्हसनुल बसरी मुदल्लस वलम युसर्रिह बिस्सिमाअ, अस्सुननुल कुब्रा : 11694; हाकिम : 3/613; मज्मउज़्ज़वाइद : 7/141; मुअजम कबीर : 7411; अल्आहाद वल्मसानी लि इब्ने अबी आसिम : 1197) सहीह बुख़ारी में बरिवायत हज़रत अदी बिन हातिम (रज़ि.) मरवी है कि "आग से बचो अगरचे आधी खजूर का सदक़ा ही हो।" (सहीह बुख़ारी, किताबुत् तौहीद, बाब कलामुर्रब्बे तआला यौमल क़ियामति मअल अम्बिया व ग़ैरहुम : 7512; सहीह मुस्लिम : 1016; अहमद : 4/256; इब्ने हिब्बान : 473) इसी तरह सहीह हदीस में है कि "नेकी के काम को हल्का न समझो गो इतना ही काम हो कि तू अपने डोल में से ज़रा सा पानी किसी प्यासे को पिलवा दे या अपने किसी मुसलमान भाई से कुशादा रूई और ख़ंदा पेशानी से मुलाक़ात कर ले।" (अहम्द : 5/63; वसनदुहू ज़ईफ़ुन; यूनुस बिन उबेद अन्अन व फ़ीहि इल्लतुन उख़रा इस मअनी की रिवायात सहीह मुस्लिम, किताबुल बिर्र वस्सिला, बाब इस्तिहबाबु तलाक़तिल वज्ह इन्दल् लिक़ाइ : 2626; तिर्मिज़ी : 1833; वग़ैरह में मौजूद हैं।) दूसरी एक सहीह हदीस में है कि "ईमान वाली औरतों! तुम अपनी पड़ोसन के भेजे हुए तोहफ़े हदिये को हक़ीर न समझो भले एक खुर ही आया हो।" (सहीह बुख़ारी, किताबुल अदब, बाब ला तहक़रना जारतुन लि जारतिहा : 6017; सहीह मुस्लिम : 1030) और हदीस में है कि "साइल को कुछ न कुछ दे दो भले जला हुआ खुर ही हो।" (नसाई, किताबुज़्ज़कात, बाब रद्दुस्साइल : 2566; वसनदुहू सहीहुन; अहमद : 6/435)

मुस्नद अहमद की हदीस में है कि "ऐ आइशा! गुनाहों को हक़ीर न समझो याद रखो कि उनका भी अल्लाह हिसाब लेने वाला है।" (इब्ने माजा, किताबुज़्ज़ुहद, बाब ज़िक्रुज़्ज़ुनूबि : 4243; वहुव सहीहुन; अहमद : 6/151; दारमी : 2/303)

इब्ने जरीर में है कि हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) जनाब रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ खाना खा रहे थे कि "यह आयत उतरी तो हज़रत सिद्दीक़ (रज़ि.) ने खाने से हाथ उठा लिया और पूछने लगे कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! क्या मैं एक एक ज़र्रे बराबर बुराई का बदला दिया जाऊँगा तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया ऐ सिद्दीक़ (रज़ि.)! दुनिया में जो जो तक्लीफ़ें तुम्हें पहुँची हैं यह तो उसमें आ गईं और नेकियाँ तुम्हारे लिए

अल्लाह के यहाँ ज़ख़ीरा बनी हुई हैं और इन सबका पूरा पूरा बदला क़ियामत के दिन तुम्हें दिया जाएगा।'' (तब्री, यह रिवायत मुर्सल यानी ज़ईफ़ है।) इब्ने जरीर की एक और रिवायत में है कि, ''यह सूरत हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) की मौजूदगी में नाज़िल हुई थी आप उसे सुनकर बहुत रोये। हुज़ूर (ﷺ) ने सबब पूछा तो आप (रज़ि.) ने फ़र्माया मुझे ये सूरत रुला रही है। आप (ﷺ) ने फ़र्माया अगर तुम ख़ता और गुनाह न करते कि तुम्हें बख़्शा जाए और माफ़ किया जाए तो अल्लाह तआला किसी और उम्मत को पैदा करता जो ख़ता और गुनाह करते और अल्लाह उन्हें बख़्शता।'' (इब्ने अबी जरीर सनदुहू हसन; शुअबुल ईमान : 7103; मज्मउज़्ज़वाइद : 7/141)

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने हुज़ूर (ﷺ) से यह आयत सुनकर पूछा कि ''हुज़ूर (ﷺ)! क्या मुझे अपने सारे आमाल देखने पड़ेंगे? आप (ﷺ) ने फ़र्माया, हाँ! पूछा बड़े बड़े फ़र्माया हाँ! पूछा और छोटे छोटे भी फ़र्माया हाँ! मैं ने कहा, हाय अफ़सोस! आप (ﷺ) ने फ़र्माया, अबू सईद! ख़ुश हो जाओ नेकी तो दस गुने से लेकर सात सौ गुने तक बल्कि उससे भी ज़्यादा तक अल्लाह जिसे चाहे देगा हाँ! गुनाह उसी के बराबर होंगे या अल्लाह तआला उसे भी बख़्श देगा। सुनो! किसी शख़्स को सिर्फ़ उसके आमाल न नजात दे सकेंगे। मैंने कहा हुज़ूर (ﷺ)! आपको भी नहीं? फ़र्माया, मुझे भी नहीं मगर यह कि अल्लाह तबारक व तआला अपनी रहमत से मुझे ढाँप ले।'' (इब्ने अबी हातिम, वसनदुहू ज़ईफ़ुन) इसके रावियों में एक इब्ने लहीआ हैं। यह रिवायत सिर्फ़ उन्हीं से मरवी है।

हर अमल का बदला मिलेगा : हज़रत सईद बिन जुबेर (रह.) फ़र्माते हैं कि जब आयत (وَيُطْعِمُونَ الطَّعَامَ عَلَىٰ حُبِّهِ) (76/दहर : 8) नाज़िल हुई यानी माल की मुहब्बत के बावजूद मिस्कीन यतीम और क़ैदी को खाना खिलाते हैं तो लोग यह समझ गए कि अगर हम थोड़ी सी चीज़ अल्लाह की राह में दे देंगे तो कोई सवाब न मिलेगा। मिस्कीन उनके दरवाज़े पर आता लेकिन एक आध खजूर का टुकड़ा वग़ैरह देने को हिक़ारत ख़्याल करके यूँ ही लौटा देते थे कि अगर दें तो कोई अच्छी महबूब व मरग़ूब चीज़ दें। इधर तो इस ख़्याल की यह एक जमाअत थी, दूसरी जमाअत वह थी जिन्हें यह ख़्याल पैदा हो गया था कि छोटे छोटे गुनाहों पर पकड़ न होगी मस्लन कभी कोई झूठ बात कह दी कभी इधर उधर नज़रें डाल लीं कभी ग़ीबत कर ली वग़ैरह जहन्नम की वईद तो कबीरा गुनाहों पर है तो यह आयत (फ़मंय्यअमल) नाज़िल हुई और उन्हें यह बतलाया गया कि छोटी सी नेकी को हक़ीर न समझो यह बड़ी होकर मिलेगी और थोड़े से गुनाह को भी बेजान न समझो कहीं थोड़ा थोड़ा मिलकर बहुत न बन जाए।'' ज़र्रतिन के मअनी छोटी चींटी के हैं, यानी नेकियों और बुराइयों को छोटी से छोटी और बड़ी से बड़ी अपने नामाए आमाल में देख लेगा, बदी तो एक ही लिखी जाती है नेकी एक के बदले दस बल्कि जिसके लिए अल्लाह चाहे उससे भी बहुत ज़्यादा बल्कि उन नेकियों के बदले बुराइयाँ भी माफ़ हो जाती हैं, एक एक नेकी के बदले दस दस बुराइयाँ माफ़ हो जाती हैं, फिर यह भी है कि जिसकी नेकी बुराई से एक ज़र्रे के बराबर बढ़ गई वह जन्नती हो गया, रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं कि ''गुनाहों को हल्का न समझा करो यह सब जमा होकर आदमी को हलाक कर डालते हैं।''

रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उन बुराइयों की मिसाल बयान की कि "जैसे कुछ लोग किसी जगह उतरे फिर एक एक दो दो लकड़ियाँ चुन लाए तो लकड़ियों का ढेर लग जाएगा फिर अगर उन्हें सुलगाई जाएँ तो उस आग में जो चाहें पका सकते हैं।" (अहमद : 1/402; ह : 3818; वसनदुहू ज़ईफ़ुन; क़तादा मुदल्लस व अन्अन; अल्मुअजम कबीर : 10500) (इसी तरह थोड़े थोड़े गुनाह बहुत ज़्यादा होकर आग का काम करते हैं और इंसान को जला देते हैं।)

अल्हम्दुलिल्लाह! सूरह ज़िल्ज़ाल की तफ़्सीर मुकम्मल हुई।

***

FLOW CHART
तरतीबी नक्श-ए-रब्त

MACRO-STRUCTURE
नज़्मे-जली

सूरह आदियात - 100

आयात : 11, मक्की, पैराग्राफ : 2

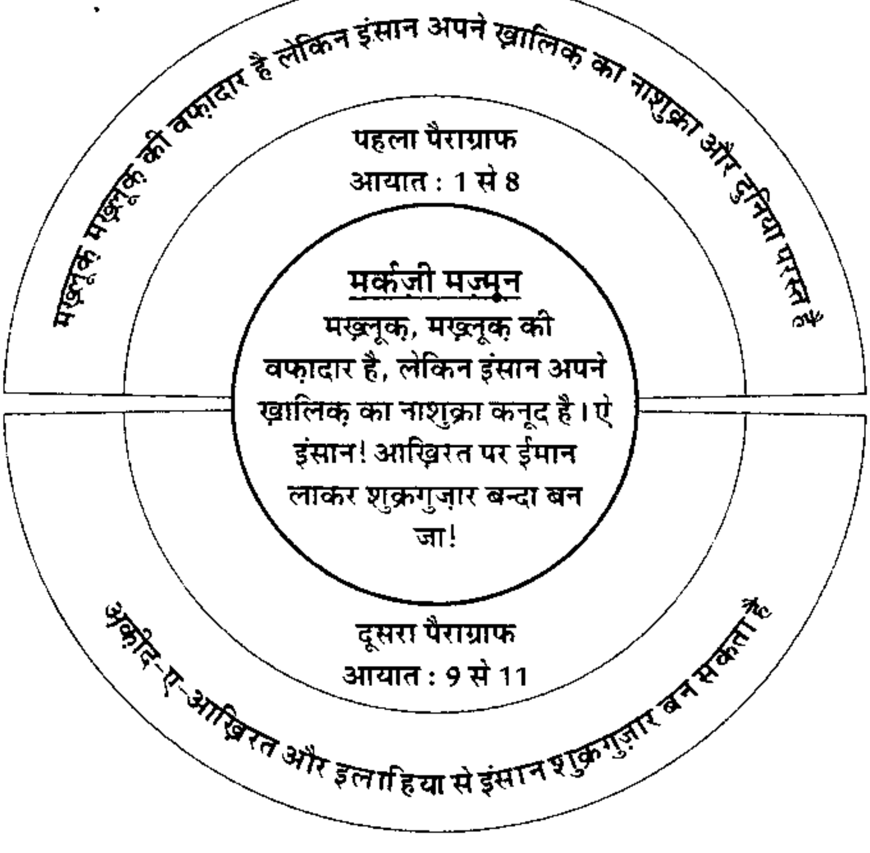

ज़मानए नुज़ूल

सूरह आदियात क़ियामे मक्का के पहले दौर (0-3 नबवी) में नाज़िल हुई, जब इस्लाम की दावत ख़ुफ़िया तौर पर दी जा रही थी और जब आप (सल्ल.) पर आला अदबी उस्लूब में मुख़्तसर, मुहकम और जामेअ़ सूरतें नाज़िल की जा रही थीं।

तफ़्सीर सूरह आदियात

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ ○

तर्जुमा : ''शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है।''

***

وَالۡعٰدِيٰتِ ضَبۡحًا ۙ‏ ① فَالۡمُوۡرِيٰتِ قَدۡحًا ۙ‏ ② فَالۡمُغِيۡرٰتِ صُبۡحًا ۙ‏ ③ فَاَثَرۡنَ بِهٖ
نَقۡعًا ۙ‏ ④ فَوَسَطۡنَ بِهٖ جَمۡعًا ۙ‏ ⑤ اِنَّ الۡاِنۡسَانَ لِرَبِّهٖ لَكَنُوۡدٌ ۚ‏ ⑥ وَاِنَّهٗ عَلٰى ذٰلِكَ
لَشَهِيۡدٌ ۚ‏ ⑦ وَاِنَّهٗ لِحُبِّ الۡخَيۡرِ لَشَدِيۡدٌ ؕ‏ ⑧ اَفَلَا يَعۡلَمُ اِذَا بُعۡثِرَ مَا فِى الۡقُبُوۡرِ ۙ‏ ⑨
وَحُصِّلَ مَا فِى الصُّدُوۡرِ ۙ‏ ⑩ اِنَّ رَبَّهُمۡ بِهِمۡ يَوۡمَٮِٕذٍ لَّخَبِيۡرٌ ⑪

तर्जुमा : ''हाँपते हुए दौड़ने वाले घोड़ों की क़सम (1) फिर टाप मारकर आग झाड़ने वालों की (2) फिर सुबह के वक़्त धावा बालने वालों की (3) पस उस वक़्त गुबार उड़ाते हैं (4) फिर फ़ौजों के बीच घुस जाते हैं (5) यक़ीनन इंसान अपने रब का बड़ा नाशुक्रा है (6) और यक़ीनन वह ख़ुद भी उससे बाख़बर है (7) यह माल की मुहब्बत में भी बड़ा सख़्त है (8) क्या उसे वह वक़्त मालूम नहीं जब क़ब्रों के मुर्दे उठा खड़े कर दिये जाएँगे (9) और सीनों की पोशीदा बातें ज़ाहिर कर दी जाएँगी (10) बेशक इनका रब उस दिन इनके हाल से पूरा बाख़बर होगा।'' (11)

मुजाहिदीन के घोड़ों की फ़ज़ीलत (आयत : 1 से 11) : मुजाहिदीन के घोड़े जबकि अल्लाह की राह के लिए हाँपते और हिनहिनाते हुए दौड़ते हैं उनकी अल्लाह तबारक व तआला क़सम खाता है, फिर उस तेज़ी में दौड़ते हुए पत्थरों के साथ उनके नअ़ल का टकराना और उस रगड़ से आग की चिंगारियाँ उड़ना फिर सुबह के वक़्त दुश्मन पर उनका छापा मारना और दुश्मनाने रब को तहो बाला करना। हुज़ूर (ﷺ) की यही आदते मुबारका थी कि दुश्मन की किसी बस्ती पर आप (ﷺ) जाते तो वहाँ रात को ठहरकर कान लगाकर सुनते अगर अज़ान की आवाज़ आ गई तो आप (ﷺ) रुक जाते। न आती तो लश्कर को हुक्म देते कि बज़न

बोल दें। (सहीह मुस्लिम, किताबुस्सलात, बाब अल्इम्साकु अनिल अग़ारति अला क़ौमि...: 382) फिर उन घोड़ों का गर्दो गुबार उड़ाना और उन सबका दुश्मनों के बीच घुस जाना, उन सब चीज़ों की क़सम खाकर फिर मज़्मून को शुरू करता है। हज़रत अब्दुल्लाह (रज़ि.) से मरवी है कि (वल्आदियात) से मुराद ऊँट हैं , हज़रत अली (रज़ि.) भी यही फ़र्माते हैं।

हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) का यह क़ौल है कि इससे मुराद घोड़े हैं। जब हज़रत अली (रज़ि.) को मालूम हुआ तो आपने फ़र्माया, "घोड़े हमारे पास बद्र वाले दिन थे ही कब? यह तो इस छोटे लश्कर में था जो भेजा गया था" हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) एक मर्तबा हतीम में बैठे हुए थे कि एक शख़्स ने आकर इस आयत की तफ़्सीर पूछी तो आपने फ़र्माया इससे मुराद मुजाहिदीन के घोड़े हैं जो बवक़्ते जिहाद दुश्मनों पर धावा बोलते हैं फिर रात के वक़्त यह घोड़े सवार मुजाहिद अपने केम्प में आकर खाने पकाने के लिए आग जलाते हैं। वह यह पूछकर हज़रत अली (रज़ि.) के पास गया आप उस वक़्त ज़मज़म का पानी लोगों को पिला रहे थे। उसने आपसे भी यही सवाल किया। आपने फ़र्माया मुझसे पहले किसी और से भी तुमने पूछा है? कहा हाँ! (हज़रत) इब्ने अब्बास (रज़ि.) से पूछा है, तो उन्होंने फ़र्माया मुजाहिदीन के घोड़े हैं जो अल्लाह की राह में हमला करें। हज़रत अली (रज़ि.) ने फ़र्माया, जाना ज़रा उन्हें मेरे पास बुला लाना। जब वह आ गए तो हज़रत अली (रज़ि.) ने फ़र्माया तुम्हें मालूम नहीं और तुम लोगों को फ़त्वा दे रहे हो। अल्लाह की क़सम! पहला ग़ज़्वा इस्लाम में बद्र का हुआ उस लड़ाई में हमारे साथ सिर्फ़ दो घोड़े थे, एक हज़रत ज़ुबैर (रज़ि.) का, दूसरा हज़रत मिक़्दाद (रज़ि.) का तो आदियाति ज़ब्हन यह कैसे हो सकते हैं , इससे मुराद तो अरफ़ात से मुज़दलिफ़ा की तरफ़ जाने वाले और फिर मुज़दलिफ़ा से मिना की तरफ़ जाने वाले हैं। हज़रत अब्दुल्लाह (रज़ि.) फ़र्माते हैं यह सुनकर मैंने अपने अगले क़ौल से रुजूअ कर लिया और हज़रत अली (रज़ि.) ने जो फ़र्माया था वही कहने लगा।" (इब्ने अबी हातिम व इब्ने जरीर व सनदुहू हसन; अबू मुआविया बजली हुव अम्मारा बिन मुआविया हसनुल हदीस वस्सक़हुल जुम्हूर) मुज़दलिफ़ा में पहुँचकर हाजी भी अपनी हँडिया रोटी के लिए आग जलाते हैं। ग़र्ज़ हज़रत अली (रज़ि.) का फ़र्मान यह हुआ कि इससे मुराद ऊँट हैं और यही क़ौल एक जमाअत का है जिनमें इब्राहीम, उबेद बिन उमेर वग़ैरह हैं, और हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) से घोड़े मरवी है।

सुबह के वक़्त हमला करने वाले घोड़ों का ज़िक्र : मुजाहिद, इक्रिमा, अता, क़तादा, ज़ह्हाक (रहि.) भी यही कहते हैं और इमाम इब्ने जरीर (रह.) भी इसी को पसंद करते हैं, बल्कि हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) और हज़रत अता (रह.) से मरवी है कि ज़ब्ह यानी हाँपना किसी जानवर के लिए नहीं होता सिवा घोड़े और कुत्ते के, इब्ने अब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं कि उनके मुँह से हाँपते हुए जो आवाज़ उह उह निकलती है यही सुबह है। और दूसरे जुम्ले के एक तो मअनी यह किये गए हैं कि उन घोड़ों की टापों का पत्थर से टकराकर आग पैदा करना और दूसरे मअनी यह भी किये गए हैं कि उनके सवारों का लड़ाई की आग को भड़काना, और यह भी कहा गया है कि लड़ाई में मकरूह धोखा करना, और यह भी मरवी है कि रातों को अपनी क़यामगाह पहुँचकर आग रोशन करना और मुज़दलिफ़ा में हाजियों का मग़्रिब के बाद पहुँचकर आग जलाना।

इमाम इब्ने जरीर (रह.) फ़र्माते हैं मेरे नज़दीक सबसे ज़्यादा ठीक क़ौल यही है कि घोड़ों की टापों और सुमों का पत्थर से रगड़ खाकर आग पैदा करना, फिर सुबह के वक़्त मुजाहिदीन का दुश्मनों पर अचानक टूट पड़ना और जिन साहिबान ने इससे मुराद ऊँट लिये हैं वह फ़र्माते हैं कि इससे मुराद मुज़दलिफ़ा से मिना की तरफ़ सुबह को जाना है, फिर यह सब कहते हैं कि फिर उनका जिस मकान में यह उतरे हैं ख़्वाह जिहाद में हों या हज्ज में गुबार उड़ाना फिर उन मुजाहिदीन का कुफ़्फ़ार की फ़ौजों में दर्राना घुस जाना और चीरते फाड़ते मारते पछाड़ते उनके बीच लश्कर में पहुँच जाना, और यह भी मुराद हो सकती है कि सब जमा होकर उस जगह दरम्यान में आ जाते हैं तो उस सूरत में जम्अन हाल मुअकिदा होने की वजह से मंसूब होगा। अबूबक्र बज़्ज़ार मे इस जगह एक ग़रीब हदीस है जिसमें है कि हुज़ूर (ﷺ) ने एक लश्कर भेजा था एक महीना गुज़र गया लेकिन उसकी कोई ख़बर न आई उस पर यह आयतें उतरीं और उस लश्कर की अल्लाह तआला ने ख़बर दी कि उनके घोड़े हाँपते हुए तेज़ चाल से गए उनके सुमों की टक्कर से चिंगारियाँ उड़ रही थीं उन्होंने सुबह ही सुबह दुश्मनों पर पूरी यल्ग़ार के साथ हमला कर दिया उनकी टापों से गर्द उड़ रहा था फिर ग़ालिब आकर सब जमा होकर बैठ गए। (मुस्नदे बज़्ज़ार : 2291; वसनदुहू ज़ईफ़ुन; मज्मउज़्ज़वाइद : 5/115 इसकी सनद में हफ़्स बिन जमीअ उजली ज़ईफ़ रावी है देखिए (तक़रीबुत्तहज़ीब वग़ैरह) इन क़समों के बाद अब वह मज़मून बयान हो रहा है जिस पर क़समें खाई गई थीं कि इंसान अपने रब की नेअमतों का क़द्रदान नहीं, अगर कोई दुख दर्द किसी वक़्त आ गया तो वह बख़ूबी याद है लेकिन अल्लाह तबारक व तआला की हज़ार हा नेअमतें जो हैं सबको भुलाए बैठा है।

इब्ने अबी हातिम में हदीस है कि (कुनूद) वह है जो तंहा खाये गुलामों को मारे एहसान व सुलूक न करे। (मुअजम कबीर : 7778, 7958; वसनदुहू ज़ईफ़ुन; अबू अम्र जअफ़र बिन ज़ुबैर मतरूक, मज्मउज़्ज़वाइद : 7/142; इसकी सनद में जअफ़र बिन ज़ुबैर मतरूक रावी है (अल्मीज़ान : 1/406; रक़म : 1502) इसकी इस्नाद ज़ईफ़ है। फिर फ़र्माया अल्लाह तआला इस पर गवाह है। और यह भी हो सकता है कि यह ख़ुद इस बात पर अपना गवाह आप है, इसकी नाशुक्री इसके अफ़्आल व अक़्वाल से साफ़ ज़ाहिर है जैसे और जगह है (شَاهِدِينَ عَلَىٰ أَنفُسِهِم بِالْكُفْرِ) (9/तौबा : 17) यानी मुश्रिकीन से अल्लाह तआला की मस्जिदों की आबादी नहीं हो सकती जबकि यह अपने कुफ़्र के आप गवाह हैं। फिर फ़र्माया यह माल की चाहत में बड़ा सख़्त है यानी उसे माल की बेहद मुहब्बत है और यह भी मअनी हैं कि इसकी मुहब्बत में फंसकर हमारी राह में ख़र्च करने से जी चुराता है और बुख़्ल करता है, फिर परवरदिगारे आलम इसे दुनिया से बेरग़बत करने और आख़िरत की तरफ़ मुतवज्जह करने के लिए फ़र्मा रहा है कि क्या इंसान को यह मालूम नहीं कि एक वक़्त वह आ रहा है कि जब तमाम मुर्दे क़ब्रों से निकल खड़े होंगे और जो कुछ बातें छुपी हुई थीं सब ज़ाहिर हो जाएँगी। सुन लो! उनका रब उनके तमाम कामों से बाख़बर है और हर एक अमल का बदला पूरा पूरा देने वाला है, एक ज़र्रे के बराबर वह ज़ुल्म रवा नहीं रखता और न रखे।

अल्हम्दुलिल्लाह! सूरह आदियात की तफ़्सीर मुकम्मल हुई।

FLOW CHART
तरतीबी नक्श-ए-रब्त

MACRO-STRUCTURE
नज़्मे-जली

सूरह क़ारिअह - 101

आयात : 11, मक्की, पैराग्राफ : 2

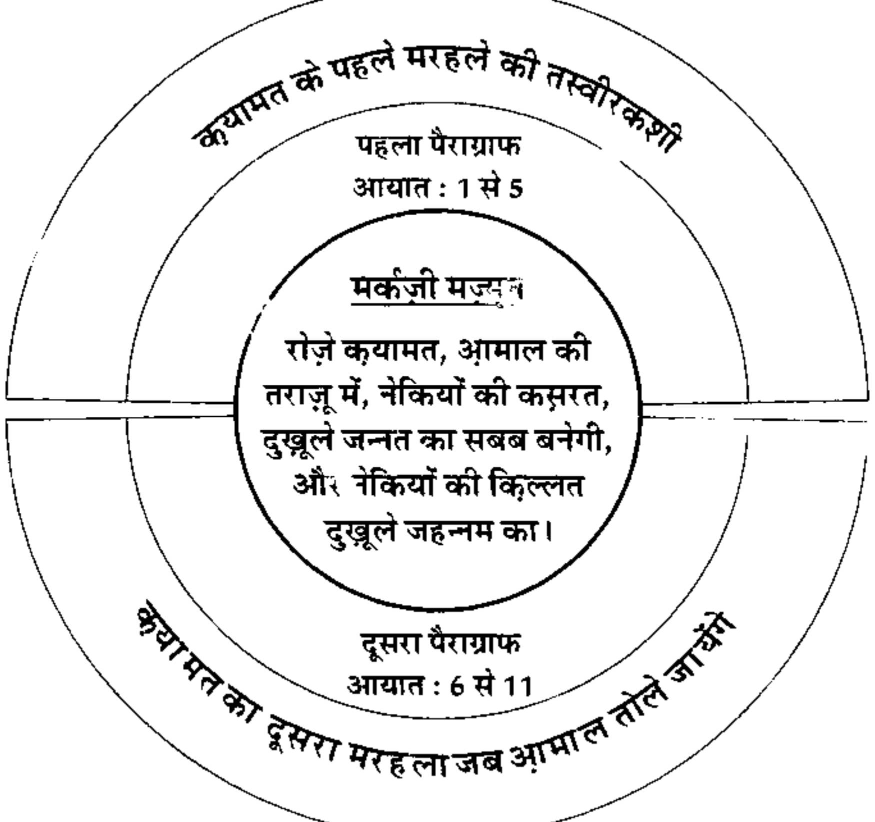

ज़मानए नुज़ूल

सूरह क़ारिअह क़ियामे मक्का के पहले दौर (0–3 नबवी) में नाज़िल हुई, जब इस्लाम की दावत ख़ुफ़िया तौर पर दी जा रही थी और जब आप (सल्ल.) पर आला अदबी उस्लूब में मुख़्तसर, मुहकम और जामेअ़ सूरतें नाज़िल की जा रही थीं।

तफ़्सीर सूरह क़ारिअह

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ○

तर्जुमा : "शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है।"

اَلۡقَارِعَۃُ ① مَا الۡقَارِعَۃُ ② وَمَاۤ اَدۡرٰىکَ مَا الۡقَارِعَۃُ ③ یَوۡمَ یَکُوۡنُ النَّاسُ
کَالۡفَرَاشِ الۡمَبۡثُوۡثِ ④ وَتَکُوۡنُ الۡجِبَالُ کَالۡعِہۡنِ الۡمَنۡفُوۡشِ ⑤ فَاَمَّا مَنۡ
ثَقُلَتۡ مَوَازِیۡنُہٗ ⑥ فَہُوَ فِیۡ عِیۡشَۃٍ رَّاضِیَۃٍ ⑦ وَاَمَّا مَنۡ خَفَّتۡ مَوَازِیۡنُہٗ ⑧
فَاُمُّہٗ ہَاوِیَۃٌ ⑨ وَمَاۤ اَدۡرٰىکَ مَا ہِیَہۡ ⑩ نَارٌ حَامِیَۃٌ ⑪

तर्जुमा : "खड़खड़ाने वाली (1) क्या है वह खड़खड़ाने वाली (2) तुझे क्या मालूम कि वह खड़खड़ाने वाली क्या है? (3) जिस दिन इंसान परागंदा परवानों की तरह हो जाएँगे (4) और पहाड़ धुनी हुई रंगीन ऊन की तरह हो जाएँगे (5) फिर जिसका पल्ला भारी होगा (6) वह तो ख़ातिर ख़्वाह आराम की ज़िन्दगी में होगा (7) और जिसकी तोल हल्की होगी (8) उसका ठिकाना हाविया है (9) तुझे कौन बताये कि वह क्या है? (10) वह तेजो तन्द आग है।" (11)

क़ियामत खड़खड़ाने वाली है (आयत : 1 से 11) : (क़ारिआ) भी क़ियामत का नाम है जैसे हाक़्क़ा ताम्मा साख़्ख़ा, ग़ाशिया वग़ैरह। इसकी बड़ाई और होलनाकी के बयान के लिए सवाल होता है कि वह क्या चीज़ है? इसका इल्म बग़ैर मेरे बताये किसी को हासिल नहीं हो सकता है। फिर ख़ुद बतलाता है कि उस दिन लोग मुंतशिर और परागंदा हैरानो परेशान इधर उधर घूम रहे होंगे जिस तरह परवाने होते हैं जैसे और जगह है (كَاَنَّهُمۡ جَرَادٌ مُّنۡتَشِرٌ) (54/क़मर : 7) गोया वह टिड्डियाँ हैं फैली हुईं। फिर फ़र्माया पहाड़ों का यह हाल होगा कि वह धुनी हुई ऊन की तरह इधर उधर उड़ते नज़र आएँगे। फिर फ़र्माता है उस दिन हर नेक व बुरे का अंजाम ज़ाहिर हो जाएगा, नेकों की बुज़ुर्गी और बुरों की एहानत खुल जाएगी, जिसकी नेकियाँ वज़न में बुराइयों

से बढ़ गईं वह ऐशो आराम की ज़िन्दगी जन्नत में बसर करेगा, और जिसकी बदियाँ नेकियों से बढ़ जाएगी, भलाईयों का पलड़ा हल्का हो गया वह जहन्नमी हो जाएगा, वह मुँह के बल औंधा जहन्नम में गिरा दिया जाएगा। उम्म से मुराद दिमाग़ है, यानी सिर के बल हाविया में जाएगा, और यह भी मअनी हैं कि फ़रिश्ते जहन्नम में उसके सिर पर अज़ाबों की बारिश बरसाएँगे, और यह भी मतलब है कि उसका असली ठिकाना वह जगह है जहाँ उसके लिए क़रारगाह मुक़र्रर किया गया है वह जहन्नम है। (हाविया) जहन्नम का नाम है इसीलिए उसकी तफ़्सीर बयान करते हुए फ़र्माया कि तुम्हें नहीं मालूम कि हाविया क्या है? अब मैं बताता हूँ कि वह शोले मारती भड़कती हुई आग है।

हज़रत अश्अस बिन अ़ब्दुल्लाह (रह़.) फ़र्माते हैं कि मोमिन की मौत के बाद उसकी रूह़ को ईमान वालों की रूहों की तरफ़ ले जाते हैं और फ़रिश्ते उनसे कहते हैं कि अपने भाई की दिलजोई और तस्कीन करो, यह दुनिया के रंजो ग़म में मुब्तला था, अब वह नेक रूहें उससे पूछती हैं कि फ़लाँ का क्या ह़ाल है? वह कहता है कि वह तो मर चुका, क्या तुम्हारे पास नहीं आया? तो यह समझ लेते हैं और कहते हैं कि फूँको इसे वह तो अपनी माँ हाविया में पहुँचा। इब्ने मर्दवे की एक मरफ़ूअ़ ह़दीस में यह बयान ख़ूब विस्तार से है और हमने भी उसे किताब सिफ़तुन्नार में वारिद किया है। अल्लाह तआला हमें अपने फ़ज़्लो करम से उस जहन्नम की आग से नजात दे, आमीन।

आग झुलसा देने वाली : फिर फ़र्माता है कि वह सख़्त तेज़ ह़रारत वाली आग है, बड़े शोले मारने वाली झुलसा देने वाली। रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं "तुम्हारी यह आग तो उसका 70 वाँ ह़िस्सा है। लोगों ने कहा ह़ज़रत! हलाकत को तो यही काफ़ी है, आप (ﷺ) ने फ़र्माया हाँ! लेकिन आतिशे जहन्नम तो इससे 69 ह़िस्से तेज़ है।" स़ह़ीह़ बुख़ारी में यह ह़दीस है और उसमें यह भी है कि हर हर ह़िस्से उस आग जैसा है। (स़ह़ीह़ बुख़ारी, किताब बदउल ख़ल्क़, बाब सिफ़तुन्नारु अन्नहा मख़्लूक़ा : 3265; स़ह़ीह़ मुस्लिम : 2843; मौता : 2/994; इब्ने ह़िब्बान : 7462) मुस्नद अह़मद में भी यह रिवायत मौजूद है। (अह़मद : 2/467; वसनदुहू ह़सन) मुस्नद अह़मद की एक ह़दीस में उसके साथ यह भी है कि "यह आग बावजूद उस आग के 70वाँ ह़िस्सा होने के फिर भी दो बार समुन्द्र के पानी में ठण्डी कर भेजी गई है अगर यह न होता तो इससे भी नफ़ा न उठा सकते।" (अह़मद : 2/244; वहुव ह़दीसुन स़ह़ीह़ुन; मुस्नद ह़ुमैदी बि तह़क़ीक़ी : 1136; वसनदुहू स़ह़ीह़ुन)

और एक ह़दीस में है कि यह आग 100वाँ ह़िस्सा है। (अह़मद : 2/378; वसनदुहू स़ह़ीह़ुन) त़ब्रानी में है कि "जानते हो कि तुम्हारी इस आग और जहन्नम की आग के बीच क्या निस्बत है? तुम्हारी इस आग के धुएँ से भी 70 ह़िस्सा ज़्यादा काली ख़ुद वह आग है। (अल्मुअ़जमुल औसत़ लित्त़ब्रानी : 489; वसनदुहू ज़ईफ़ुन फ़ीहि अह़मद बिन अ़म्र ख़िलाल लम नक़िफ़ अ़ला तर्जुमतिही व बाक़ियुस्सनदु स़ह़ीह़ुन) तिर्मिज़ी और इब्ने माजा ह़दीस है कि "जहन्नम की आग एक हज़ार साल तक जलाई गई तो लाल हो गई फिर एक हज़ार साल तक जलाई गई तो सफ़ेद हो गई, फिर एक हज़ार साल तक जलाई गई तो स्याह हो गई, पस अब वह सख़्त स्याह

और बिलकुल अंधेरे वाली है।'' (तिर्मिज़ी, किताब सिफ़तु जहन्नम, बाब मिन्हू फ़ी सिफ़तिन्नारि व अन्नहा सौदाउ मुज़्लिमा : 2591; वसनदुहू ज़ईफुन; शरीक क़ाज़ी मुदल्लस के सिमाअ की तसरीह नहीं है। इब्ने माजा : 4320)

मुस्नद अहमद की हदीस में है कि ''सबसे हल्के अज़ाब वाला जहन्नमी वह है जिसके पैरों में आग की दो जूतियाँ होंगी जिनसे उसका दिमाग़ खड़खड़ा रहा होगा।'' (अहमद : 2/432; सहीह मुस्लिम, किताबुल ईमान, बाब अहवनु अहलिन्नारि अज़ाबा : 211) बुख़ारी व मुस्लिम में है कि ''आग ने अपने रब से शिकायत की कि ऐ अल्लाह! मेरा एक हिस्सा दूसरे को खाये जा रहा है तो परवरदिगार ने उसे दो साँस लेने की इजाज़त दी, एक जाड़े (सर्दी) में एक गर्मी में, पस सख़्त जाड़ा जो तुम पाते हो उसका सर्द साँस है और सख़्त गर्मी जो पड़ती है यह उसके गर्म साँस का असर है।'' (सहीह बुख़ारी, किताब मवाक़ीतुस्सलात, बाब अल्इब्रादु बिज़्ज़हरि फ़ी शिद्दतिल हर्र : 537; सहीह मुस्लिम : 617; तिर्मिज़ी : 2592; इब्ने माजा : 4319; अहमद : 2/462) और हदीस में है कि ''जब गर्मी शिद्दत की पड़े तो नमाज़ ठण्डी करके पढ़ो। क्योंकि गर्मी की सख़्ती जहन्नम के जोश की वजह से है। (सहीह बुख़ारी, किताब मवाक़ीतुस्सलात, बाब अल्इब्रादु बिज़्ज़हरि फ़ी शिद्दतिल हर्र : 536; सहीह मुस्लिम : 615; अहमद : 2/229; इब्ने हिब्बान : 1506)

अल्हम्दुलिल्लाह! सूरह क़ारिअह की तफ़सीर मुकम्मल हुई।

***

FLOW CHART
तरतीबी नक्शा-ए-रब्त

MACRO-STRUCTURE
नज़्मे-जली

सूरह तकासुर - 102

आयात : 8, मक्की, पैराग्राफ : 2

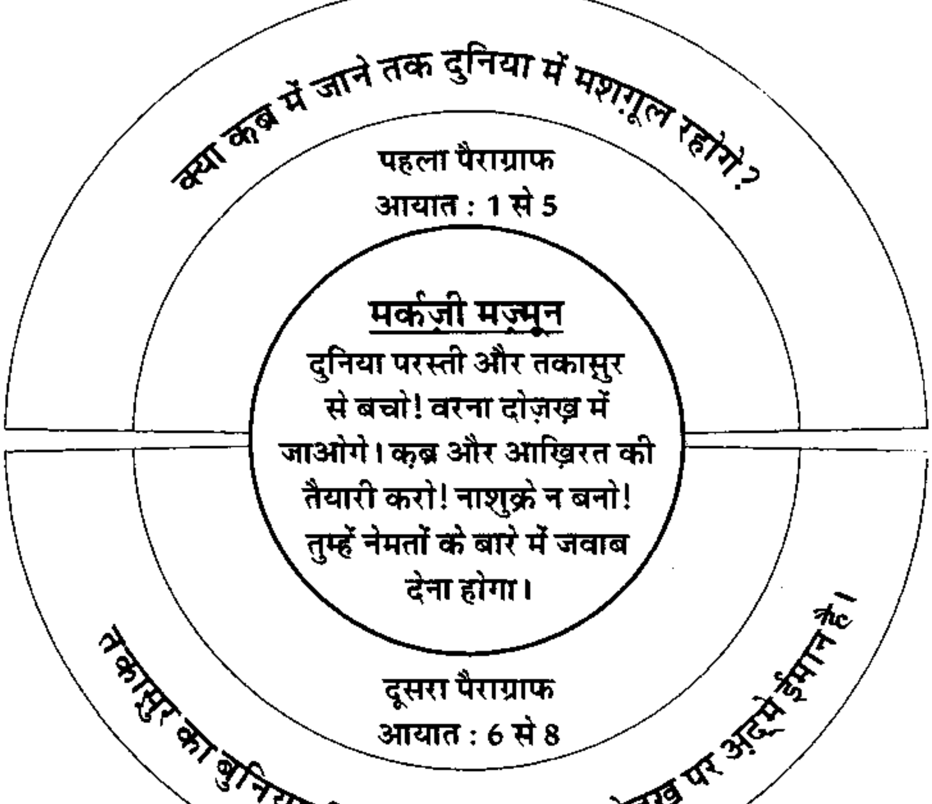

ज़मानए नुज़ूल

सूरह तकासुर ग़ालिबन क़ियामे मक्का के दूसरे दौर (4–5 नबवी) में ऐलाने आम के बाद नाज़िल हुई, जब क़ुरैश की माद्दा परस्त क़यादत की दुनियादारी पर सख़्त गिरफ़्त की गई।

तफ़्सीर सूरह तकासुर

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ○

तर्जुमा : ''शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रह़म वाला है।''

***

اَلۡهٰكُمُ التَّكَاثُرُ ۙ﴿۱﴾ حَتّٰی زُرۡتُمُ الۡمَقَابِرَ ؕ﴿۲﴾ كَلَّا سَوۡفَ تَعۡلَمُوۡنَ ۙ﴿۳﴾ ثُمَّ كَلَّا سَوۡفَ
تَعۡلَمُوۡنَ ؕ﴿۴﴾ كَلَّا لَوۡ تَعۡلَمُوۡنَ عِلۡمَ الۡيَقِيۡنِ ؕ﴿۵﴾ لَتَرَوُنَّ الۡجَحِيۡمَ ۙ﴿۶﴾ ثُمَّ لَتَرَوُنَّهَا
عَيۡنَ الۡيَقِيۡنِ ۙ﴿۷﴾ ثُمَّ لَتُسۡـَٔلُنَّ يَوۡمَئِذٍ عَنِ النَّعِيۡمِ ﴿۸﴾

तर्जुमा : ''ज़्यादती की चाहत ने तुम्हें ग़ाफ़िल कर दिया (1) यहाँ तक कि तुम क़ब्रिस्तान जा पहुँचे (2) नहीं! नहीं! तुम मालूम कर लोगे (3) और अभी अभी तुम्हें मालूम चल जाएगा (4) यूँ नहीं अगर तुम यक़ीनी तौर पर जान लेते (5) बेशक तुम जहन्नम देख लोगे। (6) और तुम उसे यक़ीन की आँख से देख लोगे (7) फिर उस दिन तुमसे ज़रूर बिज़्ज़ुरूर नेअ़मतों का सवाल होगा।'' (8)

दुनिया की मुहब्बत में आख़िरत से ग़फ़्लत ख़तरनाक है (आयत : 1 से 8) : इर्शाद होता है कि दुनिया की मुह़ब्बत, उसके पा लेने की कोशिश ने तुम्हें आख़िरत की तलब और नेक कामों से बेपरवाह कर दिया, तुम इसी दुनिया की उधेड़ बुन में रहे कि अचानक मौत आ गई और तुम क़ब्रों में पहुँच गए, रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं कि ''इत़ाअ़ते परवरदिगार से तुमने दुनिया की जुस्तजू में फंस कर बेरग़बती कर ली और मरते दम तक ग़फ़्लत बरती।'' (इब्ने अबी ह़ातिम व सनदुहू मौज़ूउन ज़करिय्या बिन यह़्या अल्वक़ार कज़्ज़ाब व फ़ी सनदिन इ़लल उख़रा) ह़सन बस़री (रह़.) फ़र्माते हैं कि माल और औलाद की ज़्यादती की हिर्स में मौत का ख़्याल परे फेंक दिया। स़ह़ीह़ बुख़ारी किताबुर्रिक़ाक़ में है कि ह़ज़रत उबय बिन कअ़ब (रज़ि.) फ़र्माते हैं (लव काना लि इब्ने आदम वादिम् मिन ज़हबिन) यानी अगर इब्ने आदम के पास एक जंगल भरकर सोना हो, इसे

हम कुरआन की आयत ही समझते रहे यहाँ तक कि (अल्हाकुमुत् तकासुर) नाज़िल हुई। (स़ह़ीह़ बुख़ारी, किताबुर्रिक़ाक़, बाब मा यत्तक़ी मिन फ़ित्नतिल माल : 6440) मुस्नद अह़मद में है कि "ह़ज़रत अब्दुल्लाह बिन शुख़ैर (रज़ि.) फ़र्माते हैं कि मैं जनाब रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में जब आया तो आप इस आयत को पढ़ रहे थे, आप (ﷺ) ने फ़र्माया इब्ने आदम कहता रहता है कि मेरा माल, मेरा माल! ह़ालाँकि तेरा माल तो सिर्फ़ वह है जिसे तूने खाकर फ़ना कर दिया, या पहनकर फाड़ दिया, या स़दक़े देकर बाक़ी रख लिया।" (अह़मद : 4/24; स़ह़ीह़ मुस्लिम, किताबुज़्ज़ुहद, बाब अद्दुनिया सिज्नुन लिल्मोमिन व जन्नतुन लिल्काफ़िर : 2958; तिर्मिज़ी : 2342) स़ह़ीह़ मुस्लिम में इतना और ज़्यादा है कि इसके सिवा जो कुछ है उसे तू तो लोगों के लिए छोड़ छाड़कर चल देगा। (स़ह़ीह़ मुस्लिम, किताबुज़्ज़ुहद, बाब अद्दुनिया सिज्नुन लिल्मोमिन व जन्नतुन लिल्काफ़िर : 2959)

बुख़ारी की ह़दीस में है कि "मय्यित के साथ तीन चीज़ें जाती हैं जिनमें से दो तो पलट आती हैं सिर्फ़ एक साथ रह जाती है। घरवाले, माल और आ'माल। अहल व माल तो लौट आए अमल साथ रह गए।" (स़ह़ीह़ बुख़ारी, किताबुर्रिक़ाक़, बाब सकरातुल मौत : 6514; स़ह़ीह़ मुस्लिम : 2960; तिर्मिज़ी : 2379) मुस्नद अह़मद की ह़दीस में है कि इब्ने आदम बूढ़ा हो जाता है लेकिन दो चीज़ें उसके साथ बाक़ी रह जाती है, लालच और उमंग। (अह़मद : 3/115; ह़ : 12142; वसनदुहू स़ह़ीह़ुन वहुव मुत्तफ़क़ुन अलैहिल बुख़ारी : 6421; व मुस्लिम : 1047; मिन ह़दीसिन शुअ़बत बिही, इस मअ़नी की रिवायत स़ह़ीह़ बुख़ारी, किताबुर्रिक़ाक़, बाब मन बलग़ सित्तीना सनतन अअ़ज़रल्लाह इलैहि फ़िल उ़म्रि : 6421; स़ह़ीह़ मुस्लिम : 1047; मुस्नदे त़यालिसी : 2005 में भी मौजूद है।) ह़ज़रत ज़ह़्ह़ाक (रह़.) ने एक शख़्स़ के हाथ में एक दिरहम देखकर पूछा कि यह दिरहम किसका है? उसने कहा, मेरा। फ़र्माया तेरा तो उस वक़्त होगा कि किसी नेक काम में तू ख़र्च कर दे या बत़ौरे शुक्र अल्लाह तआ़ला के ख़र्च करे। ह़ज़रत अह़नफ़ (रह़.) ने इस वाक़िया को बयान करके यह शेअ़र पढ़ा

अन्त लिल्मालि इज़ा अम्सक्तहू फ़इज़ा अन्फ़क़्तहू फ़ल्मालु लक

यानी "जबकि तू माल को लिये बैठा है तू तो माल की मिल्कियत है, हाँ! जब उसे ख़र्च कर देगा उस वक़्त माल तेरी मिल्कियत हो जाएगा।"

इब्ने बुरैदा (रह़.) फ़र्माते हैं "बनू ह़ारिसा और बनू ह़ारिस अंस़ार के क़बाइल आपस में फ़ख़्रो ग़ुरूर करने लगे, एक कहता देखो, हममें फ़लाँ शख़्स़ ऐसा बहादुर ऐसा जुयूट या इतना बड़ा मालदार वग़ैरह है, दूसरे क़बीले वाले अपने में ऐसों को पेश करते थे, जब ज़िन्दों के साथ यह फ़ख़्रो मुबाहात कर चुके तो कहने लगे कि आओ! क़ब्रिस्तान में चलें वहाँ जाकर अपने अपने मुर्दों की क़ब्रों की त़रफ़ इशारे करके कहने लगे बतलाओ इस जैसा भी तुममें कोई गुज़रा है, वह उन्हें अपने मुर्दों के साथ इल्ज़ाम देने लगे, उस पर यह दोनों इब्तिदाई आयतें उतरीं कि तुम फ़ख़्रो मुबाहात करते हुए क़ब्रिस्तान पहुँच गए और अपने अपने मुर्दों पर भी फ़ख़्रो ग़ुरूर

करने लगे। चाहिए था कि यहाँ आकर इब्रत हासिल करते, अपना मरना और सड़ना और गलना याद करते।

हज़रत क़तादा (रह.) फ़र्माते हैं कि "लोग अपनी ज़्यादती और अपनी कसरत पर घमण्ड करते थे यहाँ तक कि एक एक होकर क़ब्रों में ठुस गए।" मतलब यह है कि बहतात की चाहत ने ग़फ़्लत में ही रखा यहाँ तक कि मर गए और क़ब्रों मे दफ़न हो गए। सहीह हदीस में है कि "नबी (ﷺ) एक आराबी की एयादत को तशरीफ़ ले गए और हस्बे आदत फ़र्माया कि कोई डर ख़ौफ़ नहीं, इंशाअल्लाह तआला! गुनाहों से पाकीज़गी हासिल होगी, तो उसने कहा आप इसे ख़ूब पाक बतला रहे हैं यह तो वह बुख़ार है जो बूढ़े बड़ों पर जोश मारता है और क़ब्र तक पहुँचाकर रहता है। आप (ﷺ) ने फ़र्माया अच्छा फिर यूँ ही सही।" (सहीह बुख़ारी, किताबुल मर्ज़ा, बाब एयादतुल आराब : 6562; मुअजम कबीर : 11951) इस हदीस में भी लफ़्ज़ (तुज़ीरुहुल कुबूर) है और यहाँ कुरआन में भी। (ज़ुर्तुमुल मक़ाबिर) है। पस मालूम होता है कि इससे मुराद मरकर क़ब्र में दफ़न होना ही है। तिर्मिज़ी में है कि हज़रत अली कर्रमल्लाहु वज्हहू फ़र्माते हैं कि "जब तक यह आयत न उतरी, हम अज़ाबे क़ब्र के बारे में शक में ही रहे।" (तिर्मिज़ी, किताब तफ़्सीरुल कुरआन, बाब वमिन सूरति अल्हाकुमुत्तकासुर : 3355; वसनदुहू ज़ईफ़ुन; हज्जाज बिन इरताअ ज़ईफ़ मुदल्लस व मुहम्मद बिन अबी लैला ज़ईफ़ मशहूर) यह हदीस ग़रीब है।

इब्ने अबी हातिम में है कि हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ (रह.) ने इस आयत की तिलावत की फिर कुछ देर सोचकर फ़र्माने लगे मैमून! क़ब्रों का देखना तो सिर्फ़ बतौर ज़ियारत है, और हर ज़ियारत करने वाला अपनी जगह लौट जाता है यानी ख़्वाह जन्नत की तरफ़ ख़्वाह जहन्नम की तरफ़। एक आराबी ने भी एक शख़्स की ज़ुबान इन दोनों आयात की तिलावत सुनकर यही फ़र्माया था कि असल मक़ाम और ही है। फिर अल्लाह तआला धमकाते हुए दो दो बार फ़र्माता है कि हक़ीक़ते हाल का इल्म तुम्हें अभी हो जाएगा। यह मतलब भी बयान किया गया है कि पहले मुराद कुफ़्फ़ार हैं दोबारा मोमिन मुराद हैं। फिर फ़र्माता है कि अगर तुम इल्मे यक़ीनी के साथ उसे मालूम कर लेते यानी अगर ऐसा होता तो तुम ग़फ़्लत में न पड़ते और मरते दम तक अपनी आख़िरी मंज़िल आख़िरत को याद रखते फिर जिस चीज़ से पहले धमकाया था उसी का बयान कर रहा है कि तुम जहन्नम को अपनी आँखों से देख लोगे कि उसकी एक ही जुंबिश के साथ और तो और अम्बिया (عليهم السلام) भी हैबत व ख़ौफ़ के मारे घुटनों के बल गिर पड़ेंगे उसकी अज़्मत और दहशत हर दिल पर छाई हुई होगी जैसे कि बहुत सी अहादीस में तफ़्सील के साथ मरवी है।

रोज़े क़ियामत नेअमतों के बारे में सवाल होगा : फिर फ़र्माया कि उस दिन तुमसे नेअमतों की बाज़पुर्स होगी, सेहत, अम्न, रिज़्क़ वग़ैरह तमाम नेअमतों की निस्बत सवाल होगा कि उनका शुक्र कहाँ तक अदा किया। इब्ने अबी हातिम की एक ग़रीब हदीस में है कि "ठीक दोपहर को रसूलुल्लाह (ﷺ) अपने घर से चले देखा कि हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) भी मस्जिद में आ रहे हैं, पूछा कि इस वक़्त कैसे निकले हो? कहा, हुज़ूर (ﷺ)! जिस चीज़ ने आपको निकाला है उसी ने मुझे भी निकाला है, इतने में हज़रत उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) भी आ

गए, उनसे भी हुज़ूर (ﷺ) ने यही फ़र्माया और आपने भी यही जवाब दिया। फिर हुज़ूर (ﷺ) ने उन दोनों बुज़ुर्गों से बातें करनी शुरू कीं, फिर फ़र्माया, अगर हिम्मत हो तो उस बाग़ तक चले चलो खाना पीना भी मिल जाएगा और सायेदार दरख़्त भी। हमने कहा बहुत अच्छा! पस आप (ﷺ) हमें लेकर अबुल हैसम अंसारी (रज़ि.) के बाग़ के दरवाज़े पर आए। आप (ﷺ) ने सलाम किया और इजाज़त चाही, उम्मे हैसम अंसारिया (रज़ि.) दरवाज़े के पीछे ही खड़ी थीं सुन रही थीं लेकिन ऊँची आवाज़ से जवाब नहीं कि अल्लाह के रसूल (ﷺ) और ज़्यादा सलामती की दुआ करें और कई कई मर्तबा आप (ﷺ) का सलाम सुनें, जब तीन बार हुज़ूर (ﷺ) सलाम कर चुके और कोई जवाब न मिला तो वापिस रवाना हुए। अब तो हज़रत अबुल हैसम (रज़ि.) की वालिदा मुहतरमा दौड़ीं, और कहा हुज़ूर (ﷺ)! मैं आपकी आवाज़ सुन रही थीं लेकिन मेरा इरादा था कि अल्लाह करे आप कई कई बार सलाम करें इसलिए मैंने अपनी आवाज़ आपको न सुनाई आप आइए तशरीफ़ ले चलिए। आप (ﷺ) ने उनके इस काम को अच्छी नज़रों से देखा, फिर फ़र्माया कि ख़ुद अबुल हैसम कहाँ हैं? वालिदा साहिबा ने फ़र्माया हुज़ूर (ﷺ)! वह भी यहीं क़रीब ही पानी लेने गए हैं, आप तशरीफ़ लाइए इंशाअल्लाह! आते ही होंगे। हुज़ूर (ﷺ) बाग़ में रौनक़ अफ़रोज़ हुए, बीबी साहिबा ने एक सायादार दरख़्त तले कुछ बिछा दिया, जिस पर आप (ﷺ) तशरीफ़ फ़र्मा हुए, इतने में हज़रत अबुल हैसम (रज़ि.) भी आ गए बेहद ख़ुश हुए आँखों की ठण्डक और दिल को सुख नसीब हुआ और जल्दी जल्दी एक खजूर के दरख़्त पर चढ़ गए और अच्छे अच्छे ख़ोशे उतार उतार कर देने लगे यहाँ तक कि ख़ुद आप (ﷺ) ने रोक दिया। सहाबी (रज़ि.) ने कहा या रसूलल्लाह (ﷺ)! गदली और तर और बिलकुल पकी और जिस तरह की चाहें तनावुल फ़र्माएँ। जब खजूरें खा चुके तो मीठा पानी लाए जिसे पिया फिर हुज़ूर (ﷺ) फ़र्माने लगे यही वह नेअ़मतें हैं जिनके बारे में अल्लाह तआ़ला के यहाँ पूछे जाओगे। (इसकी सनद में अ़ब्दुल्लाह बिन ईसा अबू ख़ल्फ़ अल्ख़ुज़ार 'मुंकरुल हदीस' रावी है (अल्मीज़ान : 2/470; रक़्म : 4496) लिहाज़ा यह रिवायत सख़्त ज़ईफ़ है।)

इब्ने जरीर की उसी हदीस में है कि "अबूबक्र व उ़मर (रज़ि.) बैठे हुए थे कि उनके पास हुज़ूर (ﷺ) तशरीफ़ लाए और फ़र्माया कि यहाँ कैसे बैठे हो? दोनों ने कहा, हुज़ूर (ﷺ)! भूख के मारे घर से निकल खड़े हुए हैं। फ़र्माया उस अल्लाह की क़सम! जिसने मुझे हक़ के साथ भेजा है मैं भी इसी वजह से इस वक़्त निकला हूँ। अब आप उन्हें लेकर चले और एक अंसारी के घर आए उनकी बीवी साहिबा मिल गईं पूछा कि तुम्हारे मियाँ कहाँ गए हैं? कहा घर के लिए मीठा पानी लाने गए हैं। इतने में वह मश्क उठाये हुए आ ही गए, ख़ुश हो गए और कहने लगे मुझ जैसा ख़ुश क़िस्मत आज कोई भी नहीं जिसके घर अल्लाह के नबी तशरीफ़ लाए हैं। मश्क तो लटका दी और ख़ुद जाकर खजूरों के ताज़ा ताज़ा खोशे ले आए आप (ﷺ) ने फ़र्माया चुनकर अलग करके लाते तो जवाब दिया कि हुज़ूर (ﷺ)! मैं ने चाहा आप अपनी तबीयत के मुताबिक़ अपनी पसंद से चुन लें और नोश फ़र्मा लें, फिर छुरी हाथ में थामी कि कोई जानवर ज़िब्ह करके गोश्त पकाएँ तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया देखो! दूध देने वाला जानवर ज़िब्ह न करना। चुनाँचे उसने ज़िब्ह किया आप (ﷺ) ने वहीं खाना तनावुल फ़र्माया। फिर फ़र्माने लगे देखो! भूखे घर से निकले और पेट भरे जा रहे हो। यही वह नेअ़मतें हैं

जिनके बारे में क़ियामत के दिन सवाल होगा।'' (तब्री : 24/583; वसनदुहू ज़ईफ़ुन; वलीद बिन मुस्लिम मुदल्लस व अन्अन यह रिवायत मुख़्तलिफ़ अल्फ़ाज़ से सहीह मुस्लिम किताबुल अश्रिबा, बाब जवाज़ु इस्तित्बाअहू ग़ैरुहू इला दार...: 2038; तिर्मिज़ी : 2369; में भी मौजूद है।) रसूलुल्लाह (ﷺ) के आज़ाद ग़ुलाम हज़रत अबू उसेब (रज़ि.) का बयान है कि ''रात को रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मुझे आवाज़ दी में निकला फिर हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) को बुलाया फिर हज़रत उमर (रज़ि.) को बुलाया फिर किसी अंसारी के बाग़ में तशरीफ़ ले गए और फ़र्माया लाओ भाई खाने को दो, वह अंगूर के ख़ोशे उठा लाए और आपके सामने रख दिये आप (ﷺ) ने और आपके साथियों ने खाए फिर फ़र्माया ठण्डा पानी पिलाओ, वह लाए आप (ﷺ) ने पिया, फिर फ़र्माने लगे क़ियामत के दिन इससे पूछताछ होगी। हज़रत उमर (रज़ि.) ने वह ख़ोशा उठाकर ज़मीन पर दे मारा और कहने लगे इसके बारे में भी अल्लाह के यहाँ पुर्सिश होगी। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, हाँ! सिर्फ़ तीन चीज़ों की तो पुर्सिश नहीं, पर्दापोशी के लायक़ कपड़ा, भूख रोकने के क़ाबिल टुकड़ा, और सर्दी गर्मी में सिर छुपाने के लिए मकान।'' (अहमद : 5/81; वसनदुहू हसन; मज्मउज़्ज़वाइद : 10/267)

मुस्नद अहमद की एक और हदीस में है कि ''जब यह सूरत नाज़िल हुई और हुज़ूर (ﷺ) ने पढ़कर सुनाई तो सहाबा (रज़ि.) कहने लगे कि हमसे किस नेअमत पर सवाल होगा? खजूरें खा रहे हैं और पानी पी रहे हैं तलवारें गर्दनों में लटक रही हैं और दुश्मन सिर पर खड़ा है। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, घबराओ नहीं अन्क़रीब नेअमतें आ जाएँगी।'' (अहमद : 5/429; वसनदुहू हसन) हज़रत उमर (रज़ि.) फ़र्माते हैं कि ''एक मर्तबा हम बैठे हुए थे कि हुज़ूर (ﷺ) तशरीफ़ लाये और नहाए हुए मालूम होते थे हमने कहा, हुज़ूर (ﷺ)! इस वक़्त तो आप ख़ुश व ख़ुर्रम नज़र आते हैं। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, हाँ! फिर लोग तवन्गरी का ज़िक्र करने लगे तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया जिसके दिल में अल्लाह का डर हो उसके लिए तवन्गरी कोई बुरी चीज़ नहीं और याद रखो मुत्तक़ी शख़्स के लिए सेहत तवन्गरी से भी अच्छी है और ख़ुश नफ़्सी भी अल्लाह की नेअमत है।'' (अहमद : 5/372; इब्ने माजा, किताबुत्तिजारात, बाब अल हस्सु अलल मकासिब : 2141; वसनदुहू सहीहुन)

किन नेअमतों के बारे में सवाल होगा : इब्ने माजह और तिर्मिज़ी दोनों ने एक रिवायत नक़ल की कि नेअमतों के सवाल में क़ियामत वाले दिन सबसे पहले यह कहा जाएगा कि ''हमने तुझे सेहत नहीं दी थी? और ठण्डे पानी से तुझे आसूदा नहीं किया करते थे?'' (तिर्मिज़ी, किताब तफ़्सीरुल क़ुरआन, बाब वमिन सूरति (अल्हाकुमुत्तकासुर) : 3358; वसनदुहू सहीहुन; इब्ने हिब्बान : 2585; हाकिम : 4/138; हाकिम और ज़हबी ने इसे सहीह कहा है।) इब्ने अबी हातिम की रिवायत में है कि इस आयत (सुम्म लतुस्अलुन्ना...) को सुनकर सहाबा (रज़ि.) कहने लगे कि हुज़ूर (ﷺ)! हम तो जौ की रोटी और वह भी आधा पेट खा रहे हैं। तो अल्लाह की तरफ़ से वही आई कि क्या तुम पैर बचाने के लिए जूतियाँ नहीं पहनते और क्या तुम ठण्डे पानी नहीं पीते? यही क़ाबिले पुर्सिश नेअमतें हैं। (इसकी सनद में हफ़्स बिन उमर ज़ईफ़ रावी है। लिहाज़ा यह

रिवायत ज़ईफ़ है।) और रिवायत में है कि अम्न और सेहत से सवाल होगा, पेट भर खाने से, ठण्डे पानी से, सायेदार घरों से, मीठी नींद से भी सवाल होगा, शहद पीने से, लज़्ज़तें हासिल करने से, सुबह शाम के खाने से घी शहद और मेदे की रोटी वग़ैरह, ग़र्ज़ इन तमाम नेअ़मतों के बारे में अल्लाह के यहाँ सवाल होगा। हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) इसकी तफ़्सीर में फ़र्माते हैं कि ''बदन की सेहत, कानों और आँखों की सेहत के बारे में भी सवाल होगा कि इन ताक़तों से क्या क्या काम किये।''

जैसे कुरआने करीम में है (إِنَّ السَّمْعَ وَالْبَصَرَ وَالْفُؤَادَ كُلُّ أُولَٰئِكَ كَانَ عَنْهُ مَسْئُولًا) (17/बनी इस्राईल : 36) हर शख़्स से उसके कान उसकी आँख और उसके दिल के बारे में भी पूछ होगी। सहीह बुख़ारी वग़ैरह की हदीस में है कि ''वह नेअ़मतों के बारे में लोग बहुत ही ग़फ़्लत बरत रहे हैं, सेहत और फ़राग़त।'' (सहीह बुख़ारी, किताबुर्रिक़ाक़, बाब अस्सेहतु वल फ़राग़ : 6412; तिर्मिज़ी : 2304; इब्ने माजा : 4170) यानी न तो उनका पूरा शुक्रअदा करते हैं, न उनकी अ़ज़्मत को जानते हैं, न उन्हें रब की मर्ज़ी के मुताबिक़ ख़र्च करते हैं। बज़्ज़ार में है तहबन्द के सिवा और सायेदार दीवारों के सिवा और रोटी के टुकड़े के सिवा हर चीज़ का क़ियामत के दिन हिसाब देना पड़ेगा। (मुस्नदे बज़्ज़ार : 3643; वसनदुहू ज़ईफ़ुन; इसकी सनद में लैस बिन अबी सुलैम मशहूर ज़ईफ़ रावी है।)

मुस्नद अहमद की मरफ़ूअ़ हदीस में है कि ''अल्लाह अ़ज़्ज़ व जल्ल क़ियामत के दिन फ़र्माएगा ऐ इब्ने आदम! मैंने तुझे घोड़ों पर और ऊँटों पर सवार कराया, औरतें तेरे निकाह में दीं, तुझे मोहलत दी कि तू हँसी ख़ुशी आराम व राहत से ज़िन्दगी गुज़ारे। अब बता कि इसका शुक्रिया कहाँ है?'' (अहमद : 2/492; वसनदुहू सहीहुन; इस मअ़नी की रिवायत सहीह मुस्लिम, किताबुज़्ज़ुहद, बाब अद्दुनिया सिज्नुन लिल्मुअ्मिन व जन्नतुन लिल्काफ़िर : 2968)

अल्हम्दुलिल्लाह! सूरह तकासुर की तफ़्सीर मुकम्मल हुई।

***

FLOW CHART
तरतीबी नक्श-ए-रब्त

MACRO-STRUCTURE
नज़्मे-जली

सूरह अस्र - 103

आयात : 3, मक्की, पैराग्राफ : 2

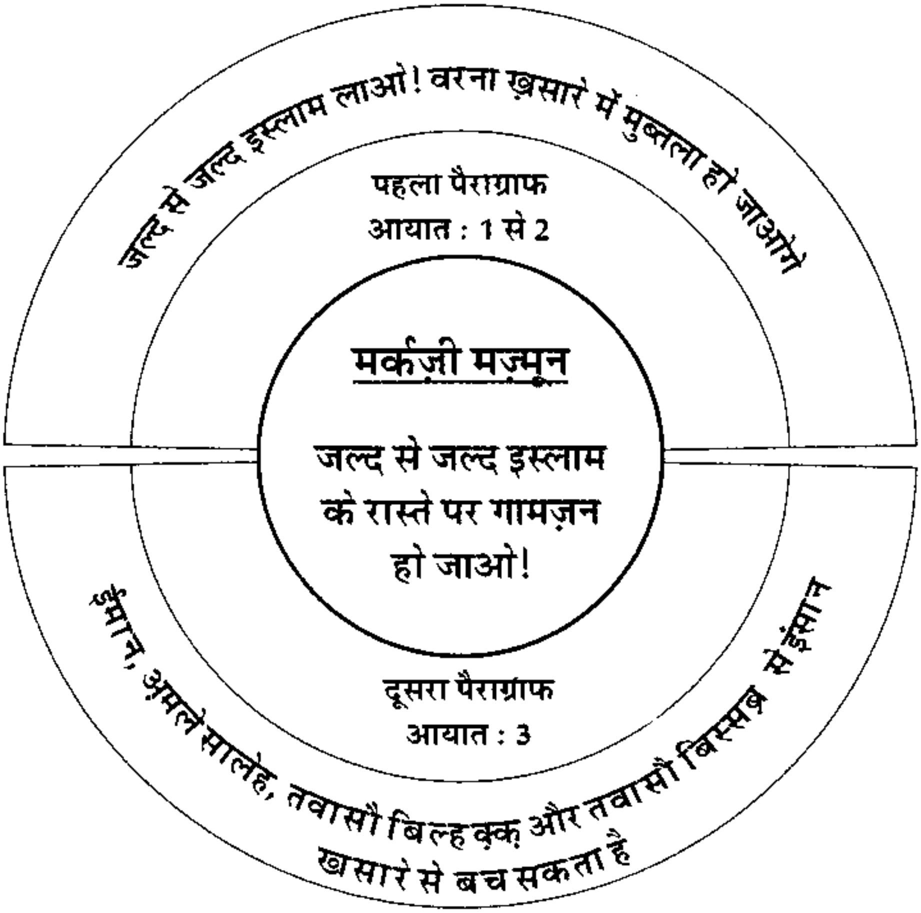

ज़मानए नुज़ूल

सूरह अस्र क़ियामे मक्का के पहले दौर (0-3 नबवी) में नाज़िल हुई, जब इस्लाम की दावत ख़ुफ़िया तौर पर दी जा रही थी और जब आप (सल्ल.) पर आला अदबी उस्लूब में मुख़्तसर, मुहकम और जामेअ़ सूरतें नाज़िल की जा रही थीं।

तफ़्सीर सूरह अ़स्र

तआ़रुफ़े सूरत : हज़रत अ़म्र बिन आ़स (रज़ि.) अपने मुसलमान होने से पहले एक बार मुसैलिमा कज़्ज़ाब से मिले उसने नबुव्वत का झूठा दावा कर रखा था। अ़म्र (रज़ि.) को देखकर पूछने लगा कहो इस मुद्दत में तुम्हारे नबी पर भी कोई वही नाज़िल हुई है? हज़रत अ़म्र (रज़ि.) ने जवाब दिया एक मुख़्तसर सी निहायत फ़साहत वाली सूरत उतरी है। पूछा वह क्या है? हज़रत अ़म्र (रज़ि.) ने सूरह वल्अस्र पढ़कर सुनाई। मुसैलिमा ज़रा देर सोचता रहा फिर कहने लगा, अ़म्र! देखो मुझ पर भी इसी जैसी सूरह उतरी है। अ़म्र (रज़ि.) ने कहा, वह क्या? कहा यह "या वबरुया वबरु. इन्नमा अन्त उज़्नानि व सदरुन. व साइरु हज़रिन नक़र" फिर कहने लगा अ़म्र! कहो तुम्हारा क्या ख़्याल है? अ़म्र (रज़ि.) ने कहा मेरा ख़्याल तो तू ख़ुद ही जानता है कि मुझे तेरे झूठा होने का इल्म है। वबरु बिल्ली जैसा एक जानवर है उसके दोनों कान ज़रा बड़े होते हैं और सीना भी, बाक़ी जिस्म बिल्कुल हक़ीर और वाहियात होता है। उस कज़्ज़ाब ने ऐसी फ़िज़ूल बात और बकवास के साथ अल्लाह तआ़ला के कलाम का मुआरज़ा करना चाहा जिसे सुनकर अ़रब के बुतपरस्त लोगों ने भी उसका काज़िब और मुफ़्तरी होना समझ लिया। तब्रानी में है कि दो सहाबियों का यह दस्तूर था कि जब मिलते एक उस सूरत को पढ़ता दूसरा सुनता फिर सलाम करके रुख़्सत हो जाते। (मुअ़जमुल औसत : 5120; वसनदुहू ज़ईफ़ुन; फ़ीहि मुहम्मद बिन हिशाम मुस्तमली वलम अक़िफ़ अ़ला तर्जुमतिही)

फ़ायदा : हज़रत इमाम शाफ़ेई (रह.) फ़र्माते हैं कि "अगर लोग इस सूरत को ग़ौरो तदब्बुर से पढ़ें और समझें तो यही एक सूरह काफ़ी है।"

***

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ ○

तर्जुमा : "शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है।"

وَالۡعَصۡرِ ۝١ اِنَّ الۡاِنۡسَانَ لَفِىۡ خُسۡرٍ ۝٢ اِلَّا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَتَوَاصَوۡا بِالۡحَقِّ ۙ وَتَوَاصَوۡا بِالصَّبۡرِ ۝٣

तर्जुमा : "ज़माने की क़सम (1) बेशक इंसान ख़सारे में हैं (2) मगर वह लोग जो ईमान लाये और नेक अ़मल किये और जिन्होंने आपस में हक़ की वसिय्यत की और एक दूसरे को सब्र की तल्क़ीन की।" (3)

कामयाब ज़िन्दगी के चार उसूल (आयत :1 से 3) : अस्र से मुराद ज़माना है जिसमें इंसान नेकी और बुराई के काम करता है। हज़रत ज़ेद बिन असलम (रह.) ने इससे मुराद अस्र की नमाज़ या अस्र की नमाज़ का वक़्त बयान किया है, लेकिन मशहूर पहला क़ौल ही है। इस क़सम के बाद बयान फ़र्माता है कि इंसान नुक़्सान में, टोटे में और हलाकत में है, हाँ! इस नुक़्सान से बचने वाले वह लोग हैं जिनके दिलों में ईमान हो, आमाल में नेकियाँ हों, हक़ की वसिय्यतें करने वाले हों, यानी नेकी के काम करने की, हराम कामों से रुकने की एक दूसरे को ताकीद करते हों, क़िस्मत के लिखे पर मुसीबतों की बर्दाश्त पर सब्र करते हों, और दूसरों को भी इसकी तल्क़ीन करते हों, साथ ही भली बातों का हुक्म करने और बुरी बातों से रोकने में लोगों की तरफ़ से जो बलाएँ और तकलीफ़ें पहुँचे उनकी भी सिहार करते हों और उसी की तल्क़ीन अपने साथियों को भी करते हों, यह हैं जो इस सरीह नुक़्सान से मुस्तस्ना (अलग) हैं।

अल्हम्दुलिल्लाह! सूरह अस्र की तफ़्सीर मुकम्मल हुई।)

***

FLOW CHART
तरतीबी नक्श-ए-रब्त

MACRO-STRUCTURE
नज़्मे-जली

सूरह हुमज़ह - 104

आयात : 9, मक्की, पैराग्राफ : 2

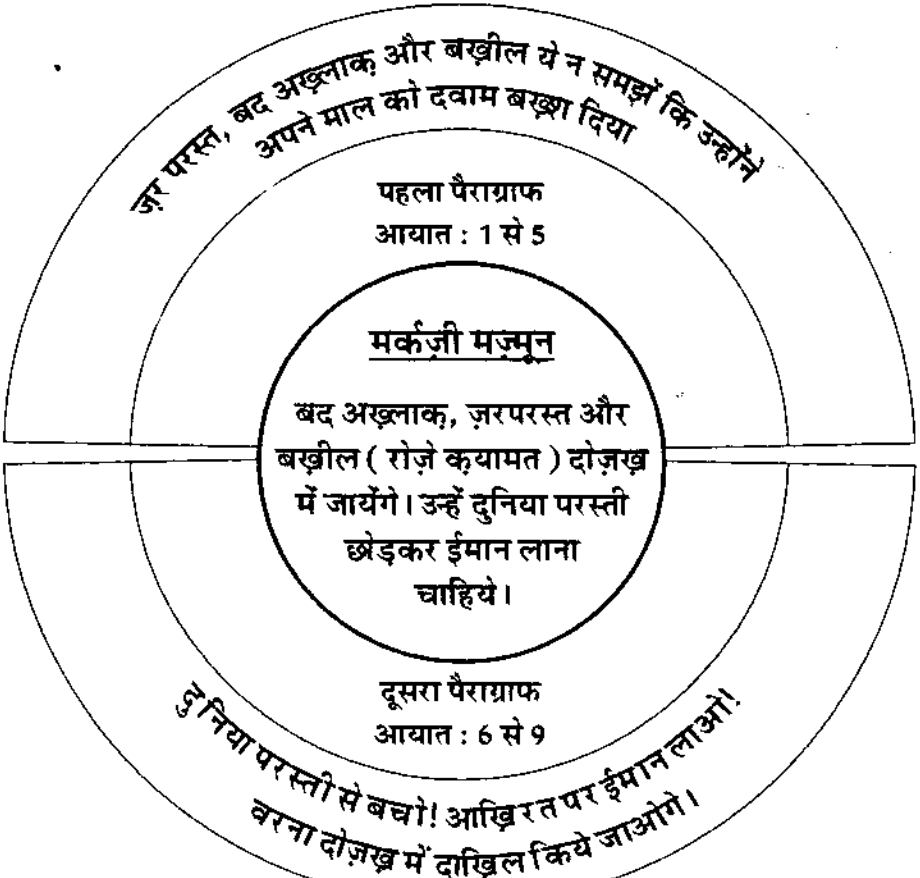

ज़मानए नुज़ूल

सूरह हुमज़ह ऐलाने आम के बाद क़ियामे मक्का के दूसरे दौर (4-5 नबवी) के आग़ाज़ में नाज़िल हुई। जब उमय्या बिन ख़ल्फ़ जैसी क़ुरैशी क़यादत के अख़्लाक़ी और मआशी रवैये ज़ेरे बहस थे, जिनका बुनियादी सबब आख़िरत फ़रामोशी था।

तफ़्सीर सूरह हुमज़ह

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ ○

तर्जुमा : "शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है।"

***

وَيۡلٌ لِّكُلِّ هُمَزَةٍ لُّمَزَةِ ۙ ① الَّذِىۡ جَمَعَ مَالًا وَّعَدَّدَهٗ ۙ ② يَحۡسَبُ اَنَّ مَالَهٗۤ اَخۡلَدَهٗ ۚ ③ كَلَّا لَيُنۡۢبَذَنَّ فِى الۡحُطَمَةِ ۖ ④ وَمَاۤ اَدۡرٰىكَ مَا الۡحُطَمَةُ ؕ ⑤ نَارُ اللّٰهِ الۡمُوۡقَدَةُ ۙ ⑥ الَّتِىۡ تَطَّلِعُ عَلَى الۡاَفۡـِٕدَةِ ؕ ⑦ اِنَّهَا عَلَيۡهِمۡ مُّؤۡصَدَةٌ ۙ ⑧ فِىۡ عَمَدٍ مُّمَدَّدَةٍ ⑨

तर्जुमा : "बड़ी ख़राबी है हर ऐसे शख़्स की जो ऐब टटोलने वाला ग़ीबत करने वाला हो (1) जो माल को जमा करता है और गिनता जाए (2) समझे कि उसका माल उसके पास हमेशा रहेगा (3) नहीं ! नहीं! यह तो तोड़ फोड़ देने वाली आग में फेंक दिया जाएगा (4) तुझे क्या मालूम कि ऐसी आग क्या कुछ होगी? (5) वह अल्लाह तआला की सुलगाई हुई आग होगी (6) जो दिलों पर चढ़ती चली जाएगी (7) और उन पर बड़े बड़े सतूनों में हर तरफ़ से बंद की हुई होगी।" (8)

चुग़लख़ोरी की मज़म्मत (आयत : 1 से 9) : अल्लाह तआला फ़र्माता है ज़ुबान से लोगों की ऐबगीरी करने वाला अपने कामों से दूसरों की हक़ारत करने वाला ख़राबी वाला शख़्स है। (هَمَّازٍ مَّشَّآءٍ بِنَمِيۡمٍ) (68/क़लम : 11) की तफ़्सीर बयान हो चुकी है। हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) का क़ौल है कि "इससे मुराद तअना देने वाला ग़ीबत करने वाला है।" रबीअ बिन अनस (रज़ि.) कहते हैं कि "सामने बुरा कहना (हुमज़) है और पीठ पीछे ऐब बयान करना (लुमज़) है।" क़तादा (रह.) कहते हैं कि "ज़ुबान से और आँख के इशारों से बंदगाने इलाही को सताना और चिढ़ाना मुराद है कि कभी तो उनका गोश्त खाए यानी ग़ीबत करे और कभी उन पर तअनाज़नी करे। मुजाहिद (रह.) फ़र्माते हैं कि (हुमज़) हाथ और आँख से होता है और (लुमज़) ज़ुबान से।" कुछ कहते हैं कि इससे मुराद अख़्नस बिन शरीक़ काफ़िर है। मुजाहिद (रह.) फ़र्माते हैं कि "आयत आम है।" फिर फ़र्माया जो जमा करता जाता है और गिन गिनकर रखता जाता है। जैसे और जगह है (जमअ फ़औआ)

नाहक़ माल कमाने वाले के लिए हलाकत है : हज़रत कअ़ब (रह़.) फ़र्माते हैं कि ''दिन भर तो माल कमाने की हाय वाय में लगा रहा और रात को सड़ी भुसी लाश की त़रह़ पड़ा रहा, इसका ख़्याल यह है कि इसका माल इसे हमेशा दुनिया में रखेगा ह़ालाँकि वाक़िया यूँ नहीं बल्कि यह बख़ील और लालची इंसान जहन्नम के उस त़ब्क़े में गिरेगा जो हर उस चीज़ को जो उसमें गिरे चूर चूर कर देता है। फिर फ़र्माता है कि यह तोड़ फोड़ करने वाली क्या चीज़ है? उसका ह़ाल ऐ नबी (ﷺ)! तुम्हें मालूम नहीं, यह अल्लाह तआ़ला की सुलगाई हुई आग है जो दिलों पर चढ़ जाती है जलाकर भस्म कर देती है लेकिन वह मरते नहीं। ह़जरत साबित बिनानी (रह़.) जब इस आयत की तिलावत करके इसका यह मअ़नी बयान करते तो रो देते और कहते कि उन्हें अ़ज़ाब ने बड़ा सताया।

मुह़म्मद बिन कअ़ब (रह़.) फ़र्माते हैं कि ''आग जलाती हुई ह़लक़ तक पहुँच जाती है फिर लौटती फिर पहुँचती है'' यह आग उन पर चारों त़रफ़ से बंद कर दी गई है जैसे कि सूरह बलद की तफ़्सीर में गुज़रा। एक मरफ़ूअ़ ह़दीस में भी यह है और दसूरा त़रीक़ इसका मौक़ूफ़ है। लोहा जो मिस्ल आग के है उसके सतूनों में यह लम्बे लम्बे दरवाज़े हैं। ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) की क़िरअत में (बि अ़मदिन) मरवी है। इन दोज़ख़ियों की गर्दनों में ज़ंजीरें होंगी, यह लम्बे लम्बे सतूनों में जकड़े हुए होंगे और ऊपर से दरवाज़े बंद कर दिये जाएँगे, उन आग के सतूनों में उन्हें बदतरीन अ़ज़ाब किये जाएँगे। अबू स़ालेह़ (रह़.) फ़र्माते हैं ''यानी वज़नी बेड़ियाँ और क़ैदो बंद उनके लिए होंगी।''

अल्ह़म्दुलिल्लाह! सूरह हुमज़ह की तफ़्सीर मुकम्मल हुई।

***

FLOW CHART
तरतीबी नक्श-ए-रब्त

MACRO-STRUCTURE
नज़्मे-जली

सूरह फ़ील - 105

आयात : 5, मक्की, पैराग्राफ : 2

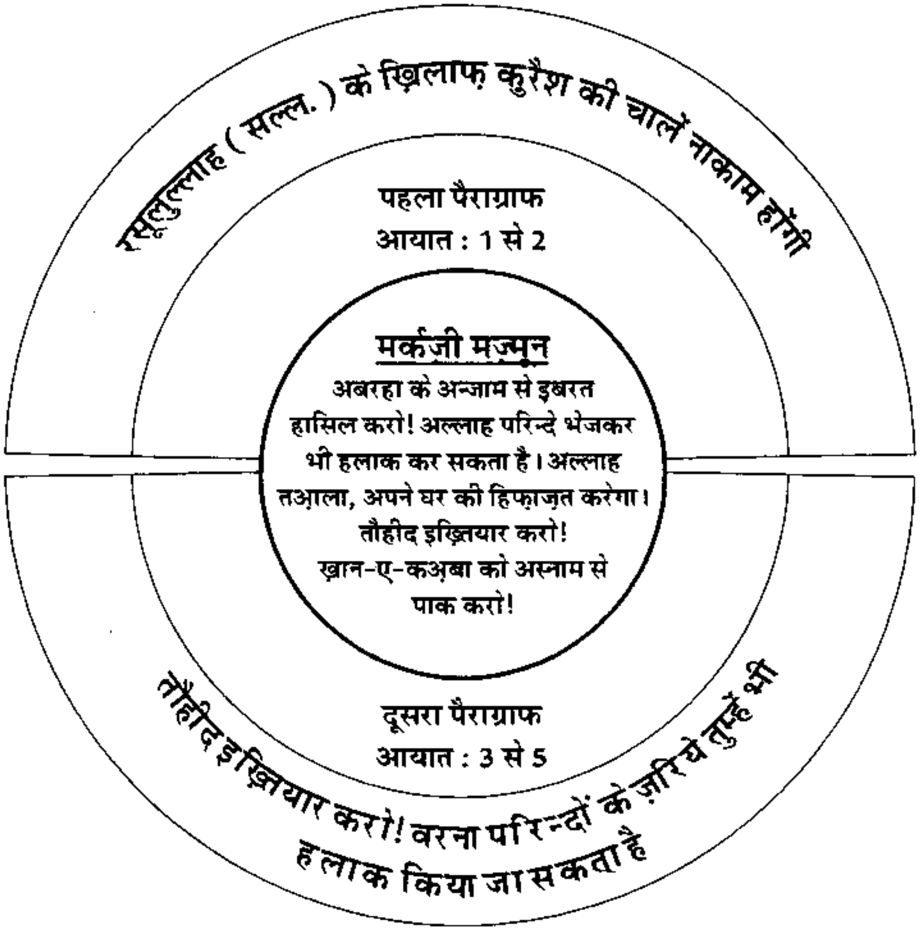

ज़मानए नुज़ूल

सूरह फ़ील ग़ालिबन आप (सल्ल.) के क़ियामे मक्का के दूसरे दौर में ऐलाने आम के बाद 4 हिजरी में नाज़िल हुई होगी। 'अलम त-र' के सवालिया उस्लूब से मालूम होता है कि इसमें कुरैश के लिये तम्बीह भी है और दावते ग़ौर व फ़िक्र भी।

तफ़्सीर सूरह फ़ील

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

तर्जुमा : ''शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है।''

***

اَلَمْ تَرَ كَيْفَ فَعَلَ رَبُّكَ بِاَصْحٰبِ الْفِيْلِ ۝١ اَلَمْ يَجْعَلْ كَيْدَهُمْ فِيْ تَضْلِيْلٍ ۝٢ وَّاَرْسَلَ عَلَيْهِمْ طَيْرًا اَبَابِيْلَ ۝٣ تَرْمِيْهِمْ بِحِجَارَةٍ مِّنْ سِجِّيْلٍ ۝٤ فَجَعَلَهُمْ كَعَصْفٍ مَّاْكُوْلٍ ۝٥

तर्जुमा : ''क्या तूने न देखा कि तेरे रब ने हाथी वालों के साथ क्या किया? क्या इनके मकर को बेकार नहीं कर दिया? (2) और उन पर परिन्दों के झुर्मुट भेज दिये (3) जो उन्हें मिट्टी और पत्थर की कंकरियाँ मार रहे थे (4) पस उन्हें खाये हुए भूसे की तरह कर दिया।'' (5)

अब्रहा का वाक़िया (आयत : 1 से 5) : अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त ने क़ुरैश पर जो अपनी ख़ास नेअ़मत इन्आ़म की थी उसका ज़िक्र कर रहा है कि जिस लश्कर ने हाथियों को साथ लेकर कअ़बे को गिराने के लिए चढ़ाई की थी अल्लाह तआ़ला ने उससे पहले कि वह कअ़बे के वुजूद को मिटाएँ उनका नामोनिशान मिटा दिया उनकी तमाम फ़रेबकारियाँ, उनकी तमाम कुव्वतें छीन लीं, बर्बाद कर दिया। यह लोग मज़हबन नसरानी थे लेकिन दीने मसीह़ को मस्ख़ कर दिया था, क़रीब क़रीब बुतपरस्त हो गए थे उन्हें इस त़रह़ नामुराद करना यह गोया पेश ख़ेमा (अल्टीमैटम) था, हुज़ूर (ﷺ) की बिअ़सत का और ख़बर थी आप (ﷺ) की आमद आमद की। हुज़ूर (ﷺ) उसी साल तवल्लुद हुए। अक्सर ऐतिहासकार ह़ज़रात का यही क़ौल है तो गोया रब्बे आ़लम फ़र्मा रहा है कि ऐ क़ुरेशियों! ह़ब्शा के उस लश्कर पर तुम्हें फ़तह़ तुम्हारी भलाई की वजह से नहीं दी गई थी बल्कि उसमें हमारे घर का बचाव था जिसे हम शर्फ़ बुज़ुर्गी अ़ज़्मत व इ़ज़्ज़त में अपने आख़िरुज़्ज़मान पैग़म्बर ह़ज़रत मुह़म्मद (ﷺ) की नबुव्वत से बढ़ाने वाले थे।

ग़र्ज़ अस्ह़ाबे फ़ील का मुख़्तसर वाक़िया तो यह है जो बयान हुआ और मुत़व्वल वाक़िया अस्ह़ाबुल उख़्दूद के बयान में गुज़र चुका है कि क़बीला ह़िम्यर का आख़िरी बादशाह ज़ूनवास जो मुश्रिक था जिसने

अपने ज़माने के मुसलमानों को खाईयों में क़त्ल किया था जो सच्चे नसरानी थे और ता'दाद में तक़रीबन बीस हज़ार थे सारे के सारे ही शहीद कर दिये गए थे, सिर्फ़ दौस ज़ू सअलबान एक बच गया था जो मुल्के शाम जा पहुँचा और क़ैसरे रूम से फ़रियादरसी चाही। यह बादशाह नसरानी मज़हब पर था उसने ह़ब्शा के बादशाह नज्जाशी को लिखा कि उसके साथ अपनी पूरी फ़ौज कर दो इसलिए कि यहाँ से दुश्मन का मुल्क क़रीब था। उस बादशाह ने इरयात़ और अबू यक्सूम अब्रहा बिन स़बाह़ को अमीरे लश्कर बनाकर बहुत बड़ा लश्कर देकर दोनों को उसकी सरकूबी के लिए रवाना किया, यह लश्कर यमन पहुँचा, यमन को और यमनियों को ताख़्तो ताराज कर दिया, ज़ूनवास भाग खड़ा हुआ और दरिया में डूबकर मर गया और उन लोगों की सल्तनत का ख़ात्मा हो गया और सारे यमन पर शाहे ह़ब्शा का क़ब्ज़ा हो गया और यह दोनों सरदार यहाँ रहने सहने लगे, लेकिन कुछ थोड़ी ही मुद्दत के बाद उनमें नाचाक़ी हो गई। आख़िर नौबत यहाँ तक पहुँची कि दोनों ने आमने सामने स़फ़ें बाँध लीं और लड़ने के लिए निकल आए। आम ह़मला हो उससे पहले उन दोनों सरदारों ने आपस में कहा कि फ़ौजों को लड़ाने और लोगों को क़त्ल कराने की क्या ज़रूरत, आओ हम तुम दोनों मैदान में निकलें और एक दूसरे से लड़कर फ़ैसला कर लें जो ज़िन्दा बच जाए मुल्क व फ़ौज उसी की, चुनाँचे यह बात त़ै हो गई और दोनों मैदान में निकल आए। इरयात़ ने अब्रहा पर ह़मला किया और तलवार के एक ही वार से चेहरा ख़ूनाख़ून कर दिया, नाक होंठ और मुँह कट गया। अब्रहा के गुलाम अ़तूदा ने इस मौक़े पर इरयात़ पर एक बेपनाह ह़मला किया और उसे क़त्ल कर दिया। अब्रहा ज़ख़्मी होकर मैदान से ज़िन्दा वापिस गया, इलाज मुआ़लजा से ज़ख़्म अच्छे हो गए और यमन का यह मुस्तक़िल बादशाह बन बैठा। नज्जाशी शाहे ह़ब्शा को जब यह वाक़िया मालूम हुआ तो वह सख़्त गुस्सा हुआ और एक ख़त़ अब्रहा को लिखा उसे बड़ी लअ़नत मलामत की और कहा कि रब की क़सम! मैं तेरे शहरों को पामाल करूँगा और तेरी चोटी काट लाऊँगा। अब्रहा ने उसका जवाब निहायत आ़जिज़ी से लिखा और क़ासिद को बहुत सारे हदिये दिये और एक थैली में यमन की मिट्टी भर दी और अपनी पेशानी के बाल काटकर उसमें रख दिये और अपने ख़त़ में अपने क़सूरों की माफ़ी त़लब की और लिखा कि यह यमन की मिट्टी ह़ाज़िर है और मेरी चोटी के बाल भी, आप अपनी क़सम पूरी कीजिए और नाराज़ी माफ़ फ़र्माइए। उससे शाहे ह़ब्शा ख़ुश हो गया और यहाँ की सरदारी उसी के नाम कर दी। अब अब्रहा ने नज्जाशी को लिखा कि मैं यहाँ यमन में आपके लिए एक ऐसा गिरजा ता'मीर करा रहा हूँ कि अब तक दुनिया में ऐसा न बना हो। उस गिरजाघर का बनाना शुरू किया।

बड़े एहतिमाम से बहुत ऊँचा, बहुत मज़बूत़, बेह़द ख़ूबसूरत और मुनक़्क़श व मुज़य्यन गिरजा बनाया, इस क़द्र बुलंद था कि चोटी तक नज़र डालने वाले की टोपी गिर पड़ती थी, इसलिए अ़रब उसे क़लीस कहते थे यानी टोपी फेंक देने वाला। अब अब्रहा अशरम को यह सूझी कि लोग बजाये कअ़बतुल्लाह के ह़ज्ज के उसका ह़ज्ज करें, अपनी सारी मम्लिकत में उसकी मुनादी करा दी। अ़दनानिया और क़ह़त़ानिया अ़रब को यह बहुत बुरा लगा, इधर से क़ुरैश भी भड़क उठे, थोड़े दिन में कोई शख़्स रात के वक़्त उसके अंदर घुस गया और वहाँ पाख़ाना करके चला आया। चोकीदारों ने जब यह देखा तो बादशाह को ख़बर पहुँचाई और कहा कि

यह काम कुरैशियों का है, चूँकि आपने उनका कअ़बा रोक दिया है लिहाज़ा उन्होंने जोश और ग़ज़ब में आकर यह हरकत की है। अब्रहा ने उसी वक़्त क़सम खा ली कि मैं मक्का पहुँचकर बैतुल्लाह की ईंट से ईंट बजा दूँगा। एक रिवायत में यूँ भी है कि चंद मनचले नौजवान कुरैशियों ने उस गिरजा में आग लगा दी थी और उस वक़्त हवा भी बहुत तेज़ थी सारा गिरजा जल गया और मुँह के बल ज़मीन पर गिर गया। इस पर अब्रहा ने बहुत बड़ा लश्कर साथ लेकर मक्का पर चढ़ाई की ताकि कोई रोक न सके, और अपने साथ एक बड़ा ऊँचा और मोटा हाथी लिया जिसे महमूद कहा जाता था उस जैसा हाथी और कोई न था, शाहे हब्शा ने यह हाथी उसके पास उसी ग़र्ज़ से भेजा था, आठ या बारह हाथी और भी साथ थे, यह कअ़बे के गिराने की निय्यत से चला यह सोचकर कि कअ़बा की दीवारों में मज़बूत ज़ंजीरें डाल दूँगा और हाथियों की गर्दनों में उन ज़ंजीरों को बाध दूँगा हाथी एक ही झटके में चारों दीवारें बैतुल्लाह की जड़ से गिरा देंगे। जब अहले अ़रब को यह ख़बरें मालूम हुईं तो उन पर बड़ा भारी असर पड़ा, और उन्होंने मुसम्मम इरादा कर लिया कि ख़्वाह कुछ भी हो हम ज़रूर उसका मुक़ाबला करेंगे और उसे उसकी इस बदकिरदारी से रोकेंगे। एक यमनी शरीफ़ सरदार जो वहाँ के बादशाहों की औलाद में से था जिसे ज़ूनिफ़र कहा जाता था यह खड़ा हो गया, अपनी क़ौम को और कुल आसपास के अ़रब को जमा किया और उस बदनिय्यत बादशाह से मुक़ाबला किया लेकिन क़ुदरत को कुछ और ही मंज़ूर था, अ़रबों को शिकस्त हुई और ज़ूनिफ़र उस ख़बीस के हाथ क़ैद हो गया। उसने उसे भी साथ लिया और मक्का शरीफ़ की तरफ़ बढ़ा। ख़स्अ़म क़बीले की ज़मीन पर जब यह पहुँचा तो यहाँ नुफ़ैल बिन हबीब ख़स्अ़मी ने अपने लश्करों से उसका मुक़ाबला किया लेकिन अब्रहा ने उन्हें भी मग़्लूब कर लिया और नुफ़ैल भी क़ैद हो गया, पहले तो उस ज़ालिम ने उसे क़त्ल करना चाहा लेकिन फिर क़त्ल न किया और क़ैद करके साथ ले लिया ताकि रास्ता बताये। जब ताइफ़ के क़रीब पहुँचा तो क़बीला सक़ीफ़ ने उससे सुलह कर ली कि ऐसा न हो उनके बुतख़ानों को जिसमें लात नामी बुत था यह तोड़ दे उसने भी उनकी बड़ी आवभगत की उन्होंने अबू रिग़ाल को उसके साथ कर दिया कि यह तुम्हें वहाँ का रास्ता बताएगा। अब्रहा जब मक्के में बिलकुल क़रीब मग़्मस के पास पहुँचा तो उसने यहाँ पड़ाव किया उसके लश्कर ने आसपास मक्का वालों के जो जानवर ऊँट वग़ैरह चर चुग रहे थे सबको अपने क़ब्ज़े में किया उन जानवरों में दो सौ ऊँट तो सिर्फ़ अ़ब्दुल मुत्तलिब के थे। अस्वद बिन मक़्सूद जो उसके लश्कर के हरावल का सरदार था उसने अब्रहा के हुक्म से उन जानवरों को लूटा था जिस पर अ़रब शायरों ने उसकी हिजू में अश्आ़र तस्नीफ़ किये हुए हैं जो सीरत इब्ने इस्हाक़ में मौजूद हैं। अब अब्रहा ने अपना क़ासिद हुनाता हिम्यरी मक्का वालों के पास भेजा कि मक्का के सबसे बड़े सरदार को मेरे पास लाओ और यह भी ऐलान कर दो कि मैं मक्का वालों से लड़ने को नहीं आया, मेरा इरादा सिर्फ़ बैतुल्लाह को गिराने का है, हाँ! अगर मक्का वाले उसको बचाने के दर पे हुए तो ला महाला मुझे उनसे लड़ाई करनी पड़ेगी। हुनाता जब मक्का में आया और लोगों से मिला जुला तो मालूम हुआ कि यहाँ का बड़ा सरदार अ़ब्दुल मुत्तलिब बिन हाशिम है। यह अ़ब्दुल मुत्तलिब से मिला और शाही पैग़ाम पहुँचाया जिसके जवाब में अ़ब्दुल मुत्तलिब ने कहा, वल्लाह! न हमारा इरादा उससे लड़ने का है न हममें इतनी ताक़त है यह अल्लाह का हुर्मत वाला घर है। उसके

ख़लील हज़रत इब्राहीम (عليه السلام) की ज़िन्दा यादगार है अल्लाह अगर चाहेगा तो अपने घर की आप हिफ़ाज़त करेगा वरना हममें तो हिम्मत व कुव्वत नहीं। हुनाता ने कहा अच्छा तो आप मेरे साथ बादशाह तक चले चलिए, अ़ब्दुल मुत्तलिब साथ हो लिए, बादशाह ने जब उन्हें देखा तो हैबत में आ गया अ़ब्दुल मुत्तलिब गोरे चिट्टे सुडौल और मज़बूत कुवा (बाज़ू) वाले हसीनो जमील इंसान थे, देखते ही अब्रहा तख़्त से नीचे उतर आया और फ़र्श पर अ़ब्दुल मुत्तलिब के साथ बैठ गया और अपने तर्जुमान से कहा कि इनसे पूछ कि क्या चाहता है? अ़ब्दुल मुत्तलिब ने कहा मेरे दो सौ ऊँट जो बादशाह ने ले लिये हैं उन्हें वापिस कर दिया जाए। बादशाह ने कहा इनसे कह दे कि पहली नज़र में तेरा रोअ़ब मुझ पर पड़ा था और मेरे दिल में तेरी वक़्अत बैठ गई थी लेकिन पहले ही कलाम में तूने सब कुछ खो दी अपने दो सौ ऊँट की तो तुझे फ़िक्र है और अपने और अपनी क़ौम के दीन की तुझे फ़िक्र नहीं। मैं तो तुम लोगों का इबादतखाना तोड़ने और उसे ख़ाक में मिलाने के लिए आया हूँ। अ़ब्दुल मुत्तलिब ने जवाब दिया कि सुन बादशाह! ऊँट तो मेरे हैं इसलिए उन्हें बचाने की कोशिश में मैं हूँ और ख़ाना कअ़बा अल्लाह तआ़ला का है वह ख़ुद उसे बचा लेगा। इस पर यह सरकश कहने लगा कि ख़ुदा भी आज उसे मेरे हाथ से बचा नहीं सकता। अ़ब्दुल मुत्तलिब ने कहा बेहतर है वह जाने और तू जाने। यह भी मरवी है कि अहले मक्का ने तमाम हिजाज़ का तिहाई माल अब्रहा को देना चाहा कि वह अपने उस बद इरादे से बाज़ आए लेकिन उसने क़बूल न किया। ख़ैर अ़ब्दुल मुत्तलिब तो अपने ऊँट ले कर चल दिये और आकर क़ुरैश को हुक्म दिया कि मक्का बिल्कुल ख़ाली कर दो पहाड़ों में चले जाओ। अब अ़ब्दुल मुत्तलिब अपने साथ क़ुरैश के चुनिन्दा चुनिन्दा लोगों को लेकर बैतुल्लाह में आया और बैतुल्लाह के दरवाज़े का कुण्डा थामकर रो रोकर और गिड़गिड़ाकर दुआएँ माँगनी शुरू कीं कि बारी तआ़ला! अब्रहा और उसके ख़ूँख़ार लश्कर से अपने पाक और ज़ी इज़्ज़त घर को बचा ले। अ़ब्दुल मुत्तलिब ने उस वक़्त यह दुआइया अश्आर पढ़े,

ला हुम्म इन्नल मर्अयम — नइ रहलहू फ़म्नअ रिहालक

ला यग़्लिबन्न सलीबुहुम — व महल्लुहुम अबदन मिहालक

"यानी हम बेफ़िक्र हैं हम जानते हैं कि हर घर वाला अपने घर का बचाव आप करता है, ऐ अल्लाह! तू भी अपने घर को अपने दुश्मनों से बचा। यह तो हर्गिज़ नहीं हो सकता कि उनकी सलीब और उनकी डोलें तेरी डोलों पर ग़ालिब आ जाएँ।"

अब अ़ब्दुल मुत्तलिब ने बैतुल्लाह के दरवाज़े का कुण्डा हाथ से छोड़ दिया और अपने तमाम साथियों को लेकर आस पास के पहाड़ों की चोटियों पर चढ़ गया। यह भी मज़्कूर है कि जाते हुए क़ुर्बानी के सौ ऊँट बैतुल्लाह के आसपास निशान लगाकर छोड़ दिये थे, इस निय्यत से कि अगर यह बद दीन आए और उन्होंने अल्लाह के नाम की क़ुर्बानी के इन जानवरों को छेड़ा तो अ़ज़ाबे इलाही उन पर उतरेगा। दूसरी सुबह अब्रहा के लश्कर में कमरबंदी हो चुकी और मक्का की तरफ़ मुँह उठाकर चलने की तैयारी की। उस वक़्त

नुफ़ैल बिन ह्बीब जो उससे रास्ते में लड़ा था और अब बतौर क़ैदी उसके साथ था वह आगे बढ़ा और शाही हाथी का कान पकड़ लिया और कहा मह्मूद बैठ जा और जहाँ से आया है वहीं ख़ैरियत के साथ चला जा, तू अल्लाह तआला के मुह्तरम शहर में है, यह कहकर कान छोड़ दिया और भागकर क़रीब की पहाड़ी में जा छुपा, मह्मूद हाथी यह सुनते ही बैठ गया, अब हज़ार जतन फ़ीलबान कर रहे हैं लश्करी भी कोशिशें करते करते थक गए लेकिन हाथी अपनी जगह से हिलता ही नहीं, सिर पर आँकस मार रहे हैं इधर उधर से भाले और बरछे मार रहे हैं, आँखों में आँकस डाल रहे हैं, ग़र्ज़ तमाम जतन कर लिये लेकिन हाथी जुंबिश (ह्रकत) भी नहीं करता, फिर बतौरे इम्तिहान के उसका मुँह यमन की तरफ़ करके चलाना चाहा तो झट से खड़ा होकर दौड़ता हुआ चल दिया, शाम की तरफ़ चलाना चाहा तो वहीं बैठ गया। उन्होंने फिर उसे मारना पीटना शुरू किया कि देखा कि एक घटाटोप परिन्दों का झुर्मुट बादल की तरह् समुन्द्र के किनारे की तरफ़ से उमड़ा चला आ रहा है अभी पूरी तरह् देखने भी नहीं पाये थे कि वह जानवर सिर पर आ गए चारों तरफ़ से सारे लश्कर को घेर लिया उनमें से हर एक की चोंच में एक मसूर या माश के दाने के बराबर कंकरी थी, और दोनों पंजों में दो कंकरियाँ थीं, यहाँ पर फेंकने लगे जिस जिस पर कंकरी आ पड़ी वह वहीं हलाक हो गया, अब तो उस लश्कर में भगदड़ मच गई, हर एक नुफ़ैल नुफ़ैल करने लगा क्यों कि उसे उन लोगों ने अपना रहबर और रास्ता बताने वाला समझ रखा था। नुफ़ैल तो हाथी को कहकर पहाड़ पर चढ़ गया था और दीगर अहले मक्का उन लोगों की यह दुर्गत अपनी आँखों से देख रहे थे और नुफ़ैल वहीं खड़ा यह शेअ़र पढ़ रहा था,

ऐनल मफ़र्रु वल इलाहुत्तालिबू वल्अशरमुल मग़्लूबु लैसल ग़ालिब

अब जायपनाह कहाँ है? जबकि अल्लाह तबारक व तआला ख़ुद ताक में लग गया है। सुनो! अशरम बदबख़्त मग़्लूब हो गया अब यह पनपने का नहीं।'' और भी नुफ़ैल ने इस वाक़िया के बारे में और भी बहुत से अश्आर कहे हैं जिनमें इस क़िस्से को बयान किया है और कहा है कि काश! तू उस वक़्त मौजूद होता जबकि उन हाथी वालों की शामत आई है और वादी मुह्स्सिब में उन पर अ़ज़ाब के संगरेज़े बरसे हैं तो उस वक़्त तो उस इलाही लश्कर यानी परिन्दों को देखकर क़तअन सज्दे में गिर पड़ता, हम तो वहाँ खड़े ह्म्दे इलाही की रागिनियाँ अलाप रहे थे भले कलेजे हमारे भी ऊँचे हो गए थे कि कहीं कोई कंकरी हमारा काम भी तमाम न कर दे। नस़रानी मुँह मोड़े भाग रहे थे और नुफ़ैल नुफ़ैल पुकार रहे थे गोया कि नुफ़ैल पर उनके बाप दादों का कोई क़र्ज़ था। वाक़दी फ़र्माते हैं कि ''यह परिन्दे ज़र्द रंग के थे, कबूतर से कुछ छोटे थे, उनके पैर लाल थे।

और एक रिवायत में है कि जब मह्मूद हाथी बैठ गया और पूरी कोशिश के बावजूद भी न उठा तो उन्होंने दूसरे हाथी को आगे किया, उसने क़दम बढ़ाया ही था कि उसकी मस्तक पर कंकरी पड़ी और वह बिलबिलाकर पीछे हटा और हाथी भी भाग खड़े हुए और इधर बराबर कंकरियाँ आने लगीं अक्सर तो वहीं ढेर हो गए, और कुछ जो इधर उधर भाग निकले थे उनमें से भी कोई जांबर न हुआ भागते भागते उनके ह्स्से कट कटकर गिरते जाते थे और आख़िरकार जान से जाते थे। अब्रहा बादशाह भी भागा लेकिन एक एक ह्स्सा

बदन का झड़ना शुरू हो गया यहाँ तक कि ख़स्अम के शहरों में से सन्आ में जब वह पहुँचा तो बिलकुल गोश्त का लोथड़ा बना हुआ था वहीं बिलक बिलक कर दम तोड़ा और कुत्ते की मौत मरा, दिल तक फट गया था, कुरेशियों को बड़ा माल हाथ लगा। अब्दुल मुत्तलिब ने तो सोने से एक कुआँ भर लिया था, ज़मीने अरब में आबला और चेचक उसी साल पैदा होते हुए देखे गए और इसी तरह सपन्द और हंज़ल वग़ैरह के कड़वे दरख़्त भी उसी साल ज़मीने अरब में देखे गए। पस अल्लाह तआला बज़ुबाने रसूलुल्लाह (ﷺ) अपनी यह नेअमत याद दिलाता है और गोया फ़र्माया जा रहा है कि अगर तुम मेरे घर की इसी तरह इज़्ज़त व हुर्मत करते रहते और मेरे रसूल का कहा मानते तो मैं भी इसी तरह तुम्हारी हिफ़ाज़त करता और दुश्मनों से नजात देता।

अबाबील का ज़िक्र : अबाबील जमा का सेग़ा है इसका वाहिद लुग़ते अरब में पाया नहीं गया। सिज्जील के मअनी हैं बहुत सख़्त। और कुछ मुफ़स्सिरीन कहते हैं कि यह दो फ़ारसी लफ़्ज़ों का मुरक्कब है यानी संग और गुल से यानी पत्थर और मिट्टी। ग़र्ज़ सिज्जील वह है जिसमें पत्थर मअ मिट्टी के हो। अस्फ़ जमा है अस्फ़तुन की खेती के उन पत्तों को कहते हैं जो पक न गए हों। अबाबील के मअनी हैं गिरोह गिरोह, झुण्ड झुण्ड, बहुत सारे पे दर पे जमाशुदा, इधर उधर से आने वाले। कुछ नहवी कहते हैं कि इसका वाहिद अबील है। इब्ने अब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं कि इन परिन्दों की चोंच थी परिन्दों जैसी और पंजे थे कुत्तों जैसे। इक्रिमा (रह.) फ़र्माते हैं कि यह सब्ज़ रंग के परिन्दे थे जो समुन्द्र से निकले थे, उनके सिर दरिन्दों जैसे थे, और अक़्वाल भी हैं। यह परिन्दे बाक़ायदा उन लश्करियों के सिरों पर परे बाँधकर खड़े हो गए और फिर चीख़ने लगे फिर पथराव किया, जिसके सिर में लगा उसके नीचे से निकल गया और दो टुकड़े होकर ज़मीन पर गिर पड़ा, जिसके कुछ अज़्व पर गिरा वह अज़्व साक़ित हो गया साथ ही तेज़ आँधी आई जिससे और आसपास के कंकर भी उनकी आँखों में घुस गए और सब तहोबाला हो गए। अस्फ़ कहते हैं चारे को और कुट्टी को और गेहूँ के दरख़्त के पत्तों को और (माकूल) से मुराद टुकड़े टुकड़े किया हुआ है।

हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) से मरवी है कि अस्फ़ कहते हैं भूसी को जो अनाज के दानों के ऊपर होती है। इब्ने ज़ेद (रह.) फ़र्माते हैं कि मुराद खेतों के वह पत्ते हैं जिन्हें जानवर चर चुके हों। मतलब यह है कि अल्लाह तआला ने उनका तहस नहस कर दिया और आम ख़ास को हलाक कर दिया, उनकी सारी तदबीरें पट पड़ गईं, कोई भलाई उन्हें नसीब न हुई, ऐसा भी कोई उनमें सही सालिम न रहा कि उनकी ख़बर पहुँचाए। जो भी बचा वह ज़ख़्मी हुआ और उस ज़ख़्म से फिर जांबर न हो सका, ख़ुद बादशाह भी गो वह एक गोश्त के लोथड़े की तरह हो गया था ज्यो त्यों सन्आ में पहुँचा लेकिन वहाँ जाते ही उसका कलेजा फट गया और वाक़िया बयानकर ही चुका था जो मर गया। उसके बाद उसका लड़का यक्सूम यमन का बादशाह बना फिर उसके दूसरे भाई मसरूक़ बिन अब्रहा को सल्तनत मिली। अब सैफ़ बिन ज़ुवैज़न हिम्यरी किसरा के दरबार में पहुँचा और उससे मदद तलब की ताकि वह अहले हब्शा से लड़े और यमन उनसे ख़ाली कराये। किसरा ने उसके साथ एक लश्करे जर्रार कर दिया उस लश्कर ने अहले हब्शा को शिकस्त दी और अब्रहा के ख़ानदान के हाथ से सल्तनत निकल गई और फिर क़बीला हिम्यर यहाँ का बादशाह बन गया। अरबों ने उस पर बड़ी ख़ुशी मनाई और चारों

तरफ़ से मुबारकबादियाँ मौसूल हुईं। हज़रत आइशा (रज़ि.) का बयान है कि "अब्रहा के लश्कर के फ़ीलबान और चिरकुटे को मैंने मक्का में देखा दोनों अँधे हो गए थे चल फिर नहीं सकते थे और भीख माँगा करते थे।" हज़रत अस्मा बिन्ते अबीबक्र (रज़ि.) फ़र्माती हैं कि "असाफ़ और नाइला बुतों के पास यह बैठे रहते थे जहाँ मुश्रिकीन अपनी क़ुर्बानियाँ करते थे, और लोगों से भीख माँगते फिरते थे।" इस फ़ीलबान का नाम उनैसा था कुछ तारीख़ों में यह भी है कि अब्रहा ख़ुद उस चढ़ाई में न था बल्कि उसने अपने लश्कर को मातहती के साथ शमर बिन मक़्सूद के मातहती में भेजा था, यह लश्कर बीस हज़ार का था और यह परिन्दे उनके ऊपर रात के वक़्त आए थे और सुबह तक उन सबका सतियानाश हो चुका था। लेकिन यह रिवायत बहुत ग़रीब है और सही बात यह है कि ख़ुद अब्रहा अशरम हब्शी ही अपने साथ लश्कर ले आया था, यह मुम्किन है कि उसके हरावल के दस्ता पर यह शख़्स सरदार हो। इस वाक़िया को बहुत से अरब शायरों ने अपने अपने शेअरों में भी ख़ुलासे के साथ बयान किया है।

सूरह फ़तह की तफ्सीर में हम इस वाक़िया को मुफ़स्सल बयान कर आये हैं, जिसमें है कि "जब हुदेबिया वाले दिन रसूलुल्लाह (ﷺ) उस टीले पर चढ़े जहाँ से आप क़ुरेशियों पर जाने वाले थे तो आप (ﷺ) की ऊँटनी बैठ गई, लोगों ने उसे डाँटा डपटा लेकिन वह न उठी, लोग कहने लगे क़स्वा थक गई। आप (ﷺ) ने फ़र्माया न यह थकी न इसमें अड़ने की आदत, इसे अल्लाह ने रोक दिया है जिसने हाथियों को रोक लिया था, फिर फ़र्माया, उसकी क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है मक्के वाले जिन शराइत पर मुझसे सुलह चाहेंगे मैं सब मान लूँगा बशर्तेकि अल्लाह की हुर्मतों की पामाली उसमें न हो। फिर आप (ﷺ) ने उसे डाँटा तो वह फ़ौरन खड़ी हो गई।" (सहीह बुख़ारी, किताबुश्शुरूत, बाब अश्शुरूतु फ़िल जिहाद : 2731, 2732) बुख़ारी व मुस्लिम की और एक हदीस में है कि अल्लाह तआला ने मक्का पर से हाथियों को रोक लिया और अपने नबी (ﷺ) को वहाँ का क़ब्ज़ा दिया और अपने ईमान वाले बन्दों को, सुनो! इसकी हुर्मत वैसी ही लौटकर आ गई है जैसे कल थी, ख़बरदार! हर हाज़िर को चाहिए कि ग़ैर हाज़िर को पहुँचा दे। (सहीह बुख़ारी, किताब फ़िल्लुक़्तति, बाब कैफ़ तुअरफ़ु लुक़ततु अहले मक्का : 2434; सहीह मुस्लिम : 1355; मुख़्तसरन)

अल्हम्दुलिल्लाह! सूरह फ़ील की तफ़्सीर मुकम्मल हुई।

***

FLOW CHART
तरतीबी नक्श-ए-रब्त

MACRO-STRUCTURE
नज़्मे-जली

सूरह क़ुरैश - 106

आयात : 4, मक्की, पैराग्राफ : 2

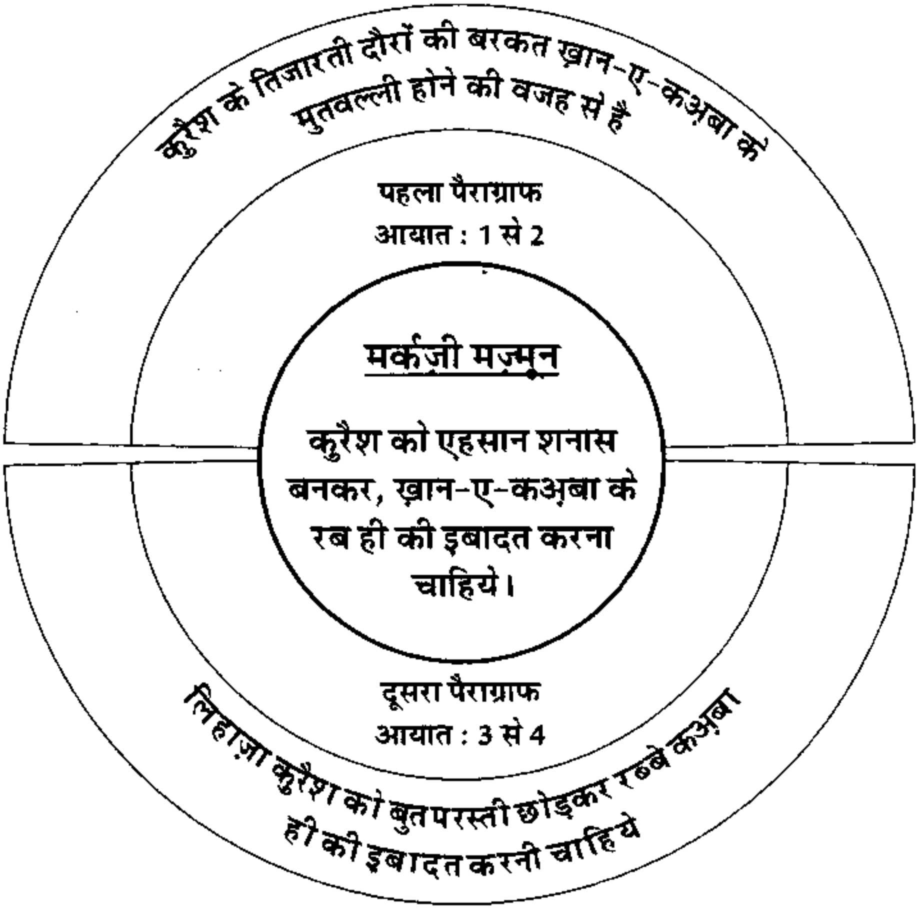

ज़मानए नुज़ूल

सूरह क़ुरैश ग़ालिबन सूरह फ़ील के बाद आप (सल्ल.) के क़ियामे मक्का के दूसरे दौर में नाज़िल हुई होगी, जब ऐलानिया दावत के इब्तिदाई मरहले में, क़ुरैश को नमक हरामी छोड़कर एहसान शनासी का सबक़ सिखाया जा रहा था।

तफ़्सीर सूरह कुरैश

तआरुफ़े सूरत : इसकी फ़ज़ीलत में एक ग़रीब ह़दीस बैहक़ी की किताबे ख़िलाफ़ियात में है कि "रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया अल्लाह तआ़ला ने कुरैशियों को सात फ़ज़ीलतें दी हैं एक तो यह कि मैं इनमें से हूँ, दूसरे यह कि नबुव्वत इनमें है, तीसरे यह कि बैतुल्लाह के पासबान यह हैं, चौथे यह कि ज़मज़म कुंआँ के साक़ी यह हैं, पाँचवें यह कि अल्लाह तआ़ला ने इन्हें हाथी वालों पर ग़ालिब किया है, छठा यह कि दस साल तक इन्होंने अल्लाह तआ़ला की इबादत की जबकि और कोई इबादते इलाही न करता था, सातवें यह कि इनके बारे में क़ुरआने करीम की यह सूरत नाज़िल हुई। फिर आप (ﷺ) ने बिस्मिल्लाह पढ़कर यह सूरत तिलावत फ़र्माई।" (ह़ाकिम : 2/536; वसनदुहू ज़ईफ़ुन; वक़ालज़्ज़हबी, यअक़ूब (बिन मुह़म्मद ज़ोहरी) ज़ईफ़ व इब्राहीम (बिन मुह़म्मद बिन साबित बिन शुरह़बील) स़ाह़ब मनाकीरे हाज़ा अन्करहा)

***

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

तर्जुमा : "शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रह़म वाला है।"

لِاِيْلٰفِ قُرَيْشٍ ① اٖلٰفِهِمْ رِحْلَةَ الشِّتَآءِ وَالصَّيْفِ ② فَلْيَعْبُدُوْا رَبَّ هٰذَا الْبَيْتِ ③ الَّذِيْٓ اَطْعَمَهُمْ مِّنْ جُوْعٍ ۙ وَّاٰمَنَهُمْ مِّنْ خَوْفٍ ④

तर्जुमा : "कुरैश को उल्फ़त दिलाने के शुक्रिये में (1) यानी इन्हें जो जाड़े और गर्मी के सफ़र में ख़ोगर कर दिया है तो (इसके शुक्रिया) में (2) इन्हें चाहिए कि इसी घर के रब की इबादत करते रहें (3) जिसने इन्हें भूख में खाना दिया और डर और ख़ौफ़ में अम्नो-अमान दिया।" (4)

कुरैश पर रब्बे करीम के ख़ास़ इन्आमात (आयत : 1 से 4) : मौजूदा उ़स्मानी क़ुरआन की तर्तीब में यह सूरत सूरह फ़ील से अलग है और दोनों के बीच बिस्मिल्लाह... की आयत का फ़ास़ला मौजूद है। मज़्मून के ऐतिबार से यह सूरत पहली सूरत के बारे में ही है जैसे कि मुह़म्मद बिन इस्ह़ाक़, अ़ब्दुर्रह़मान बिन ज़ैद बिन असलम (रह़ि.) वग़ैरह ने तस़रीह़ की है। इस बिना पर मअ़नी यह होंगे कि हमने मक्का से हाथियों को रोका और हाथी वालों को हलाक किया, यह कुरैशियों को उल्फ़त दिलाने और उन्हें इज्तिमाअ़ के साथ बाअम्न इस शहर में रहने सहने के लिए था और यह मुराद भी बयान की गई है कि यह कुरैशी जाड़ों में क्या और गर्मियों में क्या दूरदराज़ के सफ़र अम्नो अमान से तै कर सकते थे, क्योंकि मक्के जैसे मुह़तरम शहर में रहने की वजह से

हर जगह इनकी इज़्ज़त होती थी बल्कि इनके साथ भी जो होता था अम्नो अमान से सफ़र तै कर लेता था इसी तरह वतन में हर तरह का अम्न उन्हें हासिल था जैसे कि और जगह कुरआन में मौजूद है कि क्या यह नहीं देखते कि हमने हरम को अम्न वाली जगह बना दिया है, इसके आसपास तो लोग उचक लिये जाते हैं लेकिन यहाँ के रहने वाले निडर हैं।

इमाम इब्ने जरीर (रह.) फ़र्माते हैं कि (लि इलाफ़ि) में पहला लाम ताज्जुब का लाम है और दोनों सूरतें बिलकुल जुदागाना हैं, जैसाकि मुसलमानों का इज्माअ है, तो गोया यूँ फ़र्माया जा रहा है कि तुम कुरेशियों के इस इज्तिमाअ और उल्फ़त पर ताज्जुब करो कि मैंने उन्हें कैसी भारी नेअमत अता कर रखी है, इन्हें चाहिए कि मेरी इस नेअमत का शुक्र इ स तरह अदा करें कि सिर्फ़ मेरी ही इबादत करते रहें जैसे और जगह है:

(إِنَّمَا أُمِرْتُ أَنْ أَعْبُدَ رَبَّ هَٰذِهِ الْبَلْدَةِ الَّذِي حَرَّمَهَا) (27/नम्ल : 91)

यानी "ऐ नबी (ﷺ)! तुम कह दो कि मुझे तो सिर्फ़ यही हुक्म दिया गया है कि मैं इस शहर के रब की ही इबादत करूँ जिसने इसे हरम बनाया जो हर चीज़ का मालिक है, मुझे हुक्म दिया गया है कि मैं उसका मुतीअ और फ़र्मांबरदार रहूँ।"

रब ने अहले मक्का की भूख मिटा दी : फिर फ़र्माता है वह रब्बे बैत जिसने इन्हें भूख में खिलाया और ख़ौफ़ में निडर रखा, इन्हें चाहिए कि उसकी इबादत में किसी छोटे बड़े को शरीक न ठहराएँ जो अल्लाह तआला के इस हुक्म की बजा आवारी (आज्ञा पालन) करेगा वह दुनिया के उस अम्न के साथ आख़िरत के दिन भी अम्नो-अमान से रहेगा और उसकी नाफ़र्मानी करने से यह अम्न भी बेअम्नी से और आख़िरत का अम्न भी डर ख़ौफ़ से और इंतिहाई मायूसी से बदल जाएगा।

जैसे और जगह है (ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا قَرْيَةً كَانَتْ اٰمِنَةً) (16/नहल : 112) अल्लाह तआला उन बस्ती वालों की मिसाल बयान करता है जो अम्नो अमान के साथ थे, हर जगह से बाफ़रागत रोज़ियाँ खिची चली आती थीं, लेकिन उन्हें अल्लाह की नेअमतों की नाशुक्री करने की सूझी, चुनाँचे अल्लाह तआला ने उन्हें भूख और ख़ौफ़ का लिबास चखा दिया, यही उनके करतूत का बदला था उनके पास उन ही में से अल्लाह के भेजे हुए आए लेकिन उन्होंने उनको झुठलाया, उस जुल्म पर अल्लाह तआला के अज़ाबों ने उन्हें गिरफ़्तार कर लिया।

एक हदीस में है कि "रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, कुरैशियों! तुम्हें तो अल्लाह यूँ राहत व आराम पहुँचाए घर बैठे खिलाये पिलाए चारों तरफ़ से बदअम्नी की आग के शोले भड़क रहे हों और तुम्हें अम्नो अमान से मीठी नींद सुलाए फिर तुम पर क्या मुसीबत है जो तुम अपने परवरदिगार की तौहीद से जी चुराओ। और उसकी इबादत में दिल न लगाओ बल्कि उसके सिवा दूसरों के आगे सिर झुकाओ।" (मज्मउज़्ज़वाइद : 7/146)

अल्हम्दुलिल्लाह! सूरह कुरैश की तफ़्सीर मुकम्मल हुई।

FLOW CHART
तरतीबी नक्श-ए-रब्त

MACRO-STRUCTURE
नज़्मे-जली

सूरह माऊन - 107

आयात : 7, मक्की, पैराग्राफ : 2

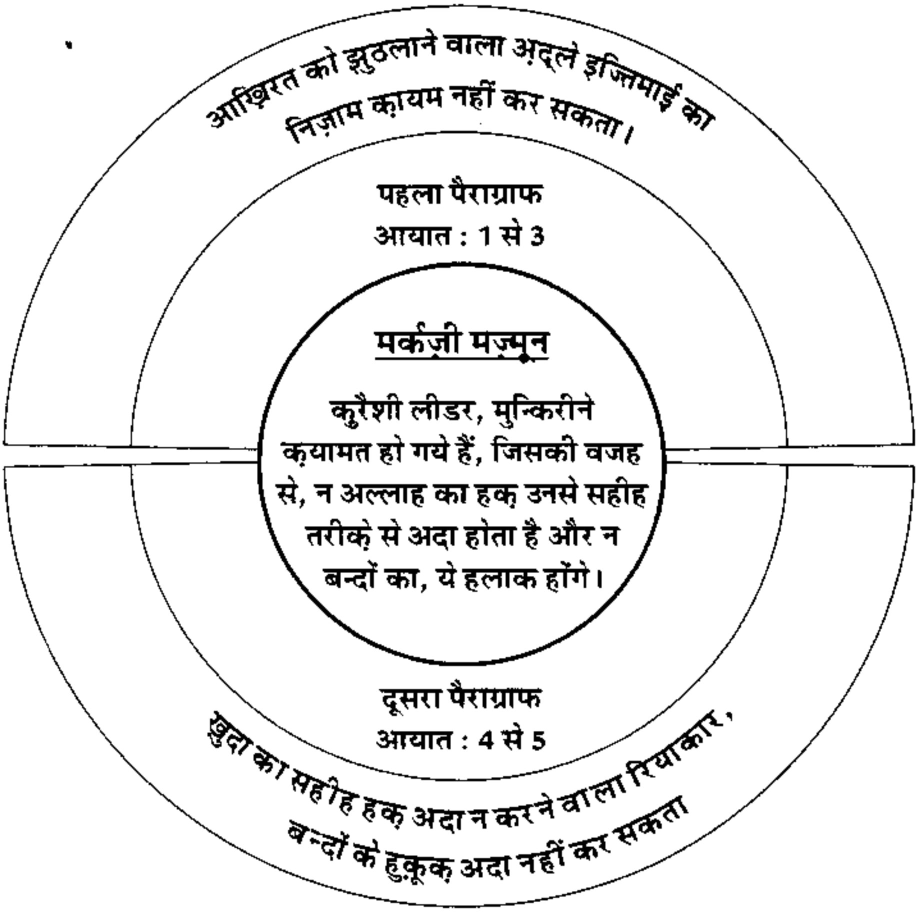

ज़मानए नुज़ूल

सूरह माऊन ऐलाने आम के बाद ग़ालिबन् 4 नबवी में नाज़िल हुई। इस सूरत में सरदाराने मक्का के ख़िलाफ़ फ़र्दे जुर्म है।

तफ़्सीर सूरह माऊन

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

तर्जुमा : ''शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है।''

اَرَءَيْتَ الَّذِىْ يُكَذِّبُ بِالدِّيْنِ ① فَذٰلِكَ الَّذِىْ يَدُعُّ الْيَتِيْمَ ② وَلَا يَحُضُّ عَلٰى
طَعَامِ الْمِسْكِيْنِ ③ فَوَيْلٌ لِّلْمُصَلِّيْنَ ④ الَّذِيْنَ هُمْ عَنْ صَلَاتِهِمْ سَاهُوْنَ ⑤
الَّذِيْنَ هُمْ يُرَآءُوْنَ ⑥ وَيَمْنَعُوْنَ الْمَاعُوْنَ ⑦

तर्जुमा : ''क्या तूने उसे भी देखा है जो रोज़े जज़ा को झुठलाता है? (1) यही वह है जो यतीम को धक्के देता है (2) और मिस्कीन को खिलाने की रग़बत नहीं देता (3) उन नमाज़ियों के लिए अफ़सोस व वैल नामी जहन्नम की जगह है (4) जो अपनी नमाज़ से ग़ाफ़िल हैं (5) जो रियाकार हैं (6) और बरतने की चीज़ को रोकते हैं।'' (7)

क़ियामत के दिन को झुठलाने वाले का अंजाम (आयत : 1 से 7) : अल्लाह तआला फ़र्माता है, ऐ मुहम्मद (ﷺ)! तुमने उस शख़्स को देखा है? जो क़ियामत के दिन को जो जज़ा सज़ा का दिन है झुठलाता है, यतीम पर ज़ुल्मो सितम करता है, उसका हक़ मार खाता है, उसके साथ सुलूको एहसान नहीं करता, मिस्कीनों को ख़ुद तो क्या देता दूसरों को भी इस कारे ख़ैर पर आमादा नहीं करता, जैसे और जगह है (كَلَّا بَلْ لَّا تُكْرِمُوْنَ الْيَتِيْمَ ﴿١٧﴾ وَلَا تَحٰٓضُّوْنَ عَلٰى طَعَامِ الْمِسْكِيْنِ ﴿١٨﴾) (89/सूरह फ़ज्र : 17-18) यानी जो बुराई तुम्हें पहुँचती है वह तुम्हारे आमाल का नतीजा है कि न तुम यतीमों की क़द्र करते हो, न मिस्कीनों को खाना खिलाने को कहते हो, यानी उस फ़क़ीर को जो इतना नहीं पाता कि उसे काफ़ी हो। फिर फ़र्मान है कि ग़फ़्लत बरतने वाले नमाज़ियों के लिए वैल है, यानी उन मुनाफ़िक़ों के लिए जो लोगों के सामने तो नमाज़ अदा करें वरना हज़म कर जाएँ, यही मअनी हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने किये हैं। (तब्री : 24/632) और यह भी मअनी हैं कि मुक़र्ररकर्दा वक़्त टाल देते हैं जैसे कि मसरूक़ और अबुज़्ज़ुहा कहते हैं। (तब्री : 24/632)

यतीमों को धक्के न दो : हज़रत अताअ बिन दीनार (रह.) फ़र्माते हैं अल्लाह का शुक्र है कि फ़र्माने बारी

में (अन सलातिहिम) है (फ़ी सलातिहिम) नहीं, यानी नमाज़ों से ग़फ़्लत करते हैं, फ़र्माया, नमाज़ों में ग़फ़्लत बरतते हैं नहीं फ़र्माया। इसी तरह यह लफ़्ज़ शामिल है ऐसे नमाज़ी को भी जो हमेशा नमाज़ को आख़िरी वक़्त में अदा करे या उमूमन आख़िरी वक़्त पढ़े या अरकान व शुरूत की पूरी रिआयत न करे या ख़ुशूअ व ख़ुज़ूअ और तदब्बुर व ग़ौरो फ़िक्र न करे। लफ़्ज़े कुरआन उनमें से हर एक को शामिल है, यह सब बातें जिसमें हों वह तो पूरा पूरा बदनसीब है, और जिसमें जितनी हों उतना ही वह वैल वाला है, और निफ़ाक़े अमली का हिस्सेदार है। बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस में है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं कि ''यह नमाज़ मुनाफ़िक़ की है, यह नमाज़ मुनाफ़िक़ की है, यह नमाज़ मुनाफ़िक़ की है कि बैठा हुआ सूरज का इंतिज़ार करता रहे जब वह ग़ुरूब होने के क़रीब पहुँचे और शैतान अपने सींग उसमें मिला ले तो खड़ा हुआ और मुर्ग़ की तरह चार ठोंगे मार ले जिसमें अल्लाह का ज़िक्र बहुत ही कम करे।'' (सहीह मुस्लिम, किताबुल मसाजिद, बाब इस्तिहबाबु बिलअसरि : 622; अबूदाऊद : 413; तिर्मिज़ी : 160; अहमद : 3/149; इब्ने हिब्बान : 261) यहाँ मुराद अस्र की नमाज़ है जो सलाते वुस्ता है जैसे कि हदीस के लफ़्ज़ों से साबित है, यह शख़्स मकरूह वक़्त में खड़ा होता है और कोए की तरह चोंच मार लेता है जिसमें इतमीनाने अरकान भी नहीं होता, न ख़ुशूअ ख़ुज़ूअ होता है बल्कि ज़िक्रुल्लाह भी बहुत ही कम होता है और क्या अजब कि यह नमाज़ सिर्फ़ दिखावे की नमाज़ हो तो पढ़ी न पढ़ी बराबर है, इन ही मुनाफ़िक़ीन के बारे में और जगह इर्शाद है (إِنَّ الْمُنَافِقِينَ يُخَادِعُونَ اللَّهَ وَهُوَ خَادِعُهُمْ وَإِذَا قَامُوا إِلَى الصَّلَاةِ قَامُوا كُسَالَىٰ يُرَاءُونَ النَّاسَ وَلَا يَذْكُرُونَ اللَّهَ إِلَّا قَلِيلًا) (4/निसाअ : 142) यानी मुनाफ़िक़ अल्लाह तआला को धोखा देते हैं और वह उन्हें, यह जब भी नमाज़ के लिए खड़े होते हैं तो थके हारे बादिले नख़्वास्ता सिर्फ़ लोगों को दिखावे के लिए नमाज़ गुज़ारते हैं, अल्लाह तआला की याद बहुत ही कम करते हैं। यहाँ भी फ़र्माया, यह रियाकारी करते हैं लोगों में नमाज़ी बनते हैं।

किन नमाज़ियों के लिए हलाकत है : तब्रानी की एक हदीस में है ''वैल जहन्नम की एक वादी का नाम है जिसकी आग इस क़द्र तेज़ है कि और आग जहन्नम की उससे हर दिन चार सौ बार पनाह माँगती है। यह वैल इस उम्मत के रियाकार उलमा के लिए है और रियाकारी के तौर पर सदक़ा ख़ैरात करने वालों के लिए है और रियाकारी के तौर पर हज्ज करने वालों के लिए है और रियाकारी के तौर पर जिहाद करने वालों के लिए हैं। (अल्मुअजमुल कबीर : 12803; वसनदुहू ज़ईफ़ुन फ़ीहि इ़लल मिन्हा जिहालतु यह़या बिन अब्दुल्लाह बिन अब्दि रब्बहू व अबीहि) मुस्नद अहमद में है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं ''जो शख़्स दूसरों को सुनाने के लिए कोई नेक काम करे अल्लाह तआला भी लोगों को सुनाकर अज़ाब करेगा और उसे ज़लील व हक़ीर करेगा।'' (अहमद : 2/212; ह : 6986; वसनदुहू ज़ईफ़ुन अल्अअमश मुदल्लस व अन्अन; शुअबुल ईमान : 6811) हाँ! इस मौक़े पर यह याद रहे कि अगर किसी शख़्स ने बिलकुल नेक नियत से कोई अच्छा काम किया और लोगों को उसकी ख़बर हो गई, उस पर उसे भी ख़ुशी हुई तो यह रियाकारी नहीं, इसकी दलील मुस्नदे अबू यअला मूसली की यह हदीस है कि हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) ने सरकारे नबवी में यह ज़िक्र किया कि ''हुज़ूर (ﷺ)! मैं तो तंहा नवाफ़िल पढ़ता हूँ लेकिन अचानक कोई आ जाता है तो ज़रा मुझे भी यह अच्छा

मालूम होने लगता है। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, तुझे दो दो अज्र मिलेंगे एक अज्र पोशीदगी का और दूसरा ज़ाहिर करने का।" (शरहुस्सुन्ना लिल्बग़वी : 4141; वसनदुहू ज़ईफ़ुन फ़ीहि सईद बिन बशीर ज़ईफ़, वल अअ़मश मुदल्लस व अ़न्अ़न अन सह्हस्सनदु इलैहि व उंज़ुर सुननतिर्मिज़ी : 2385; व सुनन इब्ने माजा : 4226)

हज़रत इब्नुल मुबारक (रह़.) फ़र्माया करते थे कि "यह ह़दीस रियाकारों के लिए भी अच्छी चीज़ है।" यह ह़दीस बरूए इस्नाद ग़रीब है लेकिन इस मअ़नी की ह़दीस और सनदों से भी मरवी है। (तिर्मिज़ी, किताबुज़्ज़ुहद, बाब अ़मलुस्सिर : 2384; वसनदुहू ज़ईफ़ुन; इब्ने माजा : 4226; मुस्नदे त़यालिसी : 2430; इसकी सनद में ह़बीब बिन अबी साबित मुदल्लस रावी है।) इब्ने जरीर की एक बहुत ही ज़ईफ़ सनद वाली ह़दीस में है कि जब यह आयत उतरी तो हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया, "अल्लाहु अकबर! यह तुम्हारे लिए बेहतर है इससे कि तुममें से हर शख़्स को मिस्ल तमाम दुनिया के दिया जाए।(त़ब्री : 24/633; वसनदुहू ज़ईफ़ुन जिद्दा, इसकी सनद में जाबिर बिन यज़ीद जअ़फ़ी ज़ईफ़ (अत्तक़रीब : 1/23) और इसका शैख़ मज्हूल है।) इससे मुराद वह शख़्स है कि नमाज़ पढ़े तो उसकी भलाई से उसे कुछ सरोकार न हो और न पढ़े तो अल्लाह का ख़ौफ़ उसे न हो। और रिवायत में है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) से इस आयत का मत़लब पूछा गया तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया "यह वह लोग हैं जो नमाज़ को उसके वक़्त से टाल देते हैं।" (अल्मुअ़जमुल कबीर : 1853; वसनदुहू मौज़ूउन; मुहम्मद बिन क़ासिम असदी कज़्ज़ाब)इसके एक मअ़नी तो यह हैं कि सिरे से पढ़ते ही नहीं, दूसरे मअ़नी यह हैं कि शरई वक़्त से निकाल देते हैं, फिर पढ़ते हैं, यह मअ़नी भी हैं कि पहले वक़्त में अदा नहीं करते। एक मौक़ूफ़ रिवायत में हज़रत सअ़द बिन अबी वक़्क़ास (रज़ि.) से मरवी है कि तंग वक़्त कर डालते हैं। ज़्यादा सही मौक़ूफ़ रिवायत ही है। इमाम बैहक़ी (रह़.) भी फ़र्माते हैं कि मरफ़ूअ़ तो ज़ईफ़ है हाँ मौक़ूफ़ सह़ीह़ है। इमाम ह़ाकिम (रह़.) का क़ौल भी यही है। पस जिस त़रह़ यह लोग इबादते इलाही में सुस्त हैं उसी त़रह़ लोगों के हुक़ूक़ भी अदा नहीं करते यहाँ तक कि बरतने की कम क़ीमत चीज़ें लोगों को इसलिए भी नहीं देते कि वह अपना काम निकाल लें और फिर वह चीज़ ज्यों की त्यों वापिस कर दें। पस इन ख़सीस लोगों से यह कहाँ बन आए कि ज़कात अदा करें और नेकी के काम करें। हज़रत अ़ली (रज़ि.) से माऊन का मत़लब अदायगी ज़कात भी मरवी है। (ह़ाकिम : 2/536; वसनदुहू ज़ईफ़ुन; सुफ़्यान बिन सईद सौरी व इब्ने अबी नजीह़ मुदल्लसान व अ़न्अ़ना) और हज़रत इब्ने उ़मर (रज़ि.) से भी और दीगर हज़राते मुफ़स्सिरीन मुअ़तबिरीन से भी। इमाम ह़सन बस़री (रह़.) फ़र्माते हैं कि "उसकी नमाज़ में रियाकारी है और उसके माल के स़दक़े में रोक है।" हज़रत ज़ेद बिन असलम (रह़.) फ़र्माते हैं कि "यह मुनाफ़िक़ लोग हैं नमाज़ तो चूँकि ज़ाहिर है पढ़नी पड़ती है और ज़कात चूँकि पोशीदा है तो अदा नहीं करते।" इब्ने मसऊ़द (रज़ि.) फ़र्माते हैं कि माऊन में हर वह चीज़ है जो लोग आपस में एक दूसरे से माँग लिया करते हैं, जैसे कुदाल, फावड़ा, देगची, डोल वग़ैरह।

दूसरी रिवायत में है कि अस्ह़ाबे रसूल इसका यही मत़लब बयान करते थे। और रिवायत में है कि हम नबी (ﷺ) के साथ थे और हम उसकी तफ़्सीर यही करते थे। नसाइ की ह़दीस में है कि "हर नेक चीज़ सदक़ा

है, डोल और हाँडी या पतेली माँगने पर देने को हम हुज़ूर (ﷺ) के ज़माने में माऊन से ता'बीर करते थे।" (अबूदाऊद, किताबुज़्ज़कात, बाब फ़ी हुक़ूक़िल माल : 1657; मुख़्तसरन व सनदुहू हसन; मुस्नदे बज़्ज़ार : 2292) ग़र्ज़ इसके मअनी ज़कात न देने के, इताअत न करने के, माँगी चीज़ न देने के हैं। छोटी छोटी बेजान चीज़ें कोई दो घड़ी के लिए माँगने आए उससे इंकार कर देना। मस्लन छलनी, डोल, सूई, सिलबटा, कुदाल, फावड़ा, पतेली, देगची वग़ैरह।

एक ग़रीब हदीस में है कि "क़बीला नुमैर के वफ़्द ने हुज़ूर (ﷺ) से कहा कि हमें ख़ास हुक्म क्या होता है? आप (ﷺ) ने फ़र्माया माऊन से मना न करना। उन्होंने पूछा माऊन क्या है? फ़र्माया पत्थर, लोहा, पानी। उन्होंने पूछा लोहे से मुराद कौन्सा लोहा है? फ़र्माया यही तुम्हारी तांबे की पतेलियाँ और कुदाल वग़ैरह। पूछा पत्थर से क्या मुराद? फ़र्माया यही देगची वग़ैरह।" (इब्ने अबी हातिम व सनदुहू ज़ईफ़ुन फ़ीहि इल्लल मिन्हा ज़ुअफ़ दलहम बिन दहसम) यह हदीस बहुत ही ग़रीब है बल्कि मरफ़ूअ होना मुंकर है और इसकी इस्नाद में वह रावी हैं जो मशहूर नहीं। अली नुमैरी (रज़ि.) फ़र्माते हैं कि "रसूलुल्लाह (ﷺ) से मैंने सुना है कि आप (ﷺ) ने फ़र्माया मुसलमान मुसलमान का भाई है जब मिले सलाम करे। जब सलाम करे तो बेहतर जवाब दे और माऊन का इंकार न करे। मैंने पूछा हुज़ूर (ﷺ)! माऊन क्या है? फ़र्माया पत्थर लोहा और इसी जैसी और चीज़ें।" (अल इसाबह : 2/511) वल्लाहु आलम!

अल्हम्दुलिल्लाह! सूरह माऊन की तफ़्सीर मुकम्मल हुई।

***

FLOW CHART
तरतीबी नक्श-ए-रब्त

MACRO-STRUCTURE
नज़्मे-जली

सूरह कौसर - 108

आयात : 3, मक्की, पैराग्राफ : 3

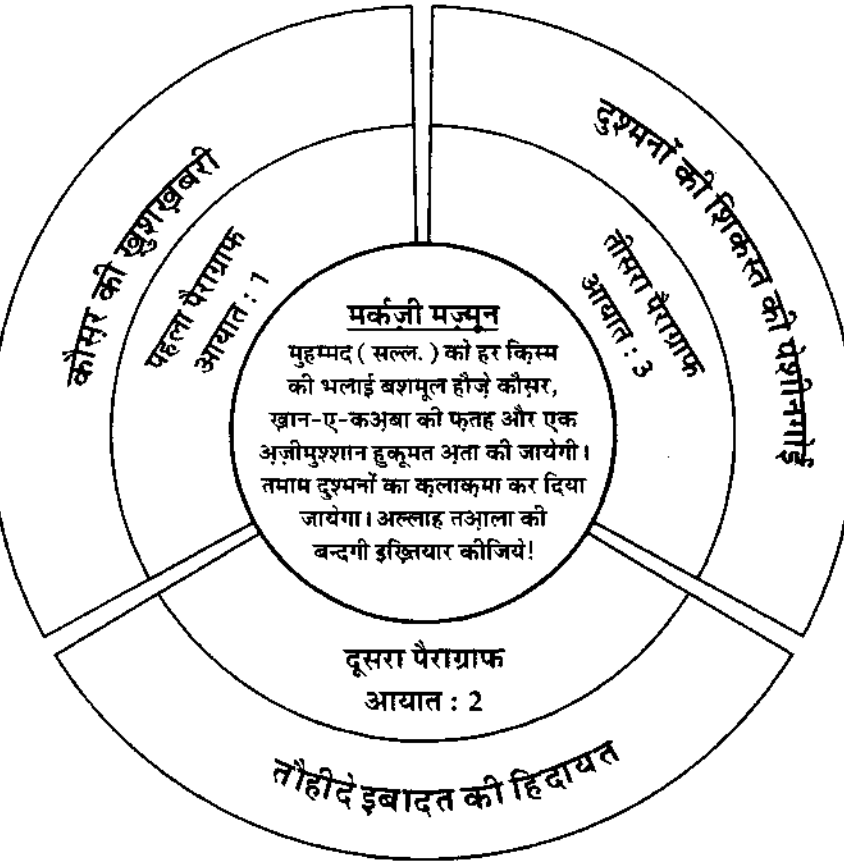

ज़मानए नुज़ूल

सूरह कौसर क़ियामे मक्का के दूसरे दौर (4-5 नबवी) में ऐलाने आ़म के बाद नाज़िल हुई। ये सूरह इन्तिहाई दिलशिकन हालात में नाज़िल हुई, जब आप (सल्ल.) के साहबज़ादे हज़रत क़ासिम (रज़ि.) के इन्तिक़ाल पर क़ुरैश के सरदार आ़स बिन वाइल सहमी ने अबतर कहा था।

तफ़्सीर सूरह कौसर

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

तर्जुमा : ''शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है।''

إِنَّآ أَعْطَيْنٰكَ الْكَوْثَرَ ① فَصَلِّ لِرَبِّكَ وَانْحَرْ ② إِنَّ شَانِئَكَ هُوَ الْأَبْتَرُ ③

तर्जुमा : ''यक़ीनन हमने तुझे होज़े कौसर अ़ता किया (1) पस तू अपने रब के लिए नमाज़ पढ़ और क़ुर्बानी कर (2) यक़ीनन तेरा दुश्मन ही बेनामो निशान है।'' (3)

शाने नुज़ूल और नहरे कौसर (आयत : 1 से 3) : मुस्नद अहमद में है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) पर कुछ गुनूदगी तारी हो गई और दफ़अतन सिर उठाकर मुस्कुराये फिर या तो ख़ुद आप (ﷺ) ने फ़र्माया या लोगों के इस सवाल पर कि हुज़ूर (ﷺ) मुस्कुराये क्यों? तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया, मुझ पर इस वक़्त एक सूरत उतरी, फिर आप (ﷺ) ने बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम पढ़कर इस पूरी सूरत की तिलावत की और फ़र्माया जानते हो कौसर क्या है? लोगों ने कहा, अल्लाह और उसके रसूल ही ख़ूब जानते हैं। फ़र्माया वह एक जन्नती नहर है जिस पर बहुत भलाई है जो मेरे रब ने मुझे अ़ता की है जिस पर मेरी उम्मत क़ियामत के दिन आएगी, उसके बर्तन आसमान के सितारों की गिनती के बराबर हैं। कुछ लोग उससे दूर हटाये जाएँगे तो मैं कहूँगा कि ऐ मेरे रब! यह भी मेरे उम्मती हैं तो कहा जाएगा कि आपको नहीं मालूम कि इन लोगों ने आपके बाद क्या क्या बिदअ़तें निकाली थीं।'' (अहमद : 3/102; वसनदुहू सहीहुन; इस मअ़नी की रिवायत सहीह मुस्लिम, किताबुस्सलात, बाब हुज्जतुन मन क़ालल बस्मला आयत मिन अव्वलि कुल्लि सूरतिन सिवा बराअत : 400) और हदीस में वारिद हुआ है कि ''उसमें दो परनाले आमसान से गिरते होंगे।'' (सहीह मुस्लिम, किताबुल फ़ज़ाइल, बाब इस्बातु हौज़िन्नबिय्यिना (ﷺ) व सिफ़ातिही : 2300; अहमद : 4/424) नसाई की हदीस में है कि ''यह वाक़िया मस्जिद में गुज़रा'' इसी से अक्सर क़ारियों का इस्तिदलाल है कि यह सूरत मदनी है।)

कुछ फ़वाइद का ज़िक्र : और अक्सर फ़ुक़्हा ने इस हदीस से इस्तिदलाल किया है कि बिस्मिल्लाहिर् रहमानिर् रहीम हर सूरत में उसके साथ ही नाज़िल हुई थी और हर सूरह की एक मुस्तक़िल आयत है। मुस्नद की और हदीस में है कि ''हुज़ूर (ﷺ) ने इस आयत की तिलावत करके फ़र्माया कि मुझे कौसर इनायत की गई है जो एक नहर है लेकिन गढ़ा नहीं है। उसके दोनों किनारे मोतियों के ख़ेमे हैं, उसकी मिट्टी ख़ालिस मुश्क है,

उसके कंकर भी सच्चे मोती हैं।'' (अहमद : 3/152, 247; वसनदुहू सहीहुन)

और रिवायत में है कि ''मेअराज वाली रात आप (ﷺ) ने आसमान पर जन्नत में उस नहर को देखा और जिब्राईल (ؑ) से पूछा कि यह कौनसी नहर है? तो हज़रत जिब्राईल (ؑ) ने फ़र्माया यह कौसर है जो अल्लाह तआला ने आपको अता की है।''(अहमदः3/103; सहीह बुख़ारी, किताबुत् तफ़्सीर, सूरह कौसरः 4964) और इस क़िस्म की बहुत सी हदीसें हैं और बहुत सी हमने सूरह इसरा की तफ़्सीर में बयान भी कर दी हैं।

एक और हदीस में है कि ''उसका पानी दूध से ज़्यादा सफ़ेद है और शहद से ज़्यादा मीठा है जिसके किनारे दराज़ गर्दन वाले परिन्दे बैठे हुए हैं। हज़रत सिद्दीक़ (रज़ि.) ने सुनकर फ़र्माया वह परिन्दे तो बहुत ही ख़ूबसूरत होंगे। आप (ﷺ) ने फ़र्माया खाने में भी वह बहुत ही लज़ीज़ हैं।'' (इब्ने जरीर व सनदुहू हसन; हाकिम : 2/537; तब्री : 24/650) और रिवायत में है कि ''हज़रत अनस (रज़ि.) ने हुज़ूर (ﷺ) से सवाल किया कि कौसर क्या है? इस पर आपने यह हदीस बयान की तो हज़रत उमर (रज़ि.) ने उन परिन्दों की निस्बत यह फ़र्माया।'' (अहमद : 3/220, 221; तिर्मिज़ी, किताब सिफ़तुल जन्ना, बाब मा जाअ फ़ी सिफ़ति तैरिल जन्ना : 2542; वसनदुहू सहीहुन) हज़रत आइशा सिद्दीक़ा (रज़ि.) फ़र्माती हैं कि ''यह नहर बीचों बीच जन्नत के है। एक मुन्क़तअ सनद से हज़रत आइशा (रज़ि.) से मरवी है कि ''कौसर के पानी के गिरने की आवाज़ जो सुनना चाहे वह अपने दोनों कानों में अपनी दोनों उँगलियाँ डाल ले।''

फ़ायदा : अव्वलन तो इसकी सनद ठीक नहीं, दूसरे इसके मअनी यह हैं कि इस जैसी आवाज़ आती है न कि ख़ास उसी की आवाज़ हो, वल्लाहु आलम! सहीह बुख़ारी में हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) से मरवी है कि ''कौसर से मुराद वह भलाई और ख़ैर है जो अल्लाह तआला ने आप (ﷺ) को अता की है।'' अबू बिश्र (रह.) कहते हैं कि मैंने सईद बिन जुबैर (रह.) से यह सुनकर कहा कि लोग तो कहते हैं कि यह जन्नत की एक नहर है तो हज़रत सईद ने फ़र्माया वह भी इन भलाईयों और ख़ैर में से है जो आप (ﷺ) को अल्लाह तआला की तरफ़ से इनायत हुई हैं। और भी हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) से मरवी है कि इससे मुराद बहुत सी ख़ैर है, तो यह तफ़्सीर शामिल है हौज़े कौसर वग़ैरह सबको। कौसर माख़ूज़ है कसरत से जिससे मुराद ख़ैरे कसीर है, और इसी ख़ैरे कसीर में हौज़े जन्नत भी है जैसे कि बहुत से मुफ़स्सिरीन से मरवी है।

फ़ायदा : हज़रत मुजाहिद (रह.) फ़र्माते हैं कि दुनिया और आख़िरत की बहुत बहुत भलाइयाँ मुराद है। इक्रिमा (रह.) फ़र्माते हैं नबुव्वत, कुरआन सवाबे आख़िरत कौसर है। और यह भी याद रहे कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) से कौसर की तफ़्सीर नहरे कौसर से भी मरवी है जैसे कि इब्ने जरीर में सनदन मरवी है कि ''आप (ﷺ) ने फ़र्माया कौसर जन्नत की एक नहर है जिसके दोनों किनारे सोना चाँदी है जो याक़ूत और मोतियों पर बह रही है जिसका पानी बर्फ़ से ज़्यादा सफ़ेद है और शहद से ज़्यादा मीठा है।''

फ़ायदा : हज़रत इब्ने उमर (रज़ि.) से भी यह तफ़्सीर मरवी है (इब्ने जरीर) तिर्मिज़ी और इब्ने माजा वग़ैरह

में यह रिवायत मरफ़ूअ भी आई है। इमाम तिर्मिज़ी (रह.) इसे हसन सहीह बतलाते हैं। (तिर्मिज़ी, किताब तफ़्सीरुल कुरआन, बाब वमिन सूरतिल कौसर : 3361; वहुव हदीसुन हसन बिश्शवाहिद, इब्ने माजा : 4334; अहमद : 2/67) इब्ने जरीर में है कि "रसूलुल्लाह (ﷺ) एक दिन हज़रत हमज़ा बिन अब्दुल मुत्तलिब (रज़ि.) के घर तशरीफ़ ले गए आप उस वक़्त घर पर न थे, आपकी बीवी साहिबा जो क़बीला बनू नज्जार से थीं उन्होंने कहा, ऐ अल्लाह के नबी (ﷺ)! वह तो अभी अभी आप (ﷺ) ही की तरफ़ गए हैं, शायद बनू नज्जार में रुक गए हों, आप तशरीफ़ लाइए। हुज़ूर (ﷺ) घर में तशरीफ़ ले गए तो माई साहिबा ने आपके सामने मलीदा रखा जो आप (ﷺ) ने तनावुल फ़र्माया। माई साहिबा ख़ुश होकर फ़र्माने लगीं कि अल्लाह रचाये पचाये अच्छा हुआ कि ख़ुद तशरीफ़ ले आए मैं तो हाज़िरे दरबार होने का इरादा कर चुकी थी कि आपको हौज़े कौसर अता होने की मुबारकबाद दूँ, मुझसे अभी अभी हज़रत अबू अम्मारा ने कहा था। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, हाँ! उस हौज़ की ज़मीन याक़ूत और मरजान और ज़मर्रुद और मोतियों की है" (तब्री) इसके एक रावी हराम बिन उस्मान ज़ईफ़ हैं लेकिन वाक़िया हसन है, और असल तो तवातुर से साबित हो चुकी है।

कौसर क्या है? बहुत से सहाबा (रज़ि.) और ताबेईन (रह.) वग़ैरह से साबित है कि कौसर नहर का नाम है। फिर इर्शाद होता है कि जैसे हमने तुम्हें ख़ैरे कसीर इनायत की और ऐसी पुर शौकत नहर दी तो तुम भी सिर्फ़ मेरी इबादत करो ख़ुसूसन नफ़्ल फ़र्ज़ नमाज़ और कुर्बानी उसी वहदहू ला शरीक लहू के नाम की करते रहो, जैसे फ़र्माया (قُلْ إِنَّ صَلَاتِي وَنُسُكِي وَمَحْيَايَ وَمَمَاتِي لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿١٦٢﴾ لَا شَرِيكَ لَهُ ۖ وَبِذَٰلِكَ أُمِرْتُ وَأَنَا أَوَّلُ الْمُسْلِمِينَ ﴿١٦٣﴾) (6/अन्आम : 162-163) मुराद कुर्बानी से ऊँटों का नहर करना वग़ैरह है। मुश्रिकीन सज्दे और कुर्बानियाँ अल्लाह तआला के सिवा औरों के नाम की करते थे। तो यहाँ हुक्म हुआ कि तुम सिर्फ़ अल्लाह तआला ही के नाम की मुख़्लिसाना इबादतें किया करो। और जगह है (لَا تَأْكُلُوا مِمَّا لَمْ يُذْكَرِ اسْمُ اللَّهِ عَلَيْهِ وَإِنَّهُ لَفِسْقٌ) (6/अन्आम : 121) जिस जानवर पर अल्लाह का नाम न लिया जाए उसे न खाओ यह तो फ़िस्क़ है।

नहर से क्या मुराद है : और कहा गया है कि मुराद वन्हर से दाएँ हाथ का बाएँ हाथ पर नमाज़ में सीने पर रखना है। यही हज़रत अली (रज़ि.) से ग़ैर सहीह सनद के साथ मरवी है। हज़रत शअबी (रह.) इस लफ़्ज़ की यही तफ़्सीर करते हैं। हज़रत अबू जअफ़र बाक़िर (रह.) फ़र्माते हैं कि इससे मुराद नमाज़ के शुरू के वक़्त रफ़उल यदैन करना है। और यह भी कहा गया है कि मतलब यह है कि अपने सीने से क़िब्ला की तरफ़ मुतवज्जह हो। यह तीनों क़ौल इब्ने जरीर में मन्क़ूल हैं।

फ़ायदा : इब्ने अबी हातिम में इस जगह एक बहुत मुंकर हदीस मरवी है जिसमें है कि "जब यह सूरत नबी (ﷺ) पर उतरी तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया ऐ जिब्रईल (عليه السلام)! वन्हर से क्या मुराद है? जो मुझे मेरे परवरदिगार का हुक्म हो रहा है तो हज़रत जिब्रईल (عليه السلام) ने फ़र्माया इससे मुराद कुर्बानी नहीं बल्कि अल्लाह का तुम्हें हुक्म हो रहा है कि नमाज़ की तक्बीरे तहरीमा के वक़्त रफ़उल यदैन करो, और रुकूअ के वक़्त भी

और जब रुकूअ से सिर उठाओ, तब भी और जब सज्दा करो, यही हमारी नमाज़ है और उन फ़रिश्तों की नमाज़ है जो सातों आसमानों में हैं। हर चीज़ की ज़ीनत होती है और नमाज़ की ज़ीनत हर तक्बीर के बाद रफ़उल यदैन करना है।'' (हाकिम : 2/537, 538; वसनदुहू ज़ईफ़ुन जिद्दा, इस्राईल बिन हातिम व अस्बग़ बिन नबाता मज्रूहान, किताबुल मौज़ूआत : 2/98) यह हदीस इसी तरह मुस्तदरक हाकिम में भी है। हज़रत अता ख़ुरासानी (रह.) फ़र्माते हैं वन्हर से मुराद यह है कि अपनी पीठ रुकूअ से सिर उठाओ तो एतिदाल करो और सीने को ज़ाहिर करो यानी इत्मिनान हासिल करो। (इब्ने अबी हातिम) यह सब क़ौल ग़रीब हैं, और सही पहला क़ौल है कि मुराद नहर से क़ुर्बानियों का ज़िब्ह करना है।

इसीलिए रसूले मक़्बूल (ﷺ) नमाज़े ईद से फ़ारिग़ होकर अपनी क़ुर्बानी ज़िब्ह करते थे, और फ़र्माते थे जो शख़्स हमारी नमाज़ पढ़े और हम जैसी क़ुर्बानी करे उसने शरई क़ुर्बानी की, और जिसने नमाज़ से पहले ही जानवर ज़िब्ह कर लिया उसकी क़ुर्बानी नहीं हुई। अबू बुर्दा बिन नियार (रज़ि.) ने खड़े होकर कहा कि ''या रसूलल्लाह (ﷺ)! मैंने नमाज़े ईद से पहले ही क़ुर्बानी कर ली यह समझकर कि आज के दिन गोश्त की चाहत होगी। आप (ﷺ) ने फ़र्माया बस वह तो खाने का गोश्त हो गया सहाबी ने कहा अच्छा या रसूलल्लाह (ﷺ)! अब मेरे पास एक बकरी का बच्चा है जो मुझे दो बकरियों से भी ज़्यादा महबूब है क्या यह काफ़ी होगा? आप (ﷺ) ने फ़र्माया हाँ! तुझे तो काफ़ी है लेकिन तेरे बाद छः महीने का बकरी का बच्चा कोई और क़ुर्बानी नहीं दे सकता।'' (सहीह बुख़ारी, किताबुल ईदैन, बाब अल्अकलु यौमन्नहर : 955; सहीह मुस्लिम : 1961) इमाम अबू जअफ़र मुहम्मद बिन जरीर (रह.) फ़र्माते हैं कि ठीक क़ौल इसका है जो कहता है कि इसके मअनी यह हैं कि अपनी तमाम नमाज़ें ख़ालिस अल्लाह तआला ही के लिए अदा करो उसके सिवा किसी और के लिए न कर, इसी तरह उसकी राह ख़ून बहा किसी और के नाम पर क़ुर्बानी न कर, उसका शुक्र बजा ला जिसने तुझे यह बुज़ुर्गी दी और वह नेअमत दी जिस जैसी कोई नेअमत नहीं, तुझ ही को उसके साथ ख़ास किया। यही क़ौल बहुत अच्छा है।

मुहम्मद बिन कअब क़ुरज़ी (रह.) और अता (रह.) का भी यही क़ौल है। फिर इर्शाद होता है कि ऐ नबी (ﷺ)! तुझसे और तेरी तरफ़ उतरी हुई वही से दुश्मनी रखने वाला ही क़िल्लत व ज़िल्लत वाला बेबरकता और दुम बुरीदा है। यह आयत आस बिन वाइल के बारे में उतरी है। यह पाजी जहाँ हुज़ूर (ﷺ) का ज़िक्रे ख़ैर सुनता तो कहता उसे छोड़ दो वह दुम कटा है उसके पीछे उसकी नरीना औलाद नहीं, इसके इंतिक़ाल करते ही इसका नाम दुनिया से मिट जाएगा। इस पर यह मुबारक सूरत नाज़िल हुई है। शमर बिन अतिया (रह.) फ़र्माते हैं कि उक़्बा बिन अबी मुईत के हक़ में यह आयत उतरी है। इब्ने अब्बास (रज़ि.) वग़ैरह फ़र्माते हैं कि कअब बिन अशरफ़ और जमाअते क़ुरैश के बारे में नाज़िल हुई है। बज़्ज़ार में है कि जब कअब बिन अशरफ़ मक्का मुअज़्ज़मा में आया तो क़ुरैशियों ने उससे कहा कि आप तो उनके सरदार हैं, आप उस बच्चे की तरफ़ नहीं देखते? जो अपनी सारी क़ौम से अलग थलग है और ख़्याल करता है कि वह अफ़ज़ल है। हालाँकि हम हाजियों के अहल में दरोबस्त बैतुल्लाह हमारे हाथों में है, ज़मज़म पर हमारा क़ब्ज़ा है। तो यह ख़बीस कहने

लगा कि बेशक तुम उससे बेहतर हो। इस पर यह आयत उतरी। इसकी सनद सहीह है।

हज़रत अता (रह.) फ़र्माते हैं कि अबू लहब के बारे में यह आयत उतरी है, जब रसूलुल्लाह (ﷺ) के साहबज़ादे का इंतिक़ाल हुआ तो यह बदनसीब मुश्रिकीन से कहने लगा कि आज की रात मुहम्मद (ﷺ) की नस्ल कट गई इस पर अल्लाह तआला ने यह आयत उतारी। इब्ने अब्बास (रज़ि.) से भी यह मंक़ूल है। आप यह भी फ़र्माते हैं कि इससे मुराद हुज़ूर (ﷺ) का हर दुश्मन है जिन जिनके नाम लिये गए वह भी और जिनका ज़िक्र नहीं हुआ वह भी। (अब्तर) के मअ़नी हैं तंहा, अरब का यह भी मुहावरा है कि जब किसी की नरीना औलाद मर जाए तो कहते हैं, बतर। हुज़ूर (ﷺ) के साहबज़ादों के इंतिक़ाल पर भी उन्होंने दुश्मनी की वजह से यही कहा जिस पर यह आयत उतरी, तो मतलब यह हुआ कि अब्तर वह है जिसके मरने के बाद उसका ज़िक्र मिट जाए। उन मुश्रिकीन ने हुज़ूर (ﷺ) की निस्बत भी यही ख़्याल किया था कि उनके लड़के तो इंतिक़ाल कर गए वह न रहे जिनकी वजह से आपके इंतिक़ाल के बाद भी आपका नाम रहता। हाशा व कल्ला अल्लाह तआला आप (ﷺ) का नाम रहती दुनिया तक रखेगा। आप (ﷺ) की शरीअ़त अबदल आबाद तक बाक़ी रहेगी, आप (ﷺ) की इताअ़त हर कह व मह पर फ़र्ज़ कर दी गई है, आप (ﷺ) का प्यार और पाक नाम हर एक मुसलमान के दिलो ज़ुबान पर है और क़ियामत तक फ़िज़ाए आसमानी में उरूज व इक़बाल के साथ गूँजता रहेगा, बहरो बर में हर वक़्त उसकी मुनादी होती रहेगी, अल्लाह तआला आप (ﷺ) पर और आप (ﷺ) की आलो औलाद पर और अज़्वाज व अस्हाब (रज़ि.) पर क़ियामत तक दुरूदो सलाम बेहद व बकसरत भेजता रहे, आमीन।

अल्हम्दुलिल्लाह! सूरह कौसर की तफ़्सीर मुकम्मल हुई।

***

FLOW CHART
तरतीबी नक्श-ए-रब्त

MACRO-STRUCTURE
नज़्मे-जली

सूरह काफ़िरून - 109

आयात : 6, मक्की, पैराग्राफ : 3

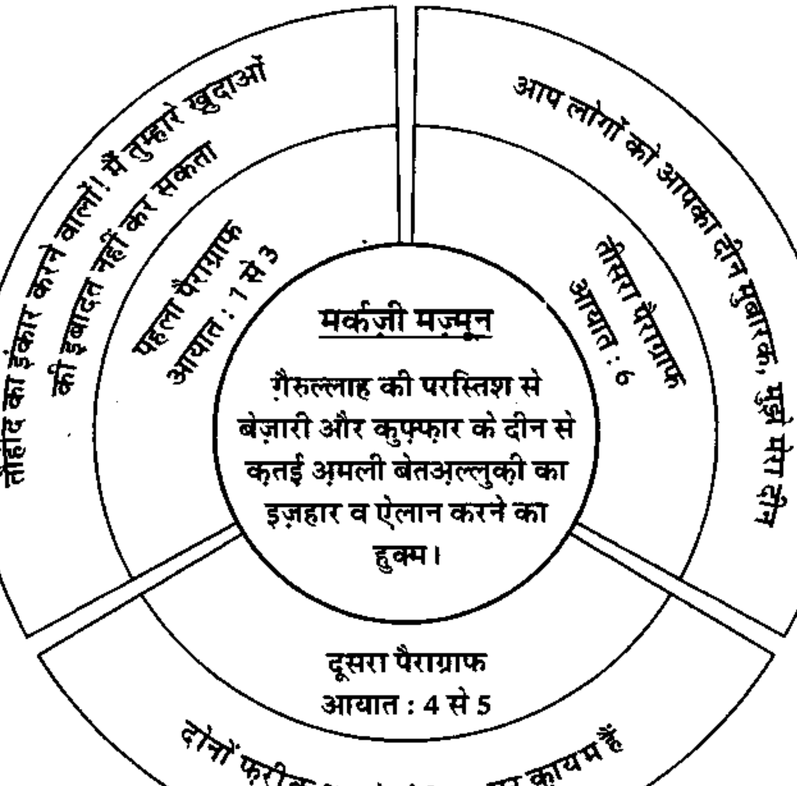

ज़मानए नुज़ूल

सूरह काफ़िरून ऐलाने आम के बाद कियामे मक्का के दूसरे दौर (4-5 नबवी) में नाज़िल हुई, जब कुरैश के सरदारों ने रसूलुल्लाह (सल्ल.) के पास एक वफ़्द की सूरत में आकर मुसालिहाना पेशकश की कि एक साल बुतों की पूजा की जाये और एक साल अल्लाह की। उन्हें साफ़-साफ़ कह दिया गया लकुम् दीनुकुम वलि-य दीन' तुम लोगों के लिये तुम्हारा दीन है और मेरे लिये मेरा दीन।' इस तरह वाज़ेह तौर पर कुफ़्र से अमली बेतअल्लुक़ी का ऐलान कर दिया गया।

तफ़्सीर सूरह काफ़िरून

तआरुफ़े सूरत : सहीह मुस्लिम में हज़रत जाबिर (रज़ि.) से मरवी है कि "रसूलुल्लाह (ﷺ) ने इस सूरत को और सूरह (कुल हुवल्लाहु अहद) को तवाफ़ के बाद दो रकअत नमाज़ में तिलावत फ़र्माया।" (सहीह मुस्लिम, किताबुल हज्ज, बाब हज्जतुन्नबी (ﷺ) : 1218) सहीह मुस्लिम में हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) से मरवी है कि "सुबह की दो सुन्नतों में भी हुज़ूर (ﷺ) इन ही दोनों सूरतों की तिलावत किया करते थे।" (सहीह मुस्लिम, किताब सलातुल मुसाफ़िरीन, बाब इस्तिहबाबु रकअतय सुन्नतिल फ़ज्र वल हस्सु अलैहा : 726) मुस्नद अहमद में हज़रत इब्ने उमर (रज़ि.) से मरवी है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने सुबह के फ़र्ज़ों से पहले की दो रकअतों में और मग़्रिब के बाद की दो रकअतों में बीस ऊपर कुछ दफ़ा या दस ऊपर कुछ मर्तबा सूरह (कुल या अय्युहल काफ़िरून) और सूरह (कुल हुवल्लाहु अहद) पढ़ी। (अहमद : 2/24; वसनदुहू ज़ईफ़ुन; अबू इस्हाक़ सबीई मुदल्लस व अन्अन) (यानी इतनी बार मैंने आप (ﷺ) को यह सूरतें इन नमाज़ों में पढ़ते हुए सुना)। मुस्नद अहमद में हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) से मरवी है कि "नबी (ﷺ) को मैंने चौबीस या पच्चीस बार सुबह की दो सुन्नतों में इन दोनों सूरतों को पढ़ते हुए बख़ूबी देखा।" (अहमद : 2/95, 99; वसनदुहू ज़ईफ़ुन अबू इस्हाक़ अन्अन)

मुस्नद अहमद ही की दूसरी रिवायत में आपसे मरवी है कि महीना भर तक मैंने आप (ﷺ) को इन दोनों रकअतों में यही दोनों सूरतें पढ़ते हुए पाया। (अहमद : 2/94; तिर्मिज़ी, किताबुस्सलात, बाब मा जाअ फ़ी तख़्फ़ीफ़ि रकअतिल फ़ज्र...: 417; वसनदुहू ज़ईफ़ुन; अबू इस्हाक़ मुदल्लस और सिमाअ की सराहत नहीं। नसाई : 993; इब्ने माजा : 1149) यह रिवायत तिर्मिज़ी, इब्ने माजा, नसाई में भी है। इमाम तिर्मिज़ी (रह.) इसे हसन कहते हैं। वह रिवायत पहले बयान हो चुकी है कि यह सूरत चौथाई क़ुरआन के बराबर है और सूरह (इज़ा ज़ुल्ज़िलति) भी। (इसकी तख़रीज सूरह ज़िल्ज़ाल के इब्तिदा में गुज़र चुकी है।) मुस्नद अहमद में रिवायत है कि हज़रत नौफ़िल बिन मुआविया (रज़ि.) फ़र्माते हैं कि "रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उनसे फ़र्माया कि हमारी रबीबा ज़ेनब (रज़ि.) की परवरिश तुम अपने यहाँ करो। मेरे ख़्याल से यह हज़रत ज़ेनब (रज़ि.) थीं, यह एक बार फिर हुज़ूर (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया, कहो बच्ची क्या कर रही है? कहा मैं उन्हें उनकी माँ के पास छोड़ आया हूँ। फ़र्माया, अच्छा क्यूँ आये हो? अर्ज़ किया इसलिए कि आपसे कोई वज़ीफ़ा सीख जाऊँ जो सोते वक़्त पढ़ लूँ। आप (ﷺ) ने फ़र्माया (कुल या अय्युहल काफ़िरून) पढ़कर सो जाया करो इसमें शिर्क से बरा'त और बेज़ारी है।" (अहमद : 5/456; अबूदाऊद, किताबुल अदब, बाब मा यक़ूलु इन्दन्नौम : 5055; वहुव हदीसुन हसन; तिर्मिज़ी : 3403; बिदूनि क़िस्सा) तब्रानी की रिवायत में है कि जब्ला बिन हारिसा (रज़ि.) को भी आप (ﷺ) ने यही फ़र्माया था।

तब्रानी की और रिवायत में है कि "ख़ुद हुज़ूर (ﷺ) भी अपने बिस्तर पर लेटकर इस सूरत की तिलावत फ़र्माया करते थे।" मुस्नद अहमद की रिवायत में है कि "हज़रत हारिस बिन जबला (रजि.) ने कहा या रसूलल्लाह (ﷺ)! मुझे कोई ऐसी चीज़ बताइए कि मैं सोने के वक़्त उसे पढ़ लिया करूँ। आप (ﷺ) ने फ़र्माया जब तू रात को अपने बिस्तर पर जाए तो सूरह (कुल या अय्युहल काफ़िरून) पढ़ लिया कर, यह शिर्क से बेज़ारी है।" वल्लाहु आ'लम!

***

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ ○

तर्जुमा : "शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है।"

قُلۡ يٰۤاَيُّهَا الۡكٰفِرُوۡنَ ① لَاۤ اَعۡبُدُ مَا تَعۡبُدُوۡنَ ② وَلَاۤ اَنۡتُمۡ عٰبِدُوۡنَ مَاۤ اَعۡبُدُ ③
وَلَاۤ اَنَا عَابِدٌ مَّا عَبَدۡتُّمۡ ④ وَلَاۤ اَنۡتُمۡ عٰبِدُوۡنَ مَاۤ اَعۡبُدُ ⑤ لَكُمۡ دِيۡنُكُمۡ وَلِىَ
دِيۡنِ ⑥

तर्जुमा : "कह दे कि ऐ काफ़िरों (1) न मैं तुम्हारे मअबूदों को पूजता हूँ (2) न तुम मेरे मअबूद को पूजते हो (3) और न मैं तुम्हारे मअबूदों की पूजा करूँगा (4) न तुम उसकी परसतिश करोगे जिसकी मैं इबादत कर रहा हूँ (5) तुम्हारे लिए तुम्हारा दीन, मेरे लिए मेरा दीन।" (6)

मोमिन बुतों की इबादत नहीं कर सकता (आयत : 1 से 6) : इस सूरह मुबारका में मुश्रिकीन के अमल से बेज़ारी का ऐलान है और अल्लाह तआला की इबादत के इख़्लास का हुक्म है, गो यहाँ ख़िताब मक्का के कुफ़्फ़ारे कुरैश से है लेकिन दरअसल रूए ज़मीन के तमाम काफ़िर मुराद हैं। इसका शाने नुज़ूल यह है कि इन काफ़िरों ने हुज़ूर (ﷺ) से कहा था कि एक साल आप हमारे मअबूदों की इबादत करें तो अगले साल हम भी अल्लाह तआला की इबादत करेंगे, इस पर यह सूरत नाज़िल हुई और अल्लाह तआला ने अपने नबी बरहक़ (ﷺ) को यह हुक्म दिया कि इनके दीन से अपनी पूरी बेज़ारी का ऐलान कर दें कि मैं तुम्हारे इन बुतों को और जिन जिनको तुम अल्लाह तआला का शरीक मान रहे हो हर्गिज़ न पूजूँगा, गो तुम भी मेरे मअबूदे बरहक़ अल्लाह वहदहू ला शरीक लहू को न पूजो। पस मा यहाँ पर मअनी में मन के है, फिर दोबारा यही फ़र्माया कि मैं तुम जैसी इबादत न करूँगा, तुम्हारे मज़हब पर मैं कारबन्द नहीं हो सकता। न मैं तुम्हारे पीछे लग सकता हूँ, बल्कि मैं तो सिर्फ़ अपने रब की इबादत करूँगा और वह भी उसी तरीक़े पर जो उसे पसंद हो

और जैसे वह चाहे। इसीलिए फ़र्माया कि न तुम मेरे रब के अह्काम के आगे सिर झुकाओगे न उसकी इबादत उसके फ़र्मान के मुताबिक़ बजा लाओगे, बल्कि तुमने तो अपनी तरफ़ से तरीक़े मुक़र्रर कर लिये हैं।

जैसे और जगह है (إِن يَتَّبِعُونَ إِلَّا الظَّنَّ) (6/अन्आम : 116) यह लोग सिर्फ़ अटकल और गुमान के और ख़्वाहिशे नफ़्सानी के पीछे पड़े हुए हैं हालाँकि इनके पास इनके रब की तरफ़ से हिदायत पहुँच चुकी है। पस जनाब नबी मुहम्मद मुस्तफ़ा (ﷺ) ने हर तरह से अपना दामन उनसे छुड़ा लिया और साफ़ तौर पर उनके मअबूदों से और उनकी इबादत के तरीक़ों से अलग और नापसंदीदगी का ऐलान कर दिया, ज़ाहिर है कि हर आबिद का मअबूद होगा और तरीक़ा इबादत होगा, पस रसूलुल्लाह (ﷺ) और आपकी उम्मत सिर्फ़ अल्लाह तआला ही की इबादत करते हैं और तरीक़ा इबादत उनका वह है जो सरवरे रुसुल (ﷺ) ने ता'लीम फ़र्माया है।

फ़ायदा : इसीलिए कलिमा इख़्लास ला इलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह है यानी अल्लाह तआला के सिवा कोई मअबूद नहीं और इसका रास्ता वही है जिसके बताने वाले मुहम्मद (ﷺ) हैं जो अल्लाह के पैग़म्बर हैं। और मुश्रिकीन के मअबूद भी अल्लाह के सिवा ग़ैर हैं और तरीक़ा इबादत भी अल्लाह का बतलाया हुआ नहीं, इसीलिए फ़र्माया कि तुम्हारा दीन तुम्हारे लिए और मेरा दीन मेरे लिए जैसे और जगह है (وَإِن كَذَّبُوكَ فَقُل لِّي عَمَلِي وَلَكُمْ عَمَلُكُمْ أَنتُم بَرِيئُونَ مِمَّا أَعْمَلُ وَأَنَا بَرِيءٌ مِّمَّا تَعْمَلُونَ) (10/यूनुस : 41) यानी अगर यह तुझे झुठलाएँ तो तू कह दे कि मेरे लिए मेरा अमल है और तुम्हारे लिए तुम्हारा अमल है, तुम मेरे आमाल से अलग हो और मैं तुम्हारे आमाल से बेज़ार हूँ। और जगह फ़र्माया (لَنَا أَعْمَالُنَا وَلَكُمْ أَعْمَالُكُمْ) (2/बक़रह : 139) हमारे अमल हमारे साथ और तुम्हारे अमल तुम्हारे साथ। सहीह बुख़ारी में इस आयत की तफ़्सीर में है कि तुम्हारे लिए तुम्हारा दीन है यानी कुफ़्र और मेरे लिए मेरा दीन है यानी इस्लाम। यह लफ़्ज़ असल में दीनी था लेकिन चूँकि और आयतों का वक़्फ़ नून पर है इसलिए इसमें भी या को हज़फ़ कर दिया। जैसे (فَهُوَ يَهْدِينِ) (26/शोअरा : 78) में और (يَسْقِينِ) (26/शोअरा : 79) में। (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरह (क़ुल या अय्युहल काफ़िरून) तअलीक़न)

कुछ मुफ़स्सिरीन (रह.) ने कहा है कि मतलब यह है कि मैं अब तो तुम्हारे मअबूदों की पूजा करता नहीं और आगे के लिए भी तुम्हें नाउम्मीद कर देता हूँ कि उम्र भर में कभी भी यह कुफ़्र मुझसे न हो सकेगा, इसी तरह न तुम अब मेरे रब को पूजते हो न आइन्दा उसकी इबादत करोगे। इससे मुराद वह कुफ़्फ़ार हैं जिनका ईमान न लाना अल्लाह तआला को मालूम था, जेसे क़ुरआन में और जगह है (وَلَيَزِيدَنَّ كَثِيرًا مِّنْهُم مَّا أُنزِلَ إِلَيْكَ مِن رَّبِّكَ طُغْيَانًا وَكُفْرًا) (5/माइदा : 64) यानी तेरी तरफ़ जो उतरता है उससे उनमें के अक्सर तो सरकशी और कुफ़्र में बढ़ जाते हैं। इब्ने जरीर (रह.) ने कुछ अरबी जानने वालों से नक़्ल किया है कि दो बार इस जुम्ले का लाना सिर्फ़ ताकीद के लिए है जैसे (فَإِنَّ مَعَ الْعُسْرِ يُسْرًا (5) إِنَّ مَعَ الْعُسْرِ يُسْرًا (6)) (94/अलम नश्रह : 5, 6) में और जैसे (لَتَرَوُنَّ الْجَحِيمَ (6) ثُمَّ لَتَرَوُنَّهَا عَيْنَ الْيَقِينِ (7)) (102/तकासुर : 6, 7) पस इन दोनों जुम्लों

को दो बार लाने की हिक्मत में यह तीन क़ौल हुए, एक तो यह कि पहले जुम्ले से मुराद मअ़बूद और दूसरे से मुराद तरीक़े इबादत, दूसरे यह कि पहले जुम्ले से मुराद हाल दूसरे से मुराद इस्तिक़्बाल यानी आइन्दा। तीसरे यह कि पहले जुम्ला की ताकीद दूसरे जुम्ला से है, लेकिन यह याद रहे कि यहाँ एक चौथी तौजीह भी है जिसे हज़रत इमाम इब्ने तैमिया (रह.) अपनी कुछ तस्नीफ़ात में कुव्वत देते हैं। वह यह कि पहले तो जुम्ला फ़ेअलिया है दोबारा जुम्ला इस्मिया है, तो मुराद यह हुई कि न तो मैं ग़ैरुल्लाह की इबादत करता हूँ न मुझसे कभी भी कोई उम्मीद रख सकता है, यानी वाक़िया की भी नफ़ी है और शरई तौर पर मुम्किन होने का भी इंकार है। यह क़ौल भी बहुत अच्छा है, वल्लाहु आलम!

फ़ायदा : हज़रत इमाम शाफ़ेई (रह.) ने इस आयत से इस्तिदलाल किया है कि कुफ़्र एक ही मिल्लत है, इसलिए यहूद नसारा का और नसारा यहूद का वारिस हो सकता है जबकि इन दोनों में नसब या सबब वर्से का पाया जाए, इसलिए कि इस्लाम के सिवा कुफ़्र की जितनी राहें हैं वह सब बातिल होने में एक ही हैं। हज़रत इमाम अहमद (रह.) और उनके मुवाफ़िक़ीन का मज़हब इसके बरख़िलाफ़ है कि न यहूदी नसरानी का वारिस हो सकता है, न नसरानी यहूदी का, क्योंकि हदीस में है कि दो मुख़्तलिफ़ मज़हब वाले आपस में एक दूसरे के वारिस नहीं हो सकते। (अबूदाऊद, किताबुल फ़राइज़, बाब हल यरिसुल मुस्लिम अल्काफ़िर : 2911; वसनदुहू हसन; सुननुल कुब्रा लिन्नसाई : 6384; इब्ने माजा : 2731; अहमद : 2/178)

अल्हम्दुलिल्लाह! सूरह काफ़िरून की तफ़्सीर मुकम्मल हुई।

***

FLOW CHART
तरतीबी नक्श-ए-रब्त

MACRO-STRUCTURE
नज़्मे-जली

सूरह नस्र - 110

आयात : 3, मदनी, पैराग्राफ : 3

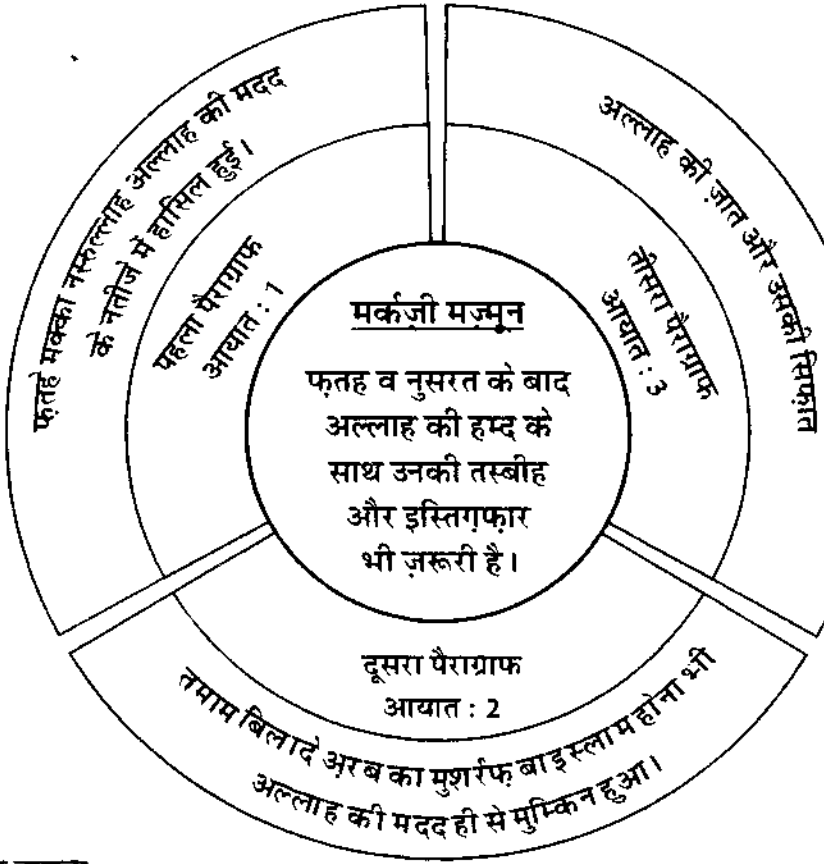

ज़मानए नुज़ूल

ये सूरत चूंकि हिजरत के बाद नाज़िल हुई है इसलिये मदनी समझी जाती है, हालांकि ये हज्जतुल विदाअ़ के मौक़े पर मिना में नाज़िल हुई।

सूरह नस्र आख़िरी मुकम्मल सूरत है, जो रसूलुल्लाह (सल्ल.) पर वफ़ात से पहले 10 हिजरी में मदीन-ए-मुनव्वरा में नाज़िल की गई। (सहीह मुस्लिम, किताबुत्तफ़सीर : 7731, ग़ालिबन इसके बाद बाज़ चन्द मुतफ़र्रिक़ आयात ही नाज़िल हुई। इस सूरत में आप (सल्ल.) को बता दिया गया कि आप (सल्ल.) का मिशन मुकम्मल हो गया है और बहुत जल्द आप (सल्ल.) को रख़्ते सफ़र बान्धना है।

तफ़्सीर सूरह नस्र

तआरुफ़े सूरत : पहले वह हदीस बयान हो चुकी है कि यह सूरत चौथाई क़ुरआन के बराबर है। (इसकी तख़रीज सूरह ज़िल्ज़ाल के शुरू में गुज़र चुकी है।) हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने उबैदुल्लाह बिन अब्दुल्लाह से पूछा जानते हो सबसे आख़िर कौनसी सूरत उतरी? जवाब दिया कि हाँ! यही सूरत (इज़ा जाअ) तो आपने फ़र्माया तुम सच्चे हो। (सहीह मुस्लिम, किताबुत्तफ़्सीर, बाब फ़ी तफ़्सीरि आयातिम् मुतफ़र्रिक़ा : 3024; नसाई) हाफ़िज़ अबूबक्र बज़्ज़ार और हाफ़िज़ बैहक़ी (रहि.) ने हज़रत इब्ने उमर (रज़ि.) की यह रिवायत वारिद की है कि यह सूरत अय्यामे तशरीक़ के बीच के दिन उतरी तो आप (ﷺ) समझ गए कि यह रुख़्सत की सूरत है, उसी वक़्त हुक्म दिया और आप (ﷺ) की ऊँटनी क़स्वा कसी गई और आप (ﷺ) उस पर सवार हुए और अपना वह पुरज़ोर ख़ुत्बा पढ़ा जो मशहूर है। (मज्मउज़्ज़वाइद : 3/271; इसकी सनद में मूसा बिन उबैदह रब्ज़ी ज़ईफ़ रावी है (अल्मीज़ान : 2/256; रक़म : 3636) लिहाज़ा यह सनद ज़ईफ़ है।) बैहक़ी में है कि "जब यह सूरत नाज़िल हुई तो हुज़ूर (ﷺ) ने अपनी लख़्ते जिगर हज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) को बुलाया और फ़र्माया मुझे मेरे इंतिक़ाल की ख़बर आ गई है। हज़रत ज़ोहरा (रज़ि.) रोने लगीं। फिर यकायक हँस पड़ीं। जब और लोगों ने वजह पूछी तो फ़र्माया ख़बरे इंतिकाल ने तो रुला दिया लेकिन रोते हुए हुज़ूर (ﷺ) ने तसल्ली दी और फ़र्माया, बेटी! सब्र करो मेरे अहल में से सबसे पहले तुम मुझसे मिलोगी, तो मुझे बेसाख़्ता हँसी आ गई।" (मुअजमुल कबीर लित्तब्रानी : 11907; वसनदुहू ज़ईफ़ुन हिलाल बिन ख़ब्बाब इख़्तलत़)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

तर्जुमा : "शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है।"

إِذَا جَآءَ نَصْرُ اللّٰهِ وَالْفَتْحُ ① وَرَاَيْتَ النَّاسَ يَدْخُلُوْنَ فِيْ دِيْنِ اللّٰهِ اَفْوَاجًا ②

فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَاسْتَغْفِرْهُ ۚ اِنَّهٗ كَانَ تَوَّابًا ③

तर्जुमा : "जब अल्लाह की मदद और फ़तह आ जाए (1) और तू लोगों को अल्लाह के दीन में जोक़ दर जोक़ आता देख ले (2) तू अपने रब की तस्बीह और हम्द करने लग और उससे मग़्फ़िरत की दुआ माँग, बेशक वह माफ़ करने वाला है।" (3)

अल्लाह की मदद और फ़तह से क्या मुराद है? (आ. 1 से 3) : हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं कि "बड़ी उम्र वाले बद्री मुजाहिदीन के साथ साथ हज़रत उमर फ़ारूक़ (रज़ि.) मुझे भी शामिल कर लिया करते थे तो शायद किसी के दिल में उससे कुछ नाराज़ी पैदा हुई होगी, उसने कहा कि यह हमारे साथ न आया करें, इन जितने तो हमारे बच्चे हैं, ख़लीफ़तुल मुस्लिमीन हज़रत उमर (रज़ि.) ने फ़र्माया कि तुम उन्हें ख़ूब जानते हो। एक दिन सबको बुलाया और मुझे भी याद किया, मैं समझ गया कि आज उन्हें कुछ दिखाना चाहते हैं, जब हम सब जा पहुँचे तो अमीरुल मोमिनीन (रज़ि.) ने हमसे पूछा कि सूरह (इज़ा जाअ) की निस्बत तुम्हें क्या इल्म है? कुछ ने कहा इसमें हमें अल्लाह तआला की हम्दो सना बयान करने और गुनाहों की बख़्शिश तलब करने का हुक्म किया गया है कि जब मददे इलाही आ जाए और हमारी फ़तह हो तो हम यह करें और कुछ बिलकुल ख़ामोश रहे, तो आपने मेरी तरफ़ तवज्जह की और कहा क्या तुम भी यही कहते हो? मैं ने कहा, नहीं! फ़र्माया फिर और क्या कहते हो? मैंने कहा, यह रसूलुल्लाह (ﷺ) के इंतिक़ाल का पैग़ाम है, आपको मालूम कराया जा रहा है कि अब आपकी दुनियावी ज़िन्दगी ख़त्म होने वाली है आप (ﷺ) तस्बीह और हम्द में और इस्तिग़फ़ार में मशग़ूल हो जाइए। हज़रत फ़ारूक़ (रज़ि.) ने फ़र्माया, यही मैं भी जानता हूँ।" (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरज इज़ा जाअ नस्रुल्लाहि बाब क़ौलुहू (फ़सब्बिह बिहम्दि रब्बिक वस्तग़्फ़िर-हू...) : 4970)

शाने नुज़ूल : जब यह सूरत उतरी तो हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया था कि "अब इसी साल मेरा इंतिक़ाल हो जाएगा, मुझे मेरे इंतिक़ाल की ख़बर दे दी गई है। (अहमद : 1/217; वसनदुहू ज़ईफ़ुन; अता बिन साइब इख़्तलत) मुजाहिद, अबुल आलिया, ज़हहाक (रह्रि.) वग़ैरह भी यही तफ़्सीर बयान करते हैं। एक रिवायत में है कि "हुज़ूर (ﷺ) मदीना में थे फ़र्माने लगे अल्लाहु अकबर, अल्लाहु अकबर, अल्लाह तआला की मदद आ गई और फ़तह भी, यमन वाले आ गए। पूछा गया हुज़ूर (ﷺ)! यमन वाले कैसे हैं? फ़र्माया, नर्म दिल लोग हैं सुलझी हुई तबीयत वाले हैं। ईमान तो यमनियों का है और समझ भी यमनियों की है और हिक्मत भी यमन वालों की है।" (मुस्नदे बज़्ज़ार : 2837; व इब्ने जरीर व सनदुहू ज़ईफ़ुन हुसैन बिन ईसा हनफ़ी ज़अअफ़हुल जुम्हूर) इब्ने अब्बास (रज़ि.) का बयान है कि जब यह सूरत उतरी तो चूँकि इसमें आप (ﷺ) के इंतिक़ाल की ख़बर थी तो आप (ﷺ) ने अपने कामों में और कमर कस ली, और तक़रीबन वही फ़र्माया जो ऊपर गुज़रा। (मुअजमुल कबीर : 11903; वसनदुहू ज़ईफ़ुन; हिलाल बिन ख़ब्बाब इख़्तलत)

हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) से यह भी मरवी है कि "सूरतों में पूरी सूरत नाज़िल होने के एतिबार से सबसे आख़िरी सूरह यही है।" (मुअजमुल कबीर : 10736; वसनदुहू सहीहुन; इस मअनी की रिवायत सहीह मुस्लिम, किताबुत्तफ़्सीर, बाब तफ़्सीरु आयातिम मुतफ़र्रिक़ा : 3024 में मौजूद है।) और हदीस में है कि "जब यह सूरत उतरी तो आप (ﷺ) ने इसकी तिलावत की और फ़र्माया कि लोग एक किनारा हैं और मैं और मेरे अस्हाब (रज़ि.) एक किनारा में हैं, सुनो! फ़तहे मक्का के बाद हिज्रत नहीं अल्बत्ता जिहाद और निय्यत है।

मरवान को जब यह हदीस हज़रत अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने सुनाई तो यह कहने लगा झूट कहता है। उस वक़्त मरवान के साथ उसके तख़्त पर हज़रत राफ़ेअ बिन ख़दीज और हज़रत ज़ैद बिन साबित (रज़ि.) भी बैठे हुए थे, तो हज़रत अबू सईद (रज़ि.) फ़र्माने लगे कि इन दोनों को भी इस हदीस की ख़बर है यह भी इस हदीस को बयान कर सकते हैं लेकिन एक को तो अपनी सरदारी छिन जाने का डर है और दूसरे को ज़कात की वसूली के ओहदे से सुबुकदोश हो जाने का डर है। मरवान ने यह सुनकर कोड़ा उठाकर हज़रत अबू सईद (रज़ि.) को मारना चाहा, उन दोनों बुज़ुर्गों ने जब यह देखा तो कहने लगे, मरवान सुन लो! अबू सईद (रज़ि.) ने सच बयान किया है।'' (अहमद : 5/187; वसनदुहू ज़ईफ़ुन अबुल बख़्तरी लम यस्मअ् मिन अबी सईद ख़ुदरी (रज़ि.)) यह हदीस साबित है।

हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) से भी मरवी है कि ''हुज़ूर (ﷺ) ने फ़तहे मक्का के दिन फ़र्माया, हिज्रत नहीं रही हाँ! जिहाद और निय्यत है, जब तुम्हें चलने को कहा जाए तो उठ खड़े हो जाया करो।'' (सहीह बुख़ारी, किताब जज़ाउस्सैदि, बाब ला यहिल्लुल क़िताल बि मक्कता : 1834; सहीह मुस्लिम : 1353; अबूदाऊद : 2480; तिर्मिज़ी : 1590; अहमद : 1/226; इब्ने हिब्बान : 4592) सहीह बुख़ारी और सहीह मुस्लिम में यह हदीस मौजूद है। हाँ! यह भी याद रहे कि जिन कुछ सहाबा (रज़ि.) ने हज़रत फ़ारूक़े आ'ज़म (रज़ि.) के सामने इस सूरत का यह मतलब बयान किया कि जब हम पर अल्लाह तआला शहर और क़िले फ़तह कर दे और हमारी मदद करे तो हमें हुक्म मिल रहा है कि हम उसकी ता'रीफ़ें बयान करें और उसका शुक्र अदा करें, उसकी पाकीज़गी बयान करें, नमाज़ अदा करें और अपने गुनाहों की बख़्शिश तलब करें। यह मतलब भी बिलकुल सही है और तफ़्सीर भी निहायत प्यारी है। देखो! रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़तहे मक्का वाले दिन ज़ुहा के वक़्त आठ रकअत नमाज़ अदा की गो लोग कहते हैं कि यह ज़ुहा की नमाज़ थी लेकिन हम कह सकते हैं कि ज़ुहा की नमाज़ आप (ﷺ) हमेशा नहीं पढ़ते थे फिर उस दिन जबकि शुग़ल और काम बहुत ज़्यादा था मुसाफ़िरत थी वह कैसे पढ़ी? आप (ﷺ) की इक़ामत फ़तहे मक्का के मौक़े पर मक्का में रमज़ान के आख़िर तक उन्नीस दिन रही, आप (ﷺ) फ़र्ज़ नमाज़ को भी क़स्र करते रहे रोज़ा भी नहीं रखा और तमाम लश्कर जो तक़रीबन दस हज़ार था उसी तरह करता रहा। इन हक़ाइक़ से यह बात साफ़ साबित होती है कि यह नमाज़ फ़तह के शुक्रिये की नमाज़ थी, इसलिए सरदारे लश्कर इमामे वक़्त पर मुस्तहब है कि जब कोई शहर फ़तह हो तो दाख़िल होते ही आठ रकअत नमाज़ अदा करे। सअद बिन अबी वक़्क़ास (रज़ि.) ने फ़तहे मदायन के दिन ऐसा ही किया था। उन आठ रकअतों को दो दो रकअतें करके अदा करे, भले कुछ का यह क़ौल भी है कि आठों रकअतों को एक ही सलाम से पढ़ ले, लेकिन अबूदाऊद में सराहतन मरवी है कि हुज़ूर (ﷺ) ने इस नमाज़ में हर दो रकअत के बाद सलाम फेरा है। (अबूदाऊद, किताबुत्ततव्वअ, बाब सलातुज़्ज़ुहा : 1290; वहुव हदीसुन हसन; इब्ने माजा : 1323)

तस्बीह करने से क्या मुराद है? दूसरी तफ़्सीर भी सहीह है जो इब्ने अब्बास (रज़ि.) वग़ैरह ने की है कि

इसमें आपको आप (ﷺ) की विसाल की ख़बर दी गई कि जब आप (ﷺ) अपनी बस्ती मक्का मुअज़्ज़मा फ़तह़ कर लीं जहाँ से उन कुफ़्फ़ार ने आप (ﷺ) को निकल जाने पर मजबूर किया था और आप (ﷺ) अपनी आँखों अपनी मेह़नत का फल देख लें कि फ़ौजों की फ़ौजें आप (ﷺ) के झण्डे तले आ जाएँ। जोक़ दर जोक़ लोग ह़ल्क़ा बगोश इस्लाम हो जाएँ तो हमारी त़रफ़ आने की और हमसे मुलाक़ात की तैयारियों में लग जाओ समझ लो कि जो काम हमें तुमसे लेना था पूरा हो चुका अब आख़िरत की त़रफ़ निगाहें डालो जहाँ आप (ﷺ) के लिए बहुत बेहतरी है और इस दुनिया से बहुत ज़्यादा भलाई आप (ﷺ) के लिए वहाँ हैं, वहीं आप (ﷺ) की मेहमानी तैयार है और मुझ जैसा मेज़बान है, आप (ﷺ) उन निशानात को देखकर बकसरत मेरी ह़म्दो सना करो और तौबा इस्तिग़फ़ार में लग जाओ।

स़ह़ीह़ बुख़ारी की ह़दीस में ह़ज़रत आइशा सि़द्दीक़ा (रज़ि.) से मरवी है कि "ह़ुज़ूर (ﷺ) अपने रुकूअ सज्दे में बकसरत (सुब्ह़ानकल्लाहुम्म वबि ह़म्दिका अल्लाहुम्मग़्फ़िर ली) पढ़ा करते थे आप (ﷺ) क़ुरआन की इस आयत (फ़सब्बिह़...) पर अ़मल करते थे।" (स़ह़ीह़ बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरह इज़ा जाअ नस्रुल्लाह : 4968; स़ह़ीह़ मुस्लिम : 484; अबूदाऊद : 877; नसाई : 1123; इब्ने माजा : 889) और रिवायत में है कि "ह़ुज़ूर (ﷺ) अपनी आख़िरी उ़म्र में इन कलिमात का अक्सर विर्द करते थे (सुब्ह़ानल्लाहि वबि ह़म्दिही अस्तग़्फ़िरुल्लाह व अतूबु इलैहि) अल्लाह तआ़ला की ज़ात पाक है उसी के लिए सब ता'रीफ़ें सज़ावार हैं, मैं अल्लाह तआ़ला से इस्तिग़्फ़ार करता हूँ और उसकी त़रफ़ झुकता हूँ और फ़र्माया करते थे कि मेरे रब ने मुझे हुक्म दे रखा है कि जब मैं यह अ़लामत देख लूँ कि मक्का मुअ़ज़्ज़मा फ़तह़ हो गया और दीने इस्लाम में फ़ौजों की फ़ौजें दाख़िल होने लगीं तो मैं इन कलिमात को बकसरत कहूँ, चुनाँचे बि ह़म्दिल्लाह! मैं उसे देख चुका लिहाज़ा अब इस वज़ीफ़े में मशग़ूल हूँ।" (अह़मद : 6/35; स़ह़ीह़ मुस्लिम : 484)

इब्ने जरीर में ह़ज़रत उम्मे सलमा (रज़ि.) से मरवी है कि "ह़ुज़ूर (ﷺ) अपनी आख़िरी उ़म्र में बैठते उठते, चलते फिरते आते जाते (सुब्ह़ानल्लाहि वबि ह़म्दिही) पढ़ा करते, मैंने एक बार पूछा कि ह़ुज़ूर (ﷺ)! इसकी क्या वजह है? तो आप (ﷺ) ने इस सूरत की तिलावत की और फ़र्माया मुझे हुक्मे इलाही यही है।" (त़ब्री : 24/670; वसनदुहू ज़ईफ़ुन जिद्दा, इसकी सनद में ह़फ़्स बिन सुलेमान ज़ईफ़ रावी है।) किसी मज्लिस में बैठें तो फिर वह मज्लिस बरख़्वास्त हो तो क्या पढ़ना चाहिए इसे हम अपनी एक मुस्तक़िल तस्नीफ़ में लिख चुके हैं। मुस्नद अह़मद में है कि "जब यह सूरत उतरी तो ह़ुज़ूर (ﷺ) इसे अक्सर अपनी नमाज़ में तिलावत करते और रुकूअ में तीन बार यह पढ़ते (सुब्ह़ानकल्लाहुम्म रब्बना वबि ह़म्दिका अल्लाहुम्मग़्फ़िर-ली. इन्नका अन्तत्तव्वाबुर्रह़ीम) (अह़मद : 1/388; वसनदुहू ज़ईफ़ुन फ़ीहि इल्लतान, अल्इंक़िताउ व तदलीसु अबी इस्ह़ाक़) फ़तह़ से मुराद यहाँ फ़तह़े मक्का है इस पर इत्तिफ़ाक़ है, उ़मूमन अ़रब क़बाइल इसी के मुंतज़िर थे कि अगर यह अपनी क़ौम पर ग़ालिब आ जाएँ और मक्का मुअ़ज़्ज़मा उनके ज़ेरे नगीं आ जाए तो फिर उनके नबी होने में ज़रा सा भी शुब्हा नहीं। अब जबकि अल्लाह तआ़ला ने अपने ह़बीब

के हाथों मक्का मुअज़्ज़मा फ़तह करा दिया तो यह सब इस्लाम में आ गए, वल्हम्दु लिल्लाह।

सहीह बुख़ारी में भी हज़रत अम्र बिन सलमा (रज़ि.) का यह मक़ूला मौजूद है कि मक्का मुअज़्ज़मा फ़तह होते ही हर क़बीले ने इस्लाम की तरफ़ सब्क़त की, उन सबको इसी का इंतिज़ार था और कहते थे कि उन्हें और उनकी क़ौम को छोड़ दो देखो अगर यह नबी बरहक़ हैं तो अपनी क़ौम पर ग़ालिब आ जाएँगे और मक्का मुअज़्ज़मा पर उनका झण्डा नसब हो जाएगा। (सहीह बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब नम्बर : 54; हदीस : 4302) हमने ग़ज़्वा फ़तहे मक्का का पूरा पूरा वाक़िया तफ़्सील के साथ अपनी सीरत की किताब में लिखा है जो साहिबे तफ़्सीलात देखना चाहें वह उस किताब को देख लें, फ़ल्हम्दु लिल्लाह! मुस्नद अहमद में है कि "हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) के पड़ौसी जब अपने किसी सफ़र से वापिस आए तो हज़रत जाबिर (रज़ि.) उनसे मुलाक़ात करने के लिए गए, उन्होंने लोगों की फूट और उनके इख़्तिलाफ़ का हाल बयान किया और उनकी नई बिदअतों के ईजाद करने का तज़्किरा किया तो सहाबी रसूल की आँखों से आँसू निकल आए और रोते हुए फ़र्माने लगे कि मैंने हज़रत मुहम्मद (ﷺ) से सुना है कि लोगों की फ़ौजों की फ़ौजें अल्लाह के दीन में दाख़िल हुईं लेकिन बहुत जल्द जमाअतों की जमाअतें उनमें से निकलने भी लग जाएँगी।" (अहमद : 3/343; वसनदुहू ज़ईफ़ुन; सय्यदना जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) का पड़ौसी नामालूम है।)

अल्हम्दुलिल्लाह! सूरह नस्र की तफ़्सीर मुकम्मल हुई।

***

FLOW CHART
तरतीबी नक्श-ए-रब्त

MACRO-STRUCTURE
नज़्मे-जली

सूरह लहब - 111

आयात : 5, मक्की, पैराग्राफ : 2

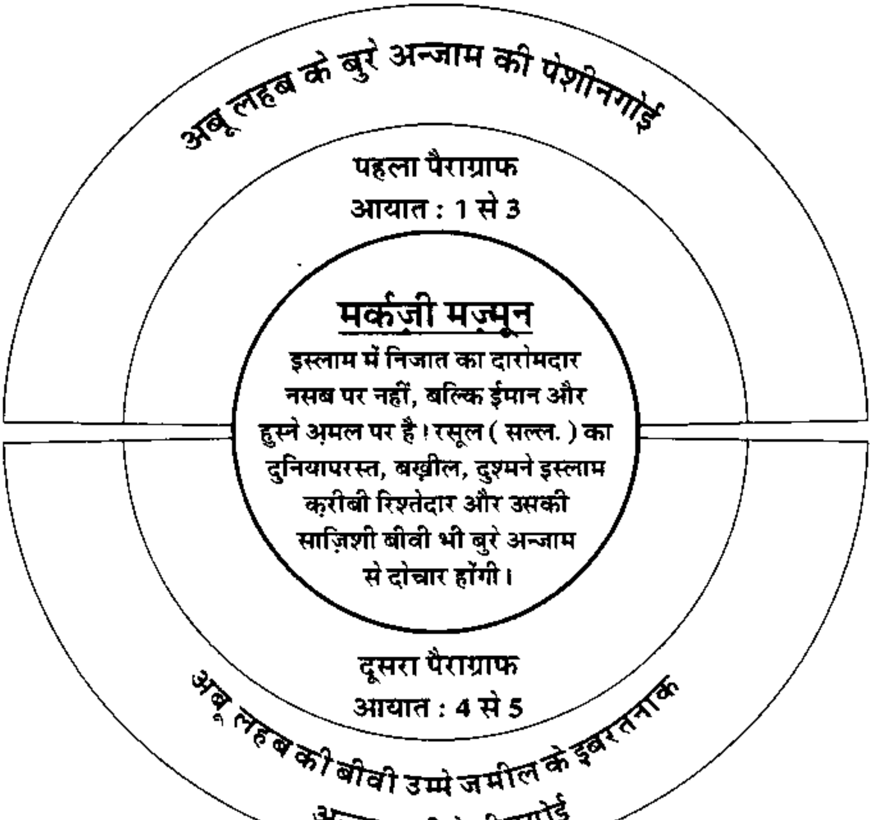

ज़मानए नुज़ूल

सूरह अबी लहब ग़ालिबन् रसूल (सल्ल.) के क़ियामे मक्का के दूसरे दौर में ऐलानिया तब्लीग़ के बाद 4 हिज्री में नाज़िल हुई, जब आपने कोहे सफ़ा पर चढ़कर ऐलानिया तब्लीग़ की, जिस पर अबू लहब ने आपके लिये तब्बल्लक के अल्फ़ाज़ इस्तेमाल किये।(सहीह बुख़ारी : 4687)
या फिर हो सकता है, ये सूरत उस वक़्त नाज़िल हुई जब आप (सल्ल.) को शअबे अबी तालिब में तीन (3) साल के लिये (7-10 नबवी) नज़र बन्द कर दिया गया था और जब अबू लहब ने ख़ुद अपने ख़ानदान बनी हाशिम को छोड़कर काफ़िरों का साथ दिया था।

तफ़्सीर सूरह लहब

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ○

तर्जुमा : ''शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है।''

تَبَّتۡ یَدَاۤ اَبِیۡ لَہَبٍ وَّ تَبَّ ① مَاۤ اَغۡنٰی عَنۡہُ مَالُہٗ وَ مَا کَسَبَ ② سَیَصۡلٰی نَارًا

ذَاتَ لَہَبٍ ③ وَّ امۡرَاَتُہٗ ؕ حَمَّالَۃَ الۡحَطَبِ ④ فِیۡ جِیۡدِہَا حَبۡلٌ مِّنۡ مَّسَدٍ ⑤

तर्जुमा : ''अबू लहब के दोनों हाथ टूटें और वह ख़ुद हलाक हो गया (1) न तो उसका माल उसके काम आया और न उसकी कमाई (2) वह बहुत जल्द भड़कने वाली आग में जाएगा (3) और उसकी बीवी भी (जाएगी) जो लकड़ियाँ ढोने वाली है (4) उसकी गर्दन में पोस्त खजूर की बटी हुई रस्सी होगी।'' (5)

शाने नुज़ूल (आ. 1 से 5) : सहीह़ बुख़ारी में है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) बतह़ा में जाकर एक पहाड़ी पर चढ़ गए और ऊँची ऊँची आवाज़ से (या स़बाह़ाहू या स़बाह़ाहू) कहने लगे। क़ुरैश सब जमा हो गए तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया, अगर मैं तुमसे कहूँ कि सुबह़ या शाम दुश्मन तुम पर छापा मारने वाला है तो क्या तुम मुझे सच समझोगे? सबने जवाब दिया जी हाँ! आप (ﷺ) ने फ़र्माया, सुनो! मैं तुम्हें अल्लाह तआला के सख़्त अ़ज़ाब के आने की ख़बर दे रहा हूँ, तो अबू लहब कहने लगा तुझे हलाकी हो क्या इसीलिए तूने हमें जमा किया था। इस पर यह सूरत उतरी। (स़हीह़ बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरत तब्बत यदा अबी लहब बाब क़ौलुहू (मा अग़्ना अ़न्हू मा लुहू वमा कसब) : 4972) दूसरी रिवायत में है कि यह हाथ झाड़ता हुआ यूँ कहता हुआ उठ खड़ा हुआ। (तब्बत) बद्दुआ है और (तब्ब) ख़बर है। यह अबू लहब हुज़ूर (ﷺ) का चचा था उसका नाम अ़ब्दुल उ़ज़्ज़ा बिन अ़ब्दुल मुत्तलिब था उसकी कुन्नियत अबू उ़त्बा थी, उसके चेहरे की ख़ूबसूरती और चमक दमक की वजह से उसे अबू लहब यानी शोले वाला कहा जाता था, यह हुज़ूर (ﷺ) का बदतरीन दुश्मन था, हर वक़्त ईज़ादेही, तक्लीफ़ रसानी और नुक़्सान पहुँचाने के दर पे रहा करता था। रबीआ़ बिन अ़ब्बाद दैली (रज़ि.) अपने इस्लाम लाने के बाद अपना जाहिलियत का वाक़िया बयान करते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को ज़ुल्मेजाज़ के बाज़ार में देखा कि आप (ﷺ) फ़र्मा रहे हैं कि लोगों! (ला इलाहा

इल्लल्लाह) कहो तो फ़लाह पाओगे। लोगों का मज्मआ आप (ﷺ) के आसपास लगा हुआ था, मैंने देखा कि आप (ﷺ) के पीछे ही एक गोरे चिट्टे चमकते चेहरे वाला भेंगी आँख वाला जिसके सिर के बड़े बालों की दो मेंढ़ियाँ थीं आया और कहने लगा, "लोगों! यह बेदीन है, झूठा है।" ग़र्ज़ आप (ﷺ) लोगों के मज्मअे में जाकर अल्लाह की तौहीद की दअवत देते थे और यह शख़्स पीछे पीछे यह कहता हुआ चला जा रहा था। मैंने लोगों से पूछा, यह कौन है? लोगों ने कहा, यह आप (ﷺ) का चचा अबू लहब है।" (अहमद : 4/341; वसनदुहू हसन) लअनहुल्लाह!

अबू लहब की मज़म्मत : अबुज़िनाद ने रावी हदीस हज़रत रबीआ (रज़ि.) से कहा कि आप तो उस वक़्त बच्चे जैसे होंगे। फ़र्माया नहीं! मैं उस वक़्त ख़ासी उम्र का था, मश्क लादकर पानी भर लाया करता था। (मुहम्मद बिन इस्हाक़ व अहमद : 3/492; ह : 16025; वसनदुहू ज़ईफ़ुन; हुसैन बिन अब्दुल्लाह ज़ईफ़ मशहूर) दूसरी रिवायत में है कि मैं अपने बाप के साथ था मेरी जवाँ उम्र थी और मैंने देखा कि "रसूलुल्लाह (ﷺ) एक एक क़बीले के पास जाते और फ़र्माते, लोगों! मैं तुम्हारी तरफ़ अल्लाह का रसूल बनाकर भेजा गया हूँ, मैं तुमसे कहता हूँ कि एक अल्लाह ही की इबादत करो, उसके साथ किसी को शरीक न करो, मुझे सच्चा जानो, मुझे मेरे दुश्मनों से बचाओ ताकि मैं उस काम को बजा लाऊँ जिसका मुझे हुक्म देकर अल्लाह तआला ने भेजा है। आप (ﷺ) जहाँ यह पैग़ाम पहुँचाकर फ़ारिग़ होते कि आप (ﷺ) का चचा अबू लहब पीछे से पहुँचता और कहता, ऐ फ़लाँ क़बीले के लोगों! यह शख़्स तो तुम्हें लात व उ़ज़्ज़ा से हटाना चाहता है और बनू मालिक बिन उक़ैश के तुम्हारे हलीफ़ जिन्नों से तुम्हें दूर कर रहा है और अपनी नई लाई हुई गुमराही की तरफ़ तुम्हें भी घसीट रहा है, ख़बरदार! न उसकी सुनना, न मानना।" (अहमद : 3/492; वसनदुहू ज़ईफ़ुन; हुसैन बिन अब्दुल्लाह ज़ईफ़ रावी है।)

अल्लाह तआला इस सूरत में फ़र्माता है कि अबू लहब बर्बाद हुआ, उसकी कोशिश ग़ारत हुई, उसके आमाल हलाक हुए, बिल्यक़ीन उसकी बर्बादी हो चुकी, उसकी औलादें उसके काम न आईं। इब्ने मसऊद (रज़ि.) फ़र्माते हैं कि "जब रसूलुल्लाह (ﷺ) ने अपनी क़ौम को अल्लाह की तरफ़ बुलाया तो अबू लहब कहने लगा अगर मेरे भतीजे की बातें हक़ हैं तो मैं क़ियामत के दिन अपना माल व औलाद अल्लाह को फ़िदया में देकर उसके अ़ज़ाब से छूट जाऊँगा, इस पर यह आयत (मा अग़ना) उतरी।" फिर फ़र्माया कि यह शोले मारने वाली आग में जो सख़्त जलाने वाली और बहुत तेज़ है दाख़िल होगा, और उसकी बीवी भी, जो क़ुरैशी औरतों की सरदार थी, उसकी कुन्नियत उम्मे जमील थी, नाम अरवा था, हर्ब बिन उमय्या की लड़की थी, अबू सुफ़्यान (रज़ि.) की बहन थी और अपने शौहर के कुफ़्रो इनाद और सरकशी व दुश्मनी में यह भी उसके साथ थी, इसीलिए क़ियामत के दिन अ़ज़ाबों में भी उसके साथ होगी, लकड़ियाँ उठा उठाकर लाएगी और जिस आग में उसका शौहर जल रहा होगा डालती जाएगी, उसके गले में आग की रस्सी होगी, और जहन्नम का ईंधन समेटती रहेगी। यह मअ़नी भी किये गए हैं कि (हम्मा लतल हतब) से मुराद उसका ग़ीबत गो होना है।

इमाम इब्ने जरीर (रह.) इसी को पसंद करते हैं। इब्ने अब्बास (रज़ि.) वग़ैरह ने यह मतलब बयान किया है कि यह जंगल से ख़ारदार लकड़ियाँ चुन लाती थी और हुज़ूर (ﷺ) की राह में बिछा दिया करती थी। यह भी कहा गया है कि चूँकि यह औरत नबी (ﷺ) को फ़क़ीरी का तअ़ना दिया करती थी तो उसे उसका लकड़ियाँ चुनना याद दिलाया गया, लेकिन सही क़ौल पहला ही है, वल्लाहु आलम!

सईद बिन मुसय्यिब (रह.) फ़र्माते हैं कि "उसके पास एक नफ़ीस हार था कहती थी कि मैं उसे फ़रोख़्त करके मुहम्मद (ﷺ) की मुख़ालिफ़त में ख़र्च करूँगी" तो यहाँ फ़र्माया गया कि उसके बदले उसके गले में आग का तौक़ डाला जाएगा। (मसद) के मअ़नी खजूरों की रस्सी के हैं। हज़रत उर्वा (रज़ि.) फ़र्माते हैं कि "यह जहन्नम की ज़ंजीर है जिसकी एक एक कड़ी सत्तर सत्तर गज़ की है।" सौरी (रह.) फ़र्माते हैं कि यह जहन्नम का तौक़ है जिसकी लम्बाई सत्तर हाथ है।" जोहरी (रह.) फ़र्माते हैं कि "यह ऊँट की खाल की और ऊँट के बालों की बनाई जाती है।" मुजाहिद (रह.) फ़र्माते हैं कि "यानी लोहे का तौक़" हज़रत आइशा सिद्दीक़ा (रज़ि.) फ़र्माती हैं कि "जब यह सूरत उतरी तो यह भेंगी औरत उम्मे जमील बिन्ते हर्ब अपने हाथ में नोकदार पत्थर लिये यूँ कहती हुई हुज़ूर (ﷺ) के पास आई। मुज़म्ममा अबैना व दीनहू क़लैना व अम्रुहू असैना

यानी हम मुज़म्मम के मुंकिर हैं, उसके दीन के दुश्मन हैं और उसके नाफ़र्मान हैं। उस वक़्त रसूलुल्लाह (ﷺ) कअ़बतुल्लाह में बैठे हुए थे, आपके साथ मेरे वालिद हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) भी थे सिद्दीक़े अकबर (रज़ि.) ने इसे इस हालत में देखकर हुज़ूर (ﷺ) से अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! यह आ रही है ऐसा न हो कि आपको देख ले। आपने फ़र्माया सिद्दीक़! चिन्ता न करो, यह मुझे नहीं देख सकती। फिर आप (ﷺ) ने कुरआन की तिलावत शुरू कर दी ताकि उससे बच जाएँ। ख़ुद कुरआन फ़र्माता है (وَإِذَا قَرَأْتَ الْقُرْآنَ جَعَلْنَا بَيْنَكَ وَبَيْنَ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ حِجَابًا مَسْتُورًا) (17/बनी इस्राईल : 45) यानी जब तू कुरआन पढ़ता है तो हम तेरे और ईमान न लाने वालों के बीच पोशीदा पर्दे डाल देते हैं। यह डायन आकर हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) के पास खड़ी हो गई गो हुज़ूर (ﷺ) भी हज़रत सिद्दीक़े अकबर (रज़ि.) के पास ही बिलकुल ज़ाहिर बैठे हुए थे, लेकिन कुदरती हिजाबों ने उसकी आँखों पर पर्दा डाल दिया वह हुज़ूर (ﷺ) को न देख सकी। हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) से कहने लगी कि मुझे मालूम हुआ कि तेरे साथी ने मेरी हिजू की है, यानी शेअ़रों में मेरी मज़म्मत की है। हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) ने फ़र्माया, नहीं! नहीं! रब्बुल बैत की क़सम! हुज़ूर (ﷺ) ने तेरी कोई हिजू नहीं की, तो यह कहती हुई लौट गई कि कुरैश जानते हैं कि मैं उनके सरदार की बेटी हूँ।" (हाकिम : 2/361; हुमैदी : 323; वहुव हदीसुन हसन)

एक बार यह अपनी लम्बी चादर ओढ़े तवाफ़ कर रही थी पैर चादर में उलझ गया और फिसल पड़ी तो कहने लगी मुज़म्मम ग़ारत हो। उम्मे हकीम बिन्ते अ़ब्दुल मुत्तलिब ने कहा मैं तो पाकदामन औरत हूँ अपनी ज़ुबान नहीं बिगाड़ूँगी और दोस्त करने वाली हूँ पस दाग़ न लगाऊँगी और हम सारे एक ही दादा की औलाद में हैं

और क़ुरैश ही, फिर तू ज़्यादा जानने वाली है। बज़्ज़ार में है कि उसने हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) से कहा कि तेरे साथी ने मेरी हिजू की है तो हज़रत सिद्दीक़े अकबर (रज़ि.) ने क़सम खाकर जवाब दिया कि न तो आप (ﷺ) शेअरगोई जानते हैं, न कभी आप (ﷺ) ने शेअर कहे। उसके जाने के बाद हज़रत सिद्दीक़ (रज़ि.) ने हुज़ूर (ﷺ) से पूछा कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! क्या उसने आपको नहीं देखा? आप (ﷺ) ने फ़र्माया, फ़रिश्ता आड़ बनकर खड़ा हुआ था जब तक वह वापिस न चली गई।" (मुस्नदे बज़्ज़ार : 294; वसनदुहू ज़ईफ़ुन)

कुछ अहले इल्म ने कहा है कि उसके गले में जहन्नम की आग की रस्सी होगी जिससे उसे खींचकर जहन्नम के ऊपर लाया जाएगा फिर ढीली छोड़कर जहन्नम की तह में पहुँचाया जाएगा यही अज़ाब उसे होता रहेगा। डोल की रस्सी को अरब (मसद) कह दिया करते हैं। अरबी शेअरों में भी यह लफ़्ज़ इसी मअनी में लाया गया है। यहाँ यह याद रहे कि यह बाबरकत सूरत हमारे नबी (ﷺ) की नबुव्वत की एक आ'ला दलील है, क्योंकि जिस तरह उनकी बदबख़्ती की ख़बर इस सूरत में दी गई थी इसी तरह वाक़िया भी हुआ, उन दोनों को ईमान लाना आख़िर तक नसीब ही न हुआ न तो वह ज़ाहिर में मुसलमान हुए न बातिन में न छुपे न खुले। पस यह सूरत ज़बरदस्त बहुत साफ़ और रोशन दलील है हुज़ूर (ﷺ) की नबुव्वत की।

अल्हम्दुलिल्लाह! सूरह लहब की तफ़सीर मुकम्मल हुई।

***

FLOW CHART
तरतीबी नक्श-ए-रब्त

MACRO-STRUCTURE
नज़्मे-जली

सूरह इख़्लास - 112

आयात : 4, मक्की, पैराग्राफ : 2

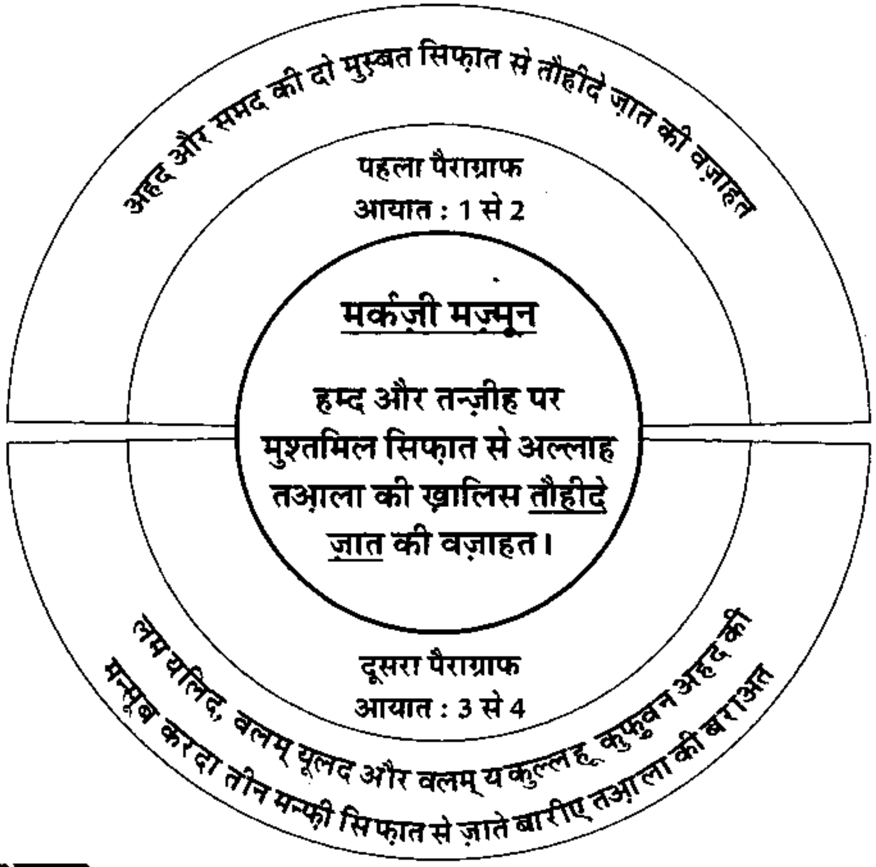

ज़मानए नुज़ूल

1. ऐलाने आ़म के फ़ौरन बाद ग़ालिबन 4 नबवी में नाज़िल हुई, जब नौमुस्लिम सहाबा (रज़ि.) के लिये मुख़ालिफ़ीन के शर का आग़ाज़ हो चुका था। इसी सूरत के एक लफ़्ज़ 'अहद' की बाज़गश्त दौरे सितम के आग़ाज़ के बाद हज़रत बिलाल (रज़ि.) के होंटों पर रहती थी जब कुरैश का सरदार उमय्या बिन ख़ल्फ़ उन्हें तपती धूप पर लिटाकर सीने पर पत्थर रख देता था।
2. कुल के इब्तिदाई लफ़्ज़ से भी यही मालूम होता है कि ये सूरत ग़ालिबन ऐलाने आ़म के बाद नाज़िल हुई होगी।

तफ़्सीर सूरह इख़्लास

इसका शाने नुज़ूल और इसकी फ़ज़ीलत का बयान : मुस्नद अहमद में है कि "मुश्रिकीन ने हुज़ूर (ﷺ) से कहा अपने रब के औसाफ़ बयान करो, इस पर यह सूरत नाज़िल हुई।" (अहमद : 5/133, 134; वसनदुहू ज़ईफ़ुन; देखिए हाशिया नम्बर : 2) समद के मअनी हैं जो न तो पैदा हुआ हो न उसकी औलाद हो, इसलिए कि जो पैदा हुआ है वह एक वक़्त मरेगा भी और दूसरे उसके वारिस होंगे, अल्लाह अज़्ज़ व जल्ला न मरे, न उसका कोई वारिस हो, उस जैसा और उसकी जिंस का कोई नहीं, न उसके मिस्ल कोई चीज़ है। तिर्मिज़ी वग़ैरह में भी यह रिवायत है। (तिर्मिज़ी, किताब तफ़्सीरुल क़ुरआन, बाब वमिन सूरतिल इख़्लास : 3364; वसनदुहू ज़ईफ़ुन; अबू सअद मुहम्मद बिन मैसर रावी ज़ईफ़ है। नीज़ अबू जअफ़र राज़ी की रबीअ बिन अनस से रिवायत ज़ईफ़ होती है।) अबू यअला मूसली में भी है कि एक आराबी ने यह सवाल किया था और रिवायत में है कि मुश्रिकीन के इस सवाल के जवाब में यह सूरत उतरी। रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं कि हर चीज़ की निस्बत है और अल्लाह की निस्बत यह सूरत है। समद उसे कहते हैं जो खोखला न हो। (मुअजमुल औसत लित्तब्रानी : 736; वसनदुहू ज़ईफ़ुन जिद्दा, उसकी सनद में अल्वज़ाअ बिन नाफ़ेअ अक़ीली मतरूक रावी है (अल्मीज़ान : 4/327; रक़म : 9320) बुख़ारी किताबुत्तौहीद में है कि "हुज़ूर (ﷺ) ने एक छोटा सा लश्कर कहीं भेजा जिस वक़्त वह पलटे तो उन्होंने कहा कि हुज़ूर (ﷺ) ने हम पर जिसे सरदार बनाया था वह हर नमाज़ की क़िरअत के ख़ात्मा पर सूरह (क़ुल हुवल्लाहु ...) पढ़ा करते थे। आप (ﷺ) ने फ़र्माया इनसे पूछो कि वह ऐसा क्यूँ करते थे? पूछने पर उन्होंने कहा कि यह सूरत रहमान की सिफ़त है, मुझे इसका पढ़ना बहुत पसंद है। हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया, इन्हें ख़बर दो कि अल्लाह भी उससे मुहब्बत रखता है।" (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तौहीद, बाब मा जाअ फ़ी दुआइन्नबी (ﷺ) उम्मतहू इला तौहीदिल्लाहि तबारक व तआला : 7375; सहीह मुस्लिम : 813)

बुख़ारी किताबुस्सलात में है कि "एक अंसारी मस्जिदे क़ुबा के इमाम थे उनकी आदत थी कि अल्हम्द ख़त्म करके फिर इस सूरत को पढ़ते फिर जो सूरत पढ़नी होती या जहाँ से चाहते क़ुरआन पढ़ते। एक दिन मुक़्तदियों ने कहा कि आप इस सूरत को पढ़ते हैं फिर दूसरी सूरत मिलाते हैं यह क्या? या तो आप सिर्फ़ इसी को पढ़िए या छोड़ दीजिए, दूसरी सूरह ही पढ़ा कीजिए। उन्होंने जवाब दिया कि मैं तो जिस तरह करता हूँ करता रहूँगा, तुम चाहो तो मुझे इमाम रखो, कहो तो मैं तुम्हारी इमामत छोड़ दूँ। अब उन्हें यह बात भारी पड़ी जानते थे कि इन सब में यह ज़्यादा अफ़ज़ल हैं, इनकी मौजूदगी में दूसरे का नमाज़ पढ़ाना भी उन्हें गवारा न हो सका। एक दिन जबकि हुज़ूर (ﷺ) उनके पास तशरीफ़ लाए तो उन लोगों ने आप (ﷺ) से यह वाक़िया बयान किया। आप (ﷺ) ने इमाम साहब से फ़र्माया कि तुम क्यूँ अपने साथियों की बात नहीं मानते और हर

रकअत में उस सूरत को क्यूँ पढ़ते हो? वह कहने लगे, या रसूलल्लाह (ﷺ)! मुझे इस सूरत से मुहब्बत है। आप (ﷺ) ने फ़र्माया इसकी मुहब्बत ने तुझे जन्नत में पहुँचा दिया।'' (सहीह बुख़ारी, किताबुल अज़ान, बाब अल्जमअ़ बैनस्सूरतैन फ़ी रकअतिही...) : 774; तिर्मिज़ी : 2901) तिर्मिज़ी और मुस्नद अहमद की हदीस में है कि ''एक शख़्स ने आप (ﷺ) से कहा कि मैं इस सूरत से बहुत मुहब्बत रखता हूँ। आप (ﷺ) ने फ़र्माया इसकी मुहब्बत ने तुझे जन्नत में पहुँचा दिया। (अहमद : 3/141; वसनदुहू हसन; तिर्मिज़ी : 2901; वहुव सहीहुन) एक शख़्स ने किसी को इस सूरत को पढ़ते हुए रात के वक़्त सुना कि वह बार बार इसी को दोहरा रहा है, सुबह के वक़्त आकर उसने हुज़ूर (ﷺ) से ज़िक्र किया गोया कि वह उसे हल्के सवाब का काम जानता था, तो नबी (ﷺ) ने फ़र्माया उसकी क़सम! जिसके हाथ में मेरी जान है यह सूरत मिस्ल तिहाई क़ुरआन के है।'' (सहीह बुख़ारी, किताब फ़ज़ाइलुल क़ुरआन बाब फ़ज़्ल (क़ुल हुवल्लाहु अहद) : 5013)

सहीह बुख़ारी की और हदीस में है कि ''रसूलुल्लाह (ﷺ) ने अपने अस्हाब (रज़ि.) से फ़र्माया कि क्या तुमसे यह नहीं हो सकता कि एक रात में एक तिहाई क़ुरआन पढ़ लो तो यह सहाबा (रज़ि.) पर भारी पड़ा और कहने लगा भला इतनी ताक़त तो हर एक में नहीं। आप (ﷺ) ने फ़र्माया सुनो सूरह (क़ुल हुवल्लाहु अहद) तिहाई क़ुरआन है।'' (सहीह बुख़ारी, किताब फ़ज़ाइलुल क़ुरआन, बाब फ़ज़्ल (क़ुल हुवल्लाहु अहद) : 5015) मुस्नद अहमद में है कि हज़रत क़तादा बिन नोअमान (रज़ि.) सारी रात इसी सूरत को पढ़ते रहे, हुज़ूर (ﷺ) से जब ज़िक्र किया तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि यह सूरत आधे क़ुरआन या तिहाई क़ुरआन के बराबर है। (अहमद : 3/15; वसनदुहू ज़ईफ़ुन) एक दूसरी रिवायत में है कि हज़रत अबू अय्यूब अंसारी (रज़ि.) ने फ़र्माया कि ''क्या तुममें से किसी को इसकी ताक़त है कि वह हर रात तीसरा हिस्सा क़ुरआन का पढ़ लिया करे? सहाबा (रज़ि.) कहने लगे, यह किससे हो सकेगा? आपने फ़र्माया सुनो (क़ुल हुवल्लाहू अहद) तिहाई क़ुरआन के बराबर है। इतने में रसूलुल्लाह (ﷺ) भी तशरीफ़ लाए आप (ﷺ) ने सुन लिया और फ़र्माया कि अबू अय्यूब सच कहते हैं।'' (मुस्नद अहमद : 2/173; वसनदुहू ज़ईफ़ुन; मज्मउज़्ज़वाइद : 7/150; लेकिन सूरह इख़्लास का तिहाई क़ुरआन के बराबर होना सहीह बुख़ारी : 5013; सहीह मुस्लिम : 812 में मौजूद है।)

तिर्मिज़ी में है कि रसूले मक़्बूल (ﷺ) ने सहाबा (रज़ि.) से फ़र्माया कि ''जमा हो जाओ मैं तुम्हें आज तिहाई क़ुरआन सुनाऊँगा, लोग जमा होकर बैठ गए, आप (ﷺ) घर से तशरीफ़ लाए सूरह (क़ुल हुवल्लाहु अहद...) पढ़ी और फिर घर तशरीफ़ ले गए। अब सहाबा (रज़ि.) में बातें होने लगीं कि वादा तो हुज़ूर (ﷺ) का यह था कि तिहाई क़ुरआन सुनाएँगे शायद आसमान से कोई वही आ गई हो। इतने में आप (ﷺ) फिर वापिस तशरीफ़ लाए और फ़र्माया, मैंने तुमसे तिहाई क़ुरआन सुनाने का वादा किया था, सुनो! यह सूरत तिहाई क़ुरआन के बराबर है।'' (सहीह मुस्लिम, किताब सलातुल मुसाफ़िरीन, बाब फ़ज़्लु क़िराअतु क़ुल हुवल्लाहु अहद : 812; तिर्मिज़ी : 2900; अहमद : 2/429) हज़रत अबुद्दर्दा (रज़ि.) की रिवायत में है कि ''रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि क्या तुम इससे आजिज़ हो कि हर दिन तिहाई क़ुरआने करीम पढ़ लिया करो। लोगों ने अर्ज़ किया, हुज़ूर (ﷺ)! हम इससे बहुत आजिज़ और बहुत ज़ईफ़ हैं। आप (ﷺ) ने फ़र्माया

सुनो! अल्लाह तआला ने कुरआन के तीन हिस्से किये हैं (कुल हुवल्लाहु अहद...) तीसरा हिस्सा है।'' (सहीह मुस्लिम, किताब सलातुल मुसाफ़िरीन, बाब फ़ज़्लु क़िराअते कुल हुवल्लाहु अहद : 811) ऐसी ही रिवायतें सहाबा किराम (रज़ि.) की एक बहुत बड़ी जमाअत से मरवी हैं। हुज़ूर (ﷺ) एक बार कहीं से तशरीफ़ ला रहे थे आप (ﷺ) के साथ हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) भी थे तो आप (ﷺ) ने एक शख़्स को इस सूरत की तिलावत करते हुए सुनकर फ़र्माया कि वाजिब हो गई, हज़रत अबू हुरैरा(रज़ि.) ने पूछा क्या वाजिब हो गई? फ़र्माया जन्नत।'' (तिर्मिज़ी, किताब फ़ज़ाइलुल कुरआन, बाब मा जाअ फ़ी सूरतिल इख़्लास... : 2897; वसनदुहू ह सन; नसाई : 995) अबू यअला की एक ज़ईफ़ हदीस में है कि क्या तुममें से कोई यह ताक़त नहीं रखता कि सूरह (कुल हुवल्लाहु अहद...) को रात में तीन मर्तबा पढ़ ले? यह सूरत तिहाई कुरआन के बराबर है। (मुस्नदे अबी यअला : 4118; वसनदुहू ज़ईफ़ुन जिद्दा, मज्मउज़्ज़वाइद : 7/150; इसकी सनद में ईसा बिन मैमून मतरूक और यज़ीद रक़्क़ाशी ज़ईफ़ रावी है।) मुस्नद अहमद में है कि अब्दुल्लाह बिन हबीब (रज़ि.) फ़र्माते हैं कि ''हम प्यासे थे रात अंधेरी थी हुज़ूर (ﷺ) का इंतिज़ार था कि आप (ﷺ) तशरीफ़ लाएँ और नमाज़ पढ़ाएँ, आप (ﷺ) तशरीफ़ लाए और मेरा हाथ पकड़कर फ़र्माने लगे पढ़, मैं चिपका रहा।आप (ﷺ) ने फिर फ़र्माया पढ़, मैंने अर्ज़ किया क्या पढ़ूँ? आप (ﷺ) ने फ़र्माया हर सुबह व शाम तीन तीन बार सूरह (कुल हुवल्लाहु अहद) और (कुल अऊज़ुबि रब्बिल फ़लक़) और (कुल अऊज़ुबि रब्बिन्नास) पढ़ लिया कर, यह काफ़ी हो जाएगी।'' (अबूदाऊद, किताबुल अदब, बाब मा यक़ूलु इज़ा अस्बह : 5082; वसनदुहू हसन; तिर्मिज़ी : 3575; नसाई : 5430)

सूरह इख़्लास एक बेहतरीन वज़ीफ़ा है : नसाई की एक रिवायत में है हर चीज़ से तुझे यह किफ़ायत करेगी। मुस्नद की एक और ज़ईफ़ हदीस में है कि जिसने इन कलिमात को दस बार पढ़ लिया उसे चालीस लाख नेकियाँ मिलेंगी, वह कलिमात यह हैं (ला इलाहा इल्लल्लाहु वाहिदन अहदन समदल्लम यत्तख़िज़ साहिबतंव्वला वलदंव्वलम यकुल्लहू कुफ़ुवन अहद) (अहमद : 4/103; वसनदुहू ज़ईफ़ुन जिद्दन इसकी सनद में ख़लील बिन मुर्रा मुंकरुल हदीस है।) इसके रावी ख़लील बिन मुर्रा हैं जिन्हें हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) वग़ैरह बहुत ज़ईफ़ बतलाते हैं। मुस्नद अहमद में है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं कि ''जो शख़्स इस पूरी सूरत को दस बार पढ़ लेगा अल्लाह तआला उसके लिए जन्नत में एक महल ता'मीर करेगा। हज़रत उमर (रज़ि.) ने कहा, या रसूलल्लाह (ﷺ)! फिर तो हम बहुत से महल बनवा लेंगे। आप (ﷺ) ने फ़र्माया अल्लाह उससे भी ज़्यादा और उससे भी अच्छे देने वाला है। (अहमद : 3/437; वसनदुहू ज़ईफ़ुन ज़िबान बिन फ़ाइद ज़ईफ़) दारमी में है कि दस बार पर एक महल बीस पर दो तीस पर तीन....। (सुनन दारमी, किताब फ़ज़ाइलुल कुरआन, बाब फ़ी फ़ज़्लि (कुल हुवल्लाहु अहद) : 3432; यह रिवायत मुर्सल यानी ज़ईफ़ है।) यह हदीस मुर्सल है। अबू यअला मूसली की एक ज़ईफ़ हदीस में है कि जो शख़्स इस सूरत को पचास बार पढ़ ले तो इसके पचास साल के गुनाह माफ़ हो जाते हैं। (सुनन दारमी, किताब फ़ज़ाइलुल कुरआन, बाब फ़ी फ़ज़्लि (कुल हुवल्लाहु अहद) : 3441; सनदुहू ज़ईफ़ुन उम्मे कसीर अल्अंसार बिही लम अअरिफ़हा) इसी

की एक और ज़ईफ़ सनद वाली हदीस में है कि जो शख़्स इस सूरत को एक दिन में दो सौ बार पढ़ ले उसके लिए एक हज़ार पाँच सौ नेकियाँ लिखी जाती हैं बशर्तेकि उस पर क़र्ज़ न हो। (मुस्न्दे अबी यअ़ला : 3365; वसनदुहू ज़ईफ़ुन; हातिम बिन मैमून ज़ईफ़, इसकी सनद में हातिम बिन मैमून ज़ईफ़ रावी है।) तिर्मिज़ी की एक हदीस में है कि उसके पचास साल के गुनाह माफ़ किये जाते हैं मगर यह कि उस पर क़र्ज़ न हो। (तिर्मिज़ी, किताब फ़ज़ाइलुल क़ुरआन, बाब मा जाअ फ़ी सूरतिल इख़्लास : 2898; वसनदुहू ज़ईफ़ुन; इसकी सनद में हातिम बिन मैमून ज़ईफ़ रावी है।) तिर्मिज़ी की एक ग़रीब हदीस में है कि जो शख़्स सोने के लिए अपने बिस्तर पर जाए फिर दाहिनी करवट पर लेटकर सौ बार इस सूरत को पढ़ ले तो क़ियामत के दिन रब अ़ज़्ज़ व जल्ल फ़र्माएगा ऐ मेरे बन्दे! अपनी दाहिनी तरफ़ से जन्नत में चला जा। (तिर्मिज़ी, किताब फ़ज़ाइलुल क़ुरआन, बाब मा जाअ फ़ी सूरतिल इख़्लास : 2898; वसनदुहू ज़ईफ़ुन इसकी सनद में भी हातिम बिन मैमून है।) बज़्ज़ार की एक ज़ईफ़ हदीस में है कि जो शख़्स इस सूरत को दो सौ बार पढ़े अल्लाह तआ़ला उसके दो सौ साल के गुनाह माफ़ कर देता है। (वसनदुहू ज़ईफ़ुन इसकी सनद में अग़्लब बिन तमीम मुंकरुल हदीस रावी है।) नसाई में इस आयत की तफ़्सीर में है कि नबी (ﷺ) मस्जिद में तशरीफ़ लाए तो देखा कि "एक शख़्स नमाज़ पढ़ रहा है, दुआ माँग रहा है, अपनी दुआ में कहता है (अल्लाहुम्म इन्नी अस्अलुका बि अन्नी अश्हदु अल्ला इलाहा इल्ला अन्तल अहदुस्समदुल्लज़ी लम यलिद वलम यूलद वलम यकुल्ल हू कुफ़ुवन अहद) यानी ऐ अल्लाह! मैं तुझसे सवाल करता हूँ इस बात की गवाही देकर कि तेरे सिवा कोई मअ़बूद नहीं तू अकेला है, बेनियाज़ है न उसके माँ बाप न औलाद न हमसर और साथी कोई और। आप (ﷺ) यह सुनकर फ़र्माने लगे उस अल्लाह की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है उसने इस्मे आ'ज़म के साथ दुआ माँगी है, अल्लाह के उस बड़े नाम के साथ कि जब कभी उस नाम के साथ सवाल किया जाए तो अ़ता हो और जब कभी उस नाम के साथ दुआ की जाए तो क़बूल हो।" (अबूदाऊद, किताबुल वित्र, बाब अद्दुआउ : 1493 वसनदुहू सहीहुन; तिर्मिज़ी : 3475; इब्ने माजा : 3857; अहमद :5/350) अबू यअ़ला में है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं कि "तीन काम हैं जो उन्हें ईमान के साथ कर ले वह जन्नत में चला जाए और जिस किसी हूर जन्नत से चाहे निकाह करा दिया जाए। जो अपने क़ातिल को माफ़ कर दे, और पोशीदा क़र्ज़ अदा कर दे, और हर फ़र्ज़ नमाज़ के बाद दस बार सूरह (क़ुल हुवल्लाहु अहद...) को पढ़ ले। हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) ने पूछा, या रसूलल्लाह (ﷺ)! जो इन तीनों कामों में से एक कर ले आप (ﷺ) ने फ़र्माया एक पर भी दर्जा है।" (मुस्नदे अबी यअ़ला : 1794 वसनदुहू ज़ईफ़ुन; उमर बिन नबहान ज़ईफ़ व अबू शद्दाद मज्हूल है। मज्मउज़्ज़वाइद : 10/102) तब्रानी में है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं कि "जो शख़्स इस सूरह को घर में जाते वक़्त पढ़ ले तो अल्लाह तआ़ला उस घरवालों से और उसके पड़ौसियोंसे फ़क़ीरी दूर कर देगा।" (अल्मुअजमुल कबीर : 2419; वसनदुहू ज़ईफ़ुन जिद्दा, इसकी सनद में मरवान बिन सालिम मतरूक रावी है।)

फ़ायदा : मुस्नद अबू यअ़ला में है कि हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) फ़र्माते हैं कि "हम रसूलुल्लाह

(ﷺ) के साथ मैदाने तबूक में थे, सूरज ऐसी रोशनी नूर और शुआओं के साथ निकला कि हमने इससे पहले ऐसा साफ़ शफ़्फ़ाफ़ और रोशन व मुनव्वर नहीं देखा था, हुज़ूर (ﷺ) के पास जिब्रईल (ﷺ) तशरीफ़ लाए तो हुज़ूर (ﷺ) ने पूछा कि आज सूरज की इस तेज़ रोशनी और ज़्यादा नूर और चमकीली शुआओं की क्या वजह है? फिर आपने फ़र्माया आज मदीना में हज़रत मुआविया बिन मुआविया (रज़ि.) का इंतिक़ाल हो गया है जिनके जनाज़े की नमाज़ के लिए अल्लाह तआला ने सत्तर हज़ार फ़रिश्ते आसमान से भेजे हैं। पूछा इनके किस अमल के बाइस? फ़र्माया वह सूरह (क़ुल हुवल्लाहु अहद...) को दिन रात चलते फिरते उठते बैठते पढ़ा करते थे। अगर आप (ﷺ) का इरादा हो तो मैं ज़मीन समेट लूँ और आप (ﷺ) इनके जनाज़े की नमाज़ अदा कर लें? आप (ﷺ) ने फ़र्माया, बहुत अच्छा। पस आप (ﷺ) ने उनके जनाज़े की नमाज़ अदा की।'' (मुस्नदे अबी यअ़ला : 4267; वसनदुहू ज़ईफ़ुन जिद्दा, इसकी सनद में अ़लाअ अबी मुहम्मद सक़फ़ी मतरूकुल हदीस है।) इस हदीस को हाफ़िज़ अबूबक्र बैहक़ी (रह.) भी अपनी किताब ''दलाइलुन्नबुव्वा'' में यज़ीद बिन हारून की रिवायत से लाये हैं, वह अ़लाअ बिन मुहम्मद से रिवायत करते हैं, उन पर मौज़ूअ हदीसें बयान करने की तोहमत है, वल्लाहु आ़लम! मुस्नदे अबी यअ़ला में इसकी दूसरी सनद भी है जिसमें यह रावी नहीं, उसमें है कि ''हज़रत जिब्रईल (ﷺ) रसूले मक़्बूल (ﷺ) के पास तशरीफ़ लाए और फ़र्माया कि मुआविया बिन मुआविया लैसी (रज़ि.) का इंतिक़ाल हो गया है, क्या आप (ﷺ) उनके जनाज़े की नमाज़ पढ़ना चाहते हैं? आप (ﷺ) ने फ़र्माया, हाँ! हज़रत जिब्रईल (ﷺ) ने अपना पर मारा तमाम दरख़्त और सब टीले वग़ैरह पस्त हो गए उनका जनाज़ा हुज़ूर (ﷺ) को नज़र आने लगा, आप (ﷺ) ने नमाज़ शुरू की और आप (ﷺ) के पीछे फ़रिश्तों की दो सफ़ें थीं हर सफ़ में सत्तर हज़ार फ़रिश्ते थे, आप (ﷺ) ने पूछा कि आख़िर इस मर्तबे की क्या वजह है? हज़रत जिब्रईल (ﷺ) ने फ़र्माया इनकी इस सूरत से मुहब्बत और हर वक़्त आते जाते उठते बैठते इसकी तिलावत।'' (मुस्नदे अबी यअ़ला : 4268; वसनदुहू ज़ईफ़ुन; महबूब बिन हिलाल मज्हूलुल हाल रावी है। लम यूसिक़हू ग़ैर इब्ने हिब्बान दलाइलुन्नबुव्वत लिल्बैहक़ी : 5/264; इसकी सनद में महबूब बिन हिलाल मज्हूल रावी है।) उसे बैहक़ी ने भी रिवायत किया है, और बैहक़ी की सनद में महबूब बिन हिलाल हैं।

अबू हातिम राज़ी (रह.) फ़र्माते हैं कि यह मशहूर नहीं। अबू यअ़ला में यह रावी नहीं वहाँ उनकी जगह अबू अब्दुल्लाह बिन महमूद हैं, लेकिन ठीक बात मह़बूब का होना है। इस रिवायत की और भी बहुत सी सनदें हैं और सब ज़ईफ़ हैं, हमने इख़्तिसार के लिए उन्हें यहाँ नक़्ल नहीं किया। मुस्नद अहमद में है कि हज़रत उ़क़्बा बिन आमिर (रज़ि.) फ़र्माते हैं कि ''एक रोज़ मेरी रसूलुल्लाह (ﷺ) से मुलाक़ात हुई मैंने जल्दी से आप (ﷺ) का हाथ थाम लिया और कहा, या रसूलल्लाह (ﷺ)! मोमिन की नजात किस अमल पर है? आप (ﷺ) ने फ़र्माया, ऐ उ़क़्बा! ज़ुबान थामे रख अपने घर में ही बैठा रहा कर और अपनी ख़ताओं पर रोता रह। फिर दोबारा जब हुज़ूर (ﷺ) से मुलाक़ात हुई तो आप (ﷺ) ने ख़ुद मेरा हाथ पकड़ लिया और फ़र्माया, उ़क़्बा! क्या मैं तुम्हें तौरात और इंजील और ज़बूर और क़ुरआन में उतरी हुई तमाम सूरतों से बेहतरीन सूरतें

बताऊँ? मैंने कहा, हाँ हुज़ूर (ﷺ)! ज़रूर इर्शाद कीजिए। अल्लाह तआला मुझे आप (ﷺ) पर फ़िदा करे। पस आपने मुझे सूरह (कुल हुवल्लाहु अहद) और (कुल अऊज़ुबि रब्बिल फ़लक़) और (कुल अऊज़ुबि रब्बिन्नास) पढ़ाईं। फिर फ़र्माया, देखो उ़क़्बा! इन्हें न भूलना और हर रात इन्हें पढ़ लिया करना। फ़र्माते हैं कि फिर मैं न इन्हें भूला और न कोई रात इनके पढ़े बग़ैर गुज़ारी। मैंने फिर आप (ﷺ) से मुलाक़ात की और जल्दी करके आप (ﷺ) के दस्ते मुबारक को अपने हाथ में लेकर अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! मुझे बेहतरीन आ़माल का इर्शाद फ़र्माइए। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, सुन! जो तुझसे तोड़े तू उससे जोड़, जो तुझे महरूम रखे तू उसे दे, जो तुझ पर ज़ुल्म करे तू उससे दरगुज़र कर, और माफ़ कर दे।'' (अहमद : 4/148; वसनदुहू ज़ईफ़ुन, ह : 17334; इसकी सनद में अ़ली बिन यज़ीद अल्हानी ज़ईफ़ रावी है।) इसका कुछ हिस्सा इमाम तिर्मिज़ी (रह.) ने भी ज़ोहद के बाब में वारिद किया है और फ़र्माया है यह हदीस हसन है। (तिर्मिज़ी, किताबुज़्ज़ोहद, बाब मा जाअ फ़ी हिफ़्ज़िल लिसान : 2406; वसनदुहू ज़ईफ़ुन इसकी सनद में उ़बैदुल्लाह बिन ज़ोहर और अ़ली बिन यज़ीद ज़ईफ़ रावी हैं।) मुस्नद अहमद में भी इसकी और सनद है। (अहमद : 4/158; वसनदुहू हसन) सहीह बुख़ारी में हज़रत आइशा सिद्दीक़ा (रज़ि.) से मरवी है कि ''नबी (ﷺ) रात के वक़्त जब बिस्तर पर तशरीफ़ ले जाते तो हर रात इन तीनों सूरतों को पढ़कर अपनी दोनों हथेलियाँ मिलाकर उन पर दम करके अपने जिस्म मुबारक पर फेर लिया करते, जहाँ तक हाथ पहुँचते पहुँचाते पहले सिर पर फिर मुँह पर फिर अपने सामने के जिस्म पर तीन बार इसी तरह करते।'' (सहीह बुख़ारी, किताब फ़ज़ाइलुल क़ुरआन, बाब फ़ज़्लुल मुअव्विज़ात : 5017; अबूदाऊद : 5056; तिर्मिज़ी : 3402) यह हदीस सुनन में भी है।

***

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ○

तर्जुमा : ''शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है।''

قُلۡ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ۚ ﴿۱﴾ اَللّٰهُ الصَّمَدُ ۚ ﴿۲﴾ لَمۡ یَلِدۡ ۙ وَلَمۡ یُوۡلَدۡ ۙ ﴿۳﴾ وَلَمۡ یَکُنۡ لَّهٗ کُفُوًا اَحَدٌ ﴿۴﴾

तर्जुमा : ''कह दे कि वह अल्लाह तआला एक ही है (1) अल्लाह तआला बेनियाज़ है (2) न उससे कोई पैदा हुआ, न वह किसी से पैदा हुआ (3) और न कोई उसका हमजिंस है।'' (4)

तौहीदे इलाही का बयान (आयत : 1 से 4) : इसके नाज़िल होने की वजह पहले बयान हो चुकी है

हज़रत इक्रिमा (रह.) फ़र्माते हैं कि यहूद कहते थे हम हज़रत उज़ैर (ﷺ) को पूजते हैं जो अल्लाह के बेटे हैं, और नसरानी कहते थे कि हम हज़रत मसीह (ﷺ) को पूजते हैं जो अल्लाह के बेटे हैंऔर मजूसी कहते थे सूरज चाँद की पूजा करते हैं और मुश्रिक कहते थे, हम बुतपरस्त हैं, तो अल्लाह तआला ने यह सूरत उतारी कि ऐ नबी (ﷺ)! तुम कह दो कि हमारा मअबूद तो अल्लाह तआला है जो वाहिद है अहद है उस जैसा कोई नहीं, जिसका कोई वज़ीर नहीं जिसका कोई शरीक नहीं, जिसका कोई हमसर नहीं, जिसका कोई हमजिंस नहीं, जिसका बराबर और कोई नहीं, जिसके सिवा किसी में उलूहियत नहीं, इस लफ़्ज़ का इत्लाक़ सिर्फ़ उसी की ज़ात पाक पर होता है, वह अपनी सिफ़तों में और अपने हिक्मत भरे कामों में यक्ता और बेनज़ीर है। वह समद है यानी सारी मख़्लूक़ उसकी मोहताज है और वह सबसे बेनियाज़ है।

हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) से मरवी है कि समद वह है जो अपनी सरदारी में अपनी शराफ़त में अपनी बुज़ुर्गी में और अपनी अज़्मत में अपने हिल्म व इल्म में अपनी हिक्मत व तदब्बुर में सबसे बढ़ा हुआ हो, यह सिफ़तें सिर्फ़ अल्लाह तआला जल्ल शानुहू में ही पाई जाती हैं, उसका हमसर और उस जैसा कोई और नहीं, वह अल्लाह सुब्हानहू व तआला सब पर ग़ालिब है और अपनी ज़ात व सिफ़ात में यक्ता और बेनज़ीर है। समद के यह मअनी भी किये गए हैं कि जो तमाम मख़्लूक़ के फ़ना हो जाने के बाद भी बाक़ी रहे, जो हमेशा बक़ा वाला सबकी हिफ़ाज़त करने वाला हो, जिसकी ज़ात लाज़वाल और ग़ैर फ़ानी हो।

हज़रत इक्रिमा (रह.) फ़र्माते हैं कि समद वह है जो न कुछ खाए न उसमें से कुछ निकाले, न वह किसी में से निकले यानी न उसकी औलाद हो, न माँ बाप, यह तफ़्सीर बहुत अच्छी और उम्दा है और इब्ने जरीर (रह.) की रिवायत से हज़रत उबय बिन कअब (रज़ि.) से सराहतन यह मरवी है जैसे कि पहले गुज़रा। और बहुत से सहाबा (रज़ि.) और ताबेईन (रह.) से मरवी है कि समद कहते हैं ठोस चीज़ को जो खोखली न हो, जिसका पेट न हो। शअबी (रह.) कहते हैं जो न खाता हो न पीता हो। अब्दुल्लाह बिन बुरैदा (रह.) फ़र्माते हैं समद वह नूर है जो रोशन हो और चमक दमक वाला हो। एक मरफ़ूअ हदीस में भी है कि समद है जिसका पेट न हो। (अल्मुअजमुल कबीर :1162; सनदुहू ज़ईफ़ुन जिद्दा; इसकी सनद में सालेह बिन हय्यान, उबेदुल्लाह बिन सईद फ़ाइद अल्अअमश दोनों ज़ईफ़ रावी हैं।) लेकिन इसका मरफ़ूअ होना ठीक नहीं, सही यह है कि मौक़ूफ़ है।

हाफ़िज़ अबुल क़ासिम तब्रानी (रह.) अपनी "किताबुस्सुन्ना" में लफ़्ज़ समद की तफ़्सीर में इन तमाम अक़्वाल वग़ैरह को वारिद करके लिखते हैं कि दरअसल यह सब सच्चे हैं, और सही हैं यह कुल सिफ़तें हमारे रब अज़्ज़ व जल्ल में हैं, उसकी तरफ़ सब मोहताज भी हैं वह सबसे बढ़कर सरदार और सबसे बड़ा है, उसे न पेट है न वह खोखला है न वह खाये न पिये, सब फ़ानी हैं और वह बाक़ी है वग़ैरह फिर फ़र्माया कि उसकी औलाद नहीं न उसके माँ बाप हैं न बीवी। जैसे और जगह है (بَدِيعُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ أَنَّىٰ يَكُونُ لَهُ وَلَدٌ وَلَمْ تَكُن لَّهُ صَاحِبَةٌ وَخَلَقَ كُلَّ شَيْءٍ) (6/अन्आम : 101) यानी वह ज़मीनो आसमान का पैदा करने वाला है, उसे औलाद कैसे होगी उसकी बीवी नहीं। हर चीज़ को उसी ने पैदा किया है यानी वही हर चीज़ का ख़ालिक़

मालिक है। फिर उसकी मख़्लूक़ और मिल्कियत में से उसकी बराबरी और हमसरी करने वाला कौन होगा? वह इन तमाम उ़यूब और नुक़्सान से पाक है, जैसे और जगह फ़र्माया (وَقَالُوا اتَّخَذَ الرَّحْمَٰنُ وَلَدًا) (19/मरियम : 88) यानी यह कुफ़्फ़ार कहते हैं कि अल्लाह की औलाद है, तुम तो एक बड़ी बुरी चीज़ लाए, क़रीब है कि आसमान फट जाएँ और ज़मीन शक़्क़ हो जाए और पहाड़ चूरा चूरा होकर गिर पड़ें इस बिना पर कि इन्होंने कहा कि अल्लाह की औलाद है, हालाँकि अल्लाह को यह लायक़ ही नहीं कि उसकी औलाद हो, तमाम ज़मीनो आसमान में कुल के कुल अल्लाह के ग़ुलाम ही बनकर आने वाले हैं, अल्लाह के पास तमाम का शुमार है और उन्हें एक एक करके गिन रखा है, और यह सबके सब तंहा तंहा उसके पास क़ियामत के दिन हाज़िर होने वाले हैं। और जगह है (وَقَالُوا اتَّخَذَ الرَّحْمَٰنُ وَلَدًا سُبْحَانَهُ بَلْ) (21/अम्बिया : 26) यानी इन काफ़िरों ने कहा कि रह़मान की औलाद है, अल्लाह इससे पाक है बल्कि वह तो अल्लाह के बाइ़ज़्ज़त बन्दे हैं, बात में भी उससे सब्क़त नहीं करते, उसी के फ़र्मान पर आ़मिल हैं। और जगह है (وَجَعَلُوا بَيْنَهُ وَبَيْنَ الْجِنَّةِ نَسَبًا) (37/स़ाफ़्फ़ात : 158) यानी इन्होंने अल्लाह तआ़ला के और जिन्नात के बीच नसब क़ायम कर रखा है, हालाँकि जिन्नात तो ख़ुद उसकी फ़र्मांबरदारी में हाज़िर हैं, अल्लाह तआ़ला इनके बयानकर्दा उ़यूब से पाक व बरतर है।

स़ह़ीह़ बुख़ारी में है कि ईज़ा देने वाली बातों को सुनते हुए स़ब्र करने में अल्लाह तआ़ला से ज़्यादा स़ाबिर कोई नहीं, लोग उसकी औलाद बताते हैं और फिर भी वह इन्हें रोज़ियाँ देता है और आ़फ़ियत व तंदुरुस्ती अ़त़ा फ़र्माता है। (स़ह़ीह़ बुख़ारी, किताबुत्तौह़ीद, बाब क़ौलुल्लाहि तआ़ला (इन्नल्लाह हुवर्रज़्ज़ाक़ु ज़ुल्क़ुव्वतिल मतीन) : 7378; स़ह़ीह़ मुस्लिम : 2804) बुख़ारी की और रिवायत में है कि अल्लाह तआ़ला फ़र्माता है कि इब्ने आदम मुझे झुठलाता है हालाँकि इसे ऐसा न चाहिए, मुझे गालियाँ देता है और इसे यह लायक़ भी न था, इसका मुझे झुठलाना तो यह है कि वह कहता है जिस त़रह़ अव्वलन अल्लाह ने मुझे पैदा किया ऐसे ही फिर नहीं लौटाएगा। हालाँकि पहले मर्तबा की पैदाइश दूसरी मर्तबा की पैदाइश से आसान तो न थी जब मैं इस पर क़ादिर हूँ तो उस पर क्यूँ नहीं? और इसका मुझे गालियाँ देना यह है कि वह कहता है अल्लाह तआ़ला की औलाद है हालाँकि मैं तन्हा हूँ, मैं एक ही हूँ, मैं स़मद हूँ, न मेरी औलाद न मेरे माँ बाप, न मुझ जैसा कोई और। (स़ह़ीह़ बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरह क़ुल हुवल्लाहु अह़द : 4974)

अल्ह़म्दुलिल्लाह! सूरह इख़्लास़ की तफ़्सीर मुकम्मल हुई।

***

FLOW CHART
तरतीबी नक्श-ए-रब्त

MACRO-STRUCTURE
नज़्मे-जली

सूरह फ़लक़ - 113

आयात : 5, मक्की, पैराग्राफ : 5

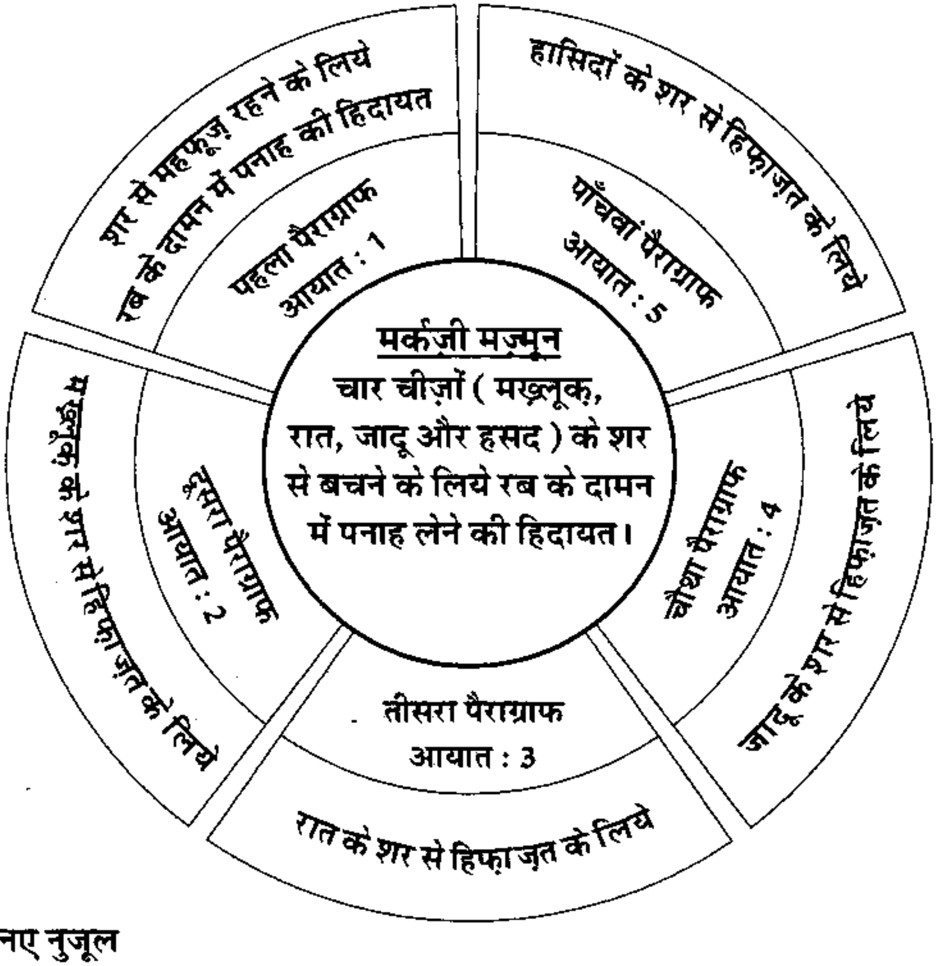

ज़मानए नुज़ूल

सूरह फ़लक़ ऐलाने आ़म के बाद आप (सल्ल.) के क़ियामे मक्का के दूसरे दौर (4-5 नबवी) में नाज़िल हुई, जब रसूलुल्लाह (सल्ल.) और नौमुस्लिम सहाबा (रज़ि.) के लिये मुख़ालिफ़ीन के शर का आग़ाज़ हो चुका था।

तफ़्सीर सूरह फ़लक़

तआरुफ़ और फ़ज़ाइल : मुस्नद अहमद में है कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) इस सूरत को और इसके बाद की सूरत को कुरआन में नहीं लिखते थे और फ़र्माया करते थे कि मेरी गवाही है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मुझे ख़बर दी कि जिब्रईल (عليه السلام) ने आप (ﷺ) से फ़र्माया (कुल अऊज़ुबि रब्बिल फ़लक़...) तो मैंने भी यही कहा। फिर फ़र्माया (कुल अऊज़ुबि रब्बिन्नास...) तो मैंने यही कहा तो हम भी उस तरह कहते हैं जिस तरह हुज़ूर (ﷺ) ने कहा। (अहमद:5/129; सनदुहू हसन; इब्ने हिब्बान : 797) हज़रत उबय बिन कअब (रज़ि.) से इन दोनों सूरतों के बारे में पूछा जाता है और कहा जाता है कि आपके भाई हज़रत इब्ने मसऊद (रज़ि.) तो इन दोनों को कुरआने करीम में से काट दिया करते थे तो फ़र्माया कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सवाल किया तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया, मुझसे कहा गया कहो, मैंने कहा। पस हम भी कहते हैं जिस तरह हुज़ूर (ﷺ) ने कहा।'' (मुस्नदे हुमैदी : 376; बि तहक़ीक़ी व सनदुहू सहीहुन) मुस्नद में भी यह रिवायत अल्फ़ाज़ के हेर फेर के साथ मरवी है। (अहमद : 5/129; वसनदुहू हसन) और बुख़ारी शरीफ़ में भी। (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरह कुल अऊज़ुबि रब्बिन्नास : 4977) मुस्नद अबू यअला वग़ैरह में है कि इब्ने मसऊद (रज़ि.) इन दोनों सूरतों को कुरआने करीम में नहीं लिखते थे और न कुरआन में इन्हें शुमार करते थे, बल्कि क़ारियों और फ़क़ीहों के नज़दीक मशहूर बात यही है कि हज़रत इब्ने मसऊद (रज़ि.) इन दोनों सूरतों को कुरआने करीम में नहीं लिखते थे, शायद इन्होंने हुज़ूर (ﷺ) से न सुना हो और तवातुर के साथ इन तक न पहुँचा हो।

फ़ायदा : फिर यह अपने इस क़ौल से रुजूअ करके जमाअत के क़ौल की तरफ़ पलट आते हैं।

सहाबा (रज़ि.) ने इन सूरतों को अइम्मा के कुरआन में दाख़िल किया, जिसके नुस्ख़े चारों तरफ़ फैले, वलिल्लाहिल हम्दु वल मिन्ना। सहीह मुस्लिम में हज़रत उक़्बा बिन आमिर (रज़ि.) से मरवी है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया ''क्या तुमने नहीं देखा कि चंद आयतें मुझ पर इस रात ऐसी नाज़िल हुई हैं कि उन जैसी कभी नहीं देखी गईं। फिर आप (ﷺ) ने इन दोनों सूरतों की तिलावत फ़र्माई।'' (सहीह मुस्लिम, किताब सलातुल मुसाफ़िरीन, बाब फ़ज़्लु क़िराअतिल मुअव्वज़तैन : 814; तिर्मिज़ी : 3367; अहमद : 4/151) यह हदीस मुस्नद अहमद में तिर्मिज़ी में और नसाई में भी है। इमाम तिर्मिज़ी (रह.) इसे हसन सहीह कहते हैं।

मुस्नद अहमद में है कि हज़रत उक़्बा (रज़ि.) फ़र्माते हैं कि ''मैं हुज़ूर (ﷺ) के साथ मदीना की गलियों में आप (ﷺ) की सवारी की नकेल थामे चला जा रहा था कि आप (ﷺ) ने मुझसे फ़र्माया, अब आओ तुम सवार हो जाओ। मैंने इस ख़्याल से कि अगर आप (ﷺ) की बात न मानूँगा तो नाफ़र्मानी होगी,

सवार होना मंज़ूर कर लिया, थोड़ी देर के बाद मैं उतर गया और हुज़ूर (ﷺ) सवार हो गए। फिर आप (ﷺ) ने फ़र्माया, उक़्बा! मैं तुझे दो बेहतरीन सूरतें क्या न सिखाऊँ? मैंने अ़र्ज़ किया, हाँ या रसूलल्लाह (ﷺ)! ज़रूर सिखाइए पस आप (ﷺ) ने मुझे सूरह (कुल अऊज़ुबि रब्बिल फ़लक़) और (कुल अऊज़ुबि रब्बिन्नास) सिखाईं फिर नमाज़ खड़ी हुई आप (ﷺ) ने नमाज़ पढ़ाई और इन ही दोनों सूरतों की तिलावत की, फिर मुझसे फ़र्माया तूने देख लिया, सुन जब तू सोये और जब खड़ा हो इन्हें पढ़ लिया कर।'' (अहमद : 4/144; अबूदाऊद, किताबुल वित्र, बाब फ़िल मुअ़व्वज़तैन 5 1462; वसनदुहू हसन; नसाई : 5439) तिर्मिज़ी, अबूदाऊद और नसाई में भी यह हदीस है।

मुस्नद अहमद की और हदीस में है कि ''हज़रत उक़्बा बिन आमिर (रज़ि.) को रसूलुल्लाह (ﷺ) ने हर नमाज़ के वक़्त इन सूरतों की तिलावत का हुक्म दिया।'' (अबूदाऊद, किताबुल वित्र, बाब फ़िल्इस्तिग़्फ़ारि : 1523; वसनदुहू हसन; तिर्मिज़ी : 2903; नसाई : 1337; अहमद : 4/155, 201) यह हदीस भी अबूदाऊद, तिर्मिज़ी और नसाई में है, इमाम तिर्मिज़ी (रह.) इसे ग़रीब बतलाते हैं और रिवायत में है कि इन जैसी सूरतें तूने पढ़ी ही नहीं। (अहमद : 4/146; ह : 17322; वसनदुहू ज़ईफ़ुन; इब्ने लहीआ़ अ़न्अ़न) हज़रत उक़्बा (रज़ि.) वाली हदीस जिसमें हुज़ूर (ﷺ) की सवारी के साथ आपका होना मज़्कूर है, इसके कुछ तुरूक़ में यह भी है कि ''जब हुज़ूर (ﷺ) ने मुझे यह सूरतें बतलाईं तो मुझे कुछ ज़्यादा ख़ुश होते न देखकर फ़र्माया कि शायद तू इन्हें छोटी सी सूरतें समझता है, सुन! नमाज़ के क़ियाम में इन जैसी सूरतों की क़िरअत और है ही नहीं।'' (अहमद : 4/149; नसाई, किताबुल इस्तिआ़ज़ा, बाब मा जाअ फ़ी सूरतैन : 5435; वहुव हदीसुन हसन) नसाई की हदीस में है कि इन जैसी सूरतें किसी पनाह पकड़ने वाले के लिए और नहीं। (सुननुल कुब्रा लिन्नसाई : 7807; वफ़िस्सुग़रा : 5433; वहुव हदीसुन हसन) एक और रिवायत में है कि हज़रत उक़्बा (रज़ि.) से यह सूरतें हुज़ूर (ﷺ) ने पढ़वाईं फिर फ़र्माया कि ''इन जैसी पनाह माँगने की और सूरतें नहीं।'' (नसाई, किताबुल इस्तिआ़ज़ा, बाब मा जाअ फ़ी सूरतिल मुअ़व्वज़तैन : 5440; वहुव हदीसुन हसन) एक रिवायत में है कि सुबह की फ़र्ज़ नमाज़ हुज़ूर (ﷺ) ने इन ही दोनों सूरतों से पढ़ाई। (नसाई, किताबुल इस्तिआ़ज़ा, बाब मा जाअ फ़ी सूरतिल मुअ़व्वज़तैन : 5437; वहुव हदीसुन सहीहुन)

और हदीस में है कि ''हज़रत उक़्बा (रज़ि.) हुज़ूर (ﷺ) की सवारी के पीछे जाते हैं और आप (ﷺ) के क़दम पर हाथ रखकर अ़र्ज़ करते हैं हुज़ूर (ﷺ)! मुझे सूरह हूद या सूरह यूसुफ़ पढ़ाइए। आप (ﷺ) ने फ़र्माया अल्लाह के पास नफ़ा देने वाली कोई सूरत (कुल अऊज़ुबि रब्बिल फ़लक़) से ज़्यादा नहीं।'' (नसाई, किताबुल इस्तिआ़ज़ा, बाब मा जाअ फ़ी सूरतिल मुअ़व्वज़तैन : 5441; वहुव हदीसुन सहीहुन) और हदीस में है कि ''आप (ﷺ) ने इब्ने आ़बिस जुहनी (रज़ि.) से फ़र्माया कि मैं तुम्हें बताऊँ कि पनाह हासिल करने वालों के लिए इन दोनों सूरतों से अफ़ज़ल सूरत और कोई नहीं।'' ((नसाई, किताबुल इस्तिआ़ज़ा, बाब मा जाअ फ़ी सूरतिल मुअ़व्वज़तैन : 5434; वहुव हदीसुन हसन) पस बहुत सी हदीसें अपने

तवातुर की वजह से अक्सर उलमा के नज़दीक क़तइयत का फ़ायदा देती हैं, और वह ह़दीस भी बयान हो चुकी कि आप (ﷺ) ने इन दोनों सूरतों और सूरह इख़्लास की निस्बत फ़र्माया कि चारों किताबों में इन जैसी सूरतें नहीं उतरीं।

नसाई वग़ैरह में है कि ''हम हुज़ूर (ﷺ) के साथ एक सफ़र में थे, सवारियाँ कम थीं बारी बारी सवार होते थे, हुज़ूर (ﷺ) ने एक शख़्स के मूँढोंपर हाथ रखकर यह दोनों सूरतें पढ़ाईं और फ़र्माया जब नमाज़ पढ़े तो इन्हें पढ़ा कर।'' (अह़मदः 5/24; वसनदुहू सह़ीहुन) ज़ाहिर यह मालूम होता है कि यह शख़्स ह़ज़रत उ़क़्बा बिन आ़मिर (रज़ि.) होंगे, वल्लाहु आ़लम। ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन असलमी (रज़ि.) के सीने पर हाथ रखकर आप (ﷺ) ने फ़र्माया, कह! ''वह न समझे कि क्या कहें, फिर फ़र्माया कह तो इन्होंने सूरह (क़ुल हुवल्लाहु अह़द...)। पढ़ी आप (ﷺ) ने फ़र्माया कह फिर सूरह फ़लक़ पढ़ी। आप (ﷺ) ने फिर भी यही फ़र्माया तो सूरह नास पढ़ी तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया, इसी तरह पनाह माँगाकर इस जैसी पनाह माँगने की और सूरतें नहीं।'' (सुननुल कुब्रा लिन्नसाई : 7845; वसनदुहू ज़ईफ़ुन फ़ी सिमाइ यज़ीद बिन रूमान मिन उ़क़्बा बिन आ़मिर (रज़ि.) नज़र)

नसाई की और ह़दीस में है कि ''ह़ज़रत जाबिर (रज़ि.) से यह दोनों सूरतें आप (ﷺ) ने पढ़वाईं, फिर फ़र्माया इन्हें पढ़ता रह इन जैसी सूरतें तू और न पढ़ेगा।'' (नसाई, किताबुल इस्तिआ़ज़ा, बाब मा जाअ फ़ी सूरतिल मुअ़व्वज़तैन : 5443; वसनदुहू ह़सन) उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रत आ़इशा सिद्दीक़ा (रज़ि.) वाली ह़दीस पहले गुज़र चुकी है कि ''हुज़ूर (ﷺ) इन्हें पढ़कर अपने दोनों हाथों पर फूँककर अपने सिर चेहरे और सामने जिस्म पर फेर लेते थे।'' मौत़ा इमाम मालिक में है कि ''जब नबी (ﷺ) बीमार पड़ते तो इन दोनों सूरतों को पढ़कर अपने ऊपर फूँक लिया करते थे, जब आप (ﷺ) की बीमारी सख़्त हुई तो ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) मुअ़वज़्ज़ात पढ़कर ख़ुद आपके हाथों को आप (ﷺ) के जिस्मे मुबारक पर फेरती थीं और इससे क़सद आपका आप (ﷺ) के हाथों की बरकत का होता था।'' (स़ह़ीह़ बुख़ारी, किताब फ़ज़ाइलुल क़ुरआन, बाब फ़ज़्लुल मुअ़वज़्ज़ात : 5016; स़ह़ीह़ मुस्लिम : 2192; अबूदाऊद : 3902; इब्ने माजा : 3529; अह़मद : 2/104; मौत़ा इमाम मालिक, किताबुल ऐ़न वर्रुक़्क़यतु फ़ी मर्ज़) सूरह नून की तफ़्सीर के आख़िर में यह ह़दीस गुज़र चुकी है कि ''रसूलुल्लाह (ﷺ) जिन्नात की और इंसानों की आँखों से पनाह माँगा करते थे, जब यह दोनों सूरतें उतरीं तो आप (ﷺ) ने उन्हें ले लिया, और बाक़ी सब छोड़ दीं।'' इमाम तिर्मिज़ी (रह़.) इसे ह़सन स़ह़ीह़ फ़र्माते हैं। (तिर्मिज़ी, किताबुत्तिब्ब, बाब मा जाअ फ़िर्रुक़्क़यति बिल मुअ़व्वज़तैन : 2058; वसनदुहू ज़ईफ़ुन सईद जरीरी रावी मुख़्तलत़ है। नसाई : 5496; इब्ने माजा : 3511)

***

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ○

तर्जुमा : "शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है।"

قُلۡ اَعُوۡذُ بِرَبِّ الۡفَلَقِ ۙ﴿۱﴾ مِنۡ شَرِّ مَا خَلَقَ ۙ﴿۲﴾ وَ مِنۡ شَرِّ غَاسِقٍ اِذَا وَقَبَ ۙ﴿۳﴾
وَ مِنۡ شَرِّ النَّفّٰثٰتِ فِی الۡعُقَدِ ۙ﴿۴﴾ وَ مِنۡ شَرِّ حَاسِدٍ اِذَا حَسَدَ ﴿۵﴾

तर्जुमा : "तू कह कि मैं सुबह के रब की पनाह में आता हूँ (1) हर उस चीज़ की बुराई से जो उसने पैदा की है (2) और अंधेरी रात की बुराई से जब उसका अंधेरा फैल जाए। (3) और गिरह लगाकर उनमें फूँकने वालियों की बुराई से भी (4) और हसद करने वाले की बुराई से भी जब वह हसद करे।" (5)

फ़लक़ के मअ़नी (आयत : 1 से 5) : हज़रत जाबिर (रज़ि.) वग़ैरह फ़र्माते हैं फ़लक़ कहते हैं सुबह को ख़ुद क़ुरआन में और जगह है (فَالِقُ الۡاِصۡبَاحِ) (6/अन्आम : 96) इब्ने अब्बास (रज़ि.) से मरवी है कि फ़लक़ से मुराद मख़्लूक़ है। हज़रत कअ़ब अहबार (रह.) फ़र्माते हैं कि फ़लक़ जहन्नम में एक जगह है जब उसका दरवाज़ा खुलता है तो उसकी आग की गर्मी और सख़्ती की वजह से तमाम जहन्नमी चीख़ने लगते हैं। एक मरफ़ूअ़ हदीस में भी इसी के क़रीब क़रीब मरवी है लेकिन वह हदीस मुंकर है। यह भी कुछ लोग कहते हैं कि यह जहन्नम का नाम है।

इमाम इब्ने जरीर (रह.) फ़र्माते हैं कि सबसे ज़्यादा ठीक क़ौल पहला ही है, यानी मुराद इससे सुबह है। इमाम बुख़ारी (रह.) भी यही फ़र्माते हैं और यही सही है। तमाम मख़्लूक़ की बुराई से जिसमें जहन्नम भी दाख़िल है, और इब्लीस और औलादे इब्लीस भी। ग़ासिक़ से मुराद रात है, इज़ा वक़ब से सूरज का ग़ुरूब हो जाना मुराद है, यानी रात जब अंधेरा लिये हुए आ जाए। इब्ने ज़ेद (रह.) कहते हैं कि अ़रब सुरय्या सितारे के ग़ुरूब हो जाने को ग़ासिक़ कहते हैं बीमारियाँ और वबाएँ इसके वाक़ेअ़ होने के वक़्त बढ़ जाती थीं और उसके तुलूअ़ होने के वक़्त उठ जाती थीं। एक मरफ़ूअ़ हदीस में है कि सितारा ग़ासिक़ है, लेकिन इसका मरफ़ूअ़ होना सही नहीं। कुछ मुफ़स्सिरीन कहते हैं कि मुराद इससे चाँद है।

इनकी दलील मुस्नद अहमद की यह हदीस है जिसमें है कि "रसूलुल्लाह (ﷺ) ने हज़रत आइशा सिद्दीक़ा (रज़ि.) का हाथ थामे हुए चाँद की तरफ़ इशारा करके फ़र्माया, अल्लाह तआला से उस ग़ासिक़ की बुराई से पनाह माँग।" (अहमद : 6/61; तिर्मिज़ी, किताब तफ़्सीरुल क़ुरआन, बाब वमिन सूरतिल मुअवज़्ज़तैन : 3366; वसनदुहू हसन; हाकिम : 2/540) और रिवायत में है कि (ग़ासिक़िन इज़ा वक़ब) से

यही मुराद है, दोनों क़ौलों में बाआसानी यह तत्बीक़ हो सकती है कि चाँद का चढ़ना और सितारों का ज़ाहिर होना वग़ैरह, यह सब रात ही के वक़्त होता है जब रात आ जाए। वल्लाहु आलम!

गिरहों (गाँठों) पर फूँकने वालियाँ : गिरह लगाकर फूँकने वालियों से मुराद जादूगर औरतें हैं। हज़रत मुजाहिद (रह.) फ़र्माते हैं कि "शिर्क के बिलकुल क़रीब वह मंतर हैं जिन्हें पढ़कर साँप के काटे पर दम किया जाता है, और आसेबज़दा पर।" दूसरी हदीस में है कि हज़रत जिब्रईल (ﷺ) रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास तशरीफ़ लाए और फ़र्माया, "ऐ मुहम्मद (ﷺ)! क्या आप बीमार हैं आप (ﷺ) ने फ़र्माया, हाँ! तो हज़रत जिब्रईल (ﷺ) ने यह दुआ पढ़ी (बिस्मिल्लाहि अर्क़ीक मिन कुल्लि दाइंय्युअज़िब्का वमिन शर्रि कुल्लि हासिदिन व ऐनिन अल्लाहु यश्फ़ीक) यानी अल्लाह तआला के नाम से मैं दम करता हूँ हर उस बीमारी से जो तुझे दुख पहुँचाए, और हर हासिद की बुराई और बदनज़र से अल्लाह तुझे शिफ़ा दे। (सहीह मुस्लिम, किताबुस्सलाम, बाब अल्मर्ज़ु वर्रुक़्क़ा : 5186)

हुज़ूर (ﷺ) पर जादू करने की कोशिश : इस बीमारी से मुराद शायद वह बीमारी है जबकि आप (ﷺ) पर जादू किया गया था, फिर अल्लाह तआला ने आप (ﷺ) को आफ़ियत और शिफ़ा बख़्शी, और हासिद यहूदियों के जादू के मकर को रद्द कर दिया और उनकी तदबीरों को बेअसर कर दिया, और उन्हें रुस्वा और फ़ज़ीहत किया, लेकिन बावजूद इसके रसूलुल्लाह (ﷺ) ने कभी भी अपने ऊपर जादू करने वाले को डाँटा डपटा तक नहीं, अल्लाह तआला ने आप (ﷺ) की किफ़ायत की और आप (ﷺ) को आफ़ियत और शिफ़ा अता फ़र्माई। मुस्नद अहमद में है कि "नबी (ﷺ) पर एक यहूदी ने जादू किया जिससे कई दिन तक आप (ﷺ) बीमार रहे, फिर हज़रत जिब्रईल (ﷺ) ने आकर बताया कि फ़लाँ यहूदी ने आप (ﷺ) पर जादू किया है, और फ़लाँ फ़लाँ कूएँ में गिरहें लगाकर रखा है आप (ﷺ) किसी को भेजकर उसे निकलवा लीजिए। हुज़ूर (ﷺ) ने आदमी भेजा और उस कूएँ से वह जादू निकलवा लिया, गिरहें खोल दीं सारा असर जाता रहा, फिर न तो आप (ﷺ) ने उस यहूदी से कभी ज़िक्र किया और न कभी उसके सामने मुँह मैला किया।" (अहमद : 4/367; नसाई, किताब तहरीमुद्दम, बाब सहरतु अहलिल किताब : 4085; वहुव हदीसुन सहीहुन) सहीह बुख़ारी किताबुत्तिब्ब में हज़रत आइशा सिद्दीक़ा (रज़ि.) से मरवी है कि "रसूलुल्लाह (ﷺ) पर जादू किया गया, आप (ﷺ) समझते थे कि आप (ﷺ) अज़्वाजे मुतह्हरात के पास आए हालाँकि न आते थे।"

हज़रत सुफ़्यान (रह.) फ़र्माते हैं कि यही सबसे बड़ा जादू का असर है। जब यह हालत आप (ﷺ) की हो गई, एक दिन आप (ﷺ) फ़र्माने लगे कि "आइशा! मैंने अपने रब से पूछा और मेरे परवरदिगार ने बतला दिया, दो शख़्स आए एक मेरे सिरहाने बैठा, एक पैरों की तरफ़, सिरहाने वाले ने उस दूसरे से पूछा इनका क्या हाल है? दूसरे ने कहा इन पर जादू किया गया है। पूछा किसने जादू किया है कहा लबीद बिन आसिम ने जो बनी ज़रीक़ के क़बीले का है जो यहूद का हलीफ़ है और मुनाफ़िक़ है। कहा किस चीज़ में? कहा सिर के बालों

और कँघी में। पूछा दिखा कहाँ है? कहा तर खजूर के दरख़्त के छाल में पत्थर की चट्टान तले ज़रवान के कूएँ में। फिर हुज़ूर (ﷺ) उस कूएँ के पास तशरीफ़ लाए और उसमें से वह निकलवाया, उसका पानी ऐसा था गोया मेहन्दी का गदला पानी, उसके पास के खजूरों के दरख़्त शैतानों के सिर जैसे थे। मैं ने कहा भी कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! इनसे बदला लेना चाहिए। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, अल्हम्दु लिल्लाह! अल्लाह तआला ने मुझे तो शिफ़ा दे दी और मैं लोगों में बुराई फैलाना पसंद नहीं करता।" (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तिब्ब, बाब हल यस्तख़्रिजुस्सहर : 7565; सहीह मुस्लिम : 2189)

दूसरी रिवायत में यह भी है कि एक काम करते न थे और उसके असर से यह मालूम होता था कि गोया मैं कर चुका हूँ। और यह भी है कि कूएँ को आप (ﷺ) के हुक्म से बंद कर दिया गया। (सहीह बुख़ारी, किताब बदउल ख़ल्क़, बाब सिफ़तु इब्लीस व जुनूदिही : 3268) यह भी मरवी है कि छः महीने तक आप (ﷺ) की यही हालत रही। (अहमद : 6/63; वसनदुहू सहीहुन) तफ़्सीर सअल्बी में हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) और हज़रत आइशा सिद्दीक़ा (रज़ि.) से मरवी है कि "यहूद का एक बच्चा नबी (ﷺ) की ख़िदमत किया करता था उसे यहूदियों ने बहका सिखाकर आप (ﷺ) के चंद बाल और आप (ﷺ) की कँघी के चंद दंदाने मँगवा लिए और उनमें जादू किया, इस काम में ज़्यादातर कोशिश करने वाला लबीद बिन आसिम था, फिर ज़रवान नामी कूएँ में जो बनू ज़रीक़ का था, उसमें डाल दिया, फिर हुज़ूर (ﷺ) बीमार हो गए, सिर के बाल झड़ने लगे। ख़्याल आता था कि मैं औरतों के पास हो आया हालाँकि आते न थे। गो आप (ﷺ) उसे दूर करने की कोशिश में थे लेकिन वजह मालूम न होती थी छः माह तक यही हालत रही, फिर वह वाक़िया हुआ जो ऊपर बयान किया कि फ़रिश्तों के ज़रिया आप (ﷺ) को इस तमाम हाल का इल्म हो गया और आप (ﷺ) ने हज़रत अली को हज़रत ज़ुबेर को और हज़रत अम्मार बिन यासिर (रज़ि.) को भेजकर कूएँ में से वह सब चीज़ें निकलवाईं। उनमें एक ताँत थी जिसमें बारह गिरहें लगी हुई थीं और हर गिरह पर एक सूई चुभी हुई थी। फिर अल्लाह तआला ने यह दोनों सूरतें उतारीं, हुज़ूर (ﷺ) एक एक आयत इनकी पढ़ते जाते थे और एक गिरह इसकी ख़ुद ब ख़ुद खुलती जाती थी, जब यह दोनों सूरतें पूरी हुईं वह सब गिरहें खुल गईं और आप (ﷺ) बिलकुल शिफ़ायाब हो गए।"

इधर जिब्रईल (عليه السلام) ने वह दुआ पढ़ी जो ऊपर गुज़र चुकी है। लोगों ने कहा, "हुज़ूर (ﷺ)! हमें इजाज़त दीजिए कि हम उस ख़बीस को पकड़कर क़त्ल कर दें। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, नहीं! अल्लाह तआला ने तो मुझे तंदुरुस्ती अता फ़र्माई, और मैं लोगों में शर्र व फ़साद फैलाना नहीं चाहता।" यह रिवायत तफ़्सीर सअल्बी में बिला सनद मरवी है। इसमें ग़राबत भी है और इसके कुछ हिस्से में सख़्त नकारत है और कुछ के शवाहिद भी हैं जो पहले बयान हो चुके, वल्लाहु आ'लम!

***

FLOW CHART
तरतीबी नक्श-ए-रब्त

MACRO-STRUCTURE
नज़्मे-जली

सूरह नास - 114

आयात : 6, मक्की, पैराग्राफ : 3

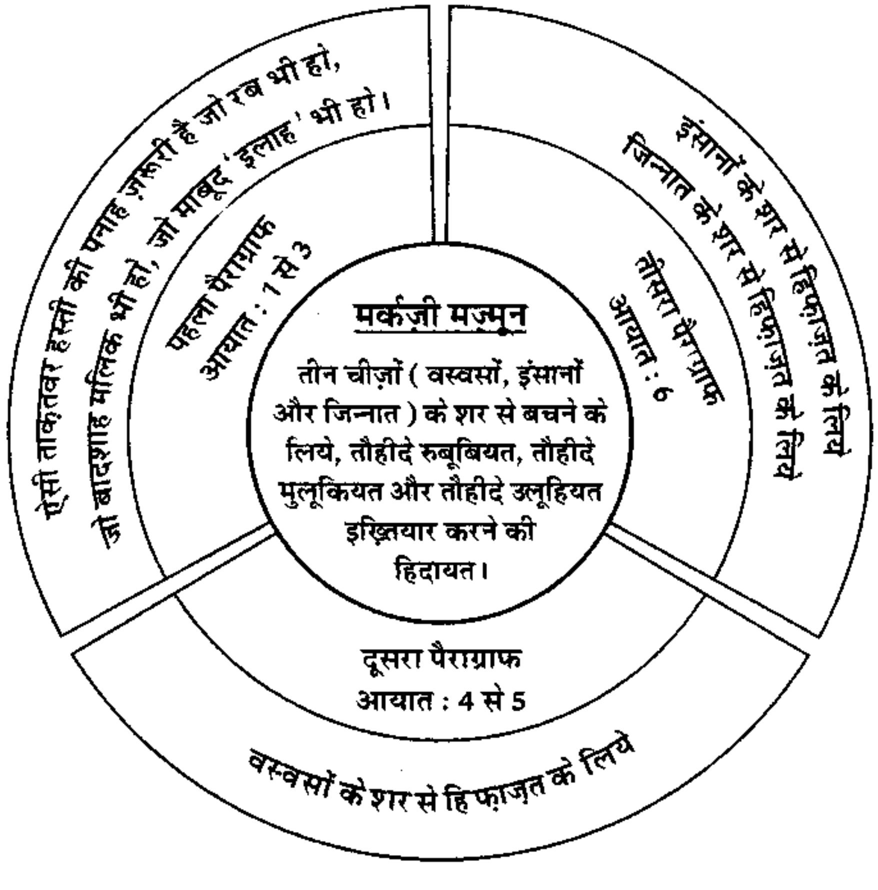

ज़मानए नुजूल

सूरह नास भी ऐलाने आम के बाद आप (सल्ल.) के क़ियामे मक्का के दूसरे दौर (4-5 नबवी) में नाज़िल हुई, जब रसूलुल्लाह (सल्ल.) और नौमुस्लिम सहाबा (रज़ि.) के लिये मुख़ालिफ़ीन के शर का आग़ाज़ हो चुका था।

तफ़्सीर सूरह नास

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

तर्जुमा : "शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है।"

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ ① مَلِكِ النَّاسِ ② اِلٰهِ النَّاسِ ③ مِنْ شَرِّ الْوَسْوَاسِ الْخَنَّاسِ ④ الَّذِيْ يُوَسْوِسُ فِيْ صُدُوْرِ النَّاسِ ⑤ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ ⑥

तर्जुमा : "तू कह कि मैं लोगों के परवरदिगार की पनाह में आता हूँ (1) लोगों के मालिक की (2) और लोगों के मअबूद की (पनाह में) (3) वस्वसा डालने वाले पीछे हट जाने वाले की बुराई से (4) जो लोगों के सीनों में वस्वसा डालता है (5) ख़्वाह वह जिन्न हो या इंसान।"(6)

अल्लाह की तीन सिफ़ात (आयत : 1 से 6) : इसमें अल्लाह अ़ज़्ज़ व जल्ला की तीन सिफ़तें बयान हुई हैं, पालने और परवरिश करने की, मालिक और शहनशाह होने की, मअ़बूद और लायक़े इबादत होने की, तमाम चीज़ें उसी की पैदा की हुई हैं और उसी की मिल्कियत में हैं और उसी की गुलामी में मशगूल हैं, पस वह हुक्म देता है कि इन पाक और बरतर सिफ़ात वाले अल्लाह की पनाह में आ जाए, जो भी पनाह और बचाव का तालिब हो। शैतान जो इंसान पर मुक़र्रर है उसके वस्वसों से बचाने वाला है, हर इंसान के साथ यह है। बुराइयों और बदकारियों को ख़ूब ज़ीनतदार करके लोगों के सामने वह पेश करता रहता है, और बहकाने में, राहे रास्त से हटा देने में कोई कमी नहीं करता, उसके शर्र से वही महफ़ूज़ रह सकता है जिसे अल्लाह बचा ले। सही़ह़ ह़दीस में है कि तुममें से हर शख़्स के साथ एक शैतान है, लोगों ने अ़र्ज़ किया क्या आपके साथ भी? आप (ﷺ) ने फ़र्माया, हाँ! लेकिन अल्लाह तआ़ला ने उस पर मेरी मदद फ़र्माई है, पस मैं सलामत रहता हूँ, वह मुझे सिर्फ़ नेकी और अच्छाई की बात ही कहता है।" (सही़ह़ मुस्लिम, किताब सिफ़ातुल मुनाफ़िक़ीन, बाब तह़रीशुश्शैतान व बअ़सहू सरायाहू लि फ़ित्नतिन्नास : 2814; अह़मद : 1/385; दारमी : 2/306)

शैतान वस्वसे डालते हैं : बुख़ारी व मुस्लिम की और ह़दीस में ह़ज़रत अनस (रज़ि.) की ज़ुबानी एक वाक़िया मंक़ूल है जिसमें बयान है कि हुज़ूर (ﷺ) जब ऐतिकाफ़ में थे तो उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रत सफ़िया (रज़ि.) आप (ﷺ) के पास रात के वक़्त आईं, जब वापिस जाने लगीं तो हुज़ूर (ﷺ) भी पहुँचाने के लिए साथ चले, रास्ते में दो अंसारी सह़ाबी मिल गए, जो आप (ﷺ) को बीबी साह़िबा (रज़ि.) के साथ देखकर जल्दी चल दिये। हुज़ूर (ﷺ) ने उन्हें आवाज़ देकर ठहराया और फ़र्माया, सुनो! मेरे साथ मेरी बीवी सफ़िया बिन्ते हुय्यी (रज़ि.) हैं। उन्होंने कहा, सुब्ह़ानल्लाह! या रसूलल्लाह (ﷺ)! इस फ़र्मान की ज़रूरत ही क्या

थी? आप (ﷺ) ने फ़र्माया, इंसान के ख़ून के जारी होने की जगह में शैतान घूमता फिरता रहता है, मुझे ख़्याल हुआ कि कहीं तुम्हारे दिलों में वह कोई बदगुमानी न डाल दे।'' (सहीह़ बुख़ारी, किताबुल ऐतिकाफ़, बाब हल यख़्रुजुल मुअतकिफ़ लि ह़वाइजिही इला बाबिल मस्जिद : 2035; सह़ीह़ मुस्लिम : 2175; अबूदाऊद : 2470; अह़मद : 6/337; इब्ने ह़िब्बान : 3671)

ह़ाफ़िज़ अबू यअ़ला मूसली (रह़.) ने एक ह़दीस वारिद की है जिसमें है कि नबी (ﷺ) फ़र्माते हैं कि ''शैतान अपना हाथ इंसान के दिल पर रखे हुए है, अगर यह अल्लाह तआ़ला का ज़िक्र करता है तब तो उसका हाथ हट जाता है, और अगर यह ज़िक्रुल्लाह भूल जाता है तो वह उसके दिल पर पूरा क़ब्ज़ा कर लेता है'' यही वस्वासिल ख़न्नास है। (मुस्नदे अबी यअ़ला : 4301; वसनदुहू ज़ईफ़ुन; मज्मउ़ज़्ज़वाइद : 7/149; इसकी सनद में अ़दी बिन अबी अ़म्मारा और ज़ियादुन्नुमैरी ज़ईफ़ रावी हैं।) यह ह़दीस ग़रीब है। मुस्नद अह़मद में है कि ''रसूलुल्लाह (ﷺ) अपने गधे पर सवार होकर कहीं तशरीफ़ ले जा रहे थे, एक सह़ाबी आप (ﷺ) के पीछे बैठे हुए थे, गधे ने ठोकर खाई तो उनके मुँह से निकला शैतान बर्बाद हो। हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया, यूँ न कहो इससे शैतान बढ़ जाता है और कहता है, कि मैंने अपनी कुव्वत से गिरा दिया, और जब तुम बिस्मिल्लाह कहो तो वह घट जाता है, यहाँ तक कि मक्खी के बराबर हो जाता है।'' (अह़मद : 5/59; अबूदाऊद, किताबुल अदब, बाब 77; ह़दीस 4982; वसनदुहू सह़ीहुन) इससे साबित हुआ कि ज़िक्रुल्लाह से शैतान पस्त और मग़्लूब हो जाता है, और उसके छोड़ देने से बड़ा हो जाता है और ग़ालिब आ जाता है। मुस्नद अह़मद में है कि ''रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं कि जब तुममें से कोई मस्जिद में होता है उसके पास शैतान आता है और उसे थपकता और बहलाता है, जैसे कोई शख़्स अपने जानवर को बहलाता हो, फिर अगर वह ख़ामोश रहा तो वह नाक में नकेल या मुँह में लगाम चढ़ा देता है।''

शैतान जिन्न और इंसान दोनों में होते हैं : ह़ज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) ने यह ह़दीस बयान करके फ़र्माया कि तुम ख़ुद उसे देखते हो नकेल वाला तो वह है जो एक तरफ़ झुका खड़ा हो और अल्लाह तआ़ला का ज़िक्र न करता हो, और लगाम वाला वह है जो मुँह खोले हुए हो और अल्लाह तआ़ला का ज़िक्र न करता हो। (अह़मद : 2/330; ह़ : 8370; वसनदुहू ह़सन) ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) इस आयत की तफ़्सीर में फ़र्माते हैं कि ''शैतान इब्ने आदम के दिल पर चंगुल मारे हुए है, जहाँ यह भूला और ग़फ़्लत की उसने वस्वसे डालने शुरू किये और जहाँ उसने ज़िक्रुल्लाह किया और यह पीछे हटा।'' सुलेमान (रह़.) फ़र्माते हैं ''मुझसे यह बयान किया गया है कि शैतान राह़त व रंज के वक़्त इंसान के दिल में सूराख़ करना चाहता है, यानी उसे बहकाना चाहता है, अगर यह अल्लाह तआ़ला का ज़िक्र करे तो यह भाग खड़ा होता है।'' ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से यह भी मरवी है कि ''शैतान बुराई सिखाता है जहाँ इंसान ने उसकी मान ली फिर हट जाता है। फिर फ़र्माया जो वस्वसे डालता है लोगों के सीने में लफ़्ज़े नास जो इंसान के मअ़नी में है उसका इत्लाक़ जिन्नों पर भी बतौरे ग़ल्बा के आ जाता है।'' कुरआने करीम में और जगह (بِرِجَالٍ مِّنَ الْجِنِّ) (72/जिन्न : 6) कहा गया है, तो जिन्नात को लफ़्ज़े नास में दाख़िल कर लेने में कोई क़बाह़त नहीं। ग़र्ज़ यह है कि शैतान जिन्नात के और इंसान के सीने में वस्वसे डालता रहता है।

उसके बाद के जुम्ले (मिनल जिन्नति वन्नास) का एक मतलब तो यह है कि जिन्न के सीनों में शैतान वस्वसे डालता है वह जिन्न भी हैं और इंसान भी और दूसरा मतलब यह है कि वह वस्वसा डालने वाला ख़्वाह कोई जिन्न हो या कोई इंसान। जैसे और जगह है (وَكَذٰلِكَ جَعَلْنَا لِكُلِّ نَبِيٍّ عَدُوًّا شَيَاطِينَ الْإِنسِ وَالْجِنِّ يُوحِي بَعْضُهُمْ إِلَىٰ بَعْضٍ زُخْرُفَ الْقَوْلِ غُرُورًا) (6/अन्आम : 112) यानी इसी तरह हमने हर नबी के दुश्मने इंसानी और जिन्नात शैतान बनाए हैं, एक दूसरे के कान में धोखे की बातें बना सँवार कर डालते रहते हैं।

मुअवज़्ज़तैन का पढ़ना जादू वग़ैरह से हिफ़ाज़त का ज़रिया है : मुस्नद अहमद में है कि "हज़रत अबू ज़र्र (रज़ि.) फ़र्माते हैं कि मैं रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास मस्जिद में आया और बैठ गया। आप (ﷺ) ने फ़र्माया नमाज़ भी पढ़ी? मैंने कहा, नहीं! फ़र्माया खड़े हो जाओ और दो रकअतें अदा कर लो। मैं उठा और दो रकअतें पढ़कर बैठ गया। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, ऐ अबू ज़र! अल्लाह तआला की पनाह माँगो इंसान शैतानों और जिन्न शयातीन से। मैंने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह (ﷺ)! क्या इंसानी शैतान भी होते हैं? आप (ﷺ) ने फ़र्माया, हाँ! मैंने कहा, या रसूलल्लाह (ﷺ)! नमाज़ कैसी चीज़ है? आप (ﷺ) ने इर्शाद फ़र्माया, बेहतरीन चीज़ है, जो चाहे कम करे जो चाहे ज़्यादती करे। मैंने अर्ज़ किया रोज़ा? फ़र्माया काफ़ी होने वाला फ़र्ज़ है और अल्लाह तआला के पास ज़्यादती है। मैंने फिर पूछा सदक़ा? हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया, बहुत ही बढ़ा चढ़ा कर कई कई गुना करके बदला दिया जाएगा। मैंने फिर अर्ज़ की हुज़ूर (ﷺ)! कौनसा सदक़ा अफ़ज़ल है? फ़र्माया, बावजूद माल की कमी के सदक़ा करना या चुपके से छुपाकर किसी मिस्कीन फ़क़ीर के साथ सुलूक करना। मैंने सवाल किया हुज़ूर (ﷺ)! सबसे पहले नबी कौन थे? आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि हज़रत आदम (عليه السلام)! मैंने कहा क्या वह नबी थे? आप (ﷺ) ने फ़र्माया हाँ! नबी और वह भी वह जिनसे अल्लाह तआला ने बातचीत की। मैंने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह (ﷺ)! रसूल कितने हुए? फ़र्माया, तीन सौ कुछ ऊपर दस बहुत बड़ी जमाअत, और कभी फ़र्माया तीन सौ पन्द्रह। मैंने कहा या रसूलल्लाह (ﷺ)! जो कुछ आप पर नाज़िल किया गया उनमें सबसे बड़ी अज़्मत वाली आयत कौनसी है? हुज़ूर (ﷺ) ने इर्शाद फ़र्माया आयतल कुर्सी (अल्लाहु ला इलाहा इल्ला हुवल हय्युल क़य्यूम...)।" (अहमद : 5/178; नसाई, किताबुल इस्तिआज़ा, बाब अल्इस्तआज़तु मिन शर्रि शयातीनिल इंस : 5509; वसनदुहू ज़ईफ़ुन; इसकी सनद में अबू अम्र दमिश्क़ी ज़ईफ़ और मसऊदी मुख़्तलत रावी है।) यह हदीस नसाई में भी है, और अबू हातिम इब्ने हिब्बान की "सहीह इब्ने हिब्बान" में तो दूसरी सनद से दूसरे अल्फ़ाज़ के साथ, यह हदीस बहुत बड़ी है, वल्लाहु आलम! मुस्नद अहमद की एक और हदीस में है कि एक शख़्स ने नबी (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ की कि "या रसूलल्लाह (ﷺ)! मेरे दिल में तो ऐसे ऐसे ख़्यालात आते हैं कि उनका जुबान से निकालना मुझ पर आसमान पर से गिर पड़ने से भी ज़्यादा बुरा है। नबी (ﷺ) ने फ़र्माया (अल्लाहु अकबर अल्लाहु अकबर) अल्लाह तआला ही के लिए हम्दो सना है, जिसने शैतान के मकर व फ़रेब को वस्वसे में ही लौटा दिया। (अहमद : 1/235; अबूदाऊद, किताबुल अदब, बाब फ़ी रद्दिल वस्वसति : 5112; वसनदुहू सहीहुन; मुस्नदे तयालिसी : 2704; इब्ने हिब्बान : 147) यह हदीस अबूदाऊद और नसाई में भी है।"

अल्हम्दुलिल्लाह! सूरह नास की तफ़्सीर मुकम्मल हुई।